दक्षिण भारत में जैन समाज के प्रखर नेता दानवीरशेठ स्व० श्रीमान् ताराचंदजी साहेब गेलडाकी

जीवनझलक

दक्षिण भारत के प्रवास पर आये हुए किसी भी व्यक्ति के दिलमे, मद्रास जैसे शहर के जैन समाज की शिक्षण और-वैद्यकीय सस्थाओं का सुव्यवस्थित क्रम और प्रबध देखकर आनद हुए बिना नही रह सकता। और स्वतः ही जैन समाज की दान-दिशा को इस ओर ले जाने वाले व्यक्तिके रूपमे दानवीर शेठ स्व० श्रीमान् ताराचदजी साहेब गेलड़ाका नाम व व्यक्तित्व नज़रमे आये बिना नहीं रहता। ।

मध्यम कदका इकहटा वदन, खादीकी धोती, खादीका कुरता और खादी की टोपी, पैरमे केन्वासके पादत्राण हाथमे छोटीसी लकडी-चमकती तेज आखे और ७० वर्ष की अवस्थामे भी-जवानों की तेजी-ये आप के अभिन्न गुणों के सूचक थे। उनके यह सादगी अत समय तक भी कायम रही थी।

सन १९३७ मे आप राजकोट पधारे थे वहा अनेक शिक्षण सस्थाओंको देखकर आपने अपने मनमे तय किया कि मैं मद्रास जाकर शिक्षाकी ऐसीही सस्थाएँ बनाउगा। उनके विचारों की पुष्टि के रूपमे श्रीमान् बिरदीचदजी सा मळेचाने ५००००) रूपया दान दिया और यहाकी श्री एस एस.जैन एज्युकेशन सोसायटी की स्थापना हुई। इस सोसायटी के विकास के लिये आपने अपने व्यापार से भी-निवृत्ति ले ली और-क्रमशः इसका विकास करते रहे। इस सोसायटी के तत्वावधानमे क्रमशः प्रायमरी स्कूल, बोर्डिंग होम, हाईस्कूल एव कॉलेज भी-स्थापित हुए और आज भी सुचारु रूपसे चल रहे है। जब तक ये सस्थाएँ पूर्णरूपसे आत्म-निर्भर नही हुईं तबतक आप सोसायटी के प्रारभ कालसे मत्री बने रहे। इतनाही नही प्रत्येक सस्था के लिये आपने दान दिया था ही-किन्तु ताराचद गेलडा जैन विद्यालयके लिये ३१०००) रु का भव्य दान दिया। इसके उपरात भी २२००० रू. का और दान आपका होनेसे आप

મળવાનું ઠેકાણુ
શ્રી અ. ભા. શ્વે. સ્થાનકવાસી
જૈન શાસ્ત્રોદ્ધાર સમિતિ,
ઠે. ગરેડિયા કૂવા રોડ, ગ્રીન લૉજ
પાસે, રાજકોટ, (સૌરાષ્ટ્ર)

Published by
Shri Akhil Bharat S S
Jain Shastroddhara Samiti,
Garedia Kuva Road, RAJKOT,
(Saurashtra), W Ry, India



ये नाम केचिदिह नः प्रथयन्त्यवज्ञां,
जानन्ति ते किमपि तान् प्रति नैष यत्नः ।
उत्पत्स्यतेऽस्ति मम कोऽपि समानधर्मा,
कालो ह्ययं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी ॥ १ ॥



हरिगीतच्छन्दः



करते अवज्ञा जो हमारी यत्न ना उनके लिये ।
जो जानते है तत्त्व कुछ फिर यत्न ना उनके लिये ॥
जनमेगा मुझसा व्यक्ति कोई तत्त्व इससे पायगा ।
है काल निरवधि विपुल पृथ्वी ध्यान मे यह लायगा ॥ १ ॥

मूल्य रु. २५=००

પ્રથમ આવૃત્તિ પ્રત ૧૨૦૦
વીર સંવત્ ૨૪૮૯
વિક્રમ સંવત ૨૦૧૯
ઇસવીસન્ ૧૯૬૩

મુદ્રક
મણિલાલ છગનલાલ શાહ
નવપ્રભાત પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ,
ઘી કાંટા રોડ, અમદાવાદ

७८ वर्ष की आयुमें आपका पडित-मरण हुआ जो आपके यशस्वी जीवन की यशकलगी के समान था। अर्थात् यशस्वी पुरुषो के शिरोमणि थे।

आपके सुपुत्र श्रीमान् भागचंदजी सा गेल्डा भी कर्मठ कार्यकर्ता है। जैन एन्ड नेशनल सोसायटी के आप सदस्य एव पदाधिकारी रह चुके है-वर्तमानमें आप सोसायटीके सभापति है। गोसेवा और पाजरापोल के कार्यके लिये आप घर २ जाकर चंदा करने मे सकोच महसूस नहीं करते और विगत आठेक वर्षों से आप मद्रास पाजरापोलके मत्री है और उसका बहुत ही विकास किया है। द्वितीय पुत्र श्री नेमचदजी स्वर्गवासी हुए है किन्तु आप भी औपधालय निमित्त ट्रस्ट करके गये है। तृतीय पुत्र श्री खुशालचदजी व्यापार-कुशल है और कार्य-भार सम्हाले हुए हैं।

इस आगम प्रकाशन के लिये जब आपके पास डेप्यूटेशन पहुँचा तब इन सुपुत्रोंने उदारता से ५००१) रु दिये है एतदर्थ धन्यवाद है। अन्य सज्जन भी उनका अनुकरण करे यही अभ्यर्थना है।

सेक्रेट्री
शास्त्रोद्धार समिति

सोसायटी के पेट्रन (संरक्षक) बने। सन १९५६ में अर्थों को भी-कार्य संचालन का अनुभव हो एतर्थ आप निवृत्त हुए, किन्तु अंत समय तक सोसायटी के प्रत्येक कार्य के लिये आप सलाह देते रहे और यह समाज का गौरव था कि आप जैसे कुशल एवं विचक्षण सलाहकार मिले।

दानके प्रवाह को शुभ मार्गमें बहाने का आप का प्रयास अत्यंत अनुकरणीय रहा। और मद्रास के जैन समाजने वैद्कीय राहत क्षेत्रमें " जैन मेडिकल रिलीफ सोसायटी " स्थापित की-जिसके तत्त्वावधानमें कई डीसपेंसरिया और एक प्रसूतिगृह चल रहा है। आप उसकी कार्य कारिणी के पदाधिकारी व सदस्य रहे।

इतनाही नही आपने अपने व्यापार क्षेत्रको नही भूला और सैदापेट (भूदान) मे शुद्ध आयुर्वेदिक औषधलय-जिनेश्वर औषधालय खोला जिसके साथ आगे जा कर अपनी पत्नीके नामपर रामकुंवरबाई गेलडा प्रसूतिगृह भी खोला। एतदर्थ आपने अपने द्वितीय पुत्र स्व. नेमीचदजी की इच्छाके अनुसार अलग ट्रस्ट बना दिया है।

आपने अपनी जन्मभूमि कुचेरा के लिये भी कुछ करने के विचार से वहा पर भी छात्रालय शुरू १९४२ मे करवाया और उसके प्रारम्भकाल से आपकी ओर से २५० मासिक सहायता उसे दी जा रही है-जो अब भी चालू है।

तदुपरात ताराचद गेलडा टस्ट भी आपने कायम किया जिससे कई उदीयमान जैन समाज के विद्यार्थिओं की आशाओ को प्रोत्साहन दिया गया और दिया जा रहा है।

उनके अदम्य उत्साह और जोश के साथ उनके दृढ मनोबल का परिचय न दिया जावे तो उनका व्यक्तित्व अधूरा रहेगा। वे अपने आप आगे बढने वाले थे। बहुत ही छोटी उम्र मे उन्होंने व्यापार किया और ताराचद् गेलडा एन्ड सन्स, टी वी ज्वेलरीज एव महेन्द्र स्टोर्स आदि व्यापारिक फर्म चले। सामान्य पूंजीसे लेकर वे लाखोपति बने। सामान्य शिक्षा ज्ञान के बाद भी चार भाषा की जानकारी और प्रबल व्यापारिक ज्ञान आपकी विशेषता थी।

आजीवन खादीव्रत, हाथचटी का पीसा हुआ धान और गायका दूध-घी कठिन व्रत वे आजीवन निभाते रहे। समाज-सुधारणा भी आपने कई प्रकारसे की।

ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र तृतीय भा की विषयानुक्रमणिका

તા ૧૫-૭-૬૩ ના રોજ કલાસવાર
મેમ્બરોની સંખ્યા.

૨૭	આદ્ય મુરબ્બીશ્રી, ૫૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૩૨	મુરબ્બીશ્રી, ૧૦૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૧૩૩	સહાયક મેમ્બરો, ૫૦૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૫૮૬	લાઇફ મેમ્બરો, ૨૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૪૯	બીજા ન ભરનારા જુના મેમ્બરો, ૧૫૦ થી વધુ રકમ ભરનારા
૮૨૭	કુલ મેમ્બરો

રૂપિયા બસો પચાસ તથા રૂપિયા પાચસો-વાળા મેમ્બરો લેવાનુ હવે બધ છે ફક્ત રૂા ૧૦૦૧ થી મુરબ્બીશ્રી માટે ૭૦ સીતેર જગ્યા ખાલી છે અને આદ્ય મુરબ્બીશ્રી રૂા ૫૦૦૧ થી દાખલ કરવામા આવે છે

મેમ્બરોની સખ્યા પૂરતા જ શાસ્ત્રો છપાય છે જેથી પાછળથી દાખલ થનારને સૂત્રો મળવા મુશ્કેલ છે માટે જીજ્ઞાસુ ભાઇઓ તથા બહેનોને અમારી વિનતી છે કે તેઓ મુરબ્બીશ્રી અથવા આદ્ય મુરબ્બીશ્રીમા પોતાનુ નામ જલ્દી મોકલી આપે

નમ્ર સેવક,
સાકરચદ ભાઇચદ શેઠ
મત્રી

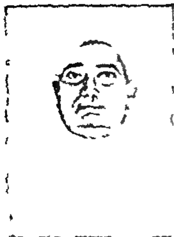
રાજકોટ
તા ૧૫-૭-૬૩

आद्यमुरव्वीश्री



शेठ साहेबश्री ताराचंदजी साहेब, गेलडा
मद्रास

માનમુરબ્બીશ્રીઓ



(સ્વ.) શેઠશ્રી હરખચંદ કાળીદાસ વારિયા
ભાવનગર



દોશી હરગોવિંદ જેચંદભાઈ
રાજકોટ.



શેઠશ્રી શાંતિલાલ મંગળદાસભાઈ
અમદાવાદ

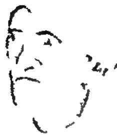


(સ્વ.) શેઠશ્રી નાગીભાઈ જીવણલાલ
બારસી



(સ્વ.) શેઠશ્રી મગનલાલ શામળદાસ ભાવસાર
અમદાવાદ

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



સ્વ. શ્રીમાન શેઠશ્રી મુકનચંદજી મા
બાલિયા પાલી મારવાડ.



(સ્વ.) શેઠ મંગળભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ



(સ્વ.) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ



શેઠશ્રી જેસિંગભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ



સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



(સ્વ) શેઠશ્રી શામજીભાઈ વેલજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ



શેઠશ્રી રામજીભાઈ શામજીભાઈ વીરાણી
રાજકોટ.



(સ્વ) વિનોદકુમાર વીરાણી
રાજકોટ.
(દીક્ષા લીધા પહેલા શાસ્ત્રાભ્યાસ કરતા)



શેઠશ્રી મિશ્રીલાલજી લાલચંદજી સા લુણિયા
તથા શેઠશ્રી જેતરાજજી લાલચંદજી સા

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



સ્વ. શ્રીમાન શેઠશ્રી મુકનચંદજી બા
બાલિયા પાલી મારવાડ.



(સ્વ) શેઠ ગજુભાઈ મોહનલાલ શાહ
અમદાવાદ



(સ્વ) શેઠશ્રી દિનેશભાઈ કાંતિલાલ શાહ
અમદાવાદ



શેઠશ્રી જેશિંગભાઈ પોચાલાલભાઈ
અમદાવાદ



સ્વ. શેઠશ્રી આત્મારામ માણેકલાલ
અમદાવાદ.

આદ્યમુરબ્બીશ્રીઓ



શેઠ સાહેબ શ્રી કીશનચંદજી સાહેબ
જોહરી દિલ્હી



સ્વ. શેઠશ્રી હરિલાલ અનોપચંદ શાહ
ખંભાત



૧ વચ્ચે બેઠેલા મોટાભાઇ શ્રીમાન
મૂલચંદજી જવાહીરલાલજી બરાડયા
૨ બાજુમાં બેઠેલા મિશ્રીલાલજી
બરડિયા
૩ ઉભેલા સૌથી નાનાભાઈ પૂનમચંદ
બરડિયા



શ્રી વ્રજલાલ દુર્લભજી પારેખ
રાજકોટ.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

श्रीजैनाचार्य जैनधर्मदिवाकर-पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितया अनगार-
धर्मामृतवर्षिण्याख्यया व्याख्यया समलङ्कृत

श्री-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रम्

तृतीयो भागः

अथ चतुर्दशा ध्ययन प्रारभ्यते

अस्य व्याख्यायमानचतुर्दशाध्ययनस्य व्याख्यातेन त्रयोदशेनाध्ययनेन सहाय-मभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने सता गुणाना गुणाभिवर्द्धकसद्गुरूपदेशरूप-सामग्र्यभावे हानिरुक्ता, इह तु-तथाविधसामग्रीसद्भावे गुणसपदुपजायते, इत्यभि धीयते, इत्येव पूर्वेण सहाभिसबद्धस्यास्येदमादिसूत्रम्-' जइण भते इत्यादि ।

मूलम्—जइणं भते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्द-समस्स णं भते ! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महा-वीरेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एव खलु जबू ! तेणं

चौदहवा अध्ययन प्रारभः-

इस चौदहवें अध्ययन का तेरहवें अध्ययन के साथ इस प्रकार का सबन्ध है-तेरहवें अध्ययन में जो यह बात कही गई है कि आत्मा में सम्यग्दर्शन आदि प्रकट भी हो गये, हों परन्तु यदि उन को बढाने वाली सद्गुरु आदि की उपदेश रूप सामग्री का अभाव रहे तो उन गुणों की हानि हो जाति है । इस अध्ययन में अब सूत्रकार यह स्पष्ट करेंगे कि यदि जीव को तथाविध सामग्री प्राप्त होती रहती है तो गुण सपत्ति भी बढती रहती है.-' जइण भते ' इत्यादि ।

ચૌદમું અધ્યયન પ્રારભ—

ચૌદમા અધ્યયનનો તેરમા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સબધ છે કે તેરમા અધ્યયનમા જે આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરવામા આવ્યુ છે કે આત્મામા સમ્યગ્દર્શન વગેરે પ્રગટ પણ થઈ ગયા હોય છતા જો સદ્ગુરૂ વગેરેની ઉપદેશ રૂપ તેમનુ વર્ધન કરનાર સામગ્રી હોય નહિ તો તે ગુણોની હાનિ થઈ જાય છે આ અધ્યયનમા સૂત્રકાર હવે એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જીવને જો તથાવિધ સામગ્રી મળતી રહે છે તો ગુણ સપત્તિ પણ વધતી રહે છે

' जइण भंते ' इत्यादि—

कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया। तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी। तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदंडदक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं भद्दा नाम भारिया। तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया होत्था रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा। तएणं पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्कवालसपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएण तिंदूसएण कीलमाणी विहरइ ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्संप्राप्तेन त्रयोदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः चतुर्दशस्य खलु भदन्त! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थ

टीकार्थ—जम्बू स्वामी पूछते हैं कि (भंते-जइणं समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं) हे भदंत! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जिन्होंने सिद्धिगति नाम का स्थान प्राप्त कर लिया है (तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चोद्दसमस्स णं भंते! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते) तेरहवें ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है-तो हे भदंत! चौदहवें ज्ञाताध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ निरूपित किया

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે (भंते! जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं) હે ભદંત! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધ ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

(तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भंते! णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદંત! તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે?

प्रश्नः। सुधर्मा स्वामी कथयति-एवं खलु जम्बू!। तस्मिन् काले तस्मिन् समये तेतलिपुरं नाम नगरम् आसीत्। तत्र प्रमदवन नाम उद्यानमासीत्। तस्य नगरस्य कनकरथो नाम राजाऽसीत्। तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः पद्मावती नाम देवी। तस्य खलु कनकरथस्य राज्ञः तेतलिपुत्रो नाम अमात्यः 'सामदंडदक्खे' साम दण्डदक्ष=अत्र सामदण्डग्रहणाद् दानभेदयोरपि ग्रहण तेन सामदानभेददण्डात्मकचतुर्विधोपायनिपुण इत्यर्थः आसीत्।

तत्र खलु तेतलिपुरे कलादो नाम 'मूसियारदारए' मूषीकारदारकः=सुवर्णकारदारकः, 'मूषी' इति मूषापर्यायः, गौरादित्वाद्ङीप यत्र सुवर्णादि

है? (एव खलु जंबू! तेण कालेण तेण समएण तेयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया, तस्स ण कणगरहस्स पउमावई देवी) श्री सुधर्मा स्वामी अब श्री जम्बू स्वामी के इस प्रश्न का उत्तर देने के अभिप्राय से कहते हैं-जम्बू!, सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार से है-उस काल और उस समय में तेतलिपुर नाम का नगर था। उस में प्रमदवन नाम का उद्यान था। उस नगर के राजा का नाम कनक रथ था। इस कनकरथ राजा की रानी का नाम पद्मावती देवी था। (तस्स ण कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदंडदक्खे। तत्थ ण तेयलिपुरे कलादे नाम मुसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए) उस कनक रथ राजा का अमात्य था जिस का नाम तेतलिपुत्र था। यह साम, दान, भेद और दंड इन चार प्रकार की राजनीति में विशेष पटु निपुण था। उसी तेतलिपुर मे कलाद नाम का

(एव खलु जम्बू! तेण कालेण तेण समएण तेयलिपुर नाम नगर पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया। तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी)

શ્રી સુધર્માસ્વામી હવે શ્રી જમ્બૂસ્વામીને આ પ્રશ્નોના જવાબ આપવાની ઇચ્છાથી કહે છે કે હે જમ્બૂ! સાભળો તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે તેતલિપુર નામે નગર હતુ તેમા પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતુ તે નગરના રાજાનુ નામ કનકરથ હતુ તે કનકરથ રાજાની રાણીનું નામ પદ્માવતી હતુ

(तस्स ण कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदंडदक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नाम मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તે કનકરથ રાજાનો એક અમાત્ય (મંત્રી) હતો જેનુ નામ તેતલિપુત્ર હતુ તે સામ, દાન, ભેદ અને દંડ એ ચારે પ્રકારની નીતિમા સવિશેષ નિપુણ-કુશળ હતો તે તેતલિપુરમા કલાદ નામે મૂષીકાર દારક (સોનીનો પુત્ર)

कालेणं तेणं समएण तेयलिपुर नाम नगरं पमयवणे उज्जाणे कणगरहे राया । तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी । तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते णाम अमच्चे सामदंड-दक्खे। तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तस्स ण भद्दा नाम भारिया । तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया होत्था रूवेण य जोव्वणेण य लाव-ण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा । तएणं पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडियाचक्क-वालसंपरिवुडा उप्पि पासायवरगया आगासतलगंसि कण-गमएणं तिंदूसएणं कीलमाणी विहरइ ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सप्राप्तेन त्रयोदशस्य-ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः चतुर्दशस्य खलु भदन्त ! ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण- यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थ

टीकार्थ—जम्बू स्वामी पूछते हैं कि (भंते—जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण) हे भदंत! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जिन्होंने सिद्धिगति नाम का स्थान प्राप्त कर लिया है (तेरसमस्स णाय-ज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते चोद्दसमस्स ण भंते! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरे ण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते) तेरहवें ज्ञाताध्ययन का पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है—तो हे भदंत ! चौदहवें ज्ञाता-ध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने क्या अर्थ निरूपित किया

ટીકાર્થ—જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે (भंते ! जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण) હે ભદંત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધ ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂક્યા છે

(तेरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते)

તેરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદંત ! તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જ આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

'चेडियाचक्कवालसपरिवुडा' चेटिकाचक्रवालसपरिवृता=चेटिकाः=दास्यस्तासां यच्चक्रवालं मण्डलं तेन सपरिवृता=सहिता दासीसमूहपरिवेष्टितेत्यर्थः, उपरिप्रासादवरगता प्रासादोपरिस्थिता-आकाशतले=अनावृतप्रदेशे 'छत्त' इति प्रसिद्धे कनकमयेन=स्वर्णनिर्मितेन 'तिंदूसएण' तिन्दूसकेन=कन्दुकेन क्रीडन्ती २ विहरति ॥ सू० १ ॥

मूलम्-इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयइ। तएणं से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीइवयमाणे२ पोट्टिलं दारियं उप्पिं पासायवरगयं आगासतलगंसि कणगतिंदूसएणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी - एसा णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा ?। तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा। तएणं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे

विभूसिया चेडियाचक्कवालसपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगास तलगंसि कणगमएण तिंदूसएण कीलमाणी २ विहरइ) एक दिन की बात है कि यह स्नान कर के तथा समस्त आभरणों से विभूषित हो करके अपनी दासियोंके साथ प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण निर्मित कन्दुक (गेंद) से क्रीडा कर रही थी। सूत्र ॥ १ ॥

એક દિવસે તે સ્નાન કર્યા બાદ પોતાના બધા અંગોને ઘરેણાંઓથી શણગારીને પોતાની દાસીઓની સાથે મહેલની ઉપરની અગાશીમાં સોનાથી બનાવવામાં આવેલી દડીથી રમી રહી હતી ॥ સૂત્ર "૧"

गाल्यते सा, तां करोति=साधनसामग्रीत्वेन निष्पादयति, इतिव्युत्पत्त्या मूषीकार- इति सुवर्णकारे योगारूढोऽयं शब्दः । 'होत्था' आसीत् । सो हि आढ्यो यावद- परिभूत. । तस्य खलु कलादस्य मूषिकारदारकस्य दुहिता भद्राया आत्मजा पोट्टिला नाम दारिका आसीत्, याहि रूपेण च=आकृत्या, यौवनेन च=तारुण्येन च लावण्येन च=शरीरोत्कृष्टकान्ति विशेषेण उत्कृष्टा अतएव उत्कृष्टशरीराऽऽसीत् । ततः खलु पोट्टिला दारिका अन्यदा कदाचित् स्नाता सर्वालङ्कारविभूषिता

मूषीकार दारक-सुवर्णकार का पुत्र-रहता था। मूषी शब्द का अर्थ सांचा है। इस मे सुवर्णादि द्रव्य पिघलाये जाते हैं। इस सांचे को जो बनाता है उस का नाम मूषीकार है। इस व्युत्पत्ति के अनुसार यह शब्द सुवर्णकार (सोनार) मे योगारूढ हुआ है। यह मूषीकार दारक आढ्य यावत् अपरिभूत था। (तस्स णं भद्दा नाम भारिया, तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारि- या होत्था, रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ सरीरा) इस मूषिकार दारक कलाद-सौनी की अत्यन्त प्रिय पोट्टिला नाम की लडकी थी जो इस की पत्नी भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई थी। यह आकृति से, यौवन से एव लावण्य से-शारीरिक उत्कृष्ट काति से-बहुत ही अधिक मनोहर थी-अतः इस का शरीर बहुत अधिक उत्तम था। (तएणं पोट्टिला दारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकार-

રહેતો હતો 'મૂષી' શબ્દનો અર્થ સાંચો (બીબુ) છે તેમાં સોનું વગેરે દ્રવ્યો ઓગાળવામાં આવે છે આ સાંચાને બનાવનારનું નામ મૂષીકાર છે આ વ્યુત્પત્તિને લઈને આ શબ્દ સુવર્ણકાર (સોની) માટે યોગારૂઢ થઈ ગયો છે તે મૂષિકારદારક આઢ્ય (ધનવાન) યાવત્ અપરિભૂત હતો.

(तस्स णं भद्दा नाम भारिया तस्स णं कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया होत्था, रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेणं य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा)

તે મૂષિકારદારક કલાદ સોનીની ખૂબ જ વહાલી પોટ્ટિલા નામે પુત્રી હતી જે તેની પત્ની ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ હતી તે આકૃતિથી, યૌવનથી, લાવણ્યથી-શરીરની ઉજ્જ્વલ-કાંતિથી બહુ જ મનોહર હતી, એથી તેનું શરીર ખૂબ જ ઉત્તમ હતું

(तएणं पोट्टिलादारिया अन्नया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडिया- चक्कवालसपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणगमएणं तिंदूस- एणं कीलमाणी २ विहरइ)

रदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, तेयलि- पुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदेंति ॥ सू० २ ॥

टीका—'इम च ण' इत्यादि । अस्मिंश्च खलु समये तेतलिपुत्रोऽमात्यः स्नातः 'आसखधवरगए'=अश्वस्कन्धवरगतः=अश्वारूढः 'महया भडचडगरवंदपरिक्खित्ते' महाभटचटकरवृन्दपरिक्षिप्त' महान्तो भटचटकराः=भटसमूहाः तेषां वृन्दैः=समूहैः परिक्षिप्त =परिवृत' सन् 'आसवाहणियाए' अश्ववाहनिकायै=अश्ववाहनेन क्रीडनार्थं 'णिज्जायमाणे '=निर्यान्=निर्गच्छन् कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन पार्श्वभागेन 'वीइवयइ '=व्यतिव्रजति=गच्छति । 'तत' खलु स तेतलिपुत्रो मूषीकारदारकस्य गृहस्य अदूरसामन्तेन व्यतिव्रजन् पोट्टिलां दारिकाम्

'इम च ण तेयलि पुत्ते अमच्चे' इत्यादि ।

टीकार्थ–(इम च ण) इसी समय (तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखधवरगए महया भडचडगरवदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयइ) तेतलि पुत्र अमात्य स्नान से निपट कर घोड़े पर चढा हुआ बड़े २ भट समूहों के वृन्दो से घिरा होकर अश्वक्रीडा के लिये मूषीकारदारक कलादके (सोनार) मकानके पास से निकला । (तण्ण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणे २ पोट्टिल दारियं उप्पिं पासायवरगय आगासतलगसि कणगतिदूसएणं कीलमाणी पासइ') मूषीकार दारक कलाद के मकान के पास से होकर जाते हुए

इम च ण तेयलिपु अमच्चे' इत्यादि—

टीकार्थ—(इम च ण) ते वखते

(तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखधवरगए महया भटचडगरवदपरिक्खित्ते आसवाहणियाए णिज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयइ)

तेतलिपुत्र अमात्य स्नानथी परवारीने घोडा उपर सवार थया अने त्यारपछी विशाळ भटो (योद्धाओ) ना समूहोथी वींटळाईने अश्वक्रीडा माटे मूषीकारदारक कलादना घरनी पासे थईने नीकळ्या

(तण्ण से तेयलिपुत्ते मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीइवयमाणे२ पोट्टिल दारियं उप्पिं पासायवरगय आगासतलगसि कणगतिंदूसएण कीलमाणी पासइ')

अब्भितरट्टाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह। तएणं ते अब्भंतरट्टाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहिय सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तहत्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया। तएणं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता, आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ? तएण ते अब्भितरट्ठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियदारयं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, तं जइ णं जाणासि देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो संजोगो ता दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स, तो भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुकं ? तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुक्के, जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारिया निमित्तेणं अणुग्गहं करेइ। ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ। तएणं ते

यावत्-उत्कृष्टशरीरा अस्ति। ततः खलु स तेतलिपुत्रः अश्ववाहनिकायाः प्रति निवृत्त'=प्रत्यागतः सन् ' अभिंतरठाणिज्जे ' अभ्यन्तरस्थानीयान्=अन्तरङ्गप्रेष्य पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहितरं भद्रायाः आत्मजां पोट्टिलां दारिकां मम भार्यात्वेन वृणुत। हे देवानुप्रियाः यूयं तथा प्रयतध्वम्, यथा स मूषीकारदारकः स्वदुहितरं मम भार्यात्वेन मह्यं दद्यादिति भावः। ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषास्ते-तलिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्ट तुष्टाः करतलपरिगृहीतं शिर आवर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, ' तहत्ति ' तथेति तथा करिष्यामीति 'कियां' कृत्वा=स्वीकृत्य यत्रैव कला

इस का नाम पोट्टिला है। रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर वाली है। (तएण से तेयलिपुत्ते आसवाहणिआओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह) इस के बाद वह तेतलि पुत्र अमात्य, अश्ववाहनिका से पीछे जब लौटा तो लौटते ही उसने अपने अन्तरंग प्रेष्य पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों? तुम लोग जाओ-और मूषीकार दारक कलाद की पुत्री जिसका नाम पोट्टिला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी भार्यारूप से वरआओ। तात्पर्य इस का यह है कि तुमलोग वहां जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मूषीकारदारक कलाद अपनी पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे देवे। (तएणं ते अब्भिंतरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा करयल परिग्गहिय सिरसा

છે તેનુ નામ પોટ્ટિલા છે તે રૂપ વગેરેથી ખૂબ જ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે (तएण से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह)

ત્યારપછી તે તેતલિપુત્ર અમાત્ય અશ્વવાહનિકાથી ઘેર પાછો આવ્યો ત્યારે આવતાની સાથે જ તેણે પોતાના-અન્તરંગ પ્રેષ્ય પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ અને મૂષી કારદારક કલાદની પુત્રી કે-કે જેનુ નામ પોટ્ટિલા છે, અને જે ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ છે-તેને ભાર્યા રૂપમા મને આપો તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તમે લોકો ત્યાં જઈને એવી કોશિશ કરો કે જેથી તે મૂષીકારદારક કલાદ પોતાની પુત્રીને પત્ની રૂપમા મને આપી દે

उपरि प्रासादवरगतामागाशतले कनकतिन्दूसकेन क्रीडन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा, पोट्टिलाया दारिकाया रूपे च यौवने च लावण्ये च 'जाव अज्झोववन्ने' यावत्-मूर्च्छितः, गृद्धः, ग्रथितः, अध्युपपन्नः = अत्यन्तसक्त इत्यर्थः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्-एषा खलु देवानुप्रियाः! कस्य दारिका किं नामधेया ?। ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा तेतलिपुत्रम् एवमवदन्-एषा खलु स्वामिन्! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहिता, भद्राया आत्मजा पोट्टिला नाम दारिका रूपेण च

उस तेतलिपुत्र अमात्य ने प्रासाद के ऊपर छत पर सुवर्ण की कन्दुक (गेंद) से क्रीडा करती हुइ उस पोट्टिला दारिका को देखा। (पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-एसा णं देवाणुप्पिया कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा?) देख कर वह उस पोट्टिला दारिका के रूप, यौवन एवं लावण्य में मूर्छित, गृद्ध, ग्रथित बनकर उस पर अत्यन्त आसक्ति से युक्त हो गया। उसी समय उस ने कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया-बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियो! कहो यह कन्या किसकी है और इसका नाम क्या है ? (तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी! कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने तेतली पुत्र से ऐसा कहा-हे स्वामिन्! यह मूषीकार दारक कलाद की पुत्री है जो भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न हुई है।

ભૂષિકારદારક કલાદના ઘરની પાસે થઈને જતા તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે મહેલના ઉપરની અગાશી ઉપર સોનાની દડીથી રમતી તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈ

(पासित्ता पोट्टिलाए दारिआए रूवे य जाव अज्झोववन्ने कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी एसा णं देवाणुप्पिया कस्स दारिया ? किं नामधेज्जा ?)

તે પોટ્ટિલા દારિકાને જોઈને તે તેના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમાં મૂર્ચ્છિત ગૃદ્ધ, ગ્રથિત બનીને અત્યંત આસકત થઈ ગયો. તરત જ તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેણે તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! બોલો, આ કન્યા કોની છે અને એનું શું નામ છે?

(तएणं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी-एसा णं सामी। कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया, भद्दाए अत्तया पोट्टिला नाम दारिया रूवेण य जाव उक्किट्ठ सरीरा)

તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામિન્! તે ભૂષિકારદારક કલાદની પુત્રી છે અને ભદ્રાભાર્યાના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો.

यावत्–उत्कृष्टशरीरा आसीत्। ततः खलु स तेतलिपुत्रः अश्ववाहनिकायाः प्रतिनिवृत्तः=प्रत्यागतः सन् 'अब्भितरट्ठाणिज्जे' आभ्यन्तरस्थानीयान्=अन्तरङ्गप्रेष्य-पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्–गच्छत खलु यूयं देवानुप्रियाः! कलादस्य मूषीकारदारकस्य दुहितरं भद्राया आत्मजां पोट्टिलां दारिकां मम भार्यात्वेन वृणुत। हे देवानुप्रियाः यूयं तथा प्रयतध्वम्, यथा स मूषीकारदारकः स्वदुहितरं मम भार्यात्वेन मह्यं दद्यादिति भावः। ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषास्ते-तलिना एवमुक्ताः सन्तो हृष्ट तुष्टाः करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, 'तहत्ति' तथेति तथा करिष्यामीति 'क्रिया' कृत्वा=स्वीकृत्य यत्रैव कला

इस का नाम पोट्टिला है। रूप आदि से यह बहुत ही उत्कृष्ट शरीर वाली है। (तएण से तेयलिपुत्ते आसवाहणिआओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह) इस के बाद वह तेतलि पुत्र अमात्य, अश्ववाहनिका से पीछे जब लौटा तो लौटते ही उसने अपने अन्तरंग प्रेष्य पुरुषों को बुलाया–और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियों? तुम लोग जाओ–और मूषीकार दारक कलाद की पुत्री जिसका नाम पोट्टिला है, जो भद्रा की कुक्षि से उत्पन्न हुई है उसे मेरी भार्यारूप से वरआओ। तात्पर्य इस का यह है कि तुमलोग वहां जाकर ऐसा प्रयत्न करो कि जिस से वह मूषीकारदारक कलाद अपनी पुत्री को पत्नी के रूप में मुझे दे देवे। (तएणं ते अब्भतरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा करयल परिग्गहिय सिरसा

છે તેનું નામ પોટ્ટિલા છે તે રૂપ વગેરેથી ખૂબ જ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે

(तएण से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिनियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! कलादस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तय पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह)

ત્યારપછી તે તેતલિપુત્ર અમાત્ય અશ્વવાહનિકાથી વેગે પાછો આવ્યો ત્યારે આવતાની સાથે જ તેણે પોતાના–અન્તરંગ પ્રેષ્ય પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ અને મૂષી કારદારક કલાદની પુત્રી કે–કે જેનું નામ પોટ્ટિલા છે, અને જે ભદ્રાના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થઈ છે–તેને ભાર્યા રૂપમાં મને આપો તાત્પર્ય આ પ્રમાણે છે કે તમે લોકો ત્યાં જઈને એવી કોશિશ કરો કે જેથી તે મૂષીકારદારક કલાદ પોતાની પુત્રીને પત્ની રૂપમાં મને આપી દે

दस्य मूषीकारदारकस्य गृहं तत्रैव उपागताः। ततः खलु स कलादो मूषीकारदारकः तान् अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषानेजमानान् पश्यति, दृष्ट्वा हृष्टतुष्टोऽतिशयप्रमुदितः आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय तान् सम्मानयितुं तेषामभिमुखं सप्ताष्टपदानि

वत्त मत्थए अंजलिं कट्टु तहत्ति त्तिच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया) इस प्रकार तेतलि पुत्र के द्वारा कहे गये वे अन्तरग प्रेष्य पुरुष हृष्ट तुष्ट होते हुए वहा से निकल कर मूषीकार कलाद का जहा घर था वहा आये। आते समय उन्होंने तेतलि पुत्र को दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख कर नमस्कार किया-और हम आपने जैसा कहा है वैसा ही करेंगे इस बात को उसे आश्वासन देकर स्वीकार किया था। (तएण से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठ तुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेण उवणिमतेइ, उवणिमतित्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एव वयासी संदिसतु ण देवाणुप्पिया! किमागमणपओयण-तएण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियदारय एव वयासी) जब उस मूषीकार दारककलादने उन पुरुषों को आपने घर की ओर आते हुए देखा-तो वह देखकर हृष्ट तुष्ट हो अपने आसन पर से उठ बैठा-उठ

(तएण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेतलिणा एव वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयलपरिग्गहिय सिरसावत्त मत्थए अंजलिं कट्टु तहत्ति किच्चा जेणेव कलायस्स मूसियारस्स गिहे तेणेव उवागया)

આ રીતે તેતલિપુત્રે જેઓને આદેશ આપ્યો છે એવા તે અતરગ પ્રેષ્ય પુરૂષ હૃષ્ટ તુષ્ટ થતા ત્યાથી રવાના થઇને મૂષીકાર કલાદનુ જ્યા ઘર હતુ ત્યા પહોચ્યા તેતલિપુત્રની પાસેથી પાછા ફરતા તેઓએ બને હાથોની અજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને અમે આપે જેમ હુકમ કર્યો છે તેનો યથાવત પાલન કરીશુ આ રીતે તેમની આજ્ઞા તેઓએ સ્વીકારી

(तएण से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता सत्तट्ठपयाइ अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेण उवणिमतेइ, उवणिमतित्ता आसत्थे सुहासणवरगए एव वयासी संदिसतु ण देवाणुप्पिया! किमागमणपओयण-तएण ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलाय मूसियदारय एव वयासी)

મૂષીકારદારક કેલાદે જ્યારે તે પુરૂષોને પોતાના ઘર તરફ આવતા જોયા ત્યારે તે જોઇને હૃષ્ટ તુષ્ટ થઇને પોતાના આસન ઉપરથી ઊભો થઈ ગયો અને

गत्वा तानग्रे कृत्वा स्वयम् 'अणुगच्छइ' अनुगच्छति, तेषा पृष्ठवर्तीभूत्वा गच्छति, अनुगम्य, आसनेन उपनिमन्त्रयति=आसनदानेन तान् पुरुषानुपवेशयति, उपनिमन्त्र्य, आस्वस्थ, विस्वस्थः एतेषाममात्यपुरुषाणा सत्कारो यथावज्जात इति हेतोः स्वस्थमनाः भूत्वा सुखासनवरगतः=स्वयमपि स्वकीयासने सुखोपविष्टः सन् एवमवदत्-सदिशन्तु खलु हे देवानुप्रियाः! भवता किमागमनप्रयोजनम् ? ततः खलु ते आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलाद मूषीकारदारकम् एवमवदन्-वय खलु देवानुप्रिय! तव दुहितर भद्राया आत्मजा पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्रस्य भार्यात्वेन वृणुम, तद् यदि खलु त्व 'जाणसि' जानासि=मन्यसे, हे देवानुप्रिय! यद् अस्माकमेतत्त्वत्कन्याविषयक याचन 'जुत्त वा' युक्त वा=उचितम् 'पत्त वा' प्राप्त वा मनसिसलग्न वा 'सलाहणिज्ज वा' श्लाघनीय वा=प्रशसनीय वा अपि च 'सरिसो वा सजोगो' सदृशो वा सयोगः तेतलिपुत्रेण सह तव कन्याया वैवाहिक

कर फिर वह सात आठ डग प्रमाण आगे उन का सत्कार करने के लिये गया। वहा से उन्हें आगेकर के वह स्वय उनके पीछे २ आया। आकर के फिर उसने उन्हें आसनों पर बैठाया-बैठा कर आश्वस्त विश्वस्त होकर बाद में वह स्वय दूसरे अपने आसन पर शान्ति पूर्वक बैठ गया। बैठ जाने के बाद फिर उसने इस प्रकार कहा- हे देवानुप्रियो! कहिये-किस कारण से आप यहा पधारे हैं-आपलोगों के आने का क्या प्रयोजन है-इस प्रकार उसके पूछने पर उन अभ्यन्तर स्थानीय पुरुषों ने उस सुवर्णकार के पुत्र कलाद से इस प्रकार कहा (अम्हे ण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिया! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो ता दिज्जउण पोट्टिला दारिया तेयलि

ઊભો થઈને તેમના સ્વાગત માટે સાત આઠ પગલા સામે ગયો ત્યાથી તેણે આવનારાઓને આગળ કરીને એટલે કે પોતે તેઓની પાછળ પાછળ ચાલતો ત્યા આવ્યો અને આવીને તેણે તેઓને આસનો ઉપર બેસાડયા ત્યારપછી આશ્વસ્ત વિશ્વસ્ત થઈને તે પોતે બીજા આસન ઉપર શાતિપૂર્વક બેસી ગયો. બેસીને તેણે તેઓએ વિનય પૂર્વક કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! બોલો, તમે શા કારણથી અહીં આવ્યા છો ? તમે શા પ્રયોજનથી આવ્યા છો ? આ રીતે કલાદ (સુવર્ણકાર) ની વાત સાભળીને તે આભ્યતર સ્થાનીય પુરુષોએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(अम्हेण देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अत्तय पोट्टिल दारिय तेयलि पुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो, त जइण जाणसि देवाणुप्पिय! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज

सम्बन्धो योग्यो भवतीति, यदि जानासि तदा दीयतां खलु पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्राय 'तो' तर्हि भण=ब्रूहि, हे देवानुप्रिय! किं दद्मः शुल्कम् सम्मानपुरस्कारं भवते किं समर्पयामः। ततः खलु कलादो मूषीकदारकः' अभ्यन्तरस्थानीयान् पुरुषान् एवमवदत्-एतदेव खलु देवानुप्रियाः! मम शुल्कम्, यत्खलु तेतलिपुत्रो मम दारिकानिमित्तेन अनुग्रह=दया करोति। इत्युक्त्वाऽसौ तान् अभ्यन्तरस्थानी-

---

पुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया! किं दलामो सुक्कं? तएणं कलाए मूसियार दारए ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी) हे देवानुप्रिय हम लोग तुम्हारी पुत्री पोट्टिला दारिका को कि जो भद्राकी कुक्षि से उत्पन्न हुई है तेतली पुत्र अमात्य की यह भार्या बने इस रूप से वरण करने के लिये आये हुए है-तो यदि तुम हे देवानुप्रिय! हमारी इस याचना को उचित, प्राप्त, और श्लाघनीय-प्रशंसनीय मानते हो और यह समझते हो कि यह तेतलिपुत्र के साथ तुम्हारी कन्या का वैवाहिक संबध योग्य है-तो पोट्टिला दारिका तेतलि पुत्र के लिये प्रदान कर दो-और साथ में यह भी कह दो कि हम आपके लिये इस निमित्त क्या सम्मान पुरस्कार देवें। इस प्रकार उन सब की ऐसी बाते सुनकर उस सुवर्ण कार पुत्र कलादने उन आये हुए अभ्यतर स्थानीय पुरुषों से इस प्रकार कहा-(एस चेव णं देवाणुप्पिया! मम सुक्के जन्नं तेयलिपुत्ते-मम दारिया निमित्तेण अणुग्गहं करेइ, ते अब्भितरट्ठाणिज्जे पुरिसे

वा सरिसो वा संजोयो ता दिज्जउणं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स तो भण देवाणुप्पिया! किंदलामो सुक्कं तएणं कलाए मूसियारदारए ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी)

હે દેવાનુપ્રિય! તમારી ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી તમારી પોટ્ટિલા દારિકા અમાત્ય તેતલીપુત્રની ભાર્યા થાય આ જાતની માગણી કરવા અમે તમારી પાસે આવ્યા છીએ હે દેવાનુપ્રિય! તમે તેતલિપુત્રની માગણી ઉચિત, શ્લાઘનીય અને પ્રશસનીય માનતા હોય તેમજ એમ પણ તમને થતુ હોય કે અમાત્ય તેતલિપુત્રની સાથેનો આ લગ્ન સબધ યોગ્ય છે તો તમે અમાત્ય તેતલિપુત્રને પોટ્ટિલાદારિકા આપી દો અને એની સાથે તમે અમને એમ પણ જણાવી દો કે તમને અમે એના બદલ સન્માન પુરસ્કારના રૂપમા શુ આપીએ? આ રીતે તેઓ બધાની વાત સાભળીને તે સુવર્ણકારના પુત્ર કલાદે આભ્યતર સ્થાનીય પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एस चेव णं देवाणुप्पिया! मम सुक्के जन्नं तेयलिपुत्ते मम दारिया

यान् पुरुषान् विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण च सत्करोति, सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य, प्रतिविसर्जयति । ततः खलु ते=आभ्यन्तरस्थानीयाः पुरुषाः कलादस्य मूषीकारदारकस्य गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव तेतलिपुत्रोऽमात्यस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेतलिपुत्राय अमात्याय ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्=विवाहस्य स्वीकृतिरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

विपुलेण असणपाणखाइमसाइमेण पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडि विसज्जेइ । तएणं ते कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदेंति) हे देवानुप्रियो ! मेरा सन्मान पुरस्कार यही है कि जो तेतलि पुत्र दारिका के निमित्त से मेरे ऊपर ऐसी दया कर रहे हैं–अर्थात् मेरी पुत्री को जो वे अपनी पत्नी बनाने की चाहना कर रहे यही सब से बड़ा उन की ओर से मेरे लिये सन्मान पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है । इस प्रकार कह कर उस कलाद ने उन अभ्यंतरस्थानीय पुरुषों का विपुल अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य से एव पुष्प, वस्त्र, गंध माला एव अलंकारों से खूब सत्कार किया-सन्मान किया । सत्कार एव सन्मान करने के बाद फिर उसने उन्हें विसर्जित कर दिया । वहां से विसर्जित होकर वे अभ्यंतर स्थानीय

निमित्तेण अणुग्गहं करेइ, ते अब्भिंतरट्ठाणिज्जे पुरिसे विउलेण असणपाणखाइमसाइमेण पुप्फवत्थ जाव मल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता, सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ । तएणं ते कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स एयमट्ठं निवेदंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! અમાત્ય તેતલિપુત્ર મારી દારિકાને સ્વીકારવા રૂપ જે મારા ઉપર દયા બતાવી રહ્યા છે તે જ ખરેખર મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કારની જ વસ્તુ છે એટલે કે તેઓ મારી પુત્રીને પોતાની પત્ની પત્ની તરીકે ઇચ્છી રહ્યા છે, એજ તેમના તરફથી મારા માટે સન્માન અને પુરસ્કાર રૂપ છે આ રીતે કહીને તે કલાદે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરુષોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્યથી અને પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માળા અને અલંકારોથી ખૂબ જ સરસ રીતે સત્કાર કર્યો અને તેમનું સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કર્યા પછી તેણે તેમને વિદાય આપી ત્યારપછી તે આભ્યંતર સ્થાનીય પુરુષો તે સુવર્ણ

क्याइं ... मन्त्वा- ... लुडे साते ... नेयलीपुर ... उवा- ... भारियत्ताए ... भारियत्ताए उव- ... दूरूहइ, दूरूहित्ता ... नज्जावित्ता आगि- ... करेइ, करित्ता पोट्टिलाए ... विउलेगं असणपाणखाइम ... तएणं से तेयलिपुत्ते पोट्टि- ... उरालाइं जाव विहरेइ॥सू०३॥

... मूषीकारदारक' अन्यदा कदाचित् ... तिथिनक्षत्रमुहूर्ते

... के घर से निकले और निकल कर जहां ... वहां आकर उन्हों ने तेतलि पुत्र अमा ... की खबर दी। सूत्र ॥ २ ॥

... इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं ... मूसियारदारए) मूषीकार दारक ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि

... અને ત્યાંથી જ્યાં અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો ... ત્યાં જઈને તેઓએ રહતસબધ સ્વીકા ...

) મૂષીકાર દારકે (अन्नया

पोट्टिला दारिका स्नाता सर्वाऽलङ्कारभूषिता 'सीय' शिबिका दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य=आरोह्य'मित्तणाइ सपरिवुडे' मित्रज्ञाति सपरिवृत =मित्रज्ञाति स्वजनसम्बन्धिप रिवेष्टितः, सर्वान् वैवाहिकान् सभारान्=विवाहसंस्कारोचित सामग्रीन् गृहीत्वा स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य 'सव्विड्ढीए सर्वर्द्धया=सर्वप्रकारिकया ऋद्धया सह ' तेयलिपुर' तेतलीपुरस्य मध्यमध्येन निर्गच्छन् यत्रैव तेतलेर्गृह तत्रैव उपा गच्छति, उपागत्य पोट्टिला दारिका तेतलिपुत्राय स्वयमेव भार्यात्वेन ददाति। तत खलु तेतलिपुत्रोऽमात्य, पोट्टिला दारिका स्वभार्यात्वेन ' उवणीय ' उपनी-

---

पोट्टिल दारिय ण्हाय सव्वालकारविभूसिय सीय दुरुहइ) शुभ तिथि नक्षत्र, मुहूर्त्त में पोट्टिला दारिका को स्नान करा कर समस्त अलकारों से विभूषित किया और विभूषित कर के फिर उसे शिविका पर बैठा दिया-(दुरुहित्ता मित्तणाइ सपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयली पुर मज्झ मज्झे ण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ) बैठा कर फिर वह मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनों से परिवेष्टित होकर एव वैवाहिक समस्त सामग्री को लेकर अपने घर से निकला। निकल कर सर्व प्रकार की अपनी ऋद्धि के साथ २ तेतलि पुर के बीच से होता हुआ जहा तेतलि का घर था वहा पहुँचा। वहा पहुँच कर उसने अपनी पुत्री पोट्टिला दारिका को तेतलि पुत्र को अपने आप से भार्या रूप से प्रदान कर दी। (तएण

(सोहणसि तिहिनक्खत्तमुहुत्त सि पोट्टिल दारियं ण्हायं सव्वालकार, भूसिय सीय दुरुहइ)

શુભ તિથિ નક્ષત્ર, મુહૂર્ત્તમા પોટ્ટિલા દારિકાને સ્નાન કરાવીને બધી જાતના અલકારોથી શણગારીને તેને પાલખીમા બેસાડી દીધી

(दुरुहित्ता मित्तणाइसपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्ख मित्ता सव्विड्ढीए तेयलीपुर मज्झ मज्झेण जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवाग-च्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल दारिय तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ)

બેસાડીને તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી અને પરિજનોની સાથે લગ્નની બધી સાધન સામગ્રી લઈને ઘેરથી નીકળ્યો નીકળીને તે સર્વ પ્રકારની પોતાની ઋદ્ધિની સાથે તેતલિપુરની વચ્ચે થઈને જ્યા તેતલિકાન ઘર

मूलम्—तएणं कलाए मूसियारदारए अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि पोट्टिलं दारयं ण्हाय सव्वालंकारभूसियं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता मित्तणाइसंपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए तेयलीपुरं मज्झं मज्झेणं जेणेव तेयलिस्सगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ। तएणं तेयलिपुत्तं पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दूरूहइ, दूरूहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं करावेइ, करावित्ता पाणिग्गहणं करेइ, करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजणं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएणं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं जाव विहरेइ॥सू०३॥

टीका–'तएणं' इत्यादि, ततः खलु कलादो मूषीकारदारकः अन्यदा कदाचित् 'सोहणंसि' शोभने=शुभावहे विवाहयोग्ये 'तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि' तिथिनक्षत्रमुहूर्ते

पुरुष उस सुवर्णकार पुत्र कलाद के घर से निकले और निकल कर जहां तेतलि पुत्र अमात्य था वहां आये–वहां आकर उन्हों ने तेतलि पुत्र अमात्य को विवाह स्वीकृति रूप अर्थ की खबर दी। सूत्र ॥ २ ॥

" तएणं कलाए मूसियारदारए " इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इस के बाद (मूसियारदारए) मूषीकार दारक ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सोहणंसि तिहिनक्खत्तमुहुत्तंसि

કાર પુત્ર કલાદના ઘરથી નીકળ્યા અને ત્યાંથી જ્યાં અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો. ત્યાં પહોંચ્યા અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઈને તેઓએ સ્વીકૃતિ સંબંધ સ્વીકારવા રૂપ ખબર આપી ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

तएणं कलाए मूसियारदारए ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (मूसियारदारए) મૂષીકાર દારકે (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે

'पुप्फजाव' पुष्पयावत्=पुष्पवस्त्रादिना यावन्माल्यालङ्कारादिना सत्कारयति, सत्कार्य 'पडिनिमज्जेइ' प्रति निमर्जयति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽमात्यः पोट्टिलाया भार्यायाम् 'अणुरत्ते' अनुरक्तः=आसक्तः 'अविरत्ते' अविरक्तः= अत्यन्तानुरक्त इत्यर्थः, 'उरालाइ जाव' उरालान् यावत्=उदारान् भोगभोगान्= विषयभोगान् भुञ्जानो विहरति ॥ सू०२ ॥

मूलम्--तएणं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए४ जाए पुत्ते वियंगेइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठएवि, कन्नसक्कुलीएवि, नासापुडाइं फालेइ, अंगमंगाइं वियंगेइ। तएणं तीसे पउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए५ समुप्पज्जित्था-एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ, जाव अंगमंगाइं वियंगेइ। तं जइ अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु ममं तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगो-

पोट्टिला भार्या के मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबन्धि परिजनों का अशन, पान, खाद्य एवं स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार से तथा पुष्प, वस्त्र यावत् माल्य अलंकार आदि से सत्कार करवाया, सत्कार करवाने के बाद फिर उन सब को वहां से विदा कर दिया। इसके पश्चात् पोट्टिला भार्या में आसक्त एवं अनुरक्त बने हुए इस तेतलि पुत्र अमात्य ने उसके साथ पंचेन्द्रिय संबन्धी सुखों का अनुभव करने लगा। सूत्र ॥ ३ ॥

પોટ્ટિલા ભાર્યાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધી અને પરિજનોનો અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી તેમજ પુષ્પ, વસ્ત્ર યાવત્ માલ્ય અલંકાર વગેરેથી સત્કાર કરાવડાવ્યો અને સત્કાર કરાવડાવ્યા પછી તેણે બધાને પોતાના ઘેરથી વિદાય આપી ત્યારપછી પોટ્ટિલા ભાર્યામાં આસક્ત અને અનુરક્ત થયેલો તે અમાત્ય તેતલિપુત્ર તેની સાથે પંચેન્દ્રિય સંબંધી સુખોનો

ताम् उपनयनीकृता पश्यति, दृष्ट्वा पोट्टिलया सार्द्धं पट्टक दूरोहति, दुरुह्य 'सेय पीएहिं' श्वेतपीतैः= रजतसुवर्णनिर्मितैः 'कलसेहिं' कलशैः=घटैः आत्मान 'मज्जावेइ' मज्जति=स्नापयति, मज्जयित्वा अग्निसाक्षिको विवाह इति हेतोः 'अग्गिहोम करावेइ' अग्निहोम कारयति, कारयित्वा 'पाणिग्गहण' पाणिग्रहण= विवाह करोति, कृत्वा पोट्टिलाया भार्यायाः 'मित्तणाइ जाव परिजण' मित्र ज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन चतुर्विधाहारेण

तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारिय भारियत्ताए उवणीय पासइ, पासित्ता पोट्टि लाए सद्धि पट्टय दुरुहइ) तेतलिपुत्र अमात्य ने पोट्टिला दारिका को अपनी भार्या रूप से अपने लिये प्रदान की हुई देखा तो देख कर वह उस पोट्टिला दारिका के साथ पट्टक पर बैठ गया। (दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ, करावित्ता पाणिग्गहण करेइ करित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजण विउलेण असण पाण खाइम साइमेण पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएण से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ जाव विहरेइ) बैठ कर फिर उसने रजत एव सुवर्ण से निर्मित कलशों द्वारा अपना अभिषेक करवाया। अभिषेक करवा कर "अग्नि साक्षिक विवाह होता है" इस ख्याल से फिर उसने अग्नि मे होम करवाया। करवा कर बाद में उसने उस पोट्टिला दारिका का पाणि ग्रहण कर लिया। विवाह हो चुकने के अनन्तर फिर उस तेतलि पुत्र अमात्य ने

(तएण तेयलिपुत्ते पोट्टिल दारिय भारियत्ताए उवणीय पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए सद्धिं पट्टय दुरुहइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યે પોટ્ટિલા દારિકાને તેની ભાર્યા રૂપમા આપેલી જોઈને તે પોટ્ટિલા દારિકાની સાથે પટ્ટક ઉપર બેસી ગયો.

(दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं अप्पाण मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ करावित्ता पोट्टिलाए भारियाए मित्तणाइ जाव परिजण विउलेण असण पाण खाइम साइमेण पुप्फ जाव पडिविसज्जेइ। तएण से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइ जाव विहरेइ)

બેસીને તેણે ચાદી અને સોનાના કળશો વડે પોતાનો અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવડાવીને તેણે 'અગ્નિ સાક્ષિક લગ્ન થાય છે' આમ વિચારીને તેણે અગ્નિમા હવન કરાવડાવ્યો ત્યારપછી તેણે પોટ્ટિલા દારિકાનુ પાણિ ગ્રહણ કર્યું લગ્નની વિધિ પૂરી થયા બાદ ... અમાત્યે

करोतीति व्यङ्गयति=अङ्गहीनान् करोति। 'विइतेइ' इति पाठे विकर्तयति छिनत्ति इत्यर्थोऽवोध्य । तत्प्रकारमाह–अप्येकेषां=केषाचिदुत्पन्नाना पुत्राणां हस्ताङ्गुलीश्छिनत्ति, अप्येकेषां=केपाचित् वालाना हस्ताङ्गुष्ठान् छिनत्ति। एव पादाङ्गुलिकाः पादाङ्गुष्ठान् अपि, एव 'कण्णसक्कुलीए त्ति' कर्णशष्कुलीरपि=कर्णानपि तथा नासापुटानि च 'फालेइ' पाटयति=छिनत्ति, इत्यर्थं । अनेन प्रकारेण एव कनकरथो राजा वालानाम् 'अगमगाइ' अङ्गानि अगानि मर्माण्यङ्गानि व्यङ्ग्यति=छिनत्ति। तत खलु अनेन प्रकारेण समुत्पन्नाना पुत्राणा विनाशानन्तरम् 'तीसे' तस्याः कनकरथस्य राज्याः पद्मावत्या देव्या अन्यदा 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे अयमेतद्रूप आ यात्मिकः=आत्मगतो

उत्पन्न हुए अपने पुत्रों को अगहीन कर देता। (अप्पेगइयाणं हत्थगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए, छिंदइ, एव पायगुलियाओ पायगुट्ठए वि कन्नसक्कुलीए वि, नासापुडाइ फालेइ, अगमगाइ वियगेइ) कितनेक बालकों के वह हाथो की अगुलियों को छेद देता था, कितनेक बालकों के हाथों के अगूठों को–काट देता था, इसी तरह वह पैरो की अगुलियो को पैरों के अगुष्ठों को, कानों को नासा पुटों को छेद देता था। इस तरह यह कनक रथ राजा बालकों के अगों का भगकर देता था। (तएण तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था) इस प्रकार समुत्पन्न पुत्रो के विनाश के बाद उस कनकरथ राजा की रानी पद्मावती देवी के किसी एक समय रात्रि के पश्चिम भाग में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न

(अप्पेगइयाण हत्थगुलियाओ छिंदइ अप्पेगइयाण हत्थगुट्ठए छिंदइ, एव पायगुलियाओ पायगुट्ठए वि कन्नसक्कुलिए वि, नासा पुडाइ फालेइ, अगमगाइ वियंगेइ)

કેટલાક બાળકોની તે હાથોની આગળીઓ કપાવી નખાવતો હતો, કેટલાક બાળકોના હાથોના અગૂઠાઓ કપાવી નખાવતો હતો, આ રીતે તે પગોની આગળીઓને, પગોના અગૂઠાઓને, કાનોને, નાકને કપાવી નખાવતો હતો આમ તે કનકરથ રાજા બાળકોના અગોનુ તે છેદન કરાવી નખાવતો હતો

(तएण तीसे पाउमावईए देवीए अन्नया पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था)

આ પ્રમાણે જન્મેલા પુત્રોના વિનાશ પછી તે કનકરથ રાજાની રાણી પદ્માવતી દેવીને કોઈ એક સમયે રાત્રિના છેલ્લા પહોરમા આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

वेमाणीए विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तेयलि-पुत्तं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवा-णुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, तं जइ णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि । तएणं तुमं देवाणु-प्पिया ! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खे-माणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि । तएणं से दारए उम्मुक्कबाल-भावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायणं भविस्सइ । तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावईए एयमट्ठं पडि-सुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए ॥ सू० ४ ॥

टीका-'तएणं से' इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा राज्ये च=राष्ट्रे च=देशे बले=सैन्ये च, वाहने=अश्वादिषु च कोशे=भाण्डारे च धान्यादीनां कोष्ठागारे च अन्तःपुरे च, 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मोहं प्राप्तः, गृद्ध'=आसक्तः ग्रथितः=विशेषेणासक्तः, अध्युपपन्नः=सर्वथा तत्परायणः, जाए २=जातान् २= उत्पन्नान् २ पुत्रान् 'वियगेइ' व्यङ्गयति=विगतानि अङ्गानि येषां तान् व्यङ्गान्

'तएणं से कणगरहे राया' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए ४) वह कनकरथ राजा राज्य में राष्ट्र में सैन्य में अश्वादि वाहन में, धान्यादिकों के कोष्ठागार में एवं अन्तःपुर में मूर्च्छित गृद्ध अ यन्त अनुरक्त एवं अध्युपपन्न-सर्वथा तत्परायण बन गया। सो (जाए पुत्ते वियगेइ)

तएणं से कणगरहे राया इत्यादि—

(तएणं) त्यारबाद

टीकार्थ-(से कणगरहे राया रज्जेय रट्ठे य बले य वाहणे य कोट्ठागारे य अंतेउरे य मुच्छिए ४)

તે કનકરથ રાજા રાજ્ય રાજ્યમાં, રાષ્ટ્રમાં, સૈન્યમાં, અશ્વ વગેરે વાહનોમાં, ધાન્ય વગેરેની બાબતમાં, કોઠાગારમાં અને રણવાસમાં મૂર્છિત, ગૃદ્ધ, ઘણો જ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન સંપૂર્ણપણે તત્પર થઈ ગયો. એથી (जाए पुत्त वियगेइ) તે જન્મેલા પોતાના પુત્રોને અંગહીન બનાવી દેતો.

'अणुपुव्वेण' आनुपूर्व्येण=यथाक्रमम् सरक्षन् भूपदृष्टयादितः सगोपायन् भूपकृतो पद्रवात् त दारक 'सवड्ढेइ' सवर्द्धय, तस्य बालस्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु स दारक' 'उम्मुक्कबालभावे' उन्मुक्तबालभाव=उन्मुक्त परित्यक्तो बालभावो बाल्यत्व येन स, 'जोव्वणगमणुप्पत्ते' यौवनकमनुप्राप्त=प्राप्ततारुण्यः तव मम च

ण सारक्खेमाणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि। तएण से दारए उम्मुक्कबाल भावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए)

तो यदि मेरे यहां पुत्र उत्पन्न होता है–मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ– तो मुझे यही योग्य है कि मै राजा कनकरथ को खबर न पडे इस रूप से उसकी रक्षा करूँ–उनकी दृष्टि से –उसे बचाकर रखू–ऐसा उसने मन से विचार किया। विचार कर फिर उसने अमात्य तेतलिपुत्र को बुलाया–बुलाकर उस से ऐसा कहा–हे देवानुप्रिय! कनकरथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्छित गृद्ध–अत्यत अनुरक्त एव अध्यु पपन्न बना हुआ है जो वह उत्पन्न हुए बालको को अग हीन कर देता है–उनके हाथो की अगुलियों आदि अङ्गों को काट देता है। तो हे देवा नुप्रिय। यदि मै पुत्र को उत्पन्न करती हूँ तो देवानुप्रिय तुम उसे राजा को खबर न पडे इस रूप से रक्षित करते हुए और उनकी दृष्टि से बचाते हुए क्रमशः वृद्धिगत करो। जब वह बालक–क्रमशः सवर्द्धित होता हुआ बाल्यावस्था से रहित होकर यौवनावस्था वाला बन जायगा

माणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि। तएण से दारए उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणु पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएण से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता पडिगए)

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરૂ તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમા આટલો બધો મૂર્છિત, ગૃદ્ધ–ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડયો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અગો કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અગોને કપાવી નાખે છે તો હે દેવા નુપ્રિય! હુ પુત્રને જન્મ આપુ તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરતા તેનુ ભરણ–પોષણ કરજો. જો તે

विचारो यावत् मनोगत सङ्कल्पः, 'समुप्पज्जित्था' समुदपद्यत । सङ्कल्पप्रकार माह–'एवं खलु' इत्यादि-एवं खलु कनकरथो राजा राज्ये च यावत् व्यङ्गयति। यावत् अङ्गानि अङ्गानि व्यङ्गयति अनेन प्रकारेण कुत्सितमारेण मारयति । तद्यदि खलु अहं दारकं 'पयायामि' प्रजनयामि, सेयं खलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए' श्रेयः खलु मम तं दारकं कनकरथस्य 'रहस्सियं चेव' रहस्यिकमेव=गुप्तमेव आपद्य सरक्षन्त्या 'सारक्खमाणीए' सरक्षन्त्या. भूपदृष्टयादेः, 'संगोवेमाणीए' संगोपायन्त्या भूपकृतोपद्रवात् विहर्तुम्, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा एवं सप्रेक्षते=एवं विचारयति सप्रेक्ष्य=विचार्य तेतलिपुत्रममात्यं प्रधानं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्–एवं खलु देवानुप्रिय ! कनकरथो राजा 'रज्जेय जाव वियंगेइ' राज्ये च यावद् व्यङ्गयति=राज्यादिषु च मूर्च्छितो जातान् पुत्रान् विकलाङ्गान् करोति एवं तेषामङ्गोपाङ्गानि खण्डयति। अनया रीत्या पुत्रान्मारयति, तद्यदि खलु अहं देवानुप्रिय ! दारकं प्रजनयामि । तत् खलु त्वं कनकरथस्य रहस्यिकमेव

हुआ–(एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ, जाव अंगमगाइ वियंगेइ) यह कनकरथ राजा राज्य आदिमें मूर्छित गृद्ध, अत्यन्त अनुरक्त एवं अभ्युपपन्न अत्यन्त तत्पर बनकर पुत्रों को काट देता हैं–बुरी तरह से उन्हें मार डालता है (तं जइ अहं दारयं पायायामि, सेयं खलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता, तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ तं जइणं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि, तएणं तुमं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वे

(एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगेइ, जाव अंगमगाइ वियंगेइ) કનકરથ રાજા રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં મૂર્છિત ગૃદ્ધ, ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન–અત્યન્ત તત્પર થઈને–પુત્રોને અંગહીન કરાવી નાખે છે યાવત્ તેમના અંગોને કપાવી નાખાવે છે અને ખરાબ હાલતમાં તેઓને મરાવી નખાવે છે

(तं जइ अहं दारयं पायायामि, सेयं खलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव सारक्खेमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे, राया रज्जे य जाव वियंगेई तं जइणं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं पयायामि, तएणं तुमं देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेण सारक्खे-

'अणुपुव्वेण' आनुपूर्व्येण=यथाक्रमम् सरक्षन् भूपदृष्ट्यादितः सगोपायन् भूपकृतो पद्रवात् त दारक 'सवड्ढेइ' सवर्द्धय, तस्य बालस्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु स दारक' 'उम्मुक्कबालभावे' उन्मुक्तबालभाव =उन्मुक्त परित्यक्तो बालभावो बालत्व येन स', 'जोव्वणगमणुप्पत्ते' यौवनकमनुप्राप्त =प्राप्ततारुण्य. तव मम च

ण सारक्खेमाणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि। तएण से दारए उम्मुक्कबाल भावे जोव्वणगमणुप्पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएणं से तेयलिपुत्ते पउमावईए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता पडिगए)
तो यदि मेरे यहां पुत्र उत्पन्न होता है–मैं पुत्र को उत्पन्न करती हूँ– तो मुझे यही योग्य है कि मै राजा कनकरथ को खबर न पडे इस रूप से उसकी रक्षा करूँ–उनकी दृष्टि से –उसे बचाकर रखू–ऐसा उसने मन से विचार किया। विचार कर फिर उसने अमात्य तेतलिपुत्र को बुलाया–बुलाकर उस से ऐसा कहा–हे देवानुप्रिय! कनकरथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्छित गृद्ध–अत्यत अनुरक्त एव अध्यु पपन्न बना हुआ है जो वह उत्पन्न हुए बालको को अग हीन कर देता है–उनके हाथो की अगुलियों आदि अङ्गों को काट देता है। तो हे देवा नुप्रिय! यदि मै पुत्र को उत्पन्न करती हूँ तो देवानुप्रिय तुम उसे राजा को खबर न पडे इस रूप से रक्षित करते हुए और उनकी दृष्टि से बचाते हुए क्रमशः वृद्धिगत करो। जब वह बालक–क्रमशः सवर्द्धित होता हुआ बाल्यावस्था से रहित होकर यौवनावस्था वाला बन जायगा

माणे सगोवेमाणे सवड्ढेहि। तएण से दारए उम्मुक्क बालभावे जोव्वणगमणु पत्ते तव य मम य भिक्खाभायण भविस्सइ तएण से तेयलिपुत्ते पउमावइए एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता पडिगए)

હવે મને પુત્ર ઉત્પન્ન થવાનો જ છે, તો મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે કનકરથ રાજાને ખબર પડે નહિ તે રીતે બાળકની રક્ષા કરું તેમની કુદૃષ્ટિથી તેને બચાવું આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે અમાત્ય તેતલિપુત્રને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેના કામમા આટલો બધો મૂર્ચ્છિત, ગૃદ્ધ–ખૂબજ આસક્ત અને અધ્યુપપન્ન થઈ પડયો છે કે તે જન્મેલા બાળકોના અ ગો કપાવી નાખે છે તેમના હાથોની આગળીઓ વગેરે અ ગોને કપાવી નાખે છે જો હે દેવા નુપ્રિય! હુ પુત્રને જન્મ આપુ તો દેવાનુપ્રિય તમે રાજાને ખબર પડે નહીં તેમ તેમની કુદૃષ્ટિથી બાળકની રક્ષા કરવા તેનુ ભરણ–પોષણ કરજો. જો તે

'भिक्खाभायण' भिक्षाभाजनम्=भिक्षाया आधारभूतो भविष्यति । ततः खलु स तेतलिपुत्र पद्मावत्याः एतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य पद्मावत्या समीपात् प्रतिगत स्वगृहे गतवान् ॥सू०४॥

मूलम्–तएणं पउमावई य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ, सयमेव परिवहइ । तएणं सा पउमावई नवण्ह मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया, जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्ह मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया । तएणं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमे अम्मो ! तेतलिगिहे तेतलिपुत्तं अमच्चं रहस्सियं चेव सद्दावेह । तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेण णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता, जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ । तएणं तेतलिपुत्तं अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेण रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव

तो हमारे तुम्हारे दोनों के लिये भिक्षा पात्र–भिक्षा का आधार भूत–बन जायगा इस–प्रकार पद्मावती के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्यने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वह पद्मावती देवी के पास से अपने घर पर चला आया ॥ सू० ४ ॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે તો મારા અને તમારા બન્નેને માટે ભિક્ષાપાત્ર ભિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘેર આવી ગયો. સૂ. ૪

उवागए करयलपरिग्गहियं दसणह सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी- संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्वं ? तएणं पउमावई तेतलिपुत्त एवं वयासी—एवं खलु कणगरहे राया जाव वियंगेइ, अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारग पयाया त तुम णं देवाणुप्पिया ! एयं दारग गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्तिकट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेण्हइ गिण्हत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स रहस्सियं अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अय च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, त णं तुम देवाणुप्पिया ! इम दारग कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवाहि य संवड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्निय दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिणिग्गए । तएण तीसे पउमावईए अगपरियारियाओ पउमावइ देविं विणिहायमावन्न च

'भिक्खाभायण' भिक्षाभाजनम्=भिक्षाया आधारभूतो भविष्यति। ततः खलु स तेतलिपुत्र पद्मावत्या एतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य पद्मावत्या समीपात् प्रतिगत स्वगृहं गतवान् ॥सू० ४॥

मूलम्–तएणं पउमावई य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ, सयमेव परिवहइ। तएण सा पउमावई नवण्ह मासाणं जाव पियदसणं सुरूवं दारग पयाया, ज रयणिं च णं पउमावई दारय पयाया त रयणिं च ण पोट्टिला वि अमच्ची नवण्ह मासाण विणिहायमावन्न दारियं पयाया। तएणं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह ण तुमे अम्मो! तेतलिगिहे तेतलिपुत्त अमच्च रहस्सियं चेव सद्दावेह। तएण सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता, जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! पउमावई देवी सद्दावेइ। तएण तेतलिपुत्त अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण रहस्सियं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव

तो हमारे तुम्हारे दोनों के लिये भिक्षा पात्र–भिक्षा का आधार भूत–बन जायगा इस–प्रकार पद्मावती के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्यने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वह पद्मावती देवी के पास से अपने घर पर चला आया॥ सू० ४॥

બાળક આખરે મોટો થઈ જશે અને બચપણ વટાવીને જુવાન થઈ જશે તો મારા અને તમારા બંનેને માટે ભિક્ષાપાત્ર ભિક્ષાનો આધારભૂત થઈ જશે આ રીતે પદ્માવતીના આ કથન રૂપ અર્થને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે સ્વીકાર કરીને તે પદ્માવતી દેવીની પાસેથી વિદાય લઈને પોતાને ઘેર આવી ગયો. સૂ. ૪

उवागए करयलपरिग्गहियं दसणह सिरसावत्त मत्थए अंजलि कट्टु एव वयासी-संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्वं ? तएणं पउमावई तेतलिपुत्त एवं वयासी—एव खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ, अहं च ण देवाणुप्पिया ! दारग पयाया त तुम णं देवाणुप्पिया ! एय दारग गेण्हाहि जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइ त्तिकट्टु तेतलिपुत्तं दलयइ । तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारग गेण्हइ गिण्हत्ता उत्त-रिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स रहस्सिय अवद्दारेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता, जेणेव सये गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिल एव वयासी—एवं खलु देवा-णुप्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियगेइ, अय च णं दारए कणगरहस्सपुत्ते पउमावईए अत्तए, त णं तुम देवाणुप्पिया ! इम दारग कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य सगोवाहि य सवड्ढेहि य । तएणं एस दारए उमुक्कवालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टि-लाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता, पोट्टिलाओ पासाओ विणि-हायमावन्निय दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणे...

दारियं पासति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवाग-च्छति उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं म-त्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी एवं खलु सामी! पउमावई देवी मइल्लियं दारियं पयाया। तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि लोइयाई मयकि-च्चाइं करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए जाए। तएणं से तेत-लिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी—खिप्पा-मेव चारगसोहणं जाव ठिइवडियं, जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए, तं होउ णं दारए, नामेणं कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः खलु पद्मावती च देवी पोट्टिला च अमात्यी सममेव गर्भं गृह्णाति, सममेवगर्भं परिवहति=धारयति। ततः खलु सा पद्मावती 'नवण्हं मासाणं जाव' नवानां मासानां नवसु मासेसु व्यतीतेषु यावत् सत्सु 'पियदंसणं' पियदर्शनम्=प्रियं चेतोहरं दर्शनमवलोकनं यस्य तं = दर्शकजन-चेतोह्लादजनकं सुरूपं दारकं 'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती। यस्यां रजन्यां च

'तएणं पउमावई य देवी' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (पउमावई य देवी पोट्टिलाय अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी और पोट्टिला अमात्यी ने साथ ही गर्भ धारण किया। (तएणं सा पउमावई नवण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया) पद्मावती देवी ने जब नौ मास अच्छी तरह गर्भ के समाप्त हो चुके तब दर्शकजन चित्ताह्लाद जनक अच्छे रूप शाली पुत्र को जन्म दिया। (जं रयणिं च णं पउमोवई दारयं पयाया

'तएणं पउमावइ य देवी' इत्यादि—

टीकार्थ—तएणं) त्यारपछी (पउमावइ य देवी पोट्टिला य अमच्ची सयमेव गब्भं गिण्हइ) पद्मावती देवी अने पोट्टिला अमात्यीओ साथे साथे ज गर्भधारण कर्यो (तएणं सा पउमावई नावण्हं मासाणं जाव पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया) ज्यारे नव मास सारी रीते पसार थई गया त्यारे पद्मावती देवीओ जोनाराओ जोईने प्रसन्न थई जाय ओवा रूपाळा पुत्रने जन्म आप्यो।

खलु पद्मवती दारक प्रजाता तस्या रजन्या च खलु पोट्टिलापि अमात्यी 'नवण्हं मासाणं' नवानां मासानाम्=नवसु मासेषु व्यतीतेषु 'विणिहायमावन्नं' विनिघातमापन्नाम्=मृताम् दारिकां प्रजाता=जनितवती। 'तएणं' ततः खलु पुत्रजन्मानन्तरं सा पद्मावती देवी अम्बधात्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छत खलु यूयमम्ब! 'तेतलिगिहे' तेतलिगृहे=तेतलेरमात्यस्य गृहे तेतलिपुत्रममात्यं रहस्यिकम्=अन्यैरपरिज्ञातमेव शब्दयत=आह्वयत। ततः खलु सा अम्बधात्री तथेति प्रतिशृणोति,=अङ्गीकरोति, प्रतिश्रुत्य अन्तःपुरस्य 'अवदारेण' अपद्वारेण=पृष्ठद्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव तेतलेर्गृहम्, यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य करतल यावद् अञ्जलिपुटं कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे

तं रयणिं च णं पोट्टिलावि अमची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया) जिस रात्रि में पद्मावती देवी ने पुत्र को जन्म दिया था उसी रात्रि में पोट्टिला अमात्यी ने भी नौ मास व्यतीत हो जाने पर एक मरी हुई कन्या को जन्म दिया (तएणं सा पउमावई अम्मधायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमे अम्मो! तेतलिगिहे तेतलीपुत्तं अमच्चं रहस्सियं चेव सद्दावेह) इस के बाद उस पद्मावती ने अम्बधात्री को बुलवाया और बुलवाकर उससे ऐसा कहा हे अम्ब! तुम तेतलि अमात्य के घर पर जाओ। और किसी को पत्ता न पड़े इस रूप से तुम तेतलि पुत्र अमात्य को बुला लाओ। (तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया

(जं रयणिं च णं पउमावई दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया)

જે રાત્રિએ પદ્માવતી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો. તે જ રાત્રિએ પોટ્ટિલા અમાત્યીએ પણ નવ માસ પૂરા થવાથી એક મરેલી કન્યાને જન્મ આપ્યો.

(तएणं सा पउमावई अम्मधायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमे अम्मो! तेतलिगिहे तेतलिपुत्तं अमच्चं रहस्सियं चेव सद्दावेह)

ત્યારપછી તે પદ્માવતીએ અંબધાત્રીને બોલાવી અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે અંબ! તમે તેતલિ અમાત્યને ઘેર જાઓ અને કોઈને ખબર પડે નહિ તેમ તેતલિપુત્ર અમાત્યને તમે અહીં બોલાવી લાવો.

(तएणं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेण णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव तेतलिस्स गिहे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवा-

देवानुप्रिय! पद्मावती देवी शब्दयति। ततः खलु तेतलिपुत्रः 'अम्मधाईए अंतिए' अम्मधात्र्या अन्तिके=अम्मधात्र्याः सकाशात् एतमर्थं श्रुत्वा हृष्टतुष्टोऽम्म धात्र्या सार्द्धं स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य अन्तःपुरस्य अपद्वारेण रहस्यिक मेव=प्रच्छन्नमेव अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य, यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव 'उवागए' उपागतः=समागतः करतलपरिगृहीत दशनख शिरसावर्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं= वक्ष्यमाणप्रकारेण अवदत्-'संदिसतु' संदिशतु=आज्ञापयतु खलु हे देवानुप्रिये!

पउमावई देवी सद्दावेइ। तएणं तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठ तुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ) पद्मा वती देवी के इस प्रकार वचन सुनकर उस अम्मधात्री ने तथेति कह कर उसकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर के फिर वह अंतः पुर के अपद्वार से-पीछे के दरवाजे से बाहिर निकली-निकल कर जहां तेतलि का घर और उसमें भी जहा तेतलिपुत्र था वहा गई। वहा जाकर पहिले उसने तेतलिपुत्र अमात्य को दोनों हाथ जोड़ कर नमस्कार किया-बाद में बोली-हे देवानुप्रिय! आपको पद्मावती देवी बुला रही हैं। अम्मधात्री के मुख से इस प्रकार वचन सुन कर व तेतलि पुत्र हर्षित एव तुष्ट होता हुआ अम्माधात्री के साथ ही अपने घर से निकला। (णिग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवद्दारेण रहस्सिय चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागए करयलपरिग्गहिय दसणहं सिरसावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एवं वया

गच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! पउमावई देवी सद्दावेइ। तएण तेतलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्म धाईए सद्धिं साओ गिहाओ णिग्गच्छइ)

આ રીતે પદ્માવતી દેવીની વાત સાભળીને અ બધાત્રીએ 'તથેતિ' (સારૂ) આમ કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી સ્વીકારીને તે રણવાસના પાછલા બારણેથી બહાર નીકળી અને નીકળીને જ્યા તેતલિપુત્રનુ ઘર અને તેમા પણ જ્યા તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતા ત્યા પહોચી ત્યા પહોંચીને તેણે સૌ પહેલાં બને હાથ જોડીને તેતલિપુત્રને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તેણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તમને પદ્માવતી દેવી બોલાવે છે અ બધાત્રીના મુખથી આ જાતની વાત સાભળીને તેતલિપુત્ર હર્ષિત તેમજ સ તુષ્ટ થતો અ બધાત્રીની સાથે સાથે જ તે પોતાના ઘેરથી રણવાસ તરફ રવાના થયો

(णिगच्छित्ता अतेउरस्स अवद्दारेण रहस्सिय चेव अणुप्पविसइ अणुप्प विसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागए, ... —दसणहं सिर-

'ज मए कायन्त्र ' यन्मया कर्तव्यम् , ततः खलु पद्मावती देवी तेतलिपुत्रमेवमवदत् ' एव खलु कणगरहे राया वियगेइ ' एव खलु कनकरथो राजा व्यङ्गयति= हे देवाणुप्रिय ! मया पूर्वमेनकथित-यत्कनकरथ उत्पन्नान्पुत्रान् विकृताऽङ्गान् कृत्वा मारयति । अह च खलु देवानुप्रिय ! दारक प्रजाता=प्रजनितवती, ' त ' तस्मात् कारणात् त्व खलु देवानुप्रिय ! एत दारक गृहाण यावत् तव च मम च

सी संदिसतु णं देवाणुप्पिया ! जंमए कायव्व ? तएणं पउमावई तेतलिपुत्तं एव वयासी-एवं खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ, अह च णं देवाणुप्पिया दारग पयाया त तुम णं देवाणुप्पिया ! एय दारग गेण्हाहि) चलकर वह अतः पुर के पृष्ठ भाग के द्वार से किसी को आने का पता न लगे इस रूप से वहा प्रविष्ट हुआ। प्रविष्ट होकर जहां पद्मावती देवी थी वहां गया। वहा जाकर उसने दोनों हाथ जिसमें जुडे हुए हैं और दशोंनख जिसमें हैं ऐसी अजलिको दक्षिण तरफ से घुमाकर बाये तरफ लेजाकर और मस्तकपर अजलि को रखकर कहा-अर्थात् नमस्कार कर पूछा हे देवानुप्रिये ! जो मुझे करने योग्य कार्य है उस के करने की आप आज्ञा दीजिये। इस के बाद पद्मावती देवी ने तेतलिपुत्र से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! मैंने तुमसे पहिले ही कह रक्खा है कि कनकरथ उत्पन्न हुए पुत्रों को विकृत अग बनाकर मार डालता है। और मैंने हे देवानुप्रिय ! पुत्र को उत्पन्न किया है। इसलिये तुम हे देवा-

सावत्त मत्थए अजलिं कट्टु एव वयासी-स दिसतु ण देवाणुप्पिया ! जंमए करणिज्ज तएण परमावीइ देवी वयासी-एव खलु कणगरहे राया जाव वियगेइ अह च ण देवाणुप्पिया ! दारग पयाया त तुम णदेवाणुप्पिया ! एव दारग गेण्हाहि)

ત્યા પહોચીને રણવાસના પાછલા બારણેથી કોઈને ખબર પડે નહિ તેમ રણવાસમા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો. પ્રવિષ્ટ થઈને તે જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા પહોચ્યો. ત્યા પહોચીને તેણે દશે નખો જેમા છે એવા બને હાથ જોડીને અજલિ બનાવીને તેને જમણી બાજુથી ફેરવીને ડાબી બાજુ તરફ લઈ જઈને મસ્તક ઉપર અજલિ મૂકીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-એટલે નમસ્કાર કરીને પૂછ્યુ કે-હે દેવાનુપ્રિયે ! મારે લાયક જે કંઈ પણ કામ હોય તે મને કહો. ત્યાર પછી પદ્માવતી દેવીએ તેતલિપુત્રને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને મે પહેલેથી કહી રાખ્યુ છે કે રાજા કનકરથ ઉત્પન્ન થયેલા પુત્રોને અગહીન કરી નાખે છે અને હે દેવાનુપ્રિય ! મારે પુત્ર થયો છે હે દેવાનુપ્રિય ! એ બાળકને તમે લઈ જાઓ.

भिक्षाभाजनमिव भिक्षाभाजनं, यथा भिक्षाभाजनं जीवन निर्वाहयति तथाऽयमपि जीवननिर्वाहको भविष्यति 'त्तिकट्टु' इति कृत्वाः इत्युक्त्वा 'तेतलिपुत्त' तेतलिपुत्राय प्राकृतत्वादत्र द्वितीया ददाति=तेतलिपुत्रस्य हस्ते दारकमर्पयति। तत्र. खलु तेतलिपुत्रः पद्मावत्या हस्ताभ्यां दारकं गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण=उत्तरीयवस्त्रेण तं 'पिहेइ' पिदधाति=आच्छादयति. 'पिहित्ता' पिधाय अन्तः-पुरस्य 'रहस्सियं' रहस्यिकं=प्रच्छन्नं यथा स्यात्तथा अपद्वारेण निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वकं गृहं यत्रैव पोट्टिला भार्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पोट्टिलामेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिये! कनकरथो राजा राज्ये च यावद् व्यङ्गयति स्वपुत्रान् मारयति अयं च खलु मम हस्तस्थितो दारकः कनकरथस्य पुत्रः पद्मावत्या आत्मजो मया आनीतः, 'त' तस्मात् कारणात् खलु हे देवानुप्रिये! इमं दारकं 'कणगरहस्स

नुप्रिय! इस बालक को लेलो (जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइत्ति कट्टु तेतलिपुत्त दलयइ) यावत् यह हमारे तुम्हारे लिये भिक्षा का भाजन हो जायगा जिस प्रकार भिक्षा भाजन जीवन निर्वाहक होता है-उसी तरह यह भी जीवन निर्वाहक होवेगा इस प्रकार कहकर उसने तेतलिपुत्र के हाथमें अपने पुत्र को दे दिया। (तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हई) तेतलिपुत्र ने भी पद्मावती देवीके हाथसे बालक को ले लिया। (गिण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता अंते उरस्स रहस्सियं अवद्दारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता-पोट्टिलं एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं

(जाव तव मम य भिक्खाभायणे भविस्सइत्तिकट्टु तेतलिपुत्त दलयइ)

એ મારા અને તમારા માટે 'ભિક્ષાભાજન' થશે એટલે કે જેમ ભિક્ષાનું પાત્ર જીવનને ટકાવનાર હોય છે તેમજ આ બાળક પણ જીવન નિર્વાહક થશે આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેતલિપુત્રના હાથમાં પોતાના નવ જાત પુત્રને સોંપી દીધો.

(तएणं तेतलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ)

તેતલિપુત્રે પણ પદ્માવતી દેવીના હાથમાંથી બાળક લઈ લીધું

(गिण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ पिहित्ता अंतेउरस्स रहस्सियं अवद्दारेण णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पोट्टिलं एवं वयासी, एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव वियंगेइ, अयं च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए

रहस्सिय चेव ' कनकरथस्य रहस्यिकमेव=कनकरथो यथा न जानीयात्तथैव ' अणुपुव्वेणं' आनुपूर्व्येण=अनुक्रमेण तत्कृतोपद्रवतश्च 'सारक्खाहि य' सरक्ष्य कनकरथकृतोपद्रवतः संगोपाय च तत्कृतोपद्रवतः, तथा संवड्ढेहिय ' संवर्धय च=स्तन्यपानादिनाऽस्य बाल्स्य वृद्धिमुपनय । ततः खलु एष दारकः उन्मुक्तबालभावः तव च मम च पद्मावत्याश्च 'आहारे' आधार =आधारस्वरूपो भविष्यति ' तिकट्टु ' इतिकृत्वा

च ण दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए, त णं तुम दारगं कणगरहस्स रहस्सियं चेव अणुपुव्वेण सारक्खाहि य संगोवाहि य संवड्ढेहि य) लेकर फिर उसे अपने दुपट्टे से ढक लिया और ढककर प्रच्छन्न गुप्तरूप से अतः पुर के पीछे के दरवाजे से बाहर निकल गया। निकल कर जहा अपना घर और पोट्टिला भार्या थी वहा गया। वहाँ जाकर उसने पोट्टिला भार्या से इस प्रकार कहा–देवानुप्रिये ! कनक रथ राजा राज्य आदि में इतना अधिक मूर्च्छित हो रहा है कि वह उत्पन्न हुए अपने बालकों को अङ्ग विच्छेद कर मार डालता है। यह जो पुत्र मेरे हाथ में है वह कनक रथ राजा का पुत्र है यह पद्मावती देवी की कुक्षि से उत्पन्न हुआ है। इसलिये हे देवाणुप्रिये ! तुम इस पुत्र को कनक रथ को खबर न पडे इस तरह प्रच्छन्न रूप से क्रमशः रक्षित करती रहो–पालती रहो उसकी दृष्टि से बचाती रहो और स्तन्य पान आदि से बढाती रहो। (तएणं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य

त णं तुम देवाणुप्पिया ! इम दारगं कणगरहस्स रहस्सिय चेव अणुपुव्वेण सारक्खाहिं य संगोवाहि य संवड्ढेहिय)

લઇને તેણે ખેસમા ઢાકી દીધુ, અને ઢાકીને છુપી રીતે રણવાસના પાછલા બારણેથી બહાર નીકળી ગયો. બહાર નીકળીને જ્યા પોતાનુ ઘર અને પોટ્ટિલા ભાર્યા હતી ત્યા ગયો. ત્યા પહોચીને તેણે પોટ્ટિલા ભાર્યાને એમ કહ્યુ કે–હે દેવાનુપ્રિયે ! રાજા કનકરથ રાજ્ય વગેરેની બાબતમા એટલો બધો આસક્ત થઇ ગયો છે કે તે જન્મ પામેલા પોતાના બાળકોના અગોને કપાવીને મારી નાખે છે મારા હાથમા જે બાળક છે તે પણ કનકરથ રાજાનો જ પુત્ર છે પદ્માવતી દેવીના ગર્ભમાથી આનો જન્મ થયો છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાને જાણ થાય નહિ તે પ્રમાણે તમે છુપી રીતે આ પુત્રનુ રક્ષણ કરતા રહો, પોષણ કરતા રહો, રાજાની કુદૃષ્ટિથી એને દૂર રાખતા રહો અને સ્તન્યપાન એટલે કે દૂધ વગેરે પીવડાવીને એને મોટો કરો

इत्युक्त्वा पोट्टिलायाः पार्श्वे 'णिक्खिवइ' निक्षिपति=स्थापयति, तथा पोट्टिलायाः पार्श्वात् ता 'विणिहायमावण्ण' विनिघातमापन्ना=मृतां दारिका गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्तः पुरस्य अपद्वारेण अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मावत्याः देव्याः पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा तावत् 'पडिणिग्गए' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिर्गत्य स्वगृह

मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइत्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विणिहायमावन्नियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ पिहित्ता, अंतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ) इस तरह क्रमशः वृद्धिंगत होता हुआ यह बालक जब बाल्यावस्था से रहित हो जावेगा तो हमारा तुम्हारा और पद्मावती देवी का आधार होगा, ऐसा कहकर उस तेतलिपुत्र अमात्य ने उस पुत्र को पोट्टिला के पास रख दिया। और पोट्टिला के पास से मरी हुई कन्या को उठा लिया-उठाकर उसे अपने उत्तरियवस्त्र से ढँक लिया, ढँक कर फिर अतः पुर के पिछले दरवाजे से वहा आया (अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए) वहा आकर जहां पद्मावती देवी थी वहा पहुँचा, वहां पहुँच कर उसने उस मृत कन्या को पद्मावती देवी के

(तएण एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए, पासेणिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्निय दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहित्ता, अतेउरस्स अवदारेण अणुप्पविसइ)

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક જ્યારે બચપણુ વટાવીને જુવાન થઇ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર થશે આ પ્રમાણે કહીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોટ્ટિલાની પાસે મૂકી દીધો અને પોટ્ટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી ઉપાડીને તેને પોતાના એસથી ઢાંકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણવાસના પાછલા બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો.

(अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए)

ત્યા જઇને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પહોચીને તેણે તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામા મૂકી દીધી અને ત્યા મૂકીને તે ત્યાથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો.

गतवान् । 'तएणं' ततः खलु तस्याः पद्मावत्याः 'अंगपडियारियाओ' अङ्गपरिचारिका'=दास्यः पद्मावतीदेवीं विनिघातमापन्नां प्राणरहितां दारिकां च पश्यन्ति, दृष्ट्वा यत्रैव कनकरथो राजा, तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतं दशनख शिर आवर्त्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा 'एवं' = वक्ष्यमाणरीत्या अवदत्-हे स्वामिन् ! पद्मावतीदेवी 'मइल्लिया' मृता दारिका 'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती । 'तएणं' इति, ततः खलु दासीमुखान्मृतबालिकाजन्मश्रवणानन्तरं कनकरथो राजा तस्याः 'मइल्लियाए' मृतायाः दारिकायाः 'नीहरणं' निर्हरणं'=निष्काशनं 'करेइ' करोति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि करोति, कृत्वा 'कालेण'

पास रख दिया। और रखकर फिर वह वहा से चल दिया चलकर अपने घर आ गया। (तएणं तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नं दारियं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी एवं खलु सामी पउमावई देवी मइल्लियं दारियं पयाया) इसके बाद पद्मावती देवी की अंगपरिचारिकाओंने पद्मावती देवी को और मरी हुई उस कन्या को देखा देख कर वे सब जहां कनक रथ राजा थे वहाँ गईं-वहा जाकर उन्होंने दोनों हाथों की अंजलि बना कर और उसे मस्तक पर घुमाकर-अर्थात् नमस्कार कर इस प्रकार कहा हे स्वामिन ! पद्मावती देवी ने मृत कन्या को जन्म दिया है। (तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ,बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ करित्ता कालेण विगयसोए जाए) इस प्रकार उन के मुख से सुनकर कनक रथ राजाने उस मृत

(तएणं तीसे पउमावईए अंगपरियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावन्नं दारियं पासंति पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-एवं खलु सामी पउमावईदेवी मइल्लियं दारियं पयाया)

ત્યારબાદ પદ્માવતી દેવીની અંગ-પરિચારિકાઓએ પદ્માવતી દેવી તેમજ તે મરેલી કન્યાને જોઈ જોઇને તેઓ બધી જ્યાં કનકરથ રાજા હતા ત્યાં ગઈ અને ત્યાં જઈને તેણે બંને હાથોથી અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તક ઉપર ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! દેવી પદ્માવતીએ મરેલી કન્યાને જન્મ આપ્યો છે

(तएणं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं करेइ करित्ता कालेणं विगयसोए जाए)

इत्युक्त्वा पोट्टिलायाः पार्श्वे 'णिक्खिवइ' निक्षिपति=स्थापयति, तथा पोट्टिलायाः पार्श्वात् ता 'विणिहायमावण्ण' विनिघातमापन्ना=मृतां दारिकां गृह्णाति, गृहीत्वा उत्तरीयेण पिदधाति, पिधाय अन्तः पुरस्य अपद्वारेण अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मावती देवी तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पद्मवत्याः देव्याः पार्श्वे स्थापयति, स्थापयित्वा यावत् 'पडिणिग्गए' प्रतिनिर्गतः प्रतिनिर्गत्य स्वगृह

मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइत्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्निय दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ पिहित्ता, अंतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ) इस तरह क्रमशः वृद्धिंगत होता हुआ यह बालक जब बाल्यावस्था से रहित हो जावेगा तो हमारा तुम्हारा और पद्मावती देवी का आधार होगा, ऐसा कहकर उस तेतलिपुत्र अमात्य ने उस पुत्र को पोट्टिला के पास रख दिया। और पोट्टिला के पास से मरी हुई कन्या को उठा लिया-उठाकर उसे अपने उत्तरियवस्त्र से ढँक लिया, ढँक कर फिर अंत. पुर के पिछले दरवाजे से वहां आया (अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए) वहां आकर जहां पद्मावती देवी थी वहां पहुँचा, वहां पहुँच कर उसने उस मृत कन्या को पद्मावती देवी के

(तएण एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए, पासे णिक्खिवइ, णिक्खिवित्ता पोट्टिलाओ पासाओ विनिहायमावन्निय दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेण पिहेइ, पिहित्ता, अंतेउरस्स अवद्दारेण अणुप्पविसइ)

અને આ રીતે અનુક્રમે મોટો થતો આ બાળક જ્યારે બચપણ વટાવીને જુવાન થઇ જશે ત્યારે આ મારો, તમારો અને પદ્માવતી દેવીનો આધાર થશે આ પ્રમાણે કહીને તે તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે બાલકને પોટ્ટિલાની પાસે મૂકી દીધો અને પોટ્ટિલાની પાસેથી મરી ગયેલી બાળકીને ઉપાડી લીધી ઉપાડીને તેને પોતાના ખેસથી ઢાંકી દીધી અને ત્યારપછી તે રણવાસના પાછલા બારણેથી પદ્માવતી દેવીના મહેલમા ગયો

(अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, पउमावईए देवीए पासे ठावेइ, ठावित्ता जाव पडिनिग्गए)

ત્યા જઇને જ્યા પદ્માવતી દેવી હતી ત્યા ગયો અને ત્યા પહોચીને તેણે તે મરી ગયેલી બાળકીને પદ્માવતી દેવીના પડખામા મૂકી દીધી અને ત્યા મૂકીને તે ત્યાથી પાછો ફર્યો અને ત્યારપછી તે પોતાને ઘેર આવી ગયો

अस्माकमेष दारकः कनकरथस्य राज्ये जातः, 'त' तस्मात् भवतु खलु दारको नाम्ना 'कनकध्वजः' इति। अनन्तरमसौ दारकः क्रमेण वृद्धिं गच्छन् यावद् 'भोगसमत्थे जाए' भोगसमर्थो जातः=तारुण्यं प्राप्त इत्यर्थः ॥ सू०५॥

मूलम्–तएणं सा पोट्टिला अन्नया कयाई तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था, णेच्छइ य तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए, किंपुणदरिसणं वा परिभोग वा ?। तएण तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुपज्जित्था–एवं खलु अहं तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया, नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओहयमणसकप्पं जाव झियायइ। तएण तेतलिपुत्ते पोट्टिल ओहयमणसकप्प जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एव वयासी–मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि। तुम च णं मम महाणसंसि विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं

भारी उत्सव किया। तथा भोजन आदि द्वारा मित्र ज्ञाति द्वारा प्रमुख जनों का सत्कार सन्मान करके फिर उसने उनके समक्ष इस प्रकार कहा–यह हमारा पुत्र कनक रथ राजा के राज्य में उत्पन्न हुआ है–इस लिये यह "कनकध्वज" इस नामसे प्रसिद्ध होवे। इस के बाद यह पुत्र क्रमश वृद्धिंगत हुआ यावत्–भोग समर्थ हो गया–अर्थात् जवान युवा–बन गया ॥ सू० ५॥

સુધી ભારે ઉત્સવ ઉજવ્યો તેમજ ભોજન વગેરેથી મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પ્રમુખ લોકોનો સત્કાર અને સન્માન કરીને તેણે તેઓની સમક્ષ આ પ્રમાણે કહ્યું કે આ અમારો પુત્ર રાજા કનકરથના રાજ્યમા ઉત્પન્ન થયો છે એથી એ"કનકધ્વજ" નામે પ્રસિદ્ધ થાય ત્યાર પછી તે કનકધ્વજ સમય પસાર થતા ધીમે ધીમે મોટો થતા યાવત ભોગ સમર્થ થઈ ગયો એટલે કે જુવાન થઈ ગયો ॥ સૂ૦ ૫ ॥

कालेन समये व्यतीते 'विगयसोए' विगतशोकः=शोकरहितो जातः । ततः स तेतलिपुत्रः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-'खिप्पामेव' क्षिप्रमेव 'चारगसोहणं' चारकशोधनं=बन्दीजनमोचनं यावन्मानोन्मानवर्द्धनं पुत्रजन्मोत्सवनिमित्तकं राजकर्मचारिणां वेतनवृद्धयादिना सत्कारसम्मानवर्द्धनं कुरुत। इत्येवरूपामाज्ञां दत्वा स्वयं 'ठिइवडियं' स्थितिपतितां कुलमर्यादान्तर्गतां पुत्रजन्मनिदशदिवससाध्यमहोत्सवरूपां प्रक्रियां करोति । पुनश्चाशनादिना मित्र ज्ञातिप्रमुखान् सत्कृत्य सम्मान्य तत्पुरत एवं कथयति-'जम्हाणं' यस्मात्खलु

कन्या का निर्हरण-श्मशान में ले जाना-किया। निर्हरण कर के फिर अनेक लौकिक मृतकृत्य किये। मृत कृत्य कर चुकने के बाद धीरे २ वे विगत शोक हो गये। (तएणसे तेतलिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहणं जाव ठिइवडियं जम्हाणं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउणं दारए नामेण कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए) इस के बाद तेतलिपुत्र अमात्यने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-शीघ्र ही तुम लोग चारक शोधन करो-बन्दीजनों को मुक्त करो यावत् मानोन्मान का वर्द्धन, और पुत्र जन्मोत्सव के निमित्त को लेकर राज कर्मचारियों के वेतन की वृद्धि आदि करके उनके सन्मान का वर्द्धन करो-इस प्रकार आज्ञा देकर स्वयं उस तेतलिपुत्र अमात्यने अपनी कुल मर्यादा के अनुसार पुत्र का जन्म होने के कारण दश दिवस तक बड़ा

આ રીતે તેમના મુખથી આ વાત સાભળીને કનકરથ રાજાએ તે મરેલી કન્યાને શ્મશાનમા પહોંચાડી અને ત્યારબાદ તેણે મરણ પછીની ઘણી ક્રિયાઓ પૂરી કરી મરણ ક્રિયાઓને પતાવ્યા પછી રાજા કનકરથ ધીમે ધીમે શોક રહિત થઇ ગયા

(तएणं से तेतलिपुत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव चारगसोहण जाव ठिइवडियं,जम्हाणं अम्ह एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउणं दारए नामेण कणगज्झए जाव भोगसमत्थे जाए)

ત્યારબાદ તેતલી પુત્ર અમાત્યે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-તમે લોકો સત્વરે ચારક શોધન કરો-એટલે કે જેલખાનામાથી કેદીઓને છોડી મૂકો યાવત માનોન્માનનું વર્દ્ધન તેમજ પુત્ર જન્મોત્સવ બદલ રાજકર્મચારીઓના પગાર વગેરેની વૃદ્ધિ કરીને તેમના સન્માનનુ વર્દ્ધન કરો આ રીતે કૌટુંબિક પુરુષોને આજ્ઞા આપીને તેતલિપુત્રે જાતે પોતાની કુલ મર્યાદા મુજબ પુત્ર જન્મ હોવા બદલ દશ દિવસ

त्तकालसमए ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेः पश्चिमे भागे ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणप्रकारः ' अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत् मनोगत सकल्पः ' समुप्पज्जित्था ' समुदपद्यत, सकल्पप्रकारमाह-एव खलु अह ' तेतलिस्स ' तेतलेः=तेतलिपुत्रस्यामात्यस्य पूर्वम् इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा ' आसि '=आसम् , परन्तु ' इयाणिं ' इदानीम् अनिष्टा यावद्-अमनोऽमा जाता। नेच्छति च तेतलिपुत्रः मम नाम यावत् परिभोग वा=मम नाम गोत्रमपि श्रोतु नेच्छति किंपुन मम दर्शन मया सह परिभोग वा। इत्थमेषा पोट्टिला ' ओहयमणसकप्पा ' अपहतमनः सकल्पा=अपहतो=दुःखावेगवशाद् रुद्धो, मनः सकल्पो= मानसिको विचरो यस्या सा, ' जावझियायइ ' यावद् ध्यायति=यावदार्त्तध्यान करोति। ततः खलु तेतलिपुत्र पोट्टिलामपहतमनः सकल्पा ' जाव झियायमाणिं '

पा कयाइ पुव्वावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था) जब पोट्टिलाने अपनी तरफ तेतलि पुत्र अमात्य की इतनी अधिक उपेक्षा-अनादरता देखी तो एक दिन किसी समय उसे रात्रि के मध्यभाग में इस प्रकार का आध्यात्मिक यावत मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(एव खलु अह तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसिं, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव परिभोग वा ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ) मैं तेतलि पुत्र अमात्य के लिये पहिले इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी, परन्तु इस समय मे-उन्हे अनिष्ट यावत् अमनोम बन रही हूँ। वे तेतलि पुत्र अमात्य देखने और परिभोग करने की तो बात कौन कहे मेरे नामगोत्र तक को भी सुनना पसद नही करते है। इस तरह वह अपहतमनसकल्प होकर यावत्

अज्झत्थिए जाव समुप्पजित्था)

જ્યારે અમાત્ય તેતલિપુત્રને પોટ્ટિલા એ પોતાના પ્રત્યે આટલી બધી ઉપેક્ષા અને અનાદરતા જોઈ ત્યારે કોઈ વખતે એક દિવસ રાત્રિના મધ્યભાગમા તેના મનમા આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે

(एव खलु अह तेतलिस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसिं इयाणिं अणिट्ठा ५ जाया नेच्छइ य तेतलिपुत्ते मम नाम जाव झियायइ)

પહેલા હુ તેતલિપુત્ર અમાત્યને માટે ઈષ્ટ, કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હમણા હુ તેમના માટેઅનિષ્ટ યાવત અમનોમ થઈ પડી છુ તેતલિ પુત્ર અમાત્ય જ્યારે મારુ નામ ગોત્ર સુદ્ધા સાભળવુ ઈચ્છતા નથી ત્યારે મારી સામે જોવાની અને મારી સાથે પરિભોગની તો વાત જ શી કરવી ? આ રીતે તે પોટ્ટિલા અપહત મન સકલ્પ થઈને યાવત આર્તધ્યાન કરતી બેઠી હતી

समणमाहण जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि। तएण सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणित्ता, कल्लाकल्लिं महाणससि विपूल असण जाव दवावेमाणी विहरइ ॥सू०६॥

टीका—' तएण ' इत्यादि। ततः खलु सा पोट्टिला अन्यदा कदाचित् केनापि कारणेन तेतलिपुत्रस्य अनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता चाप्यऽभवत्। नेच्छति च तेतलिपुत्रः पोट्टिलाया नाम गोत्रमपि ' सवण याए ' श्रवणतायै=श्रूयतेऽनेनेति श्रवणं कर्ण, तस्य कर्म श्रवणता तस्यै, श्रवण विषयीकर्तुम् इत्यर्थ किं पुन तस्या ' दरिसण वा ' दर्शन वा तया सहपरिभोग वा, वाञ्छेत्, अपितु न। तत खलु तस्याः पोट्टिलाया अन्यदा कदाचित् पुव्वरत्तावर

तएण सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा पोट्टिला) वह प्रधानकी स्त्री पोट्टिला (अन्नया कयाइ) किसी समय-कोई निमित्त को लेकर-किसी भी कारण से-(तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा जाया यावि होत्था) तेतलिपुत्र के लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन गई। (णेच्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसण वा परिभोग वा) इस प्रकार वह तेतलिपुत्र उस पोट्टिला के नाम गोत्र तक को भी सुनना पसद नहीं करता तो फिर उसके देखने और परिभोग पास जाने की तो बात ही क्या है। (तएण तीसे पोट्टिलाए अन्न

तएण सा पोट्टिला इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्यार पछी (सा पोट्टिला) ते अमात्यनी पत्नी पोट्टिला (अन्नया कयाइ) कोई वखते गमेते कारणे (तेतलिपुत्तस्स अणिट्ठा ५ जाया यावि होत्था) तेतलि पुत्रने माटे अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय अमनोज्ञ अने अमनोम थई पडी

(णेच्छइ तेतलिपुत्ते पोट्टिलाए नाम गोत्तमवि सवणयाए किं पुणदरिसण वा परिभोग वा)

એથી તેતલિપુત્ર અમાત્યને તેનુ નામ ગોત્ર સુદ્ધા સાભળવુ પણ પસદ પડતું ન હતુ ત્યારે તેને જોવાની અને તેની પાસે જવાની તો વાત જ શી?

(तएण तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एव' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुमइ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'कल्लाकल्लिं' कल्याल्यि=प्रतिदिनम्, महानसे विपुलम् 'असणं जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहार मुपस्कार्य ददती च 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्--तेणं कालेण तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ वहुस्सुयाओ वहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्वि० चरमाणागामाणुगाम दुइज्जमाणा जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता, सजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणिओ विहरति। तएण तासिं सुव्वयाणं अज्जाण एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिह अणुपविट्ठे। तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता, हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता, विउल असण जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता, एव वयासी--एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुव्वं

से दिलवाओ। इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से कहा--तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एव सतुष्ट हुई। और उसने तेतलिपुत्रकी इस बातको मान लिया। मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला में चारो प्रकार का आहार बनवा कर उसे श्रमण, माहण आदि जनोंके लिये स्वय देने लगी और दूसरों से दिल्वाने लगी ॥ सू० ६ ॥

યાવત્ યાચકોને પોતે આપો અને બીજાઓને હુકમ કરીને અપાવો તેતલિ પુત્ર અમાત્યે જ્યારે આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાને કહ્યુ ત્યારે તે ખૂબજ પ્રસન્ન તેમજ સતુષ્ટ થઇ ગઇ અને તેણે તેતલિપુત્રની આ વાત સ્વીકારી લીધી અને તે દરરોજ ભોજન શાળામા ચારે જાતના આહારો બનાવડાવીને શ્રમણ બ્રાહ્મણ વગેરે ને પોતે આહાર આપવાલાગી અને બીજાઓ દ્વારા અપાવવા લાગી સૂ૦૬

यावद् ध्यायन्तीम्=यावदार्तध्यान कुर्वतीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवदत्-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! अपहतमनः संकल्पा 'जाव झियाहि' यावद्ध्याय=यावदार्तध्यानं माकुरु। हे देवि ! त्वं च खलु मम 'महाणसंसि' महानसे=भोजनशालायाम् विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपान खादिम स्वादिम चतुर्विधमाहारम् 'उवक्खडावेहि' उपस्कारय, 'उवक्खडावित्ता' उपस्कार्य 'बहूण समण माहण जाव वणीमगाणं' बहुभ्य श्रमणब्राह्मण यावद् वनीपकेभ्य =याचकेभ्यः, स्वयं देयमाणी' ददती च, अन्यैः 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहर। ततः खलु सा

आर्तध्यान कर रही थी-(तएणं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी माणं तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं च णं मम महाणसंसि विउलं असणपाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेहिं, उवक्खडावित्ता बहूणं समणं माहणं जाव वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि, तएणं सा पोट्टिला तेतलीपुत्तेण एवं वुत्ता समाणा हट्ठ तुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असणं जाव दवावेमाणी विहरइ) इतने में तेतलिपुत्र ने उस अपहतमनः संकल्प होकर आर्तध्यान करती हुई पोट्टिला को देखा-तो देखकर उसने उससे कहा-हे देवानुप्रिये तुम अपहतमन संकल्प होकर आर्तध्यान मत करो-तुम तो मेरी भोजनशाला में विपुलमात्रा में अशन, पान, खादिम एवं स्वादिम इस तरह चतुर्विध अहार बनवाओ बनवाकर उसे अनेक श्रमण ब्राह्मण यावत् याचकजनों के लिये स्वयं दो और दूसरों

(तएणं तेतलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी माणं तुमे देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि, तुमं च णं मम महाणसंसि विउलं असणपाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावित्ता बहूणं समणमाहणं जाव वणीपगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य विहराहि तएणं सा पोट्टिला तेतलिपुत्तेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असणं जाव दवावेमाणी विहरइ)

આટલામાં અપહતમન સંકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરતી તે પોટ્ટિલાને અમાત્ય તેતલિપુત્રે જોઈ અને જોઈને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-હે દેવાનુપ્રિયે! તમે અપહતમનસંકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરો નહિ-તમે મારી ભોજન શાળામાં જઈને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ આમ ચાર જાતના આહારો બનાવડાવો અને બનાવડાવીને તેને ઘણા શ્ર-

पोट्टिला तेतलिपुत्रेण 'एव' पूर्वोक्तप्रकारेण उक्ता सती हृष्टतुष्टा तेतलिपुत्रस्य 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=अन्नदानरूपमभिप्राय 'पडिसुणइ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, 'कल्लाकल्लिं' कल्यात्कल्य=प्रतिदिनम्, महानसे विपुलम् 'असण जाव' अशन यावत्=अशनपानखाद्यस्वाद्य चतुर्विधमाहार मुपस्कार्य ददती च 'दवावेमाणी' दापयन्ती च विहरति ॥ ६ ॥

मूलम्—तेण कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं०चरमाणागामाणुगाम दुइज्जमाणा जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता, अहापडिरूव उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता, संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणिओ विहरंति। तएण तासिं सुव्वयाणं अज्जाण एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्टे। तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता, हट्टतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता, वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, विउलं असण जाव पडिलाभेइ, पडिलाभित्ता, एव वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ तेतलिपुत्तस्स पुव्वं

से दिलवाओ। इस तरह तेतलिपुत्र अमात्यने जब उस पोट्टिला से कहा—तो वह बहुत अधिक प्रसन्न एव सतुष्ट हुई। और उसने तेतलिपुत्रकी इस बातको मान लिया। मान करके वह प्रतिदिन भोजन शाला में चारो प्रकार का आहार बनवा कर उसे श्रमण, माहण आदि जनोंके लिये स्वय देने लगी और दूसरों से दिलवाने लगी ॥ सू० ६ ॥

યાવત્ યાચકોને પોતે આપો અને બીજાઓને હુકમ કરીને અપાવો. તેતલિ પુત્ર અમાત્યે જ્યારે આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાને કહ્યું ત્યારે તે ખૂબજ પ્રસન્ન તેમજ સતુષ્ટ થઈ ગઈ અને તેણે તેતલિપુત્રની આ વાત સ્વીકારી લીધી અને તે દરરોજ ભોજન શાળામા ચારે જાતના આહારો બનાવડાવીને શ્રમણ બ્રાહ્મણ [illegible] આહાર આપવાલાગી અને બીજાઓ દ્વારા અપાવવા લાગી સૂ૬

इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव दसणं वा परिभोगं वा, तं तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसह, तं अत्थि आइं भे अज्जाओ! केइ कहिंचि चुण्ण जोए वा मंतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा काउड्डवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाहं तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि। तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति ठवित्ता, पोट्टिलं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया! समणीओ निग्गंथिओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारं कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमंग पुण उवदिसित्तए वा आयरित्तए वा? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो। तएणं सा पोटिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामेत्तए, तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्मं परिकहेंति। तएणं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए, ... तएणं

सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहि-धम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णं-मंसित्ता पडिविसज्जेइ। तएणं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ ॥ सू० ७ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सुव्रतानाम आर्या ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यो बहुश्रुता बहुपरिवाराः 'पुव्वाणुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया विचरन्त्य 'जेणामेव' यत्रैव तेतलिपुरं नगरं तत्रैवो-पागच्छति, उपागत्य 'अहापडिरूवं' यथाप्रतिरूपम्=यथाकल्पम् 'उग्गहं' अवग्रहम्=वसत्यर्थमाज्ञाम् 'उग्गिण्हति' अवगृह्णन्ति=याचन्ते, अवगृह्य 'संजमेणं' संयमेन सप्तदशविधेन, 'तवसा' तपसा द्वादशविधेन आत्मानं भावयन्त्यो

'तेणं कालेणं तेणं समएणं' इत्यादि।

टीकार्थ-(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समयमें (सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं० जेणामेव तेयलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ) सुव्रता नामकी आर्या तीर्थंकर परंपरा के अनुसार विहार करती हुइ उस तेतलिपुर नगर में आई। ये ईर्यासमिति आदि पांच समितियों की पालक थी-गुप्त ब्रह्मचारिणी थीं। बहुश्रुत थी। अनेक परिवार से युक्त थीं। (उवागच्छित्ता अहा पडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हंति, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति तएणं

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) ते काळे अने ते समये (सुव्वयाओ नाम अज्जाओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं० जेणामेव तेतलिपुरे णयरे तेणेव उवागच्छइ)

सुव्रता नामनी आर्या तीर्थंकर परंपरा मुजब विहार करती तेतलिपुर नगरमां आवी ते ईर्यासमिति वगेरे ५ (पांच) समितिओनुं पालनकरनारी हती तेमज गुप्त ब्रह्मचारिणी हती ते बहुश्रुत तेमज घणा परिवारो थी वीटळायेली हती

(उवागच्छित्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हति, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा

इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा५ जाव दसणं वा परिभोगं वा, तं तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव आहिंडह बहूणं राईसर जाव गिहाइं अणुपविसह, त अत्थि आइ भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि चुन्न-जोए वा मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा काउड्डवणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले कंदे छल्ली वल्ली, सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि । तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति ठवित्ता, पोट्टिल एव वयासी—अम्हे ण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गंथिओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयार कन्नेहि वि णिसामेत्तए, किमग पुण उवदिसित्तए वा आयरित्तए वा ? अम्हेणं तव देवाणुप्पिया ! विचित्त केवलि-पन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो। तएण सा पोटिला ताओ अज्जाओ एव वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुम्ह अतिए केवलिपन्नत्त धम्म निसामेत्तए, तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्त धम्म परिकहेंति । तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा एव वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! णिग्गंथ पावयण जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अह तुब्भ अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जित्तए, - तएण

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यरूपं चतुर्विधमाहार 'पडिलाभेइ' प्रतिलम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भ्य, एवमवदत्—एवं खलु अहं हे आर्याः! तेतलिपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्, परन्तु 'इयार्णि' इदानीम् 'अणिट्ठा५ जाव दंसर्ण परिभोगं वा' अनिष्टा५ यावत् दर्शन परिभोग वा=साम्प्रत तेतलिपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता, तस्मादेष तेतलिपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतु नेच्छति, किं पुनर्हे आर्याः! स मम दर्शन मया सह परिभोग वा कथ वाञ्छेत्? । 'त तुब्भेण

अब्भुट्ठेइ) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से उठी (अब्भुट्ठित्ता वदइ णमसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभित्ता एव वयासी) उठकर उसने उसको वदना की—नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन पान आदि चतुर्विध आहार दिया—और दे कर वह इस प्रकार कहने लगी—(एव खलु अह अज्जाओ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा ५ आसि, इयार्णि अणिट्ठा ५ जाव दसर्ण वा परिभोग वा—त तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागार जाव अहिंडइ, बहूणं राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ) हे आर्याओ! पहिले मैं तेतलिपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम थी परन्तु अब इस समय में उनके लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन रही हूँ। वे मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना पसद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अब्भुट्ठित्ता वदइ णमसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभेइ पडिलाभित्ता एव वयासी)

ઊભી થઈને તેણે તેમને નમન કર્યાં વંદન અને નમન કરીને તેણે તેમને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો આપ્યા અને આપીને તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(एव खलु अह अज्जाओ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा ५ आसि, इयार्णि ५ दसण वा परिभोग वा त तुब्भेण अज्जाओ सिक्खियाओ वहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर जाव अहिंडइ, वहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ)

હે આર્યાઓ! હું પહેલાં તેતલિપુત્ર અમાત્યના માટે ખૂબ જ ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હું તેમના માટે અનિષ્ટ, અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ પડી છું તેઓ મારા નામ ગોત્ર સુદ્ધાં સાંભળવા ઇચ્છતા નથી ત્યારે મારી સાથે પરિભોગ કરવાની અને મને જોવાની

विहरन्ति । तत्र खलु तासां सुव्रतानामार्याणामेकः सघाटकः प्रथमायां पौरुष्याम् स्वाध्याय=सूत्रमूलपठनरूपं करोति, 'जाव अडमाणे' यावदटन्त्यः, यावत्करणात् 'द्वितीयस्यां पौरुष्यां सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यानं करोति, तृतीयस्यां पौरुष्यां सुव्रतामार्यामापृच्छ्य उच्चनीचमध्यमकुलेषु गृहसमुदानिकभिक्षार्थमटन् इत्यर्थो बोध्यः, तेतलेर्गृहमनुप्रविष्टः । तत्र खलु सा पोट्टिला ताः सघाटकस्था आर्या एजमानाः पश्यति, दृष्ट्वा, हृष्टतुष्टा आसनात् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वन्दते

तासिं सुव्वायाणं अज्जाणं एगे सघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) वहां आ कर उन्होंने यथाकल्प ठहरने की आज्ञा मागी–मांगकर फिर वे १७ सतरह प्रकारके संयम और १२ बारह प्रकार के तपसे अपने आपको वासित करती हुई ठहर गईं। इन सुव्रता आर्या का एक संघाटक था जो प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करता–द्वितीय पौरुषीमें सूत्रार्थका चिन्तनरूप ध्यान करता और तृतीय पौरुषीमें सुव्रता आर्या की आज्ञासे ऊँच नीच एवं मध्यम कुलोंमें भिक्षा के लिये अटन करता । इस तरह वह सघाटक (सघाडा) तृतीय पौरुषीमें इन उच्चादि घरों मे भिक्षार्थ अटन करता हुआ तेतलिपुत्र अमात्य के घर पर आया (तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पा सइ) इतने में उस पोट्टिलाने उन सघाटकस्थ आर्याओ को ज्यों ही अपने घर पर आया हुआ देखा तो (पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अ

अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति तएणं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगेसघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ जाव अडमाणे तेतलिस्स गिहं अणुपविट्ठे) त्यां आवीने तेमणे यथाकल्प (साधुकल्प प्रमाणे) रहेवानी आज्ञा मागी अने त्यारपछी ते १७ जातना संयम अने १२-जातना तप वडे पोताना आत्मने वासित करता ते त्यां रोकाई सुव्रता आर्यानो एक सघाटक हतो जे प्रथम पौरुषीमां स्वाध्याय करतो हतो, द्वितीय पौरुषीमा सूत्रार्थनु चिंतन रूप ध्यान करतो अने तृतीय पौरुषीमां सुव्रता आर्यानी आज्ञा मेळवीने ऊंचा, नीचा अने मध्यम कुळोमां गोचरी माटे जता हता आ प्रमाणे ते सघाटक तृतीय पौरुषीमा उपरोक्त ऊंचा वगेरे कुळोना घरोमा गोचरी माटे फरता फरता तेतलिपुत्र अमात्यने त्यां आव्यो (तएणं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्ज माणीओ पासइ) पोट्टिलाए ज्यारे सघाटकस्थ आर्याओने पोताने घेर आवेली जोई त्यारे ते (पासित्ता हट्ठ तुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ) जोईने ते खूब ज प्रसन्न थई अने पोताना आसनथी ऊभी थई

नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा, विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यरूप चतुर्विधमाहार 'पडिलाभेइ' प्रतिलम्भयति=ददाति, प्रतिलम्भ्य, एवमवदत्–एव खलु अह हे आर्याः! तेतलिपुत्रस्य पूर्वमिष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा, मनोऽमा, आसम्, परन्तु 'इयाणिं' इदानीम् 'अणिट्ठा५ जाव दसणं परिभोग वा' अनिष्टा५ यावत् दर्शन परिभोग वा=साम्प्रत तेतलिपुत्रस्याऽहमनिष्टा अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा जाता, तस्मादेष तेतलिपुत्रो मम नामगोत्रमपि श्रोतु नेच्छति, किं पुनर्हे आर्याः! स मम दर्शन मया सह परिभोग वा कथ वाञ्छेत्?। 'त तुब्भेण

च्छुट्ठेइ) देखकर वह बहुत अधिक प्रसन्न हुई, और अपने स्थान से उठी (अब्भुट्ठित्ता वदइ णमंसइ, वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभित्ता एव वयासी) उठकर उसने उसको वदना की–नमस्कार किया। वन्दना नमस्कार करके फिर उसने उन्हें विपुल मात्रा में अशन पान आदि चतुर्विध आहार दिया–और दे कर वह इस प्रकार कहने लगी–(एव खलु अह अज्जाओ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा५ जाव दसणं वा परिभोग वा–तं तुब्भेण अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागार जाव अहिं- डइ, बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ) हे आर्याओ! पहिले मैं तेतलिपुत्र अमात्य के लिये बहुत ही इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम थी परन्तु अब इस समय में उनके लिये अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अमनोज्ञ एव अमनोम बन रही हूँ। वे मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना पसद नहीं करते हैं तो फिर मेरे साथ परिभोग करने की

(अब्भुट्ठित्ता वदइ णमसइ वदित्ता, णमसित्ता विउल असण जाव पडिलाभेइ पडिलाभित्ता एव वयासी)

ઊભી થઈને તેણે તેમને નમન કર્યા વંદન અને નમન કરીને તેણે તેમને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન વગેરે ચાર જાતના આહારો આપ્યા અને આપીને તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે—

(एव खलु अहं अज्जाओ! तेतलिपुत्तस्स पुव्व इट्ठा ५ आसि, इयाणिं ५ दसण वा परिभोग वा त तुब्भेणं अज्जाओ सिक्खियाओ बहुनायाओ बहुपढि- याओ बहूणि गामागर जाव अहिंडइ, बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसइ)

હે આર્યાઓ! હું પહેલા તેતલિપુત્ર અમાત્યના માટે ખૂબ જ ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હું તેમના માટે અનિષ્ટ, અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ પડી છું તેઓ મારા નામ ગોત્ર સુદ્ધાં સાંભળવા ઇચ્છતા નથી ત્યારે મારી સાથે પરિભોગ કરવાની અને મને જોવાની

अज्जाओ ' इति, तत=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे आर्याः ! ' सिक्खियाओ ' शिक्षिता =शिक्षां प्राप्ता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाताः=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणाः ' बहूपढियाओ ' बहुपठिता'=नानाविधविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहूणि गामागर जाव अहिंडह ' बहूनि ग्रामाकर यावत् आहिण्डथ=बहुषु ग्रामाऽऽकरनगरादिषु परि भ्रमण कुरुथ । तथा च ' बहूण राईसर जाव गिहाइं अणुपविसइ ' बहूना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुप्रविशथ=हे आर्याः ! यूय बहूना राजेश्वर तलवरश्रेष्ठि सेना-पत्यादीना गृहे प्रवेश कुरुथ, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् 'अत्थि आइ मे अज्जाओ !' अस्ति आइ युष्माकमार्या ! ' आइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युष्माक ज्ञानविषये ' चुण्णजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णाना द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग 'कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं-अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं-बहुपठित हैं-नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं-अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती हैं, अनेक राजेश्वर आदिको के घरों में आती जाती रहती हैं (त अत्थिआइ मे अज्जाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुन्नज्जोएवा) कहीं कोई चूर्ण योग - द्रव्य चूर्णों का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले, कदे छल्ली, वल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मत्र योग-वशीकरण आदि मत्रों का

તો વાત જ કયા રહી ? એથી હે આર્યાઓ, તમે સૌ શિક્ષિતા છો, બહુજ્ઞાતા છો-એટલે કે ઘણા શાસ્ત્રોના જ્ઞાનથી નિપુણ છો, બહુપઠિતા છો-અનેક જાતની વિદ્યાઓમા કુશળ છો, ઘણા ગામ, આકર સ્થાનોમા વિહાર કરતા રહો છો, અને ઘણા રાજેશ્વર વગેરેના મહેલોમાં આવજા કરતા રહો છો. (त अत्थि-आइ मे अज्जाओ) તો હે આર્યાઓ ! (केइ कहिं चिचुन्नज्जोएवा) ક્યાંક ગમે તે ચૂર્ણ યોગ-દ્રવ્ય ચૂર્ણોનો સ્તભન વગેરેનો યોગ,

(मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभि ओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलि पुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि)

वा ' कार्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' हिय उड्डावणे वा '=हृदयोड्डापन वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा ' काउड्डायने वा ' कायोड्डायन वा=शरीराकर्षकवस्तुविशेषो वा ' आभिओगिए वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो वा, ' वसीकरणे वा ' वशीकरणं वा=वशीकरणयोगो वा, ' कोउयकम्मे वा ' कौतुककर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकम्मे वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रितभस्मप्रक्षेपण वा तथा-औषधीना ' मूले ' मूलम् ' कंदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक् ' वल्ली ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=गुटिका ' ओसहे वा भेसज्जे वा ' औषध वा भैषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजात युष्माभिः उवलद्धपुव्वे ' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम्, हे आर्याः! भवत्य एषु किमपि उपलब्धपूर्वा अवश्य भवेयु', तत्कृपया मह्यमर्पय, 'जेणाह' येनाहम् , यत्सेवनादह तेतलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम्। ततः खलु ता आर्याः पोट्टिलाया एवमुक्ता॰ सत्यो द्वावपि हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कार्मण योग-उच्चाटन आदि मत्रो का योग हृदयोड्डीयन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्डायन—शरीराकर्षक वस्तु विशेषका योग, आभियोगिक-पराभव करने का योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग, भूति कर्म-मत्रादि से अभिमत्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा औषधियों के मूल, कद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष गोली, औषध-भेषज्य इत्यादि वस्तुओं का योग आपके देखने में अवश्य आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हमें अवश्य-अवश्य प्रदान करें कि जिससे मैं-जिस के सेवन से मैं-तेतलिपुत्र का पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम बन जाऊँ (तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणाओ दो वि हत्थे कन्ने ठवे ति,

---

મંત્રયોગ-વશીકરણ વગેરે મંત્રોનો યોગ-કાર્મણયોગ, ઉચ્ચારણ વગેરે મંત્રોનો યોગ, હૃદયોડ્ડાવન-ચિત્તાકર્ષક વસ્તુ વિશેષનો યોગ, આભિયોગિક-પરાભવ કરવાના યોગ, વશીકરણ-વશીકરણ યોગ, કૌતુકકર્મ-સૌભાગ્યવર્દ્ધક સ્નાન વગેરેનો યોગ, ભૂતિકર્મ-મંત્ર વગેરેથી અભિમંત્રિત કરીને ભસ્મ (રાખોડી) નુ પ્રક્ષેપણ રૂપ યોગ તેમજ ઔષધીઓના મૂળ, કંદ, ત્વક (છાલ) તેમજ લતા, શિલિકા-તૃણ વિશેષ ગોળી, ઔષધ, ભૈષજ્ય વગેરે વસ્તુઓનો યોગ તમારા જોવામા ચોક્કસ આવ્યો જ હશે એટલા માટે તમે કૃપા કરીને એમાંથી ગમે તે યોગ મને ચોક્કસ આપો કે જેના સેવનથી હું ફરી તેતલિપુત્રની ઈષ્ટ, કાન્ત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ થઈ જાઉં

अज्जाओ ' इति, तत=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे आर्याः ! ' सिक्खियाओ ' शिक्षिता =शिक्षां प्राप्ता, ' बहुणायाओ ' बहुज्ञाता:=अनेकशास्त्रज्ञाननिपुणाः ' बहुपढियाओ ' बहुपठिता'=नानाविधविद्याकुशलाः स्थः पुनः ' बहूणि गामागर जाव अहिंडह ' बहूनि ग्रामाकर यावत् आहिण्डथ=बहुषु ग्रामाकरनगरादिषु परि भ्रमण कुरुथ । तथा च ' बहूण राईसर जाव गिहाइ अणुपविसह ' बहूना राजेश्वर यावद् गृहाणि अनुप्रविशथ=हे आर्याः ! यूय बहूना राजेश्वर तलवरश्रेष्ठि सेना-पत्यादीना गृहे प्रवेश कुरुथ, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् 'अत्थि आइ मे अज्जाओ !' अस्ति आइ युष्मापमार्या ! ' आइ ' इति वाक्यालङ्कारे देशी शब्दः । हे आर्याः ! अस्ति ' केइ कहिं चि ' कोऽपि कुत्रचित्=युष्माक ज्ञानविषये ' चुण्णजोए वा ' चूर्णयोगो वा=चूर्णाना द्रव्यचूर्णानां योगः, स्तम्भनादिकर्मकारी, ' मतजोए वा ' मन्त्रयोगो वा=मन्त्राणां योगो व्यापारो वा वशीकरणादि मन्त्रयोग 'कम्मणजोए

और देखने की उनकी बात ही क्या कहूँ इस लिये हे आर्याओ ! आप सब तो शिक्षित हैं, बहुज्ञाता हैं–अनेक शास्त्रों के ज्ञानसे निपुण हैं–बहुपठित हैं–नाना प्रकार की विद्याओं में कुशल हैं–अनेक ग्राम, आकर आदि स्थानों में विहार करती रहती है, अनेक राजेश्वर आदिकों के घरों में आती जाती रहती हैं (त अत्थिआइ मे अज्जाओ) तो हे आर्याओ ! (केइ कहिं चि चुण्णज्जोएवा) कही कोई चूर्ण योग – द्रव्य चूर्णो का स्तम्भनादि कर्मकारी योग (मतजोए वा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले, कदे छल्ली, वल्ली, सिलिया, वा, गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा, उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलिपुत्त स्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि) मंत्र योग–वशीकरण आदि मंत्रों का

તો વાત જ કયા રહી ? એથી હે આર્યાઓ તમે સૌ શિક્ષિતા છો, બહુજ્ઞાતા છો–એટલે કે ઘણા શાસ્ત્રોના જ્ઞાનથી નિપુણ છો, બહુપડિતા છો–અનેક જાતની વિદ્યાઓમા કુશળ છો, ઘણા ગામ, આકર સ્થાનોમા વિહાર કરતા રહો છો, અને ઘણા રાજેશ્વર વગેરેના મહેલોમા આવજા કરતા રહો છો (त अत्थि आइ मे अज्जाओ) તો હે આર્યાઓ ! (केइ कहि चिचुण्णज्जोएवा) કયાક ગમે તે ચૂર્ણ યોગ–દ્રવ્ય ચૂર્ણોનો સ્તભન વગેરેનો યોગ,

(मतजोएवा कम्मणजोए वा हिय उड्डावणे वा, काउड्डावणे वा अभि ओगिए वा वसीकरणे वा, कोउयकम्मे वा, भूइकम्मे वा मूले कदे छल्ली वल्ली सिलिया, वा गुलिया वा, ओसहे वा, भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे वा जेणाह तेतलि पुत्तस्स पुणरवि इट्ठा ५ भवेज्जामि)

वा ' कार्मणयोगो वा=उच्चाटनादिकर्मयोगो वा, ' हिय उड्डावणे वा '=हृदयो-ड्डायन वा=चित्ताकर्षकवस्तुविशेषो वा ' काउड्डायने वा ' कायोड्डायन वा=शरीरा-कर्षकवस्तुविशेषो वा ' आभिओगिए वा ' आभियोगिको वा,=पराभवकरणयोगो वा, ' वसीकरणे वा ' वशीकरण वा=वशीकरणयोगो वा, ' कोउयकम्मे वा ' कौतुक-कर्म वा=सौभाग्यवर्द्धकस्नानादि वा ' भूइकम्मे वा ' भूतिकर्म वा=मन्त्राभिमन्त्रित-भस्मप्रक्षेपण वा तथा-औषधीना ' मूले ' मूलम् ' कंदे ' कन्दः ' छल्ली ' त्वक् ' वल्ली ' लता ' सिलिया वा ' शिलिका=तृणविशेषः, ' गुलिया ' गुलिका=गुटिका ' ओसहे वा भेसज्जे वा ' औषध वा भैषज्य वा, इत्यादिक वस्तुजात युष्माभिः 'उवलद्धपुव्वे ' उपलब्धपूर्वम्=प्राप्तपूर्वम् , हे आर्याः ! भवत्य एषु किमपि उपलब्धपूर्वा अवश्य भवेयु', तत्कृपया मह्यमर्पय, 'जेणाहं' येनाहम् , यत्सेवनादह तेतलिपुत्रस्य पुनरपि इष्टा कान्ता प्रियामनोज्ञामनोऽमा भवेयम् । ततः खलु ता आर्याः पोट्टिलाया एवमुक्ताः सत्यो द्वावपि हस्तौ कर्णे स्थापयन्ति, स्थापयित्वा

योग कार्मण योग-उच्चाटन आदि मत्रो का योग हृदयोड्डीयन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेष का योग, कायोड्डायन—शरीराकर्षक वस्तु विशेषका योग, आभियोगिक पराभव करने का योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुक कर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान आदि का योग, भूति कर्म-मत्रादि से अभिमत्रित भस्म के प्रक्षेपण करने रूप योग तथा औषधियों के मूल, कद त्वक-छाल तथा लता, शिलिका-तृण विशेष गोली, औषध-भषज्य इत्यादि वस्तुओ का योग आपके देखने में अवश्य आया होगा-इस लिये कृपाकर इनमें से कोई न कोई योग आप हमें अवश्य-अवश्य प्रदान करे कि जिससे मै-जिस के सेवन से मैं-तेत-लिपुत्र का पुनरपि इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम बन जाऊँ (तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एव वुत्ताओ समाणाओ दोवि हत्थे कन्ने ठवे ति,

मत्रयोग-वशीकरण वगेरे मत्रोनो योग-कार्मणयोग, उच्चारण वगेरे मत्रोनो योग, हृदयोड्डावन-चित्ताकर्षक वस्तु विशेषनो योग, आभियोगिक-पराभव करवाना योग, वशीकरण-वशीकरण योग, कौतुककर्म-सौभाग्यवर्द्धक स्नान वगरेनो योग, भूतिकर्म-मत्र वगेरथी अभिमत्रित करीने भस्म (राखोडी) नु प्रक्षेपणु रूप योग तेमज औषधीओना मूल, कद, त्वक् (छाल) तेमज लता, शिलिका-तृणु विशेष गोळी, औषध, भैषज्य वगेरे वस्तुओनो योग तमारा जोवामा चाक्कस आव्यो ज हशे एटला माटे तमे कृपा करीने एमावां गमे ते योग मने चोक्कस आपो के जेना सेवनथी हु फरी तेतलि पुत्रनी [illegible] [illegible]ान्त, प्रिय, मनोज्ञ अने मनोम थई जाउं

पोट्टिलाम् एवमवदन्–वय खलु हे देवानुप्रिये ! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्य , बाह्याभ्यन्तरग्रन्थि रहिता , यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यः, नो खलु कल्पतेऽस्माकम् ‘ एयप्पयार ’ एतत्प्रकार=कर्णोरपि ‘णिसामेत्तए’ निशामयितु=श्रोतु न कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः । ‘ अङ्ग इति सम्बोधने ’ हे पोट्टिले ! किं=कथ पुन. ‘ उवदिसित्तए वा ’ उपदेष्टुम् वा, स्वयम् ‘ आयरित्तए वा ’ आचरितु वा कल्पते । न कल्पतइत्यर्थः, वय खलु तव हे देवानुप्रिये ! विचित्र केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं परिकथयामः । ततः खलु सा पोट्टिला

ठावित्ता पोट्टिल एव वयासी–अम्हेण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गथीओ जाव गुत्तबभयारिणीओ, नो खलु कप्पई अम्ह एयप्पयारकन्नेहि वि निसामित्तए किमग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा। अम्ह ण तव देवाणुप्पिया ! विचित्त केवलिपन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो) इस प्रकार उस पोट्टिला के द्वारा कहीं गई उन आर्याओं ने अपने दोनों कानोंपर हाथ रख लिये–और रख कर पोट्टिला से इस प्रकार कहने लगीं—हे देवानुप्रिये ! हम तो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ हैं, नव कोटि से पूर्ण ब्रह्मचर्यको हम पोलती हैं। हमें तुम्हारी ऐसी बाते कानों से सुनना भी कल्पित नहीं हैं तो फिर हे पुत्रि ! हम इनका उपदेश तुम्हें कैसे दे सकते हैं–और स्वय भी इनका आचरण कैसे कर सकता हैं। अर्थात् इन बातों का उपदेश देना और स्वय इनको अपने आचरण में लाना यह सब हमारे कल्प के अनुसार निषिद्ध है । हम तो हे देवानुप्रिये ! तेरे हितके

(तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एववुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेति, ठावित्ता पोट्टिल एव वयासी अम्हेण देवाणुप्पिया ! समणीओ निग्गथीओ जाव गुत्तबभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्ह एयप्पयारकन्नेहि वि निसामित्तए किमग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा ! अम्ह ण तव देवाणुप्पिया ! विचित्तं केवलिपन्नत्त धम्म पडिकहिज्जामो)

આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાની વાત સાભળીને તે આર્યાઓએ પોતાના બ'ને કાનો ઉપર હાથ મૂકી દીધા અને મૂકીને એમ કહેવા લાગી કે હેવાનુપ્રિયે ! અમે તો નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ નવવાડ સહિત બ્રહ્મચર્યનુ અમે પાલન કરીએ છીએ હે પુત્રિ ! તમારી એવી વાતો અમારા માટે કાનથી સાભળવી પણ યોગ્ય લેખાય નહિ ત્યારે તેના વિશે ઉપદેશની વાત તો સાવ અયોગ્ય જ છે અમે આ વિશે તમને કોઇ પણ જાતનો ઉપદેશ પણ આપી શકીએ નહીં તો પછી જાતે આનુ આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ ? એટલે કે આ બાબ તનો ઉપદેશ આપવો તેમજ પોતે આનુ આચરણ કરવુ તે રા કલ્પ

ता आर्या एवमवादीत्–इच्छामि खलु हे आर्याः ! युष्माकमन्तिके केवलिप्रज्ञप्त धर्मं निशामयितुम्=श्रोतुम् । ततः खलु सा पोट्टिला धर्मं श्रुत्वा 'निसम्म' निशम्य=हृदयेनाधार्य हृष्टतुष्टा एवमवादीत्–श्रद्दधामि खलु हे आर्याः ! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचन यावत् 'से' तत् तथैव यथैतद् यूय वदथ । हे आर्याः ! 'इच्छामिण' इच्छामि खलु अहं युष्माकमन्तिके 'पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म' पञ्चाणुव्रतिक यावत् गृहिधर्मं 'पडिवज्जित्तए' प्रतिपत्तु=स्वीकर्तुम् । अनन्तर ता आर्या एवमवा

लिये विचित्र केवलि प्रज्ञप्त धर्मका उपदेश करते हैं (सो तू सुन)– (तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एव वयासी इच्छामि ण अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्ते धम्म निसामेत्तए–तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तधम्म परिकहेंति) उनकी इस प्रकार बात सुन कर उस पोट्टिलाने उनसे कहा–हे आर्याओ ! मैं आप लोगों के मुख से केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनना चाहती हू । पोट्टिला की ऐसी प्रार्थना सुन कर उन आर्याओं ने उस पोट्टिला के लिये विचित्र केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनाया (तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्टतुट्ठा एव वयासी) उन के मुखसे केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुन कर और उसे अपने हृदयमे अवधृत कर अत्यन्त हर्षित एव सतुष्ट हुई उस पोट्टिलाने उनसे ऐसा कहा (सद्दहामि ण अज्जाओ ! णिग्गंथ पावयणं जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अहं तुब्भ अंतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जित्तए–अहासुह, तएण सा पोट्टिला तासिं अज्जाण अंतिए पचाणुव्वइय

મુજબ અયોગ્ય ગણાય છે હે દેવાનુપ્રિયે ! અમે તો તારા હિત માટે વિચિત્ર કેવળિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો ઉપદેશ આપીએ છીએ તેને તું સાંભળ

(तएण सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एव वयासी इच्छामि ण अज्जाओ ! तुम्हं अंतिए केवलिपन्नत्ते धम्म निसामेत्तए–तएण ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं धम्म परिकहेंति)

તેમની આ જાતની વાત સાંભળીને તે પોટ્ટિલાએ તેમને એમ કહ્યુ કે હે આર્યાઓ ! તમારા મુખથી હું કેવળી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સાંભળવા ઇચ્છુ છુ પોટ્ટિલાની એવી વિનતી સાંભળીને તે આર્યાઓએ તેને વિચિત્ર કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો (तएण सा पोट्टिला धम्म सोच्चा निसम्म हट्ठ–तुट्ठा एव वयासी) તેમના મુખથી કેવળી પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ કરીને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને ખૂબ જ હર્ષિત અને સતુષ્ટ થતી તે પોટ્ટિલાએ તેમને એમ કહ્યુ કે

(सद्दहामिण अज्जाओ ! णिग्गंथ पावयण जाव से जहिय तुब्भे वयह, इच्छामि ण अहं तुब्भं अंतिए पचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए–अहा-

पोट्टिलाम् एवमवदन्–वयं खलु हे देवानुप्रिये! श्रमण्यो निर्ग्रन्थ्यः, बाह्याभ्यन्तरग्रन्थिरहिताः, यावद् गुप्तब्रह्मचारिण्यः, नो खलु कल्पतेऽस्माकम् 'एयप्पयारं' एतत्प्रकारं=कर्णोरपि 'णिसामेत्तए' निशामयितुम्=श्रोतुं न कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। 'अङ्ग इति सम्बोधने' हे पोट्टिले! किं=कथं पुनः 'उवदिसित्तए वा' उपदेष्टुं वा, स्वयम् 'आयरित्तए वा' आचरितुं वा कल्पते। न कल्पतइत्यर्थः, वयं खलु तव हे देवानुप्रिये! विचित्रं केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं परिकथयामः। ततः खलु सा पोट्टिला

ठावित्ता पोट्टिल एव वयासी–अम्हेणं देवाणुप्पिया! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारकन्नेहिं वि निसामित्तए किमंग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा। अम्हं णं तव देवाणुप्पिया! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो) इस प्रकार उस पोट्टिला के द्वारा कही गई उन आर्याओं ने अपने दोनों कानोंपर हाथ रख लिये–और रख कर पोट्टिला से इस प्रकार कहने लगीं–हे देवानुप्रिये! हम तो निर्ग्रन्थ श्रमणियाँ हैं, नव कोटि से पूर्ण ब्रह्मचर्यको हम पालती हैं। हमें तुम्हारी ऐसी बातें कानों से सुनना भी कल्पित नहीं हैं तो फिर हे पुत्रि! हम इनका उपदेश तुम्हें कैसे दे सकते हैं–और स्वयं भी इनका आचरण कैसे कर सकता हैं। अर्थात् इन बातों का उपदेश देना और स्वयं इनको अपने आचरण में लाना यह सब हमारे कल्प के अनुसार निषिद्ध है। हम तो हे देवानुप्रिये! तेरे हितके

(तएणं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एववुत्ताओ समाणीओ दो वि हत्थे कन्ने ठवेंति, ठावित्ता पोट्टिल एव वयासी अम्हेणं देवाणुप्पिया! समणीओ निग्गंथीओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ, नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पयारकन्नेहिं वि निसामित्तए किमंग उवदिसित्तए वा, आयरित्तए वा! अम्हं णं तव देवाणुप्पिया! विचित्तं केवलिपन्नत्तं धम्मं पडिकहिज्जामो)

આ પ્રમાણે પોટ્ટિલાની વાત સાંભળીને તે આર્યાઓએ પોતાના બંને કાનો ઉપર હાથ મૂકી દીધા અને મૂકીને એમ કહેવા લાગી હે દેવાનુપ્રિયે! અમે તો નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ નવવાડ સહિત બ્રહ્મચર્યનું અમે પાલન કરીએ છીએ હે પુત્રિ! તમારી એવી વાતો અમારા માટે કાનથી સાંભળવી પણ યોગ્ય લેખાય નહિ ત્યારે તેના વિશે ઉપદેશની વાત તો સાવ અયોગ્ય જ છે અમે આ વિશે તમને કોઇ પણ જાતનો ઉપદેશ પણ આપી શકીએ નહીં તો પછી જાતે આનું આચરણ કેવી રીતે કરી શકીએ? એટલે કે આ બાબતનો ઉપદેશ આપવો તેમજ પોતે આનું આચરણ કરવું તે બધું અમારા કલ્પ

मूलम्—तएणं तीसे पोट्टिलाए अन्नया कयाइं पुव्वरत्तावर-त्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने। एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि, इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा, तं सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए, एवं संपेहेइ, संपेहित्ता, कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी — एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए। तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि, तोऽहं विसज्जेमि, अह णं तुमं ममं ण संबोहेसि, तो ते ण विसज्जेमि। तएणं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ। तत. खलु तेतलिपुत्ते विपुलं असणं४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमंतेइ, आमंतित्ता, जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता, पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ, दुरूहित्ता

लाभेमाणी विहरइ) इस प्रकार श्रमणोपासिका बनी हुई वह पोट्टिला निर्ग्रन्थ श्रमणजनोंको एवं निर्ग्रन्थ श्रमणियों को दान-चारों प्रकार का आहार देती हुई अपना समय व्यतीत करने लगी॥ सू० ७।

નિર્ગ્રંથ શ્રમણો અને નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને દાન—ચારે જાતના આહારો—આપતાં

दिषुः– अहासुहं ' यथा सुखं, हे देवानुप्रिये ! । तत खलु सा पोट्टिला तासा मार्याणामन्तिके पञ्चाणुव्रतिक यावद् गृहिधर्म प्रतिपद्यते, पुनस्ता आर्या वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा प्रतिविसर्जयति । ततः सा पोट्टिलाश्रमणोपासिका जाता, ' जाव पडिलाभेमाणि ' यावत् प्रतिलम्भयन्ती=निर्ग्रन्थेभ्यः श्रमणेभ्यः श्रमणीभ्यश्च चतुर्विधमाहार ददती विहरति ॥ सू० ७ ॥

जाव गिहिधम्म पडिवज्जेइ, ताओ अज्जाओ वंदइ, णमसइ वंदित्ता णमसित्ता पडिविसज्जेइ) हे आर्याओ ! म इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर श्रद्धा करती हू यावत् ऐसा मानती हू कि यह निर्ग्रन्थ प्रवचन जैसा आप कहती है वैसा ही है । अतः हे आर्याओ ! अब में आपके पास पचाणु व्रत सात शिक्षाव्रत आदि रूप १२ बारह प्रकार का गृहस्थ धर्म को धारण करना चाहती हू । इस तरह पोट्टिला की भावना जान कर उन आर्याओने उससे कहा–यथा सुख देवानुप्रिये ! तुझे जिस तरह सुख हो वैसा तू कर–श्रयस्कर कार्यमें विलम्ब करना योग्य नहीं है–इस प्रकार उन आर्याजनोंकी आज्ञा प्राप्त कर उस पोट्टिलाने उन्हीं आर्याओं के पास से श्रावकधर्म पच अणुव्रत एव सात शिक्षाव्रतों को धारण कर लिया । इस प्रकार श्रमणोपासिका बनी हुई उस पोट्टिला ने उन आर्याओं को वन्दना एव नमस्कार की–वन्दना नमस्कार करके फिर उन्हें विसर्जित कर दिया । (तएण सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडि

सुहं तएण सा पोट्टिला तासि अज्जाण अतिए पचाणुव्वइय जाव गिहिधम्म पडिवज्जेइ ताओ अज्जाओ वदइ, णमसइ वदित्ता णमसित्ता पडिविसज्जेइ)

હે આર્યાઓ ! આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન ઉપર હું શ્રદ્ધા કરું છુ યાવત આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન જેવુ તમે કહો છો તેવુ જ છે એથી હે આર્યાઓ ! હવે હુ તમારી પાસેથી પાચ અણુવ્રત વગેરેના 'ગૃહસ્થ ધર્મ' ધારણ કરવા ઇચ્છુ છુ આ રીતે પોટ્ટિલાના વિચારો જાણીને તે આર્યાઓએ તેને કહ્યુ કે 'યથાસુખમ્' એટલે કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તને જેમા સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ તુ કર સારા કામમા વિલબ કરવો જોઇએ નહિ આ પ્રમાણે તે આર્યાઓની આજ્ઞા મેળવીને તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓની પાસેથી શ્રાવક–ધર્મ–પાચ અણુવ્રતો અને સાત શિક્ષાવ્રતોને ધારણ કરી લીધો આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલાએ તે આર્યાઓને વદન તેમજ નમન કર્યા અને વદન તથા નમન કરીને તેમને વિદાય આપી (તएण सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ) આ રીતે શ્રમણોપાસિકા થઈ ગયેલી તે પોટ્ટિલા

रिय जागरमाणीए ' कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्रूप 'अज्झत्थिए जाव' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिकः=आत्मगतो यावन्मनोगत सङ्कल्प समुत्पन्नः। सङ्कल्पप्रकारमाह-एवं खलु अहं तेतलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा आसम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा, यावत् परिभोगं वा । अस्याभिप्रायः-अहो मनुष्याणां मनोवृत्तेरस्थिरता। पूर्वं यस्याहम् इष्टा कान्ता प्रियाऽऽदिकाऽऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि। अय तेतलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोग वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः। 'त' तत्=तस्मात्कारणात् 'सेयं'

पुरत्ति) रात्रि के पिछले भागमें (कुडुम्बजागरिय-जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) कुटुम्ब की चिन्ता से जाग रही थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ-(एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोग वा, त सेयं खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए) मैं पहिले तेतलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एव मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हू—अनिष्ट आदि बन गई हू। और बातों की बात ही क्या हैं-वे तो अब मेरा मुख तक नहीं देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है—पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि बन गई हू। यह तेतलिपुत्र तो मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે

(एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोग वा त सेयं खलु मम सुव्वयाण अज्जाण अतिए पव्वइत्तए)

પહેલા હુ તેતલિપુત્રને ખૂબજ ઇષ્ટકાત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હુ તેમના માટે તેવી રહી નથી અનીષ્ટ વગેરે થઈ પડી છુ બીજી સાથે વાતચીતની વાત તો દૂર રહી પણ તેઓ મારુ મો પણ જોવા માગતા નથી ખેરખર પુરુષોની મનોવૃત્તિ કેટલી બધી ચચળ હોય છે? જેને પહેલા જે હુ ઇષ્ટ, કાત, પ્રિય, વગેરેના રૂપમા હતી, હવે તેને તેજ હુ અનિષ્ટ અપ્રિય વગેરે થઈ પડી છુ આ તેતલિપુત્ર મારા નામગોત્ર સુદ્ધા સાભળવા માગતા નથી ત્યારે મને જોવાની અને મારી સાથે રહેવાની તો તેમને પાછલા પહોરમા (कुडुम्बजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) ઘર-ગૃહસ્થીના વિચારકરતી જાગી રહી હતી ત્યારે-આ જાતનો

मित्तणाइ जाव संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं तेयालिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ। पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ। तेतलिपुत्ते पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ४, एसणं संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए, पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणीभिक्खं अहा-सुहं मा पडिबंध करेहि। तएण सा पोट्टिला सुव्वयाहि अज्जाहि एवंवुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता, जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी-आलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ,बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता, आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा॥सू०८॥

टीका—'तएणं तीसे' इत्यादि। तत खलु तस्या पोट्टिलाया. 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' पूर्वरात्रापररात्रकालसमयेऽपरात्रे पश्चिमेभागे 'कुडुंब जाग

तएणं—'तीसे पोट्टिलाए' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तीसे पोट्टिलाए) उस पोट्टिला के जब कि वह (अन्नया कयाइं) किसी एक दिन (पुव्वावरत्तकालसम

'तएणं—तीसे पोट्टिलाए' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) त्यार पछी (तीसे पोट्टिलाए) ते पोट्टिलाने-के ज्यारे ते (अन्नया कयाइं) कोई एक दिवसे (... रा

रिय जागरमाणीए ' कुटुम्बजागरिकां जाग्रत्या अयमेतद्रूप '-अज्झत्थिए जाव ' आध्यात्मिको यावत्=आध्यात्मिकः=आत्मगतो यावन्मनोगत संकल्प समुत्पन्नः। संकल्पप्रकारमाह-एवं खलु अहं तेतलिपुत्रस्य पूर्वम् इष्टा कान्ता प्रिया, मनोज्ञा मनोऽमा आसम्, इदानीमनिष्टा, अकान्ता, अप्रिया, अमनोज्ञा, अमनोऽमा यावत् परिभोग वा । अस्याभिप्राय'-अहो मनुष्याणा मनोवृत्तेरस्थिरता। पूर्व यस्याहम् इष्टा कान्ता प्रियाऽदिकाऽसम्, सैवाहमस्यानिष्टाऽकान्ताऽप्रियादिका जाताऽस्मि। अयं तेतलिपुत्रो मम नाम गोत्रश्रवणमपि नेच्छति, किं पुनर्ममदर्शनं मया सह परिभोग वाञ्छेत् अपितु नेत्यर्थः। ' त ' ततः=तस्मात्कारणात् ' सेयं '

पुत्ति) रात्रि के पिछले भागमें (कुडुम्बजागरिय-जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) कुटुंब की चिन्ता से जाग रही थी इस प्रकार का आध्यात्मिक यावन्मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-(एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोग वा, त सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अतिए पव्वइत्तए) मैं पहिले तेतलिपुत्र को बहुत ही अधिक इष्ट, कान्त प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम थी-परन्तु अब मैं ऐसी नहीं रही हूं—अनिष्ट आदि बन गई हूं। और बातों की बात ही क्या है-वे तो अब मेरा मुख तक नही देखना चाहते हैं-देखो मनुष्यों की मनोवृत्ति कितनी अस्थिर है—पूर्व मैं जिसे इष्ट, कान्त, प्रिय, आदि रूप थी-अब वही मैं उसके लिये अनिष्ट अप्रिय आदि बन गई हूं। यह तेतलिपुत्र तो मेरा नाम गोत्र तक भी सुनना नहीं चाहता है तो फिर मेरे साथ रहने की तो चाहना ही

આધ્યાત્મિક યાવત મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે

(एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा ५ आसि इयाणिं अणिट्ठा ५ जाव परिभोगं वा त सेयं खलु मम सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए)

પહેલા હું તેતલિપુત્રને ખૂબજ ઇષ્ટકાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ હતી પણ હવે હું તેમના માટે તેવી રહી નથી અનીષ્ટ વગેરે થઈ પડી છું માંરી સાથે વાતચીતની વાત તો દૂર રહી પણ તેઓ મારૂં મોં પણ જોવા માગતા નથી ખરેખર પુરુષોની મનોવૃત્તિ કેટલી બધી ચંચળ હોય છે? જેને પહેલા જે હું ઇષ્ટ, કાંત, પ્રિય, વગેરેના રૂપમાં હતી, હવે તેને તેજ હું અનિષ્ટ અપ્રિય વગેરે થઈ પડી છું આ તેતલિપુત્ર મારા નામગોત્ર સુદ્ધાં સાંભળવા માગતા નથી ત્યારે મને જોવાની અને મારી સાથે રહેવાની તો તેમને પૂછવા પડેલ્ગ્મા (कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पन्ने) ઘર-ગૃહસ્થીના વિચારકરતી જાગી રહી હતી ત્યારે-આ જાતનો

श्रेयः=उचितं खलु मम सुव्रतानामार्याणामन्तिके प्रव्रजितुम्, एवं सप्रेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्लं जाव पाउप्पभायाए' कल्यं यावत् प्रादुष्प्रभातायाम्=प्रातः सूर्योदयसमये यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य 'करयल-परि०' करतलपरीगृहीत मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय! मया सुव्रतानामार्याणामन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुत, 'जाव अभणु

उसे कैसे हो सकती है। इस लिये मुझे अब यही उचित है कि मैं सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रजित हो जाऊँ। (एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार जब वह विचार कर चुकी तो विचार करके फिर जब प्रात काल हुआ और सूर्य का उदय हो चुका तब जहाँ तेतलिपुत्र था वहा पहुची (उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु-तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि) वहा जा कर उसने दोनों हाथ जोड कर उस को नमस्कार किया-बाद मे वह इस प्रकार उससे कहने लगी हे देवानुप्रिय! बात ऐसी है कि मैंने

हरकोर જ શી હોય? એથી મને હવે એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું સુવ્રતા આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ જાઉં

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય થતા જ્યા તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો ત્યા પહોચી

(उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि तं जइणं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो हं विसज्जेमि)

ત્યા જઈને તેણે તેમને બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિય! મે સુવ્રતા [illegible] પાસેથી

ण्णाया पव्वइत्तए ' यावदभ्यनुज्ञाता प्रव्रजितुम्=स धर्मो मम मनसि रुचितः तस्माद् भवताऽभ्यनुज्ञातासती प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः । ततः खलु तेतलिपुत्रः पोट्टिला-मेवमवदत्-एवं खलु त्वं देवानुप्रिये ! मुण्डा प्रव्रजिता सती कालमासे कालं कृत्वाऽन्यतरेषु देवलोकेषु देवतया उपपत्स्यते । ' त ' तदा यदि खलु त्वं देवानु प्रिये ! मा ततो देवलोकादागत्य केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं बोधये , ' तोहं ' तदाऽहं त्वा ' विसज्जेमि ' प्रव्रजितुमाज्ञापयामि ! 'अह णं' अथ खलु यदि खलु त्वं मा 'ण संबो-हेसि ' न संबोधयसि=केवलिप्ररूपितं धर्मं बोधयितुं प्रतिज्ञां न करोषि ' तो ' तदा ' ते ' त्वा न विसृजामि=प्रव्रजितुं नाज्ञापयामि । ' तएणं ' ततः खलु=तेतलिपुत्रस्य एतद्वचनश्रवणानन्तम् , सा पोट्टिला तेतलिपुत्रस्य ' एयमट्ठं ' एतमर्थं=धर्मं प्रति बोधनरूपमर्थं ' पडिसुणेइ ' प्रतिशृणोति=स्वीकरोति । ततः खलु तेतलिपुत्रो विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्यं चतुर्विधमाहारम् , ' उवक्खडावेइ ' उपस्कारयति= निष्पादयति, ' उवक्खडावित्ता ' उपस्कार्य ' मित्तणाइ जाव आमंतेइ ' मित्रज्ञाति

सुव्रता आर्यिका के पास धर्म का उपदेश सुना है वह धर्म मुझे बहुत ही अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ है । इस लिये में आपसे आज्ञा लेकर दीक्षित होना चाहती हूँ । पोट्टिला की ऐसी बात सुन कर तेतलिपुत्रने उससे कहा--देवानुप्रिये ! बात ऐसी है कि तुम दीक्षित हो कर जब काल अवसर काल करोगी (यह निश्चित है) अन्यतर देवलोक में देवता की पर्याय से उत्पन्न होओगी-तब यदि देवानुप्रिय ! मुझे वहां से आ कर तुम केवलिप्रज्ञप्त धर्म समझाओ-तो मैं तुम्हे प्रव्रजित होने के लिये आज्ञा दे सकता हूँ (अह णं तुमं मम ण संबोहेसि तो ते ण विस ज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, ततः खलु तेयलिपुत्ते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ जाव

ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળ્યો છે અને તે મને ગમી ગયો છે, એટલા માટે હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છું છું પોટ્ટિલાની આ જાતની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્રે તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દીક્ષિત થઈને જ્યારે કાળના સમયે કાળ કરશો અને અન્યતર દેવલોકમાં દેવતાના પર્યાયથી જન્મ પામશો ત્યારે જો તમે હે દેવાનુપ્રિયે ! ત્યાંથી આવીને મને કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સમજાવો તો હું તમને અત્યારે ખુશીથી પ્રવ્રજીત થવાની આજ્ઞા આપી શકું તેમ છું

(अह णं तुमं मम णं संबोहेसि तो ते ण विसज्जेमि तएणं सा पोट्टिला तेयलि-पुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, तत. खलु तेतलिपुत्ते विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता, मित्तणाइ जाव आमंतेइ, आमंतित्ता, मित्तणाइ सम्माणित्ता पोट्टिल

श्रेयः=उचितं खलु मम सुव्रतानामार्याणामन्तिके प्रव्रजितुम्, एवं सम्प्रेक्षते=विचारयति, सम्प्रेक्ष्य=विचार्य 'कल्लं जाव पाउप्पभायाए' कल्यं यावत् प्रादुष्प्रभातायाम्=प्रातः सूर्योदयसमये यत्रैव तेतलिपुत्रस्तत्रैव उपागच्छति उपागत्य 'करयल- परि०' करतलपरीगृहीतं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय! मया सुव्रतानामार्याणामन्तिके धर्मः 'णिसते' निशान्तः=श्रुत, 'जाव अब्भणु

उसे कैसे हो सकती है। इस लिये मुझे अब यही उचित है कि मैं सुव्रता आर्यिका के पास प्रव्रजित हो जाऊँ। (एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार जब वह विचार कर चुकी तो विचार करके फिर जब प्रातःकाल हुआ और सूर्य का उदय हो चुका तब जहाँ तेतलिपुत्र था वहां पहुंची (उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु-तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि, तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो ह विसज्जेमि) वहां जाकर उसने दोनों हाथ जोड कर उस को नमस्कार किया-बाद में वह इस प्रकार उससे कहने लगी हे देवानुप्रिय! बात ऐसी है कि मैंने

દરકાર જ શી હોય? એથી મને હવે એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું સુવ્રતા આર્યિકાઓની પાસે પ્રવ્રજિત થઇ જાઉં

(एवं संपेहेइ, संपेहित्ता कल्लं जाव पाउप्पभायाए जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે જ્યારે તેણે ચોક્કસ વિચાર કરી લીધો ત્યારે તે સવારે સૂર્યોદય થતાં જ્યાં તેતલિપુત્ર અમાત્ય હતો ત્યાં પહોંચી

(उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव अब्भणुन्नाया पव्वइत्तए, तएणं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि तं जइणं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोयाओ आगम्म, केवलिपन्नत्ते धम्मे बोहेहि तो ह विसज्जेमि)

ત્યાં જઈને તેણે તેમને બંને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યો અને ત્યારપછી તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગી કે હે દેવાનુપ્રિય! મેં સુવ્રતા આ[illegible] પાસેથી

दूरोह=आरोह्य ' मित्तणाइ जाव संपरिवुडे ' मित्रज्ञाति यावत् संपरिवृतः=मित्र-ज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनादिभिर्युक्तः ' सव्विड्ढीए ' सर्वद्धर्या ' जाव रवेणं ' यावद्रवेण=भेर्यादिनिनादेन सह तेतलिपुरस्य मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामुपाश्रय स्तत्रैव उपागच्छति । सा पोट्टिला शिबिकातः 'पच्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति=अवतरति। ततः स तेतलिपुत्रः पोट्टिलां पुरतः कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः मम पोट्टिलाभार्या इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा, वर्तते,

बैठा कर मित्र, ज्ञाति स्वजन सम्बन्धी परिजनों से युक्त होकर अपनी समस्त विभूति के अनुसार गाजे बाजेके साथ तेतलिपुर नगर के बीचो-बीच चल कर वह जहां सुव्रता आर्यिका का उपाश्रय था वहां पहुँचा। ('पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमसइ वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी, एव खलु देवाणुप्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसण ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्ख अहासुह मा पडिबध करेहि) पोट्टिला शिबिका से उतरी-तेतलिपुत्र पोट्टिलाको आगे करके जहां सुव्रता आर्यिका थीं वहां गया। जा कर उसने उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिये ! यह मेरी पोट्टिला नाम की पत्नी है। यह मुझे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम है। इसने

પાલખીમા બેસાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબધી પરિજનોને સાથે લઈને તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાજાવાજાની સાથે તેતલિપુર નગરની વચ્ચોવચ્ચ થઈને જ્યા તે સુવ્રતા આર્યિકાનો ઉપાશ્રય હતો ત્યા પહોચ્યો. (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसण ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्ख अहासुह मा पडिबध करेहि) પોટ્ટિલા પાલખીમાથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોટ્ટિલાને આગળ રાખીને જ્યા સુવ્રતા આર્યિકા હતી ત્યા ગયો. ત્યા જઈને તેણે તેમને વદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોટ્ટિલા નામે મારી પત્ની છે અને એ ઇષ્ટ કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે એણે તમારી પાસેથી ધર્મનુ શ્રવણ કર્યું છે

यावदामन्त्रयति, मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, 'आमंतित्ता' आमन्त्र्य 'जाव सम्माणेइ' यावत्-सम्मानयति=अशनपानादि चतुर्विधाहारेण सम्मान्य, 'पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीअं' पोट्टिलां स्नातां यावत् पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकाम्, 'दूरोहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, 'दूरुहित्ता'

आमंतेइ आमंतित्ता जाव सम्माणेइ, सम्माणित्ता पोट्टिलं ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता मित्तणाइ जाव सपरि-वुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं तेयलिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ) यदि तुम मुझे संबोधित नहीं करोगी अर्थात् केवलि प्रज्ञप्त धर्म को मुझे समझाने की प्रतिज्ञा नहीं करोगी तो मैं तुम्हे दीक्षित होने की आज्ञा नहीं दूंगा—इस प्रकार के तेतलिपुत्रके इस कथनको उस पोट्टिलाने स्वीकार कर लिया। अर्थात् मैं देवलोक में जाऊंगा तो वहां से आ कर आप को प्रतिबोध दूंगी इस प्रकार जब पोट्टिला ने स्वीकार कर लिया। इस के बाद तेतलिपुत्र ने विपुल मात्रा अनशनादि रूप चारों प्रकार का आहार निष्पन्न करवाया-करवा करके फिर उसने अपने मित्र, ज्ञाति, आदि जनों को आमन्त्रित किया। मित्र, ज्ञाति, स्वजन संबन्धी परिजनोंको आमन्त्रित करके यावत् अशन पानादिरूप इस चतुर्विध आहार से उनका सन्मान करके उसने पोट्टिलाको स्नान करवा कर यावत् उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर बैठाया,

ण्हाय जाव पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहइ दुरूहित्ता मित्तणाइ जाव संपडिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण तेयलिपुरस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव सुव्वयाण उवस्सए तेणेव उवागच्छइ)

જો તમે મને સંબોધશો નહિ એટલે કે જો તમે મને કેવળિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને સમજાવવાની પ્રતિજ્ઞા કરશો નહિ તો તમને હું કોઈપણ સંજોગોમાં પણ દીક્ષા સ્વીકારવાની આજ્ઞા આપીશ નહિ આ રીતે કહેવાથી પોટ્ટિલાએ તેતલિપુત્રના કથનને સ્વીકારી લીધું એટલે કે પોટ્ટિલાએ તેમને આ પ્રમાણે પ્રતિજ્ઞાબદ્ધ થઈને કહ્યું કે હું દેવલોકમાં જઈશ અને ત્યાંથી આવીને તમને ધર્મનો બોધ આપીશ આમ જ્યારે પોટ્ટિલાએ સ્વીકારી લીધું, ત્યારપછી તેતલિપુત્રે પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરેના રૂપમાં ચાર જાતના આહારો બનાવડાવ્યા અને ત્યારબાદ તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ, વગેરે સ્વજનોને આમંત્રણ આપ્યું મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સંબંધી પરિજનોને આમંત્રણ આપીને યાવત અશન પાન વગેરે ચાર જાતના આહારોથી તેમનું સન્માન કરીને તેણે પોટ્ટિલાને સ્નાન કરાવડાવ્યું અને યાવત તેને પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલ સાડી,

दूरोह्य=आरोह्य ' मित्तणाइ जाव संपरिवुडे ' मित्रज्ञाति यावत् संपरिवृतः=मित्र-ज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनादिभिर्युक्तः ' सव्विड्ढीए ' सर्वद्धर्या ' जाव रवेण ' यावद्रवेण=भेर्यादिनिनादेन सह तेतलिपुरस्य मध्यमध्येन यत्रैव सुव्रतानामुपाश्रय स्तत्रैव उपागच्छति । सा पोट्टिला शिबिकातः ' पच्चोरुहइ ' प्रत्यवरोहति=अवतरति। तत स तेतलिपुत्र पोट्टिला पुरतः कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्या तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः मम पोट्टिलाभार्या इष्टा कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोऽमा, वर्तते,

---

बैठा कर मित्र, ज्ञाति स्वजन सम्बन्धी परिजनों से युक्त होकर अपनी समस्त विभूति के अनुसार गाजे बाजेके साथ तेतलिपुर नगर के बीचों-बीच चल कर वह जहां सुव्रता आर्यिका का उपाश्रय था वहां पहुँचा । (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वंदइ नमसइ वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी, एवं खलु देवाणुप्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसण ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्खं अहासुह मा पडिबंध करेहि) पोट्टिला शिबिका से उतरी-तेतलिपुत्र पोट्टिलाको आगे करके जहां सुव्रता आर्यिका थीं वहां गया । जा कर उसने उनको वंदनाकी नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिये ! यह मेरी पोट्टिला नाम की पत्नी है । यह मुझे इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ एवं मनोम है । इसने

પાલખીમા બેસાડીને મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબધી પરિજનોને સાથે લઈને તે પોતાની સમસ્ત વિભૂતિ મુજબ ગાજાવાજાની સાથે તેતલિપુર નગરની વચ્ચોવચ્ચ થઈને જ્યા તે સુવ્રતા આર્યિકાનો ઉપાશ્રય હતો ત્યા પહોંચ્યો. (पोट्टिला सीयाओ पच्चोरुहइ, तेतलिपुत्ते पोट्टिल पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा ५ एसणं ससारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणीभिक्खं अहासुह मा पडिबंध करेहि) પોટ્ટિલા પાલખીમાંથી નીચે ઉતરી પડી, તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોટ્ટિલાને આગળ રાખીને જ્યા સુવ્રતા આર્યિકા હતી ત્યા ગયો ત્યા જઈને તેણે તેમને વદના તેમજ નમસ્કાર કર્યા, વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! આ પોટ્ટિલા નામે મારી પત્ની છે અને એ ઇષ્ટ કાંત, પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ છે એણે તમારી પાસેથી ધર્મનુ શ્રવણ કર્યું છે

एषा खलु भवतीना समीपे धर्म श्रुत्वा, धर्मश्रवणजनितवैराग्यवशात् संसारभयो द्विग्ना 'जाव पव्वइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतोनामन्तिके प्रव्रज्या ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानु प्रियाः! इमा शिष्याभिक्षाम्, सुव्रतार्या प्राह–यथासुखम् मा प्रतिबन्ध कुरुष्व। ततः खलु सा पोट्टिला सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्त्य दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्रामति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्या लङ्कारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिक लोच करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमव दत्–'आलित्तेण भंते! लोए' आदीप्तः खलु भदन्त! लोकः–हे आर्ये! एष लोको जन्मजरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एव' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणंदा' यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषाऽपि सुव्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यावत्–एकादश अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयति, पालयित्वा मासिक्या

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह संसार भय से उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, त्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित होना चाहती है। इसलिये हे देवानुप्रिये! आप मेरे द्वारा दी गई इस शिष्य भिक्षाको अंगीकार कीजिये। तब सुव्रता आर्यिका ने कहा–यथा सुख मा प्रतिबंध कुरुष्व–(तएणं सा पोट्टिला–सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंच मुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवा गच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–अलित्ते णं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

તેના પ્રભાવથી એ સંસારભયથી વ્યાકુળ થઈને જન્મ–મરણથી ભીત અને ત્રસ્ત થઈને તમારી પાસેથી દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે એટલા માટે હે દેવાનુ પ્રિયે! મારા વડે અપાતી આ શિષ્યા રૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો. ત્યારે જવાબમાં સુવ્રતા આર્યિકાએ તેને કહ્યું કે 'યથાસુખ મા પ્રતિબંધ કુરુષ્વ' (तएणं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तर पुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण–मल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–अलित्तेणं भंते! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

संलेखनया आत्मानं जुष्ट्वा षष्ठिं भक्तानि अनशनेन छित्त्वा, 'आलोइयपडिक्कंता' आलोचित प्रतिक्रान्ता 'समाहिपत्ता' समाधिप्राप्ता कालमासे कालं कृत्वा अन्य-तरेषु देवलोकेषु देवतया उपपन्ना। सू० ८॥

वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सर्द्धिभत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता, कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु – देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा) इस प्रकार सुव्रता आर्यिका के द्वारा कही गई वह–पोट्टिला बहुत अधिक हृष्टतुष्ट हुई। बाद में वह ईशान कोणमें गई। वहां जाकर उसने अपने हाथों से शरीर पर रहे हुए आभरण, माल्य एवं अलं-कारों को उतार दिया। उतार कर अपने आप पंचमुष्टिक केशों का लुंचन किया–लुंचन कर फिर वह जहां सुव्रता आर्या थीं वहां आई। आते ही उसने उन्हें वन्दना एवं नमस्कार करके फिर वह इस प्रकार बोली— हे भदन्त! यह लोक जरा मरण आदि दुःखों से प्रज्वलित हो रहा है, इस प्रकार से देवानंदा की तरह यह सुव्रता आर्या के पास दीक्षित हो गई। यावत् उसने ११ अंगों का अध्ययन भी कर लिया। बहुत वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया। प्रीतिपूर्वक अन्त में एक मास की सलेखना धारण कर ६०, भक्तों का अनशन द्वारा छेद

वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता सर्द्धिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता आलोइयपडिक्कंता समाहिपत्ता, कालमासे कालं किच्चा अण्णतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा)

આ રીતે સુવ્રતા આર્યિકા વડે આજ્ઞા અપાયેલી પોટ્ટિલા ખૂબ જ હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈ ગઈ ત્યારપછી તે ઈશાન કોણ તરફ ગઈ અને ત્યાં જઈને તેણે પોતાના હાથથી જ શરીર ઉપરના આભરણો, માળાઓ અને અલંકારો ને ઉતાર્યા અને ઉતારીને પોતાની મેળે જ પાંચ મુઠી કેશોનું લુંચન કર્યું લુંચન કર્યા પછી તે જ્યાં સુવ્રતા આર્યા હતી ત્યાં આવતી રહી ત્યાં આવીને તેણે તેમને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા, વંદના અને નમસ્કાર કરીને તે આ પ્રમાણે વિનતી કરવા લાગી કે હે ભદન્ત! આ સંસાર જરા (ઘડપણ) મરણ વગેરે દુઃખોથી સળગી રહ્યો છે આ રીતે પોટ્ટિલા દેવાનંદાની જેમ સુવ્રતા આર્યાની પાસે દીક્ષિત થઈ ગઈ અને અનુક્રમે તેણે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન પણ કરી લીધું તેણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું છેવટે પ્રીતિપૂર્વક એક માસની સંલેખના ધારણ કરીને અનશન વડે સાઠ ભક્તોનું છેદન કર્યું

एषा खलु भवतीनां समीपे धर्मं श्रुत्वा, धर्मश्रवणजनितवैराग्यवशात् संसारभयो द्विग्ना 'जाव पव्वइत्तए' यावत् प्रव्रजितुम् भीता जन्म मरणेभ्यो भवतीनामन्तिके प्रव्रज्यां ग्रहीतुमिच्छति, तस्मात् 'पडिच्छंतु' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु देवानुप्रियाः ! इमां शिष्याभिक्षाम्, सुव्रतार्या प्राह-यथासुखम् मा प्रतिबन्धं कुरुष्व । ततः खलु सा पोट्टिला सुव्रताभिरार्याभिरेवमुक्ता सती हृष्टतुष्टा उत्तरपौरस्त्य दिग्भागम्=ईशानकोणम् अवक्राम्यति=गच्छति, अवक्रम्य स्वयमेव आभरणमाल्यालङ्कारमवमुञ्चति, अवमुच्य स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, कृत्वा यत्रैव सुव्रता आर्यास्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवदत्-' आलित्तेणं भंते ! लोए ' आदीप्तः खलु भदन्त ! लोकः-हे आर्ये ! एष लोको जन्मजरामरणादिभिर्दुःखैः प्रज्वलितः, 'एवं ' अनेन प्रकारेण 'जहा देवाणंदा' यथा देवानन्दा=देवानन्देव एषाऽपि सुव्रतानामन्तिके प्रव्रजिता, यावत्-एकादश अङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या

आपके पास धर्म सुना है सो उसके प्रभाव से यह संसार भय से उद्विग्न हो कर जन्म मरण से भीत, त्रस्त हो कर आपके पास दीक्षित होना चाहती है । इसलिये हे देवानुप्रिये ! आप मेरे द्वारा दी गई इस शिष्य भिक्षाको अंगीकार कीजिये । तब सुव्रता आर्यिका ने कहा— यथा सुखं मा प्रतिबंध कुरुष्व—(तएणं सा पोट्टिला-सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी—अलित्ते णं भंते । लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

તેના પ્રભાવથી એ સંસારભયથી વ્યાકુળ થઈને જન્મ-મરણથી ભીત અને ત્રસ્ત થઈને તમારી પાસેથી દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઈચ્છે છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે! મારા વડે અપાતી આ શિષ્યા રૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો. ત્યારે જવાબમાં સુવ્રતા આર્યિકાએ તેને કહ્યું કે ' યથાસુખં મા પ્રતિબંધ કુરુષ્વ '

(तएणं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरण-मल्लालंकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव, पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करित्ता जेणेव सुव्वयाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अलित्तेणं भंते ! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूणि

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहस्सियं संवड्डिए, एयं णं तुब्भे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचह । सव्वं च से उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ । तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमार महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झय रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी– एस णं पुत्ता! तव रज्जे य जाव अंतेउरे य० तुमं च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, तं तुमं ण तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इत अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोग च से अणुवड्ढेहि। तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा कदाचित् । ' कालधम्मुणा सजुत्ते ' कालधर्मेण संयुक्तः= मृतश्चाप्यभवत् । तत'

'तएण से कणगरहे राया' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएण

' तएण से कणगरहे राया ' इत्यादि

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) ते कनकरथ ... કવલિત થઈ ગયો એટલે કે મૃત્યુ પામ્યો.

मूलम्-तएण से कणगरहे राया अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तएणं राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता, अन्नमन्नं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियंगित्था, अम्हेणं देवाणुप्पिया! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतली अमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था, तं सेयं खलु अम्हं तेतलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तएत्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, तेतलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ। अम्हे य णं रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा, तुमं च णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए, तं जइणं देवाणुप्पिया! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसंपन्ने अभिसेयारिहे, तएणं तुमं अम्हं दलाहि। जाणं अम्हे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामो। तएणं तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर० एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव सस्सिरीयं करेइ, करित्ता तेसिं ईसर

दिया। छेद कर आलोचित प्रतिक्रान्त बनी हुई यह समाधि प्राप्त हो गई और काल अवसर काल कर अन्यतर देवलोकमें देवता की पर्याय से उत्पन्न हो गई। सू० ८॥

છેદન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાંત બનેલી તે સમાધિ પ્રાપ્ત થઈ ગઈ અને કાળ અવસરે કાળ કરીને અન્યતર દેવલોકમાં દેવતાના પર્યાયથી જન્મ પામી. સૂ ‘૮’

जाव उवणेइ, उवणित्ता, एवं वयासी-एस ण देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए नाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रन्नो रहस्सियं संवड्ढिए, एयं णं तुब्भे महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचह । सव्वं च से उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ । तएणं ते ईसर० कणगज्झयं कुमारं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचंति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवंत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ । तएणं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी-एस णं पुत्ता! तव रज्जे य जाव अंतेउरे य० तुमं च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, तं तुमं ण तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि इंतं अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासाहि, वयंतं पडिससाहेहि, अद्धासणेणं उवणिमंतेहि भोगं च से अणुवड्ढेहि। तएणं से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ जाव भोगं च से अणुवड्ढेइ ॥सू० ९॥

टीका—'तएण से' इत्यादि । ततः खलु स कनकरथो राजा अन्यदा कदाचित् । 'कालधम्मुणा संजुत्ते' कालधर्मेण संयुक्तः= मृतश्चाप्यभवत् । तत

'तएण से कणगरहे राया' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) वह कनकरथ राजा किसी एक दिन काल कवलित हो गया (तएण

' तएण से कणगरहे राया ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से कणगरहे राया अन्नया कयाइ) તે કનકરથ રાજા કોઈ દિવસે કાલકવલિત થઈ ગયો એટલે કે મૃત્યુ પામ્યો.

खलु 'राईसर० जाव '=राजेश्वर० यावत्=राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकादि सार्थवाहप्रभृतयः तस्य 'णीहरणं' निहरणं=मृतकृत्यं कुर्वन्ति, कृत्वा अन्यो ऽन्यमेवमवदन्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! कनकरथो राजा 'रज्जे य जाव पुत्ते' राज्ये च यावत् पुत्रान्=राज्यादिषु मूर्च्छितः उत्पन्नान् पुत्रान् 'वियगित्था' अव्यङ्गयत्=विकृताङ्गान् कृतवान् मारितवानित्यर्थः। 'अम्हेण' वय खलु देवानु प्रिया! 'रायाहीणा' राजाधीनाः=राजवशवर्तिनः, 'रायाहिट्ठिया' राजाऽधि ष्ठिता=राजाश्रिता इत्यर्थः, 'रायाहीणकज्जा' राजाधीनकार्याः, राजाधीन कार्य

राईसर जाव णीहरण करेंति, करित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था) राजेश्वर, तलवर, माडम्बिक, कौटुम्बिक, सार्थवाह आदि व्यक्तियों ने मिल कर उसका दाह संस्कार किया। दाह संस्कारस्प मृतक कृत्य करने के बाद फिर उन लोगों ने परस्पर में इस प्रकार का विचार किया। हे देवानु प्रियो! देखो कनकरथ राजाने तो राज्य आदि में मूर्च्छित हो कर उत्पन्न हुए समस्त पुत्रों को विकृत अंग करके मार डाला है (अम्हे णं देवाणुप्पिया! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा अयं च णं तेतलीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु-सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दिन्नवियारे-सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था) अब इस समय कोई राजा है नहीं अतः हमलोगों का क्या होगा क्यों कि हम लोग तो हे देवा नुप्रियो! राजा वशवर्ती है, राजा के आश्रित ही रहते आये हैं, हमारा

(तएण राईसर जाव णीहरणं करेंति, करित्ता अन्नमन्नं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! कणगरहे राया रज्जे य जाव पुत्ते वियगित्था)

રાજેશ્વર, તલવર, માડંબિક કૌટુંબિક, સાર્થવાહ વગેરે લોકોએ મળીને તેનો અગ્નિ-સંસ્કાર કર્યો અગ્નિ-સંસ્કાર આદિ મૃત્યુ વિધિ પતાવીને તે લોકોએ પરસ્પર મળીને આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો! જુઓ, રાજા કનકરથે તો રાજ્ય વગેરેની બાબતમાં લોલુપ તેમજ મોહિત થઈને ઉત્પન્ન થયેલા પોતાના બધા પુત્રોના અંગો કાપીને મારી નાખ્યા છે

(अम्हेण देवाणुप्पिया! राया हीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा, अयं च णं तेतलीअमच्चे कणगरहस्स रन्नो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए, दिन्न विचारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था)

હવે અત્યારે કોઈ રાજા છે જ નહિ તો અમારી શી દશા થશે? હે દેવાનુપ્રિયો! અમે તો રાજાના વશવર્તી છીએ, રાજાને અધીન રહેવામાં

येषा ते तथा, सर्वमस्माकं कृत्य राजाधीनं वर्त्तते इति भावः । अयं च खलु तेतलिरमात्यः कनकरथस्य राज्ञः 'सव्वट्ठाणेसु' सर्वस्थानेषु=सन्धिविग्रहादिषु सर्वेषु कार्येषु, 'सव्वभूमियासु' सर्वभूमिकासु = स्वाम्यमात्यराष्ट्रदुर्गकोषबलसुहृत्पौरश्रेणिरूपाष्टविधासु 'लद्धपच्चए'=लब्धप्रत्यय -लब्धः=प्राप्तः प्रत्ययो विश्वासो यस्य सः, सकलजनविश्वासपात्रमित्यर्थः, 'दिन्नवियारे' दत्तविचारः, दत्तः= राज्ञे वितीर्णः, विचारः=शोभनो विचारो येन स, लोकोपकारि विचारदायक इतिभावः, 'सव्वकज्जवड्ढावए' सर्वकार्यवर्द्धकः=राज्ये समस्तकार्यसम्पादकश्चापि 'होत्था' अस्ति । 'त' तत्=तस्मात् कारणात् 'सेयं' श्रेयः=उचितं खलु अस्माकं तेतलिपुत्रममात्यं कुमारं 'जाइत्तए' याचितुम्, अयमभिप्राय'-यदयममात्यो राज्ञः सकलकार्यनिर्वाहकः, अतस्तत्समीपे गत्वा 'कोऽपि राजलक्षणसम्पन्नः कुमारो राजपदे स्थापनीयः' इति वार्तालापमुपक्रम्य, समागते प्रसङ्गे, तत्पुत्रो राजपदे स्थापयितु याचनीयः, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि कृत्वा अन्योऽन्यस्य एतमर्थं 'पडिसुणेति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, 'पडिसुणित्ता' प्रतिश्रुत्य, यत्रैव तेतलिपुत्रोऽमात्यस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, एवमवदन्-एवं खलु

जितना भी कार्य होता है वह सब राजाधीन ही होता आया है । इस लिये तेतलिपुत्र जो अमात्य है चलो उनके पास चले क्यों कि वे ही कनकरथ राजाके लिये सधिविग्रह आदि समस्त कार्यों में एव स्वामी, अमात्य, राष्ट्र, दुर्ग कोश, बल, सुहृत् और पौरश्रेणीरूप आठ भूमियों में विश्वसनीय थे । राजा के लिये ये ही लोकोपकारी कार्यों में सलाह दिया करते थे और ये ही राज्यमें समस्त कार्यों के संपादक हैं (त सेय खलु अम्ह तेतलिपुत्त अमच्च कुमार जाइत्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एय मट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अमच्च एव वयासी-एव खलु देवाणु-

ટેવાઇ ગયેલા છીએ અમારા બધા કામો રાજાધીન જ હોય છે એથી ચાલો આપણે સૌ મળીને અમાત્ય તેતલિપુત્રની પાસે જઇએ, કેમકે તેઓ જ રાજા કનકરથના સંધિવિગ્રહ વગેરે બધા કામોમા અને સ્વામી અમાત્ય, રાષ્ટ્ર દુર્ગ, કોશબળ, સુહૃત અને પૌર શ્રેણિરૂપ આઠ ભૂમિઓમા તે વિશ્વસનીય છે લોકોના હિત માટે તેતલિપુત્ર અમાત્ય જ સલાહ આપતા રહેતા હતા તેમજ રાજ્યના બધા કામોને પાર પાડનારા પણ તેઓ જ છે

(तसेय खलु अम्ह तेतलिपुत्त अमच्च कुमारं जाइत्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव तेतलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अमच्चं एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! कणगरहे

हे देवानुप्रिय ! कनकरथो राजा राज्ये च राष्ट्रे च यावत् व्यङ्गयति, वय च खलु हे देवानुप्रिय ! राजाधीना यावद् राजाधीनकार्याः, त्वं च खलु हे देवानुप्रिय !

प्पिया ! कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियंगेइ, अम्हे य ण राया हीणा जाव रायहीणकज्जा, तुम च ण देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुरा चिंतए—त्त जइण देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसपन्ने अभिसेयारिहे, तएण तुम अम्ह दलाहि) इसलिये हमको उचित है कि हम तेतलिपुत्र अमात्य से कुमार की याचना करें। तात्पर्य इस का यह है कि ये तेतलिपुत्र अमात्य राजा के सकल कार्य निर्वाहक हैं–इसलिये उनके पास चलकर "कोई राज लक्षण सपन्न कुमार राजपद में स्थापनीय है" इस बात की हम चर्चा करें। इस चर्चा के प्रसग में उनसे यह भी निवेदन करेंगे कि आप अपने पुत्र को ही राज पद में स्थापित कर दीजिये। इस प्रकार का विचार उन्होंने किया। जब विचार स्थिर होचुका–तब सबने इस बात को एक मत से स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर के फिर वे सबके सब जहा अमात्य तेतलिपुत्र थे वहा गये। वहा जाकर उन्होंने ऐसा कहा– हे देवानुप्रिय ! कनक रथ राजाने राज्य और राष्ट्र आदि में विशेष मू च्छित बनकर उत्पन्न हुए अपने समस्त पुत्रो को अगभग कर मारडाला

राया रज्जे य रट्ठे य जाव वियगेइ, अम्हे य ण देवाणुप्पिया ! कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए–त जइण देवाणुप्पिया ! अत्थि केइ कुमारे रायलक्खणसपन्ने अभिसेयारिहे, तण्ण तुम अम्ह दलाहि)

એથી અમને એ ઉચિત લાગે છે કે અમે તેતલિપુત્ર અમાત્યની પાસે જઈને રાજકુમારની યાચના કરીએ કારણ કે તેતલિપુત્ર અમાત્ય રાજાના બધા કામોને સારી રીતે પાર પાડનાર છે, એટલા માટે તેમની પાસે જઈને રાજા થવા યોગ્ય રાજ–લક્ષણ યુક્ત કોઈ કુમાર મળી શકે તેમ છે કે કેમ ? તે વિશે ચર્ચા કરીએ આ જાતની વિચારણા કરતા કરતા અમે બધા તેમને એવી વિનતી પણ કરીશું કે તમે પોતાના પુત્રને જ રાજગાદીએ બેસાડી દો આમ તે લોકોએ મળીને વિચાર કર્યો આમ વિચાર પાકો થઈ ગયો ત્યારે સૌએ એકમત થઈને તેને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેઓ બધા ત્યાથી જ્યા અમાત્ય તેતલિપુત્ર હતો ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેમણે તેતલિપુત્રને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! કનકરથ રાજાએ રાજ્ય અને રાષ્ટ્ર વગેરેમા અવિશેષ મૂર્છિત એટલે કે મોહવશ થઈને જન્મ પામેલા પોતાના બધા જ પુત્રોના અ ગો કાપીને ... ને મારી

कनकरथस्य राज्ञः सर्वस्थानेषु यावत् 'रज्जधुराचिंतए' राज्यस्य धूः राज्यधुरा, तस्याश्चिन्तकः, राज्यभारनिर्वाहकश्चासि, तद् यदि खलु देवानुप्रिय! अस्ति कोऽपि कुमारो राजलक्षणसम्पन्नः 'अभिसेयारिहे' अभिषेकार्हो राज्याभिषेकयोग्यः, 'त ण' त खलु त्वमस्मभ्य 'दलाहि' देहि 'जो' यस्मात् 'ण' त 'अम्हे' वय महता २ 'रायाभिसेएण' राज्याभिषेकेण=राजयोग्येनाभिषेकेण अभिषिञ्चामः राज्ये स्थापयाम इत्यर्थः। ततः खलु तेतलिपुत्रः तेषाम् 'ईसर०=ईश्वर०= ईश्वरतलवरमाडम्बिकादि सार्थवाहप्रभृतीनाम् एतमर्थं 'पडिसुणेइ' प्रतिश्रृणोति= स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य, कनकध्वज कुमार 'ण्हाय सस्सिरीय' स्नात यावत् सश्रीक, स्नात=कृतस्नानम्, यावत् सश्रीकम्=सर्वालङ्कारविभूषित शोभासमन्वित च करोति, कृत्वा तेषाम् 'ईसर जाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरादीना सम्मुखे 'उवणेइ' उपनयति, उपनीय एवमवादीत्-एष खलु हे देवानुप्रियाः!

है। अब इस समय राज पद में कोई नहीं है। हमलोग तो हे देवानुप्रिय! राजाधीन यावत् राजाधीन कार्य वाले हैं। और देवानुप्रिय! कनक रथ राजा के लिये सधि विग्रह आदि समस्त स्थानों मे एव स्वामी अमात्य आदि आठ भूमियों में विश्वसनीय रहें हैं। राजा के लिये लोकोपकारी कार्यो में आप सलाह देते रहे हैं। और आप ही राज्य भार के निर्वाहक है। इसलिये हमारी आपसे यह प्रार्थना है कि हे देवानुप्रिय! यदि राज्यलक्षण सपन्न कोई कुमार राज्य पद मे अभिषेक करने के योग्य होवे तो उसे आप हमें देवे। (जो ण अम्हे महया२ रायाभिसेएण अभिसिंचामो। तएण तेतलिपुत्ते तेसिं ईसरएयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता कणगज्झय कुमार ण्हाय जाव सस्सिरीय करेइ, करित्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी) कि जिससे हम उसे

નાખ્યા છે હવે અત્યારે રાજપદ માટે કોઈ રહ્યુ નથી હે દેવાનુપ્રિય! અમે લોકો તો રાજાધીન રહીને જ રહેતા આવ્યા છીએ અને હે દેવાનુપ્રિય! તમે રાજા કનકરથના સધિવિગ્રહ વગેરે બધા કામોમા એટલે કે સ્વામી અમાત્ય, વિગ્રહ વિગેરે તમામ કામોમા હમેશા વિશ્વાસપાત્ર રહ્યા છો, લોકહિતની બાબતમા તમે રાજાને સલાહ આપતા રહ્યા છો, અને તમેજ રાજ્યના બધા કામોને પાર પાડતા આવ્યા છો એથી અમે તમને એવી વિનતિ કરીયે છીએ કે હે દેવાનુપ્રિય! રાજ-લક્ષણોવાળો અને અભિષિક્ત થઈને રાજગાદીએ બેસવા યોગ્ય કોઈ કુમાર હોય તો તેને તમે અમને સોપો (जे ण अम्हे महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचामो। तएण तेतलिपुत्ते तेसिं ईसर एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झय कुमार ण्हाय जाव सस्सिरीये करेइ, करित्ता तेसिं ईसर जाव उवणेइ, उवणित्ता एव वयासी)

कनकरथस्य राज्ञः पुत्रः पद्मावत्या देव्या आत्मजः कनकध्वजो नाम कुमारः अभिषेकार्हो राजलक्षणसम्पन्नो मया कनकरथस्य राज्ञो 'रहस्सिय' रहस्यिकम्=प्रच्छन्नं यथा स्यात्तथा संवर्द्धितः, एतं खलु यूयं महता २ राजाभिषेकेण अभिषिञ्चत। पुनः सः सर्वं च 'से' तस्य 'उट्ठाणपरियावणियं' उत्थानपरिस्थापनिकम्=

राज योग्य अभिषेक द्वारा अभिषिक्त कर राज्य में स्थापित करें। इस तरह के उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक आदि सार्थवाह वगैरह के इस कथन रूप अर्थ को उस तेतलिपुत्र अमात्य ने स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके कनक ध्वज कुमार को उसने नहा धुवाकर सर्वालंकारों से विभूषित किया। विभूषित करके फिर वह उसे उन ईश्वर तलवर आदिकों के समक्ष ले आया। लाकर के उनसे उसने ऐसा कहा-(एस ण देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए एयं ण तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह) हे देवानुप्रियो! यह कनकरथ राजा का पुत्र है जो पद्मावती की कुक्षि से जन्मा है। इसका नाम कनक ध्वज कुमार है। अभिषेक के योग्य है और राजलक्षण संपन्न है। मैंने इसको कनकरथ राजा से छिपा कर पालापोषा है और वृद्धिंगत किया है। इसे आपलोग बडे भारी राजयोग्य अभिषेक के साथ राज्य में स्थापित कीजिये। (सव्वं च से

કે જેથી અમે તેનો રાજ્યાસને અભિષેક કરી શકીએ આ રીતે અમાત્ય તેતલિપુત્રે તે ઈશ્વર, તલવર, માડંબિક, સાર્થવાહ વગેરેના કથનને સ્વીકાર્યું અને સ્વીકારીને તેણે કનકધ્વજ કુમારને સ્નાન કરાવ્યું અને ત્યારપછી બધા અલંકારોથી તેને શણગાર્યો ત્યારબાદ અમાત્ય તેતલિપુત્રે સુસજ્જ થયેલા કુમારને ઈશ્વર, તલવર વગેરેની સામે લાવ્યો અને તેઓને કહ્યું કે—

(एसण देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए अत्तए कणगज्झए णाम कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपन्ने मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सियं संवड्ढिए एयं ण तुब्भे महया महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह)

હે દેવાનુપ્રિયો! આ કનકરથ રાજાનો પુત્ર છે અને પદ્માવતી દેવીના ગર્ભથી આનો જન્મ થયો છે કનકધ્વજ કુમાર આનું નામ છે આ કુમાર રાજ્યાસને બેસાડવા યોગ્ય તેમજ રાજલક્ષણોથી યુક્ત છે રાજા કનકરથને આ બાબતની જાણ નથી, મેં આનું પાલન તેમજ રક્ષણ છુપી રીતે કર્યું છે તમે ભારે મહોત્સવની સાથે આ કુમારને રાજગાદીએ બેસાડો

उत्थान=जन्म, परियापनिका=जन्मानन्तरमद्यावधिका सवर्द्धनादिपरिस्थितिः, उत्थान च परियापनिका च=उत्थानपरियापनिकम्=जीवनचरित परिकथयति। तत खलु 'ईसर०' ईसरतलवरमाडम्बिकादयः कनकध्वज कुमार महता २ राजाभिषेकेण अभिषिञ्चन्ति। ततः खलु स कनकध्वज' कुमारो राजा जातः, स च कनकध्वजो राजा 'महया हिमवत०' महाहिमवद्०=महाहिमवन्महामलय मन्दरमहेन्द्रसारः '=महाहिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्राणा सार इव सारो यस्य सः,

---

उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर० कणगज्झय कुमार महया २ रायाभिसेएण अभिसिंचति। तएणं से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवत मलय० वण्णओ जाव रज्जं पसासेमाणे विहरइ, तएण सा पउमावई देवी कणगज्झय राय सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी) ऐसा कहकर फिर उन तेतलिपुत्र अमात्य ने उस कनकध्वज कुमार का उत्थान-जन्म और परियापनी का-जन्म से लेकर अभी तक की समस्त पालन पोषण सवर्द्धन आदि परिस्थिति रूप-जीवन चरित्र उन्हें कह सुनाया-इस के बाद उन ईश्वर, तलवर, माडम्बिक एव कौटु म्बिक आदिकोंने कनकध्वज कुमार का बड़े जोर शोर के साथ राज्याभिषेक किया। राज्य में अभिषिक्त होने के बाद वे कनकध्वज कुमार अब राजा बन गये। इसका सार-बल लोकमर्यादा कारी होने के कारण महा हिमवत् जैसा, यश और कीर्ति के फैलाव के कारण महामलय

(सव्व च से उट्ठाणपरियावणिय परिकहेइ, तएण ते ईसर०कणगज्झयं कुमार महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचावि। तएण से कणगज्झए कुमारे राया जाए, महया हिमवता मलय० वण्णओ जाव रज्ज पसासेमाणे विहरइ, तएण सा पउमावई देवी कणगज्झय रायं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

આ પ્રમાણે કહીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તે કનકધ્વજ કુમારનુ ઉત્થાન-જન્મ અને પરિયાપનિકા એટલે કે જન્મથી માંડીને અત્યાર સુધીની પોષણ સવર્દ્ધન વગેરેની જીવન ચરિત્ર સબધી બધી વિગત અથથી ઇતિ સુધી કહી સભળાવી ત્યારબાદ તે ઇશ્વિર, તલવર, માડબિક અને કૌટુબિક વગેરે લોકોએ કનકધ્વજ કુમારનો બહુ જ મોટા પાયા ઉપર ઉત્સવ ઉજવીને રાજ્યાભિષેક કર્યો અભિષિકત થવા બાદ કનકધ્વજ રાજા થઈ ગયા હતા તેમનુ બળ લોક મર્યાદાને રક્ષનાર હોવા બદલ મહાહિમવત જેવુ હતું તેમના યશ અને કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલા હતા તેથી તે મહામલય જેવા હતા તેમજ તેઓ દૃઢ પ્રતિ-

लोकमर्यादाकारित्वेन महाहिमवत्सदृश, मलयपदः कीर्तित्वेन महामलयतुल्य, दृढप्रतिज्ञत्वेन कर्तव्यदिग्दर्शकत्वेन च मन्दरमहेन्द्रतुल्य', 'वण्णओ' वर्णक विशेष रूपेण अन्यतोऽवसेयः, 'जाव रज्ज पसासेमाणे' यावद्राज्य प्रशासद् विहरति राज्य कुर्वन्नास्ते । ततः खलु सा पद्मावतीदेवी कनकध्वज राजान शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदत्-एतत् खलु हे पुत्र ! तव 'रज्जे य जाव अतेउरे य०' राज्य च यावदन्तः पुर च एतत्सर्व तेतलिपुत्रस्य प्रभावेन वर्तते 'त' तत्=कार णात् त्व खलु तेतलिपुत्रममात्य 'आढाहि' आद्रियस्व=आदर कुरुष्व 'परि जाणाहि, परिजानाहि=अवेक्षस्व तदनुमत्या सर्व कार्य सम्पादयेत्यर्थः सत्कारय वस्त्रादिना, सम्मानय माल्यादिना, 'इत' यन्तम्=आगच्छन्तमेत तेतलिपुत्रम् 'अब्भुट्ठेहि' अभ्युत्तिष्ठ=अभ्युत्थानादिना विनय प्रदर्शयेत्यर्थ 'ठिय पज्जुवासाहि' स्थित पर्युपास्व=सेवस्व, 'वयत' व्रजन्त=गच्छन्तम् 'पडिसंसाहेहि' प्रतिसंसा धय=अनुगमनादिना प्रसादय, तथा 'अद्धासणेण उवणिमतेहि' अर्धासनेन उपनि मन्त्रय=स्वस्यासने तमुपवेशय, भोग=सुखसामग्रीरूप च 'से' तस्य अनुवर्द्धय। ततः स कनकध्वज 'पउमावईए देवीए' पद्मावत्या देव्याः वचन 'तहत्ति'

के जैसा, दृढप्रतिज्ञा वाले एव कर्तव्य का दिग्दर्शन कराने वाले होने के कारण मन्दर महेन्द्र-मेरु के जैसा था। और भी इन राजा के विषय का विशेष वर्णन दूसरों शास्त्रों से जान लेना चाहिये। यावत् इस तरह ये कनकध्वज कुमार अपने राज्य के शासन करने में तत्पर बन गये। इसके बाद उस राजमाता पद्मावतीदेवी ने उन कनकध्वज राजाको अपने पास बुलाया-और बुलाकर फिर उनसे उसने इस प्रकार कहा-(तएण पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुमच तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहा वेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि,परिजाणाहि,सक्कारेहि,सम्मा णेहि, इत अब्भुट्ठेहि ठिय पज्जुवासाहि, वयत पडिससाहेहि, अद्धासणेण

જ્ઞાવાળા અને કર્ત૦ને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણવ્યુ છે, જીજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી જાણી લેવુ જોઈએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના વહીવટને સભાળવા માટે સાવધ થઇ ગયા ત્યારપછી રાજમાતા પદ્માવતીદેવીએ કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(तएण पुत्ता ! तव रज्जे य जाव अतेउरेय० तुम च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्मा

तथेति='तथास्तु' इतिकृत्वा प्रतिशृणोति=स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य तथैव कुर्वाण यावद् भोगं च तस्य अनुवर्द्धयति ॥ ९ ॥

उवणिमतेहिं, भोगंच से अणुवड्ढेहि। तएण से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ,जाव भोगंचसे अणुवड्ढेइ) हे पुत्र! यह तुम्हारा राज्य और अतः पुर तथा तुम स्वय यह जो कुछ है वह सब तेतलिपुत्र अमात्य के प्रभाव से ही है इसलिये तुम तेतलिपुत्र अमात्य का आदर करते रहो, उनकी अनुमति से काम किया करो उनका वस्त्रादि द्वारा समय २ पर सत्कार करते रहो, अभ्युत्थानादि सन्मान करते रहो और जब तेतलिपुत्र तुम्हें आते हुए दिखलाई दे तो तुम उठकर इनके प्रति अपना विनय प्रदर्शित किया करो। जब ये जावे-तब तुम बैठ कर इनकी सेवावृत्ति किया करो, जब ये चलने लगे तो तुम इनके पीछे २ थोड़ी दूर तक अपने महलों में पहुँचाने जाया करो, अपने बैठने के आसन पर इन्हें अर्धभाग में बैठाया करो और जो भी सुख साधनकी सामग्री है यह इनकी बढ़ा दो। इस प्रकार राजमाता पद्मावती देवी के वचनों को "तथास्तु" कहकर कनकध्वज राजाने स्वीकार कर लिया।

णेहि इत अब्भुट्ठेहि ठिय पज्जुवासाहि वय त पडिससाहेहि, अद्धासणेण उवणिमतेहि, भोग च से अणुवड्ढेहि। तएण से कणगज्झए राया पउमावईए देवीए तहत्ति पडिसुणेइ, जाव भोग च से अणुवड्ढेइ)

હે પુત્ર ? આ તમારૂ રાજ્ય રણવાસ તેમજ તમે પોતે આ બધુ જે કઇ છે, તે સર્વે તેતલિપુત્ર અમાત્યના પ્રભાવથી જ છે એથી તમે તેતલિપુત્ર અમાત્યનો સદા આદર કરતા રહો, દરેક કામ તેમની આજ્ઞાથી કરતા રહો, વસ્ત્રો વગેરે આપીને યથા સમય તેમનો સત્કાર કરતા રહો, તેમનુ સન્માન કરતા રહો અને અમાત્ય તેતલિપુત્ર તમને આવતા દેખાય ત્યારે તમે ઉભાથઇને તેમના પ્રતિ વિનય યુક્ત થઇને વ્યવહાર કરો. જ્યારે તેઓ જવા તૈયાર થાય ત્યારે તમે બેસીને તેમની સેવા કરતા રહો અને જ્યારે તેઓ ચાલવા માડે ત્યારે તમે તેમની પાછળ પાછળ થોડે દૂર સુધી પોતાના મહેલ માજ વિદાય આપવા માટે તેમનુ અનુસરણ કરેતા જાઓ તમે તેમને પોતાના આસનના અર્ધાભાગ ઉપર બેસાડો અને તેમની બધી સુખસગવડની સામગ્રી મા વધારો કરી આપો આ રીતે રાજમાતા પદ્માવતી દેવીની આજ્ઞાને કનકધ્વજ રાજાએ 'તથાસ્તુ' કહીને સ્વીકારી લીધી, સ્વીકાર્યા પછી તેઓએ તે

लोकमर्यादाकारित्वेन महाहिमवत्सदृश, मलयपवनः कीर्तित्वेन महामलयतुल्य, दृढप्रतिज्ञत्वेन कर्तव्यदिग्दर्शकत्वेन च मन्दरमहेन्द्रतुल्यः, 'वण्णओ' वर्णक विशेष रूपेण अन्यतोऽवसेयः, 'जाव रज्जं पसासेमाणे' यावद्राज्य प्रशासद् विहरति राज्य कुर्वन्नास्ते। ततः खलु सा पद्मावतीदेवी कनकध्वज राजान शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवदद्-एतत् खलु हे पुत्र! तव 'रज्जे य जाव अंतेउरे य०' राज्य च यावदन्त' पुर च एतत्सर्व तेतलिपुत्रस्य प्रभावेन वर्तते 'त' तत्=कारणात् त्व खलु तेतलिपुत्रममात्य 'आढाहि' आद्रियस्व=आदर कुरुष्व 'परिजाणाहि, परिजानाहि=अवेहस्व तदनुमत्या सर्व कार्यं सम्पादयेत्यर्थः सत्कारय वस्त्रादिना, सम्मानय माल्यादिना, 'इत' यन्तम्=आगच्छन्तमेत तेतलिपुत्रम् 'अब्भुट्ठेहि' अभ्युत्तिष्ठ=अभ्युत्थानादिना विनय प्रदर्शयेत्यर्थं 'ठिय पज्जुवासाहि' स्थित पर्युपास्स्व=सेवस्व, 'वयत' व्रजन्त=गच्छन्तम् 'पडिसंसाहेहि' प्रतिसंसाधय=अनुगमनादिना प्रसादय, तथा 'अद्धासणेण उवणिमंतेहि' अर्धासनेन उपनिमन्त्रय=स्वस्यासने तमुपवेशय, भोग=सुखसामग्रीरूप च 'से' तस्य अनुवर्द्धय। ततः स कनकध्वज' 'पउमावईए देवीए' पद्मावत्या देव्याः वचन 'तहत्ति'

के जैसा, दृढप्रतिज्ञा वाले एव कर्तव्य का दिग्दर्शन कराने वाले होने के कारण मन्दर महेन्द्र-मेरु के जैसा था। और भी इन राजा के विषय का विशेष वर्णन दूसरों शास्त्रों से जान लेना चाहिये। यावत् इस तरह ये कनकध्वज कुमार अपने राज्य के शासन करने में तत्पर बन गये। इसके बाद उस राजमाता पद्मावतीदेवी ने उन कनकध्वज राजाको अपने पास बुलाया-और बुलाकर फिर उनसे उसने इस प्रकार कहा-(तएण पुत्ता! तव रज्जे य जाव अंतेउरेय० तुमच तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्माणेहि, इत अब्भुट्ठेहि ठिय पज्जुवासाहि, वयत पडिससाहेहि, अद्धासणेण

જ્ઞાવાળા અને કર્તવ્યને બતાવનાર હોવા બદલ મન્દર મહેન્દ્ર-મેરુ જેવા હતા રાજા કનકધ્વજ વિશે સવિશેષ વર્ણન બીજા શાસ્ત્રોમા વર્ણવ્યુ છે, જીજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી જાણી લેવું જોઇએ આ પ્રમાણે તે કનકધ્વજ કુમાર પોતાના રાજ્યના વહીવટને સભાળવા માટે સાવધ થઇ ગયા ત્યારપછી રાજમાતા પદ્માવતીદેવીએ કનકધ્વજ રાજાને પોતાની પાસે બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(तएण पुत्ता! तव रज्जे य जाव अंतेउरेय० तुम च तेतलिपुत्तस्स अमच्चस्स पहावेण, त तुम ण तेतलिपुत्त अमच्च आढाहि, परिजाणाहि, सक्कारेहि, सम्मा

अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे, अपरियाणमाणे, अणब्भुट्ठायमाणे, परम्मुहे संचिट्ठइ। तएणं तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अञ्जलिं करेइ। तएणं से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ। तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणयं जाणित्ता भीए जाव संजायभए एव वयासी—रुट्ठेण मम कणगज्झए राया हीणे णं मम कणगज्झए राया, अवज्झाए णं मम कणगज्झए, राया त णा नज्जइ णं मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे५ जाव सणियं२ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता, तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता, तेतलिपुर मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे, तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तएणं तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासंति, ते तहा नो आढायति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेंति नो अंजलिपरिग्गह करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति। तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, त जहा—दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सावि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, जावि य से अब्भिंतरिया परिसा भवइ, त जहा – पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सावि य णा नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ। तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयणिज्जंसि णिसी-

मूलम्-तएणं से पोट्टिले देवे तेतलिपुत्तं अभिक्खणं२ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ। तएणं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए५ एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं अढाइ जाव भोग च से वड्ढेइ तएणं से तेतलीपुत्ते अभिक्खणं२ सबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय रायं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए तिकट्टु एव सपेहेइ, सपेहिता, कणगज्झयं तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ। तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए बहूहि पुरिसेहिं सपरिवुडे साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थए गमणाए। तएणं० तेतलिपुत्त अमच्च जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियाओ पासति, ते तहेव आढायंति, परिजाणति, अब्भुट्ठेति, आढाइत्ता, परिजाणित्ता, अब्भुट्ठित्ता, अंजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहि कंताहि जाव वग्गूहि आलवेमाणा य सलवेमाणा य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ। तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्त एज्जमाणं पासइ, पासित्ता, नो अढाइ, नो परियाणाइ, नो

स्वीकार करके फिर उन्होंने वैसा ही सब कुछ करते हुए तेतलिपुत्र अमात्य की यावत् सुख साधन सामग्री बढा दी ॥ सू० ९॥

પ્રમાણેજ બધુ કરતા તેતલિપુત્ર અમાત્યની સુખસગવડ વગેરેની સામગ્રીમાં વધારો કરી આપ્યો ॥ સૂ૦ ૯ ॥

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सद्दहिस्सइ । तेतलिपुत्तेणं पासगं गीवाए बंधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेय सद्दहिस्सइ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाहे जाव उदगंसि, अप्पामुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पामुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—'तएण से पोट्टिले' इत्यादि । तत खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलिपुत्रम् 'अभिक्खण २' अभीक्ष्णम् २=पुनः पुनः केवलिप्रज्ञप्ते धर्मे सबोधयति। परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्र 'संबुज्झइ' सम्बुध्यते=प्रतिबोध प्राप्नोति । ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूप=पुरउच्यमानः 'अज्झत्थिए' ५=आध्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगत सकल्प. समुदपद्यत । सकल्पप्रकारमाह—'एव खलु' इत्यादि । एव खलु कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्र आद्रियते यावत् भोग च संवर्द्धयति, तत' खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्ष्ण २ मया

'तएण से पोट्टिले' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव (तेतलिपुत्त अभिक्खण २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव ण से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलिप्रज्ञप्त धर्ममें प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ। (तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एव खलु कणज्झए राया तेतलिपुत्त अढाइ, जाव भोग च संवड्ढेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अ-

तएण से पोट्टिले इत्यादि ॥

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર પછી (से पोट्टिले देवे) તે પોટ્ટિલાનો જીવ દેવ (तेतलिपुत्त अभिक्खण २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ नो चेव ण से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને વારવાર કેવળિ પ્રજ્ઞપ્તધર્મમાં પ્રતિબોધિત કરવા લાગ્યો પણ તેતલિપુત્રને પ્રતિબોધ પ્રાપ્ત થયો નહિ

(तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एव खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्त आढाइ, जाव भोग च संवड्ढेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अभिक्खणं

यइ, णिसीइत्ता, एवं वयासी–एव खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, त चेव जाव अब्भितरिया, पुरिसा नो आढाइ नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, तं सेयं खलु मम अप्पाणं जी वीयाओ ववरोवित्तएत्तिकट्टु, एवं सपेहेइ, संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, से य विसे णो संकमइ। तएणं तेतलि- पुत्ते नीलुप्पल जाव असि खधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला। तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बधइ, बधित्ता अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना। तएणं से तेतलिपुत्ते महइ महालय सिल गीवाए बधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसि- यसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए। तएणं से तेतलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडसि अगणिकाय पक्खिवइ, पक्खि- वित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए। तएण से तेतलीपुत्ते एव वयासी–सद्धेय खलु भो समणा वयंति, सद्धेय खलु भो माहणा वयति, सद्धेय खलु भो समणामाहणा वयति, अह एगो असद्धेयं वयामि, एव खलु अहं सहपुत्तेहिं अपुत्ते को मेय सद्दहिस्सेइ? सहमित्तेहि अमित्ते, को मेय सद्दहिस्सइ, एव अत्थेणं दारेण दासेहिं परिजणेणं एव खलु तेतलिपुत्तेणं अमच्चे कणगज्झएणं रन्ना अवज्झाएणं समाणेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडगे विसे आसगसि पक्खित्ते, से वि य णो कमइ को मेय सद्दहिस्सइ? तेतलिपुत्तेणं नीलुप्पल जाव खधंसि, ओहु-

रिए, तत्थ वि से धारा ओपल्ला को मेयं सद्दहिस्सइ । तेतलिपुत्तेणं पासगं गीवाए वधेत्ता जाव रज्जू छिन्ना को मेयं सद्दहिस्सइ? तेतलिपुत्तेणं महइमहालयं जाव बंधित्ता अत्थाहे जाव उदगंसि, अप्पामुक्के, तत्थ वि य णं थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं, सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पामुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए, को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियाइ ॥ सू० १० ॥

टीका—'तएण से पोट्टिले' इत्यादि । ततः खलु स पोट्टिलोदेवस्तेतलिपुत्रम् 'अभिक्खणं २' अभीक्ष्णम् २=पुनः पुनः केवलिप्रज्ञप्ते धर्मे सम्बोधयति। परन्तु नो चैव खलु स तेतलिपुत्र 'संबुज्झइ' सम्बुध्यते=प्रतिबोधं प्राप्नोति । ततः खलु तस्य पोट्टिलदेवस्य 'इमेयारूवे' अयमेतद्रूप =वक्ष्यमाणः 'अज्झत्थिए' ५=आध्यात्मिकः चिन्तितः प्रार्थितः मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत। संकल्पप्रकारमाह–'एवं खलु' इत्यादि । एवं खलु कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रं आद्रियते यावत् भोगं च संवर्द्धयति, ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽभीक्ष्णं २ मया

'तएण से पोट्टिले' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) वह पोट्टिलाका जीव देव (तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ) तेतलिपुत्र अमात्यको बार बार केवलिप्रज्ञप्त धर्ममें प्रतिबोधित करने लगा परन्तु तेतलिपुत्र प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हुआ। (तएण तस्स पट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं आढाइ, जाव भोगं च संवड्ढेइ, तएण से तेतलिपुत्ते अ-

तएण से पोट्टिले इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्यार पछी (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलानो जीव देव (तेतलिपुत्तं अभिक्खणं २ केवलिपन्नत्ते धम्मे संबोहेइ नो चेव णं से तेतलिपुत्ते संबुज्झइ)

तेतलिपुत्र अमात्यने वारवार केवळि प्रज्ञप्तधर्ममां प्रतिबोधित करवा लाग्यो पण तेतलिपुत्रने प्रतिबोध प्राप्त थयो नहि

(तएण तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-एवं खलु कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं आढाइ, जाव भोगं च संवड्ढेइ, तएणं से तेतलिपुत्ते अभिक्खणं

'संबोहिज्जमाणेवि' संबो यमानोऽपि धर्मे नो संबुध्यते=प्रतिबोध न प्राप्नोति। 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् श्रेयः खलु मम कनकध्वज राजान तेतलिपुत्राद् विपरि णामयितुम्=तेतलिपुत्रविषये कनकध्वजस्य मानसिको भावो यथा विपरिणतो भवे तथा कर्तुमुचितम्, इतिकृत्वा=इति मनसि विचार्य एव संप्रेक्षते विचारयति संप्रेक्ष्य कनकध्वज तेतलिपुत्राद् विपरिणमयति=विपरीत करोति। ततः खलु तेतलिपुत्र 'कल्ल' कल्ये द्वितीयस्मिन् दिने प्रायः 'ण्हाए जाव पायच्छित्ते' स्नातो यावत् प्रायश्चित्त =स्नात =कृतस्नानः यावत् पदेन कृतबलिकर्मा=काकादि निमित्त कृतान्नभाग कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः=कृतानि कौतुकानि दुःस्वप्नादि दोषनिवारणार्थं मषीपुण्ड्रादीनि-माङ्गल्यादीनि = मङ्गलकारकाणि दूर्वाक्षतादीनि =प्रायश्चित्तवदवश्यं कर्त्तव्यानि येन सः, 'आसखधवरगए' अश्वस्कन्ध वरगत =अश्वारूढ' बहुभि पुरुषै सपरिवृतः स्वस्मात् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य

भिक्खण २ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणमेत्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ)
तब उस पोट्टिल देवको ऐसा आ यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कनकध्वज राजा तेतलिपुत्र अमात्यका आदर करते हैं यावत् वे उनके सुख साधनकी सामग्री बढा दिया है—इसलिये मेरे द्वारा बार बार प्रतिबोधित करने पर भी वे धर्म मे प्रतिबुद्ध नहीं बन रहे हैं—प्रतिबोध को प्राप्त नहीं हो रहे हैं। इसलिये मुझे अब ऐसा करना चाहिये कि जिससे तेतलिपुत्र के विषय में कनकध्वज राजा का मानसिक विचार बदल जावे। इस प्रकार का विचार उस देवके मनमें जगा (संपेहित्ता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ, तएण तेतलिपुत्ते कल्ल ण्हाए

२ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ)
ત્યારે તે દેવરૂપ પોટ્ટિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રનો આદર કરે છે યાવત્ તેઓએ તેમની બધી જાતની સુખસગવડની સામગ્રીમા વધારો પણ કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાએ તેઓ ધર્મમા પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારવાર પ્રેરણા આપવા છતા પ્રતિબોધ થયો નથી એટલા માટે હુ હવે એ પ્રમાણે કઈક કરૂ કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે પ્રતિકૂળ થઈ જાય તે દેવે મનમા આ જાતનો વિચાર કર્યો

(संपेहित्ता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ तएण तेतलिपुत्ते कल्ले ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए, बहूहिं पुरिसेहिं संपरिवुडे, गिहाओ,

यत्रैव कनकध्वजो राजा तत्रैव 'पहारेत्थ गमणाए' माधारयद् गमनाय-प्रस्थितवान्। तत खलु तेतलिपुत्रममात्य 'जेजहा' ये यथा=येन प्रकारेण बहवो 'राईसरतलवरजावपभियओ' राजेश्वरतलवर यावत्प्रभृतयः, राजेश्वरतलवरा यः पश्यन्ति, ते तथैव तममात्यमाद्रियन्ते नमस्कारादिना परिजानन्ति=शुभागमनमित्यनुमोदयन्ति, अभ्युत्तिष्ठन्ति=अभ्युत्थान कुर्वन्ति, आदृत्य परिज्ञाय, अभ्युत्थाय अञ्जलिपरिग्रह कुर्वन्ति, तथा इष्टाभिः कान्ताभि॰ यावत्-मियाभिर्मनोज्ञाभिर्मनोऽमाभिः'

जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए, बहूहिं पुरिसेहिं सपरिवुडे, साओ गिहाओ, णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं॰ तेतलिपुत्त अमच्चं जे जहा बहवे राईसरतलवर जाव पभियाओ पासति ते तहेव आढायति परियाणति, अब्भुट्ठेति) इस विचार के आते ही उस देवने कनकध्वज राजा को तेतलिपुत्र अमात्य के प्रति विपरीत परिणमादिया। जब द्वितीय दिन प्रातः काल स्नान कर बलिकर्म, कर-काकादि निमित्त अन्न का विभाग कर, कौतुक, मंगल, प्रायश्चित्त कर-दुःस्वप्न आदि दोषों को निवारण करने के लिये मषी पुण्ड्रादि और मगल कारक दूर्वाक्षतादि तथा प्रायश्चित्तकी तरह आवश्यक कृत्य समाप्त कर-वह तेतलिपुत्र अमात्य घोडे पर बैठ कर जब अनेक पुरुषों के साथ साथ अपने घर से निकला तब निकल कर वह उस ओर गया जहा कनकध्वज राजा थे। तेतलिपुत्र अमात्य को ज्यों ही राजेश्वर आदि को ने आता हुआ देखा तो उन्होंने पहिले की तरह ही उसका आदर किया, उसके आगमन की सराहना की

णिगच्छइ णिग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए,तएणं॰ तेतलिपुत्त अमच्च जे जहा बहवे राईसर तलवर जाव पभियाओ पासति ते तहेव आढायति पमियाणति, अब्भुट्ठेति)

આ જાતનો વિચાર ઉત્પન્ન થતાંજ તે દેવે અમાત્ય તેતલિપુત્ર ને માટે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ બનાવીદીધો બીજા દિવસે સવારે થતા સ્નાન, બલિ કર્મ, (કાગડા વગેરે પક્ષીઓ માટે અન્નભાગ અર્પણ) કૌતુક, મંગળ, પ્રાયશ્ચિત્ત-એટલે કે દુઃસ્વપ્ન વગેરેના દોષોના ઉપશમન માટે મષી પુણ્ડ્ર વગેરે તેમજ મંગળ કારક દુર્વા અક્ષત (ચોખા) વગેરેથી પ્રાયશ્ચિત્ત ની આવશ્યક વિધિઓ પતાવીને ઘણા પુરુષોથી વીંટળાઇને અમાત્ય તેતલિપુત્ર ઘોડા ઉપર સવાર થઇને જ્યાં કનકધ્વજ રાજા હતા ત્યાં ગયો અમાત્ય તેતલિપુત્રને આવતા જોતાંની સાથે જ રાજેશ્વર વગેરે લોકોએ પહેલાની જેમ જ તેમને આદર કર્યો તેમના આગમનની સરાહના કરી અને બધાએ ઉભાથઇને તેમનેવધાવી લીધા

'सबोहिज्जमाणेवि' संबो धमानोऽपि धर्मो नो सबुध्यते=प्रतिबोध न प्राप्नोति। 'तं तत्=तस्मात् कारणात् श्रेयः खलु मम कनकध्वज राजान तेतलिपुत्राद् विपरि णमयितुम्=तेतलिपुत्रविषये कनकध्वजस्य मानसिको भावो यथा विपरिणतो भवे त्तथा कर्तुमुचितम्, इतिकृत्वा=इति मनसि विचार्य एव सप्रेक्षते विचारयति सप्रेक्ष्य कनकध्वज तेतलिपुत्राद् विपरिणमयति=विपरीत करोति। ततः खलु तेतलिपुत्र 'कल्ल' कल्ये द्वितीयस्मिन् दिने प्राप्त. 'ण्हाए जाव पायच्छित्ते' स्नातो यावत् प्रायश्चित्त =स्नात =कृतस्नानः यावत् पदेन कृतबलिकर्मा=काकादि निमित्त कृतान्नभागःकृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्तः=कृतानि कौतुकानि दु स्वप्नादि दोषनिवारणार्थ मषीपुण्ड्रादीनि-माङ्गल्यादीनि = मङ्गलकारकाणि दूर्वाक्षतादीनि =प्रायश्चित्तवदवश्यं कर्त्तव्यानि येन सः, 'आसखधवरगए' अश्वस्कन्ध-वरगतः=अश्वारूढ बहुभि पुरुषै सपरिवृतः स्वस्मात् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य

भिक्खण २ सबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो सबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणमेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ) तब उस पोट्टिल देवको ऐसा आ यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ कनकध्वज राजा तेतलिपुत्र अमात्यका आदर करते हैं यावत् वे उनके सुख साधनकी सामग्री बढा दिया है-इसलिये मेरे द्वारा बार बार प्रतिबोधित करने पर भी वे धर्म में प्रतिबुद्ध नही बन रहे हैं-प्रतिबोध को प्राप्त नही हो रहे हैं। इसलिये मुझे अब ऐसा करना चाहिये कि जिससे तेतलिपुत्र के विषय में कनकध्वज राजा का मानसिक विचार बदल जावे। इस प्रकार का विचार उस देवके मनमें जगा (सपेहित्ता, कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ, तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए

२ संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो सबुज्झइ, त सेय खलु मम कणगज्झय राय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेत्तए त्ति कट्टु एव सपेहेइ)

ત્યારે તે દેવરૂપ પોટ્ટિલાના જીવ દેવને એવો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનો ગત સંકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે રાજા કનકધ્વજ અમાત્ય તેતલિપુત્રનો આદર કરે છે યાવત્ તેઓએ તેમની બધી જાતની સુખસગવડની સામગ્રીમાં વધારો પણ કરી આપ્યો છે, એથી મારાવડે વારવાર પ્રતિબોધિત કરવા છતાંએ તેઓ ધર્મમાં પ્રતિબુદ્ધ થઈ જતા નથી એટલે કે તેમને વારવાર પ્રેરણા આપવા છતાં પ્રતિબોધ થયો નથી એટલા માટે હું હવે એ પ્રમાણે કંઈક કરૂં કે જેથી રાજા કનકધ્વજના માનસિક વિચારો અમાત્ય તેતલિપુત્રને માટે પ્રતિકૂળ થઈ જાય તે દેવે મનમાં આ જાતનો વિચાર કર્યો

(संपेहित्ता कणगज्झय तेतलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ तएणं तेतलिपुत्ते कल्लं ण्हाए जाव पायच्छित्ते आसखधवरगए, बहूहिं पुरिसेहिं सपरिवुडे, । गिहाओ,

माद्रुवन् ' अपरिजाणमाणे ' अपरिजानन् , तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्= अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् ' परम्मुहे ' पराङ्मुखः=विमुख सन् सतिष्ठते । ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः सम्मुखे अञ्जलिं करोति । ' तएण ' ततः खलु= तेतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि स कनकध्वजो राजा अनाद्रियमाणः, अपरि- जानन् , अनभ्युत्तिष्ठन् तूष्णीकः पराङ्मुखः सतिष्ठते । ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वज विपरिणत=विपरीत ज्ञात्वा ' भीए जाव सजायभए ' भीतो यावत् सजातभय , एवमवदत्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनकध्वजो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही । इस तरह अनादर अननुमोदन एव अनभ्यु- त्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये । (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे सचिट्ठइ) तो भी उन कनक ध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नहीं किया केवल चुप चाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीए सजायभए एव वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् सजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुट्ठे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं । (हीणे ण मम कण-

આદર ન કર્યો, તેમના આવવાની સરાહના ન કરી અને ઉભા થઈને તેમને સત્કાર્યા પણ નહિ આ રીતે અનાદર, અનનુમોદન અનભ્યુત્થાન કરતા તે રાજા તેમના તરફ થી મો ફેરવીને બેસી ગયા (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अजलिं करेइ) તેતલિપુત્રે આવતાની સાથે જ રાજા કનકધ્વજને નમસ્કાર કર્યા

(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे सचिट्ठइ) છતાંએ રાજા કનકધ્વજે તેમના નમસ્કારનો પણ ઉચિત સત્કાર કર્યો નહિ ફક્ત તેઓ ચુપચાપ મોઢું ફેરવીને બેસી જ રહ્યા

(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीए जाव सजायभए एव वयासी)

ત્યારે તેતલિપુત્ર અમાત્યે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ થઈ ગયેલા (નારાજ થયેલા) જાણીને ભયભીત યાવત્ સજાતભય વાળા થતા મનમા વિચાર કર્યો કે (रुट्ठेण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા ઉપર નારાજ

णाभिः आलपन्तः संलपन्तश्च=आलाप=संभाषणं, संलाप=परस्परसंभाषणं कुर्वन्तश्च पुरतः=अग्रे च पृष्ठतः=पश्चाद्भागतश्च, पार्श्वतः=पार्श्वभागतश्च, मार्गतः=यस्मान्मार्गात् तेतलिपुत्रो निर्गच्छति, तन्मार्गतश्च 'समणुगच्छति' समनुगच्छन्ति। ततः खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव कनकध्वजस्तत्र उपागच्छति। ततः खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रमेजमानं पश्यति, दृष्ट्वा नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति। अनन्तर 'आणाढायमाणे' अनाद्रियमाणः=असमादरं

सबने उठकर उसे लिया-(आढाइत्ता, परिजाणित्ता अब्भुट्ठित्ता अंजलि परिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठायमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ) आदर देकर शुभागमन की अनुमोदनाकर तथा उठकर उन सबने फिर दोनों हाथों की अंजलि जोडकर उसे नमस्कार किया। बाद में इष्ट, कान्त यावत् प्रिय-मनोज्ञ-मनोम वाणियों से आलाप-संभाषण, संलाप परस्पर संभाषण-करते हुए वे सब आगे, पीछे आजू बाजू होकर जिस मार्ग से वह आरहा था उसी मार्ग से उसके साथ साथ चले आये। चलते २ तेतलिपुत्र अमात्य जहां कनकध्वज राजा बैठे थे वहां आया। कनकध्वज राजा ने उन्हें आता हुआ देखा-तौभी पहिले की तरह देखकर न

(अढाइत्ता, परिजाणित्ता अब्भुट्ठित्ता अंजलि परिग्गहं करेंति इट्ठाहिं, कंताहिं जाव वग्गूहिं आलवेमाणा य संलवेमाणा य पुरओ य, पिट्ठओ य, पासओ य, मग्गओ य, समणुगच्छंति तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए राया तेणेव उवागच्छइ, तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठायमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ)

તેમને આદર આપીને, શુભાગમનને અનુમોદિત કરીને તેઓ બધા ઉભા થયા અને ત્યાર પછી બને હાથોની અંજળિ બનાવીને તેમને નમસ્કાર કર્યા ત્યાર બાદ ઇષ્ટ, કાંત, યાવત્ પ્રિય, મનોજ્ઞ અને મનોમ વાતોથી આલાપ-સંભાષણ સંલાપ-પરસ્પર સંભાષણ કરતા તેઓ સર્વે આગળ, પાછળ અને તેમની બને બાજુએ થઈને જે માર્ગથી તેઓ આવતા હતા તે માર્ગથી જ તેની સાથે સાથે ચાલવા લાગ્યા તેતલિપુત્ર અમાત્ય ચાલતા ચાલતા જ્યાં રાજા કનકધ્વજ બેઠા હતા ત્યાં આવ્યા પણ કનકધ્વજ રાજાએ તો તેમને જોયા [illegible] મનો

माद्रियन् ' अपरिजाणमाणे ' अपरिजानन्, तदागमनमननुमोदयन् अनभ्युत्तिष्ठन्= अभ्युत्थानाद्यकुर्वन् ' परम्मुहे ' पराङ्मुखः=विमुख सन् सतिष्ठते। ततः खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वजस्य राज्ञः पुरुखे प्रञ्जलिं करोति। ' तएण ' ततः खलु= तेतलिपुत्रेण अञ्जलिकरणानन्तरमपि न कनकध्वजो राजा अनाद्रियमाणः, अपरि-जानन्, अनभ्युत्तिष्ठन् तूष्णीकः पराङ्मुखः सतिष्ठते। तत खलु तेतलिपुत्रः कनकध्वज विपरिणत=विपरीत ज्ञात्वा ' भीए जाव सजायभए ' भीतो यावत् सजातभय, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-रुष्टः खलु मम=मम विषये कनकध्वजो राजा,

उसका कोई आदर किया-न उसके आनेकी कोई सराहना की और न उठकर उसे लिया ही। इस तरह अनादर अननुमोदन एव अनभ्यु-त्थान करते हुए वे राजा प्रत्युत उस ओरसे अपना मुँह फेर कर बैठ गये। (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ) तेतलिपुत्र ने आते ही राजा कनकध्वज को नमस्कार किया-(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे सचिट्ठइ) तो भी उन कनक ध्वज राजा ने उस अजलि करने का भी कोई आदर नही किया केवल चुप चाप ही विमुख बना हुआ बैठा रहा-(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयं विप्परिणय जाणित्ता भीए सजायभए एव वयासी) तब तेतलिपुत्र ने कनकध्वज राजा को विपरीत जानकर भीत (भय पाया हुआ) यावत् सजात भय होकर मनमें ऐसा विचार किया-(रुट्ठे ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर रुष्ट हो गये हैं। (हीणे ण मम कण-

આદર ન કર્યો, તેમના આવવાની સરાહના ન કરી અને ઉભા થઈને તેમને સત્કાર્યા પણ નહિ આ રીતે અનાદર, અનનુમોદન અનભ્યુત્થાન કરતા તે રાજા તેમના તરફ થી મો ફેરવીને બેસી ગયા (तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झयस्स अंजलिं करेइ) તેતલિપુત્રે આવતાની સાથે જ રાજા કનકધ્વજને નમસ્કાર કર્યો

(तएण से कणगज्झए राया अणाढायमाणे तुसिणीए परम्मुहे सचिट्ठइ) છતાંએ રાજા કનકધ્વજે તેમના નમસ્કારનો પણ ઉચિત સત્કાર કર્યો નહિ ફક્ત તેઓ ચુપચાપ મોઢું ફેરવીને બેસી જ રહ્યા

(तएण तेतलिपुत्ते कणगज्झय विप्परिणय जाणित्ता भीए जाव सजायभए एव वयासी)

ત્યારે તેતલિપુત્ર અમાત્યે રાજા કનકધ્વજને પ્રતિકૂળ થઈ ગયેલા (નારાજ થયેલા) જાણીને ભયભીત યાવત્ સજાતભય વાળા થતા મનમા વિચાર કર્યો કે (रुट्ठेण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા ઉપર નારાજ

'हीणे ण' हीनः खलु=प्रीतिहीनः खलु ममोपरि कनक ध्वजो राजा 'अवज्झाए' अपध्यात =दुर्ध्यानमप्यो जात खलु मम विषये कनकध्वजो राजा 'त' तत्= तस्मात् 'न नज्जइ' न ज्ञायते खलु मां मा केन कौनेन कुमारेण=कुत्सितेन मारेण 'मारेहिइ' मारयिष्यति 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य भीतस्त्रस्तः यावत्- त्रसितः, उद्विग्न', सञ्जातभय मन् 'सणियं२' शनैः२ 'पच्चोसक्कइ' मत्यवसर्पति =मत्यवसर्पति=पश्चाद्गच्छति मत्यवसर्प्य, तमेव 'आसखंध'=अश्वस्कन्ध दूरो- हति, दूरुह्य 'तेतलिपुर' अत्र षष्ठ्यर्थे द्वितीया, तेतलिपुरस्येत्यर्थः, मध्यमध्येन यत्रैव स्वक गृह तत्रैव माधारयद् गमनाय। ततः खलु स तेतलिपुत्र 'जेणहा'

गज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर प्रीति से रहित हो गये हैं। (अवज्झाए ण मम कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे विषय में सद्भाव रहित बन गये हैं। (त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारे हिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे पूजावसणिय २ पच्चोसक्कइ) तो न मालूम यह मुझे किस कुत्सित मरण से मरवा डाले, ऐसा विचार कर वह भीत (भययुक्त) हो गया त्रस्त यावत् सजात भयवाला बन गया। और धीरे २ वहां से पीछाहट कर चला आया-(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरुहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण जेणेव सणगिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आकर के वह अपने उसी घोडे पर बैठकर तेतलिपुर के बीच से होता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया (तएण तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो आढायति, नो परिया

થઈ ગયા છે (हीणेण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજાનો હવે મારા ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી (अवज्झाए ण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે

(त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव सणिय २ पच्चोसक्कइ)

તે કોણ જાણે ક્યારે તેઓ મને કમોતે મરાવી નાખે આરીતે વિચાર કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે ત્રસ્ત યાવત સંજાત ભયવાળો થઈ ગયો અને ધીમેધીમે ત્યાંથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો

(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झ मज्झेण जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યાંથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઈને તેતલિપુરની વચ્ચે થઈને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો

तएणं तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो ... नो

ये यथा=ये यथास्थिताः 'ईसरजाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, 'ते तहेव' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, इष्टाभिर्यावद्वाग्भिर्नो संलपन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति। ततः खलु तेतलिपुत्रो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति। यापि च 'से' तस्य 'तत्थ' तत्र भवने बाह्या परिषद् भवति, तद् यथा-'दासाइ वा' दासाइति वा,

---

णति, नो अब्भुट्ठेति) मार्ग में तेतलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिकों ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही (नो अजलिपरिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड कर नमस्कार ही किया। न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, संलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग मे ही चले। (तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तेततिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया। उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) वहा पर भी जो दास घर के काम काज करने

परियाणति, नो अब्भुट्ठेंति)

માર્ગમા જતા તેતલિપુત્રને ઇશ્વર તલવર માડંબિક વગેરે લોકોએ જોયો પણ કોઇએ પહેલાની જેમ તેનો આદર ન કર્યો, તેના આગમનની અનુમોદના ન-કરી અને તેને જોઇને તેઓ ઊભા ન થયા

(नो अजलि परिग्गहं करेंति, इट्ठाहिं जाव णो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग०)

અને તેઓએ હાથ જોડીને તેને નમસ્કાર પણ ન કર્યો ઇષ્ટ, પ્રિય, વચનોથી તેઓએ તેની સાથે આલાપ ન કર્યો, સલાપ ન કર્યો અને બને બાજુએ થઇને તેઓ માર્ગમા તેની સાથે સાથે ચાલ્યા પણ નહિ (तएण तेतलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે ચાલતો ચાલતો તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોતાને ઘેર આવી ગયો

(उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा दासेइ वा पासेइ वा भाइल्लएइ वा, सा वि य ण नो आढाइ नो परियाणाइ, न अब्भुट्ठेइ) ત્યા પણ જે દાસો-ઘરના કામ કરનારા નોકરો, પ્રેષ્યો-ઘરના કામ માટે

'हीणे ण' हीनः खलु=प्रीतिहीनः खलु ममोपरि कनकध्वजो राजा 'अवज्झाए' अपध्यात=दुर्भावसम्पन्नो जातः खलु मम विषये कनकध्वजो राजा 'त' तत्= तस्मात् 'न नज्जइ' न ज्ञायते खलु मम मा केन कीदृशेन कुमारेण=कुत्सितेन मारेण 'मारेहिइ' मारयिष्यति 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य भीतत्रस्तः यावत्-ग्रसितः, उद्विग्नः, सञ्जातभयः सन् 'सणियं२' शनैः२ 'पच्चोसक्कइ' प्रत्यवष्वष्कते =प्रत्यवसर्पति=पश्चाद्गच्छति प्रत्यवष्वष्क्य, तमेव 'आसखंध'=अश्वस्कन्धं दुरो-हति, दुरुह्य 'तेतलिपुर' अत्र षष्ठ्यर्थे द्वितीया, तेतलिपुरस्येत्यर्थः, मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय। ततः खलु तं तेतलिपुत्रं 'जेजहा'

गज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे ऊपर प्रीति से रहित हो गये हैं। (अवज्झाए ण ममं कणगज्झए राया) कनकध्वज राजा मेरे विषय में सद्भाव रहित बन गये हैं। (त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारे हिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे पूजावसणिय २ पच्चोसक्कइ) तो न मालूम यह मुझे किस कुत्सित मरण से मरवा डाले, ऐसा विचार कर वह भीत (भययुक्त) हो गया त्रस्त यावत् सजात भयवाला बन गया। और धीरे २ वहाँ से पीछाहट कर चला आया-(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरुहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झं मज्झेण जेणेव सएगिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आकर के वह अपने उसी घोडे पर बैठकर तेतलिपुर के बीच से होता हुआ अपने घर की तरफ चल दिया (तएण तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो आढायति, नो परिया

થઈ ગયા છે (हीणेण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજાનો હવે મારા ઉપર પ્રેમ રહ્યો નથી (अवज्झाए ण मम कणगज्झए राया) કનકધ્વજ રાજા મારા પ્રત્યે સદ્ભાવના રહિત થઈ ગયા છે

(त ण नज्जइ ण मम केणइ कुमारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव सणिय २ पच्चोसक्कइ)

તો કોણ જાણે ક્યારે તેઓ મને કમોતે મરાવી નાખે આરીતે વિચાર કરીને તે ભયભીત થઈ ગયો, તે ત્રસ્ત યાવત સંજાત ભયવાળો થઈ ગયો અને ધીમેધીમે ત્યાંથી પાછો ફરીને આવતો રહ્યો

(पच्चोसक्कित्ता तमेव आसखध दुरूहेइ, दुरूहित्ता तेतलिपुर मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યાંથી આવીને તે પોતાના ઘોડા ઉપર સવાર થઈને તેતલિપુરની વચ્ચે થઈને પોતાના ઘર તરફ રવાના થયો

तएणं तेतलिपुत्त जे जहा ईसर जाव पासति ते तहा नो [illegible], नो

ये यथा=ये यथास्थिताः 'ईसरजाव' ईश्वर यावत्=ईश्वरतलवरमाडम्बिकादयः पश्यन्ति, 'ते तहेव' ते तथा स्थिता एव सन्तो नो आद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो अभ्युत्तिष्ठन्ति, नो अञ्जलिपरिग्रहं कुर्वन्ति, इष्टाभिर्यावद्वाग्भिर्नो संल्पन्ति, नो पुरतश्च पृष्ठतश्च पार्श्वतश्च मार्गतश्च समनुगच्छन्ति। ततः खलु तेतलिपुत्रो यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैव उपागच्छति। यापि च 'से' तस्य 'तत्थ' तत्र भवने बाह्या परिषद् भवति, तद् यथा-'दासाइ वा' दासाइति वा,

णति, नो अब्भुट्ठेंति) मार्ग में तेतलिपुत्र को आते हुए जिन ईश्वर तलवर, माडम्बिक आदिकों ने देखा तो उन्होंने अब पहिले की तरह न उसका आदर किया न उसके आगमन की अनुमोदना की और न उसे देखकर वे उठे ही (नो अजलिपरिग्गह करेंति, इट्ठाहिं जाव णो सलवति नो पुरओ य पिट्ठओय पासओय मग्गओय समणुग०) और न उसे हाथ जोड कर नमस्कार ही किया। न इष्ट प्रिय वाणियों से उससे आलाप, संलाप किया, और न आजू बाजू से होकर वे उसके साथ मार्ग में ही चले। (तएणं तेतलिपुत्ते जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह चलता हुआ वह तेतलिपुत्र अमात्य अपने घर पर आ गया। उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तजहा दासेइ वा पेसेइ वा भाइल्लएइ वा सा वि य णं नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) वहा पर भी जो दास घर के काम काज करने

परियाणति, नो अब्भुट्ठेंति)

માર્ગમાં જતા તેતલિપુત્રને ઈશ્વર તલવર માડંબિક વગેરે લોકોએ જોયો પણ કોઈએ પહેલાની જેમ તેનો આદર ન કર્યો, તેના આગમનની અનુમોદના ન કરી અને તેને જોઈને તેઓ ઊભા ન થયા

(नो अजलि परिग्गह करेंति, इट्ठाहिं जाव णो सलव ति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य मग्गओ य समणुग०)

અને તેઓએ હાથ જોડીને તેને નમસ્કાર પણ ન કર્યા ઈષ્ટ, પ્રિય, વચનોથી તેઓએ તેની સાથે આલાપ ન કર્યો, સલાપ ન કર્યો અને બને બાજુએ થઈને તેઓ માર્ગમાં તેની સાથે સાથે ચાલ્યા પણ નહિ (तएणं तेतलिपुत्ते जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) આ પ્રમાણે ચાલતો ચાલતો તેતલિપુત્ર અમાત્ય પોતાને ઘેર આવી ગયો

(उवागच्छित्ता जावि से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, त जहा दासेइ वा पासेइ वा भाइल्लएइ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ, न अब्भुट्ठइ) ત્યાં પણ જે દાસો-ઘરમાં કામ કરનારા નોકરો, પ્રૈષ્યો-ઘરના કામ માટે

दासाः=गृहकार्यकारिणोभृत्या', पेसाइवा' प्रेष्याइति वा, प्रेष्याः गृहकार्यं कर्तुमन्यत्र प्रेषणीया भृत्याः, 'भाइल्लएति वा' भाइल्लाइति वा, 'भाईल्ल' इति देशीशब्द ,हालिकः भागिनश्चेति तदर्थः हालिका'=भूमिकर्षणार्थे नियुक्ता भृत्याः, भागिनः,=स्वव्ययेनाऽन्यस्य क्षेत्रे कृपिं कृत्वा उपजातान्नस्यार्धभाग ग्राहिण , एतद्रूपा या परिषत् साऽपि च एत नो आद्रियते,नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठते । याऽपि च तस्य आभ्यन्तरिको परिपद् भवति, 'त जहा' तद् यथा 'पियाइ वा' पिताऽति वा, ' मायाइ वा ' माता इति वा, ' जाव सुण्हाइ वा ' यावत् स्नुषाइति वा, स्नुषा =पुत्रवध्व , तद्रूपापि च परिपद् एत नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति । तत खलु स तेतलिपुत्रो यत्रैव वासगृह यत्रैव स्वक शयनीय तत्रैव उपागच्छति,उपागत्य,

वाले नौकर प्रेष्य, घर के काम के लिये जिन्हे बाहर भेजा जाता है ऐसे भृत्य, तथा भाईल्ल-हालिक-भूमि कर्षणार्थ नियुक्त भृत्य, अथवा भागीदार-अपने व्यय से अन्य के खेत में कृषिकरके उत्पन्न अन्न के अर्ध भाग को लेने वाले बटियाजन इनरूप जो बाह्य परिषत् थी उसने भी उसका आदर नहीं किया, उसके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उसके आने पर अपने अधिष्ठित स्थान से उठे। (जावि य से अब्भितरिया परिसा भवइ-तजहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) इसी तरह जो उसकी अन्तरग परिषद थी जैसे पिता माता यावत् स्नुपा-पुत्रवधू आदि जन इन्होने भी उसका आदर नहीं किया, आगमन का अनुमोदन नहीं किया और न वे कोई भी उसके आने पर अपने स्थानसे

જેઓને બહાર મોકલવામા આવે છે તે ભૃત્યો, તથા ભાઈલ્લ-હાળીકો એટલે કે ખેડવા માટે નિયુક્ત કરાયેલા ભૃત્યો અથવા તો ભાગીદારો-કે જે પોતાના ખર્ચે જ બીજાના ખેતરોમા અનાજ વાવે છે અને વળતરમા ખેતરના માલિક પાસેથી અર્ધોભાગ મેળવે છે-એવા જે બાહ્ય પરિષત સબધી લોકો હતા તેઓએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યુ નહિ અને ન તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનેથી સત્કાર માટે તેઓ ઊભા થયા (जा वि य से अब्भितरिया परिसा भवइ-त जहा-पियाइ वा मायाइ वा जाव सुण्हाइ वा सा वि य ण नो आढाइ, नो परियाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ) અને આ પ્રમાણે જ તેની અતરગ પરિષદના લોકો જેમ કે પિતા માતા યાવત્ સ્નુષા-બેટા વહુ-વગેરે લોકોએ પણ તેનો આદર કર્યો નહિ, તેના આગમનને અનુમોદન આપ્યુ નહિ અને તેઓમાથી કોઇ પણ તેના આવવા બદલ પોતાના સ્થાનથી ઊભા થયા નહિ.

शयनीये निषीदति, निषद्य, एवमवदत्=मनस्यकथयत्-एवं खलु=यथा अद्य तथैवान्यस्मिन्नपि दिवसे, अहं स्वकाद् गृहात् निर्गच्छामि, 'तं चेव जाव अब्भितरिया परिसा नो आढाइ, नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ' तदेव यावत् आभ्यन्तरिकी परिषद् नो आद्रियते, नो परिजानाति, नो अभ्युत्तिष्ठति, अस्यायमभिप्रायः- पूर्वस्मिन् दिवसे राज्ञि प्रसन्ने मां दृष्ट्वा राजेश्वरादयः सर्वे आद्रियन्ते स्म, परिजानान्ति स्म अभ्युत्तिष्ठन्ति स्म, अद्याऽपि गृहनिर्गतं मां ते तथैव सत्कारयन्तिस्म। परन्तु राज्ञि अकस्मात् अप्रसन्ने राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकप्रभृतयः तथा मदीय बाह्याभ्यन्तरा च परिषदपि सर्वेऽपि च मां नाद्रियन्ते, नो परिजानन्ति, नो

उठे। (तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ) इस तरह घर पर आकर वह तेतलिपुत्र अमात्य जहां अपना वासगृह और उसमें भी जहां अपनी शय्या थी वहां गया (उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) वहां जाकर वह उस पर बैठ गया-और मनही मन विचार करने लगा-(एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भितरिया पुरिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ नो अब्भुट्ठेइ-तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) पहिले के दिनों में जब मैं अपने घर से निकलता था तो लोग-राजेश्वर आदि समस्त जन मुझ पर राजा की प्रसन्नता होने के कारण आता जाता हुआ देखकर मेरा आदर करते थे-मेरे आगमन आदि की अनुमोदन करते थे उठकर अपने विनय प्रदर्शित करते थे-तथा आज भी जब मैं घरसे निकल

(तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે ઘેર આવીને તેતલિપુત્ર અમાત્ય જ્યાં તેની રહેવાની ઓરડી અને તેમાં પણ જ્યાં પોતાની પથારી હતી ત્યાં ગયો. (उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, णिसीइत्ता एवं वयासी) ત્યાં જઈને તે તેના ઉપર બેસી ગયો અને મનમાં જ વિચાર કરવા લાગ્યો કે

(एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ णिग्गच्छामि, तं चेव जाव अब्भितरिया पुरिसा नो आढाइ, नो परिजाणाइ, नो अब्भुट्ठेइ-तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ)

પહેલાં જ્યારે હું ઘેરથી બહાર નીકળતો હતો ત્યારે લોકો-રાજેશ્વર વગેરે બધા લોકો-રાજા મારા ઉપર ખુશ હતા એટલે-આવતા જતા જોઈને મારો આદર કરતા હતા, મારા આગમનનું અનુમોદન કરતા હતા તેમજ ઊભા થઈને વિનય પ્રદર્શિત કરતા હતા અને આજે પણ હું જ્યારે ઘેરથી નીકળીને

अभ्युत्तिष्ठन्ति । 'त' तत्=तस्मात् कारणात्, श्रेयः खलु मम आत्मानं जीवितात् व्यपरोपयितुम्, इति कृत्वा, एवं संप्रेक्षते, संप्रेक्ष्य तालपुटं विषम् 'आसगंसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिपति, विषं नो संक्राम्यति=विषत्वेन नो परिणमति । ततः खलु स तेतलिपुत्रो 'नीलुप्पल जाव असिं' नीलोत्पल यावदसिं=नीलोत्पल गवलगुलिकसमप्रभ=नीलोत्पल=नीलकमलम् गवलं=माहिष शृङ्गम्, 'गुलिक' नीलरङ्गविशेष, तैः समा प्रभा तेजःकान्तिर्यस्य स त तादृशं यावदसि=तीक्ष्णखड्गं 'खंधे' स्कन्धे=कण्ठपृष्ठे 'ओहरइ' अपहरति=निपातयति । तत्राऽपि च

कर राजा के पास गया-तब भी इन सबलोगों ने पूर्ववत् मेरा आदर आदि सब कुछ किया-परन्तु अकस्मात् राजा के रुष्ट होने पर जब मैं वहा से लौटकर वापिस अपने स्थान पर आने लगा-तो किसी ने भी मेरा आदर आदि कुछ भी सत्कार नहीं किया। यहा तक कि जो मेरी बाह्य और आभ्यन्तर परिषद् है-भीतर बाहर के नौकर चाकर एवं माता पिता आदि जन हैं-उसने भी आज इस समय आने पर मुझे कुछ नहीं समझा-अतः मुझे अब ऐसी स्थिति से मरना ही उत्तम है। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया-(संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संकमइ, तएणं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०) विचार करके उसने तालपुटविष को अपने मुख में डाला-परन्तु उसने अपना कुछ भी प्रभाव

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાએ પહેલાની જેમજ મારો આદર વગેરે બધું કર્યું હતું પણ ઓચિંતા રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ જ્યારે હું ત્યાંથી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કોઈએ પણ મારો આદર કે સત્કાર કર્યો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યંતર પરિષદ એટલે કે બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-છે તેઓએ પણ આજે અત્યારે મારા આવવા બદ્દલ કંઈ પણ કિંમત કરી નહિ એથી એવી પરિસ્થિતિમાં મારૂ મરણ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

(*संपेहित्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ, सेय विसे णो संकमइ, तएणं* से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधंसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, तएणं से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०)

આ જાતનો વિચાર કરીને તેણે તાલપુટ વિષ (ઝેર)

'से' तस्य खड्गस्य धारा 'ओपल्ला' कुण्ठिता, 'ओपल्ल' इति देशी शब्दः तत्पुटेन विषेण, कण्ठे निपातितेनासिनाऽपि च तदभिलषित मरण न जातम्। ततः खलु=तदनन्तर स तेतलिपुत्रो यत्रैव अशोकवनिका=अशोकवाटिका तत्रैव उपागच्छति,उपागत्य पाशक ग्रीवाया बध्नाति, बद्ध्वा 'रुक्ख' वृक्ष 'दुरुहइ, दुरो हति=आरोहति, दूरुह्य पाश वृक्षे बध्नाति, बद्ध्वा आत्मान 'मुयइ' मुञ्चति= अधः पातयति । 'तत्थवि' तत्राऽपि=एतस्मिन्मरणोपाय कृतेऽपि च 'से' तस्य रज्जुश्छिन्ना=स यत एव पाशस्त्रुटित । ततः खलु स तेतलिपुत्रः 'महइमहालय' महातिमहतीम्=अति विशाला शिला ग्रीवाया बध्नाति, बद्ध्वा 'अत्थाहमतारमपोमियसि' अस्तागातारापौरुषेये=नास्ति स्ताघ' यस्य तत् अस्तागम्=

नहीं दिखलाया-अर्थात् वह विष रूप से परिणत नहीं हुआ। इसके बाद उस तेतलिपुत्रने नीलोत्पल गवल, गुलिक की प्रभा जैसी प्रभावाली अत्यन्त नीलवर्ण वाली-ऐसी तलवार को कि जिसकी धार बहुत तीक्ष्ण थी-अपनी गर्दन पर रखा-अर्थात् उसे गर्दन पर चलाई-परन्तु उसने भी अपना काम नहीं किया-वह भी-कुंठित हो गई-इस तरह जब इन दोनों वस्तुओं से अपना अभिलषित मरण साध्य नहीं हुआ-अब वह तेतलिपुत्र जहा अशोकवनिका-अशोक वाटिका-थी वहा गया (उवागच्छित्ता पासगगीवाए बधइ) वहा जाकर उसने अपनी ग्रीवामे फदा डाला-बाधा (बंधित्ता अप्पाण मुयइ, तत्थ वि से रज्जू छिन्ना) बान्ध कर फिर वह वृक्ष पर चढ गया और वहा से अपने आपको नीचे लटका दिया परन्तु यहा पर भी उसकी रज्जू बीच में से टूट गई (तएण से तेतलिपुत्ते

મુખમા નાખ્યુ પણ તેણે કઈ અસર બતાવી નહિ એટલે કે તે વિષ રૂપમા પરિણમ્યુ નહિ ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્રે, નીલોત્પલ ગવલ, ગુલિકના જેવી પ્રભાવાળી તેમજ તીક્ષ્ણ ધારવાળી તલવારને પોતાની ડોક ઉપર મૂકી એટલે કે તેના વડે તેણે પોતાની ડોક ઉપર ઘા કર્યો પણ તેનાથી પણ કઈ કામ થયુ નહિ એટલે કે તરવાર પણ બૂઠી થઈ ગઈ હતી 'ઓપલ્લ' આ કુઠિત (બૂઠી) અર્થ માટે વપરાયેલો દેશી શબ્દ છે જ્યારે આ રીતે તે બન્ને વસ્તુઓથી તેની ઇચ્છા પૂરી થઇ નહિ એટલે કે તેનુ મરણ થઇ શક્યુ નહિ ત્યારે તે જ્યા અશોક વનિકા-અશોક વાટિકા-હતી ત્યા ગયો (उवागच्छित्ता पासग गीवाए बधइ) ત્યા જઇને તેણે પોતાની ડોકમા ફાસો ભેરવીને બાધ્યો (बधित्ता अप्पाण मुयइ तत्थ वि से रज्जू छिन्ना) બાધીને તે વૃક્ષ ઉપર ચઢી ગયો અને ત્યાથી પોતાની મેળે જ તે લટકી ગયો પરતુ અહીં પણ ફાસાનુ દોરડ વચ્ચેથી તૂટી ગયુ હતુ

अभ्युत्तिष्ठति । 'त' तत्=तस्मात् कारणात्, श्रेयः खलु मम आत्मान जीवि ताद् व्यपरोपयितुम्, इति कृत्वा, एव समीक्षते, समीक्ष्य तालपुट विषम् 'आस गसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिपति, विष नो सक्रामति=विषत्वेन नो परिणमति। ततः खलु स तेतलिपुत्रो 'नीलुप्पल जाव असिं' नीलोत्पल यावदसिं=नीलोत्पल गवलगुलिकासमप्रभ=नीलोत्पल=नीलकमलम् गवल=माहिष शृङ्गम्, 'गुलिका' नीलरङ्गविशेष, तै. सम। प्रभातेतलि कान्तिर्यस्य स त तादृश यावदसिं=तीक्ष्ण खड्ग 'खधे' स्कन्धे=कण्ठपृष्ठे 'ओहरइ' अपहरति=निपातयति । तत्राऽपि च

कर राजा के पास गया-तब भी इन सबलोगों ने पूर्ववत् मेरा आदर आदि सब कुछ किया-परन्तु अकस्मात राजा के रुष्ट होने पर जब मैं वहा से लौटकर वापिस अपने स्थान पर आने लगा-तो किसी ने भी मेरा आदर आदि कुछ भी सत्कार नहीं किया। यहा तक कि जो मेरी बाह्य और आभ्यन्तर परिषद है-भीतर बाहरके नौकर चाकर एव माता पिता आदि जन हैं-उसने भी आज इस समय आने पर मुझे कुछ नहीं समझा-अतः मुझे अब ऐसी स्थिति से मरना ही उत्तम है। इस प्रकार का उसने अपने मन मे विचार किया-(सपेहित्ता तालउड विस आसगसि पक्खिवइ, सेय विसे णो सकमइ, तएण से तेतलिपुत्ते नीलु प्पल जाव असिं खधसि ओहरइ, तत्थ वि य से धारा ओपल्ला, तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उ०) विचार करके उसने ताल पुटविष को अपने मुख में डाला-परन्तु उसने अपना कुछ भी प्रभाव

રાજાની પાસે ગયો ત્યારે પણ એ બધાએ પહેલાની જેમજ મારો આદર વગેરે બધુ કર્યું હતુ પણ ઓચિંતા રાજાને નારાજ થઈ જવા બદલ જ્યારે હુ ત્યાથી પાછો ફરીને પોતાને ઘેર આવવા લાગ્યો ત્યારે કોઈએ પણ મારો આદર કે સત્કાર કર્યો નહિ મારી બાહ્ય અને આભ્યતર પરિષદ એટલે કે બહારના નોકરો-ચાકરો અને માતા પિતા વગેરે-છે તેઓએ પણ આજે અત્યારે મારા આવવા બદ્દલ કઈ પણ કિંમત કરી નહિ એથી એની પરિસ્થિતિમા મારૂ મરણુ જ ઉત્તમ ઉપાય છે

(सपेहित्ता तालउड विस आसगसि पक्खिवइ, सेय विसे णो सकमइ, तएण से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खधसि ओहरइ, तत्थवि य से धारा ओपल्ला, तएण से तेतलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेवउ०)

આ બાતનો વિચાર કરીને તેણુ તાલપુટ વિષ (ઝેર) ને પોતાના

दीत्=चित्त सत्रो य मनस्येनमकथयत्-भो चित्त ! श्रमणा यद् वदन्ति तत्खलु श्रद्धेय=श्रद्धा योग्य, श्रद्धेय खलु भोः ब्राह्मणा वदन्ति, श्रद्धेय खलु भोः ! श्रमण ब्राह्मणा वदन्ति। अय भाव-आत्मपरलोकाद्यर्थ प्रतिबोधक श्रमणादीना वचन श्रद्धेय भवति, अतीन्द्रियस्याप्यात्मपरलोकादिस्वरूपस्यानुमानादि प्रमाणविषयतया श्रद्धाविषयत्वात्। परन्तु अहमेको असहायः अश्रद्धेयम् अविश्वसनीय वदामि। यद्यपि मदीय वचन सर्वथा सत्यम्, तथापि असम्भाव्यतया जनैः प्रत्येतुमशक्यम्। तदेवाह-'एव खलु' इत्यादिना 'एव खलु' मयि अश्रद्धेय

बीच ही में बुझ गई। इस तरह इन समस्त असंभवनों की सभवना के बाद तेतलिपुत्रने अपने आपको सबोधित करते हुए मन मे विचार किया-हे चित्त ! श्रमणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है। ब्राह्मणजन जो कहते है वह श्रद्धेय है इसी प्रकार श्रमणमाहणजन जो कहते है वह श्रद्धेय है। इसका भाव यह है कि आत्मा, परलोक आदि पदार्थ जो कि अतीन्द्रिय हैं वे अनुमान आदि प्रमाण कि विषयभूत हो जाते है-इसलिये ये श्रद्धाके विषय बन जाते है-अतः इन अतीन्द्रिय आत्म, परलोक आदि पदार्थों को प्रतिपादित करने वाले श्रमण माहण आदिकों के वचन भी श्रद्धेय हो जाते हैं, परन्तु मैं जो कह रहा हूँ वह अश्रद्धेय कह रहा हूँ एक असहाय हूँ-इसलिये-मुझे इस विषयमें किसी को भी सहायता मिलने वाली नही है। इन श्रमण माहण आदिजनो के वचनो के सहायक तो अनुमान आदि प्रमाण है-परन्तु मेरा सहायक कोई प्रमाण ही नहीं होता है, यद्यपि मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ परन्तु वह मेरा वचन असभवित असहाय-होने की वजह से मनुष्यो के लिये श्रद्धेय नहीं बन

આ રીતે આ બધા અસભવનોની સભાવના બાદ તેતલિપુત્રે પોતાની જાતનેજ સબોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત ! શ્રમણજનો જે કઇ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે, બ્રાહ્મણો જે કઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રમણુ માહણજનો જે કઇ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ જાય છે એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની જાય છે એથી આ બધા અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનુ પ્રતિપાદન કરનાર શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ જાય છે, પણ હુ જે કઈ કહી રહ્યો છે તે - અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છુ એક અસહાય છુ એથી મને આ બાબતમા કોઈની મદદ પણ મળી શકે તેમ નથી તે શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનોના સહાયક તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે પણ મારા કથનનુ સહાયભૂત થાય તેવુ કોઈ પ્રમાણ જ નથી જો કે હુ જે કઇ પણ કહી રહ્યો છુ તે સપૂર્ણ રીત યથાર્થ [illegible] છુ મારા તે વચનો અસભવિત અસહાય હોવા બદલ

अतलस्पर्शि, अतारम्=अतरणीयम् , अपौरुषेयम्=पुरुषः प्रमाणं यस्य तत् पौरुषेयम्= न पौरुषेयम्=अपौरुषेयम्=पुरुषप्रमाणरहितम् , एतेषां कर्मधारय , तस्मिन् अतिगम्भीरे इत्यर्थः, उदके आत्मानं मुञ्चति । तत्राऽपि=तस्मिन्नुदकेऽपि च 'से' तस्य=तेतलिपुत्रस्य 'थाहे' स्ताघो जातः । ततः खलु स तेतलिपुत्रः शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जे 'अगणिकाय' अग्निकाय प्रक्षिप्य, तत्र आत्मानं मुञ्चति । तत्रापि=शुष्के तृणेऽपि सोऽग्निकायो 'विज्झाए' निर्वात =उपशान्त । 'तएण' ततः खलु=एतस्य सर्वस्य असम्भाव्यस्य सम्भावनानन्तरम् स तेतलिपुत्र एवमवा

महइमहालय सील गीवाए-बधइ बधित्ता अत्थार मतारमपोरिसियसि उदगसि अप्पाण मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए) इसके बाद उस तेतलिपुत्र ने एक बहुत विशालकाय शिला को अपने गले में बाधा-और बाध कर अपने आपको अथाह-अतार एव अपुरुष प्रमाण जल में छोड दिया-परन्तु वह जल भी उसके लिए स्ताघ थाह युक्त-बन गया-(तएण से तेतलिपुत्ते सुक्कसि तणकूडसि अगणिकाय पक्खिवइ पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए-तएण से तेतलिपुत्ते एव-वयासी-सद्धेय खलु भो समणा वयति सद्धेय-खलु भो माहणा वयति, सद्धेय खलु भो समणमाहणा वयति, अह एगो असद्धेय वयामि एव खलु अह सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मेय सद्दहिस्सइ ? सह मित्ते हिं अमित्ते को मेय सद्दहिस्सइ) इसके बाद तेतलिपुत्रने शुष्क घासके ढेर में अग्नि लगाई-और उसमें अपने आपको डाल दिया-परन्तु वह भी

(तएण से तेतलिपुत्ते महइ महालय सिल गीवाए बधइ, बधित्ता अत्थाहमतारम पोरिसियसि उदगसि अप्पाण मुयइ, तत्थ वि से थाहे जाए)

ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટી ભારે શિલા (પથરો) ને પોતાની જાતને અથાહ-અતાર અને અપુરુષ પ્રમાણે પાણીમા નાખી દીધી પરંતુ તે ઊંડુ પાણી પણ તેના માટે થાહ વાળુ એટલે કે છીછરુ થઈ ગયુ

(तएण से तेतलिपुत्त सुक्कसि तणकूडसि अगणिकाय पक्खिवइ, पक्खिवित्ता मुयइ, तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए-तएण से तेतलिपुत्ते एव वयासी सद्धेय खलु भो समणा वयति सद्धेय-खलु भो माहणा वयति, सद्धेय खलु भो समण माहणा वयति , अह एगो असद्धेय वयामि एव खलु अह सह पुत्तेहिं अपुत्ते को मेय सद्दहिस्सइ ? सह मित्तेहिं अमित्ते को मेय सद्दहिस्सइ)

ત્યાર પછી તેતલિપુત્રે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ સળગાવ્યો અને પોતાની જાતને તેમા નાખી દીધી પરંતુ તે પણ વચ્ચેથી જ [illegible] ગઈ

दीत्=चित्त संबोध्य मनस्येवमकथयत्-भो चित्त! श्रमणा यद् वदन्ति तत्खलु श्रद्धेय=श्रद्धा योग्य, श्रद्धेयं खलु भोः ब्राह्मणा वदन्ति, श्रद्धेयं खलु भोः! श्रमण ब्राह्मणा वदन्ति। अयं भाव-आत्मपरलोकादर्थं प्रतिबोधक श्रमणादीना वचन श्रद्धेयं भवति, अतीन्द्रियस्याप्यात्मपरलोकादिस्वरूपस्यानुमानादि प्रमाणविषयतया श्रद्धाविषयत्वात्। परन्तु अहमेको असहायः अश्रद्धेयम् अविश्वसनीय वदामि। यद्यपि मदीय वचन सर्वथा सत्यम्, तथापि असम्भाव्यतया जनैः प्रत्येतुमशक्यम्। तदेवाह-'एव खलु' इत्यादिना 'एव खलु' मयि अश्रद्धेयं

बीच ही में बुझ गई। इस तरह इन समस्त असंभवनों की संभवना के बाद तेतलिपुत्रने अपने आपको संबोधित करते हुए मन मे विचार किया-हे चित्त! श्रमणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है। ब्राह्मणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है इसी प्रकार श्रमणमाहणजन जो कहते हैं वह श्रद्धेय है। इसका भाव यह है कि आत्मा, परलोक आदि पदार्थ जो कि अतीन्द्रिय हैं वे अनुमान आदि प्रमाण कि विषयभूत हो जाते है-इसलिये ये श्रद्धाके विषय बन जाते हैं-अतः इन अतीन्द्रिय आत्म, परलोक आदि पदार्थों को प्रतिपादित करने वाले श्रमण माहण आदिकों के वचन भी श्रद्धेय हो जाते हैं, परन्तु मैं जो कह रहा हूँ वह अश्रद्धेय कह रहा हूँ एक असहाय हूँ-इसलिये-मुझे इस विषयमें किसी को भी सहायता मिलने वाली नहीं है। उन श्रमण माहण आदिजनों के वचनों के सहायक तो अनुमान आदि प्रमाण है-परन्तु मेरा सहायक कोई प्रमाण ही नहीं होता है, यद्यपि मैं सर्वथा सत्य कहता हूँ परन्तु वह मेरा वचन असंभवित असहाय-होने की वजह से मनुष्यो के लिये श्रद्धेय नहीं बन

આ રીતે આ બધા અસંભવનોની સંભાવના બાદ તેતલિપુત્રે પોતાની જાતનેજ સંબોધિત કરતા મનમા વિચાર કર્યો કે હે ચિત્ત! શ્રમણજનો જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે બ્રાહ્મણો જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આ પ્રમાણે શ્રમણ માહણજનો જે કંઈ કહે છે તે શ્રદ્ધેય છે આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે આત્મા પરલોક વગેરે પદાર્થો જેઓ કે અતીન્દ્રિય છે-તેઓ અનુમાન વગેરે પ્રમાણના વિષયભૂત થઈ જાય છે એટલા માટે તે પદાર્થો શ્રદ્ધાના વિષય બની જાય છે એવી આ બધા અતીન્દ્રિય આત્મ, પરલોક વગેરે પદાર્થોનુ પ્રતિપાદન કરનાર શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનો પણ શ્રદ્ધેય થઈ જાય છે, પણ હુ જે કંઈ કહી રહ્યો છે તે - અશ્રદ્ધેય કહી રહ્યો છુ એક અસહાય છુ એથી મને આ બાબતમા કોઈની મદદ પણ મળી શકે તેમ નથી તે શ્રમણ માહણ વગેરેના વચનોના સહાયક તો અનુમાન વગેરે પ્રમાણો છે પણ મારા કથનનુ સહાયભૂત થાય તેવુ કોઈ પ્રમાણ જ નથી જો કે હુ જે કંઈ પણ કહી રહ્યો છુ તે સંપૂર્ણ રીતે યથાર્થ સત્ય-કહી રહ્યો છુ પણ મારા તે વચનો અસંભવિત અસહાય હોવા બદલ

षचने सती यदि अऽमेत=एवभूत मत्यमपि वदामि, यत्-अह ' सहपुत्तेहिं अपुत्त ' सहपुत्रैरपि अपुत्रः=पुत्रेषु विद्यमानेष्वपि अह पुत्ररहित भवामि 'तस्मादेतद्वचनं कः ' मेय ' ममेद=इद मदीय वचन ' सद्दहिस्सइ ' श्रद्धास्यति=श्रद्धेष्यति, न कोऽपि, तथा अह ' सहमित्तेहिंअमित्ते ' सहमित्रैरमित्र =मित्रेषु विद्यमानेष्वपि ' मित्र रहितोऽह ' को ' मेद ' ममेद वचन श्रद्धास्यति ? एवम्=अनेन प्रकारेणैव अर्थेन दारै दासै॰ परिजनेन च महितोऽपि, त रहितोऽस्मि, इद मदीय वचन क॰ श्रद्धास्यति, अपितु न कोऽपि । ' एव ' अमुना प्रकारेण रा यद्वह ब्रवीमि-यत् ' तेतलिपुत्रे ' तेतलिपुत्र नामधेये खलु मयि अमात्ये कनकध्वजेन राज्ञा ' अव ज्ञाएणं समाएण ' अपध्यातेन=दुश्चिन्तकेन सता, अर्थात् कनकध्वजो राजा

सकता है जैसा मैं यह सत्य भी कहूँ कि मैं पुत्रों के विद्यमान होने पर भी अपुत्र पुत्र रहित-हूँ, तो कौन मेरी इस बात को श्रद्धा से देखेगा-इसी तरह मैं यह कहूँ कि मैं मित्रों के विद्यमान होने पर भी मित्र रहित हूँ-तो कौन मेरे इन वचनों पर विश्वास करेगा-(एव अत्थे णं दारेण दासेहिं परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्तेण अमच्चे कणगज्झएण रन्नाअवज्झाएण समाणेण तेतलिपुत्तेण तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण नीलुप्पल जाव खधसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सद्दहिस्सइ) इस तरह अर्थ, दारा, दास, परिजन, इन से युक्त होने पर भी मैं-इन से रहित हूँ, कौन मेरे इस वचन को मानेगा? अर्थात् कोई नहीं मानेगा इसी तरह यदि मैं ऐसा कहूँ कि मुझे तेतलिपुत्र अमात्य के ऊपर कनक

માણસો માટે શ્રદ્ધય થઈ શકે તેમ નથી જેમ કે હુ અત્યારે આ જાતની સાચી વાત પણ કહુ કે પુત્રો હોવા છતાએ હુ પુત્ર વગરનો છુ તો કોણ મારી આ વાતને શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોશે ? આ પ્રમાણે જ હુ કહુ કે મિત્રો હોવા છતાએ હુ મિત્ર વગરનો છુ તો કોણ મારી આ વાત ઉપર શ્રદ્ધા ધરાવશે?

(एव अत्थेण दारेण दासेहिं परिजणेण एव खलु तेतलिपुत्तेण अमच्चे कण गज्झएण रन्ना अवज्झाएण समाणेण तेतलिपुत्तेण तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते से वि य णो कमइ, को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण नीलुप्पल जाव खधसि ओहरिए तत्थ वि से धारा ओपला को मेय सद्दहिस्सइ)

આ રીતે અર્થ (ધન), દારા (પત્ની) દાસ, પરિજન એ બધા હોવા છતા પણ હુ એમના વગર છુ મારી આ વાત ઉપર કોણ વિશ્વાસ મૂકવા તૈયાર થશે ? એટલે કે કોઈ પણ વિશ્વાસ કરશે જ નહિ આ રીતે જ જો હુ આમ કહુ કે મારા ઉપર કનકધ્વજ નારાજ થઇ ગયા હતા એટલા માટે

तेतलिपुत्रे दुश्चिन्तको जात' इतिहेतोः, तेतलिपुत्रेण तालपुटक विषम् 'आसगंसि' आस्ये=मुखे प्रक्षिप्तम्, 'से वि य' तदपि च विष नो 'कमइ न क्राम्यति=विषत्वेन न परिणमति को जन 'सेद' मपेद सत्यमपि वचन श्रद्धास्यति न कोऽपि, तथा 'तेतलिपुत्तेण' नीलुप्पल जाव खधसि ओहरिए' तेतलिपुत्रेण नीलोत्पल यावत् स्कन्धे अपहतः=तेतलिपुत्रेण नीलोत्पलगवलगुलिकप्रमप्रभाऽसि 'स्कन्धे कण्ठमूले' अवहृत' प्रहृतः 'तत्थवि' तत्रापि=तस्मिन् मरणोपाये कृतेऽपि च' तस्य=असेः धारा ओपल्ला=कुण्ठीभूता को 'सेद ममेद श्रद्धास्यति। एवमेव यद्यह ब्रूयाम् यन्मया 'तेतलिपुत्तेण पासगं गीवाए बधेत्ता जाव रज्जूछिन्ना को मेय सद्दहिस्सइ' तेतलिपुत्रेण पाशक ग्रीवाया बद्ध्वा यावत् रज्जुश्छिन्ना, को ममेद श्रद्धास्यति ? तेतलिपुत्रेण अतिविशाला शिला यावद् बद्ध्वा अस्ताधपार-

ध्वज राजा दुश्चितक बन गये-इसलिये मने तालपुट विष मुख में डाल दिया परन्तु वह विषरूप से परिणमित नहीं हुआ। मने विष खाया-पर मैं मरा नही-कौन मनुष्य मेरी इस सत्य बात को श्रद्धा की दृष्टी से देखेगा। तथा मैंने नीलोत्पल, गवल एव गुलिका की प्रभा जैसी प्रभाव वाली तीक्ष्ण तलवार अपनी गर्दन पर मरने के लिये चलाई-परन्तु वह भोटी धारवाली बन गई-कुण्ठित हो गई-उससे मेरी गर्दन नही कटी-कौन मेरी इस बात को मानने के लिये तैयार हो सकेगा (तेतलिपुत्तेणं पासग इत्यदि) इसी तरह यदि मे यह कहूँ कि मुझ तेतलिपुत्रने अपने गले में पाशक डाला और वृक्षपर चढकर वहा से नीचे मैं लटक पड़ा और फदा बीच में से टट गया तो कौन इन वचनो पर विश्वास करेगा। (तेतलिपुत्तेणं महइमहालय जाव बधित्ता अत्थाह जाव उदगसि अप्पा

मे तालपु विष (झेर) खाधु हतु पण ते विषना रूपमा परिणत थयु नथी एटले के विष भक्षण करवा छताये हु मरण पाम्यो नहि आ वात उपर कयो माणुस विश्वास मूकवा तैयार थशे ? तेमज नीलोत्पल, गवल अने गुलिकाना जेवी प्रभावाळी तीक्ष्ण धारवाळी तरवारनो मे मरवा माटे मारी डोक उपर घा कर्यो पण ते तरवार ज बूठी धारवाळी थई गई-कुठित थई गई-तेनाथी मारी डोक कपाई नहि मारी आ वात उपर कोण विश्वास करवा तैयार थशे ? (तेतलिपुत्तेण पासग इत्यादि) आ रीते ज हु आम कहु के मे तेतलिपुत्रे पोताना गळामा फासो नाख्यो अने वृक्ष उपर चढको वृक्ष उपर चढीने त्याथी नीचे लटकी पडयो पण फासो वच्चेथी ज तूटी गये तो कोण मारी आ वात उपर विश्वास मूकशे ?

(तेतलिपुत्तेण महइमहालय जाव बधित्ता अत्थाह जाव उदगसि अप्पा मुक्के,

दुदके आत्मा मुक्तः, तत्रापि च खलु स्तायो जातः, को ममेदं श्रद्धास्यति=मया स्वकण्ठे महाशिला बद्ध्वा अगाधे उदके आत्मा मुक्तः, परन्तु तस्मिन्नुदकेऽपि मम तलस्पर्शो जातः, इति मम वचनं कः श्रद्धास्यति ? पुनश्च-तेतलिपुत्रेण मया शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जेऽग्निकाय प्रक्षिप्य प्रज्वलिते तस्मिन् आत्मा मुक्तः, परन्तु सोऽग्निकाय 'विज्झाए' विध्यातः=उपशान्त, इत्येवरूपमपि मदीय वचनं कः श्रद्धास्यति ? न कोऽपि, इत्येवं स तेतलिपुत्रः 'ओहयमणसंकप्पे' अपहृतमनः सकल्प =भग्नोत्साहः सन् यावद् ध्यायति=आर्त्तध्यान करोति ॥सू० १०॥

मुक्को,तत्थ वि ण थाहे जाए को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकाय पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए को मेय सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) मुझ तेतलिपुत्रने एक बहुत बड़ी शिला का गलेमें बाधी और बाद में अथाह अतार अपुरुष प्रमाण जल में कूद पड़ा परन्तु वह जल कूदते ही थाह वाला बन गया अथाह नहीं रहा मेरी इस सत्य बात पर भी कौन श्रद्धा करेगा। इसी तरह मुझ तेतलिपुत्रने एक बडे भारी शुष्क घास के ढेर में अग्नि लगाई और उस में अपने आप को प्रक्षिप्त कर दिया- परन्तु वह अग्नि बुझ गई उसने मुझे भस्म नही किया मेरी इसबात को कौन श्रद्धा रूप से स्वीकार करेगा। इस प्रकार अपहृत मन संकल्प वाला बन कर-उत्साह रहित होकर वह तेतलिपुत्र अमात्य आर्तध्यान में पड़ गया ॥ सू० १० ॥

तत्थ वि ण थाहे जाए को मेय सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकाय पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए को मेय सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ)

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથરો) ગળામા બાધી અને ત્યાર પછી હુ અથાહ (ઊડા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણુ જેટલા પાણીમા કૂદી ગયો પણુ કૂદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળુ (છીછરુ) થઇ ગયુ, અથાહ (ઊડુ) રહ્યુ નહિ મારી આ વાત ઉપર પણુ કોણુ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામા અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને તેમા મે પોતાની જાતને ઝપલાવી દીધી પણુ તે અગ્નિ ઓલવાઇ ગયો તેણે મને ભસ્મ કર્યો નહિ મારી આ વાતને કોણુ શ્રદ્ધેય માનીને સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમન સકલ્પવાળો (હતાશ) થઇને નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમા ડૂબી ગયો ॥ " ' ॥

मूलम्–तएणं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूव विउव्वइ, विउव्वित्ता, तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी–ह भो ! तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभयं, दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति, गामे पलित्ते रन्ने झियाइ, रन्ने पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेतलिपुत्ता ! कओ वयामो ?, तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एव वयासी–भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा सरणं, उक्कंठियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्न, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्ज, माइयस्स रहस्स अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्चं, पर अभिउजिउ कामस्स सहायकिच्चं खतस्स दतस्स जिइदियस्स एत्तो एगमवि णं भवइ । तएण से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्च एव वयासी–सुट्‌ठु णं तुम तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठ आयाणाहि त्तिकट्टु दोच्चपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिस पाउब्भूए, तामेव दिस पडिगए ॥ सू० ११ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ' तएण ' तत खलु तेतलिपुत्रे आर्तध्यान रते सति स पोट्टिलोदेव ' पोट्टिलारूव ' पोट्टिलारूप विकुर्वति=वैक्रियशक्त्या

' तएण से पोट्टिले देवे ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से पोट्टिले देवे) उस पोट्टिल देवने (पोट्टिला रूव विउव्वइ) पोट्टिला के रूप की विकुर्वणा की–अर्थात् वैक्रिय शक्ति के प्रभाव से उसने पोट्टिला का रूप धारण किया (विउव्वित्ता

'तएण से पोट्टिले देवे' इत्यादि

टीकार्थ–(तएण) त्यार पछी (से पोट्टिले देवे) ते पोट्टिलदेवे (पोट्टिला रूव विउव्वइ) पोट्टिलाना रूपनी विकुर्वणा करी એटले के वैक्रिय शक्तिना प्रभावथी

दुदके आत्मा मुक्तः, तत्रापि च खलु गताधो जातः, को ममेदं श्रद्धास्यति=मया स्वकण्ठे महाशिला बद्ध्वा अगाधे उदके आत्मा मुक्तः, परन्तु तस्मिन्नुदकेऽपि मम तलस्पर्शो जातः, इति मम वचनं कः श्रद्धास्यति ? पुनश्च-तेतलिपुत्रेण मया शुष्के तृणकूटे=तृणपुञ्जेऽग्निकाय प्रक्षिप्य प्रज्वलिते तस्मिन् आत्मा मुक्तः, परन्तु सोऽग्निकाय 'विज्झाए' विध्यातः=उपशान्त, इत्येवंरूपमपि मदीयं वचनं कः श्रद्धास्यति ? न कोऽपि, इत्येवं स तेतलिपुत्रः 'ओहयमणसंकप्पे' अपहतमनः संकल्प =भग्नोत्साह' सन् यावद् ध्यायति=आर्तध्यान करोति ॥सू० १०॥

मुक्को,तत्थ वि ण थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकाय पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थ वि से अगणिकाए विज्झाए को मेय सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) मुझ तेतलिपुत्रने एक बहुत बड़ी शिला का गलेमें बांधी और बाद में अथाह अतार अपुरुष प्रमाण जल में कूद पडा परन्तु वह जल कूदते ही थाह वाला बन गया अथाह नहीं रहा मेरी इस सत्य बात पर भी कौन श्रद्धा करेगा। इसी तरह मुझ तेतलिपुत्रने एक बडे भारी शुष्क घास के ढेर में अग्नि लगाई और उस में अपने आप को प्रक्षिप्त कर दिया- परन्तु वह अग्नि बुझ गई उसने मुझे भस्म नहीं किया मेरी इसबात को कौन श्रद्धा रूप से स्वीकार करेगा। इस प्रकार अपहृत मन संकल्प वाला बन कर-उत्साह रहित होकर वह तेतलिपुत्र अमात्य आर्तध्यान में पड़ गया ॥ सू० १० ॥

तत्थ वि ण थाहे जाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेतलिपुत्तेण सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकाय पक्खिवित्ता अप्पा मुक्को तत्थवि से अगणिकाए विज्झाए को मेयं सद्दहिस्सइ ? ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ)

મે તેતલિપુત્રે એક બહુ ભારે મોટી શિલા (પથરો) ગળામાં બાંધી અને ત્યાર પછી હું અથાહ (ઊંડા) અતાર અપુરુષ પ્રમાણ જેટલા પાણીમાં કૂદી ગયો પણ કૂદતાની સાથે જ પાણી થાહવાળું (છીછરું) થઈ ગયું, અથાહ (ઊંડું) રહ્યું નહિ મારી આ વાત ઉપર પણ કોણ વિશ્વાસ મૂકશે ? આ પ્રમાણે જ મે તેતલિપુત્રે એક બહુ મોટા ભારે સૂકા ઘાસના ઢગલામાં અગ્નિ પ્રગટાવ્યો અને તેમાં મે પોતાની જાતને ઝંપલાવી દીધી પણ તે અગ્નિ ઓલવાઈ ગયો તેણે મને ભસ્મ કર્યો નહિ મારી આ વાતને કોણ શ્રદ્ધેય માનીને સ્વીકારવા તૈયાર થશે ? આ રીતે તે અપહતમન સંકલ્પવાળો (હતાશ) થઈને નિરુત્સાહી બની ગયો અને આર્તધ્યાનમાં ડૂબી ગયો ॥ "સૂ ' ॥

मेवमवादीत् 'भो' हे पोट्टिले! भीतस्य खलु प्रव्रज्याशरणं भवति तत्र दृष्टान्त-माह-यथा-' उक्कंडियस्स ' उत्कण्ठितस्य=परदेशवर्तिनः उत्सुकस्य स्वदेशगमनं, ' छुहियस्स ' क्षुधितस्य अन्नम्, ' तिसियस्स ' तृषितस्य पानं, ' आउरस्स आतुरस्य=रोगिणः ' भेसज्जं ' भैषज्यं ' माइयस्स ' मायिकस्य=मायाविनः रहस्यं=गोपनम्, ' अभिजुत्तस्स ' अभियुक्तस्य = दोषापवादयुक्तस्य ' पच्चयकरणं = प्रत्ययकरणं तन्निराकरणेन स्वविषये निर्दोषताप्रतीत्युत्पादनम्, ' अद्धाणपरिसंतस्स ' अध्वपरिश्रान्तस्य=मार्गगमनपरिखिन्नस्य ' वाहणगमणं ' वाहनगमनं शकटादिना गमनं ' तरि

तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-भीतस्स खलु भो पव्वज्जा-सरणं-उक्कंडियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाण परिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्चं. परं अभिउ जिउकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ) इस प्रकार पोट्टिला की बात सुनकर तेतलिपुत्र अमात्य ने उससे ऐसा कहा हे पोट्टिले! भीत (भय युक्त) के लिये प्रव्रज्या शरण भूत होती है, जैसे-परदेश वर्ती उत्सुक व्यक्ति के लिये स्वदेश गमन शरण भूत होता है, भूखे के लिये अन्न शरण भूत होता है प्यासे के लिये पानी, आतुर रोगी के लिये भैषज्य, मायावी के लिये मायाचारी, अभियुक्त-दोषापवाद वाले के लिये दोषों के निराकरण से अपने विषय में निर्दोषता की प्रतीति का उत्पादन, शरण भूत होता है। मार्ग श्रान्त के लिये वाहन से गमन, करना शरण भूत होता है, तैरने की इच्छा वाले के

(तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-भीतस्स खलु भो पव्वज्जा सरणं उक्कंडियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउ कामस्स सहायकिच्च खंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ)

આ રીતે પોટ્ટિલાની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યું કે હે પોટ્ટિલે! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવ્રજ્યા શરણ ભૂત હોય છે-જેમ-પરદેશમાં રહેતી ઉત્સુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ પાછા ફરવું શરણ ભૂત હોય છે ભૂખ્યા ને માટે અન્ન શરણ ભૂત હોય છે આ પ્રમાણે જ તરસ્યાને માટે પાણી, આતુર-રોગ-ને માટે ભૈષજ્ય-દવા, માયાવીને માટે માયા ચારી અભિયુક્ત-દોષાપવાદ વાળા-ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિર્દોષતાની પ્રતીતિનું ઉત્પાદન શરણ ભૂત હોય છે માર્ગમાં ચાલતા થાકી ગયેલાને માટે વાહનનો ઉપયોગ શરણ ભૂત હોય છે. તરવાની ઇચ્છા ધરાવતા માણસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

धारयति, निकुर्वित्वा तेतलिपुत्रस्य अदूरसामन्त=नातिदूरे नातिनिकटे स्थित्वा एवमवादीत्-हभो तेतलिपुत्र ! 'हभो' इत्यामन्त्रणे, हे तेतलिपुत्र ! 'पुरओ' पुरतः=अग्रतः ''पवाए' प्रपातः=गर्त., अतो निर्गमनमसम्भवि, पृष्ठतः हस्ति भयम्, अतो प्रत्यावर्तनं चासम्भवि, 'दुहओ' उभयतः=उभयत=उभयोः पार्श्वयोः 'अचक्खुफासे' अचक्षुस्पर्श'=अन्धकार, 'मज्झे' मध्ये=यत्र वयमास्महे तत्र 'सराणि' शरा=बाणा, 'वरिसंति' वर्षन्ति=निपतन्ति। 'गामे पलित्ते' ग्रामे प्रदीप्ते=प्रज्वलिते सति 'रण्णे' अरण्य=वन 'झियाइ' ध्यायति=गन्तु चिन्तयति, अरण्ये प्रदीप्ते ग्राम ध्यायति=गन्तु चिन्तयति, 'आउसो तेतलिपुत्ता' हे आयुष्मन् तेतलिपुत्र ! 'उभओ पलित्ते' उभयत प्रदीप्ते=उभयस्मिन् प्रज्वलिते वय 'कओ वयामो' कुतो व्रजाम'=कुत्र गच्छाम । ततः खलु स तेतलिपुत्रः पोट्टिला

तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एव वयासी) धारण कर के वह तेतलिपुत्र के समीप गयी। वहाँ जाकर उसने उससे इस प्रकार कहा-(ह भो तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभय) अरे ओ तेतलिपुत्र ! आगे प्रपात खड्डा है और पीछे हाथी का भय है। (दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति) दोनों ओर अन्धेरा है और जहा हमलोग ठहरे हुए हैं वहा बाणों की वृष्टि हो रही है। (गामे पलित्ते रण्णो झियाइ, रन्नो पलित्ते गामे झियाइ) ग्राम में आगलगने पर मनुष्य जगल में चले जाने को सोचता है-और जगल में आग लगने पर ग्राम मे चले आने के लिये विचारता है। (आउसो तेतलि पुत्ता ! उभओ पलित्ते कओ वयामो) परन्तु जब दोनो में आग लग जावे तो हे आयुष्मन तेतलिपुत्र ! कहो ! हम कहा जावे ? (तएण से

तेणे पोट्टिलानु रूप धारण कर्यु (निउव्वित्ता तेतलिपुत्तस्स अदूरसामंते ठिच्चा एव वयासी) धारण करीने ते तेतलिपुत्रनी पासे गई त्या जईने तेणे तेने आ प्रमाणे कह्यु के (ह भो तेतलिपुत्ता ! पुरओ पवाए पिट्ठओ हत्थिभय) अरे, ओ ! तेतलिपुत्र ! तमारी सामे प्रपात-धोध छे अने तमारी पाछळ हाथीनो भय छे (दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति) बने तरफ अधारु छे अने ज्या अमे ऊभा छीए त्या तीरो वर्षी रह्या छे (गामे पलित्ते रण्णो झियाइ रन्नो पलित्ते गामे झियाइ) गाममा आग लागता माणुस जगलमा नासी जवानो विचार करे छे अने जगलमा आग लागता गाममा आवता रहेवानो विचार करे छे (आउसो तेतलिपुत्ता उभओ पलित्ते कओ वयामो) पण ज्यारे बने तरफ आग सळगी ऊठे त्यारे हे आयुष्मन्त तेतलिपुत्र ! बोलो, अमे क्या जईए ?

मेवमवादीत् ' भो ' हे पोट्टिले ! भीतस्य खलु प्रव्रज्याशरणं भवति तत्र दृष्टान्त-माह-यथा-' उक्कंडियस्स ' उत्कण्ठितस्य=परदेशवर्तिन्याद् सुकस्य स्वदेशगमनं, ' छुहियस्स ' क्षुधितस्य अन्नम्, ' तिसियस्स ' तृषितस्य पानं, ' आउरस्स आतुरस्य=रोगिणः ' भेसज्ज ' भैषज्यं ' माइयस्स ' मायिकस्य=मायाविनः रहस्य=गोपनम् ; ' अभिजुत्तस्स ' अभियुक्तस्य = दोषापवादयुक्तस्य ' पच्चयकरणं = प्रत्ययकरणं तन्निराकरणेन स्वविषये निर्दोषताप्रतीत्युत्पादनम्, ' अद्धाणपरिसंतस्स ' अध्वपरिश्रान्तस्य=मार्गगमनपरिखिन्नस्य ' वाहणगमणं ' वाहनगमनं शकटादिना गमनं ' तरि

तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-भीयस्स खलु भो पव्वज्जा-सरणं-उक्कंडियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाण परिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्चं परं अभिउजिउकामस्स सहायकिच्चं संतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ) इस प्रकार पोट्टिला की बात सुनकर तेतलिपुत्र अमात्य ने उससे ऐसा कहा हे पोट्टिले ! भीत (भय युक्त) के लिये प्रव्रज्या शरण भूत होती है, जैसे-परदेश वर्ती उत्सुक व्यक्ति के लिये स्वदेश गमन शरण भूत होता है, भूखे के लिये अन्न शरण भूत होता है प्यासे के लिये पानी, आतुर रोगी के लिये भैषज्य, मायावी के लिये मायाचारी, अभियुक्त-दोषापवाद वाले के लिये दोषों के निराकरण से अपने विषय में निर्दोषता की प्रतीति का उत्पादन, शरण भूत होता है। मार्ग श्रान्त के लिये वाहन से गमन, करना शरण भूत होता है, तैरने की इच्छा वाले के

(तएणं से तेतलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी-भीतस्स खलु भो पव्वज्जा सरणं उक्कडियस्स सदेसगमणं छुहियस्स अन्नं तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं, माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउ कामस्स सहायकिच्चं संतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि ण भवइ)

આ રીતે પોટ્ટિલાની વાત સાંભળીને તેતલિપુત્ર અમાત્યે તેને કહ્યું કે હે પોટ્ટિલે ! ભયભીત થયેલાને માટે પ્રવ્રજ્યા શરણ ભૂત હોય છે-જેમ-પરદેશમાં રહેતી ઉત્સુક વ્યક્તિને માટે પોતાને દેશ પાછા ફરવું શરણ ભૂત હોય છે ભૂખ્યાને માટે અન્ન શરણ ભૂત હોય છે આ પ્રમાણે જ તરસ્યાને માટે પાણી, આતુર-રોગ-ને માટે ભૈષજ્ય-દવા, માયાવીને માટે માયા ચારી અભિયુક્ત-દોષાપવાદ વાળા-ને માટે દોષોના નિરાકરણથી પોતાના વિષે નિર્દોષતાની પ્રતીતિનું ઉત્પાદન શરણ ભૂત હોય છે માર્ગમાં ચાલતા થાકી ગયેલાને માટે વાહનનો ઉપયોગ શરણ ભૂત હોય છે, તરવાની ઈચ્છા ધરાવતા માણસને માટે નાવ વગેરે જલયાન

समेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवर-णाणदंसणे समुप्पण्णे ॥ सू० १२ ॥

टीका—'तएणं तस्स' इत्यादि। ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य शुभेन परिणामेन जातिस्मरणम्=पूर्वभवज्ञानं समुत्पन्नम्। ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अयमेतद्रूप आध्यात्मिकः प्रार्थितः चिन्तितः कल्पितो मनोगतः संकल्पः समुदपद्यत एवं खलु अहम् इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे महाविदेहेवर्षे पुष्कलावती विजये पुण्डरी किण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजा आसम्। ततः खलु अहं स्थविराणामन्तिके मुण्डो भूत्वा यावत् 'चोद्दसपुव्वाइं०' चतुर्दशपूर्वाणि०=चतुर्दशपूर्वाणि अधीतवान्, बहूनि वर्षाणि 'सामन्नपरियाय०' श्रामण्यपर्याय०=चारित्रपर्याय पालिय

'तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्र को (सुभेण परिणामेण जाइ सरणे समुप्पन्ने) शुभपरिणाम से जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न हो गया। (तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं इहेव जंबूद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नाम राया होत्था) उसके प्रभाव से उसने अपने पूर्वभव को जान लिया–उसने जाना कि मैं इसी जंबूद्वीप नामके द्वीप में महाविदेह क्षेत्र में पुष्कलावती विजय में पुण्डरीकिणी नामकी राजधानी मे महापद्म नाम का राजा था (तएणं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि

'तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स' इत्यादि

टीकार्थ–(तएणं) त्यारबाद (तेतलिपुत्तस्स) तेतलिपुत्रने (सुभेण परिणामेणं जाइ सरणे समुप्पन्ने) शुभ परिणामथी जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न थई गयुं

(तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ५ समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं इहेव जंबूदीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावई विजए पोंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे नाम राया होत्था)

तेना प्रभावथी तेणे पोताना पूर्व भवने जाणी लीधो तेने आ जातनुं ज्ञान थयुं के ते आ जंबूद्वीप नामना द्वीपमां महा विदेह क्षेत्रमां पुष्कलावती विजयमां पुंडरीकिणी नामनी राजधानीमां महापद्म नामे राजा हतो।

(तएणं अहं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि वासाणि

वान्। अनन्तरं मासिक्या सलेखनया कालमासे काल कृत्वा 'महासुक्के कप्पे' महाशुक्रे कल्पे=सप्तमे देवलोके 'देवे' देव =देवत्वेनोत्पन्न। ततः खलु अह तस्माद् देवलोकात् 'आउक्खएण ३' आयुः क्षयेण ३=आयुर्भवस्थिति क्षयानन्तरम् इहैव तेतलिपुरे तेतलेरमात्यस्य भद्राया भार्याया 'दारगत्ताए' दारकत्वेन=पुत्रतया 'पच्चायाए' प्रत्यायात =उत्पन्नः, तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम पूर्वदृष्टानि=पूर्वभवपालितानि 'महव्वयाइ' महाव्रतानि=पञ्चमहाव्रतानि स्वयमेव उपसंपद्य विहर्तुम्, एव संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य स्वयमेव महाव्रतानि आरोहति=स्वीकरोति, आरुह्य, यत्रैव प्रमदवनम्=उद्यान तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य असोगवरपाय-

---

वासाणि सामन्नपरियाय० मासियाए सलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे-तएणं अह ताओ देवलोयाओ आउक्खएण ३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए) वहां मैने स्थविरों के पास मुडित होकर दीक्षा धारण की थी और ग्यारह अगों का अध्ययन कर विशिष्ट तपस्या की थी अन्त में अनेक वर्षोंतक श्रामण्य पर्यायका पालन कर एक मासकी सलेखना धारण कर मैं काल अवसर काल कर सातवा महाशुक्र कल्पमे देवकी पर्यायसे उत्पन्न हो गया। वहाँ की आयुष्य स्थिति भवस्थिति स्थितिके क्षयके अनन्तर मैं वहांसे चलकर इस तेतलिपुर में तेतलि अमात्य के यहा भद्रा भार्या की कुक्षि से पुत्र रूप में अवतरित हुआ। (त सेय खलु मम पुव्वदिट्ठाइ महव्वयाइ सयमेव उवसपज्जित्ताण विहरित्तए-एव सपेहेइ, सपेहित्ता सयमेव महव्वयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ,

---

सामन्नपरियाय० मासियाए सलेहणाए महासुक्के कप्पे देवे-तएण अह ताओ देवलोयाओ आउक्खएण ३ इहेव तेतलिपुरे तेतलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए)

ત્યા મે મુડિત થઇને સ્થવિરોની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી હતી અને અગિયાર અ ગોનુ અધ્યયન કરીને વિશિષ્ટ તપસ્યા કરી હતી છેવટે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક મહિનાની સલેખના ધારણ કરી અમે ત્યાર પછી કાળ અવસરે કાળ કરીને સાતમા મહા શુક્ર કલ્પમા દેવના પર્યાયથી હુ જન્મ પામ્યો ત્યાની ભવસ્થિતિ ૩ (ત્રણ) ના ક્ષય થવા બદલ હુ ત્યાથી આવીને આ તેતલિપુરમા તેતલિ અમાત્યને ત્યા ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી પુત્ર રૂપમા જન્મ પામ્યો

(त सेय खलु मम पुव्वदिट्ठाइ महव्वयाइ सयमेव उवसपज्जित्ताण विहरि एव सपेहेइ, सपेहित्ता सयमेव महव्वयाइ आरुहेइ, आरुहित्ता जेणेव पमयवणे

क्षस्य 'अशोकवरपादपस्य=अशोकवृक्षस्य 'अहे' अधः परिणतशिलोपरि 'सुह निसन्नस्स' सुखनिषण्णस्य=सुखोपविष्टस्य 'अणुचिंतेमाणस्स' अनुचिन्तयत= पूर्वभवे कृतमध्ययनादिकं स्मरत 'पुव्वाहीयाइं' पूर्वाधीतानि=पूर्वभवे पठितानि सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि स्वयमेव 'अभिसमन्नागयाइं' अभिसमन्यागतानि= ज्ञानविषयतया सजातानि। ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अनगारस्य शुभेन परि णामेन 'जाव' यावत्-प्रशस्तैरध्यवसायैः, प्रशस्ताभिर्लेश्याभि र्विशुद्ध्यमानाभिः 'तयावरणिज्जाण' तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां कर्मणां 'खओवसमेण'

उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि सुहनि- सन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइं) इसलिये अब मुझे यही उचित है कि मैं पूर्व भव में पालित किये पच महाव्रतो को अपने आप धारण करलू। ऐसा उसने विचार किया। विचार करके फिर उसने अपने आपही महाव्रतों को धारण कर लिया। धारण करके फिर वह जहां प्रमदवन नामका उद्यान था वहां चला गया। वहां जाकर वह अशोक वृक्ष के नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पट्टाकार से परिणत शिला के ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव में कृत अध्ययन आदि का बार२ चिन्तवन करने लगा। इस तरह विचार करते२ उसके पूर्व भव में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये। (*तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण जाव तया-*

उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ सयमेव अभिसमन्नागयाइ)

એટલા માટે હવે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે પૂર્વ ભવમા જે પાચ મહાવ્રતોને મે ધારણ કરેલા તેને પોતાની મેળે જ ધારણ કરી લઉં આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કર્યા બાદ તેણે પોતાની મેળે જ પાચ મહાવ્રતો ધારણ કરી લીધા ધારણ કર્યા પછી તે જ્યા પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઈને તે અશોક વૃક્ષની નીચે મૂકાયેલા પૃથિવી શિલા પટ્ટક ઉપર-પટ્ટાકાર રૂપથી પરિણત શિલા ઉપર-આનદ અનુભવતો બેસી ગયો અને પૂર્વ ભવમા જે કંઈ અધ્યયન કર્યું હતુ તેનુ વારવાર ચિંતન કરવા લાગ્યો આ રીતે ચિંતન કરતા કરતા પૂર્વભવમા ભણેલા સામાયિક વગેરે ચૌદ પૂર્વજ્ઞાન તેને વિષયભૂત થઈ ગયા

क्षयोपशमेन=उदिताना कर्मणा क्षयेण अनुदिताना कर्मणामुपशमेन=निरुद्धोदयत्वेन 'कम्मरयविकरणकर' कर्मरजो विकरणकरम् 'अपुव्वकरण' अपूर्वकरणम्=अष्टम गुणस्थानम् प्रविष्टस्य तस्य केवलवरज्ञानदर्शन समुत्पन्नम् ॥सू० १२॥

मूलम्–तएण तेतलिपुरे नयरे अहा संनिहिएहि वाणमंतरेहि देवेहि देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगधव्वनिनाए कए यावि होत्था। तएणं से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी–एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्तं अणगार वंदामि नमंसामि वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठ विणएणं भुज्जो २ खामेमि, एव संपेहेइ, सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगणीए

वरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविरणकर अपुव्वकरण पविट्ठस्स केवलवरनाणदसणे समुप्पण्णे) इस प्रकार शुभ परिणामों से यावत् प्रसस्त अध्यवसायों से विशुद्धमान लेश्याओं से, उसके ज्ञानावरणी आदि कर्मों का क्षयोपशम–उदित कर्मों का क्षय एव अनुदित कर्मों का उपशम–हो गया–सो इस के प्रभाव से वे कर्मरज को दूर करने वाले अष्टम अपूर्व करण नामके गुणस्थान में प्राप्त हो गये। याद में बारहवे गुणस्थान के अत में और तेरहवे गुणस्थान के प्रारभ में उन्हे केवलज्ञान और केवलदर्शन उत्पन्न हो गया ॥सू० १२॥

(तएण तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेण परिणामेण जाव तयावरणिज्जाण कम्माण खओवसमेण कम्मरयविकरणकर अपुव्वकरण पविट्ठस्स केवलवरनाणदसण समुप्पण्णे)

આ રીતે શુભ પરિણામોથી, યાવત્ પ્રશસ્ત અધ્યવસાયોથી, વિશુદ્ધમાન લેશ્યાઓથી તેના જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોનો ક્ષયોપશમ–ઉદિત કર્મોનો ક્ષય અને અનુદિત કર્મોનો ઉપશમ થઈ ગયો એના પ્રભાવથી તેઓ કર્મરજને વિકરણ કરનારા અષ્ટમ અપૂર્વ કરણ નામના ગુણસ્થાનમા પ્રાપ્ત થઈ ગયા ત્યાર પછી બારમા ગુણસ્થાનના અતમા અને તેરમા ગુણસ્થાનના પ્રારભમા તેમને કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન ઉત્પન્ન થઈ ગયા ॥ સૂત્ર "૧૨" ॥

वस्स ' अशोकवरपादपस्य=अशोकवृक्षस्य ' अहे ' अधः परिणतशिलोपरि ' सुह निसन्नस्स ' सुखनिषण्णस्य=सुखोपविष्टस्य ' अणुचिंतेमाणस्स ' अनुचिन्तयत = पूर्वभवे कृतमध्ययनादिकं स्मरत ' पुव्वाहीयाइ ' पूर्वाधीतानि=पूर्वभवे पठितानि सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि स्वयमेव ' अभिसमन्नागयाइ ' अभिसमन्वागतानि= ज्ञानविषयतया सजातानि । ततः खलु तस्य तेतलिपुत्रस्य अनगारस्य शुभेन परि णामेन ' जाव ' यावत्-प्रशस्तैरध्यवसायैः, प्रशस्ताभिर्लेश्याभि विशुद्धयमानाभिः ' तयावरणिज्जाण ' तदावरणीयानां=ज्ञानावरणीयादीनां कर्मणां ' खयोवसमेण '

उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमन्नागयाइ) इसलिये अब मुझे यही उचित है कि मैं पूर्व भव में पालित किये पंच महाव्रतो को अपने आप धारण करलू। ऐसा उसने विचार किया। विचार करके फिर उसने अपने आपही महाव्रतो को धारण कर लिया। धारण करके फिर वह जहाँ प्रमदवन नामका उद्यान था वहाँ चला गाया। वहा जाकर वह अशोक वृक्ष के नीचे रक्खे हुए पृथिवी शिलापट्टक पर पटाकार से परिणत शिला के ऊपर-आनन्द के साथ बैठ गया और पूर्व भव मे कृत अध्ययन आदि का बार२ चिन्तवन करने लगा। इस तरह विचार करते२ उसके पूर्व भव में पठित सामायिक आदि चौदह पूर्व ज्ञान के विषय भूत बन गये। (तएणं तस्स तेतलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं जाव तया-

उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिला पट्टयंसि सुहनिसन्नस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइ सामाइयमाइयाइ चोद्दस पुव्वाइ सयमेव अभिसमन्नागयाइ)

એટલા માટે હવે મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે પૂર્વ ભવમા જે પાચ મહાવ્રતોને મે ધારણ કરેલા તેને પોતાની મેળે જ ધારણ કરી લઉં આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કર્યા બાદ તેણે પોતાની મેળે જ પાચ મહાવ્રતો ધારણ કરી લીધા ધારણ કર્યા પછી તે જ્યા પ્રમદવન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઈને તે અશોક વૃક્ષની નીચે મૂકાયેલા પૃથિવી શિલા પટ્ટક ઉપર-પટ્ટાકાર રૂપથી પરિણત શિલા ઉપર-આનદ અનુભવતો બેસી ગયો અને પૂર્વ ભવમા જે કંઈ અધ્યયન કર્યું હતુ તેનુ વારવાર ચિંતન કરવા લાગ્યો આ રીતે ચિંતન કરતા કરતા પૂર્વભવમા ભણેલા સામાયિક વગેરે ચૌદ પૂર્વજ્ઞાન તેને વિષયભૂત થઈ ગયા

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णानि अचित्तपुष्पाणि निपातितानि=वर्षितानि, दिव्यः=मनोहरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत्। ततः खलु स कनकध्वजो राजा 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयीकृतस्तेतलिपुत्रः अमात्य' प्रव्रज्य प्रमदवने केवलवरज्ञानदर्शनसम्पन्नो जात इति वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमवादीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया 'अवज्झाए' अपध्यानः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कारणात् नमस्यित्वा 'एयमट्ठ' एतमर्थ=मया कृतमपमानरूपमर्थं विनयेन भूयो भूयः 'खामेमि' क्षमयामि, एव संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य 'ण्हाए' स्नातः कृतस्नानः 'चाउरंगिणीए सेणाए' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्धं यत्रैव प्रमदवन उद्यान यत्रैव तेतलि-

---

होत्था) यथा सनिहित आसन्न भूत हुए बाण, अनन्तर देवों ने और देवियों ने आकाश में देवदुन्दुभियां बजाईं। पचवर्ण के अचित्त कुसुमों की वृष्टि की। मनोहर गीत गधर्व निदान भी किया। (तएण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) जब यह समाचार कनकध्वज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एव खलु तेतलि पुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो२ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए०चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

યથા સંનિહિત આસન્નભૂત થયેલા બાણુ-અનંતર દેવોએ અને દેવીઓએ આકાશમાં દેવદુંદુભિઓ વગાડી, પાંચ રંગના અચિત્ત પુષ્પોની વર્ષા કરી અને મનોહર ગીત ગંધર્વ નિનાદ (ધ્વનિ) પણ કર્યો (तएण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) જ્યારે આ સમાચારોની જાણુ રાજા કનકધ્વજને થઈ કે મારી દુષ્ટ વિચારણાને લીધે તેતલિપુત્ર અમાત્યે દીક્ષિત થઈને પ્રમદવનમાં કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રાપ્ત કરી લીધાં છે ત્યારે તેણે મનમાં વિચાર કર્યો કે

(एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अणगार

सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेतलिपुत्ते अणगारं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएण भुज्जो२ खामेइ, नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ । तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रन्नो तीसे य महइ महालयाए० धम्मं परिकहेइ । तएणं से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म, पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयं जीवाजीवे । तएणं तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥ सू० १३ ॥

॥ चउद्दसं अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—'तएणं' इत्यादि । ततः खलु तेतलिपुरे नगरे 'अहासंनिहिएहिं' यथा संनिहितैः=आसन्नैः 'वाणमंतरेहिं' वाणव्यन्तरैः देवैः देवीभिश्च देवदुन्दुभयः समाहताः=आकाशे देवैः देवीभिश्च देवदुन्दुभयो वादिता इत्यर्थः, 'दसद्धवण्णे कुसुमे निवाडिए' दशार्द्धवर्णं कुसुमं निपातितम्, अत्र जाति विवक्षायामेकवचनम्,

---

'तएणं तेतलिपुरे नयरे' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (तेतलिपुरे नयरे) तेतलिपुर नगरमें (अहासंनिहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगंधव्वनिनाए कए यावि

'तएणं तेतलिपुरे नयरे' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यार पछी (तेतलिपुरे नयरे) तेतलिपुर नगरमां (अहा संनिहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहिय देवदुंदुभीओ समाहयाओ, दसद्धवन्ने कुसुमे निवाडिए, दिव्वे देवगीयगंधव्वनिनाए कए यावि

दशार्द्धवर्णानि=पञ्चवर्णाणि अचित्तपुष्पाणि निपातितानि=वर्षितानि, दिव्यः=मनोहरः गीतगन्धर्व निनादः कृतश्चापि अभवत्। ततः खलु स कनकध्वजो राजा 'इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे' यस्याः कथाया लब्धार्थः मया दुष्टचिन्ता विषयीकृतस्तेतलिपुत्र. अमात्यः प्रव्रज्य प्रमदवने केवलवरज्ञानदर्शनसम्पन्नो जात इति वृत्तान्ताभिज्ञः सन् एवमवादीत्-एव खलु तेतलिपुत्रो मया 'अवज्झाए' अपध्यातः=दुष्टचिन्ताविषयीकृतः सन् मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितः 'त' तत्=तस्मात् कारणात् नमस्यित्वा 'एयमट्ठ' एतमर्थ=मया कृतमपमानरूपमर्थं त्रिनयेन भूयो भूयः 'खामेमि' क्षमयामि, एव संप्रेक्षते संप्रेक्ष्य 'ण्हाए' स्नातः कृतस्नान. 'चाउरंगिणीए सेणाए' चतुरङ्गिण्या सेनया सार्द्ध यत्रैव प्रमदवन उद्यान यत्रैव तेतलि-

---

होत्था) यथा सनिहित आसन्न भूत हुए वाण, व्यन्तर देवो ने और देवियों ने आकाश में देवदुन्दुभियां बजाई। पचवर्ण के अचित्त कुसुमो की वृष्टि की। मनोहर गीत गधर्व निदान भी किया। (तएण से कण गज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) जब यह समाचार कनक धज राजा को ज्ञात हुआ मेरी दुष्ट विचारणा के विषय भूत बने हुए, तेतलिपुत्र अमात्य ने दीक्षित होकर प्रमदवन में केवल ज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त कर लिया है-इस प्रकार का वृत्तान्त जब उसे मालूम पड़ा-तब उसने अपने मन में विचार किया (एवं खलु तेत लि पुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए, त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलि

યથા સનિહિત આસન્નભૂત થયેલા વાણવ્યતર દેવોએ અને દેવીઓએ આકાશમા દેવદુદુભિઓ વગાડી, પાચ રગના અચિત્ત પુષ્પોની વર્ષા કરી અને મનોહર ગીત ગધર્વ નિનાદ (ધ્વનિ) પણ કર્યો (तएण से कणगज्झए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे एव वयासी) જ્યારે આ સમાચારોની જાણ રાજા કનકધ્વજને થઈ કે મારી દુષ્ટ વિચારણાને લીધે તેતલિપુત્ર અમાત્યે દીક્ષિત થઈને પ્રમદવનમા કેવળજ્ઞાન અને કેવળ દર્શન પ્રાપ્ત કરી લીધા છે ત્યારે તેણે મનમા વિચાર કર્યો કે

(एव खलु तेतलिपुत्ते मए अवज्झाए मुडे भवित्ता पव्वइए त गच्छामि ण तेतलिपुत्त अणगार वदामि नमसामि, वदित्ता नमसित्ता एयमट्ठ विणएण भुज्जो २ खामेमि एव सपेहेइ-सपेहित्ता ण्हाए० चाउरगिणीए सेणाए जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेतलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेतलिपुत्त अणगार

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एतमर्थं=स्वकृताऽपराधलक्षणं विनयेनभूयो भूयः क्षमयति= क्षमां कारयति, तथा 'नच्चासन्ने०' नात्यासन्ने नातिदूरे यावत् पर्युपास्ते= सेवां करोति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्या च

पुत्तं अणगारं वंदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एयमट्ठं विणएण भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी दुष्ट चिन्ता का विषयभूत बनाया है-सो वह मुंडित होकर दीक्षित हो गया है। इसलिये में अब उसके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को वंदना करूँ-नमस्कार करूँ। वंदना नमस्कार कर में अपने द्वारा किये अपमान रूप अपराधकी बडे विनय के साथ बार२ उनसे क्षमा मागूं- इस प्रकार ज्योंही उसने विचार किया-कि उसी समय वह उठा और स्नान किया-बाद में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहां प्रमदवन था -उसमें जहां तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहां पहुँचा-वहां पहुँच कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की बडे विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ कर उनकी सेवा सुश्रूषा की (तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ

वंदइ, नमसइ, वंदित्ता नमसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને મે પોતાની દુષ્ટ ચિંતાનો વિષયભૂત (લક્ષ્ય) બનાવ્યો છે તેથી જ તે મુંડિત થઈને દીક્ષિત થઈ ગયો છે એટલા માટે હવે હું તેની પાસે જાઉં અને તેતલિપુત્ર અનગારને વંદન કરૂં નમસ્કાર કરૂં વંદના અને નમસ્કાર કરીને હું મારા વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધ બદ્દલ બહુ જ નમ્રપણે તેમની પાસેથી ક્ષમા યાચના કરૂં આ રીતે વિચાર થતાની સાથે તરત જ તે ઊભો થયો અને સ્નાન કર્યું ત્યાર પછી પોતાની ચતુરંગિણી સેનાને સાથે જ્યાં પ્રમદવન હતું અને તેમાં પણ જ્યાં તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન હતા ત્યાં પહોંચ્યો ત્યાં પહોંચીને તેણે તેતલિપુત્ર અનગારને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેના વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધની બહુ જ નમ્રપણે ક્ષમા માગી અને ત્યાર પછી તેણે ઉચિત સ્થાન ઉપર બેસીને તેમની સેવા તેમજ સુશ્રૂષા કરી

(तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णो तीसे य महइ महाल याए० धम्मं परिकहेइ)

'महइमहालयाए०' महातिमहत्या परिषदि धर्मं 'परिकहेइ' परिकथयति= उपदिशति। ततः खलु स कनकध्वजो राजा तेतलिपुत्रस्य केवलिनोऽन्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य पञ्चाणुव्रतिकं सप्तशिक्षाव्रतिकं इत्येवं द्वादशविधं श्रावकधर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य श्रमणोपासको जातः। कीदृश ?—अभिगत जीवा-जीवः=परिज्ञात-

यस्स रण्णो तीसे य महइमहालयाए० धम्म परिकहेइ) इसके बाद उन तेतलिपुत्र अनगार केवली ने कनकध्वजराजा को उपस्थित परिषद को विशाल धर्म का उपदेश दिया—(तएण से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय सावगधम्म पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे। तएण तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइ केवलिपरियाग पाउणित्ता जाव सिद्धे। एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि) उपदेश सुनने के बाद कनकध्वज राजाने तेतलिपुत्र केवलि के समीपश्रुतचारित्ररूप धर्म के प्रभाव से प्रेरित होकर और उस श्रुत धर्म का अच्छी तरह हृदय से विचार कर पाच अणुव्रत एव सात शिक्षा रूप श्रावक धर्म धारण कर लिया। धारण करके वे श्रमणोपासक बन गये—यावत् जीव और अजीव तत्त्व का क्या स्वरूप है इसके भी वे ज्ञाता हो गये। बाद में तेतलिपुत्र केवलीने अनेक वर्षों तक केवलि

ત્યાર પછી તે તેતલિપુત્ર અનગાર કેવળીએ કનકધ્વજ રાજાને તેમજ ઉપસ્થિત પરિષદને અવિસ્તર ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો.

(तएण से कणगज्झए राया तेतलिपुत्तस्स केवलिस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म पचाणुव्वइय सत्तसिक्खावइय सावगधम्म पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए जाव अहिगयजीवाजीवे। तएण तेतलिपुत्ते केवली बहूणि वासाइ केवलिपरियाग पाउणित्ता जाव सिद्धे। एव खलु जबू। समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चोद्दसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि!)

ઉપદેશ સાભળીને કનકધ્વજ રાજાએ તેતલિપુત્ર કેવળિના શ્રુતચારિત્રરૂપ ધર્મના પ્રભાવથી પ્રેરાઇને તે શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મ વિષે મનમા સારી રીતે વિચાર કરીને તેમની પ સેથી પાચ અણુવ્રત અને સાત શિક્ષારૂપ શ્રાવકધર્મ ધારણ કરી લીધા ધારણ કરીને તેઓ શ્રમણોપાસક થઈ ગયા અને યાવત્ જીવ તેમજ અજીવતત્ત્વનુ સ્વરૂપ શુ છે ? તેનુ પણ તેઓને જ્ઞાન થઈ ગયુ ત્યાર પછી તેતલિપુત્ર કેવળીએ ઘણા વર્ષો સુધી કેવળી પર્યાયનુ પાલન કર્યુ અને આમ તેઓએ યાવત સિદ્ધપદ

पुत्रोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तेतलिपुत्रमनगारं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एतमर्थं=स्वकृतापमानलक्षणं विनयेन भूयो भूयः क्षमयति=क्षमां कारयति, तथा 'नच्चासन्ने०' नात्यासन्ने नातिदूरे यावत् पर्युपास्ते=सेवां करोति। ततः खलु स तेतलिपुत्रोऽनगारः कनकध्वजाय राज्ञे तस्यां च

पुत्तं अणगारं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ) मैंने तेतलिपुत्र को अपनी दुष्ट चिन्ता का विषयभूत बनाया है-सो वह मुंडित होकर दीक्षित हो गया है। इसलिये मैं अब उसके पास जाऊँ और उन तेतलिपुत्र अनगार को वंदना करूँ-नमस्कार करूँ। वंदना नमस्कार कर मैं अपने द्वारा किये अपमान रूप अपराधकी बडे विनय के साथ बार२ उनसे क्षमा मागूँ-इस प्रकार ज्योंही उसने विचार किया-कि उसी समय वह उठा और स्नान किया-बाद में अपनी चतुरंगीनी सेना के साथ जहां प्रमदवन था -उसमें जहां तेतलिपुत्र अनगार विराजमान थे वहां पहुँचा-वहाँ पहुँच कर उसने तेतलिपुत्र अनगार को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर अपने द्वारा कृत अपमान रूप अपराध की बडे विनय के साथ बार २ उनसे क्षमा कराई और समुचित स्थान पर बैठ कर उनकी सेवा सुश्रूषा की (तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झ

वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जो २ खामेइ नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ)

તેતલિપુત્ર અમાત્યને મે પોતાની દુષ્ટ ચિંતાનો વિષયભૂત (લક્ષ્ય) બનાવ્યો છે તેથી જ તે મુંડિત થઈને દીક્ષિત થઈ ગયો છે એટલા માટે હવે હુ તેની પાસે જાઉં અને તેતલિપુત્ર અનગારને વંદન કરૂ નમસ્કાર કરૂ વંદના અને નમસ્કાર કરીને હુ મારા વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધ બદલ બહુ જ નમ્રપણે તેમની પાસેથી ક્ષમા યાચના કરૂ આ રીતે વિચાર થતાની સાથે તરત જ તે ઊભો થયો અને સ્નાન કર્યું ત્યાર પછી પોતાની ચતુરંગિણી સેનાને સાથે જ્યા પ્રમદવન હતુ અને તેમા પણ જ્યા તેતલિપુત્ર અનગાર વિરાજમાન હતા ત્યા પહોંચ્યો ત્યા પહોંચીને તેણે તેતલિપુત્ર અનગારને વંદના કરી અને નમસ્કાર કર્યા વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેના વડે થઈ ગયેલા અપમાન રૂપ અપરાધની બહુ જ નમ્રપણે ક્ષમા માગી અને ત્યાર પછી તેણે ઉચિત સ્થાન ઉપર બેસીને તેમની સેવા તેમજ સુશ્રૂષા કરી

(तएणं से तेतलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णो तीसे य महइ महालयाए० धम्मं परिकहेइ)

॥ अथ पञ्चदशमध्ययनं प्रारभ्यते ॥

गत चतुर्दशमध्ययन सम्मति पञ्चदशमारभ्यते, पूर्वाध्ययनेऽपमानाद् विषयत्यागः प्रदर्शितः, अत्र तु स जिनोपदेशाद् भवतीति प्रतिपादयिष्यतेऽतस्तस्य सद्भावेऽर्थप्राप्तिः, असद्भावेत्वनर्थप्राप्तिर्भवतीत्येव पूर्वेण सम्बन्धः तत्रेदमादिसूत्रम्–' जइण भते ' इत्यादि ।

मूलम्–जइणं भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स णं भंते णायज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेण कालेणं तेणं समएणं चपा नाम नयरी होत्था, पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया । तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे णामं सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए । तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था,

---

–ःनन्दिफल नामका पन्द्रहवा अध्यायन प्रार ःः–

चौदहवां अध्ययन समाप्त हो चुका–अब पन्द्रहवा अध्ययन प्रारभ होता है। पूर्व अध्ययन में तेतलि प्रधान के आख्यान द्वारा अपमान से भी विषयों का त्याग कर दिया जाता है यह बात समझाई गई है। इस अध्ययन में यह विषय त्याग जिनके उपदेश से होता है यह कहा जावेगा। इस लिये उसके सद्भाव में अर्थ प्राप्ति और असद्भाव में अनर्थ प्राप्ति होती है इस तरह से पूर्व अध्ययन के साथ इसका सबन्ध बन जाता है।–जइण भते ! समणेण इत्यादि ॥

નદિફળ નામે પદરમુ અધ્યયન પ્રારભ

ચૌદમુ અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે પદરમુ અધ્યયન શરૂ થાય છે પહેલાના અધ્યયનમા તેતલિપ્રધાનના આખ્યાન વડે એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે અપમાનથી પણ વિષયોનો ત્યાગ કરવામા આવે છે આ અધ્યયનમાં આ વિષય ત્યાગ જેમના ઉપદેશથી થાય છે તે વિષે કહેવામા આવશે એટલા માટે તેના સદ્ભાવમા અર્થ પ્રાપ્તિ અને અસદ્ભાવમા અનર્થ પ્રાપ્તિ હોય છે. આ રીતે પૂર્વ અધ્યયનની સાથે આનો સબધ સમજી શકાય છે

ટીકાર્થ–'जइण मते ! समणेण' इत्यादि ।

सकलजीवाजीवतत्त्वज्ञोऽपि जातः । ततः खलु तेतलिपुत्रः केवली बहूनि वर्षाणि केवलिपर्याय पालयित्वा यावत् सिद्ध =मोक्ष गत ।

सुधर्मास्वामी प्राह-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण चतुर्दशस्य ज्ञाताध्ययनस्य 'अयमट्ठे' अयमर्थः=पूर्वोक्तो भाव प्रज्ञप्त =प्ररूपित , 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि=भगवत्समीपे यथा श्रुत तथा त्वा प्रतिकथयामि । एतेन अध्ययनेन इद भायात यत्-प्राणिनो यावद् दु खं मानभ्रश च न प्राप्नुवन्ति तावद् बहुश प्रबोधिता अपि धर्मं न स्वीकुर्वन्ति, यथा तेतलिपुत्रः ॥ सू०१३ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराज गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतव र्षिण्याख्यायां व्याख्यायां चतुर्दशमध्ययन सपूर्णम् ॥१४॥

पर्याय का पालन कर यावत् सिद्ध पद प्राप्त कर लिया । सुधर्मास्वामी कहते हैं-हे जबू ! श्रमणभगवान महावीर ने इस चौदहवे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से भाव अर्थ प्ररूपित किया है । सो जैसा मैंने उन भगवान के समीप में सुना है वह वैसा ही तुमसे कहा है । इस अध्य यन से हमें यह ज्ञान हो जाता है कि ससार में तेतलिपुत्र की तरह ऐसे भी प्राणी हैं कि वे जब तक दु'ख और अपमान को नहीं पालते हैं तब तक अनेक बार प्रतिबोधित करने पर भी-धर्म को स्वीकार नहीं करते हैं ॥ सू० १३ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका चौदहवा अध्ययन समाप्त ॥ १४ ॥

મેળવી લીધુ સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનો પૂર્વોક્ત રૂપથી ભાવ-અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે જેવો અર્થ મે તેઓશ્રી પાસેથી સાભળ્યો છે તેવોજ તમને કહ્યો છે આ અધ્યયનથી અમને આ જાતનુ જ્ઞાન થાય છે કે સ સારમા તેતલિપુત્રની જેમ એવા પણ પ્રાણી ઓ છે કે તેઓ જ્યા સુધી દુ ખી અને અપમાનિત થતા નથી ત્યા સુધી ઘણા વખત પ્રતિબોધિત કરવા છતા ધર્મને સ્વીકારતા નથી ॥ સૂત્ર " ૧૩ " ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ ચૌદમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૪ ॥

ऽर्थः प्रश्न ' सुधर्मस्वामी कथयति–एवं खलु हे जम्बूः !
ाये चम्पा नाम नगर्यासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्य जितशत्रू
ु चम्पाया नगर्या धन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स
ा यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशालीत्यर्थः । तस्या खलु
रस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?–
मेद्धा ' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पर्शिबहु-
। = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा,
ारी वर्णनपाठोऽत्रवाच्य, स तु औपपातिकसूत्रादवसेयः ।
ां नगर्या कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । ' महया वण्णओ '

। ज्ञानाध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है ।
ण कालेण तेण समएण चपानाम नयरी होत्था)
ामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी
क जबू ! सुनो–तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–
स समय में चंपा नाम की नगरी थी (पुन्नभद्दे चेइए
तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था
भूए) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था । जितशत्रु
नमें रहता था । उसी चपा नगरी में धन्य नामका सार्थ-
था । यह जन धन धान्यादि सपन्न था । एव लोकमान्य
ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता
त्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ–तत्थण अहिच्छत्ताए

जबू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था)
જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી
કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે
અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી

इए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे
अपरिभूए)
ર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો
ાહ પણ તે ચપા નગરીમા જ રહેતો હતો તે જન,
હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी
न्नओ–तत्थणं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेउ

पहे- आनी आ । माटे आ २
होता है भी विष इस अ जावेगा अनर्थ धन ८

रिद्धरिथमियसमिद्धा वन्नओ। तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था, महया वन्नओ। तस्स धण्णस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए कप्पिए मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था सेय खलु मम विपुल पणियभंडमायाए अहिच्छत्त नगरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एव संपेहेइ सपेहित्ता गणिमच४ चउव्विह भड गेण्हइ, सगडीसागड सज्जेइ सज्जित्ता सगडीसागड भरेंति२ कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नगरीए सिघाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेह ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति—यदि खलु भदन्त! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिमानधेय स्थान सम्प्राप्तेन चतुर्दशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थ =पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्त' तर्हि पञ्चदशस्य ज्ञाताध्यनस्य श्रमणेन भगवता महा

टीकार्थ—जम्बूस्वामी पूछते हैं कि (जइण भंते! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्ते ण चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स ण भंते णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्ते ण के अट्ठे पण्णत्ते) भदत! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्षप्राप्त कर चुके हैं चौदहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रतिपादित किया है—तो हे भदत! मुक्ति प्राप्त हुए उन्हीं श्रमण भगवान

જમ્બૂ સ્વામી પૂછે છે કે—

(जइण भंते! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते पन्नरसमस्स ण भंते णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते)

હે ભદત! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે—કે જેઓ મોક્ષ પ્રાપ્ત કરી ચુકયા છે-ચૌદમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે તો હે ભદત! મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે

वीरेण यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्त ' सुधर्मस्वामी कथयति–एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगर्यासीत् । तत्र पूर्णभद्र चैत्य जितशत्रू राजा चाभवत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्यां धन्यो नाम सार्थवाह आसीत् । स कीदृश ? इत्याह–आढचो यावद् अपरिभूतः प्रभूतशक्तिशालीत्यर्थः । तस्या खलु चम्पाया नगर्या उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे अहिच्छत्रा नाम नगर्यासीत् । सा कीदृशी?–त्याह–''रिद्धत्थिमियसमिद्धा ' ऋद्धस्तिमितसमृद्धा, तत्र ऋद्धा=नभः स्पर्शिबहुप्रासादयुक्ता, स्तिमिता = स्वपरचक्रभयरहिता, समृद्धा=धनधान्यादि परिपूर्णा, ' वण्णओ ' वर्णकः=नगरी वर्णनपाठोऽत्रवाच्य, स तु औपपातिकसूत्रादवसेयः । तत्र खलु अहिच्छत्रायाँ नगर्यां कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् । ' महया वण्णओ '

महावीर ने पन्द्रहवें ज्ञानाध्ययन का क्या अर्थ निरूपित किया है । (एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण चपानाम नयरी होत्था) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न के समाधान निमित्त श्री सुधर्मा स्वामी उन से कहते हैं कि जबू ! सुनो–तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है– उस काल और उस समय में चंपा नाम की नगरी थी (पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए) पूर्णभद्र नाम का उसमें उद्यान था। जितशत्रु नामका राजा उसमें रहता था। उसी चपा नगरी में धन्य नामका सार्थवाह भी रहता था। यह जन धन धान्यादि सपन्न था। एव लोकमान्य भी था। (तीसे ण चपाए नयरीए उत्तर पुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ–तत्थण अहिच्छत्ताए

(एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण चपा नाम नयरी होत्था)
આ રીતે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે ચપા નામે નગરી હતી

(पुन्नभद्दे चेइए जियसत्तू राया, तत्थ ण चपाए नयरीए धण्णे नामे सत्थवाहे होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)
તેમા પૂર્ણ ભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા જિતશત્રુ નામે રાજા રહેતો હતો ધન્ય નામે એક સાર્થવાહ પણ તે ચપા નગરીમા જ રહેતો હતો તે જન, ધન, ધાન્ય, વગેરેથી સપન્ન હતો, તેમજ લોક માન્ય પણ હતો

(तीसेण चपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय समिद्धा वन्नओ–तत्थण अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेउ नामं राया होत्था महया वन्नओ)

महा०वर्णक=स च 'महयाहिमवतमहतमलयमदरमहिंदसारे' महाहिमवन्महाम लयमन्दरमहेन्द्रसार, इत्यादिरूपोऽत्र विज्ञेयः। तस्य धन्यस्य सार्थवाहस्य अन्यदा कदाचित् पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रे पश्चिमे प्रहरे अयमेतद्रूप आध्यात्मिकश्चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः सङ्कल्पः=विचारः समुदपद्यत-श्रेयः=उचित खलु मम विपुल=प्रचुर 'पणियभडं' पणितभाण्ड=गणिमादिक्रय विक्रयवस्तुभाण्डम् 'आयाए' आदाय=गृहीत्वा अहिच्छत्रा नगरीं वाणिज्याय गन्तुम्, गणिमादि पण्यवस्तुजात गृहीत्वा व्यापारायाहिच्छत्रा नगर्यां मया गन्तव्यमिति भावः। एव 'संपेहेइ' सप्रेक्षते=विचारयति, समेक्ष्य गणिम ४-गणिम धरिम मेय परिच्छेद्य चेत्येवरूप चतुर्विध भाण्ड=पण्यवस्तुजात गृह्णाति, गृहीत्वा 'सगडीसागड' शकटी

नयरीए कणगकेऊ नाम राया होत्था, महया वन्नओ) उस चपा नगरी के ईशान कोण में अहिच्छत्रा नामकी नगरी थी। यह नभस्तलस्पर्शी प्रासादों से युक्त स्वचक्र और परचक्र के भयसे रहित तथा धन धान्य आदि विभव से विशेष समृद्ध थी। नगरी के वर्णन का पाठ औपपातिक सूत्र में जैसा नगरी का वर्णन किया गया है वैसा ही यहा जनना चाहिये। उस अहिच्छत्रा नगरी में कनककेतु नामका राजा रहता था। इस राजा के वर्णन में "महया हिमवतमहतमलयमदरमहिंदसारे" इत्यादिरूप पाठ यहा लगा लेना चाहिये। (तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए, कप्पिए, मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-सेय खलु मम विउल पणियभडमायाए अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए, एव सपेहेइ, सपेहित्ता गणिमच४ चउव्विह भडे गेण्हइ, सगडी सागड सज्जेइ स

તે ચપા નગરીના ઈશાન કોણમા અહિચ્છત્રા નામે નગરી હતી આકાશને સ્પર્શતા એવા ઊંચા પ્રાસાદોથી આ નગરી યુક્ત હતી તેમજ સ્વચક્ર અને પરચક્ર ના ભયથી રહિત તથા ધન ધાન્ય વગેરે વૈભવથી આ નગરી સવિશેષ સમૃદ્ધ હતી ઔપપાતિક સૂત્રમા નગરીના વિષે જેવુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેવુ જ અહીં પણ જાણી લેવુ જોઈએ તે અહિચ્છત્રા નગરીમા કનકકેતુ નામે રાજા રહેતો હતો, આ રાજાના વર્ણન માટે (महया हिमवत-महत-मलय-मदर-महिंदसारे) વગેરે પાઠ અહીં સમજવો જોઈએ

(तस्स धन्नस्स सत्थवाहस्स अन्नया कयाइ, पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए, पत्थिए कप्पिए, मणोगए सकप्पे समुप्पज्जित्था-सेय खलु मम विउल पणियभडमायाए अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए एव सपेहेइ, सपेहित्ता गणिम च ४ चउव्विह भडे गेण्हइ सगडीसा-

शाकट=लघुमहच्छकटसमूह सज्जयति,=प्रगुणी करोति सज्जयित्वा शकटीशाकट भरेति, भृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, आहूय एवमवादीत्–गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया ! चम्पाया नगर्याः 'सिंघाडगजावपहेसु' शृङ्गाटक-त्रिकचतुष्क चत्वरमहापथपथेषु घोषणाम्=घोषयत ॥ सू० १ ॥

ज्जित्ता सगडीसागड भरेइ भरित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! चपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु घोसण घोसेह) एक दिन की बात है कि उस धन्यसार्थवाह को रात्रि के पश्चिम प्रहर में यह इस प्रकार का आध्यात्मिक चिन्तित, प्रार्थित कल्पित मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ कि मैं गणिमादि रूप विपुल पण्य वस्तु को लेकर व्यापार के लिये जो अहिच्छत्रा नगरी में जाऊँ तो बहुत अच्छी बात है। इस प्रकार उसने विचार किया–ऐसा विचार करके उसने गणिम, धारिम, मेय और परिच्छेद्य रूप चार प्रकार का भाण्ड लिया। भाण्ड लेकर फिर उसने गाड़ी और गाड़ों को तैयार करवाया–जब वे गाडी गाड़े तैयार हो चुके तब उसने उस पण्य (विक्रेय वस्तु) को उनमें भरा–भर कर फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उसने ऐसा कहा–हे देवानुप्रियों ! तुम लोग जाओ–और चपा नगरी के शृगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर, महापथ इन सब मार्गों में घोषणा करो। क्या घोषणा करना–यह बात नीचे के सूत्र से सूत्रकार प्रदर्शित करते हैं॥ सू० १ ॥

सगडीसागड भरेइ, भरित्ता कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया। चपाए नयरीए सिंघाडग जाव पहेसु घोसणं घोसेह)

એક દિવસે તે ધન્ય સાર્થવાહને રાત્રિના છેલ્લા પહોરમા આ જાતનો આધ્યાત્મિક, ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત, મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે પુષ્કળ પ્રમાણમા ગણિમ વગેરે વેચાણની વસ્તુઓ લઈને વેપાર ખેડવા માટે જો હુ અહિચ્છત્રા નગરીમા જાઉ તો બહુ સારુ થાય આ રીતે તેણે વિચાર કર્યો આવો વિચાર કરીને તેણે ગણિમ, ધરિમ, મેય અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચાર પ્રકારની વસ્તુઓ વાસણોમા ભરી ચારે જાતની વસ્તુઓ વાસણોમા ભરીને તેણે ગાડી તેમજ ગાડાઓને તૈયાર કરાવ્યા જ્યારે ગાડી અને ગાડાઓ તૈયાર થઈ ચૂકયા ત્યારે તેણે તે વેચાણની વસ્તુઓને ગાડી અને ગાડાઓમા મૂકી ત્યાર પછી તેણે પોતાના કૌટુમ્બિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જાઓ, અને ચપા નગરીના શૃગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા માર્ગોમા ઘોષણા કરો ઘોષણા કરતા શુ કહેવુ તે નીચેના સૂત્ર વડે સૂત્રકાર પ્રકટ કરે છે ॥ સૂત્ર "૧" ॥

घोषणास्वरूपमाह-'एवं खलु' इत्यादि ।

मूलम्-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-चिंतए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपा-सडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नगरिं गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहसुहेण य णं अहिच्छत्त संपावेइ तिकट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव एवं वयासी-हंदि सुणंतु भवंतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति ॥सू०२॥

टीका—एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्यः सार्थवाहः विपुलान् पणितभाण्डान् 'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्रा नगरीं 'वाणिज्जाए' वाणिज्याय=

'एवं खलु देवाणुप्पिया' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्रियो !

एवं खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શ્રૃંગાટક વગેરે માર્ગોમાં આ જાતની ઘોષણા

व्यापाराय गन्तु तत्=तस्मात् य. खलु हे देवानुप्रिया! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं 'गच्छती' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छेदित्याह–'चरए' इत्यादिना 'चरए वा' चरकः=गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्यौदनादे र्योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्थाप्यते तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहकः, 'चीरिए वा' चीरिकमार्गपतितशटितचीवरपरिधारकः, 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्म धारकः, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्ड=अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पडुरगे वा' पाण्डुराङ्गः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही, 'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रिया करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भाव, 'गिहिधम्मचिंतए वा' गृहिधर्मचिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्त चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्मएव श्रेयान नान्यः' उक्तञ्च—

तुम लोग शृंगाटक आदि मार्गों में खडे होकर इस प्रकार की घोषणा करना–कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा मे पणित (विक्रय वस्तु) को लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (त जो ण देवाणुप्पिया! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्ध वुड्ढ सावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ) इसलिये हे देवाणुप्रियो! जो भी कोई धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो–चाहे वह चरक हो चीरिक हो, चर्मखडधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो, गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध–

કરે કે ધન્ય સાર્થવાહ પુષ્કર પ્રમાણમા પણિત (વેચાણુની વસ્તુઓ) લઈને અહિચ્છત્રા નામે નગરીમા વેપાર ખેડવા માટે જવા ઇચ્છે છે

(त जो ण देवाणुप्पिया! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइ पासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ-तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો! ધન્ય સાર્થવાહની સાથે જે કોઈ જવા ઇચ્છતો હોય–ભલે તે ચરક હોય, ચીરિક હોય, ચર્મ ખડ ધારી હોય, ભિક્ષોડ હોય, પાડુરગ હોય, ગૌતમ હોય, ગોવ્રતિક હોય, ગૃહસ્થ ધર્મ ચિંતક હોય,

घोषणास्वरूपमाह-' एवं खलु ' इत्यादि ।

मूलम्-एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए त जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पंडुरंगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपासंडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नगरिं गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडियं दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहसुहेण य णं अहिच्छत्त संपावेइ तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव एवं वयासी-हंदि सुणतु भवंतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणाति ॥सू०२॥

टीका—एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्य' सार्थवाह विपुलान् पणितभाण्डान् 'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्रां नगरीं ' वाणिज्जाए ' वाणिज्याय=

' एव खलु देवाणुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणियं मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्रियो !

एव खलु' देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શ્રૃંગાટક વગેરે માર્ગોમા આ જાતની ઘોષણા

व्यापाराय गन्तु तत्=तस्मात् यः खलु हे देवानुप्रिया ! कोऽपि धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं 'गच्छतो' त्युत्तरेण सम्बन्धः, कोऽसौ, यस्तेन सार्द्धं गच्छेदित्याह-'चरए' इत्यादिना 'चरए वा' चरकः=गृहस्थस्य गृहे निष्पन्नस्यौदनादेर्योऽग्रभागो दानार्थं पृथक्कृत्य स्थाप्यते तस्य भिक्षावृत्त्याग्राहकः, 'चीरिए वा' चीरिकःमार्गपतितशटितचीवरपरिधारकः, 'चम्मखडिए वा' चर्मखण्डिकः=चर्मधारकः, 'भिच्छुडे वा' भिक्षोण्ड=अन्यानीतभिक्षान्नभोजी, 'पडुरगे वा' पाण्डुराङ्गः=भस्मलिप्तशरीरः, 'गोयमे वा' गौतमः=वृषभमधिकृत्य कणभिक्षाग्राही, 'गोव्वइए वा' गोव्रतिकः=गोचर्यानुकारी यथा यथा गौः स्थानासनादिक्रियां करोति तथा तथा सोऽपि करोतीति भावः, 'गिहिधम्मचिंतए वा' गृहिधर्मचिन्तकः=गृहिणो=गृहस्थस्य धर्मो गृहिधर्मस्तं चिन्तयतीति तथा, 'गृहस्थधर्म एव श्रेयान् नान्यः' उक्तञ्च—

तुम लोग शृंगाटक आदि मार्गों में खडे होकर इस प्रकार की घोषणा करना-कि धन्य सार्थवाह विपुल मात्रा मे पणित (विक्रय वस्तु) को लेकर अहिच्छत्रा नगरी में व्यापार के लिये जाना चाहता है (त जो ण देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्ध वुड्ढ सावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ) इसलिये हे देवाणुप्रियो ! जो भी कोई धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी जाना चाहता हो—चाहे वह चरक हो चीरिक हो, चर्मखडधारी हो, भिक्षोण्ड हो, पाण्डुरङ्ग हो, गौतम हो, गोव्रतिक हो, गृहस्थधर्म चिन्तक हो, अविरुद्ध हो, विरुद्ध हो, वृद्ध-

કરે કે ધન્ય સાર્થવાહ પુષ્કર પ્રમાણમા પણિત (વેચાણની વસ્તુઓ) લઈને અહિચ્છત્રા નામે નગરીમા વેપાર ખેડવા માટે જવા ઈચ્છે છે

(त जो ण देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखडिए वा भिच्छुडे वा पडुरंगे वा गोव्वइए वा गिहिधम्मचिंतए वा अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइ पासडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेण सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नयरिं गच्छइ तस्स ण धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तग दलाइ)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! ધન્ય સાર્થવાહની સાથે જે કોઈ જવા ઈચ્છતો હોય-ભલે તે ચરક હોય, ચીરિક હોય, ચર્મ ખડ ધારી હોય, ભિક્ષોડ હોય, પાડુરગ હોય, ગૌતમ હોય, ગોવ્રતિક હોય, ગૃહસ્થ ધર્મ ચિંતક હોય,

घोषणास्वरूपमाह-' एवं खलु ' इत्यादि ।

मूलम्-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउलं पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुडे वा पडुरगे वा गोयमे गोव्वइए वा गिहिधम्म-चिंतए वा अविरुद्ध विरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गथप्पभिइपा-सडत्थे वा गिहत्थे वा धण्णेणं सत्थवाहेण सद्धिं अहिच्छत्त नगरिं गच्छइ तस्स णं धण्णे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलाइ अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुडियस्स कुडिय दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ अंतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ सुहंसुहेण य णं अहिच्छत्त संपावेइ तिकट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव एवं वयासी-हंदिसुणंतु भवंतो चंपानगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चपिणाति ॥सू०२॥

टीका—एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! धन्य' सार्थवाह विपुलान् पणितभाण्डान् 'आयाए' आदाय इच्छति अहिच्छत्रा नगरी ' वाणिज्जाए ' वाणिज्याय=

' एवं खलु देवाणुप्पिया ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए) हे देवाणुप्रियो !

एव खलु देवाणुप्पिया इत्यादि ।

(एव खलु देवाणुप्पिया ! धण्णे सत्थवाहे विउल पणिय मायाए इच्छइ अहिच्छत्त नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો શ્રૃંગાટક વગેરે માર્ગોમા આ જાતની ઘોષણા

अथवा 'भग्गलुग्गस्स' भग्नरुग्णाय भग्नाय = त्रुटितहस्तपादाद्यवयवाय रुग्णाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा 'साहेज्ज' साहाय्यम् = औषधोपचारादि करणरूप ददाति, तथा – सुख- सुखेन= सुखपूर्वकं च तम् अहिच्छत्रा नगरीं 'सपावेइ' समापयति=प्रापयिष्यतीत्यर्थः । 'तिकट्टु' इति कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वार घोषयत, घोषयित्वा मम 'एय माणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकाम्=एतद्रूपा ममाज्ञा 'पच्चप्पिणह' मत्यर्पयत=मदुक्ता घोषणा कृत्वा पुनर्मह्य निवेदयतेत्यर्थ. । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'तथाऽस्तु-

सुहसुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह) पदत्राण (जूता) रहित है तो जूता (पदत्राण)देगा जलपात्र रहित होगा उसे जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्बलपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्बल पाथेय-भाता पूरक द्रव्य देगा, अर्थात् चलते२ बीच मार्गमे ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलते२ यदि वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलते२ यदि वह पैर फिसल कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये होंगे तो उसकी सार सभाल करेगा-रोगी की दवाई करेगा, और बड़े आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा। इस प्रकार की इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना । और (घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) करके फिर हमे पीछे इसकी खबर देना (तएण ते कौडुम्बियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपा

भग्गलुग्गस्स साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेणं अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह)

જોડા વગરનો હશે તેને જોડા આપશે, જમવાની સગવડ હશે નહિ તેને જમવાની સગવડ કરી આપશે શબલ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય વગરનો હશે તેને શબલ-પાથેય-પૂરક દ્રવ્ય આપશે એટલે કે માર્ગમા અધવચ્ચે ભાતુ ખલાસ થઈ ગયુ હશે તેને યોગ્ય ધન આપશે માર્ગમા અધવચ્ચે ચાલતા ચાલતા જો તે ઘોડા ઉપરથી પડી જશે અથવા પગે ચાલતા ચાલતા જો તે પગ લપસવાથી પડી જશે અને તેથી તેના હાથ પગ વગેરે ભાગી ગયા હશે તો તેની તે સુશ્રૂષા કરશે-રોગની દવા કરશે અને સુખેથી તેને અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચાડશે આ રીતે તમે બે ત્રણ વખત ઘોષણા કરો અને (ઘોસિત્તા મમ એયમાણત્તિય પચ્ચપ્પિણહ) ઘોષણા કરીને અમને ખબર આપો

(तएण ते कोडुंबियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपानयरी

"गृहाश्रमसमो धर्मो,-न भूतो न भविष्यति।
पालयन्ति नराः शूराः, क्लीबा पाषण्डमाश्रिताः॥ १ ॥"

इत्यभिसन्धाय तथा चिन्तनशीलः, 'अविरुद्धविरुद्धवुड्ढसावगरत्तपडनिग्गंथप्पभिइपासंडत्थे वा' अविरुद्धविरुद्धवृद्धश्रावकरक्तपटनिर्ग्रन्थप्रभृतिपाषण्डस्थः तत्र- 'अविरुद्ध' अविरुद्ध 'विरुद्ध' कस्मादपीत्यविरुद्ध =विनयवादी क्रियावादीत्यर्थः, परलोकाभ्युपगमात्, 'विरुद्ध' विरुद्ध, विरुद्ध = विरुद्धवादोऽस्यास्तीति-अर्श आदित्वादच्, विरुद्धवादी अक्रियावादीत्यर्थः परलोकानभ्युपगमात्, 'वुड्ढसावग' वृद्धश्रावकः=ब्राह्मणः, वृद्धः=वृद्धकालिको यः श्रावकः सः, भरतादिकाले पूर्वं श्रावकत्वेन पश्चाद् ब्राह्मणत्वभावात्, 'रत्तपड' रक्तपटः=गैरिकवस्त्रधारीपरिव्राजकः, 'णिग्गंथप्पभिइ' निर्ग्रन्थप्रभृति = साधुप्रभृतिरन्यः कोऽपिकपिलादि-पाषण्डस्थो वा गृहस्थो वा, इति यदि एषु यः कोऽपिगच्छेत् तस्मै खलु धन्यः सार्थवाह अच्छत्रकाय=छत्ररहिताय छत्रक ददाति=दास्यतीति भावः, एवं सर्वत्र विज्ञेयम् 'अणुवाहणस्स' अनुपानहे=पादत्राणरहिताय 'उवाहणाओ' उपानहौ ददाति, अकुण्डिकाय=जलपात्ररहिताय कुण्डिका=जलपात्रं ददाति। 'अपत्थयणस्स' अपथ्यदनाय शम्बलरहिताय 'पत्थयणं' पथ्यदनं = शम्बलं ददाति। 'अपक्खेवगस्स' अप्रक्षेपकाय, प्रक्षेपकः = पूर्तिद्रव्यं, तद्रहिताय मध्यमार्गे न्यून शम्बलाय प्रक्षेपक=शम्बलपूरकं द्रव्यं ददाति। 'अंतराविय' अन्तराऽपि च= मार्गान्तरालेऽपि च 'से' तस्मै पतिताय = वाहनाद् पादादिस्खलनेन वा, वा=

श्रावक हो, गैरिकवस्त्रधारी परिव्राजक हो, निर्ग्रन्थ हो, पाखंडी हो, चाहे गृहस्थ हो कोई भी क्यों न हो, उसके लिये धन्य सार्थवाह यदि वह छत्ररहित है तो छत्र देगा (अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ अकुंडियस्स कुंडिय दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अतराऽविय से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ,

અવિરુદ્ધ હોય, વિરુદ્ધ હોય, વૃદ્ધ શ્રાવક હોય, ગૈરિક વસ્ત્ર ધારી પરિવ્રાજક હોય, નિર્ગ્રંથ હોય, પાખંડી હોય અને ગૃહસ્થ હોય કોઈ પણ કેમ ન હોય તેના માટે જો તે છત્ર વગરનો હોય તેવાને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર આપશે

(अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडिय दलयइ अपत्थयणस्स पत्थयण दलयइ अपक्खेवगस्स पक्खेव दलयइ अंतराऽविय से वा

अथवा 'भग्गलुग्गस्स' भग्नरुग्णाय भग्नाय = त्रुटितहस्तपादाद्यवयवाय रुग्णाय = रोगाक्रान्ताय रोगग्रस्ताय वा 'साहेज्ज' साहाय्यम् = औषधोपचारादि करणरूप ददाति, तथा – सुख- सुखेन = सुखपूर्वक च तम् अहिच्छत्रा नगरीं 'सपावेइ' सम्प्रापयति=सम्प्रापयिष्यतीत्यर्थः। 'तिकट्टु' इति कृत्वा एवमुच्चार्य द्वितीयमपि तृतीयमपि वार घोषयत, घोषयित्वा मम 'एय माणत्तियं' एतामाज्ञप्तिकाम्=एतद्रूपा ममाज्ञा 'पच्चप्पिणह' मत्यर्पयत=मदुक्ता घोषणा कृत्वा पुनर्मह्य निवेदयतेत्यर्थः। तत' खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'तथाऽस्तु-

सुहसुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह) पदत्राण (जूता) रहित है तो जूता (पदत्राण) देगा जलपात्र रहित होगा उसे जलपात्र देगा, कलेवा (भोजन) रहित है तो कलेवा (भोजन) देगा, शम्बलपाथेय पूरक द्रव्यसे रहित है तो उसे शम्बल पाथेय–भाता पूरक द्रव्य देगा, अर्थात् चलते२ बीच मार्गमें ही जिसका कलेवा (भोजन) समाप्त हो जावेगा उसे उसके योग्य द्रव्यप्रदान करेगा, मार्गके मध्यमें चलते२ यदि वह घोड़ेसे गिर गया होगा, अथवा पैदल चलते२ यदि वह पैर फिसल कर गिर गया होगा और इस तरह से उसके हाथ पैर आदि टूट गये होंगे तो उसकी सार सभाल करेगा–रोगी की दवाई करेगा, और बड़े आनन्द के साथ उसे अहिच्छत्रा नगरीमें पहुँचा देगा। इस प्रकार की इस घोषणा को तुम लोग दो तीन बार करना। और (घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) करके फिर हमे पीछे इसकी खबर देना। (तएण ते कोडुम्बियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपा

भग्गलुग्गस्स साहेज्ज दलयइ, सुह सुहेण अहिच्छत्त सपावेइ, त्ति कट्टु दोच्चपि तच्चपि घोसेह)

જોડા વગરનો હશે તેને જોડા આપશે, જમવાની સગવડ હશે નહિ તેને જમવાની સગવડ કરી આપશે શબલ–પાથેય–પૂરક દ્રવ્ય વગરનો હશે તેને શબલ–પાથેય–પૂરક દ્રવ્ય આપશે એટલે કે માર્ગમા અધવચ્ચે ભાતુ ખલાસ થઈ ગયુ હશે તેને યોગ્ય ધન આપશે માર્ગમા અધવચ્ચે ચાલતા ચાલતા જો તે ઘોડા ઉપરથી પડી જશે અથવા પગે ચાલતા ચાલતા જો તે પગ લપસવાથી પડી જશે અને તેથી તેના હાથ પગ વગેરે ભાગી ગયા હશે તો તેની તે સુશ્રૂષા કરશે–રોગની દવા કરશે અને સુખેથી તેને અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચાડશે આ રીતે તમે બે ત્રણ વખત ઘોષણા કરો અને (घोसित्ता मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) ઘોષણા કરીને અમને ખબર આપો

(तएण ते कोडुम्बियपुरिसा जाव एव वयासी हदि सुणतु भवतो चपानयरी

इत्युक्त्वा चम्पानगर्यां शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागम्य-एवमवादिषुः-'हंदि' इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः 'शृण्वन्तु-भवन्तः-यत् चम्पानगरी वास्तव्या, बहवः 'चरगाय जाव' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रा नगरीं गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च स्खलितेभ्यो रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येवं-घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय 'पच्चप्पिणंति' प्रत्यर्पयन्ति=निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

नगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार धन्यसार्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकार लिया और चंपानगरी में शृंगाटक आदि महापथ पर्यंत के समस्त मार्गों में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चंपा नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो सर्व प्रथम हिस्सा दान के लिये पृथक कर रख लिया जाता है, उस

वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને ચંપા નગરીના શ્રૃંગાટક વગેરે મહાપથોમાં જઈને આ રીતે તેઓએ ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સાંભળો, ચંપા નગરીમાં રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમાં જ તેને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમાં કોઈ પડી જશે અથવા તો માંદો થઈ જશે તો ધન્ય સાર્થવાહની તેની બરાબર માવજત કરાવીને તેની સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચાડશે આ રીતે ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનું કામ પુરું થઈ જવાની ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામાં આવે છે તે ભાગને જે ભીખ માગીને લઈ જાય છે તેને ચરિક કહે છે. માર્ગમાં પડેલા ફાટેલા વસ્ત્રો, જે

हिस्से को जो भिक्षा वृत्ति से ले जाते हैं उनका नाम चरिक है। मार्ग में गिरे हुए फटेचिटे वस्त्र को लेकर जो पहिनते हैं उनका नाम चीरिक है। चमड़े को जो अपने पहिरने के उपयोग में लाते हैं वे चर्म खण्डिक है। दूसरे के द्वारा लायी गई भिक्षा से जो अपना निर्वाह करते हैं वे भिक्षोण्ड हैं। अपने शरीर पर जो भस्म लपेटे रहते हैं वे पांडुरग हैं। बैल को लेकर जो दूसरों के घरों से अनाज मांगते हैं वे गौतम है। दिलीप राजा की तरह जो गायकी सेवा करने में लगे रहते हैं-जब वह बैठती है तब वे बैठते हैं-वह खड़ी होती है तो वे भी खड़े हो जाते हैं इत्यादि रूप से गोचर्यानुकारी जो जन होते हैं वे गोव्रतिक हैं। गृहस्थ धर्म ही श्रेष्ठ है, इस प्रकार मान कर जो उसमें रह रहते हैं वे गृहिधर्म चिन्तक है। जैसे-गृहस्थाश्रम के समान धर्म न हुआ है और न आगे होगा ही। जो शूरवीर मनुष्य होते हैं वे ही इसे पालते हैं। पापड धर्म को पालने वाले मनुष्य शूरवीर नहीं हैं किन्तु वे तो क्लीब-नपुसक हैं। ऐसी इनकी मान्यता होती है। अविरुद्ध शब्द का अर्थ विरुद्ध नहीं रहते हैं सबका समानरूप से विनय करते हैं। विरुद्ध शब्द का अर्थ अक्रियावादी है। ये अक्रिया वादी पर-

પહેરે છે તેનુ નામ ચીરિક છે ચામડાને જે વસ્ત્ર તરીકે પહેરવામા કામમા લે છે તે ચર્મ ખડિત છે બીજાઓ વડે લાવવામા આવેલી ભિક્ષાથી જે પોતાનુ ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોડ છે પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે છે તે પાડુરગ છે બળદને સાથે લઈને જેઓ બીજાઓના ઘરોથી અનાજ માગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા કરવામા વ્યસ્ત રહે છે-જ્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, જ્યારે ગાય ઊભી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ ઊભા થઈ જાય છે વગેરે રૂપમા જેઓ ગોચર્યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોવ્રતિક કહેવાય છે ગૃહસ્થ ધર્મ જ ખરેખર ઉત્તમ ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણે માનીને તેમા દત્ત ચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહિધર્મ-ચિંતક છે જેમકે —ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ થયો નથી અને આગળ ભવિષ્યમા થવાની સભાવના પણ નથી જેઓ શૂરવીર માણસો હોય, છે તેઓ જ આ ધર્મનુ પાલન કરે છે પાખડ ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી પણ તેઓ તો નપુસક છે ગૃહસ્થીઓની આ જાતની માન્યતા હોય છે અવિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે કેમ કે એઓ કોઈ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ કરતા નથી તેઓ બધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે અક્રિયાવાદી લોકો પરલોક જેવી વસ્તુમા

इत्युक्त्वा चम्पानगर्यां शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागम्य-एवमवादिषुः-'हंदि' इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः! शृण्वन्तु-भवन्त'-यत् चम्पानगरी वास्तव्या बहवः 'चरगाय जाव' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च स्खलितेभ्यो रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येवं घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय 'पच्चप्पिणंति' प्रत्यर्पयति=निवेदयन्ति ॥ सू० ७ ॥

नगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार धन्यसार्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकार लिया और चंपानगरी में शृंगाटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गों में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको! सुनो-जो कोई चंपा नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रांत बन जावेंगे उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक कर रख लिया जाता है, उस

वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणंति)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને ચંપા નગરીના શૃંગાટક વગેરે મહાપથોમાં જઈને આ રીતે તેઓએ ઘોષણા કરી કે હે લોકો! સાંભળો, ચંપા નગરીમાં રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમાં જ તેને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમાં કોઈ પડી જશે અથવા તો માંદો થઈ જશે તો ધન્ય સાર્થવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચાડશે આ રીતે, ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણનું કામ પુરૂ થઈ જવાની ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામાં આવે છે તે ભાગને જે ભીખ માગીને લઈ જાય છે તેને ચરિક કહે છે માર્ગમાં પડેલા ફાટેલા વસ્ત્રો જે

हिस्से को जो भिक्षा वृत्ति से ले जाते हैं उनका नाम चरिक है। मार्ग में गिरे हुए फटेचिटे वस्त्र को लेकर जो पहिनते हैं उनका नाम-चीरिक है। चमड़े को जो अपने पहिरने के उपयोग में लाते हैं वे चर्म खण्डिक है। दूसरे के द्वारा लायी गई भिक्षा से जो अपना निर्वाह करते हैं वे भिक्षोण्ड हैं। अपने शरीर पर जो भस्म लपेटे रहते हैं वे पांडुरग हैं। बैल को लेकर जो दूसरों के घरों से अनाज मांगते हैं वे गौतम है। दिलीप राजा की तरह जो गायकी सेवा करने में लगे रहते-हैं-जब वह बैठती है तब वे बैठते हैं-वह खड़ी होती है तो वे भी खडे हो जाते हैं इत्यादि रूप से गोचर्यानुकारी जो जन होते हैं वे गोव्रतिक हैं। गृहस्थ धर्म ही श्रेष्ठ है, इस प्रकार मान कर जो उसमें रह रहते हैं वे गृहिधर्म चिन्तक है। जैसे-गृहस्थाश्रम के समान धर्म न हुआ है और न आगे होगा ही। जो शूरवीर मनुष्य होते हैं वे ही इसे पालते हैं। पाषड धर्म को पालने वाले मनुष्य शूरवीर नहीं हैं किन्तु वे तो क्लीब-नपुसक हैं। ऐसी इनकी मान्यता होती है। अविरुद्ध शब्द का अर्थ विरुद्ध नहीं रहते हैं सबका समानरूप से विनय करते हैं। विरुद्ध शब्द का अर्थ अक्रियावादी है। ये अक्रिया वादी पर-

પહેરે છે તેનુ નામ ચીરિક છે ચામડાને જે વસ્ત્ર તરીકે પહેરવામા કામમા લે છે તે ચર્મ ખડિત છે બીજાઓ વડે લાવવામા આવેલી ભિક્ષાથી જે પોતાનુ ઉદર પોષણ કરે છે તે ભિક્ષોડ છે પોતાના શરીર ઉપર જે રાખ ચોળે છે તે પાડુરગ છે બળદને સાથે લઈને જેઓ બીજાઓના ઘરોથી અનાજ માગે છે તેઓ ગૌતમ કહેવાય છે રાજા દિલીપની જેમ જેઓ ગાયની સેવા કરવામા વ્યસ્ત રહે છે—જ્યારે ગાય બેસે છે ત્યારે તેઓ બેસે છે, જ્યારે ગાય ઊભી થાય છે ત્યારે તેઓ પણ ઊભા થઈ જાય છે વગેરે રૂપમા જેઓ ગોચર્યાનુકારી જન હોય છે તેઓ ગોવ્રતિક કહેવાય છે ગૃહસ્થ ધર્મજ ખરેખર-ઉત્તમ ધર્મ છે આમ ચોક્કસ પણે માનીને તેમા દત્તચિત્ત રહે છે તેઓ ગૃહિધર્મ-ચિંતક છે જેમકે —ગૃહસ્થાશ્રમ જેવો ધર્મ થયો નથી અને આગળ ભવિષ્યમા થવાની સભાવના પણ નથી જેઓ શૂરવીર માણસો હોય છે તેઓ જ આ ધર્મનુ પાલન કરે છે પાખડ ધર્મને પાલન કરનારા માણસો શૂરવીરો નથી પણ તેઓ તો નપુસક છે ગૃહસ્થીઓની આ જાતની માન્યતા હોય છે અવિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ ક્રિયાવાદી છે કેમ કે એઓ કોઈ પણ માણસથી વિરુદ્ધ આચરણ કરતા નથી તેઓ બધાની સાથે સરખી રીતે વિનયપૂર્ણ વ્યવહાર કરે છે વિરુદ્ધ શબ્દનો અર્થ અક્રિયાવાદી છે અક્રિયાવાદી લોકો પરલોક જેવી વસ્તુમા-

इत्युक्त्वा चम्पानगर्यां शृङ्गाटकादिमहापथपथेषु समागत्य-चरकादिषु -'हंदि' इत्यामन्त्रणे तेन हे लोकाः ! शृण्वन्तु-भवन्तः-यत् चम्पानगरी वास्तव्या, बहवः 'चरगाय जाव' इति-चरकचीरिकादयो धन्येन सार्थवाहेन सार्द्धमहिच्छत्रां नगरीं गच्छन्ति तेभ्यो धन्यः सार्थवाहश्छत्रादिकं सर्वं दास्यति, मार्गे च स्खलितेभ्यो रोगादिग्रस्तेभ्यश्च औषधोपचारादिना साहाय्यं करिष्यति, सुखपूर्वकमहिच्छत्रां नगरीं प्रापयिष्यति च, इत्येवं घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय 'पच्चप्पिणति' प्रत्यर्पयन्ति-निवेदयन्ति ॥ सू० २ ॥

नगरीवत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणति) इस प्रकार धन्यसार्थवाह की बात को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने "तथास्तु" कहकर स्वीकार लिया और चपानगरी में शृंगाटक आदि महापथ पर्यंतके समस्त मार्गो में जाकर इस प्रकार की घोषणा की, हे लोको ! सुनो-जो कोई चपा नगरी का निवासी चरक आदि जन धन्य सार्थवाह के साथ अहिच्छत्रा नगरी को जाना चाहता हो उसके लिये धन्यसार्थवाह छत्रादि सब देगा तथा जो मार्ग में पतित हो जावेंगे अथवा रोगाक्रान्त बन जावेंगे उनकी औषधि आदि द्वारा सहायता भी करेगा और इस तरह वह उनके लिये सकुशल अहिच्छत्रा नगरी में पहुँचा देगा-इस प्रकार की घोषणा करके उन लोगों ने इसकी खबर धन्य सार्थवाह के पास भेज दी। गृहस्थ के घर निष्पन्न हुए औदनादिक खाद्य वस्तुओं का जो सर्व प्रथम हिस्सा दानके लिये पृथक कर रख लिया जाता है, उस

वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव पच्चप्पिणति)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સ્વીકારી લીધી અને ચંપા નગરીના શ્રૃંગાટક વગેરે મહાપથોમાં જઈને આ રીતે તેઓએ ઘોષણા કરી કે હે લોકો ! સાંભળો, ચંપા નગરીમાં રહેનાર ચરક, વગેરે ગમે તે માણસ ધન્ય સાર્થવાહની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીમાં જ તેને ધન્ય સાર્થવાહ છત્ર વગેરે બધું આપશે, તેમજ માર્ગમાં કોઈ પડી જશે અથવા તો માંદો થઈ જશે તો ધન્ય સાર્થવાહની તેની બરોબર માવજત કરાવીને તેની સહાય કરશે અને તેને સકુશળ અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચાડશે આ રીતે, ઘોષણા કરીને તે લોકોએ ધન્ય સાર્થવાહને ઘોષણાનું કામ પુરું થઈ જવાની ખબર આપી ગૃહસ્થને ઘેર તૈયાર કરાયેલા ભાત વગેરે ખાદ્ય વસ્તુઓનો જે સૌ પહેલા દાન માટે જૂદો કરીને રાખવામાં આવે છે તે ભાગને જે ભીખ માગીને લઈ જાય છે તેને ચરક કહે છે, માર્ગમાં પડેલા ફાટેલા વસ્ત્રો, જે

जणवय मज्झं मज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ उवा-
गच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेइ
करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—तुब्भे णं
देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा
२ एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे आगामियाए
छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे
णंदिफला नाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया पुप्फिया
फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा
चिट्ठंति मणुण्णा वन्नेणं४ जाव मणुन्ना फासेणं मणुन्ना छायाए,
तं जो णं देवाणुप्पिया ! तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा कंद०
तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ
छायाए वा वीसमइ तस्स णं आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा
परिणममाणा२ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति, तं मा णं
देवाणुप्पिया ! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव छायाए
वा वीसमउ, मा णं सेऽवि अकाले चेव जीवियाओ ववरो-
विज्जिस्सइ, तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि-
य जाव हरियाणि य आहारेह छायासु वीसमहत्ति घोसणं
घोसेह जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से धण्णे सत्थवाहे सगडी-
सागडं जोएइ२ जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थणिवेसं करेइ
करित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता

मूलम्—तएणं तेसिं कोडुंबिय पुरिसाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानयरी वत्थव्वा बहवे चरगा य जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छति तएणं से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव पत्थयं ण दलाइ दलइत्ता एवं वयासी— गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठह, तएणं ते चरगा य जाव गिहत्था य धण्णेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा जाव चिट्ठंति, तएणं धण्णे सत्थवाहे सोहणंसि तिहिकरणनक्खत्तंसि विउलं असणं ४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० आमंतेइ आमंतित्ता भोयणं भोयावेइ भोयावित्ता आपुच्छइ आपुच्छित्ता सगडीसागडं जोयावेइ जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता चरगा य जाव गिहत्था य सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पइट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे२ सुहेहिं वसहिं पायरासेहिं अंगं

लोक नहीं मानते हैं। वृद्धश्रावक—ब्राह्मण—अर्थ का वाचक है। क्यों कि ये पहिले भरत चक्रवर्ती के समय में श्रावक थे—पश्चात् ब्राह्मण बन गये इसलिये "वृद्धकालिको यः श्रावकः" इस व्युत्पत्ति के अनुसार वृद्धश्रावक शब्द ब्राह्मण अर्थ का वाची बन जाता है। बाकी अवशिष्ट शब्दों का अर्थ स्पष्ट है॥ सू० २॥

વિશ્વાસ કરતા જ નથી વૃદ્ધ શ્રાવક-બ્રાહ્મણ અર્થને સ્પષ્ટ કરે છે કેમ કે એઓ પહેલા ભરત ચક્રવર્તીના વખતે શ્રાવક હતા ત્યાર પછી એએ બ્રાહ્મણ થઈ ગયા એટલા માટે 'वृद्ध कालिको य श्रावक स वृद्ध श्रावक' આ વ્યુત્પત્તિ મુજબ વૃદ્ધ શ્રાવક શબ્દ બ્રાહ્મણ અર્થનો વાચક થઈ જાય છે બીજા શેષ શબ્દોના અર્થ તો સ્પષ્ટ જ છે ॥ સૂત્ર "૨" ॥

निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—'तएण तेसिं' इत्यादि। ततः खलु तेषां कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके एतमर्थं=पूर्वोक्तमहिच्छत्रानगरीगमनार्थघोषणारूपं भावं श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य, निशम्य=हृदयवार्य चम्पानगरी वास्तव्या अहिच्छत्रानगरीगन्तुकामा बहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्यः सार्थवाह–स्तत्रैवोपागच्छन्ति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषां चरकाणां च यावद् गृहस्थानां च मध्ये अन्छत्रकायछत्रं ददाति यावत् पथ्यदनं=शम्बलं ददाति, एवमवादीत्=कथयति गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! चम्पाया नगर्या बहिः 'अग्गुज्जाणंसि' अग्र्योद्याने मां 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः=प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत। ततः खलु ते चरकाश्च=

–:तएण तेसिं इत्यादि:–

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (तेसिं कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चंपा नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य सार्थवाहक था वहा आये (तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाणं य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्तं दलइ जाव पत्थयणं दलाइ दलइत्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! चंपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवाले माणा चिट्ठेह) इसके बाद धन्य सार्थवाह

'तएण तेसिं' इत्यादि।

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યાર પછી

(तेसिं कोडुंबिय पुरिसाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति)–

તે કૌટુંબિક પુરુષોના મુખથી આ ઘોષણા-રૂપ અર્થને-સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ચંપા નગરીના ઘણા ચરકથી માંડીને ગૃહસ્થ સુધીના બધા માણસો જ્યાં ધન્ય સાર્થવાહ હતા ત્યાં આવ્યા

(तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ, जाव पत्थयणं दलाइ, दलइत्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणु-

एवं वयासी–तुब्भेणं देवाणुप्पिया !–मम सत्थनिवेसंसि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एवं वयह–एएणं देवाणुप्पिया ! ते णंदिफला रुक्खा किण्हा जाव मणुन्ना छायाए त जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाण रुक्खाण मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल० जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, त माणं तुब्भे जाव दूरे दूरेणं परिहरमाणा वीसमह, मा णं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमहत्तिकट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति, तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति पत्तियंति रोयंति एयमट्ठं सद्दहमाणा३ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेण परिहरमाणा२ अन्नेसि रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमंति तेसि णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा२ सुहरूवत्ताए भुज्जो२ परिणमंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो निग्गंथी वा जाव पंचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ नो रज्जेइ से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं अच्चणिज्जे५ परलोए नो आगच्छइ जाव वीइवइस्सइ, जहा य ते पुरिसा तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति३ धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाण मूलाणि य जाव वीसमंति तेसिं ण आवाए भद्दए भवइ तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति, एवामेव समणाउसो ! जो अम्ह

णिग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा ॥ सू० ३ ॥

टीका—'तएण तेसिं' इत्यादि । ततः खलु तेषां कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके एतमर्थं=पूर्वोक्तमहिच्छत्रानगरीगमनार्थघोषणारूपं भावं श्रुत्वा=कर्णविषयीकृत्य, निशम्य=हृदयवधार्य चम्पानगरी वास्तव्या अहिच्छत्रानगरीगन्तुकामा बहवश्चरकाश्च यावद् गृहस्थाश्च यत्रैव धन्यः सार्थवाहः—स्तत्रैवोपागच्छन्ति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाहस्तेषां चरकाणां च यावद् गृहस्थानां च मध्ये अच्छत्रकायछत्र ददाति यावत् पथ्यदन=शम्बल ददाति, एवमवादीत्=कथयति गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया ! चम्पाया नगर्या बहिः 'अग्गुज्जाणंसि' अग्योद्याने मां 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्त =प्रतीक्षमाणास्तिष्ठत । ततः खलु ते चरकाश्च=

—'तएण तेसिं इत्यादि'—

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तेसिं कोडुंबियपुरिसाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति) उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से इस घोषणारूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारणकर चंपा नगरी निवासी अनेक चरक से लेकर गृहस्थ पर्यंत मनुष्य जहां धन्य सार्थवाहक था वहा आये (तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाणं य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त दलइ जाव पत्थयणं दलाइ दलइत्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया । चंपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवाले माणा चिट्ठह) इसके बाद धन्य सार्थवा०

'तएण तेसिं' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) त्यार पछी

(तेसिं कोडुंबिय पुरिसाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म चंपानगरी वत्थव्वा बहवे चरगाय जाव गिहत्था य जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति)-

ते कौटुंबिक पुरुषोना मुखथी आ घोषणा रूप अर्थने-सांभळीने अने तेने हृदयमा धारण करीने चंपा नगरीना घणा चरकथी माडीने गृहस्थ सुधीना बधा माणसो ज्या धन्य सार्थवाह हता त्या आव्या

(तएण से धण्णे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव गिहत्थाण अच्छत्तगस्स छत्त 'दलयइ, जाव पत्थयण दलाइ, दलइत्ता एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया' चंपाए नयरीए बाहिया अग्गुज्जाणंसि मम पडिवालेमाणा चिट्ठह)

चरकादयो यावद् गृहस्था धन्येन सार्थवाहेन-एवमुक्ता सन्तः 'जाव' यावद्-धन्य सार्थवाह प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति । तत खलु धन्यः सार्थवाह' शोभने तिथि करणनक्षत्रे=शुभदिवसे विपुलमशनादिक चतुर्विधाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति उपस्कार्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् आमन्त्रयति, भोजन भोजयति=कार

ने उन चरक आदि से लेकर गृहस्थ पर्यन्त के मनुष्यों में जिसके पास छत्ता आदि नहीं था उसे छत्ता दिया यावत् जिस के पास कलेवा नही था उसको कलेवा-मार्ग भोजन-दिया । बाद में उसने उन सबसे कहा हे देवानुप्रियों ! तुम यहां से चलो और मुख्य उद्यान में मेरी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे रहो-(तएण ते चरगाय जाव गिहत्था य धण्णेण सत्थ वाहेण एव वुत्ता समाणा जाव चिट्ठति, तएण धण्णे सत्थवाहे सोहणसि त्तिहिकरणनक्खत्तसि विउल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तनाइ० आमतेइ, आमत्तित्ता भोयण भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडीसागड जोयावेइ, जोयवित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ) इस प्रकार धन्यसार्थवाह के द्वारा कहे गये वे चरकादि गृहस्थ पर्यन्त समस्तजन वहा से चलकर मुख्य उद्यान में गये-और धन्यसार्थवाह की प्रतीक्षा करते हुए वहां ठहर गये । धन्यसार्थवाह ने शुभ तिथि, करण, एव नक्षत्र में विपुल मात्रा में अशन आदि रूप चारों प्रकार का आहार निष्पन्न करवाया । जब आहार निष्पन्न हो

ત્યાર પછી ધન્ય સાર્થવાહે તેઓ ચરક વગેરેથી માંડીને ગૃહસ્થ સુધીના બધા માણુસોમાથી જેની પાસે છત્રી વગેરે ન હતી તેને છત્રી વગેરે અને જેની-પાસે માર્ગ માટેનુ ભોજન ન હતુ તેને ભોજન આપ્યુ ત્યાર બાદ તેણે બધા ને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે અહીંથી મુખ્ય ઉદ્યાનમા જાઓ અને ત્યા મારી પ્રતીક્ષા કરો.

(तएण ते चरगाय जाव गिहत्थाय धण्णेण सत्थवाहे ण एव वुत्ता समाणा जाव चिट्ठति, तएण धण्णे सत्थवाहे सोहणसि त्तिहिकरणनक्खत्तसि विउल असण ४ उवक्खडवेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ आमतेइ, आमतित्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावित्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडीसग्गड जोयावेइ, जोयावित्ता चंपानगरीओ निग्गच्छइ)

આ રીતે ધન્ય સાર્થવાહ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે બધા માણસો ત્યાથી મુખ્ય ઉદ્યાનમા ગયા અને ધન્ય સાર્થવાહની રાહ જોતા તેઓ ત્યા જ રોકાયા ધન્ય સાર્થવાહે શુભ તિથિ, કરણ, અને ... પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતના આહારો

पति, भोजयित्वा 'आपुच्छइ' आपृच्छति=निदेशगमनार्थमाज्ञा प्रार्थयति, आपुच्छ्य=आज्ञा प्राप्य शकटीशाकट योजयति, योजयित्वा चम्पा नगरीतो निर्गच्छति=निस्सरति, निर्गत्य चरकान् यावत् गृहस्थांश्च सार्द्धं गृहीत्वा 'नाइविप्पगिट्ठेहिं' नातिविप्रकृष्टेपु=नातिदूरेषु यथोचितेषु 'अद्धाणेहिं' अध्वसु=मार्गेषु 'वसमाणे २' वसन्-वसन् स्थाने स्थाने निवास कुर्वन् 'सुहेहिं' शुभैः=प्रशस्तैः 'वसहिपायरासेहिं' वसतिप्रातराशैः= निवासस्थाने प्रातःकालीनलघुभोजनैः सह अङ्गजनपदस्य=अङ्गदेशस्य मध्य-मध्येन यत्रैव 'देसग्ग' देशाग्र=अङ्गदेशसीमा वर्त्तते तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शकटीशाकट मोचयति, मोचयित्वा 'सत्थनिवेस' सार्थनिवेश करोति, कृत्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति शब्दयित्वा= आहूय एवमवादीत्-"हे देवानुप्रियाः ! यूय खलु मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन=उच्चस्वरेण उद्‌घोषयन्तः=सन्तः एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण वदत=कथयत-

चुका-तब उसने अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनोंको आमन्त्रित किया। आमन्त्रित करके फिर उन सबको उसने उस चतुर्विध आहारको भोजन कराया भोजन कराके फिर उन सबसे परदेश गमन करने की उसने आज्ञा मांगी। आज्ञाप्राप्त करके उसने गाडी और गाड़ों को जुनवाया जुतवा कर फिर वह चंपा नगरी से बाहिर निकला। चरकादि गृहस्थ पर्यन्त समस्त जन को अपने साथ में ले लिया-(निग्गच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्थाय सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे२ सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंग जणवय मज्झ मज्झेण जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेइ करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दवित्ता एवं वयासी — तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! मम सत्थनिवेसंसि महया २

આહારો તૈયાર થઈ ગયા ત્યારે તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોને આમંત્રિત કર્યાં આમંત્રિત કરીને તેણે બધાને ચારે જાતના આહારો જમાડયા ત્યાર પછી તેણે સૌની પાસેથી પરદેશ જવાની આજ્ઞા માગી આમ તેણે બધાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને ગાડી તેમજ ગાડાઓ જોતરાવ્યા અને ત્યાર પછી તે ચંપા નગરીથી બહાર નીકળ્યો તેણે ઉદ્યાનમાં સાથે જનારા બધા ચરક ગૃહસ્થ વગેરે માણસોને પણ સાથે લઈ લીધા હતા

(निग्गच्छित्ता चरगाय जाव गिहत्था य सद्धिं घेत्तूण णाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे २ सुहेहिं वसहिपायरासेहिं अंग जणवय मज्झं मज्झेण जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोयावेइ, मोयावित्ता सत्थणिवेसं करेइ करित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता

एत्र खलु हे देवानुप्रिया ! 'इमीसे' अस्याः 'अगामियाए' = ग्रामरहितायाः 'छिन्नावायाए' छिन्नपातायाः छिन्न' आपातो = जनगमागमो यत्र सा, तस्या जनसञ्चाररहितायाः 'दीहमद्धाए' दीर्घाध्वाया -दीर्घः=बहुकालगम्यः अध्वा= मार्गो यत्र सा, तस्याः-चिरकालङ्घनीयायाः, एतादृश्या अटव्याः' बहुमध्यदेस-भागे=अतिमध्यभागे, 'एत्थ ण' अत्र खलु बहवो नन्दिफलनामवृक्षाः प्रज्ञप्ताः= लोकैः कथिताः। कीदृशास्ते ? इत्याह-' किण्हा ' इत्यादि=कृष्णाः=कृष्णवर्णाः, कृष्णावभासाः=अतिनीलत्वेन कृष्णवदवभासमानाः यावत्-नीलादिवर्णयुक्ताः,

-सद्देण उग्घोसेमाणा२ एव वयह-एव खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे अगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफलानाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया,पुष्फिया, फलिया हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव२ उवसोभेमाणा चिट्ठति) निकल कर नाति विप्रकृष्ट-यथोचित-मार्गोंमें ठहरता२ और वहां२प्रातः कालीन कलेवा करता हुआ वह जहा अगदेश की सीमा थी वहा पर आया। वहां आकर के उसने अपने शकटी शकटों को ढील दिया और ढील करके फिर अपने सार्थ को ठहरा दिया। ठहरा देने के बाद फिर उसने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-और उनसे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम लोग हमारे सार्थनिवेश में बडे जोर २ से घोषणा करते हुए ऐसा कहो कि-हे देवानुप्रियो ! सुनो जन सचार रहित दीर्घ मार्ग वाली इस आगे की अटवी के मध्यभाग में लोग कहते है कि अनेक नदीफल नाम के

एव वयासी — तुब्भेण देवाणुप्पिया ! मम सत्थ निवेससि महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयह-एव खलु देवाणुप्पिया ! इमीसे अगामियाए छिन्नावायाए दीहमद्धाए, अडवीए बहुमज्झदेसभाए बहवे णदिफलानाम रुक्खा पन्नत्ता किण्हा जाव पत्तिया, पुष्फिया फलिया, हरियगरेरिज्जमाणा सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठति),

ત્યાથી રવાના થઈને તે માર્ગમા યથાસ્થાને નજીક નજીકના સ્થળો ઉપર વિશ્રામ કરતો અને ત્યા સવાર થતા જલપાન (નાસ્તો) વગેરે કરતો તે અગદેશની હદ ઉપર પહોચ્યો ત્યા પહોચીને તેણે ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યા પોતાના સાર્થને રોકયો રોકયા પછી તેણે પોતાના કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમારા સાર્થ સનિવેશમા તમે લોકો મોટેથી આ પ્રમાણેની ઘોષણા કરતા કહો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો ! હવે આગળ આવનાર લાબા માર્ગવાળા નિર્જન વનમા લોકો એમ કહે છે કે તેમા ઘણા નદિફળ

तथा-'पत्तिया' पत्रिता=पत्रबहुला', 'पुप्फिया' पुष्पिता'=पुष्पबहुलाः, 'फलिया' फलिताः=फलबहुला 'हरियगरेरिज्जमाणा' हरितकराराज्यमाना= हरितकेन=हरितवर्णेन भृश शोभमाना 'सिरीए' श्रिया=हरितपल्लवादिशोभया अतीवातीव उपशोभमानास्तिष्ठन्ति=वर्त्तन्ते। पुन कीदृशास्ते 'इत्याह-मनोज्ञा - वर्णेन, 'जाव' यावत्-गन्धेन, रसेन स्पर्शेन, मनोज्ञा^छायया, रम्यवर्णादिना रम्य छायया च युक्ता इत्यर्थ, 'त' तत्=तस्मात् नन्दिवृक्षाणा सौन्दर्यादिकारण- वशात् 'जो ण' यः खलु हे देवानुप्रिया ! तेषा नन्दिफलाना=नन्दिफलाभिधानां वृक्षाणा मूलानि वा कन्दानि वा त्वचो वा, पत्राणि वा, पुष्पाणि वा, फलानि वा, बीजानि वा, हरितानि वा 'आहारेइ' आहारयति, तेषा छायायां वा 'वीसमइ' विश्राम्यति तस्य खलु आवाए' आपाते=पूर्वं भक्षणादि समये 'भद्दए'

वृक्ष हैं। ये वृक्ष कृष्ण वर्णवाले हैं और देखने पर भी अति हरित होने के कारण कृष्ण ही प्रतीत होते हैं। पत्र, पुष्प एव फलों से वे युक्त हैं। वे हरित वर्णसे बडे सुहावने लगते ह। उनके पल्लव आदि सब हरे २ हैं। इससे उन की शोभा बडी नीराली बनी हुई हैं। (मणुण्णा वन्नेण ४ जाव मणुन्ना फासेण मणुन्ना छायाए, त जो ण देवाणुप्पिया! तेसिं नंदिफलाण रुक्खाण मूलाणिवा कद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ अकाले चेव जीवियाओ व वरो- वेंति) वर्ण, रस, गध एव स्पर्श से वे बडे मनोज्ञ हैं। छाया भी उनकी बडी मनोज्ञ है। इस लिये हे देवानुप्रियो! जो कोई इन की सुन्दरता आदि कारण के वशसे आकृष्ट होकर इन नदिफल वृक्षों के मूलों को कदों को छालों को, पत्रों को, फलो को बीजों को अथवा हरित अकुरों

નામે વૃક્ષો છે તે વૃક્ષો કૃષ્ણ વર્ણવાળા છે અને ખૂબજ લીલા હોવાથી કૃષ્ણ વર્ણના જેવા જ લાગે છે પત્રો, પુષ્પો અને ફળોથી તેઓ સમૃદ્ધ છે લીલા છમ હોવાથી તેઓ અત્યત સુદર લાગે છે તેમના પત્રો વગેરે બધા લીલા છે તેથી તેમની શોભા એકદમ અનોખી છે

(मणुण्णा वन्नेण ४ जाव मणुन्ना फासेण मणुन्ना छायाए त जो ण देवाणु- प्पिया ! तेसिं नदिफलाण रुक्खाण मूलाणि वा कद० तय० पत्त० पुप्फ० फल० बीयाणि, वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ तस्स ण आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति)

વર્ણ, રસ, ગધ અને સ્પર્શથી તેઓ ખૂબજ મનોજ્ઞ છે છાયડો પણ તેઓનો અત્યત મનોજ્ઞ છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો! કોઈ પણ માણસ તેમની સુદરતા વગેરે કારણોથી આકર્ષાઈને તે નદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કદોને છાલને પાદડાઓને, પુષ્પોને, બિયાઓને અથવા તો લીલી કૂપળોને ખાશે કે

यूय खलु हे देवानुप्रियाः ! मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन उद्घोषयन्तः२ एवं वदत-" एते खलु हे देवानुप्रियाः ! ते इमो नन्दिफलवृक्षाः यद्र्थे, पूर्वम् पदिष्टम् कृष्णा यावत्-मनोज्ञच्छायया, तद् यो खलु हे देवानुप्रियाः ! एतेषां नन्दिफलानां वृक्षाणा मूलानि वा कन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्वचो वा, पत्राणि वा, फलानि वा, यावत्-तानि मूलकन्दादीनि व जीविताद् व्यपरोपयन्ति, तद् मा खलु यूय ' जाव ' यावत्-तेषा मूलकन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां छायासु विश्राम्यत किन्तु तान दूर-दूरेण=दूरत एव ' परिहरमाणा ' परिहरन्त =वर्जयन्त

तीन वार बुलाया-बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रिया ! तुम मेरे सार्थ निवेश में जाकर जोर २ से ऐसी घोषणा करो-कि हे देवानुप्रियो जिन नदिफल वृक्षों के विषय में पहिले सूचना दी गई है-वे वेही कृष्ण यावत छाया से मनोज्ञ नदिफल वृक्ष है। त जो ण देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाण रुक्खाण मूलाणिवा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, त माण तुब्भे जाव दूरे दूरेण परिहरमाणा वीसमह माण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्च प्पिणंति) इस लिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति इन नदिफलवृक्षोंके मूलोंको, कंदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नही खावे और न वह इनकी छायामे विश्राम ही करे-नहीतो वह अकालमें ही कालकवलित अर्थात् मर जावेगा हो जावेगा। इस लिये इन्हे बहुत दूर छोडकर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

मारा सार्थ निवेशमा जईने मोटेथी तमे आ प्रमाणे घोषणा करो के हे देवानुप्रियो ! जे नदिफळ वृक्षोना विषे पहेला तमने जाण करवामा आवी हती ते एज कृष्ण तेमज छायाथी मनोज्ञ लागता नदिफळ वृक्षो छे

(त जो ण देवाणुप्पिया ! एएसिं णदिफलाण रुक्खाण मूलाणि वा कद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ त माणं तुब्भे जाव दूर दूरेण परिहरमाणा वीसमह, माण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणंति)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારામાથી કોઈ પણ માણસ નદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય નહિ અને તેમની છાયામા પણ વિસામો લે નહિ, નહિતર તે અકાળે જ મૃ[illegible] એટલા [illegible] એમનાથી ખૂબ જ દૂર રહીને વિસામો લેશો [illegible]

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमह' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न खलु यूय जीविताद् व्यपरोपयिष्यध्वे, तथा-अन्येषां वृक्षाणां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति कृत्वा घोषणां घोषयत, यावत्-ते घोषणा घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति। तत्र=खलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थम्=एतदुपदेशं श्रद्दधति, प्रतियन्ति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्दधानाः=श्रद्धाविषयीकुर्वाणाः प्रतियन्त रोचयन्त तेषां नन्दिफलवृक्षाणां मूलादीनि छायां च दूर -दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषां वृक्षाणां मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणां छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होंओगे। तथा इनसे अतिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिकों को खाओ और उनकी छाया में विश्राम करो। इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्हों ने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी। (तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणाइ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेणं परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति) वहां सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाह के इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया। उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई। इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि संपन्न बने हुए उन लोगों ने उन नंदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और इनकी छाया को बहुत दूर से छोडकर अन्य वृक्षों के मूलादि

પણ મુશ્કેલી નડશે નહિ તેમજ આ વૃક્ષો સિવાયના બીજા વૃક્ષો છે, તેમના મૂળ કંદ વગેરે તમે ખાવ અને તેમના છાયડામાં વિશ્રામ કરો. તેઓએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેને ખબર આપી

(तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति, रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणाइ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेणं परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमंति)

ત્યાં સાર્થમાં આવેલા કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહની સૂચના રૂપ આ વાતને સ્વીકારી લીધી અને તેને શ્રદ્ધાની અપેક્ષાએ પોતાના હૃદયમાં સ્થાન આપતાં બરોબર તેની ઉપર પ્રતીતિ કરી લીધી તે લોકોને તે વાત રુચિકર પણ થઈ પડી આ રીતે શ્રદ્ધાયુક્ત થયેલા તે લોકોએ તે નંદિફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરેની અને તેમની છાયાથી ખૂબ જ દૂર રહીને બીજા વૃક્ષોના મૂળ તેમજ કંદ વગેરેને ખાધા તથા તેમની છાયામાં વિસામો લીધો.

यूय खलु हे देवानुप्रिया ! मम सार्थनिवेशे महता-महता शब्देन उद्घोषयन्तः२ एवं वदत-" एते खलु हे देवानुप्रिया ! ते इमे नन्दिफलवृक्षाः यदर्थ, पूर्वं प्रदिष्टम् कृष्णा यावत्-मनोज्ञच्छायया, तत् यो खलु हे देवानुप्रिया ! एतेषां नन्दिफलानां वृक्षाणां मूलानि वा कन्दानि वा पुष्पाणि वा, त्वचो वा, पत्राणि वा, फलानि वा, यावत्-तानि मूलकन्दादीनि न जीविताद् व्यपरोपयन्ति, तत् मा खलु यूय ' जाव ' यावत्-तेषां मूलकन्दादीनि मा आहारयत, मा च तेषां छायासु विश्राम्यत किन्तु तान् दूर-दूरेण=दूरत एव ' परिहरमाणा ' परिहरन्त =वर्जयन्त

तीन बार बुलाया-बुलाकर उसने ऐसा कहा-हे देवानुप्रिया ! तुम मेरे साथ निवेश में जाकर जोर २ से ऐसी घोषणा करो-कि हे देवानुप्रियो जिन नंदिफल वृक्षों के विषय में पहिले सूचना दी गई है-वे यही कृष्ण यावत छाया से मनोज्ञ नदिफल वृक्ष है। त जो णं देवाणुप्पिया ! एएसिं णंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणिवा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ, त माणं तुब्भे जाव दूरं दूरेणं परिहरमाणा वीसमह माणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्च प्पिणाति) इस लिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग में से कोई भी व्यक्ति इन नदिफलवृक्षोंके मूलोंको, कदोंको, पुष्पोंको, छालोंको, फलोंको नहीं खावे और न वह इनकी छायामे विश्राम ही करे-नहीतो वह अकालमें ही कालकवलित अर्थात् मर जावेगा हो जावेगा। इस लिये इन्हे बहुत दूर छोडकर दूसरी जगह तुम लोग विश्राम करो इससे जीवन से रहित

મારા સાર્થ નિવેશમા જઈને મોટેથી તમે આ પ્રમાણે ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! જે નંદિફળ વૃક્ષોના વિષે પહેલા તમને જાણ કરવામા આવી હતી તે એજ કૃષ્ણ તેમજ છાયાથી મનોજ્ઞ લાગતા નંદિફળ વૃક્ષો છે

(त जो ण देवाणुप्पिया ! एएसिं णदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंद० पुप्फ० तय० पत्त० फल जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ , त माणं तुब्भे जाव दूरं दूरेण परिहरमाणा वीसमह,मणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविस्सइ, अन्नेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव वीसमहत्ति कट्टु घोसणं जाव पच्चप्पिणति)

એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમારામાથી કોઈ પણ માણસ નંદિફળ વૃક્ષોના મૂળોને, કંદોને, પુષ્પોને, છાલને, ફળોને ખાય નહિ અને તેમની છાયામા પણ વિસામો લે નહિ, નહિતર તે અકાળે જ મૃ... ...ગે એટલા ...એમનાથી ખૂબ જ દૂર રહીને વિસામો લેશો તેથી

सन्तोऽन्यत्र 'वीसमह' विश्राम्यत=विश्राम कुरुत तेन न खलु यूय जीविताद् व्यपरोपिष्यध्वे, तथा-अ येषा वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयत, छायासु विश्राम्यत" इति कृत्वा घोषणां घोषयत, यावत्-ते घोषणा घोषयित्वा धन्यसार्थवाहाय तदाज्ञा प्रत्यर्पयन्ति। तत्र=खलु सार्थे अप्येके पुरुषा धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थम्=एतदुपदेश श्रद्दधति, प्रतियन्ति-रोचयन्ति, एतमर्थं श्रद्दधानाः=श्रद्धाविषयीकुर्वाणा' प्रतियन्त' रोचयन्त तेषा नन्दिफलवृक्षाणा मूलादीनि छायां च दूर -दूरेण=दूरतएव परिहरन्तः=परिवर्जयन्तोऽन्येषा वृक्षाणा मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, अन्यवृक्षाणा छायासु च विश्राम्यन्ति, तेषां खलु

नहीं होओगे। तथा इनसे अतिरिक्त और जो दूसरे वृक्ष हैं उनके मूलों को यावत् कन्दादिकों को खाओ और उनकी छाया मे विश्राम करो। इस प्रकार की घोषणा कर दो-उन्हों ने धन्य सार्थवाह की आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी उसे खबर भी दे दी। (तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहति, पत्तियंति रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणाइ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमंति) वहां सार्थ में के कितनेक मनुष्यों ने धन्य सार्थवाहके इस सूचना रूप अर्थको स्वीकार कर लिया। उस पर श्रद्धा जमाई उसे अपनी प्रतीति का विषय बनाया तथा उन्हें वह बात अच्छी तरह रुचि कर भी हुई। इसलिये इस बात पर श्रद्धा आदि संपन्न बने हुए उन लोगों ने उन नंदि फल वृक्षों के मूलादिकों को और उनकी छाया को बहुत दूर से छोडकर अन्य वृक्षों के मूलादि

પણ મુરઝેલી નડશે નહિ તેમજ આ વૃક્ષો સિવાયના બીજા વૃક્ષો છે, તેમના મૂળ કંદ વગેરે તમે ખાવ અને તેમના છાયડામા વિશ્રામ કરો. તેઓએ ધન્યસાર્થવાહની આજ્ઞા પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેને ખબર આપી

(तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति, पत्तियंति, रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणाइ तेसिं नंदिफलाणं० दूरं दूरेण परिहरमाणा २ अन्नेसिं रुक्खाण मूलाणि य जाव वीसमंति)

ત્યાં સાર્થમા આવેલા કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહની સૂચના રૂપ આ વાતને સ્વીકારી લીધી અને તેને શ્રદ્ધાની અપેક્ષાએ પોતાના હૃદયમા સ્થાન આપતા બરોબર તેની ઉપર પ્રતીતિ કરી લીધી તે લોકોને તે વાત રુચિકર પણ થઈ પડી આ રીતે શ્રદ્ધાયુક્ત થયેલા તે લોકોએ તે નંદિફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરેથી અને તેમની છાયાથી ખૂબ જ દૂર રહીને બીજા વૃક્ષોના મૂળ તેમજ કંદ વગેરેને ખાધા તથા તેમની છાયામા વિસામો લીધો

भापाते=पूर्वमाहारसमये नो भद्रक भवति=विशिष्टस्वादादिलाभो न भवति किन्तु ततः पश्चाद्=भक्षणक्रियानन्तर परिणम्यमानानि २ रसादिरूपेण परिणतानि मूलकन्दादीनि शुभरूपतया=भद्रकतया भूयो भूय परिणमन्ति ।

अथोपनय दर्शयन् सुधर्मस्वामी माह-' एवामेव ' इत्यादिना । ' एवामेव ' एवमेव=अनेनैव पूर्वोक्तप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः ? योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा ' जाव ' यावत्-आचार्योपाध्यायानामन्तिके मुण्डो भूत्वा प्रव्रजितस्तेषामुपदेशं श्रद्धानः सन् पञ्चसु कामगुणेषु=शब्दादिविषयेषु ' नो सज्जेइ ' नो

कों को यावत् कदों को खाया और उनकी छाया में विश्राम किया। (तेसिं ण आवाए णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणयमाणा २ सुह रूवत्ताए भुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ, नो रज्जेइ, से ण इहभवे चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव वीईवयस्सइ, जहा वा ते पुरिसा) परन्तु इन पुरुषोंको उनके मूलादिकों के खाने के समय विशिष्ट स्वादादि की प्राप्तिरूप भद्रक का लाभ तो नहीं हुआ-किन्तु उसके बाद जब खाये हुए उन मूलादिकों का रसादि रूप से परिणमन हुआ तब उन्हें बार २ शुभ रूप परिणमन होने से आनन्द आया और जीवन सुरक्षित रहा-अब सुधर्मास्वामी इसका उपनय (दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृति में जोडना) दिखलाते हुए कहते हैं कि इसी तरह से हे आयुष्मन्त श्रमणो। जो हमारे निर्ग्रन्थ श्रमण एवं श्रमणियाजन हैं वे आचार्य उपाध्यायके पास मुंडित होकर दीक्षित हो जाते हैं और उनके उपदेश को श्रद्धा आदि का विषयभूत

(तेसिं ण आवाए णो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा २ सुहरूवत्ताए भुज्जो २ परिणमति, एवामेव समणाउसो जो अम्ह निग्गथो वा निग्गथी वा जाव पचसु कामगुणेसु नो सज्जेइ, नो रज्जेइ से ण इहभवे चेव बहूण समणाण४ अच्चणिज्जे परलोए नो आगच्छइ, जाव वीइवयस्सइ जहा वा ते पुरिसा)

તે માણસોને વૃક્ષોના મૂળ કંદ વગેરે ખાતી વખતે સવિશેષ સ્વાદ વગેરેની અનુભૂતિ તો થઈ શકી નહિ પણ ખાધા પછી તે મૂળ કંદ રસ વગેરે રૂપમાં પરિણત થયા ત્યારે તેમને સુખ મળ્યું અને સાથે સાથે તેમના જીવન પણ સુરક્ષિત રહ્યા સુધર્મા સ્વામી હવે એજ વાતને દૃષ્ટાન્તના રૂપમાં સ્પષ્ટ કરતા કહે છે કે હે આયુષ્મંત શ્રમણો ! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ, આચાર્ય તેમજ ઉપાધ્યાયની પાસે મુંડિત થઈને,

स्वजते=आसक्तो भवति, 'नो रज्जेइ' नो रज्यते नो अनुरक्तो भवति स खलु इह भवएव बहूना श्रमणाना श्रमणीना बहूना साधूना साध्वीना मध्ये-अर्चनीय'= माननीयः सन् परलोके=भवान्तरे नो आगच्छति=जन्म न प्राप्नोति किन्तु-यावत्-अस्मिन्नेव भवे चातुरन्तसंसारकान्तार व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, मोक्ष प्राप्स्यतीत्यर्थः 'जहा वा ते पुरिसा' यथा वा ते पुरुषाः-यथा वा=येन प्रकारेण धन्यसार्थवाहोपदेशश्रद्धया ते=नन्दिफलवृक्षमूलकन्दादि परिवर्जनेन तत्कथनानुसारसमाचरणशीलाः पुरुषाः=सार्थपुरुषाः सुखपूर्वकमहिच्छत्रा नगरीं प्राप्स्यन्ति तथेत्यर्थः। अथ श्रद्धा रहितान् वर्णयति-'तत्थ ण' इत्यादि। तत्र खलु सार्थे अप्येकेऽन्ये केचित् पुरुषाः धन्यस्य सार्थवाहस्य एतमर्थं=नन्दिफलभक्षणादि निषेधरूप

बनाते हुए पाच काम गुणों में-शब्दादि विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं अनुरक्त नहीं बनते हैं वे इस भवमें ही अनेक साधु और साध्वियों के बीचमें माननीय होते हुए परलोक में जन्म से रहित हो जाते हैं-अर्थात् पुन उन्हें जन्म धारण नही करना पडता है। कारण वे इसी भव में चतुर्गति रूप इस संसार कान्तार को पार करने वाले बन जाते हैं-उन्हें मोक्ष प्राप्त हो जावेगा ऐसे वे तैयार हो जाते हैं। जिस प्रकार धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा करने से ये सार्थ के कितनेक पुरुष नदि वृक्षों के मूलकंदादिकों का परिहार-त्याग करते हुए और उसके कथनानुसार अपना आचरण बनाते हुए सकुशल अहिच्छत्रा नगरी को प्राप्त कर लेंगे ऐसे बन गये। अब जिन्होंने धन्य सार्थवाहके वचनों पर श्रद्धा नही की-उनकी क्या दशा हुई इस बात का वर्णन सूत्रकार करते हैं-(तत्थ ण अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एय-

---

યુક્ત થઈને પાચ કામ ગુણોમા શબ્દાદિ વિષયોમા-અનાસક્ત રહે છે એટલે કે અનુરક્ત થતા નથી, તેઓ આ ભવમા જ ઘણા સાધુઓ તેમજ સાધ્વીઓની વચ્ચે સન્માનનીય થતા પરલોકમાં જન્મરહિત થઈ જાય છે એટલે કે ફરી તેઓનો જન્મ થતો નથી કેમકે તેઓ આ ભવમા જ ચતુર્ગતિ રૂપ આ સસાર કાંતારને પાર કરવા લાયક સામર્થ્ય મેળવી લે છે તેઓ મોક્ષ મેળવવા યોગ્ય થઇ જાય છે, જેમ ધન્યસાર્થવાહના ઉપદેશ ઉપર શ્રદ્ધા મૂકીને સાર્થના કેટલાક પુરૂષોએ નદિ વૃક્ષોના મૂળ કદ વગેરેને ત્યજીને તેની સૂચના મુજબ આચરણ કરતા અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચી શકે તેવા થઈ ગયા હવે જે પુરૂષોએ ધન્યસાર્થવાહની વાત ઉપર શ્રદ્ધા મૂકી નહિ તેઓની શી હાલત થઈ તેનુ વર્ણન કરતા સૂત્રકાર કહે છે—

(तत्थण अप्पेगइया पुरिसा धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ नो सद्दहति ३

नो श्रद्दधति नो रोचयन्ति नो प्रतियन्ति। ये धन्यस्य-एतमर्थम् अश्रद्दधाना अरोच यन्तः, अप्रतियन्त यत्रैव नन्दिफला वृक्षास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषां नन्दि फलाना मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, तथा छायासु च विश्राम्यन्ति तेषां खलु आपाते=पूर्व फलभक्षणादिसमये भद्रक भवति=सुखस्वादादिलाभोभवति किन्तु 'तओ पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तर परिणम्यमाना =रसादिरूपेण

मद्द नो सद्दहंति ३ धण्णस्स एयमट्ठ असद्दहमाणा ३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा) वहां पर कितनेक पुरुषों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को कि नंदिफल वृक्षों के कंदमूलादि नहीं खाना चाहिये और न उनकी छायामें ही विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति का विषय नही बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्रद्धेय आदि मानकर जहा पर नंदिफल वृक्ष थे- वहां गये वहा जाकर उन्होंने उनके मूल कंदादि कों को खाया उनकी छाया में विश्राम किया उस समय उन्हें बड़ा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला -किन्तु जब उनका परिपाक काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धण्णस्स एयमट्ठ असद्दहमाणा ३ जेणेव ते णंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाण मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए, भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो। जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

त्यां केटलाक माणुसोए धन्यसार्थवाहना नंदिफळ वृक्षोना कंदमूळो वगेरे खावा जोईए नहि तेमज ते वृक्षोनी छायामा पण विसामो लेवो नहि आ जातना कथन प्रत्ये श्रद्धावान थया नथी, तेना उपर विश्वास मूक्यो नहि अने प्रतीतिपूर्वक तेमा पोतानी अभिरुची बतावी नहि ते माणुसो धन्यसार्थवाहना कथन अश्रद्धेय मानीने ज्या नंदिफळ वृक्षो हता त्या गया त्या जईने तेमणे तेमना मूळ कंद वगेरे खाधा अने तेमना छायडामा विसामो लीधो ते समये तो तेमने खूब ज आनंद प्राप्त थयो, फळोना स्वादमा अपूर्व सुख मळ्यु, पण ज्यारे तेओनी पाचन क्रिया थवा माडी, एटले के खाधे[illegible] वगेरे

परिणाम प्राप्नुवन्त. सन्तः कन्दादय यावत्-तान् जीवितात् व्यपरोपयन्ति। 'एवमेव' एवमेव=अनेनैव प्रकारेण हे आयुष्मन्त' श्रमणाः योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा यावत् प्रव्रजितः सन पञ्चसु कामगुणेषु=शब्दादिकामभोगेषु स्वजते, रज्यते-कामभोगासक्तो भवति यावत्-स खलु इहभवे बहूना श्रमण-श्रमणीना, बहूना श्रावकश्राविकाना मध्ये हिल्नीयो, निन्दनीय', खिंसनीयो भवति, परलोके=च भवान्तरे चातुरन्तससारकान्तारम् अनुपर्यटिष्यति चातुर्गतिकससार एव स्थास्यति न तु मोक्ष प्राप्स्यतीत्यर्थं । येन प्रकारेण ते=धन्योपदेशमश्रद्दधानाः पुरुषाः=सार्थस्थिता जना नन्दिफलवृक्षमूलकन्दादिभक्षणेन तत्रैव म्रियन्ते नतु-अहिच्छत्रां नगरीं प्राप्नुवन्तीति भावः ॥ सू०३ ॥

मूलम्—तएण से धण्णे सत्थवाहे सगडीसागड जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ उवा-

रसादिरूप से परिमने लगे-तब वे सब अपने२ जीवन से रहित हो गये -मर गये-। इसी तरह हे आयुष्मत श्रमणो। जो हमारा निर्ग्रन्थ व निर्ग्रन्थी साध्वीजन यावत प्रव्रजित होकर पचकाम गुणो मे-पचइन्द्रियों के शब्दादि विषयों मे-आसक्त बन जाता है-अनुरक्त हो जाता है, वह इस भवमें अनेक श्रमण श्रमणियोंके बीच हीलनीय, निंदनीय एव खिंसनीय होता है एव वह भवान्तर में भी इस चतुर्गति रूप ससार कान्तार में ही घूमता रहेगा-मोक्ष प्राप्त नही करेगा। जिस प्रकार धन्य सार्थवाह के उपदेश पर श्रद्धा नही करने वाले सार्थ के ये कितनेक पुरुष नदिफल वृक्षों के मूलादि के खाने से वहीं पर मर गये-अहिच्छत्र नगरी नहीं जा सके ॥ सू० ३ ॥

રસ વગેરે રૂપમા પરિણત થવા લાગ્યા ત્યારે તેઓ બધા નિર્જીવ થઈ ગયા, મૃત્યુ પામ્યા આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રથ સાધુઓ કે નિર્ગ્રથ સધ્વિઓ પ્રવ્રજીત થઈને પાચ કામ ગુણોમા અર્થાત્ પાચે ઇન્દ્રિયોના શબ્દાદિ વિષયોમા આસક્ત થઇ પડે છે-એટલે કે અનુરક્ત થઇ જાય છે, તે આ ભવમા ઘણા શ્રમણો અને ઘણી શ્રમણીઓની વચ્ચે હીલનીય, નિંદનીય, અને ખિંસનીય હોય છે અને બીજા ભવમા પણ-આ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર-કાંતારમા જ ભ્રમણ કરતો રહેશે તેને મોક્ષ પ્રાપ્ત થશે નહિ ધન્યસાર્થવાહના ઉપદેશને શ્રદ્ધેય ન માનનારા કેટલાક માણસો જેમ નદિ ફળ વૃક્ષોના મૂળ વગેરે ખાઇને ત્યાને ત્યાજ મરણ પામ્યા, અહિચ્છત્રા નગરીમા પહોચી શકયા નહિ, તેમજ તેઓની પણ સ્થિતિ થાય છે ॥ સૂ ૩ ॥

नो श्रद्दधति नो रोचयन्ति नो प्रतियन्ति। ते धन्यस्य-एतमर्थम् अश्रद्दधाना अरोचयन्तः, अप्रतियन्त यत्रैव नन्दिफला वृक्षास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तेषां नन्दिफलाना मूलानि च यावत्-कन्दादीनि आहारयन्ति, तेषां छायासु च विश्राम्यन्ति तेषां खलु आपाते=पूर्वं फलभक्षणादिसमये भद्रक भवति=शुभस्वादादिलाभो भवति किन्तु 'तओ पच्छा' ततः पश्चात्=फलभक्षणाद्यनन्तरं परिणम्यमाना =रसादिरूपेण

मट्ठ नो सद्दहंति ३ धण्णस्स एयमट्ठ असद्दहमाणा ३ जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहा वा ते पुरिसा) वहां पर कितनेक पुरुषों ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को कि नंदिफल वृक्षों के कंदमूलादि नहीं खाना चाहिये और न उनकी छायामें ही विश्राम करना चाहिये श्रद्धाकी दृष्टिसे नहीं देखा उस पर अपनी श्रद्धा नहीं जमाई, उसे अपनी रुचि का प्रतीति का विषय नहीं बनाया-वे पुरुष- धन्यसार्थवाह के इस कथन को अश्रद्धेय आदि मानकर जहां पर नंदिफल वृक्ष थे- वहां गये वहां जाकर उन्होंने उनके मूल कंदादि कों को खाया उनकी छाया मे विश्राम किया उस समय उन्हें बड़ा आनन्द आया- स्वाद जन्य कोई अपूर्व सुख मिला -किन्तु जब उनका परिपाक काल आया जब वे खाये हुए मूलकन्दादि

धण्णस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा ३ जेणेव ते णंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाण मूलाणि य जाव वीसमंति, तेसि णं आवाए भद्दए, भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा जाव ववरोवेंति एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा जाव पव्वइए पंचसु कामगुणेसु सज्जेइ, सज्जित्ता जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा वा ते पुरिसा)

ત્યાં કેટલાક માણસોએ ધન્યસાર્થવાહના નંદિફળ વૃક્ષોના કંદમૂળો વગેરે ખાવા જોઈએ નહિ તેમજ તે વૃક્ષોની છાયામાં પણ વિસામો લેવો નહિ આ જાતના કથન પ્રત્યે શ્રદ્ધાવાન થયા નથી, તેના ઉપર વિશ્વાસ મૂક્યો નહિ અને પ્રતીતિપૂર્વક તેમાં પોતાની અભિરૂચી બતાવી નહિ તે માણસો ધન્યસાર્થવાહના કથન અશ્રદ્ધેય માનીને જ્યાં નંદિફળ વૃક્ષો હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે તેમના મૂળ કંદ વગેરે ખાધા અને તેમના છાયડામાં વિસામો લીધો તે સમયે તો તેમને ખૂબ જ આનંદ પ્રાપ્ત થયો, ફળોના સ્વાદમાં અપૂર્વ સુખ મળ્યું, પણ જ્યારે તેઓની પાચન ક્રિયા થવા માંડી, એટલે કે ખા[illegible] વગેરે,

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा यत्रैवाहिच्छत्रा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्राया नगर्या बहिः अग्रोद्याने=मुख्योद्याने सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा शकटीशाकटं मोचयति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः 'महत्थं' महार्थं=महाप्रयोजनं, 'महग्घं' महार्घं=महामूल्यं, 'महरिहं' महार्हं=महतां योग्यं 'रायरिहं' राजार्हं=राजयोग्यं प्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्द्धं संपरिवृत अहिच्छत्रां नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतुः राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करयल जाव वद्धावेइ' करतल यावद् वर्धयति-कर-

'तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाहने (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ) वहां से अपने गाडी और गाडों को जुतवाया और जुतवा कर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया। (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया। वहां पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान बगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया। (करित्ता सगडी सागडं मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाडी और गाडों को ढील दिया। (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (से धण्णे सत्थवाहे) તે ધન્યસાર્થવાહે (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ) ત્યાંથી પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને જોતરાવીને જે તરફ અહિચ્છત્રા નગરી હતી તે દિશા તરફ રવાના થયો. (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ) અને ધીમે ધીમે અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચી ગયો. ત્યાં પહોંચીને તેણે નગરીની બહાર આવેલા પ્રધાન ઉદ્યાનમાં પોતાના સાર્થનો મુકામ નાખ્યો (करित्ता सगडीसागडं मोयावेइ) અને ત્યાં જ પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને છોડાવી નાખ્યા.

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायरिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

गच्छित्ता अहिच्छत्ताए णयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ करित्ता सगडीसागड मोयावेइ, तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थं३ रायरिहं पाहुड गेण्हइ गेण्हित्ता बहुहि पुरिसेहिं सद्धि संपरिवुडे अहिच्छत्त नयरिं मज्झ मज्झेणं अणुप्पविसइ अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता तं महत्थ३ पाहुड उवणेइ, तएण से कणगकेऊ, राया हट्ठतुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स तं महत्थ३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्ण सत्थवाह सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्क वियरइ २ पडिविसज्जेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे भडविणिमयं करेइ करित्ता पडिभड गेण्हइ गेण्हित्ता सुहसुहेण जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता मित्तनाइ०अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइ कामभोगाइं भुजमाणे विहरइ, तेण कालेण तेणं समएण थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मे सोच्चा जेट्ठपुत्ते कुडुबे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ पाउणित्ता मासियाए सं० अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अतं करेहिइ। एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ४ ॥

॥ पन्नरसमं नायज्झयण समत्त ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः शकटीशाकटं योजयति, योजयित्वा यत्रैवाहिच्छत्रा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अहिच्छत्रायां नगर्यां बहिः अग्रोद्याने=मुख्योद्याने सार्थनिवेशं करोति, कृत्वा शकटीशाकटं मोचयति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः 'महत्थं' महार्थं=महाप्रयोजनकं 'महग्घं' महार्घं=महामूल्यं, 'महरिहं' महार्हं=महतां योग्यं 'रायरिहं' राजार्हं=राजयोग्यं प्राभृतं गृह्णाति, गृहीत्वा बहुभिः पुरुषैः सार्द्धं संपरिवृतः अहिच्छत्रां नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करयल जाव वद्धावेइ' करतल यावद् वर्धयति–कर-

'तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि॥

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से धण्णे सत्थवाहे) उस धन्यसार्थवाहने (सगडी सागड जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ) वहा से अपने गाडी और गाडो को जुतवाया और जुतवाकर जहां अहिच्छत्रा नगरी थी उस ओर चल दिया। (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) धीरे धीरे अहिच्छत्रा नगरी में वह पहुँच गया। वहा पहुँच कर उसने बाहर रहे हुए प्रधान बगीचे में अपने सार्थ को ठहरा दिया। (करित्ता सगडी सागड मोयावेइ) और वहीं पर अपनी गाडी और गाडों को ढील दिया। (तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थं ३ रायारिहं पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेण अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवाग

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ–(तएण) त्यारબાદ (से धण्णे सत्थवाहे) ते धन्यसार्थवाहे (सगडी सागडं जोयावेइ जोयावित्ता जेणेव अहिच्छत्ता णयरी तेणेव उवागच्छइ) ત્યાંથી પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને જોતરાવીને જે તરફ અહિચ્છત્રા નગરી હતી તે દિશા તરફ રવાના થયો. (उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेस करेइ) અને ધીમે ધીમે અહિચ્છત્રા નગરીમાં પહોંચી ગયો. ત્યાં પહોંચીને તેણે નગરીની બહાર આવેલા પ્રધાન ઉદ્યાનમાં પોતાના સાર્થનો મુકામ નાખ્યો. (करित्ता सगडीसागड मोयावेइ) અને ત્યાં જ પોતાની ગાડીઓ અને ગાડાઓને છોડાવી નાખ્યાં.

(तएण से धण्णे सत्थवाहे महत्थ ३ रायरिहं पाहुड गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता

तत्परिगृहीत शिरआवर्त मस्तके अञ्जलिं कृत्वा राजानं जयविजयशब्देन वर्द्धयति, वर्द्धयित्वा तन्महार्थं महार्घं महार्हं प्राभृतम् उपनयति=राज्ञः समीपे स्थापयति। ततः खलु स कनककेतू राजा हृष्टतुष्टहृदयो हर्षवशविसर्पद्धृदयो धन्यस्य सार्थवाहस्य तन्महार्थं ३ यावत् प्राभृतं 'पडिच्छइ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति, प्रतीष्य धन्य सार्थवाह सत्कारयति सम्मानयति, स कृत्य सम्मान्य तस्मै 'उस्सुक' उच्छुल्क=शुल्करहितपत्र 'केनापि राजपुरुषेणास्मात्करो न ग्राह्यः' इत्येतद्रूपमाज्ञापत्र वितरति=ददाति, वितीर्य त प्रतिविसर्जयति।

च्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता त महत्थ ३ पाहुडं उवणेइ) इस के बाद उस धन्य सार्थवाह ने महार्थ साधक, महामूल्य एव महा पुरुषों के योग्य-प्राभृत-भेट को साथ में लिया, और लेकर अनेक पुरुषो के साथ २ अहिच्छत्रा नगरी में बीच से होता हुआ प्रविष्ट हुआ। नगरी में प्रविष्ट होकर वह जहा कनक केतु राजा थे वहा गया वहां जाकर उसने राजा को दोनों हाथ जोड कर नमस्कार किया, और जय विजय शब्दो को उच्चारण करते हुए उन्हें बधाई दी। बधाई देकर उसने फिर राजा के समक्ष अपनी भेट रखदी। (तएण से कणगकेऊ राया हट्ठ तुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स त महत्थ ३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्ण सत्थवाह सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्क वियरइ २ पडिविसज्जेइ) कनककेतु राजाने हर्षित एव सतुष्ट होकर धन्यसार्थवाह की उस महार्थ साधक महामूल्य राज योग्य भेट

जेणेव कणगकेउ राया तणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेइ, वद्धावित्ता त महत्थ३ पाहुड उवणेइ)

ત્યારપછી તે ધન્યસાર્થવાહે મહાર્થ સાધક બહુ કિમતી અને મહા પુરુષોને યોગ્ય ભેટ સાથે લઇને ઘણા માણસોની સાથે અહિચ્છત્રા નગરીની વચ્ચેના માર્ગે (રાજમાર્ગ) થઇને નગરીમા પ્રવિષ્ટ થયો. નગરીમા પ્રવેશીને તે જ્યા કનકકેતુ રાજા હતા ત્યા ગયો. ત્યા જઇને તેણે રાજાને બન્ને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા અને જય વિજય શબ્દો ઉચ્ચારણ કરતા તેમને વધાઈ આપી વધાઈ આપ્યા પછી તેણે રાજાની સામે પોતાની ભેટ મૂકી દીધી

(तएण से कणगकेऊ राया हट्ठ तुट्ठ० धण्णस्स सत्थवाहस्स त महत्थ ३ जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता धण्ण सत्थवाह सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता उस्सुक्क वियरइ २ पडिविसज्जेइ)

કનકકેતુ રાજાએ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઇને મહાર્થ સાધક મહામૂલ્ય વાળી અને રાજાઓને માટે યોગ્ય ભેટ સ્વીકારી લીધી સ્વીકા- બાદ

ततः खलु स धन्य सार्थवाहस्तत्र 'भडविणिमय' भाण्डविनिमय=भाण्डानां= क्रयाणकवस्तूनां विनिमयम्=आदानप्रदानं करोति, कृत्वा 'पडिभड' प्रतिभाण्ड= विनिमयेन प्राप्त वस्तुजात गृह्णाति, गृहीत्वा शकटीशाकटे भरति भृत्वा शकटीशाकट योजयति, योजयित्वा सुखं=सुखेन=सुखपूर्वक यत्रैव चम्पानगरी=स्वनिवासस्थानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धि परिजनै सह 'अभिसमन्नागए' अभिसमन्वागत =समिल्तिो विपुलान् मानुष्यकान् कामभोगान् भुञ्जानो विहरति।

को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्हों ने धन्यसार्थवाह का सत्कार एवं सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके "किसी भी राज पुरुष को इन से कर नहीं लेना चाहिये इस प्रकार का शुल्क भाव विषयक आज्ञा पत्र" उसके लिये प्रदान किया और प्रदान करके बाद में उसे वहां से विदा कर दिया। (तंएण से धण्णे सत्थवाहे भंडवि- णिमयं करेइ, करित्ता पडिभड गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहं सुहेण जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद धन्यसार्थवाह ने वहां रह कर अपनी क्रयाणक वस्तुओं का विक्रय किया और उससे प्राप्त द्रव्य से और दूसरी वस्तुओ को खरीदा। खरीद कर उसने उन्हें गाडी और गाडों में भरा भरकर उन्हें जुनवाया और जुनवाकर फिर वह वहां से चपानगरी की ओर वापिस चल दिया। (उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अ भिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइ कामभोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

તેમણે ધન્યસાર્થવાહનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કરીને રાજાએ 'કોઇપણ રાજપુરૂષ તેમની પાસેથી રાજકર લે નહિ' તે પ્રમા- ણેની વ્યવસ્થા કરતા તેમને શુલ્ક માફીનુ આજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યુ ત્યારપછી તેને ત્યાથી જવાની આજ્ઞા આપી

(तएण से धण्णे सत्थवाहे भंडविणिमय करेइ, करित्ता पडिभड गेण्हइ, गेण्हित्ता सुह सुहेण जेणेव चपानयरी तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારબાદ ધન્યસાર્થવાહે ત્યા રહીને પોતાની ક્રયાણક વસ્તુઓને વેચી અને તેનાથી જે ધન મળ્યુ તેનાથી બીજી વસ્તુઓ ખરીદી લીધી વસ્તુઓની ખરીદ કરીને તેણે બધી વસ્તુઓની ખરીદી કરીને તેણે બધી વસ્તુઓને ગાડી તેમજ ગાડાઓમા ભરી અને ત્યારપછી ગાડી અને ગાડાઓને જોતરાવીને ત્યાથી ચપા નગરી તરફ પાછો રવાના થયો

(उवागच्छित्ता मित्तनाइ० अभिसमन्नागए विउलाइं माणुस्सगाइं काम भोगाइं भुंजमाणे विहरइ)

तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरागमनम्। धन्यः सार्थवाहो धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा प्रव्रजितः, सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीते। बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया ऽऽत्मानं जुष्ट्वा षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्वा कालमासे कालं कृत्वा-

---

चपानगरी में आकर वह अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनों से मिला और विपुल मनुष्य भव सबन्धी काम भोगों को भोगने लगा (तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठ पुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारस अगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ। एव खलु जबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उसी काल और उसी समय में वहा पर स्थविरों का आगमन हुआ। धन्यसार्थवाह ने उनसे धर्म का व्याख्यान सुना सुनकर वह प्रतिबुद्ध हो गया और प्रतिबुद्ध हो करके फिर वह कुटुब में अपने ज्येष्ठ पुत्र को रखकर दीक्षित होकरके उसने सामायिक आदि ग्यारह अगोंका अध्ययन किया। अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर १ मास की सलेखना से ६० भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके काल अवसर काल करके देव

ચપા નગરીમા આવીને તે પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવવા લાગ્યો

(तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठ पुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए सलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव अंतं करेहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि) તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમા સ્થવિરો પધાર્યા ધન્યસાર્થવાહે તેઓના મુખથી ધર્મનુ વ્યાખ્યાન સાભળ્યુ અને સાભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો. પ્રતિબુદ્ધ થઈને તેણે પોતાના કુટુબના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રનીનીમણુક કરીને દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા ગ્રહણ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અ ગોનુ અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનુ પાલન કરીને એક માસની સ લેખનાથી ૬૦ ભક્તોનુ અનશન વડે છેદન કરીને વખતે

अन्यतरेषु देवलोकेषु 'देवत्ताए' देवतया=देवत्वेन उपपन्नः। महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत्-सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति। एवं खलु हे जम्बू! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्-सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन पञ्चदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि व्याख्या पूर्ववत् ॥सू०४॥

इति श्री विश्वविख्यात – जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक –प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां पञ्चदशमध्ययनं समाप्तम् ॥ १५ ॥

लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हो गया। महाविदेह क्षेत्र से यह सिद्ध अवस्था को प्राप्त करेगा–यावत् समस्त दुःखों का अन्त करने वाला होगा इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धगति नाम के स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस पन्द्रहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त भाव प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उनके मुख से सुना है सो यह वैसा तुमसे कहा है ॥ सू० ४ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराजकृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका पन्द्रहवां अध्ययन समाप्त ॥ १५॥

કાળ કરીને દેવલોકમાં દેવના પર્યાયથી જન્મ પામ્યો મહાવિદેહ ક્ષેત્રથી તે સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત્ બધા દુ ખોનો તે અન્ત કરનાર થશે આ રીતે હે જમ્બૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓએ સિદ્ધિગતિ નામના સ્થાનને મેળવી લીધું છે–આ પંદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત ભાવ નિરૂપિત કર્યો છે મેં જે પ્રમાણે તેઓશ્રીના મુખથી સાંભળ્યું છે તે પ્રમાણે જ તમારી આગળ રજુ કર્યું છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥

જૈનાચાર્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાધ્યયન સૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું પંદરમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥૧૫॥

तस्मिन् काले तस्मिन् समये स्थविरागमनम् । धन्यः सार्थवाहो धर्मं श्रुत्वा प्रतिबुद्धः सन् ज्येष्ठपुत्रं कुटुम्बे स्थापयित्वा प्रव्रजितः, सामायिकादीनि एकादशाङ्गान्यधीते । बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा मासिक्या संलेखनया ऽऽत्मानं जुष्ट्वा षष्टिं भक्तानि अनशनेन छित्वा कालमासे कालं कृत्वा-

चंपानगरी में आकर वह अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबन्धी परिजनों से मिला और विपुल मनुष्य भव संबन्धी काम भोगों को भोगने लगा (तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं, धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठ पुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव अंतं करेहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उसी काल और उसी समय में वहां पर स्थविरों का आगमन हुआ। धन्यसार्थवाह ने उनसे धर्म का व्याख्यान सुना सुनकर वह प्रतिबुद्ध हो गया और प्रतिबुद्ध हो करके फिर वह कुटुंब में अपने ज्येष्ठ पुत्र को रखकर दीक्षित होकरके उसने सामायिक आदि ग्यारह अंगोका अध्ययन किया। अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर १ मास की संलेखना से ६० भक्तों का अनशन द्वारा छेदन करके काल अवसर काल करके देव

ચંપા નગરીમાં આવીને તે પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને મળ્યો અને વિપુલ મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવવા લાગ્યો

(तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं धण्णे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठ पुत्तं कुडुंबे ठवेत्ता पव्वइए, सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अन्नतरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववन्ने महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव अंतं करेहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पन्नरसमस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि)

તે કાળે અને તે સમયે તે નગરીમાં સ્થવિરો પધાર્યા ધન્યસાર્થવાહે તેઓના મુખથી ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળ્યું અને સાંભળીને તેને પ્રતિબોધ થયો. પ્રતિબુદ્ધ થઈને તેણે પોતાના કુટુંબના વડા તરીકે પોતાના મોટા પુત્રનીનીમણૂક કરીને દીક્ષા ગ્રહણ કરી દીક્ષા ગ્રહણ કર્યા બાદ તેણે સામાયિક વગેરે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કર્યું અને ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને એક માસની સંલેખનાથી ૬૦ ભક્તોનું અનશન વડે છેદન કરીને વખતે

सुकुमाल जाव तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ ५, विपुले माणुस्सए जाव विहरंति । तएण तेसिं माहणाण अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था, एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले धणे जाव सावतेज्जे अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवसाओ पकाम दाउं पकाम भोत्तु पकामं परिभाएउं त सेय खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विउल असण पाण खाइम साइमं उवक्खडाविउ उवक्डावित्ता परिभुजमाणाणं विहरित्तए, अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विपुल असण४ उवक्खडावेंति, उवक्खडावित्ता परिभुजमाणा विहरंति, तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था, तएण सा नागसिरी विपुल असणं४ उवक्खडेत्ति उवक्खडित्ता एगं महं सालइय तित्तालाउय बहुसभारसंजुत्तं णेहावगाढ उवक्खडेइ उवक्खडित्ता एग बिंदुय करयलसि आसाएइ आसाइत्ता त खारं कडुयं अक्खज्ज अभोज्ज विसब्भूय जाणित्ता एवं वयासी—धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए अपुन्नाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिबोलियाए जीएणं मए सालइए बहुसंभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए, सुबहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए, तं जइणं ममं जाउयाओ जाणिस्सति तो णं मम खिसिस्सति त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेय एयं साल-

॥ अथ षोडशाध्ययनं प्रारभ्यते ॥

उक्त पञ्चदशाध्ययनम्, तत्र विषयसङ्गोऽनर्थस्य कारणमित्युपदिष्टम् इह षोड शाध्ययने तु तद्विषयनिदानमनर्थस्य मूल भवतीत्युच्यते, इत्येव सम्बन्धेन प्रसङ्गतः प्राप्तस्यास्याध्ययनस्य प्रथम सूत्रमाह—'जइण भते !' इत्यादि ।

मूलम्—जइ णं भते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोल-समस्स णं भते णायज्झयणस्स णं समणेण भगवया महा-वीरेण जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएण चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे होत्था, तत्थ णं चंपा नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा—सोमे सोमदत्ते सोमभूई, अड्ढा जाव अपरिभूया रिउव्वेय जाव सुपरिनिट्ठिया, तेसिं ण माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, त जहा-नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी

सोलहवा अध्यन प्रारभ

पन्द्रहवा अध्यन समाप्त हो चुका—अब सोलहवा अध्यन प्रारभ होता है । पंद्रहवे अध्यन में विषयसंघ अनर्थ का कारण कहा गया है—अब सोलहवे अध्यन में विषय निदान अनर्थ का कारण होता है यह स्पष्ट किया जायगा । इस संबन्ध से आया हुआ इस अध्ययन का यह प्रथम सूत्र है 'जइण भते ।' इत्यादि ।

સોળમુ અધ્યયન પ્રારંભ

પંદરમુ અધ્યયન પુરૂ થાય છે હવે સોળમુ અધ્યયન પ્રારભ થાય છે પંદરમા અધ્યયનમા વિષયસંગને અનર્થનુ કારણુ બતાવવામા આવ્યુ છે હવે સોળમા અધ્યયનમા વિષય-નિદાન અનર્થનુ કારણુ હોય છે, આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવશે આ વિષયને લગતુ આ અધ્યયનનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—

जइण भते इत्यादि—

श्रीसुधर्मास्वामी कथयति-' एवं खलु जंबू ' इत्यादि । एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये चम्पा नाम नगरी आसीत्, तस्याः खलु चम्पाया नगर्या बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे सुभूमिभागनामकमुद्यानमासीत्, तत्र खलु चम्पाया नगर्यां त्रयो ब्राह्मणा भ्रातरः परिवसन्ति. तद् यथा-(१) सोम., (२) सोमदत्त., (३) सोमभूतिः, ते किं भूताः-आढ्याः=धनवन्त' यावद्-अपरिभूता., तथा-' रिउव्वेय जाव ' ऋग्वेद-यजुर्वेदसामवेदाथर्ववेदेषु साङ्गोपाङ्गेषु सुपरिनिष्ठिता. । तेषां खलु ब्राह्मणाना तिस्रोभार्या आसन्, तद् यथा-(१) नागश्रीः,

---

सोलहवे ज्ञाताध्ययन का ह भदंत ? उन्ही श्रमण भगवान महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार के जंबू स्वामी के प्रश्नका उत्तर देते हुए सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जंबू ! (तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चंपाए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सुभूमिभागे उज्जाणे, होत्था, तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसंति) उस काल और उस समय मे चंपा नामकी नगरी थी । उस चंपा के बाहिर ईशान कोण मे सुभूमि भाग नाम का उद्यान था । उसी चंपा नगरी मे तीन ब्राह्मण भाइ रहते थे (तं जहा) उनके नाम ये हैं-(सोमे सोमदत्ते सोमभूई) सोम, सोमदत्त, और सोमभूति (अड्ढा जाव अपरिभूया) ये सब धन धान्यादि संपन्न एवं जन मान्य (रिउव्वेय, जाव सुपरिनिट्ठिया) ये सबके सब ऋग्वेद आदि चारों वेदों

મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધિગતિ મેળવી ચૂકયા છે-સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનને। શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ? આ રીતે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને સુધર્મા સ્વામી તેમને ઉત્તર આપતા કહે છે કે હે જંબૂ !

(तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था, तीसेणं चंपाए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए सभूमिभागे उज्जाणे, होत्था तत्थ णं नयरीए तओ माहणा भायरा परिवसंति)

તે કાળે અને તે સમયે ચંપા નામે નગરી હતી તે ચંપા નગરીની બહાર ઇશાન કોણમાં સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું તે ચંપા નગરીમાં ત્રણ બ્રાહ્મણ ભાઇઓ રહેતા હતા (तंजहा) તેમના નામ આ પ્રમાણે છે-(सोमे सोमदत्ते सोमभूई) સોમ, સોમદત્ત, અને સોમભૂતિ (अड्ढा जाव अपरिभूया) તેઓ ત્રણે ધનધાન્ય વગેરેથી સંપન્ન તેમજ જનમાન્ય હતા (रिउव्वेय, जाव सुपरिनिट्ठिया) તેઓ ત્રણે ઋગ્વેદ વગેરે ચારે વેદોના સારા જ્ઞાતા હતા (तेसिं णं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था तं जहा-नागसिरी, भूयसिरी

इयं तित्तालाउ य बहुसंभारणेहकयं एगते गोवेत्तए अन्न सालइयं महुरालाउयं जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए, एवं संपेहेइ संपेहित्ता त सालइय जाव गोवेइ, अन्न सालइयं महुरालाउयं उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासणवरगयाण तं विपुलं असणं४ परिवेसेइ, तएणं ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परम- सुइभूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था, तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असणं ४ आहारेंति आहारित्ता जेणेव सयाइं२ गेहाइ तेणेव उवा- गच्छइ उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ ॥सू०१॥

टीका—श्रीजम्बूस्वामी श्रीसुधर्मस्वामिन पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त != हे भगवन् श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन पञ्चदशस्य अयम्=उक्तरूप., अर्थः प्रज्ञप्तः, षोडशस्य खलु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?,

---

टीकार्थ-(जइण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पन्नरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स ण भते? णाय ज्झयणस्सण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जबू !) श्री जबू स्वामी सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि भदत ! श्रमण भगवान् महावीरने जो कि सिद्धि गति नामक स्थानको प्राप्त हो चुके हैं पन्द्रहवें ज्ञानाध्ययनका यह पूर्वोक्तरूपसे अर्थ निरूपित किया है-तो

ટીકાર્થ-(जइण भते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं पन्नरस- मस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सोलसमस्स ण भते ! णायज्झयणस्स ण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू !)

શ્રી જબૂ સ્વામી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદત ! શ્રમણ ભગ વાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધિગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂકયાં છે-પદરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તે

प्रकाम दातु, प्रकाम भोक्तु प्रकाम परिभाजयितुम् ततः = तस्मात् श्रेय = श्रेयस्कर खलु अस्माक हे देवानुप्रिया ! अन्योन्यस्य = परस्परस्य गृहेषु 'कल्लाकल्लि' कल्याकल्य प्रतिदिवस विपुल = प्रचुरम्, अशन पान खाद्य स्वाद्य 'उवक्खडाउ' उपस्कार्यपरिभुञ्जानानां विहर्तुम्। अन्योन्यस्य=परस्परस्य एत-मर्थं ते त्रयो भ्रातरो ब्राह्मणाः प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य 'कल्लाकल्लि'

वसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु पकाम परिभाएउ-त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया। अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडाविउ) हे देवानुप्रियो ! अपने पास विपुलमात्रा में, गणिम, धरिम, मेय, एव परिच्छेद्यरूप चारों प्रकार का धन है, यावत् पद्मराग आदिरूप स्वापत्य भी हैं, कनक,सुवर्ण,रत्न,मणिमौक्तिक आदि सब कुछ है-और वह इतना अधिक है कि सात पीढी तक भी यदि खूब दान दिया जावे, बैठ २ खूब खाया जावे-और उसका हिस्सा भाग भी कर दिया जावे-तौ भी वह समाप्त नही हो सकता है। इसलिये हम लोगों को उचित है कि हम लोग प्रति दिन एक दूसरे के घर पर अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार विपुल मात्रा में बनवावे और (उवक्खडावित्ता परिभुजमाणाण विहरित्तए) बनवा कर उस का भोजन करे। (अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति) इस प्रकार का आपस का विचार उन्होने एक दूसरे का स्वीकार कर लिया।

जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकाम दाउ पकाम भोत्तु पकाम परिभाएउ त सेय खलु अम्ह देवाणुप्पिया! अन्नमन्नस्स गिहेसु कल्लाकल्लि विउल असण पाण खाइम साइम उवक्खडावित्त)

હે દેવાનુપ્રિયો! આપણી પાસે પુષ્કળ પ્રમાણમા ગણિમ, ધરિમ, મેય, અને પરિચ્છેદ્ય રૂપ ચારે જાતનુ ધન છે યાવત્ પદ્મરાગ વગેરે રૂપ સ્વાપત્ય પણ છે કનક' સુવર્ણ, રત્ન, મણિ, મોતી, વગેરે બધુ છે-અને જે કઇ છે તે એટલુ બધુ છે કે સાત પેઢી સુધી પણ જો પુષ્કળ પ્રમાણમા દાન કરવામા આવે છતા તે ખૂટશે નહિ એથી અમને એ યોગ્ય લાગે છે કે અમે બધા દરરોજ એકબીજાને ઘેર અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારો પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવડાવીએ અને (उवक्खडावित्ता परिभुजमाणाण विहरित्तए) બનાવડાવીને જમીએ (अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति) આ રીતે બધાએ એકમત થઇને વાત સ્વીકારી લીધી

(२) भूतश्री', (३) यक्षश्रीश्च, ताः किं भूताः-सुकुमारपाणिपादा, यावत्-सर्वाङ्गसुन्दर्यः, तेषां खलु ब्राह्मणानामिष्टाः=कमनीयाः, विपुलान् मानुष्यकान् यावत् कामभोगान् भुञ्जाना विहरन्ति।

ततः खलु तेषां ब्राह्मणानामन्यदा कदाचिदेकतः समुपागतानां यावत् अयमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः, मिथः=परस्परं, कथासमुल्लापः=वार्तालापः समुदपद्यत-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! अस्माकमिदं विपुलं धनं गणिमधरिममेयपरिच्छेद्य भेदाच्चतुर्विधं यावत् 'सावतेज्जे' स्वापतेयं - पद्मरागादिरूपं वा, अत्र यावत्पदग्राह्य-कनकसुवर्णरत्नादिकं तथा-मौक्तिकादिकं च विद्यते, किंभूतं तदित्याह-'अलाहि' पर्याप्तं=परिपूर्णं-यावत्-आसप्तमात् कुलवंशात्=सप्तमवंशपर्यन्त

के अच्छे जानकार थे। (तेसिणं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था-तं जहा-नागसिरी, भूयसिरी, जक्खसिरी, सुकुमाल जाव तेसिं णं माहणाणं इट्ठाओ ५ विपुले मा० जाव विहरंति) इन तीनों ब्राह्मणों की तीन स्त्रियां थी। उनके नाम ये हैं।-नाग श्री, भूत श्री, और यक्ष श्री, ये सब सुकुमार करचरणवाली थी यावत् सर्वाङ्ग सुन्दर थीं। ये तीनों ब्राह्मण इनके साथ मनुष्यभव संबन्धी काम भोगों को भोगते हुए आनंद से रहते थे। (तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाइं एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था) एक दिन की बात है कि जब ये तीनों भाई एक जगह बैठे हुए थे तब इनका परस्पर में इस प्रकार का विचार चला-(एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे विउले धणे जाव सावतेज्जे अलाहिजाव आसत्तमाओ कुल-

जक्खसिरी, सुकुमार जाव तेसिणं माहणाणं इट्ठाओ५ विपुले मा०जाव विहरंति)

આ ત્રણે બ્રાહ્મણોને ત્રણ સ્ત્રીઓ હતી. તેમનાં નામો આ પ્રમાણે છે નાગશ્રી, ભૂતશ્રી, અને યક્ષશ્રી તેઓ ત્રણે સુકોમળ હાથ અને પગવાળી હતી અને બધાં અંગો તેમનાં સુંદર હતાં. ત્રણે બ્રાહ્મણો તેમની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતા સુખેથી રહેતા હતા.

(तएणं तेसिं माहणाणं अन्नया कयाई एगयओ समुवागयाणं जाव इमेयारूवे मिहो कहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था)

એક દિવસની વાત છે કે તેઓ ત્રણે ભાઈ એક સ્થાને બેઠા હતા ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ જાતનો વિચાર કરવા લાગ્યા કે—

-(एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे-विउले धणे जाव

आस्वादयति, आस्वाद्य तत् क्षार कटुकमखाद्यमभोज्य विषभूत ज्ञात्वा एवमवादीत्-धिगस्तु मा नागश्रियमधन्यामपुण्या दुर्भगा 'दुभ सत्ताए' दुर्भगसत्वा दुर्भग=निष्फल सत्त्व=बल यस्याः सा वा व्यर्थपरिश्रमामित्यर्थः ' दूभगणिंबोलिए ' दुर्भगनिम्ब गुलिकानिम्बफलिका, तद्वद् दुर्भगा वा=जनैरनादरणीयामित्यर्थः, अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी प्राकृतत्वात्, ' जीए ' यथा खलु मया शारदिक बहुसभारद्रव्यसभृत स्नेहाव-

(उवक्खडित्ता एग बिंदुय करयलसि आसाएइ) जब वह तैयार शाक हो चुका-तब उसने उसमें से एक बिन्दु मात्र शाक अपनी हथेली पर रखा और फिर उसे चखा-(आसाइत्ता त खार कडुय अक्खज्ज अभोज्ज विसब्भूय जाणित्ता एव वयासी-धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए दुरभगाए दुभगसत्ताए दुभगणिंबोलियाए जीएण मए सालइए बहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए) चखकर उसे ज्ञात हुआ कि यह शाक तो बहुत खारा है, बहुत अधिक कडुआ है। खाने के योग्य नही है भोजन में लेने के लायक नहीं है, यह तो विष जैसा है ऐसा जानकर उसने मन ही मन विचार किया उस विचार मेउसने कहा-मुझ नागश्री को धिक्कार है, मे अधन्या और अपुण्या हूँ। जनो के द्वारा आदर पाने योग्य नही हूँ। मेरे इस बल को बार २ धिक्कार हो-मेरा यह बल बिलकुल निष्फल है मेने जो इस शाक के बनाने में इतना उद्यम किया है वह मेरा सर्वथा निष्फल गया। जिस प्रकार नीम

ઉપર થી તરતુ હતું (उवक्खडित्ता एग बिंदुय करयलसि आसाएइ) જ્યારે શાક તૈયાર થઈ ગયુ ત્યારે તેણે તેમાથી ફક્ત એક ટીપા જેટલુ શાક પોતાની-હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યુ

(आसाइत्ता त खार कडुय अक्खज्ज अभोज्ज विसब्भूयं जाणित्ता एव वयासी-धिरत्थु ण मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए, दूरभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए जीएण मए सालइए बहुसभारसभिए नेहावगाढे उवक्खडिए)

ચાખવાથી તેને લાગ્યુ કે આ શાક તો ખૂબ જ ખારૂ છે, ખૂબ જ કડવું, છે, ખાવાલાયક નથી, ભોજનમા કામ લાગે તેવુ નથી, આ તો ઝેર જેવુ છે, આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે પોતાની જાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હુ ખરેખર અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છુ હુ લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારૂ આ બળ સાવ નકામુ છે શાક તૈયાર કરવામા જેટલો મે શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ લીમડ

फलप्राकल्यं=प्रतिदिवसम् अन्योन्यस्य गृहेषु विपुलमशनादि समुपस्कारयन्ति। उप स्कार्य परिभुञ्जाना विहरन्ति। ततः खलु तस्या नागश्रियो ब्राह्मण्या अन्यदा= कदाचिदन्यस्मिन् समये 'भोयणवारए' भोजनवारक=भोजयितु नियमितो दिवसो भोजनवारक जातः=समायातश्चाप्यभवत्, ततः खलु सा नागश्रीः विपुलमशनं पान खाद्य स्वाद्यमुपस्करोति=निष्पादयति, उपस्कृत्य एक महत् 'सालइयं' सारचित-सारेण रसेन चित युक्त यद्वा-शारदिक=शरदृतुभव 'तित्तालाउअं' तिक्तालाबुक=निम्बादिवत् तिक्तरसयुक्ततुम्बीफल, बहुसंभारसंयुक्त=बहुभिः= अनेकविधैः संभारद्रव्यैः=शाकादौ स्वादसुगन्धविशेषार्थं हिङ्गुमेथिकाजीरकादीनि व्याघारद्रव्याणि निक्षिप्यन्ते, तैर्मिश्रित, 'णेहावगाढं' स्नेहावगाढ=घृतादिप्लावि तम् (युक्तम्) 'उवक्खडेइ' उपस्करोति, उपस्कृत्यैक बिन्दुक करतले समादाय

(पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्ख डावेति) स्वीकार करके अब वे एक दूसरे के घर पर विपुल मात्रा में निष्पन्न हुए अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाने पीने लगे। (तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था) किसी एक दिन नागश्री ब्राह्मणी की भोजन बनाने की बारी आई (तएणं सा नागसिरी विउलं असणं ४ उवक्खडेंति) सो उस दिन उसने विपुल मात्रा मे चारों प्रकार का आहार बनाया (उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभारसजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ) आहार बनाकर फिर उसने शरदऋतु में उत्पन्न हुई अथवा रस से सरस बनी हुई तिक्तरसतुंबी का शाक बनाया-और उसमें स्वाद एवं सुगंधि के निमित्त हींग, मैथी, जीरे आदि का बघार दिया। उसे खूब अधिक घृत में छौंका था-इसलिये घृत उसके ऊपर तैर रहा था।

(पडिसुणित्ता कल्लाकल्लिं अन्नमन्नस्स गिहेसु विउलं असणं ४ उवक्खडावेंति) स्वीकारीने तेओ ओडणीजाने घेर पुष्कळ प्रमाणमां अशनपान वगेरे चार जातना आहारोने खावा-पीवा लाग्या

(तएणं तीसे नागसिरीए माहणीए अन्नया भोयणवारए जाए यावि होत्था) कोई एक दिवसे नागश्री ब्राह्मणीनो भोजन तैयार करवानो वारो आव्यो (तएणं सा नागसिरि विउलं असणं ४ उवक्खडेति) तेणे ते दिवसे पुष्कळ प्रमाणमां चारे जातना आहारो बनाव्या

(उवक्खडित्ता एगं महं सालइयं तित्तालाउअं बहुसंभार सजुत्तं णेहावगाढं उवक्खडेइ) आहार बनावीने तेणे शरद् ऋतुमां उत्पन्न थयेली अथवातो रसथी सरस थयेली तिक्तरसवाळी तुंबीनुं शाक बनाव्युं अने तेमां स्वाद अने सुगंधीना माटे हींग, मेथी, जीरुं वगेरेनो वघार दीधो ते॥

आस्वादयति, आस्वाद्य तत् क्षारं कटुकमखाद्यमभोज्यं विषभूतं ज्ञात्वा एवमवादीत्-धिगस्तु मां नागश्रियमधन्यामपुण्यां दुर्भगां 'दुभगसत्ताए' दुर्भगसत्त्वा दुर्भग=निष्फलं सत्त्व=बलं यस्याः सा ता व्यर्थपरिश्रमामित्यर्थः 'दूभगणिंबोलिए' दुर्भगनिम्बगुलिकानिम्बफलिका, तद्वद् दुर्भगां जनैरनादरणीयामित्यर्थः, अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी प्राकृतत्वात्, 'जीए' यया खलु मया शारदिकं बहुसम्भारद्रव्यसभृतं स्नेहाव-

(उवक्खडित्ता एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ) जब वह तैयार शाक हो चुका-तब उसने उसमें से एक बिन्दु मात्र शाक अपनी हथेली पर रखा और फिर उसे चखा-(आसाइत्ता तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी-धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए दुरभगाए दुभगसत्ताए दुभगणिंबोलियाए जीएणं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए) चखकर उसे ज्ञात हुआ कि यह शाक तो बहुत खारा है, बहुत अधिक कडुआ है। खाने के योग्य नहीं है भोजन में लेने के लायक नहीं है, यह तो विष जैसा है ऐसा जानकर उसने मन ही मन विचार किया उस विचार में उसने कहा-मुझ नागश्री को धिक्कार है, मैं अधन्या और अपुण्या हूँ। जनों के द्वारा आदर पाने योग्य नहीं हूँ। मेरे इस बल को बार २ धिक्कार हो-मेरा यह बल बिलकुल निष्फल है मैंने जो इस शाक के बनाने में इतना उद्यम किया है वह मेरा सर्वथा निष्फल गया। जिस प्रकार नीम-

ઉપર થી તરતુ હતું (उवक्खडित्ता एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ) જ્યારે શાક તૈયાર થઈ ગયું ત્યારે તેણે તેમાથી ફક્ત એક ટીપા જેટલુ શાક પોતાની હથેળી ઉપર લઈને ચાખ્યુ

(आसाइत्ता तं खारं कडुयं अक्खज्जं अभोज्जं विसब्भूयं जाणित्ता एवं वयासी-धिरत्थु णं मम नागसिरीए अहन्नाए, अपुन्नाए, दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगणिंबोलियाए जीएणं मए सालइए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्खडिए)

ચાખવાથી તેને લાગ્યુ કે આ શાક તો ખૂબ જ ખારૂ છે, ખૂબ જ કડવું છે, ખાવાલાયક નથી, ભોજનમા કામ લાગે તેવુ નથી, આ તો ઝેર જેવુ છે, આમ જાણીને તેણે પોતાના મનમા જ વિચાર કર્યો અને વિચાર કરતા તેણે પોતાની જાતને જ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-મને-નાગશ્રીને-ધિક્કાર છે, હુ ખરેખર અધન્યા તેમજ અપુણ્યા છુ હુ લોકો દ્વારા આદર મેળવવા લાયક નથી મારા આ બળને વારવાર ધિક્કાર છે, મારૂ આ બળ સાવ નકામુ છે શાક તૈયાર ... મે શ્રમ કર્યો છે તે બધો નકામો ગયો જેમ લીમ-

गाढमुपस्कृत, तेन सुबहुद्रव्यक्षयः-हिङ्गुजीरकादिद्रव्यनाशः, स्नेहक्षयः=घृतादिक्षयश्चकृतः, तत्=तस्मात् यदि खलु मम 'जाउयाओ' यातृकाः, देवरभार्याः ज्ञास्यन्ति, 'तोण' तर्हि खलु मम 'खिसिस्सति' खिंसिष्यन्ति-निन्दां कोप च करिष्यन्ति, तत्-तस्मात् यावन्मम यातृका न जानन्ति, तावन्मम श्रेयः-उचित एतत् शारदिक तिक्तालावुक बहुसंभारस्नेहकृतम् एकान्ते 'गोवेत्तए' गोपयितुम्, अन्यत् शारदिक मधुरालावुक मधुरतुम्बीफल यावत् स्नेहावगाढमुपस्कर्तुम्। एव

की निबौली किसी मनुष्य की दृष्टि में आदर पाने योग्य नहीं होती है वसी प्रकार में भी जनो द्वारा अनादरणीय बनी हूँ। जो मैंने शरद कालिक अथवा सरस इस तुबी फल का हिङ्गु, जीरकादि द्रव्यों से युक्त और घृतादि से युक्त शाक बनाया है (सुबहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए) इस के बनाने में मैंने व्यर्थ ही बहुत से हिङ्गु जीरे मेथी आदि द्रव्य का और घृत का विनाश किया है। (त जइण मम जाउयाओ जाणिस्सति, तो, ण मम खिसिस्सति) इस बात को यदि मेरी देवरानी जानेगी तो वे मेरे ऊपर गुस्सा होगी और मेरी निंदा करेगी। (त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय एय सालइयं तित्तालाउय बहुसभारणेह कय एगते गोवेत्तए) इसलिये मुझे अब यही उचित है कि मैं इस शारदिक तिक्तालावु के शाक को जो बहुत सभार एव घृत डालकर बनाया हैं किसी एकान्त स्थान में छुपाकर रख दूँ और

ડાની લીંબોળી માણુસોની સામે આદર મેળવવા યોગ્ય ગણાતી નથી તે પ્રમાણે હુ પણ માણુસો દ્વારા આદર પ્રાપ્ત કરવા લાયક રહી નથી એટલે કે હુ લોકોની સામે અનાદરણીય થઈ ગઈ છુ મે શરદ્ કાલિક અથવા સરસ તુબીના ફળનુ હીંગ, જીરૂ વગેરે દ્રવ્યોથી યુક્ત અને ઘી વગેરેથી યુક્ત શાક બનાવ્યુ છે (सुबहु दव्वक्खए नेहक्खए य कए) એને તૈયાર કરવામા મે વ્યર્થ હીંગ, જીરૂ, મેથી વગેરે તેમજ ઘી વગેરે વસ્તુઓનો દુર્વ્યય કર્યો છે (त जइण मम जाउयाओ जाणिस्सति, तो ण मम खिसिस्सति) જો મારા દેરાણીને આ વાતની જાણ થશે તો તેઓ ચોક્કસ મારા ઉપર ગુસ્સે થશે અને મારી નિંદા કરશે

(त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय एय सालइय तित्तोलाउय बहु सभारणेहकय एगते गोवेत्तए)

એથી અત્યારે મને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે આ શારદિક તિક્તાલાબુ (કડવી તૂબડી) ના શાક ને-કે જે ખૂબ જ સરસ ઘી નાખીને વઘારવામા આવ્યું છે-એક તરફ છુપાવીને મૂકી દઉં અને તેની જગ્યાએ શારદિક

समेक्षते=विचारयति, सप्रेक्ष्य तत् शारदिक यावद् तिक्तालावुक गोपयति=कचित् समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिक मधुरालाबुकमुपस्करोति=रन्धयति हिंगुजीरा दिभि' संस्करोति। तेषा ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगताना निजनिजासने-सुखोपविष्टाना तद् विपुलमशनपान खाद्य स्वाद्य परिवेषयति=तेषा भोजनावसरे भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः। ततः खलु ते ब्राह्मणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

---

उसके स्थानपर (अन्न सालइय महुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मैथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनाऊँ (एव सपेहेइ, सपेहित्ता त सालइ य जाव गोपेइ अन्न सालइय महुरालाउय उवक्खडेइ तेसिं माहणाण ण्हायाण जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी तुंबड़ी के बहुत सभार एव घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबडी-का शाक हींग जीरे और मैथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया। इतने में वे तीनो ब्राह्मण स्नान आदि से निवट कर भोजन शाला में आकर अपने २ आसन पर शाति के साथ बैठ गये। उनके बैठते ही उसने उन्हें अशन आदिरूप चारो प्रकार का आहार थालो मे परोसा (तएण ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परम सुइ-

---

महुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) બીજી શારદિક મીઠી તૂબડીનુ ઘી ઉપર તરી રહ્યુ છે એવુ શાક હીંગ, જીરૂ અને મેથીમા વઘારીને બનાઉં

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता त सालाइ य जाव गोवेइ, अन्न सालइय महुराला-उय उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ)

આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો, વિચાર કરીને તે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ ઘીમા વઘારેલા શાકને એક તરફ છૂપાવીને મૂકી દીધુ અને બીજી શારદિક મીઠી તુબડી-દૂધી-નુ હીંગ, જીરૂ અને મેથીનો વઘાર કરીને ઉપર ઘી તરતું શાક બનાવ્યુ એટલામા તો તેઓ ત્રણે બ્રાહ્મણો સ્નાન વગેરેથી પરવારીને ભોજનશાળામા આવીને પોતપોતાના આસન ઉપર શાતિથી બેસી ગયા તેમને બેસતા જ તેણે તેઓને અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતનો આહાર થાળીમા પીરસ્યો

गाढमुपस्कृत, तेन सुबहुद्रव्यक्षयः-हिङ्गुजीरकादिद्रव्यनाशः, क्षयकृतः, तत्=तस्मात् यदि खलु मम 'जाउयाओ' या ज्ञास्यन्ति, 'तोण' तर्हि खलु मम 'खिंसिस्सति' निन्दां करिष्यन्ति, तत्-तस्मात् यावन्मम यातृका न जानन्ति, तावन्म एतत् शारदिक तिक्तालाबुक बहुसंभारस्नेहकृतम् एकान्ते 'गोवेत्तए अन्यत् शारदिक मधुरालाबुक मधुरतुम्बीफल यावत् स्नेहावगाढमुप

की निंबोली किसी मनुष्य की दृष्टि में आदर पाने योग्य है उसी प्रकार मैं भी जनो द्वारा अनादरणीय बनी हूँ। जो कालिक अथवा सरस इस तुंबी फल का हिङ्गु, जीरकादि युक्त और घृतादि से युक्त शाक बनाया है (सुबहुदव्वक्खए, य कए) इस के बनाने में मैने व्यर्थ ही बहुत से हिङ्गु जीरे द्रव्य का और घृत का विनाश किया है। (त जइण मम जाणिस्सति, तो, ण मम खिंसिस्सति) इस बात को यदि मेरी जानेगी तो वे मेरे ऊपर गुस्सा होगी और मेरी निंदा करेगी ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेयं एय सालइ लाउय बहुसभारणेह कय एगते गोवेत्तए) इसलिये मुझे अब है कि मैं इस शारदिक तिक्तोलावु के शाक को जो बहुत घृत डालकर बनाया है किसी एकान्त स्थान मे छुपाकर र

डानी लींबोळी माणुसोनी सामे आदर मेळववा योग्य गणाती नथी हुं पण माणुसो द्वारा आदर प्राप्त करवा लायक रही नथी ए लोकोनी सामे अनादरणीय थई गई छुं मे शरद् कालिक अ तुंबीना फळनुं हींग, जीरु वगेरे द्रव्योथी युक्त अने घी वगेरेथी बनाव्युं छे (सुबहु दव्वक्खए य नेहक्खए य कए) एने तैयार व्यर्थ हींग, जीरु, मेथी वगेरे तेमज घी वगेरे वस्तुओनो दु०- (त जइण मम जाउयाओ जणिस्स ति, तो ण मम खिंसिस्स ति) देराणीने आ वातनी जाणु थशे तो तेओ चोक्कस मारा उपर गुस्से मारी निंदा करशे

(त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय ए तित्तालाउय बहु सभारणेहकय एगते गोवेत्तए)

एथी अत्यारे मने ए ज योग्य लागे छे के आ शारदिक (कडवी तूंबडी) ना शाक ने-के जे खूब ज सरस घी नाखीने आव्युं छे-एक तरफ छुपावीने मूकी दउं अने तेनी जग्या

समेक्षते=विचारयति, समेक्ष्य तत् शारदिक यावद् तिक्तालाबुक गोपयति=कचित् समाच्छाद्य धरति अन्यत् शारदिक मधुरालाबुकमुपस्करोति=रन्धयति शेशवारादिभिः संस्करोति। तेषा ब्राह्मणानां यावत् सुखासनवरगताना निजनिजासने-सुखोपविष्टाना तद् विपुलमशनपान खाद्य स्वाद्य परिवेषयति=तेषा भोजनावसरे भोजनपात्रे ददातीत्यर्थः। ततः खलु ते ब्राह्मणाः 'जिमियभुत्तुत्तरगया' जिमित-

उसके स्थानपर (अन्न सालइय महुरालाउय जाव नेहावगाढ उवक्खडेत्तए) दूसरी शारदिक मधुर तुंबड़ी का शाक हींग, जीरे और मेंथी का वघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बनाऊँ (एव सपेहेइ, सपेहित्ता त सालइ य जाव गोवेइ अन्न सालइय महुरालाउय उवक्खडेइ तेसिं माहणाण ण्हायाण जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ) ऐसा उसने विचार किया-विचार करके उस शारदिक कडवी तुंबडी के बहुत सभार एवं घृत युक्त शाक एकान्त में छुपाकर रख दिया-और दूसरी शारदिक मधुर तुंबडी - का शाक हींग जीरे और मेंथी का बघार लगाकर घृत में तैरता हुआ बना लिया। इतने में वे तीनों ब्राह्मण स्नान आदि से निवट कर भोजन शाला में आकर अपने २ आसन पर शांति के साथ बैठ गये। उनके बैठते ही उसने उन्हें अशन आदिरूप चारों प्रकार का आहार थालों में परोसा (तएण ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परम सुइ-

महुरालावय जाव नेहावगाढं उवक्खडेत्तए) બીજી શારદિક મીઠી તૂંબડીનું ઘી ઉપર તરી રહ્યું છે એવું શાક હીંગ, જીરૂ અને મેથીમાં વઘારીને બનાઉં

(एव सपेहेइ, सपेहित्ता त सालाइ य जाव गोवेइ, अन्नं सालइय महुराला-उय उवक्खडेइ, तेसिं माहणाणं ण्हायाणं जाव सुहासनवरगयाण त विपुल असण ४ परिवेसेइ)

આ જાતનો તેણે વિચાર કર્યો, વિચાર કરીને તે શારદિક કડવી તૂંબડીના સરસ ઘીમાં વઘારેલા શાકને એક તરફ છૂપાવીને મૂકી દીધું અને બીજી શારદિક મીઠી તુંબડી-દૂધી-નુ હીંગ, જીરૂં અને મેથીનો વઘાર કરીને ઉપર ઘી તરતું શાક બનાવ્યુ એટલામાં તો તેઓ ત્રણે બ્રાહ્મણો સ્નાન વગેરેથી પરવારીને ભોજનશાળામાં આવીને પોતપોતાના આસન ઉપર શાંતિથી બેસી ગયા તેમને બેસતાં જ તેણે તેઓને અશન વગેરે રૂપ ચારે જાતનો આહાર

गाढमुपस्कृत, तेन सुबहुद्रव्यक्षयः-हिङ्गुजीरकादिद्रव्यनाशः, स्नेहक्षयः=घृतादिक्षयश्चकृतः, तत्=तस्मात् यदि खलु मम 'जाउयाओ' यातरः, देवरभार्याः ज्ञास्यन्ति, 'तोण' तर्हि खलु मम 'खिसिस्सति' खिंसिष्यन्ति-निन्दां कोपं च करिष्यन्ति, तत्-तस्मात् यावन्मम यातृका न जानन्ति, तावन्मम श्रेयः-उचितं एतत् शारदिक तिक्तालाबुक बहुसंभारस्नेहकृतम् एकान्ते 'गोवेत्तए' गोपयितुम्, अन्यत् शारदिक मधुरालाबुकं मधुरतुम्बीफल यावत् स्नेहावगाढमुपस्कर्तुम्। एव

की निबौली किसी मनुष्य की दृष्टि में आदर पाने योग्य नहीं होती है उसी प्रकार मे भी जनों द्वारा अनादरणीय बनी हूँ। जो मैंने शरद कालिक अथवा सरस इस तुबी फल का हिङ्गु, जीरकादि द्रव्यों से युक्त और घृतादि से युक्त शाक बनाया है (सुबहुदव्वक्खए, नेहक्खए य कए) इस के बनाने में मैंने व्यर्थ ही बहुत से हिङ्गु जीरे मेथी आदि द्रव्य का और घृत का विनाश किया है। (त जइण मम जाउयाओ जाणिस्सति, तो, ण मम खिसिस्सति) इस बात को यदि मेरी देवरानी जानेगी तो वे मेरे ऊपर गुस्सा होगी और मेरी निंदा करेगी। (त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणति ताव मम सेय एय सालइय तित्तालाउय बहुसभारणेह कय एगते गोवेत्तए) इसलिये मुझे अब यही उचित है कि मैं इस शारदिक तिक्तोलाबु के शाक को जो बहुत सभार एव घृत डालकर बनाया हैं किसी एकान्त स्थान में छुपाकर रख दूँ और

डानी लींबोळी माणुसोनी सामे आदर मेळववा योग्य गणाती नथी ते प्रमाणे हु पण माणुसो द्वारा आदर प्राप्त करवा लायक रही नथी एटले के हु लोकोनी सामे अनादरणीय थई गई छु मे शरद् कालिक अथवा सरस तुंबीना फळनु हींग, जीरु वगेरे द्रव्योथी युक्त अने घी वगेरेथी युक्त शाक बनाव्यु छे (सुबहु दव्वक्खए नेहक्खए य कए) एने तैयार करवामा मे व्यर्थ हींग, जीरु, मेथी वगेरे तेमज घी वगेरे वस्तुओनो दुर्व्यय कर्यो छे (त जइण मम जाउयाओ जणिस्स ति, तो ण मम खिसिस्स ति) जो मारा देराणीने आ वातनी जाण थशे तो तेओ चोक्कस मारा उपर गुस्से थशे अने मारी निंदा करशे

(त जाव ताव मम जाउयाओ ण जाणंति ताव मम सेय एय सालइय तित्तालाउय वहु समारणेहकय एगते गोवेत्तए)

एथी अत्यारे मने ए ज योग्य लागे छे के आ शारदिक तिक्तोलाबु (कडवी तूंबडी) ना शाक ने-के जे खूब ज सरस घी नाखीने वधारवामा आव्युं छे-एक तरफ छुपावीने मूकी दउं अने तेनी जग्याए (सालइय

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसिए सज्झाय करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ जाव चपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाण पासइ पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पड्डवणट्टयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त सालइय तित्तकडुय च बहुसंभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झ मज्झेणं पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्नपाण पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाण करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गधेणं

भुक्तोत्तरगताः भोजनानन्तरं बहिरागताः सन्तः 'आयन्ता' आचान्ताः कृतचुलुकाः 'चोक्खा' चोक्षाः=प्रक्षालितहस्तमुखा वा परमशुचिभूताः 'सकम्मसपउत्ता' स्वकर्मसमयुक्ता =स्वस्वकार्यसंलग्ना जाताश्चाप्यभवन् । ततः खलु ताः ब्राह्मण्यः स्नाता यावत् सर्वालङ्कारविभूषितास्तद् विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्यम् आहार यन्ति=आहारकुर्वन्ति भुञ्जते स्म। आहृत्य, यत्रैव स्वकानि स्वकानि गृहाणि= आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वकर्मसमयुक्ता जाता ॥ सू० १ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था) आहार जब परोसा जा चुका-तब उन सबने उसे खाया पीया-और खा पीकर जब वे निपट चुके तब उन्होंने कुल्ला आदि कर अपने मुंह का प्रक्षालन किया-और हाथों को साफकर वे अपने २ कार्य में लग गये। (तएण ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असण ४ आहारेति, आहारित्ता जेणेव सयाइ-२ गेहाइ तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सकम्म सपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्रह्मणियोंने जो कि पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेष भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाया-और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में चली गई-वहा जाकर अपने २ वे सब काममें लग गई ॥ सूत्र १ ॥

(तएण, ते माहणा जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयता, चोक्खा परमसुइ भूया सकम्मसपउत्ता जाया यावि होत्था)

આહાર જ્યારે પીરસાઈ ગયો ત્યારે તેઓ ત્રણે જમ્યા અને જમી પર વારીને કોગળા વગેરે કરીને હાથ મો સાફ કર્યો અને હાથ મો સાફ કરીને તેઓ ત્રણે પોતપોતાના કામમા પરોવાઇ ગયા

(तएण ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ त विपुल असण४आहारित्ता जेणेव सयाइ२ गेहाइ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसपउत्ताओ जायाओ)

ત્યારબાદ તે બ્રાહ્મણીઓએ-કે જેઓએ પહેલા સ્નાન કરીને પોતાના શરીરને સુદર વસ્ત્રોથી શણગાર્યું હતુ-તે પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલો, અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર કર્યો આહારથી પરવારીને તેઓ પોતપોતાના વાસભવનમા જતી રહી અને ત્યા જઈને તેઓ સર્વે પોતપોતાના કામોમા પરોવાઈ ગઈ ॥સૂ૦૧॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छति २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं तेसिं धम्मघोसाण थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेण खममाणे विहरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पड्डवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं च बहुसंभारसंभियं णेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं

भुक्तोत्तरागताः भोजनानन्तरं बहिरागताः सन्तः 'आयंता' आचान्ताः कृतचुल्लुकाः 'चोक्खा' चोक्षाः=प्रक्षालितहस्ता मुखाः 'परमसुइभूया' परमशुचिभूताः 'सकम्मसंपउत्ता' स्वकर्मसंप्रयुक्ताः=स्वस्वकार्यतत्परा जाता अभवन्। ताः खलु ताः ब्राह्मण्यः स्नाता यावत् वस्त्रालङ्कारविभूषिताङ्ग्यः विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यम् आहारयन्ति=आहारकुर्वन्ति भुञ्जते स्म। आहृत्य, यत्रैव स्वकानि स्वकानि गृहाणि=आवासभवनानि तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य स्वकर्मसंप्रयुक्ता जाता ॥ सू० १ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे

भूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था) आहार जब परोसा जा चुका-तब उन सबने उसे खाया पीया-और खा पीकर जब वे निपट चुके तब उन्होंने कुल्ला आदि कर अपने मुँह का प्रक्षालन किया-और हाथों को साफकर वे अपने २ कार्य में लग गये। (तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारेंति, आहारित्ता जेणेव सयाइं-२ गेहाइं तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सकम्म संपउत्ताओ जायाओ) इसके बाद उन ब्राह्मणियोंने जो कि पहिले से ही स्नान कर चुकी थी और अपने २ शरीर को सुन्दर वेष भूषा से सुसज्जित किये हुए थी, उस विपुल अशनादिरूप चतुर्विध आहार को खाया-और खाकर के फिर वे अपने २ वासभवनों में चली गई-वहा जाकर अपने २ वे सब काममें लग गई ॥ सूत्र १ ॥

(तएणं ते माहणा, जिमिय भुत्तुत्तरागया समाणा आयंता, चोक्खा, परमसुइभूया, सकम्मसंपउत्ता, जाया, यावि होत्था)

આહાર જ્યારે પીરસાઈ ગયો ત્યારે તેઓ બધું જમ્યા અને જમી પરવારીને કોગળા વગેરે કરીને હાથ મોં સાફ કર્યો અને હાથ મોં સાફ કરીને તેઓ બધું પોતપોતાના કામમાં પરોવાઇ ગયા

(तएणं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव विभूसियाओ तं विपुलं असणं ४ आहारित्ता जेणेव सयाइं २ गेहाइं, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ)

ત્યારબાદ તે બ્રાહ્મણીઓએ-કે જેઓએ પહેલા સ્નાન કરીને પોતાના શરીરને સુંદર વસ્ત્રોથી શણગાર્યું હતુ-તે પુષ્કળ પ્રમાણમા બનાવવામા આવેલો અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર કર્યો આહારથી પરવારીને તેઓ પોતપોતાના વાસભવનમા, જતી રહી અને ત્યા જઈને તેઓ સર્વે પોતપોતાના કામોમાં પરોવાઈ ગઈ ॥સૂ૦૧॥

उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति २ अहापडिरूवं जाव विहरंति, परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसा पडिगया, तएणं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मासं मासेणं खममाणे विहरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ बीयाए पोरिसीए एवं जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोसे थेरं आपुच्छइ जाव चंपाए नयरीए उच्चनीयमज्झिमकुलाइं जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसंभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स पडुवणट्टयाए हट्टतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं च बहुसंभारसंभियं णेहावगाढं धम्मरुईस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झं मज्झेणं पडिनिक्खमइ जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाणं पडिलेहेइ पडिलेहित्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं ते धम्मघोसा थेरा सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेण

अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ। तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी—जइणं तुमं देवाणुप्पिया! एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं जाव आहारेहि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जेहि, तं गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइयं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले परिट्ठवेहि परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणंपाणं खाइमं साइमं पडिगहित्ता आहारं आहारेहि ॥ सू० २ ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा नाम स्थविरा यावत्—बहुपरिवाराः—बहुसाधुपरिवारेण सहिता यत्रैव चम्पा नाम नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यानं तत्रैवोपागच्छन्ति, अत्र 'धर्मघोषा' इति बहुवचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूपं यावत्—अवग्रहमवगृह्य संयमेन

तेणं कालेणं तेणं समएणं इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरति—परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया—तएणं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले

(तेणं कालेणं तेणं समएणं) इत्यादि।

ટીકાર્થ–(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चंपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं जाव विहरति परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसापडिगया, तएणं तेसिं [illegible] थेराणं

तपसाऽऽत्मानं भावयन्तो विहरति-आसतेस्म। परिषद् निर्गता धर्मः कथित = धर्मकथा कथिता परिषत् प्रतिगता=धर्मकथा श्रवणानन्तरं प्रतिनिवृत्ता। ततः खलु तेषां धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तेवासी धर्मरुचिर्नामानगारः उदारः प्रधानो यावत् संक्षिप्तविपुलतेजोलेश्यः=संक्षिप्ता शरीरान्तः संकोचिता, विपुला=अनेकयोजन प्रमितक्षेत्रस्थितवस्तुदहनसमर्था, तेजोलेश्या=विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषो येन सः

जाव तेउलेस्से मासं मासेण खममाणे विहरइ) धर्म घोष नामके स्थविर यावत् अनेक परिवार से युक्त होकर जहां चंपा नगरी, और उसमें जहां वह सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहां आये। वहां आकर के उन्हों ने वहां ठहरने के लिये अपने कल्पानुसार आज्ञा मांगी बाद में वे वहां संयम और तप से आत्माको भावित करते हुए ठहर गये। चंपानगरी के समस्त जन उनको वंदना एवं धर्मकथा सुनाने के लिये वहां आये। उन्होंने श्रुतचारित्र रूप धर्मका उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद अपने २ स्थान पर पीछे गई। इसके अनन्तर उन धर्मघोष स्थविर के अंतेवासी जिनका नाम धर्मरुचि अनागार था बडे उदार प्रकृति के थे विशिष्ट तपस्याओं को किया करते थे-उसके प्रभाव से इन्हें तेजोलेश्या की प्राप्ति हो गई थी और वह तेजोलेश्या इन्होंने अपने शरीर के भीतर संक्षिप्त कर रक्खी थी इस तेजोलेश्या का यह स्वभाव होता है कि जब वह शरीर से बाहिर निकलती है तो अनेक योजन प्रमित क्षेत्र में रही हुई वस्तुओं को भस्मकर देती है। मास क्षपण की उपवास रूप तपस्या

अंतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले जाव तेउलेस्से मास मासेण खममाण विहरइ

ધર્મઘોષ નામના સ્થવિર પોતાના ઘણા પરિવારોની સાથે જ્યાં ચંપા નગરી અને તેમાં પણ જ્યાં તે સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે ત્યાં રોકાવાની પોતાના આચાર મુજબ આજ્ઞા માગી ત્યાર પછી તેઓ ત્યાં પોતાના આત્માને તપ અને સંયમથી ભાવિત કરતા રહેવા લાગ્યા ચંપા નગરીના બધા લોકો તેમના વંદન તેમજ ધર્મકથા શ્રવણ માટે ત્યાં આવ્યા તેઓશ્રીએ શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને લોકો પોતપોતાના નિવાસ સ્થાને જતા રહ્યા ત્યારપછી ધર્મઘોષ સ્થવિરના અંતેવાસી-જેમનું નામ ધર્મરુચિ અનગાર હતું, જેઓ ખૂબ જ ઉદાર પ્રકૃતિના હતા, વિશિષ્ટ તપસ્યાઓ કરતા રહેતા હતા જેના પ્રભાવની એમણે તેજોલેશ્યા મેળવી હતી અને તેજોલેશ્યાને તેમણે પોતાના શરીરમાં જ સંકોચી રાખી હતી આ તેજો-લેશ્યાનો પ્રભાવ આ જાતનો હોય છે કે જ્યારે તે શરીરની બહાર નીકળે છે ત્યારે ઘણા યોજનો સુધીના ક્ષેત્રમાં મૂકેલી વસ્તુઓને ભસ્મ કરી નાખે છે-માસક્ષપણની ઉપવાસ રૂપ તપસ્યાથી તેઓ

अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ । तित्तगं खार कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइ अणगारं एवं वयासी—जइणं तुमं देवाणुप्पिया ! एव सालइयं जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि, तं मा ण तुम देवाणुप्पिया ! इमं सालइय जाव आहारेहि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जेहि, त गच्छ णं तुम देवाणुप्पिया ! इम सालइय एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले परिट्ठवेहि परिट्ठवित्ता अन्न फासुय एसणिज्ज असणंपाण खाइम साइम पडिगहित्ता आहारं आहारेहि ॥ सू० २ ॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये धर्मघोषा नाम स्थविरा यावत्—बहुपरिवारा.—बहुसाधुपरिवारेण सहिता यत्रैव चम्पा नाम नगरी, यत्रैव सुभूमिभागमुद्यान तत्रैवोपागच्छन्ति, अत्र 'धर्मघोषा' इति बहु वचनमादरार्थं प्रयुक्तम्, उपागत्य यथा प्रतिरूप यावत्—अवग्रहमवगृह्य संयमेन

तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (धम्म घोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव जाव विहरति—परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ परिसा पडिगया—तएण तेसिं धम्मघोसाण थेराण अतेवासी धम्मरुई नाम अणगारे ओराले

(ते ण कालेण तेण समएण) इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (धम्मघोसा नाम थेरा जाव बहुपरिवारा जेणेव चपा नाम नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूव जाव विहरति परिसा निग्गया, धम्मो कहिओ, परिसापडिगया, तएण तेसिं [illegible] थेराणं

यावत्-न्याया नगर्यामुच्चनीचमध्यमकुलानि यावदटन् यत्रैव नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहं तत्रैवानुप्रविष्टः ।

ततः खलु सा नागश्री ब्राह्मणी धर्मरुचिमनगारम् एजमानम्-आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा तस्य 'सालइयस्स' शारदिकस्य तिक्तकटुकस्य=तिक्तकटुकतुम्बकस्य बहुस भारसभृतस्य स्नेहावगाढस्य 'एडवणट्ठयाए' प्रस्थापनार्थं=परिष्ठापनार्थं हृष्टतुष्टा 'उट्ठाए' उत्थया=उत्थानक्रियया उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव भक्तगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तद् शारदिक तिक्तकटुकतुम्बक बहुसभारसंभृत स्नेहावगाढ धर्मरुचेरनगारस्य 'पडिग्गहंसि' पतद्ग्रहे-पात्रे, सर्वमेव 'निसिरइ'

जिस प्रकार गौतम स्वामी श्री महावीर स्वामी से पूछकर आहार लेने के लिये जाते थे उसी प्रकार इन्होंने धर्मघोष स्थविर से आहार लाने के लिये आज्ञा मागी । आज्ञा प्राप्तकर ये चंपानगरी में उच्च नीच एवं मध्यमकुलो मे भ्रमण करते हुए जहां नागश्री ब्राह्मणी का घर था वहां गये । नागश्री ब्राह्मणी ने इन्हें ज्योंही आते हुए देखा (पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स एडवणट्ठयाए हट्ठ तुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ) त्योंही वह बहुसभार संभृत एव स्नेहावगाढ उस कडवी तुम्बडी का आहार देने के लिये उत्थान क्रिया द्वारा-उठी-अर्थात् अपने में रही हुई उठने की शक्ति से उठी और हृष्ट तुष्ट होती हुई जहां भोजन-गृह था वहां गई । (उवागच्छित्ता तं सालइयतित्त कडुय च बहुसभार संभिय णेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ) वहां

સ્વામીને પૂછીને આહાર લાવવા માટે નીકળતા હતા તેમજ તેઓએ પણ આહાર લાવવા માટે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે આજ્ઞા માગી આજ્ઞા મેળવીને તેઓ ચંપા નગરીમાં ઉચ્ચનીચ અને મધ્યમ કુળોમાં ભ્રમણ કરતા જ્યાં નાગશ્રી બ્રાહ્મણીનુ ઘર હતુ ત્યા ગયા નાગશ્રી બ્રાહ્મણીએ તેઓને આવતા જોયા (पासित्ता तस्स सालइयस्स बहुसभारसंभियस्स णेहावगाढस्स तित्तकडुयस्स एडवणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ) ત્યારે તરત જ મરસ વધારેલી ઘી તરની કડવી તુબડીનો આહાર આપવા માટે ઉત્થાન ક્રિયા વડે ઊભી થઈ એટલે કે પોતાનામા રહેલી ઊભા થવાની તાકાતથી તે ઊભી થઈ અને હૃષ્ટ તેમજ તુષ્ટ થતી જ્યા ભોજનશાળા હતી ત્યા ગઈ

(उवागच्छित्ता त सालइय तित्तकडुय च बहुसभारसंभिय णेहावगाढ धम्मरुइयस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव निसिरइ)

तथा, मास=त्रिंशदहोरात्रात्मकं काल मासेन=मासक्षपणेन मासोपवासरूपतपः कर्मणा 'खममाणे' क्षपयन्=यापयन् विहरति। ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां 'सज्झायं' स्वाध्याय सूत्रपाठरूपं करोति, द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानम् सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यायति-करोति, अत्र यथा गौतमस्वामी, तथैव गौतमस्वामीवत् तृतीयपौरुष्यां भाजनवस्त्राणिप्रमार्जयति, प्रमार्ज्य भाजनानि 'उग्गाहेइ' अवगृह्णाति, अवगृह्य यत्रैव धर्मघोषस्थविरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथैव श्रीमहावीरस्वामीनं गौतमस्वामिवदेव धर्मघोष स्थविरमापृच्छति,

---

से, वे अपने त्रिंशत अहोरात्रात्मक काल को उस समय व्यतीत कर रहे थे। अर्थात् एक महीने की तपस्या इन्होंने उस समय कर रखे थे- (तएण से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चंपाए नयरीए उच्च नीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाण पासइ) ये धर्मरुचि अनगार मासक्षपण की पारणा के दिनप्रथम पौरुषी में सूत्रपाठ रूप स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषी में सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान और तृतीय पौरुषी मे गौतम स्वामी की तरह वस्त्रपात्रों का प्रमार्जन करते। इस तरह इन्होंने तृतीय पौरुषी में वस्त्र पात्रों का प्रमार्जन कर अपने पात्रों को उठाया और उठकर वे धर्मघोष स्थविर के पास गये।

પોતાના ત્રિંશત્ અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા

(तएण से धम्मरूइ अणगारे मासखमणपारणगसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, बीयाए पोरीसए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरूइ एज्जमाण पासइ)

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમા સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમા સૂત્રાર્થ ચિંતન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમા વસ્ત્ર અને પાત્રોનુ પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષપણના પોતાના પારણાના દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમા વસ્ત્ર-પોતાનુ પ્રમાર્જન કરીને પોતાના પાત્રોને લીધા અને લઈને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે ગૌતમ

तथा, मास=त्रिंशदहोरात्रात्मक काल मासेन=मासक्षपणेन मासोपवासरूपतपः कर्मणा 'खममाणे' क्षपयन्=यापयन् विहरति। ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां 'सज्झायं' स्वाध्याय सूत्रपाठरूप करोति, द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानम् सूत्रार्थचिन्तनरूपं ध्यायति-करोति, एवं यथा गौतमस्वामी, तथैव गौतमस्वामीवत् तृतीयपौरुष्यां भाजनवस्त्राणिप्रमार्जयति, प्रमार्ज्य भाजनानि 'उग्गाहेइ' अवगृह्णाति, अवगृह्य यत्रैव धर्मघोषस्थविरस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तथैव श्रीमहावीरस्वामीनं गौतमस्वामिवदेव धर्मघोष स्थविरमापृच्छति,

से:ये अपने त्रिंशत अहोरात्रात्मक काल को उस समय व्यतीत कर रहे थे। अर्थात् एक महीने की तपस्या इन्होंने उस समय कर रखे थे-(तएण से धम्मरुइ अणगारे मासक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ बीयाए पोरिसीए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्च नीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाण पासइ) ये धर्मरुचि अनगार मासक्षपण की पारणा के दिन प्रथम पौरुषी में सूत्रपाठ रूप स्वाध्याय, द्वितीय पौरुषी में सूत्रार्थ चिन्तन रूप ध्यान और तृतीय पौरुषी मे गौतम स्वामी की तरह वस्त्रपात्रों का प्रमार्जन करते। इस तरह इन्होंने तृतीय पौरुषी में वस्त्र पात्रों का प्रमार्जन कर अपने पात्रों को उठाया और उठकर ये धर्मघोष स्थविर के पास गये।

પોતાના ત્રિંશત્ અહોરાત્રાત્મક કાળને તે સમયે પસાર કરી રહ્યા હતા-એટલે કે તેઓ તે સમયે એક માસની તપસ્યા કરી રહ્યા હતા

(तएण से धम्मरुइ अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, बीयाए पोरीसए एव जहा गोयमसामी तहेव उग्गाहेइ, उग्गाहित्ता तहेव धम्मघोस थेर आपुच्छइ, जाव चपाए नयरीए उच्चनीय मज्झिमकुलाइ जाव अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे, तएण सा नागसिरी माहणी धम्मरुइ एज्जमाण पासइ)

ધર્મરુચિ અનગાર ગૌતમ સ્વામીની જેમ પ્રથમ પૌરુષીમાં સૂત્રપાઠ રૂપ સ્વાધ્યાય, દ્વિતીય પૌરુષીમાં સૂત્રાર્થ ચિંતન રૂપ ધ્યાન અને તૃતીય પૌરુષીમાં વસ્ત્ર અને પાત્રોનું પ્રમાર્જન કરતા હતા, માસ ક્ષપણના પોતાના પારણાના દિવસે પણ તેઓએ તૃતીય પૌરુષીમાં વસ્ત્ર-પોતાનું પ્રમાર્જન કરીને પોતાના પાત્રોને લીધા અને લઈને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે । જેમ ગૌતમ

रुचिमनगारमेवमवदन् यदि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! एतद् शारदिकं यावत्-तिक्तकटुकतुम्बक यावत् स्नेहावगाढम् आहारयसि=आहार करिष्यसि, तर्हि खलु त्वमकाले एव जीविताद् व्यपरोपिष्यसे' एतदशनेन मरणमवश्य माप्स्यसीत्यर्थ । तत्=तस्मात् मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय'! एतद् शारदिकं यावदाहारम्, मा खलु

निकल कर चपानगरी के बीचो बीचसे होकर चल दिये सो जहा सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहा आ गये। वहा आकर वे अपने आचार्य धर्मघोष स्थविर के पास आये वहा आकर उन्होंने भिक्षामें प्राप्त हुआ आहार बताया और बताने के बाद उस शारदिक कडवी तुबडी के यावत् स्नेहावगाढ शाक की गध से अभिभूत होते हुए उन धर्मघोष आचार्य ने उस शारदिक यावत् स्नेहावगाढ शाक में से एक बिन्दु मात्र को अपने हाथ की हथेली पर रख कर चखा (तित्तग खार कडुय अखज्ज अभोज्ज विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइ अणगार एव वयासी -इण तुम देवाणुप्पिया। एय सालइय जाव ने हावगाढ आहारेसि तो ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि) चखते ही "यह तिक्त हैं क्षार से युक्त है कटुक है अखाद्य एव अभोज्ज है तथा विषभूत है" ऐसा जानर धर्मरुचि अनगार से उन्होंने ऐसा कहा हे देवानुप्रिय! यदि तुम शारदिक कडवी तुबडी के बहु सभार सभृत एवं स्नेहावगाढ इस शाक का आहार करोगे-तो निश्चय से बिना मृत्यु के

નીકળીને ચપા નગરીની વચ્ચેના માર્ગથી પસાર થતા જ્યા સુભૂમિભાગ નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના આચાર્ય ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે આવ્યા અને ત્યાં આવીને તેમણે ભિક્ષામા પ્રાપ્ત થયેલા આહારને બતાવ્યો અને બતાવીને તે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકની સુવાસથી અભિભૂત થતા તે ધર્મઘોષ આચાર્યે તે શારદિક સરસ વઘારેલા ઘી તરતા શાકને હથેળી ઉપર મૂકીને ચાખ્યુ

(तत्तग खार कडुय अखज्ज अभोज्ज विसभूय जाणित्ता धम्मरुइ अणगार एव वयासी-जइण तुम देवाणुप्पिया! एय सालइय जाव नेहावगाढ आहारेसि तो णं तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

ચાખતા જ "આ તિકત છે, ખાર છે, કડવુ છે, અખાદ્ય તેમજ અભોજ્ય છે તથા વિષભૂત છે" આવુ જાણીને ધર્મરુચિ અનગારને તેઓએ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! જો તમે શારદિક કડવી તૂબડીના સરસ વઘારેલા ઘીતરતા શાકનો આહાર કરશો તો ચોક્કસ તમે કમોતે મરી જશો.

निसृजति=परिष्ठापयति । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारः 'अहापज्जत्त' यथा पर्याप्तम्-उदरपूर्तये पूर्णमेतद् इति कृत्वा=इति मनसि विभाव्य, नागश्रिया ब्राह्मण्या गृहात् प्रतिनिष्क्रामति-निर्गच्छति प्रतिनिष्क्रम्य चम्पाया नगर्या मध्यमध्येन प्रतिनिष्क्राम्यति प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सुभूमिभागमुद्यानं यत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धर्मघोषस्य स्थविरस्य 'अदूरसामन्ते'=नातिदूरे नातिसमीपे, अन्नपान 'पडिलेहेइ' प्रतिलेखयति प्रतिलेख्य अन्नपानं करतले पात्रं कृत्वा प्रतिदर्शयति। ततः खलु ते धर्मघोषाः स्थविरास्तस्य शारदिकस्य तिक्तकटुकतुम्बकस्य यावत् स्नेहावगाढस्य गन्धेनाऽभिभूताः सन्तस्तस्माच्छारदिकाद् यावद् स्नेहावगाढादेकं बिन्दुकं गृहीत्वा करतले कृत्वा आस्वादयति । तिक्तकं क्षारं कटुकम् अखाद्यमभोज्यं विषभूतं ज्ञात्वा धर्म-

जाकर उसने उस शारदिक कडवी तुम्बडी का बहुत संभार संभृत एवं स्नेहावगाढ शाक धर्मरुचि अनागार के पात्र में सब का सब डाल दिया (तएण से धम्मरुइ अणगारे अहापज्जत्तमित्तिकट्टु णागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद वे धर्मरुचि अनगार " यह उदर पूर्ति के लिये पर्याप्त है " ऐसा मन में समझ कर नागश्री ब्राह्मणी के घर से बाहर निकले पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झं मज्झेण पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे - तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामंते अन्नपाण पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अण्णपाणं करयलंसि पडिदंसेइ, तएणं से धम्मघोसा थेरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेण अभिभूया समाणा ताओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय करयलंसि आसाएइ)

ત્યા જઈને તેણે તે શારદિક કડવી તૂબડીનુ ખૂબ જ સરસ રીતે વધારેલુ તેમજ ઘી તરતુ શાક લઈ આવી અને ત્યારપછી ધર્મરુચિ અનગારના પાત્રમા બધુ નાખી દીધુ

(तएण धम्मरूई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु णागसिरीए महिणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ)

ત્યારપછી તે ધર્મરુચિ અનગાર " આ ઉદર પોષણ માટે પર્યાપ્ત છે " એવું જાણીને નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેરથી બહાર નીકળ્યા

(पडिनिक्खमित्ता चपाए नयरीए मज्झं मज्झेण पडिनिक्खमइ, जेणेव सुभूमि भागे उज्जाणे-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मघोसस्स अदूरसामते अन्न पाण पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता अण्णपाणं करयलंसि पडिदसइ, तएण से धम्म-घोसाथेरा तस्स सालइस्स जाव नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ जाव नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं गहाय

रुचिमनगारमेवमवदन् यदि खलु त्वं हे देवानुप्रिय। एतद् शारदिकं यावत्-तिक्तकटुकतुम्बकं यावत् स्नेहावगाढम् आहारयसि=आहार करिष्यसि, तर्हि खलु त्वमकाले एव जीविताद् व्यपरोपिष्यसे' एतदशनेन मरणमवश्यं प्राप्स्यसीत्यर्थः। तत्=तस्मात् मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय! एतद् शारदिकं यावदाहारय, मा खलु

निकल कर चंपानगरी के बीचो बीचसे होकर चल दिये सो जहां सुभूमिभाग नाम का उद्यान था वहां आ गये। वहां आकर वे अपने आचार्य धर्मघोष स्थविर के पास आये वहां आकर उन्होंने भिक्षामें प्राप्त हुआ आहार बताया और बताने के बाद उस शारदिक कडवी तुंबडी के यावत् स्नेहावगाढ शाक की गंध से अभिभूत होते हुए उन धर्मघोष आचार्य ने उस शारदिक यावत् स्नेहावगाढ शाक में से एक बिन्दु मात्र को अपने हाथ की हथेली पर रख कर चखा (तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी-जइणं तुमं देवाणुप्पिया। एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि) चखते ही "यह तिक्त हैं क्षार से युक्त है कटुक है अखाद्य एवं अभोज्य है तथा विषभूत है" ऐसा जानकर धर्मरुचि अनगार से उन्होंने ऐसा कहा हे देवानुप्रिय। यदि तुम शारदिक कडवी तुंबडी के बहु संभार संभृत एवं स्नेहावगाढ इस शाक का आहार करोगे-तो निश्चय से विना मृत्यु के

नीकळीने चंपा नगरीनी वच्चेना मार्गथी पसार थता ज्यां सुभूमिभाग नामे उद्यान हतुं त्यां आव्या त्यां आवीने तेओ पोताना आचार्य धर्मघोष स्थविरनी पासे आव्या अने त्यां आवीने तेमणे भिक्षामां प्राप्त थयेला आहारने बताव्यो अने बतावीने ते शारदिक कडवी तूंबडीना सरस वघारेला घी तरता शाकनी सुवासथी अभिभूत थता ते धर्मघोष आचार्ये ते शारदिक सरस वघारेला घी तरता शाकने हथेळी उपर मूकीने चाख्युं

(तित्तगं खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं विसभूयं जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी-जइणं तुमं देवाणुप्पिया! एयं सालइयं जाव नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि)

चाखतां ज "आ तिक्त छे, खारुं छे, कडवुं छे, अखाद्य तेमज अभोज्य छे तथा विषभूत छे" आवुं जाणीने धर्मरुचि अनगारने तेओए आ प्रमाणे कह्युं के हे देवानुप्रिय! जो तमे शारदिक कडवी तूंबडीना सरस वघा[illegible] आहार करशो तो चोक्कस तमे कमोते मरी जशो.

स्याऽकाले एव जीवितात् व्यपरोपयस्=मा विनाशय। तत्=तस्मात् गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! इद शारदिक 'एगतमणावाए' एकान्तेऽनापाते=एकान्ते= निर्जनस्थाने, अनापाते–आपात.–द्वीन्द्रियादिप्राणिनां संयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते= जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिट्ठवेहि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्यत् प्रासुकमेषणीय= द्वाचत्वारिंशद्दोषरहित, शुद्धम्–अशनपानखाद्यस्वाद्यम् प्रतिगृह्य आहारमाहारय॥सू०२॥

मूलम्–तएणं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेण थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्ल

मरजाओगे–(त मा ण तुमं देवाणुप्पिया! इमं सालइय जाव आहारेहि मा ण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि त गच्छण तुम देवाणुप्पिया! इम सालइयं एगतमणावाए अचित्ते थडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि) इसलिये हे देवानुप्रिय! तुम शारदिक कडवी तुंबडी के शाक किसी एकान्त स्थानमें कि जहां द्वीन्द्रियादि प्राणियोंका सचरण नहीं—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परिष्ठापना कर आओ। और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एषणीय ४-४२-दोषो से रहित शुद्ध अशन, पान खाद्य स्वाद्य रूप दूसरे आहार को लेकर भोजन कर लो॥ सू० २॥

(त माणं तुम देवाणुप्पिया! इम सालइय जाव आहारेहि माण तुम अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि त गच्छण तुम देवाणुप्पिया! इम सालइय एग तमणावाए अचित्ते थडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अ न फासुयं एसणिज्ज असणं पाण खाइमं साइम पडिगाहित्ता आहारं आहारेहि)

એથી હે દેવાનુપ્રિય! તમે આ શારદિક તૂબડીના શાકને ખાશો નહિ તેથી અકાળે તમારૂ મરણ પણ થશે નહિ માટે હે દેવાનુપ્રિય! તમે આ આ શારદિક કડવી તૂબડીના શાકની કોઈપણ એકાંત-નિર્જન સ્થાનમા કે જ્યા દ્વિન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનુ સંચરણ હોય નહિ અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એષણીય ૪૨ દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, ખાદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજો આહાર લાવી તે આહાર ગ્રહણ કરો. ॥ સૂત્ર "૨"॥

पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालाइयाओ एगं- विदुग गहेइ गहित्ता थंडिलंसि निसिरइ तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडु-यस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउ-ब्भूयाइ जा जहा य णं पिवीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ तएणं तस्स धम्मरुइस्स अणगा-रस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जाव ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि विंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलियासहस्साइं ववरोविज्जति तं जइ णं अह एय सालइय थडिलसि सव्व निसिरामि तएणं बहूण पाणाणं ४ वहकारणं भविस्सइ, त सेय खलु ममेय सालइय जावगाढ सयमेव आहारेत्तए, मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्तिकट्टु एव संपेहेइ सपेहित्ता मुह-पोत्तिय पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससीसोवरियं काय पमज्जेइ २ तं सालइय तित्तकडुयं बहुनेहावगाढ बिलमिव पन्नगभूतणं अ-प्पाणेणं सव्व सरीरकोट्ठंसि पक्खिवइ, तएणं तस्स धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समाणस्स मुहुत्ततरेण परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहि-यासा, तएण से धम्मरुची अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे आधारणिज्जमितिकट्टु आयारभडग एगंते ठवेइ ठवित्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारगं संथारेइ सथारित्ता दब्भसंथारग दुरुहइ, दुरूहित्ता पुरत्थाभि-मुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं एव वयासी—नमोऽत्थु

स्वाकाले एव जीवितात् व्यपरोपय=मा त्रियस्व । तत्=तस्मात् गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय । इद शारदिक 'एगतमणावाए' एकान्तेऽनापाते=एकान्ते= निर्जनस्थाने, अनापाते-आपातः-द्वीन्द्रियादिप्राणिनां संयोगस्तद्वर्जिते, अचित्ते= जीवरहिते, स्थण्डिले=भूमौ 'परिट्ठवेहि' परिष्ठापय, परिष्ठाप्यान्यत् प्रासुकमेषणीयं= द्वाचत्वारिंशद्दोषरहितं, शुद्धम्-अशनपानखाद्यस्वाद्यम् प्रतिगृह्य आहारमाहारय॥सू०२॥

मूलम्-तएणं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिल्ल

मरजाभोगे-(तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं जाव आहारेहि मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि तं गच्छण तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं एगंतमणावाए अच्चित्ते थंडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडि गाहेत्ता आहारं आहारेहि) इसलिये हे देवानुप्रिय ! तुम शारदिक कडवी तुंबडी के शाक किसी एकान्त स्थानमें कि जहां द्वीन्द्रियादि प्राणियोंको संचरण नहीं—और जो अचित्त हो ऐसी भूमि पर परि- ष्ठापना कर आओ । और परिष्ठापना करके फिर प्रासुक एषणीय ४ ४२-दोषों से रहित शुद्ध अशन, पान खाद्य स्वाद्य रूप दूसरे आहार को लेकर भोजन कर लो ॥ सू० २ ॥

(तं माणं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं जाव आहारेहि माणं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जहि तं गच्छणं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं एग तमणावाए अचित्ते थंडिले पडिट्ठवेहि, परिट्ठवित्ता अन्नं फासुयं एसणिज्जं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिगाहित्ता आहारं आहारेहि)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ શારદિક તૂંબડીના શાકને ખાશો નહિ તેથી અકાળે તમારૂં મરણ પણ થશે નહિ માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ આ શારદિક કડવી તૂંબડીના શાકની કોઈપણ એકાંત=નિર્જન સ્થાનમાં કે જ્યાં દ્વિન્દ્રિયાદિ પ્રાણીઓનું સંચરણ હોય નહિ અને જે અચિત્ત હોય એવી ભૂમિ ઉપર પરિષ્ઠાપના કરી આવો અને પરિષ્ઠાપના કર્યા બાદ પ્રાસુક એષણીય ૪૨ દોષોથી રહિત શુદ્ધ અશન, પાન, ખાદ્ય-સ્વાદ્ય રૂપ બીજો આહાર લાવી તે આહાર ગ્રહણ કરો. ॥ સૂત્ર " ૨ " ॥

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसमारसभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'या' त=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य बिन्दुक पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ' जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो वियुज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपीलिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलापरूपः, कल्पितः=कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः सकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् बिन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि पिपीलिकासहस्राणि 'ववरोविज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो वियुज्यते म्रियन्ते।

स्स बहुनेहावगाढस्स गधेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियओ ववरोविज्जइ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की। प्रतिलेखना करके फिर उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुवडी के शाक में से एक बिन्दुमात्र शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया। तो इतने में ही शारदिक तिक्तकडवी तुवडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गध से वहा हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई। उनमें से जिस कीड़ीने जिस समय उसे खाया वह कीडी उसी समय वहां मर गई। (तएणं तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगमि बिन्दुगमि पक्खित्तमि अणेगाइ पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइ जा जहायण पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ)

અને આવીને તેમણે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનથી વધારે દૂર પણ નહિ અને વધારે નજીક પણ નહિ એવા સ્થાને ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેઓએ તે શારદિક-તિકત કડવી તૂબડીના શાકમાથી એક ટીપા જેટલું શાક લીધુ અને લઈને તે ભૂમિભાગ ઉપર નાખી દીધુ નાખતાની સાથે જ ત્યા શારદિક તિકત-કડવી તૂબડીના ઘી તરતા શાકની સુવાસથી હજારો કીડીઓ એકઠી થઈ ગઈ તેઓમાંથી જે જે કીડીએ તે શાકને ખાધુ હતું તે તે-તરતજ ત્યા મરી ગઈ

तएण तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगमि बिंदुगमि पक्खित्तम्मि अणेगाइ पिपीलिया सहस्साइ

णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोऽत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं, पुव्विंपि णं मए धम्म-घोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिंपि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवाइं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जाव-जीवाए, जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामिति-कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥ सू० ३ ॥

टीका—तत खलु स धर्मरुचिरनगारो धर्मघोषेण स्थविरेणैवमुक्तः सन् धर्म-घोषस्य स्थविरस्यान्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागो-द्यानाद् अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातीसमीपे स्थण्डिलं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य तत =तस्माद् शारदिकात् तिक्तकटुकात् तुम्बकादेकं बिन्दुकं गृह्णाति, गृहीत्वा स्थण्डिले=भूमौ 'निसरइ' निसृजति=परिष्ठापयति। ततः खलु तस्य शारदिकस्य

तएणं से धम्मरुई अणगारे इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ) वे धर्म रुचि अनगार धर्म घोष से इस प्रकार कहे जाने पर धर्मघोष के पास से चले आये (पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूर सामंते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एगं बिंदुगं गहेइ, गहित्ता थंडिलंसि निसिरइ, तो णं तस्स सालइयस्स तित्त कडुय-

तएणं से धम्मरुई अणगारे इत्यादि

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी

(से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ)

ते धर्मरुचि अनगार धर्मघोषनी आ वात सांभळीने तेमनी पासेथी आवता रह्या

(पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिलं पडिले-हेइ, पडिलेहित्ता तओ सालइयाओ एगं बिंदुगं गहेइ, गहित्ता थंडिलंसि निसरइ, तो णं तस्स सालइयस्स तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स गंधेणं ... पिपीलिगा

तिक्तकटुकस्य तुम्बकस्य बहुसंभारसंभृतस्य स्नेहावगाढस्य गन्धेन बहूनि पिपीलिका-सहस्राणि प्रादुर्भूतानि, या यथा च 'ण' त=शारदिकस्य तिक्तकटुक तुम्बकस्य बिन्दुकं पिपीलिका आहरति, सा तथा अकाले एव "जीवियाओ ववरोविज्जइ" जीविताद् व्यपरोप्यते=प्राणेभ्यो वियुज्यते 'म्रियते' इत्यर्थः, ततः खलु=पिपीलिकाविराधनमवलोक्य धर्मरुचेरनगारस्यायमेतद्रूपः=वक्ष्यमाणस्वरूपः आध्यात्मिकः=५ आत्मगतः चिन्तितः=स्मरणरूपः, प्रार्थितः=अभिलापरूपः, कल्पितः=कल्पनारूपः, मनोगतः=अन्तः प्रकाशितः संकल्पो विचारः समुदपद्यत यदि तावदस्य शारदिकस्य यावत्-तिक्त तुम्बकस्य एकस्मिन् बिन्दुके प्रक्षिप्ते सति, अनेकानि पिपीलिकासहस्राणि 'ववरोविज्जति' व्यपरोप्यन्ते=प्राणेभ्यो वियुज्यते म्रियन्ते।

स्स बहुनेहावगाढस्स गंधेण बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहा य ण पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियओ ववरोविज्जइ) और आकर के उन्होंने सुभूमिभाग उद्यान से न अतिदूर और न अति समीप भूमि की प्रतिलेखना की। प्रतिलेखना करके फिर उन्होंने उस शारदिक-तिक्तकटु-तुबडी के शाक में से एक बिन्दुमात्र शाक लिया-और लेकर उसे भूमि पर डाल दिया। तो इतने में ही शारदिक तिक्तकडवी तुंबडी के उस बहुस्नेहावगाढ शाक की गंध से वहां हजारों कीड़िया एकट्ठी-एकत्रित-हो गई। उनमें से जिस कीड़ीने जिस समय उसे खाया वह कीडी उसी समय वहां मर गई। (तएणं तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि बिन्दुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलिया

सहस्साणि पाउब्भूयाइं जा जहा य ण पिपीलिका आहारेइ सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ)

અને આવીને તેમણે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનથી વધારે દૂર પણ નહિ અને વધારે નજીક પણ નહિ એવા સ્થાને ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેઓએ તે શારદિક-તિકત કડવી તૂંબડીના શાકમાંથી એક ટીપા જેટલું શાક લીધુ અને લઈને તે ભૂમિભાગ ઉપર નાખી દીધું નાખતાની સાથે જ ત્યાં શારદિક તિકત-કડવી તૂંબડીના ઘી તરતા શાકની સુવાસથી હજારો કીડીઓ એકઠી થઈ ગઈ તેઓમાંથી જે જે કીડીએ તે શાકને ખાધું હતું તે તે તરતજ ત્યાં મરી ગઈ

तएणं तस्स धम्मरुइयस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५ जइ ताव इमस्स सालइयस्स जाव एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तम्मि अणेगाइं पिपीलिया सहस्साइं

तत्=तस्माद् यदि खल्वहमेतद् शारदिक 'थंडिलंसि' स्थण्डिले=भूमौ सर्व 'निसिरामि' निसृजामि=परिष्ठापयामि, 'तोण' तर्हि खलु बहूनां प्राणानां= प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूताना जीवाना तत्=तस्माद् श्रेयः=श्रेयस्करं खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकालाबुकं यावत्-स्नेहावगाढ स्वयमेव आहारयितु=भोक्तुम्, ममैव 'एएण' एतेन=तिक्ततुम्बकाहारेण 'सरीरेण' शरीर खलु 'णिज्जाउ' निर्यातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'तिकट्टु' इति कृत्वा इति मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्याण कर्तुं

सहस्साइं ववरोविज्जंति, त जइणं अह एय सालइय थडलंसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं ४ वह कारणं भविस्सइ त सेय खलु ममेय सालइय जाव गाढ सयमेव आहारेत्तए) इस तरह पिपीलिकाओं की विराधना देखकर धर्मरुचि अनगार को इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प-विचार हुआ-यहां संकल्पके चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित इन तीन विशेषणों को ग्रहण कर ने के निमित्त सूत्र में ५ का अंक दिया है। जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबडी की शाक की एक बिन्दु मात्र जमीन पर डालने पर अनेक पिपीलिका सहस्र प्राणों से वियुक्त हो जाती हैं तो मैं जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबी के शाकको पूरेरूपमें जमीन पर परिष्ठापित कर दूंगा तो अनेक प्राणियों४ के वह विराधना का कारण होगा इसलिये मुझे उचित है कि मैं ही इस शारदिक तिक्त कडवी तुंबडी के इस बहुत मसालेदार एवं स्नेहावगाढ बहुत घृतसे युक्त शाक को स्वयं आहार कर जाऊं। (मम चेव एएण सरीरेण णिज्जाउत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता मुहपोत्तिय २

ववरोविज्जंति, त जइणं अह एय सालइय थडलंसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं४वह कारणं भविस्सइ त सेय खलु ममेय सालइय जाव गाढ सयमेव आहारेत्तए

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના જોઈને ધર્મરુચિ અનગારને આ જાતને આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો. અહીં સંકલ્પના ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમાં ૫ નો અંક આપવામાં આવ્યો છે-કે જ્યારે આ શારદિક તિકત કડવી તૂંબડીના શાકના ફક્ત એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હજારો પ્રાણોથી વિયુક્ત થઈ જાય છે ત્યારે હું શારદિક કડવી તૂંબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે એથી મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું આ શારદિક તિકત કડવી તૂંબડીના આ સરસ મસાલાવાળા અને ઘી તરતા શાકને પોતે જ ખાઈ જાઉં

निश्चिनुते। संप्रेक्ष्य-'मुहपोत्तिय' मुखपोत्तिकां=सदोरकमुखवस्त्रिकां रजोहरणं च प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य 'ससीसोवरिय' सशीर्षोपरिकं=चरणतलाद् मस्तकोपरिभागपर्यन्तं कायं=शरीरं, 'पमज्जेइ' प्रमार्जयति, प्रमार्ज्य तद् शारदिकं तिक्तकटुकं बहुसंभारसंभृतं स्नेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना सर्वं शरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति मुखस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहितमाहारयतीत्यर्थः। ततः खलु तस्य धर्मरुचेस्तद्

पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ पमज्जित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवइ) मेरा ही शरीर इस तिक्त कटु तुंबडी के आहार से नाश होवे इस प्रकार उन्होंने अपने मनमें बार २ सोचा सोचकर अपने शरीर के निर्याण करने का उन्होंने निश्चय कर लिया। निश्चय करने के अनन्तर सदोरक मुखवस्त्रिका एवं रजोहरण इनकी उन्होंने प्रतिलेखना करके फिर वे चरण तल से लेकर मस्तकोपरिभाग पर्यन्त तक के समस्त अपने शरीर की प्रमार्जना करके उन्होंने उस शारदिक तिक्त कडवी तुंबडी के बहुत मसाला से युक्त एवं स्नेहावगाढ बहुत घी से युक्त समस्त शाक का आहार कर लिया-जिस प्रकार सर्प जब बिल में प्रविष्ट होता है तब बिल के दोनों पार्श्वभागों को स्पर्श नहीं करता हुआ उसमें सीधा प्रविष्ट हो जाता है-उसी तरह वह शाक रूप सर्प भी मुख रूप बिल के दोनों पार्श्व भागों को स्पर्श नहीं करता हुआ सीधा गले से होकर पेट में चला गया। (तएणं तस्स

(मम चेव एएणं सरीरेणं णिज्जाउत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता मुहपोत्तियं २ पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता ससिसोवरियं कायं पमज्जेइ पमज्जित्ता तं सालइयं तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठंसि पक्खिवइ)

મારૂં શરીર જ આ તિકત કડવી તૂંબડીના આહારથી નષ્ટ થાય આ રીતે તેઓ પોતાના મનમાં વારવાર વિચાર કર્યો વિચારીને પોતાના શરીરને નષ્ટ કરવાનો તેમણે મક્કમ વિચાર કર્યો બાદ તેઓ સદોરક મુખવસ્ત્રિકા અને રજો-હરણની તેમણે પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેમણે પગના તળિયાથી માંડીને મસ્તક સુધીના પોતાના આખા શરીરની પ્રમાર્જના કરી ત્યારે તેમણે તે શારદિક તિકત કડવી તૂંબડીના સરસ મસાલાવાળા અને ઉપર ઘી તરતા બધા શાકનો આહાર કરી લીધો જેવી રીતે સાપ જ્યારે દરમાં પ્રવેશે છે ત્યારે દરના બંને પાર્શ્વભાગનો સ્પર્શ કર્યા વગર તેમાં સીધો પ્રવિષ્ટ થઈ જાય છે તેમજ તે શાક રૂપી સાપ પણ મુખ રૂપી દરના બંને પાર્શ્વભાગને સ્પર્શ્યા વગર સીધું ગળામાં થઈને પેટમાં જતું રહ્યું

तत्=तस्माद् यदि खल्वहमेतत् शारदिकं 'थंडिलसि' स्थण्डिले=भूमौ सर्व 'निसिरामि' निक्षिपामि=परिष्ठापयामि, 'तोणं' तर्हि खलु बहूनां प्राणानां= प्राणाः सन्त्येषामिति प्राणाः=प्राणवन्तस्तेषां, तथाभूतानां जीवानां तत्=तस्माद् श्रेयः=श्रेयस्करं खलु ममेदं शारदिकं तिक्तकटुकालाबुकं यावत्-स्नेहावगाढं स्वयमेव आहारयितुं=भोक्तुम्, ममैव 'एएण' एतेन=तिक्ततुम्बकाहारेण 'सरीरेणं' शरीरं खलु 'णिज्जाउ' निर्यातु=निर्गच्छतु नश्यतु 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा इति मनसि निधाय एवम्=अनेन प्रकारेण संप्रेक्षते=पुनः पुनर्विचारेण शरीरनिर्याणं कर्तुं

सहस्साइं ववरोविज्जंति, तं जइणं अहं एयं सालइयं थंडलसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं ४ वह कारणं भविस्सइ तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए) इस तरह पिपीलिकाओं की विराधना [देखकर] धर्मरुचि अनगार को इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प-विचार हुआ-यहां संकल्पके चिन्तित, प्रार्थित, कल्पित इन तीन विशेषणों को ग्रहण कर ने के निमित्त सूत्र में ५ का अंक दिया है। जब इस शारदिक तिक्त कडवी तुवडी की शाक की एक बिन्दु मात्र जमीन पर डालने पर अनेक पिपीलिका सहस्त्र प्राणों से वियुक्त हो जाती हैं तो मैं जब इस शारदिक तिक्त कटवी तुंबी के शाकको "पूरेरूपमें जमीन पर परिष्ठापित कर दूंगा तो अनेक प्राणियों ४ के वह विराधना का कारण होगा इसलिये मुझे उचित है कि मैं ही इस शारदिक तिक्त कडवी तुवडी के इस बहुत मसालेदार एवं स्नेहावगाढ बहुत घृतसे युक्त शाक को स्वयं आहार कर जाऊँ। (मम चेव एएण सरीरेण णिज्जाउत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता मुहपोत्तियं २

ववरोविज्जंति, तं जइणं अहं एयं सालइयं थंडलसि सव्वं निसिरामि तएणं बहुणं पाणाणं४वह कारणं भविस्सइ तं सेयं खलु ममेयं सालइयं जाव गाढं सयमेव आहारेत्तए

આ પ્રમાણે કીડીઓની વિરાધના જોઈને ધર્મરુચિ અનગારને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ-વિચાર-ઉદ્ભવ્યો. અહીં સંકલ્પના ચિંતિત, પ્રાર્થિત, કલ્પિત આ ત્રણે વિશેષણોના ગ્રહણ માટે સૂત્રમાં ૫ નો અંક આપવામાં આવ્યો છે-કે જ્યારે આ શારદિક તિકત કડવી તૂબડીના શાકના ફક્ત એક ટીપાને પૃથ્વી ઉપર નાખવાથી ઘણી કીડીઓ હજારો પ્રાણોથી વિયુકત થઈ જાય છે ત્યારે હું શારદિક કડવી તૂબડીના બધા શાકને પૃથ્વી ઉપર નાખીશ ત્યારે તે અનેક પ્રાણીઓ ૪ ની વિરાધનાનું કારણ થશે એથી મને એજ યોગ્ય લાગે છે કે હું આ શારદિક તિક્ત કડવી તૂબડીના આ સરસ મસાલાવાળા અને ઘી તરતા શાકને પોતે જ ખાઈ જાઉં

मित्यर्थः, एकान्ते स्थापयति, स्थापयित्वा स्थण्डिलं=संस्तारकभूमिं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य दर्भसंस्तारकं 'संथारेइ' संस्तृणाति=आस्तृत करोति संस्तीर्य, दर्भसंस्तारकं दूरोहति=आरोहति, दूरुह्य पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिगभिमुखः, 'संपलियंकनिसन्ने' संपर्यङ्कनिषण्णः=पद्मासनसन्निविष्टः, करतलपरिगृहीत=संयोजितहस्ततलद्वय मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=स्वमनस्युक्तवान्,

"नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं,—

—णमोऽत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं" नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः स्थविरेभ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि दीक्षाग्रहणकालेऽपि खलु मया धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके सर्वः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातो यावज्जीवं 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन-सर्वो मृषावादः सर्वमदत्तादानं सर्वं मैथुनं च प्रत्याख्यातम्, तथा-सर्वः परिग्रहः प्रत्याख्यातः। इदानीमपि खलु अहं तेषामेव भगवतामन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिग्रहं प्रत्याख्यामि याव

प्रतिलेखना की प्रतिलेखना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्भसंस्तारक को बिछाया-बिछाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा की ओर मुखकर पर्यङ्कासन से उस पर विराजमान हो गये विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनो हाथों को जोड़ा और मस्तक पर उसकी अंजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन वे कहने लगे-(नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विंपि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे इयाणिं पि अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतिय सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव

મૂકીને-વસ્ત્ર પાત્ર વગેરેને એકાંતમાં મૂકી દીધાં. મૂકયા બાદ તેઓએ સંસ્તારક ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી. પ્રતિલેખના કરીને તેની ઉપર તેમણે દર્ભ સંસ્તારક કર્યો. દર્ભસંસ્તારક પાથરીને તેઓ તેની ઉપર બેસીને પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી તેની ઉપર વિરાજમાન થઈ ગયા. વિરાજમાન થઈને તેઓએ પોતાના બંને હાથોને જોડયા અને તેમની અંજલી બનાવીને મસ્તક ઉપર મૂકી અને પોતાના મનમાં જ કહેવા લાગ્યા.

(नमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे [illegible] पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिं पि अहं तेसिं चेव

शारदिक यावत्-स्नेहावगाढम् आहारितस्य=भुक्तवतः, सतो मुहूर्तान्तरेण परिण-म्यमाने=आहारे परिणाम प्राप्ते सति शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, सा कीदृशी ? त्याह-उज्ज्वला=तीव्रा, यावत् ' दुरहियासा ' दुरध्यासा=दुरभिसहा-असह्येत्यर्थः । ततः खलु स धर्मरुचिरनगारो ऽस्थामा, हीनपराक्रमः, अबलः=मनोबलरहितः अवीर्यः=हतोत्साहः अपुरुषकारपराक्रमः,=पुरुषार्थहीनः, ' अधारणिज्जमितिकट्टु ' अधार णीयमिति कृत्वा-धारयितुमशक्यमिदं शरीरमितिमनसि विचार्य ' आयारभंडग ' आचारभाण्डकम्-आचाराय आचारपालनार्थं माण्डकम्=भाण्डोपकरणं वस्त्रपात्रादिक

धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्त तरेण परिणममाणसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुर-हियासा-तएण से धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिस क्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु अयारभडग एगते ठवेइ, ठवि त्ता थडिल्ल पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता दब्भसथारग, दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने कर-यल परिग्गहिय एवं वयासी) शाक उन धर्मरुचि अनगार के पेट में पहुँचते ही एक मुहूर्त के बाद जब वह पचने लगा तब उनके शरीर में उज्ज्वल यावत् दुरधिध्यास वेदना प्रकट हुई । इस से वे धर्मरुचि अनगार पराक्रम से हीन, मनोबल से विहिन, हतोत्साह होकर पुरु षार्थ रहित बन गये । यह शरीर अब धारण करने से अशक्य हो रहा है ऐसा जब उन्होंने प्रतीत होने लगा तब उन्होंने अपने आचारभांडक -पंचविध आचार पालने के लिये जो – वस्त्र – पात्रादिक थे उनको -एकान्त में रख दिया-रखकर फिर उन्हों ने सस्तारकभूमि की

(तएण तस्स धम्मरुइस्स त सालइय जाव नेहावगाढ आहारियस्स समा णस्स मुहुत्ततरेण परिणममाणसि सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा–तएण से धम्मरूई अणगारे अथामे, अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपर क्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु आयारभडग एगते ठवेइ, ठवित्ता थडिल्ल पडि लेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसथारग सथारेइ, सथारित्ता दब्भसथारग दुरुहइ, दुरुहित्था पुरत्थाभिमुहे सपलियकनिसन्ने करयलपरिग्गहिय एव वयासी)

શાક તે ધર્મરુચિના પેટમા પહોચતા જ એક મુહૂર્ત પછી જ્યારે તેનુ પાચન શરૂ થયુ ત્યારે તેમના શરીરમા ઉજ્વલ યાવત્ દુરધિધ્યાસ વેદના થવા માંડી તેથી તે ધર્મરુચિ અનગાર પરાક્રમ વગર, મનોબળ વગર હતોત્સાહી થઈને પુરુષાર્થ વગર બની ગયા હવે આ શરીર ટકવુ અશકય થઇ પડ્યુ છે એવી જ્યારે તેઓને પ્રતીતિ થવા લાગી ત્યારે તેમણે પે આચાર

मित्यर्थः, एकान्ते स्थापयति, स्थापयित्वा स्थण्डिलं=संस्तारकभूमिं प्रतिलेखयति, प्रतिलेख्य दर्भसंस्तारकं 'संथारेइ' संस्तृणाति=आस्तृतं करोति संस्तीर्य, दर्भसंस्तारकं दूरोहति=आरोहति, दूरुह्य पौरस्त्याभिमुखः=पूर्वदिगभिमुखः, 'संपलियंकनिसन्ने' संपल्यङ्कनिषण्णः=पद्मासनसंनिविष्टः, करतलपरिगृहीत=संयोजितहस्ततलद्वयं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्=स्वमनस्युक्तवान्,

" नमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं,—

—णमोऽत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं "

नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो भगवद्भ्यो यावत् संप्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु खलु धर्मघोषेभ्यः स्थविरेभ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि दीक्षाग्रहणकालेऽपि खलु मया धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यातो यावज्जीवं 'यावत् परिग्रहः' अत्र यावच्छब्देन—सर्वो मृषावादः सर्वमदत्तादानं सर्वं मैथुनं च प्रत्याख्यातम्, तथा—सर्वः परिग्रहः प्रत्याख्यातः। इदानीमपि खलु अहं तेषामेव भगवतामन्तिके सर्वं प्राणातिपातं प्रत्याख्यामि यावत् परिग्रहं प्रत्याख्यामि याव

प्रतिलेखना की प्रतिलेखना करके फिर उसके ऊपर उन्होंने दर्भसंस्तारक को बिछाया-बिछाकर फिर वे उसपर बैठकर फिर पूर्वदिशा की ओर मुखकर पर्यङ्कासन से उस पर विराजमान हो गये विराजमान होकर उन्होंने अपने दोनों हाथों को जोड़ा ओर मस्तक पर उसकी अंजलि रखकर इस प्रकार अपने मन ही मन में कहने लगे— (नमोत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं, णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विंपि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव परिग्गहे इयाणिं पि अहं तेसिंचेव भगवंताणं अंतिय सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव

આડને-વસ્ત્ર પાત્ર વગેરેને એકાંતમાં મૂકી દીધા મૂકયા બાદ તેઓએ સંસ્તારક ભૂમિની પ્રતિલેખના કરી પ્રતિલેખના કરીને તેની ઉપર તેમણે દર્ભ સંસ્તારક કર્યો દર્ભસંસ્તારક પાથરીને તેઓ તેની ઉપર બેસીને પૂર્વદિશા તરફ મુખ કરીને પર્યંકાસનથી તેની ઉપર વિરાજમાન થઈ ગયા વિરાજમાન થઈને તેઓએ પોતાના બંને હાથોને જોડયા અને તેમની અંજલી બનાવીને મસ્તક ઉપર મૂકી અને પોતાના મનમાં જ કહેવા લાગ્યા

(नमोत्थु णं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव जीवाए जाव परिग्गहे, इयाणिं पि अहं तेसिं चेव

ज्जीवं, यथा-स्कन्दकः=स्कन्दकनामानगारो यावच्चरमैः-चरमश्वासैः, 'वोसिरामित्ति कट्टु' व्युत्सृजामि=शरीरं परित्यजामि' इति कृत्वा 'आलोइय पडिक्कंते' आलोचितप्रतिक्रान्तः=पूर्वकृतं यदतीचारजातं तदालोचितं, पुनरकरणप्रतिज्ञया प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्तः=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरणं प्राप्तः ॥सू०३॥

मूलम्-तएणं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरं गयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी

परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहंत भगवंतो के लिये मेरा नमस्कार हो-धर्मोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मघोषस्थविर के लिये मेरा नमस्कार हो मैंने पहिले दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मघोष स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अदत्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान कर दिया है। अब भी मैं उन्हीं भगवतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूं। यावत् अन्तिम श्वासोतक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूं। इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रतिक्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू०३॥

भगवंताणं अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए)

યાવત્ સિદ્ધગતિ મેળવેલા અરિહંત ભગવંતોના માટે મારા નમસ્કાર છે ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે પહેલાં દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મે તે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાતો, સમસ્ત મૃષાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત પરિગ્રહોનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું અત્યારે પણ તે જ ભગવંતોની સામે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનું યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ જીવનના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરૂ છુ આ રીતે પોતાના મનમાં જ કહીને તે ધર્મ-રુચિ અનગાર આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને આત્મસમાધિમાં તલ્લીન થતા મરણ પામ્યા ॥ સૂત્ર " ૩ " ॥

-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमण-पारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसरणट्ठयाए बहिया निग्गए चिरगए त गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्म-रुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह, तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनि-क्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिल्लं तेणेव उवागच्छंति उवा-गच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति पासित्ता हा हा अहो अकज्जमितिकट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति करित्ता धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता गमणा-गमणं पडिक्कमंति पडिक्कमित्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवा०२ जाव इह हव्वमागया, तं कालगए णं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए, तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी –एवं खलु अज्जो ! मम अंतेवासी धम्मरुची नाम अणगारे

च्जीव, यथा-स्कन्दकः=स्कन्दकवत् यावच्चरमैः-चरमैः उच्छ्वासैः, 'वोसिरामितिकट्टु' व्युत्सृजामि=शरीरं परित्यजामि' इति कृत्वा 'आलोइय पडिक्कते' आलोचितप्रतिक्रान्तः=पूर्वकृतं यदतीचारजातं तदालोचितं, पुनरकरणप्रतिज्ञया प्रतिक्रान्तं येन स तथाभूतः समाधिप्राप्तः=आत्मसमाधियुक्तः कालगतः=मरणं प्राप्तः ॥सू०३॥

मूलम्–तएणं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरगयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी

परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइय पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अरिहंत भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो–धर्मोपदेशक मेरे धर्माचार्य श्री धर्मघोषस्थविर के लिये मेरी नमस्कार हो मैंने पहिले दीक्षा ग्रहण के समय उन धर्मघोष स्थविर के समीप समस्त प्राणातिपात, समस्त मृषावाद, समस्त अदत्तादान, समस्त मैथुन तथा समस्त परिग्रह जीवन पर्यन्त प्रत्याख्यान कर दिया है। अब भी मैं उन्हीं भगवंतो के समक्ष समस्त प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रह का यावज्जीव प्रत्याख्यान करता हूँ। यावत् अन्तिम श्वासोतक स्कन्दककी तरह इस शरीरका परित्याग करता हूँ। इस प्रकार मन ही मन कह कर वे धर्मरुचि अनागार आलोचित प्रतिक्रान्त बनकर आत्मसमाधिमें तल्लीन होते हुए मरण प्राप्त हुवे ॥सू०३॥

भगवंताणं अंतिय सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं पच्चक्खामि जाव जीवाए जहा खंदओ जाव चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामित्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए)

યાવત્ સિદ્ધગતિ મેળવેલા અરિહંત ભગવંતોના માટે મારા નમસ્કાર છે ધર્મોપદેશક મારા ધર્માચાર્ય શ્રી ધર્મઘોષ સ્થવિરના માટે મારા નમસ્કાર છે પહેલા દીક્ષા ગ્રહણ કરતી વખતે મેં તે ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાતો, સમસ્ત મૃષાવાદો, સમસ્ત અદત્તાદાનો સમસ્ત મૈથુનો તથા સમસ્ત પરિગ્રહોનું પ્રત્યાખ્યાન કર્યું હતું અત્યારે પણ તે જ ભગવંતોની સામે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત યાવત્ સમસ્ત પરિગ્રહોનું યાવજ્જીવ પ્રત્યાખ્યાન કરું છું જીવનના છેલ્લા શ્વાસ સુધી સ્કન્દકની જેમ આ શરીરનો ત્યાગ કરું છું આ રીતે પોતાના મનમાં જ કહીને તે ધર્મ-રુચિ અનગાર આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને આત્મસમાધિમાં તલ્લીન થતા મરણ પામ્યા ॥ સૂત્ર "૩" ॥

शब्दयित्वा, एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः=उक्तवन्तः, एव खलु हे देवानुप्रियाः! धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकस्य तिक्तकटुकतुम्बकस्य यावत्-स्नेहावगाढस्य 'णिसिरणट्ठयाए' निसृजनार्थं बहिर्निर्गतश्चिरगतः=तस्मिन् गते सति बहुतरः कालो व्यतीत इत्यर्थः। तत्-तस्माद् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं=सम्यगन्वेषणं कुरुत। तत खलु ते श्रमणा निर्ग्रन्था यावत् प्रतिशृण्वन्ति=तथा करिष्यामीत्युक्त्वा तामाज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनि

वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! धम्मरुइयस्स अणगारस्स सव्वओ समंता गवेसणं करेह) श्रमण निर्ग्रन्थों को बुलाया। बुलाकर उनोंने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! धर्मरुचि अनगार आज मासखमण की पारणा के दिन शारदिक तिक्त कडुवी तुम्बडी का बहु सभार सभृत शाक कि जिसके ऊपर घृत तैर रहा था लाये थे-मैंने उसे परिष्ठापन के लिये उन्हें आज्ञा दिया सो वे उसे परिष्ठापन करने के लिये यहां से बाहिर चले गये-गये उन्हें बहुत देर हो गई-वे अभीतक नहीं आये इसलिये हे देवानुप्रियो! तुम लोग जाओ और धर्मरुचि अनागार की सब तरफ चारों दिशाओं मे मार्गणा एव गवेषणा करो। (तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

(समणे निग्गंथे सद्दावेति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गयाए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह)

શ્રમણુ નિર્ગ્રંથોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિયો! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણુની પારણાના દિવસે શારદિક તિક્ત કડવી તૂબડીનુ સરસ વઘારેલુ ઉપર ઘી તરતું શાક આહાર માટે લાવ્યા હતા તેઓને મે પ્રતિષ્ઠાપાનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન માટે અહીંથી બહાર ગયા છે તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે, હજી તેઓ આવ્યા નથી એથી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો જાઓ અને ધર્મરુચિ અનગારની ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો

(तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

पगइभद्दए जाव विणीए मासं मासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहं अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी जाव निसीरह, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखमाणे विहरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ तं धिरत्थु णं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं जाव गाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएणं त' इत्यादि । ततः खलु=इतश्च ते धर्मघोषाः स्थविरा धर्मरुचिमनगारं चिरं गतं बहुकालेन गतं ज्ञात्वा श्रमणान् निर्ग्रन्थान् शब्दयति,

---

तएणं ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन-धर्मघोष स्थविरने (धम्मरुइं अणगारं) धर्मरुचि अनगार को (चिरगयं जाणित्ता) बहुत देर के गये हुए जानकर (समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं

तएणं ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

ટીકાર્થ-(તએણં) ત્યારબાદ (તે ધમ્મઘોસા થેરા) તે ધર્મઘોષ સ્થવિરે (ધમ્મરુઇ અણગારં) ધર્મરુચિ અનગારને (ચિરગયં જાણિત્તા) બહુ વખતથી બહાર ગયેલા જાણીને

शब्दयित्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः=उक्तवन्तः, एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकस्य तिक्तकटुकतुम्बकस्य यावत्-स्नेहावगाढस्य 'णिसिरणट्ठयाए' निसृजनार्थं बहिर्निर्गतश्चिरगतः=तस्मिन् गते सति बहुतरः कालो व्यतीत इत्यर्थः । तत्-तस्माद् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! धर्मरुचेरनगारस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषणं=सम्यगन्वेषणं कुरुत । तत खलु ते श्रमणा निर्ग्रन्था यावत् प्रतिशृण्वन्ति=तथा करिष्यामीत्युक्त्वा तामाज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनि

वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइयस्स अणगारस्स सव्वओ समंता गवेसणं करेह) श्रमण निर्ग्रन्थों को बुलाया। बुलाकर उन्होंने ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! धर्मरुचि अनगार आज मासखमण की पारणा के दिन शारदिक तिक्त कडुवी तुंबडी का बहु संभार संभृत शाक कि जिसके ऊपर घृत तर रहा था लाये थे-मैंने उसे परिष्ठापन के लिये उन्हें आज्ञा दिया सो वे उसे परिष्ठापन करने के लिये यहां से बाहिर चले गये-गये उन्हें बहुत देर हो गई-वे अभीतक नहीं आये इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और धर्मरुचि अनागार की सब तरफ चारों दिशाओं में मार्गणा एवं गवेषणा करो । (तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

(समणे निग्गंथे सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइयस्स जाव गाढस्स णिसिरणट्ठयाए बहिया निग्गयाए-चिरगए, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेह)

શ્રમણ નિર્ગ્રંથોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિયો ! ધર્મરુચિ અનગાર આજે માસ ખમણની પારણાના દિવસે શાર દિક તિક્ત કડવી તૂંબડીનું અરસ વધારેલું ઉપર ઘી તરતું ગાઢ આહાર માટે લાવ્યા હતા તેઓને મેં પ્રતિષ્ઠાપનની આજ્ઞા આપી છે, તેઓ પરિષ્ઠાપન માટે અહીંથી બહાર ગયા છે તેઓને બહાર ગયાને બહુ જ વખત થયો છે, હજી તેઓ આવ્યા નથી એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને ધર્મરુચિ અનગારની ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરો

(तएणं ते समणा निग्गंथा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता धम्मघोसाणं

पगइभद्दए जाव विणीए मासं मासेणं अणिक्खित्तेणं तवो· कम्मेणं जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे, तएणं सा नागसिरी माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमितिकट्टु जाव कालं अणवकंखमाणे वि- हरति, से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नप· रियागं पाउणित्ता आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं सोहम्मजाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देव· त्ताए उववन्ने, तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं साग· रोवमाइं ठिई पन्नत्ता, तत्थ धम्मरुइस्सवि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ त विरत्थुणं अज्जो ! णागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिं बोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मास- खमणपारणगंमि सालइएण जाव गाढेण अकाले चेव जीवि- याओ ववरोविए ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएण ते ' इत्यादि । ततः खलु=इतश्च ते धर्मघोषाः स्थविरा धर्मरुचिमनगारं चिर गत बहुकालतो गतं ज्ञात्वा श्रमणान् निर्ग्रन्थान् शब्दयति,

---

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते धम्मघोसा थेरा) उन-धर्मघोष स्थविरने(धम्मरुइ अणगारं) धर्मरुचि अनगार को (चिरगय जाणित्ता) बहुत देर के गये हुए जानकर (समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव

तएण ते धम्मघोसा थेरा इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) त्यारબાદ (ते धम्मघोसा थेरा) ते धर्मघोष स्थविरे (धम्म रुइ अणगारं) धर्मरुचि અનગારને (चिरगय जाणित्ता) બહુ વખતથી બહાર ગયેલા જાણીને

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाणप्रत्ययिकं=परिनिर्वाण मरणं तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव तदेव प्रत्ययोहेतुर्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमित्यर्थः कायोत्सर्ग कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डकं=वस्त्रपात्रादिकं गृह्णन्ति,गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति,उपागत्य गमनागमनम्=ईर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् ! वय युष्माकमन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गता', प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वहीं पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायोत्सर्ग किया । (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने उन धर्मरुचि अनागार के आचार भाडको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा लिया-उठाकर वे जहा धर्मघोष स्थविर थे-वहा आये (उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे-तुब्भ अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेण धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थंडिल्ले तेणेव उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगण्ण भन्ते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभडए – तएणं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गंथे निग्गथीओ य सद्दावेति-सद्दावित्ता एव वयासी) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया । प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् ! हम लोग आपके पास से यहा से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

રીતે કહીને તેમણે ત્યાજ મૃત શરીરને વોસરાવા રૂપ કાયોત્સર્ગ કર્યો (કરિત્તા૦ ઉવાગચ્છ૦) કાયોત્સર્ગ કરીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના આચાર ભાંડકોને તેમજ વસ્ત્રોને લઈ લીધા અને લઈને જ્યા ધર્મઘોષ સ્થવિર હતા ત્યા આવ્યા (उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे तुब्भ अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगएणं भत्ते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए तएणं त धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गथे निग्गथीओ य सद्दावेंति-सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યા આવીને તેમણે ઈર્યાપથિક પ્રતિક્રમણ કર્યું પ્રતિક્રમણ કરીને તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે સ્વામિન્ ! અમે લોકો અહીંથી આપની પાસેથી ગયા અને જઈને સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનની ચોમેર ફરતા ફરતા ધર્મરુચિ

कम्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वत समन्तात् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं= स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य कालकरणस्थान तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेर- नगारस्य शरीरक 'निप्पाण' निष्प्राण=प्राणरहित, 'निच्चेट्ठ' निश्चेष्ट=चेष्टार- हितं 'जयविप्पजढ' जीव विप्रमुक्त=जीवहीन पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा ! हा ! अहो ! इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्ट जात यद्धर्मरुचिनगारी मृतः, 'तिकट्टु'

थेराण अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स- अणगारस्स सव्वाओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थंडिल्ल तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरग निप्पाण निच्चेट्ठ जीयविप्पजढ पासति, पासित्ता हा हा अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परि निव्वाणवत्तिय काउस्सग्ग-करें ति)
उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया । और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोप स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब प्रकार से मार्गणा गवेषणा की । इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था- वहां आये वहां आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगार के शरीर को प्राण- रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा । देखकर के सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बडा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया ।

थेराण अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व ओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थडिल्ल तेणेव उवागच्छति उवाग- च्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स, सरीरग निप्पाणं निच्चेट्ठ जीव विप्पजढ पासति, पासित्ता हाहा अकज्जमित्ति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाण वत्तिय काउ स्सग्ग करेंति)

તે નિર્ગ્રંથ શ્રમણોએ પોતાના ધર્માચાર્યની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસેથી નીકળીને ધર્મરુચિ અનગારની બધી રીતે ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરવા લાગ્યા આ રીતે માર્ગણ ગવેષણ કરતા જ્યા તે સ્થડિલ હતુ-ધર્મરુચિ અનગારના મૃત્યુનુ સ્થાન હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ ધમરુચિ અનગારના શરીરને નિષ્પ્રાણ નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ જોયુ આ દૃશ્ય જોતાની સાથે જ તેઓના મુખથી હાય ! હાય ! ના ખેદ સૂચક શબ્દો નીકળી પડયા તેઓ કહેવા લાગ્યા કે આ બહુ જ ખોટુ થયુ છે-ધર્મરુચિ અનગારનુ ગયુ છે. આ

इतिकृत्वा-इतिखेद कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्य 'परिनिव्वाणवत्तिय' परिनिर्वाण-प्रत्ययिकं=परिनिर्वाण मरण तत्र यन्मृतशरीरस्य परिष्ठापन तदपि परिनिर्वाणमेव तदेव प्रत्ययोहेतुर्यस्य स परिनिर्वाणप्रत्ययिकः त तथा, मृतपरिष्ठापननिमित्तकमित्यर्थः कायोत्सर्गं कुर्वन्ति, कृत्वा धर्मरुचेरनगारस्याऽऽचारभाण्डक=वस्त्रपात्रादिकं गृह्णन्ति,गृहीत्वा यत्रैव धर्मघोषाः स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति,उपागत्य गमनागमनम्=ईर्यापथिकीं प्रतिक्रामन्ति, प्रतिक्राम्यैवमवादिषुः एव खलु हे स्वामिन् ! वय युष्माकमन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामामः=प्रतिनिर्गताः, प्रतिनिष्क्रम्य सुभूमिभागस्योद्यानस्य

इस प्रकार कहकर उन्होंने वही पर मृत शरीर को वोसराने रूप कायोत्सर्ग किया। (करित्ता० उवागच्छ०) कायोत्सर्ग करके फिर उन्होंने उन धर्मरुचि अनागार के आचार भाडको को वस्त्र पात्रादिकों को-उठा लिया-उठाकर वे जहा धर्मघोष स्थविर थे-वहा आये (उवागच्छित्ता गमणागमण पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे-तुब्भ अतियाओ पडि निक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेण धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा० २ जाव इह हव्वमागया, तं कालगण्णं भत्ते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभडए - तएण ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गथे निग्गथीओ य सद्दावेति-सद्दावित्ता एव वयासी) आकर के उन्होंने ईर्यापथिक प्रतिक्रमण किया। प्रतिक्रमण करके फिर इस प्रकार वे कहने लगे हे स्वामिन् ! हम लोग आपके पास से यहा से गये-और जाकर सुभूमिभाग उद्यान की चारों

રીતે કહીને તેમણે ત્યાંજ મૃત શરીરને વોસરાવા રૂપ કાયોત્સર્ગ કર્યો (करित्ता० उवागच्छ०) કાયોત્સર્ગ કરીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના આચાર ભાંડકોને તેમજ વસ્ત્રોને લઈ લીધા અને લઈને જ્યાં ધર્મઘોષ સ્થવિર હતા ત્યાં આવ્યા (उवागच्छित्ता गमगागमग पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एव वयासी-एव खलु अम्हे तुब्भं अतियाओ पडिनिक्खमामो २ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरतेग धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व जाव करेमाणे जेणेव थडिल्ले तेणेव उवा० जाव इह हव्व-मागया त कालगण्णं भंते ! धम्मरुई अणगारे इमे से आयारभंडए तएणं त धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओग गच्छति गच्छित्ता समणे निग्गथे निग्गथीओ य सद्दावेंति-सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યાં આવીને તેમણે ઈર્યાપથિક પ્રતિક્રમણ કર્યું પ્રતિક્રમણ કરીને તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે સ્વામિન્ ! અમે લોકો અહીંથી આપની પાસેથી ગયા અને જઈને સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનની ચોમેર ફરતા ફરતા ધર્મરુચિ

कस्य धर्मरुचेरनगारस्य सर्वत समन्तात् मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो यत्रैव स्थण्डिलं= स्थलं धर्मरुचेरनगारस्य कालकरणस्थान तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य धर्मरुचेर- नगारस्य शरीरक 'निप्पाण' निष्प्राण=प्राणरहितं, 'निच्चेट्ठ' निश्चेष्ट=चेष्टार- हितं 'जयविप्पजढ' जीव विप्रत्यक्त=जीवहीन पश्यन्ति, दृष्ट्वा हा ! हा ! अहो ! इति खेदे, 'अकज्जं' अकार्यम्=अनिष्ट जात यद्धर्मरुचिनगारो मृतः, 'तिकट्टु'

थेराण अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स- अणगारस्स सव्वाओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थंडिल्ल तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरग निप्पाण निच्चेट्ठ जीवविप्पजढ पासति, पासित्ता हा हा अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परि निव्वाणवत्तिय काउस्सग्गं-करे ति)

उन निर्ग्रन्थ श्रमणों ने अपने धर्माचार्य की इस आज्ञा को यावत् स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके फिर वे धर्मघोष स्थविर के पास से निकले निकल कर उन्होंने धर्मरुचि अनागार की चारों दिशाओंमें सब प्रकार से मार्गणा गवेषणा की। इस तरह मार्गण गवेषणा करते हुए जहां वह स्थण्डिल था-धर्मरुचि अनागार की मृत्यु होने का स्थान था- वहा आये वहा आकर के उन्होंने धर्मरुचि अनगार के शरीर को प्राण- रहित, चेष्टा रहित और जीव रहित देखा। देखकर के सहसा उनके मुख से हाय हाय यह खेद सूचक शब्द निकल पड़ा वे कहने लगे यह बडा अनिष्ट हुआ-जो धर्मरुचि अनागार का देहावसान हो गया।

थेराण अतियाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्व ओ समता मग्गणगवेसण करेमाणा जेणेव थडिल्ल तेणेव उवागच्छति उवाग- च्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स, सरीरग निप्पाण निच्चेट्ठ जीव विप्पजढ पासति, पासित्ता हाहा अकज्जमित्ति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाण वत्तिय काउ स्सग्ग करेंति)

તે નિર્ગ્રંથ શ્રમણોએ પોતાના ધર્માચાર્યની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ ધર્મઘોષ સ્થવિરની પાસેથી નીકળીને ધર્મરુચિ અનગારની બધી રીતે ચોમેર માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરવા લાગ્યા આ રીતે માર્ગણ ગવેષણ કરતા જ્યા તે સ્થડિલ હતુ-ધર્મરુચિ અનગારના મૃત્યુનુ સ્થાન હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ ધર્મરુચિ અનગારના શરીરને નિષ્પ્રાણ નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ જોયુ આ દૃશ્ય જોતાની સાથે જ તેઓના મુખથી હાય ! હાય ! ના ખેદ સૂચક શબ્દો નીકળી પડયા તેઓ કહેવા લાગ્યા કે આ બહુ જ ખોટુ થયુ છે-ધર્મરુચિ અનગારનુ [illegible]

'परिपेरतेण' परिपर्यन्तेन=चतुर्दिक्षु परिभ्रमन्तो धर्मरुचेरनगारस्य 'सव्वओ' सर्वतः समन्तात् मार्गणगवेषणं कुर्वतो यत्रैव स्थण्डिलं तत्रैवोपागच्छामः, उपागत्य यावद् इह हव्यमागताः स कालगतः खलु हे भदन्त ! धर्मरुचिरनगारः, इमानि 'से' तस्य, आचारभाण्डकानि । ततः खलु ते धर्मघोषा स्थविराः 'पुव्वगए' पूर्वगते=दृष्टिवादान्तर्गतश्रुताधिकारविशेषे उपयोगं गच्छन्ति=लगयन्ति यदा धर्मरुचिराहारमानेतु नगर्यां गतस्तदा कस्य गृहे गत ? केनेदमाहारदत्त' मित्यादि ज्ञातु स्वकीयोपयोग नयन्तीत्यर्थ, गत्वा-स्वकीयोपयोगं लगयित्वा, श्रमणान् निर्ग्रन्थान् निर्ग्रन्थीश्च शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—एवं खलु हे आर्याः ! ममान्तेवासी=शिष्यः, धर्मरुचिर्नामाऽनगारः 'पगइभद्दए' प्रतिभद्रकः=प्रकृत्या

दिशाओ में फिरते २ धर्मरुचि अनगार की सर्व प्रकार से मार्गण, गवेषणा करने लगे। मार्गणा, गवेषणा करते हुए हम लोग फिर उस स्थान पर पहुँचे जहा धर्मरुचि अनगार का शव पडा हुआ था वहा से अभी २ हम लोग आरहे हैं। हे भदन्त! वे धर्मरुचि अनगार कालगत हो गये हैं-ये उनके आचार भाण्डक वस्त्र पात्र हैं। इस के बाद उन धर्मघोष स्थविर ने दृष्टि वाद के अतर्गत श्रुताधिकार विशेष में अपना उपयोग लगाया-तो उन्हें यह ज्ञात हो गया कि जब धर्मरुचि आहार लेने के लिये नगरी में गये तो वे किसके घर गये, किस ने यह आहार उन्हें दिया इत्यादि। अपने उपयोग से इस बात को जानकर उन्होंने निर्ग्रन्थ श्रमणों और निर्ग्रथ श्रमणियों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-(एवं खलु अज्जो मम अंतेवासी, धम्मरुई, णाम

અનગારની બધી રીતે માર્ગણા ગવેષણા કરવા લાગ્યા માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરતા અમે લોકો તે જગ્યાએ પહોંચ્યા જ્યા ધર્મરુચિ અનગારનુ મડદુ પડયુ હતુ અમે લોકો અત્યારે ત્યાથી જ આવી રહ્યા છીએ હે ભદંત ! તે ધર્મરુચિ અનગાર મરણ પામ્યા છે તેઓશ્રીના આ આચાર ભાંડક વસ્ત્રપાત્રો છે. ત્યારપછી તે ધર્મઘોષ સ્થવિરે દૃષ્ટિવાદના અંતર્ગત શ્રુતાધિકાર વિશેષમા પોતાનો ઉપયોગ લગાવ્યો તેમાથી તેઓને આ વાતની જાણ થઈ કે જ્યારે ધર્મરુચિ આહાર લાવવા માટે નગરીમા ગયા હતા, ત્યારે તેઓ કોના ઘેર ગયા હતા, આ આહાર તેમને કોણે આપ્યો હતો વગેરે પોતાના ઉપયોગથી આ બધી વિગત જાણીને તેમણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણો અને નિગ્રંથ શ્રમણીઓને પોતાની પાસે બોલાવી અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एवं खलु अज्जो मम अंतेवासी, धम्मरुई णाम अणगारे

स्वभावेन भद्रकः-शान्तः, यावद्-यावत् करणादिदं द्रष्टव्यम्-'पगइ उवसते, पगइ-पयणु कोहमाणमायालोहे, मिउमद्दवसपण्णे, आलीणे, भद्दए, इति। प्रकृत्युपशान्त', प्रकृति प्रतनुक्रोधमानमाया लोभः, मृदु मार्दवसपन्नः, आलीनः, भद्रकः, इति। विनीतः 'मास मासेण' मास व्याप्य मासेन=मासक्षपणनामकेन, अनिक्षिप्तेन=अन्तररहितेन, अविश्रान्तनेत्यर्थः तपः कर्मणा विचरन् पारणकदिने यावत्-नागश्रिया ब्राह्मण्यागृहमनुप्रविष्टः, ततस्तदनन्तर सा नागश्री ब्राह्मणी यावत्-शारदिकं तिक्तालाबुक 'निसिरइ' निसृजति=पात्रे निक्षिपतिस्म। ततः धर्मरुचि-

---

अणगारे पगइभद्दए जाव विणीए मास मासेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे तएण सा नागसिरी माहणी जाव निसीरइ, तएण से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु जाव काल अणवकखेमाणे विहरइ, सेण धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पउणित्ता आलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे काल किच्चा उड्ढ सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्णत्ता) आर्यो! सुनो बात एसी है मेरे अन्तेवासी शिष्य-धर्मरुचि अनगार स्वभाव से ही भद्र परिणामी थे। यावत् शब्द से इस पाठ का यहां सग्रह हुआ है "पगइ उवसते पगइ पयणु कोहमाणमाया लोहे मिउमद्दवसपण्णे आलीणे भद्दए"। ये अविश्रान्त अतर रहित-मास मासखमण पारणा करते थे। आज उनके पारणा का दिन था-सो गोचरीके लिये भ्रमण करते हुए ये नागश्री ब्राह्मणीके घर

विणीए मास मासेण अणिक्खित्तेण तवो कम्मेण जाव नागसिरीए माहणीए गिहे अणुपविट्ठे तएण सा नागसिरि माहणी जाव निसीरइ, तएणं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जमित्ति कट्टु जाव काल अणवकखेमाणे विहरइ,सेणं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामन्नपरियाग पउणित्ता अलोइयपडिक्कते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढ सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ने ठिई पण्णत्ता)
આર્યો! સાભળો, વાત એવી છે કે મારા અતેવાસી શિષ્ય-ધર્મરુચિ અનગાર સ્વભાવથી જ ભદ્ર પરિણામી હતા યાવત્ શબ્દથી અહીં આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે-"पगइ उवसते" (पगइपयणुकोहमाणमायालोहे मिउमद्दव सपण्णे आलिणे भद्दए) તેઓ અવિશ્રાત-અતર રહિત-(નિરતર) માસ ખમણ કરતા રહેતા હતા આજે તેમનો પારણાનો દિવસ હતો, તેઓ આહાર માટે ભ્રમણ કરતા નાગશ્રી બ્રાહ્મણીના ઘેર ગયા હતા બ્રાહ્મણીએ શારદિક તિક્ત

रनगारो यथापर्याप्तमितिकृत्वा=क्षुधानिवृत्त्यर्थं पूर्णमिति मत्वा यावत्-कालम् 'अवणकखेमाणे' अनवकाङ्क्षमाणः विहरति, स खलु धर्मरुचिरनगारो बहूनि वर्षाणि श्रमण्यपर्याय पालयित्वा, आलोचित प्रतिक्रान्तः समाधिप्राप्तः कालमासे काल कृत्वा ऊर्ध्वं 'सोहम्म जाव सव्वट्ठसिद्धे' सौधर्मादयो द्वादशदेवलोकाः, तत उर्ध्वं नवग्रैवेयकाणि तदुपरि यावत् सर्वार्थसिद्धे, महाविमाने देवत्वेनोपपन्न =देवभवं प्राप्तवान्। तत्र=तस्मिन् सर्वार्थसिद्धविमाने, खलु 'अजहण्णमणुक्कोसेण' अजघ-न्यानुत्कृष्टेन=जघन्योत्कृष्टवर्जितेन तत्र हि सर्वेषा देवानां स्थितिः समानैव भवति न तु न्यूनाऽधिककालतया विषमेतिभावः। त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र धर्मरुचेरपि देवस्य त्रयस्त्रिंशत् सागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, स खलु धर्मरुचि देवस्तस्माद् देवलोकाद्=सर्वार्थसिद्धविमानाद् यावद् च्युत सन् यावद् महाविदेहे वर्षे सिज्झिहिइ' सेत्स्यति, सिद्धिं प्राप्स्यति। तत्=तस्माद् धिगस्तु खलु हे

पहुँचे। यावत् उसने शारदिक तिक्त कडवे तुंबे की शाक उनके पात्र में वोहराया धर्मरुचि अनगार ने उसको क्षुधानिवृत्ति के लिये पर्याप्ति मान कर लिया। उन धर्मरुचि अनगारने अनेक वर्षों तक श्रमण्य पर्याय का पालन किया और पालन करके आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे समाधि में लीन हो गये। काल अवसर काल करके अब वे सौधर्म आदि १२ देवलोको से ऊपर नवग्रैवेय को से भी आगे जो सर्वार्थसिद्धि नाम का विमान है कि जिसमें ३३ सागर की स्थिति है-और यह स्थिति जहा सब देवो की समान हैं उसमें ३३ सागर की स्थितिवाले देव हुए हैं। "अजहण्णमणुक्कोसेण" जघ न्य और उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपम की स्थिति है। (से ण धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ, त धिरत्थु

કડવી તૂંબડીનું શાક તેમના પાત્રમા વહોરાવ્યું ધર્મરુચિ અનગારે તેને ક્ષુધા નિવૃત્તિ માટે પર્યાપ્ત જાણીને તેને સ્વીકારી લીધું તે ધર્મરુચિ અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું છે અને, પાલન કરીને આલોચિત પ્રતિક્રાંત થઈને તેઓ સમાધિમા લીન થઈ ગયા છે કાળ સમયે કાળ કરીને હવે તેઓ સૌધર્મ વગેરે બાર દેવલોકોથી ઉપર નવ ગ્રૈવેયકોથી પણ આગળ જે સર્વાર્થસિદ્ધિ નામે વિમાન છે કે જેમા ૩૩ સાગરની સ્થિતિ છે અને આ સ્થિતિ જ્યા બધા દેવોની સરખી છે, તેઓ તેમા ૩૩ સાગરની સ્થિતિવાળા દેવ થયા છે "अजहण्णमणुक्कोसेण" જઘન્ય અને ઉત્કૃષ્ટ ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(सेण धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ जाव महाविदेहे-वासे सिज्झिहिइ,

आर्याः ! नागश्रिय ब्राह्मणीमधन्यामपुण्या यावद् दुर्भग निम्बगुलिकाम् , यथा-खलु नागश्रिया ब्राह्मण्या तथारूप' प्रकृतिभद्रत्वादिगुणयुक्तः साधु धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकेन तिक्तालावुकेन यावत् स्नेहावगाढेनाऽकाल एव जीविताद् व्यपरोपितः ॥सू०४॥

मूलम्-तएणं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एवमाइक्खंति-धिरत्थु णं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ, तए णं तेसिं समणाण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म वहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एव भासइ

ण अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइए णं जाव गाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए) वे धर्मरुचि देव इस देवलोक से चवकर यावत् महाविदेह क्षेत्र से सिद्धिको प्राप्त करेंगे आर्यो ! अधन्य, अपुण्य यावत् दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय उस नागश्री ब्राह्मणी को धिकार हो-कि जिसने तथारूप, प्रकृति भद्रत्वादि गुणों से सपन्न साधु धर्मरुचि अनगार को मासखमण के पारणा के दिन शारदिक तिक्त कडवी तुंबी का शाक यावत् स्नेहावगाढ बनाकर दिया-कि जिससे वे अकाल में मरण को प्राप्त हुए ॥ सू० ४ ॥

व धिरत्थुण अज्जो ! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए, अपुन्नाए, जाव णिंबोलियाए जाए ण तहारूवे साहू धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएण जाव गाढेण अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए)

ते धर्मरुचि देव ते देवलोकथी चवीने यावत् महाविदेह क्षेत्रथी सिद्धिने मेळवशे हे आर्यो ! अधन्य, अपुण्य, यावत् दुभग निंबगुलिका जेवी अनादरणीय ते नागश्री ब्राह्मणीने धिक्कार छे के जेणे तथारूप, प्रकृति भद्रत्व वगेरे गुणोवाळा साधु धर्मरुचि अनगारने मास खमणना पारणाना दिवसे शारदिक तिक्त कडवी तूंबडीनु शाक-के जे सरस वधारेलु, जेनी उपर घी तरतुं हतुं-वहोराव्युं, जेने लीधे अकाळे ज तेओनु मरण थयु. ॥ सूत्र "४" ॥

धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एवं वयासी–हं भो ! नागसिरी ! अपत्थिय पत्थिय दुरंत पंतलक्खणे हीणपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाव णं तुमं तहारूवे साहू साहूरूवे मासखमणपारणंसि सालइएणं जाव ववरोविए, उच्चावएहिं अक्कोसणाहि अक्कोसेंति उच्चावयाहिं उद्धंसणाहि उद्धंसेंति उच्चावयाहि णिब्भत्थणाहि णिब्भत्थेंति उच्चावयाहि णिच्छोडणाहि निच्छोडेंति तज्जेंति तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति, तएण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुह० बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिंसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी२ दंडिखंडनिवसणा खंडमल्लयखंडघडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा मच्छियाचडगरेण अन्निज्जमाणमग्गा गेहं गेहेणं देह वलियाए वित्ति कप्पेमाणी विहरइ, तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोयायंका पाउब्भूया, तं जहा–सासे कासे जोणिसूलं जाव कोढे, तएण सा नागसिरी माहणी

सोलसहि रोयायकेहि अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि । ततः खलु ते श्रमणाः निर्ग्रन्था धर्मघोषाणां स्थविराणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य चम्पायां श्रृङ्गाटक-यावन्महापथेषु बहुजनस्य एवमाख्यान्ति धिगस्तु खलु हे देवानुप्रियाः ! नागश्रियं ब्राह्मणीं यावद् दुर्भगनिम्बगुलिकाम् , यया खलु तथारूपः साधुः साधुरूपो धर्मरुचिरनगारः शारदिकेन यावत्तिक्तालाबुकेन जीविताद् व्यपरोपितः। ततः खलु तेषां श्रमणानामन्तिके

'तएणं ते समणा निग्गंथा' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (ते समणा निग्गंथा धम्मघोसा थेराणं अंतिएएयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एव माइक्खति-धिरत्थुणं देवाणुप्पिया। नागसिरीए जाव णिंबोलियाए जाएणं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ) उन श्रमण निर्ग्रन्थोंने धर्मघोष स्थविर के मुख से इस समाचार को सुनकर और उसको हृदय में विचार कर चंपानगरी में श्रृंगाटक यावत् महापथो में बहुजनों से ऐसा कहा हे देवानुप्रियों ! ब्राह्मणी नागश्री को धिक्कार है यावत् निम्ब की निंबोली जैसी अनादरणीय है कि जिसने तथा रूप साधु-साधुरूप धर्मरुचि अनगार को शारदिक यावत् कडवे तुम्बे का शाक देकर जीवन से रहित करदिया है। (तएणं तेसिं समणाणं अं-

---

'तएणं ते समणा निग्गंथा' इत्यादि—

टीकार्थ (तएणं) त्यारબાદ

(ते समणा निग्गंथा धम्मघोसा थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म चंपाए सिंघाडगतिग जाव बहुजणस्स एव माइक्खति-धिरत्थुणं देवाणुप्पिया ! नागसिरीए माहणीए जाव णिंबोलियाए जाए णं तहारूवे साहू साहूरूवे सालइएणं जीवियाओ ववरोवेइ)

તે શ્રમણ નિર્ગ્રંથોએ ધર્મઘોષ સ્થવિરના મુખથી આ વાત સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને ચંપાનગરીમાં શ્રૃંગાટક મહાપથો વગેરેમાં ઘણા માણસોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! બ્રાહ્મણી નાગશ્રીને ધિક્કાર છે અને તે લીમડાની લીંબોળીની જેમ અનાદરણીય છે કેમકે તેણે તથારૂપ સાધુ સાધુ રૂપ ધર્મ રુચિ અનગારને શારદિક કડવી તુંબડીનું શાક આપીને મારી નાખ્યા છે

एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य बहुजनोऽन्योन्यस्य=परस्परस्य एवमाख्याति-एवं भाषते एवं प्रज्ञापयति, एवं प्ररूपयति धिगस्तु खलु नागश्रिया ब्राह्मण्या, यया धर्मरुचिरनगार शारदिकेन यावद् जीविताद् व्यपरोपितः । ततः खलु ते ब्राह्मणा चंपायां नगर्यां बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य, आशुरुप्ताः=शीघ्रं क्रोधाविष्टाः यावत् मिसमिसन्त =क्रोधानलेन प्रज्वलन्त ,यत्रैव नागश्रीर्ब्राह्मणी,तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

तिए एयमट्ठ सोचा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एवं भासइ धिरत्थुणं नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएणं ते माहण चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति) उन श्रमणजनों के मुख से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण करके अनेक मनुष्य आपस में इस प्रकार कहने लगे बोलने लगे प्रज्ञापना करने लगे प्ररूपणा करने लगे कि ब्राह्मणी नागश्री को धिक्कार है जिसने धर्मरुचि अनगार को शारदिक-तिक्त कडवे तुंबे के शाक से जीवन रहित करदिया है । इस प्रकार उन ब्राह्मणों ने तथा सोम, सोमदत्त, सोमभूति आदि ने जब चंपानगरी में अनेक मनुष्यों के मुख से इस बात को सुना-तो वे सुनकर और उसे अपने २ हृदय में धारण कर इकदम क्रोध से तम तमा उठे और यावत् क्रोधानल से जलते हुए जहा नागश्री ब्राह्मणी थी वहा आये-

---

(तएणं तेसिं समणाणं अतिए एयमट्ठ सोच्चा बहुजणे अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ, एव भासइ धिरत्थुण नागसिरीए माहणीए जाव जीवियाओ ववरोविए, तएण ते माहणा चपाए नयरीए बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरत्ता जाव मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छति)
તે શ્રમણુ લોકોના મુખથી આ સમાચાર સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણુ કરીને ઘણા માણુસો એકબીજાની સાથે આ રીતે વાતચીત કરવા લાગ્યા, પ્રજ્ઞાપના કરવા લાગ્યા, પ્રરૂપણા કરવા લાગ્યા કે બ્રાહ્મણી નાગશ્રીને ધિક્કાર છે જેણે ધર્મરુચિ અનગારને શારદિક-તિક્ત કડવી તૂબડીના શાકથી મારી નાખ્યા આ રીતે તે બ્રાહ્મણોએ એટલે કે સોમ, સોમદત્ત અને સોમભૂતિએ જ્યારે ચ પા નગરીના અનેક માણુસોના મુખથી આ વાત સાભળી ત્યારે તેઓ સાંભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણુ કરીને એકદમ ક્રોધાવિષ્ટ થઈ ગયા અને ક્રોધરૂપી અગ્નિમા સળગતા જ્યા નાગશ્રી બ્રાહ્મણી હતી ત્યા આવ્યા.

उपागत्य नागश्रियं ब्राह्मणीमेवमवादिषुः-उक्तवन्तः, ह भो ! नागश्रीः ! अप्रार्थित प्रार्थिके ! मरणाभिलापिणि ! दुरन्तप्रान्तलक्षणे ! हीनपुण्यचातुर्दशिके ! धिगस्तु खलु तव अधन्यायाः अपुण्यायाः यावद्-दुर्भगनिम्बगुलिकायाः, अत्र द्वितीयार्थे षष्ठी आर्षत्वात्, यया खलु त्वया तथारूपः साधु साधुरूपो धर्मरुचिरनगारो मासक्षपणपारणके शारदिकेन तिक्तालाबुकेन यावद् व्यपरोपितः, 'उच्चावयाहिं' उच्चावचाभिः=उच्चनीचाभिः 'अक्कोसणाहिं' आक्रोशनाभिः=निन्दावचैः नीचाऽसि त्वमित्यादिभिर्वचनैः 'अक्कोसति' आक्रोशन्ति-फटकारयन्ति उच्चावचाभिः उद्धं 'सनाभि' दुष्कुलोत्पन्नाऽसित्यादिवचनैः, 'उद्धंसेंति' उद्धसयन्ति=कुलादि-

(उवागच्छित्ता णागसिरी माहणीं एव वयासी) ह भो ! नागसिरी ! अपत्थियपत्थिय दुरतपतलक्खणे, हीण पुण्णचाउद्दसे धिरत्थुण तव अध-भाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए ण तुमे तहारूवे साहू साहूरूवे मास खमणपारणंसि सालइएण जाव ववरोविए उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसति उद्धसेति) वहां आकर उन्होंने नागश्री ब्राह्मणीसे कहा अरीओ नागश्री ! अरी अप्रार्थित प्रार्थके। हे दुरन्तप्रान्त लक्षणे। ओ हीन पूण्य चातुर्दशिके। तुझ अपुण्य अधन्या को धिक्कार हो ! तू दुर्भग निम्बगुलिका जैसी अनादरणीय है जो तूने मासखमणके पारणा के दिन घरपर आहार लेने के निमित्त आये हुए तथा रूप साधुरूप धर्मरुचि अनगार को शारदिक तिक्त कडवे तुंबे का शाक देकर जीवन से रहित कर दिया है। तू बडी नीच है इत्यादि रूप ऊँच, नीच आक्रोश निन्दा-वचनों से उन्हों ने उसे फटकारा तू नीच खानदान की

(उवागच्छित्ता णागसिरीं माहणीं एव वयासी-ह भो ! नागसिरी ! अपत्थि य पत्थिय दुरतपतलक्खणे, हीनपुण्णचाउद्दसे धिरत्थु ण तव अधन्नाए अपुन्नाए जाव णिंबोलियाए जाए ण तुमे तहारूवे साहू साहूरूवे मासखमणपारणंसि साल-इएण जाव ववरोविए उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसति उद्धसेति) त्यां आवीने तेमणे नागश्री ब्राह्मणीने कह्यु के-हे मुई ओ। नागश्री ! अप्रार्थित प्रार्थके ! हे दुरत प्रात लक्षणे ! ओ हीनपुण्य चातुर्दशिके ! तारा जेवी पापणी अधन्याने धिक्कार छे तु दुर्भग निंबगुलिका (लिंबोळी जेवी अनादरणीय छे केमके तेणे मास-खमणना पारणाना दिवसे घेर आहार लेवा माटे आवेला तथारूप साधु साधुरूप धर्मरुचि अनगारने शारदिक तिकत कडवी तूबडीनु शाक आपीने मारी नाख्या छे तु साव नीच छे, आम घणा उच-नीच आक्रोश-निंदा-ना वचनोथी तेओए तेने फीटकारी तु नीच

गौरवात्पातयन्ति, उच्चावचाभिर्निर्भर्त्सनाभिः=तर्जनाभिः 'णिब्भत्थेंति' निर्भर्त्सयन्ति, उच्चावचाभि' 'णिच्छोडणाहिं' निश्छोटनाभिः=' अस्मद् गृहान्निस्सर इत्यादि वचने 'निच्छोडेंति' निश्छोटयन्ति = गृहादित्यागभयोत्पादनेन भीषयन्ति, 'तज्जेंति' तर्जयन्ति 'ज्ञास्यसि पापे !' इत्यादिवाक्यैरंगुलीप्रदर्शनपूर्वक ताडनभय प्रदर्शयन्ति, 'तालेंति' ताडयन्ति चपेटादिभिः, तर्जयित्वा ताडयित्वा, स्वकाद् गृहाद् 'निच्छुभंति' निक्षिपन्ति = बहिर्नि-सारयन्ति। ततस्तदनन्तर सा नागश्रीः स्वकाद् गृहात् 'निच्छूढा समाणा' निक्षिप्तासती=निस्सारितासती, चम्पाया नगर्या, शृङ्गाटक त्रिकचतुष्कचत्वरचतुर्मुखमहापथपथेषु यत्र यत्र

हैं इस तरह की ऊँची नीची वाणियों से उसे भला बुरा कहा कुलादि के गौरव से उसे पतित कहा। (उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थेंति उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडंति, तज्जेंति, तालेंति, तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति) ऊँचे नीचे कठोर वचनों से उसका तिरस्कार किया। भले बुरे वचनो से उसे डरवाया-हमारे घर से तू बाहिर निकल जा इत्यादि भयोत्पादक शब्दों से उसे भय दिखलाया। ओ पापिनी ! तूजे मालूम पड जायगा, इत्यादि वाक्यों से अंगुली दिखा २ कर उसे मारने का भय दिखलाया और चपेटा-थप्पड आदि से उसे पीटा भी। और पीटपाट कर उसे उन्होंने फिर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। (तएणं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नगरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुह०

ખાનદાનની છે, આ જાતના ઉંચા નીચા વચનોથી તેણે ખોટી ખરી સંભળાવી કુળ વગેરેના ગૌરવથી તેણે પતિતા કહી

(उच्चावयाहिं णिब्भत्थणाहिं णिब्भत्थंति, उच्चावयाहिं णिच्छोडणाहिं निच्छोडेंति, तज्जेंति, तालेंति तज्जेत्ता तालेत्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति)

ઉંચા નીચા વચનોથી તેનો તિરસ્કાર કર્યો, ખોટા ખરા વચનોથી તેને બીવડાવી 'અમારા ઘરથી તુ બહાર નીકળી જા' વગેરે ભયોત્પાદક વચનોથી તેણીને બીક બતાવી 'એ પાપણી ! તને મજા બતાવવી દઈશું ?' વગેરે વચનોથી સામી આગળી કરીને તેને મારી નાખવાની બીક બતાવવા લાગ્યા અને થપ્પડ લાફા વગેરેથી તેને માર પણ માર્યો, મારપીટ કરીને તેઓએ તેને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકી

(तएण सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चपाए नगरीए सिंघाडगतिगचउक्कचच्चरचउम्मुह० बहुजणेण

गच्छति तत्र तत्र सर्वत्र बहुजनेन 'हीलिज्जमाणी' हील्यमाना-जात्याद्युद्घाटनेन, 'खिसिज्जमाणी' खिंस्यमाना-परोक्षकुत्सनेन, 'निंदिज्जमाणी' निन्द्यमाना-तत्परोक्षम् 'गरहिज्जमाणी' गर्ह्यमाना-तत्समक्षमेव 'तज्जिज्जमाणी' तर्ज्यमाना-अङ्गुलीचालनेन भयमुत्पाद्यमाना 'पव्वहिज्जमाणी' प्रव्यथ्यमाना यष्ट्यादिताडनेन 'धिक्कारिज्जमाणी' धिक्क्रियमाणा 'थुक्कारिज्जमाणी' थुत्क्रियमाणा कुत्रापि

बहुजणेण हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी, तज्जिज्जमाणी, पव्वहिज्जमाणी, धिक्कारिज्जमाणी, थुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाण वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडि खंडा निवसणा खंड खंडमल्लय खंड खंड घडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसा म च्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेह गेहेणं देह बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ) अपने घर से बाहिर निकल कर वह नागश्री चंपानगरी के श्रृंगाटक, त्रिक, चतुष्क, चत्वर चतुर्मुख महापथ आदि मार्गों पर जहा २ गई, वहां २ सर्वत्र अनेक जनों ने उसकी "यह नीचजाति की है" इत्यादिरूप से हीलना की। सब के सब उसपर बहुत क्रोधित हुए सबने उसकी परोक्ष में निंदा की। सामने सबने उसे भला बुरा कहा। अगुली संचालन पूर्वक उसे मारने पीटने का भय दिखलाया। किन्हीं २ ने उसे लकडी आदिसे मारा पीटा भी। अनेकोने उसे धिक्कारा। कितनेक जनों ने उसे देखकर उसपर थूक भी दिया। इस तरह की परिस्थिति

निंदिज्जमाणी, गरहिज्जमाणी,तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी,धिक्कारिज्जमाणी, थुक्कारिज्जमाणी, कत्थइ ठाण वा निलयं वा अलभमाणी २ दंडिखंडा निवसणा खंडमल्लय खंड खंड घडगहत्थगया फुट्टहडाहडसीसामच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेह गेहेणं देह बलियाए वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ)
પોતાના ઘેરથી બહાર નીકળીને તે નાગશ્રી ચંપા નગરીના શૃંગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, ચતુર્મુખ, મહાપથ વગેરે માર્ગો ઉપર જ્યાં ગઈ ત્યાં ત્યાં બધે ઘણા માણસોએ તેની "આ નીચ જાતની છે" વગેરે વચનોથી હીલના કરી બધા માણસો તેની ઉપર ખૂબ જ ગુસ્સે થયા તેની ગેર હાજરીમાં લોકોએ તેની ખૂબ નિંદા કરી, તેની સામે તેને બધાએ ખરી ખોટી સંભળાવી, આંગળી ચીંધી ચીંધીને તેની સાથે મારપીટ કરવાની બીક બતાવવા લાગ્યા કોઈ કોઈએ તો તેને લાકડી વગેરેનો ફટકો પણ માર્યો, ઘણાએ તેને ફિટકારી, કેટલાક માણસોએ તેને જોઈને તેની ઉપર થૂકી દીધું.

स्थानं वा निद्रार्थं निश्च वा-अल्पकालविश्रामार्थस्थानम्, अलभमाना २=अप्राप्नुवती २, 'दण्डिखण्डनिवसणा' दण्डिखण्डनिवसना=दण्डि-कृतसन्धान जीर्णवस्त्रं, तस्य खण्ड, तदेव निवसन-परिधान यस्याः सा तथा, 'खण्डमल्लयखण्डघडगहत्थगया' खण्डमल्लक-खण्डघटकहस्तगता=खण्डमल्ल =भिक्षार्थं शरावखण्ड खण्डघट कश्च पानार्थं घटखण्ड, तद् द्वय हस्तगत यस्या सा तथा, 'फुट्टहडाहडसीसा' स्फुटितहडाहडशीर्षा-स्फुटित स्फुटितकेश 'हडाहडम्' अत्यर्थं शीर्षं शिरो यस्याः सा तथा, विकीर्णकेशवतीत्यर्थ 'मच्छियाचडगरेण अन्निज्जमाणमग्गा' मक्षिका चटकरेण अन्वीयमानमार्गा मक्षिकासमूहेन अनुगम्यमानमार्गा शरीरवस्त्रादीना मलिनत्वान् मक्षिकास्तत्पृष्ठतो धावतीत्यर्थ. गेहं गेहेण देह बलियाए' गृह गृहेण देहबलिकया=प्रतिगृह देहनिर्वाहहेतोः उदरपूर्त्यर्थमेवेत्यर्थ'—वृत्तिं 'कप्पेमाणी' कल्प्यमाना=कुर्वाणा सती विहरति । ततस्तदनन्तर खलु तस्या नागश्रिया ब्राह्मण्या स्वस्मिन् भवे एव षोडश रोगातङ्काः प्रादुर्भूताः, तद्यथा-(१) श्वासः, (२) कास, (३) ज्वरः, 'जावकुड्डे' यावत्-कुष्ठम्, (४) दाह, (५) कुक्षिशूलम्, (६)

का सामना करती हुई वह कहीं पर भी बैठने के लिये स्थान को, और ठहरनेके लिये-विश्राम करनेके लिये-जगह भी को नही प्राप्त करती फटे हुए जीर्ण वस्त्र के टुकडे को पहिरे हुए भिक्षा के लिये मिट्टी के खप्पर को और पानी के लिये फूटे घडे के टुकडे को हाथ में लिये हुए इधर उधर एक घर से दूसरे घर पर उदर पूर्ति के लिये फिरने लगी। इसके शिर के बाल ईधर उधर विखरे हुए रहते थे। शरीर और वस्त्रादिकों के मैले कुचैले होने के कारण मक्षिकाओं का समूह इसके पीछे पीछे २ भागता रहता था। (तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवसि चेव सोलसरोयायका पाउब्भूया- त जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव

આવી પરિસ્થિતિને મુકાબલો કરતી કોઈ પણ સ્થાને બેસવાની કે રોકાવાની કે વિશ્રામ કરવાની જગ્યા તે મેળવી શકી નહિ, અને છેવટે ફાટેલા જૂના વસ્ત્રોના કકડાને વીંટાળીને ભિક્ષાના માટે માટીનુ ખપ્પર અને પાણીના માટે ફૂટી માટલીના કકડાને હાથમા લઇને પેટ ભરવા માટે આમતેમ એક ઘેરથી બીજે ઘેર ભમવા લાગી તેના માથાના વાળે આમ તેમ અસ્ત વ્યસ્ત રહેતા હતા, શરીર અને વસ્ત્રો વગેરે મેલા હોવાને લીધે માખીઓના ટોળેટોળા તેની પાછળ પાછળ ભમતા રહેતા હતા

(तएण तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवसि चेव सोलसरोयायंका पाउब्भूया-त जहा सासे कासे जोणिसूले, जाव कोढे तएण सा

भगन्दर, (७) अर्शः, (८) योनिशूलम्, (९) दृष्टिशूलम्, (१०) मूर्धशूलम्, (११) अरुचिः, (१२) अक्षिवेदना, (१३) कर्णवेदना, (१४) कण्डू, (१५) जलोदरम्, (१६) कुष्ठम्। ततस्तदनन्तर सा नागश्री ब्राह्मणी षोडशभी रोगातङ्कैरभिभूता-सती आर्तदुःखार्तवशार्ता=शारीरिकमानसिकदुःखयुक्ता कालमासे कालं कृत्वा षष्ठ्या पृथिव्याम् 'उक्कोसेण' उत्कृष्टतः, द्वात्रिंशति सागरोपमस्थितिकेषु नरकेषु-नरकावासेषु नारकत्वेन उपपन्ना-उत्पन्ना ॥ सू०५ ॥

मूलम्—सा णं तओऽणंतरंसि उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववन्ना, तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्टिईएसु नेरइएसु उववन्ना, सा णं ततोऽणंतरं उवट्टित्ता दोच्चपि

कोढे तएण सा नागसिरी माहिणी, सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूया समाणी अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववन्ना) उस नागश्री ब्राह्मणी को उसी भव में ये सोलह रोगातक प्रकट हो गये-(१) श्वास (२) कास (३) ज्वर (४) दाह (५) कुक्षिशूल (६) भगन्दर (७) अर्श (८) योनिशूल (९) दृष्टिशूल (१०) मूर्धशूल (११) अरुचि (१२) अक्षि-वेदना (१३) कर्णवेदना (१४) कण्डू (१५) जलोदर (१६) कुष्ठ। इन १६ सोलहरोगातंको से अत्यन्त दु:खित हुई-शारीरिक एव मानसिक व्य थाओं से व्यथित हुई-वह नागश्री काल अवसर कारकर छठी पृथिवी में २२ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावासों नैरयिक की पर्यायसेमें उत्पन्न हुई ॥ सू० ५ ॥

सोलसहिं रोयायकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट दुहट्टवसट्टा कालमासे काल किच्चा छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेण बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना)

તે નાગશ્રી બ્રાહ્મણીને તેજ ભવમા આ સોળ રોગાતકો પ્રકટ થયા (૧) શ્વાસ (૨) કાસ (૩) જ્વર (૪) દાહ (૫) કુક્ષિશૂલ (૬) ભગદર (૭) અર્શ (૮) યોનિશૂલ (૯) દૃષ્ટિશૂલ (૧૦) મૂર્ધશૂલ (૧૧) અરૂચિ (૧૨) અક્ષિવેદના (૧૩) કર્ણવેદના (૧૪) કણ્ડૂ (૧૫) જલોદર (૧૬) કુષ્ઠ આ સોળ રોગાતકોથી અતીવ દુખી થયેલી શારીરિક તેમજ માનસિક વ્યથાઓથી વ્યથિત થતી તે નાગશ્રી કાળ અવસરે કાળ કરીને છઠ્ઠી પૃથિવીમા બાવીસ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમા નૈરયિકની પર્યાયથી જન્મ પામી ॥ સૂ. ૫ ॥

मच्छेसु उववज्जइ, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए दोच्चंपि अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोस तेत्तीससागरोवम-ट्ठिईएसु नेरइएसु उववज्जई, सा णं तओहिंतो जाव उव्व-ट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववन्ना तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं० तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एवं जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना तओ उव्व-ट्टित्ता जाइं इमाइं खहयर विहाणाइं जाव अदुत्तरं च णं खर बायर पुढविकाइयत्ताए तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो ॥सू०६॥

टीका—' सा ण ' इत्यादि। सा=नागश्री ब्राह्मणी खलु ततः=षष्ठ्याः पृथिव्याः अनन्तरम्=आयुर्भवस्थितिक्षये गति ' उव्वट्टित्ता ' उद्धृत्य–निस्सृत्य मत्स्येषूत्पन्ना, तत्र खलु मत्स्यभवे सा ' सत्थवज्झा ' शस्त्रविद्धा ' दाहवक्कंतीए ' दाहव्युत्क्रान्त्या–दाहोत्पत्त्या, कालमासे कालं कृत्वाऽधः सप्तम्यां पृथिव्यामुत्कृष्टत्रयस्त्रिंश-त्सागरोपमस्थितिकेषु ' नेरइएसु ' नैरयिकेषु उत्पन्ना। सा खलु ततः=सप्तम्याः पृथिव्याः अनन्तरमुद्धृत्य द्वितीयवारमपि मत्स्येषूत्पद्यते। तत्रापि च खलु शस्त्र-

' सा ण तओ ' इत्यादि।

टीकार्थ–(सा) वह नागश्री (तओऽणंतरं सि) उस छट्ठी नरक की भव स्थिति समाप्त होने पर (उव्वट्टित्ता) वहां से निकली–और निकलकर (मच्छेसु उववन्ना तत्थ ण सत्थवज्झा दाहवक्कतीए कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना, सा ण ततोऽणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चपि मच्छेसु उवव

' सा ण तओ ' इत्यादि—

टीकार्थ-(सा) ते नागश्री (त ओ ऽ णत्तर सि) ते छठी नरकनी भवस्थिति पूरी थया बाद (उव्वट्टित्ता) त्यांथी नीकळी अने नीकळीने

(मच्छेसु उववन्ना तत्थ ण सत्थवज्झा दाह वक्कतीए कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमीए पुढवीए उक्कोसाए तेत्तीस सागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु उववन्ना सा ण उववज्जइ)

विद्धा दाहव्युत्क्रान्त्या द्वितीयवारमपि अधः सप्तम्या पृथिव्यामुत्कृष्टतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूपपद्यते, सा खलु 'तओहिंतो' तस्याः=सप्तम्याः पृथिव्याः, यावद् उद्वर्त्य 'तच्चपि' तृतीयवारमपि मत्स्येषु उत्पन्ना। तत्रापि च खलु शस्त्रविद्धा 'जाव कालं किच्चा' यावत् दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि षष्ठ्या पृथिव्यामुत्कृष्टतो द्वाविंशतिसागरोपमस्थितिकेषु नरकेषूत्पन्ना, सा खलु ततः=षष्ठ्याः पृथिव्या अनन्तरं 'उव्वट्टित्ता' उद्वर्त्य=निस्सृत्य उरःपरिसर्पेषूत्पन्नाः, तत्र शस्त्रवध्या दाहव्युत्क्रान्त्यामुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषूत्पन्ना। एवं यथा गोशालकस्तथा ज्ञातव्यम्=गोशालकवदस्या-

---

ज्जई) तिर्यञ्चगति में मच्छ की पर्याय से उत्पन्न हो गई। वहां वह मत्स्य के भव में शस्त्र से विद्ध होकर दाह की उत्पत्ति से काल अवसर काल कर मरी सो नीचे सप्तम नरक में ३३ तेतीस सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकावास मे नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां से निकलकर फिर वह मत्स्य की पर्याय से उत्पन्न हुई। (तत्थ वि य णं सत्थविज्झादाहवक्कतीए दोच्चपि अहे सत्तमीए पु०) वहां वह शस्त्र से पुनः विद्ध होकर दाहकी व्युत्क्रान्ति से मरी और मरकर द्वितीयवार भी सप्तम नरक में (उक्कोस तेतीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उववज्जइ) उत्कृष्ट–तेतीस सागर की स्थिति लेकर नैरयिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। (सा णं तओ हिं तो जाव उववट्टित्ता तच्चपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं तओऽणंतरं उवट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एवं जहा गोसाले

तिर्यंच गतिमां मच्छथी पर्यायनी जन्म पामी त्यां ते मत्स्यना भवमां शस्त्र वडे वींधाईने दाहथी पीडाईने काळ अवसरे काळ करीने मरण पामी अने नीचे सातमां नरकमां ३३ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाळा नरकावासमां नैरयिकनी पर्यायथी जन्म पामी त्यांथी नीकळीने फरी ते मत्स्यना पर्यायथी जन्म पामी (तत्थ वि य णं सत्थविज्झा दाहवक्कतीए दोच्चपि अहे सत्तमीए पु०) त्यां ते फरी शस्त्र वडे विद्ध थईने दाहथी पीडाईने मरी अने मरीने बीजी वखत पण सातमां नरकमां (उक्कोस तेतीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइए उववज्जइ) उत्कृष्ट ३३ सागरनी स्थिति लईने नैरयिकनी पर्यायमां जन्म पामी (सा णं तओहिंतो जाव उव्वट्टित्ता तच्चपि मच्छेसु उववन्ना, तत्थ वि य णं सत्थवज्झा जाव कालं किच्चा दोच्चपि छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं तओऽणंतरं

वर्णनं बोध्यमित्यर्थः, 'गाररगणप्पमाए मज्झु उरास्मा' यावत् रत्नप्रभायां सम-
मुत्पन्ना=अयं भार –उरः परिसर्पतयो नि सृत्य पञ्चम्यां धूमप्रभायां पृथिव्यां
मुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो नि सृत्य द्वितीय
वारमुरःपरिसर्पेषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि पञ्चम्यां पृथि

मेहा नेयव्व जाव रयणप्पभाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्टित्ता जाइ
ईमाइ खहायर विहाणाइ जाव अदुत्तर च ण खरवायर पुढविकाइयत्ता
ते तेसु अणेगसतसहस्स खुत्तो) वहां से भव स्थिति समाप्त होते ही
वह निकली–निकल कर तीसरी बार भी मत्स्य की पर्याय में उत्पन्न
हुई। वहां शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी सो मर कर
दुबारा भी छठी ही पृथिवी में २२ बावीस सागर की उत्कृष्ट स्थिति ले
कर उत्पन्न हुई। वहां की भवस्थिति समाप्त कर जब वह वहां से
निकली तो उर परिसर्प की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां पर भी वह
शस्त्र विद्ध होकर दाह की व्युत्क्रान्ति से–उत्पत्ति से काल अवसर काल
कर धूमप्रभा नाम की पचम पृथिवी में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न
हुई। वहा सत्तरह सागर की उत्कृष्ट–स्थिति इसकी हुई। गोशालक
की तरह इसका वर्णन जानना चाहिये। तात्पर्य इसका इस प्रकार है–
१७ सागर की उत्कृष्टस्थिति वाले पचम नरक से निकल द्वितीय बार
भी वह उरः परिसर्प की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहा से पूर्व की तरह

उव्वट्टित्ता मच्छेसु उरएसु एव जहा गोसाले तहा नेयव्वं जाव रयणप्प
भाओ सत्तसु उववन्ना, तओ उव्वट्टित्ता जाइ इमाइ खहयरविहाणाइ जाव
अदुत्तरं, च ण खरवायरपुढविकाइयत्ता ते तेसु अणेगसतसहस्सखुत्तो)
ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી થતા જ તે ત્યાથી નીકળી અને નીકળીને ત્રીજી વાર
પણ માછલીના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઇને તથા દાહથી
પીડાઇને મરણ પામી અને તે વખતે પણ છઠી પૃથિવીમા ૨૨ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ
સ્થિતિ લઇને ઉત્પન્ન થઇ ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને જ્યારે તે ત્યાથી
નીકળી ત્યારે તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયમા જન્મ પામી ત્યા પણ તે શસ્ત્રથી
વીધાઇને અને દાહથી પીડાઇને કાળ અવસરે કાળ કરીને ધૂમપ્રભા નામની
પચમ પૃથિવીમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યા ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ
સ્થિતિ તેની થઈ ગોશાલકની જેમ આનુ વર્ણન જાણી લેવુ જોઇએ મતલબ
આની આ છે કે ૧૭ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા પચમ નરકથી નીકળીને
બીજી વખત પણ તે ઉર પરિસર્પના પર્યાયથી જન્મ પામી ત્યાથી પણ પહે-
લાની જેમજ કાળ અવસરે કાળ કરીને બીજીવાર પણ આ પૃથિવીમા

व्यामुत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना । ततो नि स्सृत्य तृतीयवारमपि उरः परिसर्पेषूत्पद्यते, अत्र पूर्ववत् कालं कृत्वा चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यामुत्कृष्टतो – दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निःसृत्य सिंहेषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि चतुर्थ्यां पृथिव्यामुत्कृष्टतो दशसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततश्चतुर्थ्याः पृथिव्या निःसृत्य द्वितीयवारमपि सिंहेषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् काल कृत्वा तृतीयाया वालुकप्रभाया पृथिव्यामुत्कृष्टत सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निः सृत्य पक्षिषूत्पद्यते, तत्र पूर्ववत् काल कृत्वा द्वितीयवारमपि तृतीयाया पृथिव्यामुत्कृष्टतः

काल कर द्वितीयवार भी यह पचम पृथिवी मे १७ सागर की उत्कृष्ट स्थितिवाले नरकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की स्थिति समाप्त कर जब यह वहां से निकली–तो तीसरी बार भी यह उरः परिसर्पों में उत्पन्न हुई । वहां से पूर्व की तरह काल कर चौथी पङ्क प्रभा पृथिवी में कि जहा १० सागर की नैरयिकों की उत्कृष्ट स्थिति है वहां नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहा से निकल कर यह सिंह की पर्याय में उत्पन्न हुई । पहिले की तरह वहा से भी मर कर द्वितीय बार भी यह चतुर्थ नरक में दश सागर की स्थिति वाले नरक में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । चतुर्थ नरक से निकल कर यह दुवारा भी सिंह की पर्याय से उत्पन्न हुई । वहां से अपने समय पर मर कर फिर यह वालुका प्रभा नाम की तीसरी पृथिवी में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर नैयरिक की पर्याय में उत्पन्न हुई। वहां से निकल कर फिर यह पक्षियों के कुल मे उत्पन्न हुई । यहा से मर कर

१७ सागरनी उत्कृष्ट स्थितिवाळा नरकोमा नैरयिकना पर्यायथी जन्म पामी त्यांनी स्थिति पूरी करीने ज्यारे ते त्यांथी नीकळी तो त्रीजी वार पण ते उर परिसर्पमा उत्पन्न थई त्यांथी पहेलानी जेम काळ करीने चोथी पङ्क प्रभा पृथिवीमा–के ज्यां दशसागरनी नैरयिकोनी उत्कृष्ट स्थिति छे, त्या नैरयिकनी पर्यायथी उत्पन्न थई, त्यांथी नीकळीने ते सिंहना पर्यायथी जन्म पामी पहेलानी जेम त्यांथी पण मरण पामीने बीजीवार पण चतुर्थ नरकमा दश सागरनी स्थितिवाळा नरकमा नैरयिकना पर्यायथी जन्म पामी चतुर्थ नरकथी नीकळीने ते फरी सिंहना पर्यायथी उत्पन्न थई त्यांथी मरण पामीने फरी ते वालुकाप्रभा नामनी त्रीजी पृथिवीमा सात सागरनी उत्कृष्ट स्थिति लईने नैरयिकनी पर्यायमा जन्म पामी, त्यांथी नीकळीने ते फरी ते पक्षीओना कुळमा

सप्तसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततस्तृतीयायाः पृथिव्या निःसृत्य द्वितीयवारमपि पक्षिषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा द्वितीयायां पृथिव्यां शर्कराप्रभायामुत्कृष्टत्रिसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततो निःसृत्य सरीसृपेषूत्पद्यते, तत्रापि शस्त्रेभ्यो दाहव्युत्क्रान्त्या कालमासे कालं कृत्वा द्वितीयवारमपि द्वितीयायां पृथिव्यामुत्कृष्टत्रिसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना। ततो द्वितीयायाः पृथिव्याः निःसृत्य द्वितीयवारमपि सरीसृपेषूत्पद्यते, तत्रापि पूर्ववत् कालं कृत्वा प्रथमायां पृथिव्यां रत्नप्रभायामुत्कृष्टैकसागरोपमस्थितिकेषु नैरयिकेषूत्पन्ना, ततो निःसृत्य संज्ञिषु, ततो निःसृत्याऽसंज्ञिषूत्पद्यते, ततो निः

फिर यह पुनः तीसरे नरक में सात सागर की उत्कृष्ट स्थिति वाले नैरयिकों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहा से निकल कर पुनः यह पक्षियो के कुल में उत्पन्न हुई। वहा से मर कर फिर यह दूसरी पृथिवी जो शर्करा प्रभा है और जिसके नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति है वहा नैरयिको की पर्याय से उतनी स्थिति लेकर उत्पन्न हुई। वहाँ से निकल कर सरीसृपों में यह दाह की व्युत्क्रान्ति से मरी तो मर कर द्वितीय बार भी द्वितीय पृथिवी के नरकावासों में तीन सागर की उत्कृष्ट स्थिति लेकर उत्पन्न हुई। द्वितीय पृथिवी से निकल कर दुबारा यह सरीसृप में उत्पन्न हुई। वहा से अपने समय पर मर कर रत्नप्रभा नामकी प्रथम पृथिवी में उत्कृष्ट एक सागर की स्थिति वाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई। वहां की भवस्थिति समाप्त होने पर यह वहा से निकलकर संज्ञी जीवो में वहां

જન્મ પામી ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે ત્રીજા નરકમા સાત સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિવાળા નૈરયિકોમા નૈરયિકના પર્યાયથી ઉત્પન્ન થઇ ત્યાથી નીકળીને ફરી તે પક્ષીઓના કુળમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી મરણ પામીને ફરી તે બીજી પૃથિવી જે શર્કરાપ્રભા છે અને જેના નરકાવાસોમા ત્રણ સાગરની ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે ત્યા નૈરયિકોના પર્યાયથી તેટલી જ સ્થિતિ લઇને જન્મ પામી ત્યાથી નીકળીને સરીસૃપોમા તે ઉત્પન્ન થઈ ત્યા શસ્ત્રથી વીધાઇને તથા દાહથી પીડાઇને મરણ પામી અને ત્યારપછી બીજીવાર પણ બીજી પૃથિવીના નરકાવાસોમા ત્રણ સાગર જેટલી ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ લઇને ઉત્પન્ન થઈ બીજી પૃથ્વિથી નીકળીને બીજીવાર તે સરીસૃપમા ઉત્પન્ન થઈ ત્યાથી યથા સમય મરણ પામીને રત્નપ્રભા નામની પ્રથમ પૃથ્વિમા ઉત્કૃષ્ટ એક સાગરની સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમા નૈરયિકના પર્યાયતી ઉત્પન્ન થઈ ત્યાની ભવસ્થિતિ પૂરી કરીને તે ત્યાથી નીકળીને સંજ્ઞી-જીવોમા, ત્યાથી પણ મરણ પામીને

सृत्य द्वितीयवारमपि प्रथमाया पृथिव्या पल्योपमस्याऽसंख्येयभागस्थितिकेषु नैरयिकेषु नैरयिकतयोत्पन्ना ' इति ।

' तओ उव्वट्टित्ता ' तत उद्वर्त्य=रत्नप्रभातो निः सृत्य यानि इमानि ' खहयरविहाणाइं ' खचरविधानानि चर्मपक्ष्यादीनि भवन्ति तेषु, यावत् अथोत्तर च खलु यानीमानि खरबादरपृथिवी कायिकविधानानि तेषु खरबादरपृथिवीकायिकतयाऽनेकशतसहस्रकृत्वः समुत्पन्ना ॥ सू०६ ॥

मूलम्-सा णं तओऽणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबूदीवे दीवे भारहेवासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया तएणं सा भद्दा सत्थवाही णवण्हं मासाणं० दारियं पयाया सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाण, तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोन्न गुणनिप्फन्न नामधेज्जं करेंति-जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा त होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया, तएण तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति, तएणं सा सूमालिया दारिया पंचधाई परिग्गहिया तं जहा-खीरधाईए

से भी मर कर असञ्ज्ञी जीवों मे और फिर वहा से मर कर फिर दुबारा भी प्रथम पृथिवी में १ एक पल्य के असख्यात वें भाग प्रमाण स्थितिवाले नरकावासों में नैरयिक की पर्याय से उत्पन्न हुई । उस रत्न प्रभा पृथिवी से निकल कर फिर यह जितने ये पक्षिभेद हैं-चर्म पक्षी आदि हैं-उनमें और उनके बाद जो ये खर-बादर-पृथिवीकायादि भेद हैं उनमें खरबादर पृथिवीकायिकरूपसे लाखों वार उत्पन्न हुई ॥सू०६॥

અને ફરી ત્યાંથી મરણ પામીને બીજીવાર પણ પહેલી પૃથ્વિમા ૧ એક પલ્યના અસખ્યાતમાં ભાગ પ્રમાણ સ્થિતિવાળા નરકાવાસોમા નૈરયિકના પર્યાયથી જન્મ પામી તે રત્નપ્રભા પૃથ્વિથી નીકળીને ફરી તે જેટલા પક્ષી ભેદો છે- ચર્મ પક્ષી વગેરે છે-તેઓમા અને ત્યારપછી ખર-બાદર પૃથ્વીકાય વગેરે ભેદ છે તેઓમા ખર-બાદર પૃથ્વિકાયિકના રૂપમા લાખો વાર જન્મ પામી સૂ. ૬

'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूता दारिकामित्याह—'सुकुमालकोमलिय' सुकुमारकोमलाम्–अतिमृदुलाम् गजतालुकसमाना अङ्गस्यातिकोमलतया गजतालुतुल्यामित्यर्थः। तस्या दारिकाया 'निव्वत्तबारसाहियाए' निर्वृत्तद्वादशाहिकायाः सम्प्राप्तद्वादशदिनसाया. अम्मापितरौ=मातापितरौ इदमेतद्रूप 'गोणं' गौणं =गुणेभ्य आगत=प्राप्त गुणनिष्पन्न=गुणबोधकं नामधेय कुरुतः कर्तुंविचारयतः तथाहि यस्मात् खलु अस्माकमेषा दारिका सुकुमारा गजतालुकसमाना जाता, तद्=तस्मात् भवतु खलु अस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं 'सुकुमारिका' इति। ततः विचारकरणानन्तर खलु तस्या दारिकाया अम्बपितरौ नामधेय कुरुतः 'सुकुमारिका' इति। तत खलु सा सुकुमारिका दारिका पञ्चधात्रीपरिगृहीता–पञ्चसंख्यकाभि र्धात्रीभिः=उपमातृभिः सुरक्षिता जाता, तद् यथा=तासा पञ्चानां धात्रीणा नामानि दर्शयति 'खीरधाईए जाव गिरकंदर' इति। क्षीरधात्र्या=स्तन्य-

---

बाद्के गर्भ के नौ मास तथा साढे सात दिन रात पूर्णरूप से व्यतीत हो चुके तव उसने पुत्रीको जन्म दिया। यह पुत्री अत्यन्त कोमल अगवाली थी इसी लिये गजका तालु भाग जिस प्रकार मृदुल होता है यह वैसी ही कोमल थी। जब यह १२ बारह दिन की हो चुकी-तब इस के मातापिताने इसका 'यथा नाम तथा गुण' इस कहावतके अनुसार गुणों को लेकर नाम संस्कार करने का विचार किया। विचार करने के बाद उन्होंने इस ख्याल से कि यह हमारी पुत्री अत्यन्त सुकुमार और गज तालु का के जैसी मृदुल है अतः इसका नाम सुकुमारिका रहे (तएणं तीसे दारियाए अम्मा पियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति) उस कन्या का नाम सुकुमारिका रख दिया (तएण सा सुकुमारियदारिया

ભદ્રા સાર્થવાહીના ગર્ભના નવ માસ અને સાઢા સાત દિવસ રાત પૂરા થઈ ચૂકયા ત્યારે તેણે પુત્રીને જન્મ આપ્યો. આ પુત્રી અતીવ કોમળાંગી હતી હાથીના તાળવાનો ભાગ જેવો સુકોમળ હોય છે, તે તેવીજ કોમળ હતી જ્યારે તે બાર દિવસની થઈ ગઈ ત્યારે તેના માતાપિતાએ જેવું નામ તેવા ગુણવાળી એ કહેવત મુજબ ગુણોના આધારે તેનો નામ સસ્કાર કરવાનો વિચાર કર્યો વિચાર કર્યા બાદ તેઓએ પોતાની પુત્રીની સુકોમળ દૃષ્ટિ સમક્ષ રાખીને એટલે કે તેઓએ આ પ્રમાણે વિચારીને કે આ મારી પુત્રી હાથીના તાળવા જેવી સુકોમળ છે માટે એનુ નામ સુકુમારી રાખીએ

(तएण तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति)

તે કન્યાનુ નામ સુકુમારી રાખ્યુ

जाव गिरिकंदरमालीणा इव चंपकलया निव्वाए निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ, तएणं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ सरीरा जाया यावि होत्था ॥ सू० ७ ॥

टीका—' सा ण तओ ' इत्यादि । सा खलु नागश्री, ततोऽनन्तरम् उद्वर्त्य जम्बूद्वीपे दीपे भारते वर्षे चम्पाया नगर्यां सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य भद्राया भार्यायाः कुक्षौ ' पच्चायाया ' प्रत्यायाता गर्भसमागता । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही नवसु मासेषु बहुप्रतिपूर्णेषु अर्द्धाष्टमेषु रात्रिन्दिवेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु दारिकां

' सा ण तओऽणतर' इत्यादि ।

टीकार्थ-(सा ण तओऽणतर उवट्टित्ता) इसके बाद वह नागश्री खर पृथवी कायिका से निकल कर (इहेव जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसिदारियत्ताए पच्चायाया) इसी जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में स्थित भारतवर्ष नामके क्षेत्र में वर्तमान चपानगरी मे सागरदत्त सेठ की धर्मपत्नी-भद्रा की कुक्षि में पुत्रीरूप से अवतरी (तएण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाण दारिय पयासा सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्त बारिसाहियाए अम्मापियरो इम एयारूव गोन्नं गुणनिप्फन्न नाम धेज्ज करेति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकुमाला गयतालुय समाणा त होउण अम्ह इमीसे दारियाए नामधेज्जे सुकुमालिया) भद्रा सार्थ

'सा ण तओऽणंतर उवट्टित्ता ' इत्यादि—

टीकार्थ-(सा ण तओऽणतर उवट्टित्ता) त्यारपछी ते नागश्री खर पृथ्विका यिकथी नीकळीने (इहेव जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे चपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया) ए ज जबूद्वीप नामना द्वीपमा आवेला भारतवर्ष नामना क्षेत्रमा विद्यमान चपानगरीमा सागरदत्त शेठनी धर्मपत्नी भद्राना उदरमा पुत्री रूपमा अवतरी (तएण सा भद्दा सत्थवाही नवण्ह मासाण० दारिय पयाया सुकुमालकोमलिय गयतालुयसमाण तीसे दारियाए निव्वत्तबारिसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूव गोन्न गुणनिप्फन्न नामधेज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह एसा दारिया सुकुमाला गयतालुयसमाणा त होउण अम्ह इमीसे दारियाए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि-तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग-रदारगं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एवं खलु पुत्ता ! साग-रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया ! दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव तं जइ ण सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विउलं असणपाणखाइमसा-इमं उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमतेइ जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव सपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग-च्छित्ता चंपानयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा-वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सा-गरदत्ते सत्थवाहे विपुल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडा-वेइ उवक्खडवित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टय दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कल-सेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ करावित्ता सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

से ?, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्किट्ठसरीरा तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए जाव मित्तनाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी–भण देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?, तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स भारियत्ताए वरेमि, जइ णं जाणाह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो दिज्जउ णं सूमालिया सागरस्स, तएणं देवाणुप्पिया किं दलयामो सुक्कं सुमालियाए ?, तएणं से सागरदत्ते तं जिणदत्तं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा जाव किमंग पुण पासणयाए तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं तं जइ णं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए

भवइ तो णं अहं सागरस्स दारगस्स सूमालियं दलयामि- तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग- रदारगं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! साग- रदत्ते सत्थवाहे मम एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया ! दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा तं चेव त जइ णं सागरदारए मम घरजामाउए भवइ ता दलयामि, तएणं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइं सोहणंसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तसि विउले असणपाणखाइमसा- इम उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ जाव सम्माणित्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव सपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्ग- च्छित्ता चंपानयरि मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहा- वित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएणं सा- गरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असणपाणखाइमसाइम उवक्खडा- वेइ उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टय दुरूहावेइ दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कल- सेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ करावित्ता सागरं दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ ॥ सू० ८ ॥

टीका—'तत्थ णं चपाए' इत्यादि । तत्र खलु चम्पायां नगर्यां जिनदत्तो नाम सार्थवाह आढ्यो यावद् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-सा किम्भूता-सुकुमारा इष्टा यावत् मानुष्यकान् 'पच्चणुब्भवमाणा' प्रत्यनुभवन्ती विहरति । तस्य खलु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्रायाः भार्याया आत्मजः= अङ्गजातः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारपाणिपादः, सर्व-लक्षणसम्पन्नः यावत्-सुरूपः । तत खलु स जिनदत्तसार्थवाहः अन्यदा कदाचित्

'तत्थ णं चपाए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तत्थ णं चपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्डे, तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए काम भोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) उस चपा नगरीमें जिनदत्त नामका एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एव जन मान्य था । इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था । यह सर्वाङ्ग सुन्दरी थी। समस्त अग और उपाग इसके बडे ही सुकुमार थे। यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी । पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनद के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था । यह सुकुमाल यावत्

तत्थण चपाए इत्यादि—

टीकार्थ-(तत्थण चपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्डे तस्सण जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुब्भवमाणा विहरइ) ते चपा नगरीमा जीनदत्त नामे એક સાર્થવાહ રહેતો હતો તે ધન ધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સપન્ન તેમજ સમાજમા પૂછાતો માણસ હતો તેની ધર્મપત્નીનુ નામ ભદ્રા હતુ, તે સર્વાગ સુદરી હતી તેના બધા અગો અને ઉપાગો બહુ જ સુકોમળ હતા, તે પોતાના પતિને બહુજ વહાલી હતી પતિની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતી તે સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરી રહી હતી

(तस्सणं जिणथत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे)

ભદ્રાભાર્યાથી ઉત્પન્ન થયેલો ભદ્રાભાર્યાને એક પુત્ર હતો તેનુ નામ સાગર હતું તે સુકુમાર યાવત્ સુદર રૂપવાન હતો.

स्वकाद् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति, प्रतिनिष्क्रम्य, सागरदत्तस्य गृहस्य 'अदूरसामन्ते'=नातिदूरे नातिसमीपे 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति=गच्छति, 'इमचण' अस्मिन् समये सुकुमारिका दारिका स्नाता=कृतस्नाना 'चेडियासघ-परिवुडा' चेटिकासघपरिवृता=दासीसमूहमध्यगता, उपरि आकाशतलके-प्रासाद-स्याट्टालिकोपरि 'कणगतेंदुसकेण' कनकतेंदुसयेन 'तेंदुसय' इतिदेशीशब्दः, सुवर्णमयकन्दुकेन 'कीलमाणी २' विहरति, ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सुकुमारिका दारिका पश्यति, दृष्ट्वा सुकुमारिकाया दारिकाया रूपे च यौवने च लावण्ये च 'जाव विम्हए' यावत् विस्मितः=आश्चर्ययुक्तः सन् कौटुम्बिकपुरुषान्= आज्ञाकारिण पुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानु-प्रिया ! कस्य दारिका किं वा नामधेय 'से' इति तस्याः ?, ततः खलु ते

अच्छे रूपवाला था । (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूर सामतेणं वीईवयई) एक दिन जिनदत्त सार्थवाह अपने घरसे निकला और निकलकर सागरदत्तके घरके पास से हो कर जा रहा था । (इम च ण सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पिआगा सतलगसि कणगतेदूसएणं कीलमाणी२ विहरइ) इसी समय सुकु-मारिका दारिका नहा धो कर अपने प्रासाद की छत पर दासी समूहके साथ २ सुवर्णमय कदुक (गेंद) से खेल रही थी । (तएण से जिण दत्ते सत्थवाहे सूमालिय दारिय पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुविय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एसण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा-नामधेज्जं से ? तएण ते

तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाई साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स गिहस्स अदूरसामतेण वीईवयई)

એક દિવસે જીનદત્ત સાર્થવાહ પોતાને ઘેરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને સાગરદત્તના ઘરની પાસે થઈને જઈ રહ્યો હતો.

(इम च ण सूमालिया दारिया ण्हाया चेडियासघपरिवुडा उप्पिं आगास-तलगसि कणगतेंदूसएण कीलमाणी २ विहरइ)

તે વખતે સુકુમારિકા દારિકા સ્નાન કરીને પોતાના મહેલની અગાશી ઉપર દાસી સમૂહની સાથે સુવર્ણમય કંદુક (દડી) રમતી હતી

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालिय दारिय पासइ पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवेय ३ जाय विम्हए कोडुविय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी एसण देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं वा नामधेज्ज से ? तएण ते कोडुविय

टीका—'तत्थ ण चंपाए' इत्यादि। तत्र खलु चम्पायां नगर्यां जिनदत्तो नाम सार्थवाह आढ्यो यावद् अपरिभूत आसीत्, तस्य जिनदत्तस्य भद्रा भार्या आसीत्-सा किम्भूता-सुकुमारा इष्टा यावत् मानुष्यकान् 'पच्चणुभवमाणा' प्रत्यनुभवन्ती विहरति। तस्य खलु जिनदत्तस्य पुत्रो भद्राया भार्याया आत्मजः= अङ्गजातः, सागरो नाम दारकः आसीत् स किम्भूतः-सुकुमारपाणिपादः, सर्वलक्षणसम्पन्नः यावत्-सुरूपः। तत खलु स जिनदत्तसार्थवाहः अन्यदा कदाचित्

'तत्थ णं चपाए' इत्यादि।

टीकार्थ-(तत्थ ण चपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे, तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणा विहरइ) उस चपा नगरीमें जिनदत्त नामका एक सार्थवाह रहता था जो धनधान्य आदि से विशेष परिपूर्ण एव जन मान्य था। इसकी धर्मपत्नी का नाम भद्रा था। यह सर्वांग सुन्दरी थी। समस्त अग और उपाग इसके बडे ही सुकुमार थे। यह अपने पतिको अत्यन्त इष्ट प्रिय थी। पति के साथ मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों को भोगती हुई यह आनद के साथ अपने समय व्यतीत किया करती थी (तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे) भद्रा भार्या से उत्पन्न हुआ जिनदत्त सार्थवाहके एक पुत्र था-जिसका नाम सागर था। यह सुकुमाल यावत्

तत्थण चपाए इत्यादि—

टीकार्थ-(तत्थण चंपाए नयरीए जिणदत्ते नाम सत्थवाहे अड्ढे तस्सण जिणदत्तस्स भद्दा भारिया, सूमाला इट्ठा जाव माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणा विहरइ) ते चपा नगरीमा जीनदत्त नामे એક સાર્થવાહ રહેતો હતો. તે ધન ધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સપન્ન તેમજ સમાજમા પૂછાતો માણસ હતો. તેની ધર્મપત્નીનુ નામ ભદ્રા હતું, તે સર્વાંગ સુદરી હતી તેના બધા અગો અને ઉપાગો બહુ જ સુકોમળ હતા, તે પોતાના પતિને બહુજ વહાલી હતી પતિની સાથે મનુષ્ય ભવના કામભોગો ભોગવતી તે સુખેથી પોતાનો વખત પસાર કરી રહી હતી

(तस्सणं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नाम दारए सुकुमाले जाव सुरूवे)

ભદ્રાભાર્યાથી ઉત્પન્ન થયેલો ભદ્રાભાર્યાને એક પુત્ર હતો. તેનુ નામ સાગર હતું તે સુકુમાર યાવત્ સુદર રૂપવાન હતો.

त्राहस्तेषां कौटुम्बिकानामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नातो यावद् मित्रज्ञातिपरिवृतश्चम्पाया नगर्या मध्ये भूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, ततस्तदनन्तरम् सागरदत्तः सार्थवाहः खलु जिनदत्त सार्थवाहम् एजमानम्=आगच्छन्तं पश्यन्ति, दृष्ट्वाऽऽसनादुत्तिष्ठति, उत्थाय 'आसणेणं उवणिमंतेइ' आसनेनोपनिमन्त्रयति=आसनं उपवेशनार्थं प्रार्थयति, उपनिमन्त्र्य, आसनोपर्युपवेशनानन्तरम् ,आस्वस्थ=मार्गश्रमापगमात् श्रान्तिरहितं, विस्वस्थ=विशेषतो विश्रान्तिमुपगतं, सुखासनवरगतं=सुखेन विशिष्टासनोपविष्टं, तं

अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइपरिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी) जिनदत्त सार्थवाहने उन कौटुम्बिक पुरुषों के मुख से जब इस अर्थ को सुना तो सुनकर वह पहिले अपने घर गया—वहां जा कर उसने स्नान किया। यावत् फिर वह अपने मित्र, ज्ञाति आदि परिजनों के साथर चंपानगरी के बीच से हो कर जहां सागरदत्त का घर था वहा पहुँचा-सागरदत्तने ज्यों ही अपने घर पर आते हुए जिनदत्त सार्थवाहको देखा – तो वह जल्दीसे अपने स्थान से उठा-और उठकर " आप यहा बैठिये " इस प्रकार उनसे कहने लगा जब वे यथोचित स्थान पर बैठ चुके और आस्व

(तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा-जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए, जाव मित्तणाइ परिवुडे चंपाए० जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, तएणं सागरदत्ते सत्थवाहे, जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ उवणिमंतित्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी)

જીનદત્ત સાર્થવાહે તે કૌટુંબિક પુરૂષોના મુખથી આ વાત સાંભળીને સૌ પહેલા તેઓ પોતાને ઘેર ગયા ત્યાં પહોંચીને તેમણે સ્નાન કર્યું યાવત પછી તે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોની સાથે ચંપા નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં સાગરદત્તનું ઘર હતું ત્યાં પહોંચ્યા સાગરદત્ત જીનદત્ત સાર્થવાહને પોતાને ઘેર આવતા જોઈને ત્વરાથી તે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભો થઈ ગયો અને ઊભો થઈને " તમે અહીં બેસો "

कौटुम्बिकपुरुषा जिनदत्तेन सार्थवाहेनैवमुक्ताः सन्तो हृष्टतुष्टाः-अभिमुदिताः ' करतल जाव ' करतलपरिगृहीतं शिर आवर्तं दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादिषुः-हे देवानुप्रिया ! एषा सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य ' धूया ' दुहिता=पुत्री, भद्राया आत्मजा सुकुमारिका नाम दारिका सुकुमारपाणिपादा यावद्-रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च उत्कृष्टा उत्कृष्ट शरीरा । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थ

कोडुंबिय पुरिसा जिणदत्तेण सत्थवाहेणं एव वुत्तासमाणा हट्ठ करयल जाव एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया-भद्दाए अत्तिया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव उक्कि सरीरा) खेलती हुई उस कुमारिका दारिका को जिनदत्त सार्थवाह ने देखा-देखकर वे सुकुमारिका दारिका के रूप यौवन एव लावण्य में आश्चर्यचकित हो गये-और आश्चर्य से युक्त होकर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर वे उनसे इस प्रकार कहने लगे—हे देवानु प्रियो ! यह कन्या किसकी है इसका नाम क्या है । जिनदत्त सार्थवाह के द्वारा पूछे गये उन कौटुम्बिक पुरुषों ने हर्षित हो कर और अपने दोनों हाथो जोड़ कर वडे विनय के साथ उनसे ऐसा कहा—हे देवानु-प्रिय ! यह पुत्री सागरदत्त सार्थवाहकी है । भद्रा भार्या की कुक्षि से यह जन्मी है । इसका नाम सुकुमारिका है । इसके कर चरण बडे ही सुकुमार हैं यावत् रूप, यौवन एव लावण्यसे यह सर्वोत्कृष्ट है और सर्वाङ्ग सुन्दरी है । (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं

पुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एव वुत्ता समाणा हट्ठ करयल जाव एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तिया सूमालिया नाम दारिया सुकुमालपाणिपाया जाव, उक्किट्ठसरीरा)

રમતી સુકુમાર દારિકાને જીનદત્ત સાર્થવાહે જોઈ જોઈને તેઓ સુકુમાર દારિકાના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યમાં આશ્ચર્ય ચકિત થઇ ગયા અને ત્યાર પછી તેમણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આ કન્યા કોની છે ? એનું નામ શું છે ? જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે એવી રીતે પૂછાએલા તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ હર્ષિત થઇને પોતાના બન્ને હાથ જોડીને બહુજ વિનયની સાથે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાર્થવાહ સાગરદત્તની આ પુત્રી છે ભદ્રાભાર્યાના ઉદરથી આનો જન્મ થયો છે સુકુમારિકા આનું નામ છે એના હાથપગ ખૂબ જ સુકોમળ યાવત્ રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી આ સર્વોત્કૃષ્ટ છે સુંદરી

पात्र=' कन्या योग्योऽय मत्पुत्रः सागर ' इति, ' सलाहणिज्जं वा ' श्लाघनीयं= प्रशसनीय वा ' सरिसो वा सजोगो ' सदृशो वा संयोगः-अय कन्यावरयो वैवाहिकः सम्बन्धः कुलेन रूपेण गुणेन वा तुल्य इति, 'तो ' तर्हि ' दिज्जउ ' ददातु भवान् खलु सुकुमारिका दारिकां सागराय=मत्पुत्रायेतिभावः । ततः खलु हे देवानुप्रिय ! ब्रूहि-किं दद्म-किं दद्मां, शुल्कं=संमानार्थं द्रव्य सुकुमारिकाया दारिकायाः ? ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्त जिनदत्तमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एकजाता=एकैवोत्पन्ना, तथा-इष्टा-अनुकूला, यावत्-कान्ता=ईप्सिता, प्रिया=प्रीतिपात्रा, मनोज्ञा=मनोगता तथा-

कन्या के योग्य है यह सबन्ध प्रशसनीय है, कन्या और वर का यह वैवाहिक सबन्ध कुल रूप और गुणो के अनुरूप है तो आप अपनी पुत्री सुकुमारिका को मेरे पुत्र सागर के लिये प्रदान कर दीजिये-(तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?) हे देवानुप्रिय ! साथ में यह भी कहदीजिये कि सुकुमारिका दारिका के समानार्थ हम क्या द्रव्य देवें (तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा, एगजाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि, सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग त जइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स सूमालिय दलयामि) सागरदत्तए ने जिनदत्त से तब इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह सुकुमारिका पुत्री मेरे यहा एक ही लड़की है और यह एक ही उत्पन्न हुई

છે, આ સબધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સબધ કુળ રૂપ અને ગુણોને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો. (तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સમાનાર્થ અમે શુ દ્રવ્ય રૂપમા આપીએ ?

(तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एग जाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग त जइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवड, तो ण अह सागरस्स दारगस्स सुमालिय दलयामि) ત્યારે સાગરદત્તે જીનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એકજ જન્મી છે

जिनदत्त सार्थवाहमेवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-हे देवानुप्रिय! भण=कथय, किमागमनप्रयोजनम्=कस्मै प्रयोजनाय समागतो भवान्? ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाह सागरदत्त सार्थवाहमेवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्-एवं खलु अहं हे देवानुप्रिय! तव दुहितरं=पुत्रीं, भद्राया आत्मजां सुकुमारिकां=सुकुमारिकानाम्नीं सगरस्य=सगरनामकस्य मत्पुत्रस्य भार्यात्वेन 'वरेमि' वृणोमि=वाञ्छामि, यदि खलु त्वं जानीहि हे देवानुप्रिय! 'जुत्तं वा' युक्तं वा=योग्य वा-'एतद् कार्यं समुचितं भवति' ति 'पत्तं वा' प्राप्तं वा=एतत् कार्यं कुलमर्यादामनुप्राप्तं वा,

स्थविश्वस्थ बन चुके-तब विशिष्ट आसन पर शांतिके साथ बैठे हुए उन जिनदत्त सार्थवाह से उसने इस प्रकार पूछा।-(भण देवाणुप्पिया! किमागमणपओयण) कहिये देवानुप्रिय! यहा पधारने का आपका क्या प्रयोजन है? किस प्रयोजन से आप यहा आये हैं-कहिये-(तएणं से जिणदत्तसत्थवाहे सागरदत्त सत्थवाह एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया! तव धूय भद्दाए अतिय सूमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि जइण जाणाह देवाणुप्पिया! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो दिज्जउण सूमालिया सागरस्स) जिनदत्त सार्थवाहने सागरदत्त सार्थवाहसे तब इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय! मैं आपकी सुभद्रा की कुक्षिसे उत्पन्न हुई सूमालिका पुत्री को अपने पुत्र सागर की भार्या बनाना चाहता हूँ। यदि आप इसे स्वीकार करे कि यह कार्य योग्य है-उचित है-कुल मर्यादा के अनुसार है अथवा मेरा पुत्र आपकी

આ રીતે તેમને કહેવા લાગ્યો. જ્યારે તેઓ ઉચિત સ્થાને બેસી ગયા અને આસ્વસ્થ વિશ્વસ્થ થઈ ચૂકયા ત્યારે વિશિષ્ટ આસન ઉપર શાંતિપૂર્વક બેઠેલા તે જીનદત્ત સાર્થવાહને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ-(भण देवाणुप्पिया! किमागमण पओयण) હે દેવાનુપ્રિય! બતાવો. અહીં પધારવાની પાછળ આપનો શો હેતુ છે? કયા પ્રયોજનથી આપ અહીં આવ્યા છો?

(तएण से जिणदत्त सत्थवाहे सागरदत्त सत्थवाह एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया' तव धूय भद्दाए अतिय सूमालिय सागरस्स भारियत्ताए वरेमि जइण जाणाह देवाणुप्पिया! जुत्त वा पत्त वा सलाहणिज्ज वा सरिसो वा सजोगो दिज्जउ ण सूमालिया सागरस्स)

જીનદત્ત સાર્થવાહે સાગરદત્ત સાર્થવાહને ત્યારે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! હુ તમારી સુભદ્રાના ઉદરથી જન્મ પામેલી સુમાલિકા પુત્રીને મારા પુત્ર સાગરની પત્ની બનાવવા ઇચ્છુ છુ આપ જો મારી માગણી ઉચિત સમજતા હો, કુળ-મર્યાદા યોગ્ય તેમજ મારો પુત્ર તમારી માટે યોગ્ય

पात्र=' कन्या योग्योऽय मत्पुत्रः सागर ' इति, ' सलाहणिज्जं वा ' श्लाघनीयं=प्रशसनीयं वा ' सरिसो वा सजोगो ' सदृशो वा संयोगः-अय कन्यावरयो वैवाहिकः सम्बन्धः कुलेन रूपेण गुणेन वा तुल्य इति, 'तो ' तर्हि ' दिज्जउ ' ददातु भवान् खलु सुकुमारिका दारिकां सागराय=मत्पुत्रायेतिभावः। ततः खलु हे देवानुप्रिय ! ब्रूहि-किं दद्म-किं दद्यां, शुल्क=समानार्थं द्रव्य सुकुमारिकाया दारिकायाः ? ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्त जिनदत्तमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एकजाता=एकैवोत्पन्ना, तथा-इष्टा-अनुकूला, यावत्-कान्ता-ईप्सिता, प्रिया=प्रीतिपात्रा, मनोज्ञा=मनोगता तथा-

कन्या के योग्य है यह संबन्ध प्रशसनीय है, कन्या और वर का यह वैवाहिक सबन्ध कुल रूप और गुणो के अनुरूप है तो आप अपनी पुत्री सुकुमारिका को मेरे पुत्र सागर के लिये प्रदान कर दीजिये-(तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?) हे देवानुप्रिय ! साथ में यह भी कहदीजिये कि सुकुमारिका दारिका के समानार्थ हम क्या द्रव्य देवें (तएण से सागरदत्ते तं जिणदत्त एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा, एगजाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि, सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं त जइणं देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स सूमालिय दलयामि) सागरदत्तए ने जिनदत्त से तब इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह सुकुमारिका पुत्री मेरे यहा एक ही लड़की है और यह एक ही उत्पन्न हुई

છે, આ સબધ સારો છે, કન્યા તેમજ વરનો આ લગ્ન સબધ કુળ રૂપ અને ગુણોને અનુરૂપ છે તો તમે તમારી પુત્રી સુકુમારિકાને મારા પુત્ર સાગરને માટે આપો. (तएण देवाणुप्पिया ! किं दलयामो सुक्क सुमालियाए ?) હે દેવાનુપ્રિય ! સાથે સાથે એ પણ અમને જણાવો કે સુકુમારી દારિકાના સમાનાર્થ અમે શુ દ્રવ્ય રૂપમા આપીએ ?

(तएण से सागरदत्ते त जिणदत्त एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एग जाया इट्ठा जाव किमगपुण पासणयाए त नो खलु अह इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओग त जइण देवाणुप्पिया ! सागरदारए मम घरजामाउए भवइ, तो ण अह सागरस्स दारगस्स सुमालिय दलयामि) ત્યારે સાગરદત્તે જિનદત્તને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ સુકુમારિકા દારિકા મારે એકની એક પુત્રી છે અને આ એક જ જન્મી છે

मनोमा-मनसः स्थानभूता, किं बहुना उदुम्बरपुष्पमिव ' उदुम्बरपुष्पं केनापि दुर्लभम् ' इतिवत् श्रवणमपि यत्नेन सा दुर्लभा, किमङ्ग ! पुन-र्दर्शनविषयतया, तत्= तस्मात् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं= वियोगम्, तत्=तस्मात् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम ' घरजामा उए ' गृहजामातृकः=गृहवासीजामाता भवति ' तोण ' तर्हि खलु अहं सागराय दारकाय सुकुमारिकां ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन सार्थवाहेनैवं मुक्त सन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं= स्वपुत्रं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र ! सागरदत्तः सार्थवाहो मम=मां प्रति, ' सम्बन्धसामान्ये षष्ठी ' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्- एवं खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा ' त चेव'

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत् मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एव मन का स्थान भूत होने से मनोज्ञ है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुंबर पुष्प के समान दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अतः मैं इसे देना नहीं चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के विना मैं एक क्षण भी नही रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन कर रहना चाहें तो मैं उन्हे यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ। (तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एवं

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાંત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાંત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ છે વધારે શું કહું ! આ તો અમને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી સાંભળવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હું આપવા ઇચ્છતો નથી કારણ કે એના વગર હું ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હું આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકું તેમ છું

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्ते णं सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे जेणेवं सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारग सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवात्रबोध्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि । ततः खलु त सागरको दारको जिनदत्तेन तार्थवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्बी सन् संतिष्ठते ।

वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइण सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि) इस प्रकार सागरदत्त सार्थवहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह् जहा अपना घर था वहां आया-वहां आकर उसने अपने सागर पुत्र को बुलाया । बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागरदत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ । उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं । यह उसे बहुत ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है । इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया । इसलिये वह उसका एक क्षण भी वियोग सहन नहीं कर सकता है । अतः वह

देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइण सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि)

આ રીતે જીનદત્ત સાર્થવાહ તેમની આ વાત સાભળીને તે જીનદત્ત સાર્થવાહ જ્યા પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યા. ત્યા આવીને તેણે પોતાના સાગરપુત્રને બોલાવ્યો બોલાવીને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર ! સાગરદત્ત સાર્થવાહે મને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે તમારો પુત્ર સાગર જો મારો ઘર જમાઈ રહેવા કબૂલતો હોય તો હુ મારી પુત્રી સુકુમારિકા તેમને આપવા તૈયાર છુ તેઓ તમને ઘર જમાઈ બનાવવા એટલા માટે ઇચ્છે છે કે સુકુમારિકા દારિકા તેમની એકની એક પુત્રી છે તે તેમને અતીવ ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે આ રીતે સાગરદત્તે જે કઇ કહ્યુ હતું તે બધુ તેમણે પોતાના પુત્ર સાગર આગળ રજૂ કર્યું અને છેવટે કહ્યુ કે એટલા માટે જ તે એક ક્ષણ પણ પોતાની પુત્રીનો વિયોગ સહી શકતો નથી તમને તે આ કારણથી જ ઘર જમાઈ બનાવવા ઇચ્છે છે

मनोमा=मनसः स्थानभूता, किं बहुना उदुम्बरपुष्पमिव 'उदुम्बरपुष्पं केनापि दृष्टम्' इतिवत् श्रवणाय यतोऽपि सा दुर्लभा, किमङ्ग ! पुन-दर्शनविषयतया, तत्= तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं= वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम 'घरजामाउए' गृहजामातृकः=गृहवासीजामाता भवति 'तोण' तर्हि खलु अहं सागराय दारकाय सुकुमारिका ददामि । ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन सार्थवाहेनैव मुक्त सन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं= स्वपुत्र शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एव खलु हे पुत्र ! सगारदत्तः सार्थवाहो मम=मा मति, 'सम्बन्धसामान्ये षष्ठी' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्- एव खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एक जाता इष्टा 'त चेव'

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एव मन का स्थान भूत होने से मनोज्ञ है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुम्बर पुष्प के समान दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अत: मैं इसे देना नहीं चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के विना मैं एक क्षण भी नही रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन कर रहना चाहे तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ। (तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेणं एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાંત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાંત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ છે વધારે શું કહું ! આ તો અમને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી સાંભળવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હું આપવા ઇચ્છતો નથી કારણ કે એના વગર હું ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હું આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકું તેમ છું

(तएण से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेण सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारग सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे मम एव

तदेव=पूर्वोक्तवर्णनमेवानुयोज्य यावत्-तस्माद् नो खल्वहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोग, तत्=तस्माद् यदि खलु सागरदारको मम 'घर-जामाउए' गृहजामातृकाः=गृहवासी जामाताभवति, तर्हि ददामि। ततः खलु व सागरको दारको जिनदत्तेन तार्थवाहेनैवमुक्तः तन् तूष्णीकः=मौनावलम्वी सन् संतिष्ठते।

वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइणं सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि) इस प्रकार सागरदत्त सार्थवहके कहे जाने पर जिनदत्त सार्थवाह जहा अपना घर था वहां आया-वहां आकर उसने अपने सागर पुत्र को बुलाया। बुला कर फिर उससे उसने ऐसा कहा-हे पुत्र-सागरदत्त सार्थवाह ने मुझसे ऐसा कहा है कि आपका पुत्र सागर यदि मेरे घर जमाई बन कर रहना चाहें तो मैं अपनी सुकुमारिका उन्हें दे सकता हूँ। उनका घरजमाई बनाने का कारण यह है कि यह सुकुमारिका पुत्र पुत्री उसके एक ही पुत्री है-और एक ही उत्पन्न हुई हैं। यह उसे बहुत ही अधिक इष्ट यावत् मनोम है। इस तरह सागरदत्त का कहा हुआ समस्त कथन जिनदत्त ने अपने पुत्र सागर को सुना दिया। इसलिये वह उसका एक क्षण भी वियोग सहन नही कर सकता है। अतः वह

देवाणुप्पिया! सूमालिया दारिया मम एगा एगजाया इट्ठा त चेव जइणं सागरदारए मम घरजमाउए भवइ ता दलयामि)

આ રીતે જીનદત્ત સાર્થવાહ તેમની આ વાત સાભળીને તે જીનદત્ત સાર્થવાહ જ્યા પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યા. ત્યા આવીને તેણે પોતાના સાગરપુત્રને બોલાવ્યો બોલાવીને તેણે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! સાગરદત્ત સાર્થવાહે મને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે તમારો પુત્ર સાગર જો મારો ઘર જમાઈ રહેવા કબૂલતો હોય તો હુ મારી પુત્રી સુકુમારિકા તેમને આપવા તૈયાર છુ તેઓ તમને ઘર જમાઈ બનાવવા એટલા માટે ઇચ્છે છે કે સુકુમારિકા દારિકા તેમની એકની એક પુત્રી છે તે તેમને અતીવ ઈષ્ટ યાવત્ મનોમ છે આ રીતે સાગરદત્તે જે કઇ કહ્યુ હતુ તે બધુ તેમણે પોતાના પુત્ર સાગર આગળ રજૂ કર્યું અને છેવટે કહ્યુ કે એટલા માટે જ તે એક ક્ષણ પણ પોતાની પુત્રીનો વિયોગ સહી શકતો નથી તમને તે આ કારણથી જ ઘર જમાઈ બનાવવા ઇચ્છે છે

मनोमा=मनसः स्थानभूता, किं बहुना उदुम्बरपुष्पमिव 'उदुम्बरपुष्पं केनापि दृष्टम्' इतिवत् श्रवणेऽपि यत्नेन सा दुर्लभा, किमङ्ग ! पुन-र्दर्शनविषयतया, तत्=तस्माद् नो खलु अहमिच्छामि सुकुमारिकाया दारिकायाः क्षणमपि विप्रयोगं=वियोगम्, तत्=तस्माद् यदि खलु हे देवानुप्रिय ! सागरदारको मम 'घरजामाउए' गृहजामातृकः=गृहवासीजामाता भवति 'तोणं' तर्हि खलु अहं सागराय दारकाय सुकुमारिकां ददामि। ततः खलु स जिनदत्तः सार्थवाहः सागरदत्तेन सार्थवाहेनैवं मुक्तः सन् यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरदारकं= स्वपुत्रं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र ! सागरदत्तः सार्थवाहो मम=मां प्रति, 'सम्बन्धसामान्ये षष्ठी' एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! सुकुमारिका दारिका ममैका एका जाता इष्टा 'तं चेव'

है। यह मेरे लिये ईष्ट यावत मनोम है-कान्त है, प्रिय है और मनोज्ञ है। अनुकूल होने से इष्ट, ईप्सित होने से कान्त प्रीतिपात्र होने से प्रिय मनको रुचने वाली होने से मनोज्ञ एवं मन का स्थान भूत होने से मनोज्ञ है। ज्यादा क्या कहूँ यह तो हमें उदुंबर पुष्प के समान दर्शन दुर्लभ थी-सुनने की तो बात ही क्या। अतः मैं इसे देना नहीं चाहता हूँ। कारण इस सुकुमारिका दारिका के विना मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता हूँ इसलिए हे देवानुप्रिय ! सागर यदि घरजमाई बन कर रहना चाहें तो मैं उन्हें यह अपनी सुकुमारिका पुत्री दे सकता हूँ। (तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे ममं एवं

આ મને ઇષ્ટ યાવત્ મનોમ છે-એટલે કે કાંત છે, પ્રિય છે, અને મનોમ છે અનુકૂળ હોવા બદલ ઇષ્ટ, ઇપ્સિત હોવાથી કાંત, પ્રીતિપાત્ર હોવા બદલ પ્રિય અને મનને ગમે એવી હોવાથી મનોજ્ઞ તથા મનનો આશ્રય હોવાથી મનોમ છે વધારે શું કહું ! આ તો અમને ઉદુંબર પુષ્પની જેમ દર્શન-દુર્લભ હતી સાંભળવાની તો વાત જ શી કરવી ! એથી આને હું આપવા ઇચ્છતો નથી કારણ કે એના વગર હું ક્ષણવાર પણ રહી શકતો નથી એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! સાગર જો ઘર જમાઈ થઇને મારી પાસે રહેવા ઇચ્છતો હોય તો હું આ મારી સુકુમારીકા પુત્રી તેમને આપી શકું તેમ છું

(तएणं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदारगं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे ममं

सम्मानयति समान्य सागर दारक स्नात यावत् सर्वालङ्कारविभूषित कारयति, कारयित्वा पुरुषसहस्रवाहिनीं शिबिकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञाति स्वजन-सम्बन्धिभिर्यावत् परिवृतः सर्वर्द्धया सकलविभवेन स्वकाद् गृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य चम्पाया नगर्या म यमध्येन=मध्येभूत्वा यत्रैव सागरदत्तस्य गृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शिबिकातः 'पच्चोरुहावेइ' प्रत्यवरोहयति, सागरदारकं स्वपुत्र प्रत्यवतारयति, प्रत्यवरोह्य सागरक दारक सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य उप नयति=समीपमानयति ।

ततः खलु सागरदत्तः सार्थवाहो विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्य=चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति=निष्पादयति, उपस्कार्य यावत् = मित्रादिसहित जिनदत्तमामन्त्र्य भोजयित्वा, सत्कृत्य, समानयति, समान्य सागरक दारक सुकुमारिकया दारिकाया सार्धं 'पट्टय' पट्टक 'दुरूहावेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरुह्य श्वेतपीतकैः=

सबका वस्त्रादिक से सत्कार किया सत्कार करके फिर उनका स्वागत वचनादिको द्वारा सन्मान किया-। सन्मान कर के बाद में उसने अपने सागरपुत्रको स्नान कराया-। स्नान कराकर उसने उसे समस्त अलकारो से विभूषित कराया। विभूषित कराकर बाद में उसने उसे पुरुष सहस्रवाहिनी शिविका पर चढाया चढाकर मित्र, ज्ञाति, स्वजन सबधियो को साथ लेकर फिर वह सकल विभवके अनुसार अपने घर से निकला -निकलकर चपानगरी के बीचो बीच से होता हुआ सागरदत्त का जहाँ घर था वहाँ पहुँचा। (उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएण, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुल असणपाण खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणेत्ता सागरग दारग सूमालियाए दारियाए सद्धि पट्टय

ડીને બધાને વસ્ત્રો વગેરે આપીને સત્કાર કર્યો, સત્કાર કરીને તેણે તેમનુ સ્વાગત વચનો વડે સન્માન કર્યું સન્માન કર્યા બાદ તેણે પોતાના સાગર પુત્રને સ્નાન કરાવ્યુ સ્નાન કરાવીને તેણે તેને બધા અલકારોથી શણુગાર્યો, શણુગારીને તેણે તેને પુરૂષ-સહસ્રવાહિની પાલખીમા બેસાડયો ત્યારપછી મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન સબધીઓને સાથે લઈને તે પોતાના સપૂર્ણ વૈભવની સાથે પોતાના ઘેરથી નીકળ્યો-નીકળીને ચપા નગરીની વચ્ચે થઈને તે જ્યા સાગરદત્તનુ ઘર હતુ ત્યા પહોચ્યો

(उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहावेइ, पच्चोरुहावित्ता सागरग दारग सागरदत्तस्स सत्थ० उवणेइ, तएण, सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलअसणपाणखाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता जाव सम्माणत्ता सागरग दारग सूमालियाए

ततः खलु जिनदत्तः सार्थवाहो ऽन्यदा कदाचित् शोभने=शुभकाले, तिथिकरणनक्षत्रमुहूर्ते विपुलमशन पानं खाद्य स्वाद्यमुपस्कारयति, निष्पादयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिप्रभृतिनामन्त्रयति, आमन्त्र्य 'जाव सम्माणेइ' यावत् सम्मानयति भोजयति, भोजयित्वा स्वागतादिभि म करोति, सत्कृत्य स्वागतवचनादिना

तुम्हें घरजमाई बनाना चाहता है। (तएणं से सागरए दारए जिणदत्ते ण सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, तएणं जिणदत्ते सत्थ वाहे अन्नया कयाइ सोहणसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहुत्तंसि विउल असण पान खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ० आमंतेइ, जाव सम्माणित्ता सागर दारग ण्हाय जाव सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्स वाहिणिं सीयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव सपरिवुडे सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता चपा नयरिं मज्झ मज्झेण जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ) जिनदत्त सार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहा जाने पर वह सागर दारक चुपचाप रह गया उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। एक दिन जिनदत्त ने शुभ, तिथि करण, दिवस नक्षत्र मुहूर्त्तमें विपुल मात्रा में अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार बनवाया -बनवाकर उसने अपने मित्र ज्ञाति आदिबन्धुओं को आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके फिर उसने उन सबको भोजनकराया-भोजन कराकर

(तएणं से सागरए दारए जिणदत्ते ण सत्थवाहे ण एव वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, तएण जिणदत्ते सत्थवाहे अन्नया कयाइ सोहणसि तिहिकरणदिवसणक्खत्तमुहूत्तसि, विउल असणपान खाइम साइम उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाई आमंतेइ, जाव सम्माणित्ता सागर दारग ण्हाय जाव सव्वालकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीय दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता मित्तणाइ जाव सपरिवुड सव्विड्ढीए साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चपा नयरिं मज्झ मज्झेण जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ)

જીનદત્ત સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયેલો સાગર પુત્ર એકદમ ચૂપ થઇને બેસી જ રહ્યો તેણે કોઇ પણ જાતનો જવાબ આપ્યો નહિ એક દિવસ જીનદત્તે શુભતિથિ, કરણ, દિવસ, નક્ષત્ર મુહૂર્તમાં પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવ્યો બનાવડાવીને તેણે પોતાના મિત્ર, જ્ઞાતિ વગેરે સંબંધીઓને આમંત્રિત કર્યા આમંત્રિત કરીને તેણે તે બધા આવેલા સંબંધીઓને જમાડયા જમા

मूलम्--तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूवं पाणिफास पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखाइमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जइ, तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिगंसि निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूव अगफास पडिसवेदेइ, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अगफास असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

राजतसौवर्णे कलशैः = वारिपूर्णघटैर्मज्जयति = स्नपयति, मज्जयित्वा अग्निहोमं कारयति, कारयित्वा सागरं दारकं सुकुमारिकाया दारिकायाः पाणिं ग्राहयति॥ सू० ८॥

दुरुहावेइ, दुरुहावित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ, करावित्ता सागर दारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ) वहां पहुंचकर उसने अपने पुत्र सागर को पालखी से नीचे उतारा और उतारकर सागरदत्त सार्थवाह के पास उसे लेआया। सागरदत्त सार्थवाहने भी पहिलेसे ही विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवालिया था सो उसने मित्रादि सहित जिनदत्त सार्थवाह को आनंद के साथ जिमाया। जिमाकर सबका सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करने के बाद फिर सागरदत्तने सागर दारक को अपनी पुत्री सुकुमारिका के साथ एक पट्टक पर बैठाया-बैठाकर सुवर्ण चांदी के कलशोंसे उनका अभिषेक कराया अभिषेक हो जाने के बाद अग्निहोम कराया 'अग्निहोम जब हो चुका तब सागरदत्तने अपनी पुत्री सुकुमारिका का सागर के हाथ में हस्तमिलाप किया-अर्थात् लग्न कर दिया ॥ सू० ८ ॥

दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ, दुरूहावित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम करावेइ, करावित्ता सागरदारयं सूमालियाए दारियाए पाणिं गिण्हावेइ)

त्यां पहोंचीने तेणे पोताना पुत्र सागरने पालखीमांथी नीचे उतार्यो अने उतारीने सागरदत्त सार्थवाहनी पासे लई गयो. सागरदत्त सार्थवाहे पण पहेलेथी ज पुष्कळ प्रमाणमां अशन, पान, खाद्य अने स्वाद्य रूप चार जातनो आहार तैयार करावीने राख्यो हतो तेणे मित्र वगेरे लोकोनी साथे जीनदत्त सार्थवाहने आनंदनी साथे जमाड्या अने त्यारपछी तेणे सौनो सत्कार तेमज सन्मान कर्युं सत्कार अने सन्मान कर्या बाद सागरदत्ते सागर दारकने पोतानी पुत्री सुकुमारिकानी साथे एक पट्टक उपर बेसाड्यो बेसाडीने सोना-चांदीना कळशोथी तेमनो अभिषेक करावडाव्यो अभिषेकनुं काम पुरं थया बाद तेणे अग्निहोम कराव्यो अग्निहोमनी विधि पूरी थई गई त्यारे सागरदत्ते पोतानी पुत्री सुकुमारिकानो सागरनी साथे हस्तमेळाप करावी दीधो एटले के लग्न करावी दीधा ॥ सू. ८ ॥

मूलम्—तएण सागरदारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूवं पाणिफास पडिसंवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसंवेदेइ, तएणं से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असणपाणखाइमसाइमं पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जइ, तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धि तलिगंसि निवज्जइ, तएण से सागरए दारियाए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूव अंगफासं पडिसवेदेइ, से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ, तएणं से सागरए अगफास असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ, तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए

दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू०९॥

टीका—'तएणं' इत्यादि । ततः खलु सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूपं=वक्ष्यमाणप्रकारं पाणिस्पर्शं=करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति, कीदृशः स करस्पर्श' इति सदृष्टान्तमाह—'से जहानामए' इत्यादि । तद् यथा नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्तं प्रदर्शयति-'असिपत्तेइ वा' इत्यादि । असिपत्रमिति वा=असिपत्र-खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकुमारिका दारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसंवेदयत इति भावः । 'जाव मुम्मुरे इ वा०' यावत् मुर्मुरेति वा=अत्र यावत् करणादिदं बोध्यम्—'करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा

'तएण सागरदारए' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद-अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप किया तब (सागरदारए) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकुमारिका दारिका का (पाणिपास) वह हस्त का स्पर्श (इम एयारूव पडिसवेदेइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफासं पडिसवेदेइ) जैसे वह असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श हो । यहा यावत् शब्दसे "कर पत्तेइ" वा खुर पत्तेइ वा, कलव चीरिया

'तएण सागरदारए' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી એટલે કે સાગરદારકે જ્યારે હસ્તમેળાપ કર્યો ત્યારે (सागरदारए) તે સાગરને (सूमालियाए दारियाए) સુકુમાર દારિકાનો (पाणिफास) તે હાથનો સ્પર્શ (इमएयारूव पडिसवेदेइ) આ પ્રમાણે લાગ્યો કે (से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव पाणिफासं पडिसवेदेइ)

જાણે તે અસિપત્ર-તરવાર-નો સ્પર્શ ન હોય, યાવત્ અગ્નિકણ મિશ્રિત ભસ્મનો સ્પર્શ ન હોય અહીં 'યાવત્' શબ્દથી

(करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा, कलवचीरियापत्तेइ वा सत्ति

कलंबचीरियापत्तेइ वा सत्तिअग्गेइ वा कोंतग्गेइ वा तोमरग्गेइ वा भिंडिमालग्गेइ वा सूचिकलावएइ वा विच्छुयडंकेइ वा कविकच्छूइ वा इंगालेइ वा मुम्मुरेइ वा अच्चीइ वा जालेइ वा आलाएइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारूवेसिया ?, नो इणट्ठे समट्ठे, करपत्रमिति वा क्षुरपत्रमिति वा कदम्बचीरिकापत्रमिति वा शक्त्यग्रमिति वा कुन्ताग्रमिति वा तोमराग्रमिति वा भिन्दिपालाग्रमिति वा वृश्चिकदंश इति वा कपिकच्छुरिति वा अङ्गार इति वा मुर्मुर इति वा अर्चिरिति वा ज्वालेति वा, अलातमिति वा शुद्धाग्निरिति वा भवेदेतद्रूप -स्यात् ?, नायमर्थः समर्थः, इति । तत्र करपत्र= क्रकचं ' करवत् ' इति प्रसिद्ध क्षुरपत्रम्=' उस्तरा ' इति प्रसिद्धम् , कदम्बचीरिकापत्रम्-कदम्बचीरिका-तृणविशेष , अस्या अग्रभागोऽतितीक्ष्णो भवति तस्य पत्र, शक्तिः=शस्त्रविशेषः-त्रिशूल वा तस्या अग्रभागः स्व कुन्तः ' भाला ' इति प्रसिद्ध शस्त्रविशेषः, तदग्रभागः, तोमरः=बाण विशेषस्तदग्रभाग', भिन्दिपालः= शस्त्रविशेषः सूचीकलापकं सूचीसमूहस्तस्याग्रभागः, वृश्चिकदंशः=वृश्चिक कण्टकः, कपिकच्छुः-खर्जुकारी वनस्पतिविशेषः, अङ्गारः=ज्वालारहितोऽग्नि , मुर्मुर'=अग्नि-

---

पत्तेइ वा, सत्ति अग्गेइवा कोंतग्गेइवा तोमरग्गेइ वा, भिंडिमालग्गे वा सूचिकलावएइवा विच्छुय डंकेइ वा कवि कच्छूइवा इंगालेइ वा मुम्मुरेइ वा अच्चीइ वा जालेइ वा आलाइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारू वेसिया ? नो इणट्ठे समट्ठे) कर पत्र-कर वत, क्षुर पत्र-उस्तरा कदम्बचीरिका पत्र छुरिया घास-जिसका अग्रभाग अधिक तीक्ष्ण होता है शक्ति-अग्र -शक्ति-त्रिशूल अथवा आयुधविशेष का अग्रभाग कुन्ताग्र भाले की नोक तोमराग्र-बाण की अनी भिन्दिपाल-शस्त्र विशेष-का अग्रभाग- सूची कलापका अग्रभाग-बिच्छु का डंक कपिकच्छु-करेच-जिसके स्पर्श होनेपर खुजली आती है-ज्वाला रहित अग्नि, मुर्मुर-अग्निकणमिश्रित

तोमरग्गेइ वा, भिंडिमालग्गे वा सूचिकलावएइ वा विच्छुय डंकेइ वा, कविकच्छुइ वा इंगालेइ वा, मुम्मुरेइ वा अच्चीइ वा जालेइ वा, आलाइ वा सुद्धागणीइ वा भवेयारूवे सिया ? नो इणट्ठे समट्ठे)

કરપત્ર-કરવત, ક્ષુરપત્ર – અસ્ત્રો, કદમ્બચીરિકા પત્ર-છુરિકા કે જેનો અગ્રભાગ એકદમ તીક્ષ્ણ હોય છે, શક્તિ-અગ્ર-શક્તિ,-ત્રિશૂળ અથવા આયુધ વિશેષનો અગ્રભાગ, કુંતાગ્ર-ભાલાની અણી, તોમરાગ્ર-તીરની અણી, ભિંદિપાલ-વિશેષનો અગ્રભાગ, સૂચીકલાપનો અગ્રભાગ, વીંછીનો ડંખ, કપિકચ્છુ-કવચ-જેના સ્પર્શથી ખંજવાળ આવે છે, જ્વાળા રહિત અગ્નિ, મુર્મુર-અગ્નિકણ મિશ્રિત ભસ્મ, અર્ચિ-લાકડાઓથી સળગતી જ્વાળા, જ્વાળા-લાકડા વગરની

दुच्चंपि इमं एयारूवं अंगफास पडिसंवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ, तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू०९॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः खलु सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेवरूप=वक्ष्यमाणप्रकार पाणिस्पर्श=करस्पर्श प्रतिसंवेदयति=अनुभवति, कीदृशः स करस्पर्शः इति तद्दृष्टान्तमाह—'से जहानामए' इत्यादि। तद् यथा नामकम्=यथा दृष्टान्तम्-दृष्टान्त प्रदर्शयति-'असिपत्तेइ वा' इत्यादि। असिपत्रमिति वा=असिपत्र-खड्गः, यथा खड्गधारायाः स्पर्शः सोढुमशक्यस्तद्वत् सुकुमारिका दारिकायाः करस्पर्श प्रतिसंवेदयत इति भावः। 'जाव मुम्मुरे इ वा०' यावत् मुर्मुरेति वा=अत्र यावत् करणादिद बोध्यम्—' करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा

'तएण सागरदारए' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद-अर्थात् सागरदारकने जब हस्तमिलाप किया तब (सागरदारए) उस सागर को (सूमालियाए दारियाए) सुकुमारिकादारिकाका (पाणिपास) वह हस्तका स्पर्श (इम एयारूव पडिसंवेदेइ) इस प्रकार से लगा (से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइवा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव० पाणिफास पडिसवेदेइ) जैसे वह असिपत्र तलवार का स्पर्श हो यावत् अग्नि कणमिश्रित भस्म का स्पर्श हो। यहा यावत् शब्दसे "कर पत्तेइ" वा खुर पत्तेइवा, कलव चीरिया

'तएण सागरदारए' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી એટલે કે સાગરદારકે જ્યારે હસ્તમેળાપ કર્યો ત્યારે (सागरदारए) તે સાગરને (सूमालियाए दारियाए) સુકુમાર દારિકાનો (पाणि पास) તે હાથનો સ્પર્શ (इमएया रूव पडिसवेदेइ) આ પ્રમાણે લાગ્યો કે

(से जहा नामए असि पत्तेइ वा जाव मुम्मुरेइ वा, एत्तो अणिट्ठतराए चेव पाणिफास पडिसवेदेइ)

જાણે તે અસિપત્ર-તરવાર-નો સ્પર્શ ન હોય, યાવત્ અગ્નિકણ મિશ્રિત ભસ્મનો સ્પર્શ ન હોય અહીં 'યાવત્' શબ્દથી

(करपत्तेइ वा खुरपत्तेइ वा, कलवचीरियापत्तेइ वा सत्ति ... वा, कोंतग्गेइ

रिजनांश्च विपुलेनाशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति समानयति सत्कृत्य समान्य प्रतिविसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको दारकः सुकुमारिकया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये 'निवज्जइ' निषीदति । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूपमङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति-तद् यथानामक=तत् प्रतिसंवेदन दृष्टान्तोपन्यासपूर्वक प्रदर्श्यते-असिपत्र वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अङ्गस्पर्शं

अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाणखाइम साइम पुष्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा से रहित बन गया। फिर भी वहां विवश होकर वह कुछ समय तक ठहरा रहा। सागरदत्त सार्थवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, सबन्धी परिजनों का विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला तथा अलकार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उसने सबको अपने यहां से विदा कर दिया। (तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफास पडिसंवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामयरागचेव अगफास

गरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाण खाइम साइम पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

એટલા માટે તે સાગર તેના અભિલાષાથી રહિત બની ગયો છતાંએ તે ત્યાં લાચાર થઈને થોડા વખત સુધી રોકાયો. સાગરદત્ત સાર્થવાહે સાગર દારકના માતાપિતાનો તેમજ તેના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબંધી પરિજનોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી અને પુષ્પ વસ્ત્ર, ગંધ, માળા તેમજ અલંકારોથી બહુ સત્કાર અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે સૌને પોતાને ત્યાંથી વિદાય કર્યા

(तएण सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणुभवमाणे विहरइ तएणं

क्षणमिश्रितभस्म अर्चिः=इन्धन प्रतिबद्धा ज्वाला, ज्वाला=इन्धनरहिता, अला-
तम्=उल्मुक, शुद्धाग्निः लोहपिण्डस्थाग्निः । असिपत्रादि-शुद्धाग्निपर्यन्तानां स्पर्श
इव सुकुमारिकायाः करस्पर्शो भवेत्? यदि किम्? नायमर्थः समर्थः=अयं दृष्टान्तसमूह
करस्पर्शे साम्य प्राप्तुं न समर्थः तर्हि कीदृशः? इत्याह 'एत्तो अणिट्ठतराए चेव०'
एतस्मात् असिपत्रादीनां स्पर्शादनिष्टतरक एव, अकान्ततरक एव=अत्यन्तमक
मनीय एव, अप्रियतरक एव=अतिदुःखजनक एव अमनोज्ञतरक एव=अतिशयेन मनो
विकृतिकारक एव अमनोमतरक एव=अतिशयेन मनः प्रतिकूल एव वर्तते, तमेवम्भूतं
पाणिस्पर्शं सुकुमारिकादारिकायाः करस्पर्शं प्रतिसंवेदयति=अनुभवति ।

ततः खलु स सागरदारकः अकामकः= निरभिलाषः 'अवसव्वसे' अपरवशः=
अपगतस्वातन्त्र्यः विवशः सन् मुहूर्त्तमात्रं=स्तोककाल संतिष्ठते (ततः खलु स
सागरदत्तः सार्थवाहः सागरस्य दारकस्य अम्बापितरौ मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिप

भस्म अर्चि-इन्धन प्रतिबद्ध ज्वाला, ज्वाला-इन्धन से रहित ज्वाला
अलात-उल्मुक शुद्धाग्नि-लोहपिण्डस्थ अग्नि । इन असिपत्र से लेकर
शुद्धअग्नि पर्यन्त पदार्थों का स्पर्श जैसा होता है वैसा ही सुकुमारिका
के कर का स्पर्श हो सकता था-परन्तु यहां यह अर्थ समर्थित नहीं है
-अर्थात् उसके सुकुमारिका के कर स्पर्श में इन दृष्टान्तों के स्पर्श की
समानता नहीं मिल सकती है क्यों कि वह स्पर्श तो इनके स्पर्श से भी
अधिक अनिष्टतर ही था, अकान्ततरक ही था-अत्यन्त अकमनीय था,
अप्रिय तरकही था-अत्यन्त दुःखजनक ही था, अमनोज्ञतरक ही था
-अत्यन्त मनो विकृतिजनक ही था, अमनोमतरक ही था-अत्यन्त
मनः प्रतिकूल ही था। (तएण से सागरए अकामए अवसव्वसे
मुहुत्तमित्त संचिट्ठइ, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स

જ્વાળા, અલાત-ઉત્મુક, શુદ્ધ અગ્નિ-લોહપિંડસ્થ અગ્નિ-આટલી વસ્તુઓનુ ગ્રહણ
કરવુ જોઇએ આ અસિપત્રથી માંડીને શુદ્ધ અગ્નિ સુધીના પદાર્થોનો જે જાતનો
સ્પર્શ હોય છે તેવો જ સુકુમારિકાના હાથનો પણ સ્પર્શ હતો

પણ હકીકતમા તો આ વસ્તુઓની સમાનતા પણ તેના તીક્ષ્ણ સ્પર્શની સાથે
કરી શકાય તેમ નથી કેમકે તેના હાથનો સ્પર્શ તો ઉક્ત વસ્તુઓના સ્પર્શ
કરતા પણ વધારે અનિષ્ટતર હતો, અકાંતતરક હતો, અતીવ અકમનીય હતો,
અપ્રિયતરક હતો, અત્યત દુખજનક હતો, અમનોમતરક હતો, ખૂબજ મનો
વિકૃતિજનક હતો, અમનોમ તરક હતો, બહુ જ મન પ્રતિકૂળ હતો

(तएण से सागरए अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त संचिट्ठइ, तएण से सा

रिजनांश्च विपुलेनाशनपानखाद्यस्वाद्येन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्करोति सम्मानयति सत्कृत्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति = प्रस्थापयति । ततः खलु सागरको दारकः सुकुमारिकया सार्धं यत्रैव वासगृह-शयनगृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिमसि' तलिमे देशीयोऽयशब्दः तल्पे-शयनीये 'निवज्जइ' निषीदति । तत' खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया इममेतद्रूपमङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति-तद् यथानामक=तत् प्रतिसंवेदन दृष्टान्तोपन्या-सपूर्वकं प्रदर्श्यते-असिपत्रं वा यावद् अमनोमतरमेव सुकुमारिकाया अङ्गस्पर्शं

अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाणखाइम साइम पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति) अतः वह सागर उसमें अभिलाषा से रहित बन गया । फिर भी वहां विवश होकर वह कुछ समय तक ठहरा रहा । सागरदत्त सार्थवाह ने सागर दारक के मातापिता का तथा उसके मित्र, ज्ञाति स्वजन, संबन्धी परिजनों का विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्र, गन्ध, माला तथा अलकार से खूब सत्कार किया-सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उसने सबको अपने यहां से विदा कर दिया । (तएणं सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ, तएण से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफासं पडि-संवेदेइ से जहानामए असि पत्तेइवा जाव अमणामयरागचेव अगफास

गरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स दारगस्स अम्मापियरो मित्तणाइ० विउलेण असण पाण खाइम साइम पुप्फवत्थ जाव सम्माणेत्ता पडिविसज्जति)

એટલા માટે તે સાગર તેના અભિલાષાથી રહિત બની ગયો. છતાંએ તે ત્યાં લાચાર થઈને થોડા વખત સુધી રોકાયો. સાગરદત્ત સાર્થવાહે સાગર દારકના માતાપિતાનો તેમજ તેના મિત્ર, જ્ઞાતિ, સ્વજન, સબધી પરિજનોનો વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારથી અને પુષ્પ વસ્ત્ર, ગધ, માળા તેમજ અલકારોથી બહુ સત્કાર અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે સૌને પોતાને ત્યાંથી વિદાય કર્યા

(तएण सागरए दारए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासगिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ, तएणं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ से जहा नामए असिपत्तेइ वा जाव अमणामयराग चेव अगफास पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएणं

मप्यनुभवन् विहरति। ततः खलु स सागरदारकस्तमङ्गस्पर्शमसहमानोऽवशः=अस्वाधीनः सन्, सन् मुहूर्तमात्रं संतिष्ठते। ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा सुकुमारिकाया दारिकायाः पार्श्वत उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव स्वकं शयनीयं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य शयनीये, 'निवज्जइ' निषीदति स्वपितीत्यर्थः। ततः खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता 'पइमणुरत्ता' प्रत्यनुरक्ता स्वपति प्रत्यनुरागिणी, पार्श्वे पतिमपश्यन्ती 'तलिमाउ' तल्पात्=शयनीयात् उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्र

पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएणं से सागरए अंगफासं असहमाणे अव सव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ) इसके बाद सागरदारक सुकुमारिका के साथ जहां वासगृह-शयन घर-था वहां गया वहां जाकर वह उस सुकुमारिकाके साथ एक शय्यापर बैठ गया। बैठ जाने पर उस सागरदारक को सुकुमारिका दारिकाका अंगस्पर्श इस रूपसे प्रतीत हुआ-जैसे मानो असिपत्र आदिका स्पर्श हो। इन असिपत्र (खड्गको यावत्) आदिको के स्पर्श से भी उसका वह अंगस्पर्श यावत् अमनामतरक ही था। इस प्रकार का उसका अंगस्पर्श अनुभवता हुआ वह सागरदारक विवश बनकर वहां कुछ समय तक ठहरा बाद में जब उससे सहन नहीं हुआ तो। (तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइ

से सागरए अंगफासं असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्तं संचिट्ठइ)

ત્યારપછી સાગર દારક સુકુમારિકાની સાથે જ્યાં વાસગૃહ-શયનઘર હતું ત્યાં ગયો, ત્યાં જઈને તે સુકુમારિકાની સાથે એક શય્યા ઉપર બેસી ગયો બેઠા બાદ તે સાગર દારકને સુકુમારિકા દારિકાનો અંગ-સ્પર્શ એવા પ્રકારનો જણાયો કે તે અસિપત્ર – તરવાર વગેરેનો સ્પર્શ ન હોય! અસિપત્ર વગેરે કરતાં પણ તેનો અંગ સ્પર્શ યાવત અમનોમતરક હતો. આ રીતે તેના અંગ સ્પર્શને અનુભવતો સાગર દારક લાચાર થઈને ત્યાં થોડા વખત સુધી રોકાયો અને ત્યારબાદ જ્યારે તેને તે સ્પર્શ અસહ્ય થઈ પડયો ત્યારે

(तएणं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएणं सूमालिया

'से' तस्य शयनीयं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (निवज्जई) निषीदति=स्वपिति। ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया 'दुच्चपि' द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारम् अङ्गस्पर्श प्रतिसंवेदयति यावद्-अकामकोऽपस्ववशो मुहूर्तमात्र संतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिका दारिका सुखप्रसुप्ता ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वार 'विहाडेइ' विघाटयति = उद्घाटयति विघाटय 'मारामुक्के विव काए' मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहां अपनी शय्या थी वहां चला गया। वहां आकर उस पर पड़ गया इतने में ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलग से उठ बैठी। उठकर वह जहा सागरदारक का पलग था वहा गई। (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहा जाकर वह उसके पास सो गई। (तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूवं अगफासं पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्त मित्त संचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ)

તે સાગર દારક તે સુકુમારિકા દારિકાને સુખેથી સૂતેલી જાણીને તેની પાસેથી ઉઠયો, અને ઉઠીને જ્યા પોતાની શય્યા હતી ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઈને તે તેની ઉપર પડી ગયો એટલામા એક મુહૂર્ત પછી પતિમા અનુરકત બનેલી પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકા જાગી ગઈ અને પોતાની પાસે પતિ ન જોતા પોતાની શય્યા ઉપરથી ઉઠી અને બેઠી ગઈ ત્યારપછી તે ઉઠીને જ્યા સાગર દારકની શય્યા હતી ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) ત્યાં જઈને તે તેના પડખામા સૂઈ ગઈ

(तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूवं अंगफासं पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त संचिट्ठइ,तएण से सागरदारए सूमा लिय--रियं सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ,उट्ठित्ता वासघरस्स दार विहा-

मपत्नुभवन् तिष्ठति। ततः खलु स सागरदारकस्तम् अङ्गस्पर्शमसहमानोऽवश वशः=अवशः सन्, यावत् मुहूर्तमात्र संतिष्ठते । ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकां दारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा सुकुमारिकाया दारिकायाः पार्श्वत उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्रैव स्वकं शयनीयं तत्रैवोपागच्छति, उपाग य शयनीये, 'निवज्जइ' निषीदति स्वपितीत्यर्थः । ततः खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रति-बुद्धा=जागरिता सति पतिव्रता 'पइणुरत्ता' पत्यनुरक्ता स्वपति मत्यनुरागिणी, पार्श्वे पतिमपश्यन्ती 'तलिमाउ' तल्पात्=शयनीयात् उत्तिष्ठति, उत्थाय यत्र

पच्चणुब्भवमाणे विहरइ तएण से सागरए अंगफासं असहमाणे अव सव्वसे मुहुत्तमित्त संचिट्ठइ) इसके बाद सागरदारक सुकुमारिका के साथ जहा वासगृह-शयन घर-था वहां गया वहा जाकर वह उस सुकु मारिकाके साथ२ एक शय्यापर बैठ गया। बैठ जाने पर उस सागरदारक को सुकुमारिका दारिकाका अगस्पर्श इस रूपसे प्रतीत हुआ-जैसे मानो असिपत्र आदिका स्पर्श हो । इन असिपत्र (खड्गको यावत) आदिकों के स्पर्श से भी उसका वह अगस्पर्श यावत् अमनामतरक ही था। इस प्रकार का उसका अगस्पर्श अनुभवता हुआ वह सागरदारक विवश बनकर वहा कुछ समय तक ठहरा बाद में जब उससे सहन नही हुआ तो । (तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सूमालियाए दरियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सय णिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएण सूमालिया दारिया तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया प

से सागरए अंगफास असहमाणे अवसव्वसे मुहुत्तमित्त संचिट्ठइ)

ત્યારપછી સાગર દારક સુકુમારિકાની સાથે જ્યા વાસગૃહ-શયનઘર હતુ ત્યા ગયો, ત્યા જઇને તે સુકુમારિકાની સાથે એક શય્યા 'ઉપર બેસી ગયો બેઠા બાદ તે સાગર દારકને સુકુમારિકા દારિકાનો અ ગ-સ્પર્શ એવા પ્રકારનો જણાયો કે તે અસિપત્ર - તરવાર વગેરેનો સ્પર્શ ન હોય । અસિપત્ર વગેરે કરતા પણ તેનો 'અ ગ સ્પર્શ' યાવત અમનોમતરક હતો આ રીતે તેના અ ગ સ્પર્શને અનુભવતો સાગર દારક લાચાર થઇને ત્યા થોડા વખત સુધી રોકાયો અને ત્યારબાદ જ્યારે તેને તે સ્પર્શ અસહ્ય થઇ પડયો ત્યારે

(तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाउ उट्ठेइ, उट्ठित्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणीयंसि निवज्जइ, तएण सूमालिया दारिया तओ

'से' तस्य शयनीय तत्रैवोपागच्छति उपागत्य सागरदारकस्य पार्श्वे (णिवज्जई) निषीदति=स्वपिति। ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिकाया दारिकाया 'दुच्चपि' द्वितीयवारमपि इममेतद्रूपम् पूर्वोक्तप्रकारकम् अङ्गस्पर्शं प्रतिसंवेदयति यावद्-अकामकोऽपस्ववशो मुहूर्तमात्र संतिष्ठति, ततः खलु स सागरदारकः सुकुमारिका दारिका सुखप्रसुप्ता ज्ञात्वा शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वार 'विहाडेइ' विघाटयति = उद्घाटयति विघाटय 'मारामुक्के विव काए' मारामुक्त इव काकः=मार्यन्ते प्राणिनो यस्या सा मारा

मणुरत्ता पतिं पासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ) वह सागरदारक उस सुकुमारिका दारिका को सुखसे सोई हुई जानकर उस सुकुमारिका दारिका के पास से उठ बैठा-और उठकर जहां अपनी शय्या थी वहां चला गया। वहां आकर उस पर पड़ गया इतने मे ही एक मुहूर्त के बाद वह पति में अनुरक्त बनी हुई पतिव्रता सुकुमारिका दारिका जग गई और अपने पास पति को न देखकर अपने पलग से उठ बैठी। उठकर वह जहा सागरदारक का पलग था वहा गई। (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) वहा जाकर वह उसके पास सो गई। (तएण से सागरदारए सुमालियाए दारियाए दुच्चपि इमं एयारूव अगफास पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्त-मित्त सचिट्ठइ, तएण से सागरदारए सूमालिय दारिय सुहपसुत्त

पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पत्तिपासे अपस्समाणी तलिमाउ उट्ठेइ उट्ठित्ता उवागच्छइ)

ते सागर दारक ते सुकुमारिका दारिकाने सुखेथी सूतेली जाणीने तेनी पासेथी ઉઠયો, અને ઉઠીને જ્યા પોતાની શય્યા હતી ત્યા જતો રહ્યો ત્યા જઈને તે તેની ઉપર પડી ગયો એટલામા એક મુહૂર્ત પછી પતિમા અનુરકત બનેલી પતિવ્રતા સુકુમારિકા દારિકા જાગી ગઈ અને પોતાની પાસે પતિ ન જોતા પોતાની શય્યા ઉપરથી ઉઠી અને બેઠી ગઈ ત્યારપછી તે ઉઠીને જ્યા સાગર દારકની શય્યા હતી ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ) ત્યાં જઈને તે તેના પડખામા સૂઈ ગઈ

(तएण से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दुच्चपि इम एयारूव अंगफासं पडिसवेदेइ जाव अकामए अवसव्वसे मुहुत्तमित्त सचिट्ठइ,तएण से सागरदारए सूमा लिय दारिय सुहपसुत्त जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ,उट्ठित्ता वासघरस्स दार विहा-

मारा वधस्थानं, तस्मान्मुक्तो निर्गतः काक इव, यद्वा-मारकपुरुषहस्तान्मुक्तः=निर्मुक्त विच्छुटितः काको यथा वेगतो निर्गच्छति तद्वत्, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू० ९ ॥

मूलम्–तएणं सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ सागरस्स दारियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेमाणी२ वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ पासित्ता एवं वयासी–गए से

जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरस्स दारं विहाडेई, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) सागरदारक को सुकुमारिका दारिका का अंगस्पर्श दुबारा भी वैसा ही पूर्वोक्तरूप से अनुभव में आया–अतः उसके पास सोने की इच्छा न होने पर भी वह विवश होकर कुछ समय तक उसके पास सोता रहा–जब वह अच्छी तरह सो गई–तब वह उसे सुख प्रसुप्त जानकर उसके पास से उठा–और उठकर उसने उस वास गृह के दरवाजे को खोला खोलकर जिस प्रकार 'मारामुक्त' काक बड़े वेगसे निकलता है –उसी तरह यह भी बहुत जल्दी वहां से निकलकर जिस दिशा से प्रकट हुआ था–उसी दिशा तरफ वापिस चला गया। जिस मे प्राणी मारे जाते हैं उसका नाम मारा–शूना– वधस्थान है। इस मारा से निकला हुआ अथवा मारनेवाले पुरुष के हाथ से छूटा हुआ–ऐसे ये दो अर्थ " मारमुक्त " इस शब्द के हो सकते है। सू० ९

डेई, विहाडित्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

સાગર દારકને સુકુમારિકાનો બીજીવારનો અંગ સ્પર્શ પણ પહેલાંની જેમજ લાગ્યો. એટલા માટે તેની પાસે સૂવાની ઇચ્છા ન હોવા છતાં એ તે વિવશ થઈને થોડીવાર સુધી તેની પાસે પડી રહ્યો જ્યારે તે સારી રીતે સૂઈ ગઈ ત્યારે તે તેને સુખેથી સૂતી જાણીને તેની પાસેથી ઉઠયો અને ઉઠીને સેણે તે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડયું ઉઘાડીને જેમ મારા–મુક્ત કાગડો જલ્દી નીકળી જાય છે તેમજ તે પણ બહુ જ ત્વરાથી ત્યાંથી નીકળીને જે દિશા તરફથી આવ્યો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો જે સ્થાને પ્રાણીઓ મારી નાખવામાં આવે છે તેનું નામ " મારા " (વધસ્થાન) છે આ 'મારા'થી છૂટીને આમ બે અર્થો 'મારામુક્ત' શબ્દના થઇ શકે છે ॥ સૂત્ર ૯ ॥

सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउ० दास चेडियं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुम देवाणुप्पिए ! वहुवरस्स मुह-धोवणियं उवणेहि, तएण सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणति, मुहधोवणिय गेण्हइ गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी – किन्नं तुम देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ?, तएणं सा सूमालिया दारिया तं दास-चेडी एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता वास-घरदुवार अवगुणइ जाव पडिगए तएण तओ अह मुहुत्तं-तरस्स जाव विहाडियं पासामि, गए ण से सागरएत्तिकट्टु ओहयमण जाव झियायामि, तएण सा दासचेडी सूमालि-याए दारियाए एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेएइ, तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवाग-च्छइ उवागच्छित्ता जिणदत्तं एव वयासी—किण्णं देवाणु-प्पिया ! एव जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूव वा कुलसरिसं वा जन्न सागरदारए सूमालियं दारिय अदिट्ठदोस पइवयं

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दट्ठुण पुत्ता! तुमे कय सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एव वयासी—अवि आइ अह ताओ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डतरिए सागरस्स एयमठ्ठ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालिय दारिय सद्दावेइ सद्दावित्ता अके निवेसेइ निवेसित्ता एव वयासी—किण्ण तुम पुत्ता! सागरएण दारएणं मुक्का?, अहणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जावं मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—'तएण' इत्यादि। ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय सागरस्स दारकस्य सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषण कुर्वती२ वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वार विघाटितम्=उद्घाटित पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-गतः स सागरदारकः, इति कृत्वा 'ओहयमणसकप्पा' अपहृतमनः सङ्कल्पा=नष्टमनोरथा, यावत् ध्यायति=आर्तध्यान करोतिस्म। ततस्तदनन्तर भद्रा सार्थवाही 'कल्ल' कल्ये=द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्या यावत् तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सूर्ये उदिते दासचेटीका=दासपुत्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा

'तएण सूमालिआ दारिया' इत्यादी।

टीकार्थ-(तएण) उसके बाद (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) एक मुहूर्त के बाद जग पडी-सो उस पतिव्रता ने वहा अपने पति को जब नही देखा तब (सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वाओ समता मग्गणगवेसण करेमाणी २ वासघरस्स दार विहाडिय पासइ, पासित्ता एव वयासी) पलग से उठी उठकर उसने सागर दारक की वही पर सब और बार २ मार्गण गवेषणा की-। जब उसने शयन गृह के दरवाजे को उघड़ा हुआ देखा-तब उसे विचार आया कि (गये से सागरे त्ति कट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ, तएण सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउ० दासचेडिय सद्दावेइ) कि सागर चले गये है। इस प्रकार अपहृतमनःसकल्प होकर वह विचार मे पड गई, इतने मे भद्रा सार्थवा

(तएण सूमालिया दारिया इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारबाद (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને જ્યારે જોયા નહિ ત્યારે

(सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेमाणी २ वासघरस्स दार विहाडिय पासइ, पासित्ता एव वयासी)

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાજ આસપાસ ચોમેર સાગર દારકની માર્ગણા-ગવેષણા કરી જ્યારે તેણે શયનગૃહના બારણાને ઉઘાડેલુ જોયુ ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(गए से सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ, तएण सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउ दासचेडिय सद्दावेइ)

સાગર જતા રહ્યા છે આ રીતે અપહૃત મન સકલ્પવાળી થઈને તે

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी–दट्ठुण पुत्ता! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एव वयासी–अवि आइ अहं ताओ! गिरिपडणं वा तरुप डणं वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं वा गिद्धापिट्ठं वा पवज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ सद्दावित्ता अंके निवेसेइ निवेसित्ता एवं वयासी–किण्णं तुमं पुत्ता! सागरएणं दारएणं मुक्का ?, अहंणं तुमं तस्स दाहामि जस्स णं तुमं इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः=तन्निर्गमनानन्तरं खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

शयनीयात्=शय्यात उत्तिष्ठति, उत्थाय सागरस्स दारकस्य सर्वतः समन्तात् मार्गणगवेषण कुर्वती२ वासगृहस्य=शयनगृहस्य द्वार विघाटितम्=उद्घाटित पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-गतः स सागरदारक, इति कृत्वा 'ओहयमणसंकप्पा' अपहृतमनः सकल्पा=नष्टमनोरथा, यावत् ध्यायति=आर्तध्यान करोतिस्म। ततस्तदनन्तर भद्रा सार्थवाही 'कल्ल' कल्ये=द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्यां यावत् तेजसा ज्वलति=दीप्यमाने सूर्ये उदिते दासचेटीका=दासपुत्रीं शब्दयति, शब्दयित्वा

'तएण सूमालिआ दारिया' इत्यादी।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) एक मुहूर्त के बाद जग पडी-सो उस पतिव्रता ने वहा अपने पतिको जब नही देखा तब (सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वाओ समता मग्गण गवेसण करेमाणी २ वासघरस्स दार विहाडिय पासइ, पासित्ता एव वयासी) पलग से उठी उठकर उसने सागर दारक की वही पर सब और बार २ मार्गण गवेषणा की-। जब उसने शयन गृह के दरवाजे को उघड़ा हुआ देखा-तब उसे विचार आया कि (गये से सागरे त्ति कट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ, तएण सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउ० दासचेडिय सद्दावेइ) कि सागर चले गये हैं। इस प्रकार अपहतमनःसकल्प होकर वह विचार मे पड गई. इतने मे भद्रा सार्थवा

(तएण सूमालिया दारिया इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारबाद (सूमालिया दारिया) सुकुमारिका दारिका (तओ मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा पइवया जाव अपासमाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી ગઈ તે પતિવ્રતાએ ત્યા પોતાના પતિને જ્યારે જોયા નહિ ત્યારે

(सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समता मग्गणगवेसण करेमाणी २ वासघरस्स दार विहाडिय पासइ, पासित्ता एव वयासी)

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ અને ત્યારપછી તેણે ત્યાજ આસપાસ ચોમેર સાગર દારકની માર્ગણા-ગવેષણા કરી જ્યારે તેણે શયનગૃહના બારણાને ઉઘારેલુ જોયુ ત્યારે તેને વિચાર આવ્યો કે

(गए से सागरे त्तिकट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ, तएण सा भद्दा सत्थवाही कल्ल पाउ दासचेडिय सदावेइ)

સાગર જતા રહ્યા છે આ રીતે અપહત મન સકલ્પવાળી થઈને તે

विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि य उवालभइ, तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता साग· रयं दारय एवं वयासी–दट्ठुणं पुत्ता! तुमे कय सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागते, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमवि गए सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्त एवं वयासी–अवि आइ अह ताओ! गिरिपडणं वा तरुप डण वा मरुप्पवायं वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेस वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छिज्जामि नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डतरिए सागरस्स एयमट्ठ निसामेइ निसामित्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनि· क्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालिय दारिय सद्दावेइ सद्दावित्ता अके निवेसेइ निवे· सित्ता एव वयासी–किण्णं तुम पुत्ता! सागरएण दारएणं मुक्का ?, अहंणं तुम तस्स दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहि इट्ठाहि वग्गूहि समासासेइ समासासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १० ॥

टीका—'तएण' इत्यादि। ततः=तन्निर्गमनानन्तर खलु सुकुमारिका दारिका ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती पतिव्रता यावत् पतिमपश्यन्ती

हे देवानुप्रिये ! हे सुकुमारिके ! किं=कुतः खलु त्वम् अपहतमनः सङ्कल्पा यावत् ध्यायसि ?, ततस्तदनन्तरं सा सुकुमारिका दारिका तां दासचेटीमेवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! एवं खलु सागरको दारको मां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्तिष्ठति, उत्थाय वासगृहद्वारम् ' अवगुणइ ' अपगुणयति=अपावृणोति उद्घाटयति, 'यावत् प्रतिगतः ' यस्याः एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततस्तदनन्तरं खलु ' तओ' ततो मुहूर्तान्तरेऽहं यावत्-प्रतिबुद्धा सती सागरदारकमपश्यन्ती शयना दुत्तिष्ठामि, उत्थाय तस्य मार्गणगवेषणं कुर्वती वासगृहस्य द्वारं विघाटितं पश्यामि गतः खलु स सागरकः ' इति कृत्वा=इति हेतोरहम् अपहतमनः सङ्कल्पा यावद्-

चिंता मग्न देखा-देखकर उसने उससे पूछा कि हे देवानुप्रिये ! क्या कारण है जो आप अपहृतमन' सकल्पा होकर चिन्ता मग्न बनी हुई हो ? इस दासचेटी के प्रश्नको सुनकर उस सुकुमारिका ने उस से कहा-देवानुप्रिये-सुनो-सागरदारक मुझे सुख प्रसुप्त जानकर मेरे पास से उठे और उठकर वासगृह के दरवाजे को खोलकर जहां से आये थे वहां चले गये है । (तए णं तओ अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि गएणं से सागरए त्तिकट्टु ओहयमाण जाव झियायामि, तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ) उसके बाद ज्योंही मैं जगी-तो मैंने जब सागर दारक को अपने पास नहीं देखा-तो मैं शय्या से उठ बैठी-और उठकर मेंने उनकी यहीं पर सब तरफ मार्गण गवेषणाकी उसमें मेंने वासगृह के दरवाजे उघड़ा पाया-तब मैं समझ

જઈને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને ચિંતામાં ગમગીન જોઈ જોઈને તેણે તેને પૂછ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા કારણથી તમે અપહત મન સંકલ્પા થઈને ચિંતામાં બેઠા છો ? દાસચેટીના પ્રશ્નને સાંભળીને તે સુકુમારિકાએ તેને કહ્યું- કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાંભળો, સાગર દારક મને સુખેથી સૂતી જાણીને મારી પાસેથી ઉભા થયા અને ઉભા થઈને વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડીને જ્યાંથી આવ્યા હતા, ત્યાં જતા રહ્યા છે

(तएणं तओ अहं मुहुत्तंतरस्स जाव विहाडियं पासामि गएणं से सागरए त्ति कट्टु ओहयमण जाव झियायामि, तएणं सा दासचेडी, सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ)

ત્યાર પછી જ્યારે હું જાગી ત્યારે મેં સાગર દારકને મારી પાસે જોયા નહિ, હું શય્યા ઉપર ઉઠી અને બેઠી થઈ ગઈ અને ત્યાર પછી મેં અહીં જ તેમની બધે માર્ગણ-ગવેષણા કરી મેં જ્યારે વાસગૃહના બારણાને ઉઘાડું જોયું કે તેઓ ચાલ્યા ગયા છે આ વિચારથી જ હું અપહત

एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! गच्छ गच्छ त्वं ' वधूवरस्य ' वधूवरयोः समीपे ' मुखधोवणियं ' मुखधावनिकां=दन्तधावनादिकाम् ' उवणेहि ' उपनय=प्रापय। ततः खलु सा दासचेटी भद्रया सार्थवाह्या एवमुक्तासती ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्= एतद्वचनं ' तहत्ति ' इति कृत्वा प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य ' मुहधोवणियं ' मुखधावनिकां गृह्णाति, गृहीत्वा यत्रैव वासगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामेकाकिनीं यावत् ध्यायन्तीं-आर्तध्यानं कुर्वतीं पश्यति दृष्ट्वा एवमवादीत्-

होने द्वितीय दिन प्रातः काल होते ही दासपुत्री को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! वहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणति मुहधोवणियं गेण्हइ, उवागच्छित्ता, सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी-किन्न तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ? तएणं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडीं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुणइ, जाव पडिगए) बुलाकर उससे ऐसा कहा कि हे देवाणु प्रिय !तू जा, और वधूवर के पास इस दन्त धावन आदिरूप मुख धावनिका को लेजा भद्रा के इस कथन को उस दासचेटी ने " तहत्ति " कहकर स्वीकार कर लिया-और मुख धावनीका को ले लिया-और लेकर फिर वह जहां वासगृह था-वहां गई । वहां पहुँचकर उसने सुकुमारिका दारिका को

ચિંતામાં ગમગીન થઇ ગઇ એટલામાં બીજા દિવસે સવારે ભદ્રાસાર્થવાહીએ દાસપુત્રીને બોલાવી

(सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! वहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि, तएणं सा दासचेडी भद्दाए एवंवुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणति मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सूमालियं दारियं जाव झियायमाणिं पासइ पासित्ता एवं वयासी-किन्न तुमं देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहिसि ? तएणं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडी एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम सुहपसुत्तं जणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता वासघरदुवारं अवगुणइ, जाव पडिगए)

બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તું વરવધૂની પાસે આ દંતધાવન વગેરે મુખધાવનિકા લઇ જા ભદ્રાના આ કથનને સાંભળીને તે દાસચેટીએ " તહત્તિ " કહીને તેને સ્વીકારી લીધું અને મુખધાવનિકા (દાતણ) ને લઇ લીધું અને લઇને તે જ્યાં વાસગૃહ હતું ત્યાં ગઇ ત્યાં

विमहाय=त्यक्त्वा इहागतः-कथमेतद् युक्तं, यत् निर्दोषा सुकुमारिका विहाय सागरदारकोऽत्र समायात इति। एवं बहोभिः 'खिज्जणियाहि य' खेदनिकाभिः=खेदपूर्णाभिस्तथा 'रुटणियाहि य'=रुटणियाभिः देशीयोऽयं शब्दः, रोदनक्रियायुक्ताभिः वाग्भिः उपालभते=सागरदत्तो जिनदत्तस्य उपालम्भं करोतीत्यर्थः।

तत खलु जिनदत्तः सार्थवाह सागरदत्तस्य सार्थवाहस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य यत्रैव सागरदारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरक दारकं स्वपुत्रमेवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे पुत्र! त्वया खलु दुष्ठु=अशोभनं कृतम् यत्-सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहादिह हव्यमागतः, तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्वं हे पुत्र! एवमपि=यथास्थितस्तथैव सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहम्। सागरदारको जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे तात! अपि=निश्चयेन 'आइ' इति वाक्यालङ्कारे अह

दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं विप्पजहाय इह मागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि य उवालभइ) हे देवानुप्रिय! क्या यह बात योग्य है-अथवा कुलमर्यादा के लायक है, या कुल की योग्यता के अनुसार है या कुल को शोभित करे ऐसी है, जो सागरदारक बिना किसी दोषके देखे-पतिव्रता सुकुमारिका दारिका को छोड़कर यहां आ गया है इस प्रकार अनेक खेदपूर्ण एवं रोदनक्रिया युक्त वचनोंसे सागरदत्तने अपने सबंधी जिनदत्तको ठपका-उलाहना दिया। (तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवंवयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं,सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइ अहं ताओ!

હે દેવાનુપ્રિય! શું આ વાત વાજબી છે? કુળ મર્યાદાને લાયક છે? અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે? કુળને શોભાવનારી છે? કે જે સાગર દારક કોઈ પણ જાતના દોષ જોયા વગર પતિવ્રતા સુકુમારીકા દારિકાને ત્યજીને અહીં આવી ગયો છે? આ રીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થઈને રડતા રડતા ઘણા વચનોથી સાગરદત્તે પોતાના વેવાઇ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો.

(तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेणं तं गच्छह णं तुमं पुत्ता! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएणं से सागरए जिणदत्तं एवं वयासी-अवि आइ अहं

आर्तध्यानं ध्यायामि। ततः खलु सा दासचेटी सुकुमारिकाया दारिकाया अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा, यत्रैव सागरदत्तः सार्थवाहः=सुकुमारिकाया पिता, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य च सागरदत्तमेतमर्थं निवेदयति। ततस्तदनन्तरं स सागरदत्तः सार्थवाहो दासचेट्या अन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुप्तः=शीघ्र क्रोधाविष्टः सन् यत्रैव जिनदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य जिनदत्त सार्थवाहमेवमवादीत्–हे देवानुप्रिय! किमेतत् खलु एवं युक्तम्=उचितं वा प्राप्तं= कुलमर्यादामनुप्राप्तं वा कुलानुरूपं=कुलयोग्यतानुकूलं वा कुलसदृशं=कुलसाम्यापन्नं वा, यत् खलु सागरो दारकः सुकुमारिकां दारिकामदृष्टदोषां=निर्दोषां पतिव्रतां

गई कि वे चले गये हैं इस विचार से मैं अपहतमनः संकल्प होकर आर्तध्यान–चिंता–मे पड़ रही हूँ। इस प्रकार सुकुमारिका की बात सुनकर वह दासचेटी बहुत सोच विचार करके वहां से सागरदत्त के पास आई। (उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ–तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ–उवागच्छित्ता जिणदत्त एवं वयासी) वहां आकर उसने सगरदत्त से इस बात को कहा–। इस तरह दासचेटी के मुख से इस बात को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर सागरदत्त बहुत अधिक–क्रुद्ध हुआ–और उसी समय जहां जिनदत्त सार्थवाह का घर था वहां गया। वहां जाकर उसने जिनदत्त से इस प्रकार कहा–(किण्णं देवाणुप्पिया! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं

મન સંકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન–ચિંતા–મા પડી છુ આ રીતે સુકુમારીકાની વાત સાભળીને તે દાસ ચેટી ખૂબજ વિચાર કરીને ત્યાથી સાગરદત્તની પાસે ગઈ

उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेएइ=तएणं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ–उवागच्छित्ता जिणदत्तं एवं वयासी)

ત્યા આવી ને તેણે સાગરદત્તને આ વાત કરી આ રીતે દાસ ચેટીના મુખથી બધી વિગત સાભળીને અને તેને હૃદયમા ધારણ કરીને સાગર દત્ત અત્યંત ગુસ્સે થયો અને તરત જ જ્યા જિનદત્ત સાર્થવાહનુ ઘર હતુ ત્યા ગયો ત્યા જઈને તેણે જિનદત્ત સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(किण्णं देवाणुप्पिया! एवं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जन्नं सागरदारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसं पइवयं विप्पजहाय इहमागओ बहूहिं खिज्जणियाहिं य रुंटणियाहिं य उवालभइ)

विप्रहाय=त्यक्त्वा इहागतः-कथमेतद् युक्त, यत् निर्दोषा सुकुमारिका विहाय सागरदारकोऽत्र समायात इति। एव बहीभिः ' खिज्जणियाहि य ' खेदनिकाभिः= खेदपूर्णाभिस्तथा ' रुटणियाहि य '=रुटणियाभिश्च देशीयोऽय शब्दः, रोदनक्रियायुक्ताभिः वाग्भिः उपालभते=सागरदत्तो जिनदत्तस्य उपालम्भ करोतीत्यर्थः।

तत खलु जिनदत्तः सार्थवाह सागरदत्तस्य सार्थवाहस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य यत्रैव सागरदारकस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सागरक दारक स्वपुत्रमेव= वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे पुत्र ! त्वया खलु दुष्ठु=अशोभन कृतम् यत्-सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहादिह हव्यमागतः, तत्=तस्माद् गच्छ खलु त्व हे पुत्र ! एवमपि=यथास्थितस्तथैव सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहम्। सागरदारको जिनदत्तं सार्थवाहमेवमवादीत्-हे तात ! अपि=निश्चयेन ' आइ ' इति वाक्यालकारे अह

दारिय अदिट्ठदोस पइवय विप्पजहाय इह मागओ बहूहिं खिज्जणियाहि य रुट्टणियाहि य उवालभइ) हे देवानुप्रिय ! क्या यह बात योग्य है- अथवा कुलमर्यादा के लायक है, या कुल की योग्यता के अनुसार है या कुल को शोभित करे ऐसी है, जो सागरदारक विना किसी दोषके देखे-पतिव्रता सुकुमारिका दारिका को छोड़कर यहा आ गया है इस प्रकार अनेक खेदपूर्ण एव रोदनक्रिया युक्त वचनोंसे सागरदत्तने अपने सबधी जिनदत्तको ठपका-उलाहना दिया। (तएणं जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरय दारय एववयासी-दुट्ठुण पुत्ता तुमे कय, सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेण त गच्छह ण तुम पुत्ता ! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएण से सागरए जिणदत्त एव वयासी-अवि आइ अह ताओ !

હે દેવાનુપ્રિય ! શુ આ વાત વાજબી છે ? કુળ મર્યાદાને લાયક છે ? અથવા તો કુળની યોગ્યતા મુજબ છે ? કુળને શોભાવનારી છે ? કે જે સાગર દારક કોઈ પણ જાતના દોષ જોયા વગર પતિવ્રતા સુકુમારીકા દારિકાને ત્યજીને અહીં આવી ગયો છે ? આ રીતે મનને દુભાવનારા તેમજ ગળગળા થઈને રડતા રડતા ઘણા વચનોથી સાગરે પોતાના વેવાઈ જિનદત્તને ઠપકો આપ્યો.

(तएण जिणदत्ते सागरदत्तस्स एयमट्ठ सोच्चा जेणेव सागरए दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरय दारय एव वयासी-दुट्ठुण पुत्ता तुमे कय सागरदत्तस्स गिहाओ इह हव्वमागए, तेण त गच्छह ण तुम पुत्ता ! एवमविगए, सागरदत्तस्स गिहे, तएण से सागरए जिणदत्त एव वयासी-अवि आइ अह

तत्राशया गिरिपतनं वा तरुपतनं वा मरुप्रपातं वा=निर्जलदेशगमनं वा जलप्रपातं वा=अगाधजले पतनं वा, ज्वलनप्रवेशं वा=अग्नौ प्रवेशं वा विषभक्षणं वा, 'सत्थोवाडण वा' शस्त्रावपाटनं वा=शस्त्रेण शरीरविदारणं वा, 'वेहाणस वा' वैहायसं वा कण्ठे पाशग्रहणं वा, तथा-गृध्रपृष्ठ=गृध्रैः स्पर्शनं यथा गजोष्ट्रादीनां कलेवरे प्रवेशितस्य शरीरस्य गृध्रादिभ्यो भक्षणम्, यथा प्रव्रज्या वा, त्रिदश-

---

गिरिपडण वा तरुपडण वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पव्वज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा) जिनदत्त सागरदत्त के इस उल्लाहने रूप अर्थ को सुन करके जहां सागरदारक था वहां गया-वहां जाकर उसने सागर दारक से इस प्रकार कहा-हे पुत्र! यह तुमने अच्छा नहीं किया-जो तुम सागरदत्त के घर से यहां इतने जल्दी आ गये। इसलिये हे बेटा! तुम जैसे यहां बैठे हो वैसे ही सागरदत्त के घर चले जाओ। तब सागरदारकने अपने पिता जिनदत्त से इस प्रकार कहा-पिताजी! मैं आपकी आज्ञा से पर्वत से गिरना स्वीकार कर सकता हूँ, वृक्ष से नीचे पड़जाना स्वीकारकर सकता हूँ-मरुप्रपात-निर्जलप्रदेश में जाना अंगीकारकर सकता हूँ, अगाधजल में डूबकर मरसकता हूँ तथा जलती हुई अग्नि में प्रवेश करना, विषकाभक्षण करना, शस्त्र से शरीर का

ताओ! गिरिपडण वा तरुपडणं वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छिज्जा)

જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાભળીને જ્યા સાગર દારક હતો ત્યા ગયો અને ત્યા જઈને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! તમે આ જે કંઈ કર્યું છે, તે સારુ ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા! તમે અત્યારે જેવી સ્થિતિમા છો તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો ત્યારે સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પિતાશ્રી! તમારી આ જ્ઞાથી હુ પર્વત ઉપરથી નીચે ગબડી પડવુ સ્વીકારી શકુ છુ, વૃક્ષ ઉપરથી નીચે પડી જવુ સ્વીકારી શકુ છુ, મરુપ્રપાત-નિર્જળ પ્રદેશમા જવુ સ્વીકારી શકુ છુ, ઊડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકુ છુ, તેમજ સળગતા અગ્નિમા પ્રવેશવુ, વિષનુ ભક્ષણ કરવુ, શસ્ત્રનાઘાથી શરીર ને કાપવુ, ગળા સા

गमनं वा अभ्युपगच्छामि=स्वीकरोमि किंतु खलु=निश्चयेन सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य गृहे नैवगच्छामि। ततस्तदा-स सागरदत्तः सार्थवाहः कुडयान्तरित = भित्तिव्यवधानेन स्थितः सागरस्य दारकस्य एतमर्थम्=उक्त वचनं निशामयति=शृणोति, निशाम्य लज्जितः स्वय, व्रीडितः परतः 'विडे' विड्ः=देशीयोऽयं शब्दः स्वपरतोलज्जितः, जिनदत्तस्य गृहात् प्रतिनिष्क्रामति=निर्गच्छति। प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिका दारिका शब्दयति, शब्दयित्वा अङ्के=उत्सङ्गे 'निवेसेइ' निवेशयति= उपवेशयति, निवेश्य एवमवादीत्-हे पुत्री! किं=केन कारणेन खलु त्वं सागरेण दारकेण 'मुक्का' मुक्ता=त्यक्ता?।

विदारण करना गले में फांसी लगाकर मरजाना, गज, उष्ट्र आदि के मृतकलेवर मे मैं अपने आपको प्रविष्ट कराकर उस शरीरको मृतबुद्धि की कल्पना से गृद्ध पक्षियों द्वारा भक्षण करवाना यह सब मैं स्वीकार कर सकताहूँ, इसी तरह दीक्षागृहण करना अथवा विदेश में चलेजाना भी स्वीकारकर सकता हूँ-परन्तु मैं सागरदत्त के घरजानास्वीकार नहीं कर सकता हूँ। अर्थात् ये सब पूर्वोक्त आपकी आज्ञाएँ मुझे विना किसी सकोचके या विचारके मान्य हैं परन्तु सागरदत्तके घरजाना मुझे मान्य नहीं है। (तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विड्डे जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंकेनिवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी, किण्णं तुमं पुत्ता सागरएणं दारएणं मुक्का? अहं णं तुमं तस्स

भेरवीने मरवु, हाथी ऊंट वगेरेना मरेला शरीरमा प्रवेश करी मारा शरीरने मृतबुद्धिनी कल्पनाथी गीध पक्षीओने खवडाववु आ बधु हु स्वीकारी शकु तेम छु, तेवी ज रीते दीक्षा ग्रहण करवी अथवा तो परदेशमा जता रहेवु पण हु स्वीकारी शकु छु पण हु सागरदत्तना घेर जवु स्वीकारवा तैयार नथी एटले के आ बधी उपरनी तमारी आज्ञाओ मने कोई पण जातना विचार कर्या वगर मान्य छे, पण सागरदत्तने त्या जवु मान्य नथी (तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुड्डंतरिए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामित्ता लज्जिए, विलीए, विड्डे, जिनदत्तस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावित्ता अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी किण्णं पुत्ता! सागरएणं दारएणं

तत्राश्रया गिरिपतन वा तरुपतन वा मरुपपात वा=निर्जलदेशगमन वा जम्पपात वा=अगाधजले पतन वा, ज्वलनप्रवेश वा ज्वलनो प्रवेश वा विषभक्षणं वा, 'सत्थोवाडण वा' शस्त्रावपाटन वा=शस्त्रेण शरीरविदारण वा, 'वेहाणस वा' वैहायस वा कण्ठे पाशग्रहण वा, तथा-गृध्रपृष्ठ=गृध्रैः स्पर्शन मया गवोष्ट्रादीना कलेवरे प्रवेशितस्य शरीरस्य गृध्रादिभिः भक्षण, तथा प्रव्रज्या वा, विदेश

गिरिपडण वा तरुपडण वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अह सागरदत्तस्स गिह गच्छिज्जा) जिनदत्त सागरदत्त के इस उलाहने रूप अर्थ को सुन करके जहां सागरदारक था वहां गया-वहां जाकर उसने सागर दारक से इस प्रकार कहा-हे पुत्र ! यह तुमने अच्छा नहीं किया-जो तुम सागरदत्त के घर से यहां इतने जल्दी आ गये। इसलिये हे बेटा ! तुम जैसे यहां बैठे हो वैसे ही सागरदत्त के घर चले जाओ। तब सागरदारकने अपने पिता जिनदत्त से इस प्रकार कहा-पिताजी ! मैं आपकी आज्ञा से पर्वत से गिरना स्वीकार कर सकता हूँ, वृक्ष से नीचे पड़जाना स्वीकारकर सकता हूँ-मरुप्रपात-निर्जलप्रदेश में जाना अंगीकारकर सकता हूँ, अगाधजल में डूबकर मरसकता हूँ तथा जलती हुई अग्नि में प्रवेश करना, विषका भक्षण करना, शस्त्र से शरीर का

ताओ ! गिरिपडण वा तरुपडणं वा मरुप्पवाय वा जलप्पवेस वा जलणप्पवेस वा विसभक्खण वा सत्थोवाडण वा वेहाणस वा गिद्धापिट्ठ वा पवज्ज वा विदेसगमण वा अब्भुवगच्छिज्जामि, नो खलु अह सागरदत्तस्स गिह गच्छिज्जा)

જિનદત્ત સાગરદત્તના આ ઠપકાને સાભળીને જ્યા સાગર દારક હતો ત્યા ગયો અને ત્યા જઈને તેણે સાગર દારકને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પુત્ર! તમે આ જે કંઈ કર્યું છે, તે સારુ ન કહેવાય તમે સાગરદત્તના ઘેરથી આટલા જલ્દી આવતા રહ્યા આ ઠીક નથી એથી હે બેટા! તમે અત્યારે જેવી સ્થિતિમા છો તેવી જ સ્થિતિમા સાગરદત્તને ઘેર જતા રહો ત્યારે સાગર દારકે પોતાના પિતાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પિતશ્રી ! તમારી આ જ્ઞાથી હુ પર્વત ઉપરથી નીચે ગબડી પડવુ સ્વીકારી શકુ છુ, વૃક્ષ ઉપરથી નીચે પડી જવુ સ્વીકારી શકુ છુ, મરુપ્રપત-નિર્જળ પ્રદેશમા જવુ સ્વીકારી શકુ છુ, ઊંડા પાણીમા ડૂબીને મરી શકુ છુ, તેમજ સળગતા અગ્નિમા પ્રવેશવુ, વિષનુ ભક્ષણ કરવુ, શસ્ત્રનાઘાથી શરીર ને કાપવુ, ગળામા ...

जाव अग्निज्जमाणमग्ग, तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! एय दमगपुरिस विउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोभेहि पलोभित्ता गिह अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग खडघडग ते एगते एडेह एडित्ता अलकारियकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कयवलि० जाव सव्वालकारविभूसिय करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइम भोयावेह भोयावित्ता मम अतिय उवणेह, तएण कोडुवियपुरिसा जाव पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं दमग असण उवप्पलोभेंति उवप्पलोभित्ता सय गिह अणुपवेसिति अणुपवेसित्ता त खडगमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगंसि खडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणसि महया२ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसियसद्द सोच्चा निसम्म कोडुवियपुरिसे एव वयासी—किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया महया सद्देण आरसइ ? तएण ते कोडुवियपुरिसा एव वयासी—एस णं सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया महया सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुवियपुरिसे एव वयासी—मा ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स त

अह खलु त्वां तस्मै दास्यामि यस्य त्वम् इष्टा=अभिलषिता कान्ता प्रिया मनोज्ञा मनोमा=मनोगता भविष्यति. इति=एवं सुकुमारिकां दारिकां ताभिरिष्टाभिर्वाग्भिः 'समाश्वासेइ' समाश्वासयति समाश्वास्य प्रतिविसर्जयति=सम्प्रापयति ॥ १० ॥

मूलम्–तएणं से सागरदत्ते एग महं दमगपुरिसं पासइ दंडिखंडनिवसणं खंडगमल्लगघडगहत्थगयं मच्छियासहस्सेहिं

दाहामि जस्स णं तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारियं ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ) वहाँ भित्ति के पीछे छुपा हुआ सागरदत्त सार्थवाह सागर–के इन वचनों को सुन रहा था। सो सुनकर के स्वयं बड़ा लज्जित हुआ तथा दूसरोंसे भी उसे बड़ी शर्म आई इस तरह स्व और पर से लजाता हुआ वह जिन दत्त के घर से बाहर निकल गया। और जाकर अपने घर पहुँचा। वहा पहुँच कर उसने अपनी पुत्री सुकुमारिका दारिका को बुलाया –बुलाने पर जब वह आ गई तब उसे उसने अपनी गोदी में बैठा लिया बैठानेके बाद फिर उसने उससे पूछा बेटी। सागरने तुम्हें किस कारण से छोड़ दिया है मैं तुम्हें उसी के दूंगा। कि जिस के लिये तुम अच्छी तरह इष्टा, कान्ता, प्रिया, मनोज्ञा एवं मनोमा होओगी, इस प्रकार उसने सुकुमारिका दारिकाको उन२ इष्ट वचनों द्वारा अच्छी तरह आश्वासन दिया–धैर्य बंधाया–और आश्वासन देकर उसे विसर्जित करदिया।सू०१०

सुवका ? अह ण तुम तस्स दाहामि जस्सण तुम इट्ठा जाव मणामा भविस्ससित्ति सूमालिय दारिय ताहिं इट्ठाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासित्ता पडिविसज्जेइ) त्या જ ભીંતની પાછળ છુપાઇને સાગરદત્ત સાર્થવાહ સાગરની તે બધી વાતને સાભળી રહ્યો હતો સાભળી તે બહુજ લજ્જિત થયો તેમજ બીજા ઓથી પણ તે ખૂબજ લજ્જિત થયો આ રીતે 'જાતે' અને બીજાઓથી લજાતો તે જિનદત્તના ઘેરથી બહાર નીકળી ગયો અને નીકળીને પોતાને ઘેર પહોચ્યો ત્યા જઇને તેણે પોતાની પુત્રી સુકુમારિકા દારિકાને બોલાવી જ્યારે તે સુકુમારિકા દારિકા આવી ગઈ ત્યારે તેને પોતાના ખોળામા બેસાડી લીધી બેસાડીને તેણે તેને પૂછ્યુ કે બેટી! શા કારણથી સાગરે તને ત્યજી છે? તને હુ તે પુરુષને જ આપીશ કે જેના માટે તુ સારી રીતે ઇષ્ટા, કાતા પ્રિયા, મનોજ્ઞા અને મનોમા થશે આ રીતે તેણે સુકુમાર દારિકાને પોતાના ઇષ્ટ વચ નોથી સારીરીતે આશ્વાસન આપ્યુ અને ત્યાર પછી તેને વિદાય આપી ~ ૧૦॥

जाव अन्निज्जमाणमग्गं, तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पलोभेहि पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह अणुप्पवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडघडगं ते एगंते एडेह एडित्ता अलंकारियकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह, तएणं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंति उवप्पलोभित्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति अणुपवेसित्ता तं खंडगमल्लगं खंडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडंति, तएणं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया२ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरासियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी--किण्णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया महया सद्देणं आरसइ ? तएणं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी--एस णं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया महया सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थ० ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी--मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं

खंड जाव एडेइ पासे ठवेइ जहा णं पत्तिय भवइ, ते वि तहेव ठवेंति. तएणं ते कोडुंबियपुरिसा तस्स दमगस्स अलंकारियकम्म करेंति करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेंति अब्भंगिए समाणे सुरभिगंधुव्वट्टणेणं गाय उव्वट्टिंति२ उसिणोदगेणं गंधोदगेण सीतोदगेणं ण्हाणेंति पम्हल सुकुमाल गंधकासाइयाए । गायाइ लूहंति लूहित्ता हंसलक्खणं पट्टसाडगं परिहेंति परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति करित्ता विउल असणपाणखाइमसाइमं भोयावेंति भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति, तएण सागरदत्ते सूमालिय दारिय ण्हाय जाव सव्वालंकारविभूसियं करिता त दमगपुरिस एव वयासी—देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एय णं अह तव भारियत्ताए दलामि भद्दियाए भद्दओ भविज्जासि, तएण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति पडिसुणिता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघर अणुपविसइ अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि निवज्जइ, तएण से दमगपुरिसे सूमालियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ, सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खंडमल्लग खडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए, तएण सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्तिकट्टु ओहयमण जाव झियाइ ॥ सू० ११ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु स सागरदत्त सार्थवाहोऽन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिश्चित् काले 'उप्पिं आगासतलगसि' उपरि आकाशतल्के=प्रासादोपरिभागे, सुहनिसण्णे' सुखेनोपविष्ट', राजमार्गमवलोकमानः २ तिष्ठति। तत खलु स सागरदत्त एक महान्त 'दमगपुरिस' द्रमनपुरुष 'दमग' इति देशीयः शब्दः दरिद्रपुरुष पश्यति, किम्भूतम् ? इत्याह–'दडिखंड निवसण' दण्डिखण्डनिवसन=दण्डि–कृतसन्धान जीर्णवस्त्र तस्य खण्ड तदेव निवसन परिधानवस्त्र यस्य स दण्डिखण्डनिवसनस्तम्, तथा–, खडमल्लग घडगहत्थगय' खण्डमल्लकघटकहस्तगत= खण्डमल्लक–खण्डशराव स्फुटितशराव भिक्षापात्र, तथा खण्डघटकश्च=खण्डरूपो घट' स्फुटितस्य घटस्य भागः स एव जलपात्र, एतद्द्वय हस्तगत यस्य तम्, 'मच्छियासहस्सेहिं जाव अन्निज्जमाणमग्ग' मक्षिकासहस्रै यावत् अन्वीयमानमार्ग, शरीरवस्त्रादेर्मलिनत्वात् तत्पृष्ठतो मक्षिका आप

'तएण से सागरदत्ते' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएण से सागरदत्ते)इसके बाद सागरदत्तने किसी एक समय "उप्पिं आगासतलगंसि" अपने प्रासाद के ऊपर सुख पूर्वक बैठी हुई स्थिति में राजमार्ग का अवलोकन करते समय (एग मह दमगपुरिस पासइ) एक अत्यत दरिद्र पुरुष को देखा (दडिखडनिवसण खंडगमल्लगघडगहत्थगय मच्छियासहस्सेहिं जाव अनिज्जमाणमग्ग) जो जीर्णवस्त्र के जुडे हुए चिथडे को पहिने था और जिसके हाथ में खडमल्लकथा–फुटा हुआ मिट्टि के खप्पर था – तथा पानी पीने के लिये फुटे हुए घट का एक खप्पर था। हजारो मक्खिया जिसके पीछे पीछे, शरीर और वस्त्रो के मलिन होने से भिन्न २ करती हुई उड रही

'तएण से सागरदत्ते' इत्यादि॥

टीकार्थ–(तएण से सागरदत्ते) त्यार बाद सागरदत्त कोई એક વખત (उप्पिं आगासतलगंसि) પોતાના મહેલની ઊપર સુખેથી બેસીને રાજમાર્ગનુ અવલોકનકરતો હતો ત્યારે તેણે (एग मह दमगपुरिस पासइ) એક ખૂબજ દરિદ્ર–કગાળ–પુરુષને જોયો (दडिखडनिवसण खडगमल्लगघडगहत्थगय मच्छियासहस्सेहिं जाव अनिज्जमाणमग्ग) તેણે જૂના વસ્ત્રના ચીંથરાઓ પહેરેલા હતા અને તેના હાથમા "ખડમલ્લક હતુ" એટલે કે ફુટી ગયેલા માટીના વાસણનો એક કકડો હતો તેમજપાણી પીવા માટે ફુટેલી માટલીનુ એક ખપ્પર હતુ હજારો માખીઓ તેનીપાછળ પાછળ–શરીર અને વસ્ત્રોની મલીનતાને લીધે ઉડી રહી હતી,

तन्तीत्यर्थः। ततः खलु स सागरदत्त कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् हे देवानुप्रियाः! यूय खलु एत द्रमकपुरुष=रङ्कपुरुष, विपुलेन अश्नपानखाद्यस्वाद्येन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य खण्डकमल्लक= खण्डशराव खण्डघटक=भग्नघटच ' से ' तस्य द्रमकपुरुषस्य एकान्ते=एकान्त स्थाने ' एडेह ' निक्षेपयत, निक्षिप्य अलङ्कारिककर्म = केशनखच्छेदनादिक नापितादिभिः कारयत, कारयित्वा स्नात कृतबलिकर्माण यावत् सर्वालङ्कार-

थी। (तए ण से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया! एयं दमगपुरिसं विउलेण असणपाण-खाइम साइम पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खडगमल्लग खडघडग त एगते एडेह एडित्ता अलंकारिकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणु ण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतिय उवणेह) इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया। बुलाकर उसने इस प्रकार कहा देवानुप्रियो! तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर फिर इसे घर में भीतर करलो। जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब तुमलोग इसके ये खडमल्ल (फटी लगोटी) और खडघटक इससे छुड़ा कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो। बाद में नापित (नाई) को बुलाकर इसके सुन्दर ढग से बाल बनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(तएण से सागरदत्ते कोडुवियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवा णुप्पिया! एय दमगपुरिसं विउलेण असणपाणखाइमसाइम पलोभेइ, पलोभित्ता गिहं अनुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लग खड घडग त एग ते एडेह, एडित्ता अल कारिकम्म कारेह कारित्ता ण्हाय कयबलि० जाव सव्वालकारविभूसिय करेह करित्ता मणुण्ण असणपाणखाइमसाइम भोयावेह, भोयावित्ता मम अतिय उवणेह)

ત્યારપછી સાગરદત્તે આજ્ઞાકારી પુરૂષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો આ દરિદ્ર પુરૂષને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારની લાલચ આપો લાલચ આપીને તેને ઘરની અદર બોલાવી લો જ્યારે તે ઘરમા આવી જાય ત્યારે તમે તેની પાસેના ખડમલ્લ અને ખડઘટક લઈને તેને એકાત સુરક્ષિત સ્થાનમા મૂકી દો ત્યારપછી હજામને બોલાવીને તેના સરસ રીતે વાળ કપાવી નાખો અને વધી ગયેલા નખ વગેરેને કપાવી નાખો ત્યાર ^ તેને સ્નાન

विभूषित कुरुत कृत्वा 'मणुण्ण' मनोज्ञ=रुचिरम् अशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयत भोजयित्वा ममान्तिक=समीपमुपनयत। ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-प्रतिशृण्वन्ति='तथाऽस्तु' इति कृत्वा तदाज्ञा स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमकपुरुषः=रङ्कपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य त द्रमक रुचिरेण विपुलेनाशनादिना प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वक गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य त खण्डकमल्लक खण्डकघटक च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते 'एडति' निक्षेपयन्ति, तत खलु स द्रमक स्तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते ''एडिज्जमाणसि' निक्षेप्यमाणे सति महता २ शब्देन 'आरसइ' आक्रन्दति। ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य द्रमकपुरुषस्य त महान्त 'आरसियइ सद्द' आक्रन्दनशब्द श्रुत्वा निशम्य कौटु

हैं उन्हें कटवाओ। उसके पश्चात् इसे स्नान कराओ। बाद मे इससे पशु पक्षी आदिको अन्नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलकारो से विभूषित करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद मे फिर हमारे पास इसे ले आओ। (तएण कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुर्णेति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सय गिह अणुपवेसिंति अणुपविसित्ता, त खडमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति, तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खड घडगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महया२ आरसियसद्द सोच्चा

કરાવો. સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના હાથેથી પશુ-પક્ષી વગેરેને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપવા રૂપ બલિકર્મ કરાવડાવો. જ્યારે બલિકર્મની વિધિ પતી જાય ત્યારે તમે લોકો એને બધી જાતના અલંકારોથી શણગારો. શણગારીને તેને મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડો. જમાડયા પછી તેને અમારી પાસે લઈ આવો.

(तएण कोडुबियपुरिसा जाव पडिसुर्णेति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता त दमग असण उवप्पलोभेंते उवप्पलोभित्ता सयगिह अणुपवेसिंति, अणुपविसित्ता, त खडगमल्लग खडगघडग च तस्स दमगपुरिसस्स एगते एडेंति तएण से दमगे तसि खडमल्लगसि, खडघडगसि य एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण आरसइ, तएण से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स त महयार आरसियसद्द सोच्चा निसम्म कोडुबियपुरिसे एव वयासी)

तन्तीत्यर्थः। ततः खलु स सागरदत्त कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् हे देवानुप्रियाः! यूयं खलु एनं द्रमकपुरुषं=रङ्कपुरुषं विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन प्रलोभयत प्रलोभ्य गृहमनुप्रवेशयत, अनुप्रवेश्य खण्डमल्लकं=खण्डशराव खण्डघटकं=पानीयपात्रं ' से ' तस्य द्रमकपुरुषस्य एकान्ते=एकान्तस्थाने ' एडेह ' निक्षिपत, निक्षिप्य अलङ्कारिककर्म = केशनखच्छेदनादिकं नापितादिभिः कारयत, कारयित्वा स्नातं कृतबलिकर्माणं यावत् सर्वालङ्कार-

थी। (तए णं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भे णं देवाणुप्पिया! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइम पलोभेह, पलोभित्ता गिहं अणुपवेसेह, अणुपवेसित्ता खंडगमल्लगं खंडघडगं च एगंते एडेह एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह)

इसके बाद सागरदत्तने आज्ञाकारी पुरुषों को बुलाया। बुलाकर उसने इस प्रकार कहा देवानुप्रियो। तुम लोग इस दरिद्र पुरुषको विपुल अशन, पान, खाद्य और स्वाद्यरूप चतुर्विध आहारका प्रलोभन दो-प्रलोभन देकर फिर इसे घर में भीतर करलो। जब यह घरके भीतर हो जावेगा तब तुमलोग इसके ये खंडमल्ल (फटी लगोटी) और खंडघटक इससे छुड़ा कर किसी एकान्त-सुरक्षित-स्थान में रखदो। बाद में नापित (नाई) को बुलाकर इसके सुन्दर ढंग से बाल बनवाओ नखआदि जो बढ़ रहे

(तएणं से सागरदत्ते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-तुब्भेणं देवाणुप्पिया! एयं दमगपुरिसं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमं पलोभेइ, पलोभित्ता गिहं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसित्ता खडगमल्लगं खंड घडगं च एगंते एडेह, एडित्ता अलंकारिकम्मं कारेह कारित्ता ण्हायं कयबलि० जाव सव्वालंकारविभूसियं करेह करित्ता मणुण्णं असणपाणखाइमसाइमं भोयावेह, भोयावित्ता मम अंतियं उवणेह)

ત્યારપછી સાગરદત્તે આજ્ઞાકારી પુરૂષોને બોલાવ્યા. બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું-કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો આ દરિદ્ર પુરૂષને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારની લાલચ આપો લાલચ આપીને તેને ઘરની અંદર બોલાવી લો જ્યારે તે ઘરમાં આવી જાય ત્યારે તમે તેની પાસેના ખંડમલ્લ અને ખંડઘટક લઈને તેને એકાંત સુરક્ષિત સ્થાનમાં મૂકી દો ત્યારપછી હજામને બોલાવીને તેના સરસ રીતે વાળ કપાવી નાખો અને વધી ગયેલા નખ વગેરેને કપાવી નાખો ત્યારપછી તેને સ્નાન

विभूषितं कुरुत कृत्वा 'मणुण्णं' मनोज्ञं=रुचिरम् अशनपानखाद्यस्वाद्यं भोजयत भोजयित्वा ममान्तिकं=समीपमुपनयत। ततः खलु कौटुम्बिकपुरुषा यावत्-प्रतिशृण्वन्ति='तथाऽस्तु' इति कृत्वा तदाज्ञां स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स द्रमकपुरुषः=रङ्कपुरुषः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तं द्रमकं रुचिरेण विपुलेनाशनादिना प्रलोभयन्ति प्रलोभ्य स्वकं गृहमनुप्रवेशयन्ति, अनुप्रवेश्य तं खण्डकमल्लकं खण्डकघटकं च तस्य द्रमकपुरुषस्यैकान्ते 'एडंति' निक्षेपयन्ति, ततः खलु स द्रमकस्तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके च एकान्ते ''एडिज्जमाणंसि' निक्षेप्यमाणे सति महता २ शब्देन 'आरसइ' आक्रन्दति। ततः खलु स सागरदत्तस्तस्य द्रमकपुरुषस्य तं महान्तं 'आरसियं सद्दं' आक्रन्दनशब्दं श्रुत्वा निशम्य कौटु-

हैं उन्हें कटवाओ। उसके पश्चात् इसे स्नान कराओ। बाद में इससे पशु पक्षी आदिको अन्नादिका भागरूप बलिकर्म आदिकरवाओ-जब यह बलिकर्म आदिकर चुके तब तुमलोग इसे समस्त अलंकारों से विभूषित करो, विभूषित करके फिर इसे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार खिलाओ-खिलाकर के बाद में फिर हमारे पास इसे ले आओ। (तएणं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता, जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंति, उवप्पलोभित्ता सयं गिहं अणुपवेसिंति अणुपविसित्ता, तं खडमल्लगं खडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति, तएणं से दमगे तंसि खडमल्लगंसि, खडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसियसद्दं सोच्चा

કરાવો. સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના હાથેથી પશુ-પક્ષી વગેરેને અન્ન વગેરેનો ભાગ આપવા રૂપ બલિકર્મ કરાવડાવો. જ્યારે બલિકર્મની વિધિ પતી જાય ત્યારે તમે લોકો એને બધી જાતના અલંકારોથી શણગારો. શણગારીને તેને મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડો. જમાડયા પછી તેને અમારી પાસે લઈ આવો.

(तएणं कोडुंबियपुरिसा जाव पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं दमगं असणं उवप्पलोभेंते उवप्पलोभित्ता सयांगेहं अणुपवेसिंति, अणुपविसित्ता, तं खडगमल्लगं खडगघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति तएणं से दमगे तंसि खडमल्लगंसि, खडघडगंसि य एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते तस्स दमगपुरिसस्स तं महया२ आरसियसद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी)

भिकपुरुषानेवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! किं=केन कारणेन खलु एष द्रमकपुरुषो महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा एवमवदन्-एष खलु हे स्वामिन ! तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके एकान्ते निक्षिप्यमाणे महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाहस्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् एवमवादीत्-हे देवानुप्रिया ! मा खलु यूय एतस्य

निसम्म कोडुंबियपुरिसे एव वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और स्वीकारकर वहा जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से बार २ लुभाया लुभाकर वे उसे अपने घर तक ले आये और अंत में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन लोगोंने उस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खंड को, तथा फूटे हुए घडे के खप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख दिया । जब उस दमकपुरुषने अपने खंडमल्लक(फटी लंगोटी) को और खडघटकको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आवाजको सुनकर और उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषो से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसदमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ ३ तएण ते कोडुंबियपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण

આ જાતની સાગરદત્તની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ સારી રીતે સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ દરિદ્ર માણસની પાસે ગયા ત્યા જઇને તેમણે તેને બોલાવ્યો અને અશન, પાન વગેરે રૂપ ચાર જાતના આહારની વારવાર લાલચ આપી લલચાવીને તેઓ તેને ઘર સુધી લઈ આવ્યા અને છેવટે તેને ઘરમા દાખલ કરી દીધો ત્યારપછી તે લોકોએ તે દરિદ્ર માણસની પાસેથી ફૂટેલા માટીના વાસણનો કટકો તેમજ ફૂટેલા માટલાના ખપ્પરને લઇને સુરક્ષિત સ્થાને મૂકી દીધુ જ્યારે તે દરિદ્ર માણસે પોતાના ખડમલ્લકને અને ખડઘટકને પોતાની પાસેથી છીનવીને એકાત સ્થાનમા મૂકતા જોયુ ત્યારે તે જોરેથી ઘાટા પાડીને રડવા લાગ્યો તેના રડવાના અવાજને સાભળીને અને તેને પોતાના ચિત્તમા ધારણ કરીને સાગરદત્તે કૌટુંબિક પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યુ

(किण्ण देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देण आरसइ, तएण ते कोडुंबियपुरिसा एव वयासी एसण सामी ! तसि खडमल्लगसि खडघडगसि एगते एडिज्जमाणसि महया २ सद्देण आरसइ, तएण से

द्रमकपुरुपस्य तत् खण्डमल्लक खण्डघटक यावत्-एकान्ते 'एडेह' निक्षेपयत अस्य परोक्षे मा स्थापयतेत्यर्थ, किन्तु पार्श्वे स्थापयत, यथा खलु 'पत्तिय' प्रत्ययः= विश्वासो भवति। तेऽपि कौटुम्बिकपुरुपास्तथैव स्थापयन्ति। तत खलु ते कौटु-

आरसइ, तएण से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुविय पुरिसे एव वयासी) हे देवानुप्रियो! क्या कारण है जो यह दमक पुरूप जोर २ से रो रहा है? तब उन कौटुम्बिक पुरुषों ने ऐसा कहा कि हे स्वामिन्! इसने ज्योंही अपने खडमल्लक को और घटखड को लेकर एक ओर सुरक्षित स्थान में रखे जाते हुए देखा वैसे ही यह बडे जोर२ से रोने लगा है। ऐसा सुनकर सागरदत्त ने उन कौटुम्बिक पुरुषो से इस प्रकार कहा- (माण तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स त खड जाव एडेह, पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, तेवि तहेव ठवेंति, तएण ते कोडुविय पुरिसा तस्स दमगस्स अलकारियकम्म करेंति, करित्ता सयपाग सहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेंति, अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्व- ट्टणेण गाय उव्वट्टिंति, २ उसिणोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेंति) हे देवानुप्रियो! तुम लोग इस दमक पुरुप के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खड को और फूटे हुए घडे के खप्पर को इससे लेकर परोक्ष में- अदृश्य स्थान में-मत रखो किन्तु इस के पास में ही-समक्षरखो, जिससे इसे अपना विश्वास बना रहे। इस प्रकार सागरदत्त की बात

कोडुविय पुरिसे एव एव वयासी)

हे देवानुप्रियो! शा कारणथी आ दरिद्र माणस मोटेथी घाटा पाडी पाडीने रडी रह्यो छे? त्यारे ते कौटुंबिक पुरुषोए आ प्रमाणे कह्यु के हे स्वामिन्! पोताना खडमल्लक अने खडघटकने तेनी पासेथी लईने बीजा सुरक्षित स्थाने लई जता जोईने आ दरिद्र माणस मोटेथी रडवा लाग्यो छे आ प्रमाणे साभळीने सागरदत्ते कौटुंबिक पुरुषोने आ प्रमाणे कह्यु के—

(माण तुब्भे देवाणुप्पिया! एयस्स दमगस्स त खड जाव एडेह पासे ठवेह, जहाण पत्तिय भवइ, ते वि तहेव ठवेंति, तएण ते कोडुवियपुरिसा तस्स दमगस्स अलकारियकम्म करेंति, करित्ता सयपागसहस्सपागेहिं तिल्लेहिं अब्भगेंति अब्भगिए समाणे सुरभिगधुव्वट्टणेण गाय उव्वट्टिंति २ उसिं णोदगेण गधोदगेण सीतोदगेण ण्हावेंति)

हे देवानुप्रियो! तमे लोको आ दरिद्र पुरुषना फूटेला माटीना दीपकना कटकाने अने फूटेला घडाना खप्परने एनी पासेथी लईने दूर एकातमा मूकशो नहि पण एनी पासे ज-एनी सामे ज मूकी राखो जेथी एने विश्वास रहे

मिकपुरुषानेवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! किं=किम् कारणेन खलु एष द्रमकपुरुषो महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति ? । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा एव मवदन्-एष खलु हे स्वामिन् ! तस्मिन् खण्डमल्लके खण्डघटके एकान्ते निक्षिप्य-माणे महता २ शब्देन आरसति=आक्रन्दति । ततः खलु स सागरदत्तः सार्थवाह स्तान् कौटुम्बिकपुरुषान् एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः ! मा खलु यूयं एतस्य

निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी) इस प्रकार की उन कौटुम्बिक ने सागरदत्त सेठ की इस आज्ञा को अच्छी तरह स्वीकार लिया और स्वीकारकर वहां जाकर उन्होंने उस दमक को अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से बार २ लुभाया लुभाकर वे उसे अपने घर तक ले आये और अंत में अपने घर में उसे प्रवेश कराया । बाद में उन लोगोंने उस दमक पुरुष के फूटे हुए मिट्टी के दीपक के खंड को, तथा फूटे हुए घडे के खप्पर को उससे लेकर किसी सुरक्षित स्थान में रख दिया । जब उस दमकपुरुषने अपने खंडमल्लक(फटी लंगोटी) को और खंडघटकको अपने से लेकर एकान्त स्थानमें रखा जाता हुआ देखा-तो वह जोर जोरसे रोने लगा-उसके उस रोनेकी आवाजको सुनकर और उसे अपने चित्त में धारण कर सागरदत्तने कौटुम्बिक पुरुषों से इस प्रकार कहा-(किण्णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ ३ तएणं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं

આ જાતની સાગરદત્તની આજ્ઞાને તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ સારી રીતે સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર્યા બાદ તેઓ દરિદ્ર માણુસની પાસે ગયા ત્યાં જઇને તેમણે તેને બોલાવ્યો અને અશન, પાન વગેરે રૂપ ચાર જાતના આહારની વારવાર લાલચ આપી લલચાવીને તેઓ તેને ઘર સુધી લઈ આવ્યા અને છેવટે તેને ઘરમાં દાખલ કરી દીધો ત્યારપછી તે લોકોએ તે દરિદ્ર માણુસની પાસેથી ફૂટેલા માટીના વાસણુનો કટકો તેમજ ફૂટેલા માટલાના ખપ્પરને લઇને સુરક્ષિત સ્થાને મૂકી દીધું જ્યારે તે દરિદ્ર માણુસે પોતાના ખંડમલ્લકને અને ખંડઘટકને પોતાની પાસેથી છીનવીને એકાંત સ્થાનમાં મૂકતા જોયું ત્યારે તે મોટેથી ઘાટા પાડીને રડવા લાગ્યો તેના રડવાના આવાજને સાંભળીને અને તેને પોતાના ચિત્તમાં ધારણુ કરીને સાગરદત્તે કૌટુંબિક પુરૂષોને આ પ્રમાણે કહ્યું (किण्णं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयासी एसणं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि एगंते एडिज्जमाणंसि महया २ सद्देणं आरसइ, तएणं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते

रूक्षयित्वा 'हंसलक्खण' हंसलक्षण = हंसस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टशाटकं=क्षौमवस्त्र 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति। ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिका स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूषिता कृत्वा त द्रमकपुरुषम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय! एषा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अह तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउल असनपाणखाइमसाइम भोयावेंति, भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछाजा चुका-तब फिर उन्होंने हँस चिह्नवाला अथवा हँस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया। क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया। भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएण सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकार विभूसियं करित्ता त दमगपुरिसं एव वयासी-एसणं देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत् समस्त अलंकारों से विभूषित करके उस दमक पुरुष से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय! यह मेरी लड़की है। और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(लूहित्ता हंसलक्खणपट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता, सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउलं असनपाणखाइमसाइमं भोयावेंति, भोयावित्ता, सागरदत्तस्स उवणेंति)

જ્યારે શરીરના બધા અંગો સરસ રીતે લુછાઈ ગયા ત્યારે તેઓએ હંસચિત્રિત અથવા તો હંસ જેવું સ્વચ્છ ધોળું પટ્ટશાટક-ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવ્યું ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવીને તેને વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડયા જમાડયા પછી તેઓ તેને સાગરદત્તની પાસે લઈ ગયા

(तएणं सागरदत्ते सूमालियं दारियं ण्हायं जाव सव्वालंकारविभूसियं करित्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया! मम धूया इट्ठा एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलामि)

સાગરદત્તે પોતાની સુકુમારિકા દારિકાને સ્નાન કરાવીને યાવત્ બધી જાતના અલંકારોથી શણગારીને તે દરિદ્ર માણસને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! આ મારી પુત્રી છે અને મને બહુ જ ઈષ્ટ, પ્રિય, કાંત, મનોજ્ઞ

मित्रपुरुषास्तस्य द्रमकपुरुषस्य अलङ्कारिककर्म कारयन्ति कारयित्वा शत पाक सहस्रपाकेन तैलेनाभ्यङ्गयन्ति मर्दयन्ति। अभ्यङ्गितः सन् सुरभिगन्धोद्वर्तनेन= सुगन्धिपिष्टकेन गात्रमुद्वर्तयन्ति, उद्वर्त्य उष्णोदकेन गन्धोदकेन शीतोदकेन स्नपयन्ति, स्नपयित्वा 'पम्हलसुकुमालगंधकासाइयाए' पक्ष्मलसुकुमारगन्ध-काषायिकया=पक्ष्मला=रोमवती मृदुरोमयुक्ता अत एव सुकुमारा तया कषायेण रक्ता शाटी शाटिका तया गात्राणि 'लूहंति' रूक्षयन्ति = प्रोञ्छयन्ति,

---

सुनकर उन आदेशकारी पुरुषों ने वैसा ही किया-अर्थात उसके मल्लक खड और घटखड दोनों को ही उसके समक्ष उन्होंने रख दिया। इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उस द्रमक पुरुषका आलंकारिक कर्म करवाया। अब उनका अच्छी तरह आलंकारिक कर्म निष्पन्न हो चुका-तब उसके बाद उस द्रमक पुरुष के शरीर को उन लोगों ने शतपाक और सहस्र पाकवाले तैल से मालिश की-मालिश करनेके पश्चात्, सुगन्धि पिष्टक-सुगंधितपिटी-से उसके शरीर का उबटन किया उस सुगंधित पिटी को उसके शरीर पर रगड़ २ कर मला इससे जो उसके शरीर पर मल जमा हुआ था वह चिकनाहट के संबन्ध से उस पिटीद्वारा निकल गया। जब उनके शरीर का उद्वर्त्तन हो चुका-तब फिर उन लोगों ने उसे उष्णोदक से गंधोदक से, एवं शीतोदक से स्नान कराया। स्नान कराकर बाद में उसका शरीर (पम्हलसुकुमारगंधकासाइयाए गायाइं लूहंति) पक्ष्मल-रूएँवाली-मृदुरोमयुक्त-सुकुमार-नरम, रँगी हुई टुवाल से-अगोछी-से-तौलिया से पोंछा। (लूहित्ता हंसलक्खण

આ રીતે સાગરદત્તની વાત સાંભળીને તે આજ્ઞાકારી પુરુષોએ તે પ્રમાણે જ કર્યું એટલે કે તેના મલ્લકખંડ અને ઘટખંડને તેની સામે જ મૂકી દીધા ત્યારપછી તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે દરિદ્ર માણસના વાળ અને નખ કપાવ્યા જ્યારે આ કામ સરસ રીતે પુરૂં થઈ ગયું ત્યારે તેઓએ દરિદ્ર માણસના શરીરને શતપાક અને સહસ્રપાકવાળા તેલથી માલિશ કર્યાં બાદ સુગંધિપિષ્ટક-સુગંધિત પીઠી-તેના શરીરે ચોળીને ઉપટન કર્યું એથી તેના શરીર ઉપર જેટલો મેલ હતો તે પીઠીની સ્નિગ્ધતાને લીધે સાફ થઈ ગયો જ્યારે તેના શરીરે પીઠી ચોળાઈ ગઈ ત્યારે તે લોકોએ તેને ગરમ પાણીથી, સુવાસિત પાણીથી અને ઠંડા પાણીથી સ્નાન કરાવ્યું સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેના શરીરને (पम्हल सुकुमार गंध कासाइयाए गायाइं लूहंति) પક્ષ્મલ-રૂંવાટાવાળા સુકોમળ, નરમ રંગીન ટુવાલથી લૂછયું

रूक्षयित्वा 'हसलक्खण' हंसलक्षण = हंसस्वरूप तदिव शुक्ल स्वरूप यस्य तत्, 'पट्टसाडगं' पट्टशाटकं=क्षौमवस्त्र 'परिहेंति' परिधापयन्ति परिधाप्य सर्वालंकार-विभूषित कुर्वन्ति, कृत्वा विपुलमशनपानखाद्यस्वाद्य भोजयन्ति, भोजयित्वा सागरदत्तस्योपनयन्ति । ततः खलु सागरदत्तः सुकुमारिका दारिका स्नाता यावत्-सर्वालङ्कारभूपिता कृत्वा त द्रमकपुरुषम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! एपा खलु मम दुहिता इष्टा, एता खलु अह तव भार्यात्वेन ददामि

पट्टसाडगं परिहेंति, परिहित्ता सव्वालकारविभूसियं करेंति, करित्ता विउल असनपाणखाइमसाइम भोयावेंति, भोयावित्ता सागरदत्तस्स उवणेंति) जब शारीरिक प्रत्येक अवयव ठीक २ अच्छी तरह से पोंछाजा चुका-तब फिर उन्होने हँस चिह्नवाला अथवा हँस के जैसा शुभ्रपट्टशाटक-क्षौमवस्त्र उसको पहिराया। क्षौमवस्त्र पहिराकर फिर उसको विपुल, अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार का भोजन कराया। भोजन कराकर फिर वे उसको सागरदत्त के पास ले गये (तएण सागरदत्ते सूमालिय दारिय ण्हाय जाव सव्वालकार विभूसिय करित्ता त दमगपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अह तव भारियत्ताए दलामि) सागरदत्त ने अपनी सुकुमारिका दारिका को स्नान कराकर यावत समस्त अलकारो से विभूपित करके उस दमक पुरुप से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! यह मेरी लड़की है। और मुझे बहुत ही अधिक इष्ट, प्रिय, कान्त

(लूहित्ता हसलक्खणपट्ट साडग परिहेंति, परिहित्ता,सव्वालकारविभूसिय करेंति, करित्ता विउल असनपाणखाइमसाइम भोयावेंति,भोयावित्ता,सागरदत्तस्स उवणेंति)

જ્યારે શરીરના બધા અગો સરસ રીતે લુછાઈ ગયા ત્યારે તેઓએ હસચિત્રિત અથવા તો હંસ જેવુ સફેદ ધોળુ પટ્ટશાટક ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવ્યુ ક્ષૌમ વસ્ત્ર પહેરાવીને તેને વિપુલ અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો જમાડયા જમાડયા પછી તેઓ તેને સાગરદત્તની પાસે લઈ ગયા

(तएणं सागरदत्ते सूमालिय दारिय ण्हाय जाव सव्वालकारविभूसिय करित्ता त दमगपुरिस एव वयासी-एसण देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा एय ण अह तव भारियत्ताए दलामि)

સાગરદત્તે પોતાની સુકુમારિકા દારિકાને સ્નાન કરાવીને યાવત્ બધી જાતના અલકારોથી શણગારીને તે દરિદ્ર માણસને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! આ મારી પુત્રી છે અને મને બહુ જ ઈષ્ટ, પ્રિય, કાંત, મનોજ્ઞ

'भद्दियाए' भद्रिकया=भाग्यशालिन्याऽनया त्वमपि भद्रो भाग्यशाली भविष्यसि। ततः खलु स द्रमकपुरुषः सागरदत्तस्यैतदर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं वासगृहमनुप्रविशति, सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिगसि' तल्पे=शयनीये 'निवज्जइ' निषीदति उपविशति। ततः खलु स द्रमक पुरुषः सुकुमारिकाया इम=पूर्वोक्तम् एतद्रूपम्=पूर्वोक्तस्वरूपम् अङ्गस्पर्शं 'पडिसंवेदेइ' प्रतिसंवेदयति=प्रत्यनुभवति शेषं यथा सागरस्य=शेषवर्णनं सागरदत्तवद् बोध्यम्, यावत्-अत्र यावच्छब्दादिदं द्रष्टव्यम्-'असिपत्रादीनां स्पर्शादप्यनिष्टतर तदङ्ग स्पर्शं ज्ञात्वा सागरदारकवद् द्रमकपुरुषोऽपि तां सुकुमारिकां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा, शयनीयादुत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वासगृहाद् निर्गच्छति, निर्गम्य खड्गमल्लकं=स्फुटि

मनोज्ञ एवं मनोम है। मैं अपनी इस पुत्री को तुम्हें तुम्हारी भार्या के रूप में प्रदान करता हूँ (भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएण से दमग पुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पडि०२ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वास घरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ) इस भाग्यशालिनी से तुम भी भाग्यशाली बनजाओगे। दमकपुरुष ने सागरदत्त के इस कथनरूप अर्थ को अंगीकार करलिया, और फिर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ वासगृह में प्रविष्ट हुआ। वहा जाकर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ साथ एक ही पलंग पर-बैठ गया-सोगया (तएण से दमगपुरिसे सूमालियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ,सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खडमल्लग

અને મનોમ છે હુ મારી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમા અર્પું છુ.
भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पडि० २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगसि निवज्जइ)

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો. તે દરિદ્ર પુરૂષે સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની સાથે વાસગૃહમા પ્રવિષ્ટ થયો ત્યા જઈને તે દરિદ્ર માણુસ સુકુમારિકા દારિકાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર બેસી ગયો.

(तएण से दमगपुरिसे सूमालियाए इम एयारूव अगफास पडिसवेदेइ, सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खडमल्लग खडघडग च गहाय म

तभिक्षाभान, खण्डघटक=स्फुटितपानीयपात्र च गृहीत्वा 'मारामुक्के विव काए' मारामुक्तइव काकः मारा-शूना प्राणिवधस्थान ततो मुक्तः निःसृतः काक इव, अथवा-माराद्-मारकपुरुषात् तदीयहस्तादित्यर्थः मुक्त-विच्छुटित काक इव शीघ्रतया यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिश प्रतिगतः। ततः खलु सा सुकुमारिका यावद्-ततो मुहूर्तान्तर प्रतिबुद्धा सती पतिमपश्यन्ती शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रमकपुरुषस्य मार्गणगवेषण कुर्वाणा वासगृहस्य द्वार विघाटित पश्यति

खडगडग च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए) उस समय उस दमक पुरुष को उस सुकुमारिका दारिका का वह पूर्वोक्त तथा पूर्वोक्त स्वरूपवाला अगस्पर्श अनुभव मे आया। शेष वर्णन सागरदारककी तरह जानना चाहिये। इस तरह वह दमक पुरुष भी असिपत्रादिकों के स्पर्श से भी अधिक अनिष्ट उसके अग-स्पर्श को जानकरके, सागरदारक की तरह, सुख प्रसुप्त उस सुकुमारिका दारिका को जान उसे छोडने के लिये पलग से उठा और उठकर उस वास घर से बाहिर निकला-निकलकर खडमल्लक-फूटे हुए भिक्षापात्र को तथा खडघटक-फूटे हुए पानी पीने के पात्र को-लेकर वध्यस्थान से अथवा मारक पुरुष के हाथ से मुक्त हुए काककी तरह वह बहुत जल्दी जहा से आया था उसी ओर चलदिया (तएण सा सूमालिया जाव गएणं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमण जाव झियायइ) इसके थोडीदेर बाद वह सुकुमारिका दारिका जगी और पतिको अपने पास न

दिस पाउब्भूए तामेव दिस पडिगए)

ते વખતે તે દરિદ્ર માણુસને સુકુમારિકા દારિકાના અંગોનો સ્પર્શ પહેલા વર્ણન કરવામા આવ્યા પ્રમાણેનો કઠોર જ લાગ્યો (અહીં સાગરદારક જેવું જ વર્ણન સમજી જવુ જોઈએ) આ રીતે તે દરિદ્ર માણુસ પણ તરવારના સ્પર્શ કરતા પણ વધારે અનિષ્ટકર તેનો સ્પર્શ જાણીને સાગર દારકની જેમજ સુખેથી સૂઇ ગયેલી તે સુકુમારિકા દારિકાને જોઈને, તેનો ત્યાગ કરવા માટે પલગ ઉપરથી ઊભો થયો અને ઊભો થઈને વાસગૃહની બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને ખડમલ્લક-ફૂટેલા ભિક્ષાપાત્ર તેમજ ખડઘટક-ફૂટેલા પાણી પીવા માટેના પાત્રને લઈને વધસ્થાનથી અથવા તો મારક (હિંસક) પુરૂષના હાથથી મુક્ત થયેલા કાગડાની જેમ તે ત્વરાથી જ્યાંથી તે આવ્યો હતો તે તરફ જ જતો રહ્યો (तएण सा सूमालिया जाव गएण से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहमण जाव झियायइ) થોડા વખત પછી તે સુકુમારિકા દારિકા જાગી અને પતિને પોતાની પાસે ન જોઈને

'भद्दियाए' भद्रिकया=भाग्यशालिन्याऽनयाऽऽत्वमपि भद्रको भाग्यशाली भविष्यसि। ततः खलु स द्रमकपुरुषः सागरदत्तस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य सुकुमारिकया दारिकया सार्धं वासगृहमनुप्रविशति, सुकुमारिकया दारिकया सार्धं 'तलिगंसि' तल्पे=शयनीये 'नीवज्जइ' निषीदति उपविशति। ततः खलु स द्रमक पुरुषः सुकुमारिकाया इम=पूर्वोक्तम् एतद्रूप=पूर्वोक्तस्वरूपम् अङ्गस्पर्शं 'पडिसंवेदेइ' प्रतिसंवेदयति=प्रत्यनुभवति शेषं यथा सागरस्य=सागरवर्णनं सागरदारकवद् बोध्यम्, यावत्-अत्र यावच्छब्दादिदं द्रष्टव्यम्-'असिपत्रादीनां स्पर्शादप्यनिष्टतर तदङ्ग स्पर्शं ज्ञात्वा सागरदारकवद् द्रमकपुरुषोऽपि ता सुकुमारिकां सुखप्रसुप्तां मत्वा, शयनीयादुत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय वासगृहाद् निर्गच्छति, निर्गत्य खण्डमल्लक=स्फुटि

मनोज्ञ एवं मनोम है। मैं अपनी इस पुत्री को तुम्हें तुम्हारी भार्या के रूप में प्रदान करता हूँ (भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएणं से दमग पुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पडि०२ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वास घर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ) इस भाग्यशालिनी से तुम भी भाग्यशाली बनजाओगे। दमकपुरुष ने सागरदत्त के इस कथनरूप अर्थ को अंगीकार करलिया, और फिर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ वासगृह में प्रविष्ट हुआ। वहा जाकर वह उस सुकुमारिका दारिका के साथ साथ एक ही पलंग पर-बैठ गया-सोगया (तएणं से दमगपुरिसे सूमालियाए इम एयारूव अंगफास पडि सवेदेइ,सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खडमल्लग

અને મનોમ છે હું મારી આ પુત્રીને તમને તમારી પત્નીના રૂપમા અર્પું છુ.
भद्दियाए भद्दओ भविज्जसि, तएण से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठ पडि० २ सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिगंसि निवज्जइ)

આ ભાગ્યશીલાથી તમે પણ ભાગ્યશાળી થઈ જશો તે દરિદ્ર પુરૂષે સાગરદત્તની એ વાતને સ્વીકારી લીધી અને ત્યારબાદ તે સુકુમારિકા દારિકાની સાથે વાસગૃહમા પ્રવિષ્ટ થયો ત્યા જઈને તે દરિદ્ર માણસ સુકુમારિકા દારિકાની સાથે એક જ શય્યા ઉપર બેસી ગયો

(तएण से दमगपुरिसे सूमालियाए इम एयारूव अंगफास पडिसवेदेइ, सेस जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ अब्भुट्टेइ, अब्भुट्ठित्ता वासघराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता खडमल्लग खडघडगं च गहाय मारामुक्के ... ज

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुमन्तव्यम् , तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति । एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यानं ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वम् अपहतमनः सङ्कल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका तां दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमकपुरुषो मां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती 'गतः स द्रमकपुरुषः' इति कृत्वाऽऽर्तध्यानं ध्यायामि

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहां यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोड़लेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तू वधू और वर के लिये यह मुख धोने की सामग्री दतौन आदि -लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई -और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये ! क्या कारण है जो अपहृतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह द्रमक पुरुष मुझे यहां सुख प्रसुप्त जान छोडकर चला गया है ! जब मैं थोडी देरबाद उठी तो मैने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकानी माता भद्राओ बीजा दिवसे ज्यारे सवार थई गयुं अने सूर्य उदय पाम्यो त्यारे तेणे दासीने बोलावी अने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं-अहीं यावत् शब्दथी पहेलाना सूत्रनी जेम ज वर्णन समजी लेवुं जोईओ जेमके भद्राओ तेने बोलावीने आ प्रमाणे कह्युं के वधू अने वरना मुख प्रक्षालन माटे दातण वगेरे लई जा ज्यारे भद्राओ तेने आ प्रमाणे कह्युं त्यारे ते दासी वासगृहमां गई अने त्यां जईने तेणे सुकुमारिका दारिकाने आर्तध्यान करती जोई त्यारे आ प्रमाणे तेनी हालत जोईने तेणे कह्युं के हे देवानुप्रिये ! शा कारणथी तमे अपहतमन संकल्प थईने आर्तध्यान करी रह्या छो त्यारे सुकुमार दारिकाओ ते दासीने आ प्रमाणे कह्युं-के ते दरिद्र माणस मने अहीं सुखेथी सूतेली छोडीने जतो रह्यो छे ज्यारे थोडा वखत पछी हुं जागी त्यारे मैं तेने मारी पासे जोयो नहि अने मैं वासगृहना बारणाने पण खुल्लुं

दृष्ट्वा एवमवादीत् '-इति कृत्वा, अपहतमन भूत्वा यावद्-आर्तध्यानं ध्यायति ॥ सू० ११ ॥

मूलम्-तएणं सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ निवेसित्ता एवं वयासी-अहो णं तुमं पुत्ता! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं मा णं तुमं पुत्ता! ओहयमण जाव झियाहि तुमं णं पुत्ता मम महाणसंसि विपुलं असणं४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि, तएणं सा सुमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता माहणसंसि विपुलं असणं जाव दलमाणी विहरइ ॥ सू०११ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततः खलु सा भद्रा सार्थवाही=सुकुमारिका दारिकाया जननी ' कल्लं ' कल्ये द्वितीयदिवसे प्रादुः प्रभातायां रजन्यां यावद्-

देखकर पलंग से उठी । उठकर उसने उस द्रमकपुरुषकी मार्गणा एवं गवेषणा की । उसमें उसने वासगृह के द्वार को खुला हुआ देखा । देखकर उसने विचारा कि वह द्रमक पुरुष अब चला गया है । ऐसा सोचकर वह अपहृत मन. संकल्प होकर यावत् आर्त ध्यान करने लगी ॥सू०११॥

' तएणं सा भद्दा कल्लं ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं

શય્યા ઉપરથી ઊભી થઈ ઊભી થઈને તેણે તે દરિદ્ર માણુસની શોધ ખોળ કરી તેણે વિચાર કર્યો કે તે દરિદ્ર માણુસ તો જતો રહ્યો છે આ રીતે વિચાર કરીને તે અપહતમન સંકલ્પા થઈને યાવત્ આર્તધ્યાનમાં ડૂબી ગઈ ॥ સૂત્ર ૧૧ ॥

' तएणं सा भद्दा कल्लं ' इत्यादि

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારબાદ (सा भद्दा कल्लं पाउ० दासचेडिं सद्दा

तेजसा ज्वलति सूर्ये-उदिते दासचेटीं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यावत् सागरदत्तस्यैतमर्थं निवेदयति, अत्र यावच्छब्देन पूर्वसूत्रोक्तवर्णनमनुसन्धेयम्, तथा-वधूवरयोर्मुखधावनिकामुपनयेति । एवमुक्तासती दासचेटी वासगृहमुपागत्य सुकुमारिकामार्तध्यान ध्यायन्तीं पश्यति, दृष्ट्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वम् अपहतमन संकल्पा ध्यायसि ? ततः सुकुमारिका तां दासचेटीमेवमवादीत्-स द्रमकपुरुषो मां सुखप्रसुप्तां ज्ञात्वा मम पार्श्वादुत्थाय निर्गतः, ततोमुहूर्त्तान्तरेऽहमुत्थाय तमपश्यन्ती 'गतः स द्रमकपुरुष, इति कृत्वा ऽऽर्त ध्यान ध्यायामि

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकाकी माता उस भद्रा ने द्वितीय दिन जब प्रातः काल हो गया था-और सूर्य उदित हो चुका था-तब अपनी दासचेटी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-यहां यावत् शब्द से यह पूर्वसूत्र गत वर्णन जोडलेना चाहिये जैसे, भद्राने बुलाकर उससे ऐसा कहा कि तू वधू और वर के लिये यह मुख धोने की सामग्री दतौन आदि -लेजा जब भद्रा ने उससे ऐसा कहा तब वह दासचेटी वासगृह में गई -और वहां जाकर उसने सुकुमारिका को आर्तध्यान करती हुई देखा तब देखकर उसने उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिये । क्या कारण है जो अपहतमनः संकल्प होकर तुम आर्तध्यान कर रही हो-तब सुकुमारिका दारिका ने उस दासचेटी से इस प्रकार कहा-वह दमक पुरुष मुझे यहां सुख प्रसुप्त जान छोडकर चला गया है ! जब मैं थोडी देरबाद उठी तो मैंने उसे अपने पास नहीं देखा, वासभवन का द्वार खुला हुआ

वित्ता, एव वयासी जाव सागरदत्तस्स एयमट्ठ निवेदेइ) सुकुमारिका दारिकानी माता भद्राએ બીજા દિવસે જ્યારે સવાર થઈ ગયુ અને સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે તેણે દાસીને બોલાવી અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-અહીં યાવત્ શબ્દથી પહેલાના સૂત્રની જેમ જ વર્ણન સમજી લેવુ જોઈએ જેમકે ભદ્રાએ તેને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે વધૂ અને વરના મુખ પ્રક્ષાલન માટે દાતણ વગેરે લઈ જા જ્યારે ભદ્રાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ ત્યારે તે દાસી વાસગૃહમા ગઇ અને ત્યા જઈને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને આર્તધ્યાન કરતી જોઈ ત્યારે આ પ્રમાણે તેની હાલત જોઇને તેણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે ! શા કારણથી તમે અપહતમન સંકલ્પ થઈને આર્તધ્યાન કરી રહ્યા છો ત્યારે સુકુમાર દારિકાએ તે દાસીને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે તે દરિદ્ર માણસ મને અહીં સુખેથી સૂતેલી છોડીને જતો રહ્યો છે ત્યારે થોડા વખત પછી હુ જાગી ત્યારે મે તેને મારી પાસે જોયો નહિ અને મે વાસગૃહના બારણાને પણ ખુલ્લું

ततः सा दासचेटी सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य समीपमागच्छति आगत्य निवेदयतीति योजना बोध्या। ततः खलु स सागरदत्तः 'तथैव' संभ्रान्तः=उद्विग्नः सन् यत्रैव वासगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामङ्के निवेशयति, निवेश्य एवमवादीत्-अहो! इत्थमेव खलु हे पुत्रि 'पुरा' पुरा=पूर्वभवेषु 'पोराणाणं' पुराणानाम्=अतीतकालकृतानां, यावत्=अत्र यावच्छब्देन्द बोध्यम्-'दुच्चिण्णाणं दुप्परक्कन्ताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति

देखा तब मैं समझ गई कि वह यहां से चला गया है। इस प्रकार मैं चिन्ता में पड़ रही हूँ। सुकुमारिका की इस बात को सुनकर दासचेटी ने उसी समय वहां से वापिस आकर सागरदत्त को इस बात की खबर दी-" इस प्रकार यह पूर्वोक्त पाठ यहां लगा लेना चाहिये-(तएणं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी, अहोणं तुमं पुत्ता पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणससि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि) इसके बाद वह सागरदत्त पहिले जैसा उद्विग्न चित्त होकर जहां वासगृह था वहां गया। वहां जाकर उसने सुकुमारिका दारिका को अपनी गोद में बैठा लिया और बैठाकर कहने लगा-हे पुत्रि! तुमने पहिले भवों में जो दुश्चीर्ण दुष्पराक्रान्त, (कठिनताई से भोगने योग्य एवं कृत ज्ञानावरणीय आदि अशुभ कर्म उपार्जित

જોયું ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે આ રીતે હું ચિંતામાં પડી છું સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દાસીએ તરત જ સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ જાણી લેવો જોઈએ

तएणं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे, जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी अहो णं तुमं पुत्ता! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणससि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાની જેમ વ્યાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યાં વાસગૃહ હતું ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પોતાના ખોળામાં બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ! તે પહેલા ભવમાં જે કંઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્પરાક્રાંત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે ... માં ઉપા

विसेस ' इति-दुश्चीर्णाना-दुश्चरिताना वाङ्मनोजनित मृषावादादिकर्मणामित्यर्थः, किं भूताना तेषा? दुष्पराक्रान्ताना-कायिकानां प्राणिहिंसाऽदत्तादानादीना, कृताना प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदेन बद्धाना पापाना=अशुभाना कर्मणा=ज्ञानावरणीयादीना पापकम्-अशुभ, फलवृत्तिविशेषम् , प्रत्यनुभवन्ती=वेदयन्ती विहरसि=वर्तसे तत्=तस्माद् मा खलु त्व हे पुत्रि ! अपहतमनःसकल्पा यावद् ध्याय=आर्तध्यान मा कुरु इत्यर्थः, त्व खलु हे पुत्रि ! मम ' महाणस सि ' महानसे-पाकशालाया विपुलमशन पान खाद्य स्वाद्य यथा पोट्टिला यावत् परिभाजयन्ती=श्रमणादिभ्यः प्रतिभाग कुर्वती ' विहराहि ' विहर=तिष्ठ। ततः खलु सा सुकु-

---

किये-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बधके भेदसे बाधे हैं-उन्हीं पुराने अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के तुम अशुभ फल विशेष को इस समय भोग रही हो। पूर्व भवों में जो पाप किये है वेही यहां " "पुराण" शब्द से गृहीत हुए हैं। पाप शब्द यहा अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बोधक है। ये अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जीव अशुभ मन, वचन और काय की प्रवृत्ति से जन्य मृषावाद आदि क्रियाओ से, तथा प्राणिहिंसा, अदत्तादान आदि कुकृत्यों से बाधता है। बांधते समय इनमें प्रकृति, स्थिति अनुभाग और प्रदेश बधरूप विभाग हो जाता है। अधिक स्थिति और अधिक अनुभाग बध इनमें सक्लेश परिणामो से पडता है। इसलिये हे पुत्रि। तुम अपहृतमन सकल्प होकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो मेरी भोजन शाला में चतुर्विध आहार तैयार करा कर पोट्टिला की तरह श्रमण आदि

कित कर्या हता-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश बधना भेदथी बाध्या छे अत्यारे तु तेज पहेलाना अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोना अशुभ फ़ळ विशेपने भोगवी रही छे पूर्व भवमा जे पाप करवामा आव्या होय तेने अही " पुराण " शब्दथी ग्रहण करवामा आव्या छे अही पाप शब्द अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मोने स्पष्ट करे छे आ बधा अशुभ ज्ञानावरणीय वगेरे कर्मो जीव अशुभ-मन, वचन, अने कायनी प्रवृत्तिथी जन्य मृषावाद वगेरे क्रियाओथी तेमज प्राणीओनी हिंसा, अदत्तादान वगेरे कुकर्मोथी बाधे छे बाधती वखते एओमा प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश बधरूप विभाग थई जाय छे अधिक स्थिति अने अधिक अनुभाग बध तेओमा सक्लेश परिणामोथी पडे छे एथी हे पुत्रि ! तमे अपहृत मन सकल्प थईने यावत्

ततः सा दासचेटी सागरदत्तस्य सार्थवाहस्य समीपमागत्य सर्वमपि निवेदयतीति योजना बोध्या। तत खलु स सागरदत्तः सार्थवाहः 'संभ्रान्तः' संभ्रान्त=उद्विग्नः सन् यत्रैव वासगृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सुकुमारिकां दारिकामङ्के निवेशयति, निवेश्य एवमवादीत्-अहो! त्वं खलु हे पुत्रि! 'पुरा' पुरा=पूर्वभवेषु 'पोराणाण' पुराणानाम्=अतीतकालकृतानाम्, यावत्=अत्र यावच्छब्देन बोध्यम्-'दुच्चिण्णाणं दुप्पडिक्कंताण असुहाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्ति

देखा तब मैं समझ गई कि वह यहां से चला गया है। इस प्रकार मैं चिन्ता में पड़ रही हूँ। सुकुमारिका की इस बात को सुनकर दासचेटी ने उसी समय वहां से वापिस आकर सागरदत्त को इस बात की खबर दी-" इस प्रकार यह पूर्वोक्त पाठ यहां लगा लेना चाहिये-(तएण से सागरदत्ते तहेव संभते समाणे जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता एवं वयासी, अहो णं तुमं पुत्ता पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणससि विपुलं असणं४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि) इसके बाद वह सागरदत्त पहिले जैसा उद्विग्न चित्त होकर जहां वासगृह था वहां गया। वहां जा कर उसने सुकुमारिका दारिका को अपनी गोद में बैठा लिया और बैठाकर कहने लगा-हे पुत्रि! तुमने पहिले भवों में जो दुश्चीर्ण दुष्पराक्रान्त, (कठिनताई से भोगने योग्य एवं कृत ज्ञानावरणीय आदि अशुभ कर्म उपार्जित

જોયું ત્યારે મને ચોક્કસપણે ખાત્રી થઈ ગઈ કે તે અહીંથી ચાલ્યો ગયો છે આ રીતે હું ચિંતામાં પડી છું સુકુમારિકાની આ વાત સાંભળીને દાસીએ તરત જ સાગરદત્તને ખબર આપી આ રીતે અહીં પહેલાનો પાઠ જાણી લેવો જોઈએ

तएणं से सागरदत्ते तहेव संभते समाणे, जेणेव वासहरे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ,निवेसित्ता एवं वयासी अहो णं तुमं पुत्ता! पुरा पोराणाणं जाव पच्चणुब्भवमाणी विहरसि तं माणं तुमं पुत्ता ओहयमण जाव झियाहि-तुमं णं पुत्ता मम महाणससि विपुलं असणं ४ जहा पुट्टिला जाव परिभाएमाणी विहराहि)

ત્યારપછી સાગરદત્ત પહેલાની જેમ વ્યાકુળ ચિત્તવાળો થઈને જ્યાં વાસગૃહ હતું ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે સુકુમારિકા દારિકાને પોતાના ખોળામાં બેસાડી લીધી અને બેસાડીને કહેવા લાગ્યા કે હે પુત્રિ! તેં પહેલા ભવમાં જે કંઈ દુશ્ચીર્ણ, દુષ્પરાક્રાંત અને કૃતજ્ઞાનાવરણીય વગેરે ... માં ઉપા

विसेस ' इति-दुश्चीर्णानां-दुश्चरितानां वाङ्मनोजनित मृषावादादिकर्मणामित्यर्थः, किं भूतानां तेषां? दुष्पराक्रान्तानां-कायिकानां प्राणिहिंसाऽदत्तादानादीनां, कृतानां प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशभेदेन बद्धानां पापानां=अशुभानां कर्मणां=ज्ञानावरणीयादीनां पापकम्-अशुभं, फलवृत्तिविशेषम्, प्रत्यनुभवन्ती=वेदयन्ती विहरसि=वर्तसे तत्=तस्माद् मा खलु त्वं हे पुत्रि! अपहतमनःसङ्कल्पा यावद् ध्याय= आर्तध्यानं मा कुरु इत्यर्थः, त्वं खलु हे पुत्रि! मम ' महाणससि ' महानसे- पाकशालायां विपुलमशनं पानं खाद्यं स्वाद्यं यथा पोट्टिला यावत् परिभाजयन्ती= श्रमणादिभ्यः प्रविभागं कुर्वती ' विहराहि ' विहर=तिष्ठ। ततः खलु सा सुकु-

---

किये-प्रकृति, स्थिति, अनुभाग और प्रदेश बंधके भेदसे बांधे हैं-उन्हीं पुराने अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों के तुम अशुभ फल विशेष को इस समय भोग रही हो। पूर्व भवों में जो पाप किये हैं वेही यहां " "पुराण" शब्द से गृहीत हुए हैं। पाप शब्द यहां अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बोधक है। ये अशुभ ज्ञानावरणीय आदि कर्म जीव अशुभ मन, वचन और काय की प्रवृत्ति से जन्य मृषावाद आदि क्रियाओं से, तथा प्राणिहिंसा, अदत्तादान आदि कुकृत्यों से बंधता है। बांधते समय इनमें प्रकृति, स्थिति अनुभाग और प्रदेश बंधरूप विभाग हो जाता है। अधिक स्थिति और अधिक अनुभाग बंध इनमें सक्लेश परिणामों से पडता है। इसलिये हे पुत्रि। तुम अपहतमनः सकल्प होकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो मेरी भोजन शाला में चतुर्विध आहार तैयार करा कर पोट्टिला की तरह श्रमण आदि

ર્જિત કર્યા હતા-પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બંધના ભેદથી બાંધ્યા છે અત્યારે તું તેજ પહેલાના અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોના અશુભ ફળ વિશેષને ભોગવી રહી છે પૂર્વ ભવમાં જે પાપ કરવામાં આવ્યા હોય તેને અહીં " પુરાણ " શબ્દથી ગ્રહણ કરવામાં આવ્યા છે અહીં પાપ શબ્દ અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોને સ્પષ્ટ કરે છે આ બધા અશુભ જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મો જીવ અશુભ-મન, વચન, અને કાયની પ્રવૃત્તિથી જન્ય મૃષાવાદ વગેરે ક્રિયાઓથી તેમજ પ્રાણીઓની હિંસા, અદત્તાદાન વગેરે કુકર્મોથી બાંધે છે બાંધતી વખતે એઓમાં પ્રકૃતિ, સ્થિતિ, અનુભાગ અને પ્રદેશ બંધરૂપ વિભાગ થઈ જાય છે અધિક સ્થિતિ અને અધિક અનુભાગ બંધ તેઓમાં સંકલેશ પરિણામોથી પડે છે એથી હે પુત્રિ! તમે અપહત મન સંકલ્પ થઈને યાવત્

मारिका दारिका तत्तथैव प्रतिशृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य महानसे विपुलमश नपानखाद्य स्वाद्य यावत् ' दलमाणी ' ददती विहरति=आस्ते स्म ॥ सू०१२ ॥

मूलम्–तेण कालेण तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोस ड्ढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वयासी–एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नाम वा जाव परिभोगं वा, जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स २ वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहु नायाओ एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जे णं अहं सागरस्स दारियाए इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया चिंता तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपु च्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया, तएणं सा सूमा-

जनों के लिये वितरण करती रहो (तएणं सा सूमालिया दारिया एय मट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता महाणससि विपुलं असणं जाव दलमाणी विहरइ) इस तरह पिता सागरदत्त के समझाने पर उस सुकुमारिका दारिका ने अपने पिता के इस कथन को स्वीकार कर के वह महानस भोजन शाला में निष्पन्न चतुर्विध आहार को श्रमणादि जनों के लिये वितरण भी करने लगी ॥ सूत्र १२ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી ભોજન શાળામા ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવીને પોટ્ટિલાની જેમ શ્રમણ વગેરે જનોને આપતી રહે

(तएणं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेड, पडिसुणित्ता महाणससि विपुलं असणं जाव दलमाणी विहरइ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામા આવેલી તે સુકુમારિકા દારિકાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામા તૈયાર થયેલા ચારે જાતના આહારોને શ્રમણ વગેરેને આપવા લાગી

સૂ. ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्टम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी– इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहि सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छठुंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए, तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एवं वयासी– अम्हे ण अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तवभयारिणीओ नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठ२ जाव विहरित्तए, कप्पइ ण अम्ह अतो उवस्सयस्स विइपरिविखत्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतल पइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठ नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठं अ०२ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठ छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—' तेण कालेण ' इत्यादि । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' गोवालियाओ अज्जाओ ' गोपालिका=गोपालिकानाम्न्यः आर्याः=साध्व्यः, ' बहुस्सुयाओ ' बहुश्रुता=श्रुतपारगामिन्य, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव ' तेतलिणाए ' तेतलिज्ञाते=चतुर्दशे तेतलिपुत्राध्ययने वर्णिताः ' सुव्वयाओ ' सुव्रताः=सुव्रता-

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तेण कालेण–तेण समएण) उस काल और उस समय में (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

' तेण कालेण–तेण समएण ' इत्यादि—

टीकार्थ–(तेण कालेण–तेण समएण) ते काळे अने ते समये (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

मारिका दारिका एतदर्थं मतिश्रृणोति=स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य महानसे विपुलमश नपानखाद्य स्वाद्य यावत् ' दलमाणी ' ददती विहरति=आस्ते स्म ॥ सू०१२ ॥

मूलम्–तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोस ढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलाभित्ता एवं वयासी–एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा जाव अमणामा नेच्छइ णं सागरए मम नामं वा जाव परिभोग वा, जस्स २ वि य णं दिज्जामि तस्स २ वि य णं अणिट्ठा जाव अमणामा भवामि, तुब्भे य णं अज्जाओ ! बहु-नायाओ एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जे णं अहं सागरस्स दारियाए इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया चिंता तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपु-च्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया, तएणं सा सूमा

जनों के लिये वितरण करती रहो (तएणं सा सूमालिया दारिया एय मट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता महाणससि विपुल असणं जाव दलमाणी विहरइ) इस तरह पिता सागरदत्त के समझाने पर उस सुकुमारिका दारिका ने अपने पिता के इस कथन को स्वीकार कर के वह महानस भोजन शाला में निष्पन्न चतुर्विध आहार को श्रमणादि जनों के लिये वितरण भी करने लगी ॥ सूत्र १२ ॥

આર્તધ્યાન કરીશ નહિ તુ મારી ભોજન શાળામા ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવીને પોટ્ટિલાની જેમ શ્રમણ વગેરે જનોને આપતી રહે

(तएण सा सूमालिया दारिया एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता महाणससि विपुल असण जाव दलमाणी विहरइ)

આ રીતે પિતા સાગરદત્ત વડે સમજાવવામા આવેલી તે સુકુમાર દારિકાએ પોતાના પિતાના કથનને સ્વીકારી લીધુ અને સ્વીકારીને તે ભોજનશાળામા તૈયાર થયેલા ચારે જાતના આહારોને શ્રમણ વગેરેને આપવા લા[illegible] સૂ. ૧૨

लिया अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थछट्टट्ठम जाव विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणा विहरित्तए, तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं वयासी-अम्हे णं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभयारिणीओ नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं२ जाव विहरित्तए, कप्पइ णं अम्हं अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपइयाए आयावित्तए, तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोयइ एयमट्ठं अ०३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं जाव विहरइ ॥सू०१३॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'गोवालियाओ अज्जाओ' गोपालिका=गोपालिकानाम्न्यः आर्याः=साध्व्यः, 'बहुस्सुयाओ' बहुश्रुता=श्रुतपारगामिन्य, एवम्=अनेन प्रकारेण यथैव 'तेतलिणाए' तेतलिज्ञाते=चतुर्दशे तेतलिपुत्राध्ययने वर्णिताः 'सुव्वयाओ' सुव्रताः=सुव्रता-

---

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तेण कालेण-तेण समएण) उस काल और उस समय में (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

'तेण कालेण-तेण समएण' इत्यादि—

टीकार्थ-(तेण कालेण-तेण समएण) ते काळे अने ते समये (गोवालियाओ अज्जाओ बहुस्सुयाओ एव जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ

नाम्न्य साध्व्यः 'तहेव समोसढ्ढाओ' तथैव समागता=अनुक्रमात् गोपालिकाः समागताः। 'तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे' तथैव संघाटको यावत् अनुप्रविष्ट' गोपालिकानामार्याणामेक संघाटकः यावत् सुकुमारिकाया गृहेऽनुप्रविष्टः। तथैव यावत् सुकुमारिका ता आर्याः अशनादिना प्रतिलभ्य वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत्-हे आर्याः ! एवं खलु अहं सागरस्य दारकस्यानिष्टा यावत्= अकान्ता अप्रिया अमनोज्ञा अमनोमा मनः प्रतिकूलाऽस्मि, नेच्छति खलु सागरको मम नाम वा गोत्रं वा श्रोतुम्, किं पुनर्यावत् मया सह परिभोगं वा, यत्र मम नामाऽपि श्रोतुं नेच्छति तत्र का वार्ता परिभोगस्य, अहं तु तेन सर्वथा परि, स्यक्तेति भावः। अपि च यस्मै यस्मै खलु 'दिज्जामि' दीये=दत्ता प्रदत्ता भवामि, तस्य तस्यापि च खलु अनिष्टा यावत् अमनोमा=मनः प्रतिकूला भवामि, हे आर्याः ! यूयं च खलु 'बहुनायाओ' बहुज्ञाताः ज्ञानातिशययुक्ताः, 'एवं

तहेव समोसढ्ढाओ तहेव सघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलभित्ता एवं वयासी) गोपालिका नामकी आर्यिका जो श्रुत पारगामिनी थीं इस प्रकार से कि जिस प्रकार से तेतलि प्रधान नामक चौदहवें अध्ययन में सुव्रता साध्वी वर्णित हुई है-थीं-वे उसी तरह से वहा आईं। इनका एक सगाडा था, यावत् सुकुमारिका के घर में गोचरी के लिये प्रवेश किया। सुकुमारिका ने बड़ी भक्ति के साथ उन्हें आहार पानी दिया-और देकर वह फिर इस प्रकार से उनसे कहने लगी-(एवंखलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अमणामा, नेच्छइ ण सागरए मम नाम वा जाव परिभोग वा जस्स २ वि य ण दिज्जामि तस्स-तस्स वि य ण अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि तुब्भे य ण अज्जाओ ! बहुनायाओ, एवं जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे

तहेव समोसढ्ढाओ तहेव सघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया पडिलभित्ता एव वयासी)

ગોપાલિકા નામે આર્યિકા કે જે શ્રુત પારગામિની હતી તેતલીપ્રધાન નામના ચૌદમા અધ્યયનની સુવ્રતા સાધ્વી જેવી હતી તેવા જ તે પણ હતી સુવ્રતા સાધ્વીની જેમ જ તે યાવત્ સુકુમારિકાના ઘેર તે ગોચરી માટે ગઈ સુકુમારિકાએ ખૂબ જ ભક્તિ-ભાવથી તેમને આહારપાણી આપ્યું અને આપીને તે તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગી—

(एव खलु अज्जाओ अहं सागरस्स अणिट्ठा, जाव अमणामा नेच्छइ ण सागरए मम नाम वा जाव परिभोग वा जस्स २ वि य ण दिज्जामि तस्स तस्स वि य ण अणिट्ठा, जाव अमणामा भवामि तुब्भे य ण

यथा पोट्टिला यावद् उपलब्धम् अयमर्थः-यथा तेतलिपुत्रभार्या पोट्टिला स्वभर्तृवशीकरणोपायप्रदर्शनार्थं सुव्रता साध्वीं पृच्छति स्म, तथा-सुकुमारिका दारिका गोपालिका संघाटकं पृच्छती, तादृशं चूर्णयोगादिकमुपलब्धम्-ज्ञातं किम् ? येनाहं सागरस्य दारकस्येष्टा कान्ता यावद् भवेयं आर्यास्तथैव भणन्ति=यथा पोट्टिलि

जे णं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया) हे आर्याओं। मैं अपने पति सागर दारक के अनिष्ट बनी हूं यावत् अकान्त अप्रिय अमनोज्ञ एव अमनोम मनः प्रतिकूल बनी हुई हूँ। वे मेरा नाम गोत्र कुछ भी सुनना नहीं चाहते है। तो फिर उनके साथ परिभोग करने की तो बात ही क्या है। मुझे तो उन्होंने सर्वथा ही छोड दी है। अपिच-मेरे पिता मुझे जिस २ व्यक्ति के लिये देते ह-मैं उस २ व्यक्ति के लिये भी अनिष्ट आदि बन जाती हूँ। हे आर्याओ! आप तो बहुश्रुत ह अनेक शास्त्रो की ज्ञाता हैं-ज्ञान के अतिशय से संपन्न हैं। इस प्रकार उस सुकुमारिका ने पोट्टिला की तरह अपने पति को वश में करने के विषय में उनसे उपाय पूछा पोट्टिलाने अपने पति तेतलिपुत्र को वशमें करने को पहिले जैसे सुव्रता साध्वी के संघाटेसे उपाय पूछा था-और कहा आपको यदि कोई ऐसा चूर्ण आदि का प्रयोग उपलब्ध

एव जहा पुट्टिला जाव उवलद्धे जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता जाव भवेज्जामि, अज्जाओ तहेव भणंति, तहेव साविया जाया, तहेव चिंता, तहेव सागरदत्तं सत्थवाहं आपुच्छइ जाव गोवालियाणं अंतिए पव्वइया)

હે આર્યાઓ! મારા પતિ સાગરદારક માટે હુ અનિષ્ટ થઈ ગયેલી છુ યાવત્ અકાંત, અપ્રિય, અમનોજ્ઞ અને અમનોમ થઈ ચૂકી છુ તેઓ મારા નામ ગોત્ર કઇ પણુ સાંભળવા ઈચ્છતા નથી ત્યારે તેમની સાથે પરિભોગ કરવાની તો વાત જ શી કરવી તેઓએ મને એકદમ જ જે છોડી દીધી છે અને મારા પિતાએ મને જે જે માણુસને આપે છે તે બધા માટે પણુ હું અનિષ્ટ વગેરે થઈ જાઉ છુ હે આર્યાઓ! તમે તો બહુશ્રુત છો, ઘણા શાસ્ત્રોને જાણો છો, જ્ઞાન સંપન્ન છે આ રીતે પોટ્ટિલાની જેમ જ સુકુમારિકા દારિકાએ પણુ પતિને વશમાં કરવા માટેના ઉપાયોની પૂછપરછ કરી પોટ્ટિલાએ પોતાના પતિ તેતલિપુત્રને વશમાં કરવા માટે પહેલાં સુવ્રતા સાધ્વીના સંઘાટાથી જેમ ઉપાયો પૂછ્યા હતા તેમજ તેણે પણુ તેમને કહ્યુ કે-જો એવો

कथा पृष्टा सुव्रतायाः सङ्घाटकस्थिताः सा=आर्यास्तामबोचन्, तथैव गोपालिका सघाटस्थाः आर्या भणन्ति=कथयन्ति स्म धर्मं । 'तहेव साविया जाया' तथैव श्राविका जाता=पोट्टिला वत् सुकुमारिका दारिकाऽपि श्राविका जाता। तथैव चिन्ता–पोट्टिलावदेव पश्चात्=प्रव्रज्यां गृहीतुं चिन्ता सुकुमारिकाया मनसि प्रादुर्भूता। सुकुमारिका सागरदत्त सार्थवाह=स्वपितर तथैव=यथा स्वपतिं पोट्टिला, तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामनिके प्रव्रजिता=दीक्षा गृहीतवती। ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्वी जाता सा कि भूता–ईर्यासमिता यावद् गुप्त

हो तो भी पता दीजिये कि जिससे मैं अपने पति सागरदारक को इष्ट, कान्त यावत् मनोम बनजाऊँ। गोपालिका के संघाडे की इन आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोट्टिला को सुव्रता साध्वी की तरह समझाया–वह उसी तरहसे श्राविका बन गई। पोट्टिला की तरह इस सुकुमारिका ने भी बाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया–। पोट्टिलाने जिस तरह अपने पति से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की थी–उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली। (तएण सा सूमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाव गुत्तबभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ) इस तरह वह सुकुमारिका आर्या बन गई। वह ईर्यासमिति आदि का पालन करने लगी

કોઈ ચૂર્ણ વગેરેનો પ્રયોગ મળી શકે તો પણ મને બતાવી દો કે જેથી હું મારા પતિ સાગરદારકના માટે ફરી ઇષ્ટ, કાંત, યાવત્ મનોમ થઈ જાઉં ગોપાલિકા સંઘાડાની તે આર્યાઓએ–સુવ્રતા–સાધ્વીએ જેમ પોટ્ટિલાને સમજાવી તેમજ સમજાવી અને છેવટે તે શ્રાવિકા બની ગઈ પોટ્ટિલાની જેમજ તે સુકુમારિકાએ પણ ત્યારપછી દીક્ષા લેવાનો મનમા મક્કમ વિચાર કરી લીધો પોટ્ટિલાએ જેમ પોતાના પતિની આજ્ઞા લઈને દીક્ષા ધારણ કરી હતી તેમજ સુકુમારિકાએ પણ પોતાના પતિ સાગરદત્તને પૂછીને ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી લીધી

(तएण सा सूमालिया अज्जा जाया इरिया जाव गुत्तबभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે ' આર્યા થઈ ગઈ, તે ઇર્યા સમિતિ વગેરેનું પાલન કરવા લાગી, મહાવ્રતની રક્ષા

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमभक्तैर्यावत्-तप कर्मभिरात्मानं भावयन्ती विहरति=आस्तेस्म। ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव गोपालिका आर्यास्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्याः! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती चम्पानगर्या बहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे षष्ठषष्ठेन-षष्ठभक्तानन्तरं पुनः षष्ठभक्तेन 'अणिक्खित्तेण' अनिक्षिप्तेन =अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तपःकर्मणा 'सूराभिमुही' सूर्याभिमुखी 'आयावेमाणी' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विहर्तुम्' इति। ततस्तदनन्तरं ता गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः-हे आर्ये! वयं खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी। अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित भी करने लगी। एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या साध्वी-जहां गोपालिका आर्या विराज मान थी वहां गई-(उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूर सामंते छट्ठं छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए) वहां जाकर उसने उन्हें वंदना की, नमस्कार किया। वंदना एवं नमस्कार कर फिर वह इस-प्रकार कहने लगी-हे भदंत! मै आप से आज्ञा प्राप्त कर चंपा नगरी से बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अंतररहित छट्ठ छट्ठ की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ। (तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं एवं वयासी-अम्हेणं

ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ ભક્ત વગેરે તપસ્યાઓથી પોતાને ભાવિત પણ કરવા લાગી એક દિવસની વાત છે કે તે સુકુમારિકા આર્યા સાધ્વી જ્યાં ગોપાલિકા આર્યા વિરાજમાન હતી ત્યાં ગઈ (उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी, इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चंपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणि विहरित्तए) ત્યાં જઈને તેણે તેમને વંદના કરી નમસ્કાર કર્યા વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદંત! આપની આજ્ઞા મેળવીને હું ચંપા નગરીમાં બહાર સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે અંતર રહિત છઠ્ઠ છઠ્ઠની તપસ્યા કરતાં સૂર્યાભિમુખી થઈને આતાપના કરવા ઈચ્છું છું (तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं

कया पृष्टा सुव्रतायाः सघाटकस्थिताः सा-अम्मामनोत्, तथैव गोपालिका सघाटस्था' आर्या भणन्ति-इति सर्वं । ' तहेव साविया जाया ' तथैव श्राविका जाता=पोट्टिला वत् सुकुमारिका दारिकाऽपि श्राविका जाता । तथैव चिन्ता-पोट्टिलावदेव पश्चात्=प्रव्रज्या ग्रहीतुं चिन्ता सुकुमारिकाया मनसि प्रादुर्भूता । सुकुमारिका सागरदत्त सार्थवाह=स्वपितरं तथैव=यथा स्वपतिं पोट्टिला, तद्वद् आपृच्छति, यावद् गोपालिकानामसन्निके प्रव्रजिता=दीक्षा गृहीतवती । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या=साध्वी जाता सा कि भूता-ईर्यासमिता यावद् गुप्त

हो तो भी पता दीजिये कि जिससे मैं अपने पति सागरदारक को इष्ट, कान्त यावत् मनोम बनजाऊँ। गोपालि का के सघाडे की इन आर्याओं ने सुकुमारिका को, पोट्टिला को सुव्रता साध्वी की तरह समझाया-वह उसी तरहसे श्राविका बन गई। पोट्टिला की तरह इस सुकुमारिका ने भी बाद में दीक्षा लेने का मन में विचार किया-। पोट्टिलाने जिस तरह अपने पति से आज्ञा लेकर दीक्षा धारण की थी-उसी प्रकार इस सुकुमारिका ने भी अपने पिता सागरदत्त से पूछकर गोपालिका आर्या के समीप दीक्षा धारण कर ली। (तएण सा सूमालिया अज्जा जाया ईरिया समिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिए अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालिया अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ) इस तरह वह सुकुमारिका आर्या बन गई। वह ईर्यासमिति आदि का पालन करने लगी

કોઈ ચૂર્ણ વગેરેનો પ્રયોગ મળી શકે તો પણ મને બતાવી દો કે જેથી હુ મારા પતિ સાગરદારકના માટે ફરી ઇષ્ટ, કાંત, યાવત્ મનોમ થઈ જાઉં ગોપાલિકા સઘાડાની તે આર્યાઓએ-સુવ્રતા-સાધ્વીએ જેમ પોટ્ટિલાને સમજાવી તેમજ સમજાવી અને છેવટે તે શ્રાવિકા બની ગઈ પોટ્ટિલાની જેમજ તે સુકુમારિકાએ પણ ત્યારપછી દીક્ષા લેવાનો મનમા મક્કમ વિચાર કરી લીધો પોટ્ટિલાએ જેમ પોતાના પતિની આજ્ઞા લઈને દીક્ષા ધારણ કરી હતી તેમજ સુકુમારિકાએ પણ પોતાના પતિ સાગરદત્તને પૂછીને ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી દીક્ષા ધારણ કરી લીધી

(तएण सा सूमालिया अज्जा जाया इरिया जाव गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थ छट्ठट्ठम जाव विहरइ, तएण सा सूमालिया अज्जा अन्नया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે સુકુમારિકા આર્યા થઈ ગઈ, તે ઇર્યા સમિતિ વગેરેનુ પાલન કરવા લાગી અને નવકોટીથી બ્રહ્મચર્ય મહાવ્રતની રક્ષા ... ઘણા

ब्रह्मचारिणी सा बहुभिश्चतुर्थषष्ठाष्टमभक्तैर्यावत्-तप कर्मभिरात्मान भावयन्ती विहरति=आस्तेस्म । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या अन्यदा कदाचिद् यत्रैव गोपालिका आर्यास्तत्रैवोपागच्छति उपागत्य वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्=हे आर्या ! इच्छामि खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती चम्पानगर्या बहिः सुभूमिभागस्योद्यानस्यादूरसामन्ते = नातिदूरे नातिनिकटे षष्ठषष्ठेन-षष्ठभक्तानन्तर पुन षष्ठभक्तेन ' अणिक्खित्तेण ' अनिक्षिप्तेन =अविश्रान्तेन-अन्तररहितेन, तप.कर्मणा ' सुराभिमुही ' सूर्याभिमुखी ' आया वेमाणी ' आतापयन्ती-आतापना कुर्वती विहर्तुम् ' इति । ततस्तदनन्तर ता गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषु.-हे आर्ये ! वय खलु श्रमण्यो

और नौ कोटी ब्रह्मचर्य से महाव्रत की रक्षा करने लगी। अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, भक्त आदि तपस्याओं से अपने आपको भावित भी करने लगी। एक दिन की बात है कि वह सुकुमारिका आर्या साध्वी-जहा गोपालिका आर्या विराज मान थी वहा गई-(उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी चपाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूर सामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्ते णं तवोकम्मे ण सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए) वहा जाकर उसने उन्हें वदना की, नमस्कार किया ! वदना एव नमस्कार कर फिर वह इस-प्रकार कहने लगी-हे भदत ! मे आप से आज्ञा प्राप्त कर चपा नगरी से बाहिर सुभूमिभाग नाम के उद्यान के समीप अतररहित छट्ठ छट्ठ की तपस्या से सूर्याभिमुखी होकर आतापना करना चाहती हूँ। (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालिय एव वयासी-अम्हेण

ચતુર્થ, ષષ્ઠ, અષ્ટમ ભક્ત વગેરે તપસ્યાઓથી પોતાને ભાવિત પણ કરવા લાગી એક દિવસની વાત છે કે તે સુકુમારિકા આર્યા સાધ્વી જ્યા ગોપાલિકા આર્યા વિરાજમાન હતી ત્યા ગઈ (उवागच्छित्ता वदइ, नम सइ, व दित्ता, नमसित्ता एव वयासी, इच्छामि ण अज्जाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी च पाओ बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामते छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेणं तवो कम्मेण सूराभिमुही आयावेमाणि विहरित्तए) ત્યા જઈને તેણે તેમને વદના કરી નમસ્કાર કર્યા વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ભદત ! આપની આજ્ઞા મેળવીને હુ ચપા નગરીના બહાર સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે અતર રહિત છઠ્ઠ છઠ્ઠની તપસ્યા કરતા સૂર્યાભિમુખી થઈને । ઇચ્છુ છુ (तएण ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं

निर्ग्रन्थ्यः ईर्यासमिता=ईर्यासमितियुक्ताः, यावत्-गुप्तब्रह्मचारिण्यः स्मः तस्मात् नो खलु अस्माकं कल्पते- 'बहिया' बहिः-ग्रामाद् यावत् सन्निवेशाद् षष्ठषष्ठेन 'जाव विहरित्तए' यावद् विहर्तुम् ग्रामादेः बहिः मठे साध्वीनां स्थितिः शीलभङ्गादिकारणं भवतीति भावः। किन्तु कल्पते खलु अस्माकम् 'अंतो' अन्तः=अभ्यन्तरे 'उवस्सयस्स' उपाश्रयस्य=स्थानस्य, 'विइपरिक्खित्तस्स' वृतिपरिक्षिप्तस्य=भित्त्यादिना सर्वतः समावृतस्य, 'संघाडिवद्धियाए' सङ्घाटिका प्रतिबद्धायाः=प्रतिबद्धशाटिकायाः सर्वथाऽनुद्घाटितगात्रायाः इत्यर्थः 'समतलपइयाए' समतलपदिकायाः=भूमौ समतलतया स्थापितचरणयुगलायाः आयावित्तए' आतापयितुम्=आतापनां कर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। ततः

अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ बहियागामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से इस प्रकार कहा हे आर्ये! हम लोग निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं। ईर्या आदि समितियों का पालन करती हैं। और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हैं। इस लिये हम लोगों को ग्राम से यावत् सन्निवेश से बाहिर रह कर षष्ठ षष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है। कारण-ग्रामादि के बाहिरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभंग आदि का निमित्त बन जाता है। (कप्पइ ण अम्हं अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए ण समतल पइयाए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एवं वयासी-अम्हेणं अज्जे! समणीओ निग्गंथीओ इरिया सामियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठं जाव विहरित्तए) આ રીતે સુકુમારિકા સાધ્વીનું કથન સાંભળીને ગોપાલિકા આર્યાએ સુકુમારિકા આર્યાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે આર્યે! આપણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ ઈર્યા વગેરે સમિતિઓનું પાલન કરીએ છીએ, અને નવ કોટિથી બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરીએ છીએ એથી આપણે ગામથી યાવત્ સન્નિવેશથી બહાર રહીને ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરવી યાવત્ સૂર્યાભિમુખી થઈને આતપન યોગ ધારણ કરવો કલ્પિત નથી કારણ કે-ગામ વગેરેથી બહારના પ્રદેશમાં સાધ્વીઓએ રહેવું શીલભંગ વિગેરેનું નિમિત્ત થઈ જાય છે (कप्पइ ण अम्हं अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए ण समतलपइयाए आयावित्तए) આપણને તો એ જ કલ્પિત છે કે આપણે ભીંત, [illegible] ચોમેર

खलु सा सुकुमारिका गोपालिकानामार्याणामेतमर्थं नो श्रद्दधाति 'नो पत्तियइ' नो प्रत्येति=नो विश्वसिति, 'नो रोएइ' नो रोचते, एतमर्थम् अश्रद्दधाना अप्रतियन्ती, अरोचमाना सति सुभूमिभागस्य उद्यानस्य अदूरसामन्ते षष्ठ-षष्ठेन यावत्-तपःकर्मणा सूर्याभिमुखी भूत्वा-आतापना कुर्वती विहरति ॥ सू० १३ ॥

मूलम्-तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ, नरवइ दिण्णवियारा अम्मापिइनिययनिप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया नाणाविहअविणयप्पहाणा अड्ढा जाव अपरिभूया, तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था सुकुमाला जहा अंडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स

कि जो भित्ति आदि से सब तरफ से परिक्षिप्त है भीतर ही अपने शरीर को शाटिका से अच्छी तरह संवृत्त करती हुई और भूमि पर दोनों चरणों को बराबर स्थापित कर आतापना ले (तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ, नो पत्तियइ नो रोएइ एयमट्ठं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेण जाव विहरइ) इस गोपालिका आर्या के कथन ऊपर उस सुकुमारिका आर्या को श्रद्धा नहीं जमी उस पर उसे विश्वास नहीं आया, वह उसे रुचा नहीं। इस तरह वह उसे अश्रद्धा अप्रतीति और अरुचि का विषय बनाती हुई सुभूमिभाग नामक उद्यान के पास षष्ठ षष्ठ की तपस्या करती हुई वह सूर्याभिमुख होकर आतापना करने लगी ॥ सू० १३ ॥

પરિક્ષિપ્ત ઉપાશ્રયની અંદરજ પોતાના શરીરને શાટિકા-સાડીથી સારી રીતે ઢાંકીને અને ભૂમિ ઉપર બંને ચરણોને બરાબર સ્થાપિત કરીને આતાપના લઈએ (तएणं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठं अ० ३ सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठं छट्ठेण जाव विहरइ) ગોપાલિકા આર્યાના કથન ઉપર સુકુમાર આર્યાને શ્રદ્ધા થઈ નહિ, તેના ઉપર તેને વિશ્વાસ થયો નહિ તે તેને ગમ્યુ પણ નહિ આ રીતે તે તે કથન પ્રત્યે અશ્રદ્ધા, અપ્રતીતિ અને અરુચિ ધરાવતી સુભૂમિભાગ નામના ઉદ્યાનની પાસે ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરતી સૂર્યાભિમુખી થઈને આતાપના કરવા લાગી ॥ સૂત્ર ૧૩ ॥

निर्ग्रन्थ्यः ईर्यासमिता=ईर्यासमितियुक्ताः, यावत्-गुप्तब्रह्मचारिण्यः स्मः, तस्मात् नो खलु अस्माकं कल्पते-'बहिया' बहिः-ग्रामाद् यावत् सन्निवेशाद् षष्ठषष्ठेन 'जाव विहरित्तए' यावद् विहर्तुम् ग्रामादेः बहिः मध्ये साध्वीनां स्थितिः शीलभङ्गादिकारणं भवतीति भावः। किन्तु कल्पते खलु अस्माकम् 'अंतो' अन्तः=अभ्यन्तरे 'उवस्सयस्स' उपाश्रयस्य=वसतेः, किम्भूतस्य 'विइपरिक्खित्तस्स' वृतिपरिक्षिप्तस्य=भित्त्यादिना सर्वतः समावृतस्य, 'संघाडिबद्धियाए' संघाटिका प्रतिबद्धाया=प्रतिबद्धसंघाटिकायाः सर्वथाऽऽवृतशरीरगात्राया एव 'समतलपइयाए' समतलपदिकाया=भूमौ समतलतया स्थापितचरणयुगलाया 'आयावित्तए' आतापयितुम्=आतापना कर्तुं कल्पते इति पूर्वेण सम्बन्धः। ततः

अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ,नो खलु अम्ह कप्पइ बहियागामस्स जाव सण्णिवेसस्स वा छट्ठ० जाव विहरित्तए) इस प्रकार सुकुमारिका साध्वी का कथन सुनकर गोपालिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से इस प्रकार कहा हे आर्ये ! हम लोग निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं । ईर्या आदि समितियों का पालन करती हैं । और नौ कोटि से ब्रह्मचर्य की रक्षा करती हैं। इस लिये हम लोगों को ग्राम से यावत् सन्निवेश से बाहिर रह कर षष्ठ षष्ठ की तपस्या करना यावत् सूर्याभिमुखी होकर आतापन योग धारण करना कल्पित नहीं है । कारण-ग्रामादि के बाहिरी प्रदेश में साध्वियों का रहना शीलभंग आदि का निमित्त बन जाता है । (कप्पइ ण अम्ह अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए ण समतल पइयाए आयावित्तए) हमें तो यही कल्पित है कि हम लोग उपाश्रय के

एवं वयासी–अम्हेणं अज्जे ! समणीओ निग्गंथीओ ईरिया समियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ, नो खलु अम्ह कप्पइ बहिया गामस्स जाव सण्णिवसस्स वा छट्ठ० जाव विहरित्तए) આ રીતે સુકુમારિકા સાધ્વીનું કથન સાંભળીને ગોપાલિકા આર્યાએ સુકુમારિકા આર્યાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે આર્યે ! આપણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ છીએ ઈર્યા વગેરે સમિતિઓનું પાલન કરીએ છીએ, અને નવ કોટિથી બ્રહ્મચર્યનું રક્ષણ કરીએ છીએ એથી આપણે ગામથી યાવત્ સન્નિવેશથી બહાર રહીને ષષ્ઠ ષષ્ઠની તપસ્યા કરવી યાવત્ સૂર્યાભિમુખી થઈને આતપન યોગ ધારણ કરવો કલ્પિત નથી કારણ કે–ગામ વગેરેથી બહારના પ્રદેશમાં સાધ્વીઓએ રહેવું શીલભંગ વિગેરેનું નિમિત્ત થઈ જાય છે (कप्पइ ण अम्ह अंतो उवस्सयस्स विइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए ण समतलपइयाए आयावित्तए) આપણને તો એ જ કલ્પિત છે કે આપણે ભીંત [illegible] ચોમેર

वेश्याविहारकृतनिकेता – वेश्यागृहकृतनिवासा, तथा–' नाणाविहअविणयप्पहाणा ' नानाविधाऽविनयप्रधाना, तथा–आढ्या=धनधान्यसम्पन्ना, यावद् अपरिभूता=परैरनभिभूता, आसीत् । तत्र खलु चम्पाया नगर्यां देवदत्ता नाम 'गणिया' गणिका=वेश्या, आसीत्, सा किम्भूतेत्याह–सुकुमारपाणिपादा, चतुष्षष्टिकलाविशारदा ' जहा अडणाए ' यथा अण्डज्ञाते=अण्डनामके तृतीये ज्ञाताध्ययने यथाऽस्यावर्णनं तद्वदिह बोध्यम् । ततः खलु तस्या ललिताया गोष्ठ्या अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये, पञ्च ' गोट्ठिल्लगपुरिसा ' गोष्ठिकपुरुषा=मण्डलीपुरुषाः समानवयस्का इत्यर्थः देवदत्तया गणिकया सार्धं सुभूमिभागस्योद्यानस्योद्यानश्रियम्=उद्यानशोभां प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । तत्र खलु एको गोष्ठिकपुरुषो देवदत्ता

नाणाविह अविणयप्पहाणा, अड्ढा जाव अपरिभूया) इसने अपनी सेवासे राजाको प्रसन्न कर रखा था–सो उसकी कृपा से यह बिलकुल स्वच्छंद थे। अपने माता पिता आदि कुटुम्बी जनों की यह परवाह नहीं किया करते थे–उनको इन पुरुषों से बिलकुल भय नहीं था। वेश्याओं के घर में पडे रहना–यही इनका एक काम था। अनेक प्रकार के अविनय प्रधान रूप अनाचारों का सेवन करना यही उनका काम था। पैसे की–द्रव्यकी उनके– पास कमी नहीं थी। कोई इनको कुछ कह सुन नहीं सकता था। (तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नाम गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच ' गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति) उसी चंपा नगरी में

जाव अपरिभूया) ते मंडळीએ પોતાની સેવાથી રાજાને પ્રસન્ન કરેલો હતો. તેમની કૃપાથી તે મંડળી એકદમ સ્વચ્છંદપણું આચરતી હતી પોતાના માતા પિતા વગેરે કુટુંબી લોકોની પણ તેઓ દરકાર કરતા ન હતા તેઓને આ વડીલોની કોઈપણ જાતની બીક હતી નહિ, વેશ્યાઓના ઘેર પડયા રહેવું ફક્ત એજ એમનું એક માત્ર કામ હતું અનેક પ્રકારના અવિનયપૂર્ણ આચરણો કરવા એજ તેઓના જીવનનું મુખ્ય કામ હતું ધનની તેઓની પાસે ખોટ હતી નહિ કોઈપણ નાગરિકની એટલી પણ તાકાત નહોતી કે તેઓ તેમને કંઈપણ કહે! (तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नाम गणिया होत्था, सुकुमाला, जहा अडणाए, तएणं तीसे ललियाए गोट्ठीए अन्नया पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति) तेज ચંપા

उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरइ एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ एगे पुप्फपूरयं रएइ एगे पाए रएइ एगे चामरुक्खेवं करेइ तएणं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो णं इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ, तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियमबंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि त्तिकट्टु नियाणं करेइ करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ ॥सू० १४॥

टीका—'तत्थ णं चंपाए' इत्यादि। तत्र खलु चम्पायां नगर्यां ललिता नाम्नी 'गोट्ठी' गोष्ठी=मण्डली परिवसति किं भूता सा गोष्ठीत्याह-'नरवइदिण्णवियारा' नरपतिदत्तविचारा नरपतिना दत्तो विचारः समतिर्यस्यै सा तथा-सेवादिना सन्तुष्टान्नरपतेर्लब्धस्वतन्त्रता, तथा - 'अम्मापिइनिययनिप्पिवासा' अम्बापितृनिजकनि पिपासा=मातापित्रादि निरपेक्षा, 'वेसविहारकयनिकेया'

'तत्थ णं चंपाए ललिया नाम' इत्यादि।

टीकार्थ-(तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ) उस चंपानगरीमें 'ललिता' इस नामकी गोष्ठी-मंडली-रहती थी। (नरवइदिण्णवियारा, अम्मापिइ नियय निप्पिवासा वेसविहारकयनिकेया,

'तत्थण चंपाए ललिया नाम' इत्यादि—

टीकार्थ-(तत्थण चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ) ते चंपा नगरीमा 'ललिता' नामे गोष्ठी 'मंडळी रहेती हती (नरवइ, दिण्णवियारा अम्मापिइ निययनिप्पिवासा, वेसविहारकयनिकेया, नाणाविहअविणयप्पहाणा, अड्ढा

पुरुषैः सार्धमुदारान्=श्रेष्ठान् भोगान् भुञ्जाना-कुर्वती पश्यति, ततस्तस्याः सुकुमारिकाया अयमेतद्रूप=वक्ष्यमाणस्वरूपः संकल्प=विचारः समुदपद्यत-अहो ! खलु इयं स्त्री पुरा=पूर्वभवे 'पोराणाण' पुराणानाम्-पुरातनानां गचितानां कर्मणां पुण्यकर्मणां यावत्=फलवृत्तिविशेष मत्यनुभवन्ती विहरति तत्=तस्मात् कारणाद् यदि खलु कोऽप्यस्य सुचरितस्य तपोनियमब्रह्मचर्यवासस्य कल्याण=इष्टः शुभरूप, फलवृत्तिविशेषः अस्ति, 'तो' तर्हि खलु अहमपि 'आगामिस्सेण' आगामिना भवग्रहणेन इमान् एतद्रूपान् उदारान् भोगान् यावद् भुञ्जाना ' विह-

उस पर चमर ढोरे। इस तरह से उस सुकुमारिका आर्या ने उन मंडली के पांच पुरुषों के साथ उस देवदत्ता गणिका को उदार मनुष्य भव संबन्धी काम भोगों को भोगते हुए देखा। (तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो ण इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ) तो उस सुकुमारिका आर्या को इस प्रकार का यह विचार उत्पन्न हुआ-अहो ! इस स्त्री ने पूर्वभव में जो पुण्य कर्म कमाये हैं उन्हीं पुराने पुण्य कर्मों के यावत् फलवृत्ति विशेष को यह भोग रही है। (तं जइणं केइ इमस्स सुचरियस्स तव नियम बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि, त्तिकट्टु नियाणं करेइ, करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ) इसलिये यदि इन पालित तप, नियम एवं ब्रह्मचर्य व्रतों का कोई शुभरूप फलवृत्ति विशेष है तो मैं भी आगामी भव में इसी तरह के उदार मनुष्य भव सम्बन्धी काम भोगों

દેખ્યા. આ રીતે તે સુકુમારિકા આર્યાએ મંડળીના પાંચે માણસોની સાથે તે દેવદત્તા ગણિકાને ઉદાર મનુષ્યભવના કામભોગો ભોગવતા જોયા (तएणं तीसे इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था-अहो ण इमा इत्थिया पुरा पोराणाणं कम्माणं जाव विहरइ) ત્યારે તે સુકુમાર આર્યાને આ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો કે અહો ! આ સ્ત્રીએ પૂર્વભવમાં જે પુણ્યકર્મ કર્યાં છે તેમને લીધેજ એટલે કે તે જ પૂર્વભવના પુણ્ય-કર્મોના યાવત્ ફળવિશેષને આ ભોગવી રહી છે (तं जइणं केइ इमस्स सुचरियस्स तव नियम बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं जाव विहरिज्जामि, त्ति कट्टु नियाणं करेइ, करित्ता आयावणभूमिओ पच्चोरुहइ) આ બધા મારા વડે આચરવામાં આવેલ તપ, નિયમ અને બ્રહ્મચર્ય વ્રતોનું શુભ ફળ છે તો હું પણ આવતા ભવમાં આ જાતના જ ઉદાર મનુષ્ય સંબંધી કામભોગોને ભોગવું આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેણે નિદાન

गणिकामुत्सङ्गे धरति एक 'पिट्ठओ' पृष्ठतः 'आयवत्त' आतपत्रम् धरति, एकः 'पुप्फपूरयं' पुष्पपूरक-पुष्पाणां रचनाविशेष 'रएइ' रचयति, एकः पादौ-अलक्तकादिना रञ्जयति। एकः 'चामरुक्खेवं' चामरं-चामरवीजनं करोति। ततः खलु सा सुकुमालिका आर्या देवदत्ता गणिका तैः पञ्चभिर्गोष्ठिक

देवदत्ता नाम की एक गणिका रहती थी। वह चौंसठ कलाओं में निष्णात थी। इसके हाथ पैर आदि सब ही अवयव बहुत ही अधिक सुकुमार थे। मयूर अंड नाम के तृतीय ज्ञाताध्ययन में उसका जैसा वर्णन किया गया है-वैसा ही वर्णन इसका यहां जानना चाहिये। एक समय की बात है कि गोष्ठी के ५, पुरुष कि जो समान वयवाले थे देवदत्ता गणिका के साथ उस सुभूमिभाग उद्यान में आये-और वहां की उद्यान की शोभा का निरीक्षण करते हुए इधर-उधर घूमने लगे-(तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लग पुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेवं करेइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पचहिं गोट्ठिल्लगपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ) वहां एक उस मंडली के पुरुष ने देवदत्ता गणिका को अपनी गोदी मे बैठाया, एक दूसरे-मंडली के पुरुष ने उसके पीछे से उसके ऊपर छत्ता ताना, एक तीसरे पुरुषने उसके निमित्त पुष्पों की रचना रची, चौथे पुरुष ने उसके दोनों पैरों में महावर लगाया पाचवें ने

નગરીમા દેવદત્તા નામે એક ગણિકા રહેતી હતી તે ૬૪ કળાઓમા નિપુણ હતી, તેના હાથ-પગ વગેરે બધા અંગો અતીવ સુકોમળ હતા મયૂરી અંડ નામના ત્રીજા અધ્યયનમા દેવદત્તાનુ જેવુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેવુ જ વર્ણન અહીં પણ જાણી લેવુ જોઈએ એક દિવસની વાત છે કે ગોષ્ઠી-મંડળીના પાંચ માણસો કે જેઓ સરખી ઉંમરવાળા હતા-દેવદત્તા ગણિકાની સાથે તે સુભૂમિભાગ ઉદ્યાનમા ગયા અને ત્યાંની ઉદ્યાન શોભાનુ નિરીક્ષણ કરતા આમ તેમ ફરવા લાગ્યા (तत्थणं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरयं रएइ, एगे पाए रएइ, एगे चामरुक्खेवं करेइ तएणं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी पासइ) ત્યાં તે મંડળીના એક માણસે દેવદત્તા ગણિકાને પોતાના ખોળામા બેસાડી બીજા માણસે તેની ઉપર છત્રી તાણી, ત્રીજા માણસે તેના માટે પુષ્પોની રચના કરી, ચોથા માણસે તેના પગમા લાલ રંગ લગાવ્યો, પાંચમા માણસે તેના ઉપર ચામર

माणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं अहं अगारवासमज्झे वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्विं च णं ममं समणीओ आढायंति२ इयाणिं नो आढंति२ तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ अद्धमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि । ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या 'सरीर

'तएणं सा सूमालिया अज्जा' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएणं) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर बउसा

'तएणं सा सूमालिया अज्जा' इत्यादि—

–(तएणं) त्यारपछी (सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया चावि

रिज्जामिति कृत्वा ' ' विहरामि ' इति कृत्वा ' निदाण ' निदानं करोति, कृत्वा आतापनभूमितः प्रत्यवरोहति-आतापनां परित्यजति ॥ सू० १४॥

मूलम्-तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं२ हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतराइं धोवेइ कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे ! सरीरबाउसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेसि जाव चेएसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तएणं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ, तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीए सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहि हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

---

को भोगूं। ऐसा विचार कर उसने निदान बंध किया और करके फिर वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४॥

બંધ કર્યો અને કરીને તે આતાપન ભૂમિથી આતાપના લઈને પોતાના સ્થાને આવી ગઈ ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

माणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था, जयाणं अहं अगारवासमज्झे वसामि तया णं अहं अप्पवसा, जया णं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तया णं अहं परवसा, पुव्वि च णं मम समणीओ आढायंति२ इयाणि नो आढंति२ त सेयं खलु मम कल्लं पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसपज्जित्ताणं विहरित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्कं उवस्सयं उवसपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ संसत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्ण-परियागं पाउणइ अद्धमासियाए संलेहणाए तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा, तत्थेगइयाणं देवीणं नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थ णं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ सू० १५ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि। ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या 'सरीर

'तएण सा सूमालिया अज्जा' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तएण) इस के बाद (सा सूमालियाए अज्जा सरीर बउसा

'तएण सा सूमालिया अज्जा' इत्यादि—

–(तएण) त्यारपछी (सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि

रिज्जामिति कृत्वा ' ' विहरामि ' इति कृत्वा ' नियाणं ' निदानं करोति, कृत्वा आतापनभूमितः प्रत्यवरोहति आतापना परित्यजति ॥ सू० १४॥

मूलम्–तएणं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था, अभिक्खणं अभिक्खणं२ हत्थे धोवेइ पाए धोवेइ सीसं धोवेइ मुहं धोवेइ थणंतराइं धोवेइ कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा३ चेइए, तएणं ताओ गोवालियाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे! सरीरबाउसिया अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेसि जाव चेएसि, तं तुमं णं देवाणुप्पिए! तस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि, तएणं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परिजाणइ अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी विहरइ, तएणं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं अभिक्खणं अभिहीलंति जाव परिभवंति, अभिक्खणं अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति, तएणं तीए सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज-

को भोगूं। ऐसा विचार कर उसने निदान बंध किया और करके फिर वह आतापन भूमि से आतापना लेकर अपने स्थान आगई ॥ सू० १४॥

બંધ કર્યો અને કરીને તે આતાપન ભૂમિથી આતાપના લઇને પોતાના સ્થાને આવી ગઈ ॥ સૂત્ર ૧૪ ॥

ततः खलु गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामेवमवादिषुः एवं खलु हे देवानुप्रिये! आर्ये! वयं श्रमण्यः—तपस्विन्यः निर्ग्रन्थ्यः बाह्याभ्यन्तरग्रन्थिरहिताः ईर्यासमिता यावद् गुप्तब्रह्मचर्यधारिण्यः स्मः, नो खलु कल्पतेऽस्माकं सरीरवाउसियाए' शरीरबकुशिका 'होत्तए' भवितुम् इति त्वं च खलु हे आर्ये! शरीरबाकुशिका जाता अभी०ण=पुनः पुनरतिशयेन हस्तौ धावसि =प्रक्षालयसि, यावत्—स्थानं वा शय्यां वा स्वाध्यायभूमिं वा जलेनाभ्युक्ष्य 'चेएसि' चेतयसि स्नानादिकं करोषीत्यर्थः। तत्=तस्मात् त्वं खलु हे देवानुप्रिये! तत् स्थानम् 'आलो०हि' आलोचय, स्वातिचारं प्रकाशयेत्यर्थः। यावत् 'पडिवज्जाहि' प्रतिपद्यस्व=प्रायश्चित्तं स्वीकुरु' इत्यर्थः। ततः खलु सा सुकु-

लिका आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या से कहा—(एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेर धारिणिओ, नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे सरीरबाउसिया, अभिक्खणं २ हत्थे धोवेसि, जाव चेएसि) हे देवानुप्रिये! हम आर्याएँ निर्ग्रन्थ श्रमणियां हैं। ईर्या आदि पांच समितियोंका पालन करती हैं। नौकोटि ब्रह्मचर्य सहितमहाव्रतको पालन करती हैं। अतः हम लोगों को अपने शरीर के संस्कार करने में परायण बनना कल्पित नहीं हैं। हे आर्ये! तुम शरीर संस्कार करने में परायण बन चुकी हो। बार २ तुम हाथों को धोती हो यावत् स्थान को शय्या को, और स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानीसे धोकर नियत करती हो (तं तुमं णं देवाणुप्पिए! तस्स ठाणस्स आलोएहिं, जाव पडिवज्जाहि) इस लिये हे देवानुप्रिये! तुम उस स्थान की आलोचना करो—अपने अतिचारों को प्रकाशित करो यावत् उनका प्रायश्चित्त लो।

सुकुमारिका आर्याने आ प्रमाणे कह्युं के—(एवं खलु देवाणुप्पिया! अज्जे अम्हे समणीओ निग्गंथीओ ईरियासमियाओ जाव बंभचेरधारिणिओ नो खलु कप्पइ अम्हे सरीरबाउसियाए होत्तए, तुमं च णं अज्जे सरीरबाउसिया, अभिक्खणं २ हत्थे धोवेसि जाव चेएसि) हे देवानुप्रिये! अमे आर्याओ निर्ग्रंथ श्रमणीओ छीओ, ईर्या वगेरे पांच समितिओनुं अमे पालन करीओ छीओ, नव कोटिवाळा ब्रह्मचर्य महाव्रत धारण करीओ छीओ ओवा पोताना शरीरनो संस्कार करवो ओ आपणा माटे योग्य गणाय नहि हे आर्ये! तमे शरीरना संस्कारमां परायण बनी चूकी छो. तमे वारंवार हाथोने धुओ छो यावत् स्थानने, शय्याने अने स्वाध्यायभूमिने पहेलेथी ज पाणीथी धोईने नक्की करी लो छो (तं तुमं णं देवाणुप्पिए! तस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि) ओवा

धउत्ता ' शरीरवकुशा शरीरसत्कारपरायणा जाता चाप्यभवत्, अभीक्ष्णं २ पुनः पुनः हस्तौ ' धावेइ ' धावति=प्रक्षालयति, पादौ धावति ' सीसं ' शीर्षं=शिरः धावति, मुखं धावति, ' थणंतराइं ' स्तनान्तराणि धावति ' कक्खंतराइं ' कक्षान्तराणि धावति, ' गोज्झंतराइं ' गुह्यान्तराणि गुह्यप्रदेशं धावति, यत्रयत्र ' ठाणं वा ' स्थानम्-उपवेशनार्थं स्थानं ' सेज्जं वा ' शय्यां वा ' निसीहियं वा ' नैषेधिकीं स्वाध्यायभूमिं वा ' चेएइ ' चेतयति-करोति, तत्रापि च खलु पूर्वमेवोदकेन ' अब्भुक्खइत्ता ' अभ्युक्ष्य=अभिषिच्य, ततः पश्चात् ' ठाणं वा ' स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा चेएइ ' चेतयति-करोति ।

जाया यावि होत्था-अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गोज्झंतराइं धोवेइ) वह सुकुमारिका आर्या शरीर सस्कार करने में भी तत्पर बन गई। बार २ वह हाथ धोने लगी, पैर धोने लगी, शिर धोने लगी, मुख धोने लगी, स्तनान्तरों को धोने लगी, कक्षाओं को धोने लगी और गुह्य प्रदेश को धोने लगी। (जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा ३ चेएइ, तएणं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी) इसी तरह वह जहां अपना बैठने के लिये स्थान बनाती, शय्या-पाथरती, स्वाध्याय स्थान करती, वहां भी वह पहिले से ही उसे जल से सींच देती-तब जाकर वहां वह अपना स्थान, शय्या एवं स्वाध्याय भूमि नियत करती। इस प्रकार की परिस्थिति देख कर गोवा

होत्था-अभिक्खणं २ हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ गोज्झंतराइं धोवेइ) તે સુકુમારિકા આર્યા શરીર-સંસ્કારના કામમાં પરોવાઈ ગઈ વારવાર હાથ ધોવા લાગી, પગ ધોવા લાગી, માથું ધોવા લાગી, મુખ ધોવા લાગી,સ્તનોના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી,બગલોને ધોવા લાગી, અને ગુહ્ય સ્થાનોને ધોવા લાગી (जत्थणं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ तत्थवि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खइत्ता तओ पच्छा ठाणं वा ३ चेएइ तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी) આ પ્રમાણે જ તે જ્યાં પોતાનું બેસવાનું સ્થાન નક્કી કરતી, કે પથરી પાથરતી અથવા તો સ્વાધ્યાય માટે બેસવાનું સ્થાન નક્કી કરતી ત્યાં પહેલેથી જ તે સ્થાનને પાણી છાંટતી હતી અને ત્યારપછી તે ત્યાં પોતાનું સ્થાન-શય્યા અને સ્વાધ્યાય સ્થાન નક્કી કરતી હતી આ જાતની પરિસ્થિતિ જોઈને ગોપાલિકા તે

भूतः, यदा=यावत् कालं खलु अहमगारवासमध्ये वसामि, तदा=तावत् कालं खल्वहं 'अप्पवसा' आत्मवशा स्वाधीना आसम्, यदा खल्वहं मुण्डा भूत्वा प्रव्रजिता तदा खल्वहं परवशा पराधीना जाता। 'पुव्विं' पुरा पूर्वस्मिन् काले च खलु 'मम' मां श्रमण्यः 'आढायंति' २ आद्रियन्त, तथा परिजानन्ति, इदानीं नो आद्रियन्ते नो परिजानन्ति, 'तं' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुर्भूत प्रभातया रजन्या यावज्ज्वलति सूर्ये अभ्युदते गोपालिकानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रम्य 'पाडिएक' पार्थक्य=पार्थक्याश्रय पृथग्भूतम् अन्यमित्यर्थः 'उव-

---

यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ-(जयाणं अम्हं आगारवासमज्झे वसामि तयाणं अहं अप्पवसा जयाणं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तयाणं अहं परवसा, पुव्विं च णं मम समणीओ आढायंति, इयाणिं णो आढंति २ तं सेयं खलु मम कल्लं पाउ०गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) जब तक मे घर में रही तब तक स्वाधीन रही-और अब जब से मुंडित होकर प्रव्रजित हुई हूँ तब से पराधीन बन रही हूँ। पहिले ये श्रमणियां मेरा आदर करती थी-मेरी बात मानती थी परन्तु अबतो कोई भी न मेरा आदर करती है-और न मेरी बात ही मानती है। इस लिये मुझे अब यही उचित होगा कि मैं दूसरे दिन जब प्रातः काल होने पर सूर्य प्रकाश से चमकने लगे-तब में गोपालिका आर्याके पास से निकल कर किसी दूसरे भिन्न उपा

રોક ટોક કરી ત્યારે તેને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સંકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે (जयाणं अम्हं आगारवासमज्झे वसामि तयाणं अहं अप्पवसा जयाणं अहं मुंडे भवित्ता पव्वइया तयाणं अहं परवसा पुव्विं च णं मम समणीओ आढायंति, इयाणिं णो आढंति २ तं सेयं खलु मम पाउ० गोवालियाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ) જ્યાં સુધી હું ઘરમાં રહી ત્યાં સુધી સ્વાધીન રહી પણ જ્યારથી મુંડિત થઈને પ્રવ્રજીત થઇ છું ત્યારથી પરાધીન થઈ ગઈ છું પહેલાં આ શ્રમણીઓ મારો આદર કરતી હતી, મારી વાત માનતી હતી પણ અત્યારે તો કોઈ પણ મારો આદર નથી કરતું અને મારી વાત પણ માનતું નથી તેથી મારે માટે એજ ઉચિત છે કે બીજે દિવસે સવારે સૂર્ય ઉદય પામતાં જ હું ગોપાલિકા આર્યાની પાસેથી નીકળીને કોઇ બીજા ઉપાશ્રયે જતી રહું — આતનો તેણે વિચાર કર્યો (संपेहिचा) વિચાર કરીને તે (कल्लं पा०

मारिका आर्या गोपालिकानामार्यागामेनमर्थं 'नो आढाइ' नाद्रियते, नो परिजानीते तद्वचने ध्यान न ददाति। अनाद्रियमाणा=अनादरं कुर्वती, अपरि जानाना=ध्यानमददाना विहरति=आस्ते। ततः खलु ताः गोपालिका आर्याः सुकुमारिकामार्यामभीक्ष्णं=पुनः पुनरभिहीलन्ति निन्दन्ति निन्दन्ति यावत् परि भवन्ति। अभीक्ष्णं=पुनः पुनः, 'एयमट्ठं' एतमर्थम् उक्तमर्थं शरीरशोभाकरण जलप्रक्षेपादिकं निवारयन्ति=प्रतिषेधयन्ति। ततः खलु 'तीए' तस्याः सुकुमारि कायाः श्रमणीभिर्निर्ग्रन्थीभिः हील्यमानाया यावद् वार्यमाणाया अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणस्वरूप आध्यात्मिको यावन्मनोगतः सङ्कल्पो-विचारःसमुदपद्यत=प्रादु

(तएण सा सूमालिया गोवालियाण अज्जाण एयमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) सुकुमारिका आर्या ने गोपालिका आर्या के इस कथन रूप अर्थ को आदर की दृष्टि से नहीं देखा, उनके वचनों पर उसने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। इस तरह उनके वचनो का अनादर और उन पर ध्यान नहीं देती हुई वह रहने लगी (तएणं ताओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज अभिक्खण २ एयमट्ठ निवारेंति, तएण तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गथीहिं हीलि ज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जि त्था) इस के पश्चात् उन गोपालि का आर्या ने उस सुकुमारिका आर्या की बार २ अवहेलना की, उस पर वे गुस्सा भी हुई उसकी निंदा भी की यावत् उसका तिरस्कार भी किया। बार २ उसे शरीर की शोभा करने से और जल का सिंचन करने से रोका। तब उसे इस प्रकार का

હે દેવાનુપ્રિયે! તમે તે સ્થાનની આલોચના કરો-પોતાના અતિચારને પ્રકા શિત કરો યાવત્ તેના માટે પ્રાયશ્ચિત્ત કરો (तएण सा सुमालिया गोवालियाण अज्जाण एयमट्ठ नो आढाइ, नो परिजाणाइ, अणाढायमाणी, अपरिजाणमाणी, विहरइ) સુકુમારિકા આર્યાએ ગોવાલિકા આર્યાના આ કથનરૂપ અર્થને આદરની દૃષ્ટિથી જોયો નહિ, તેમના વચનો ઉપર તેણે કંઈ પણ વિચાર કર્યો નહિ આ રીતે તેમના વચનોનો અનાદર અને તે પ્રત્યે બેદરકાર થઈને તે પોતાનો વખત પસાર કરવા લાગી (तएण ताओ अज्जाओ सूमालिय अज्ज अभिक्खण २ एयमट्ठ निवारेंति, तएण तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गथीहिं हीलिज्जमा णीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) ત્યારપછી તે ગોપાલિકા આર્યાએ તે સુકુમારિકા આર્યાની વારવાર અવહેલના કરી, તેની તરફ તેમણે ગુસ્સો પણ બતાવ્યો, તેની નિંદા કરી યાવત્ તેનો તિરસ્કાર પણ કર્યો તેને વારવાર શરીરને શોભાવવા બદલ તેમજ જળનું સિં- બદલ

स्रय ' उपाश्रयम् उपसंपद्य विहर्तुमितिकृत्वा एवं संप्रेक्ष्य अन्ये द्युः प्रादुर्भूतप्रभातायां रजन्यां यावज्ज्वलति सूर्ये उदिते सति गोपालिकानामार्याणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पाडिएक्कं ' मार्थक्य-पृथग्भूतमन्यमुपाश्रयमुपसंपद्य खलु विहरति-आस्ते स्म।

ततः खलु सा सुकुमारिका आर्या ' अणोहट्टिया ' अनपघट्टिका अपघारक-रहिता-उच्छृङ्खला अविनयशीलेति यावत् ' अनिवारिया ' अनिवार्या दुर्निवारा, ' सच्छंदमई ' स्वच्छन्दमतिः-चारित्रधर्मानुरोधरहितमात्रा, अभीक्ष्णं-पुनः पुनः हस्तौ धावति=प्रक्षालयति यावत्=स्थानं वा शय्यां वा नैषेधिकीं वा जलेनाभ्युक्ष्य चेतयति=स्थानादिकं करोतीत्यर्थः। तत्रापि च खलु पार्श्वस्था, पार्श्वस्थविहारिणी,

---

श्रय में चली जाऊँ इस प्रकार का उसने विचार किया (संपेहित्ता) ऐसा विचार करके (कल्लं पा० गोवालियाणं अज्जाणं) दूसरे ही दिन प्रातः काल जब सूर्योदय हो गया-तब वह गोपालिका आर्या के (अंतियाओ) पास से (पडिनिक्खमित्ता) निकल कर-(पडिएक्क) भिन्न, दूसरे (उवस्सय) उपाश्रय को (उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) प्राप्तकर, वहां रहने लगी-अर्थात् दूसरे उपाश्रय में चली आई। (तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ) यहां वह सुकुमारिका आर्या बिना, किसी रोक टोक के स्वच्छंद बनकर रहने लगगई। वहां उसे-कोई, रोकने वाला रहा नहीं-सो जो मन में आया वह करने लगगई-इस, तरह वह चारित्र धर्म के भाव से रहित बन गई। बार २ अपने हाथों को धोती यावत् स्थान, शय्या, और स्वाध्याय की भूमि को धोकर वहां

गोवालियाणं अज्जाणं) બીજે દિવસે સવારે જ્યારે સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે તે ગોપાલિકા આર્યાની (अंतियाओ) પાસેથી (पडिनिक्खमित्ता) નીકળીને (पडिएक्क) બીજા (उवस्सय) ઉપાશ્રયને (उवसंपज्जित्ताणं विहरइ) મેળવીને ત્યાં રહેવા લાગી, એટલે કે બીજા ઉપાશ્રયમાં જતી રહી (तएणं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं हत्थे धोवेइ जाव चेएइ) ત્યાં તે સુકુમારિકા આર્યા કોઈપણ જાતની રોક ટોક વગર સ્વચ્છંતાપૂર્વક રહેવા લાગી ત્યાં તેને કોઈ રોક-ટોક કરનાર હતું નહિ એટલે જે પ્રમાણે તેની ઇચ્છા થતી તે પ્રમાણે જ તે આચરતી હતી આ રીતે તે ચારિત્ર ધર્મના ભાવથી રહિત બની ગઈ વારવાર તે પોતાના હાથોને ધોતી હતી યાવત્ સ્થાન, પથારી અને સ્વાધ્યાયના સ્થાનને ધોઈને ત્યાં પોતાનું સ્થાન નક્કી કરતી હતી

अवसन्ना, अवसन्नविहारिणी, कुशीला कुशीलविहारिणी, ससक्ता, ससक्तविहारिणी, बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयति, पालयित्वा अर्धमासिक्या संलेखनया-तस्य स्थानस्याऽनालोचिता अप्रतिक्रान्ता कालमासे कालं कृत्वा, ईशाने कल्पेऽन्यतमस्मिन् विमाने माथुर्यादि वाचनासमये आचार्याणां विमानसंख्याया विस्मरणेन निश्चयाभावादन्यतमस्मिन्नित्युक्तम्, देवगणिकतया उपपन्ना। तत्रैकैकासां देवीनां नवपल्योपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ सू० १५ ॥

अपना स्थान नियत करती। इस प्रकार (तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी, ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला२ ससत्ता२ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहां उस सुकुमारिका ने पार्श्वस्था पार्श्वस्थ विहारिणी, अवसन्ना, अवसन्न विहारिणी,कुशीला,कुशील विहारिणी, ससक्ता, ससक्त विहारिणी बनकर अनेक वर्षो तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया (पाउणित्ता अद्धमासियाए) पालन करके वह अर्धमास की संलेखना धारण कर (कालमासे) अपनी मृत्यु के अवसर (काल किच्चा) पर मरी-सो मरकर (अणालोइय अपडिक्कंता) अपने पापों की अनालोचना करने से वह प्रतिक्रान्त नहीं बन सकने के कारण (ईसाणे कप्पे) ईशानकल्प में (अण्णयरंसि विमाणंसि) किसी एक विमान में (देवगणियत्ताए उववण्णा) देवगणिका के रूप में उत्पन्न हुई। (तत्थेगइयाणं देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिइ पण्णत्ता) वहां कितनिक देवियों

આ રીતે (तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीलाऽससत्ता २ बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) ત્યાં તે સુકુમારિકાએ પાર્શ્વસ્થા, પાર્શ્વસ્થ વિહારિણી, અવસન્ના, અવસન્ન વિહારિણી, કુશીલા, કુશીલ વિહારિણી, સસક્તા, સસક્ત વિહારિણી થઈને ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કર્યું (पाउणित्ता अद्धमासियाए) પાલન કરીને તે અર્ધમાસિકની સંલેખના ધારણ કરીને (कालमासे) પોતાના મૃત્યુ કાળે (काल किच्चा) તે મરણ પામી અને મરણ પામીને (अणालोइय अपडिक्कता) પોતાના પાપોની આલોચના ન કરવાથી પ્રતિક્રાંત ન બની શકવાના કારણે તે (ईसाणे कप्पे) ઇશાન કલ્પમાં (अण्णयरंसि विमाणंसि) કોઈ એક વિમાનમાં (देवगणियत्ताए उववण्णा) દેવગણિકાના રૂપમાં જન્મ પામી (तत्थेगइयाणं देवी णं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, तत्थणं सूमालियाए देवीए नव पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता) ત્યાં કેટલીક દેવીઓની સ્થિતિ નવ પલ્યોપમની કહે

मूलम्—तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नाम नयरे होत्था, वन्नओ तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था, वन्नओ, तस्स णं चुलणीदेवी धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तएणं सा सूमालियादेवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुपयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया, तएणं सा चुलणीदेवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया, तएणं तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं नामधेज्जं जम्हाणं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई, तएणं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गुण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवई, तएणं सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीण इव चंपगलया निवाय

की स्थिति नौ पल्योपम की कही गई है–सो इस सुकुमारिकादेवी की वहां नौ पल्योपम की स्थिति हुई। यहां जो "किसी एक विमान में" ऐसा अनिश्चयात्मक पद आया है उसका तात्पर्य यह है कि माथुर्यादि वाचना के समय में आचार्यों को विमान संख्या का विस्मरण हो जाने से उसका निश्चय नहीं रहा। अतः ऐसा कहा गया है ॥ सू० १५ ॥

વામા આવી છે તો તે સુકુમારિકા દેવીની પણ ત્યા નવપલ્યોપમની સ્થિતિ થઈ અહીં જે "કોઈ એક વિમાનમા" આ જાતનુ અનિશ્ચયાત્મક પદ આવ્યુ છે તેનુ કારણુ આ પ્રમાણે છે કે માથુર્યાદિ વાચનાના સમયે આચાર્યોને વિમાન સખ્યાનુ વિસ્મરણુ થઈ જવાથી તે વિષે નિશ્ચય રહ્યો નહિ એથી આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે ॥ સૂત્ર ૧૫ ॥

निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ। तएणं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया जावि होत्था, तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंतेउरियाओ ण्हायं जाव विभूसिय करेंति करित्ता दुवयस्स रण्णो पाएवंदिउं पेसति तएण सा दोवइ राय० जेणेव राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहण करेइ, तएणं से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ निवेसित्ता दोवइए रायवर-कन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ रायवरकन्नं एव वयासी—जस्स णं अह पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि, तएण मम जावजीवाए हिययडाहे भविस्सइ, तं ण अहं तव पुत्ता! अज्जयाए सयंवर वियरामि, अज्जयाए ण तुम दिण्णसयवरा जण्णं तुम सयमेव रायं वा जुवराय वा वरेहिसि से ण तव भत्तारे भविस्सइ त्तिकट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १६ ॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव जम्बूद्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुर=काम्पिल्यपुरनामक नगर

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि ॥

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (इहेव जंबुद्दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नाम नयरे होत्था) इसी जंबूद्वीप में भारत वर्ष में पांचाल जनपद में

तेण कालेण तेण समएणं इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (इहेव जंबुद्दीवे भारहेवासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नाम नयरे होत्था) આ જંબૂદ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં પાંચાલ જનપદમાં કાંપિલ્યપુર નામે નગર હતું (वन्नओ) આ નગરનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં કરવામાં આવ્યું છે ત્યાંથી વાચકોએ જાણી

गासीत्, वर्णकः=अस्य नगरस्य वर्णनमौपपातिकसूत्राद् बोध्यम्। तत्र खलु द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुलनी नाम्नी देवी भार्याऽभवत्, तस्य पुत्रः 'धृष्टद्युम्नो' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत्।

ततः खलु सा सुकुमारिका देवी तस्मात् देवलोकादायुःक्षयेण यावत्-च्युत्वा इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे पञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः=चुलन्या देव्याः कुक्षौ दारिकतया=पुत्रीत्वेन 'पचायाया' प्रत्या याता=समुत्पन्ना। तत खलु सा चुलनीदेवी नवानां मासानां बहुप्रतिपूर्णानां यावद् दारिकां पुत्रीं प्रजाता=प्रजनितवती। तत खलु सा तस्या दारिकाया

काम्पिल्यपुर नाम का नगर था। (वन्नओ) इस नगर का वर्णन औप-पातिक सूत्र में किया गया है सो वहाँ से जान लेना चाहिये। (तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था वन्नओ तस्स ण चुलणीदेवी, धट्ठज्जुणे कुमार जुवराया, तएण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया) वहाके राजाका नाम द्रुपद था। राजाका वर्णन भी पहिले जैसा ही जानना चाहिये। इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था। कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था-यह युवराज था। वह सुकुमारिका आर्या का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के कारण चवकर इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पांचाल जनपद में कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में पुत्री रूपसे अवतरित हुआ। (तएण सा चुलणीदेवी नवण्ह मासाणं जाव

લેવુ જોઈએ (तत्थ ण दुवए नाम राया होत्था, वन्नओ, तस्सण चुलणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे, जुवराया, तएण सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएण जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिसि दारियत्ताए पच्चायाया) ત્યાના રાજાનુ નામ દ્રુપદ હતું રાજાનુ વર્ણન પણ ઔપપાતિક સૂત્રમા વર્ણિત કોણિક રાજાની જેમજ જાણી લેવુ જોઈએ-તેની રાણીનુ નામ ચુલની દેવી હતું તેના પુત્રનુ નામ ધૃષ્ટદ્યુમ્ન હતુ ધૃષ્ટદ્યુમ્ન યુવરાજ હતો, સુકુમારિકા આર્યાનો જીવ તે બીજા દેવલોકથી આયુ વગેરે ક્ષય થવા બદલ ચવીને આજ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા, ભરત ક્ષેત્રમા, પાંચાલ્ય જનપદમા, કાંપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની ચુલની દેવીના ઉદરમા પુત્રી રૂપે અવતરિત થયો। (तएण सा चुलणी

'निव्वत्तबारसाहियाए' निर्वृत्तद्वादशाहिकाया=द्वादशेऽहनि समाप्ते इदमेतद्रूपं नाम कृतवती यस्मात् खलु एषा दारिका द्रुपदस्य राज्ञो 'धूया' दुहिता-पुत्री चुलन्या देव्या 'अत्तिया' आत्मजा=अङ्गजाता, तस्माद् भवतु खल्वस्माकमस्या दारिकाया नामधेयं 'द्रौपदी' इति। ततः खलु तस्या अम्बापितरौ इममेतद्रूपं गौणं=गुणप्राप्तं गुणनिष्पन्नं=गुणसंपन्नं, नामधेयं कुरुतः। ततः सा द्रौपदी दारिका पञ्चधात्रीभिर्यावद् गिरिकन्दरमालीने चम्पकलता निर्वातनिर्व्याघाते सुखसुखेन परिवर्धते स्म।

दारिय पयाया तएणं सा तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं नामधेज्जं जम्हाणं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया तं होउणं-अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई) गर्भ के जब नौ मास अच्छी तरह समाप्त हो चुके तब चुलनी-देवी ने एक पुत्री को जन्म दिया। पुत्री को उत्पन्न हुए १२ वां दिन लगा-तब चुलनी माताने उसका इस रूप से गुणनिष्पन्न नामरक्खा क्यों कि यह द्रुपदराजा की पुत्री है और मुझ चुलनी के उदर से उत्पन्न हुई है-इसलिये इस हमारी कन्या का नाम द्रुपदी रहो इस तरह के विचार-से (तीसे अम्मा पियरो) माता पिता ने उसका (इमं एयारूवं गुणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवई) इस तरह का गुणनिष्पन्न नाम द्रौपदी रख दिया। (तएणं) इसके बाद-(सा दोवई दारिया पंचधाई परिग्गहिया जाव गिरिकंदरमल्लीणइव चंपगलया निवायनिव्वाघायसि सुहं सुहेणं परिवड्ढइ) वह द्रौपदी दारिका पांच धायमाताओं से युक्त

देवी नवण्हं मासाणं जाव दारियं पयाया तएणं सा तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं गोणं गुणणिप्फण्णं नामधेज्जं जम्हाणं एस दारिया दुवयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया तं होउणं अम्हं इमीसे दारियाए नामधिज्जे दोवई) गर्भना नवमास ज्यारे संपूर्णपणे समाप्त थया त्यारे चूलनी देवीए एक पुत्रीने जन्म आप्यो. पुत्रीना जन्म पछी ज्यारे अगियार दिवस पूरा थया अने बारमो दिवस शरु थयो त्यारे चुलनी माताए विचार कर्यो के द्रुपद राजानी आ कन्यापुत्री छे अने मारा गर्भथी जन्म पामी छे आ प्रमाणे आनुं नाम द्रौपदी राखीए तो सारुं आम विचारीने (तीसे अम्मापियरो) मातापिताए (इमं एयारूवं गुणं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करिंति दोवई) आ रीते से कन्यानुं गुण निष्पन्न नाम द्रौपदी पाडयुं (तएणं) त्यारपछी (सा दोवई दारिया पंचधाइपरिग्गहिया जाव गिरिकंदर मल्लीण इव चंपगलया निवायनिव्वायायसि सुहं सुहेणं परिवड्ढइ) द्रौपदी

मासीत्, वर्णकः=अस्य नगरस्य वर्णनमौपपातिकसूत्राद् बोध्यम्। तत्र खलु द्रुपदो नाम राजाऽऽसीत्, चुलनी नाम्नी देवी भार्याऽभवत्, तस्य पुत्रः 'धट्ठज्जुणे' धृष्टद्युम्नो नाम कुमारो युवराजोऽभवत्।

ततः खलु सा सुकुमारिका देवी तस्माद् देवलोकादायुःक्षयेण यावत्-च्युत्वा इहैव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे पाञ्चालेषु जनपदेषु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः=चुलन्या देव्याः कुक्षौ दारिकतया=पुत्रीत्वेन 'पच्चायाया' प्रत्याजाता=समुत्पन्ना। ततः खलु सा चुलनीदेवी नवानां मासानां बहुप्रतिपूर्णानां यावद् दारिकां पुत्रीं प्रजाता=प्रजनितवती। ततः खलु सा तस्या दारिकाया

कांपिल्यपुर नाम का नगर था। (वन्नओ) उस नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में किया गया है सो वहीं से जान लेना चाहिये। (तत्थ णं दुवए नाम राया होत्था वन्नओ तस्स णं चुलणीदेवी, धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया, तएणं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे, भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) वहां के राजा का नाम द्रुपद था। राजा का वर्णन भी पहिले जैसा ही जानना चाहिये। इस की रानी का नाम चुलनीदेवी था। कुमार का नाम धृष्टद्युम्न था-यह युवराज था। वह सुकुमारिका आर्या का जीव उस दूसरे ईशान देवलोक से आयु आदि क्षय हो जाने के कारण चवकर इसी जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भरत क्षेत्र में, पांचाल जनपद में कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की चुलनीदेवी की कुक्षि में पुत्री रूपसे अवतरित हुआ। (तएणं सा चुलणीदेवी नवण्हं मासाणं जाव

લેવું જોઈએ (तत्थ णं दुवए नाम राया होत्था, वन्नओ, तस्स णं चुलणी देवी धट्ठज्जुणे कुमारे, जुवराया, तएणं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं जाव चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया) ત્યાંના રાજાનું નામ દ્રુપદ હતું. રાજાનું વર્ણન પણ ઔપપાતિક સૂત્રમાં વર્ણિત કોણિક રાજાની જેમજ જાણી લેવું જોઈએ -તેની રાણીનું નામ ચુલની દેવી હતું. તેના પુત્રનું નામ ધૃષ્ટદ્યુમ્ન હતું. ધૃષ્ટદ્યુમ્ન યુવરાજ હતો, સુકુમારિકા આર્યાનો જીવ તે બીજા દેવલોકથી આયુ વગેરે ક્ષય થવા બદલ ચવીને આ જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમાં, ભરતક્ષેત્રમાં, પાંચાલ્ય-જનપદમાં, કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની ચુલની દેવીના ઉદરમાં પુત્રી રૂપે અવતરિત થયો. (तएणं सा चुलणी

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्यायो रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविह्मए' जातविस्मयः=आश्चर्य प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वय मेव दास्यामि, तत्र खलु त्व सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, तत खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःख भविष्यति।

तएण से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ, रायवरकन्न एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहा आई। वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योही दोनो पैरो को पकडा कि इतने में उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अह पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि,तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भवि स्सासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वय तुम्हे जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनो भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (त ण अह पुत्ता !

से दुवए राया दोवइ दारिय अके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ रायवरकन्न एव वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी ज्या राजा द्रुपद हता त्या गई त्या जईने तेणे द्रुपद राजाने वदन करवा माटे बन्ने पगो पकडया त्यारे तेओए द्रौपदी दारिकाने पोताना खोळामा बेसाडी द्रौपदी ज्यारे खोळामा बेसी गई त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी सविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थईने तेणे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रमाणे कह्यु— (जस्स ण अह पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविस्सासि तएण मम जाव जीवाए हिय यडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हु तने जे राजाने के युवराजने भार्याना रूपमा आपीश त्या तु सुखी पण थई शके तेम छे अने दुःखी पण तेथी मने

ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या उन्मुक्तबालभावा यावद् उत्कृष्टा, उत्कृष्ट शरीरा जाता चाप्यभवत्। ततः खलु तां द्रौपदीं राजवरकन्यामन्यदा कदाचिद् 'अंते उरियाओ' अन्तःपुरिका =अन्तः पुरवर्तिन्यः स्त्रियः स्नातां यावत्-वस्त्रालङ्कारविभूषितां कुर्वन्ति कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञः पादौ वन्दितुं 'पेसंति' प्रेषयन्ति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव द्रुपदो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रुपदस्य राज्ञः पादग्रहणं करोति, ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपदीं दारिकामङ्के

होकर इस तरह पलने पुषने लगी कि जिस तरह गिरि की कंदरा के प्रदेशमें उत्पन्न हुई चंपकलता बात रहित निरुपद्रव स्थान में आनन्द के साथ पलती पुषती है। (तएणं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा, जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंते उरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति, करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वंदिउं पेसंति) वह राजवर कन्या द्रौपदी बालभाव रहित होकर जब यौवन अवस्था वाली हो चुकी तब इस के शरीर में लावण्य की चमक से विपय सौन्दर्य आ गया–अतः उस समय वह विशेषरूप से उत्कृष्ट शरीर वाली बनगई। किसी एक दिन की बात है कि अंत. पुर की स्त्रियों ने द्रौपदी को स्नान कराकर यावत् वस्त्राल कार से विभूषित किया–और विभूषित कर के द्रुपद राजा की चरण वंदना करने के लिये भेज दिया (तएणं सा दोवई राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ,

ढारिકા પાચ ધાયમાતાઓથી યુક્ત થઈને આ પ્રમાણે લાલિત પાલિત થવા માંડી જેમકે પર્વતની કંદરાના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થયેલી ચંપકલતા નિર્વાત, નિરૂપદ્રવ સ્થાનમાં સુખેથી મોટી થતી ન હોય! (तएणं सा दोवई रायवर कन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंते उरियाओ ण्हायं जाव विभूसियं करेंति करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वंदिउं पेसंति) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી બચપણું વટાવીને જ્યારે યુવાવસ્થા સંપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમાં લાવણ્યના ચમકથી સવિશેષ સૌંદર્ય દીપી ઉઠ્યું તેથી તે વખતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કૃષ્ટ શરીર વાળી થઈ ગઈ હતી કોઈ એક દિવસની વાત છે કે રણવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપદીને સ્નાન કરાવ્યું યાવત્ વસ્ત્રલંકારોથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને દ્રુપદ રાજાની ચરણ વંદના કરવા માટે મોકલી (तएणं सा दोवई राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पाय तएणं

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्यं प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्या मेवमवादीत्-हे पुत्रि! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वय मेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीव 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःख भविष्यति।

तएण से दुवए राया दोवइ दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ, रायवरकन्न एव वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहा द्रुपद राजा था वहा आई। वहा आकर उसने वदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनो पैरो को पकड़ा कि इतने मे उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स ण अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि,तत्थ ण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि! मैं स्वयं तुम्हे जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनो भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (न ण अहं पुत्ता!

से दुवए राया दोवइ दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइ रायवरकन्न एव वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी ज्या राजा द्रुपद हता त्या गई त्या जईने तेणे द्रुपद राजाने वंदन करवा माटे बने पगो पकडया त्यारे तेओए द्रौपदी दारिकाने पोताना खोळामा बेसाडी द्रौपदी ज्यारे खोळामा बेसी गई त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी अविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थईने तेणे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रमाणे कह्युं—(जस्स ण अहं पुत्ता! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थण तुम सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएण मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि! हु तने जे राजाने के युवराजने भार्याना रूपमा आपीश त्या तुं सुखी पण थई शके तेम छे अने दुःखी पण तेथी मने

ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या उन्मुक्तबालभावा यावद् उत्कृष्टा, उत्कृष्ट शरीरा जाता चाप्यभवत्। ततः खलु तां द्रौपदीं राजवरकन्यामन्यदा कदाचिद् 'अंते उरियाओ' अन्तः पुरिकाः=अन्तःपुरवर्तिन्यः स्त्रियः स्नातां यावत्-वस्त्रालङ्कारविभूषितां कुर्वन्ति कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञः पादौ वन्दितुं 'पेसंति' प्रेषयन्ति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव द्रुपदो राजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रुपदस्य राज्ञः पादग्रहणं करोति, ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपदीं दारिकामङ्के

होकर इस तरह पलने पुषने लगी कि जिस तरह गिरि की कंदरा के प्रदेशमें उत्पन्न हुई चंपकलता वात रहित निरुपद्रव स्थान में आनन्द के साथ पलती पुषती है। (तएणं सा दोवई रायवरकन्ना उम्मुक्कबाल भावा, जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं तं दोवइं रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंते उरियाओ ण्हाय जाव विभूसियं करेंति, करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वंदिउं पेसंति) यह राजवर कन्या द्रौपदी बालभाव रहित होकर जब यौवन अवस्था वाली हो चुकी तब इस के शरीर में लावण्य की चमक से विषय सौन्दर्य आ गया-अतः उस समय यह विशेषरूप से उत्कृष्ट शरीर वाली बनगई। किसी एक दिन की बात है कि अंतः पुर की स्त्रियों ने द्रौपदी को स्नान कराकर यावत् वस्त्राल कार से विभूषित किया-और विभूषित कर के द्रुपद राजा की चरण वंदना करने के लिये भेज दिया (तएणं सा दोवइ राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ,

દારિકા પાચ ધાયમાતાઓથી યુક્ત થઇને આ પ્રમાણે લાલિત પાલિત થવા માંડી જેમકે પર્વતની કંદરાના પ્રદેશમાં ઉત્પન્ન થયેલી ચંપકલતા નિર્વાત, નિરૂપદ્રવ સ્થાનમાં સુખેથી મોટી થતી ન હોય! (तएणं सा दोवई रायवर कन्ना उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था, तएणं तं दोवई रायवरकन्नं अण्णया कयाई अंते उरियाओ ण्हाय जाव विभूसियं करेंति करित्ता दुवयस्स रण्णो पाए वंदिउं पेसंति) તે રાજવર કન્યા, દ્રૌપદી બચપણુ વટાવીને જ્યારે યુવાવસ્થા સંપન્ન થઈ ગઈ ત્યારે તેના શરીરમાં લાવણ્યના ચમકથી સવિશેષ સૌંદર્ય દીપી ઉઠ્યું તેથી તે વખતે તે વિશેષ રૂપથી ઉત્કૃષ્ટ શરીર વાળી થઇ ગઇ હતી કોઇ એક દિવસની વાત છે કે રણવાસની સ્ત્રીઓએ દ્રૌપદીને સ્નાન કરાવ્યું યાવત્ વસ્ત્રાલંકારોથી વિભૂષિત કરી અને વિભૂષિત કરીને દ્રુપદ રાજાની ચરણ વંદણા કરવા માટે મોકલી (तएणं सा दोवइ राय० जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, दुवयस्स रण्णो पाय // तएणं

निवेशयति, निवेश्य द्रौपद्या राजवरकन्याया रूपेण च यौवनेन च लावण्येन च 'जायविम्हए' जातविस्मयः=आश्चर्यं प्राप्तः स द्रुपदो द्रौपदीं राजवरकन्यामेवमवादीत्-हे पुत्रि ! यस्य खलु अहं राज्ञो वा युवराजस्य वा भार्यात्वेन स्वयमेव दास्यामि, तत्र खलु त्वं सुखिता वा दुःखिता वा भविष्यसि, ततः खलु मम 'जाव जीवाए' यावज्जीवं 'हिययडाहे' हृदयदाहः-मनोदुःखं भविष्यति।

तएणं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं, रायवरकन्नं एवं वयासी) सो वह राजवर कन्या द्रौपदी जहां द्रुपद राजा था वहां आई। वहां आकर उसने वंदना करने के लिये द्रुपद राजा के ज्योंही दोनो पैरो को पकड़ा कि इतने मे उस द्रुपद राजाने उस द्रौपदी दारिका को अपनी गोदमें बैठा लिया। द्रौपदी के बैठते ही वह राजा उस राजवर कन्या द्रौपदी के रूप, यौवन और लावण्य से विशेष विस्मित हुआ-सो विस्मित होकर उसने उस राजवर कन्या द्रौपदी से इस प्रकार कहा-(जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि,तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हिययडाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! मैं स्वयं तुम्हें जिस राजा को, अथवा युवराज को भार्या के रूप में दूंगा वहां तुम सुखी और दुःखी दोनो भी हो सकती हो। तो इससे मुझे यावज्जीव हृदय दाह-मानसिक दुःख रहेगा। (तं णं अहं पुत्ता !

से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता, दोवईए रायवरकन्नाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए दोवइं रायवरकन्नं एवं वयासी) ते राजवर कन्या द्रौपदी ज्यां राजा द्रुपद हता त्यां गई त्यां जईने तेणे द्रुपद राजाने वंदन करवा माटे बन्ने पगो पकड्या त्यारे तेओए द्रौपदी दारिकाने पोताना खोळामां बेसाडी द्रौपदी ज्यारे खोळामां बेसी गई त्यारे राजा ते राजवर कन्या द्रौपदीना रूप, यौवन अने लावण्यथी सविशेष विस्मित थयो अने विस्मित थईने तेणे ते राजवर कन्या द्रौपदीने आ प्रमाणे कह्यु—(जस्स णं अहं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए सयमेव दलइस्सामि, तत्थणं तुमं सुहिया वा दुक्खिया वा भविज्जासि तएणं मम जाव जीवाए हियय डाहे भविस्सइ) हे पुत्रि ! हुं तने जे राजाने के युवराजने भार्याना रूपमां आपीश त्यां तुं सुखी पण थई शके तेम छे अने दुःखी पण तेथी मने

=तत्तस्मात् खलु हे पुत्रि ! तव 'अज्जयाए' अद्यतया-एषु दिवसेषु अल्पेषु दिनेषु इत्यर्थः स्वयंवरं करोमि-कारयामि अद्यतया=अल्पदिवसेष्वेव तन्तु त्वं 'दिण्णसयवरा' दत्तस्वयंवरा=व्रियते इति वरः, कन्यया स्वयं वृतः स्वयंवरः, स दत्त कन्याया पित्रादिना यस्यै । दत्तस्वयंवरा भविष्यतीति भावः । 'दत्तस्वयंवरा' इतिपदं व्याचक्षाणः प्रदर्शयति- 'जण्णं तुमं' इत्यादि । यं खलु त्वं स्वयमेव राजानं वा युवराजं वा वरिष्यसि, स खलु तव भर्ता भविष्यति' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा ताभिरिष्टाभिर्यावत्=वाग्भिराश्वासयति, आश्वास्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० १६।

मूलम्–तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे बलदेवपामुक्खे पंचमहावीरे उग्गसेणपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ

अज्जयाए सयवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णसयवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ, आसासित्ता पडिविसज्जेइ) इस लिये हे पुत्रि ! मैं थोडे ही दिनों में तुम्हारा स्वयंवर करवाने वाला हूँ । तुम इन दिनों मे दत्तस्वयंवरा हो जाओगी, सो तुम जिस राजाको या युवराज को अपनी इच्छानुसार वरोगी वही तेरा भर्ता बन जायगा । इस तरह कहकर राजा ने अपनी पुत्री को इष्ट आदि विशेषणो वाली वाणी से आश्वासित किया और फिर आश्वासित करके उसे वहाँ से भेज दिया ॥ सू० १६ ॥

જીવન પર્યન્ત દુ:ખ થયા કરશે (तं णं अहं पुत्ता ! अज्जयाए सयवरं विरयामि, अज्जयाए णं तुमं दिण्णसयवरा जण्णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसी से णं तव भत्तारे भविस्सइ, ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं जाव आसासेइ आसासित्ता पडिविसज्जेइ) હે પુત્રિ ! થોડા દિવસોમાં જ હું તમારા માટે સ્વયંવર કરવાનો છું ત્યારે તું સ્વયંવરમાં દત્ત સ્વયંવરા થઈ જશે જે રાજા કે યુવરાજને તું તારી પસંદગી આપશે તેજ તારો પતિ થશે આ પ્રમાણે કહીને રાજાએ પોતાની પુત્રીને ઇષ્ટ વગેરે વિશેષણોથી યુક્ત વચનો વડે આશ્વાસનથી આશ્વાસિત કરીને તેને ત્યાંથી વિદાય કરી ॥ સૂત્ર-૧૬ ॥

सट्टि दुदंतसाहस्सीओ वीरसेणपामोक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिस-
साहस्सीओ महसेणपामोक्खाओ छप्पन्नं वलवगसाहस्सीओ
अन्ने य वहवे राईसरतलवरमाडंवियकोडुवियइब्भसिट्ठिसेणा-
वइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं
अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि वद्धावित्ता एवं
वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स
रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स
भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ तं णं
तुब्भे देवाणुप्पिया! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरि-
हीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह, तएणं से दूए करयल
जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता
जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कोडुवियपुरिसे
सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया!
चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति, उवट्ठवित्ता
तएणं से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंटं आसरहं
दुरुहइ दुरुहित्ता वहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउह पह-
रणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ
पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवाग-
च्छइ, सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव वारवइ नयरी तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता वारवइं नयरिं मज्झं मज्झेणं अणुप-
विसइ अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स वाहिरिया

उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउघंटं आस-रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गु-रापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह। तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्मा-णेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं स द्रुपदो राजा दूतं शब्द-यति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! द्वारवतीं=द्वारकां नगरीम्, तत्र खलु त्वं कृष्णं वासुदेवं, समुद्रविजयप्रमुखान् दश दशार्हान्, बलदेव प्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रद्युम्नप्रमुखाः अर्धचतुर्थीः कुमारकोटीः=प्रद्युम्नप्रमुखान् सार्धत्रिकोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः षष्टिदुर्दान्तसाहस्रीः=साम्बप्रमुखान् षष्टिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एक-विंशतिवीरपुरुषसाहस्रीः=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

'तएणं से दुवए' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समु-द्दविजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेन पामो-क्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीसं

'तएण से दुवए' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण से दुवए राया दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! वारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवसमुद्द विजयपामोक्खे दसदसारे बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्ण पामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीर सेन पामोक्खाओ इक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ म... बलव

प्रमुखाः षट्पञ्चाशत् बलवत्साहस्रीः=महासेनप्रमुखान् षट्पञ्चाशत्सहस्रप्रमितबलवतो राज्ञः, अन्यांश्च बहून् राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापति सार्थवाहप्रभृतीन् करतलपरिगृहीत दशनख शिर आवर्तमञ्जलि मस्तके कृत्वा जयेन विजयेन=जयविजयशब्देन 'वद्धावेहि' वर्धय=अभिनन्दय वर्धयित्वा एवं ब्रूहि-हे देवानुप्रियाः! एवं खलु काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्या, चुलन्या देव्या आत्मजाया धृष्टद्युम्नकुमारस्य भगिन्याः, द्रौपद्या राजवरकन्यकाया स्वयं

वीर पुरिससाहस्सीओ महसेनपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ अन्नेय बहवे राई सरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहिय दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि वद्धाविता एवं वयाहि) इस द्रुपद राजाने अपने एक दूत को बुलाया और बुलाकर उससे ऐसा कहा-देवानुप्रिय! तुम द्वारका नगरीको जाओ वहां तुम कृष्ण वासुदेव को, समुद्र विजय प्रमुख दश दशार्हों को, बलदेव प्रमुख पांच महावीरों को, उग्रसेन प्रमुख सोलह हजार राजाओं को प्रद्युम्न प्रमुख ३॥) साढे तीन करोड राजकुमारों को ६० हजार दुर्दान्त• साम्ब प्रमुखों को २१ हजार वीरसेन प्रमुख वीरों को ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओं को, तथा और भी अनेक राजेश्वर तलवर, माडंबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह आदिकों को दोनों अपने हाथों की दशनखो वाली अंजलि बनाकर और उसे मस्तक से घुमाकर नमस्कार करना तथा "जय विजय" शब्दोच्चारण करते हुए उन्हें वधाई देना-उनका अभिनन्दन करना। वधाई देकरके फिर उन से ऐसा

गसाहस्सीओ अन्ने य बहवे राईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहपभिइओ करयल परिग्गहिय दसनहं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धाविता एवं वयाहि) त्यारपछी द्रुपद राजाए पोताना એક દૂતને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે દ્વારકા નગરીમાં જાઓ ત્યાં તમે કૃષ્ણવાસુદેવને, બળદેવ પ્રમુખ પાંચ મહાવીરોને, ઉગ્રસેન પ્રમુખ સોળ હજાર રાજાઓને, પ્રદ્યુમ્ન પ્રમુખ સાડા ત્રણ કરોડ રાજકુમારોને, ૬૦ હજાર દુર્દાંતસાંબ પ્રમુખોને, ૨૧ હજાર વીરસેન પ્રમુખ વીરોને, ૫૬ હજાર મહાસેન પ્રમુખ બલિષ્ઠ રાજાઓને તેમજ બીજા પણ બધા રાજેશ્વર, તલવર, માડંબિક, કૌટુંબિક, ઇભ્ય, શ્રેષ્ઠિ, સેનાપતિ, સાર્થવાહ વગેરેને પોતાના બંને દશ નખોવાળા હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો તથા 'જય વિજય' શબ્દોચ્ચારણ કરતાં બધાને તમે અભિનંદિત

उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउघंट आस-रहं ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गु-रापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह। तएणं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्मा-णेइ सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ ॥ सू० १७ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। तस्मादनन्तरं स द्रुपदो राजा दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! द्वारवतीं=द्वारकानगरीम्, तत्र खलु त्वं कृष्णं वासुदेवं, समुद्रविजयप्रमुखान् दश दशार्हान्, बलदेवप्रमुखान् पञ्च महावीरान्, उग्रसेनप्रमुखान् षोडश राजसहस्राणि, प्रद्युम्नप्रमुखाः अर्धचतुर्थीः कुमारकोटीः=प्रद्युम्नप्रमुखान् सार्धत्रिकोटिराजकुमारान्, साम्बप्रमुखाः षष्टिदुर्दान्तसाहस्रीः=साम्बप्रमुखान् षष्टिसहस्रदुर्दान्तान्, वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिवीरपुरुषसाहस्रीः=वीरसेनप्रमुखान् एकविंशतिसहस्रवीरपुरुषान्, महासेन

'तएणं से दुवए' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजय पामोक्खे दसदसारे बलदेव पामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेन पामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्णपामोक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीरसेन पामोक्खाओ इक्कवीस

'तएणं से दुवए' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दाविता एवं वयासी-गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं-तत्थणं तुमं कण्हं वासुदेवसमुद्द विजयपामोक्खे दसदसारे बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे उग्गसेनपामोक्खे सोलसरायसहस्से पज्जुण्ण पामुक्खाओ अद्धुट्ठाओ कुमारकोडीओ संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत साहस्सीओ वीर सेन पामोक्खाओ इक्कवीस वीरपुरिससाहस्सीओ महसेनपामोक्खाओ छप्पन बलव

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथं 'दुरुहइ' दूरोहति-आरोहति। दूरुह्य बहुभि. पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्-सन्नद्धबद्धवम्मियकवएहिं, उप्पीलियसरासनपट्टिएहिं, पिणद्धगेविज्जगबद्धाविद्धविमलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपहरणेहिं इति। सन्नद्धबद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टिकैः, पिनद्धग्रैवेयकबद्धविद्धविमलवरचिह्नपट्टैः गृहीतायुधप्रहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृता, बद्धा'=कशाबन्धनेन सबद्धा, वर्मिता.=अङ्गे परिहिताः कवचा यै स्ते सन्नद्धबद्धवर्मितकवचास्तै, तथा-उत्पीडितशरासनपट्टिकै. उत्पीडितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टिकानि धनुःप्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टिका रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्धारिणस्तैः,

वह जहा अपना घर था वहां आया। वहा आकर उसने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों! तुम लोग शीघ्र ही चार घटों से युक्त अश्वरथ को घोडे जोतकर यहा ले आओ। उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया। वे चार घटा वाले उस रथ में घोडे जोतकर उसे वहा ले आये (तएण से दूए ण्हाए जाव अलकार० सरीरे चाउग्घट आसरह दुरूहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं सपरिवुडे कपिल्लपुरनयर मज्झ मज्झे ण निग्गच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को समस्त अलकारों से विभूषित किया। बाद में वह उस चतुर्घट वाले अश्वरथ पर सवार हो गया। उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर कवच पहिर रखा है ऐसा अनेक पुरुष थे ज्यावर बाण को आरोपित करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथो में है ऐसे अनेक धनुर्धारी

પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે સત્વરે ચાર ઘટડીઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને અહીં આવો. કૌટુંબિક પુરૂષોએ તેમજ કર્યું ચાર ઘટડીઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને ત્યા લઇ આવ્યા (तएण से दूए ण्हाए जाव अलकार० सरीरे चाउग्घट आसरह दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणे हिं सिद्धिं सपरिवुडे कपिल्लपुरनयर मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ) ત્યારબાદ દૂતે સ્નાન કર્યું યાવત્ પોતાના શરીરને બધી જાતના અલકારોથી શણગાર્યું ત્યારપછી તે દૂત ચતુર્ઘંટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઇ ગયો તે દૂતની સાથે બખતરથી સુસજ્જ થયેલા ઘણા પુરૂષો હતા પ્રત્યચા-ઉપર બાણ ચઢાવવાથી વક્ર થઇ ગયેલા ધનુષો જેમના હાથોમા છે

रो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्त 'अकालपरिहीणं चैव' कालविलम्बरहितमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत, ततः खलु स दूतः करतल० यावत्-अञ्जलिं मस्तके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञ एतदर्थं प्रति शृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः चतुर्घण्टं=चतुर्घण्टयुक्तम् अश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत । यावत्-उपस्थापयन्ति । ततः खलु स दूतः

कहना-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लिणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवर कण्णाए सयवरे भविस्सइ, तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) हे देवानुप्रियो ! काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है, इसलिये हे देवानुप्रियों ! आप लोग द्रुपद राजा के ऊपर अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र काम्पिल्यपुर नगर मे पधारें । (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) दूतने द्रुपद राजा के इस कथन को दोनों हाथ जोडकर स्वीकार कर लिया । स्वीकार करके फिर

કરજો અભિનંદિત કર્યા બાદ તમે તેઓને આ પ્રમાણે વિનંતી કરજો (एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयवरे भविस्सई, तं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) હે દેવાનુપ્રિયો ! કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા, ધૃષ્ટદ્યુમ્નકુમારની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે કાંપિલ્ય નગરમાં પધારો (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) દ્રુપદ રાજાની આજ્ઞાને દૂતે બંને હાથ જોડીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કર્યો તે જ્યા

स्नातः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितशरीरश्चतुर्घण्टमश्वरथ 'दुरुहइ' दूरोहति-आरोहति। दूरुह्य बहुभिः पुरुषैः कीदृशैः पुरुषैरित्याह-'सन्नद्ध जाव गहिया' इति अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्-सन्नद्धबद्धवम्मियकवएहिं, उप्पीलियसरासनपट्टगेहिं, पिणद्धगेविज्जगबद्धाविद्धविमलवरचिन्धपट्टेहिं, गहियाऽऽउहपहरणेहिं इति। सन्नद्धबद्धवर्मितकवचैः उत्पीडितशरासनपट्टकैः, पिनद्धग्रैवेयकबद्धविद्धविमलवरचिह्नपट्टैः गृहीतायुधप्रहरणैः, सन्नद्धाः सज्जीकृता, बद्धा=कशाबन्धनेन सन्नद्धा, वर्मिताः=अङ्गे परिहिताः कवचा यैस्ते सन्नद्धबद्धवर्मितकवचास्तैः, तथा-उत्पीडितशरासनपट्टकैः उत्पीडितानि=गुणारोपणेन वक्रीकृतानि शरासनपट्टकानि धनुःप्रकाण्डानि यैस्ते उत्पीडितशरासनपट्टकाः रज्ज्वारोपणवक्रीकृतधनुर्धारिणस्तैः,

---

वह जहां अपना घर था वहां आया। वहां आकर उसने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियों! तुम लोग शीघ्र ही चार घंटों से युक्त अश्वरथ को घोडे जोतकर यहा ले आओ। उन्होंने आज्ञानुसार ऐसा ही किया। वे चार घंटा वाले उस रथ में घोडे जोतकर उसे वहा ले आये (तएण से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंट आसरहं दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरनयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) इस के बाद दूतने स्नान किया, यावत् अपने शरीर को समस्त अलकारों से विभूषित किया। बाद में वह उस चतुर्घंट वाले अश्वरथ पर सवार हो गया। उस के साथ सजाकर अपने शरीर पर कवच पहिर रक्खा है ऐसा अनेक पुरुष थे ज्यापर बाण को आरोपित करने से वक्री भूत हुआ धनुष जिनके हाथो में हैं ऐसे अनेक धनुर्धारी

પોતાનુ ઘર હતુ ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે સત્વરે ચાર ઘંટડીઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને અહીં આવો. કૌટુંબિક પુરૂષોએ તેમજ કર્યું ચાર ઘંટડી ઓવાળો અશ્વરથ જોતરીને ત્યા લઈ આવ્યા (तएण से दूए ण्हाए जाव अलंकार० सरीरे चाउग्घंट आसरहं दुरुहइ दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाऽऽउहपहरणे हिं सिद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरनयरं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ) ત્યારબાદ દૂતે સ્નાન કર્યું યાવત્ પોતાના શરીરને બધી જાતના અલંકારોથી શણગાર્યું ત્યારપછી તે દૂત ચતુર્ઘંટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઇ ગયો. તે દૂતની સાથે બખતરથી સુસજ્જ થયેલા ઘણા પુરૂષો હતા. પ્રત્યંચા ઉપર બાણ ચઢાવવાથી વક્ર થઇ ગયેલા ધનુષો જેમના હાથોમા

वरो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः 'अकालपरिहीण चेव' कालविलम्बरहितमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत, ततः खलु स दूतः करतल० यावत्-अञ्जलिं मस्तके कृत्वा द्रुपदस्य राज्ञ एतमर्थं प्रति शृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति उपागत्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया० चतुर्घण्टं=अश्वचतुष्टययुक्तम् अश्वरथं युक्तमेवोपस्थापयत। यावत्-उपस्थापयन्ति। तत खलु स दूत०

कहना-(एवं खलु देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, त ण तुब्भे देवाणुप्पिया! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) हे देवानुप्रियो! काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री, चुलनी देवी की आत्मजा, धृष्टद्युम्न कुमार की भगिनी राजवर कन्या द्रौपदी का स्वयंवर होनेवाला है, इसलिये हे देवानुप्रियो! आप लोग द्रुपद राजा के ऊपर अनुग्रह करके बहुत ही शीघ्र काम्पिल्यपुर नगर मे पधारें। (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) दूतने द्रुपद राजा के इस कथन को दोनों हाथ जोडकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर

કરજો અભિનંદિત કર્યાં બાદ તમે તેઓને આ પ્રમાણે વિનંતી કરજો (एवं खलु देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए चुल्लणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सई, त ण तुब्भे देवाणुप्पिया! दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह) હે દેવાનુપ્રિયો! કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા, ધૃષ્ટદ્યુમ્નકુમારની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો! તમે દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે કાંપિલ્ય નગરમાં પધારો. (तएणं से दूए करयल जाव कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंट आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव उवट्ठवेंति) દ્રુપદ રાજાની આજ્ઞાને દૂતે બંને હાથ જોડીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કર્યા બાદ તે જ્યાં

बाहिरुपस्थानशाला-आस्थानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं स्थापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति-प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य 'मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' मनुष्यवागुरापरिक्षिप्तः=मनुष्यसमूह परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवो पागच्छति, उपगत्य कृष्णं वासुदेवं समुद्रविजयप्रमुखांश्च दशदशार्हान् यावत् बलवत्साहस्रीः, करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-'तं चेव' तदेव-अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णनं बोध्यम् यावत्-समवसरत

वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंट आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उपस्थानशाला-सभामंडप था वहां गया। वहां पहुंचकर उसने अपने चार घंटावाले अश्वरथ को खडा कर दिया। रोक दिया-उसके रुकते ही वह उससे नीचे उतरा। उतर कर वह मनुष्योंके समूहसे परिक्षिप्त (युक्त) हो कर पैदल ही जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां गया। (उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्होंको यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार बलिष्ठ राजाओंको दोनो हाथों की अंजलिकर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंट आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) त्यां आवीने ते द्वारावती नगरीना मध्यमार्गे थईने नगरमां प्रविष्ट थयो अने त्यारपछी ते ज्यां कृष्ण-वासुदेवनी बाह्य उपस्थानशाळा-दीवाने आम-(सभा मंडप) हती त्यां गयो. त्यां पहोंचीने तेणे पोताना चार घंटडीओवाळा रथने ऊभो राख्यो अने पोते नीचे ऊतर्यो ऊतर्या पछी ते पोताना नोकरो-सेवकनी साथे ज्यां कृष्ण-वासुदेव हता त्यां गयो. (उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह) त्यां जईने तेणे कृष्ण-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन प्रमुख ५६ हजार बलिष्ठ राजाओने बन्ने हाथनी अंजलि बनावीने तेने

तथा-पिनद्धग्रैवेयकाद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टे - पिनद्धानि - परिधृतानि ग्रैवेयकाणि-कण्ठभूषणानि यै स्ते तथा, बद्ध=आरोपित संयोजितः आविद्ध=मस्तके परिधृत. विमल=स्वच्छ. वरः चिह्नपट्टः-स्वपक्षबोधकचिह्न : यैस्ते तथा, तथो द्विपदरूमंधारय. तथा-गृहीतायुधप्रहरणा=आयुधानि अस्त्राणि, प्रहरणानि-शस्त्राणि गृहीतानि यैस्ते गृहीतायुधप्रहरणा स्ते, सार्धं संपरिवृतः काम्पिल्यपुर नगर मध्यमध्येन मध्यमार्गेण निर्गच्छति, पञ्चालजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव 'देसप्पते' देशप्रान्त-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'सुरट्ठाजणवयस्स' सौराष्ट्रजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवोपागच्छति उपागत्य द्वारवती नगरीं मध्यमध्येन अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव कृष्णस्य वासुदेवस्य

पुरुष थे, जिन्होंने गले में आभूषणों को पहिररक्खे हैं और मस्तक के ऊपर स्वच्छ, स्वपक्षपोषक चिह्न धारण किया है ऐसे अनेक व्यक्ति थे। तथा आयुध एव प्रहरणों को लेकर अनेक सैनिक जन इसके आसपास हो कर चल रहे थे। सो वह दूत इन सब के साथ २ उस कांपिल्यपुर नगर के बीचोंबीच से होकर निकला। (पञ्चालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ-सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ) चलते २ वह पांचाल जनपद के बीचोंबीच से होता हुआ जहा पर अपने देशकी सीमा का अन्त था वहा आया। वहा आकर वह सौराष्ट्र देशके बीचसे निकलता हुआ जहा द्वारावती नगरी थी वहां आया-(उवागच्छित्ता बारवइ नयरी मज्झ मज्झेण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव कण्हस्स

એવા ઘણા ધનુર્ધરો તેની સાથે હતા, જેઓએ ગળામા આભૂષણો પહેરેલા અને મસ્તક ઉપર સ્વચ્છ સ્વપક્ષ બોધક ચિહ્ન પટો બાધી રાખેલા એવા પણ અનેક પુરુષો તેની સાથે હતા આયુધ અને પ્રહરણોને ઉચકીને પણ ઘણા સૈનિકો તેની બન્ને બાજુએ ચાલી રહ્યા હતા આ રીતે તે દૂત તેઓ બધાની સાથે કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળ્યો (पचाल जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव बारवइ नयरी तेणेव उवागच्छइ) આમ પોતાની યાત્રા પૂરી કરીને તે દૂત પાંચાલ જનપદની વચ્ચોવચ્ચ જ્યા પોતાના દેશની હદ પૂરી થતી હતી ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તે સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને જ્યા દ્વારાવતી નગરી હતી ત્યા આવ્યો (उवाग च्छित्ता बारवइ, नयरिं मज्झ मज्झेण, अणुपविसइ,

बाह्यस्थानशाला—आस्थानमण्डपः, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य चातुर्घण्टमश्वरथं स्थापयति, स्थापयित्वा 'रहाओ' रथात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति—प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य 'मनुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' मनुष्यवागुरापरिक्षिप्तः=मनुष्यसमूह परिवृतः, स दूतः पादविहारचारेण=पादाभ्यां गमनेन यत्रैव कृष्णवासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपगत्य कृष्णं वासुदेवं समुद्रविजयप्रमुखांश्च दशदशार्हान् यावत् बलवत्साहस्रीः, करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्—'तं चेव' तदेव—अत्र पूर्वोक्तमेव वर्णनं बोध्यम् यावत्—समवसरत

वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाण साला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंटं आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) वहां आकर द्वारावती नगरी में बीचोंबीच के मार्ग से होता हुआ प्रविष्ट हो कर वह जहां कृष्ण वासुदेव की बाहिर में उपस्थानशाला—सभामंडप था वहां गया। वहां पहुंचकर उसने अपने चार घंटावाले अश्वरथ को खडा कर दिया। रोक दिया—उसके रुकते ही वह उससे नीचे उतरा। उतर कर वह मनुष्योंके समूहसे परिक्षित (युक्त) हो कर पैदल ही जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां गया। (उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह) वहां जा करके उसने कृष्ण वासुदेव को समुद्रविजय प्रमुख दश दशार्हों को यावत् महासेन प्रमुख ५६, हजार बलिष्ट राजाओंको दोनों हाथों की अंजलिकर और उसे मस्तक पर रखकर

देवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउघंटं आसरहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) त्यां आवीने ते द्वारावती नगरीना मध्यमार्गे थईने नगरमां प्रविष्ट थयो अने त्यारपछी ते ज्यां कृष्ण-वासुदेवनी बाह्य उपस्थानशाळा—दीवाने आम-(सभा मंडप) हती त्यां गयो त्यां पहोंचीने तेणे पोताना चार घंटडीओवाळा रथने ऊभो राख्यो अने पोते नीचे उतर्यो उतर्या पछी ते पोताना नोकरो—सेवकनी साथे ज्यां कृष्ण-वासुदेव हता त्यां गयो (उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवसमुद्दविजयपामुक्खे य दस दसारे जाव बलवगसाहस्सीओ करयल तं चेव जाव समोसरह) त्यां जईने तेणे कृष्ण-वासुदेवने समुद्र विजय प्रमुख दशार्होने यावत् महासेन प्रमुख ५६ हजार बलिष्ठ राजाओने बन्ने हाथनी अंजलि बनावीने तेने

इति पर्यन्तम्, अयमर्थः-काम्पिल्यपुरनगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः कालविलम्बरहितं काम्पिल्यपुरे नगरे समागच्छतेति स दूतः प्रोक्तवान्' इति।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टः यावत्-हर्षवशेन विसर्पद्हृदयस्तं दूतं सत्कारयति तथा सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० १७ ॥

मूलम्-तएण से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि, तएण से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता

नमस्कार किया। यहां पर 'एवं खलु देवाणुप्पिया,' से लेकर समोसरह "तकका पूर्वोक्त पाठ इसके द्वारा कहा गया लगा लेना चाहिये-जिसका तात्पर्य यह है कि कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है सो आपलोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा कर के उसमें शीघ्र पधारे। इस प्रकार (तएण से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) कृष्ण वासुदेव ने उस दूत के मुखसे जब इस समाचार को सुना-तो वे सुनकर और उसे हृदयमें धारण कर बहुत ही अधिक हर्षित एवं संतुष्ट हुए। दूतका उन्होंने सत्कार किया, सन्मान किया। बादमें उसे वहां से विसर्जित कर दिया ॥सू०१७॥

મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અહીં 'एवं खलु देवाणुप्पिया' થી समोसरह' સુધીનો પાઠ દૂત વડે કહેવામાં આવેલો છે એમ સમજી લેવું જોઈએ તેની મતલબ એ છે કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને તેમાં સત્વરે પધારો આ રીતે (तएण से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता पडिविसज्जेइ) કૃષ્ણ-વાસુદેવે દૂતના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાંભળ્યા ત્યારે સાંભળીને અને તેઓને બરાબર હૃદયમાં ધારણ કરીને અત્યંત હર્ષિત તેમજ સંતુષ્ટ થઈને તેમણે દૂતનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું ત્યારપછી તેમણે દૂતને વિદાય કર્યો ॥ સૂત્ર ૧૭ ॥

जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया महया सद्देणं तालेइ तएणं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महसेणपामुक्खाओ छप्पण्णं बलवगसाहस्सीओ ण्हाया विभूसिया जहा विभव इड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल जाव कण्हे वासुदेवे जएणं विजएणं वद्धावेंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह हयगय जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरिकूडसन्निभ गयवइ नरवई दुरूढे, तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामुक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणापामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं बारवइनयरिं मज्झं मज्झेणं निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झं मज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १८ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिक पुरुष शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिय! सभाया सुधर्मायां 'सामुदाइय' सामुदायिकि भेरि ताडय, ततः खलु स कौटुम्बिक पुरुष करतल० यावद्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् कृष्णस्य वासुदेवस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव सभाया सुधर्मायां 'सामुदाइया' सामुदायिकी भेरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सामुदायिकीं भेरी महता २ शब्देन ताडयति, येन महाशब्दो भवति, तथा भेरी ताडयति इत्ये 'त्यर्थः, ततस्तदनन्तर खलु तस्या

'तएण से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि॥

टीकार्थ-(तएण इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कोडुंबियपुरिस सद्दावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला कर (एव वयासी) उनसे ऐसा कहा-(गच्छइ ण तुम देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा सभामें जाओ और वहा जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएण से कोडुंबिय पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव 'सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया' सद्देण तालेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया-और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा मे जहा वह सामुदायिकी भेरी थी वहा आया। वहा आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

'तएण से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण-वासुदेवे (कोडु बिय पुरिस सद्दावेइ) पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने (एव वयासी) तेमने आ प्रमाणे कह्यु के-(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय! तमे सुधर्मा सभामा जाओ अने त्या जईने सामुदायिकी भेरी वगाडो (तएण से कोडु बियपुरिसे कर यल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया २ सद्देण तालेइ) आ जातनी कृष्ण-वासुदेवनी आज्ञाने ते पुरुषे पूणज नम्र पणे बने ... मूकीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार कर्या पछी ते त्याथी ज्या सु... भेरी हती त्या जईने तेणे मोटो अवाज थाय ... वगाडी (तएण ताए भेरीए

सामुदायिक्या भेर्या ताडिताया सत्या समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हा यावत्-महासेन प्रमुखा षट्पञ्चाशद्‌बलवत्साहस्र्याः=षट्पञ्चाशत्-सहस्रप्रमिता बलवन्तो राजानः स्नाता यावद्-सर्वालंकारविभूषिता यथाविभवर्द्धिसत्कारसमुदयेन 'अप्पेगइया' अप्येके-यावद्=केचिद् हयारूढा=अश्वारूढाः केचिद् गजारूढाः, केचिद् रथारूढा, केचिद् पादविहारचारेण यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतल० यावत् कृष्ण वासुदेव जयेन विजयेन=जयविजय शब्देन वर्धयन्ति। ततः खलु कृष्णो वासुदेव कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-भो देवानुप्रियाः! क्षिप्रमेव 'अभिसेक्कं' आभिषेक्य गज

बडे बल से बजायी कि जिससे उससे बडी भारी आवाज निकली (तएण ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजय पामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पण बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी सक्कारसमुदएण अत्थेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति) इस तरह उस सामुयिकी भेरी के बजने पर समुद्रविजय आदि दश दशार्हों ने यावत् ५६ हजार महासेन प्रमुख बलिष्ठ राजाओं ने स्नान किया। यावत् समस्त अलकारों से विभूषित होकर एव सबके सब अपने विभव ऋद्धि और सत्कार के अनुसार जहा कृष्ण वासुदेव थे वहा आये। इनमे कितनेक घोडों पर कितनेक हाथियों पर कितनक रथों पर बैठकर आये और कितनेक पैदल ही चलकर आये (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्ह वासुदेव जएण विजएण वद्धावेंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दवित्ता एव वयासी, खिप्पामेव

तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव महासेण पामुक्खाओ छप्पण बलवगसाहस्सीओ ण्हाया जाव विभूसिया जहा विभव इड्ढी सक्कारसमुदएण अप्पेगइया जाव पायविहारचारेण जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति) આ રીતે તે સામુયિકી ભેરી વગાડવામા આવી ત્યારે સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોએ યાવત ૫૬ હજાર મહાસેન પ્રમુખ બલિષ્ઠ રાજાઓએ સ્નાન કર્યું યાવત તેઓ સર્વે સમસ્ત અલંકારોથી સુસજ્જ થઇને પોતાના વિભવ અને સત્કારની સાથે જ્યા કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યા ગયા આમા કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર, કેટલાક રથો ઉપર સવાર થઇને ત્યા પહોચ્યા હતા તો કેટલાક પગે ચાલીને જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે હાજર થયા હતા (उवागच्छित्ता करयल जाव कण्हं वासुदेवं जएण विजएण वद्धावेंति तएण से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पा

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिक पुरुषं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! सभायां सुधर्मायां 'सामुदाइय' सामुदायिकिं भेरिं ताडय, ततः खलु स कौटुम्बिक पुरुषः करतल० यावद्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावत् कृष्णस्य वासुदेवस्यैतमर्थं प्रतिशृणोति, प्रतिश्रुत्य यत्रैव सभायां सुधर्मायां 'सामुदाइया' सामुदायिकी भेरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सामुदायिकीं भेरीं महता २ शब्देन ताडयति, येन महाशब्दो भवति, तथा भेरीं ताडयति स्मे'त्यर्थः, ततस्तदनन्तर खलु तस्या

'तएण से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्ण वासुदेवने (कोडुंबियपुरिस सद्दावेइ) अपने कौटुम्बिक पुरुष को बुलाया, बुला कर (एव वयासी) उनसे ऐसा कहा-(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय तुम सुधर्मा सभामें जाओ और वहा जाकर सामुदाय की भेरी को बजाओ (तएण से कोडुंबिय पुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता जेणेव 'सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया२ सद्देण तालेइ) इस प्रकार की कृष्ण वासुदेव की आज्ञा को उस पुरुष ने बड़े विनय के साथ अपने दोनों हाथों को मस्तक पर रखकर स्वीकार कर लिया-और स्वीकार करके फिर वह सुधर्मा सभा मे जहा वह सामुदायिकी भेरी थी वहा आया। वहा आकर उसने उस सामुदायिकी भेरी को इसतरह से

'तएण से कण्हे वासुदेवे' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्ण-वासुदेवे (कोडुंबिय पुरिस सद्दावेइ) पोताना कौटुंबिक पुरुषोने बोलाव्या अने बोलावीने (एव वयासी) तेमने आ प्रमाणे कह्यु के-(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! सभाए सुहम्माए सामुदाइय भेरिं तालेहि) हे देवानुप्रिय! तमे सुधर्मा सभामा जाओ अने त्या जईने सामुदायिकी भेरी वगाडो (तएण से कोडुंबियपुरिसे करयल जाव कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया भेरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सामुदाइय भेरिं महया २ सद्देण तालेइ) आ जातनी कृष्ण-वासुदेवनी आज्ञाने ते पुरुषे खूबज नम्र पणे बने हाथोने मस्तके मूकीने स्वीकारी लीधी, स्वीकार कर्या पछी ते त्याथी ज्या सुधर्मा सभामा सामुदायिकी भेरी हती त्या जईने तेणे मोटो अवाज थाय तेम ते सामुदायिकी भेरीने वगाडी (तएण ताए भेरीए

वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्हैं यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखाभिरनेकाभिर्गणिका साहस्रीभिः सार्धं संपरिवृतः सर्वद्धर्या=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपणवपटहभेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निर्गत्य सौराष्ट्रजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चालजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काम्पिल्यपुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय= गन्तु प्रवृत्तः ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहा स्नान घर था वहा गये-वहा जाकर उन्होने मुक्ताओं सहित गवाक्षो से सुन्दर उस स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके फिर सर्व अलकारो से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरूढ हो गये। (तएणं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्वड्ढीए जाव रवेण बारवइनयरिं मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचाल जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आरूढ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय आदि दश दशार्हो यावत् अगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओ के साथ २ छत्र आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शख, पणव, पटह, भेरी आदि बाजो की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

त्यारपछी ते कृष्ण-वासुदेव ज्यां स्नानघर हतु त्या गया त्या जईने तेमणे मोती जडेला गवाक्षोथी रमणीय लागता स्नानघरमा स्नान कर्यु अने त्यार पछी बधा अलकारोथी विभूषित थईने-नरपति अजनगिरिना शिखर जेवा विशाल कृष्ण वर्णवाळा गजपति उपर सवार थई गया (तएण से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण बारवइ नयरिं मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) सवार थई ने तेओ समुद्र विजय वगेरे दश दशार्हो यावत् अगसेना प्रमुख हजारो गणिकाओनी साथे छत्र विगेरे राजचिह्न रूप विभूतिथी युक्त थईने शख, पणव, पटह, भेरी वगेरे तुमुल ध्वनि स्थाने द्वारवती नगरीनी वच्चे थईने पसार थया त्याथी पसार

रत्नं=मम मुख्यहस्तिनं परिकल्पयत-सज्जीकुरुत, हयगजरथपदातिकलितं चतुरङ्गबलं सज्जीकुरुत, एतां ममाज्ञां प्रत्यर्पयत, इति ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा तदाज्ञां स्वीकृत्य सर्वं सज्जीकृत्य वाहनं बलं च सर्वं सज्जीकृतमस्माभिरिति यावत् प्रत्यर्पयन्ति=निवेदयन्ति स्म। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव मज्जनगृहं तत्रैवोपागच्छति, मज्जनगृहं कीदृशमित्याह-'समुक्तजालाकुलाभिरामे' समुक्तजालाकुलाभिरामं मुक्ताभिः सहितानि जालानि गवाक्षास्तैराकुलं व्याप्तमत एवाभिरामं सुन्दरम्, उपागत्य स तत्र स्नानं कृत्वा यावत्-सर्वालङ्कारविभूषितः, अञ्जनगिरिकूटसन्निभम्=उन्नतं श्यामवर्णमित्यर्थः, गजपतिं=हस्तिषु मुख्यं हस्तिनं नरपतिः=श्री कृष्णवासुदेवः 'दुरूढे' दुरूढः=समारूढः, ततः खलु स कृष्णो

भो देवाणुप्पिया ! अभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगय जाव पच्चप्पिणंति) वहां आकर उन्होंने दोनों हाथ जोड़कर कृष्ण वासुदेव को नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा बधाई दी-इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही मेरे मुख्य हाथी को सजाओ-तथा-हय, गज, रथ और पदातिरूप चतुरंग युक्त सेना को भी सजाकर तैयार करो। पीछे हमको इसकी खबर दो। इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने-"तथास्तु" कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार लिया और स्वीकार करके बल और वाहन सब हमने सज्जित कर दिये हैं इस प्रकार की खबर उन्हें पीछे कर दी। (तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरि कूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे) इसके पश्चात् वे

मेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह, हयगयजाव पच्चप्पिणंति) त्यां જઈને તેઓએ બન્ને હાથ જોડીને 'જયવિજય' શબ્દોથી કૃષ્ણ-વાસુદેવને નમસ્કાર કરતાં અભિનંદિત કર્યા ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સત્વરે તમે મારા મુખ્ય હાથીને તેમજ બીજી પણ ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળની ચતુરંગિણી સેનાને સુસજ્જ કરો અને સેના સુસજ્જ થઈ જાય ત્યારે અમને ખબર આપો. ત્યારપછી કૌટુંબિક પુરુષોએ 'તથાસ્તુ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેઓ પોતાના કામમાં પરોવાઈ ગયા જ્યારે કામ થઈ ગયું ત્યારે તેઓએ "સેના અને વાહન તૈયાર છે" આ જાતની ખબર આપી (तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता समुत्तजालाकुलाभिरामे जाव अजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे)

वासुदेव समुद्रविजयप्रमुखैर्दशार्हैं यावत् अनङ्गसेनाप्रमुखाभिरनेकाभिर्गणिकासाहस्रीभिः सार्धं सपरिवृतः सर्वर्द्धया=छत्रादिराजचिह्नरूपया यावत्-शङ्खपणवपटहभेर्यादिरवेण द्वारवती नगर्या मध्यमध्येन=निर्गच्छति, निर्गत्य सौराष्ट्रजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव देशप्रान्त-देशसीमा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चालजनपदस्य मध्यमध्येन यत्रैव काम्पिल्यपुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्तः ॥ सू० १८ ॥

कृष्ण वासुदेव जहां स्नान घर था वहां गये-वहां जाकर उन्होंने मुक्ताओं सहित गवाक्षों से सुन्दर उस स्नान घर में स्नान किया-स्नान करके फिर सर्व अलकारो से विभूषित होकर वे नरपति अजन गिरि के शिखर जैसे-विशाल कृष्णवर्ण वाले गजपति पर आरूढ हो गये। (तएण से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणंगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणिया साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्वड्डीए जाव रवेण बारवइनयरिं मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचाल जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) आरूढ होकर वे कृष्ण वासुदेव समुद्र विजय आदि दश दशार्हों यावत अगसेना प्रमुख हजारों गणिकाओं के साथ २ छत्र आदि राज चिह्नरूप विभूति से युक्त होकर शख, पणव, पटह, भेरी आदि बाजो की तुमुल ध्वनि पूर्वक द्वारावती नगरी के बीच से

ત્યારપછી તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યા સ્નાનઘર હતુ ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે મોતી જડેલા ગવાક્ષોથી રમણીય લાગતા સ્નાનઘરમા સ્નાન કર્યુ અને ત્યાર પછી બધા અલકારોથી વિભૂષિત થઈને-નરપતિ અજનગિરિના શિખર જેવા વિશાળ કૃષ્ણ વર્ણવાળા ગજપતિ ઉપર સવાર થઈ ગયા (तएण से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव अणगसेणा पामुक्खेहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण बारवइ नयरिं मज्झ मज्झेण निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता सुरट्ठा जणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव देसप्पते तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचालजणवयस्स मज्झ मज्झेण जेणेव कपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) સવાર થઈ ને તેઓ સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ અનગસેના પ્રમુખ હજારો ગણિકાઓની સાથે છત્ર વિગેરે રાજચિહ્ન રૂપ વિભૂતિથી યુક્ત થઈને શખ, પણવ, પટહ, ભેરી વગેરે તુમુલ ધ્વનિ સ્થાને દ્વારવતી નગરીની વચ્ચે થઈને પસાર થયા ત્યાથી પસાર

मूलम्—तएण से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर नयरं तत्थ ण तुमं पंडुरायं सपुत्तय जुहिट्ठिल्लं भीमसेण अज्जुण नउल सहदेव दुज्जोहणं भाइसयसमग्ग गंगेय विदुर दोणं जयद्दह सउणी किवं आसत्थाम करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह, तएण से दूए एव वयासी जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२। एएणेव कमेणं तच्चं दूय चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्ह अगराय सेल्लं नंदिराय करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं तत्थ ण तुमं सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमग दूय हत्थसीसनयर तत्थ ण तुमं दमदत राय करयल तहेव जाव समोसरह। छट्ठ दूयं महुर नयरिं तत्थ ण तुम धरं राय करयल जाव समोसरह। सत्तम दूयं रायगिहं नयर तत्थ ण तुम सहदेव जरासिंधुसुय करयल जाव समोसरह। अट्ठम दूय कोडिण्ण नयर तत्थ ण तुम रुप्पि भेसगसुय करयल तहेव जाव समोसरह। नवम दूय विराडनयर तत्थ ण तुम कीयग भाउसय समग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूय अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले। निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर वहां आये जहां देश की सीमा थी। उस सीमा पर आकर के फिर वे पांचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहां कांपिल्य पुर नगर था उस ओर चल दिये।'

थईने ...

... थईने पोताना देशनी हद सुधी पहोंच्या
... थईने ज्यां कांपिल्यपुर नगर हतुं ते

नगरेसु अणेगाइ रायसहस्साइ जाव समोसरह । तएण से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर जाव समोसरह। तएण ताइं अणेगाइं रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० तं दूय सक्कारेंति सक्कारित्ता सम्माणेंति सम्माणित्ता पडिविसज्जिंति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयर ण्हाया सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहितोर नगरेहितो अभिनिग्गच्छतिर जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० १९ ॥

टीका—' तएण से' इत्यादि । तत खलु स द्रुपदो राजा द्वितीय दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व पाण्डु राज सपुत्रर=पुत्रै सहित

' तएण से दुवए राया ' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) उस के बाद (से दुवए राया) उस द्रुपद राजाने (दोच्च दूय सद्दावेइ) अपने दूसरे दूतको बुलाया (सद्दावित्ता एव वयासी) बुलाकर उससे ऐसा कहा—गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया हत्थिणाउर नयर तत्थ ण तुम पडुराय सपुत्तय जुहिट्ठिल्ल भीमसेण अज्जुण नउल सहदेव दुज्जोहण भाइसयसमग्ग गगेय विदुर दोण जयद्दह सउणीकिव आसत्थाम करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह) बुलाकर उससे ऐसा कहा हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ—वहा जाकर तुम पुत्र

' तएण से दुवए राया ' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (से दुवए राया) ते द्रुपद राजाओ (दोच्च दूय सद्दावेइ) पोताना बीजा दूतने बोलाव्यो (सद्दावित्ता एव वयासी) बोलावीने तेने आ प्रमाणे कह्यु के (गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया हत्थिणाउर नयर, तत्थ ण तुम पडुराय सपुत्तय जुहिट्ठिल्ल भीमसेण अज्जुर्ण नउल सहदेव दुज्जोहण भाइसयसमग्ग गगेय विदुर दोण जयद्दह सउणी किव आसत्थाम करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह) हे देवानुप्रिय ! तमे हस्तिनापुर नगरमां जाओ।

मूलम्—तएण से दुवए राया दोच्चं दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छ णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं जुहिट्ठिल्लं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं दुज्जोहणं भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणी किवं आसत्थामं करयल जाव कट्टु तहेव समोसरह, तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए२। एएणेव कमेणं तच्चं दूयं चंपानयरिं तत्थ णं तुमं कण्हं अंगरायं सेल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सुत्तिमइं नयरिं तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमगं दूयं हत्थसीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु य गामागार

होते हुए निकले। निकलकर वे सौराष्ट्र देश के बीचो बीच से चलकर वहां आये जहां देश की सीमा थी। उस सीमा पर आकर के फिर वे पांचाल जनपद के मध्य से होते हुए जहां कांपिल्य पुर नगर था उस ओर चल दिये।' सू० १८

થઈને તેઓ સૌરાષ્ટ્ર દેશની વચ્ચે થઈને પોતાના દેશની હદ સુધી પહોંચ્યા ત્યાંથી તેઓ પાંચાલ જનપદની વચ્ચે થઈને જ્યાં કાંપિલ્યપુર નગર હતું તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૧૮ ॥

नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं, तत्थ ण तुम सिसुपाल दमघोससुय पच-भाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहा से हस्तिनापुर को चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बडे विनय पूर्वक इस प्रकार कहा-कापिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयवर होगा-सो आप सब कृपाकर शीघ्रातिशीघ्र वहा पधारे। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पाडुराजा आदि से सन्मानित होकर वहा से वापिस हो गया। पाडुराज आदि स्नान कर सर्वालकारो से विभूषित होकर गजारूढ हो, चतुरगिणी सेना के साथ अपनी ऋद्धि आदि के अनुसार यावत् जहा कापिल्यपुर नगर था उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहां पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस मे विशेषता केवल इतनी है कि वे सब जब द्वारावती नगरी से कापिल्यपुर नगर को जाने के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी-यहा वह नही है। इसी क्रम से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया-बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं तत्थण तुम सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयस प-रिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) त्यारपछी दूत पोताना राजानी आज्ञा प्रमाणे त्याथी हस्तिनापुर तरफ रवाना थई गयो त्या पहोचीने तेणे पाडु राजा वगेरे राजाओने नम्रपणे आ रीते विनति करी के-कापिल्यपुरमा द्रौपदीनो स्वयवर थशे तो आप सौ कृपा करीने सत्वरे त्या पधारो आ रीते समाचारो आपीने ते दूत पाडुराज वगेरेथी सन्मान पामीने त्याथी पाछो फर्यो पाडुराज वगेरे बधाओ पण स्नान वगेरेथी परवारीने तेमज सर्वा लकारोथी सुसज्ज थईने हाथीओ उपर सवार थया अने पोत पोतानी चतु-रगिणी सेना तेमज ऋद्धिनी साथे यावत् जे तरफ कापिल्यपुर नगर हतु ते तरफ रवाना थया आ प्रमाणे कृष्ण-वासुदेवनी जेमज अहीं पण वर्णन समजी लेवु जोईए कृष्ण-वासुदेवना पाठमा पाडुराज करता एटली विशेषता हती के तेओ ज्यारे द्वारावती नगरीनी बहार नीकळ्या त्यारे तेमनी साथे भेरी पण हती, पाडुराजनी साथे भेरी न हती आ प्रमाणे द्रुपद राजाए त्रीजा दूतने बोलाव्यो अने तेने पण आ रीते कह्यु के हे देवानुप्रिय ! तमे

युधिष्ठिर भीमसेनम् अर्जुन नकुल 'सहदेव दुर्योधन भ्रातृशत=शतभ्रातृभिः सहित, गाङ्गेय=भीष्म, विदुर द्रोण जयद्रथ शकुनि ' किव ' कृपम्=कृपाचार्य, अश्वत्थामान करतल० यावत् मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, तथैव समवगन्त यथा पूर्वमुक्त तथैवात्र ' समवसरत ' इतिपर्यन्त योज्यम् अथ यावः-जयविजयशब्देन वर्धयित्वा एव ब्रूहि-काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयवरो भविष्यति तस्माद् खलु हे देवानुप्रियाः ! यूय द्रुपद राजानमनुगृह्णन्त. कालविलम्बरहित मेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत । तत स दूतो द्रुपदस्य वचनमङ्गीकृत्य हस्तिना पुर गत्वा पाण्डुराजादिकमेवमवादीत्=' काम्पिल्यपुरे द्रौपद्या' स्वयवरो भविष्यति तत्र शीघ्रमागच्छत ' इति ततोऽसौ दूत' पाण्डुराजादिना सम्मानितो विसर्जितश्च ' जहा वासुदेवे ' यथा-वासुदेव' कृष्णस्तद्वदत्रापि विज्ञेयम्-' नवर' विशेषस्तु ' भेरी नत्थि ' भेरीनास्ति, कृष्णवासुदेव इव पाण्डुराजादिः स्नात सर्वालङ्कार विभूषितो गजाश्वरथचतुरङ्गसेनया सपरिवृत' सर्वर्द्धया युक्तो यावत् यत्रैव काम्पिल्य पुर नगर तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्त' ।

सहित पाण्डुराज को, युधिष्ठिर को, भीमसेन को, अर्जुन को नकुल को, सहदेव को, सौभाईयों सहित दुर्योधन को, गागेय भीष्म पितामह को विदुर को, द्रोण को जयद्रथ को, शकुनि को, कृपाचार्य को, और द्रोणा चार्य के पुत्र अश्वत्थामा को पहिले दोनों हाथों की अञ्जलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार करना उन सबको जय विजय आदि शब्दों से वधा देना । वधाकर फिर इस प्रकार कहना कि कांपिल्य पुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर है, इस लिये हे देवानुप्रियों ! आप सब द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके विना किसी विलब के शीघ्रही कापिल्यपुर नगर में पधारें। (तएण से दूए एव वयासी-जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि, जाव जेणेव कपिल्लपुरे

અને ત્યા જઇને તમે પુત્રો સહિત પાડુરાજને, યુધિષ્ઠિરને, ભીમસેનને, અર્જુનને નકુલને સહદેવને, સો ભાઇઓ સહિત દુર્યોધનને, ગાગેય ભીષ્મ પિતામહને, વિદુરને, દ્રોણને, જયદ્રથને, શકુનિને, કૃપાચાર્યને અને દ્રોણાચાર્યના પુત્ર અશ્વત્થામાને સૌ પહેલા કરબદ્ધ થઇને-અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને ' જય વિજય ' શબ્દોથી તેઓને અભિનદિત કરજો ત્યારપછી તમે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને સત્વરે કાપિલ્ય ન પધારો (तएण से दूए एव वयासी-जहा वासुदेवे नवर भेरी नत्थि

नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जावसमोसरह चउत्थ दूयं सुत्तिमइ नयरिं, तत्थ ण तुम सिसुपाल दमघोससुय पच भाइसयसपरिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) इस के बाद दूत अपने राजा की आज्ञा प्रमाण कर वहा से हस्तिनापुर को चला गया। वहाँ पहुँच कर उसने पांडुराजा आदि से बडे विनय पूर्वक इस प्रकार कहा–कापिल्यपुर में द्रौपदी का स्वयवर होगा–सो आप सब कृपाकर शीघ्रातिशीघ्र वहा पधारें। इस तरहके समाचार देकर वह दूत पाडुराजा आदि से सन्मानित होकर वहां से वापिस हो गया। पाडुराज आदि स्नान कर सर्वालकारो से विभूपित होकर गजारूढ हो, चतुरगिणी सेना के साथ अपनी ऋद्धि आदि के अनुसार यावत् जहा कापिल्यपुर नगर था उस ओर चल दिये। इस तरह कृष्ण वासुदेव की तरह यहा पर सब पाठ लगा लेना चाहिये। उस पाठ से इस मे विशेषता केवल इतनी है कि वे सब जब द्वारावती नगरी से कापिल्यपुर नगर को जाने के लिये निकले तो उनके साथ भेरी थी–यहा वह नही है। इसी क्रम से द्रुपद ने तीसरे दूत को बुलाया–बुलाकर उससे भी इसी प्रकार से

पुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए २ एएणेव कमेण तच्च दूय चपानयरिं तत्थ ण तुम कण्ण अगराय सेल्ल नदिराय करयल तहेव जाव समोसरह चउत्थ दूय सुत्तिमइ नयरिं तत्थण तुम सिसुपाल दमघोससुय पचभाइसयसप- रिवुड करयल तहेव जाव समोसरह) त्यारपछी दूत पोताना राजानी आज्ञा प्रमाणे त्याथी हस्तिनापुर तरफ रवाना थई गयो त्या पहोचीने तेणे पाडु राजा वगेरे राजाओने नम्रपणे आ रीते विनति करी के-कापिल्यपुरमा द्रौपदीनो स्वयवर थशे तो आप सौ कृपा करीने सत्वरे त्या पधारो आ रीते समाचारो आपीने ते दूत पाडुराज वगेरेथी सन्मान पामीने त्याथी पाछो फर्यो पाडुराज वगेरे बधाओ पण स्नान वगेरेथी परवारीने तेमज सर्वा लकारोथी सुसज्ज थईने हाथीओ उपर सवार थया अने पोत पोतानी चतु रगिणी सेना तेमज ऋद्धिनी साथे यावत् जे तरफ कापिल्यपुर नगर हतु ते तरफ रवाना थया आ प्रमाणे कृष्ण-वासुदेवनी जेमज अहीं पण वर्णन समजी लेवु जोईए कृष्ण-वासुदेवना पाठमा पाडुराज करता एटली विशेषता हती के तेओ ज्यारे द्वारावती नगरीनी बहार नीकळ्या त्यारे तेमनी साथे भेरी पण हती, पाडुराजनी साथे भेरी न हती आ प्रमाणे द्रुपद राजाए त्रीजा दूतने बोलाव्यो अने तेने पण आ रीते कह्यु के हे देवानुप्रिय ! तमे

एतेनैव प्रमेण तृतीय दूत शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरीम्, तत्र गत्वा कर्ण=कर्णनामानम्-अङ्गराजम्=अङ्गदेशस्याधिपतिं, तथा 'सेल्ल' शैल्य=शैल्यनामकं नन्दिराज=नन्दिदेशाधिप करतल परिगृहीत दशनख यावत्-मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा एव ब्रूहि-'तहेव' तथैव=पूर्ववदेव बोध्यम्-तद् यथा-"काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयवरो भविष्यति, तस्माद् यूय खलु हे देवानुप्रियाः ! यूय द्रुपद राजानमनुगृह्णन्त शीघ्रमेव काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत" इति एव द्रुपदो राजा चतुर्थं दूत शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्व शुक्तिमतीं नगरीं, तत्र खलु त्व शिशुपाल दमघोषसुत पञ्चभ्रातृशतसपरिवृत करतल० यावन्मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा ब्रूहि-'तहेव यावत् समवसरत' यथा पूर्वमुक्त तद्वदत्र 'समवसरत' इति

कहा-कि हे देवानुप्रिय ! तुम चपानगरी जाओ वहा अगदेश के अधिपति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति शैल्यराजा को करतल परिगृहीत दशनखवाली अजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना बाद में जय विजय शब्दों से उन्हें बधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा कहना-कि कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है, सो हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके जल्दी से जल्दी कांपिल्यपुर नगर पधारे। इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ वहा जाकर दमघोष के पुत्र तथा पाचसौ अपने भाइयों से युक्त शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशनखवाली अजलि मस्तक पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि कांपिल्यपुर नगरमें

ચપા નગરીમા જાઓ, ત્યા અગ દેશના અધિપતિ કર્ણ રાજાને તેમજ નદિ દેશના અધિપતિ શૈલ્યરાજાને હાથોની અજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને જય-વિજય શબ્દોથી તેમને અભિનદિત કરજો ત્યારપછી તેમને વિનતી કરજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયવર થવાનો છે તો હે દેવાનુપ્રિયો તમે સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ કાપિલ્યપુર નગરમા આવો આ રીતે દ્રુપદ રાજાએ ચોથા દૂતને બોલાવ્યો અને તેને પણ આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તમે શુક્તિમતી નગરમા જાઓ અને ત્યા જઈને દમઘોષના પુત્ર શિશુપાલ રાજાને જ પોતાના પાચસો ભાઈઓ સહિતકરબદ્ધ થઈને અજલિ મસ્તકે મૂકીને વિનતી આ પ્રમાણેના સમાચાર આપજો કે કાપિલ્યપુર નગરમા દ્રુપદ ર

पर्यन्त वाच्यमित्यर्थः । एवं द्रुपदो राजा पञ्चमकं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हस्तिशीर्षनगरं, तत्र खलु त्वं दमदन्त=दमदन्तनामकं राजानं करतलपरिगृहीतदशनखं यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-' तथैव यावत् समवसरत ' इति पूर्ववदेवात्रापि ' समवसरत ' इतिपर्यन्तं वाच्यम् एवं स द्रुपदो राजा षष्ठं दूतं शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं मथुरां नगरीं, तत्र खलु त्वं धरं=धरनामकं राजानं ' करतल० यावत् समवसरत' अत्रापि पूर्ववद्दूतगमनादिकं बोध्यम् , एवं सप्तमं दूतं शब्दयित्वा एवमवदत्-गच्छ खलु त्वं राजगृहं नगरम् , तत्र खलु त्वं सहदेवं जरासिन्धुसुतं ' करतल० यावत् समवसरत ' इति पूर्ववत्-द्रौपद्याः स्वयंवरस्य वार्ता कथयित्वा ' काम्पिल्यपुरे नगरे समवसरत ' इति ब्रूहि । ततः स

द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है-सो आप कृपा करके शीघ्र ही वहां पधारें। (पंचमगं दूयं हत्थिसीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह,छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थणं तुमं सहदेवं जरासिंधुसुयं करयल जाव समोसरह, अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थणं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह, नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह, दसमं दूयं अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह) इसी तरह पांचवे दूत को हस्तिशीर्षनगर में दमदन्त नाम के राजा के पास छठे दूत को मथुरा नगरी में धर राजा के पास, सातवे दूत को राजगृह नगर मे जरासिंधु के पुत्र सहदेव के पास

होनो स्वयंवर थवानो छे એથી तमे कृपा करीने अविलंब त्यां पधारो. (पंचमगं दूयं हत्थिसीसनयरं तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल तहेव जाव समोसरह छट्ठं दूयं महुरं नयरिं तत्थणं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासिंधु सुयं करयल जाव समोसरह अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं तत्थणं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह नवमं दूयं विराडनयरं तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसय समग्गं करयल जाव समोसरह, दसमं दूयं अवसेसेसु गामागर नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह) આ પ્રમાણે પાંચમા દૂતને હસ્તિશીર્ષ નગરમાં દમદન્ત નામના રાજાની પાસે, છઠ્ઠા દૂતને મથુરા નગરીમાં ધર રાજાની પાસે, સાતમા દૂતને રાજગૃહ નગરમાં જરાસિંધુના પુત્ર સહદેવની પાસે, આઠમા દૂતને કૌંડિન્ય નગરમાં ભીષ્મકના પુત્ર રૂકિમ રાજાની પાસે, નવમા દૂતને

एतेनैव क्रमेण तृतीयं दूतं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! चम्पानगरीम्, तत्र खलु कर्ण=कर्णनामकम्-अङ्गराजम्=अङ्गदेशस्याधिपतिं, तथा 'सेल्लं' शैल्यं=शैल्यनामकं नन्दिराजं=नन्दिदेशाधिपं करतलपरिगृहीत दशनखं यावत्-मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा एवं ब्रूहि-'तहेव' तथैव=पूर्ववत्सर्वं बोध्यम्-तद् यथा-"काम्पिल्यपुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञः पुत्र्या द्रौपद्याः स्वयंवरो भविष्यति, तस्माद् गच्छत हे देवानुप्रियाः ! यूयं द्रुपदं राजानमनुगृह्णन्तः शीघ्रमेव काम्पिल्यपुरं नगरं समवसरत" इति एवं द्रुपदो राजा चतुर्थं दूतं शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं शुक्तिमतीं नगरीं, तत्र खलु त्वं शिशुपालं दमघोषसुतं पञ्चभ्रातृशतसंपरिवृतं करतल० यावन्मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा ब्रूहि-'तहेव जाव समोसरह' यथा पूर्वमुक्तं तद्वत् 'समवसरत' इति

कहा-कि हे देवानुप्रिय ! तुम चंपानगरी जाओ वहां अंगदेश के अधिपति कर्ण राजा को तथा नन्दिदेश के अधिपति शैल्यराजा को करतल परिगृहीत दशनखवाली अंजलि मस्तक पर रखकर नमस्कार करना बाद में जय विजय शब्दों से उन्हें वधाई देकर पूर्व की तरह ऐसा कहना-कि कांपिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयंवर होने वाला है, सो हे देवानुप्रियों ! आपलोग द्रुपद राजा पर कृपा करके जल्दी से जल्दी कांपिल्यपुर नगर पधारें। इसी तरह द्रुपद ने चौथे दूत को बुलाकर उससे ऐसा ही कहा-कि तुम शुक्तिमती नगरी में जाओ वहां जाकर दमघोष के पुत्र तथा पांचसौ अपने भाइयों से युक्त शिशुपाल राजा से करतल परिगृहीत दशनखवाली अंजलि मस्तक पर रखकर कहना, पहिले की तरह ऐसा कहना कि कांपिल्यपुर नगरमें

ચંપા નગરીમાં જાઓ, ત્યાં અંગ દેશના અધિપતિ કર્ણ રાજાને તેમજ નંદિ દેશના અધિપતિ શૈલ્યરાજને હાથોની અંજલિ બનાવીને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કરજો અને જય-વિજય શબ્દોથી તેમને અભિનંદિત કરજો ત્યારપછી તેમને વિનંતી કરજો કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો હે દેવાનુપ્રિયો તમે સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલંબ કાંપિલ્યપુર નગરમાં આવો આ રીતે દ્રુપદ રાજાએ ચોથા દૂતને બોલાવ્યો અને તેને પણ આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે શુક્તિમતી નગરમાં જાઓ અને ત્યાં જઈને દમઘોષના પુત્ર શિશુપાલ રાજાને જ પોતાના પાંચસો ભાઈઓ સહિતકરબદ્ધ થઈને અંજલિ મસ્તકે મૂકીને વિનંતી કરતાં આ પ્રમાણેના સમાચાર આપજો કે કાંપિલ્યપુર નગરમાં દ્રુપદ

सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य यावत्-समवसरत, ' समवसरत ' इति पर्यन्त दूतवाक्य पूर्ववद् बोध्यम् । ततः खलु तानि अनेकानि राजसहस्राणि तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूत सत्कारयन्ति=सत्कृत कुर्वन्ति समानयन्ति,सत्कार्य, समान्य प्रतिविसर्जयन्ति ।

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसख्यका राजानः,=प्रत्येक २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह) वह दशवा दूत उसी तरह से-पहिले के दूतों के समान कांपिल्य नगर से निकला और निकल कर जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहा पर अनेक राजसहस्रों के पास गया-वहा जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है-सो आपसब लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कांपिल्य पुर नगर पधारें (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेंति, सक्कारित्ता सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेति) इस प्रकार वे अनेक सहस्र राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित बनकर परम सतोष को प्राप्त हुए । उन्होंने उस दूत का सत्कार किया सत्कार करके सन्मान किया और सन्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित कर दिया-भेजदिया। (तएण ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय

समोसरह) ते दशमो दूत बधानी जेम कांपील्य नगरथी नीकळ्यो अने नीकळीने ज्या ग्राम आकर अने नगर हता त्या अनेक सहस्रो राजाओनी पासे गयो त्या जईने नम्रपणे तेणे सहुने आ प्रमाणे कह्यु के कांपिल्य नगरमा द्रुपद राजानी पुत्री द्रौपदीनो स्वयवर थवानो छे तो आप सौ द्रुपद राजा उपर कृपा करीने अविलब कांपिल्य नगरमा पधारो (तएण ताइ अगणोइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोचा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेति सक्कारित्ता, सम्माणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति) आ रीते सहस्रो राजाओ ते दूतना मुखथी आ समाचार साभळीने अने तेने पोताना हृदयमा धारण करीने खूब ज प्रसन्न तेमज परम सतुष्ट थया तेओए दूतनो सत्कार कर्यो अने सन्मान कर्यु त्यारपछी दूतने तेओए विदाय आपी (तएण ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेय २ ण्हाया

द्रुपदो राजा अष्टम दूत शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं कौण्डिन्यनगर तत्र खलु त्वं ' रुक्मि ' रुक्मिणं=रुक्मिनामक भीष्मकसुत करतल तथैव यावत् समव सरत पूर्ववत् ' समवसरत ' इति पर्यन्त वाच्यम् । एव स द्रुपदो राजा नवम दूत शब्दयित्वाऽवादीत्-गच्छ खलु त्वं विराटनगर, तत्र गच्छ त्वं ' कीचग ' कीचक-कीचकनामक राजान शतभ्रातृसहित करतल यावत् समवसरत अत्रापि व्याख्या पूर्ववत् । एव स द्रुपदो राजा दशम दूत शब्दयित्वाऽवादीत्-अवशेषेषु च ग्रामाकर नगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि यावत् समवसरत, अत्रापि व्याख्या पूर्ववत्, ततस्तदनन्तर खलु स दूतस्तथैव=पूर्वोक्तदूतवत् निर्गच्छति काम्पिल्यनगरात् नि.

में आठवें दूत को कौण्डिन्य नगर में भीष्मक के पुत्र रुक्मि राजा के पास में नौवें दूत को विराट नगर में सौ भाइयों से युक्त कीचक के पास में, और दशवें दूतो को अवशिष्ट ग्रामों में आकरों में एव नगरों में हजारों राजाओं के पास जाने के लिये कहा। इन दूतों को राजा द्रुपद ने यह समझादिया कि तुम लोग जब इन राजाओं के पास जाओ तब पहिले उन्हे दानों हाथ जोड़कर नमस्कार करना और कहना कि कांपिल्य पुर नगर मे द्रुपदकी पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है सो आप लोग उस में द्रुपद राजा उपर दया कर के शीघ्र से शीघ्र पधारें। राजाकी आज्ञानुसार तीसरे दूतसे लेकर नौवें दूत तक समस्त दूत जिन्हे २ जहां २ जाने को कहा था-वे वहां२ चले गये। वहा जाकर उन्हों ने जैसा द्रुपद राजा ने इन से करने एव कहने को कहा था-वैसा ही उन्हो ने वहा २ किया और कहा। इस तरह पहिले की तरह यहां तक सब व्याख्या समझलेनी चाहिये। (तएण से दूए तहेव निगच्छइ,

વિરાટ નગરમા સે ભાઇઓથી યુક્ત કીચકની પાસે અને દશમા દૂતને બાકી રહી ગયેલા બીજા ગ્રામોમા આકરોમા અને નગરોમા હજારો રાજાઓની પાસે જવા હુકમ કર્યો આ બધા દૂતોને રાજા દ્રુપદે જતા પહેલા આ વાત સરસ રીતે સમજાવી દીધી હતી કે જ્યારે તમે રાજાઓની પાસે જાઓ ત્યારે સૌ પહેલા પોતાના બન્ને હાથ જોડીને તેઓને નમસ્કાર કરજો અને ત્યારપછી તમે તેમને વિનતી કરજો કે કાપિલ્ય નગરમા દ્રુપદની પુત્રી દ્રૌપદીને સ્વયવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલબ ત્યા પધારો રાજાની આજ્ઞા મુજબ ત્રીજા દૂતથી માડીને નવમા દૂત સુધીના બધા દૂતો જ્યા જ્યા તેઓને જવાનુ હતુ ત્યા ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેઓએ દ્રુપદ રાજાએ જેમ આજ્ઞા કરી હતી તેમજ તેઓએ કર્યું અને કહ્યુ, અહીં ...ની જેમજ સમજી લેવું જોઇએ (तएण से दूए तहेव निगच्छइ, जाव

सरति, निर्गत्य यत्रैव ग्रामाकरनगरेषु अनेकानि राजसहस्राणि, तत्रैवोपागच्छति उपागत्य यावत्-समवसरत, ' समवसरत ' इति पर्यन्त दूतवाक्य पूर्ववद् बोध्यम्। ततः खलु तानि अनेकानि राजसहस्राणि तस्य दूतस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य हृष्टतुष्टाः सन्तः दूत सत्कारयन्ति=सत्कृत कुर्वन्ति समानयन्ति,सत्कार्य, समान्य प्रतिविसर्जयन्ति।

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानः,=प्रत्येकं २ स्नाताः

जेणेव गामागर जाव समोसरह) वह दशवां दूत उसी तरह से-पहिले के दूतों के समान कांपिल्य नगर से निकला और निकल कर जहां ग्राम आकर और नगर थे-वहां पर अनेक राजसहस्रों के पास गया-वहा जाकर शिष्टाचार पूर्वक उसने सब से इस प्रकार कहा कि काम्पिल्यपुर नगर में द्रुपद राजा की पुत्री द्रौपदी का स्वयवर होने वाला है-सो आपसब लोग द्रुपद राजा के ऊपर कृपा करके जल्दी कांपिल्य पुर नगर पधारे (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेंति, सक्कारित्ता सम्माणेति, सम्माणित्ता पडिविसज्जेति) इस प्रकार वे अनेक सहस्र राजा उस दूत के मुख से इस समाचार को सुन कर और उसे अपने अपने २ हृदयों में अवधारित कर बहुत ही अधिक आनन्द से प्रमुदित बनकर परम संतोष को प्राप्त हुए। उन्होंने उस दूत का सत्कार किया सत्कार करके सन्मान किया और सन्मान करके फिर उसे पीछे विसर्जित कर दिया-भेजदिया। (तएण ते वासुदेवपामुक्खा सव्वे रायसहस्सा पत्तेय

समोसरह) તે દશમો દૂત બધાની જેમ કાંપીલ્ય નગરથી નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યાં ગ્રામ આકર અને નગર હતા ત્યાં અનેક હજારો રાજાઓની પાસે ગયો ત્યાં જઈને નમ્રપણે તેણે સહુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે કાંપિલ્ય નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થવાનો છે તો આપ સૌ દ્રુપદ રાજા ઉપર કૃપા કરીને અવિલંબ કાંપિલ્ય નગરમાં પધારો (तएण ताइ अणेगाइ रायसहस्साइ तस्स दूयस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा निसम्म हट्ठ० त दूय सक्कारेति सक्कारित्ता, सम्माणेति, सम्माणित्ता, पडिविसज्जेति) આ રીતે સહસ્રો રાજાઓ તે દૂતના મુખથી આ સમાચાર સાંભળીને અને તેને પોતાના હૃદયમાં ધારણ કરીને ખૂબ જ પ્રસન્ન તેમજ પરમ સંતુષ્ટ થયા. તેઓએ દૂતનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું ત્યારપછી દૂતને તેઓએ વિદાય આપી (तएण ते वासुदेवपामुक्खा सव्वे रायसहस्सा पत्तेय २ ण्हाया

सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणा' हस्तिस्कन्धवरगता हयगजरथ महाभटचटकरप्रकरवृन्दपरिक्षिप्ताः=भ टगजरथमहासुभटसमूहपरिवृताः, स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्योऽभिनिर्गच्छन्ति, अभिनिर्गत्य यत्रैव पञ्चालो जनपदस्तत्रैव माधारयन् गमनाय=गन्तु प्रवृत्ताः ॥ सू० १९ ॥

मूलम्–तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दा वित्ता एवं वयासी–गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्ल पुरे नयरे बहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं मह सयवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय साल भंजिआग जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव

२वद्धाया सन्नद्ध हत्थिखंधवरगया हय गयरह० महया भडचडगररहप हकर० सएहिंतो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति २ जेणेव पांचाले जण वए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बाद में जब दूत समाचार देकर वापिस कांपिल्य पुर नगर में आचुके तब वासुदेव प्रमुख वे अनेक हजार राजा प्रत्येक स्नान से निपटे, और सजाकर अपने २ शरीर पर कवच पहिरा, यावत् आयुध और प्रहरणों को अपने २ साथ लिया, अपने २ प्रधान हाथियों पर चढे और हाथी घोडे रथ और महाभटों के समुदाय से घिर हुए होकर वे सब अपने राज महलोंसे–नगरों से–निकले–निकलकर जहां पांचाल जनपद था उस ओर चल दिये ॥ सू० १९

सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहिंतो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छति २ जेणेव पाचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) त्यारपछी ज्यारे બધા દૂતો સમાચાર આપીને કાંપિલ્યપુર નગર પાછા આવી ગયા ત્યારે વાસુદેવ પ્રમુખ ઘણા હજારો રાજાઓએ સ્નાન કર્યો અને ત્યારબાદ પોતાના શરીર ઉપર કવચો ધારણ કર્યા યાવત્ આયુધો અને પ્રહરણોને પોતાની સાથે લીધા ત્યારપછી તેઓ બધા પોતપોતાના પ્રધાન હાથીઓ ઉ[illegible] અને હાથી, ઘોડા, રથ અને મહાભટોના સમુ દાયની સા[illegible] [illegible]–નગરોથી નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં પાંચાલ [illegible] ના થયા ॥ સૂત્ર ૧૯ ॥

भो देवाणुप्पिया! वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह तेवि करेत्ता पच्चप्पिणंति, तएणं दूवए वासुदेवपामुक्खाण बहूणं रायसहस्साण आगमं जाणेत्ता पत्तेयं२ हत्थिखंध जाव परिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढिए कपिल्लपुराओ निग्गच्छइ निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाण पत्तेयं२ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सयाइं२ आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहितो पच्चोरुहंति पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति करित्ता सएइं२ आवासे अणुपविसंति अणुपविसित्ता सएसु२ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य सतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवणच्चिज्जमाणा य विहरंति, तएणं से दुवए राया कपिल्लपुरं नगरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता विउलं असणं४ उवक्खडावेइ उवक्खडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! विउलं असणं४ सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसण्णं च सुबहुपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह, तेवि साहरंति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा तं विउलं

सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावत् गृहीतायुधप्रहरणाः हस्तिस्कन्धवरगता हयगजरथ महाभटचटकरप्रकरसम्परिक्षिप्ताः=भटानां समूहपरिवृताः, स्वकेभ्यः स्वकेभ्यो नगरेभ्योऽभिनिर्गच्छन्ति, अभिनिर्गत्य यत्रैव पञ्चालो जनपदस्तत्रैव प्राधारयन् गमनाय=गन्तुं प्रवृत्ताः ॥ सू०१९ ॥

मूलम्–तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छहणं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानदीए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणाति, तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव

२०-राया सन्नद्ध हत्थिखंधवरगया हय गयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहिंतो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति २ जेणेव पांचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) बाद में जब दूत समाचार देकर वापिस कांपिल्य पुर नगर में आचुके तब वासुदेव प्रमुख वे अनेक सहस्र राजा प्रत्येक स्नान से निपटे, और सजाकर अपने२ शरीर पर कवच पहिरा, यावत् आयुध और प्रहरणों को अपने २ साथ लिया, अपने २ प्रधान हाथियों पर चढे और हाथी घोडे रथ और महाभटों के समुदाय से घिरे हुए होकर वे सब अपने राज महलोंसे–नगरों से–निकले–निलकर जहां पांचाल जनपद था उस ओर चल दिये ॥ सू० १९

सन्नद्धहत्थिखंधवरगया हयगयरह० महया भडचडगररहपहकर० सएहिंतो २ नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति २ जेणेव पांचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए) त्यारपछी ज्यारे बधा दूतो समाचार आपीने कांपिल्यपुर नगर पाछा आवी गया त्यारे वासुदेव प्रमुख घणा हजारो राजाओए स्नान कर्या अने त्यारबाद पोताना शरीर उपर कवचो धारण कर्या यावत् आयुधो अने प्रहरणोने पोतानी साथे लीधा त्यारपछी तेओ बधा पोतपोताना प्रधान हाथीओ उपर सवार थया अने हाथी, घोडा, रथ अने महाभटोना समुदायनी साथे पोताना राजमहेलथी–नगरोथी नीकळ्या अने नीकळीने ज्यां पांचाल जनपद हतो ते तरफ रवाना थया ॥ सूत्र १९ ॥

काइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइ रएह२ एयमाणत्तिय पच्च-प्पिणह, ते वि जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थि-खंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हयगय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ उवाग-च्छित्ता अणुपविसंति अणुपविसित्ता पत्तेयं२ नामकिएसु आस-णेसु निसीयंति दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा चिट्ठंति, तएणं से पंडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंध-वरगए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति ॥ सू० २० ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरु-षान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य बहिः प्रदेशे गङ्गाया महानद्या अदूरसामन्ते=नातिदूरे नातिसमीपे एकं महान्तं स्वयम्वरमण्डपं कुरुत कीदृशमित्याह—'अणेग' इत्यादि।

'तएणं से दुवए राया कोडुंबिय पुरिसे' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (दुवए राया) द्रुपद राजा ने (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता एवं वयासी) बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-(गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे वहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह,

---

'तएणं से दुवए राया कोडुंबिय पुरिसे' इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएणं) ત્યારપછી (दुवए राया) દ્રુપદ રાજાએ (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા. (सद्दावित्ता एवं वयासी) બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે (गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह, अणेगखंभसय-

असण४ जाव पसन्नं च आसाएमाणा४ विहरति, जिमियाभुत्तु-त्तरागया वि य णं समाणा आयंता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहिं जाव विहरंति, तएणं से दुवए राया पुव्वाव-रण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे सिंघाडग जाव पहे वासुदेवपामुक्खाण य रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया२ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा२ एवं वदह–एवं खलु देवा-णुप्पिया कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुणस्स भगिणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सको-रंट० सेयवरचामर० हयगयरह० महया भडचडगरेणं जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पत्तेयं २ नामंकिएसु आसणेसु निसीयह२ दोवइं रायकण्णं पडि-वालेमाणा२ चिट्ठह, घोसणं घोसेह२ मम एयमाणत्तियं पच्च-प्पिणह, तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी –गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसियसमज्जि-ओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालाग-रुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं

अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टं=अनेकशतस्तम्भयुक्तं, 'लीलट्ठियसालभंजियागं' लीलास्थितशालभञ्जिकं=लीलया स्थिता शालभञ्जिका=पुत्तलिका यस्मिंस्तादृशं, यावत्- 'तथाऽस्तु' इति कृत्वा ते कौटुम्बिकपुरुषास्तदाज्ञां स्वीकृत्य तथैव स्वयंवरमण्डपं निर्माय, प्रत्यर्पयन्ति=मण्डपो निर्मित इति निवेदयन्ति। ततः खलु स द्रुपदो राजा 'दोच्चपि' द्वितीयवारमपि कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-हे देवानुप्रियाः! क्षिप्रमेव वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणाम् आवास-वासस्थानं कुरुत=रचयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषाः 'करित्ता' कृत्वा=वासुदेवादीनां निवासार्थं पृथक् पृथक् योग्यं वासस्थानं विधाय प्रत्यर्पयन्ति=सूचनां राज्ञे कथयन्ति। ततः

अणेग खंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं जाव पच्चप्पिणंति) हे देवानुप्रियों! तुमलोग जाओ-और कांपिल्यपुर नगर के बाहिर गंगा महा नदी के न अतिदूर और न अति समीप-उचित स्थान-में एक बड़ाभारी स्वयंवरमंडप बनाओ। जो अनेक सैकड़ों खंभोंसे युक्त हो तथा जिसमें विविध प्रकार की क्रीडा करती हुई पुत्तलिकाएँ सजा कर लगाई गई हों। यावत् "तथास्तु" कह कर उन लोगों ने राजा की इस आज्ञा को मान लिया और उसी आज्ञाके अनुसार स्वयंवर मंडप बना कर इसकी खबर राजाको कर दी। (तएणं से दुवए राया दोच्चंपि कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया! वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह ते वि करेत्ता पच्चप्पिणंति इसके बाद द्रुपद राजा ने दूसरे कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुम लोग शीघ्रातिशीघ्र वासुदेव

पसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजिआगं जाव पच्चप्पिणंति) हे देवानुप्रियो! कांपिल्य पुरनगरनी બહાર મહા નદી ગંગાથી વધારે દૂર નહીં તેમજ વધારે નજીક પણ નહિ એવા યોગ્ય સ્થળે એક ભારે વિશાળ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરો કે જે ઘણા સેંકડો થાંભલાઓવાળો હોય, તેમજ જેમાં અનેક જાતની ક્રીડા કરતી પૂતળીઓ સજાવીને મૂકવામાં આવી હોય તે લોકોએ પણ 'तथास्तु' કહીને રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને ત્યારપછી તેમની આજ્ઞા મુજબ જ સ્વયંવર મંડપ તૈયાર કરીને રાજાને તેની ખબર આપી (तएणं से दुवए राया दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव देवाणुप्पिया! वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, ते वि करेत्ता पच्चप्पिणंति) ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ બીજા કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો અવિલંબ વાસુ- ઘણા

खलु द्रुपदो राजा वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणाम् आगमम्=आगमनं ज्ञात्वा प्रत्येकं २ हस्तिस्कन्धवरगतः, हयगजरथमहाभटसमूहपरिवृत , अर्घं= पानार्थं जलं पाद्यं=चरणप्रक्षालनार्थमुदकं च गृहीत्वा सर्वर्द्धया छत्रचामरादिरूपया काम्पिल्यपुरतो निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका- राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राजसहस्राणि= तान् बहुसहस्रसंख्याकान् वासुदेवप्रमुखान् राज्ञः, अर्घ्येण च पाद्येन च सत्कार-

प्रमुख अनेक सहस्र राजाओं को बैठने के लिये पृथक्२ स्थान बनाओ। उन्होंने राजाकी आज्ञानुसार वैसा ही किया और इसकी खबर राजा को कर दी। (तएणं दुवए वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हत्थिखंध जाव पडिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव ते वासुदेव पामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामु- क्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ) इसके बाद द्रुपद राजा वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का आगमन जानकर अपने प्रधान हस्ती पर आरूढ हो हय, गज, रथ तथा महाभटो के समूह के साथ २ प्रत्येक राजा के लिये अर्घ-पीने के लिये पानी, पाद्य-चरण प्रक्षालन के जल-लेकर छत्रचामर आदि अपनी राजविभूतिसे युक्त होकर काम्पिल्य पुर नगर से निकले-निकलकर जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा थे वहां गये। वहां जाकर उन्होंने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का अर्घ्य

હજારો રાજાઓને બેસવા માટે જુદા જુદા સ્થાન તૈયાર કરો તે લોકોએ પણ રાજાની આજ્ઞા મુજબ જ બધુ કામ પતાવી દીધુ અને કામ થઈ ગયાની ખબર રાજા સુધી પહોચાડી દીધી (तएणं दुवए वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं राय सहस्साणं आगमं जाणेत्ता पत्तेयं २ हत्थिखंध जाव पडिवुडे अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामुक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ, सम्माणेइ) ત્યાર બાદ વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનુ આગમન સાંભળીને દ્રુપદ રાજા પોતના પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર થયા અને ઘોડા, હાથી, રથ તેમજ મહાભટોના સમૂહની સાથે દરેકે દરેક રાજાને માટે અર્ઘ-પીવા માટે પાણી-લઈને છત્ર ચામર વગેરે પોતાની રાજ- વિભૂતિથી યુક્ત થઈને કાંપિલ્યપુરથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યાં વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ હતા ત્યાં પહોંચ્યા ત્યાં જઈને તેમણે તે

यति, सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य च, तेषां वासुदेवप्रमुखाणां प्रत्येकं २ पृथक् २ आवासं 'वितरइ' वितरति । ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा यत्रैव स्वका २=निजा २ आवासास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य च हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहन्ति प्रत्यवरुह्य प्रत्येकं २ स्कन्धावारनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा स्वके स्वके आवासेऽनुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य स्वकेषु स्वकेषु आवासेषु-आसनेषु च शयनेषु च सन्निषण्णा उपविष्टाश्च तथा 'सतुयट्टा' च शयिताः परिवर्तितगात्राः । बहुभिर्गन्धर्वैश्च 'नाडएहि य' नाटकैश्च 'उवगिज्जमाणा य' उपगीयमानाः 'उवणच्चिज्जमाणा य'

और पाद्य से सत्कार किया-सन्मान किया। (सक्कारित्ता, सम्माणित्ता, तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेव पामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि खंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेय खंधावारनिवेसं करेंति) सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन सब वासुदेव प्रमुखों को प्रत्येक के लिये पृथक् २ आवास-स्थान-दिया। इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख राजा जहां अपना २ स्थान नियत था-वहां गये। वहां जाकर के अपने २ हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धा वार स्थापित कर दी-अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया। (करित्ता सए २ आवासे अणु०) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्नि सन्ना य सतुयट्टा य बहूहिं गन्धव्वेहिं य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य

વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનું અર્ધ્ય અને પાદ્યથી સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું (सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवा गच्छित्ता हत्थिखंधाहितो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेय खंधावारनिवेस करेंति) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેકે દરેક રાજાને જુદું જુદું આવાસ સ્થાન આપ્યું ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યાં પોતપોતાનું આવાસ સ્થાન નક્કી કરવામાં આવ્યું હતું ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓ પોતપોતાના હાથીઓ ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ પોતપોતાની સ્કન્ધાવાર-છાવણી સ્થાપિત કરી એટલે કે સેનાનો પડાવ નાખ્યો. (करित्ता सए २ आवासे अणु०) છાવણી નાખીને તેઓ પોતપોતાના આવાસ સ્થાનમાં પ્રવિષ્ટ થયા (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य सतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहिं य नाडएहिं य य

उपनृत्यमानाश्च गीत आदयमाणाश्च, नृत्य द र्यमानाश्च विहरन्ति । ततः स द्रुपदो राजा काम्पिल्यपुर नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य विपुलम्-अशन खाद्य स्वाद्यम् उपस्कारयति, मस्कारयति, उपस्कार्य कौटुम्बिकपुरुषान् आह्व शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! विपुलम्, अशन ५ खाद्य स्वाद्य सुरा च मद्य च मासं च सीधु च प्रसन्ना च सीधुः प्रसन्ना च मदि विशेषे, तथा सुरहु पुष्पगन्ध-धमाल्यालकार च वासुदेवप्रमुखाणा राजसहस्र आवासेषु ' साहरह ' संहरत=उपनयत, तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव संहरन्ति

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति तएणं से दुवए राया कंपिल्लपुर न अणुपविसइ, अणुपविसित्ता विउल असण ४ उवक्खडावेइ) होकर के वे अपने अपने आवास स्थानों में आसनों पर एव बिस्तर पर जाकर अच्छी तरह बैठ गये लेट गये । वहाँ लेटे हुए उनकी अने गधर्वोंने, अनेक नाटयकारों ने स्तुति की-उनकी प्रशसा के गीत गाए, नाटक दिखलाया । इसके बाद द्रुपद राजा कांपिल्यपुर नगर के भीतर आये-वहा आकर के उन्होंने विपुलमात्रा में अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार तैयार करवाया-पकवाया । (उवक्खडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी-(गच्छह णं तुम्मे देवाणु प्पिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च सीधु च पसण्ण च सुरहु पुष्फवत्थ गधम-ल्लालकार च वासुदेवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासे सु साहरह) तैयार करवा कर फिर उन्होंने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो तुमलोग जाओ और इस

उवणच्चिज्जमाणा य विहरति, तएण से दुवए राया कंपिल्लपुर नयर अणुप विसइ अणुपविसित्ता विउल असण४ उवक्खडावेइ) બેઠાને તેઓ પોતપોતાના આસનો ઉપર સારી રીતે બેસી ગયા, સૂઈ ગયા ત્યા સૂઈ ગયેલા તેઓની ઘણા ગધર્વોએ, ઘણા નાટ્યકારોએ સ્તુતિ કરી, તેમની પ્રશસાના ગીતો ગાયા અને નાટકો ભજવ્યા ત્યારપછી દ્રુપદ રાજા કાંપિલ્યપુર નગરમા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓએ પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન, પાન ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતનો આહાર તૈયાર કરાવડાવ્યો (उवक्खडावित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम्मे देवाणुप्पिया ! विउल असण ४ सुर च मज्ज च मसं च सीधु च पसण्ण च सुरहुपुप्फवत्थगधमल्लालकार च वासु देवपामोक्खाण रायसहस्साण आवासेसु साहरह) તૈયાર કરાવીને તેમને કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે

यति, समानयति, सत्कार्य्य सत्कारं कृत्वा, सम्मान्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां प्रत्येकं पृथक् २ आवासं 'वियरइ' वितरति। ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा यत्रैव स्वकाः २=निजा २ आवासास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहन्ति प्रत्यवरुह्य प्रत्येकं२ स्कन्धावारनिवेशं कुर्वन्ति, कृत्वा स्वके स्वके आवासेऽनुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य स्वकेषु स्वकेषु आवासेषु-आसनेषु च शयनेषु च सन्निषण्णा उपविष्टाश्च तथा 'संतुयट्टा' संत्वग्वर्तिताः परिवर्तितपार्श्वाश्च बहुभिर्गन्धर्वैश्च 'नाडएहि य' नाटकैश्च 'उवगिज्जमाणा य' उपगीयमानाश्च 'उवणच्चिज्जमाणा य'

और पाद्य से सत्कार किया-सन्मान किया। (सक्कारित्ता, सम्माणित्ता, तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेव पामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थि खंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति) सत्कार सन्मान करके उन्होंने उन सब वासुदेव प्रमुखों को प्रत्येक के लिये पृथक्२ आवास-स्थान-दिया। इसके पश्चात् वे वासुदेव प्रमुखराजा जहां अपना २ स्थान नियत था-वहां गये। वहां जाकर के अपने २ हाथियों पर से नीचे उतरे और उतर करके उन्होंने अपनी २ स्कन्धावार स्थापित कर दी-अर्थात् सैन्य को ठहरा दिया। (करित्ता सए २ आवासे अणु०) ठहरा कर फिर वे अपने २ आवासों में प्रविष्ट हुए (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहिं य नाडएहिं य उवगिज्जमाणा य

વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓનું અર્ધ્ય અને પાદ્યથી સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું (सक्कारित्ता सम्माणित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं पत्तेयं २ आवासे वियरइ, तएणं ते वासुदेवपामुक्खा जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति) સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેકે દરેક રાજાને જુદું જુદું આવાસ સ્થાન આપ્યું ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ જ્યાં પોતપોતાનું આવાસ સ્થાન નક્કી કરવામાં આવ્યું હતું ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓ પોતપોતાના હાથીઓ ઉપરથી નીચે ઉતર્યા અને ઉતરીને તેઓએ પોતપોતાની સ્કન્ધાવાર-છાવણી સ્થાપિત કરી એટલે કે સેનાનો પડાવ નાખ્યો. (करित्ता सए २ आवासे अणु०) છાવણી નાખીને તેઓ પોતપોતાના આવાસ સ્થાનમાં પ્રવિષ્ટ થયા (अणुपविसित्ता सएसु २ आवासेसु य आसणेसु य सयणेसु य सन्निसन्ना य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहिं य नाडएहिं य उवगिज्जमाणा य

प्रविष्टा बहुभिर्गन्धर्वैर्यावद् नाटकैश्चोपगीयमाना उपनृत्यमानाश्च विहरन्ति= आसते स्म इत्यर्थः।

ततः खलु स द्रुपदो राजा पूर्वापराह्नकालसमये कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु हे देवानुप्रियाः! काम्पिल्यपुरे नगरे शृङ्गाटक यावत्-त्रिकचतुष्कचत्वर महापथपथेषु वासुदेवप्रमुखाणां च राजसहस्राणामावासेषु आवाससमीपेषु हस्तिस्कन्धवरगताः महता २ शब्देन=उच्चैः स्वरेण यावद् उद्घोषयन्तः २ एवं वदत-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! श्वः=आगामीनि द्वितीय

गंधर्वों ने नाना प्रकार के स्तुत्यात्मक गीत गाये और नाट्यकारों ने नृत्य दिखलाये। (तएण से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ,सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे सिंघाडग जाव पहेसु वासुदेवपामुक्खाण य राय सहस्साण य आवासेसु हत्थि खंधवरगया महया २ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा २ एवं वदह, एवं खलु देवाणुप्पिया! कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुण्णस्स भगिणीए दोवईए रायवरकन्नाए सयंवरं भविस्सइ) इसके बाद द्रुपदराजा ने पूर्वापराह्न काल के समय में कौटुम्बिक पुरुषों को बुलवाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों! तुमलोग हाथी पर बैठकर काम्पिल्यपुर नगर में जाओ और वहां शृंगाटक यावत् त्रिक चतुष्क चत्वर महापथ आदि मार्गों में जो वासुदेव प्रमुख राजा के आवासस्थान हैं उनके समीप बड़े जोर २

ઉપર શાસિપૂર્વક બેસી ગયા તેમના મનો-વિનોદ માટે ગંધર્વોએ અનેક જાતના સ્તુત્યાત્મક ગીતો ગાયા અને નાટ્યકારોએ નૃત્ય કરી બતાવ્યા

(तएणं से दुवए राया पुव्वावरण्हकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एवं वयासी, गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे सिंघाडग जाव पहेसु वासुदेवपामुक्खाण य महया २ सद्देणं जाव उग्घोसेमाणा २ एवं वदह, एवं खलु देवाणुप्पिया! कल्लं पाउ० दुवयस्स रण्णो धूयाए चुलणीए देवीए अत्तयाए धट्ठज्जुण्णस्स भगिणीए दोवईए रायवरकन्नाए सयंवरं भविस्सइ)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ પૂર્વાપરાહ્ન કાળના સમયે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો હાથી ઉપર બેસીને કાંપિલ્યપુર નગરમાં જાઓ અને ત્યાંના શૃંગાટક યાવત્ ત્રિક ચતુષ્ક ચત્વર મહાપથ વગેરે માર્ગોમાં-જે માર્ગોની પાસે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓના આવાસ ઘરો છે તેની પાસે બહુ મોટા સાદે આજાતની

ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखास्तद् विपुलम्, असन पान खाद्य स्वाद्य यावत् प्रसन्नां च 'आसायमाणा' आस्वादयन्तो विहरन्ति, अपि च खलु 'जिमिया' जिमिताः-भुक्तवन्तः, 'भुत्तुत्तरागया' भुक्तोत्तरागताः भुक्तोत्तर=भोजनानन्तरम् आगताः भुक्तेरत्र भावे क्तः भोजनस्थानादास्थानदेशे मुखप्रक्षालनार्थमागताः सन्त 'आयता' आचान्ताः-कृतचुल्लुका, यावत्-सुखासनवरगताः=आसनवरे सुखो-

अशन, पान, खाद्य स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार को सुरा मद्य, सीधु और प्रसन्न मदिरा को और अनेक विध इन पुष्पों को वस्त्रों को गन्धमाल्य एवं अलङ्कारो को वासुदेव प्रमुख राजसहस्रों के आवास स्थानों पर ले जाओ। (ते वि साहरति) राजा की आज्ञानुसार वे सब उन अशनादिवस्तुओं को वहां पर ले गये। (तएण ते वासुदेवपामुक्खा त विउल असण ४ जाव पसन्न च आसाएमाणा ४ विहरति) इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने उस आनीत विपुल अशनादिरूप प्रसन्ना मदिरा तक की आहार की सामग्री को खाया (जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा जाव सुहासणवरगया बहूहिं गधव्वेहिं जाव विहरति) खा पी कर जब वे निश्चिन्त हो चुके और मुख प्रक्षालन के लिये भोजन स्थान से उठकर दूसरे निकट स्थान पर आये-तब उन्होंने कुल्ला किया-और फिर सुन्दर अपने २ आसनों पर शाति पूर्वक आकर बैठ गये। इनके बैठते ही मनोविनोद के लिये

લેઇને જાઓ અને આ અશન, પાન, ખાદ્ય, સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારને સુરા, મદ્ય, માંસ, સીધુ અને પ્રસન્ન મદિરાને અને ઘણી જાતના આ પુષ્પોને, વસ્ત્રોને, ગધમાલ્ય અને અલકારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજસહસ્ત્રોના આવાસ સ્થાને પહોચાડો (ते वि साहरति) રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે તેઓ બધાએ તે ખાદ્ય પદાર્થોને રાજાઓના આવાસ સ્થાને પહોચાડી દીધા (तएण ते वासुदेवपामुक्खा त विउल असण ४ जाव पसन्न च आसाएमाणा ४ विहरति) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ ત્યા પહોચાડવામા આવેલા પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરેથી માંડીને પ્રસન્ન મદિરા સુધીના બધી જાતના આહાર સામગ્રી વગેરેનુ ખૂબ રૂચિપૂર્વક પાન કર્યું

(जिमिया भुत्तुत्तरागया वि य ण समाणा आयता जाव सुहासणवरगया बहूहिं गधव्वेहिं जाव विहरति)

જમી પરવારીને જ્યારે તેઓ નિશ્ચિંત થઈ ચૂકયા ત્યારે તેઓ મુખ પ્રક્ષાલન માટે ભોજન સ્થાનથી ઊભા થઈને બીજા પાસેના ત્યા તેઓએ કોગળા કર્યા અને ત્યારપછી તેઓ ફરી પોતપો

मण्डपस्तत्रोपागच्छत, उपागत्य प्रत्येक 'नामकिएसु' नामाङ्कितेषु स्व स्व नामाऽऽयुक्तेषु आसनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदीं राजकन्यां 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्त. २ प्रतीक्षमाणा २ तिष्ठत इति घोषणा घोषयत, घोषयित्वा ममैतामाज्ञप्तिका प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तथैव यावत् प्रत्य र्पयन्ति। ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः! स्वयवरमण्डपम् "आसियसम-ज्जिओवलित्त" आसिक्तसमार्जितोपलिप्तम्=आसिक्तम्-जलप्रक्षेपेणार्द्रीकृत, समा र्जित-कचवरापनयनेन सशोधितम्, उपलिप्त-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्त, तथा-सुगन्धवरगन्धित सुगन्धवरगन्धित-अगुरुगुग्गुलकर्पूरसरलदारादिजनितसुगन्धयुक्त, 'पञ्चवण्णपुप्फपुंजोवयारकलिय' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जोपचारकलित। 'कालागुरुपवर-कुन्दुरुक्कतुरुक्क-जाव गन्धवट्टिभूय' कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्क-यावद्-गन्धवर्ति-भूत, अत्र यावच्छब्देन-मघमघायमानगन्धोद्धुताभिराम' इति बोध्यम्।

सज कर साथ हो। मंडप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले आसन पर बैठजावें। बैठकर फिर वहा वह राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें। (घोसण घोसेह २ मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) इस प्रकार की घोषणा करो और जब तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब इसकी हमें पीछे खबर दो। (तएण ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्च प्पिणति) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने नृपाज्ञानुसार ऐसा ही किया-बाद में हमलोग आपकी आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा के पास भेज दी। (तएण से दुवए राया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सयवरमंडव आसियसमज्जिओवलित्त सुगंधवरगंधिय पचवण्णपुप्फपुंजोवयार-कलिय कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गधवट्टिभूय मचाइमचकलियं

मंडपमां आवीने दरेके दरेक पोतपोताना नामवाळा आसन उपर बेसी जाय त्यां बेसीने तेओ राजवर कन्या द्रौपदीना आगमननी प्रतीक्षा करे (घोसण घोसेह २ मम एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह) आ रीते तमे घोषणा करो अने आम थई जाय त्यारे मने खबर आपो (तएण ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणति) ते कौटुंबिक पुरुषोए राजानी आज्ञा प्रमाणे ज बधु काम पतावी दीधु अने 'अमे लोकोए आपनी आज्ञा अनुसार घोषणा करी छे' एवी खबर राजानी पासे पहोंचाडी दीधी

(तएण से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सयवरमंडव आसियसमज्जिओवलित्तं सुगंधवर-गंधिय पचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलिय कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टि°

दिवसे प्रादुर्भूतप्रभातायां रजन्यां तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युदिते द्रुपदस्य राज्ञो दुहितुः=पुत्र्याः, चुलन्यादेव्या आत्मजायाः, धृष्टद्युम्नस्य भगिन्या द्रौपद्या राजवर-कन्यायाः स्वयंवरो भविष्यति, तत्=तस्मात् खलु हे देवानुप्रियाः ! यूयं द्रुपद राजानमनुगृह्णन्तः स्नाताः यावत्-सर्वालङ्कारविभूषिताः-हस्तिस्कन्धवरगताः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्ताः हयगजरथमहाभटकरेण चतुरङ्गबलेन यावत् परिक्षिप्ता=परिवृता यत्रैव स्वयंवर-

से ऐसी घोषणा करते हुए कहो-कि हे देवानुप्रिय ! कल सूर्योदय होने पर द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा और धृष्टद्युम्न की बहिन राजवर कन्या-द्रौपदी का स्वयंवर होगा (तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! दुपयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवर चामर० हय गयरह० महया भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवर मंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं२ नामंकिएसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायकण्णं पडिवालेमाणा २ चिट्ठह) इस लिये हे देवानुप्रियो ! आपलोग द्रुपदराजा के ऊपर कृपा करके स्नान आदि से निवट कर एवं समस्त अलंकारों से विभूषित होकर जहाँ स्वयंवर मंडप है वहां पधारें । आते समय हाथियों पर बैठकर आवें। कोरण्ट पुष्पों की मालाओं से सुशोभित छत्र उस समय आप सब के ऊपर तने हों और श्वेत सुन्दर चामर ऊपर ढोरे जा रहे हों। हय, गज, रथ एवं महाभटों का समूहरूप चतुरंगदल आप

ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો ! આવતી કાલે સવાર થતાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચુલની દેવીની આત્મજા અને ધૃષ્ટદ્યુમ્નની બહેન રાજવર કન્યા દ્રૌપદીનો સ્વયંવર થશે

(तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामर० हय गय रह० महया भडचड-गरेण जाव परिक्खित्ता जेणेव सयंवरमंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयह २ दोवइं रायकण्णं पडिवाले माणा २ चिट्ठह)

એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દ્રુપદ રાજા ઉપર મહેરબાની કરીને સ્નાન વગેરેથી પરવારીને તથા સમસ્ત અલંકારોથી વિભૂષિત થઈને જ્યાં સ્વયંવર મંડપ છે, ત્યાં હાથીઓ ઉપર સવાર થઈને પધારો. કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભતું છત્ર તે વખતે તમારા ઉપર તાણેલું હોવું જોઈએ અને સફેદ ચમરો પણ તમારા ઉપર ઢોળાતા હોવા જોઈએ હાથી, રથ અને મહા ભટોના સમૂહ રૂપ ચતુરંગિણી સેના તમારી સાથે હોવી　　　　વર

मण्डपस्तत्रैवोपागच्छत, उपागत्य प्रत्येकं 'नामंकिएसु' नामाङ्कितेषु स्व स्व नामाक्षरयुक्तेषु आसनेषु निषीदत, निषद्य द्रौपदीं राजकन्यां 'पडिवालेमाणा २' प्रतिपालयन्त २ प्रतीक्षमाणा २ तिष्ठत इति घोषणां घोषयत, घोषयित्वा ममैतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत, ततः खलु ते कौटुम्बिकास्तथैव यावत् प्रत्यर्पयन्ति। ततः खलु स द्रुपदो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! स्वयंवरमण्डपम् "आसियसमज्जिओवलित्तं" आसिक्तसमार्जितोपलिप्तम्=आसिक्तम्-जलप्रक्षेपेणार्द्रीकृतं, समार्जित-कचवराद्यपनयनेन संशोधितम्, उपलिप्त-मृद्गोमयादिभिरनुलिप्तं, तथा-सुगन्धवरगन्धितं सुगन्धवरगन्धितं-अगुरुगुग्गुलकर्पूरसरलदाहादिजनितसुगन्धयुक्तं, 'पञ्चवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं' पञ्चवर्णपुष्पपुञ्जोपचारकलितं। 'कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क-जाव गंधवट्टिभूयं' कालागुरुप्रवरकुन्दुरुष्कतुरुष्क-यावद्-गन्धवर्तिभूतं, अत्र यावच्छब्देन-धूपदग्धमघमघायमानगन्धोद्धुयाभिरामं' इति बोध्यम्।

खबर कर सकते हो। मंडप में आकर प्रत्येक जन अपने अपने नामवाले आसन पर बैठजावें। बैठकर फिर वहां वह राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करें। (घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) इस प्रकार की घोषणा करो और जब तुमलोग ऐसी घोषणा कर चुको तब इसकी हमें पीछे खबर दो। (तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति) उन कौटुम्बिक पुरुषों ने नृपाज्ञानुसार ऐसा ही किया-बाद में हमलोग आपकी आज्ञानुसार घोषणा कर चुके हैं ऐसी सूचना राजा के पास भेज दी। (तएणं से दुवए राया कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसियसमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं

मंडपमां आवीने दरेके दरेक पोतपोताना नामवाळा आसन उपर बेसी जाय त्यां बेसीने तेओ राजवर कन्या द्रौपदीना आगमननी प्रतीक्षा करे (घोसणं घोसेह २ मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह) आ रीते तमे घोषणा करो अने आम थई जाय त्यारे मने खबर आपो (तएणं ते कोडुंबिया तहेव जाव पच्चप्पिणंति) ते कौटुंबिक पुरुषोए राजानी आज्ञा प्रमाणे ज बधुं काम पतावी दीधुं अने 'अमे लोकोए आपनी आज्ञा अनुसार घोषणा करी छे' एवा खबर राजानी पासे पहोंचाडी दीधी

(तएणं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसियसमज्जिओवलित्तं सुगंधवरगंधियं पंचवण्णपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्क जाव गंधवट्टि-

धूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिराम, तत्र कालागुरु' कृष्णागुरु, प्रवर-कुन्दुरुष्क-चीडानामको गन्धद्रव्यविशेषः, तुरुष्कं च सिल्हकं, धूपश्च गन्धद्रव्यसंयोगज इति द्वन्द्वः, एषा-एतत्सम्बन्धी यो धूपस्तस्य दह्यमानस्य च सुरभिर्मघमघायमानः-अतिशयवान्, गन्ध उद्धूतस्तेनाभिरामो रमणीयः स तथा त तथा-गन्धवर्तिभूतं गन्धवर्ति-गन्धद्रव्यगुटिका तद्भूतं-तत्सदृशमित्यर्थः अतिशयात् तथा-' मचाइमचकलियं ' मञ्चातिमञ्चकलितं कुरुत, कृत्वा वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां

करेह, करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नाम-काइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह)
इसके बाद द्रुपदराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुमलोग जाओ-और स्वयंवर मंडप को आसिक्त कर-जलसिंचन से आर्द्र करो, समार्जित करो-कचवर आदि को उससे बाहिर कर उसे साफ करो एवं उपलिप्त करो मिट्टी तथा गोबर से उसे लीपो। सुगन्धगंधित करो उसमें-अगुरु, गुग्गुल, कपूर आदि को जलाकर उनकी गंध से उसे सुगंध युक्त बनाओ पंचरंग के पुष्पों के पुंज उसमें जगह २ रखो। कृष्णागुरु प्रवर कुन्दुरुष्क, तुरुष्कलोबान इनके चूर्ण को वहां आग में खूब जलाकर उनके गंध से उसे बहुत ही अधिक मनोभिराम बनाओ ज्यादा क्या-उसे ऐसा करदो कि जिससे ऐसा ज्ञान हो कि यह एक सुगन्धित द्रव्य की वर्तिका है। वहां मंचा के ऊपर मंचों को

भूयं मचाइमचकलियं करेह, करित्ता वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं २ नामकाइं आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને સ્વયંવર મંડપને આસિક્ત કરો-પાણી છાંટો, સમાર્જિત કરો, કચરા વગેરે સાફ કરો, અને ઉપલિપ્ત કરો, એટલે કે માટી તેમજ છાણથી લીપો સુગંધવર ગંધિત કરો એટલે કે તે સ્થાને અગુરુ, ગુગ્ગુલ, કપૂર વગેરેનો ધૂપ કરીને તેની સુગંધથી તે સ્થાનને સુવાસિત કરો પંચવર્ણના પુષ્પપુંજના સમૂહો સ્થાને સ્થાને ગોઠવીને તમે મંડપની શોભામાં અભિવૃદ્ધિ કરો કૃષ્ણાગુરુ, પ્રવર, કુંદરુષ્ક, તુરુષ્ક, લોબાન આ બધા પદાર્થોના ચૂર્ણને અગ્નિમાં નાખીને તે સ્થાનને સુગંધથી ખૂબ જ રમણીય બનાવી દો તે સ્થાનને તમે એવું ગન્ધ સુગંધમય બનાવો કે જેથી તે સુગંધિત દ્રવ્યોની વર્તિકા (અગરબત્તી) જેવું લાગે ।

राजसहस्राणां प्रत्येकं २ नामाङ्कितान्यासनानि 'अत्थुयपच्चत्थुयाइ' आस्तृत प्रत्यवस्तृतानि=आच्छादित प्रत्याच्छादितानि 'रएह' रचयत, रचयित्वा एतामा ज्ञप्तिका प्रत्यर्पयत, तेऽपि=कौटुम्बिकपुरुषाः, यावत् प्रत्यर्पयन्ति। 'तएणं ते' वासुदेवप्रमुखाः बहुसहस्रसंख्यकाराजानः 'कल्ल' कल्ये प्रादुर्भूतप्रभाताया रजन्या यावत् तेजसा ज्वलति सूर्येऽभ्युद्गते स्नाता यावत् सर्वालंकारविभूषिता हस्ति-स्कन्धवरगता सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च उक्ता हय गज-यावत्-रथपदातिसमूहेन परिवृता सर्वर्द्ध्या यावत् 'शङ्खपणवपट हादीनां रवेण यत्रैव स्थाने स्वयंवरमण्डपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्यानुप्रविशन्ति, अनुप्रविश्य प्रत्येकं २ 'नामंकिएसु' नामाङ्कितेषु=स्वस्वनामाक्षरयुक्तेषु आसनेषु निषीदन्ति=उपविशन्ति, निषद्य द्रौपदीं राजवरकन्या 'पडिवालेमाणा' प्रति-पालयन्त =प्रतीक्षमाणास्तिष्ठन्ति।

रखो। उन पर वासुदेव प्रमुख राजाओं के प्रत्येक के नाम के आसनों को आस्तृत-शुभ्रवस्त्र से ढककर प्रत्यवस्तृत-और द्वितीय शुभ्रवस्त्र से आच्छादित कर रखो। रख कर फिर हमें पीछे इस सब कार्य के समाप्त होने की खबर दो। (ते वि जाव पच्चप्पिणंति) इस प्रकार राजा की आज्ञानुसार उन कौटुम्बिक पुरुषों ने सब कार्य उचित रूप में करके पीछे राजा को "सब कार्य आज्ञानुसार यथोचित हो चुका है" ऐसी खबर करदी। (तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवर-चामराहिं हय गय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा २

મંચોની ગોઠવણ કરો. ત્યાં તમે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેકે દરેક રાજાના નામથી અંકિત થયેલા આસનોને આસ્તૃત-સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાંકીને, પ્રત્યાવસ્તૃત અને બીજા સ્વચ્છ વસ્ત્રથી ઢાંકો આ બધુ કામ પતાવીને તમે અમને ખબર આપો. (ते वि जाव पच्चप्पिणंति) આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે મુજબ બધુ કામ પતાવી દીધુ અને ત્યારપછી 'તમારી આજ્ઞા મુજબ કામ બધુ પતી ગયુ છે' એવી ખબર રાજાની પાસે પહોંચાડી

(तएणं ते वासुदेवपामुक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउ० ण्हाया जाव विभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरंट० सेयवरचामराहिं हय गय जाव परिवुडा सव्विड्ढीए जाव रवेणं जेणेव सयंवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसंति, अणुपविसित्ता पत्तेयं नामंकिएसु आसणेसु निसीयंति, दोवइं रायवरकण्णं

ततः खलु 'पद्रुए' पाण्डु नामको राजा 'कल्लं' प्रभ्य-प्रात. काले स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रिय माणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानेश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृत. सर्व-र्द्ध्या यावद्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन म निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुनःसहस्रका राजानस्त-त्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणा करतलपरिगृहीतदशनख

चिट्ठति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलकारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढे हुए ध्रियमाण कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरो से वीज्यमान होते हुए अध हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शंख पणव पटह आदि के साथ २ जहा वह स्वयंवर मंडप था-वहा आये। वहा आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अंकित आसनों पर पृथक २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएण से पडुए राया कल्लं पहाए जाव विभूसिए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुर मज्झंमज्झेण निग्गच्छति-जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामु क्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिट्ठंति)

ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પસાર થઈ ગઈ અને સવાર થતા સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પોતાના શરીરને બધા આભૂષણોથી શણગારીને, હાથીઓ ઉપર સવાર થ'ને, સુગંધિત કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત અને છત્રથી યુક્ત થઈ ઉત્તમ શ્વેત ચામરોથી વીજયમાન થતા તેમજ ઘોડા, હાથી યાવત્ રથ પદાતિ સમૂહથી પરિવૃત થતા પોતાના રાજ્ય વૈભવ અનુસાર યાવત્ શંખ પણવ પટહ વગેરે વા[illegible] સાથે જ્યા સ્વયંવર મંડપ હતો ત્યા ગયા ત્યાં જઈને તેઓ [illegible] પ્રવિષ્ટ થયા અને પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓ પોત પોતાના ન[illegible] [illegible]નો ઉપર બેસી ગયા અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીની

[illegible] जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सको [illegible] पामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव

शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य श्वेतवरचामर गृहीत्वा 'उववीयमाणे' उपवीजयन् चामरादधूननेन सेवमान स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पामुक्खाण करयल बद्धावित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामर गहाय उववीयमाणे चिट्ठति) इस के बाद पाडु नामक राजा प्रातः काल स्नान से निवट कर और समस्त अलकारो से विभूषित होकर अपने पट्ट गजराज पर चढ कर कापिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्वयवर मडप में आये। जब ये गजराज पर चढे हुए आरहे थे उस समय इन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र, छत्रधारियों ने तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज, रथ एक पदादि समूहरूप चतुरगिणी सेना इनके साथ चल रही थी। राजसी ठाटबाट से ये सुसज्जित थे। विविध बाजे साथ में बजते हुए आरहे थे। मडप में आकर ये जहां वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे हुए थे- वहा गये। वहा जाकर उन्होंने उन वसुदेव प्रमुख हजारो राजाओं को दोनों हाथ जोड कर बडी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जय विजय शब्दो द्वारा उन्हें वधाई दी। वधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए वहा बैठ गये॥ सू० २० ॥

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाण करयल०बद्धावित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामर गहाय उववीयमाणे चिट्ठति)

ત્યારપછી પાડુ નામક રાજા સવારે સ્નાનથી પરવારીને સમસ્ત અલકારોથી પોતાના શરીરને શણગારીને અને પોતાના મુખ્ય ગજરાજ ઉપર સવાર થઈને કાપિલ્યપુર નગરની વચ્ચેથી પસાર થઈને સ્વયવર મડપમા આવ્યા જ્યારે તેઓ ગજરાજ ઉપર બેસીને આવતા હતા ત્યારે કોરટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત છત્ર છત્રધારીઓએ તાણેલુ હતુ ચામર ઢોળનારાઓ શ્વેત ચામરો ઢોળી રહ્યા હતા, ઘોડા, હાથી, રથ અને પદાતિ સમૂહ રૂપ ચતુરગિણી સેના તેમની સાથે સાથે ચાલી રહી હતી રાજસી ઠાઠથી તેઓ સુસજ્જિત હતા, અનેક જાતના વાજાઓ વાગી રહ્યા હતા મડપમા આવીને તેઓ જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યા ગયા જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યા તેમની પાસે જઈને તેઓએ વાસુદેવ પ્રમુખ સર્વ રાજાઓને ખૂબ જ નમ્રપણે બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા જય વિજય શબ્દોથી તેઓને અભિનન્દિત કર્યા અભિનદિત કર્યા બાદ તેઓ કૃષ્ણ વાસુદેવની ઉપર શ્વેત ચામર ઢોળતા ત્યા બેસી ગયા ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

ततः खलु 'पडुए' पाण्डु नामको राजा 'कल्ल' कल्ये-प्रातःकाले स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगतः सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रियमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृतः सर्वर्द्ध्या यावत्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन स्वविभूत्या निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतलपरिगृहीतदशनख

चिट्ठति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलकारो से विभूषित होकर, हाथियों पर चढे हुए ध्रियमाण कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरो से वीज्यमान होते हुए एवं हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शख पणव पटह आदि के साथ २ जहा वह स्वयवर मंडप था-वहा आये। वहा आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अकित आसनों पर पृथक २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएण से पडुए राया कल्ल ण्हाए जाव विभूसिए सकोरट० हयगय० कपिल्लपुर मज्झं मज्झेण निग्गच्छति-जेणेव सयवरमडवे जेणेव वासुदेव पामु क्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिट्ठति)

त्यारपछी वासुदेव प्रमुख हजारो राजाओ बीजा दिवसे ज्यारे रात्रि पसार थई गई अने सवार थता सूर्य उदय पाम्यो त्यारे स्नान वगेरेथी परवारीने पोताना शरीरने बधा आभूषणोथी शणगारीने, हाथीओ उपर सवार थ'ने, सुगधित कोरट पुष्पोनी माळाओथी शोभित अने छत्रथी युक्त थई उत्तम श्वेत चामरोथी वीजयमान थता तेमज घोडा, हाथी यावत् रथ पदाति समूहथी परिवृत थता पोताना राज्य वैभव अनुसार यावत् शख पणव पटह वगेरे वाजाओनी साथे ज्या स्वयवर मडप हतो त्या गया त्या जइने तेओ बधा मडपमा प्रविष्ट थया अने प्रविष्ट थईने तेओ पोत पोताना नामाकित जुदा जुदा आसनो उपर बेसी गया अने राजवर कन्या द्रौपदीनी प्रतीक्षा करवा लाग्या

(तएण से पडुए राया कल्ल ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखधवरगए सकोरंट० हय गय० सयवरमडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा बहवे ।

शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्धयित्वा कृष्णस्य वासुदेवस्य श्वेतवरचामरं गृहीत्वा 'उववीयमाणे' उपवीजयन् चामरादूधूननेन सेवमान स्तिष्ठति ॥ सू० २१ ॥

पामुक्खाण करयल बद्धावित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति) इस के बाद पाडु नामक राजा प्रातः काल स्नान से निवट कर और समस्त अलङ्कारो से विभूषित होकर अपने पट्ट गजराज पर चढ कर कांपिल्य पुर नगर के बीच से होते हुए उस स्वयवर मडप में आये। जब ये गजराज पर चढे हुए आरहे थे उस समय इन के ऊपर कोरट पुष्पों की माला से विरजित छत्र, छत्रधारियों ने तान रखा था। चामर ढोरने वाले शुभ्र चामर ढोर रहे थे। हय, गज, रथ एक पदादि समूहरूप चतुरगिणी सेना इनके साथ चल रही थी। राजसी ठाटबाट से ये सुसज्जित थे। विविध बाजे साथ में बजते हुए आरहे थे। मडप में आकर ये जहा वासुदेव प्रमुख हजारों राजा बैठे हुए थे-वहां गये। वहा जाकर उन्होंने उन वसुदेव प्रमुख हजारो राजाओं को दोनों हाथ जोड कर बडी नम्रता के साथ नमस्कार किया। जय विजय शब्दो द्वारा उन्हें बधाई दी। बधाई देकर फिर ये कृष्ण वासुदेव के ऊपर श्वेतचामर लेकर ढोरते हुए वहा बैठ गये॥ सू० २० ॥

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं करयल० बद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठति)

ત્યારપછી પાડુ નામક રાજા સવારે સ્નાનથી પરવારીને સમસ્ત અલકારોથી પોતાના શરીરને શણગારીને અને પોતાના મુખ્ય ગજરાજ ઉપર સવાર થઈને કાપિલ્યપુર નગરની વચ્ચેથી પસાર થઈને સ્વયવર મડપમા આવ્યા જ્યારે તેઓ ગજરાજ ઉપર બેસીને આવતા હતા ત્યારે કોરટ પુષ્પોની માળાથી શોભિત છત્ર છત્રવાહીઓએ તાણેલુ હતુ ચામર ઢોળનારાઓ શ્વેત ચામરો ઢોળી રહ્યા હતા, ઘોડા, હાથી, રથ અને પદાતિ સમૂહ રૂપ ચતુરગિણી સેના તેમની સાથે સાથે ચાલી રહી હતી ગજબી ઠાઠથી તેઓ સુસજ્જિત હતા, અનેક જાતના વાજાઓ વાગી રહ્યા હતા મડપમા આવીને તેઓ જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યા ગયા જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ બેઠેલા હતા ત્યા તેમની પાસે જઈને તેઓએ વાસુદેવ પ્રમુખ સર્વ રાજાઓને ખૂબ જ નમ્રપણે બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા જય વિજય શબ્દોથી તેઓને અભિનદિત કર્યા અભિનદિત કર્યા બાદ તેઓ કૃષ્ણ વાસુદેવની ઉપર શ્વેત ચામર ઢોળતા ત્યા બેસી ગયા ॥ સૂત્ર ૨૦ ॥

ततः खलु 'पडुए' पाण्डु नामको राजा 'कल्ल' कल्ये-प्रातः यावत् स्नातो यावत् सर्वालङ्कारविभूषितो हस्तिस्कन्धवरगत० सकोरण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण ध्रिय माणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैश्च युक्तो हयगजरथपदातिसमूहेन परिवृतः सर्व द्धर्या यावत्-रवेण काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन स निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैव स्वयंवरमण्डपो यत्रैव वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानस्त-त्रैवोपागच्छति, उपागत्य तेषां वासुदेवप्रमुखाणां करतलपरिगृहीतदशनख

चिट्ठति) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा दूसरे दिन जब रात्रि समाप्त हो चुकी प्रातः काल हो गया-सूर्य उदित हो चुका तब स्नान यावत् समस्त अलङ्कारों से विभूषित होकर, हाथियों पर चढे हुए ध्रियमाण कोरट पुष्पों की माला से विराजित छत्र से युक्त होते हुए उद्धूयमान श्वेत वरचामरों से वीज्यमान होते हुए तथ हय, गज यावत् रथ पदाति समूह से परिवृत्त होते हुए अपनी राज विभूति के अनुसार यावत् शङ्ख पणव पटह आदि के साथ २ जहां वह स्वयंवर मंडप था-वहां आये। वहां आकर वे सब उसके भीतर प्रविष्ट हुए। प्रविष्ट होकर वे प्रत्येक जन अपने २ नाम से अंकित आसनों पर पृथक २ बैठ गये और राजवर कन्या द्रौपदी की प्रतीक्षा करने लगे। (तएण से पडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए सकोरंट० हयगय० कंपिल्लपुरं मज्झंमज्झेण निग्गच्छति-जेणेव सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेव

पडिवालेमाणा २ चिट्ठति)

ત્યારપછી વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ બીજા દિવસે જ્યારે રાત્રિ પસાર થઇ ગઈ અને સવાર થતા સૂર્ય ઉદય પામ્યો ત્યારે સ્નાન વગેરેથી પરવારીને પોતાના શરીરને બધા આભૂષણોથી શણગારીને, હાથીઓ ઉપર સવાર થ'ને, સુગંધિત કોરંટ પુષ્પોની માળાઓથી શોભિત અને છત્રથી યુક્ત થઈ ઉત્તમ શ્વેત ચામરોથી વીજયમાન થતા તેમજ ઘોડા, હાથી યાવત્ રથ પદાતિ સમૂહથી પરિવૃત થતા પોતાના રાજ્ય વૈભવ અનુસાર યાવત્ શંખ પણવ પટહ વગેરે વાજાઓની સાથે જ્યાં સ્વયંવર મંડપ હતો ત્યાં ગયા ત્યાં જઇને તેઓ બધા મંડપમાં પ્રવિષ્ટ થયા અને પ્રવિષ્ટ થઇને તેઓ પોત પોતાના નામાંકિત જુદા જુદા આસનો ઉપર બેસી ગયા અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીની પ્રતીક્ષા કરવા લાગ્યા

(तएण से पडुए राया कल्लं ण्हाए जाव विभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरंट० हय गय० सयंवरमंडवे जेणेव वासुदेव पामुक्खा तेणेव

वस्त्राणि परिधाय 'जिणपडिमाण अच्चणं करेइ' जिनप्रतिमाना, कामदेव प्रतिमानामर्चनं करोति विवाहविधि निर्विघ्न सम्पन्नार्थ मिति भावः 'करित्ता' कृत्वा 'जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ' यत्रैवा-न्तःपुर तत्रैवो- पागच्छति ॥सू०२१॥

द्रौपदीचर्चा

यत्तु-"जिणपडिमाण अच्चणं करेइ" इति पाठं समाश्रित्य भगवतोऽर्हतः पूजनं जैनधर्मानुयायिभिः कर्तव्यमित्याहुस्त मिथ्यात्वविलसितम्, अस्य पाठस्य चरितानुवादरूपत्वेन विधायकत्वासम्भवात्। विधिवाक्य हि जिनाज्ञाया बोधकत्वेन विधायकं भवति, यथा-भगवता विधेयतयोपदिष्ट षड्विधावश्यक चतुर्विध-

जिन प्रतिमा का कामदेव की प्रतिमा का निर्विघ्न विवाहकार्य के लिये अर्चन करती है अर्चन कर के फिर वह (जेणेव अंते उरे तेणेव उवागच्छइ) जहाँ अंत पुर था वहा चली गई ॥ सू० २१ ॥

द्रौपदी चर्चा

जो "जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ" इस पाठका आश्रय लेकर प्रतिमापूजन की उपयोगिता कहते हुए यह कहते हैं, कि "अर्हत भगवान की प्रतिमा की पूजा जैनधर्म के पालको को करना चाहिये" यह उनका कथन मिथ्यात्व का विलास ही है। क्यो कि यह "जिणपडिमाण" इत्यादि वाक्य चरित का ही अनुवादक है-अतः ऐसे वाक्य किसी मुख्य अर्थ के विधायक नहीं हुआ करते हैं। चारितानुवाद से तो सिर्फ जिस व्यक्ति ने जो २ आचरण किया है उसका ही बोध होता है। शास्त्र विहित मार्गके निर्देशक विधिवाक्य हुआ करते हैं-क्यों कि कि ऐसे वाक्य जिन भगवान की आज्ञाके विधायक होते हैं। जिस प्रकार षट्

પ્રતિમાનુ કામદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિઘ્ને વિવાહકાર્ય સપન્ન થવાના હેતુથી અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યા રણુવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રૌપદી ચર્ચા

કેટલાક "जिणपडिमाण अच्चण करेइ" આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજનની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે "અર્હત ભગવાનની પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવુ જોઈએ" તેમનુ આ કથન સત્યથી બહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે આ "जिनपडिमाण" વગેરે વાક્ય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે એવા વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને સ્પષ્ટ કરનારા હોતા નથી ચરિતાનુવાદથી તો ફક્ત જે માણસે જે તે આચરણ કર્યુ છે, ફક્ત તેનુ જ જ્ઞાન થાય તેમ છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને બતાવનારા તો વિધિ વાક્યો જ થાય છે જેવી રીતે

मूलम्-तएण सा दोवइ रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कय-कोउयमगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिया जिणपडिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि। ततस्तदनन्तर सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता 'कयवलिकम्मा' कृतवलिकर्मा अन्नादिषु वायसादिप्राणिनां सविभागो वलिकर्म तत् कृत यया सा तथा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता 'सुद्धप्पावेसाइ' शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि प्रवेश्यानि-सभायां प्रवेष्टु योग्यानि, यत्परिधानेन सभायां लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि 'पवरपरिहिय' प्रवरपरिहिता-प्रवरविधिना प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती आर्षत्वात् वर्नेरिक्त.,

'तएण सा दोवई रायवर कन्ना' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहां स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ) उस ओर गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कयकोउयमगल पायच्छित्ता) वहा जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, नहाकर फिर उसने काक पक्षि आदि को अन्नादि का भाग देने रूप वलि कर्म किया कौतुक मगल प्रायश्चित्त किये। (सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया) सभा में प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मागलिक वस्त्र अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाण अचण करेइ)

'तएण सा दोवईरायवरकन्ना' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) ज्यां स्नानघर हतु (तणेव उवागच्छइ) त्यां गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा कय कोउयमगलपायच्छित्ता) त्यां जईने तेणे स्नानघरमां स्नान कर्युं स्नान कर्या बाद तेणे कागडा वगेरे पक्षीओने अन्न वगेरेनो भाग अर्पीने बलिकर्म कर्युं-कौतुक मगळ प्रायश्चित्त कर्या (सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ) सभामां प्रवेशवा योग्य स्वच्छ मागलिक वस्त्रो तेणे सरस रीते पहेर्यां, त्यारपछी ते स्नानघरथी बहार नीकळी (जिणपडिमाण अच्चण ...) ...ने

वस्त्राणि परिधाय ' जिणपडिमाण अच्चणं करेइ ' जिनप्रतिमाना, कामदेव प्रतिमानामर्चनं करोति विवाहविधि निर्विघ्न सपन्नार्थं मिति भावः ' करित्ता ' कृत्वा ' जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ' यत्रैवा-तःपुर तत्रैवो- पागच्छति ॥सू०२१॥

द्रौपदीचर्चा

यत्तु–" जिणपडिमाण अच्चण करेइ " इति पाठ समाश्रित्य भगवतोऽर्हतः पूजन जैनधर्मानुयायिभि' कर्तव्यमित्याहुस्तन्मिथ्यात्वविलसितम् , अस्य पाठस्य चरितानुवादरूपत्वेन विधायकत्वासम्भवात् । विधिवाक्य हि जिनाज्ञाया बोधकत्वेन विधायक भवति, यथा–भगवता विधेयतयोपदिष्ट षड्विधावश्यक चतुर्विध-

जिन प्रतिमा का कामदेव की प्रतिमा का निर्विघ्न विवाहकार्य के लिये अर्चन करती है अर्चन कर के फिर वह (जेणेव अते उरे तेणेव उवागच्छइ) जहाँ अत पुर था वहाँ चली गई ॥ सू० २१ ॥

द्रौपदी चर्चा

जो "जिणपडिमाण अच्चणं करेइ" इस पाठका आश्रय लेकर प्रतिमापूजन की उपयोगिता करते हुए यह कहते हैं, कि " अर्हत भगवान की प्रतिमा की पूजा जैनधर्म के पालको को करना चाहिये" यह उनका कथन मिथ्यात्व का विलास ही है। क्यो कि यह " जिनपडिमाण " इत्यादि वाक्य चरित का ही अनुवादक है–अतः ऐसे वाक्य किसी मुख्य अर्थ के विधायक नहीं हुआ करते हैं । चारितानुवाद से तो सिर्फ जिस व्यक्ति ने जो २ आचरण किया है उसका ही बोध होता है। शास्त्र विहित मार्गके निर्देशक विधिवाक्य हुआ करते हैं–क्यों कि कि ऐसे वाक्य जिन भगवान की आज्ञाके विधायक होते हैं। जिस प्रकार यह

પ્રતિમાનુ કામદેવની પ્રતિમાનુ નિર્વિઘ્ને વિવાહકાર્ય સપન્ન થવાના હેતુથી અર્ચન કરે છે, અર્ચન કરીને (जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ) જ્યા રણવાસ છે તે તરફ જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨૧ ॥

દ્રૌપદી ચર્ચા

કેટલાક "जिणपडिमाण अच्चण करेइ" આ પાઠના આધારે પ્રતિમા પૂજનની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરતા આ પ્રમાણે કહે છે કે " અર્હત ભગવાનની પ્રતિમાનુ પૂજન જૈનધર્મ પાલન કરનારાઓએ કરવુ જોઇએ " તેમનુ આ કથન સત્યથી ખહુ દૂર છે એટલે કે આ વાત સાવ અસત્યથી પૂર્ણ છે કેમકે આ " जिनपडिमाण " વગેરે વાકય ચરિતના જ અનુવાદક છે એટલા માટે એવા વચનો કોઈ વિશેષ અર્થને સ્પષ્ટ કરનારા હોતા નથી ચરિતાનુવાદથી તો ફક્ત જે માણુસે જે તે આચરણ કર્યું છે, ફક્ત તેનુ જ જ્ઞાન થાય તેમ છે શાસ્ત્રવિહિત માર્ગને બતાવનારા તો વિધિ વાકયો જ થાય છે જેવી રીતે

मूलम्-तएणं सा दोवइ रायवरकन्ना जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइ मंगल्लाइं वत्थाइ पवरपरिहिया जिणपडिमाण अच्चण करेइ, करित्ता जेणेव अतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि। ततस्तदनन्तर सा द्रौपदी राजवरकन्या यत्रैव मज्जनगृह तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्नाता 'कयबलिकम्मा' कृतबलि कर्मा अन्नादिषु वायसादिप्राणिना संविभागो बलिकर्म तत् कृत यया सा तथा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता 'सुद्धप्पावेसाइ' शुद्धप्रवेश्यानि शुद्धानि स्वच्छानि प्रवेश्यानि-सभाया प्रवेष्टु योग्यानि, यत्परिधानेन सभाया लोकाः प्रवेष्टुमर्हन्ती त्यर्थः, मङ्गलानि=शुभानि वस्त्राणि 'पवरपरिहिय' प्रवरपरिहिता-प्रवरविधिना प्रवरेण शोभाकारेण विधिना परिहिता=परिधानेन धृतवती आर्षत्वात् वर्णरिक्तः,

---

'तएण सा दोवई रायवर कन्ना' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इस के बाद (सा दोवई रायवर कन्ना) वह राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) जहां स्नान घर था (तेणेव उवागच्छइ) उस ओर गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमगल पायच्छित्ता) वहा जाकर २ उसने स्नानघरमें स्नान किया, नहाकर फिर उसने काक पक्षि आदि को अन्नादि का भाग देने रूप बलि कर्म किया कौतुक मगल प्रायश्चित्त किये। (सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवर परिहिया) सभा मे प्रवेश के योग्य ५ शुद्ध स्वच्छ मागलिक वस्त्र अच्छी तरह विधि के अनुसार पहिरी हुई (जिणपडिमाण अच्चण करेइ)

'तएण सा दोवईरायवरकन्ना' इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (सा दोवई रायवरकन्ना) ते राजवर कन्या द्रौपदी (जेणेव मज्जणघरे) ज्या स्नानघर हतु (तणेव उवागच्छइ) त्या गई (उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय कोउयमगलपायच्छित्ता) त्या जईने तेणे स्नानघरमा स्नान कर्यु स्नान कर्या बाद तेणे कागडा वगेरे पक्षीओने अन्न वगेरेनो भाग अर्पीने बलिकर्म कर्यु-कौतुक मगळ प्रायश्चित्त कर्या (सुद्धप्पावेसाइ मगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ) सभामा प्रवेशवा योग्य स्वच्छ मागलिक वस्त्रो तेणे सरस रीते पहेर्या, त्यारपछी ते स्नानघरथी बहार नीकळी (जिणपडिमाण अच्चण करेइ) जिन

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तू-नामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेय स्यात् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र खलु प्रतिमाया भगवतोऽर्हत. पूजन न कृतम् , जैनप्रवचने प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात् , प्रतिमापूजनस्य षट्कायजीवहिंसासा-यतया जैन धर्मत्त्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं षट्कायहिंसाऽवश्यभाविनी, एव च

जाता है कि वह उन्हीं मे चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में खड्गादि शस्त्र आदि वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अत उनमें भी पूज्यता आजानी चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी विधेय कोटि मे मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा मे जो भगवान अर्हत की पूजन नहीं की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन मे प्रतिमा पूजन के विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन षट् काय के जीवों की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन मे जिनेन्द्र द्वारा प्रतिप्रादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का अभाव है । षट् काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न હોય તેની એ ફરજ થઇ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને મનને તલ્લીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આચરે

ચરિતને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાકયને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજાની વાત સાભળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઇએ અને આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય કરવી જોઇએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા ભગવાન અર્હંતનુ પૂજન કર્યું નથી તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપન્ન હોય છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ધર્મ-આત્મકલ્યાણ સાધક રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી

संघस्य कर्तव्यं भवति ।

तथा चोक्तम्—समणेण सावएण य अवस्सकायव्वयं हवइ जम्हा ।

अतो अहोनिसस्स य, तम्हा आवस्सयं नाम ॥ १ ॥ इति (अनुयोगद्वा०)

छाया-श्रमणेन श्रावकेण च अवश्यकर्त्तव्यकं भवति यस्मात् ।

अन्तेऽहर्निशस्य च तस्माद् आवश्यकं नाम ॥ १ ॥

" जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा ।

तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओकालं छव्विहं आवस्सयं करेंति (अनु०)

छाया-यदिदं श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा ।

तच्चित्तः तन्मना यावद् उभयकालं षड्विधमावश्यकं नाम ॥ २ ॥

आवश्यक कार्यों को प्रतिपादन करने वाले वाक्य जिन प्रभु की आज्ञा के निर्देशक होने से साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध संघ को उपादेय माने जाते हैं । शास्त्र में भी यही बात कही गई है

' समणे ण सावएण य ' इत्यादि

शास्त्र विहित षट् आवश्यक कर्तव्य चतुर्विध श्रीसंघ को रात्री एवं दिनके अंतिम भागमें अवश्य करना चाहिये । उनके किये विना मुनि का मुनिपना नहीं और श्रावकका श्रावकपना नहीं । अतः षट् आवश्यक कार्य अवश्य करने योग्य होनेसे आवश्यक रूप से प्रतिपादित हुए हैं ।

"जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे वा जाव उभओ कालं" इत्यादि ।

इसलिये जब ये आवश्यक हैं तब चाहे साधु हो या साध्वी हो श्रावक हो या श्राविका हो कोई भी क्यों न हो उसका यह कर्तव्य हो

છ આવશ્યક કાર્યોના પ્રતિપાદન કરનારા વાક્યો જીન પ્રભુની આજ્ઞાના નિર્દેશક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સંઘના માટે યોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમાં પણ આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે—

" समणेण सावएण य ' ईत्यादि

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવશ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સંઘને રાત્રિ તેમજ દિવસના અંતિમ ભાગમાં ચોક્કસ પણે આચરવા જોઈએ તેના આચરણ વગર મુનિનું મુનિપણું નથી અને શ્રાવકનું શ્રાવકપણું નથી એટલા માટે છ આવશ્યક કાર્ય ચોક્કસ કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામાં આવ્યા છે

" जं इमं समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ कालं इत्यादि—આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ' આવશ્યક ' છે, ત્યારે ભલે સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય ...મ

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तूनामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेयं स्यात् ।

द्रौपद्याऽपि तत्र खलु प्रतिमाया भगवतोऽर्हतः पूजनं न कृतम्, जैनप्रवचने प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात्, प्रतिमापूजनस्य षट्कायजीवहिंसासाध्यतया जैनधर्मत्वाभावाच्च ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं षट्कायहिंसाऽवश्यभाविनी, एवं च

जाता है कि वह उन्हीं में चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके इसे उभय काल में अवश्य करें।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदवके चरित में खड्गादि शस्त्र आदि वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अतः उनमें भी पूज्यता आजानी चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी विधेय कोटि मे मानलेना चाहिये।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा मे जो भगवान अर्हंत की पूजन नहीं की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन षट् काय के जीवों की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन मे जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का अभाव है। षट् काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न होय तेनी ओ इरज थई पडे छे के ते तेओमा ज पोतानु चित्त परोवीने मनने तल्लीन करीने तेने बने काळमा अवश्य आचरे

चरितने अनुवादक रूपे बतावनार वाक्यने जो विधेय रूपमा स्वीकारवामा आवे तो सूर्याभदेवना चरितमा शस्त्र वगेरे वस्तुओनी पण पूजानी वात साभळवामा आवे छे एथी तेमनामा पण पूज्यता आवी जवी जोइए अने आ रीते पूजनना पक्षपातीओए तेमनी पूजा पण विधेयना रूपमा मान्य करवी जोइए

द्रौपदीए पण त्या प्रतिमामा भगवान अर्हंतनु पूजन कर्यु नथी तेनु कारण ए छे के प्रथम तो जैन प्रवचनमा प्रतिमा-पूजननु विधान नथी अने बीजु आ प्रतिमा पूजन षट्कायना जीवोनी विराधना द्वारा सपन्न होय छे, तेथी आ प्रतिमा पूजनमा जीनेन्द्र वडे प्रतिपादित धर्म-आत्मकल्याण साधक रूप सम्यग्-दर्शन वगेरेनो अभाव छे षट्कायना जीवोनी विराधनाथी

सघस्य कर्तव्य भवति ।

तथा चोक्तम्—समणेण सावएण य अवस्सकायव्वय हवइ जम्हा ।

अतो अहोनिसस्स य, तम्हा आवस्सय नाम ॥ १ ॥ इति (अनुयोगद्वा०)

छाया-श्रमणेन श्रावकेण च अवश्यकर्त्तव्यक भवति यस्मात् ।

अन्तेऽहर्निशस्य च तस्माद् आवश्यक नाम ॥ १ ॥

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा ।

तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओकाल छव्विह आवस्सय करेंति (अनु०)

छाया-यदिद श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा ।

तच्चित्तः तन्मना यावद् उभयकाल षड्विधमावश्यक नाम ॥ २ ॥

आवश्यक कार्यों को प्रतिपादन करने वाले वाक्य जिन प्रभु की आज्ञा के निर्देशक होने से साधु साध्वी श्रावक श्राविकारूप चतुर्विध सघ को उपादेय माने जाते हैं । शास्त्र में भी यही बात कही गई है

' समणे ण सावएण य ' इत्यादि

शास्त्र विहित षट् आवश्यक कर्तव्य चतुर्विध श्रीसघ को रात्री एव दिनके अतिम भागमे अवश्य करना चाहिये । उनके किये विना मुनि का मुनिपन नही और श्रावकका श्रावकपन नही । अत षट् आवश्यक कार्य अवश्य करने योग्य होनेसे आवश्यक रूप से प्रतिपादित हुए हैं ।

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे वा जाव उभओ काल " इत्यादि ।

इसलिये जब ये आवश्यक हैं तब चाहे साधु हो या साध्वी हो श्रावक हो या श्राविका हो कोई भी क्यो न हो उसका यह कर्तव्य हो

આવશ્યક કાર્યોના પ્રતિપાદન કરનારા વાકયો જીન પ્રભુની આજ્ઞાના નિર્દેશક હોવાને કારણે સાધુ સાધ્વી શ્રાવક શ્રાવિકા રૂપ ચતુર્વિધ સઘના માટે યોગ્ય ગણાય છે શાસ્ત્રમા પણ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે—

" समणेण सावएण य ' ઈત્યાદિ

શાસ્ત્રવિહિત છ પ્રકારના આવશ્યક કર્તવ્યો ચતુર્વિધ સઘને રાત્રિ તેમજ દિવસના અતિમ ભાગમા ચોક્કસ પણે આચરવા જોઈએ તેના આચરણ વગર મુનિનુ મુનિપણુ નથી અને શ્રાવકનુ શ્રાવકપણુ નથી એટલા માટે છ આવશ્યક કાર્ય ચોક્કસ કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે

" ज इम समणे वा समणी वा सावए वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे जाव उभओ काल इत्यादि—આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ' આવશ્યક ' છે, ત્યારે ભલે સાધુ હોય કે સાધ્વી હોય તેમજ શ્રાવક હોય કે શ્રાવિકા હોય ... કેમ

चारितानुवादवचनस्य विधायकत्वाङ्गीकारे सूर्याभदेवचरिते शस्त्रादिवस्तूनामर्चनस्य श्रूयमाणतया तन्मते तदपि विधेय स्यात् ।

द्रौपद्यऽपि तत्र खलु प्रतिमाया भगवतोऽर्हत• पूजन न कृतम् , जैनप्रवचने प्रतिमापूजनस्य विधानाभावात् , प्रतिमापूजनस्य पट्कायजीवहिंसासा-यतया जैन धर्मत्वाभावाच ।

तथाहि—प्रतिमापूजाऽङ्गीकारे तदर्थं पट्कायहिंसाऽवश्यभाविनी, एव च

जाता है कि वह उन्हीं मे चित्त लगाकर और मन को तन्मय करके इसे उभय काल में अवश्य करें ।

चरित के अनुवादक कथन करने वाले-वाक्य को यदि विधेय रूप से स्वीकार किया जाय तो सूर्याभदेवके चरित में खड्गादि शस्त्र आदि वस्तुओं की भी पूजा सुनी जाती है-अत' उनमें भी पूज्यता आजानी चाहिये और इस प्रकार से पूजन के पक्षपातियों को उनका पूजन भी विधेय कोटि मे मानलेना चाहिये ।

द्रौपदी ने भी वहा प्रतिमा मे जो भगवान अर्हत की पूजन नहीं की उसका कारण यह है कि एक तो जैन प्रवचन में प्रतिमा पूजन के विधान का अभाव है और दूसरे-यह प्रतिमा पूजन षट्‌ काय के जीवो की विराधना द्वारा साध्य होती है, इसलिये इस प्रतिमा पूजन मे जिनेन्द्र द्वारा प्रतिप्रादित-धर्म आत्मकल्याणसाधकरूप सम्यग्दर्शनादिक का अभाव है। षट्‌ काय के जीवों की विराधना से जो साध्य हुआ करता है वहा सच्चे धर्म के दर्शन तक भी दुर्लभ हैं अतः प्रतिमा पूजन

न હોય તેની એ ફરજ થઈ પડે છે કે તે તેઓમા જ પોતાનુ ચિત્ત પરોવીને મનને તલ્લીન કરીને તેને બને કાળમા અવશ્ય આચરે

ચરિતને અનુવાદક રૂપે બતાવનાર વાકયને જો વિધેય રૂપમા સ્વીકારવામા આવે તો સૂર્યાભદેવના ચરિતમા શસ્ત્ર વગેરે વસ્તુઓની પણ પૂજાની વાત સાભળવામા આવે છે એથી તેમનામા પણ પૂજ્યતા આવી જવી જોઇએ અને આ રીતે પૂજનના પક્ષપાતીઓએ તેમની પૂજા પણ વિધેયના રૂપમા માન્ય કરવી જોઇએ

દ્રૌપદીએ પણ ત્યા પ્રતિમામા ભગવાન અર્હંતનુ પૂજન કર્યું નથી તેનુ કારણ એ છે કે પ્રથમ તો જૈન પ્રવચનમા પ્રતિમા-પૂજનનુ વિધાન નથી અને બીજુ આ પ્રતિમા પૂજન ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના દ્વારા સપન્ન હોય છે, તેથી આ પ્રતિમા પૂજનમા જીનેન્દ્ર વડે પ્રતિપાદિત ધર્મ-આત્મકલ્યાણ સાધક રૂપ સમ્યગ્-દર્શન વગેરેનો અભાવ છે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી

प्राणातिपातविरमणव्रतिना मुनीना प्रतिमापूजोपदेशे स्वधर्मस्य मूलोच्छेद स्या देव। अत एव-जिनप्रणीतागमे प्रतिमापूजाया विधिर्नोपलभ्यते। प्रतिमास्थापनार्थ

अगीकार करने में उस पूजन के समय में षट् काय के जीवों की विराधना जब अवश्यभावी है तब भला! हम इसे विधेय मार्ग कैसे मान सकते हैं, और कैसे यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस पूजन का कर्त्ता सच्चे धर्म का उपासक है तथा प्रतिमापूजन को धर्म माना जावे तो एक बड़ा भारी दोष यह भी आकर उपस्थित होता है कि सर्व प्रकार के हिंसादिक पापों से सर्वथा विरक्त महाव्रती मुनिजन जब इस प्रतिमापूजनरूप धर्म का उपदेश करेंगे तब वे भी कारितादिरूप कराने आदि रूप से इसके कर्त्ता होने के कारण अपने मुनिधर्म के मूलतः ही विध्वसक माने जायेगे। मुनिजन हिंसादिक सावद्य व्यापारों के कृत, कारित एव अनुमोदना इन तीन करण एव तीन योग से त्यागी हुआ करते हैं। जब ये प्रतिमापूजन रूप धर्म का गृहस्थो के लिये व्याख्यान देंगे तब उनके व्याख्यान से प्रेरित हो गृहस्थ जन उस ओर अपनी प्रवृत्ति चालू करने वाले होंगे, और उस प्रकार के उनके व्यवहार से इस कार्य में षट्काय के जीवों की विराधना होने से उस विराधना

જે સાધ્ય થાય છે તેમા તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધા દુર્લભ છે એટલા માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના જ્યારે ચોક્કસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર કરીએ કે આ જાતનુ પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે? જો પ્રતિમા પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકારના હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત વિધ્વસક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવદ્ય વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જ્યારે તેઓ પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનુ ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના આચરણોથી આ કામમા ષટ્કાય જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહા વ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે? એથી ધર્મ લાભને ઇચ્છતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ છે.

देवायतनप्रतिमाऽऽरामकूपादिकरणे तदुपदेशदाने च पृथिवीकायहिंसाया अवश्यम्भाव. । देवायतनादिकरणे पूजाङ्गतयास्नान प्रतिमास्नपनवस्त्रक्षालनादिकरणे च तदुपदेशदाने चाप्कायविराधनमपि, तथा-पूजाङ्गधूपदीपारात्रिकसम्पादन चाग्निकायविराधनया विना न सभवति, वायुकायहिंसन तु धूपदीपारात्रिका

के कराने वाले ये उपदेशक मुनिजन माने जायेगे-तब इनके अहिंसादि महाव्रत त्रियोग और त्रिकरण विशुद्ध कैसे रह सकेंगे? अतः लाभ की चाहना में इन विचारों की भूल में ही बडी भारी भूल होने से ये अपने धर्म के सच्चे आराधक नहीं माने जा सकेगे। इसलिये यह बात अवश्य माननी चाहिये कि जिन प्रणीत आगम में प्रतिमापूजन की विधि नही पाई जाती है।

इसी प्रकार प्रतिमा स्थापन, प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाना, मदिर वगैरह बनवाना एव उस प्रतिमा की पूजा निमित्त बगीचा तथा कुआ आदि का करवाना ये बाते पृथिवी कायिक जीवों की हिंसा के कारण हैं अतः त्याज्य है। इनके बनवाने आदि का जो उपदेश करते है वे भी पृथिवीकायिक जीवों की हिंसा से मुक्त नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार पूजन का अग होने से स्नान, प्रतिमा के अभिषेक तथा पूजन के वस्त्रों के धोने साफ करने मे और उसके उपदेश देने में अप्काय के जीवो की विराधना होती है, धूपखेना, दीपक जलाना, आरती उतारना ये सब बातें अग्निकायिक जीवों की विराधना के बिना नहीं हो सकती है अर्थात् इनमें अग्निकायिक जीवो की विराधना अवश्यभाविनी है।

બેસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી જોઈએ કે 'જીન પ્રણીત' આગમમા પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મદિર વગેરે બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉદ્યાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર કરાવવા એ પૃથ્વિ-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વિ-કાયિક જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન, પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામા અને તેના ઉપદેશમા પણ અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સભવી શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમા અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

प्राणातिपातविरमणव्रतिना मुनीना प्रतिमापूजोपदेशे स्वधर्मस्य मूलोच्छेद स्या देव । अत एव-जिनप्रणीतागमे प्रतिमापूजाया विधिर्नोपलभ्यते । प्रतिमास्थापनार्थ

अंगीकार करने में उस पूजन के समय में षट् काय के जीवों की विराधना जब अवश्यभावी है तब भला ! हम इसे विधेय मार्ग कैसे मान सकते हैं, और कैसे यह स्वीकार किया जा सकता है कि इस पूजन का कर्त्ता सच्चे धर्म का उपासक है तथा प्रतिमापूजन को धर्म माना जावे तो एक बड़ा भारी दोष यह भी आकर उपस्थित होता है कि सर्व प्रकार के हिंसादिक पापों से सर्वथा विरक्त महाव्रती मुनिजन जब इस प्रतिमापूजनरूप धर्म का उपदेश करेंगे तब वे भी कारितादिरूप कराने आदि रूप से इसके कर्त्ता होने के कारण अपने मुनिधर्म के मूलत. ही विध्वसक माने जायेगे । मुनिजन हिंसादिक सावद्य व्यापारों के कृत, कारित एव अनुमोदना इन तीन करण एव तीन योग से त्यागी हुआ करते हैं। जब ये प्रतिमापूजन रूप धर्म का गृहस्थो के लिये व्याख्यान देंगे तब उनके व्याख्यान से प्रेरित हो गृहस्थ जन उस ओर अपनी प्रवृत्ति चालू करने वाले होंगें, और उस प्रकार के उनके व्यवहार से इस कार्य में षट्काय के जीवों की विराधना होने से उस विराधना

જે સાધ્ય થાય છે તેમા તો સાચા ધર્મના દર્શન સુદ્ધા દુર્લભ છે એટલા માટે પ્રતિમા-પૂજન સ્વીકારવામા તે પૂજન કરતી વખતે ષટ્કાયના જીવોની વિરાધના જ્યારે ચોક્કસપણે થવાની છે ત્યારે અમે તેને વિધેય માર્ગ કયા આધારે માન્ય કરીએ અને એની સાથે સાથે અમે એ પણ કેવી રીતે સ્વીકાર કરીએ કે આ જાતનુ પૂજન કરનાર સાચા ધર્મનો ઉપાસક છે ? જો પ્રતિમા પૂજનને ધર્મ રૂપે સ્વીકારીએ તો એમા એક ભારે દોષ એ છે કે સર્વ પ્રકારના હિંસા વગેરે પાપોથી સર્વથા વિરક્ત મહાવ્રતી મુનિજનો જ્યારે આ પ્રતિમા પૂજન રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ આપશે ત્યારે તેઓ પણ કારિતાદિ રૂપ કરાવવા વગેરે રૂપથી એના કર્તા રૂપે હોવા બદલ પોતાના મુનિ ધર્મના મૂલત વિધ્વસક ગણાશે મુનિજનો હિંસા વગેરે સાવદ્ય વ્યાપારોના કૃત, કારિત અને અનુમોદના આ ત્રણ કરણ અને ત્રણ યોગના ત્યાગી હોય છે જ્યારે તેઓ પ્રતિમા-પૂજન રૂપ ધર્મનુ ગૃહસ્થોને માટે વ્યાખ્યાન આપશે ત્યારે તેમના વ્યાખ્યાનથી પ્રેરાઈને ગૃહસ્થો તે પ્રમાણે આચરશે જ અને આ જાતના તેમના આચરણોથી આ કામમા ષટ્કાય જીવોની વિરાધના હોવાથી તે વિરાધનાને કરાવનારા આ ઉપદેશક મુનિઓ જ ગણાશે ત્યારે એમના અહિંસા વગેરે મહાવ્રતો ત્રિયોગ અને ત્રિકરણ વિશુદ્ધ રૂપે કેવી રીતે રહી શકશે ? એથી ધર્મ-લાભને ઇચ્છતા પણ તેઓ આ જાતના વિચારોની ભૂલમા જ

देवायतनप्रतिमाऽऽरामकूपादिकरणे तदुपदेशदाने च पृथिवीकायहिंसाया अवश्यम्भावः । देवायतनादिकरणे पूजाङ्गतयास्नान प्रतिमास्नपनवस्त्रक्षालनादिकरणे च तदुपदेशदाने चाप्कायविराधनमपि, तथा-पूजाङ्गधूपदीपारात्रिकसम्पादन चाग्निकायविराधनया विना न सम्भवति, वायुकायहिंसन तु धूपदीपारात्रिका

के कराने वाले ये उपदेशक मुनिजन माने जायेगे-तव इनके अहिंसादि महाव्रत त्रियोग और त्रिकरण विशुद्ध कैसे रह सकेंगे? अतः लाभ की चाहना मे इन विचारों की भूल में ही बडी भारी भूल होने से ये अपने धर्म के सच्चे आराधक नहीं माने जा सकेगे। इसलिये यह बात अवश्य माननी चाहिये कि जिन प्रणीत आगम में प्रतिमापूजन की विधि नहीं पाई जाती है।

इसी प्रकार प्रतिमा स्थापन, प्रतिमा प्रतिष्ठा करवाना, मंदिर वगैरह बनवाना एव उस प्रतिमा की पूजा निमित्त बगीचा तथा कुआ आदि का करवाना ये बाते पृथिवी कायिक जीवों की हिंसा के कारण हैं अतः त्याज्य है। इनके बनवाने आदि का जो उपदेश करते है वे भी पृथिवीकायिक जीवों की हिंसा से मुक्त नहीं हो सकते है। इसी प्रकार पूजन का अग होने से स्नान, प्रतिमा के अभिषेक तथा पूजन के वस्त्रों के धोने साफ करने मे और उसके उपदेश देने में अप्काय के जीवो की विराधना होती है, धूपखेना, दीपक जलाना, आरती उतारना ये सब बातें अग्निकायिक जीवों की विराधना के विना नहीं हो सकती है अर्थात् इनमें अग्निकायिक जीवो की विराधना अवश्यभाविनी है।

બેસશે અને તેઓ પોતાના ધર્મના સાચા આરાધક ગણાશે નહિ એટલા માટે આ વાત ચોક્કસપણે માની જ લેવી જોઈએ કે 'જીન પ્રણીત' આગમમા પ્રતિમા-પૂજનની વિધિ મળતી નથી

આ પ્રમાણે પ્રતિમા-સ્થાપન, -પ્રતિમા-પ્રતિષ્ઠા કરાવવી, મંદિર વગેરે બનાવવા અને તે પ્રતિમાની પૂજા માટે ઉદ્યાન તેમજ વાવ વગેરે તૈયાર કરાવવા એ પૃથ્વિ-કાયિક જીવોની હિંસાના કારણ છે-એટલા માટે ત્યાજ્ય છે તેને બનાવવા માટે જે લોકો ઉપદેશ આપે છે તેઓ પણ પૃથ્વિ-કાયિક જીવોની હિંસાથી મુક્ત થઈ શકતા નથી આ રીતે જ પૂજનને માટે સ્નાન, પ્રતિમાનો અભિષેક તેમજ પૂજનના વસ્ત્રોને ધોવામા અને તેના ઉપદેશમા પણ અપ્કાયના જીવોની વિરાધના હોય છે ધૂપ કરવો, દીપક કરવો, આરતી ઉતારવી આ બધી વિધિઓ અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના વગર સભવી શકે તેમ નથી એટલે કે તેઓમા અગ્નિ-કાયિક જીવોની વિરાધના ચોક્કસપણે

दिभिश्चामरादिवीजनैर्नृत्यगीतवादित्रैश्च सविशद् भवति, वनस्पतिकायविराधन च प्रतिमापूजानिमित्तकेऽनन्तकायकोमलविविधफलपुष्पपत्रसमद्दे निपत भवति। पृथिवीकायाद्याश्रिता बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसगोपितशरीरा द्वीन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःखैस्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्खलितपतिता म्रियन्ते।

धूपकेधुआ से, दीप तथा आरती की ज्योति से चमर आदि के ढोरने से, नृत्य करने से, गीत गाते समय मुख से निकले हुए गर्म वायु से, एव बाजों के बजाने से वायुकायिक जीवों की विराधना होती हुई स्पष्ट मालूम देती है। वनस्पति कायिक जीवों की विराधना भी उस समय इस प्रकार से होती है, कि–मूर्ति पूजन के लिये उसके पूजक अनन्त कायिक ऐसे कोमल अनेक प्रकार के फल, पुष्प और पत्रों का सग्रह जो करता है इस प्रकार इस पूजन में षट्कायिक जीवों की हिंसा का आरभ स्पष्ट देखा जाता है। तथा त्रस कायिक जीवों का भी इसके निमित्तहनन होता है और वह इस प्रकार से–कि जब पृथिवीकायिकादि जीवों का आरभ प्रतिमा आदि के निर्माण में या देव आयतन (मन्दिर) आदि के कराने में किया जाता है तो उस समय उसके आश्रित जो बहुत से अनेक जाति के निरपराधी, हीन, दीन, दुर्बल, प्रकृति से भयशील तथा सगोपित शरीरवाले ऐसे द्वीन्द्रियादिकसे लेकर पचेन्द्रिय तक जितने भी त्रस जीव रहते हैं वे सब के सब छेदन, भेदन, एव स्वाश्रय के विनाश जनित अनत दुःखों से सतप्त होकर

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢોળવાથી તેમજ વાજાઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ–કાયિક જીવોની વિરાધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ–પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનત–કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા કરે છે આમ આ પૂજામા ષટ્–કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે ત્રસ–કાયિક જીવોનુ પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ–કાયિક વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમા અથવા તો દેવ–આયતન (મદિર) વગેને બનાવવામા કરવામા આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણ તેમજ સગોપિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માંડીને પચેન્દ્રિય સુધીના ત્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના

धर्मस्य लक्षण हि-जिनाज्ञाप्रयोज्यप्रवृत्तिमत्त्वम् , " आणाए मामग धम्म " इति भगवद्वचनात् , किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भगवता-" अणगारधम्मो ताव " इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभोजनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिद कथितम्—

'अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ' (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुष्मन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्त । एतस्य धर्मस्य ' शिक्षायामुपस्थितः '=आराधकः, निर्ग्रथो वा निर्ग्रथी वा विहर-

और वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं ।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृति करना यही धर्म का लक्षण है । भगवान का भी आचाराङ्गसूत्र अ- ६ उ २ सू- ८ में यही कथन है " आणाए मामग धम्म " इति । प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश दिया उस समय उन्होने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-१ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म । " अनगार धम्मो ताव " इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि " अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ " हे आयुष्मन ! यह अनगारसामायिक-मुनियो का सिद्धान्त विषयक

इ ખોયા ન તપ્ત થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, ભ્રષ્ટ થઈને અ તે મૃત્યુને ભેટે છે

જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવુ એજ ધર્મનુ લક્ષણ છે આચારાગ સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ મા પણ ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે " आणाए मामग धम्म इति " પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર મુનિનો ધર્મ " अनगारधम्मो ताव " વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરાધના વગેરેથી વિરક્ત થવુ અહીંથી માડી રાત્રિ-ભોજનનો સપૂર્ણપણે ત્યાગ કરવો અહીં સુધી જે કઈ કહ્યુ છે તે બધુ અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામા આવ્યુ છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમા તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે—
(अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ) હે આયુષ્મન્ !

दिमिश्चामरादिवीजनैर्नृत्यगीतवादित्रैश्च सविशद भवति, वनस्पतिकायविराधन च प्रतिमापूजानिमित्तकेऽनन्तकायकोमलविविधफलपुष्पपत्रसग्रहे नियत भवति। पृथिवीकायाद्याश्रिता बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसगोपितशरीरा द्वीन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःखैस्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्खलितपतिता म्रियन्ते।

धूपके धुआ से, दीप तथा आरती की ज्योति से चमर आदि के ढोरने से, नृत्य करने से, गीत गाते समय मुख से निकले हुए गर्म वायु से, एव बाजों के बजाने से वायुकायिक जीवों की विराधना होती हुई स्पष्ट मालूम देती है। वनस्पति कायिक जीवों की विराधना भी इस समय इस प्रकार से होती है, कि-मूर्ति पूजन के लिये उसके पूजक अनन्त कायिक ऐसे कोमल अनेक प्रकार के फल, पुष्प और पत्रों का सग्रह जो करता है इस प्रकार इस पूजन में षट्कायिक जीवों की हिंसा का आरभ स्पष्ट देखा जाता है। तथा त्रस कायिक जीवों का भी इसके निमित्तहनन होता है और वह इस प्रकार से-कि जब पृथिवीकायिकादि जीवों का आरभ प्रतिमा आदि के निर्माण में या देव आयतन (मन्दिर) आदि के कराने में किया जाता है तो उस समय उसके आश्रित जो बहुत से अनेक जाति के निरपराधी, हीन, दीन, दुर्बल, प्रकृति से भयशील तथा सगोपित शरीरवाले ऐसे द्वीन्द्रियादिकसे लेकर पचेन्द्रिय तक जितने भी त्रस जीव रहते हैं वे सब के सब छेदन, भेदन, एव स्वाश्रय के विनाश जनित अनत दुःखों से सतप्त होकर

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢાળવાથી તેમજ વાજાઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરાધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા કરે છે આમ આ પૂજામા ષટ્-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે ત્રસ-કાયિક જીવોનુ પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ-કાયિક વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમા અથવા તો દેવ-આયતન (મદિર) વગેને બનાવવામા કરવામા આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણુ તેમજ સગોપિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માંડીને પચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ત્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનત

धर्मस्य लक्षण हि-जिनाज्ञाप्रयोज्यप्रवृत्तिपरत्वम्, " आणाए मामग धम्म " इति भगवद्‌वचनात्, किं च-अगारानगारभेदेन धर्मस्य द्वैविध्यमभिधाय-भगवता-" अणगारधम्मो ताव " इत्यादिना सर्वप्राणातिपातविरमणादि-रात्रिभोजनान्तान् अनगारधर्मानुपदिश्य तदनन्तरमिद कथितम्—

'अयमाउसो ! अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ' (औपपातिसूत्रम्)

अयमायुष्मन् ! अनगारसामायिकः=अनगारसिद्धान्तविषयः, धर्मः प्रज्ञप्त । एतस्य धर्मस्य 'शिक्षायामुपस्थितः'=आराधकः, निर्ग्रथो वा निर्ग्रथी वा विहर-

और वहा से गिर पड़कर अन्त में मर जाते हैं।

जिनेन्द्र की आज्ञा में प्रवृत्ति करना यही धर्म का लक्षण है। भगवान का भी आचाराङ्गसूत्र अ-६ उ २ सू-८ में यही कथन है " आणाए मामग धम्मं " इति। प्रभु ने जिस समय धर्म का उपदेश दिया उस समय उन्होंने इस धर्मके दो भेद कहे हैं इनमें एक-१ सागारी गृहस्थका धर्म और दूसरा अनगार-मुनिका धर्म। " अनगार धम्मो ताव " इत्यादि सूत्र से समस्त जीवों की विराधना आदि से विरक्त होना यहा से लगाकर रात्रिभोजन का सर्वथा परिहार करना यहा तक जो कुछ कहा है वह सब अनगार धर्म को लेकर कहा गया है उसके बाद उन्होंने औपपातिक सूत्र में यह कहा है कि " अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ " हे आयुष्मन्! यह अनगारसामायिक-मुनियों का सिद्धान्त विषयक

ड ખોથા ન તદ્ થઈને અને ત્યાથી પડી જઈને, ભ્રષ્ટ થઈને અ તે મૃત્યુને ભેટે છે

જીનેન્દ્રની આજ્ઞા પ્રમાણે અનુસરવુ એજ ધર્મનુ લક્ષણુ છે આચારાગ સૂત્ર અ-૬, ઉ-૨, સૂ-૮ મા પણ ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે " आणाए मामग धम्म इति " પ્રભુએ જ્યારે ધર્મ વિષે ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેમણે આ ધર્મના બે ભેદ બતાવ્યા છે ૧ સાગાર ગૃહસ્થનો ધર્મ અને ૨ અનગાર મુનિનો ધર્મ " अनगारधम्मो ताव " વગેરે સૂત્રથી સમસ્ત જીવોની વિરાધના વગેરેથી વિરક્ત થવુ અહીંથી માડી રાત્રિ-ભોજનનો સપૂર્ણપણે ત્યાગ કરવો અહી સુધી જે કઈ કહ્યુ છે તે બધુ અનગાર ધર્મને ઉદ્દેશીને કહેવામા આવ્યુ છે ત્યારપછી ઔપપાતિક સૂત્રમા તેઓશ્રીએ આ પ્રમાણે કહ્યુ છે કે—
(अयमाउसो अणगारसामइए धम्मे पण्णत्ते, एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए निग्गथे वा निग्गथी वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ) હે આયુષ્મન્!

दिभिश्चामरादिवीजनैर्नृत्यगीतवादित्रैश्च तद्विराधना भवति, वनस्पतिकायविराधना च प्रतिमापूजानिमित्तकेऽनन्तकायकोमलविविधफलपुष्पपत्रसंग्रहे नियतं भवति। पृथिवीकायाद्याश्रिता बहुविधनिरपराधहीनदीनदुर्बलप्रकृतिभीरुसंगोपितशरीराः द्वीन्द्रियादि पञ्चेन्द्रियान्तास्त्रसा जीवा अपि छेदनभेदनस्वाश्रयविनाशजनितानन्तदुःखैस्तीव्रतरवेदनामुपलभ्येतस्ततः स्खलितपतिता म्रियन्ते।

धूपके धुआ से, दीप तथा आरती की ज्योति से चमर आदि के ढोरने से, नृत्य करने से, गीत गाते समय मुख से निकले हुए गर्म वायु से, एव वाजों के बजाने से वायुकायिक जीवों की विराधना होती हुई स्पष्ट मालूम देती है। वनस्पति कायिक जीवों की विराधना भी उस समय इस प्रकार से होती है, कि-मूर्ति पूजन के लिये उसके पूजक अनन्त कायिक ऐसे कोमल अनेक प्रकार के फल, पुष्प और पत्रों का सग्रह जो करता है इस प्रकार इस पूजन में षट्कायिक जीवों की हिंसा का आरभ स्पष्ट देखा जाता है। तथा त्रस कायिक जीवों का भी इसके निमित्तहनन होता है और वह इस प्रकार से-कि जब पृथिवीकायिकादि जीवों का आरभ प्रतिमा आदि के निर्माण में या देव आयतन (मन्दिर) आदि के कराने में किया जाता है तो उस समय उसके आश्रित जो बहुत से अनेक जाति के निरपराधी, हीन, दीन, दुर्बल, प्रकृति से भयशील तथा सगोपित शरीरवाले ऐसे द्वीन्द्रियादिकसे लेकर पचेन्द्रिय तक जितने भी त्रस जीव रहते हैं वे सब के सब छेदन, भेदन, एव स्वाश्रय के विनाश जनित अनत दुःखों से सतप्त होकर

થવાની જ છે ધૂપના ધૂમાડાથી દીપક અને આરતીની જ્યોતથી ચમર વગેરેને ઢાળવાથી તેમજ વાજાઓ વગાડવાથી વાયુકાયિક જીવોની વિરાધના થાય છે તેની દરેકને સ્પષ્ટ પ્રતીતિ થતી જ રહે છે વનસ્પતિ-કાયિક જીવોની વિરાધના પણ તે વખતે આ પ્રમાણે થાય છે કે મૂર્તિ-પૂજન માટે પૂજા કરનારાઓ અનત-કાયિક એવા કોમળ ઘણી જાતના ફળો, પુષ્પો અને પત્રોને એકઠા કરે છે આમ આ પૂજામા ષટ્-કાયિક જીવોની હિંસા સ્પષ્ટપણે દેખાય છે ત્રસ-કાયિક જીવોનુ પણ તેને લીધે હનન હોય છે જેમકે જ્યારે પૃથિવ-કાયિક વગેરે જીવોનો આરભ પ્રતિમા વગેરેના નિર્માણમા અથવા તો દેવ-આયતન (મદિર) વગેરે બનાવવામા કરવામા આવે છે ત્યારે તેના આશ્રિત જે ઘણા અનેક જાતના નિરપરાધિ, હીન, દીન, દુર્બલ, પ્રકૃતિથી બીકણ તેમજ સગોપિત શરીરવાળા એવા દ્વીન્દ્રિયાદિકથી માડીને પચેન્દ્રિય સુધીના જેટલા ત્રસ જીવો રહે છે તેઓ સર્વે છેદન, ભેદન અને સ્વાશ્રયના વિનાશથી અનત

छाया—अयमायुष्मन् ! अगारसामयिको धर्मः प्रज्ञप्तः, एतस्य धर्मस्य शिक्षायामुपस्थितः'=आराधकः श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा विहरमाणा आज्ञाया आराधको भवति । इति ॥

अत्रापि एतस्य द्वादशविधस्य धर्मस्याराधक एव श्रमणोपासक आज्ञाया आराधक इति बोधयताऽऽज्ञैव धर्मस्य मूलमिति बोधितम् ।

आचाराङ्गसूत्रेऽपि प्रथमाध्ययने तृतीयोद्देशे भगवताऽभिहितम्-" जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा-विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसंजोग । पणया वीरा महावीहिं । लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय ।" इति

आयुष्मन् ! यह गृहस्थ का धर्म कहा गया है । इस धर्म की शिक्षा में उपस्थित-श्रमणोपासक-मुनिजनों के भक्त ऐसे श्रावकजन अथवा श्राविकाजन तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा के आराधक माने जाते हैं। इस सूत्र में भी यही प्रकट किया गया है कि इस १२ प्रकार के धर्म का आराधक ही श्रमणोपासक-श्रावक, श्राविका तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का आराधक है इस प्रकार समझानेवाले श्री जिनेन्द्र देव ने आज्ञा ही धर्म का मूल है यह समझाया है ।

आचाराग सूत्र के प्रथम अध्ययनके तृतीय उद्देशे में भगवान ने यह कहा है " जाए सद्धाए णिक्खते तमेव मणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय ' कि जिस श्रद्धा उत्साह से "अर्हंत प्रभु द्वारा प्रतिपादित सम्यग्दर्शनादिक मोक्षके मार्ग है या नहीं है" इस प्रकार सर्व

आणाए आराहए भवइ" હે આયુષ્મન્ત ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્તજન-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે આ રીતે સમજાવનારા શ્રી જીનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનુ મૂળ છે આમ સમજાવ્યુ છે

આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે-" जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्व सजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " કે જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી "અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ" આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક શંકા તેમજ

माण आज्ञाया आराधको भवति। एतस्य धर्मस्याराधक एवाज्ञाया आराधक इत्युक्त्वाऽऽज्ञैव धर्मस्य प्रकाशकतया मूलमिति बोधितम्। तदनन्तरं च भगवता- "अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ। तं जहा—पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" इत्यादिना द्वादशविधं धर्मं निरूप्य कथितम्। 'अयमाउसो! अगारसामइए धम्मे पण्णत्ते' एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति।

धर्म कहा गया है-अर्थात् मुनियों का यह धर्म कहा गया है। इस धर्म की शिक्षा में जो उपस्थित होता है अर्थात् जो इस धर्म की-आराधना करते हैं- चाहे वे साधु हों चाहे साध्वी हों कोई भी हो वे जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा के आराधक होते हैं। इस धर्म की आराधना करनेवाला जीव ही जिनेन्द्र की आज्ञा का आराधक माना गया है इस कथन से "जिस बात में भगवान की आज्ञा हो वही धर्म का मूल है अन्य आज्ञा विरुद्ध प्रवृत्ति है" यह बात समझाई गई है इस के बाद भगवान ने "अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ तं जहा-पंच अणुव्वयाइं, तिण्णिगुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" इस सूत्र से यह प्रकट किया है कि गृहस्थ का धर्म १२ प्रकार का है ५ अणुव्रत, ३ गुण व्रत और ४ शिक्षाव्रत। इस प्रकार से कथन कर "अयमाउसो अगार सामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए, उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति-हे

આ અનગાર સામાયિક મુનિઓનો સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે એટલે કે આ મુનિઓનો ધર્મ કહેવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા જે ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે-ભલે તેઓ સાધુ હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જ જીનેન્દ્રના આરાધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામા આવી છે કે જે વાતમા ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજુ આચરણુ અધર્મ છે ત્યારપછી ભગવાન વડે "अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ तं जहा पंच अणुव्वयाइं,तिण्णि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે—૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણુવ્રત અને ૪ શિક્ષાવ્રત આ રીતે "अयमाउसो अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा

छाया—अयमायुष्मन् ! अगारसामयिको धर्मः प्रज्ञप्तः, एतस्य धर्मस्य शिक्षायामुपस्थितः"=आराधकः श्रमणोपासको वा श्रमणोपासिका वा विहरमाणा आज्ञाया आराधको भवति । इति ॥

अत्रापि एतस्य द्वादशविधस्य धर्मस्याराधक एव श्रमणोपासक आज्ञाया आराधक इति बोधयताऽऽज्ञैव धर्मस्य मूलमिति बोधितम् ।

आचाराङ्गसूत्रेऽपि प्रथमाध्ययने तृतीयोद्देशे भगवताऽभिहितम्-" जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा-विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसंजोग । पणया वीरा महावीहिं । लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय ।" इति

आयुष्मन् ! यह गृहस्थ का धर्म कहा गया है । इस धर्म की शिक्षा में उपस्थित-श्रमणोपासक-मुनिजनों के भक्त ऐसे श्रावकजन अथवा श्राविकाजन तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा के आराधक माने जाते हैं । इस सूत्र में भी यही प्रकट किया गया है कि इस १२ प्रकार के धर्म का आराधक ही श्रमणोपासक-श्रावक, श्राविका तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का आराधक है इस प्रकार समझानेवाले श्री जिनेन्द्र देव ने आज्ञा ही धर्म का मूल है यह समझाया है ।

आचाराग सूत्र के प्रथम अध्ययनके तृतीय उद्देशे में भगवान ने यह कहा है " जाए सद्धाए णिक्खते तमेव मणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय ' कि जिस श्रद्धा उत्साह से "अर्हत प्रभु द्वारा प्रतिपादित सम्यग्दर्शनादिक मोक्षके मार्ग है या नहीं है" इस प्रकार सर्व

आणाए आराहए भवइ" हे આયુષ્મન્ત ! આ ગૃહસ્થ ધર્મ બતાવવામા આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામા ઉપસ્થિત શ્રમણોપાસક મુનિઓના ભક્તજન-શ્રાવકો અથવા તો શ્રાવિકાઓ તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાના આરાધક ગણાય છે આ સૂત્રમા પણ આ પ્રમાણે જ સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યુ છે કે ૧૨ પ્રકારના ધર્મના આરાધકો જ શ્રમણોપાસક શ્રાવક શ્રાવિકા તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાને આરાધકો છે આ રીતે સમજાવનાર શ્રી જીનેન્દ્રદેવે આજ્ઞા જ ધર્મનુ મૂળ છે આમ સમજાવ્યુ છે

આચારાગ સૂત્રના પહેલા અધ્યયનના ત્રીજા ઉદ્દેશકમા ભગવાને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે-" जाए सद्धाए णिक्खते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तिय पुव्व सजोग । पणया वीरा महावीहिं लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " है જે શ્રદ્ધા-ઉત્સાહથી "અર્હંત પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત સમ્યગ્ દર્શન વગેરે મોક્ષના માર્ગો છે કે નહિ" આ રીતે સર્વ આગમ વિષયક સર્વ શકા તેમજ

माण आज्ञाया आराधको भवति। एतस्य धर्मस्याराधक एवाज्ञाया आराधक इत्युक्त्वाऽऽज्ञैव धर्मस्य प्रकाशकतया मूलमिति घोषितम्। तदनन्तरं च भगवता-"अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ। तं जहा—पंच अणुव्वयाइं, तिण्णि गुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" इत्यादिना द्वादशविधं धर्मं निरूप्य कथितम्।

'अयमाउसो! अगारसामइए धम्मे पण्णत्ते' एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति।

धर्म कहा गया है-अर्थात् मुनियों का यह धर्म कहा गया है। इस धर्म की शिक्षा में जो उपस्थित होता है अर्थात् जो इस धर्म की-आराधना करते हैं- चाहे वे साधु हों चाहे साध्वी हों कोई भी हो ये जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा के आराधक होते हैं। इस धर्म की आराधना करनेवाला जीव ही जिनेन्द्र की आज्ञा का आराधक माना गया है इस कथन से "जिस बात में भगवान की आज्ञा हो वही धर्म का मूल है अन्य आज्ञा विरुद्ध प्रवृत्ति है" यह बात समझाई गई है इस के बाद भगवान ने "अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ त जहा-पंच अणुव्वयाइ, तिण्णिगुणव्वयाइं चत्तारि सिक्खावयाइं" इस सूत्र से यह प्रकट किया है कि गृहस्थ का धर्म १२ प्रकार का है ५ अणुव्रत, ३ गुण व्रत और ४ शिक्षाव्रत। इस प्रकार से कथन कर "अयमाउसो अगार सामइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धमस्स सिक्खाए, उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे आणाए आराहए भवइ" इति-है

આ અનગાર સામાયિક મુનિયોનો સિદ્ધાન્ત વિષયક ધર્મ કહેવામાં આવ્યો છે એટલે કે આ મુનિઓનો ધર્મ કહેવામાં આવ્યો છે આ ધર્મની શિક્ષામાં જે ઉપસ્થિત હોય છે એટલે કે આ ધર્મની આરાધના કરે છે-ભલે તેઓ સાધુ હોય કે સાધ્વીઓ ગમે તે કેમ ન હોય તેઓ જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાના આરાધકો હોય છે આ ધર્મની આરાધના કરનારો જીવ જ જીનેન્દ્રના આરાધક ગણાય છે આ કથનથી એ વાત સમજાવવામાં આવી છે કે જે વાતમાં ભગવાનની આજ્ઞા હોય તે જ ધર્મ છે, આજ્ઞા વિરુદ્ધ બીજુ આચરણ અધર્મ છે ત્યારપછી ભગવાન વડે "अगारधम्मं दुवालसविहं आइक्खइ त जहा पंच अणुव्वयाइ,तिण्णि गुणव्वयाइ चत्तारि सिक्खावयाइ" આ સૂત્ર દ્વારા એ સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યુ છે કે ગૃહસ્થનો ધર્મ ૧૨ પ્રકારનો છે-૫ અણુવ્રત, ૩ ગુણવ્રત અને ૪ શિક્ષાવ્રત આ રીતે "अयमाउसो अगारसामाइए धम्मे पण्णत्ते एयस्स धम्मस्स सिक्खाए उवट्ठिए, समणोवासए वा समणोवासिया वा विहरमाणे

'पगया' प्रगताः=प्राप्ताः कठिनतरतपःसंयमाराधनेन प्राप्तवन्त इत्यर्थः । अयमेव मार्गो मोक्षप्राप्तिकरोऽशेषसंयमिसेवितत्वात्, तीर्थङ्करादिमहापुरुषा अपि मार्गमिममनुशीलितवन्त इति विश्वसनीयतया शिष्याणां श्रद्धापूर्वकं प्रवृत्तिर्यथा स्यादिति भावः ।

कश्चिन्मन्दधीः शिष्योऽनेकदृष्टान्तैर्बोध्यमानोऽपि अप्कायादिजीवेषु न श्रद्दधातीति तमुद्दिश्य कथयति-हे शिष्य ! तव मतिर्यद्यपि अप्कायजीवविषये न

वीर दो प्रकार के होते हैं ? द्रव्यवीर और दूसरे भाववीर । संयम के अनुष्ठान करने में जो शक्तिसंपन्न हैं वे भाववीर हैं । ये जीव सम्यग्दर्शन आदि लक्षणरूप इस महाविस्तृतमार्ग को कि जो महापुरुषो द्वारा सेवित हुआ है कठिनतर तप और संयम की आराधना से प्राप्त कर लिया करते हैं । कहनेका सार यही है कि भाववीर यही अपने चित्तमें विचार किया करते हैं कि सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र और सम्यगतप रूप ही मार्ग है क्यो कि इसी से मुक्ति की प्राप्ती होती है- इसीलिये इस मार्गका समस्त संयमीजीवोंने पूर्व में सेवन किया है और तो क्या स्वयं तीर्थंकर प्रभु ने भी इसी मार्ग की परिशीलना की है । इसलिये इस मार्ग में प्रवृत्ति सर्वहित विधायी है इस प्रकार यह मार्ग विश्वास योग्य होने से शिष्यजन भी श्रद्धापूर्वक इसमे प्रवृत्ति करे ।

कोई मन्दबुद्धिवाला शिष्य अनेक दृष्टान्तो द्वारा समझाये जाने पर भी यदि अप्काय आदि जीवों की श्रद्धा से रहित होता है तो उसे

૧ દ્રવ્ય-વીર, ૨ ભાવ-વીર સંયમના અનુષ્ઠાનમાં જે શક્તિશાળી છે તે ભાવ વીર છે આ બધા જીવો સમ્યગ્-દર્શન વગેરે લક્ષણ રૂપ આ વિસ્તૃતમાર્ગને કે જે મહાપુરૂષો વડે સેવવામાં આવ્યું છે-કઠણ તપ અને સંયમની આરાધનાથી મેળવી લે છે કહેવાની મતલબ એ છે કે ભાવ-વીરો પોતાના મનમાં આ પ્રમાણે જ વિચારો કરતા રહે છે કે ખરી રીતે સમ્યગ્ જ્ઞાન, સમ્યગ્ દર્શન, સમ્યગ્ ચારિત્ર રૂપ જ માર્ગ છે કેમકે મુક્તિની પ્રાપ્તિ એનાથી જ થાય છે એટલા માટે જ પહેલા થઈ ગયેલા બધા જીવોએ આ માર્ગનું જ અનુસરણ કર્યું હતું તીર્થંકર પ્રભુએ જાતે પણ આ માર્ગની જ પરિશીલતા કરી છે એથી આ માર્ગમાં પ્રવૃત્ત થવું તે બધી રીતે હિતાવહ છે આ પ્રમાણે આ માર્ગ વિશ્વસનીય હોવા બદલ શિષ્યો પણ શ્રદ્ધા રાખીને તેમાં પ્રવૃત્ત થાય

કોઈક મંદ બુદ્ધિ ધરાવનાર શિષ્ય ઘણા દૃષ્ટાંતો વડે સ્પષ્ટ કરવામાં આવવા છતાં પણ જો અપ્કાય વગેરે જીવોની શ્રદ્ધાથી રહિત હોય છે તો

यया श्रद्धया-सम्यक्त्वेन 'विसोत्तिय' विस्रोतसिकां=शङ्कां-सर्वशङ्कां देश शङ्का चेत्यर्थः, यथा-' किमार्हतो मोक्षमार्गोऽस्ति न वा ' इति सर्वागमविषयिका शङ्का सर्वशङ्का, तथा-" किमप्कायाद्यो जीवाः सन्ति न वा " इति देशशङ्का। तथा 'पुव्वसंजोगं' पूर्वसंयोगं=मातापित्रादिसम्बन्धं धनधान्यस्वजनादिसम्बन्धं वा, इदमुपलक्षण-तेन पश्चात्संयोगमपि श्वशुरादिकृतं, 'विजहित्ता' विहाय=परित्यज्य 'णिक्खन्ते' निष्क्रान्तः=प्रव्रजितः। 'तं' वा श्रद्धाम् 'अणुपालिज्जा एव' अनुपालयेदेव-निरतिचारं रक्षेदित्यर्थः।

अथ-' परिशीलितमार्गोऽनुगम्यते ' इति लोकरीत्या शिष्यश्रद्धादृढीकरणाय पूर्वमहापुरुषाचरितोऽयं मार्ग इति।

वीराः—भाववीराः संयमानुष्ठाने वीर्यवन्तः 'महावीहिं' महावीथिं= महावीथि-सम्यग्दर्शनादिलक्षणो महामार्गः महापुरुषसेवितत्वात्, तां महावीथिं

आगम विषयक सर्वशंका का तथा " अप् कायिकादिक जीव हैं या नहीं " इस प्रकार की देशशंका और माता पिता आदि के साथ के संबंधरूप पूर्व संयोग एवं धन, धान्य, स्वजन आदि संबंध, उपलक्षण से श्वशुर आदिरूप पश्चात् संयोग का परित्याग कर यह जीव संसार आदि पदार्थों को हेय समझ उनसे सर्वथा विरक्त हो जाता है उस श्रद्धा का अतिचार आदि कों से रक्षा करनी चाहिये-उस श्रद्धा का अतिचार रहित होकर मुनि को पालन करना चाहिये। जो मार्ग परि- शीलित होता है उस पर अनेक प्राणी चलते हैं यह लौकिकरीति है। इसीरीति के अनुसार शिष्यों की श्रद्धा को दृढ करने के लिये " यह मार्ग पूर्व में महापुरुषों द्वारा सेवित किया गया है " इसे समझाने के लिये सूत्रकार " पणया वीरा महावीहिं " इस अंश का कथन करते हैं

" અપ્કાયિક વગેરે જીવો છે કે નથી " આ જાતની દેશ શંકા અને માતા પિતા વગેરેની સાથેના સંબંધ રૂપ પૂર્વ સંયોગ અને ધન, ધાન્ય, સ્વજન વગેરે સંબંધ ઉપલક્ષણથી ' શ્વસુર ' વગેરે રૂપ પશ્ચાત્ સંયોગનો પરિત્યાગ કરીને આ જીવ સંસાર વગેરે પદાર્થોને હેય સમજીને તેમના તરફ સંપૂર્ણ પણે વિરક્ત થઈ જાય છે તે શ્રદ્ધાની અતિચાર વગેરેથી રક્ષા કરવી જોઈએ તે શ્રદ્ધાનું પાલન મુનિએ અતિચાર વગર થઈને કરવું જોઈએ જે માર્ગ પરિ શીલિત હોય છે તે તરફ ઘણા પ્રાણીઓ જાય છે, આ લૌકિક પ્રથા છે આ પ્રથા પ્રમાણે શિષ્યોની શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવા માટે " આ માર્ગ મહા પુરુષો વડે સેવવામાં આવ્યો છે " આ વાત સમજાવવા માટે સૂત્રકાર " પણયા વીરા મહાવીહિ " આ વચનને ટાંકે છે વીર બે પ્રકારના

'पणया' प्रणता =प्राप्ताः कठिनतरतप संयमाराधनेन प्राप्तवन्त इत्यर्थः। अय मेव मार्गो मोक्षप्राप्तिकरोऽशेषसंयमिसेवितत्वात्, तीर्थङ्करादिमहापुरुषा अपि मार्गमिममनुशीलितवन्त इति विश्वसनीयतया शिष्याणां श्रद्धापूर्वक प्रवृत्तिर्यथा स्यादितिभाव।

कश्चिन्मन्दधीः शिष्योऽनेकदृष्टान्तैर्बोध्यमानोऽपि अप्कायादिजीवेषु न श्रद्धातीति तमुद्दिश्य कथयति–हे शिष्य! तव मतिर्यद्यपि अप्कायजीवविषये न

वीर दो प्रकार के होते हैं? द्रव्यवीर और दूसरे भाववीर। संयम के अनुष्ठान करने में जो शक्तिसंपन्न हैं वे भाववीर है। वे जीव सम्यग्दर्शन आदि लक्षणरूप इस महाविस्तृतमार्ग को कि जो महापुरुषो द्वारा सेवित हुआ है कठिनतर तप और संयम की आराधना से प्राप्त कर लिया करते हैं। कहनेका सार यही है कि भाववीर यही अपने चित्तमें विचार किया करते हैं कि सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन, सम्यग्चारित्र और सम्यगतप रूप ही मार्ग है क्यों कि इसी से मुक्ति की प्राप्ती होती है– इसीलिये इस मार्गका समस्त संयमीजीवोंने पूर्व में सेवन किया है और तो क्या स्वयं तीर्थंकर प्रभु ने भी इसी मार्ग की परिशीलना की है। इसलिये इस मार्ग में प्रवृत्ति सर्वहित विधायी है इस प्रकार यह मार्ग विश्वास योग्य होने से शिष्यजन भी श्रद्धापूर्वक इसमे प्रवृत्ति करे।

कोई मन्दबुद्धिवाला शिष्य अनेक दृष्टान्तो द्वारा समझाये जाने पर भी यदि अप्काय आदि जीवो की श्रद्धा से रहित होता है तो उसे

---

૧ દ્રવ્ય-વીર, ૨ ભાવ-વીર સંયમના અનુષ્ઠાનમાં જે શક્તિશાળી છે તે ભાવ વીર છે આ બધા જીવો સમ્યગ્-દર્શન વગેરે લક્ષણ રૂપ આ વિસ્તૃતમાર્ગને કે જે મહાપુરૂષો વડે સેવવામાં આવ્યુ છે-કઠણ તપ અને સંયમની આરાધનાથી મેળવી લે છે કહેવાની મતલબ એ છે કે ભાવ-વીરો પોતાના મનમાં આ પ્રમાણે જ વિચારો કરતા રહે છે કે ખરી રીતે સમ્યગ્ જ્ઞાન, સમ્યગ્ દર્શન, સમ્યગ્ ચારિત્ર રૂપ જ માર્ગ છે કેમકે મુક્તિની પ્રાપ્તિ એનાથી જ થાય છે એટલા માટે જ પહેલા થઈ ગયેલા બધા જીવોએ આ માર્ગનુ જ અનુસરણ કર્યું હતું તીર્થંકર પ્રભુએ જાતે પણ આ માર્ગની જ પરિશીલતા કરી છે એથી આ માર્ગમાં પ્રવૃત્ત થવુ તે બધી રીતે હિતાવહ છે આ પ્રમાણે આ માર્ગ વિશ્વસનીય હોવા બદલ શિષ્યો પણ શ્રદ્ધા રાખીને તેમાં પ્રવૃત્ત થાય

કોઇક મંદ બુદ્ધિ ધરાવનાર શિષ્ય ઘણા દૃષ્ટાંતો વડે સ્પષ્ટ કરવામાં આવવા છતા પણ જો અપ્કાય વગેરે જીવોની શ્રદ્ધાથી રહિત હોય છે તો

परिस्फुरति, तद्विषये विशेषज्ञानाभावात्, तथापि भगवदाज्ञया श्रद्धा नितरां विधेयेत्याशयेनाह—" लोग च आणाए अभिसमेचा अकुतोभय " इति।

" लोग " लोकम् अत्र लोकशब्देन प्रकरणवशादप्काय लोक एव गृह्यते, तमप्कायलोक, च शब्देन अन्यांश्चाप्कायाश्रितान् जीवान " आणाए " आज्ञया तीर्थंकर वचनेन " अभिसमेचा " अभिसमेत्य आभिमुख्येन सम्यग्ज्ञात्वा, अप्कायादयो जीवा सन्तीत्येवमनुपालयेत्यर्थः, " अकुतोभय " नास्ति कुतश्चित्

समझानेके लिये सूत्रकार कहते हैं कि हे शिष्य! तुम्हारी बुद्धि अप्कायिक आदि जीवोकी श्रद्धा करनेमें उन विषयक विशेषज्ञानके अभावसे यदि समर्थ नहीं है, तो भी भगवान् की आज्ञा से तुम्हें उनके विषय में अपनी श्रद्धा को दूषित नहीं होने देना चाहिये-अर्थात भगवान की आज्ञा प्रमाण मानकर तुम्हें उनके विषय में अपनी अतिशय श्रद्धा जाग्रत करनी चाहिये। सूत्रकार इसी अभिप्राय से कहते हैं कि " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति। अप्काय रूप लोक को तथा " च " शब्द से अन्य अप्काय के अश्रित जीवों को तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा से अच्छी तरह जानकर उनकी आज्ञानुसार उनका अस्तित्व मानकर आत्मकल्याण के अभिलाषी मुनियों को सयम का पालन करना चाहिये। सूत्रस्थलोक शब्द यहा प्रकरण के वश से अप्काय का बोधक है। " च " शब्द से तदाश्रित अन्य जीवों का ग्रहण हुआ है। " अकुतोभय " शब्द का अर्थ सयम है कहीं से भी किसी

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય! તમારી બુદ્ધિ અપ્કાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામા તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમા વધારે શ્રદ્ધા જાગ્રત કરવી જોઇએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति। અપ્કાય રૂપ લોકને તેમજ ' च ' શબ્દથી બીજા અપ્કાયાશ્રિત જીવોને તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનુ આસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ઇચ્છનારા મુનિઓએ સયમનુ પાલન કરવુ જોઇએ સૂત્રમા આવેલો ' લોક ' શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્કાયનો વાચક છે ' च ' શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનુ ગ્રહણ થયુ છે ' अकुतोभय " શબ્દનો અર્થ સયમ છે કોઈ પણ જગ્યા એથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી ભય હોતો નથી તે અ.

केनापि प्रकारेण प्राणिना भय यस्मात् सोऽकुतोभयः=सयमस्तम्, "अणुपालिज्जा" अनुपालयेत् इति पूर्वोक्तेन सम्बन्धः। सर्वदा जीवाभिरक्षणरूपसयमानुपालने सावधानतया यत्नः कार्यः इत्यर्थः।

अत्र "जाए सद्धाए निक्खते तमेवमणुपालिज्जा विजहित्ता विसोत्तियं पुव्वसजोग" इत्यनेन श्रद्धाया आराध्यत्वे जिनाज्ञायाः सद्भावात् श्रद्धाया धर्मत्व सिद्धम्।

श्रद्धादृढीकरणमपि च धर्मस्तदर्थे "पणया वीरा महावीहिं" इति भगवदुपदेशस्य सद्भावात्।

"लोग च आणाए अभिसमेच्चा" इत्यनेनाज्ञायाः षट्कायजीवतत्त्वज्ञान-हेतुत्वेन वर्णनात् तत्त्वज्ञानस्य धर्मत्वम्।

भी प्रकार से जीवो को जिससे भय नहीं होता है वह अकुतोभय-सयम है भाव इसका यही है कि आत्म कल्याण के इच्छुक मुनियों को जीवों के सरक्षण रूप सयम की आराधना करने में सावधानता पूर्वक प्रयत्नशील रहना चाहिये। यहां "जाए सद्धाए निक्खते तमेवमणुपालिज्जा, विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग" इस सूत्राश से यह बात समझाई गई है कि श्रद्धा की आराधना में जिनेन्द्र की आज्ञा का सद्भाव है अतः वही धर्म है। अपि च श्रद्धा की दृढता करना यह भी धर्म है। इसी निमित्त "पणया वीरा महावाहिं" यह भगवान का उपदेश है।

"लोग च अणाए अभिसमेचा" इस सूत्राश से यह प्रकट होता है कि जब जिनेन्द्र की आज्ञा षट् कायिक जीवों के वास्तविक ज्ञान होने में हेतुरूप से वर्णित हुई है तो इस स्थिति मे तत्वज्ञान धर्म है।

છે મતલબ એ છે કે આત્મકલ્યાણ ઇચ્છનારા મુનિઓને જીવોની રક્ષા રૂપ સયમની આરાધના કરવામા સાવધાન થઈને પ્રયત્ન કરતા રહેવુ જોઈએ અહીં "जाए सद्धाए निक्खते तमेवमणुपालिज्जा, विजहित्ता विसोत्तिय पुव्वसजोग" આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે કે શ્રદ્ધાની આરાધનામા જીનેન્દ્રની આજ્ઞાનો સદ્ભાવ છે એટલા માટે તેજ ધર્મ છે અને શ્રદ્ધાને મજબૂત બનાવવી તે પણ ધર્મ છે આ નિમિત્તે જ "पणया वीरा महावीहिं" આ ભગવાનનો ઉપદેશ છે

"लोगच आणाए अभिसमेच्चा" આ સૂત્રાશ વડે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે જ્યારે જીનેન્દ્રની આજ્ઞા ષટ્કાયિક જીવો વિષે વાસ્તવિક જ્ઞાન કરાવવા માટે જ કરવામા આવી છે ત્યારે આવી પરિસ્થિતિમા તત્વજ્ઞાન ધર્મ છે.

परिस्फुरति, तद्विषये विशेषज्ञानाभावात्, तथापि भगवदाज्ञया श्रद्धा नितरां विधेयेत्याशयेनाह—" लोग च आणाए अभिसमेचा अकुतोभय " इति।

" लोग " लोकम् अत्र लोकशब्देन प्रकरणवशादप्काय लोक एव गृह्यते, तमप्कायलोकं, च शब्देन अन्यान्प्कायाश्रितान् जीवान " आणाए " आज्ञया तीर्थंकर वचनेन " अभिसमेचा " अभिसमेत्य आभिमुख्येन सम्यग्ज्ञात्वा, अप् कायादयो जीवा सन्तीत्येवमनु वेदयर्थः, " अकुतोभय " नास्ति कुतश्चित्

समझानेके लिये सूत्रकार कहते हैं कि हे शिष्य! तुम्हारी बुद्धि अप्का यिक आदि जीवोंकी श्रद्धा करनेमें उन विषयक विशेषज्ञानके अभावसे यदि समर्थ नहीं है, तो भी भगवान् की आज्ञा से तुम्हें उनके विषय में अपनी श्रद्धा को दूषित नहीं होने देना चाहिये-अर्थात् भगवान की आज्ञा प्रमाण मानकर तुम्हें उनके विषय में अपनी अतिशय श्रद्धा जाग्रत करनी चाहिये। सूत्रकार इसी अभिप्राय से कहते हैं कि " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति। अप्काय रूप लोक को तथा " च " शब्द से अन्य अप्काय के आश्रित जीवों को तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा से अच्छी तरह जानकर उनकी आज्ञानुसार उनका अस्तित्व मानकर आत्मकल्याण के अभिलाषी मुनियों को संयम का पालन करना चाहिये। सूत्रस्थलोक शब्द यहां प्रकरण के वश से अप् काय का बोधक है। " च " शब्द से तदाश्रित अन्य जीवों का ग्रहण हुआ है। " अकुतोभय " शब्द का अर्थ संयम है कहीं से भी किसी

તેને સમજાવવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે હે શિષ્ય! તમારી બુદ્ધિ અપ્કાયિક વગેરે જીવોની શ્રદ્ધા કરવામા તેમના વિષે સવિશેષ જ્ઞાનના અભાવના લીધે જો સમર્થ નથી તો પણ ભગવાનની આજ્ઞાથી તે પ્રત્યે તમે પોતાની શ્રદ્ધાને દૂષિત થવા દેશો નહિ એટલે કે ભગવાનની આજ્ઞા પ્રમાણ માનીને મંદ બુદ્ધિવાળા શિષ્યોએ તેમના પ્રત્યે પોતાની વધારેમા વધારે શ્રદ્ધા જાગ્રત કરવી જોઇએ સૂત્રકાર આ પ્રયોજનથી જ કહે છે કે " लोग च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभय " इति। અપ્કાય રૂપ લોકને તેમજ ' च ' શબ્દથી બીજા અપ્કાયાશ્રિત જીવોને તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાથી સારી પેઠે સમજીને તેમની આજ્ઞા મુજબ તેમનુ આસ્તિત્વ માનીને આત્મકલ્યાણને ઇચ્છનારા મુનિઓએ સયમનુ પાલન કરવુ જોઇએ સૂત્રમા આવેલો ' લોક ' શબ્દ અહીં પ્રકરણ વશાત્ અપ્કાયનો વાચક છે ' च ' શબ્દથી તદાશ્રિત બીજા જીવોનુ ગ્રહણ થયુ છે ' अकुतोभय " શબ્દનો અર્થ સયમ છે કોઈ પણ જગ્યાએથી કોઈ પણ રીતે જીવોને જેનાથી ભય હોતો નથી તે સયમ

सव्वे पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हतव्वा न अज्जावेयव्वा, न किलायव्वा, न उद्दवेयव्वा।

एस धम्मे सुद्धे णितिए सासए, समेच्चा लोयं खेयन्नेहिं पवेइए।

आर्हतधर्मएव श्रद्धेय इति बोधयितु श्रीसुधर्मास्वामीप्राह-"से बेमि" इत्यादि। तीर्थंकरै स्वस्वशिष्येभ्यो यत् सम्यक्त्वमुक्त तदह ब्रवीमि। यद्वा-'से' इत्यस्य 'स' इतिच्छाया। येन मया भगवतः श्री वर्धमानस्वामिनस्तीर्थकरस्य सकाशे तद्वदनतस्तत्त्वज्ञान लब्ध, सोऽह ब्रवीमि।—भगदुक्तार्थमेव कथयामि, तस्मान्मम वाक्य श्रद्धेयमितिभावः।

पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हतव्वा, न अज्जावेयेव्वा, न परिघेत्तव्वा, न परितावेयव्वा न किलामेयव्वा, न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे सुद्धे णितिए समेच्चा लोय खेयन्नेहिं पवेइए" (आ. सू० अ-४ उ १ सू० १) श्री सुधर्मा स्वामी इस सूत्र द्वारा जम्बूस्वामी को यह समझाते है कि अर्हतप्रभु द्वारा प्रतिपादित धर्म ही श्रद्धा करने योग्य हैं-वे इसमें कहते हैं कि तिर्थंकर देवो ने अपने २ शिष्यों के लिये जिस सम्यक्त्व का कथन किया है वही तत्व उन तीर्थंकर प्रभुके वचनो द्वारा श्रवण कर मैं तुम्हें समझाता हूँ अर्थात् मैं अपनी निजी कल्पना से इस विषय में कुछ भी न कह कर जो कुछ तुम्हें समझाउँगा वह तीर्थंकर प्रभु की मान्यतानुसार ही समझाऊँगा अत इस में सदेह के लिये थोडी सी भी जगह नहीं है-इसलिये इस मेरे कथन का मूलस्रोत जब श्री तीर्थंकर प्रभु का उपदेशश्रवण है तब यह श्रद्धेय-श्रद्धा करने योग्य आवश्य है भगवान का यह आदेश है-कि जितने भी

पाणा, सव्वे भूया, सव्वे जीवा, सव्वे सत्ता न हतव्वा, न अज्जावेयव्वा, न परिघेत्तव्वा, न परितावेयव्वा, न किलामेयव्वा, न उद्दवेयव्वा। एस धम्मे सुद्धे णितिए समेच्चा लोय खेयनेहि पवेइए" (आ सू अ ४ उ १ सू १) श्री सुधर्मा स्वामी आ सूत्र वडे श्री जम्बू स्वामीने आ प्रमाणे समजावे छे के अर्हंत प्रभु वडे प्रतिपादित धर्म ज श्रद्धेय छे, तेओ आ सूत्रमा कहे छे के तीर्थंकर देवोए पोतपोताना शिष्यो माटे जे सम्यक्त्वनु निरूपण कर्यु छे ते ज तत्त्व तीर्थंकर प्रभुना मुखथी श्रवण कर्या बाद हु तमने समजावी रह्यो छु एटले के हु पोतानी मेळे आमा कई पण उमेर्या वगर तीर्थंकर प्रभुनी मान्यता मुजब ज तमने समजावीश एथी आमा शकाने माटे सहेज पण स्थान नथी आ प्रमाणे ज्यारे मारा कथननो मूळ स्रोत श्री तीर्थंकर प्रभुनु उपदेश-श्रवण छे त्यारे ते श्रद्धेय ज छे भगवाननी आ प्रमाणे आज्ञा छे के

'अकुतोभय' इत्यस्य-"अणुपालिज्जा" इत्यनेनान्वयाद् अकुतोभयं-संयमम् अनुपालयेदित्यपि भगवदाज्ञैव, तथा च संयमस्याऽऽराध्यतया विधानात् संयमस्य धर्मत्वं बोध्यम्।

अपरं च-उत्तराध्ययनसूत्रे-"धम्माण कासवो मुहं" इत्युक्तम् "धम्माण" धर्माणां श्रुतधर्माणां चारित्रधर्माणां च "कासवो" काश्यपः काश्यपगोत्रीयः श्रीमहावीरवर्धमानस्वामी "मुहं" मुखं वक्ता वर्तते।

अहिंसादौ खलु भगवतोऽर्हत आज्ञा वर्तते, पश्यागमेषु। यथा-आचाराङ्गसूत्रे-

"से बेमि-जे य अतीता, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो, ते सव्वेवि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति—

'अकुतोभय' इस पद का "अणुपालिज्जा" इस क्रियापद के साथ अन्वय करने से यह अर्थ होता है कि अकुतोभयरूप संयम का पालन करना चाहिये, यह भी जब भगवान की आज्ञा ही है तो इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भगवान की आज्ञा से संयम आराधन करने लायक होने से धर्म रूप है। अपर च-उत्तराध्ययन सूत्र में "धम्माण कासवो मुहं" यह कहा है इसका भाव यह है कि श्रुत एवं चारित्र धर्मों के मुख-वक्ता-काश्यप गोत्रीय श्री महावीर वर्धमान स्वामी हैं। देखो इन्हो ने आगमों में अहिंसादिक महाव्रतो के पालने का मुमुक्षुओं= मोक्षाभिलाषियो के लिये इस प्रकार आज्ञा प्रदान की है "से बेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे वि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति" सव्वे

'अकुतोभय' આ પદનો 'अणुपालिज्जा' આ ક્રિયાપદની સાથે અન્વય કરવાથી આ પ્રમાણે અર્થ થાય છે કે અકુતોભય રૂપ સંયમનું પાલન કરવું જોઈએ આ પણ ભગવાનની જ આજ્ઞા છે તો એનાથી આ વાત સ્પષ્ટ થઈ જાય છે કે ભગવાનની આજ્ઞાથી 'સંયમ' આરધવા યોગ્ય હોવાથી ધર્મરૂપ છે અને વળી 'ઉત્તરાધ્યયન સૂત્ર'માં "धम्माण कासवो मुहं" આ નમાણનો ઉલ્લેખ છે એનો અર્થ એમ થાય છે કે શ્રુત અને ચારિત્ર ધર્મોના મુખ્ય-વકતા-કાશ્યપ ગોત્રીય શ્રી મહાવીર વર્ધમાન સ્વામી છે તેઓશ્રીએ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોના પાલન કરનારા મોક્ષ ઇચ્છનારા લોકોને માટે આગમોમાં આ જાતની આજ્ઞા કરી છે કે —

"से बेमि-जे य अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य आगमिस्सा अरहंता भगवंतो ते सव्वे वि एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति" सव्वे

तयोरपि ग्रहणम्, तथा च-'एवमाचख्यु, एवमाख्यास्यन्ति' इत्यपि योजनीयम्। एवं सर्वासु क्रियासु योजनीयम्। तथा-एव "भासंति" भाषन्ते=सुरनरपरिषदि सर्वजीवाना स्वस्वभाषापरिणामिन्याऽर्धमागध्या भाषया ब्रुवन्ति। तथा-एव" पण्णवेंति " प्रज्ञापयन्ति=हेतुदृष्टान्तादिना प्रकर्षेण बोधयन्ति। तथा-एव ' परूवेंति ' प्ररूपयन्ति=तत्तद्भेद प्रदर्श्य प्रकर्षेण निर्णयन्ति।

ननु सर्वेऽप्यर्हन्तो भगवन्तः-किमाख्यान्तीत्यादिजिज्ञासायामाह-' सव्वे पाणा ' इत्यादि । सर्वे=निरवशेषाः, प्राणाः=प्राणिनः, पृथिव्यादयः स्थावरा

कर परिग्रह रूप से सग्रह करने योग्य, अन्न, पान आदि के निरोध एव गर्मीसर्दी आदिमें रखने से कभी भी पीडा पहुँचाने योग्य और विषप्रदान एव शस्त्र के आघात से विनाश करने योग्य नहीं है।

सूत्र में "आइक्खति-आख्यान्ति" यह वर्तमानकालिक-क्रियापद अतीत और अनागतकालिक क्रियापद का उपलक्षक है। अतः इस से यह अर्थ प्रतीत होता है कि उन तीर्थकर प्रभुओ ने वर्तमान में जैसा कहा है वैसा ही उन्हों ने या अन्य भूत कालिक तीर्थकरों ने भूत काल में भी कहा है एव आगामी कालमे भी वे वैसा ही कहेंगे। इसी प्रकार "भासति, पण्णवेंति" इत्यादि क्रियापदो के साथ भी अतीत और अनागत कालिक क्रियादोंका सबध कर लेना चाहिये। इस कथन से सूत्रकार ने उनके कथन में परस्पर में विरुद्ध अर्थकी प्ररूपणा का अभाव प्रदर्शित किया है जो कुछ उन्हो ने कहा है। वह भूत, भविष्यत और वर्तमान काल में से किसी भी काल में किसी भी

એવુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેનો નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણુ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા "આઇક્ખતિ આખ્યાન્તિ" આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થંકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે કહ્યુ છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થંકરોએ ભૂતકાળમા પણ કહ્યુ છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ રીતે "માસતિ, પણ્ણવેતિ" વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઈએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના કથનમા પરસ્પરમા વિરૂદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

भगवदुक्तार्थमाह-" जे य अतीता " इत्यादि । ये च अतीताः=अतीतकालिकाः, ये च 'पडुप्पन्ना ' प्रत्युत्पन्नाः=वर्तमानकालिकाः पञ्चभरतेषु पञ्चैरवतेषु पञ्चमहाविदेहेषु वर्तमानाः, ये च " आगमिस्सा " आगामिनः-भविष्यत्कालभाविनः, ते सर्वेऽपि अर्हन्तो भगवन्तः एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण " आइक्खति " आख्यान्ति=परप्रश्नावसरे कथयन्ति । अत्र वर्तमानग्रहणमुपलक्षणं तेनातीतानाग-

भूतकाल में तीर्थंकर हुए हैं, वर्तमान काल में भी पांच भरत, पांच ऐरवत तथा पांच महाविदेह सम्बन्धी जितने भी तीर्थंकर हैं और भविष्यत काल मे जो तीर्थंकर होंगे उन सब ने जब उनसे किसी ने प्रश्न किया, तो एक यही उत्तर दिया है देव एवं मनुष्यों की सभा में अपनी सर्वभाषा में परिणमित हुई अर्धमागधीरूप दिव्यध्वनि द्वारा उन्हो ने समस्त जीवो को यही समझाया है, और हेतु, दृष्टान्तो द्वारा इसी बात की पुष्टि की है। वक्तव्य विषय के भेद और प्रभेदों को प्रकट करते हुए उन्हों ने अच्छी तरह से यही प्ररूपणा की है कि समस्त प्राणी पृथिवी आदिक एकेन्द्रिय स्थावर जीवों से लेकर द्वीन्द्रियादिक पचेंद्रिय जीव पर्यन्त त्रस जीव, चतुर्दश भूतग्रामरूप समस्त भूत, नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति एवं देवगति के समस्त जीव, एवं अपने द्वारा किये गये कर्मों के उदय के फल स्वरूप सुख दुःख आदि का अनुभव करने वाले समस्त सत्व दण्ड आदि द्वारा कभी भी ताडन करने योग्य, घात करने योग्य, ये मेरे आधीन हैं ऐसा ख्याल

ભૂતકાળમાં જેટલા તીર્થંકર થયા છે, વર્તમાનકાળમાં પણ પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સંબંધી જેટલા તીર્થંકરો છે અને ભવિષ્યકાળમાં જેટલા તીર્થંકરો થશે તે બધામાંથી જ્યારે કોઈએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામાં પોતાની સર્વ ભાષામાં પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમાં તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાંતો વડે આ વાતનું જ સમર્થન કર્યું છે વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતાં તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથ્વિ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પંચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યંચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામાં આવેલા કર્મોના ઉદયના ફળ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્વો દંડ [illegible]-કોઈ પણ વખત તાડન કરવા યોગ્ય કે ઘાત [illegible] યોગ્ય, કે એઓ

तयोरपि ग्रहणम्, तथा च-' एवमाचख्यु, एवमाख्यास्यन्ति ' इत्यादि योजनीयम्। एवं सर्वासु क्रियासु योजनीयम्। तथा-एव " भासंति " भाषन्ते=सुरनरपरिषदि सर्वजीवाना स्वस्वभाषापरिणामिन्याऽर्धमागध्या भाषया ब्रुवन्ति। तथा-एव " पण्णवेंति " प्रज्ञापयन्ति=हेतुदृष्टान्तादिना प्रकर्षेण बोधयन्ति। तथा-एव ' परूवेंति ' प्ररूपयन्ति=तत्तद्भेद प्रदर्श्य प्रकर्षेण निर्णयन्ति।

ननु सर्वेऽप्यर्हन्तो भगवन्तः-किमाख्यान्तीत्यादिजिज्ञासायामाह-' सव्वे-पाणा ' इत्यादि। सर्वे=निरवशेषाः, प्राणाः=प्राणिनः, पृथिव्यादयः स्थावरा

कर परिग्रह रूप से सग्रह करने योग्य, अन्न, पान आदि के निरोध एव गर्मीसर्दी आदिमें रखने से कभी भी पीडा पहुँचाने योग्य और विषप्रदान एव शस्त्र के आघात से विनाश करने योग्य नहीं है।

सूत्र में " आइक्खति-आख्यान्ति " यह वर्तमानकालिक-क्रिया पद अतीत और अनागतकालिक क्रियापद का उपलक्षक है। अतः इस से यह अर्थ प्रतीत होता है कि उन तीर्थकर प्रभुओं ने वर्तमान में जैसा कहा है वैसा ही उन्हों ने या अन्य भूत कालिक तीर्थकरों ने भूत काल में भी कहा है एव आगामी कालमे भी वे वैसा ही कहेंगे। इसी प्रकार " भासति, पण्णवेंति " इत्यादि क्रियापदों के साथ भी अतीत और अनागत कालिक क्रियादोंका सबध कर लेना चाहिये। इस कथन से सूत्रकार ने उनके कथन में परस्पर में विरुद्ध अर्थकी प्ररूपणा का अभाव प्रदर्शित किया है जो कुछ उन्हो ने कहा है। वह भूत, भविष्यत और वर्तमान काल में से किसी भी काल में किसी भी

એવુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેના નિરાધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા " आइक्खति आख्यान्ति " આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થંકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે કહ્યુ છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થંકરોએ ભૂત કાળમા પણ કહ્યુ છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ રીતે " भासति, पण्णवेंति " વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઇએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના કથનમા પરસ્પરમા વિરૂદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

भगवदुक्तार्थमाह-" जे य अतीता " इत्यादि । ये च अतीताः=अतीतकालिकाः, ये च 'पडुप्पन्ना' प्रत्युत्पन्नाः=वर्तमानकालिकाः पञ्चभरतेषु पञ्चैरवतेषु पञ्चमहाविदेहेषु वर्तमानाः, ये च " आगमिस्सा " आगामिनः-भविष्यत् कालभाविनः, ते सर्वेऽपि अर्हन्तो भगवन्तः एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण " आइक्खति " आख्यान्ति=परप्रश्नावसरे कथयन्ति । अत्र वर्तमानग्रहणमुपलक्षणं तेनातीतानाम-

भूतकाल में तीर्थकर हुए हैं, वर्तमान काल में भी पांच भरत, पांच ऐरवत तथा पांच महाविदेह सम्बन्धी जितने भी तीर्थंकर हैं और भविष्यत काल मे जो तीर्थकर होंगे उन सब ने जब उनसे किसी ने प्रश्न किया, तो एक यही उत्तर दिया है देव एवं मनुष्यों की सभा में अपनी सर्वभाषा में परिणमित हुई अर्धमागधीरूप दिव्यध्वनि द्वारा उन्हो ने समस्त जीवों को यही समझाया है, और हेतु, दृष्टान्तो द्वारा इसी बात की पुष्टि की है। वक्तव्य विषय के भेद और प्रभेदों को प्रकट करते हुए उन्हों ने अच्छी तरह से यही प्ररूपणा की है कि समस्त प्राणी पृथिवी आदिक एकेन्द्रिय स्थावर जीवों से लेकर द्वीन्द्रियादिक पचेन्द्रिय जीव पर्यन्त त्रस जीव, चतुर्दश भूतग्रामरूप समस्त भूत, नरकगति, तिर्यञ्चगति, मनुष्यगति एवं देवगति के समस्त जीव, एवं अपने द्वारा किये गये कर्मों के उदय के फल स्वरूप सुख दुःख आदि का अनुभव करने वाले समस्त सत्व दण्ड आदि द्वारा कभी भी ताडन करने योग्य, घात करने योग्य, ये मेरे आधीन हैं ऐसा ख्याल

ભૂતકાળમાં જેટલા તીર્થંકર થયા છે, વર્તમાનકાળમાં પણ પાંચ ભરત, પાંચ ઐરવત તથા પાંચ મહાવિદેહ સંબંધી જેટલા તીર્થંકરો છે અને ભવિષ્યકાળમાં જેટલા તીર્થંકરો થશે તે બધામાંથી જ્યારે કોઈએ પ્રશ્ન કર્યો ત્યારે એક જ ઉત્તર આપ્યો છે, દેવ અને માણસોની સભામાં પોતાની સર્વ ભાષામાં પરિણમિત થયેલી અર્ધ માગધી રૂપ દિવ્યધ્વનિમાં તેઓએ બધા જીવોને એજ વાત સમજાવી છે અને હેતુ તેમજ દૃષ્ટાંતો વડે આ વાતનું જ સમર્થન કર્યું છે વક્તવ્ય વિષયનો ભેદ અને પ્રભેદોને સ્પષ્ટ કરતાં તેઓએ સરસ રીતે એજ પ્રરૂપણા કરી છે કે સમસ્ત પ્રાણીઓ પૃથ્વિ વગેરે એકેન્દ્રિય સ્થાવર જીવોથી માંડીને દ્વીન્દ્રિય વગેરે પંચેન્દ્રિય જીવ સુધીના ત્રસ જીવ, ચતુર્દશ ભૂતગ્રામ રૂપ સમસ્ત ભૂત, નરક ગતિ તિર્યંચ ગતિ, મનુષ્ય ગતિ અને દેવ ગતિના બધા જીવો, અને પોતાના વડે કરવામાં આવેલા કર્મોના ઉદયના ફળ સ્વરૂપ સુખ દુઃખ વગેરેને અનુભવતા બધા સત્વો દંડ વગેરેથી કોઈ પણ વખત તાડન કરવા યોગ્ય કે ઘાત કરવા યોગ્ય, કે એઓ

तयोरपि ग्रहणम्, तथा च–' एवमाचख्यु, एवमाख्यास्यन्ति ' इत्यपि योजनीयम्। एव सर्वासु क्रियासु योजनीयम्। तथा–एव " भासंति " भाषन्ते=सुरनरपरिषदि सर्वजीवाना स्वस्वभाषापरिणामिन्याऽर्धमागध्या भाषया ब्रुवन्ति। तथा–एव" पण्णवेंति " प्रज्ञापयन्ति=हेतुदृष्टान्तादिना प्रकर्षेण बोधयन्ति। तथा–एव ' परूवेंति ' प्ररूपयन्ति=तत्तद्भेद प्रदर्श्य प्रकर्षेण निर्णयन्ति।

नतु सर्वेऽप्यर्हन्तो भगवन्तः–किमाख्यान्तीत्यादिजिज्ञासायामाह–' सव्वे पाणा ' इत्यादि। सर्वे=निरवशेषाः, प्राणाः=प्राणिनः, पृथिव्यादयः स्थावरा

कर परिग्रह रूप से सग्रह करने योग्य, अन्न, पान आदि के निरोध एव गर्मीसर्दी आदिमें रखने से कभी भी पीडा पहुँचाने योग्य और विषप्रदान एव शस्त्र के आघात से विनाश करने योग्य नहीं है।

सूत्र में " आइक्खति–आख्यान्ति " यह वर्तमानकालिक–क्रिया पद अतीत और अनागतकालिक क्रियापद का उपलक्षक है। अतः इस से यह अर्थ प्रतीत होता है कि उन तीर्थकर प्रभुओ ने वर्तमान में जैसा कहा है वैसा ही उन्हों ने या अन्य भूत कालिक तीर्थकरों ने भूत काल में भी कहा है एव आगामी कालमे भी वे वैसा ही कहेंगे। इसी प्रकार " भासति, पण्णवेंति " इत्यादि क्रियापदों के साथ भी अतीत और अनागत कालिक क्रियादोंका सबध कर लेना चाहिये। इस कथन से सूत्रकार ने उनके कथन में परस्पर में विरुद्ध अर्थकी प्ररूपणा का अभाव प्रदर्शित किया है जो कुछ उन्हो ने कहा है। वह भूत, भविष्यत और वर्तमान काल में से किसी भी काल में किसी भी

એવુ સમજીને પરિગ્રહ રૂપથી સગ્રહ કરવા યોગ્ય, કે અન્ન, પાન વગેરેને નિરોધ અને ગર્મી, ઠડી વગેરેમા રાખીને કોઈ પણ વખતે પીડિત કરવા યોગ્ય અને વિષ આપીને તેમજ શસ્ત્રના આઘાતથી વિનાશ કરવા યોગ્ય નથી

સૂત્રમા " आइक्खति आख्यान्ति " આ વર્તમાનકાલિક ક્રિયાપદ અતીત તેમજ અનાગત કાલિક ક્રિયાપદનુ ઉપલક્ષક છે એથી એના વડે આ જાતના અર્થની પ્રતીતિ થાય છે કે તે તીર્થકર પ્રભુઓએ વર્તમાનકાળમા જે પ્રમાણે કહ્યુ છે, તે પ્રમાણે જ તેઓએ અથવા તો બીજા ભૂતકાલિક તીર્થકરોએ ભૂત કાળમા પણ કહ્યુ છે અને ભવિષ્યકાળમા પણ તેઓ તે પ્રમાણે જ કહેશે આ રીતે " भासति, पण्णवेति " વગેરે ક્રિયાપદોની સાથે પણ અતીત અને અનાગત કાલિક ક્રિયાપદોનો સબધ જોડવો જોઇએ આ કથનથી સૂત્રકારે તેમના કથનમા પરસ્પરમા વિરૂદ્ધ અર્થની પ્રરૂપણાનો અભાવ બતાવ્યો છે તેમણે જે

द्वीन्द्रियादिष्वेकेन्द्रियपर्यन्तासाधेत्यर्थः, इन्द्रियादिप्रमाणाना यथासम्भवधारणात् तेषु प्राणित्वमस्तीति भावः। तथा-सर्वे 'भूया' भूताः=भवन्ति भविष्यन्त्यभूवन्निति भूताः-चतुर्दशभूतग्रामरूपाः, तथा-सर्वे जीवा=जीवन्ति जीविष्यन्त्यजीविषु रिति जीवाः-नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवाः, तथा-सर्वे "सत्ता" सत्त्वाः=

प्रमाण द्वारा बाधित नहीं हो सकने से पूर्वापर विरोध रहित ही कहा है। "प्राण" शब्द से सूत्रकार ने त्रस और स्थावर प्रणियों का ग्रहण किया है। क्यों कि १० द्रव्य प्राणो में से इनको अपने २ योग्य प्राणो का सद्भाव पाया जाता है। अत इनके सद्भाव से ही ये प्राणी कहे जाते हैं। "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्" यह भूत शब्द की व्युत्पत्ति है। इसका भाव यही है कि जो वर्तमान में सत्ता विशिष्ट हैं, आगामी काल में सत्ता विशिष्ट रहेंगे एव भूतकाल में भी जो सत्ता विशिष्ट थे। इस व्युत्पत्ति से सूत्रकार ने यह प्रदर्शित किया हैं कि प्रत्येक जीवादिक पदार्थ किसी भी काल में उत्पाद और व्यय धर्म विशिष्ट होते हुए भी अपनी २ सत्ता से रहित नहीं होते हैं। क्यों कि द्रव्य का "उत्पादव्ययध्रौव्य सत्" उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये स्वभाव है। इससे यह बात निश्चित कोटि में आता है कि किसी भी नवीन पदार्थ का उत्पाद नहीं होता है और न सत् पदार्थ का विनाश ही होता है। "सतो विनाश. असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीविषु" यह जीव शब्द की व्युत्पत्ति है।

કહ્યુ કહ્યુ છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે તે પ્રમાણ દ્વારા બાધિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહ્યુ છે, "પ્રાણ" શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનુ ગ્રહણ કર્યુ છે કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણોમાથી એમનામા પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોનો સદ્ભાવ મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्" આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે વર્તમાનકાળમા જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમા સત્તા વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા આ વ્યુત્પત્તિ વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યુ છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમા ...ને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાએ પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા ... કે દ્રવ્યનો "उत्पादव्ययध्रौव्य सत्" ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય ... એથી એ વાત ચોક્કસ રીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન ... થતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ થતો નથી ... असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीविषु" આ

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःखानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुन पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

'न हतव्या' न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्या इत्यर्थ, "न अज्जावेयव्वा" नाज्ञापयितव्याः=न प्रातयितव्या इत्यर्थः, "न परिघेतव्वा" न परिग्रहीतव्या=इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्या, "न परिता-

---

जो जीते हे, जीवेंगे और जिये है, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व धर्म का अभाव नही होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नहीं होता है इससे वृक्षादिको में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन "समस्त जीवों में वारवार दया करनी चाहिये" है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित हे । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शाक्य आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नहीं है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषो का सद्भाव पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમા ત્રિકાળમા પણ જીવનત્વ ધર્મનો અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભલે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાએ તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમા અચેનતા માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનુ ખડન થઈ જાય છે

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય વાચી શબ્દોનો જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનુ ખાસ કારણ "બધા જીવોમા વારવાર સદય રહેવુ જોઇએ" તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાક્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયો છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે ખરેખર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ છે અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

द्वीन्द्रियादिपञ्चेन्द्रियपर्यन्तास्त्रसाश्चेत्यर्थः, इन्द्रियादिप्राणानां यथासम्भवधारणात् तेषु प्राणित्वमस्तीति भावः। तथा-सर्वे 'भूया' भूताः=भवन्ति भविष्यन्त्यभूवन्निति भूताः-चतुर्दशभूतग्रामरूपाः, तथा-सर्वे जीवा=जीवन्ति जीविष्यन्त्यजीविषु रिति जीवाः-नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवाः, तथा-सर्वे "सत्ता" सत्त्वाः=

प्रमाण द्वारा बाधित नहीं हो सकने से पूर्वापर विरोध रहित ही कहा है। "प्राण" शब्द से सूत्रकार ने त्रस और स्थावर प्राणियो का ग्रहण किया है। क्यो कि १० द्रव्य प्राणो में से इनको अपने २ योग्य प्राणो का सद्भाव पाया जाता है। अत इनके सद्भाव से ही ये प्राणी कहे जाते हैं। "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्"यह भूत शब्द की व्युत्पत्ति है। इसका भाव यही है कि जो वर्तमान में सत्ता विशिष्ट हैं, आगामी काल में सत्ता विशिष्ट रहेंगे एव भूतकाल में भी जो सत्ता विशिष्ट थे। इस व्युत्पत्ति से सूत्रकार ने यह प्रदर्शित किया है कि प्रत्येक जीवादिक पदार्थ किसी भी काल में उत्पाद और व्यय धर्म विशिष्ट होते हुए भी अपनी २ सत्ता से रहित नहीं होते हैं। क्यों कि द्रव्य का "उत्पादव्ययध्रौव्य सत्" उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य ये स्वभाव है। इससे यह बात निश्चित कोटि में आता है कि किसी भी नवीन पदार्थ का उत्पाद नहीं होता है और न सत् पदार्थ का विनाश ही होता है। "सतो विनाश. असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अजीविषु" यह जीव शब्द की व्युत्पत्ति है।

કઇ કહ્યુ છે તે ભૂત ભવિષ્યત અને વર્તમાનકાળમાથી કોઈ પણ કાળમા ગમે તે પ્રમાણ દ્વારા બાધિત નહિ હોવા બદલ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત જ કહ્યુ છે, "प्राण" શબ્દ વડે સૂત્રકારે ત્રસ અને સ્થાવર પ્રાણીઓનુ ગ્રહણ કર્યું છે કેમકે ૧૦ દ્રવ્ય પ્રાણોમાથી એમનામા પોતપોતાને યોગ્ય પ્રાણોનો સદ્ભાવ મળે છે એથી એમના સદ્ભાવથી જ તેઓ પ્રાણી કહેવાય છે "भवन्ति, भविष्यन्ति, अभूवन्" આ ભૂત શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે છે કે વર્તમાનકાળમા જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ છે, તેઓ ભવિષ્યકાળમા સત્તા વિશિષ્ટ રહેશે અને ભૂતકાળમા પણ જેઓ સત્તા વિશિષ્ટ હતા આ વ્યુત્પત્તિ વડે સૂત્રકારે એ બતાવ્યુ છે કે દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ કોઈ પણ કાળમા ઉત્પાદ અને વ્યયધર્મ વિશિષ્ટ હોવા છતાએ પોતપોતાની સત્તાથી રહિત હોતા નથી કેમકે દ્રવ્યનો "उत्पादव्ययध्रौव्य सत्" ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય સ્વભાવ છે એથી એ વાત ચોક્કસ રીતે સ્પષ્ટ થાય છે કે કોઈ પણ નવીન પદાર્થનો ઉત્પાદ થતો નથી અને સત્ પદાર્થનો વિનાશ પણ નો નથી "सतो विनाश असतश्चोत्पादो न" "जीवन्ति, जीविष्यन्ति, अ[illegible] આ

स्वकृतकर्मजन्यसुखदुःखानुभविनः । अत्र सर्वप्राणिषु पुनः पुनर्दयाकरणाय पर्यायशब्दप्रयोगः ।

'न हतव्वा' न हन्तव्याः=दण्डादिभिर्न ताडयितव्या इत्यर्थः, "न अज्जावेयव्वा" नाज्ञापयितव्याः=न प्रावयितव्या इत्यर्थः, "न परिघेत्तव्वा" न परिग्रहीतव्या =इमे ममायत्ता इति कृत्वा परिग्रहरूपेण न स्वीकर्तव्या, "न परिता-

---

जो जीते हैं, जीवेंगे और जिये हैं, इस कथन से सूत्रकार ने जीव में त्रिकाल में भी जीवनत्व धर्म का अभाव नही होता है यह प्रदर्शित किया है चाहे जीव एक इन्द्रिय अवस्थावाला भी हो तो भी वह जीवन अवस्था से रहित नही होता है इससे वृक्षादिको में अचेतनता मानने वाले बौद्ध आदिकों का मन्तव्य खडित होता है ।

सूत्र में प्राणी, भूत, और सत्त्व इन एकार्थक पर्यायवाची शब्दों का जो सूत्रकार ने प्रयोग किया है उनका मुख्य प्रयोजन "समस्त जीवों में वारवार दया करनी चाहिये" है ।

यह वीतरागप्रभु द्वारा प्रतिपादित प्राणातिपातविरमणरूप धर्मशुद्ध पापानुबन्ध रहित है । इस कथन से सूत्रकार ने इस बात की पुष्टि की है जो अवीतराग-शाक्य आदि द्वारा धर्मरूप से प्रतिपादित हुआ है तथा जिसे उन्होंने धर्मरूप से स्वीकार किया है वह वास्तविक धर्म नही है । कारण कि इनमें हिंसादिक दोषो का सद्भाव पाया जाता है इनके

જીવ શબ્દની વ્યુત્પત્તિ છે જેઓ જીવે છે, જીવશે અને જીવ્યા છે આ કથન વડે સૂત્રકારે જીવમા ત્રિકાળમા પણ જીવનત્વ ધર્મનો અભાવ થતો નથી આ વાત સ્પષ્ટ કરી છે ભલે તે જીવ એક ઇન્દ્રિય અવસ્થાવાળો હોય છતાએ તે જીવન અવસ્થાથી રહિત થતો નથી આ કથનથી વૃક્ષ વગેરેમા અચેતનતા માનનારા બૌદ્ધ વગેરેના મતનુ ખડન થઈ જાય છે

સૂત્રકારે સૂત્રમા જે પ્રાણી, ભૂત અને સત્વ આ બધા એકાર્થક પર્યાય વાચી શબ્દોનો જે પ્રયોગ કર્યો છે તેનુ ખાસ કારણુ "બધા જીવોમા વાર વાર સદય રહેવુ જોઇએ" તે જ છે

વીતરાગ પ્રભુ વડે પ્રતિપાદિત પ્રાણાતિપાત વિરમણુ રૂપ આ ધર્મ શુદ્ધ પાપાનુબન્ધ રહિત છે આ કથનથી સૂત્રકારે એ વાતને પુષ્ટ કરી છે કે જે અવીતરાગ-શાક્ય વગેરે દ્વારા ધર્મ-રૂપથી પ્રતિપદિત થયો છે તેમજ તેમણે જેને ધર્મ-રૂપથી સ્વીકાર્યો છે તે ખરેખર ધર્મ નથી કેમકે તેમા હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ છે અસર્વજ્ઞ તથા રાગયુક્ત લોકો દ્વારા પ્રતિપાદિત હોવાને

वेयव्वा" न परितापयितव्या =अन्नपानाद्यवरोधनेन ग्रीष्मातपादौ स्थापनेन च न पीडनीयाः, " न किलामेयव्वा " न क्लामयितव्याः=न खेदयितव्याः=न विष शस्त्रादिना मारयितव्याः ।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वार्हद्भगवत्प्ररूपितः, धर्मः=सर्वप्राणिप्राणातिपातविरमण रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थः । आर्हतधर्माद्न्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः । अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु

सद्भाव का कारण उसमें असर्वज्ञ और सरागियों द्वारा प्रणीतता ही है पूर्ण ज्ञानीयो द्वारा प्रदर्शित मार्ग ही शुद्ध होता है इसका कारण उनमें राग द्वेष का सर्वथा अभाव ही होता है। असर्वज्ञ या रागद्वेपकलुषित-चित्तवालों द्वारा प्रदर्शित मार्ग इसलिये शुद्ध नहीं होता है कि वे एक तो उस विषय के पूर्ण ज्ञाता नहीं होते, दूसरी अपनी रागद्वेपमयी प्रवृत्ति को पुष्ट करने के लिये उसकी अन्यथा भी प्ररूपणा कर देते हैं। ऐसा धर्म शाश्वतिक नित्य नहीं होता है-क्यों कि ऐसा धर्मका विशिष्ट ज्ञानियों-केवलज्ञानियो द्वारा जीवों का कल्याण की कामना से निराकरण कर दिया जाता है। वीतरागप्रतिपादित धर्म ही अविनाशी रहता है, और उसीसे जीवों का सदा कल्याण होता रहता है। इसमे अन्यथाप्ररूपणाके लिये थोडी सी भी जगह नही मिलती है। पच महाविदेह क्षेत्रोंमें अब भी इस शुद्ध धर्मका सद्भाव है। इसी अपेक्षा इसे सूत्रकारने नित्य-अविनाशी कहा है। शाश्वतगतिरूप मुक्ति का कारण होने से

લીધે જ તેમા હિંસા વગેરે સદોષતા છે પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગ જ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા સંપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સંપૂર્ણપણે જાણતા નથી અને બીજુ તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનુ વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવળજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઇને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનુ કલ્યાણ થતુ રહે છે આમા અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી અત્યારે પણ પંચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકારે નિ[illegible] કહ્યો છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો [illegible] હોવાથી આ ધ[illegible]

सद्भावात् । तथा-शाश्वतः=शाश्वतगतिकारणत्वात् । यद्वा-यतो नित्यस्ततस्माच्छाश्वत इति । अयमेव धर्मः श्रद्धेयो ग्राह्यश्चेत्यत्र हेतु प्रदर्शयन् विशेषणान्तरमाह-समेत्य इत्यादि । लोक षट् जीवनिकाय दुःखदावानलान्तःपतित, समेत्य=केवलज्ञानेन प्रत्यक्षतया विज्ञाय, खेदज्ञैः=सर्वप्राणिदुःखाभिज्ञैस्तीर्थंकरैः प्रवेदितः=आदिष्ट । 'प्रवेदित' इत्यनेन धर्मोऽयं मया न स्वमनीषया कल्पितः' इति च सुधर्मस्वामिना शिष्यमुद्दिश्य सूचितम् । अनुयोगद्वारे—

यह शाश्वत माना गया है अथवा हेतु हेतुमद्भाव से भी यों कह सकते हैं कि जिस कारण से यह नित्य है इसी कारण से यह शाश्वत माना गया है । अतः प्रत्येक मुमुक्षु जीवों द्वारा यह धर्म श्रद्धेय श्रद्धा करने योग्य एव ग्राह्य-आराधन करने योग्य है इस विषय मे पूर्वोक्तरूप से सूत्रकार हेतु का कथन कर उस धर्म की प्ररूपणा करने के कारण का प्रदर्शन करते हुए " समेत्य लोक खेदज्ञैः प्रवेदितः " कहते हैं कि समस्त प्राणीयों के दु खों के वेत्ता केवलज्ञानी प्रभु ने इस षट्जीव निकायरूप लोक को प्रत्यक्षरूप से साक्षात् दुःखरूपी दावानल से जलता हुआ देखकर इस शुद्ध, शाश्वतिक धर्म का कथन किया है ।

भावार्थ-अनत सासारिक दु खो से सतप्त समस्त ससारी जीवों को साक्षात् हस्तामलकवत् देखकर दुःखो से उनके उद्धार के निमित्त वीतराग केवलज्ञानियोंने ही इस धर्म की प्ररूपणा की है । मैं ने अपनी ओर से इसका कथन नहीं किया है । इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी अपने शिष्य जम्बूस्वामी को समझाते है ।

વામા આવ્યો છે અથવા હેતુ-હેતુ મદ્ભાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે જે કારણને લઇને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામા આવ્યો છે એથી દરેક મોક્ષને ઇચ્છનારા જીવો વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા યોગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યોગ્ય છે આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનુ કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતા " समेत्य लोक खेदज्ञै प्रवेदित " કહે છે કે બધા પ્રાણીઓના દુ ખોને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ ષટ્જીવ નિકાય રૂપ લોકને પ્રત્યક્ષ રૂપમા સાક્ષાત્ દુ ખ રૂપી દાવાનળમા સળગતા જોઇને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનુ કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સસારના બધા જીવોને અનત સાસારિક દુ ખોથી હસ્તામલકવત્ સતપ્ત જોઇને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવળજ્ઞાનીઓ એ જ આ ધર્મનુ નિરૂપણ કર્યું છે મે પોતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી શ્રી સુધર્માસ્વામી પોતાના શિષ્ય જમ્બૂ સ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે

वेयव्वा" न परितापयितव्या =अन्नपानाद्यवरोधनेन शीघ्रातपादौ स्थापनेन च न पीडनीयाः, " न किलामेयव्वा " न क्लामयितव्याः=न खेदयितव्याः=न विष शस्त्रादिना मारयितव्याः।

एषः=अनन्तरोक्तः सर्वज्ञैरागमरूपितः, धर्मः=सर्वप्राणिप्राणातिपातविरमण रूपः, शुद्धः=निर्मलः-पापानुबन्धरहित-इत्यर्थः। आर्हतधर्मादन्यस्तु धर्मत्वेन यः शाक्यादेरभिमतः स खलु असर्वज्ञसरागोपदिष्टत्वेन हिंसादिदोषसद्भावेन च न शुद्ध इति भावः। अत एव-एष नित्यः=अविनाशी, सर्वदा पञ्चसु महाविदेहेषु

सद्भाव का कारण उसमें असर्वज्ञ और सरागियों द्वारा प्रणीतता ही है पूर्ण ज्ञानीयो द्वारा प्रदर्शित मार्ग ही शुद्ध होता है इसका कारण उनमें राग द्वेष का सर्वथा अभाव ही होता है। असर्वज्ञ या रागद्वेषकलुषित-चित्तवालों द्वारा प्रदर्शित मार्ग इसलिये शुद्ध नहीं होता है कि वे एक तो उस विषय के पूर्ण ज्ञाता नहीं होते, दूसरी अपनी रागद्वेषमयी प्रवृत्ति को पुष्ट करने के लिये उसकी अन्यथा भी प्ररूपणा कर देते हैं। ऐसा धर्म शाश्वतिक नित्य नहीं होता है-क्यों कि ऐसा धर्मका विशिष्ट ज्ञानियों-केवलज्ञानियो द्वारा जीवों का कल्याण की कामना से निराकरण कर दिया जाता है। वीतरागप्रतिपादित धर्म ही अविनाशी रहता है, और उसीसे जीवों का सदा कल्याण होता रहता है। इसमें अन्यथाप्ररूपणाके लिये थोडी सी भी जगह नही मिलती है। पच महाविदेह क्षेत्रोंमें अब भी इस शुद्ध धर्मका सद्भाव है। इसी अपेक्षा इसे सूत्रकारने नित्य-अविनाशी कहा है। शाश्वतगतिरूप मुक्ति का कारण होने से

લીધે જ તેમા હિંસા વગેરે સદોષતા છે પૂર્ણજ્ઞાનીઓ વડે પ્રદર્શિત માર્ગ જ શુદ્ધ હોય છે કેમકે તેઓમા સપૂર્ણપણે રાગદ્વેષનો અભાવ જ હોય છે અસર્વજ્ઞ કે રાગદ્વેષ કલુષિત ચિત્તવાળા લોકો વડે પ્રતિપાદિત માર્ગ શુદ્ધ એટલા માટે હોતો નથી કે તેઓ પ્રથમ તો તે વિષયને સપૂર્ણપણે જાણતા નથી અને બીજુ તેઓ પોતાની રાગદ્વેષમયી પ્રવૃત્તિને પુષ્ટ કરવા માટે તેની અન્યથા પ્રરૂપણા પણ કરી બેસે છે એવો ધર્મ શાશ્વતિક-નિત્ય હોતો નથી કેમકે એવા ધર્મનુ વિશિષ્ટ જ્ઞાનીઓ-કેવળજ્ઞાનીઓ-વડે જીવોની કલ્યાણ કામનાથી પ્રેરાઇને નિરાકરણ કરવામા આવે છે વીતરાગ પ્રતિપાદિત ધર્મ જ અવિનાશી રહે છે, અને તેથી સર્વદા જીવોનુ કલ્યાણ થતુ રહે છે આમા અન્યથા પ્રરૂપણા માટે અવકાશ જ નથી અત્યારે પણ પચવિદેહ ક્ષેત્રમા આ શુદ્ધ ધર્મનો સદ્ભાવ છે આ ધર્મને આ દૃષ્ટિથી જ સૂત્રકાર નિ[illegible] કહ્યો છે શાશ્વત ગતિ રૂપ મુક્તિનો ક[illegible] હોવાથી આ ધર્મ

सद्भावात् । तथा-शाश्वतः=शाश्वतगतिकारणत्वात् । यद्वा-यतो नित्यस्तस्माच्छाश्वत इति । अयमेव धर्मः श्रद्धेयो ग्राह्यश्चेत्यत्र हेतु प्रदर्शयन् विशेषणान्तरमाह-समेत्य इत्यादि । लोक पट् जीवनिकाय दुःखदावानलान्तःपतित, समेत्य=केवलज्ञानेन प्रत्यक्षतया विज्ञान, खेदज्ञैः=सर्वप्राणिदुःखाभिज्ञैस्तीर्थकरैः प्रवेदितः=आदिष्ट । 'प्रवेदितः' इत्यनेन धर्मोऽय मया न स्वमनीपया कल्पितः' इति च सुधर्मस्वामिना शिष्यमुद्दिश्य सूचितम् । अनुयोगद्वारे—

यह शाश्वत माना गया है अथवा हेतु हेतुमद्भाव से भी यों कह सकते हैं कि जिस कारण से यह नित्य है इसी कारण से यह शाश्वत माना गया है । अतः प्रत्येक मुमुक्षु जीवों द्वारा यह धर्म श्रद्धेय श्रद्धा करने योग्य एव ग्राह्य-आराधन करने योग्य है इस विषय मे पूर्वोक्त-रूप से सूत्रकार हेतु का कथन कर उस धर्म की प्ररूपणा करने के कारण का प्रदर्शन करते हुए " समेत्य लोक खेदज्ञैः प्रवेदित " कहते हैं कि समस्त प्राणीयों के दु खों के वेत्ता केवलज्ञानी प्रभु ने इस पट्जीव निकायरूप लोक को प्रत्यक्षरूप से साक्षात् दुःखरूपी दावानल से जलता हुआ देखकर इस शुद्ध, शाश्वतिक धर्म का कथन किया है ।

भावार्थ-अनत सासारिक दु खो से सतप्त समस्त ससारी जीवों को साक्षात् हस्तामलकवत् देखकर दुःखो से उनके उद्धार के निमित्त वीतराग केवलज्ञानियोंने ही इस धर्म की प्ररूपणा की है । मैं ने अपनी ओर से इसका कथन नहीं किया है । इस प्रकार श्री सुधर्मास्वामी अपने शिष्य जम्बूस्वामी को समझाते हैं ।

वामा आव्यो छे अथवा હેતુ-હેતુ મદ્ભાવથી પણ એમ કહી શકાય છે કે જે કારણને લઈને આ નિત્ય છે તે કારણથી જ આ શાશ્વત માનવામા આવ્યો છે એથી દરેક મોક્ષને ઇચ્છનારા જીવો વડે આ ધર્મ શ્રદ્ધેય-શ્રદ્ધા કરવા યોગ્ય અને ગ્રાહ્ય આરાધવા યોગ્ય છે આ વિષે સૂત્રકાર પૂર્વોક્ત રૂપે હેતુનુ કથન કરીને તે ધર્મની પ્રરૂપણા કરતા " समेत्य लोक खेदज्ञै प्रवेदित " કહે છે કે બધા પ્રાણીઓના દુ ખોને જાણનારા કેવળજ્ઞાની પ્રભુએ આ ષટ્જીવ નિકાય રૂપ લોકને પ્રત્યક્ષ રૂપમા સાક્ષાત્ દુ ખ રૂપી દાવાનળમા સળગતા જોઈને શુદ્ધ, શાશ્વતિક ધર્મનુ કથન કર્યું છે—

ભાવાર્થ—સસારના બધા જીવોને અનત સાસારિક દુ ખોથી હસ્તામલકવત્ સતપ્ત જોઈને તેમના ઉદ્ધાર માટે વીતરાગ કેવળજ્ઞાનીઓ એ જ આ ધર્મનુ નિરૂપણ કર્યુ છે મે પોતાની મેળે આ કથન કર્યું નથી શ્રી સુધર્મા સ્વામી પોતાના શિષ્ય જબૂ સ્વામીને આ પ્રમાણે સમજાવે છે

" जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
न हणइ न हणावेइ य, सममणइ तेण सो समणो । इति "
छाया-यथा मम न प्रियं दुःखं, ज्ञात्वा एवमेव सर्वजीवानाम् ।
न हन्ति न घातयन्ति च समम् अणति तेन स समणः ॥
च शब्दात् घ्नतश्चान्यान्न समणुजानीते इत्यनेन प्रकारेण 'सममणति' त्ति सर्वजीवेषु तुल्यं वर्त्तते यतस्तेनासौ श्रमण इति गाथार्थः ।
'एस धम्मे सुद्धे' इत्यनेन आर्हत धर्मस्य हिंसादि दोषाभावाद्भगवता शुद्धत्वमुक्तम् । शुद्धधर्मबोधकत्वाच्च द्वादशाङ्ग्याः प्रवचनत्वमागमत्वं सर्वोत्कृष्टत्वं च सिध्यति । प्रवचनस्य स्वरूपं माहात्म्यं चाऽऽगमेषु भगवताऽभिहितम् ।

अनुयोगद्वार में-
जह मम ण पियं दुःखं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणो ॥ इति ।
जिस प्रकार दुःख मुझे इष्ट नहीं है, उसी तरह वह दुःख किसी भी संसारी जीवों को इष्ट नहीं है ऐसा समझ कर जो जीवों की विराधना स्वयं नहीं करता और न दूसरों से करवाता है तथा समस्त जीवों में तुल्यता की भावना रखता है वही श्रमण है। श्रमण होने में ये पूर्वोक्त बातें हेतु-कारण हैं।
" एस धम्मे सुद्धे " इस सूत्रांश से श्री सुधर्मास्वामी ने तीर्थंकर कथित धर्म में हिंसादिक दोषों के अभाव से शुद्धता का कथन किया है। इस शुद्ध धर्म का बोधक-बोध करानेवाली होने से ही द्वादशांगी में प्रवचनता, आगमता एवं सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है। भगवान ने

અનુયોગદ્વારમાં—जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणे ॥ इति ।
જેમ મને દુઃખ ગમતું નથી તેમજ તે દુઃખ સંસારના કોઇ પણ જીવને ગમે જ નહિ આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમાં તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ 'શ્રમણ' છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટે હેતુ કારણ છે
" एस धम्मे सुद्धे " આ સૂત્રાંશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમાં હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનું કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મનો બોધક—બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાંગીમાં પ્રવચનતા આગ... સર્વો-ત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનું સ્વરૂપ

यथा भगवतीसूत्रे—

पवयण भंते ! पवयण, पावयणी पवयण ?। " गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी। पवयणं पुण दुवालसंगे गणिपिडगे। त जहा—आयारो० जाव दिट्ठिवाओ। इति, (श० २० उ०८)

भंते ! हे भदन्त ! " पवयण " प्रवचन—किं प्रवचन, उत—" पावयणी " प्रवचनी प्रवचनम् ?। " गोयमा ! " हे गौतम ! 'अरहा' अर्हन् 'ताव' तावत् नियमात्प्रवचनी। प्रवचन पुन 'दुवालसगे' द्वादशाङ्गी " गणिपिडगे " गणिपिटकम्। तद् यथा—" आयारो जाव दिट्ठिवाओ " आचाराङ्गादि यावत् दृष्टिवादः। इति,

पुनस्तत्रैव—" से नूण भंते ! तमेव सच्च नीसक ज जिणेहिं पवेइय ?।

प्रवचन का स्वरूप और उसका प्रभाव-माहात्म्य आगमों में कहा है। जैसे भगवती सूत्र में " पवयण भंते ! पवयण, पावयणी पवयण ? गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी। पवयण पुण दुवालसगे गणिपिडगे। त जहा—आयारे जाव दिट्ठिवाओ। इति (श० २० उ ०८)

भावार्थ—गौतमस्वामी पूछते हैं हे भगवन् ! प्रवचन प्रवचन है—या प्रवचनी प्रवचन है? इस प्रश्न का समाधान करते हुए भगवान् कहते हैं—हे गौतम ! गणिपिटक जो आचारांग से लेकर दृष्टिवाद तक द्वादशाग आगम है वह समस्त प्रवचन है। इस प्रवचन को अर्थत प्रकट करनेवाले श्री तीर्थंकर प्रभु प्रवचनी हैं। उसी भगवती सूत्र में और भी यह कहा है कि—" से नूण भंते ! तमेव सच्च निसक ज जिणेहिं पवेइय ? हता गोयमा ! तमेव सच्च से नूण भंते ! एव मणे

માહાત્મ્ય કહ્યો છે જેમકે ભગવતી સૂત્રમા " पवयण भंते ! पवयण पावयणी पवयण ? गोयमा ! अरहा ताव णियमा पावयणी ! पवयण पुण दुवालसगे गणिपिडगे ! त जहा—आयारो जाव दिट्ठिवाओ। इति (श २० उ ८)

ભાવાર્થ—ગૌતમ સ્વામી પૂછે છે કે હે ભગવન્ ! પ્રવચન પ્રવચન છે કે પ્રવચની પ્રવચન છે? આ શકાનુ સમાધાન કરતા ભગવાન કહે છે—કે હે ગૌતમ ! ગણિપિટક-કે જે આચારાગથી માડીને દૃષ્ટિવાદ સુધી દ્વાદશાગ આગળ છે તે સમસ્ત પ્રવચન છે અર્થત આ પ્રવચનને પ્રકટ કરનારા શ્રી તીર્થંકર પ્રભુ પ્રવચની છે તે ભગવતી સૂત્રમા જ આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યુ છે કે—(से नूण भंते तमेव सच्च नीसक ज जिणेहिं पवेइय ! हता गोयमा ! तमेव सच्च से नूण भंते ! एव मणे धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए

" जह मम ण पियं दुक्खं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
न हणइ न हणावेइ य, सममणइ तेण सो समणो । इति "
छाया-यथा मम न प्रियं दुःखं, ज्ञात्वा एवमेव सर्वजीवानाम् ।
न हन्ति न घातयन्ति च समम् अणति तेन स समणः ॥
च शब्दात् घ्नतश्चान्यान्न समणुजानीते इत्यनेन प्रकारेण 'सममणति' त्ति सर्वजीवेषु तुल्यं वर्त्तते यतस्तेनासौ श्रमण इति गाथार्थः ।
'एस धम्मे सुद्धे' इत्यनेन आर्हत धर्मस्य हिंसादि दोषाभावाद्गवता शुद्धत्वमुक्तम् । शुद्धधर्मबोधकत्वाच्च द्वादशाङ्गयाः प्रवचनत्वमागमत्वं सर्वोत्कृष्टत्वं च सिध्यति । प्रवचनस्य स्वरूपं माहात्म्यं चाऽऽगमेषु भगवताऽभिहितम् ।

अनुयोगद्वार में-
जह मम ण पियं दुःखं जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणो ॥ इति ।
जिस प्रकार दु.ख मुझे इष्ट नहीं है, उसी तरह वह दु.ख किसी भी संसारी जीवों को इष्ट नहीं है ऐसा समझ कर जो जीवों की विराधना स्वयं नहीं करता और न दूसरों से करवाता है तथा समस्त जीवों में तुल्यता की भावना रखता है वही श्रमण है। श्रमण होने में ये पूर्वोक्त बाते हेतु-कारण हैं।
" एस धम्मे सुद्धे " इस सूत्रांश से श्री सुधर्मास्वामी ने तीर्थंकर कथित धर्म मे हिंसादिक दोषों के अभाव से शुद्धता का कथन किया है । इस शुद्ध धर्म का बोधक-बोध करानेवाली होने से ही द्वादशांगी में प्रवचनता, आगमता एवं सर्वोत्कृष्टता सिद्ध होती है । भगवान ने

અનુયોગદ્વારમા—जह मम ण पियं दुःख जाणिय एमेव सव्वजीवाणं ।
न हणइ न हणावेइ य सममणइ तेण सो समणे ॥ इति ।
જેમ મને દુખ ગમતુ નથી તેમજ તે દુખ સંસારના કોઇ પણ જીવને ગમે જ નહિ આમ સમજીને જેઓ જીવોની વિરાધના પોતે કરતા નથી અને બીજાઓથી કરાવતા નથી તેમજ બધા જીવોમા તુલ્યતા (સમાનતા) ની દૃષ્ટિ રાખે છે તેઓ જ 'શ્રમણ' છે આ ઉપરની વાતો શ્રમણ થવા માટેહેતુ કારણ છે
" एस धम्मे सुद्धे " આ સૂત્રાશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ તીર્થંકર કથિત ધર્મમા હિંસા વગેરે દોષોના અભાવથી શુદ્ધતાનુ કથન કર્યું છે આ શુદ્ધ ધર્મનો બોધક-બોધ કરાવનારી હોવાથી જ દ્વાદશાગીમા પ્રવચનતા આગમતા અને સર્વોત્કૃષ્ટતા સિદ્ધ થાય છે ભગવાને આગમોમાં પ્રવચનનુ સ્વરૂપ અને ... વરુ

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैयायिक, सशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्ग', मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, असन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्धयन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्व दु खानामन्त कुर्वन्ति।

अन्यच्च—इमं च ण सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहिय" इति (प्रश्न० सवर०)

छाया—'इद च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचन भगवता सुकथितम्' इति।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्य प्रदर्शयता भगवता-प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्त।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है।

अन्यच्च—इमं च ण सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयण भगवया सुकहिय" इति-(प्रश्न संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त ससारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

अन्यच्च–इम च ण सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहीय "इति-(પ્રશ્ન૦ સવર૦)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

हंता गोयमा ! तमेव सच्चं । से नूण भंते ! एवं मणे धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ? । हंता गोयमा ! त चेव " त्ति ।

छाया—अथ नूनं भदन्त ! तदेव सत्यं निश्शङ्कं यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नूनं भदन्त ? एवं मनसि धारयन् एवं प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं ससुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं निज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएंति सव्वदुःखाणमंतं करंति ।

धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ! हंता गोयमा ! त चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभिलाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है–उसमें किसी भी प्रकार की शंका के लिये स्थान नहीं है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थंकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यक सूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं ससुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएंति सव्वदुःखाणमंतं करंति ।

भवइ ! हंता गोयमा ! त चेव इति) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમાં સંપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમાં લગીરે શંકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમાં કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે–(इणमेव निग्गथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं केवलियं पडिपुन्नं नेयाउयं ससुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्गं निव्वाणमग्गं अवितहमसंदिद्धं ! इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएंति सव्व [illegible] करंति !

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैयायिक, सशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्ग, मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम् , असन्दिग्धम् , अत्र स्थिता जीवाः सिद्धयन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्वे दु खानामन्त कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इम च ण सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहिय " इति (प्रश्न० सवर०)

छाया—' इद च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचन भगवता सुकथितम्' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्य प्रदर्शयता भगवता-प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्त ।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दु.खो का विनाश है।

अन्यच्च—इमं च ण सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयण भगवया सुकहियं " इति-(प्रश्न सवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त ससारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

अन्यच्च-इम च ण सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयण भगवया सुकहीय " इति-(प्रश्न० स ञर०)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સમાર્ગીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વ જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા

हता गोयमा ! तमेव सच्च । से नूण भते ! एव मणे धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ?। हता गोयमा ! त चेव " त्ति ।

छाया—अथ नून भदन्त ! तदेव सत्य निश्शङ्क यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नून भदन्त ? एव मनसि धारयन एव प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडि-पुन्न नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति सव्वदुःखाणमंत करति ।

धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ । हंता गोयमा ! त चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभिलाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है–उसमें किसी भी प्रकार की शका के लिये स्थान नही है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलापीजन तीर्थकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यकसूत्रमें भी यही बात कही गई है

" *इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेया* उय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्गं मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झ ति मुच्चति परिणि वाएति सव्वदु.खाणमत करति ।

भवइ ! हता गोयमा ! त चेव इति) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમા લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી છે–(इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध ! इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्च ति परिणिवाएति सव्व ८ करति !

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थ प्रवचन सत्यम् अनुत्तर, कैवलिक, प्रतिपूर्ण, नैयायिक, सशुद्ध, शल्यकर्त्तन, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, असन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्ध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्व दु खानामन्त कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इम च ण सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयण भगवया सुकहिय " इति (प्रश्न० सवर०)

छाया—' इद च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचन भगवता सुकथितम्' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्य प्रदर्शयता भगवता-प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्त ।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है।

अन्यच्च—इम च ण सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयण भगवया सुकहिय " इति-(प्रश्न सवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त ससारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળ વવી એ જ જીવોના સઘળા દુખનો વિનાશ છે

अन्यच्च-इम च ण सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयण भगवया सुकहीय " इति-(प्रश्न० स वर०)

શ્રી તીર્થ કર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનુ વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

हता गोयमा ! तमेव सच्च । से नूण भते ! एव मणे धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ? । हता गोयमा ! त चेव " त्ति ।

छाया—अथ नून भदन्त ! तदेव सत्य निश्शङ्क यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नून भदन्त ? एव मनसि धारयन् एव प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति सव्वदुक्खाणमत करति ।

धारेमाणे एवं पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ! हता गोयमा ! त चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभिलाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है-उसमें किसी भी प्रकार की शका के लिये स्थान नही है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थंकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यक सूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झ ति मुच्चति परिणिवाएति सव्वदुःखाणमत करति ।

भवइ ! हता गोयमा ! त चेव इति) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સ પૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમા લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી છે-(इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमस दिद्ध ! इत्थ ठिया जीवा सिज्झ ति बुज्झति मुच्च ति परिणिवाएति सव्व [illegible] करति ।

छाया—इदमेव निर्ग्रन्थं प्रवचनं सत्यम् अनुत्तरं, कैवलिकं, प्रतिपूर्णं, नैयायिकं, संशुद्धं, शल्यकर्त्तनं, सिद्धिमार्गः, मुक्तिमार्गः, निर्याणमार्गः, निर्वाणमार्गः, अवितथम्, असन्दिग्धम्, अत्र स्थिता जीवाः सिद्ध्यन्ति, बुध्यन्ते, मुच्यन्ते, परिनिर्वान्ति, सर्वं दुःखानामन्तं कुर्वन्ति ।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणदयट्ठाए पावयणं भगवया सुकहियं" इति (प्रश्न० संवर०)

छाया—'इदं च खलु सर्वजगज्जीवरक्षणदयार्थाय प्रवचनं भगवता सुकथितम्' इति ।

धर्मध्यानस्याऽऽज्ञाविचयादि भेदेन चातुर्विध्यं प्रदर्शयता भगवता-प्राधान्यादाज्ञाविचयः प्राथम्येन प्रोक्तः ।

भावार्थ-इस का स्पष्ट है। इसमें सूत्रकार ने मुख्यरूप से यही बात प्रकट की है कि इस निर्ग्रन्थ प्रवचन मार्ग में स्थित जीव अष्ट कर्मोंका विनाश कर सिद्धदशासंपन्न हो जाते हैं। इस अवस्थाकी प्राप्ति होना ही जीवों के समस्त दुःखों का विनाश है।

अन्यच्च—इमं च णं सव्वजगजीवरक्खणट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहियं" इति-(प्रश्न संवर०)

इस प्रवचन की प्ररूपणा करने का श्री तीर्थंकर प्रभु का यही एक उद्देश रहा है कि समस्त संसारीजन इस प्रवचन के अभ्यास से सर्व जगत के जीवों की रक्षा करे और उनकी दया पालें।

ध्यान का वर्णन करते हुए भगवान ने उस ध्यान के ४ भेद कहे हैं। उनमें धर्मध्यान के आज्ञाविचय आदि जो ४ पाये प्रकट किये

આ કથનનો ભાવાર્થ સ્પષ્ટ છે આમા ખાસ કરીને સૂત્રકારે એ જ વાત સ્પષ્ટ રીતે બતાવી છે કે આ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન માર્ગમા સ્થિત જીવ અષ્ટ કર્મોનો વિનાશ કરીને સિદ્ધિ દશા સંપન્ન થઈ જાય છે આ અવસ્થા મેળવવી એ જ જીવોના સઘળા દુઃખનો વિનાશ છે

अन्यच-इमं च णं सव्व जगजीवरक्खणदयट्ठयाए पावयणं भगवया सुकहीय "इति-(प्रश्न० संवर०)

શ્રી તીર્થંકર પ્રભુનો આ પ્રવચનની પ્રરૂપણા કરવાનો એ જ ઉદ્દેશ રહ્યો છે કે બધા સંસારીજનો આ પ્રવચનના અભ્યાસથી જગતના સર્વે જીવોની રક્ષા કરે અને તેમની દયા પાળે

ધ્યાનનું વર્ણન કરતા ભગવાને તેના ચાર ભેદો વર્ણવ્યા છે તેઓમા ધર્મધ્યાનના આજ્ઞા-વિચય વગેરે ચાર ઉપભેદો સ્પષ્ટ કરવામા આવ્યા છે

हता गोयमा ! तमेव सच्च । से नूण भते ! एव मणे धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ? । हता गोयमा ! त चेव " त्ति ।

छाया—अथ नून भदन्त ! तदेव सत्य निश्शङ्क यज्जिनैः प्रवेदितम् ? । हन्त गौतम ! तदेव सत्यम् । अथ नून भदन्त ? एव मनसि धारयन् एव प्रकुर्वन् आज्ञाया आराधको भवति ? हन्त गौतम ! तदेव " इति ।

आवश्य सूत्रेऽपि—"इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग निज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिव्वाएति सव्वदुक्खाणमत करति ।

धारेमाणे एव पकरेमाणे आणाए आराहए भवइ ! हता गोयमा ! त चेव इति " इस सूत्र का भावार्थ यह है कि प्रत्येक मुमुक्षु (मोक्षाभिलाषी) जन को अपने हृदय में इस बात का पूर्णदृढ विश्वास रखना चाहिये कि जो जिनेन्द्र देव ने प्रतिपादित किया है वही वास्तविक तत्त्व है-उसमें किसी भी प्रकार की शका के लिये स्थान नहीं है इस प्रकार के दृढ विश्वास से उसे अपने मन में धारण करनेवाला और उसके अनुसार ही अपनी प्रवृत्ति करनेवाला मोक्षाभिलाषीजन तीर्थकरप्रभुकी आज्ञाका आराधक होता है आवश्यकसूत्रमें भी यही बात कही गई है

" इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन्न नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्गं णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमसदिद्ध । इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्चति परिणिवाएति सव्वदुःखाणमत करति ।

भवइ ! हता गोयमा ! त चेव इति) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારી વ્યક્તિને પોતાના હૃદયમા સપૂર્ણપણે આ વાતની ખાતરી થવી જોઈએ કે જે જીનેન્દ્ર દેવે પ્રતિપાદિત કર્યું છે તે જ વાસ્તવિક તત્વ છે તેમા લગીરે શકા નથી આ જાતના દૃઢ વિશ્વાસથી તેને પોતાના મનમા કરનાર અને તે મુજબ જ આચરણ કરનારી મોક્ષને ઇચ્છનારી વ્યક્તિ પ્રભુની આજ્ઞાની આરાધક હોય છે આવશ્યક સૂત્રમા પણ એ જ વાત કહેવામા આવી છે-(इणमेव निग्गथ पावयण सच्च अणुत्तर केवलिय पडिपुन नेयाउय ससुद्ध सल्लगत्तण सिद्धिमग्ग मुत्तिमग्ग णिज्जाणमग्ग निव्वाणमग्ग अवितहमस दिद्ध ! इत्थ ठिया जीवा सिज्झति बुज्झति मुच्च ति परिणिवाएति सव्व दु॰ करति ।

है, अनवद्य है, इस में प्रत्येक जीवादिक पदार्थ का विवेचन बहुत ही अच्छी तरह से किया गया है अतः यह महार्थ है इसका प्रभाव भी अद्वितीय है इसकी छत्रछाया में आने से प्रत्येक भव्य जीव आत्मक ल्याण के अपने अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि कर लिया करते हैं। इस में प्रतिपादित तत्व सामान्यजन नहीं ज्ञात कर सकते हैं-द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयरूप दो दृष्टिया जिनके पास हैं-वे ही इसमें प्रतिपादित विषय को अच्छी तरह ज्ञात कर सकते हैं। इसमें जो भी कुछ कथन सर्वज्ञ भगवान् ने किया है वह इन्ही दो दृष्टियो को सामने रखकर किया गया है यदि एक दृष्टि को ही प्रधान रखकर इसके तत्व को समझने की चेष्टा की जाय तो वह प्रतिपाद्य विषय ठीक २ नहीं सम झा जा सकता है। तथा इस प्रकार की प्ररूपणा अन्यथा भी ज्ञात होने लगती है इसलिये दूसरी दृष्टि को सामने रखकर ही वह विषय ठीक २ रीति से समझ में आ सकता है, अत इसी अभिप्रायसे इसे निपुण जनवेद्य कहा है तथा इस में प्रत्येक पदार्थ को उत्पादन व्यय और ध्रौव्य आत्मक कहा गया है-वह भी द्रव्य और पर्याय की अपेक्षा से ही कहा गया है द्रव्य की अपेक्षा से प्रत्येक जीवादिक पदार्थ ध्रौव्यरूप

અતીવકુશળ છે દરેક દરેક જીવો નો આ હીતકારી છે અનવદ્ય છે, એમા દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનુ વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યુ છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેક ભવ્યજીવ આત્મકલ્યાણ વિષયક પોતાની અ તિમ લક્ષની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્ય લોકો જાણી શકતા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ્ઞ ભગવાને આમા જે કંઈ કહ્યુ છે તે બધુ આ પૂર્વોક્ત બને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યુ છે જો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્ત્વને જાણવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ જાતની પ્રરૂપણા અ યથા પણ માલુમ થવા માડે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય સરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેદ્ય' કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમા જે દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

यथा भगवती सूत्रे--(श० २५ उ० ७)

"धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा-आणाविचए" अवायविचए, विवागविचए, सठाणविचए ॥

छाया—धर्मध्यान चतुर्विध प्रज्ञप्तम् । तद् यथा-आज्ञाविचयः, अपाय विचय , विपाकविचयः, सस्थानविचयः ।

अत्र प्रसङ्गवशाद् आज्ञाविचय एव व्याख्यायते—

आज्ञाविचयश्च-आज्ञायाः पर्यालोचन, आज्ञा-सर्वज्ञप्रणीत आगम', तामाज्ञामित्थ विचिनुयात्=पर्यालोचयेत् – पूर्वापरविशुद्धमतिनिपुणामशेषजीवकायहिता

हैं उन में सर्व प्रथम आज्ञाविचय को जो कहा है उसका कारण यही है कि शेष तीन पायों (भेदों) में प्रधान है। भगवती सूत्र श. २५ उ- ७ में देखो यह वर्णन इस प्रकार से हुआ है–धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा-आणाविचए, अवायविचए, विवागविचए, सठाणविचए ॥

अर्थ— धर्मध्यान ४ प्रकार का है (१) आज्ञाविचय (२) अपायविचय (३) विपाकविचय (४) संस्थानविचय।

प्रसंगवश यहां आज्ञाविचय पर विवेचन किया जाता है-तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का विचय-पर्यालोचन-विचार करना सो आज्ञाविचय है सर्वज्ञ कथित आगम का नाम आज्ञा है । इस आगमरूप आज्ञा का इस प्रकार से विचार करना चाहिये–यह प्रभु प्रतिपादित आगम पूर्वापर विरोध रहित होने से विशुद्ध है, प्रत्येक सूक्ष्म अन्तरित और दूरार्थ के प्रतिपादन करने में अतिनिपुण है, प्रत्येक जीवों का यह हितकारी

તેઓમા જે સૌ પ્રથમ આજ્ઞા વિચયનો જે ઉલ્લેખ કરવામા આવ્યો છે તેનું કારણ એ જ છે કે બાકી રહેલા ત્રણ ઉપભેદોમા તે મુખ્ય છે ભગવતી સૂત્ર શ ૨૫ ઉ ૭ મા એના માટે જોવુ જોઇએ ત્યા આનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે-धम्मे झाणे चउव्विहे पण्णत्ते, त जहा-आणाविचए, अवायविचए, विवाग विचए, स ठाणविचए ॥

અર્થ—ધર્મધ્યાનના ચાર પ્રકાર છે (૧) આજ્ઞા-વિચય, (૨) અપાય વિચય, (૩) વિપાક વિચય, (૪) સસ્થાન વિચય

પ્રસગવશ અહીં આજ્ઞાવિચય વિષે વર્ણન કરવામા આવે છે તીર્થંકર પ્રભુની આજ્ઞાનો વિચય-પર્યાલોચન-વિચાર કરવો તે આજ્ઞાવિચય છે સર્વજ્ઞકથિત આગમનુ નામ આજ્ઞા છે તે આગમરૂપ આજ્ઞાનો આ રીતે વિચાર કરવો જોઈએ કે આ પ્રભુ પ્રતિપાદિત આગમ પૂર્વાપર વિરોધ રહિત વિશુદ્ધ છે, દરેક સૂક્ષ્મ અતરિત અને દૂરાર્થના

हैं, अनवद्य हैं, इस में प्रत्येक जीवादिक पदार्थ का विवेचन बहुत ही अच्छी तरह से किया गया है अतः यह महार्थ है इसका प्रभाव भी अद्वितीय है इसकी छत्रछाया में आने से प्रत्येक भव्य जीव आत्मकल्याण के अपने अन्तिम लक्ष्य की सिद्धि कर लिया करते हैं। इस में प्रतिपादित तत्व सामान्यजन नहीं ज्ञात कर सकते हैं-द्रव्यार्थिक और पर्यायार्थिक नयरूप दो दृष्टिया जिनके पास हैं-वे ही इसमें प्रतिपादित विषय को अच्छी तरह ज्ञात कर सकते हैं। इसमें जो भी कुछ कथन सर्वज्ञ भगवान् ने किया है वह इन्हीं दो दृष्टियो को सामने रखकर किया गया है यदि एक दृष्टि को ही प्रधान रखकर इसके तत्व को समझने की चेष्टा की जाय तो वह प्रतिपाद्य विषय ठीक २ नहीं समझा जा सकता है। तथा इस प्रकार की प्ररूपणा अन्यथा भी ज्ञात होने लगती है इसलिये दूसरी दृष्टि को सामने रखकर ही वह विषय ठीक २ रीति से समझ में आ सकता है, अत इसी अभिप्रायसे इसे निपुण जनवेद्य कहा है तथा इस में प्रत्येक पदार्थ को उत्पाद व्यय और ध्रौव्य आत्मक कहा गया है-वह भी द्रव्य और पर्याय की अपेक्षा से ही कहा गया है द्रव्य की अपेक्षा से प्रत्येक जीवादिक पदार्थ ध्रौव्यरूप

અતીવકુશળ છે દરેક દરેક જીવો ના આ હીતકારી છે અનવદ્ય છે, એમા દરેકે દરેક જીવ વગેરે પદાર્થનુ વિવેચન બહુજ સૂક્ષ્મતા પૂર્વક કરવામા આવ્યુ છે એથી આ મહાર્થ છે આનો પ્રભાવ પણ અદ્વિતીય છે, આની છત્ર-છાયામા આવવાથી દરેક ભવ્યજીવ આત્મકલ્યાણ વિષયક પોતાની અતિમ લક્ષની સિદ્ધિ પ્રાપ્તકરી લે છે આમા પ્રતિપાદિત તત્ત્વ સામાન્ય લોકો જાણી શકતા નથી દ્રવ્યાર્થિક તેમજ પર્યાયાર્થિક નયરૂપ બે દૃષ્ટિઓ જેની પાસે છે તેઓ જ આમા પ્રતિપાદિત વિષયને સારી પેઠે સમજી શકે છે સર્વજ્ઞ ભગવાને આમા જે કઈ કહ્યુ છે તે બધુ આ પૂર્વોક્ત બને દૃષ્ટિઓ ને પોતાની સામે રાખીને જ કહ્યુ છે જો એક-દૃષ્ટિને જ પ્રધાન સમજીને તેના તત્ત્વને જાણવાની ચેષ્ટા કરવામા આવે તો તે પ્રતિપાદ્ય વિષય યથાવત્ સમજી શકાય જ નહિ તેમજ આ જાતની પ્રરૂપણા અન્યથા પણ માલુમ થવા માડે છે એથી બીજી દૃષ્ટિને પોતાની સામે રાખીને જ વિચાર કરીએ તો વિષય સરસ રીતે સમજી શકાય તેમ છે આ પ્રયોજનથી જ આને 'નિપુણજન-વેદ્ય' કહેવામા આવ્યો છે તેમજ આમાં જો દરેક પદાર્થને ઉત્પાદ, વ્યય અને ધ્રૌવ્ય આત્મક કહેવામા આવ્યો છે તે પણ દ્રવ્ય અને પર્યાયની અપેક્ષાથી જ કહેવામા આવ્યો છે દ્રવ્યની

मनवद्यां महार्थां महानुभावां निपुणजनविज्ञेया द्रव्यपर्यायप्रपञ्चवतीमनादिनि धनाम्। अस्य प्रवचनस्याऽऽद्यन्तरहितत्वं च भगवता नन्दीसूत्रे निगदितम्—

"इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडगं न कयाइ णासी ॥"

इत्येतद् द्वादशाङ्गं गणिपिटकं न कदापि नासीत् ॥ इत्यादि।

है और पर्याय की अपेक्षा से उत्पादन व्ययरूप है, इसलिये भी जिन प्रतिपादित आगमरूप आज्ञा स्वयं द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली है। अथवा जीवादिक समस्त ६ द्रव्यो की त्रिकालवर्ती समस्त पर्यायें इसमे प्रतिपादित हुई हैं, अथवा कोई भी द्रव्य कभी भी पर्याय रहित नहीं हो सकता है–स्वभाव पर्यायें और व्यञ्जन पर्यायें, विभाव पर्यायें और अर्थपर्यायें प्रत्येकक्षण में समस्तद्रव्यों में होती रहती हैं, इत्यादिरूप से द्रव्य और पर्यायो का प्रतिपादन इस आज्ञा में भगवान ने प्रदर्शित किया है इस अपेक्षा भी यह द्रव्य और पर्याय के विस्तार वाली मानी गई है तथा यह अनादि अनन्त है न कभी इस आज्ञा की आदि हुई है और न कभी इसका विनाश होगा। नदीसूत्र में भी प्रवचन की अनादि अनन्तता के विषय मे "इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडिग न कयाइनासी" यही कहा है–ऐसा कोई सा भी काल नहीं था कि जिस काल में इस द्वादशागरूप गणिपिटकका सद्भाव नहीं था।

અપેક્ષાથી દરેક જીવ વગેરે પદાર્થ ધ્રૌવ્યરૂપ છે અને પર્યાયની અપેક્ષાથી ઉત્પાદ વ્યયરૂપ છે એટલા માટે પણ જિન પ્રતિપાદિત આગામરૂપ આજ્ઞા પોતે દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપચ (વિસ્તાર) વાળી છે અથવા તો જીવ વગેરે બધા ૬ દ્રવ્યોના ત્રિકાલ વર્તી સમસ્ત પર્યાયો આમા પ્રતિપાદિત થયા છે, અથવા કોઈ પણ દ્રવ્ય કોઇ પણ દિવસે પર્યાય રહિત થઇ શકતુ નથી સ્વભાવ પર્યાયો અને વ્યજન પર્યાયો, વિભાવ પર્યાયો અને અર્થ પર્યાયો દરેક ક્ષણમા બધા દ્રવ્યોમા થતી રહે છે ઇત્યાદિ રૂપથી દ્રવ્ય અને પર્યાયોનુ પ્રતિપાદન આ આજ્ઞામા ભગવાને બતાવ્યુ છે આ અપેક્ષાથી પણ આ દ્રવ્ય અને પર્યાયના પ્રપચ (વિસ્તાર) વાળી માનવામા આવી છે તેમજ આ અનાદિ અનત છે કોઇ દિવસ આજ્ઞાની આદિ થઇ નથી અને કોઈ પણ દિવસે આનો વિનાશ થશે નહિ નદીસૂત્રમા પણ પ્રવચનની અનાદિ અનતતાને લગતી (इच्चेइय दुवालसंग गणिपिडग न कयाइनासी) એજ વાત કહેવામા આવી છે એવો કોઈ પણ કાળ હતો નહિ કે તે કાળે આ દ્વાદશાગ રૂપ ગણિપિટકનો સદ્ભાવ હતો નહિ આ રીતે આ આગમની મહત્તા અથવા તો

इत्थ चागममाहात्म्यपर्यालोचनरूपस्य धर्मध्यानस्याऽऽ – र्हताऽऽज्ञाविषयत्वाद् धर्मध्यानस्य धर्मत्वं सिद्धम् । तथा–हिंसादि–दोपलेशेनाप्यसंपृक्तस्य शुद्ध धर्मस्य बोधकत्वादहिंसाप्रधानस्य प्रवचनस्य श्रद्धेयत्वं च सिद्धम् ।

अहिंसायामर्हतो भगवत आज्ञा प्रदर्शिता, एवं संयमेपि तदाज्ञा वर्तते । यथा –ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रे–(प्रथमाध्ययने)

" तएणं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव सयमेव आयारं जाव धम्ममाइक्खइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! गतव्वं चिट्ठियव्वं णिसीइयव्वं

इस प्रकार इस आगम की महत्ता अथवा उसके महात्म्य का विचार करना यही आज्ञाविचय नामक धर्मध्यान का प्रथम भेद है। इस ध्यान में अर्हंतप्रभु की आज्ञा का ही विचार होता है–अतः इस ध्यान मे उन की आज्ञा का विषय करनेवाला होने से धर्मरूपता सिद्ध है तथा हिंसादिक दोप के लेश से भी रहित ऐसे शुद्ध धर्म का बोधक होने से अहिंसाप्रधान इस प्रवचन मे श्रद्धेयता सिद्ध होती है।

इस पूर्वोक्त प्रकार से अहिंसा में अर्हत भगवान् की आज्ञा का प्रदर्शन कर अब संयममें भी उनकी आज्ञा इसी प्रकार को है यह प्रकट करने के लिये सर्व प्रथम ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र से इस विषय की पुष्टि करते हुए सूत्रकार कहते हैं।

"तएणं समणे भगवं महावीरे मेहकुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव धम्ममाइक्खइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! गतव्वं चिट्ठियव्वं णिसी-

ધ્યને લગતો વિચાર કરવો એ જ આજ્ઞા–વિચય નામક ધર્મધ્યાનનો પ્રથમ ભેદ છે આ ધ્યાનમા અર્હંત પ્રભુની આજ્ઞા વિષે જ વિચાર હોય છે તેથી આ ધ્યાનમા તેમની આજ્ઞાનો વિષય પ્રતિપાદિત થયો છે માટે આમા ધર્મ રૂપતા સિદ્ધ છે તેમજ હિંસા વગેરે દોષોથી પણ રહિત શુદ્ધ ધર્મનો બોધક હોવાને કારણે અહિંસા પ્રધાન આ પ્રવચનમા શ્રદ્ધેયતા સિદ્ધ થાય છે

આ પ્રમાણે પૂર્વોક્ત રીતે અર્હંત ભગવાનની અહિંસાના વિષે આજ્ઞા બતાવીને હવે આગળ સૂત્રકાર સયમ માટે પણ તેઓશ્રીની આજ્ઞા આ રીતે જ છે આ વાત સ્પષ્ટ કરવાને માટે સૌ પ્રથમ જ્ઞાતા–ધર્મકથાઙ્ગ સૂત્રથી આ વિષયની પુષ્ટિ કરતા કહે છે—

" तएणं समणे भगवं महावीरे मेहंकुमारं सयमेव पव्वावेइ, जाव सयमेव आयारं जाव धम्ममाइक्खइ, एवं खलु देवाणुप्पिया ! गतव्वं चिट्ठि-

तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेण संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं " इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघ कुमारं स्वयमेव प्रव्राजयति, यावत् स्वयमेव आचारं यावद् धर्ममाख्याति–एवं खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्य,स्थातव्य' निषत्तव्य, स्वग्वर्तयितव्य भोक्तव्य भाषितव्यत्, एवमुत्थाय उत्थाय प्राणेषु भूतेषु जीवेषु सत्त्वेषु सयमेन संयन्तव्यम् , अस्मिंश्च खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम् । इति,

दशवैकालिक सूत्रे ऽपि—
" जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए ।
जयं भुंजतो भासतो पावकम्मं न बंधई ॥ "

इयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं भासियव्वं एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेण संजमियव्वं, अस्सिंच णं अट्ठे णो पमाएयव्वं"

श्रमण भगवान महावीर ने स्वयं अपने ही हाथों से मेघकुमारको जब भागवती दीक्षा प्रदान की उनके लिये मुनि विषयक आचार आदि का जब उन्हो ने उपदेश दिया तब उन्हो ने उसे यही समझाया कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहारकरते और बात चित करते समय प्राणियो, भूतो, जीवो, और सत्वो में सदा संयम से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक शारीरिक एवं वाचनिक क्रियाओं में, संयमित प्रवृत्ति करें। इस प्रकार की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने संयम की रक्षा होती है इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नही करना चाहिये। दशवै कालिक सूत्र में भी यही कहा है–" जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं

यव्वं णिसीइयव्वं तुयट्टियव्वं भुंजियव्वं, भासियव्वं, एवं उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेण संजमियव्वं अस्सिं च णं अट्ठे णो पमाएयव्वं "

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જાતે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને જ્યારે ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમા એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુપ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતા, બેસતા, સૂઈ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્વોમા હમેશા સંયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવુ જોઈએ મુનિની એ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયાઓમા સંયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઈને રહેવાથી જ મુનિઓ વડે સંયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમા મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ કરવો જોઈએ નહિ દશવૈકાલિક સૂત્રમા પણ એજ વાત કહેવામા આવી છે (जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए, जयं भुंजतो भासतो

छाया-यतं चरेत् यत तिष्ठेत्, यतमासीत यत शयीत ।
यत भुञ्जानो भाषमान पापकर्म न बध्नाति ॥ १ ॥ इति ।
तत्रैव-' संजम निहुओ चर " इत्यादि । छाया-सयम निभृतश्चर ' इति ।
सयमे तीर्थंकरस्याज्ञा प्रदर्शिता, इदानीं तपसि तदाज्ञा प्रदर्श्यते । यथा-दश वैकालिक सूत्रे-(द्वितीयाध्ययने)

" आयावयाही चय सोगमल्ल " इति । " आयावयाही " आतापय=आतापनारूपतपोधर्माराधनेन तनु शोषय, " सोगमल्ल " सौकुमार्यं " चय " त्यज= परिहर ।

सए, जय भुजतो भासतो पावकम्म न बधइ" सकल सयमियो को पूर्ण सावधान ता पूर्वक ही चलना चाहिये और पूर्ण सावधानता पूर्वक ही बैठना चाहिये । उठने बैठने में तथा आहारादि क्रिया करने और बोलने चालने में सदा उसे अपनी यत्नाचारमय प्रवृति पर ही लक्ष्य रखना चाहिये । इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से वह साधु पापकर्म का बध नहीं करता है । इसलिये हे मेघकुमार ! तुम " सयम निभृतश्चर " इस सकल सयम की अच्छी तरह से-यत्नाचारमय प्रवृत्ति से रक्षा करो-पालन करो । इस प्रकार से सयम की आराधना में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का प्रदर्शन सूत्रकार ने किया है । अब तप के आराधन करने में उनकी क्या आज्ञा है-वे यह स्पष्ट करते है " आयावयाही चय सोगमल्ल " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) 'हे मुने ! सुकुमालपने को छोड़ आतापनाले' आतापनारूप तपधर्म की आराधना से मुनि को चाहिये

બધા સયમી લોકોએ સપૂર્ણપણે સાવધાન થઈનેજ ચાલવું જોઈએ અને પૂર્ણ સાવધાન થઈને જ બેસવુ જોઈએ ઉઠવા બેસવામા તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા કરવામા અને બોલવા ચાલવામા હમેશા તેને પોતાની યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ ઉપર જ લક્ષ્ય આપવુ જોઈએ આ રીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે સાધુ પાપ-કર્મનો બધ કરતો નથી એથી હે મેઘકુમાર ! તમે " सयम निभृतश्चर " આ સકલ સયમની સારી રીતે યત્નાચારમયી પ્રવૃત્તિ વડે રક્ષા કરો-આનુ પાલન કરો. આ રીતે સૂત્રકારે સયમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનુ પ્રદર્શન કર્યું છે હવે તપની આરાધના કરવામા તેઓશ્રીની આજ્ઞા શી છે ? તે સૂત્રકાર અહીં સ્પષ્ટ કરે છે-" आयावयाही चय सोगमल्ल " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) હે મુનિ ! સુકોમળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારો આતાપના રૂપ તપધર્મના આરાધનાથી મુનિ પોતાના શરીરને કૃશ (દુર્બળ) બનાવે અને શારીરિક

तुयट्टियव्व भुजियव्व भासियव्व, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व, अस्सिं च ण अट्ठे णो पमाएयव्व " इति, ।

ततः खलु श्रमणो भगवान् महावीरो मेघ कुमार स्वयमेव प्रव्राजयति, यावत् स्वयमेव आचार यावद् धर्ममाख्याति–एव खलु हे देवानुप्रिय ! गन्तव्य, स्थातव्य निषत्तव्य, त्वग्वर्तयितव्य भोक्तव्य भाषितव्यम्, एवमुत्थाय उत्थाय प्राणेषु भूतेषु जीवेषु सत्त्वेषु सयमेन सयन्तव्यम् , अस्मिंश्च खलु अर्थे नो प्रमादयितव्यम् । इति,

दशवैकालिक सूत्रे ऽपि—

" जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय सए ।
जय भुजतो भासतो पावकम्म न बधई ॥ "

इयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व भासियव्व एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व, अस्सिंच ण अट्ठे णो पमाएयव्व"

श्रमण भगवान महावीर ने स्वय अपने ही हाथों से मेघकुमारको जब भागवती दीक्षा प्रदान की उनके लिये मुनि विषयक आचार आदि का जब उन्हो ने उपदेश दिया तब उन्हो ने उसे यही समझाया कि हे देवानुप्रिय ! चलते, ठहरते, बैठते, लेटते, आहारकरते और बात चित करते समय प्राणियो, भूतो, जीवो, और सत्वो में सदा सयम से ही प्रवृत्ति करनी चाहिये। मुनि का यही कर्तव्य है कि वह प्रत्येक शारीरिक एव वाचनिक क्रियाओ में, सयमित प्रवृत्ति करें। इस प्रकार की प्रवृत्तिशील होने से ही मुनि द्वारा अपने सयम की रक्षा होती है इस विषय में मुनि को कभी भी प्रमाद नही करना चाहिये। दशवैकालिक सूत्र में भी यही कहा है–" जय चरे जय चिट्ठे जयमासे जय

यव्व णिसीइयव्व तुयट्टियव्व भुजियव्व, भासियव्व, एव उट्ठाय उट्ठाय पाणेहिं भूयेहिं जीवेहिं सत्तेहिं सजमेण सजमियव्व अस्सिं च ण अट्ठे णो पमाएयव्व "

શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે જાતે પોતાના હાથથી જ મેઘકુમારને જ્યારે ભાગવતી દીક્ષા આપી અને તેને મુનિવિષયક આચાર વગેરેને લગતો ઉપદેશ આપ્યો ત્યારે તેઓશ્રીએ તેને ઉપદેશમા એ જ વાત સમજાવી કે હે દેવાનુ પ્રિય ! ચાલતા ઊભા રહેતા, બેસતા, સૂઇ જતા, આહાર કરતા અને વાતચીત કરતા પ્રાણીઓ, ભૂતો, જીવો અને સત્વોમા હમેશા સયમથી જ પ્રવૃત્તિ કરતા રહેવુ જોઇએ મુનિની એ જ ફરજ છે કે તે દરેક શારીરિક અને વાચનિક ક્રિયા ઓમા સયમિત પ્રવૃત્તિ કરે આ રીતે પ્રવૃત્તિશીલ થઇને રહેવાથી જ મુનિઓ વડે સયમની રક્ષા થાય છે આ બાબતમા મુનિએ કોઈ પણ દિવસે પ્રમાદ કરવો જોઇએ નહિ દશવૈકાલિક સૂત્રમા પણ એજ વાત કહેવામા આવી છે (જય ચરે જય ચિટ્ઠે જયમાસે જયસએ, જય ભુંજતો ભાસતો

छाया-यतं चरेत् यतं तिष्ठेत्, यतमासीत यतं शयीत ।
यतं भुञ्जानो भाषमाण: पापकर्म न बध्नाति ॥ १ ॥ इति ।
तत्रैव-' संजमं निहुओ चर " इत्यादि । छाया-संयमं निभृतश्चर ' इति ।
संयमे तीर्थंकरस्याज्ञा प्रदर्शिता, इदानीं तपसि तदाज्ञा प्रदर्श्यते । यथा-दशवैकालिक सूत्रे-(द्वितीयाध्ययने)

" आयावयाही चय सोगमल्लं " इति । " आयावयाही " आतापय=आतापनारूपतपोधर्माराधनेन तनुं शोषय, " सोगमल्लं " सौकुमार्यं " चय " त्यज=परिहर ।

सए, जयं भुंजतो भासतो पावकम्मं न बंधई" सकल संयमियों को पूर्ण सावधानता पूर्वक ही चलना चाहिये और पूर्ण सावधानता पूर्वक ही बैठना चाहिये । उठने बैठने में तथा आहारादि क्रिया करने और बोलने चालने में सदा उसे अपनी यत्नाचारमय प्रवृति पर ही लक्ष्य रखना चाहिये । इस प्रकार की प्रवृत्ति करने से वह साधु पापकर्म का बंध नहीं करता है । इसलिये हे मेघकुमार ! तुम " संयमं निभृतश्चर " इस सकल संयम की अच्छी तरह से-यत्नाचारमय प्रवृत्ति से रक्षा करो-पालन करो । इस प्रकार से संयम की आराधना में तीर्थंकर प्रभु की आज्ञा का प्रदर्शन सूत्रकार ने किया है । अब तप के आराधन करने में उनकी क्या आज्ञा है-वे यह स्पष्ट करते हैं " आयावयाही चय सोगमल्लं " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) ' हे मुने ! सुकुमालपने को छोड़ आतापनाले ' आतापनारूप तपधर्म की आराधना से मुनि को चाहिये

બધા સંયમી લોકોએ સંપૂર્ણપણે સાવધાન થઈને જ ચાલવું જોઈએ અને પૂર્ણ સાવધાન થઈને જ બેસવું જોઈએ ઉઠવા બેસવામાં તેમજ આહાર વગેરે ક્રિયા કરવામાં અને બોલવા ચાલવામાં હમેશા તેને પોતાની યત્નાચારમય પ્રવૃત્તિ ઉપર જ લક્ષ્ય આપવું જોઈએ આ રીતે પ્રવૃત્તિ કરવાથી તે સાધુ પાપ-કર્મનો બંધ કરતો નથી એથી હે મેઘકુમાર ! તમે " संयमं निभृतश्चर " આ સકલ સંયમની સારી રીતે યત્નાચારમયી પ્રવૃત્તિ વડે રક્ષા કરો-આનું પાલન કરો. આ રીતે સૂત્રકારે સંયમની આરાધના વિષે પ્રભુની આજ્ઞાનું પ્રદર્શન કર્યું છે હવે તપની આરાધના કરવામાં તેઓશ્રીની આજ્ઞા શી છે ? તે સૂત્રકાર અહીં સ્પષ્ટ કરે છે-" आयावयाही चय सोगमल्लं " (दशवैकालिक द्वितीय अध्ययन) હે મુનિ ! સુકોમળતાને ત્યજીને આતાપના સ્વીકારો આતાપના રૂપ તપધર્મની આરાધ[illegible] મુનિ પોતાના શરીરને કૃશ (દુર્બળ) બનાવે અને શારીરિક

किंच श्रमणस्य क्षान्त्यादिदशविधे धर्मे तपसः पाठो वर्तते, तस्मात् तपोधर्म इति विज्ञायते। तथाचोक्तं समवायाङ्गसूत्रे-(समवाय १०)

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, त जहा-(१) खंती, (२) मुत्ती (३) अज्जवे (४) मद्दवे (५) लाघवे (६) सच्चे (७) संजमे (८) तवे (९) चियाए (१०) बंभचेरवासे।

अहिंसादीना जिनाज्ञाप्रयोज्यप्रवृत्तिकत्वरूपस्य धर्मलक्षणस्य सद्भावाद् धर्मत्व सिद्ध।

उक्त धर्मस्य लक्षण, लक्ष्या अहिंसादयश्च प्रोक्ताः, तत्राहिंसासयमतपोरूपो धर्म उत्कृष्ट मङ्गल बोध्यम्।

तथाचोक्तं दशवैकालिकसूत्रे-(प्र० अ० १)

" धम्मो मगलमुक्किट्ठ अहिंसा संजमो तवो।
देवावि त नमसति जस्स धम्मे सया मणो॥"

कि वह अपने शरीर को कृश करें एव शारीरिक सुकुमारता का मोह छोड़े। उत्तम क्षमा आदिक जो श्रमणों के दशप्रकार के धर्म कहे गये हैं, उनमें तप का भी कथन आया है, अत' तप में धर्मरूपता सिद्ध ही होती है। समवायाग सूत्र मे श्रमण के दश प्रकार के धर्मों का कथन करते हुए सूत्रकार ने यही कहा है-" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, त जहा-खती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, सजमे, तवे, चियाए बभचेरवासे।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होती है कि वहा पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत अहिंसादिकों का कथन है। ये अहिंसा, सयम और तपरूप धर्म ही

सुकुमारतानो मोह त्यजी दे उत्तम क्षमा वगेरे श्रमणोना दश प्रकारना धर्म कहेवामा आव्या छे तेओमा तपनु कथन छे एथी तपमा धर्मरूपता सिद्ध थाय ज छे सूत्रकारे समवायाग सूत्रमा श्रमणना दश प्रकारना धर्मनु कथन करता आ प्रमाणे ज कह्यु छे—

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते -त जहा-खत्ती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे' सजमे, तवे चियाए बभचेरवासे।"

आ अहिंसा वगेरे महाव्रतोमा धर्मरूपता एटला माटे सिद्ध थाय छे के तेओमा जीनेन्द्र प्रभुनी आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्ति रूप धर्मना लक्षणनो सद्-भाव छे आ रीते धर्मनु लक्षण अने तेना लक्ष्यभूत अहिंसा - छे अहिंसा, सयम अने तप रूप धर्म -उत्कृष्ट मगळ

छाया—धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टम् अहिंसा संयमस्तपः ।
देवा अपि त नमस्यन्ति, यस्य धर्मे सदा मनः ॥

नन्वहिंसा-संयम-तपो-रूपो धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टमित्येतद्वचः किमाज्ञासिद्धम् आहोस्विद् युक्तिसिद्धमपि ?

अत्रोच्यते—उभयसिद्धमपि, तथाहि-जिनवचनत्वा-दाज्ञासिद्धम् अनुमानमप्यत्रवर्तते-' अहिंसासंयमतपोरूपो-धर्मो मङ्गलमुत्कृष्टम् इति प्रतिज्ञा, ' देवादि

उत्कृष्ट मगलरूप हैं दशवैकालिकसूत्र में यही कहा है " धम्मो मगलमुक्किट्ठ अहिंसा सजमो तवो। देवा वि त नमस ति जस्स धम्मे सयामणो " धर्म ही उत्कृष्ट मगल है। अहिंसा सयम और तप ये ही धर्म हैं। जिसका अन्तः करण इस धर्म से सदा युक्त रहता है उसके लिये देव भी नमस्कार करते हैं।

शका-अहिंसा, संयम और तपरूप धर्म में जो उत्कृष्ट मगलरूपता कही है वह आज्ञासिद्ध है इसलिये कही है कि युक्ति से सिद्ध है इसलिये कही है ? भावार्थ-अहिंसादिकों में उत्कृष्टमगलता किस प्रमाण से सिद्ध है ? आगम से या अनुमान से ?

उत्तर-इनमें उत्कृष्ट मगलरूपता आगम और युक्ति दोनों से सिद्ध है। जिनेन्द्र के वचन होने से इनमें आज्ञासिद्धता है तथा अनुमान से प्रसिद्ध होने से युक्ति सिद्धता है। " धम्मो मगलमुक्किट्ठ " इत्यादि गाथा द्वारा इनमें जिनेन्द्रवचनरूप आगमता पूर्व में ही प्रदर्शित की जा चुकी है अनुमान प्रसिद्धता इस प्रकार है-अनुमान के पांच अग होते

સૂત્રમા એ જ વાત કહેવામા આવી છે-" धम्मो म गलमुक्किट्ठ-अहिं सा स जमो तवो। देवा वि त नमस ति जस्स धम्मे सया मणो " ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મ ગળ છે અહિંસા સ યમ અને તપ એ જ ધર્મ છે જેનુ અન્ત કરણ આ ધર્મથી સદા યુક્ત રહે છે તેને દેવો પણ નમન કરે છે

શ કા—અહિંસા, સ યમ અને તપ રૂપ ધર્મને જે ઉત્કૃષ્ટ મ ગળ રૂપ કહેવામા આવ્યો છે તે આજ્ઞાસિદ્ધ છે માટે કહેવામા આવેલ છે કે યુક્તિથી સિદ્ધ છે એટલા માટે કહેવામા આવે છે ? ભાવાર્થ-અહિંસા વગેરેમા ઉત્કૃષ્ટ મ ગળતા કયા પ્રમાણથી સિદ્ધ છે ? આગમથી કે અનુમાનથી ?

ઉત્તર—આમા ઉત્કૃષ્ટ મ ગલરૂપતા આગમ અને યુક્તિ બ નેથી સિદ્ધ છે જિનેન્દ્રનાવચનો હોવાથી આમા આજ્ઞા સિદ્ધતા છે તેમજ અનુમાનથી પ્રસિદ્ધ હોવા બદલ યુક્તિ સિદ્ધતા છે " धम्मो मगलमुक्किट्ठ " વગેરે ગાથા વડે આમા જિનેન્દ્ર પ્રવચનરૂપ આગમતા પહેલા બતાવવામા આવી જ છે અને અનુ-

किंच श्रमणस्य क्षान्त्यादिदशविधे धर्मे तपसः पाठो वर्तते, तस्मात् तपोधर्म इति विज्ञायते। तथाचोक्तं समवायाङ्गसूत्रे-(समवाय १०)

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा-(१) खंती, (२) मुत्ती (३) अज्जवे (४) मद्दवे (५) लाघवे (६) सच्चे (७) संजमे (८) तवे (९) चियाए (१०) बंभचेरवासे।

अहिंसादीनां जिनाज्ञाप्रयोज्यप्रवृत्तिकत्वरूपस्य धर्मलक्षणस्य सद्भावाद् धर्मत्वं सिद्धं।

उक्तं धर्मस्य लक्षणं, लक्ष्या अहिंसादयश्च प्रोक्ताः, तत्राहिंसासंयमतपोरूपो धर्म उत्कृष्टं मङ्गलं बोध्यम्।

तथाचोक्तं दशवैकालिकसूत्रे-(प्र० अ० १)

" धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो॥ "

कि वह अपने शरीर को कृश करें एवं शारीरिक सुकुमारता का मोह छोड़े। उत्तम क्षमा आदिक जो श्रमणों के दशप्रकार के धर्म कहे गये हैं, उनमें तप का भी कथन आया है, अतः तप में धर्मरूपता सिद्ध ही होती है। समवायाग सूत्र में श्रमण के दश प्रकार के धर्मों का कथन करते हुए सूत्रकार ने यही कहा है-" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते, तं जहा-खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, संजमे, तवे, चियाए बंभचेरवासे।

इन अहिंसादिक महाव्रतों में धर्मरूपता इसलिये सिद्ध होती है कि वहां पर जिनेन्द्र प्रभु की आज्ञा प्रयोज्य प्रवृत्तिरूप धर्म के लक्षण का सद्भाव पाया जाता है इस प्रकार धर्म का लक्षण और उसके लक्ष्यभूत अहिंसादिकों का कथन है। ये अहिंसा, संयम और तपरूप धर्म ही

સુકુમારતાનો મોહ ત્યજી દે ઉત્તમ ક્ષમા વગેરે શ્રમણોના દશ પ્રકારના ધર્મ કહેવામા આવ્યા છે તેઓમા તપનુ કથન છે એથી તપમા ધર્મરૂપતા સિદ્ધ થાય જ છે સૂત્રકારે સમવાયાગ સૂત્રમા શ્રમણના દશ પ્રકારના ધર્મનુ કથન કરતા આ પ્રમાણે જ કહ્યુ છે—

" दसविहे समणधम्मे पण्णत्ते –तं जहा-खत्ती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे' संजमे, तवे चियाए बंभचेरवासे। "

આ અહિંસા વગેરે મહાવ્રતોમા ધર્મરૂપતા એટલા માટે સિદ્ધ થાય છે કે તેઓમા જીનેન્દ્ર પ્રભુની આજ્ઞા પ્રયોજ્ય પ્રવૃત્તિ રૂપ ધર્મના લક્ષણનો સદ્ભાવ છે આ રીતે ધર્મનુ લક્ષણ અને તેના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વ[illegible] છે અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ધર્મ જ ઉત્કૃષ્ટ મગળ [illegible]

" धर्माधर्मव्यवस्थाया, शास्त्रमेव नियामकम् ।
तदुक्ताऽऽसेवनाद् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात् ॥ " इति,

आगम से ही ज्ञात कर सकते हैं। घटपटादिको की तरह उसे स्पष्ट रूप से देखनहीं सकते हैं। इसीलिये वह दुर्ज्ञेय है। जो अनुमान और आगम से गम्य होता है वह अग्नि आदि की तरह किसी न किसी के प्रत्यक्ष होता है यह स्पष्ट सिद्धान्त है। तीर्थंकर प्रभु ने कि जो राग और द्वेप से सर्वथा रहित हैं, त्रिकालवर्ती समस्त पदार्थोंको जो हस्तामलक वत् स्पष्ट जानते हैं, ३५ वाणी के अतिशय से जो युक्त है अपने केवलज्ञान रूपी आलोक से उसे विशदरूप से जान लिया है। हम छद्मस्थों के लिये इनके वचनों के सिवाय इस विषय का नियामक और कुछ नही है। अतः उनके कथनानुसार ही धर्म और अधर्म का स्वरूप हम ससारी जीव जान सकते हैं या जानते हैं। "धर्माधर्मव्यवस्थाया' शास्त्रमेव नियामक, तदुक्ता सेवनात् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात्"-धर्म और अधर्म के स्वरूप की व्यवस्था करने वाले केवल सर्वज्ञभगवान् के वचन स्वरूप आगम ही है। अतः उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग का सेवन करना धर्म और उससे विपरीत मार्ग का सेवन करना अधर्म है

भावार्थ-जीवोंको धर्मकी प्राप्ति सर्वज्ञ भगवान द्वारा प्रदर्शित मार्ग

સમજી શકીયે છીએ 'ઘટ પટ' વગેરેની જેમ તેને સ્પષ્ટ પણે જોઈ શકતા નથી એથી જ તે દુર્જ્ઞેય છે જે અનુમાન અને આગમથી ગમ્ય હોય છે તે અગ્નિ વગેરેની જેમ કોઈને કોઈને પ્રત્યક્ષ હોય છે આ એક સ્પષ્ટ સિદ્ધાત છે રાગ અને દ્વેષથી સપૂર્ણ પણે રહિત એવા તીર્થંકર પ્રભુએ-કે જેઓ ત્રિકાળવર્તી બધા પદાર્થોને હસ્તામલકવત્ સ્પષ્ટ રીતે જાણે છે, ૩૫ વાણીના અતિશયથી જેઓ યુકત છે-પોતાના કેવળજ્ઞાન રૂપી આલોકથી તેને વિશદ રૂપથી જાણી લીધુ છે અમારા જેવા છદ્મસ્થોને માટે એમના વચનો સિવાય આ વિષયનો નિયામક બીજો કોઈ નથી એથી અમે તેમના કહ્યા મુજબ જ ધર્મ અને અધર્મનુ સ્વરૂપ જાણી શકીયે છીએ " धर्माधर्म-व्यस्थाया शास्त्र मेव नियामक, तदुक्तासेवनात् धर्मस्त्वधर्मस्तद्विपर्ययात् " ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપની વ્યવસ્થા કરનાર ફકત સર્વજ્ઞ ભગવાનના વચન સ્વરૂપ આગમો જ છે એથી તેમના વડે દર્શાવવામા આવેલા માર્ગનુ સેવન કરવુ એજ ધર્મ અને તેથી વિરુદ્ધ માર્ગનુ સેવન કરવુ અધર્મ છે ભાવાર્થ-સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા

मान्यत्वात्, इति हेतुः। अर्हदादिवत् इति दृष्टान्तः इह यो यो देवादिमान्यः स स उत्कृष्ट मङ्गल यथाऽर्हदादयः, 'तथा चाय धर्मः' इत्युपनयः, तस्माद् देवादि मान्यत्वादुत्कृष्ट मङ्गलमिति निगमनम्।

वस्तुतस्तु धर्माधर्मस्वरूप छद्मस्थानामस्मादृशैर्दुर्ज्ञेय, केवल सर्वज्ञेन रागादिदोष रहितेन पञ्चत्रिंशद्वचनातिशयसम्पन्नेन केवलिना तीर्थकरेण केवलालोकेन सुज्ञेय भवति। छद्मस्थानां तु भगवद्वचनमेव नियामक, तथाचोक्तम्—

हैं–१ प्रतिज्ञा, २ हेतु, ३ दृष्टान्त, उपनय ४ और ५ निगमन। अर्हत भगवान की तरह देवादिकों द्वारा मान्य होने से अहिंसा, तप और सयमरूप धर्म उत्कृष्ट मगल हैं।

इस अनुमान वाक्य में "अहिंसा, सयम और तप रूप धर्म उत्कृष्टमगल है" यह प्रतिज्ञा है "देवादिकों द्वारा मान्य होने से" यह हेतु है। "अर्हन्त की तरह" यह दृष्टान्त है पक्ष में हेतु के दुहराने से उपनय और प्रतिज्ञा के दुहराने से निगमन सिद्ध हैं जैसे–"जो जो देवादिकों द्वारा मान्य होता है वह २ उत्कृष्ट मगल होता है जैसे अर्हत प्रभु–ये भी देवादिकों द्वारा मान्य हैं। इस प्रकार पक्ष में हेतु के दुहराने रूप उपनय है इसलिये "वे भी उत्कृष्ट मगल स्वरूप हैं" इस प्रकार प्रतिज्ञा के दुहराने रूप निगमनवाक्य है।

वास्तव में तो धर्म और अधर्म का स्वरूप सूक्ष्म होने से हम छद्मस्थों के लिये अत्यत परोक्ष है–इस लिये हम उसे सिर्फ अनुमान या

માન પ્રસિદ્ધતા આ પ્રમાણે સમજવી જોઇએ અનુમાનના પાચ અગો હોય છે–પ્રતિજ્ઞા' ૧, હેતુ ૨, દૃષ્ટાત ૩, ઉપનય ૪, અને નિગમન ૫,

અર્હંત ભગવાનની જેમ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવા બદલ અહિંસા, તપ અને સયમ રૂપ ધર્મ ઉત્કૃષ્ટ–મગલ છે

આ અનુમાન વાકયમા "અહિંસા, સયમ અને તપ રૂપ ઉત્કૃષ્ટ મગળ છે" આ પ્રતિજ્ઞા છે 'દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય હોવાથી આ હેતુ છે અર્હંતની જેમ" આ દૃષ્ટાત છે પક્ષમા હેતુને બેવડાવવાથી ઉપનય અને પ્રતિજ્ઞાને બેવડાવવાથી નિગમન સિદ્ધ છે જેમકે "દેવ વગેરે દ્વારા જે જે માન્ય હોય છે તે તે ઉત્કૃષ્ટ–મગલ હોય છે જેમ અર્હંત પ્રભુ પણ દેવ વગેરે દ્વારા માન્ય છે આરીતે પક્ષમા હેતુને બેવડાવવાથી ઉપનય છે, માટે "તેઓ પણ ઉત્કૃષ્ટ મગળ સ્વરૂપ છે" આરીતે પ્રતિજ્ઞાને બેવડાવવા રૂપ નિગમન વાકય છે

વસ્તુત ધર્મ તેમજ અધર્મનુ સ્વરૂપ સૂક્ષ્મ હોવાથી અમારા જેવા છદ્મસ્થો માટે તે અતીવ પરોક્ષ છે એથી અમે ફક્ત તેને અનુમાન કે આગમથી

स्वयमेव भगवता—अहिंसासंयमतपसां धर्मत्व,तथा — तेषामुत्कृष्टमङ्गलस्वरूपत्वेन प्राधान्य च वर्णित, तत्राप्यहिंसाया.—सर्वधर्ममूलत्वेन प्राधान्यात् प्रथम स्थान प्रदत्तम् । तस्य सर्वप्रधानस्याऽहिंसाधर्मस्य षट्कायोपमर्दनसाध्ये मूर्तिपूजने मूलतः समुच्छेद केवलालोकेन साक्षात् पश्यन् भगवानर्हन् मूर्तिपूजनार्थमाज्ञा प्रद द्यादित्याकाशकुसुममिवात्यन्तमसदेव बोध्यम् ।

स्पष्ट रूप से ज्ञान के विषय नही हो सकते हैं। अत. ऐसे विषयो में सर्वज्ञ के वचन ही प्रमाण कोटि में अगीकार करना चाहिये।

भगवान ने स्वय ही अहिंसा, सयम और तप में धर्मरूपता तथा उत्कृष्ट मगलरूप होने से प्रधानता कही है। अहिंसा में जो प्रधान रूपता कही गई है उसका मुख्य कारण यह है कि वह समस्तधर्मो का मूल है और इसीलिये उसे उन्हो ने सर्वप्रथमस्थान दिया है जब यह बात है तो विचारना चाहिये कि भगवा मूर्तिपूजा की आज्ञा कैसे दे सकते हैं। क्यों कि वह पूजा षट्काय के जीवो की विराधना से सा य होती है। इस विराधना में अहिंसा धर्म का मूलतः ही अभाव समाया हुआ है। अर्थात् मूर्तिपूजा में उस प्रभुप्रतिपादित अहिंसा धर्म का सर्वथा उच्छेद हो हो जाता है—मूर्तिपूजा करने वाला पूजक अहिंसा धर्म का रक्षक नही हो सकता है—प्रत्युत उसे हिंसा का ही दोष लगता है इस प्रकार स्वय भगवान जब अपने केवल ज्ञान से इस बात को

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા જોઈએ

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ ઉત્કૃષ્ટ મગળરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનુ મૂળ છે અને એથી તેને પ્રભુએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અર્પ્યુ છે જ્યારે એવી વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવુ જોઈએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મનો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મનો સપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ ઓઢવો પડે છે આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

पर चलनेसे ही हो सकती है, इससे विपरीत मार्ग पर चलने से नहीं। अत• जो जीव धर्म को साक्षात्कार करना चाहते है उनका कर्तव्य है कि वे सर्वज्ञ भगवन द्वारा कथित मार्ग का सेवन करे और उस से भिन्न मार्ग का परित्याग करे। इस प्रकार की प्रवृत्ति से वे धर्म और अधर्म के स्वरूप के ज्ञाता बन जाते हैं। इस कथन से शकाकार की इस आशकाका यहां परिहार किया गया है कि जो उसमें पहिले यह प्रश्न किया कि अहिंसादिकों में जो उत्कृष्ट मगलरूपता है वह किस प्रमाण से है। सूत्रकारने आगम और अनुमान दोनो प्रमाणों से उनमें उत्कृष्ट मगलता सिद्ध की है इस कथन से एक बात और हमें यह ज्ञात होती है कि सर्वज्ञ कथित सिद्धान्त की जाच के लिये जबतक तर्क का जोर चलता रहे बुद्धिमान तबतक अपनी तर्कणा की कसौटी पर उसे कसता रहे-पर जब तर्क की समाप्ति हो जावे-तर्कणा शक्ति कुठित हो जावे-तो उस व्यक्ति का कर्तव्य है वह आगम प्रमाण से ही उस सिद्धान्त का अनुसरण करें। फिर उसे उस विषय में तर्क करने की आवश्य कता नहीं है क्यों कि सूक्ष्मादिक पदार्थ सर्वज्ञ के सिवाय छद्मस्थों के

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકે તેમ છે, એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જે જીવો ધર્મનુ પ્રત્યક્ષ દર્શન ઇચ્છતાહોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનુ સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઈ જાય છે આ કથનથી શકાકારની એ આશકાનો અહી પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે કે અહિસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બ ને-પ્રમાણો થી તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મગળતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે બીજી આ વાતનુ પણ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યા સુધી તર્કની શકિત કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યા સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પણ જ્યારે તર્કની શકિત મદ થઈ જાય-તર્કણા શકિત કુઠિત થઇ જાય ત્યારે તે વ્યકિત ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નુ અનુ સરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેખ કરવી જોઇએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

स्वयमेव भगवता-अहिंसासंयमतपसां धर्मत्व,तथा - तेषामुत्कृष्टमङ्गलस्वरूपत्वेन प्राधान्य च वर्णित, तत्राप्यहिंसायाः-सर्वधर्ममूलत्वेन प्राधान्यात् प्रथम स्थान प्रदत्तम् । तस्य सर्वप्रधानस्याऽहिंसाधर्मस्य पट्कायोपमर्दनसाध्ये मूर्तिपूजने मूलतः समुच्छेद केवलालोकेन साक्षात् पश्यन् भगवानर्हन् मूर्तिपूजनार्थमाज्ञा प्रदद्यादित्याकाशकुसुमभिवात्यन्तमसदेव बोध्यम् ।

स्पष्ट रूप से ज्ञान के विषय नही हो सकते हैं। अतः ऐसे विषयों में सर्वज्ञ के वचन ही प्रमाण कोटि में अगीकार करना चाहिये।

भगवान ने स्वय ही अहिंसा, सयम और तप मे धर्मरूपता तथा उत्कृष्ट मगलरूप होने से प्रधानता कही है। अहिंसा में जो प्रधान रूपता कही गई है उसका मुख्य कारण यह है कि वह समस्तधर्मों का मूल है और इसीलिये उसे उन्हो ने सर्वप्रथमस्थान दिया है जय यह बात है तो विचारना चाहिये कि भगवा मूर्तिपूजा की आज्ञा कैसे दे सकते हैं। क्यों कि वह पूजा पट्काय के जीवों की विराधना से साध्य होती है। इस विराधना में अहिंसा धर्म का मूलतः ही अभाव समाया हुआ है। अर्थात् मूर्तिपूजा में उस प्रभुप्रतिपादित अहिंसा धर्म का सर्वथा उच्छेद हो हो जाता है-मूर्तिपूजा करने वाला पूजक अहिंसा धर्म का रक्षक नहीं हो सकता है-प्रत्युत उसे हिंसा का ही दोष लगता है इस प्रकार स्वय भगवान जब अपने केवल ज्ञान से इस बात को

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણ રૂપમા સ્વીકારવા જોઈએ

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ ઉત્કૃષ્ટ મગળરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બતાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનુ મૂળ છે અને એથી તેને પ્રભુએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અર્પ્યુ છે જ્યારે એવી વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવુ જોઈએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો પટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મનો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મનો સપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા ધર્મનો રક્ષક થઈ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ ભોગવવો પડે છે આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

पर चलनेसे ही हो सकती है, इससे विपरीत मार्ग पर चलने से नहीं। अतः जो जीव धर्म को साक्षात्कार करना चाहते हैं उनका कर्तव्य है कि वे सर्वज्ञ भगवान द्वारा कथित मार्ग का सेवन करें और उस से भिन्न मार्ग का परित्याग करे। इस प्रकार की प्रवृत्ति से वे धर्म और अधर्म के स्वरूप के ज्ञाता बन जाते हैं। इस कथन से शकाकार की इस आशकाका यहां परिहार किया गया है कि जो उसमें पहिले यह प्रश्न किया कि अहिंसादिकों में जो उत्कृष्ट मगलरूपता है वह किस प्रमाण से है। सूत्रकारने आगम और अनुमान दोनों प्रमाणों से उनमें उत्कृष्ट मगलता सिद्ध की है इस कथन से एक बात और हमें यह ज्ञात होती है कि सर्वज्ञ कथित सिद्धान्त की जाच के लिये जबतक तर्क का जोर चलता रहे बुद्धिमान तबतक अपनी तर्कणा की कसौटी पर उसे कसता रहे-पर जब तर्क की समाप्ति हो जावे-तर्कणा शक्ति कुठित हो जावे-तो उस व्यक्ति का कर्तव्य है वह आगम प्रमाण से ही उस सिद्धान्त का अनुसरण करें। फिर उसे उस विषय में तर्क करने की आवश्यकता नही है क्यों कि सूक्ष्मादिक पदार्थ सर्वज्ञ के सिवाय छद्मस्थों के

પ્રદર્શિત માર્ગ ઉપર ચાલવાથી જ જીવો ને ધર્મની પ્રાપ્તિ થઇ શકે તેમ છે. એનાથી વિરુદ્ધ માર્ગના સેવન થી નહિ એથી જે જીવો ધર્મનુ પ્રત્યક્ષ દર્શન ઇચ્છતાહોય તેમની ફરજ છે કે તેઓ સર્વજ્ઞ ભગવાન દ્વારા કથિત માર્ગનુ સેવન કરે અને તેના વિરુદ્ધ માર્ગનો ત્યાગ કરે આ જાતની પ્રવૃત્તિથી તેઓ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને જાણનારા થઈ જાય છે આ કથનથી શકાકારની એ આશકાનો અહી પરિહાર કરવામા આવ્યો છે કે જે તેમા પહેલા આ પ્રશ્ન કરવામા આવ્યો છે કે અહિસા વગેરે મા જે ઉત્કૃષ્ટ મગળ રૂપતા છે તે કયા પ્રમાણના આધારે છે? સૂત્રકારે આગમ તેમજ અનુમાન બને-પ્રમાણો થી તેઓમા ઉત્કૃષ્ટ મગળતા સિદ્ધ કરી છે એ કથન વડે બીજી આ વાતનુ પણ જ્ઞાન થાય છે કે સર્વજ્ઞ-કથિત સિદ્ધાન્તની પરીક્ષા માટે જ્યા સુધી તર્કની શક્તિ કાયમ રહે બુદ્ધિમાનો ત્યા સુધી પોતાની તર્કણાની કસોટી ઉપર કસતા રહે-પણ જ્યારે તર્કની શક્તિ મદ થઈ જાય-તર્કણા શક્તિ કુઠિત થઇ જાય ત્યારે તે વ્યક્તિ ની ફરજ છે કે તે આગળ પ્રમાણથી જ તે સિદ્ધાન્ત નુ અનુસરણ કરે પછી તે વિષયમા જ તેને મીનમેખ કરવી જોઇએ નહિ કેમ કે સૂક્ષ્મ વગેરે પદાર્થો સર્વજ્ઞ સિવાય છદ્મસ્થોના માટે સ્પષ્ટ રૂપથી જાણી શકાય

स्वयमेव भगवता-अहिंसासंयमतपसां धर्मत्व,तथा – तेषामुत्कृष्टमङ्गलस्वरूपत्वेन प्राधान्य च वर्णितं, तत्राप्यहिंसाया –सर्वधर्ममूलत्वेन प्राधान्यात् प्रथम स्थान प्रदत्तम् । तस्य सर्वप्रधानस्याऽहिंसाधर्मस्य षट्कायोपमर्दनसाध्ये मूर्तिपूजने मूलत. समुच्छेदं केवलालोकेन साक्षात् पश्यन् भगवानर्हन् मूर्तिपूजनार्थमाज्ञा प्रदद्यादित्याकाशकुसुममिवात्यन्तमसदेव बोध्यम् ।

स्पष्ट रूप से ज्ञान के विषय नहीं हो सकते हैं। अत. ऐसे विषयों में सर्वज्ञ के वचन ही प्रमाण कोटि में अगीकार करना चाहिये।

भगवान ने स्वय ही अहिंसा, संयम और तप मे धर्मरूपता तथा उत्कृष्ट मगलरूप होने से प्रधानता कही है। अहिंसा में जो प्रधान रूपता कही गई है उसका मुख्य कारण यह है कि वह समस्तधर्मो का मूल है और इसीलिये उसे उन्हो ने सर्वप्रथमस्थान दिया है जब यह बात है तो विचारना चाहिये कि भगवा मूर्तिपूजा की आज्ञा कैसे दे सकते हैं। क्यों कि वह पूजा षट्काय के जीवो की विराधना से साध्य होती है। इस विराधना में अहिंसा धर्म का मूलतः ही अभाव समाया हुआ है। अर्थात् मूर्तिपूजा में उस प्रभुप्रतिपादित अहिंसा धर्म का सर्वथा उच्छेद हो हो जाता है-मूर्तिपूजा करने वाला पूजक अहिंसा धर्म का रक्षक नहीं हो सकता है-प्रत्युत उसे हिंसा का ही दोष लगता है इस प्रकार स्वय भगवान जब अपने केवल ज्ञान से इस बात को

તેમ નથી એથી એવી બાબતોમા સર્વજ્ઞ ના વચનો જ પ્રમાણુ રૂપમા સ્વીકારવા જોઇએ

ભગવાનને પોતે જ અહિંસા, સયમ અને તપમા ધર્મ રૂપતા તેમજ ઉત્કૃષ્ટ મગળરૂપ હોવાથી પ્રધાનતા બનાવી છે અહિંસામા જે પ્રધાન રૂપતા દર્શાવવામા આવી છે, મુખ્યત્વે તેનુ કારણુ આ પ્રમાણે છે કે તે બધા ધર્મોનુ મૂળ છે અને એથી તેને સૌએ સૌ પ્રથમ સ્થાન અર્પ્યું છે જ્યારે એવી વાત છે ત્યારે આપણે વિચારવુ જોઇએ કે ભગવાન મૂર્તિપૂજાની આજ્ઞા કેવી રીતે આપી શકે તેમ છે ? કેમ કે તે પૂજા તો ષટ્કાયના જીવોની વિરાધનાથી સાધ્ય હોય છે આ વિરાધનામા અહિંસા ધર્મનો મુખ્યત્વે અભાવનો જ સમાવેશ થયો છે તેમ કહી શકાય છે એટલે કે મૂર્તિપૂજામા તે પ્રભુ પ્રતિપાદિત અહિંસા ધર્મનો સપૂર્ણ પણે ઉચ્છેદ જ થઈ જાય છે મૂર્તિપૂજા કરનાર પૂજારી અહિંસા ધર્મનો રક્ષક થઇ શકતો નથી અને બીજી રીતે તો તેને હિંસાનો દોષ જ ઓઢવો પડે છે આ રીતે જ્યારે પોતે ભગવાન પોતાના કેવલજ્ઞાનથી આ

एव लक्ष्याः समालोचिताः, इदानीमलक्ष्या उच्यन्ते-हिंसादौ जिनाज्ञाविरुद्धा प्रवृत्तिर्भवति लोकाना तस्मादधर्मा हिंसादय एव तस्य धर्मलक्षणस्यालक्ष्या भवन्ति। धर्माधर्मस्वरूपबोधनार्थं हि भगवताऽऽवश्यके नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो निक्षेपः प्रदर्शितः। तत्र भावावश्यके एव तीर्थकराज्ञायाः सद्भावात्

साक्षात् जानते हैं तो फिर वे ही मूर्तिपूजा करने की आज्ञा देंगे यह मान्यता आकाशपुष्पकी तरह सर्वथा असत्य ही है यह स्वय समझने जैसी बात है जहाँ हिंसा है वहा धर्म नहीं है अहिंसामें ही सच्चाधर्म है।

इस प्रकार धर्म के लक्ष्यभूत अहिंसा आदि का यहां तक विचार किया। अब उससे विपरीत हिंसादिकों का विचार करते हैं-

हिंसा आदि पाप हैं-इन में प्रवृत्ति कने की आज्ञा जिन भगवान ने नही दी है फिर भी जो प्रवृत्ति करते हैं वे उस आज्ञा से बहिर्भूत हैं। अतः जिनाज्ञा से विरुद्ध प्रवृत्ति होने से जीवों के लिये धर्म प्राप्ति के बदले इनसे अधर्म की ही प्राप्ति होती है। जिन से जीवों को अधर्म की प्राप्ति होती हो, वे स्वय अधर्म हैं। हिंसादिक पापो में अधर्मता होने का कारण उनमें धर्म के लक्षण का अभाव है। इसीलिये ये धर्म के लक्षण के अलक्ष्य हुए है। इस धर्म और अधर्म के स्वरूप को समझाने के लिये भगवान ने आवश्यकसूत्र में नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव

વાતને સ્પષ્ટપણે પ્રત્યક્ષરૂપમા જાણે છે તો પછી તેઓ જ મૂર્તિપૂજા કરવાની આજ્ઞા આપે એવી માન્યતા આકાશ પુષ્પની જેમ સ પૂર્ણપણે અસત્ય જ સિદ્ધ થાય છે આપણે પોતે પણ આ વાત સમજી શકીએ તેમ છીએ કે જ્યા હિંસા છે ત્યા ધર્મ નથી અહિંસામા જ સાચો ધર્મ છે

આ રીતે ધર્મના લક્ષ્યભૂત અહિંસા વગેરે ને માટે અહીં સુધી વિચાર કરવામા આવ્યો છે હવે આગળ તેથી વિરુદ્ધ હિંસા વગેરેની બાબતમા વિચાર કરવામા આવે છે—

હિંસા વગેરે પાપ છે-આમા પ્રવૃત્ત થવાની આજ્ઞા જિન ભગવાનને કોઇને પણ આપી નથી છતા જેઓ તેમા પ્રવૃત્તિ કરે છે તેઓ તે આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત છે એથી જિનાજ્ઞાની પ્રતિકૂળ પ્રવૃત્તિ હોવાથી જીવોને ધર્મ પ્રાપ્તિના સ્થાને એમનાથી અધર્મની જ પ્રાપ્તિ થાય છે જીવોને જેનાથી અધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે તે પોતે અધર્મ છે હિંસા વગેરે પાપોમા અધર્મતા હોવાને લીધે તેઓમા ધર્મના લક્ષણનો અભાવ છે એટલા માટે જ તેઓ ધર્મના લક્ષણથી અલક્ષ્ય થયા છે આ ધર્મ અને અધર્મના સ્વરૂપને સમજાવવા ... ને

धर्मत्वम्, अन्यविधेष्वावश्यकेषु रागद्वेषहिंसादिदोषसद्भावेन मोक्षमार्गोपदेशे प्रवृत्तस्य तीर्थंकरस्य चाऽऽज्ञाया अभावेन न तत्र धर्मलक्षण समनुगच्छति, तेषां मोक्षसाधकत्वाभावाज्जैनधर्मपद लब्धु-मनर्हत्वात्। तथाचोक्तमनुयोगद्वारे--

"से किं त नामावस्सय ?। नामावस्सयं जस्स ण जीवस्स वा अजीवस्स वा

के भेद से ४ चार निक्षेपों का कथन किया है उनमें नाम स्थपना और द्रव्यरूप धर्म निक्षेप के आराधन करने की भगवान ने जीवों को आज्ञा नहीं दी है क्यों कि इनसे जीवों को धर्म की प्राप्ति नहीं होती है। धर्म की प्राप्ति कराने वाला केवल भाव निक्षेपरूप आवश्यक है। इसकी आराधना से ही जीवों को धर्म प्राप्त हुआ करता है-अतः इस में ही धर्मरूपता प्रकट की गई है बाकी के इसके अतिरिक्त निक्षेपों में-आवश्यकों में रागद्वेष और हिंसा आदि दोषों का सद्भाव होने से एव मोक्ष मार्ग के उपदेशप्रदान करने में प्रवृत्त तीर्थंकरो की इनके आराधन करने में आज्ञा का अभाव होने से धर्म के लक्षण का समन्वय ही नहीं होता है। मुक्ति का जो साधक होता है वही जैन-धर्म है। इन ३ निक्षेपरूप आवश्यकों में मुक्ति की साधकता का अभाव है-इसलिये ये जैनधर्म के पदको स्वप्न में भी प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

अनुयोगद्वार में यही बात कही गई है—

से किं त नामावस्सय ? नामावस्सय जस्स ण जीवस्स अजीवस्स

આવશ્યકસૂત્રમા નામ, સ્થાપના દ્રવ્ય અને ભાવના ભેદથી ચાર નિક્ષેપો નુ કથન કર્યું છે તેઓમા નામ, સ્થાપના, અને દ્રવ્યરૂપ ધર્મ નિક્ષેપને આરાધવાની ભગવાને જીવોને આજ્ઞા આપી નથી કેમ કે એમનાથી જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થતી નથી ધર્મની પ્રાપ્તિ કરાવનારો કેવળ ભાવનિક્ષેપરૂપ આવશ્યક છે એની આરાધનાથી જ જીવોને ધર્મની પ્રાપ્તિ થાય છે એથી આમા જ ધર્મરૂપતા બતાવવામા આવી છે એના સિવાયના બીજા નિક્ષેપોમા-આવશ્યકોમા-રાગદ્વેષ અને હિંસા વગેરે દોષોનો સદ્ભાવ હોવાથી અને મોક્ષ માર્ગના ઉપદેશ આપ વામા પ્રવૃત્ત તીર્થંકરોની એમની આરાધના કરવાની આજ્ઞાનો અભાવ હોવાથી ધર્મના લક્ષણનો સમન્વય જ થતો નથી મુક્તિનો જે સાધક હોય છે તે જ જૈન-ધર્મ છે આ ૩ નિક્ષેપરૂપ આવશ્યકોમા મુક્તિની સાધકતાનો અભાવ છે માટે એઓ જૈન ધર્મના પદને સ્વપ્નમાયે મેળવા શકે તેમ નથી

અનુયોગદ્વારમા એ જ વાત કહેવામા આવી છે—

से किं त नामावस्सय ? नामावस्सय जस्स ण जीवस्स अजीवस्स वा जीवाण वा

जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सएत्ति नामं कज्जइ, से त नामावस्सय।

अथ किं तत् नामावश्यक ? नामावश्यकं-यस्य खलु जीवस्य वा अजीवस्य वा जीवाना वा अजीवानां वा, तदुभयस्य वा तदुभयेर्वा वा आवश्यकमिति नाम क्रियते तदेतन्नामावश्यकम्।

" से किं त ठवणावस्सय ? ? जण्ण कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सय।

छाया-अथ किं तत् स्थापनावश्यकम् ? स्थापनावश्यक यत् खलु काष्ठकर्म वा पुस्तकर्म वा चित्रकर्म वा लेप्यकर्म वा ग्रथिम वा वेष्टिम वा पूरिम वा सङ्घातिम

वा जीवाण वा अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सए त्ति नाम कज्जइ से त नामावस्सय।

से किं त ठवणावस्सय ? जण्ण कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्पकम्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सए त्ति ठवणा ठविज्जइ, से त ठवणावस्सय

भावार्थ—जीव, अजीव अथवा तदुभय स्वरूप आदि पदार्थों में " यह आवश्यक है " इस प्रकार नाम सस्कार करना वह जीव अजीव आदि नाम आवश्यक है इस नाम आवश्यक में आवश्यक के वास्त विक गुणादि कुछ भी नहीं होते हैं-सिर्फ लोक व्यवहार के लिये ही इस प्रकार की वहा पर निक्षेपविधि करली जाती है काष्ठ, पुस्तक चित्र

अजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयाण वा आवस्सए त्ति नाम कज्जइ से त नामावस्सय।

से कि त ठवणावस्सय ? जण्ण कट्ठकम्मे वा पोत्थकम्मे वा चित्तकम्मे वा लेप्प कम्मे वा गथिमे वा वेढिमे वा पूरिमे वा सघाइमे वा अक्खे वा वराडए वा एगो वा अणेगो वा सब्भावठवणा वा असब्भावठवणा वा आवस्सएत्ति ठवणा ठविज्जइ, सेत ठवणावस्सय।

ભાવાર્થ—જીવ, અજીવ અથવા તદુભય સ્વરૂપ વગેરે પદાર્થોમા " આ આવશ્યક છે " આ રીતે નામ સસ્કાર કરવો ને જીવ અજીવ વગેરે ' નામ આવશ્યક ' છે આ નામ આવશ્યકમા આવશ્યક ના વાસ્તવિકગુણુ વગેરે કંઈ જ હોતા નથી ફક્ત લોકવ્યવહાર ના માટે જ આ જાતની ત્યા નિક્ષે

वा अक्ष वा वराटक वा एको वा अनेको वा सद्भावस्थापना वा असद्भावस्थापना वा 'आवश्यक'-मिति स्थापना स्थाप्यते, तदेतत् स्थापनावश्यकम् ।

भावावश्यकस्वरूपशून्ये गोपालदारकादौ आवश्यकेति नामकरणे नाम्ना-नाममात्रेणावश्यक नामावश्यक गोपालदारकादिर्भवति। स्थापनाऽपि भावावश्यक

एव अक्ष-शतरज की गोटी आदि में एक अथवा अनेक आवश्यक क्रिया करने वाले श्रावक आदि का तदाकार अथवा अतदाकार लिखित चित्र स्थापना आवश्यक (निक्षेप) है यह स्थापना दो प्रकार की है एक सद्भाव स्थापना और २ दूसरी असद्भावस्थापना। सद्भाव स्थापना में जिसकी स्थापना की जाती है उसकी सर्व आकृति कोतरी रहती है असद्भूत स्थापना में इस प्रकार की आकृति आदि नही रहती है वहां पर केवल सकेत ही है जैसे शतरज की गोटिया में यह प्यादा है यह वजीर है, यह हाथी है इत्यादि सिर्फ कल्पना ही कल्पना रहती है-वहां उनका कोई भी आकार कोतरा नहीं रहता है। नाम निक्षेप में जिस प्रकार भाव आवश्यक शून्यता रहती है उसी प्रकार स्थापना में भी यही बात रहती है किसी गोपाल (ग्वालिये) के लड़के का "आवश्यक" इस प्रकार का नाम जिस प्रकार भाव आवश्यक रहित नाम निक्षेप में है उसी प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य स्थापना निक्षेप में भी "यह आवश्यक है" यह स्थापना निक्षेप है।

આવે છે, કાષ્ઠ, પુસ્તક, ચિત્ર અને અક્ષ-શતરજની સોગઠી વગેરેમા એક કે અનેક આવશ્યક ક્રિયા કરનાર શ્રાવક વગેરેનુ તદાકાર કે અતદાકાર લેખિત ચિત્ર-સ્થાપન આવશ્યક (નિક્ષેપ) છે આ સ્થાપના બે પ્રકારની છે એક સદ્ભાવ સ્થાપના અને બીજી અસદ્ભાવ સ્થાપના સદ્ભાવ સ્થાપનામા જેની સ્થાપના કરવામા આવે છે તેની આકૃતિ સપૂર્ણપણે કોતરેલ હોય છે અસદ્-ભૂત સ્થાપનામા આ જાતની આકૃતિ વગેરે રહેતી નથી ત્યા ફક્ત સકેત જ છે જેમ શેતરજની સોગઠીઓમા આ પાયદળ છે, આ વજીર છે, આ હાથી છે વગેરે ફક્ત કોરી કલ્પના જ હોય છે તેમા તેમની કોઈપણ જાતની આકૃતિ કોતરેલી હોતી નથી નામ નિક્ષેપમા જેમ ભાવ આવશ્યક શૂન્યતા રહે છે તેમજ સ્થાપનામા પણ એ જ વાત હોય છે કોઈ ગોવાળિયાના પુત્રનુ 'આવશ્યક' આ જાતનુ નામ જેમ ભાવ આવશ્યક રહિત નામ નિક્ષેપમા છે તે પ્રમાણે જ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય સ્થાપના નિક્ષેપમા પણ "આ આવશ્યક છે" આ સ્થાપના નિક્ષેપ છે

स्वरूपशून्ये काष्ठकर्मादौ क्रियते । अतो भावशून्ये क्रियमाणत्वाविशेषादनयो र्नास्ति कश्चिद् भेद इत्याशयेनाह—

" णामट्ठवणाण को पइविसेसो ? । छाया-नामस्थापनयोः कः प्रतिविशेषः ? ।

अत्रोत्तरमुच्यते—

'णाम आवकहिअ, ठवणा इत्तरिआ वा होज्जा आवकहिआ वा ' ॥ छाया-नाम-यावत्कथिक, स्थापना-इत्वरिका वा भवेद् यावत्कथिका वा ।

' णाम आवकहिय ' नाम यावत्कथिक-स्वाश्रयद्रव्यस्यास्तित्वकथा याव दनुवर्तते इत्यर्थः, स्थापना तु ' इत्तरिया वा ' इत्वरिका वा स्वल्पकालस्थायिनी वा ' होज्जा ' स्यात् , यावत्कथिका वा, अय भावः-काचित्-स्थापना स्वाश्रय द्रव्यस्य सद्भावेऽपि, मध्यकाल एव निवर्तते, काचित्-तत्सत्ता यावदवतिष्ठते

शका—जिस प्रकार भाव आवश्यक के स्वरूप से शून्य गोपाल के लड़के आदि में " आवश्यक " इस प्रकार का नामनिक्षेपरूप आवश्यक है उसी प्रकार भाव आवश्यकके स्वरूपसे शून्य काष्ठकर्म आदिकों में भी यही बात है । अतः भाव आवश्यकके स्वरूपकी शून्यताकी अपेक्षा से इन दोनोंमें कोई भी अन्तर नही है । तो फिर इन दोनोंमें क्या भेद है !

उत्तर—"णाम आवकहिय ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिआ वा " इस प्रकार की शका ठीक नहीं-क्यों कि नाम यावत्कथित होता है स्थापना इत्वरिक और यावत्कथिक दोनों प्रकार की होती है । अपने आश्रयभूत द्रव्यका जबतक अस्तित्व-सद्भाव रहता है तबतक नामनि क्षेप रहता है ! इत्वरिक शब्द का अर्थ अल्पकालीन है चित्र एव अक्ष आदिकों में यह स्थापना अल्पकालीन होती है । इस प्रकार नाम और

શકા—જેમ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય ગોવાળિયાના પુત્ર વગે રેમા " આવશ્ય " આ જાતનુ નામ નિક્ષેપ રૂપ આવશ્યક છે તેમજ ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપથી શૂન્ય કાષ્ઠકર્મ વગેરેમા પણ એ જ વાત છે એથી ભાવ આવશ્યકના સ્વરૂપની શૂન્યતાની દૃષ્ટિએ આ બનેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી, ત્યારે આ બનેમા ભેદ શો છે ?

ઉત્તર—(णाम आवकहिय ठवणा इत्तरिया वा होज्जा आवकहिआ वा) શકા યોગ્ય નથી કેમકે નામ યાવત્ કથિત હોય છે સ્થાપના ઇત્વરિક અને યાવત્કથિત બને પ્રકારની હોય છે પોતાને આશ્રયભૂત દ્રવ્યનુ જ્યા સુધી સદ્ ભાવ-અસ્તિત્વ રહે છે ત્યા લગી નામ નિક્ષેપ રહે છે । ઇત્વરિક શબ્દનો અર્થ અલ્પકાલીન છે ચિત્ર અને અક્ષ (રમવાના પાસા) વગેરેમા એ સ્થાપના અલ્પકાળ માટે હોય છે આ રીતે નામ અને સ્થાપનામા

इति। एवं च-नामस्थापनयोर्भावशून्यत्वेनाधारसाम्येऽपि भेदः स्वस्वावस्थानकालकृत एव भगवता प्रदर्शित । यद्यपि गोपालदारकादौ विद्यमानेऽपि कदाचिदनेकनामपरिवर्तन लोके क्वचिद् दृश्यते, तथा च कालकृतोऽपि भेदो नास्ति, तथापि-बहुशः स्थले नाम्नो यावत्कथिकत्वमेव दृश्यते, नाम्नः परावर्तनं तु क्वचिद्विरलतयोपलभ्यते । अतोऽल्पस्थलव्यापित्वेन नाम्न इत्वरिकता भगवता न विवक्षिता । नाम्नोऽल्पकालिकताकल्पने तत्सूत्रप्ररूपणापत्तिरिति बोध्यम् ।

स्थापनामें भावनिक्षेपकी शून्यताकी अपेक्षासे समानता आती है तो भी अपनेर कालकी अपेक्षासे इनमें इस प्रकार भेद-अन्तर माना गया है।

शंका—नामनिक्षेप में जो यावत्कथिकता प्रदर्शित की गई है, वह ठीक नहीं है-कारण कि हम देखते हैं नामवान द्रव्य-गोपालदारक आदि के विद्यमान रहते हुए भी उस में अनेक नामों का परिवर्तन होता रहता है। कभी उसका " आवश्यक " यह नाम होता है, तो " इन्द्र " यह नाम रख लिया जाता है। फिर " आवश्यक " इस नाम निक्षेप में यावत्कथिकता कैसे आ सकती है ?

उत्तर-शंका ठीक है इस प्रकार से विचार करने पर कालकृत अन्तर यद्यपि उन दोनों में नहीं मालूम होता है-तो भी इस बात की यहां पर विवक्षा नही है इसका कारण यही है कि यह नामपरिवर्तन अल्पस्थलवर्ती होनेसे व्याप्य है। यह बात सब जगह नहीं होती। कहीं २ ही होती है यहां सामान्यकथन है-विशेप नहीं। सामान्यरूप से नाम

शून्यतानी अपेक्षाथी समानता आवी जाय छे, छतांये पोतपोताना काळनी अपेक्षाथी तेओमा आ जातनो भेद अन्तर मानवामा आव्यो छे

शंका—नाम निक्षेपमा जे यावत्कथिकता बताववामा आवी छे, ते उचित नथी कारण के नामवाणु गोपाळदारक वगेरेना विद्यमान रहेता पण तेमा अनेक नामोनु परिवर्तन थतु रहे छे कोई वखते तेनु नाम ' आवश्यक ' राखवामा आवे छे तो कोई वखत ' इन्द्र ' नाम राखवामा आवे छे तो पछी ' आवश्यक ' आ नाम निक्षेपमा यावत्कथित केवी रीते आवी शके छे ?

उत्तर—शंका उचित छे आ रीते विचार करवाथी जो के काळकृत अंतर तेओ बनेमा जणातु नथी छतांये आ वातनी अहीं विवक्षा नथी एनु कारण आ प्रमाणे छे के आ नाम परिवर्तन अल्प-स्थलवर्ती होवाथी व्याप्य छे, आ वात बधे स्थाने होती नथी कोईक कोईक स्थाने ज होय छे अहीं

यत्तु-उपलक्षणमात्र चेद् कालभदनेवयोर्भेदकथनम्-अपरस्यापि बहुप्रकार-भेदस्य सम्भवात्, इत्युक्त, तदुत्सूत्रप्ररूपणम् यथोत्सूत्रप्ररूपणभियानामनिक्षेपे इत्वरिकताया. क्वचित् सभवेऽपि भगवताऽनुक्तत्वादुपलक्षणमिति न स्वीकृत तथैव स्थापनाया कालातिरिक्तस्य भेदहेतोः कल्पनेऽप्युत्सूत्रप्ररूपण प्रसज्येत कालान्यकृत

यावत्कथिक ही होता है। इसी अपेक्षा को लक्ष्य में रखकर भगवान ने उसमे इत्वरिकता का कथन न कर केवल यावत्कथिकता का ही कथन किया है यदि नाम में जो केवल इत्वरिकता ही मानी जावेगी-तो यह बात सिद्धान्त से बहिर्भूत होने से मानने वाले के लिये उत्सूत्रप्ररूपणा करने की आपत्ति का दोप आवेगा-क्यों कि शास्त्र में भगवान ने नाम निक्षेप में केवल यावद्रव्य भविता ही प्रदर्शित की है।

जो व्यक्ति इस शका का इस प्रकार से समाधान करते हैं कि "काल के भेद से जो नाम और स्थापना मे भेद कहा गया है वह केवल उपलक्षण मात्र है-इससे अन्य अनेक प्रकारों से भी इन दोनों में परस्पर भेद है यह बात जानी जाती है" सो उनका यह कथन शास्त्र-मर्यादा के विरुद्ध है जिस प्रकार नाम निक्षेप में कही २ इत्वरिकता होने पर भी भगवान द्वारा स्वीकृत न होने से वह उपलक्षणरूप से स्वीकृत नही की गई है-उसी प्रकार स्थापना में भी कालकृत भेद के

સામાન્ય કથન છે વિશેષ નહિ સામાન્ય રૂપથી નામ યાવત્ કથિત જ હોય છે આ વાતને સામે રાખીને જ ભગવાને તેમા ઇત્વરિકતાનુ કથન ન કરતા ફક્ત યાવત્કથિકતાનુ કથન કર્યું છે જો નામમા ફક્ત ઇત્વરિકતા જ માનવામા આવશે તો આ વાત સિદ્ધાન્તની બહાર હોવાથી માનનાર માટે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા કરવા રૂપ દોષ આવશે કેમકે શાસ્ત્રમા ભગવાને નામ નિક્ષેપમા ફક્ત યાવદ્-દ્રવ્ય-ભાવિતા જ બતાવી છે

જે માણસો આ શકાનુ સમાધાન આ પ્રમાણે કરે છે કે "કાલના ભેદથી જે નામ અને સ્થાપનામા તફાવત બતાવવામા આવ્યો છે તે ફક્ત ઉપલક્ષણ માત્ર છે એથી બીજા અનેક પ્રકારોથી પણ આ બનેમા પરસ્પર તફાવત છે આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે" જેથી તેમનુ આ કહેવું શાસ્ત્ર-મર્યાદાથી વિપરીત છે જેમ નામ-નિક્ષેપમા કોઈક કોઇક ઠેકાણે ઇત્વરિકતા હોવા છતાયે ભગવાન વડે સ્વીકૃત ન હોવાથી તે ઉપલક્ષણ રૂપથી સ્વીકારવામા આવી નથી, તેમ સ્થાપનામા પણ કાલકૃત ભેદ સિવાય બીજા વડે ।

भेदस्य भगवताऽनुक्तत्वात्। एतेन-"यत् कैश्चिदुक्तं यथा प्रतिमारूपस्थापनादर्शनाद् भावः समुल्लसति नैव नामश्रवणमात्रादिति नामस्थापनयोर्भेदः, यथा चेन्द्रादेः प्रतिमारूपस्थापनायां,लोकस्योपयाचितेच्छा पूजाप्रवृत्ति समीहितलाभादयो-दृश्यन्ते,नैव नामेन्द्रादौ, इत्यपि तयोर्भेदः। एवमन्यदपि वाच्यमिति तदुत्सूत्रप्ररू

सिवाय अन्य द्वारा अन्तर भेद मानने में उत्सूत्र प्ररूपणा करने का दोष आता है, कारण कि भगवान ने कालकृत भेदके सिवाय स्थापना निक्षेप में अन्य और किसी दूसरी अपेक्षा से भेद का कथन नहीं किया है इस प्रकार के कथन से "यह बात भी जो दूसरों ने कही है कि नाम और स्थापना में इस प्रकार से भी भेद है-कि "जिस प्रकार अर्हत की प्रतिमारूपस्थापना के देखने-दर्शन करने से भावों की जागृति होती है, उस प्रकार नाम निक्षेपरूप अर्हत नाम के सुनने से भावों की जागृति नहीं होती है। अथवा-इन्द्रादिक की प्रतिमारूप स्थापना में जिस प्रकार से लौकिकजनों की उस प्रतिमा से कुछ मागने की इच्छा उसके पूजन करने की भावना और उस प्रतिमा द्वारा उनके अभिलषितमनोरथों की पूर्ति होती हुई देखी जाती है उस प्रकार नामरूप इन्द्र में उनकी इस प्रकार की प्रवृत्ति और अभिलषित मनोरथों की पूर्ति होती हुई नहीं देखी जाती है। इसी तरह और भी ऐसी कई बाते हैं जो नाम और स्थापना में अन्तर कराती है। यह सब कालकृत भेद के सिवाय

ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણુ રૂપ દોષ થઈ જાય છે કારણુ કે ભગવાને કાલકૃત ભેદ સિવાય સ્થાપના નિક્ષેપમા બીજી કોઈ અન્ય દૃષ્ટિએ ભેદ-કથન કર્યું નથી આ જાતના કથનથી "આ વાત પણુ જે બીજાઓએ કહી છે કે નામ અને સ્થાપનામા આ રીતે પણુ તફાવત છે કે "જેમ અર્હંતની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનાને જોવા એટલે કે દર્શન કરવાથી ભાવોની જાગૃતિ થાય છે, તેમ નામ નિક્ષેપ રૂપ અર્હંતના નામને સાભળવાથી પણુ ભાવોની જાગૃતિ હોતી નથી અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પ્રતિમા રૂપ સ્થાપનામા જેમ લૌકિક માણુસોની તે પ્રતિમાથી કંઈક માગણી કરવાની ઈચ્છા, તેની પૂજા કરવાની ભાવના અને તે પ્રતિમા વડે તેમના અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી દેખાય છે તેમ નામ રૂપ ઇન્દ્રમા તેમની આ જાતની પ્રવૃત્તિ અને અભિલષિત મનોરથોની પૂર્તિ થતી જોવામા આવતી નથી આ પ્રમાણે બીજી પણ ઘણી બાબતો છે જે નામ અને સ્થાપનામા અતર કરાવે છે.

पणा जनितानन्तसमारजनकम् । आगमे यदिदमुच्यते-" तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयसवणयाए महाफलं ।" इति, तत्र नास्ति नामनिक्षेपस्य विषयः । " अरहताण भगवताण " इत्युक्त्या तस्मिन्नर्थे प्रयुक्तस्य नाम्न एव श्रवणेन महा फलसभवात्, गोपालदारकादौ प्रयुक्तस्य नाम्न श्रवणेन तु गोपालदारकार्थ स्यैव बोधादात्मपरिणामशुद्धिहेतुत्व तस्य नास्तीति । नामनिक्षेपस्थले भगवतोऽ र्हतः स्मरणासभव., तस्य भावशून्यत्वात्, अत्र तु नामगोत्राभ्या भगवदर्हतः सम्बन्ध षष्ठयन्तपदप्रयोगादेव दर्शयता भगवता नामनिक्षेपो न विवक्षितः । भावजिन

नाम और स्थापना में भेद कल्पना का कथन उत्सूत्र प्ररूपक होने से अनन्त ससार का जनक है अतः हेय है। " तहारूवाण अरहताण भगवताण नामगोयसवणयाए महाफल " आगम में जो यह सूत्र लिखा हुआ देखा है उसका अभिप्राय नामनिक्षेप परक नहीं है। अर्थात्-इस सूत्र से नाम निक्षेप की पुष्टि नहीं होती है। यदि सूत्रकार को इस सूत्र से जो नामनिक्षेप की पुष्टि करना इष्ट होता तो " अरहताण भगव ताण इस पद के स्वतन्त्र देने की कोई खास आवश्यकता नहीं थी। अतः यह बात माननी चाहिये कि अरहत भगवान के ही नामगोत्र के श्रवण से महाफल होता है। किसी गोपाल के लड़के में निक्षिप्त " अरहत " इस नाम के सुनने से नहीं। उस में प्रयुक्त भी उस नाम के श्रवण से तो केवल उस गोपाल दारकरूप अर्थ का ही बोध होता है। " अरहत " यह नाम जिसरूप के सकेत से अरि-

---

આ બધુ કાલકુત ભેદ સિવાય નામ અને સ્થાપનામા ભેદ કલ્પનાનુ કથન ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપક હોવાથી અનત સસારનુ જનક છે એથી ત્યાજ્ય છે " तहारूवाण अरहताण भगवताण नाम गोयसवणयाए' महाफलं " આગમમા જે આ સૂત્ર મળે' તેનો અભિપ્રાય નામનિક્ષેપપરક નથી એટલે કે આ સૂત્ર વડે નામ નિક્ષેપ-પુષ્ટિ થતી નથી જો સૂત્રકારને આ સૂત્ર વડે નામ-નિક્ષેપની પુષ્ટિ કરવું ઇષ્ટ લાગતુ હોત તો " अरहताण भगवताणं " આ પદને સ્વતત્ર રૂપમા મૂકવાની કોઈ ખાસ આવશ્યકતા હતી નહિ એથી આ વાત માની લેવી જોઇએ કે અરહત ભગવાનના નામ ગોત્ર-શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે કોઇ ગોપાળના પુત્રમાં નિક્ષિપ્ત " અરહત " આ નામને સાભળવાથી નહિ તેમા પ્રયુકત પણ તે નામના શ્રવણથી તો ફક્ત તે ગોપાળના પુત્ર રૂપ અર્થ-નો જ બોધ હોય છે " अरहत " આ નામ જે રૂપના સ કેતથી અરિહત પ્રભુમા સ કેતિત થયુ છે-તે રૂપના સ કેતથી જ ગોપાળના

हंत प्रभु में सकेतित हुआ है-उसी रूप से संकेत से गोपाल के पुत्र में सकेतित नहीं हुआ है। लौकिक व्यवहारके लिये ही केवल "अरहत" ऐसा उसका नाम करलिया गया है। नाम निक्षेप में जिसका निक्षेप किया जाता है उस जाति के द्रव्य, गुण और कर्म-क्रिया आदि निमित्त की अनपेक्षा रहती है इस निमित्त के सद्भाव में वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना जाताहै। भाव निक्षेप का ही वह विषय होता है अतः यह निश्चित होता है कि अरहत भगवान के ही नाम गोत्र के श्रवण के महाफल सूत्रकार ने प्रकट कियाहै यदि नामनिक्षेप से यह फल प्राप्त होने लगता तो फिर भावनिक्षेप की आवश्यकता ही क्या थी। उसके श्रवण मात्र से ही जीवों के आत्मिक भावों में शुद्धिरूप महाफल का लाभ होने लगता। तथा जिसका " अरिहन " यह नाम है वह स्वय अरिहत प्रभु की तरह महापवित्र, ३४ अतिशयों सहित ८ प्रातिहार्य आदि विभूति सपन्न हो जाता। परन्तु ऐसा नहीं होता है अतः यह मानना चाहिये कि यह सूत्र भावनिक्षेप की ही पुष्टि विधायक है-नामनिक्षेप का नहीं। नामनिक्षेप से भगवान अरिहत की स्मृति भी नहीं कराई जाती है-कारण कि वह नामनिक्षेप स्वय उस प्रकार के भावों से शून्य है। अनुभूत पदार्थ की स्मृति हुआ करती

थयु नथी लौकिक व्यवहार माटे फक्त " अरहत " आवु नाम पाडवामा नामनिक्षेपमा जेनो निक्षेप करवामा आवे छे ते जातिना द्रव्य, गुण अने कर्म-क्रिया वगेरे निमित्तनी अपेक्षा रहे छे आ निमित्तना सद्भावमा ते नाम-निक्षेपनो विषय मानवामा आवतो नथी भाव निक्षेपनो ज ते विषय होय छे एथी ए सिद्ध थाय छे के अरहत भगवानना ज नाम गोत्रना श्रवणथी ज सूत्रकारे महाफळ बताव्यु छे जो नामनिक्षेपथी आ फळ मळी शकयु होत तो पछी भावनिक्षेपनी आवश्यकता ज, शी हती ? तेना श्रवण मात्रथी ज जीवोनी आत्मिक भावोमा शुद्धि रूप महाफळनो लाभ थवा माडतो तेमज जेनु " अरिहत " आ नाम छे ते पोते अरिहत प्रभुनी जेम महा पवित्र, ३४ अतिशयो सहित, ८ प्रतिहार्य वगेरे विभूतिओथी सपन्न थई जात, पण आवु थतु नथी एथी एम समजी लेवु जोईए के आ सूत्रथी भावनिक्षेपनी ज पुष्टि थाय छे-नाम निक्षेपनी नहि नाम निक्षेपथी भगवान अरिहतनी स्मृति पण करवामा आवती नथी कारण के ते नाम-निक्षेप जाते ते जातना भावोथी रहित छे अनुभूत पदार्थनु स्मरण थया करे छे जेनु

है जिसका "अरिहंत" यह नाम रखा गया है उसके देखने से अरिहंत की स्मृति हो भी कैसे सकती है-स्मृति तो अरिहंत की जब हो सकती कि जब उसमें उनकी स्मृति के चिह्न होते-वह स्वय उस प्रकार के हेतु हो सकती है माना कि श्रवण कर्त्ता शास्त्र आदिको में अरिहंतप्रभु के गुणो का वर्णन पढकर चित्त में उकेर कर भले ही "अरिहंत" इस नामके श्रवण से उनका स्मरण कर सकता है। परन्तु गोपालदारकादी में कृत नाम से उनका स्मरण उसे नहीं हो सकता-उस नाम से तो उसमें ही संकेतित उस शब्द से उस गोपाल दारक रूप अर्थ का ही उसे बोध होगा। यदि अरिहंत नाम के सुनने से सुनने वाले को अरिहंत पदार्थ का भान होता है तो वह नाम निक्षेप का विषय नहीं माना गया है भावनिक्षेप का ही वह विषय है। थोड़ा बहुत भी किसी अपेक्षा से सादृश्य होने पर एक पदार्थ को देखकर सदृश दूसरे पदार्थ का स्मरण हो जाता है परन्तु प्रकृत मे गोपालदारकरूप अरिहंत नामनिक्षेप में ऐसा कौन सा सादृश्य है जो वह अरिहंत का स्मरण करा सके। अतः नाम और गोत्र के साथ साक्षात् भगवान अरिहंत का संबंध षष्ठी विभक्ति द्वारा प्रदर्शित करने वाले सूत्रकार ने इस सूत्र में नामनिक्षेप का कोई

"અરિહંત" આ નામ રાખવામાં આવ્યું છે તેને જોવાથી અરિહંત સ્મૃતિ પણ કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે? સ્મૃતિ તો અરિહંતની ત્યારે જ થઈ શકે કે જ્યારે તેમાં તેમની સ્મૃતિના ચિહ્નો હોય, તે પોતે આ જાતના ભાવોથી રહિત થયેલો હોય ત્યારે તે કેવી રીતે તેમની સ્મૃતિનું કારણ થઈ શકે છે? આ વાત આપણે સ્વીકારી લઈએ તેમ છીએ કે શ્રવણ-કર્ત્તા શાસ્ત્ર વગેરેમાં અરિહંત પ્રભુના ગુણોનું વર્ણન વાંચીને ચિત્તમાં ધારણ કરીને ભલે 'અરિહંત' આ નામના શ્રવણથી તેમનું સ્મરણ કરી શકે છે પણ ગોપાળદારક વગેરેમાં કૃત નામથી તેનું સ્મરણ થઈ શકતું નથી તે નામ વડે તો તેમાં જ સંકેતિત તે શબ્દથી તે ગોપાળદારક રૂપ અર્થનો જ તે બોધ થશે જો અરિહંત નામ શ્રવણથી સાંભળનારને અરિહંત પદાર્થોનું જ્ઞાન થાય છે ત્યારે તે નામનિક્ષેપનો વિષય માનવામાં આવ્યો નથી ભાવનિક્ષેપનો જ તે વિષય છે કોઈ પણ રીતે થોડું પણ સરખાપણું હોવાથી એક પદાર્થને જોઈને તેના સરખા બીજા પદાર્થનું સ્મરણ થઈ જાય છે પણ પ્રકૃતમાં ગોપાળદારક રૂપ અરિહંત નામનિક્ષેપમાં એવું કઈ જાતનું સરખાપણું છે કે જે તે અરિહંતનું સ્મરણ કરાવી શકે? એથી નામ અને ગોત્રની સાથે સાક્ષાત્ ભગવાન અરિહંતનો સંબંધ ષષ્ઠી વિભક્તિ વડે દર્શાવનારા સૂત્રકારે આ સૂત્રમાં નામનિક્ષેપનો કોઈ પણ વિષય પ્રતિપાદિત કર્યો નથી

बोधकस्य नाम्न एव श्रवणेन महाफलमवसेयः। एवं स्थापनापि भावरूपार्थशून्या, स्थापनया भावरूपार्थस्य नास्ति कोऽपि सम्बन्धः। भावजिनशरीरवर्तिनी याऽऽकृतिरासीत्, तस्या आश्रयाश्रयिभावसम्बन्धो भावजिनेन सह तदानीं विद्यमान आसीत्। यदा भावजिन पश्यता तदानीं भावोल्लासोऽपि कस्यचित् सञ्जातः,

भी विषय प्रतिपादित नहीं किया है। भावनिक्षेप का ही विषय इसमें कहा है इसलिये भावजिन का बोध कराने वाले जिन 'अरिहंत' आदि नामों के सुनने से ही महाफल होता है ऐसा मानना चाहिये।

इसी प्रकार स्थापना निक्षेप भी भावरूप अर्थ से शून्य है कारण कि इसका उसके साथ कोई संबंध नहीं है भावजिन की अवस्था की आकृति पाषाण आदि की मूर्ति में "यह वही है" इस प्रकार की कल्पना करने का नाम स्थापना है तीर्थंकर प्रकृति के उदयसे समवसरणादि विभूति सहित आत्मा का नाम भाव जिन है इस भाव जिन के शरीर की जो आकृति है उसका संबंध विचारिये उस पाषाण आदि की प्रतिमा में कैसे आसकता है। क्यों कि इस आकृति का संबंध आश्रय आश्रयी भावसे वे जिन जिसकाल मे थे उसी काल में उनके साथ था। उनके नहीं रहने पर पाषाण आदि मे इस तरह का आश्रय आश्रयी भाव संबंध मानना उचित कैसे कहा जा सकता है, भावजिन के सद्भाव मे जिस प्रकार उनके साक्षात् दर्शन से प्राणियों को एक प्रकार

નો જ વિષય તેમાં બતાવ્યો છે એથી જીનનો બોધ કરાવનાર જીન "અરિહંત" વગેરે નામ શ્રવણથી મહાફળ પ્રાપ્ત હોય છે આમ સમજવું જોઈએ

આ પ્રમાણે સ્થાપના નિક્ષેપ પણ ભાવ રૂપ અર્થથી રહિત છે કારણ કે આનો તેની સાથે કોઈ પણ જાતનો સંબંધ નથી ભાવજીનની અવસ્થાની આકૃતિ પથ્થર વગેરેની મૂર્તિમાં "આ તેઓ જ છે" આ જાતની કલ્પના કરવાનું નામ સ્થાપના છે તીર્થંકરની પ્રકૃતિના ઉદયથી સમવસરણ વગેરે વિભૂતિ સહિત આત્માનું નામ ભાવજીન છે આ ભાવજીનના શરીરની જે આકૃતિ છે તેના વિષે આપણે પણ વિચાર કરીયે કે પથ્થર વગેરેની પ્રતિમામાં તેનો સંબંધ કેવી રીતે આવી શકે છે? કેમકે તે આકૃતિનો સંબંધ આશ્રય આશ્રયી ભાવથી તે જીન જે કાળમાં હતા તે કાળમાં જ તેમની સાથે હતો. તેમની ગેરહાજરીમાં પથ્થર વગેરેમાં આ જાતનો આશ્રય-આશ્રયી ભાવ સંબંધ માન્ય રાખવો કેવી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તેમ છે? ભાવજીનના સદ્ભાવમાં જેમ તેમના સાક્ષાત દર્શનથી પ્રાણીઓમાં એક જાતનો ભાવોલ્લાસ ઉદ્ભવે

तथा भक्त्या तामाकृतिं स्मरतो जनस्य भावोल्लासः सम्भवतु, तदाऽऽकृतेर्भावजिनेन सम्बन्धात्, परतु स्थापनाया आश्रयाश्रयिभावसम्बन्धो नास्ति भावजिनेन सह। भावजिनात्मनस्तत्रावाहन स्थापनंतु जिनागमाद् प्रवचनविरुद्ध कर्तुमशक्य, कथ तर्हि-भावजिनसम्बन्धाभावे प्रतिमा भावजिन तद्गुण वा स्मारयितु शक्ता भवेत्।

का भावोल्लास होता है, उसी प्रकार से भक्ति के आवेश से भी उनकी उस आकृति का उस समय स्मरण करने वाले प्राणी को उस प्रकार के भावोल्लास का सद्भाव हो सकता है। इसका निषेध नही है। क्यों कि स्मृति के आधारभूत जिन परमात्मा उस काल में स्वय विद्यमान हैं। उन के अभाव में उन्हें नही देखने वाले प्राणियोंको भी उनकी उस प्रतिमा से उसी प्रकार का भावोल्लास होता है यह मान्यता केवल एक कल्पना मात्र है वास्तविक नहीं। इसके समाधान के निमित्त जो यह कहा जाता है कि उस पाषाण प्रतिमा में जिन भगवान की आत्मा का मन्त्रादिकों द्वारा आह्वान किया जाता है अत. उस प्रतिमा के दर्शन से साक्षात् भाव जिनके ही दर्शन होते हैं सो यह मान्यता सर्वथा असत्य है-कारण कि मोक्ष में प्राप्त आत्माओं का पाषाण आदि प्रतिमाओं में अपनी मान्यता सिद्ध करने के लिये आह्वान आदि मानना सर्वथा जिनसिद्धान्त से विरुद्ध है मोक्ष प्राप्त आत्माएँ कही पर भी किसी भी काल में आह्वान करने से नही आती हैं ऐसी जिन शासन की आज्ञा है इस तरह से उस पाषाण आदि की आत्माओं का

છે, તેમ ભક્તિના આવેશથી પણ તેમની એ આકૃતિનુ તે સમયે સ્મરણ કરનાર પ્રાણીને તે જાતના ભાવોલ્લાસની અનુભૂતિ થઇ શકે છે આનો નિષેધ નથી કેમકે સ્મૃતિમા તે આકૃતિના આધારભૂત જીન પરમાત્મા તે કાળમા જાતે વિદ્યમાન છે તેમના અભાવમા તેમને નહિ જોનારા પ્રાણીઓને પણ તેમની તે પ્રતિમાથી તે પ્રમાણેનો જ ભાવોલ્લાસ થાય છે, આ માન્યતા ફક્ત એક કોરી કલ્પના જ છે, વાસ્તવિક નથી એના સમાધાન માટે જે આમ કહેવામા આવે છે કે તે પથ્થરની પ્રતિમામા જીન ભગવાનના આત્માનુ મ ત્રો વગેરેથી આવાહન કરવામા આવે છે, એથી તે પ્રતિમાના દર્શનથી પ્રત્યક્ષ ભાવજીનના જ દર્શન થાય છે, તો આ માન્યતા સાવ અસત્ય છે કારણ કે મોક્ષમા પ્રાપ્ત આત્માઓનુ પથ્થર વગેરે પ્રતિમાઓમા પોતાની માન્યતા સિદ્ધ કરવા માટે આહ્‌વાહન વગેરે માનવુ તે તો જીન સિધ્ધાતથી સાવ વિરૂધ્ધ છે મોક્ષ પ્રાપ્ત આત્માઓ કોઈ પણ સ્થાને અને કોઇ પણ કાળે આવાહન કરવાથી આવતા નથી, એવી જીન શાસનની આજ્ઞા છે આ રીતે તે પથ્થર ના

सर्वथा कुप्रावचनिकद्रव्यावश्यकवत् प्रतिमापूजनं कुर्वन्तः कारयन्तश्च मिथ्यादृष्टित्वं प्राप्नुवन्ति न तु सम्यक्त्वमिति ।

द्रव्यावश्यक-द्विविध-आगमतो नोआगमतश्च । यस्य जन्तोरावश्यकशास्त्रं शिक्षितादिगुणोपेतं भवति, स जन्तुस्तत्रावश्यकशास्त्रे शिष्याध्यापनरूपया वाचनया गुरु प्रति प्रश्नलक्षणया प्रच्छनया, पुनः पुनः सूत्रार्थाभ्यासरूपया परावर्तनया, तथा

आह्वान होने से आना मान लिया जाय तो फिर उस प्रतिमा में सजीवता मानने में क्या दोष है इसलिये यह स्वीकार करना ही चाहीये। कि भावजिन के अभाव में वह प्रतिमा भावजिन एव उनके गुणों का स्मरण करवाने में सर्वथा समर्थही है। जब यह निश्चित सिद्धान्त है तो फिर इसकी पूजनादि करने कराने से जो मनुष्य समकित की प्राप्ति होना मानते हैं वे उस विधवा कि दशा जैसे हैं जो अपने पति की फोटो या मूर्ति के दर्शन एव सहवास आदि से सन्तान की उत्पत्ति की कामना करती हो। इसलिये कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की तरह यह प्रतिमापूजनादि कर्म करने कराने वाले दोनों ही जन मिथ्यात्वरूप दृष्टि के ही पात्र हैं, सम्यक्त्व के नहीं।

द्रव्य निक्षेपरूप आवश्यक, आगम और नोआगम के भेद से दो प्रकार का है। उसमे जिस प्राणी के आवश्यक शास्त्र शिक्षितादिगुणों से युक्त है वह प्राणी उस आवश्य शास्त्र में, शिष्यों का पढानेरूप

ते आत्माओनु आवाहन होवाथी आववु मानी लईए तो पछी ते प्रतिमाने सजीव मानवामा शो वाधो छे? एटला माटे आपणे आ वात स्वीकारवी ज जोईए के भावजिनना अभावमा ते प्रतिमा भावजिन अने तेमना गुणोनु स्मरण करावामा संपूर्णपणे समर्थ ज छे ज्यारे आ सिद्धान्त निश्चित रूपे मान्य थयेलो छे त्यारे तेनु पूजन वगेरे करावाथी जे लोको समकितनी प्राप्ति थवी माने छे तेमनी तो विधवा जेवी दशा छे के जे पोताना पतिनी छबी के मूर्तिना दर्शन अने सहवास वगेरेथी संतान मेळववानी इच्छा करती होय। एटला माटे कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यकनी जेम आ प्रतिमा पूजन वगेरे कार्य करनार तेमज करावनार बने माणसो मिथ्यात्व रूप दृष्टिना ज पात्र छे, सम्यक्त्वना नथी

द्रव्य निक्षेप रूप आवश्यक आगम तेमज नोआगमना भेदथी बे प्रकार छे तेमा जे प्राणी आवश्यक शास्त्र शिक्षित वगेरे गुणोथी युक्त छे ते प्राणी ते आवश्यक शास्त्रमा शिष्योने भणाववा रूप वाचनाथी, गुरु-प्रति तद्

धर्मकथया वर्तमानोऽप्यनुपयोगे सति आगमतो द्रव्यावश्यकम्, 'अणुवओगो दव्व' इति वचनात्। अनुपयोगो भावशून्यता।

वाचना से, गुरु के प्रति तद्विषयक प्रश्न लक्षणरूप पृच्छना से बार बार सूत्र और अर्थ के अभ्यासरूप परावर्तन से तथा धर्मकथा से वर्तमान होता हुआ भी अनुपयुक्त अवस्थासपन्न होने से आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। अनुपयोग का नाम ही द्रव्य है।

भावार्थ-" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारण तु यल्लोके तद्द्रव्यम् " यह द्रव्यनिक्षेप का लक्षण है। भूतपर्याय या भविष्यत् पर्याय का जो कारण आधार होता है, वह द्रव्य है जिस प्रकार किसी राजा के युवराज को राजा कह दिया जाता है यद्यपि वह अभी वर्तमान में राजारूपपर्याय से युक्त नहीं है-आगे उसे राजपर्याय प्राप्त होगी, परन्तु फिर भी उसे व्यवहार में लोग राजा कहते हैं। यह भविष्यत पर्याय की अपेक्षा द्रव्य निक्षेपका विषय है। जोपहिले राजा था-कारण वश जब वह राजागद्दी का परित्याग कर देता है-तब भी लोग उसे राजा कहते हैं। यहा उस राजा में यद्यपि वर्तमान समय मे राजपर्याय से युक्तता नही है तो भी भूतकाल की अपेक्षा से ही उसे राजा कहा जाता है। यह भूतकाल की अपेक्षा से राजपर्याय का आधार होने के कारण द्रव्य निक्षेप का विषय है प्रकृत मे इस निक्षेप की आयोजना इस प्रकार से

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણુ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવતનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનુ નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारण तु यल्लोके तद् द्रव्यम् " આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનુ લક્ષણુ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત પર્યાયને જે કારણુ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામા આવે છે જો કે તે વર્તમાનમા રાજા રૂપ પર્યાયથી યુકત નથી આગળ તેને રાજ પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાયે તેને વ્યવહારના લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપને વિષય છે જે પહેલા રાજા હતો-પણુ કોઈ કારણુસર રાજગાદિને તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણુ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામા જો કે વર્તમાન સમયમા રાજ પર્યાયથી યુકતતા નથી છતાયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજપર્યાયને આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપને વિષય છે પ્રકૃતમા આ [illegible]

अथ नोआगमतो द्रव्यावश्यकमुच्यते-अत्र नो शब्दः सर्वथा प्रतिषेधे देशतः प्रतिषेधेऽपि च वर्तते। तथा च सर्वथा-आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यकं, तथा

होती है कि जो वर्तमान में आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है आगे भविष्यत् काल में उस शास्त्र का ज्ञाता होंगे उसे तथा जो भूतकाल में उस शास्त्र का ज्ञाता था अब वर्तमान काल मे उसका ज्ञाता नहीं है-उसे आवश्यक इस प्रकार जानना या कहना यह द्रव्यनिक्षेप की अपेक्षा आवश्यक है। इसके मूल मे दो भेद हैं? आगम द्रव्य निक्षेप और दूसरा नोआगमद्रव्यनिक्षेप। आवश्यक शास्त्र आदि का जो ज्ञाता हो, शिष्यों को जो उसे पढाता हो, उस विषयक गुरु आदि के निकट जो तात्त्विक चर्चा आदि भी करता हो इस प्रकार वाचना, प्रच्छना-पर्यटना अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेशरूप पाचो प्रकार के स्वाध्याय से जो उसकी पर्यालोचना कर रहा है-परन्तु उसमे उपयोग नहीं है-अनुपयुक्त है वह आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। इसमें आवश्यक शब्द के अर्थ का ज्ञान ही आगमरूप से विवक्षित हे। अतः आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता होता हुआ भी उसमे अनुपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है यह बात निश्चित हुई।

नो आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है-जहा आगम का सर्वथा अभाव या आगम के एक देश का अभाव विवक्षित होता

જના એ રીતે હોય છે કે વર્તમાનમા જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમા તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, ' આવશ્યક ' આ રીતે જાણવુ કે કહેવુ આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે એના મૂળ રૂપે બે ભેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્ વિષયક ગુરુ વગેરેની પાસે જઈને જે તાત્વિક ચર્ચા વગેરે પણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમા તેનો ઉપયોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય ' આવશ્યક ' છે એમા આવશ્યક શબ્દના અર્થનુ જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એથી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાયે તેમા અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યા આગમનો સપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

धर्मकथया वर्तमानोऽप्यनुपयोगे सति आगमतो द्रव्यावश्यकम्, 'अणुवओगो दव्व' इति वचनात्। अनुपयोगो भावशून्यता।

वाचना से, गुरु के प्रति तद्विषयक प्रश्न लक्षणरूप पृच्छना से बार बार सूत्र और अर्थ के अभ्यासरूप परावर्तन से तथा धर्मकथा से वर्तमान होता हुआ भी अनुपयुक्त अवस्थासपन्न होने से आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। अनुपयोग का नाम ही द्रव्य है।

भावार्थ-" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारण तु यल्लोके तद्द्रव्यम् " यह द्रव्यनिक्षेप का लक्षण है। भूतपर्याय या भविष्यत् पर्याय का जो कारण आधार होता है, वह द्रव्य है जिस प्रकार किसी राजा के युवराज को राजा कह दिया जाता है यद्यपि वह अभी वर्तमान में राजारूपपर्याय से युक्त नहीं है-आगे उसे राजपर्याय प्राप्त होगी, परन्तु फिर भी उसे व्यवहार में लोग राजा कहते हैं। यह भविष्यत् पर्याय की अपेक्षा द्रव्य निक्षेपका विषय है। जोपहिले राजा था-कारण वश जब वह राजगद्दी का परित्याग कर देता है-तब भी लोग उसे राजा कहते हैं। यहां उस राजा में यद्यपि वर्तमान समय मे राजपर्याय से युक्तता नही है तो भी भूतकाल की अपेक्षा से ही उसे राजा कहा जाता है। यह भूतकाल की अपेक्षा से राजपर्याय का आधार होने के कारण द्रव्य निक्षेप का विषय है प्रकृत मे इस निक्षेप की आयोजना इस प्रकार से

વિષયક પ્રશ્ન લક્ષણ રૂપ પૃચ્છનાથી, વારવાર સૂત્ર અને અર્થના અભ્યાસ રૂપ પરાવર્તનથી તથા ધર્મકથાથી વર્તમાન હોવા છતાંયે અનુપયુક્ત અવસ્થા સપન્ન હોવાથી આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, અનુપયોગનુ નામ જ દ્રવ્ય છે

ભાવાર્થ—" भूतस्य भाविनो वा भावस्य हि कारण तु यल्लोके तद् द्रव्यम् " આ દ્રવ્ય નિક્ષેપનુ લક્ષણ છે ભૂત-પર્યાય કે ભવિષ્યત પર્યાયને। જે કારણ આધાર હોય છે, તે દ્રવ્ય છે જેમ કોઈ રાજાના યુવરાજને રાજા કહી દેવામા આવે છે જો કે તે વર્તમાનમા રાજા રૂપ પર્યાયથી યુકત નથી આગળ તેને રાજ પર્યાય પ્રાપ્ત થશે, છતાંયે તેને વ્યવહારમા લોકો રાજા કહે છે આ ભવિષ્યત પર્યાયની અપેક્ષા દ્રવ્ય નિક્ષેપને। વિષય છે જે પહેલા રાજા હતો-પણ કોઈ કારણસર રાજગાદિને। તે પરિત્યાગ કરી દે છે, ત્યારે પણ લોકો તેને રાજા કહે છે અહીં તે રાજામા જો કે વર્તમાન સમયમા રાજ પર્યાયથી યુકતતા નથી છતાંયે ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી તેને રાજા કહેવામા આવે છે આ ભૂતકાળની અપેક્ષાથી રાજપર્યાયને। આધાર હોવા બદલ દ્રવ્ય નિક્ષેપને। વિષય છે પ્રકૃતમા આ

अथ नोआगमतो द्रव्यावश्यकमुच्यते-अत्र नो शब्द' सर्वथा प्रतिषेधे देशतः प्रतिषेधेऽपि च वर्तते। तथा च सर्वथा-आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यकं, तथा

होती है कि जो वर्तमान मे आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है आगे भविष्यत् काल में उस शास्त्र का ज्ञाता होंगे उसे तथा जो भूतकाल में उस शास्त्र का ज्ञाता था अब वर्तमान काल मे उसका ज्ञाता नहीं है- उसे आवश्यक इस प्रकार जानना या कहना यहद्रव्यनिक्षेप की अपेक्षा आवश्यक है। इसके मूल मे दो भेद हैं? आगम द्रव्य निक्षेप और दूसरा नोआगमद्रव्यनिक्षेप। आवश्यक शास्त्र आदि का जो ज्ञाता हो, शिष्यों को जो उसे पढाता हो, उस विषयक गुरु आदि के निकट जो तात्त्विक चर्चा आदि भी करता हो इस प्रकार वाचना, प्रच्छना-पर्यटना अनुप्रेक्षा और धर्मोपदेशरूप पाचो प्रकार के स्वाध्याय से जो उसकी पर्यालोचना कर रहा है-परन्तु उसमे उपयोग नहीं है-अनुपयुक्त है वह आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है। इसमें आवश्यक शब्द के अर्थ का ज्ञान ही आगमरूप से विवक्षित है। अतः आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता होता हुआ भी उसमे अनुपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक है यह बात निश्चित हुई।

नो आगम की अपेक्षा द्रव्य आवश्यक इस प्रकार है-जहा आगम का सर्वथा अभाव या आगम के एक देश का अभाव विवक्षित होता

જના એ રીતે હોય છે કે વર્તમાનમા જે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા થશે તેને તેમજ જે ભૂતકાળમા તે શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા હતો હમણા વર્તમાનકાળમા તેનો જ્ઞાતા નથી તેને, 'આવશ્યક' આ રીતે જાણવુ કે કહેવુ આ દ્રવ્યનિક્ષેપની અપેક્ષાએ આવશ્યક છે એના મૂળ રૂપે બે ભેદો છે-૧ આગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ અને બીજો નોઆગમ દ્રવ્ય નિક્ષેપ આવશ્યક શાસ્ત્ર વગેરેનો જે જ્ઞાતા હોય, જે શિષ્યોને ભણાવતો હોય, તદ્ વિષયક ગુરૂ વગેરેની પાસે જઈને જે તાત્વિક ચર્ચા વગેરે પણ કરતો હોય, આ રીતે વાચના, પ્રચ્છના, પર્યટના, અનુપ્રેક્ષા અને ધર્મોપદેશ રૂપ પાચે જાતના સ્વાધ્યાયથી જે તેની પર્યાલોચના કરી રહ્યો છે, પણ તેમા તેનો ઉપયોગ નથી, અનુપયુક્ત છે, તે આગમની અપેક્ષાદ્રવ્ય 'આવશ્યક' છે એમા આવશ્યક શબ્દના અર્થનુ જ્ઞાન જ આગમ રૂપથી વિવક્ષિત છે એથી આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાતા હોવા છતાયે તેમા અનુપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક છે, આ વાત સિદ્ધ થઈ છે

નોઆગમની અપેક્ષા દ્રવ્ય આવશ્યક એ પ્રમાણે છે કે જ્યા આગમનો સપૂર્ણપણે અભાવ કે આગમના એક દેશનો અભાવ વિવક્ષિત હોય છે તે નો

देशत आगमाभावमाश्रित्य द्रव्यावश्यकं-नोआगमतो द्रव्यावश्यकम्। तत्-त्रिविधम्-ज्ञशरीरद्रव्यावश्यकं, भव्यशरीरद्रव्यावश्यकं,तद्व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यकं चेति।

है-वह नो आगम की अपेक्षा से द्रव्य आवश्यक माना गया है। " नो आगम " में नो शब्द सर्वथा आगम के अभाव का अथवा उसके एक देश के अभाव का घोषक है। इसके ज्ञशरीरद्रव्यावश्यक, भव्यशरीर-द्रव्यावश्यक, और तद्व्यतिरिक्त द्रव्यावश्यक, इस प्रकार तीन भेद हैं। आवश्यक शास्त्र का जो पहिले (भूतकाल में) ज्ञाता था-तथा दूसरों के लिये इस शास्त्र का उपदेश आदि भी जिसने पहिले दिया है ऐसे जीव का अचेतन शरीर ज्ञशरीरद्रव्यावश्यक है जो जीव इस समय आवश्यक शास्त्र का ज्ञाता नहीं है भविष्यत् काल में उसका ज्ञाता बनेगा उसका वह सचेतन शरीर भविष्यत् काल में आवश्यक शास्त्र के ज्ञान का आधार होने की अपेक्षा से, भव्यशरीरद्रव्यावश्यक है। तद्व्यतिरिक्तद्रव्यावश्यक लौकिक कुप्रावचनिक और लोकोत्तर के भेद से ३ प्रकार का है। लौकिकजनों द्वारा आचरित आवश्यक कर्म लौकिक द्रव्यआवश्यक है। जैसे राजसभा मे जाने वाले राजा, युवराज, तलवर (कोट्टपाल) आदि जन प्रातः काल मे उठकर राजसभा मे जाने के लिये प्रथम प्राभातिक विधियो से निपटते है-मुख धोते हैं, दांतों को

આગમની અપેક્ષાથી દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામા આવ્યો છે " नोआगम " મા નો શબ્દ આગમના સપૂર્ણપણે અભાવનો કે તેના એક દેશના અભાવનો બોધક છે તેના જ્ઞશરીર દ્રવ્યાવસ્યક, ભવ્યશરીર દ્રવ્યાવશ્યક અને તદ્વ્યતિરિકત દ્રવ્યાવશ્યક આ પ્રમાણે ત્રણ ભેદો છે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જે પહેલા (ભૂતકાળમા) જ્ઞાતા હતો તેમજ બીજાઓ માટે આ શાસ્ત્રનો ઉપદેશ વગેરે પણ જેણે પહેલા આપ્યો છે એવા જીવનુ અચેતન શરીર જ્ઞ શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે જે જીવ અત્યારે આવશ્યક શાસ્ત્રનો જ્ઞાતા નથી, ભવિષ્યકાળમા તેનો જ્ઞાતા થશે તેનુ તે સચેતન શરીર ભવિષ્યકાળમા આવશ્યક શાસ્ત્રના જ્ઞાનનો આધાર હોવાને કારણે ભવ્ય શરીર દ્રવ્યાવશ્યક છે તદ્વ્યતિરિકત દ્રવ્યાવશ્યક લૌકિક કુપ્રાવચનિક અને લોકોત્તર એમ ત્રણ પ્રકારનો છે લૌકિક માણસો વડે આચરિત આવશ્યક કર્મ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે જેમ રાજસભામા જનારા રાજા, યુવરાજ, તલવર (કોટ્ટપાલ) વગેરે લોકો સવારે ઉઠીને રાજ સભામા જવા માટે પ્રથમ પ્રાભાતિક વિધિયોથી પરવારે છે, મુખ ધુએ છે,

ज्ञातगानिति-ज्ञ, ज्ञस्य शरीरं ज्ञशरीरं तदेव द्रव्यावश्यकमिति विग्रहः । जीव परित्यक्तमावश्यकशास्त्रज्ञानवतः शरीरं ज्ञशरीरद्रव्यावश्यकम् । यः कश्चिद् जीवः जन्मकालादारभ्य अनेनैव आत्तेन - गृहीतेन शरीरसमुच्छ्रयेण, जिनोपदिष्टेन भावेन आवश्यकमित्येतत् पद=शास्त्रं आगामिनि काले शिक्षिष्यते न तावच्छिक्षते, तज्जीवाधिष्ठितं शरीरं भव्यशरीरद्रव्यावश्यकमिति । ज्ञशरीर-भव्यशरीरव्यतिरिक्तं द्रव्यावश्यकं त्रिविधम्-लौकिकं, कुप्रावचनिकं, लोकोत्तरिकं चेति ।

लौकिकं द्रव्यावश्यकम् ' ये राजेश्वरतलवरादयः प्रभातसमये-मुखधावन-दन्तप्रक्षालन-तैल-कङ्कतक-सर्षप-दूर्वा-दर्पण-धूप-पुष्प-माल्य-गन्ध-ताम्बूल-वस्त्रादिकानि द्रव्यावश्यकानि कुर्वन्ति, कृत्वा पश्चाद् राजकुलदेवकुलादौ गच्छन्ति, तत्-तेषां सम्बन्धिमुखधावनादि ।

कुप्रावचनिकं द्रव्यावश्यकम् ' ये इमे चरकचीरिकादयः पाषण्डस्था , इन्द्र-स्कन्द-रुद्र-शिव-वैश्रवण-देव-नाग-यक्ष-भूत-मुकुन्दाऽऽर्या-दुर्गा- कोट्टक्रियाणाम् - उपलेपनसमार्जनाऽऽवर्षणधूपपुष्पगन्धमाल्यादिकानि द्रव्यावश्यकानि कुर्वन्ति तेषां तद् इन्द्रस्कन्दादेरुपलेपनादि । कुत्सितं प्रवचनं येषां ते कुप्रवचनास्तेषामिदं कुप्रावचनिकम् । उपलेपनं चन्दनपङ्केन, समार्जनं-स्नपनानन्तरं वस्त्रेण जलप्रोञ्छनम् आवर्षणं=गन्धोदकेन, ' गुलाबजल ' इत्यादि भाषाप्रसिद्धेन ।

नामावश्यकम्-आवश्यकनामको गोपालदारकादिः, स्थापनावश्यकम्-आव

साफ करते हैं, स्नान करते हैं। सुगंधित तैल लगाते हैं इत्यादि आवश्यक कार्य करते हैं। पीछे राजसभा में या देवकुल में जाते हैं। उनका यह मुख धावन आदि कार्य लौकिक द्रव्य आवश्यक है। चरक चीरिक आदि पाखंडियों द्वारा जो इन्द्र, स्कन्द, रुद्र, वैश्रवण, देव, नाग और यक्षादिकों की मूर्तियों का चंदन से लेपन, अभिषेक कराने के बाद वस्त्र से मूर्तिस्थ जल का पोंछना मंदिर में या उन मूर्तियों पर गुलाब जल का छिडकाव आदि करना ये सब कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यक है।

હાત સાફ કરે છે, સ્નાન કરે છે, સુગંધિત તેલ લગાવે છે, વગેરે આવશ્યક કાર્યો કરે છે ત્યારપછી રાજસભામા અથવા તો દેવકુળમા જાય છે તેમનુ મુખ ધોવુ વગેરે કામ લૌકિક-દ્રવ્ય આવશ્યક છે ચરક ચીરિક વગેરે પાખડીઓ વડે જે ઇન્દ્ર, સ્કન્દ, રૂદ્ર, શિવ, વૈશ્રવણ દેવ, નાગ અને યક્ષો વગેરેની મૂર્તિઓનુ ચદનથી અભિષેક કરાવ્યા બાદ વસ્ત્રથી મૂર્તિના પાણીને લૂછવુ, મદિરમા કે તે મૂર્તિઓ ઉપર ગુલાબજળનુ સિંચન વગેરે કરવુ આ બધુ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્યાવશ્યક છે આ પ્રમાણે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્યના ભેદથી આ

श्यकक्रियायुक्तस्य कस्यचित् काष्ठकर्मादिषु प्रतिकृतिः, द्रव्यावश्यकं च आवश्यकोपयोगशून्या देहादिक्रिया, भावावश्यकंतु उपयोगाभावेन चरणगुणरहितत्वेन च कर्मनिर्जराजनकत्वाभावादाराधनं जिनाज्ञा नास्ति, तस्मादेतत् त्रितयमावश्यकं धर्मपदवाच्य न भवतीति निश्चयादलक्ष्यमेव। लोकोत्तरिकद्रव्यावश्यक मत्र

इस प्रकार नाम, स्थापना और द्रव्य के भेद से यह आवश्यक तीन प्रकार का होता है। किसी गोपाल के पुत्र का "आवश्यक" इस प्रकार का कृतनाम सस्कार नाम आवश्यक है। आवश्यक क्रियाओं से युक्त किसी व्यक्ति की काष्ठ आदि में तदाकार रूप से या अतदाकाररूप से प्रतिकृतिकी कल्पना करना या उसे बनालेना यह स्थापना आवश्यक है। आवश्यक में उपयोग से शून्य प्राणी की जो भी आगम और नो आगम की अपेक्षा से क्रियाएँ है वे सब द्रव्य आवश्यक हैं। इन तीनों आवश्यकों मे उपयोग-भावरूप-आवश्यक के अभाव से तथा चारित्रगुण तदनुकूल प्रवृत्ति के आचरण से रहित होने से कर्मों की निर्जरा कराने में साधकपना नही है। अत जिनेन्द्रदेव ने इनके आराधन करने की आज्ञा प्रदान नही की है। धर्म को ही आराधन करने की उन्होंने आज्ञा दी है क्यों कि वही कर्मो की निर्जरा कराने में साधक है। इन तीनों में कर्मों की निर्जरा कराने का अभाव होने से धर्मस्वरूपता नही है। धर्मपद वाच्य भी ये नही हैं। इसीलिये ये तीनो धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य है, ऐसा समझना चाहिये। लोकोत्तरिक द्रव्य

આવશ્યક ત્રણ પ્રકારનુ હોય છે કોઈ ગોપાળના પુત્રનો 'આવશ્યક' આ રીતે કરેલો સસ્કાર નામ આવશ્યક છે આવશ્યક ક્રિયાઓથી યુક્ત કોઈ વ્યક્તિની કાષ્ઠ વગેરેમા તદાકાર રૂપથી કે અતદાકાર રૂપથી પ્રતિકૃતિની કલ્પના કરવી કે પ્રતિકૃતિનુ નિર્માણ કરવુ તે સ્થાપના આવશ્યક છે આવશ્યકમા ઉપયોગથી રહિત પ્રાણીની જે કઇપણ આગમ અને નો આગમની અપેક્ષાથી ક્રિયાઓ છે તે બધી દ્રવ્ય આવશ્યક છે આ ત્રણે આવશ્યકોમા ઉપયોગ ભાવ રૂપ આવશ્યકના અભાવથી તેમજ ચારિત્રગુણ તદનુકુળ પ્રવૃત્તિના આચરણ વગર થઈ જવાથી કર્મોની નિર્જરા કરાવવામા સાધકપણુ નથી તેથી જીનેન્દ્ર દેવે તેમના આરાધનની આજ્ઞા આપી નથી ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓ શ્રીએ આજ્ઞા આપી છે કેમકે ધર્મજ કર્મોની નિર્જરા કરાવવામા સાધક છે આ ત્રણેમા કર્મોની નિર્જરા કરાવવાનો અભાવ હોવાને કારણે ધર્મસ્વરૂપતા નથી એ ધર્મપદ વાચ્ય પણ નથી તેથી આ ત્રણે ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવાને કારણે તેના અલક્ષ્ય છે એમ સમજવુ જોઈએ સામાયિક વગેરે લોકો

चनोक्त सदपि जिनाज्ञाबाह्यै स्वच्छन्दविहारिभिर्मूलोत्तरगुणरहितै पट्कायनिरनु कम्पैरनुपयोगपूर्वकं क्रियमाण सामायिकादिकम् तच्च धर्मपदवाच्य न भवितुमर्हति, तत्रापि निर्जराजनकत्वाभावेन विधेयतया जिनाज्ञाया आभावात् ।

एवमेव-नामजिन' स्थापनाजिनस्तथा द्रव्यजिनश्च निर्जराजनकत्वाभावा दाराध्यत्वेन जिनाज्ञाया अभावात् । तदाराधन धर्मपदवाच्य न भवितुमर्हति ।

आवश्यक समायिक आदि है इनके करने का विधान यद्यपि प्रवचन शास्त्र में विहित है तो भी उसे जो धर्म का अलक्ष्य बताया गया है उसका कारण यह है कि ये जब जिनदेव की आज्ञा से बहिर्भूत बने हुए, स्वेच्छाचारी, मूलगुण और उत्तर गुणो से रहित एव पट्काय के जीवों की रक्षा करने में आसावधान मनुष्यो द्वारा अनुपयोगपूर्वक करने में आते हैं तब ये द्रव्य आवश्यकरूप से कहे जाते हैं। और इसीलिये ये धर्मपद के वाच्य नही हैं अर्थात् धर्मरूप नही हैं। जहा धर्मरूपता नही है वहा कर्मों की निर्जरा कारकत्व भी नही है। यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है। भगवान ने जो इस अवस्था में इन्हें विधेय नहीं कहा है उसका यही कारण है । अतः जिस प्रकार नाम आवश्यक, स्थापना आवश्यक और द्रव्य आवश्यक ये तीन निक्षेप आराध्यरूप से तीर्थंकर प्रभु ने अनविधेय कहे हैं, उसी प्रकार से नामजिन स्थापनाजिन तथा द्रव्यजिन भी आराध्य नही हैं। इनकी आराधना करने में जो धर्म की प्राप्ति होना कहते हैं या मानते हैं उन्हें जिन

तार द्रव्य आवश्यक छे प्रवचन शास्त्रमा एमना आचरणनु विधान विहित छे छताये एने जे धर्मना अलक्ष्य रूपमा बताववामा आव्यो छे तेनी मत लब ए छे के ज्यारे ते जीनदेवनी आज्ञाथी बहिभूर्त बनेला स्वेच्छाचारी, मूळगुण तेमज उत्तर गुणोथी रहित अने पटकाय जीवोनी रक्षा करवामा असावधान माणुसो वडे अनुपयोग पूर्वक आचरवामा आवे त्यारे ते द्रव्य आवश्यक रूपमा कहेवाय छे एथी ते धर्मपद वाच्य नथी एटले के धर्म रूप नथी ज्या धर्मरूपता नथी त्या कर्मोनी निर्जरा कारकता पण नथी आ सर्वमा य सिद्धान्त छे भगवाने जे आ अवस्थामा एमने विधेय कह्या नथी तेनु कारण पण ए ज छे एटला माटे जेम नाम आवश्यक, स्थापना आवश्यक अने द्रव्य आवश्यक आ त्रण निक्षेपोने आराध्य रूपथी तीर्थंकर प्रभुए अविधेय कह्या छे, तेमज नाम जिन, स्थापना जिन तेमज द्रव्यजिन पण आराध्य नथी एमनी आराधना करवामा जे धर्मनी प्राप्ति थवी बताववामा आवे छे के मानवामा आवे छे, तेमने जिन भगवाननी

एव च प्रतिमापूजनमपि धर्मलक्षणस्य लक्ष्यं न भवति, तत्र धर्मत्वाभाव निश्चयात्। 'मोक्षकामो जिनप्रतिमा पूजयेत्' इत्येवमर्हतो भगवत आज्ञायाः प्रवचनेऽनुपलब्धेः। धर्मविषये सर्वत्र भगवदाज्ञोपलभ्यते-दृश्यते हि आवश्यकार्थं भगव

भगवान की आज्ञा से बहिर्भूत ही समझना चाहिये। यदि इन निक्षेपों की या स्थापनानिक्षेप की आराधना करने से आराधक जीवों को धर्म का लाभ होता तो वे उनकी आराधना करने का भव्य जीवों को अव श्य २ उपदेश देते। इस प्रकार की स्वमनः कल्पित प्रवृत्ति से उनकी पूजा आदि करने में षट्काय के जीवों की कितनी विराधना होती है यह एक स्वानुभवगम्य बात है। अतः जहां आरंभ है वहां धर्म नहीं है। जहां धर्म नहीं है उसकी आराधना से कर्मो की निर्जरा भी नहीं हो सकती है। इस प्रकार से नाम स्थापना और द्रव्यजिन आदि तीन निक्षेप भी धर्म के लक्षण से शून्य होने से उसके अलक्ष्य माने गये हैं। जब स्थापना जिन ही उसका अलक्ष्यभूत है, तो फिर जिन की प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा आदि कार्य भी धर्मलक्षण से शून्य होने से वह भी उसका अलक्ष्य है ऐसा निश्चित हो जाता है भगवान ने इस प्रकार की आज्ञा शास्त्र में कहीं भी नही दी है "मोक्षकामो जिन प्रतिमा पूजयेत्" कि मुक्ति की अभिलाषा वाला प्राणी जिन प्रतिमा की पूजा करें। धर्मकी आराधना करने की ही उन्हों ने आगम में आज्ञा

આજ્ઞાથી બહિર્ભૂત જ સમજવા જોઈએ આ નિક્ષેપોની કે સ્થાપના નિક્ષેપોની આરાધના કરવાથી આરાધક જીવોને ધર્મનો લાભ થતો હોય ત્યારે તો તેઓ તેમની આરાધના કરવા માટે ભવ્ય જીવોને ચોક્કસ ઉપદેશ આપતા આ રીતે પોતાના મનથી જ કલ્પના કરીને તેમની પૂજા વગેરે કરવામા ષટ્કાય જીવોની કેટલી બધી વિરાધના હોય છે તે જાતેજ અનુભવવા જેવી વાત છે એટલા માટે જ્યા આરભ છે ત્યા ધર્મ તો નથી જ અને જ્યા ધર્મ નથી તેની આરા ધનાથી કર્મોની નિર્જરા પણ થઈ શકે તેમ નથી આ રીતે નામ સ્થાપના અને દ્રવ્ય જિન વગેરે ત્રણ નિક્ષેપો પણ ધર્મના લક્ષણથી રહિત હોવા બદલ તેને અલક્ષ્ય માનવામા આવ્યા છે જ્યારે સ્થાપના જિન જ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે, ત્યારે જિનની પ્રતિમા બનાવીને તેની પૂજા વગેરે કાર્યો પણ ધર્મલક્ષણથી રહિત હોવાથી તે પણ તેના માટે અલક્ષ્યરૂપ છે આવી ચોક્કસ ખાત્રી થઇ જાય છે ભગવાને આ જાતની આજ્ઞા શાસ્ત્રમા કોઈ પણ સ્થાને કરી નથી "मोक्षकामो जिनप्रतिमा पूजयेत्" કે મોક્ષની ઈચ્છા રાખનારો પ્રાણી જિન પ્રતિમાનુ પૂજન કરે ધર્મની આરાધના કરવાની જ તેઓશ્રીએ આજ્ઞા

दाज्ञा, दर्शनार्थं ज्ञानार्थं च भगवदाज्ञा पुनरहिंसासंयमतपःसंवरादिविधिरपि शास्त्रे प्रदर्शितः परंतु प्रतिमापूजनार्थमाज्ञा क्वापि नोपलभ्यते शास्त्रेषु, प्रत्युत कुप्रावचनिकद्रव्यावश्यकलक्षणाक्रान्तत्वेन प्रतिमापूजनं जैनागमविरुद्धमिति सूचितम्। इन्द्रादिपूजनं हि कुप्रावचनिकस्य नोआगमतो द्रव्यावश्यकस्योदाहरणतया भगवता प्रदर्शितम्। तेन सर्वं प्रतिमापूजनं कुप्रावचनिक तादृशद्रव्यावश्यके भगवता निक्षिप्तमिति सुस्पष्टं प्रतीयते। षट्कायहिंसासाध्यायाः पूजाया

प्रदान की है जैसे–आवश्यक, दर्शन और ज्ञान की आराधना प्रत्येक मोक्षाभिलाषी भव्य जन को करना चाहिये–इस प्रकार के आवश्यक आदि की आराधना करने का स्पष्ट उल्लेख आगमों में मिलता है–तथा जिस प्रकार उन्होंने अहिंसा, संयम, तप और संवर आदि की विधि शास्त्रों में प्रदर्शित की है–उस प्रकार न तो उन्होंने प्रतिमा पूजन की कहीं न आज्ञा प्रदान की है और न उस की विधि ही कही है कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक के लक्षण से युक्त होने से प्रत्युत प्रतिमापूजन को जैन आगम से विरुद्ध ही सूचित किया है। कुप्रावचनियों द्वारा मान्य इन्द्रादिकों के पूजन को भगवान नो आगम की अपेक्षा से द्रव्य आवश्यक के उदाहरण रूप में प्रकट किया है इससे ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि उन्होंने अन्य समस्त प्रतिमा पूजन को भी इसी कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक की तरह द्रव्य आवश्यक में रखा है। प्रवचन में कुत्सितता–खोटापन कुशास्त्रता हिंसादिक साध्य पूजा आदि कार्यो

કરી છે જેમ આવશ્યક, દર્શન અને જ્ઞાનની આરાધના દરેકે દરેક મોક્ષ ઇચ્છનારા ભવ્ય જનને કરવી ઘટે છે જેમ આવશ્યક વગેરેની આરાધના કરવા વિષેનો ઉલ્લેખ આગમોમાં મળે છે, તેમજ જેમ તેમણે અહિંસા, સંયમ, તપ અને સંવર વગેરેની વિધિ શાસ્ત્રોમાં બતાવી છે તેમ તેમણે કોઈ પણ સ્થાને પ્રતિમા પૂજનની આજ્ઞા કરી નથી અને તેની વિધિ પણ બતાવી નથી પ્રતિમા પૂજાને કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકના લક્ષણથી યુક્ત હોવા બદલ જૈન આગમોથી વિરુદ્ધ જ બતાવવામાં આવી છે કુપ્રાવચનીઓ વડે માન્ય ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને ભગવાને આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્ય આવશ્યકના ઉદાહરણ રૂપમાં બતાવ્યું છે એથી આ વાત સ્પષ્ટ સમજી શકાય તેમ છે કે તેમણે બીજી પણ બધી પ્રતિમા પૂજાને પણ આ કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યકની જેમ દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ સ્થાન આપ્યું છે પ્રવચનમાં કુત્સિતતા કુશાસ્ત્રતા હિંસા વગેરે સાધ્ય પૂજા વગેરે કાર્યોની પુષ્ટિ કરવાથી જ સંભવે છે બીજા ચરદ

विधायकतया प्रवचनस्य कुत्सितत्वं, तेनैव चेन्द्रादिपूजनस्य कुमावचनिकत्वं भवति । एवं प्ररूपयतो भगवतोऽर्हतः प्रतिमाया पूजनस्य प्रसङ्ग एव तदानीं नासीत्-हिंसामयत्वात्पूजनस्य, तेन प्रवचने भगवता प्रतिमापूजनप्रतिषेधो विशिष्य नोक्त । प्रतिषेधवाक्य हि तदैव सार्थकं, यदाप्रतिषेध्यस्पोऽर्थः कथचित् प्रसक्तो भवति । जिनप्रतिमापूजन हि न तावल्लौकिकद्रव्यावश्यक, नापि लोकोत्तरिक द्रव्यावश्यक, जिनो हि लोकोत्तरो देवस्तत्पूजनमपि स्याच्चेत् लोकोत्तरिकमेव

की पुष्टि करने से ही आती है। अन्य चरक आदि समस्त प्रवचनों में इन्ही हिंसादिक कर्मों के करने का विधान स्पष्टरूप से पाया जाता है। इसीलिये ये कुप्रवचन माने गये हैं। इनके द्वारा प्रदर्शित इन्द्रादिक पूजन भी इसी निमित्त से कुप्रावचनिक कहा गया है। जैन शास्त्रों में प्रतिमापूजन के निषेध का स्पष्ट उल्लेख जो देखने में नहीं आता है, उसका यह कारण है कि जिस समय प्रभु ने इन्द्रादिक के पूजन का कुप्रावचनिक रूप मानकर निषेध किया उस समय उनके समक्ष अर्हंत की प्रतिमा के पूजन का प्रसग ही नहीं था, नही तो इसका भी वे स्वतन्त्र रूप से निषेध करते-दूसरे-प्रतिमा पूजन कार्य हिंसामय कार्य है-भगवान ने धर्म के लिये भी हिंसा करने का आदेश नही दिया है अत' जब वीतराग शास्त्र मे हिंसा का विधान ही नही है-तब इसका भी विधान कैसे वे करते प्रतिषेध वाक्य उसी समय सार्थक माना जाता है जब प्रतिषेध्यरूप पदार्थ किसी भी रूप से प्रसक्त होता है।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમા એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનુ વિધાન સ્પષ્ટ રૂપ જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનુ પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચનિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ જોવામા આવતો નથી તેનુ કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતત્ર રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનુ કાર્ય હિંસા મય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિષેનુ વિધાન જ નથી ત્યારે આનુ વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિષેધ વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક છે જ્યારે પ્રતિષેધ્યરૂપ પદાર્થ કોઇ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે

स्यात् लोके तु तस्य समावेशानर्हतया लौकिकत्वासभवात् । प्रवचने भगवता यत् सामायिकादि षड्विधावश्यक प्ररूपित तदेव स्वच्छन्दविहारिभिः षट्कायहिंसकैर्जिनाज्ञाबाह्यै क्रियमाण लोकोत्तरिक-द्रव्यावश्यकम् । तत्र षड्विधावश्यके जिनप्रतिमा पूजनस्य प्रवेशात् तस्य लोकोत्तरिकद्रव्यावश्यके समावेशो न सभवति ।

यह प्रतिमापूजनरूप कार्य न लौकिक द्रव्य अवश्यक है और न लोकोत्तर द्रव्य अवश्यक ही है ।

शका—प्रतिमा पूजन लौकिक द्रव्य आवश्यक नही है यह तो आप का कहना ठीक है, क्यों कि यह लौकिक द्रव्य आवश्यको से सर्वथा भिन्न है । परन्तु इसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक मानने में आपको क्या विवाद है । क्यो कि प्रभु स्वय लोकोत्तर देव माने जाते अतः उनका पूजन भी लोकोत्तरिक ही मानना चाहिये ?

उत्तर—प्रवचन में भगवान जो सामायिक आदि छह प्रकार के आवश्य कों का वर्णन किया है-वे जब जिन आज्ञा बाह्य-स्वच्छन्दविहारी और षट्काय की विराधना करने में निरत अनुपयुक्त पुरुषों द्वारा करने में आते हैं लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक रूप से प्रतिपादित किये गये हैं । इन षट्प्रकार के आवश्यकों में प्रतिमापूजन का कोई अधिकार ही नही है । अतः इसे कैसे लोकोत्तरिक आवश्यक माना जा सकता है ।

પૂજનરૂપ કાર્ય માટે ન તો લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને ન તો લોકોત્તર દ્રવ્ય આવશ્યક છે

શંકા—પ્રતિમા પૂજન લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યક નથી તમારી આ વાત તો ઉચિત છે કેમ કે આ લૌકિક દ્રવ્ય આવશ્યકોથી સંપૂર્ણપણે ભિન્ન છે પણ એને લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક માનવામા તમને શો વાંધો છે ? કેમકે પ્રભુ જાતે લોકોત્તર દેવ મનાય છે ત્યારે તેમનુ પૂજન પણ લોકોત્તરિક જ માનવુ જોઇએ ?

ઉત્તર—પ્રવચનમા ભગવાને જે સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યકોનુ વર્ણન કર્યું છે તેઓ જ્યારે જિન-આજ્ઞા બાહ્ય સ્વચ્છદ વિહારી અને ષટ્કાયની વિરાધના કરવામા નિરત અનુપયુક્ત પુરુષો વડે આચરવામા આવે છે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક રૂપથી પ્રતિપાદિત કરવામા આવે છે આ છ જાતના આવશ્યકોમા પ્રતિમા પૂજનનો કોઇ અધિકાર જ નથી એટલા માટે લોકોત્તરિક આવશ્યક કેવી રીતે માની શકાય ?

विधायकतया प्रवचनस्य कुत्सितत्वं, तेनैव चेन्द्रादिपूजनस्य कुप्रावचनिकत्वं भवति। एवं प्ररूपयतो भगवतोऽर्हतः प्रतिमायाः पूजनस्य प्रसङ्ग एव तदानीं नासीत्-हिंसामयत्वात्पूजनस्य, तेन प्रवचने भगवता प्रतिमापूजनप्रतिषेधो विशिष्य नोक्त। प्रतिषेधवाक्य हि तदैव सार्थकं, यदाप्रतिषेध्यरूपोऽर्थः कथंचित् प्रसक्तो भवति। जिनप्रतिमापूजन हि न तावल्लौकिकद्रव्यावश्यकं, नापि लोकोत्तरिक द्रव्यावश्यक, जिनो हि लोकोत्तरो देवस्तत्पूजनमपि स्याच्चेत् लोकोत्तरिकमेव

की पुष्टि करने से ही आती है। अन्य चरक आदि समस्त प्रवचनों में इन्हीं हिंसादिक कर्मों के करने का विधान स्पष्टरूप से पाया जाता है। इसीलिये ये कुप्रवचन माने गये हैं। इनके द्वारा प्रदर्शित इन्द्रादिक पूजन भी इसी निमित्त से कुप्रावचनिक कहा गया है। जैन शास्त्रों में प्रतिमापूजन के निषेध का स्पष्ट उल्लेख जो देखने में नहीं आता है, उसका यह कारण है कि जिस समय प्रभु ने इन्द्रादिक के पूजन का कुप्रावचनिक रूप मानकर निषेध किया उस समय उनके समक्ष अर्हंत की प्रतिमा के पूजन का प्रसंग ही नहीं था, नहीं तो इसका भी वे स्वतन्त्र रूप से निषेध करते-दूसरे-प्रतिमा पूजन कार्य हिंसामय कार्य है-भगवान ने धर्म के लिये भी हिंसा करने का आदेश नहीं दिया है अतः जब वीतराग शास्त्र मे हिंसा का विधान ही नहीं है-तब इसका भी विधान कैसे वे करते प्रतिषेध वाक्य उसी समय सार्थक माना जाता है जब प्रतिषेध्यरूप पदार्थ किसी भी रूप से प्रसक्त होता है।

ચીરિક વગેરે બધા પ્રવચનોમા એ જ હિંસા વગેરે કર્મોને કરવાનુ વિધાન સ્પષ્ટ રૂપ જોવામા આવે છે એથી આ બધા કુપ્રાવચનિક માનવામા આવે છે એમના વડે પ્રદર્શિત ઇન્દ્ર વગેરેનુ પૂજન પણ આ કારણને લીધે જ કુપ્રાવચનિક કહેવાય છે જૈન શાસ્ત્રોમા પ્રતિમા પૂજનના નિષેધનો સ્પષ્ટપણે જે ઉલ્લેખ જોવામા આવતો નથી તેનુ કારણ પણ એ છે કે જ્યારે પ્રભુએ ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનને કુપ્રાવચનિક રૂપ માનીને નિષેધ કર્યો ત્યારે તેમની સામે અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજનની વાત જ ન હતી, નહિતર તેઓશ્રી એ તેનો પણ સ્વતંત્ર રૂપથી નિષેધ કર્યો હોત બીજી વાત એ છે કે પ્રતિમા પૂજનનુ કાર્ય હિંસા મય છે, ભગવાને ધર્મના માટે પણ હિંસા કરવાની આજ્ઞા કરી નથી એટલા માટે જ્યારે વીતરાગ શાસ્ત્રમા હિંસા વિષેનુ વિધાન જ નથી ત્યારે આનુ વિધાન પણ તેઓ કેવી રીતે કરે પ્રતિષેધ વાક્ય ત્યારે જ સાર્થક ગણાય છે જ્યારે પ્રતિષેધ્યરૂપ પદાર્થ કોઇ પણ રૂપથી પ્રસક્ત હોય છે

चित्रादय इति प्ररूपितम् । एवं च जिनपूजन-कुप्रावचनिक-नोआगमतो द्रव्यावश्यक प्रतिमाया क्रियमाणत्वात् , इन्द्रादिपूजनवत् ,इत्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक द्रव्याऽऽवश्यकतया धर्मपदवाच्य न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रवचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप से नहीं किया गया है, तो भी कामपृच्छक प्राणियों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में होती हुई पूजा भी कुप्रावचननि की है ।

इस प्रकार हम अनुमानसे कह सकते हैं । उसमें प्रवचनमें पूजाके आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य हैं वे सब गृहीत हुए हैं । इस प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है । इसलिये वह कुप्रावचनिक है । इस प्रकार हम कहते हैं । इस कथन से यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी हैं । अत जिन पूजन भी प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नहीं है यह बात स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान प्रयोग इस प्रकार से करना चाहिए ।

ઉત્તર —જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનુ વિધાન સ્વતંત્ર રૂપમા કર વામા આવ્યુ નથી છતાય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણુસના મૃત નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામા આવેલી પૂજા પણ કુપ્રા વચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનમા પૂજાના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજાના આધારભૂત જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનુ ગ્રહણ થયુ છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજાનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે એટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ વ્યપ્તિસિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમા જે જે પૂજાઓ કરવામા આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે એટલા માટે જિન પૂજા પણ પ્રતિમામા આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ થઈ જાય છે આમા અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે

कुप्रवचनेऽर्हत पूजाविधान विशिष्य नास्ति तथापि नागपूरकमृतमनुष्यपूजनवत् तस्य पूजा प्रतिमायां क्रियमाणा कुप्रावचनिकीति वक्तुं शक्यते । तस्मिन् कुप्रवचने हि पूजाधारनिर्णयावसरे सामान्यतः पूज्यस्य सर्वस्यापि पूजाधारः प्रतिमा

भावार्थ-शंकाकार ने प्रतिमापूजन को लोकोत्तरिक आवश्यक मानकर द्रव्य आवश्यक में जो उसका समावेश करना चाहा है सो उसकी इस आशंका का समाधान करते हुए सूत्रकारने यह कहा है कि जिन आज्ञा बाह्य एवं सामायिक आदि में अनुपयुक्त पुरुषो द्वारा किये गये सामायिक आदि षट् विध आवश्यक कार्य ही लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में परिगणित किये गये हैं। इनमें प्रतिमा पूजा को कोई संबंध ही नहीं है-प्रतिमा पूजा षट् विध आवश्यक कार्यो में परिगणित ही नहीं हुई है। अतः उसका वहां पर किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होने से उसे लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक में नहीं गिना जा सकता है अतः इसका समावेश केवल कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक में ही हुआ है ऐसा मानना चाहिये।

शंका—कुप्रवचन में इन्द्रादिकों की पूजा करने के विधान की तरह प्रतिमा पूजा का विधान तो पाया नहीं जाता है फिर आप इसे कुप्रावचनिक में अन्तर्भूत कैसे कह सकते हैं ?

ભાવાર્થ —શંકાકારે પ્રતિમા પૂજનને લોકોત્તરિક આવશ્યક માનીને દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેને સમાવેશ કરવાની જે ઈચ્છા બતાવી છે તેની તે શંકાનું સમાધાન કરતા સૂત્રકારે આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે જિન આજ્ઞા બાહ્ય અને સામાયિક વગેરેમાં અનુપયુક્ત પુરુષો વડે કરવામાં આવેલા સામાયિક વગેરે છ જાતના આવશ્યક કાર્યો જ લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં પરિગણિત કરવામાં આવ્યા છે એનાથી પ્રતિમા પૂજનો કોઈ સંબંધ જ નથી પ્રતિમા પૂજા ષટ્વિધ આવશ્યક કાર્યોમાં પરિગણિત જ થઈ નથી એટલા માટે ત્યાં તેનો કોઈ પણ રીતે સંબંધ નહિ હોવાથી લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકમાં તેની ગણના થઈ શકે તેમ નથી એથી ફક્ત દ્રવ્ય આવશ્યકમાં જ થયો છે આમ માની લેવું જોઈએ

શંકા —કુપ્રવચનમાં ઈન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવાના વિધાનની જેમ પ્રતિમા પૂજાનું વિધાન તો મળતું નથી ત્યારે તમે એને કુપ્રવાચનિકમાં કેવી રીતે સમાવિષ્ટ કરી શકો ?

चित्रादय इति प्ररूपितम् । एवं च जिनपूजन-कुप्रावचनिक-नोआगमतो द्रव्यावश्यक प्रतिमायां क्रियमाणत्वात् , इन्द्रादिपूजनवत् ,इत्यनुमानेनापि कुप्रावचनिक द्रव्यावश्यकतया धर्मपदवाच्य न भवतीति ।

उत्तर—यद्यपि कुप्रवचन में प्रतिमा पूजा का विधान स्वतन्त्ररूप से नहीं किया गया है, तो भी कामपूरक प्रणियों के मनोरथ को पूर्ण करने वाले-मनुष्य के मृत-निर्जीव देह की पूजा की तरह प्रतिमा में होती हुई पूजा भी कुप्रावचननि की है ।

इस प्रकार हम अनुमानसे कह सकते हैं । उसमें प्रवचनमें पूजाके आधार का निर्णय करते समय सामान्यरूप से पूजा के आधारभूत जितने भी प्रतिमा चित्र आदि पूज्य है वे सब गृहीत हुए है । इस प्रकार प्रतिमा की सर्व पूजा का आधार प्रतिमा और चित्र आदि है । इसलिये वह कुप्रावचनिक है । इस प्रकार हम कहते है । इस कथन से यह व्याप्ति सिद्ध होती है कि इन्द्रादिक पूजन की तरह प्रतिमा में जो जो पूजाएँ की जाती हैं वे सब कुप्रावचनिकी है । अत जिन पूजन भी प्रतिमा में किये जाने पर नोआगम की अपेक्षा से कुप्रावचनिक द्रव्य आवश्यक ही है, और इसीलिये वह धर्मपद का वाच्य नहीं है यह बात स्पष्टरूप से सिद्ध हो जाती है इसमें अनुमान पयोग इस प्रकार से करना चाहिए ।

ઉત્તર —જો કે કુપ્રવચનમા પ્રતિમા પૂજનનુ વિધાન સ્વતંત્ર રૂપમા કરવામા આવ્યુ નથી છતાય માનવીના મનોરથોને પૂર્ણ કરનારા-માણસના મૃત નિર્જીવ શરીરની પૂજાની જેમજ પ્રતિમાની કરવામા આવેલી પૂજા પણ કુપ્રાવચનિકી છે આમ અમે અનુમાનથી કહી શકીએ છીએ તે કુપ્રવચનમા પૂજાના આધારનો નિર્ણય કરતી વખતે સામાન્ય રૂપથી પૂજાના આધારભૂત જેટલા પ્રતિમા ચિત્ર વગેરે પૂજ્ય છે તેઓ સર્વેનુ ગ્રહણુ થયુ છે

આ રીતે પ્રતિમાની સર્વ પૂજાનો આધાર પ્રતિમા અને ચિત્ર વગેરે છે એટલા માટે તે કુપ્રાવચનિક છે આમ અમે કહી શકીએ છીએ આ કથનથી એ વ્યાપ્તિસિદ્ધ થાય છે કે ઇન્દ્ર વગેરેના પૂજનની જેમ પ્રતિમાઓમા જે જે પૂજાઓ કરવામા આવે છે તેઓ સર્વે કુપ્રાવચનિકી છે એટલા માટે જિન પૂજા પણ પ્રતિમામા આવતી હોવાથી આગમની અપેક્ષાથી કુપ્રાવચનિક દ્રવ્ય આવશ્યક છે અને એથી તે ધર્મપદ વાચ્ય નથી આ વાત સ્પષ્ટપણે સિદ્ધ થઈ જાય છે આમા અનુમાનપ્રયોગ આ પ્રમાણે કહી શકાય તેમ છે

अथ भावावश्यकमुच्यते-विवक्षितक्रियानुभवयुक्तो योऽर्थ स भावः, भाव तद्वतोरभेदोपचाराद् भावः। यथा-ऐश्वर्यरूपायाइन्दनक्रियाया अनुभवाद् इन्द्रो भाव उच्यते। भावश्चासौ आवश्यकं च, भावमाश्रित्य वा आवश्यकं भावावश्यकम्।

" जिनपूजनं नो आगमतो कुप्रावचनिकं द्रव्यावश्यकं प्रतिमायां क्रियमाणत्वात् इन्द्रादिपूजनवत् "। अतः इस समस्त पूर्वोक्त कथन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वह प्रतिमापूजन कार्य लोकोत्तरिक द्रव्य आवश्यक रूप से भी प्रसक्त होता तो भगवान् इसका अवश्य प्रतिषेध करते।

अथ भावावश्यकमुच्यते - अब भाव आवश्यक क्या है इसका कथन सूत्रकार करते हैं-वर्तमान समय में उस विवक्षितरूप पर्याय से युक्त द्रव्य का नाम भाव है। भाव यद्यपि वर्तमान क्रिया रूप माना गया है, फिर भी यहां पर उस क्रिया से युक्त द्रव्य को जो भाव कहा है उसका कारण द्रव्य और पर्याय का अभेद संबध है। भगवान द्रव्य के विना नहीं रह सकता है। भाव द्रव्य की एक पर्याय है, वह निराश्रय होती नहीं है-अतः जिस द्रव्य के आश्रय वह रहेगी उन दोनो में अभेदोपचार से उस पर्याय से उपलक्षित उस द्रव्य को ही भाव कह दिया है। जिस प्रकार ऐश्वर्यरूप इदन (देदीप्यमान होना)

" जिनपूजनं नो आगमतो कुप्रावचनिकं द्रव्यावश्यकं प्रतिमायां क्रियमाण त्वात् इन्द्रादिपूजनवत् "

એટલા માટે આ પૂર્વોકત કથનથી આ વાત સ્પષ્ટ થાય છે કે તે પ્રતિમા પૂજન કાર્ય લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યક પણ નથી જો તે લોકોત્તરિક દ્રવ્ય આવશ્યકરૂપે પણ પ્રસક્ત હોત તો ભગવાન તેનો ચોક્કસ પ્રતિષેધ કરત

' अथ भावावश्यकमुच्यते ' —હવે આવશ્યક શુ છે એનુ સ્પષ્ટીકરણ સૂત્રકાર કરે છે-વર્તમાન સમયમા તે વિવક્ષિત રૂપ પર્યાયથી યુકત દ્રવ્યનુ નામ ભાવ છે જો કે ભાવ વર્તમ ન ક્રિયારૂપ માનવામા આવ્યો છે, છતાય અહીં તે ક્રિયાથી યુક્ત દ્રવ્યને જ ભાવ બતાવ્યો છે તેનુ કારણ દ્રવ્ય અને પર્યાયનો અભેદ સબધ છે ભાવ ભગવાન દ્રવ્ય વગર રહી શકતો નથી ભાવ દ્રવ્યની એક પર્યાય છે, તે નિરાશ્રય હોતીજ નથી એથી જે દ્રવ્યના આશ્રયે તે રહેશે તેઓ બનેમા અભેદોપચારથી તે પર્યાયથી ઉપલક્ષિત તે દ્રવ્યને જ ભાવ કહી દીધો છે જેમ ઐશ્વર્ય ઇદન (દેદીપ્યમાન થવુ) ક્રિયાના અનુભ

तद् द्विविधम्- (१) आगमत=आगममाश्रित्य, (२) नोआगमतः=आगमाभावमाश्रित्य।

आगमतो भावावश्यकमाह—

" से किं त आगमओ भावावस्सय ? आगमओ भावावस्सय जाणए उवउत्ते, से त आगमओ भावावस्सय "। (अनुयोग०)

अथ किं तदागमतो भावावश्यकम् ?, उत्तरमाह-" ज्ञायक उपयुक्त " आगमतो भावावश्यकम्।

अयमर्थः-आवश्यकपदार्थज्ञस्तज्जनितसवेगेन विशुध्यमानपरिणामस्ता चोपयुक्त साध्वादिरागमतो भावावश्यकम्, अत्रावश्यकार्थज्ञानरूपस्यागमस्यात्र

क्रिया के अनुभव से उपलक्षित शचीपति भाव इन्द्र कहा जाता है। इसी प्रकार जो आवश्यक रूप क्रिया के अनुभवसे युक्त है वही आत्मा भावावश्यक कहलाता है। भावरूप जो आवश्यक है वह, अथवा भाव को आश्रय करके जो आवश्यक है वह भावावश्यक है।

यह भाव आवश्यक भी दो प्रकार का है-१ आगम की अपेक्षा भाव आवश्यक और दूसरा नो आगम की अपेक्षा भाव आवश्यक। इनमें " ज्ञायक' उपर्युक्त' आगमतो भावावश्यक " ज्ञायक उपयुक्त आत्मा आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक माना गया है। आवश्यकरूप पदार्थ का जो ज्ञाता है उसका नाम ज्ञायक है। आवश्यकरूप पदार्थ के ज्ञान से जनित सवेग द्वारा विशुद्ध हुए परिणामों का नाम उपयोग है। इस उपयोग से विशिष्ट जो साधु आदि जन हैं वे आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं। क्यों कि इनमें आवश्यकरूप पदार्थ

વથી ઉપલક્ષિત શચીપતિ ભાવ ઇન્દ્ર કહેવાય છે તેમજ જે આવશ્યકરૂપ ક્રિયાના અનુભવથી યુક્ત છે તે આત્મા ભાવાવશ્યક કહેવાય છે ભાવરૂપ જે આવશ્યક છે તે અથવા ભાવને આશ્રય કરીને જે આવશ્યક છે તે ભાવાવશ્યક છે

આ ભાવ આવશ્યક પણ બે પ્રકારનો છે-૧, આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક અને ૨, નો આગમનની અપેક્ષા ભાવ આવશ્યક એમનામા "ज्ञायक उपयुक्त आगमतो भावावश्यक" જ્ઞાયક ઉપયુક્ત આત્મા આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક માનવામા આવ્યો છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થનો જે જ્ઞાતા છે તેનુ નામ જ્ઞાયક છે આવશ્યકરૂપ પદાર્થના જ્ઞાનથી જનિત સવેગવડે વિશુદ્ધિ પામેલા પરિણામોનુ નામ ઉપયોગ છે આ ઉપયોગથી વિશિષ્ટ જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેઓ આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે કેમકે તેઓમા આવ૦

सत्वात्, भावावश्यकता चावश्यकार्थज्ञानजनितोपयोगपरिणामसत्वाद्भा-माश्रित्यावश्यकमिति व्युत्पत्तेः । इदमुक्तं भवति आवश्यकार्थगस्य आवश्यकोपयोगपरिणाम आगमतो भावावश्यकं, साध्वादिस्तु तादृशपरिणामसत्वादागमतो भावावश्यकमुच्यते । इदमावश्यकोपयोगपरिणामरूप भावावश्यकं धर्मपदवाच्यं, श्रुतधर्मान्तर्गतत्वात्, अत्र जिनाज्ञायाः सत्वात् ।

नोआगमतो भावावश्यकं त्रिविधं-लौकिकं, कुप्रावचनिकं, लोकोत्तरिकं चेति लौकिकं भावावश्यकं पूर्वाह्णे भारतस्य वाचनं श्रवणं वा, अपराह्णे रामायणस्य

के ज्ञानरूप आगम का सद्भाव पाया जाता है। इसलिये साधु आदि जनों में आगम की अपेक्षा से आवश्यकता और इस आवश्यक के अर्थ ज्ञान से जनित उपयोगरूप परिणामों की विशिष्टता होने से भाव रूपता आती है। अतः " भाव को आश्रित करके जो आवश्यक है वह भाव आवश्यक है " यह कथन सुसंगत हो जाता है

भावार्थ-"आवश्यक" इस पद के अर्थज्ञान से विशिष्ट तथा तद नुकूल उपयोग परिणति संपन्न आत्मा ही आगम की अपेक्षा से भावावश्यक कहा गया है। ये भावावश्यक साधु आदि हैं। क्यों कि ये ही उस प्रकार की परिणति वाले होते हैं। अतः श्रुतधर्म के अन्तर्गत होने से यह भावावश्यक ही धर्म पद का वाच्य कहा गया है और ऐसे ही धर्म की आराधना करने की भगवानने आज्ञा प्रदान की है।

नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक तीन प्रकार का माना गया है। (१) लौकिक (२) कुप्रावचनिक और लोकोत्तरिक। पूर्वाह्न में

श्यकरूप पदार्थना ज्ञानरूप आगमनो सद्भाव मळे छे एटला माटे साधु वगेरे लोकोमा आगमनी अपेक्षाथी आवश्यकता अने आ आवश्यकताना अर्थ ज्ञानथी जनित उपयोगरूप परिणामोनी विशिष्टता होवाथी भावरूपता आवे छे एटला माटे " भावने आश्रित करीने जे आवश्यक छे ते भाव आवश्यक छे " आ कथ सुसगत थई पडे छे

भावार्थ —" आवश्यक " आ पदना अर्थ ज्ञानथी विशिष्ट तेमज तद नुकूळ उपयोग परिणुति सपन्न आत्मा ज आगमनी अपेक्षाए भाव आवश्यक साधु वगेरे छे केमके ए लोको ज आ जातनी परिणुतिवाळा होय छे एथी श्रुतधर्मना अतगत होवा बदल आ भावावश्यक ज धम पदवाच्य कहेवामा आव्यो छे अने आ जातना धर्मनी आराधना करवानी भगवाने पण आज्ञा करी छे

नो आगमनी अपेक्षाए भाव आवश्यकना त्रण प्रकारो छे-(१) लौकिक (२) कुप्रावचनिक (३) अने लोकोत्तरिक पूर्वाह्नमा भारतनु वा श्रवण

वाचनं श्रवण वा । लोके हि भारतस्य वाचन श्रवण पूर्वाह्ने एव क्रियमाणं दृश्यते, तथा रामायणस्य वाचन श्रवणमपराह्न एव क्रियमाणं दृश्यते, वैपरीत्ये दोषदर्शनात् । ततश्चेत्थ लोकेऽवश्यकरणीयतयाऽऽवश्यकत्व तद्वाचकस्य श्रोतुश्च तदर्थोपयोगपरिणामसत्त्वाद् भावत्व, तद्वाचक पुस्तकपत्रादिपरावर्तनरूपया हस्ताभिनयरूपया च क्रियया युक्तो भवति, श्रोतापि च भावसयतत्व–करसंपुटीकरणादि

भारत का वाचना अथवा सुनना, अपराह्न में रामायण का वाचना या सुनना ये सब लौकिक भाव आवश्यक हैं । लोक में भारत का वाचना अथवा सुनना पूर्वाह्नमें ही किया जाता है । रामायणका वाचन और श्रवण अपराह्न में ही होता हुआ देखा जाता है । इससे विरुद्ध प्रवृत्ति करने से अनेक प्रकार के दोषों का भाजन बनना पडता है, इस प्रकार लोक में भारतादिक ग्रन्थों का वाचना आदि कार्य नियमित समय में अवश्य करने योग्य होने की वजह से आवश्यक रूपमें माना गया है । अतः इसमें इस प्रकार से आवश्यकपना आ जाता है । तथा इनके वाचने वालो मे या सुनने वालो में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम के सद्भाव से भावरूपता आती है । क्यों कि जबतक उनके वाचने वाले में उनके अर्थ के प्रति उपयोगात्मक परिणाम की जागृति नहीं होगी तब तक वे उन पुस्तकों के पत्रों आदि का परावर्तन करने रूप क्रिया और श्रोताओ को अनेक अर्थ की संगति बैठाने के लिये हस्त आदि के सचालनरूप अभिनय क्रिया का उपयोग ही

અપરાહ્‌ણમા રામાયણનુ વાચન કે શ્રવણ આ બધુ લૌકિક ભાવ આવશ્ય છે લોકમા ભારતનુ વાચન અથવા તો શ્રવણ પૂર્વાહ્‌ણમા જ કરવામા આવે છે રામાયણનુ વાચન અને શ્રવણ અપરાહ્‌ણમા જ થતુ જોવામા આવે છે એથી વિરુદ્ધ આચરણ કરવાથી માણસ ઘણી જાતના દોષોને પાત્ર થઈ પડે છે આ પ્રમાણે ભારત વગેરે ગ્રથોનુ વાચન વગેરે કાર્ય નિયમિત સમયમા આવશ્યક કરવા યોગ્ય હોવા બદલ આવશ્યક રૂપમા માનવામા આવે છે એથી આમા આ રીતે આવશ્યકપણુ આવી જાય છે તેમજ એમનુ વાચન કરનારાઓમા તેમના તરફ ઉપયોગાત્મક પરિણામના સદ્‌ભાવથી ભાવરૂપતા આવે છે કેમકે જ્યાસુધી તેમનુ વાચન કરનારાઓમા તેમના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગાત્મક પરિણામની જાગૃતિ થશે નહિ, ત્યા સુધી તેઓ તે પુસ્તકના પત્રો વગેરેના પરાવર્તન કરવારૂપ ક્રિયા અને શ્રોતાઓના માટે અનેક જાતના અર્થની સગતિ બેસાડવા માટે હાથ વગેરેના હલનચલનરૂપ અભિનય ક્રિયા ઉપયોગ જ કેવી રીતે કરી શકે.

क्रियावान् भवति, एवं तयोः क्रियावत्त्वेन नोआगमत्वं, "किरियाऽऽगमो नहोइ" इति वचनात्। क्रियारूपे देशे आगमाभावाद् नोआगमत्वमपि, अत्र नो शब्दस्य देशनिषेधबोधकत्वात्। लोके भारतादावागमत्वं व्यवह्रियते, तस्माद्देशत आगमोऽस्त्यपि। तस्माद् पूर्वाह्णेऽपराह्णे यथानिर्दिष्टकाले भारताद्युपयुक्तो यदवश्य भारतादि वाचयति शृणोति वा, तद् वाचन श्रवण च लौकिक भावावश्यकमिति बोध्यम्।

कैसे कर सकते हैं। परन्तु उस समय इस प्रकार की वे समस्त क्रियाएँ उनमें प्रत्यक्ष ही देखने में आती हैं। इसी प्रकार श्रोताजन भी अटल होकर उनके सुनने मे तन्मय हो जाते हैं। समय २ पर हाथ जोड़ने रूप क्रियाएँ भी करते हैं। इस प्रकार की क्रियाएं से युक्त होने से उन सुनने वाचने वालो में नो आगमता भी है क्यो कि " किरिया आगमो न होइ " क्रिया आगम नही मानी जाती है ऐसा सिद्धात का कथन है। " नो आगम " में नो शब्द आगम के एक देश का वाचक है। इसलिये क्रियारूप एक देश में पूर्णरूप से आगम का अभाव होने से आगम की एक देशता उसमें मानने में आती है। भारतादिक पुस्तकों में आगमता का कथन लोक की अपेक्षा से ही किया गया जानना चाहिये। क्यो कि लोक में अन्य व्यवहारी जन इनमें आगमता का व्यवहार करते हुए देखे जाते हैं। इस प्रकार पूर्वाह्ण या अपराह्ण में किसी भी निर्दिष्ट समय मे भारतादिक ग्रन्थो का ज्ञाता उनमें उपयुक्त होकर जो उनका वाचना आदि कार्य करता है–या जो श्रोताजन उप

પણ તે વખતે આ જાતની આ બધી ક્રિયાઓ તેઓમા પ્રત્યક્ષરૂપે જોવામા આવે છે આ રીતે શ્રોતાઓ પણ તલ્લીન થઇને સાભળવા માડે છે યોગ્ય સમયે તેઓ હાથ જોડવારૂપ ક્રિયાઓ પણ કરે છે આ જાતની ક્રિયાઓથી યુક્ત હોવા બદલ તે વાચનારા તેમજ સાભળનારાઓમા નો આગમતા પણ છે કેમકે " किरिया आगमो न होइ" ક્રિયા આગમ માનવામા આવતી નથી આ સિદ્ધાન્તનુ કથન છે " नो आगम " મા નો શબ્દ આગમના એક દેશનો વાચક છે એટલા માટે ક્રિયારૂપ એકદેશમા આગમનો સપૂર્ણપણે અભાવ હોવાથી તેમા આગમની એકદેશતા માનવામા આવે છે ભારત વગેરે ગ્રથોમા આગમતાનુ કથન લોકની અપેક્ષાથી જ કરવામા આવ્યુ છે કેમકે લોકમા બીજી વ્યવહારી લોકો પણ એમા આગમતારૂપ વ્યવહાર કરતા જોવાય છે આ રીતે પૂર્વાહ્ન કે અપરાહ્નમા કોઇ પણ નિર્દિષ્ટ સમયમા ભારત વગેરે ગ્રથોનો જ્ઞાતા તેઓમા ઉપયુક્ત થઇને જે તેમનુ વાચન વગેરે કાય કરે છે । તો

कुप्रावचनिक भावावश्यकमुच्यते—ये इमे चरकचीरिकादयो यावत् पाषण्डस्था उपयुक्तो यथावसर यदवश्यम्—इज्याञ्जलि—होम—जपो—न्दुरुक्कनमस्कारादिक भाव रूपमावश्यक कुर्वन्ति तेषा तत् कुप्रावचनिक भावावश्यकम् ।

तत्र—इज्या—सन्ध्योपासनम्, अञ्जलि'—जलाञ्जलि' सूर्याय दीयते, होम'—नित्यहवनम्, जप—गायत्र्या., उन्दुरुक्क—अय देशीयः शब्द धूपार्थकः, नमस्कारः=वन्दनम्, एतेषा चरकादिभि पाषण्डस्थैरवश्य क्रियमाणत्वादावश्यकत्वम्। तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामसद्भावात् भावत्वम्। चरकादीना तदर्थोप-

युक्त होकर उन्हें सुनते हैं वह सव वाचना सुनना आदि कार्य नो आगम की अपेक्षा से लौकिक भाव आवश्यक है ।

जो चरक चीरिकादि जन उपयुक्त होकर अपने आवश्यक कार्य स्वरूप इज्या, अजलि, होम जप, उन्दुरुक्क, और नमस्कार आदि भाव रूप आवश्यक करते हैं, उनके ये सव कार्य कुप्रावचनिक भाव आव श्यक हैं स-ध्या की उपासना करना इज्या है, सूर्य के लिये जलकी अजलि देना अञ्जलि है, नित्य हवन करना होम, गायत्री का पाठ करना जप, धूप का खेना उन्दुरुक्क और नमस्कार करना वन्दना कर्म ह। ये सव कार्य चरकादि जनो द्वारा प्रतिदिन अवश्य करने योग्य होते हैं—अतः इनमें उन्ही की मान्यतानुसार आवश्यकपना कहा गया है इनके करने में उनके अन्तः कारण में उनके अर्थ के प्रति उपयोग एव श्रद्धा आदिरूप परिणति का सद्भाव पाया जाता है । इस

જે શ્રોતાઓ ઉપયુકત થઈને તેમનુ શ્રવણ કરે છે તે બધુ વાચન શ્રવણ વગેરે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લૌકિક ભાવ આવશ્યક છે

જે ચરક ચારિક વગેરે લોકો ઉપયુકત થઈને આવશ્યક કાર્યસ્વરૂપ ઇજ્યા, અજલિ, હોમ, જપ, ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર વગેરે ભાવરૂપ આવશ્યકો કરે છે, તેઓના આ બધા કાર્યો કુપ્રાવચનિકભાવ આવશ્યક છે સધ્યાની ઉપાસના કરવી એ ઇજ્યા છે, સૂર્યને માટે પાણીની અજલિ આપવી તે અજલી છે, દરરોજ હવન કરવો તે હોમ, ગાયત્રી પાઠ કરવો તે જપ અને ધૂપ કરવો તે ઉન્દુરુક્ક અને નમસ્કાર એ વદના કર્મ છે આ બધા કાર્યો ચરક વગેરે લોકો વડે હમેશાઅવશ્ય કરવાયોગ્ય હોય છે એટલા માટે આમા તેમની માન્યતા મુજબ જ આવશ્યકપણુ કહેવામા આવ્યુ છે એમના આચરણથી તેમના હૃદયમા તેના અર્થ પ્રત્યે ઉપયોગ અને શ્રદ્ધા વગેરે રૂપ પરિણતિ નો સદ્ભાવ મળે છે આ અપેક્ષાએ ત્યા ભાવતા અને

योगरूपो देश आगम, करशिरः संयोगादिक्रियारूपो देशस्तु नोआगम, तथा च देशिकागममाकारमाश्रित्य नो आगमत्वमपि, नोशब्दस्यात्रापि देशनिषेधपरत्वात्।

लौकिकं कुप्रावचनिकं च नोआगमतो भावावश्यकं न धर्मपदवाच्यम्, तत्र जिनाज्ञाया अभावादिति बोध्यम्।

अथ किं लोकोत्तरिकं नोआगमतो भावावश्यकम्? उच्यते अनुयोगद्वारे।

" जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे

अपेक्षा से वहां भावता और एकदेश से आगमता भी है। क्यों कि हाथों का जोडना नमस्कार करना आदि रूप जो भी क्रियाएँ हैं वे सब नो आगम हैं। इस अपेक्षा इनमें पूर्णरूप से आगमपना न होकर आगम की एक देशता ही है चरक चीरीकादि द्वारा मान्य ग्रन्थों की निर्दिष्ट क्रियाओं का ही वहां सद्भाव है और उन्हीं के अर्थ में उनका उपयोगादिरूप परिणाम है। इसलिये ये सब चरक चीरीकादि की क्रियाएँ नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं। यहां पर भी नो शब्द देश निषेध परक है अर्थात् आगम के एक देश का वाचक है ये लौकिक और कुप्रावचनिक जिन्हें नो आगम की अपेक्षा से भावावश्यकरूप में प्रकट किया गया है धर्मपद के वाच्य नहीं हैं। क्यों कि इन की आराधना से जीवों के कर्मो की निर्जरा नहीं होती है। अत तीर्थंकर प्रभु ने इनके आराधन करने की आज्ञा प्रदान नहीं की है।

नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक इस प्रकार

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ જોડવા, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા સપૂર્ણપણે નથી ફકત આગમની એકદેશતા જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે માન્ય ગ્રથોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યા સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થમા તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિક વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહીં પણ નો શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે-ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થંકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે—

जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तल्लेसे

तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणा भाविए अण्णत्थ कत्थइ मण अकरेमाणे उभओकाल आवस्सय करेइ, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नोआगमतो भावावस्सय, से त भावावस्सय ॥'

छाया-यत्खलु श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तस्तन्मनस्कस्तल्लेश्यस्तदध्यवसितस्तत्तीव्राध्यवसायस्तदर्थोपयुक्तस्तदर्पितकरणस्तद्भावनाभावित अन्यत्र कुत्रचिन्मनोऽकुर्वन् उभयकाल यत् आवश्यक सामायिकादि करोति तेषां तल्लोकोत्तरिक भावावश्यकम्। तेषां तद् नोआगमतो भावावश्यकम् तदेतद्भावावश्यकम् ।

अत्राप्यवश्य करणीयत्वादावश्यक त्व, तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामस्य सद्भावाद् भावत्वम् , रजोहरणप्रमार्जिताव्यापारयथारात्निकवन्दनकरणानन्तर सविधि

है-जण्ण इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मण अकरेमाणे उभओकाल आवस्सय करेंति, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नो आगमतो भावावस्सय से त भावावस्सय (अनुयोगद्वार)

श्रमण अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जो सामायिक आदि आवश्यक क्रियाओं को तच्चित होकर (उनमें ही चित्त लगाकर) तन्मन होकर उनमे ही अन्त करणको एकाग्रकर इत्यादि सूत्रमे कथित विधिके अनुसार दोनों कालों मे करतेहैं वह उनका कार्य नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक है। ये सामायिक आदि क्रियाएँ अवश्य करने योग्य होने से आवश्यक है। कर्त्ता का उनके अर्थ में उपयोग रुप एव श्रद्धा आदि रूप परिणाम का सद्भाव होने से उनमें

तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मण अकरेमाणे उभओकाल आवस्सय करेंति, से त लोगुत्तरिय भावावस्सय, से त नो आगमतो भावावस्सय, से त भावावस्सय (अनुयोगद्वार)।

શ્રમણ અથવા શ્રમણી શ્રાવક અથવા શ્રાવિકા જે સામાયિક વગેરે આવશ્યક ક્રિયાઓને તચ્ચિત્ત થઈને (તેમનામા મન પરોવીને) તલ્લીન થઈને તેમનામા જ મન લગાવીને વગેરે સૂત્રમા કથિત વિધિ મુજબ બન્ને વખત કરે છે તેમનુ તે કાર્ય નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે આ સામાયિક વગેરે ક્રિયાઓ અવશ્ય કરવા યોગ્ય હોવાથી આવશ્યક છે કર્તાનો તેમના અર્થમા ઉપયોગરૂપ પરિણામનો સદ્ભાવ હોવાથી તેમનામા ભાવતા પણ છે રજોહરણથી ભૂમિ વગેરેનુ પ્રમાર્જન કરીને, વંદન કરીને વિધિ

योगरूपो देश आगम, करशिरः प्रयोगादिक्रियारूपो देशस्तु नोआगम, तथा च देशिकागमागमाश्रित्य नो आगमत्वमपि, नोशब्दस्यात्रापि देशनिषेधपरत्वात्।

लौकिकं कुप्रावचनिकं च नोआगमतो भावावश्यकं न धर्मपदवाच्यम्, तत्र जिनाज्ञाया अभावादिति बोध्यम्।

अथ किं लोकोत्तरिकं नोआगमतो भावावश्यकम्? उच्यते अनुयोगद्वारे।

" जण्ण इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे

अपेक्षा से वहां भावता और एकदेश से आगमता भी है। क्यों कि हाथों का जोडना नमस्कार करना आदि रूप जो भी क्रियाएँ है वे सब नो आगम हैं। इस अपेक्षा इनमें पूर्णरूप से आगमपना न होकर आगम की एक देशता ही है चरक चीरीकादि द्वारा मान्य ग्रन्थों की निर्दिष्ट क्रियाओं का ही वहां सद्भाव है और उन्हीं के अर्थ मे उनका उपयोगादिरूप परिणाम है। इसलिये ये सब चरक चीरीकादि की क्रियाएँ नो आगम की अपेक्षा से भाव आवश्यक हैं। यहां पर भी नो शब्द देश निषेध परक है अर्थात् आगम के एक देश का वाचक है ये लौकिक और कुप्रावचनिक जिन्हें नो आगम की अपेक्षा से भावावश्यकरूप में प्रकट किया गया है धर्मपद के वाच्य नहीं हैं। क्यों कि इन की आराधना से जीवो के कर्मो की निर्जरा नही होती है। अत तीर्थंकर प्रभु ने इनके आराधन करने की आज्ञा प्रदान नहीं की है।

नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक इस प्रकार

એકદેશથી આગમતા પણ છે કેમકે હાથ જોડવા, નમસ્કાર કરવા વગેરે રૂપ જે ક્રિયાઓ છે તે સર્વે નોઆગમ છે આ દૃષ્ટિએ એમનામા આગમતા સંપૂર્ણપણે નથી ફક્ત આગમના એકદેશતા જ છે ચરક ચીરિક વગેરે વડે માન્ય ગ્રંથોની નિર્દિષ્ટ ક્રિયાઓનો જ ત્યા સદ્ભાવ છે અને તેમના જ અર્થમા તેમનો ઉપયોગ વગેરેરૂપ પરિણામ છે એટલા માટે આ બધા ચરક ચીરિકા વગેરેની ક્રિયાઓ નો આગમની અપેક્ષાથી ભાવ આવશ્યક છે અહીં પણ નો શબ્દ દેશનિષેધ પરક છે એટલે કે આગમના એકદેશનો વાચક છે આ લૌકિક અને કુપ્રાવચનિકો જેમને નો આગમની દૃષ્ટિએ ભાવાવશ્યક રૂપમા પ્રગટ કરવામા આવ્યા છે-ધર્મપદના વાચ્ય નથી કેમકે એમની આરાધનાથી જીવોના કર્મોની નિર્જરા થતી નથી, એટલા માટે તીર્થંકર પ્રભુએ એમને આરાધવાની આજ્ઞા કરી નથી

નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક આ પ્રમાણે છે—

जण्ण इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे

तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणा भाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेंति, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नोआगमतो भावावस्सयं, से तं भावावस्सयं ॥'

छाया-यत्खलु श्रमणो वा श्रमणी वा श्रावको वा श्राविका वा तच्चित्तस्तन्मनस्कस्तल्लेश्यस्तदध्यवसितस्तत्तीव्राध्यवसायस्तदर्थोपयुक्तस्तदर्पितकरणस्तद्भावनाभावित अन्यत्र कुत्रचिन्मनोऽकुर्वन् उभयकाल यत् आवश्यक सामायिकादि करोति तेषां तल्लोकोत्तरिक भावावश्यकम्। तेषां तद् नोआगमतो भावावश्यकम् तदेतद्भावावश्यकम्।

अवश्यकरणीयत्वादावश्यकं च, तदर्थोपयोगश्रद्धादिपरिणामस्य सद्भावाद् भावत्वम्, रजोहरणप्रमार्जिकाव्यापारयथाकालिककृतवन्दनकरणानन्तरं सविधि

है-जण्णं इमे समणे वा समणी वा सावओ वा साविया वा तच्चित्ते तम्मणे तल्लेसे तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पियकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेंति, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नो आगमतो भावावस्सयं से तं भावावस्सयं (अनुयोगद्वार)

श्रमण अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जो सामायिक आदि आवश्यक क्रियाओं को तच्चित्त होकर (उनमें ही चित्त लगाकर) तल्लीन होकर उनमे ही अन्तःकरणको एकाग्रकर इत्यादि सूत्रमें कथित विधिके अनुसार दोनों कालों में करतेह वह उनका कार्य नो आगम की अपेक्षा से लोकोत्तरिक भाव आवश्यक है। ये सामायिक आदि क्रियाएँ अवश्य करने योग्य होने से आवश्यक है। कर्ता का उनके अर्थ मे उपयोग रूप एवं श्रद्धा आदि रूप परिणाम का सद्भाव होने से उनमें

तदज्झवसिए तत्तिव्वज्झवसाणे तदट्ठोवउत्ते तदप्पिअकरणे तब्भावणाभाविए अण्णत्थ कत्थइ मणं अकरेमाणे उभओकालं आवस्सयं करेंति, से तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं, से तं नो आगमतो भावावस्सयं, से तं भावावस्सयं (अनुयोगद्वार)।

श्रमण अथवा श्रमणी श्रावक अथवा श्राविका जे सामायिक वगेरे आवश्यक क्रियाओने तच्चित्त थईने (तेमनामां मन परोवीने) तल्लीन थईने तेमनामां ज मन लगावीने वगेरे सूत्रमां कथित विधि मुजब बन्ने वखत करे छे तेमनुं ते कार्य नो आगमनी अपेक्षाए लौकोत्तरिक भाव आवश्यक छे आ सामायिक वगेरे क्रियाओ अवश्य करवा योग्य होवाथी आवश्यक छे कर्तानो तेमना अर्थमां उपयोगरूप परिणामनो सद्भाव होवाथी तेमनामां भावता पण छे रजोहरणथी भूमि वगेरेनुं प्रमार्जन करवुं, वंदना वगेरे कृति

षड्विधावश्यककरणरूपाः क्रियाः अनागमत्वात् नोआगमत्वं बोध्यम्, अत्रापि नो-शब्दस्य देशतः प्रतिषेधकत्वात्। इदम् लोकोत्तरिकं नो आगमतो भावावश्यकं धर्मपदवाच्यम् तत्र जिनेन्द्रतया भगवतोऽपि आज्ञायाः सद्भावात्। अन्येऽपि धर्मलक्षणमेवमाहुः—

" वचनादविरुद्धाद्य-दनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते " ॥ १ ॥

भावना भी है रजोहरण से भूमि आदि का प्रमार्जन करना, वंदना आदि कृति कर्म करना आदि विधि पूर्वक जो षट् विध आवश्यक करने रूप क्रियाएँ हैं वे सब " किरिया आगमो न होइ" इस नियम के अनुसार आगम नहीं हैं। अतः इन में आगम के एक देश अभाव की अपेक्षा से नो आगमता है। यहां पर भी नो शब्द सम्पूर्ण रूप से आगम का प्रतिषेधक न होकर उसके एक देश का ही प्रतिषेधक है। अतः ये सामायिक आदि षड्विध आवश्यक नोआगम की अपेक्षा से लोकोत्तरीक भाव आवश्यक हैं और इनके ही आराधन करने की जिनेन्द्र देवने भव्य जीवों को आज्ञा दी है। कारण कि ये धर्मपद के वाच्य हैं इनकी आराधना से भव्यजीवों के कर्मों की निर्जरा होती है।

दूसरों ने भी इस प्रकार धर्म का लक्षण कहा है—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते॥

કર્મ આદિ વગેરે વિધિપૂર્વક જે ષટ્વિધ આવશ્યક કરવારૂપ ક્રિયાઓ છે તેઓ સર્વે "किरिया आगमो न होइ" આ નિયમ મુજબ આગમ નથી એટલા માટે એમનામાં આગમના એકદેશ અભાવની અપેક્ષાથી નો આગમતા છે અહીં પણ નો શબ્દ સંપૂર્ણ રૂપથી આગમનો પ્રતિષેધ પરક નથી પણ તેના એકદેશનો જ પ્રતિષેધક છે એટલા માટે સામાયિક વગેરે આ ષટ્વિધ આવશ્યકો નો આગમની અપેક્ષાએ લોકોત્તરિક ભાવ આવશ્યક છે અને જિનેન્દ્ર દેવે એમની આરાધના કરવાની જ ભવ્ય જીવોને આજ્ઞા કરી છે કેમકે આ બધા ધર્મપદના વાચ્ય છે એમની આરાધનાથી ભવ્ય જીવોના કર્મોની નિર્જરા થાય છે

બીજાઓએ પણ આ રીતે ધર્મનું લક્ષણ બતાવ્યું છે—

[illegible] विरुद्ध [illegible] यथोदितम्।
[illegible] भावसमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते॥

अस्यव्याख्या वचनादिति ल्यब्लोपे पञ्चमी, वचनमनुसृत्येत्यर्थः । वचनम्= अमागः। कीदृशाद् वचनादित्याह— अविरुद्धात्-कषच्छेदतापेषु अविघटमानात्, तत्र विधिप्रतिषेधयोर्बाहुल्येनोपवर्णनं कषशुद्धिः, पदे पदे तद्योगक्षेमकारिक्रियोपदर्शनं छेदशुद्धिः, विधिप्रतिषेधतद्विषयाणां जीवादिपदार्थानां च स्याद्वादपरीक्षया याथात्म्येन समर्थनं तापशुद्धिः । तच्चाविरुद्धं वचनं जिनप्रणीतमेव, निमित्तशुद्धेः

अविरुद्ध आगम से यथोदित एवं मैत्री आदि भावनाओं से मिश्रित जो अनुष्ठान है वह धर्म है। स्पष्टार्थ-वचन शब्द का अर्थ आगम है। आगम में अविरुद्धता कष, ताप, और छेद द्वारा परीक्षित होने पर ही आती है। जिस प्रकार सुवर्ण की परीक्षा कष-कसौटी पर कसने से ताप-अग्नि मे तपाने से और छेद-छैनी वगैरह द्वारा काटने से होती है, उसी प्रकार आगम की शुद्धि की परीक्षा भी इन तीन उपायों द्वारा की जाती है। विधि और प्रतिषेध का बहुलता से जिस शास्त्र में वर्णन है, वह शास्त्रकष से शुद्ध कहा जाता है। पद पद पर जिस शास्त्र में इनके योग और क्षेमकरि क्रियाओं का कथन किया गया मिलता है वह शास्त्र छेदसे शुद्धमाना जाता है। विधि एवं प्रतिषेध तथा इन के विषयभूत जीवादिक पदार्थों का स्याद्वाद ढंग से जहां पर यथार्थ समर्थन किया जाता है सप्तभंगी द्वारा जहां पर इनका सुन्दर शैली से विवेचन करने मे आता है वह शास्त्र ताप उपायद्वारा शुद्ध माना जाता

અવિરુદ્ધ આગમથી યથોદિત અને મૈત્રી વગેરે ભાવનાઓથી મિશ્રિત જે અનુષ્ઠાન છે તે ધર્મ છે સ્પષ્ટાર્થ—વચન શબ્દનો અર્થ આગમ છે આગમમા અવિરુદ્ધતા, કષ, તાપ અને છેદ વડે પરીક્ષિત થયા પછી જ આવે છે જેમ સોનાની પરીક્ષા કષ-કસોટી ઉપર કસવાથી તાપ અગ્નિ ઉપર તપાવવાથી અને છેદ-છીણી વગેરેથી કાપવાથી હોય છે, તેમજ આગમની શુદ્ધિની પરીક્ષા પણ આ ત્રણે ઉપાયો વડે કરવામા આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધનુ મોટા પ્રમાણમા જે શાસ્ત્રમા વર્ણન છે, તે શાસ્ત્ર કષથી શુદ્ધ કહેવાય છે ડગલે ને પગલે જે શાસ્ત્રમા એમના યોગ અને ક્ષેમકરિ ક્રિયાઓનુ કથન કરવામા આવ્યુ છે તે શાસ્ત્ર છેદથી શુદ્ધ માનવામા આવે છે વિધિ અને પ્રતિષેધ તેમજ એમના વિષયભૂત જીવ વગેરે પદાર્થોનો સ્યાદ્વાદના રૂપથી જ્યા યથાર્થ વર્ણન કરવામા આવે છે, સપ્તભંગી વડે જ્યા સુંદર શૈલીમા એમનુ વિવેચન કરવામા આવે છે, તે શાસ્ત્ર તપ ઉપાયવડે શુદ્ધ માનવામા આવે છે આ ત્રણે

षड्विधावश्यककरणरूपायाः क्रियायाः अनागमत्वात् नोआगमत्वं बोध्यम्, अत्रापि नो-शब्दस्य देशतः प्रतिषेधकत्वात्। इदम् लोकोत्तरिकं नो आगमतो भावावश्यकं धर्मपदवाच्यम् तत्र विधेयतया भगवतोऽर्हत आज्ञायाः सद्भावात्। अन्येऽपि धर्मलक्षणमेवमाहुः—

" वचनादविरुद्धाद्य-दनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसंमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते " ॥ १ ॥

भावना भी है रजोहरण से भूमि आदि का प्रमार्जन करना, वंदना आदि कृति कर्म करना आदि विधि पूर्वक जो षट् विध आवश्यक करने रूप क्रियाएँ हैं वे सब "किरिया आगमो न होइ" इस नियम के अनुसार आगम नहीं हैं। अतः इन में आगम के एक देश अभाव की अपेक्षा से नो आगमता है। यहाँ पर भी नो शब्द सम्पूर्ण रूप से आगमका प्रतिषेध परक न होकर उसके एक देश का ही प्रतिषेधक है। अतः ये सामायिक आदि षड्विध आवश्यक नोआगम की अपेक्षा से लोकोत्तरीक भाव आवश्यक है' और इनके ही आराधन करने की जिनेन्द्र देवने भव्य जीवों को आज्ञा दी है। कारण कि ये धर्मपद के वाच्य है इनकी आराधना से भव्यजीवों के कर्मों की निर्जरा होती है।

दूसरों ने भी इस प्रकार धर्म का लक्षण कहा है—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसंमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

कर्म आचवा वगेरे विधिपूर्वक जे षट्विध आवश्यक करवारूप क्रियाओ छे तेओ सर्वे "किरिया आगमो न होइ" आ नियम मुजब आगम नथी एटला माटे एमनामां आगमना एकदेश अभावनी अपेक्षाथी नो आगमता छे अहीं पण नो शब्द संपूर्ण रूपथी आगमनो प्रतिषेध परक नथी पण तेना एकदेशनो ज प्रतिषेधक छे एटला माटे समायिक वगेरे आ षट्विध आवश्यको नो आगमनी अपेक्षा ए लोकोत्तरिक भाव आवश्यक छे अने जिनेन्द्र देवे एमनी आराधना करवानी ज भव्य जीवोने आज्ञा करी छे कमके आ बधा धर्मपदना वाच्य छे एमनी आराधनाथी भव्य जीवोना कर्मोनी निर्जरा थाय छे

बीजाओए पण आ रीते धर्मनुं लक्षण बताव्युं छे—

वाचनादविरुद्धाद्यदनुष्ठानं यथोदितम्।
मैत्र्यादिभावसंमिश्रं तद्धर्म इति कीर्त्यते ॥

कारणस्वरूपानुविधायि कार्यं, तत्र दुष्टकारणाऽऽरब्धं कार्यमदुष्टं भवितुमर्हति, निम्बबीजादिक्षु यष्टिरिवेति । अन्यथा-कारणव्यवस्थोपरमप्रसङ्गात् ।

यच्च-यदृच्छाप्रणयनप्रवृत्तेषु तीर्थान्तरीयेषु रागादिमत्स्वपि घुणाक्षरोत्किरण

रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् इति जिनः" राग द्वेष आदिक जो अन्तरंग शत्रु हैं इन पर जिसने विजय पायी है वे ही जिन कहलाते हैं जिस प्रकार तपन (सूर्य) दहन (अग्नि) आदि शब्द यथानाम तथा गुण वाले हुआ करते हैं, इसी प्रकार "जिन" यह नाम भी यथा नाम तथा गुण वाला है यथा नाम तथा गुण का होना ही नाम की सार्थकता है। जिन्हों ने इन अन्तरंग शत्रुओं को परास्त नहीं किया उनके वचनो में परस्पर अविरुद्धार्थता नहीं आसकती है-क्यों कि वहां पर निमित्त की शुद्धि नहिं हैं। इसीलिये अजिन प्रणीत वचन अविरुद्ध नहीं होते हैं। लोक में भी जिस प्रकार नीम के बीज से इक्षु की उत्पत्ति देखने में नहीं आती उसी प्रकार सदोष कारण से उत्पन्न हुआ कार्य भी निर्दोष नहीं होना है। कार्य में निर्दोषता कारण कि निर्दोषता पर आधार रखती है। न्याय शास्त्र का भी यही सिद्धान्त है "कारण स्वरूपानुविधायि कार्य" कि कार्य, कारण के स्वरूप का अनुविधायक होता है। यदि इस प्रकार की व्यवस्था न मानी जावे तो फिर कार्य कारण भाव की व्यवस्था ही नहीं बन सकती है। हर एक पदार्थ

"जयति रागद्वेषमोहरूपान् अन्तरंगरिपून् इति जिन" રાગદ્વેષ વગેરે જે અંતરંગ શત્રુઓ છે તેમના ઉપર જેમણે વિજય મેળવ્યો છે તેઓ જ જિન કહેવાય છે જેમ તપન (સૂર્ય) દહન (અગ્નિ) વગેરે શબ્દો નામ જેવા જ ગુણવાળા હોય છે, તે પ્રમાણે જ "જિન" આ નામ પણ નામ પ્રમાણે જ ગુણવાળું છે જેવું નામ તેવા ગુણો હોવા એ જ નામની સાર્થકતા છે જેમણે આ અંતરંગ શત્રુઓને હરાવ્યા નથી તેમના વચનોમાં પરસ્પર અવિરુદ્ધાર્થતા આવી શકતી નથી કેમ કે ત્યાં નિમિત્તની શુદ્ધિ નથી એટલા માટે અજિન પ્રણીત વચનો અવિરુદ્ધ હોતા નથી લોકમાં પણ જેમ લીમડાના બીજથી શેરડીની ઉત્પત્તિ જોવામાં આવતી નથી તેમજ સદોષ કારણથી ઉત્પન્ન થયેલું કાર્ય પણ નિર્દોષ હોતું નથી કાર્યમાં નિર્દોષતા કારણની નિર્દોષતા ઉપર આધારિત હોય છે ન્યાયશાસ્ત્રનો પણ એજ સિદ્ધાંત છે, "कारणस्वरूपानुविधायिकार्यं" કે કાર્ય કારણના સ્વરૂપનો અનુવિધાતા હોય છે જો આ જાતની વ્યવસ્થા માનવામાં આવે

वचनस्य हि वक्ता निमित्तमन्तरङ्गम्, तस्य च रागद्वेषमोहपारतन्त्र्यमशुद्धिः, तेभ्यो वितथवचनप्रवृत्तेः, न चैषाऽशुद्धिर्जिने भगवति, जिनत्वविरोधात्, जयति रागद्वेष मोहरूपान्तरङ्गान् रिपूनिति शब्दार्थानुपपत्तेः तपनदहनादिशब्दवत्, अन्वर्थतया चास्याभ्युपगमात्, निमित्तशुद्ध्यभावाद् नाजिनप्रणीतवचनमविरुद्धम्। यत—

है। इन तीनों उपायों से परीक्षित आगम ही परिशुद्ध कहा गया है। अविरुद्ध वचन का नाम ही आगम है।

इन कषादिकों से जो आगम में शुद्धता आती है उसका कारण निमित्त की शुद्धि है। निमित्त शुद्ध जिन प्रणीत वचन ही हैं। अन्य प्रणीत वचन नहीं। निमित्त में भी शुद्धि का कारण राग, द्वेष और मोह का अभाव है। वचन का अन्तरंग कारण वक्ता ही हुआ करता है वक्ता की प्रमाणता से ही वचन-आगम में प्रमाणता आती है इसी लिये राग द्वेष आदि से कलुषित व्यक्तियों के वचन प्रमाण कोटि में नहीं आते हैं। क्यों कि राग द्वेष आदिक सद्भाव में वचनों में परस्पर विरुद्ध अर्थ की प्ररूपकता स्वयं ही आ जाती है अतः यह निश्चित सिद्धान्त है कि जहां पर इनका सर्वथा अभाव है वही सच्चा आगम का प्रणेता हो सकता है। और उसी आगम में अविरुद्धता है। ऐसा अविरुद्ध आगम जिन प्रणीत ही हो सकता है क्यो कि उनमें पूर्वोक्त राग द्वेष आदि द्वारा अशुद्धि का सर्वथा अभाव हो चुका है इस के सर्वथा दूर होने से ही वे "जिन" इस प्रकार की संज्ञा वाले हुए हैं। "जयति

ઉપાયોથી પરીક્ષિત આગમ જ પરિશુદ્ધ કહેવામા આવ્યો છે અવિરુદ્ધ વચનનુ નામ જ આગમ છે કષ વગેરેથી આગમમા જે શુદ્ધતા આવે છે તેનુ કારણ નિમિત્તની શુદ્ધિ છે જિન પ્રણીત વચનો જ નિમિત્તશુદ્ધ છે બીજાઓ વડે પ્રણીત વચનો નહિ નિમિત્તમા પણ શુદ્ધિનુ કારણ રાગ દ્વેષ અને મોહનો અભાવ છે વચનનુ અતરગ કારણ બોલનાર જ હોય છે બોલનાર (વક્તા) ની પ્રમાણતાથી જ વચન-આગમમા પ્રમાણતા આવે છે એટલા માટે જ રાગ દ્વેષ વગેરેથી કલુષિત માણસોના વચનો પ્રમાણ કોટિમા આવતા નથી કેમકે રાગદ્વેષ વગેરે સદ્ભાવ વચનોમા પરસ્પર વિરુદ્ધ અર્થની પ્રરૂપકતા જાતે જ આવી જાય છે એટલા માટે આ નિશ્ચિત સિદ્ધાત છે કે જ્યાં એમનો સપૂર્ણ અભાવ છે તે જ સાચા આગમનો પ્રણેતા થઈ શકે છે અને તે આગમમાજ અવિરુદ્ધતા છે એવુ અવિરુદ્ધ આગમ જિનપ્રણીત જ થઈ શકે છે કેમકે તેમનામા પૂર્વોક્ત રાગદ્વેષ વગેરે વડે અશુદ્ધિનો સપૂર્ણપણે અભાવ થઈ ચૂક્યો છે અશુદ્ધિ સર્વ રીતે મટી જવાથી તેઓ 'જિન' સજ્ઞા છે

कीदृगमनुष्ठान धर्म ? इत्याह—' यथोदितम् ' यथा येन प्रकारेण कालाद्या राधनानुसाररूपेण-उदितं=प्रतिपादितं, तत्रैवाविरुद्धरचने इति गम्यम् ।

अन्यच्च—

जो जहवाय न कुणइ, मिच्छादिट्ठी तओ उ को अन्नो ? ।
वड्ढेइ मिच्छत्तं, परस्स सकं जणेमाणो ॥ इति ।

छाया-यो यथावाद न करोति, मिथ्यादृष्टिस्ततस्तु कोऽन्यः ।
वर्धयति मिथ्यात्वं, परस्य शङ्काजनयन् ॥ इति ।

पुनरपि कीदृशमित्याह-' मैत्र्यादिभावसमिश्रम् ' इति । मैत्र्यादयः=मैत्री मुदिता करुणा माध्यस्थलक्षणा ये भावाः=अन्तःकरणपरिणामा, तत्पूर्वकाव

न्याय से कही २ अविरुद्ध अर्थ प्रतिपादकता सो वह उनकी निज की घर की वस्तु नहीं है-उसका मूल स्रोत अविरुद्ध अर्थ का प्ररूपक जिन प्रणीत आगम ही है । यही बात मार्गानुसारी बुद्धिवाले व्यक्ति में भी समझ लेनी चाहिये । वह जो कुछ भी सत्यार्थ कहता है उसका मूल कारण जिनप्रणीत आगम का सहारा ही है । श्लोक कथित "यथोदित" पद इस बात का समर्थन करता है कि देश काल आदि की आराधना के अनुसार जो आचार-अनुष्ठान प्रतिपादित किया गया है । उससे जो अविरुद्ध कहा गया है-वही धर्म है इससे विपरीत नहीं । " मैत्र्यादि भाव समिश्रम् " इस पद द्वारा सूत्रकार यह प्रतिपादित करते हैं कि वह अनुष्ठान मैत्री, मुदिता, करुणा और माध्यस्थ इन चार लक्षणों से युक्त होता है । ये धर्म के बाह्य चिह्न हैं । इनके सद्भाव से आत्मा मे

અર્થ પ્રતિપાદકતા પણ છે તે તેમની પોતાની વસ્તુ તો નથી જ કેમકે તેના મૂળિયા તો અવિરુદ્ધ અર્થના પ્રરૂપક જિનપ્રણીત આગમમા જ છે એ જ વાત માર્ગાનુસારી બુદ્ધિવાળી વ્યક્તિમા પણ સમજી લેવી જોઇએ તે જે કઇ પણ સત્યાર્થ કહે છે તેનુ મૂળ કારણ જિન પ્રણીત આગમ જ છે શ્લોક કથિત "યથોદિત" પદ આ વાત ને સ્પષ્ટ કરે છે કે દેશકાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આચાર-અનુષ્ઠાન-પ્રતિપાદિત કરવામા આવ્યા છે, તેનાથી જે અવિરુદ્ધ કહેવામા આવ્યુ છે તે ધર્મ છે એનાથી વિપરીત નહિ "મૈત્ર્યાદિ ભાવસમિશ્રમ્ ' આ પદવડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરે છે કે તે અનુષ્ઠાન મૈત્રી, મુદિતા, કરુણા અને માધ્યસ્થ આ ચાર લક્ષણોથી યુક્ત હોય છે આ બધા ધર્મના બાહ્ય ચિન્હો છે એમના સદ્ભાવથી આત્મામા ધર્મનુ અસ્તિત્વ

व्यवहारेण क्वचित् किंचिदविरुद्धमपि वचनमुपलभ्यते, मार्गानुसारिबुद्धौ वा प्राणिनि क्वचित्, तदपि जिनप्रणीतमेव, तन्मूलकत्वात् तस्य।

हर एक का कार्य और कारण हो जायगा। अतः आगमरूप कार्य की शुद्धि के लिये निमित्त रूप कारण शुद्धि का होना अवश्य आवश्यकीय माना गया है।

प्रश्न—आपने जो कहा कि आगम में अविरुद्धता उसके कारणभूत प्रणेता के अधीन है—सो यह बात हमें मान्य है। परन्तु इससे यह बात तो सिद्ध नहीं होती है कि वे अविरुद्ध वचन जिन भगवान के ही है' अन्य के नहीं-कारण कि अन्य सिद्धान्तकारों के वचनों में भी किसी अंशसे अविरुद्धार्थता देखी जाती है। अतः उन्हें सदोष मान कर आप जो उनमें अनाप्तता सिद्ध करते हैं सो यह बात कैसे मान्य हो सकती है?

उत्तर-शंका तो ठीक है-परन्तु विचार करने से इसका उत्तर भी सहजरूप में मिल जाता है। अन्य सिद्धान्तकारो ने जो कुछ रचनाएँ की हैं-वे सब उन्हों ने अपनी इच्छानुसार ही की हैं। अपनी निज कल्पना में जो कुछ उन्हें सूझा वही उन्हों ने लिखा है। उनकी रचनाओं में पूर्वापर विरोध स्पष्ट प्रतीत होता है इससे उनमें रागादिक दोषों का अस्तित्व सिद्ध होता है। अब रही उनके वचनों में घुणाक्षर

નહિ તો કાર્ય કારણ ભાવની વ્યવસ્થા બની શકે તેમ નથી દરેક પદાર્થ દરેકનુ કાર્ય અને કારણ થઈ જશે એટલા માટે આગમરૂપ કાર્યની શુદ્ધિ માટે નિમિત્તરૂપ કારણ શુદ્ધિ થવી ચોક્કસપણે આવશ્યકીય માનવામા આવી છે

પ્રશ્ન —તમે કહ્યુ કે આગમમા અવિરુદ્ધતા તેના કારણભૂત પ્રણેતાના આધીન છે-એ વાત એમને માન્ય છે પણ એનાથી આ વાત તો સિદ્ધ થતી નથી કે તે અવિરુદ્ધ વચનો જિન ભગવાનના જ છે, બીજાઓના નહિ કેમકે બીજા સિદ્ધાંતકારોના વચનોમા પણ કોઈ પણ અંશે અવિરુદ્ધાર્થતા જોવામા આવે છે એટલા માટે તેમને દોષયુક્ત માનીને તમે જે તેમનામા અનાપ્તતા સિદ્ધ કરો છો આ વાત કેવી રીતે માન્ય થઇ શકે તેમ છે!

ઉત્તર —શંકા તો ઠીક છે, પણ વિચાર કરવાથી આનો જવાબ પણ સરળ રીતે મળી શકે તેમ છે બીજા સિદ્ધાન્તકારોએ જે રચનાઓ કરી છે તે બધી તેમણે પોતાની ઈચ્છા મુજબ જ કરી છે પોતાની કલ્પનાથી જે કઇ તેમને યોગ્ય લાગ્યુ તે તેમણે લખ્યુ છે તેમની રચનાઓમા પૂર્વાપર વિરોધ સ્પષ્ટ રીતે દેખાઈ આવે છે એનાથી તેઓમા રાગ વગેરે દોષો છે એવી વાત સિદ્ધ થાય છે હવે ઘુણાક્ષર ન્યાયથી કોઇક કોઈક સ્થાને તેમના જ

पञ्चमी, तथा च-वचनप्रयोज्यप्रवृत्तित्वं लक्षणमिति न कुत्राप्यव्याप्तिदोषावकाशः प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानानामपि वचनप्रयोज्यत्वाऽनपायादिति ।

किं च--हिंसादिपापपरिहारो धर्मसिद्धेर्लिङ्गमित्यार्हता' स्वीकुर्वन्ति । तथा चोक्तम्-

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धेः, प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥ इति ।

पापजुगुप्सा=पापपरिहारः ।

षट्कायवधमाध्य प्रतिमापूजनं कुर्वतां धर्मसिद्धिः कथं स्यादिति विचारयन्तु सुधियः । अपरं च --

---

प्रतीत नहीं होता है क्यों कि वचनानुष्ठान धर्म का अर्थ वचन के अनुसार होने वाला अनुष्ठान धर्म है उसमें कोई जातका दोष नहीं आता है। "

किंच--हिंसादिक पांच पापों का परित्याग धर्म सिद्धि का चिह्न है इस प्रकार की मान्यता जैनियों की है। शास्त्रान्तर में यही बात प्रकट की गई है-

औदार्यं दाक्षिण्यं पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे' प्रायेण जनप्रियत्वं च ॥ (षोडश-ग्रंथ ४ प्रकरण)

उदारता-हृदय की विशालता, दाक्षिण्य-सर्व जीवों के अनुकूल प्रवृत्ति, पापजुगुप्सा-पाप का परित्याग, निर्मलबोध-तत्त्वज्ञान, और जन प्रियत्व ये ५ धर्मसिद्धि के लक्षण हैं। अब यहा पर विचारने की बात यह है कि जब पाप का परिहार करना यह धर्मसिद्धि का लक्षण

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા કોઇ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ—હિંસા વગેરે પાચ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનુ ચિહ્ન છે આ જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રાંતરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે —

औदार्यं दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोध ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे प्रायेण जिनप्रियत्व च ॥ (षोडशग्रंथ ४ प्रकरण)

ઉદારતા—હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઇ પડે તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ બોધ – તત્ત્વજ્ઞાન, અને જિનપ્રિયત્વ આ પાચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનુ લક્ષણ

वाङ्मयचेष्टाविशेषाः, तैः समिश्र=संयुक्त, मैत्र्यादिभावाना निःश्रेयसाभ्युदयधर्मम् लत्वेन शास्त्रान्तरेषु प्रतिपादनात्। तदेतदित्थमनुष्ठान धर्म इति कीर्त्यते शब्द्यते सुधीभिरिति।

नन्वेव वचनाऽनुष्ठान धर्म इति प्राप्त, तथा च प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानेष्व व्याप्तिरिति चेन्न-इह तु वचनादित्यत्र वेदात् प्रवृत्तिरित्यत्रेव प्रयोज्यत्वार्थिका

धर्म का अस्तित्व जाना जाता है अन्य सिद्धान्तकारों ने भी इन्हें निः श्रेयस और स्वर्ग के कारणभूत धर्म का मूल कहा है। अतः जो आगम से अविरुद्ध है, काल आदि की आराधना के अनुसार जो आराधित होता है और जो मैत्री आदि चार भावनाओं से गर्भित है ऐसा अनुष्ठान ही धर्म है। ऐसे ही धर्म की आराधना करने का गण धर आदि का आदेश है।

भावार्थ-तीर्थंकर कथित आगम के अनुसार होने वाले अनुष्ठान का नाम धर्म है। इसका फलितार्थ यही है कि जिस अनुष्ठान मे तीर्थंकर प्रभु द्वारा कथित आगम से विरोध नहीं आता है वही धर्म है। तथा च-प्रीति भक्ति और असग रूप अनुष्ठानों में इस लक्षण की अप्राप्ति नहीं होती है क्यों कि वहा पर भी इस लक्षण का सद्भाव पाया जाता है " वाचनानुष्ठान धर्मः " इस प्रकार के कथन मे " वेदात् प्रवृत्तिः " की तरह प्रयोज्य अर्थ में पचमी विभक्ति हुई है अत जिस प्रवृत्ति का प्रयोज्य वचन है वह धर्म है। (वचनानुष्ठान धर्म) यहा से लेकर (प्रीति भक्ति असगानुष्ठान इत्यादि तक) लिखने की आवश्यकता

જાણવામા આવે છે બીજા સિદ્ધાતકારોએ પણ આ બધાને નિઃશ્રેયસ અને સ્વર્ગના કારણભૂત ધર્મનુ મૂળ બતાવ્યુ છે એથી જે આગમથી અવિરુદ્ધ છે કાળ વગેરેની આરાધના મુજબ જે આરાધિત હોય છે અને જે મૈત્રી વગેરે ચાર ભાવનાઓથી યુક્ત છે એવુ અનુષ્ઠાન જ ધર્મ છે એવા જ ધર્મની આરાધના કરવા માટે ગણધર વગેરેનો આદેશ છે

ભાવાર્થ —તીર્થંકર કથિત આગમમુજબ આચરાયેલા અનુષ્ઠાનનુ નામ ધર્મ છે એનો અર્થ આ પ્રમાણે ફલિત થયો છે કે જે અનુષ્ઠાનમા તીર્થંકર પ્રભુ વડે કથિત આગમથી વિરોધ જણાતો નથી તે જ ધર્મ છે તેમજ પ્રીતિ, ભક્તિ અને અસગ રૂપ અનુષ્ઠાનોમા આ લક્ષણની અપ્રાપ્તિ પણ હોતી નથી કેમકે ત્યા પણ આ લક્ષણનો સદ્ભાવ મળે છે " વાચનાનુષ્ઠાન ધર્મ " આ જાતના કથનમા " વેદાત્ પ્રવૃત્તિ "ની જેમ પ્રયોજ્ય અર્થમા પચમી વિભક્તિ થઈ છે એટલા માટે જે પ્રવૃત્તિનુ પ્રયોજ્ય વચન છે તે ધર્મ છે (વચનાનુષ્ઠાન ધર્મ) અહીથી માડીને પ્રીતિ ભક્તિ અસગાનુષ્ઠાન વગેરે ... ખવાની

पञ्चमी, तथा च- वचनप्रयोज्यप्रवृत्तिमत्त्व लक्षणमिति न कुत्राप्यव्याप्तिदोषावकाशः प्रीतिभक्त्यसङ्गानुष्ठानानामपि वचनप्रयोज्यत्वाऽनपायादिति ।

किं च--हिंसादिपापपरिहारो धर्मसिद्धेर्लिङ्गमित्यार्हता' स्वीकुर्वन्ति । तथा चोक्तम्-

औदार्यं दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे', प्रायेण जनप्रियत्व च ॥ इति ।

पापजुगुप्सा=पापपरिहारः ।

षट्कायवधसाध्य प्रतिमापूजन कुर्वता धर्मसिद्धि कथ स्यादिति विचारयन्तु सुधिय । अपर च--

प्रतीत नहीं होता है क्यों कि वचनानुष्ठान धर्म का अर्थ वचन के अनुसार होने वाला अनुष्ठान धर्म है इसमे कोई जातका दोष नहीं आता है । "

किंच--हिंसादिक पांच पापों का परित्याग धर्म सिद्धि का चिह्न है इस प्रकार की मान्यता जैनियो की है । शास्त्रान्तर मे यही बात प्रकट की गई है-

औदार्य दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोधः ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे' प्रायेण जनप्रियत्व च ॥ (षोडश-ग्रथ ४ प्रकरण)

उदारता-हृदय की विशालता, दाक्षिण्य-सर्व जीवो के अनुकूल प्रवृत्ति, पापजुगुप्सा-पाप का परित्याग, निर्मलबोध-तत्त्वज्ञान, और जन प्रियत्व ये ५ धर्मसिद्धि के लक्षण हैं। अब यहा पर विचारने की बात यह है कि जब पाप का परिहार करना यह धर्मसिद्धि का लक्षण

આવશ્યકતા જણાતી નથી કેમકે વચનાનુષ્ઠાન ધર્મનો અર્થ વચન મુજબ થનાર અનુષ્ઠાન ધર્મ છે આમા કોઇ પણ જાતનો દોષ નથી

કિંચ—હિંસા વગેરે પાચ પાપોનો પરિત્યાગ ધર્મસિદ્ધિનુ ચિહ્ન છે આ જાતની માન્યતા જૈનીઓની છે શાસ્ત્રાતરમા પણ એ જ વાત સ્પષ્ટ કરવામા આવી છે —

औदार्य दाक्षिण्य पापजुगुप्साऽथ निर्मलो बोध ।
लिङ्गानि धर्मसिद्धे प्रायेण जिनप्रियत्व च ॥ (षोडशग्रथ ४ प्रकरण)

ઉદારતા—હૃદયની વિશાલતા, દાક્ષિણ્ય-બધા જીવોને અનુકૂળ થઇ પડે તેવી પ્રવૃત્તિ, પાપ જુગુપ્સા-પાપનો ત્યાગ, નિર્મળ બોધ – તત્ત્વજ્ઞાન, અને જિનપ્રિયત્વ આ પાચે ધર્મસિદ્ધિના લક્ષણો છે, હવે આપણી સામે આ વાત વિચાર કરવાયોગ્ય છે કે જ્યારે પાપનો પરિહાર કરવો એ ધર્મસિદ્ધિનુ લક્ષણ

एकेन्द्रियादिषड्जीवनिकायजीवानां रक्षणं धर्मस्य मूलमिति वक्तामस्ता षट्कायविराधनासाध्यायाः प्रतिमापूजाया अङ्गीकारे जैनत्वमेव नश्यति, जैन धर्मस्य मूलवस्तुनः समुच्छेदात् ।

तथा चोक्तम्-जीवदयसच्चवयण, परधणपरिवज्जण सुसील च ।
खंती पंचिन्दियनिग्गहो य धम्मस्स मूलाइ ॥ दर्शनशुद्धि-२ तत्त्व)

है तो प्रतिमा का पूजन करने वाले के उसका परिहार कैसे हो सकता है। क्यों कि यह पहिले ही प्रकट किया जा चुका है कि यह प्रतिमा पूजन कार्य षट् काय के आरंभ के बिना साध्य हो ही नही सकता। अतः प्रतिमापूजन वाले को धर्मसिद्धि का लाभ मानना यह एक मनग ढन कल्पना ही है-शास्त्रीय कल्पना नहीं। शास्त्र में तो यही जिनेन्द्र देव की आज्ञा है कि एकेन्द्रिय आदि षट् निकाय के जीवों की रक्षा करना ही प्रत्येक जैन मात्र का कर्तव्य है, और यही धर्म का मूल है जब इस प्रकार की वीतराग प्रभु की आज्ञा है-तो फिर यह तो सोचो की षट्निकाय की विराधना से साध्य इस प्रतिमापूजन की मान्यता में जैनत्व का रक्षण ही कैसे हो सकता है-। प्रत्युत जैनधर्म का इस प्रकार की मान्यता मे समूलत नाश ही हो जाता है।

जीवदयसच्चवयण परधनपरिवज्जण सुसीलच।
खंती पंचिंदिय निग्गहोय धम्मस्स मूलाइ॥ (दर्शन शु २ तत्त्व)

છે ત્યારે પ્રતિમાની પૂજા કરનારાઓ માટે આનો પરિહાર કેવી રીતે થઈ શકે તેમ છે, કેમકે આ વાત પહેલા જ પ્રગટ કરવામા આવી છે કે આ પ્રતિમા પૂજન કાર્ય ષટ્કાયના આરભ વગર સાધ્ય થઇ શકે તેમ નથી એથી પ્રતિમા પૂજનવાળા માટે ધર્મસિદ્ધિનો લાભ સમજી લેવો આ એક ખોટી કલ્પના માત્ર છે શાસ્ત્રીય કલ્પના નથી શાસ્ત્રમા તો જિનેન્દ્રદેવની એ જ આજ્ઞા છે કે એકેન્દ્રિય વગેરે ષટ્કાયના જીવોની રક્ષા કરવી જ દરેકે દરેક જૈનનુ કર્તવ્ય છે અને એ જ ધર્મનુ મૂળ છે જ્યારે આ જાતની વીતરાગ પ્રભુની આજ્ઞા છે ત્યારે આ વાત ઉપર તો વિચાર કરીએ કે ષટ્કાય નિકાયની વિરાધનાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા પૂજનની માન્યતામા જૈનત્વનુ રક્ષણ જ કેવી રીતે થઈ શકે છે આ જાતની માન્યતાથી તો જૈન ધર્મનો મૂળરૂપે વિનાશ જ થઇ જાય છે

जीवदयसच्चवयण परधनपरिवज्जण सुसील च ।
खंती पंचिदियनिग्गहोय धम्मस्स मूलाइ ॥ (दर्श-   -तत्त्व)

जीवाश्चेतनादिलिङ्गव्यङ्ग्या एकेन्द्रियादय तेषा दया=रक्षणं जीवदयेति। ह्रस्वत्व प्राकृतप्रभवम्। धर्ममूल भवन्ति सर्वत्र क्रियाऽध्याहारः कार्यः।

प्रतिमापूजन विशुद्धपरिणामजनकत्वादुपादेयमितिकथन निर्मूलम्--

धर्माङ्गेषु दयायाः प्राधान्यात् प्राथम्य वर्तते। हिंसासाध्यायां प्रतिमापूजायां दयाया अभावाद् धर्माङ्गत्व न सिध्यति। तथा च विशुद्धात्मपरिणामरूप धर्मं प्रति कारणत्व प्रतिमापूजनस्य न सभवति। अन्यच्च--

इस लोक में यही बात कही गई है। जीवों की दया करना सत्य बोलना, पर धन के हरण करने का त्याग करना, कुशील का त्यागना, क्षमाभाव रखना, पाचों इन्द्रियों को वश में रखना ये सब धर्म के मूल हैं। जिस प्रकार बिना मूल-जड के वृक्ष की स्थिति आदि नहीं हो सकती है-उसी प्रकार उनके बिना भी धर्मरूपी महावृक्ष की जीवात्मा ओं में स्थिरता नहीं हो सकती है जो व्यक्ति "प्रतिमा के पूजने से विशुद्ध परिणामो की आत्मा में जागृति होती है" इस बात का समर्थन करते हुए उपयोगिता सिद्ध करते हैं उनका यह कथन बिलकुल ही निर्मूल है क्यों कि धर्म में सर्वप्रथम स्थान दया को ही दिया गया है जीवों की हिंसा से साध्य इस प्रतिमापूजन में उस दया का सरक्षण ही नहीं होता है-इसलिये उसे धर्म का अग कैसे माना जा सकता है जो धर्म का ही अग नहीं बनता है उससे कैसे परिणामो में विशुद्धता की जागृति हो सकती है अतः यह प्रतिमापूजन धर्म प्राप्ति में कारण नहीं है ऐसा मानना चाहिये।

આ શ્લોકમા એ જ વાત બતાવવામા આવી છે કે જીવ ઉપર દયા કરવી, સત્ય બોલવુ, પારકાના ધનને લઈ લેવાની વૃત્તિને દૂર કરવી, કુશીલનો ત્યાગ કરવો, ક્ષમાભાવ રાખવો, પાચ ઇન્દ્રિયોને વશમા રાખવી આ બધા ધર્મના મૂળ છે જેમ મૂળ-જડ વગરના વૃક્ષની સ્થિતિ વગેરે જ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એમના વગર પણ ધર્મરૂપી મહાવૃક્ષની જીવાત્માઓમા સ્થિરતા થઇ શકે તેમ નથી જે વ્યક્તિ "પ્રતિમાના પૂજનથી વિશુદ્ધ પરિણામોની આત્મામા જાગૃતિ થાય છે" આ વાતને યોગ્ય માનીને આની ઉપયોગિતા સિદ્ધ કરે છે, તેમનુ આ કથન સાવ નિર્મૂળ-વ્યર્થ છે કેમકે ધર્મમા સૌ પ્રથમ સ્થાન દયાનેજ આપવામા આવે છે જીવોની હિંસાથી સાધ્ય આ પ્રતિમા પૂજનમા તે દયાની રક્ષા જ થતી નથી એટલા માટે આને ધર્મનુ અગ કેવી રીતે માની શકીયે અને જે ધર્મનુ જ અગ થઈ શકતુ નથી તેનાથી કેવી રીતે પરિણામોમા વિશુદ્ધતાની જાગૃતિ થઈ શકે એટલા માટે આ પ્રતિમાપૂજન ધર્મપ્રાપ્તિમા કારણ નથી આમ માની લેવુ જોઈએ

धर्मालम्बनानि स्थानाङ्गसूत्रे भगवता प्रज्ञप्तानि--
"धम्म ण चरमाणस्स प च निस्साठाणा पण्णत्ता।
त जहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" ॥ इति।

भगवता धर्मालम्बनानि पञ्चैव कथितानि। तत्र "छक्काया" इत्युक्त्या गणराजादीनामपि सग्रहे सत्यपि पुनस्तेषा विशिष्योपन्यासः प्राधान्यख्यापनार्थः

अन्यच्च-"धम्म चरमाणस्स पच निस्साठाणा पण्णत्ता-तजहा-छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति-भगवान ने धर्म के छहकाय, गण, राजा, गाथापति और शरीर इस प्रकार ये छह आलम्बन स्थान स्थानाङ्गसूत्र में कहे हैं। इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है-इससे यह भलीभांति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते-जिस प्रकार छहकाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है। यद्यपि "छहकाय" इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वत. कथन सिद्ध हो जाता है, क्यो की इन सब का समावेश उसी एक पद में हो जाता है। फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है। इसी प्रकार

અને બીજુ પણ કહ્યુ છે કે "धम्म चरमाणस्स पच निस्साठाणा पण्णत्ता-त जहा छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति, ભગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલબનસ્થાન સ્થાનાગ સૂત્રમા કહ્યા છે આ બધામા જિન પ્રતિમાનુ કથન કરવામા આવ્યુ નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનુ પૂજન ધર્મનુ અવલબન નથી જો સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમા જિન પ્રતિમાના પૂજનનુ કાર્ય ધર્મના અવલબન રૂપમા માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનુ પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનુ કથન કર્યુ છે તેમ કર્યુ હોત જો કે "ષટ્કાય" આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનુ સ્વત કથન સિદ્ધ થઇ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમા જ થઇ જાય છે, છતાય આ બધાનો સ્વતત્ર રૂપમા જે નામ નિર્દેશ કરવામા આવ્યો છે તેનુ કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે જો ' પણ

दर्शनवन्दनपूजनादिना जिनप्रतिमायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वाऽष्टकर्मक्षयहेतुत्व स्वीकारे तु अस्या अपि निश्रास्थानत्वेन निश्रास्थानेषु विशिष्य तदुपन्यासमकृत्वा "पच निस्साठाणा पण्णत्ता" इति कथन विरुध्यते। तस्मात् जिनप्रतिमाया निश्रास्थानेष्वनभिधानात् प्रतिमाया धर्मालम्बनत्व न सिध्यति। एव च तत्पूजन कुशलात्मपरिणामविशेषस्य धर्मस्य कारण नास्तीति विश्वसनीयम्।

प्रतिमापूजायामारम्भः परिग्रहश्चावश्य भावी। ताभ्या विना पूजाया असभवात् तथाऽपि-प्रतिमापूजोपदेशकाः एव वदन्ति—

यदि जिन प्रतिमा भी दर्शनवन्दना और पूजादिक द्वारा सम्यक्त्वशुद्धि एव अष्टकर्मों के क्षय का कारण होती तो उसका भी धर्म का आलम्बनरूप होने से यहा पर विशेषरूप से शास्त्रकार को कथन करना चाहिये था। परन्तु ऐसा तो सूत्रकार ने किया नहीं है। फिर भी यदि उसे धर्म का अवलम्बनरूप स्वीकार किया जाय तो इस सूत्र में प्रतिपादित 'पाच ही निश्रास्थान हैं" इस कथन से विरोध आता है कारण कि उन स्थानों से अतिरिक्त एक और जिनप्रतिमापूजन धर्म का आलम्बन रूप स्थान बढ जाता है अतः 'पच निस्साठाणा पण्णत्ता' इस सूत्र प्रदर्शित उपन्यास से यह बात पुष्ट होती है कि जिन प्रतिमा धर्म का आलम्बन स्थान नहीं है। यह तो उस के पक्षपातियो के ही दिमाग की एक उटपटाग सूझ है यह जानते हुए भी कि जिनप्रतिमापूजन में आरभ और परिग्रह अवश्यभावी है, इनके विना वह कथमपि साध्य हो नहीं सकती है, तो भी जिनपूजाके उपदेशक खेद है कि जनता को

દર્શન વન્દના અને પૂજા વગેરે વડે સમ્યકત્વ શુદ્ધિ અને અષ્ટ કર્મોના ક્ષયનુ કારણુ હોત તો ધર્મના આલબનરૂપ હોવા બદલ અહીં વિશેષરૂપમા શાસ્ત્રકારો વડે તેનુ કથન કરવુ જોઈએ પણ સૂત્રકારે આવુ કઈ કર્યું નથી છતાય જો તેને ધર્મના અવલબનરૂપે સ્વીકારીયે તો આ સૂત્રમા પ્રતિપાદિત "પાચ જ નિશ્રાસ્થાનો છે" આ કથનથી વિરોધ ઊભો થાય છે કેમકે તે સ્થાનોથી અતિરિક્ત એક બીજા જિનપ્રતિમા પૂજન ધર્મના આલબનરૂપ સ્થાનની વૃદ્ધિ થઈ જાય છે એથી "पच निस्साठाणा पण्णत्ता" આ સૂત્ર પ્રદર્શિત ઉપન્યાસથી આ વાત પુષ્ટ થાય છે કે જિનપ્રતિમા ધર્મનુ આલબન સ્થાન નથી આ તો ફક્ત તેના તરફદારીઓના મસ્તિષ્કની જ વ્યર્થની કલ્પના છે જિનપ્રતિમા પૂજનમા આરભ અને પરિગ્રહ અવશ્યભાવી છે એના વગર તે કોઈ પણ સજોગે સાધ્ય થઈ શકે તેમ નથી આવુ જાણવા છતા અહુ દુખ સાથે કહેવુ પડે છે કે જિન પૂજાના ઉપદેશકો સમાજને "पूयाए काय

धर्मालम्बनानि स्थानाङ्गसूत्रे भगवता प्रज्ञप्तानि—
"धम्म ण चरमाणस्स प च निस्साठाणा पण्णत्ता।
त जहा—छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" ॥ इति।

भगवता धर्मालम्बनानि पञ्चैव कथितानि। तत्र "छक्काया" इत्युक्त्या गणराजादीनामपि संग्रहे सत्यपि पुनस्तेषां विशिष्योपन्यासः प्राधान्यख्यापनार्थः

अन्यच—"धम्म चरमाणस्स पच निस्साठाणा पण्णत्ता—त जहा—छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति—भगवान ने धर्म के छहकाय, गण, राजा, गाथापति और शरीर इस प्रकार ये छह आलम्बन स्थान स्थानाङ्गसूत्र में कहे हैं। इनमें जिन प्रतिमा का कथन नहीं किया है—इससे यह भलीभांति विदित हो जाता है कि जिन प्रतिमा और उसका पूजन धर्म का अवलम्बन रूप नहीं है यदि जिन प्रतिमा का पूजन कार्य धर्म का अवलम्बनरूप सिद्धान्तकारों की दृष्टि में मान्य होता तो वे अवश्य इन स्थानों के कथन करते—जिस प्रकार छहकाय, गण, राजा इत्यादि का कथन किया है। यद्यपि "छहकाय" इस एक पद से ही गण, राजा आदि का स्वतः कथन सिद्ध हो जाता है, क्यो की इन सब का समावेश उसी एक पद मे हो जाता है। फिर भी इनका भिन्न २ रूप से जो नाम निर्देश किया है उसका कारण ये धर्म के प्रधान आलम्बन रूप हैं इस बात को प्रकट करने के लिये ही किया गया है। इसी प्रकार

અને બીજુ પણ કહ્યુ છે કે "धम्म चरमाणस्स पच निस्साठाणा पण्णत्ता—त जहा छक्काया, गणो, राया, गिहवई, सरीर" इति, ભગવાને ધર્મના છ કાય, ગણ, રાજા, ગાથાપતિ અને શરીર આ રીતે છ આલબનસ્થાન સ્થાનાગ સૂત્રમા કહ્યા છે આ બધામા જિન પ્રતિમાનુ કથન કરવામા આવ્યુ નથી એનાથી આ સ્પષ્ટ રીતે જણાય છે કે જિનપ્રતિમા અને તેનુ પૂજન ધર્મનુ અવલબન નથી જો સિદ્ધાન્તકારોની દૃષ્ટિમા જિન પ્રતિમાના પૂજનનુ કાર્ય ધર્મના અવલબન રૂપમા માન્ય હોત તો તેઓ ચોક્કસ આ સ્થાનોના કથનની સાથે સાથે તેમનુ પણ કથન જેમ છ કાય, ગણ રાજા વગેરેનુ કથન કર્યું છે તેમ કર્યું હોત જો કે "ષટ્કાય" આ એક પદથી જ ગણ, રાજા વગેરેનુ સ્વત કથન સિદ્ધ થઈ જાય છે, કેમકે આ બધાનો સમાવેશ તે એક પદમા જ થઈ જાય છે, છતાય આ બધાનો સ્વતત્ર રૂપમા જે નામ નિર્દેશ કરવામા આવ્યો છે તેનુ કારણ આ છે કે તે સર્વે ધર્મના પ્રધાન આલબનરૂપ છે, આ વાતને પ્રગટ કરવા માટે જ કરવામા આવ્યો છે આ પ્રમાણે જો [illegible] પણ

'दो ट्ठाणाइ' द्वे स्थाने=द्वे वस्तुनी 'अपरियाणित्ता' अपरिज्ञाय=ज्ञपरिज्ञया 'एतावारम्भपरिग्रहावनर्थाय' इत्यविज्ञाय अल ममाभ्यामिति परिहाराभिमुख्यद्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च प्रवृत्तवान् तयो प्रवृत्तः, 'आया' आत्मा=जीव, नो केवलिप्रज्ञप्त=जिनोक्त धर्म लभेत श्रवणतया-श्रवणभावेन श्रोतुमित्यर्थ.। जैनधर्मश्रवणानर्हो भवतीति भावः । तद् यथा आरम्भः-प्राणातिपातादिरूप, पापस्थानम् परिग्रहः-धनधान्यादिसग्रहः ।

द्वे स्थाने अपरिज्ञाय – ज्ञपरिज्ञयाऽनर्थकारणमज्ञात्वा प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च तत्र प्रवृत्तः 'आया' आत्मा-जीवः केवल बोधि=अर्थात् सम्यक्त्व न बुध्येत=न प्राप्नुयादित्यर्थ ।

पाने के भी योग्य बन सकती है" यह सूत्र हमे यह शिक्षा देता है कि भला जिस परिग्रह और आरभयुक्त आत्मामें केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनने तक की भी योग्यता नही है और न जिसमें सम्यक्त्व का अनुभव है, है उस आत्मा में "यह प्रतिमा सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण होता" इस प्रकार की मान्यता आकाश के फूल के समान एक कल्पना मात्र ही है। अतः यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि इस प्रतिमापूजन मे न तो धर्म के कोई मौलिकतत्त्व का समावेश हे और न धर्म का कोई अग ही है। यह न तो धर्म का आलम्बनरूप है और न धर्म के लक्षण से ही युक्त है। फिर भी इसे धर्म पद का वाच्य मानना केवल स्पष्ट रूप से उत्सूत्र प्ररूपणामात्र है इस प्रकार शास्त्रीयमर्यादा के विरुद्ध इस प्रतिमा पूजन का उपदेश देने वाले तथा प्रतिमापूजन कराने वाले उप-

---

બની શકે તેમ નથી "આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે પરિગ્રહ અને આરભયુક્ત આત્મામા કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સાભળવા સુધીની પણ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામા "તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનુ કારણ હોય છે" આ જાતની માન્યતા આકાશના પુષ્પની જેમ એક ખોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજુ શુ છે ? એટલા માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનુ કોઈ પણ એક અ ગ છે આ ધર્મનુ આલ મ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી છતા ય તેને ધર્મ પદવાચ્ય માનવુ તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની મર્યાદાથી વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

अपि च-" पूयाए कायवहो, पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया ।
सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा " ॥१॥
छाया-पूजाया कायवधः प्रतिक्रुष्टः सतु किन्तु जिनपूजा ।
सम्यक्त्वशुद्धिहेतु-रिति भावनीया तु निरवद्या ॥१॥
सर्वमेतदुत्सूत्रप्ररूपणम्---श्रूयतां प्रवचन तावत्--
दो ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए। त जहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव । दोठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोहिं बुज्झिज्जा। त जहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव ॥ (स्था २ ठा १उ.)इति

" पूयाए कायवहो पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ इस प्रकार की उत्सूत्र प्ररूपणा द्वारा भ्रम में ही डालते रहते हैं। हमें तो बुद्धि पर तरस आता है कि वे क्यों नही इस सिद्धान्त को समझने की चेष्टा करते हैं कि-" दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव । दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोधि बुज्झिज्जा त जहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव (स्था २ ठा १ उ.) ये दो धनधान्य आदि रूप परिग्रह और प्राणातिपात आदि रूप आरंभ स्थान अनर्थ के कारण है । जब तक आत्मा ज्ञ परिज्ञा से इन्हें जान कर और प्रत्याख्यान परिज्ञा से इनका परित्याग नही कर देती है तब वह ब्रह्मदत्त की तरह केवलि द्वारा कथित धर्म के सुननेका अधिकारी नहीं हो सकती है और न इन दोनों के त्याग किये विना वह सम्यक्त्व को

वहो पडिकुट्ठो सोउ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા વડે ભ્રમમા જ નાખી રાખે છે અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાતને સમજાવવાની કોશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે " दो ठाणाइ अपरियाणित्ता आयाणो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव। दो ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिबोधि बुज्झिज्जा त जहा-आरंभे चेव परिग्गहे चेव (स्था० २ ठा० १ उ०) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરંભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે જ્યા સુધી આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યા સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત ધર્મને સાભળવા માટે અધિકારી (યોગ્ય પાત્ર) ગણાઈ શકે નથી અને તે બનેનો જ્યા સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યા સુધી તે સમ્ય

'दो ठाणाइ' द्वे स्थाने=द्वे वस्तुनी 'अपरियाणित्ता' अपरिज्ञाय=ज्ञपरिज्ञया 'एतावारम्भपरिग्रहावनर्थाय' इत्यविज्ञाय अल ममाभ्यामिति परिहाराभिमुख्य द्वारेण प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च अत्यक्त्वा तयो प्रवृत्तः, 'आया' आत्मा=जीव, नो केवलिप्रज्ञप्त=जिनोक्त धर्मं लभेत श्रवणतया-श्रवणभावेन श्रोतुमित्यर्थः। जैनधर्मश्रवणानर्हो भवतीति भावः। तद् यथा आरम्भः-प्राणा तिपातादिरूप, पापस्थानम् परिग्रहः-धनधान्यादिसग्रहः।

द्वे स्थाने अपरिज्ञाय - ज्ञपरिज्ञयाऽनर्थकारणमज्ञात्वा प्रत्याख्यानपरिज्ञया अप्रत्याख्याय च तत्र प्रवृत्तः 'आया' आत्मा-जीवः केवल बोधि=अर्थात् सम्यक्त्व न बुध्येत=न प्राप्नुयादित्यर्थ ।

पाने के भी योग्य बन सकती है" यह सूत्र हमें यह शिक्षा देता है कि भला जिस परिग्रह और आरभयुक्त आत्मामें केवलि प्रज्ञप्त धर्म सुनने तक की भी योग्यता नहीं है और न जिसमें सम्यक्त्व का अनुभव है, है उस आत्मा में "यह प्रतिमा सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण होता" इस प्रकार की मान्यता आकाश के फूल के समान एक कल्पना मात्र ही है। अतः यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि इस प्रतिमापूजन में न तो धर्म के कोई मौलिकतत्त्व का समावेश है और न धर्म का कोई अग ही है। यह न तो धर्म का आलम्बनरूप है और न धर्म के लक्षण से ही युक्त है। फिर भी इसे धर्म पद का वाच्य मानना केवल स्पष्ट रूप से उत्सूत्र प्ररूपणामात्र है इस प्रकार शास्त्रीयमर्यादा के विरुद्ध इस प्रतिमा पूजन का उपदेश देने वाले तथा प्रतिमापूजन कराने वाले उप-

---

બની શકે તેમ નથી "આ સૂત્ર અમને આ જાતની ભલામણ કરે છે કે જે પરિગ્રહ અને આરભયુક્ત આત્મામા કેવલિ પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મ સાભળવા સુધીની પણ યોગ્યતા નથી અને જેમા સમ્યક્ત્વની અનુભૂતિ પણ નથી તે આત્મામા "તે પ્રતિમા સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનુ કારણ હોય છે," આ જાતની માન્યતા આકાશના પુષ્પની જેમ એક ખોટી કલ્પના માત્ર જ નથી તો બીજુ શુ છે ? એટલા માટે એ સિદ્ધાન્ત નિશ્ચિત થાય છે કે આ પ્રતિમાપૂજનમા ધર્મના ન કોઈ મૌલિક તત્ત્વોનો સમાવેશ છે અને ન તો તે ધર્મનુ કોઈ પણ એક અગ છે આ ધર્મનુ આલમ્બનરૂપ નથી અને ધર્મના લક્ષણથી યુક્ત પણ નથી છતા ય તેને ધર્મ પદવાચ્ય માનવુ તે સ્પષ્ટ રીતે ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા માત્ર છે આ રીતે શાસ્ત્રની મર્યાદાથી-વિપરીત આ પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ આપનારાઓ તેમજ પ્રતિમા

अपि च-" पूयाए कायवहो, पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया ।
सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा " ॥१॥

छाया-पूजाया कायवधः प्रतिक्रुष्टः सनु किन्तु जिनपूजा ।
सम्यक्त्वशुद्धिहेतु-रिति भावनीया तु निरवद्या ॥१॥

सर्वमेतदुत्सूत्रप्ररूपणम्--श्रूयतां प्रवचन तावत्--

दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव । दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोहिं बुज्झिज्जा । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव ॥ (स्था. २ ठा १उ)इति

" पूयाए कायवहो पडिकुट्ठो सो उ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ इस प्रकार की उत्सूत्र प्ररूपणा द्वारा भ्रम में ही डालते रहते हैं। हमें तो बुद्धि पर तरस आता है कि वे क्यों नही इस सिद्धान्त को समझने की चेष्टा करते हैं कि-" दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव । दोट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवल बोधिं बुज्झिज्जा त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव (स्था २ ठा १ उ.) ये दो धनधान्य आदि रूप परिग्रह और प्राणातिपात आदि रूप आरभ स्थान अनर्थ के कारण है । जब तक आत्मा ज्ञ परिज्ञा से इन्हें जान कर और प्रत्याख्यान परिज्ञा से इनका परित्याग नही कर देती हे तब वह ब्रह्मदत्त की तरह केवलि द्वारा कथित धर्म के सुननेका अधिकारी नही हो सकती हैं और न इन दोनों के त्याग किये विना वह सम्यक्त्व को

વહો પડિકુટ્ઠો સોઉ किं तु जिणपूया । सम्मत्तसुद्धिहेउ, त्ति भावणीया उ णिरवज्जा ॥ १ ॥ આ જાતની ઉત્સૂત્ર પ્રરૂપણા વડે ભ્રમમા જ નાખી રાખે છે અમને તો તેમની બુદ્ધિ ઉપર દયા આવે છે કે તેઓ આ સિદ્ધાતને સમ જાવવાની કોશિશ કેમ નહિ કરતા હોય ? કેમકે " दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आयाणो केवलिपण्णत्त धम्म लभेज्ज सवणयाए । त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव । दो ट्ठाणाइ अपरियाणित्ता आया णो केवलिबोधि बुज्झिज्जा त जहा-आरभे चेव परिग्गहे चेव (स्था० २ ठा० १ उ०) આ બે ધન ધાન્ય વગેરે રૂપ પરિગ્રહ અને પ્રાણાતિપાત વગેરે રૂપ આરભ સ્થાન અનર્થના કારણ છે જ્યા સુધી આત્મા જ્ઞ પરિજ્ઞા વડે એમને જાણીને અને પ્રત્યાખ્યાન પરિજ્ઞાવડે એમનો પરિત્યાગ કરતી નથી ત્યા સુધી તે બ્રહ્મદત્તની જેમ કેવલિવડે કથિત ધર્મને સાભળવા માટે અધિકારી (યોગ્ય પાત્ર) ગણાઈ શકે તેમ નથી અને તે બ નેનો જ્યા સુધી ત્યાગ કરે નહિ ત્યા સુધી તે સમ્યકૃત્વ [illegible] યોગ્ય

तथा-सम्यक्त्वशुद्ध्यर्थं कर्मक्षयार्थं च प्रतिमापूजने प्रवृत्तस्य जीवस्य षट्कायोपमर्दनसाध्यपूजया ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मणो वृद्धौ सत्यां सम्यक्त्वस्य केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्याऽपि प्राप्तिः कालत्रयेऽपि न सम्भवति किंपुनः कर्मक्षयाशा

सम्यक्त्वमात्मनः क्षायोपशमिको भावः। प्रतिमा तु न क्षयोपशमस्वरूपा, न चापि क्षयोपशमहेतुः, ज्ञानावरणीयदर्शनमोहनीयकर्मनिर्जराजनकत्वाभावात्, देशतः कर्मक्षयो हि निर्जरा तां प्रति तपस एव कारणत्वात्। उक्तं चोत्तराध्ययनसूत्रे-

प्रकार सम्यक्त्व की शुद्धि अथवा कर्मों का विनाश प्रतिमापूजनसे नहीं होता है, प्रत्युत जिस प्रकार वह रुधिरयुक्त वस्त्र रुधिर से साफ किये जाने पर अधिक मलिन हो जाता है उसी प्रकार षट्काय की विराधना साध्य इस प्रतिमापूजन में लवलीन जीव भी ज्ञानावरणीय और दर्शन मोहनीय कर्म की वृद्धि करता हुआ अधिकाधिक मलिन होता रहता है वह कभी भी इनकी वृद्धिमें सम्यक्त्व और केवलि प्रज्ञप्त धर्म का पाने वाला नहीं बन सकता है। इसलिये कर्मों के क्षय करने की आशा से प्रतिमापूजन में लवलीन मनुष्य अपने कर्मों का इस कार्यसे क्षय करता है यह एक दुराशामात्र है अरे! जब इस कार्य से जीव सम्यक्त्व और केवलिप्रज्ञप्त धर्म तक के भी लाभ से सदा वंचित रहता है तो उससे फिर कर्म क्षय मानना यह कोरी कल्पना मात्र ही है। सम्यक्त्व यह जीव का क्षायोपशमिक भाव है। प्रतिमा न क्षयोपशम स्वरूप है और न उस क्षयोपशम में कारण रूप ही है। कारण कि इस से ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म की निर्जरा नहीं होती है। कर्मों का

ખરડાયેલું વસ્ત્ર લોહીવડે સાફ કરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ ષટ્કાયની વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તલ્લીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે કોઇ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને મેળવી શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા પૂજનમા તલ્લીન માણસ પોતાના કર્મોને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય કરવા માગે છે તે ફક્ત દુરાશા માત્ર છે જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ ક્ષયની આશા રાખવી તે ખોટી કલ્પના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયોપશમિક ભાવ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયોપશમમા કારણ રૂપે છે કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

यत्र केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्य श्रवणायापि योग्यता न भवति, सम्यक्त्वस्य च नानुभवः, तत्र सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वं गगनकुसुमवन्मनोविकल्पमात्रम्। यस्य प्रतिमापूजनस्य नास्ति धर्ममूलत्वं न चास्ति धर्माङ्गत्वं, नापि धर्मालम्बनत्वं, न चापि धर्मलक्षणसमन्वितत्वं, तस्य धर्मपदवाच्यत्वकल्पने – गुरुपदमेनोऽसूत्रप्ररूपणम्। भगवताऽर्हता-प्रवचने अनुपदिष्टस्य प्रतिमापूजनस्योपदेशकरणेन भ्रान्तिं जनयतां प्रतिमापूजनं कारयतां च का गतिः स्यादिति समालोचनीयं सुधीभिः। अपरं च-

दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए तं जहा खएण चेव उवसमेण चेव एवं जाव मणपज्जवनाणं उप्पाडेज्जा तं जहा-खएण चेव उवसमेण चेव। (स्था० २ ठा० ४ उ०)

" खएण चेव " इति ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मण उदयप्राप्तस्य क्षयेण, अनुदितस्य चोपशमेन=क्षयोपशमेनेत्यर्थः। अत्र पदद्वयेन क्षयोपशमरूपोऽर्थो गृह्यते। यावत् करणात्-" केवलं बोहिं बुज्झेज्जा। "

केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्य श्रवणं तथा सम्यक्त्वं च ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मणः क्षयोपशमादेव लभ्यते इति भगवता प्रतिबोधितम्। इदमत्रबोध्यम् नहि रुधिरलिप्तवस्त्रस्य रुधिरेण प्रक्षालने शुद्धिर्भवति प्रत्युत मलिनतरत्वमेव,

---

देशक तथा प्रेरक की वास्तविक वस्तुस्थिति से जनता को अंधकार में रखने के कारण क्या गति होगी यह स्वयं बुद्धिमानों को विचार ने जैसी बात है।

अपरं च—दोहिं ठाणेहिं आयाकेवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए-तं जहा इत्यादि सूत्र—

इसका भावार्थ यह है-जीव केवलियों द्वारा प्रज्ञप्त धर्म का श्रवण तथा सम्यक्त्व का लाभ ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म के क्षय और क्षयोपशम से ही करता है प्रतिमापूजन से नहीं। जिस प्रकार रुधिर से मैले वस्त्र की सफाई रुधिर में ही धोने से नहीं होती, उसी

પૂજન કરાવનારા ઉપદેશકો પ્રેરકરૂપ થઈને યથાર્થ વસ્તુસ્થિતિથી સમાજને અંધારામાં રાખે છે તે બદલ તેમની શી દશા થશે તે વિદ્વાનો સમજી શકે છે

અને બીજું પણ કે—दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए-तं जहा—ઈત્યાદિ સૂત્ર—

આનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે કે કેવલિઓ વડે પ્રજ્ઞપ્ત ધર્મનું શ્રવણ તેમજ સમ્યક્ત્વનો લાભ જીવ જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષય અને ક્ષયોપશમથી કરે છે પ્રતિમાપૂજનથી નહિ જેમ લોહીથી ખરડાએલા વસ્ત્રની સાફસૂફી લોહી વડે ધોવાથી થતી નથી તેમજ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિ અથવા તો કર્મોનો વિનાશ પ્રતિમાપૂજનથી થતો નથી બલ્કે જેમ તે લોહીથી

तथा–सम्यक्त्वशुद्ध्यर्थं कर्मक्षयार्थं च प्रतिमापूजने प्रवृत्तस्य जीवस्य षट्कायोपमर्दनसाध्यपूजया ज्ञानावरणीयस्य दर्शनमोहनीयस्य च कर्मणो वृद्धौ सत्यां सम्यक्त्वस्य केवलिप्रज्ञप्तधर्मस्याऽपि प्राप्तिः कालत्रयेऽपि न सम्भवति किंपुन कर्मक्षयाशा

सम्यक्त्वमात्मनः क्षायोपशमिको भावः। प्रतिमा तु न क्षयोपशमस्वरूपा, न चापि क्षयोपशमहेतु, ज्ञानावरणीयदर्शनमोहनीयकर्मनिर्जराजनकत्वाभावात्, देशतः कर्मक्षयो हि निर्जरा ता प्रति तपस एव कारणत्वात्। उक्त चोत्तराध्ययनसूत्रे–

प्रकार सम्यक्त्व की शुद्धि अथवा कर्मों का विनाश प्रतिमापूजनसे नहीं होता है, प्रत्युत जिस प्रकार वह रुधिरयुक्त वस्त्ररुधिर से साफ किये जाने पर अधिक मलिन हो जाता है उसी प्रकार षट्काय की विराधना साध्य इस प्रतिमापूजन में लवलीन जीव भी ज्ञानावरणीय और दर्शन मोहनीय कर्म की वृद्धि करता हुआ अधिकाधिक मलिन होता रहता है वह कभी भी इनकी वृद्धिमे सम्यक्त्व और केवलि प्रज्ञप्त धर्म का पाने वाला नहीं बन सकता है। इसलिये कर्मों के क्षय करने की आशा से प्रतिमापूजन में लवलीन मनुष्य अपने कर्मों का इस कार्यसे क्षय करता है यह एक दुराशामात्र है अरे! जब इस कार्य से जीव सम्यक्त्व और केवलिप्रज्ञप्त धर्म तक के भी लाभ से सदा वंचित रहता है तो उससे फिर कर्म क्षय मानना यह कोरी कल्पना मात्र ही है। सम्यक्त्व यह जीव का क्षायोपशमिक भाव है। प्रतिमा न क्षयोपशम स्वरूप है और न उस क्षयोपशम में कारण रूप ही है। कारण कि इस से ज्ञानावरणीय और दर्शनमोहनीय कर्म की निर्जरा नहीं होती है। कर्मों का

ખરડાયેલુ વસ્ત્ર લોહીવડે સાફ કરવાથી મલિન થઈ જાય છે તેમજ ષટ્કાયની વિરાધના સાધ્ય આ પ્રતિમાપૂજનમા તલ્લીન થયેલો જીવ પણ જ્ઞાનાવરણીય દર્શન મોહનીય કર્મની વૃદ્ધિ કરતો કરતોવધારે વધારે મલિન થતો જાય છે તે કોઇ પણ સમયે એમની વૃદ્ધિમા સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મને મેળવી શકનાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે કર્મોને ક્ષય કરવાની આશાથી પ્રતિમા પૂજનમા તલ્લીન માણસ પોતાના કર્મોને આ કાર્ય (પ્રતિમાપૂજન) થી ક્ષય કરવા માગે છે તે ફક્ત દુરાશા માત્ર છે જ્યારે આ કાર્યથી જીવ સમ્યક્ત્વ અને કેવલિપ્રજ્ઞપ્ત ધર્મના લાભથી પણ સદા દૂર રહે છે ત્યારે તેનાથી કર્મ ક્ષયની આશા રાખવી તે ખોટી કલ્પના માત્ર જ છે સમ્યક્ત્વ જીવનો ક્ષયોપશમિક ભાવ છે હવે ન તો પ્રતિમા ક્ષયોપશમ સ્વરૂપ છે અને ન તે ક્ષયોપશમમા કારણ રૂપે છે કેમકે એનાથી જ્ઞાનાવરણીય અને દર્શનમોહનીય

"भवकोडीसंचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ।" (अ ३०, गा ६) तत्त्वार्थसूत्रेऽपि—

"तपसा निर्जरा च" (अ० ९ सू० ४।

अत्र चकारः संवरसमुच्चयार्थः। समितिगुप्तिधर्मानुप्रेक्षापरीषहजयचारित्रैः संवरो भवति, तपसा तु निर्जरा संवरोऽपि चेति भावः सम्यक्त्वं नाम सम्यग्दर्शनं, तच्च स्थानाङ्गसूत्रम्- (स्था० २उ० १) द्विविधं प्रोक्तं। निसर्गसम्यग्दर्शनम् अभिगमसम्यग्दर्शनं चेति। निसर्गतः=स्वभावतः-न परोपदेशतो यदुत्पद्यते, तन्निसर्गसम्यग्दर्शनम्। अभिगमात् - सद्गुरूपदेशतो यदुत्पद्यते, तदभिगमसम्यग्दर्शनम्।

एक देश क्षय होना निर्जरा है। इस निर्जरा के प्रति कारणता तो तप में बतलाई गई है। देखो उत्तराध्ययन सूत्र में यही बात कही है—

"भवकोडी संचियं कम्मं तवसा निज्जरिज्जइ" करोडों भवों में संचित कर्मों की जीव तप से निर्जरा कर देता है। तत्त्वार्थ सूत्र में भी "तपसा निर्जरा च" इस सूत्र द्वारा यही बात कही गई है-तप से निर्जरा और संवर दोनों होते हैं। सूत्रस्थ "च" शब्द से संवर का ग्रहण हुआ है।

भावार्थ-इसका यही है कि पांच समिति, ३ गुप्ति, १० यतिधर्म १२, अनुप्रेक्षा, २२ परीषहों का जीतना एवं ५ प्रकार का चारित्र पालना- इनसे संवर होता है और तप से संवर एवं निर्जरा दोनों ही होते हैं। स्थानाङ्गसूत्र में सम्यग्दर्शन दो प्रकार का कहा गया है-१ निसर्ग

કર્મની નિર્જરા થઇ શકે તેમ નથી કર્મોના એકદેશનો ક્ષય થવો તે નિર્જરા પ્રત્યે કારણતા તો તપમા બતાવવામા આવી છે, જુઓ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા એ જ વાત સ્પષ્ટ કરી છે—

"ભવકોડી સંચિયં કમ્મં તવસા નિજ્જરિજ્જઇ" કરોડો ભવોમા સંચિત કર્મોની નિર્જરા જીવ તપથી કરી નાખે છે તત્ત્વાર્થ સૂત્રમા પણ "તપસા નિર્જરા ચ" આ સૂત્રવડે એ જ વાત કહેવામા આવી છે કે તપથી નિર્જરા તેમજ સંવર બન્ને થાય છે "સૂત્રમા આવેલ "ચ" શબ્દથી સંવરનુ ગ્રહણ કરવામા આવ્યુ છે

ભાવાર્થ—આનો આ પ્રમાણે છે કે પાચ સમિતિ, ૩ ગુપ્તિ, ૧૦ યતિધર્મ, ૧૨ અનુપ્રેક્ષા ૨૨ પરીષહોને જીતવા અને ૫ પ્રકારના ચારિત્રનુ પાલન કરવુ આ બધાથી સંવર થાય છે અને તપથી સંવર અને નિર્જરા બન્ને થાય છે સ્થાનાગસૂત્રમા સમ્યગ્દર્શન બે પ્રકારનુ બતાવવામા આવ્યુ૦

केचित्--अत्राभिगमशब्दार्थो निमित्तमपि, तच्च प्रतिमादि इति वदन्ति, तन्मोहनीयकर्मोदयविजृम्भितम् -- अभिगमसम्यग्दर्शने हि प्रतिमानिमित्तकत्व न सभवति श्रवणादिना क्षयोपशमहेतोरेव सद्गुरूपदेशस्यात्राभिगमन

और दूसरा अभिगम। जो सम्यग्दर्शन जीवों को स्वभाव से ही होता है। सद्गुरु के उपदेश से जो जीव को प्राप्त होता है वह अभिगम सम्यग्दर्शन है। निसर्ग और अभिगम में अन्तरग कारणदर्शन मोहनीय कर्म का क्षयोपशम आदि समान है परन्तु इसके होने पर भी जो जीव को सद्गुरु के उपदेश से प्राप्त होता है वह अभिगम और जो इसके बिना प्राप्त होता है वह निसर्ग सम्यग्दर्शन है कोई २ व्यक्ति अभिगम शब्द का अर्थ निमित्त परक भी करते हैं और वह निमित्त "प्रतिमा आदि है" ऐसा मानते हैं। परन्तु यह उनका कथन केवल मोह कर्म का ही विलास है क्यों कि अभिगम सम्यग्दर्शन में प्रतिमा रूप निमित्त कला सभवित नहीं होती है--वहा तो श्रवण आदि से दर्शन मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के कारणरूप सद्गुरु के उपदेश का ही अभिगम शब्द से ग्रहण हुआ है। यदि सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति में वह कारण होता तो उस का ग्रहण निमित्तरूप से होता परन्तु ऐसा तो होता नहीं है--कारण कि वह अचेतन है उस से प्रवचन के अर्थ का उपदेश होता नहीं है। प्रवचन के अर्थ के उपदेश सुनेबिना श्रोताओं को प्रवचन का अर्थ ज्ञान कैसे हो सकता है? अर्थज्ञान हुए बिना

છે ૧ નિસર્ગ અને ૨ અભિગમ સદ્ગુરુના ઉપદેશથી નહિ પણ જીવોને સ્વભાવથી જ જે સમ્યગ્દર્શન થાય છે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે સદ્ગુરુના ઉપદેશથી જે જીવને સમ્યગ્દર્શન પ્રાપ્ત થાય છે તે અભિગમ સમ્યગ્દર્શન છે નિસર્ગ અને અભિગમમા અતરગ કારણ દર્શનમોહનીય કર્મનો ક્ષયોપશમ વગેરે સમાન જ છે પણ એના હોવા છતાય જીવને જે સદ્ગુરુના ઉપદેશથી મળે છે તે અભિગમ અને જે એના વગર મળે તે નિસર્ગ સમ્યગ્દર્શન છે કેટલીક વ્યક્તિઓ અભિગમ શબ્દનો અર્થ નિમિત્ત પરક પણ કરે છે અને તે નિમિત્ત "પ્રતિમા વગેરે છે" એવુ માને છે પણ આવુ કથન તેમના ફક્ત મોહ કર્મનો જ વિલાસ છે કેમકે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા પ્રતિમા રૂપ નિમિત્તતા સભવિત થઈ શકે તેમ નથી ત્યા તો શ્રવણ વગેરેથી દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષયોપશમના કારણરૂપ સદ્ગુરુના ઉપદેશનુ જ અભિગમ શબ્દથી ગ્રહણ થયુ છે જો સમ્યગ્દર્શનની ઉત્પત્તિમા તે કારણ હોત તો તેનુ ગ્રહણ નિમિત્ત રૂપથી થાત પણ આવુ થતુ નથી કેમકે તે અચેતન છે તેનાથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ થઈ શકતો નથી પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ સાભળ્યા વિના

शब्देन ग्रहणात् सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूपं, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान च निर्जरामूलकं, निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सद्गुरूपदेश कारण, न तु प्रतिमा। सा हि सद्गुरुवत् प्रवचनार्थमुपदेष्टुमसमर्था, तस्या जडत्वात्, । नापि सा निर्जराहेतु, विनयादितपोरूप

कर्मों की निर्जरा नहीं हो सकती है। निर्जरा के अभाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशम आदि रूप सम्यक्त्व की उत्पत्ति संभवित नहीं है। अतः अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और उसीका ग्रहण यहां पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नहीं–इसी का खुलाशा "सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान च निर्जरामूलक – निर्जरा च विनय वैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य , तत्र च सद्गुरुपदेशः कारण न तु प्रतिमा" अर्थ इन पंक्तियों में लिखा गया है। तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए विना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आराधना में सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा संबंध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं–कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનુ અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઇ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કર્મોની નિર્જરા પણ થઇ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યકૃત્વની ઉત્પત્તિ સભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્દગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામા આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનુ જ ગ્રહણ થયુ છે પ્રતિમાનુ નહિ આનુ જ સ્પષ્ટીકરણ "सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान निर्जरामूलक निर्जरा च विनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सद्गुरूपदेश कारण न तु प्रतिमा" આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનુ શ્રદ્ધાન કરવુ તે સમ્યકૃત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનુ મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામા આવે છે પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતુ નથી વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામા સદ્દગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરપરા સબધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્દગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમા ગૃહીત થયો છે નહિ કે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્દગુરુના ઉપદેશની જેમ

त्वाभावात्, कथ तर्हि सम्यक्त्व प्रतिमायाः सभवति ? कथमपि नहि। अत एवो पदेशस्य सम्यक्त्व प्रति कारणत्व प्रदर्शयन् भगवानवादीत्-उत्तराध्ययनसूत्रे- (अ० २८ गा० १५)

" तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ।

छाया--तथ्याना तु भावाना सद्भावे उपदेशनम् ।
भावेन श्रद्दधत: सम्यक्त्व तद् व्याख्यातम् ॥

जीवाजीवादिपदार्थाना सद्भावे यद् उपदेशन=गुरोरुपदेशः, तद् भावेन- अन्तःकरणेन श्रद्दधत मोहनीयकर्मण: क्षयेण क्षयोपशमेन वा याऽभिरुचिरुत्पद्यते, तत् सम्यक्त्व तीर्थकरैर्व्याख्यातम् ।

के अर्थ का उपदेश करने में अचेतन होने से सर्वथा असमर्थ है कर्मों की निर्जरा में भी वह हेतु रूप नही होती है-कारण कि कर्मो की निर्जरा के हेतु तो विनयादिक तप ही माने गये हैं, प्रतिमा विनयादि तप स्वरूप नहीं है। अत प्रतिमा में सम्यक्त्व की उत्पत्ति मे कारणता किसी भी प्रकार सभवित नही होती है-उत्तराध्ययन सूत्र में सद्गुरु के उपदेश को सम्यक्त्व के प्रति कारण प्रकट करते हुए सिद्धान्तकार कहते हैं कि-तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ॥

जीव और अजीव आदि पदार्थो का सद्गुरु ने जो यथावस्थित स्वरूप प्रकट किया है, उसका उसीरूप से अन्तः करण से श्रद्धान करने वाले प्राणी के दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय अथवा क्षयोपशम

પ્રવચનના અર્થનો ઉપદેશ કરવામા અચેતન હોવા બદલ સપૂર્ણપણે અસમર્થ છે કારણ કે કર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ માનવામા આવ્યા છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામા સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિમા કારણતા કોઈ પણ રીતે સભવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા સદ્ગુરૂના ઉપદેશને સમ્યક્ત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण ।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहिय ॥ इति ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનુ જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરૂએ પ્રકટ કર્યું છે તેનુ તે રૂપથી અતકરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનુ નામ જ

शब्देन ग्रहणात् सम्यक्त्वं हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रव चनार्थज्ञानं च निर्जरामूलकं, निर्जरा च विनयवैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशे षेभ्य, तत्र च सद्गुरूपदेशः कारणं, न तु प्रतिमा। सा हि सद्गुरुवत् प्रवचनार्थ मुपदेष्टुमसमर्था, तस्या जडत्वात्, । नापि सा निर्जराहेतुः, विनयादितपोरूप

कर्मों की निर्जरा नहीं हो सकती है। निर्जरा के अभाव में दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय उपशम आदि रूप सम्यक्त्व की उत्पत्ति सम्भवित नहीं है। अतः अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्त माना गया है और इसीका ग्रहण यहां पर उस शब्द से हुआ है प्रतिमा का नहीं-इसी का खुलाशा " सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान च निर्जरामूलक - निर्जरा च विनय वैयावृत्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्यः, तत्र च सद्गुरुपदेशः कारण न तु प्रतिमा " अर्थ इन पक्तियो में लिखा गया है। तत्त्वार्थ का श्रद्धान करना सम्यक्त्व है। वह श्रद्धान प्रवचन के अर्थज्ञान से ही होता है और उस अर्थज्ञानका मूल कारण निर्जरा मानी गई है अपना प्रतिपक्षी कर्मों की निर्जरा हुए विना तत्त्वज्ञान हो ही नहीं सकता है विनय, वैयावृत्य, स्वाध्यायरूपतप विशेष निर्जरा के कारण हैं तप की आरा धना मे सद्गुरु का उपदेश कारण है इस प्रकार परम्परा सबध से अभिगम सम्यग्दर्शन में सद्गुरु का उपदेश ही निमित्तरूप से गृहीत हुआ है प्रतिमा नहीं-कारण वह सद्गुरु के उपदेश की तरह प्रवचन

શ્રોતાઓને પ્રવચનનુ અર્થજ્ઞાન કેવી રીતે થઇ શકે? અર્થજ્ઞાન વગર કર્મોની નિર્જરા પણ થઇ શકતી નથી નિર્જરા વિના દર્શનમોહનીય કર્મના ક્ષય ઉપશમ વગેરે રૂપ સમ્યક્ત્વની ઉત્પત્તિ સભવિત નથી એટલા માટે અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્તરૂપે માનવામા આવ્યો છે અને તે શબ્દથી તેનુ જ ગ્રહણ થયુ છે પ્રતિમાનુ નહિ આનુ જ સ્પષ્ટીકરણ " सम्यक्त्व हि तत्त्वार्थश्रद्धानरूप, तच्च प्रवचनार्थज्ञानादेव, प्रवचनार्थज्ञान निर्जरामूलक निजरा च विनयवैयावृत्त्यस्वाध्यायरूपतपोविशेषेभ्य, तत्र च सद्गुरूपदेश कारण न तु प्रतिमा " આનો અર્થ આ પ્રમાણે છે, કે તે તત્ત્વાર્થનુ શ્રદ્ધાન કરવુ તે સમ્યક્ત્વ છે તે શ્રદ્ધાન પ્રવચના અર્થજ્ઞાનનુ મૂળ કારણ નિર્જરા જ માનવામા આવે છે પોતાના પ્રતિપક્ષી કર્મોની નિર્જરા થયા વગર તત્ત્વજ્ઞાન થઈ જ શકતુ નથી વિનય, વૈયાવૃત્ય, સ્વાધ્યાય રૂપ તપ વિશેષ નિર્જરાના કારણ છે તપની આરાધનામા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ કારણ છે આ રીતે પરપરા સબધથી અભિગમ સમ્યગ્દર્શનમા સદ્ગુરુનો ઉપદેશ જ નિમિત્ત રૂપમા ગૃહીત થયો છે નહિ કે પ્રતિમા કેમકે તે સદ્ગુરુના ઉપદેશની જેમ

त्वाभावात्. कथं तर्हि सम्यक्त्वं प्रतिमागाः प्रभवति ? कथमपि नहि। अत एवो पदेशस्य सम्यक्त्वं प्रति कारणत्वं प्रदर्शयन् भगवानवादीत्—उत्तराध्ययनसूत्रे-(अ० २८ गा० १५)

" तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहियं ॥ इति।

छाया—तथ्यानां तु भावानां सद्भाव उपदेशनम्।
भावेन श्रद्दधतः सम्यक्त्वं तद् व्याख्यातम् ॥

जीवाजीवादिपदार्थानां सद्भावे यद् उपदेशनं=गुरोरुपदेशः, तद् भावेन-अन्तःकरणेन श्रद्दधतः मोहनीयकर्मणः क्षयेण क्षयोपशमेन वा याऽभिरुचिरुत्पद्यते, तत् सम्यक्त्वं तीर्थकरैर्व्याख्यातम्।

के अर्थ का उपदेश करने में अचेतन होने से सर्वथा असमर्थ है कर्मों की निर्जरा में भी वह हेतु रूप नहीं होती है-कारण कि कर्मों की निर्जरा के हेतु तो विनयादिक तप ही माने गये हैं, प्रतिमा विनयादि तप स्वरूप नहीं है। अत प्रतिमा में सम्यक्त्व की उत्पत्ति मे कारणता किसी भी प्रकार संभवित नहीं होती है-उत्तराध्ययन सूत्र में सद्गुरु के उपदेश को सम्यक्त्व के प्रति कारण प्रकट करते हुए सिद्धान्तकार कहते हैं कि-तहियाण तु भावा ण सब्भावे उवएसण।

भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहियं ॥ इति ॥

जीव और अजीव आदि पदार्थों का सद्गुरु ने जो यथावस्थित स्वरूप प्रकट किया है, उसका उसीरूप से अन्तः करण से श्रद्धान करने वाले प्राणी के दर्शन मोहनीय कर्म के क्षय अथवा क्षयोपशम

પ્રવચનના અર્થને ઉપદેશ કરવામા અચેતન હોવા બદલ સપૂર્ણપણે અસમર્થ છે કારણ કે કર્મોની નિર્જરાના હેતુ તો વિનય વગેરે તપોજ માનવામા આવ્યા છે પ્રતિમા વિનય વગેરે તપ સ્વરૂપ નથી, એટલા માટે પ્રતિમામા સમ્યકત્વની ઉત્પત્તિમા કારણતા કોઇ પણ રીતે સભવી શકે તેમ નથી ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમા સદ્ગુરૂના ઉપદેશને સમ્યકત્વના પ્રતિ કારણ બતાવતા સિદ્ધાન્તકાર કહે છે—

तहियाण तु भावाण सब्भावे उवएसण।
भावेण सद्दहतस्स सम्मत्त त वियाहियं ॥ इति ॥

જીવ અને અજીવ વગેરે પદાર્થોનુ જે યથાવસ્થિત સ્વરૂપ સદ્ગુરૂએ પ્રકટ કર્યું છે તેનુ તે રૂપથી અત કરણથી શ્રદ્ધા ન કરનારા પ્રાણીના દર્શન મોહનીય કર્મના ક્ષય કે ક્ષયોપશમથી જે રૂચિ ઉત્પન્ન થાય છે, તેનુ નામ જ

यदि प्रतिमाऽपि सम्यक्त्वलाभे निमित्तं स्यात्तर्हि भगवता स्थानाङ्गसूत्रे प्रतिमानिमित्तत्वेन सम्यग्दर्शनस्य तृतीयभेदोऽपि वाच्यः, तस्यानुक्तत्वात् प्रतिमायाः सम्यक्त्वलाभे निमित्तत्वं नास्तीति बोध्यम्। किं च—

प्राणातिपातसाध्यायाः प्रतिमापूजायाः सम्यक्त्वशुद्धिहेतुत्वं वदन्तः स्वदुर्गतिं न पश्यन्ति मोहान्धाः, स्थानाङ्गसूत्रे हि प्राणातिपातस्य दुर्गतिहेतुत्वं प्रदर्शितम्—

"पंचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइं गच्छंति। तं जहा—पाणाइवाएणं, मुसावाएणं, अदिन्नादाणेणं, मेहुणेणं, परिग्गहेणं" इति। (स्था ५ ठा १ उ)

से जो रुचि उत्पन्न होती है उसी का नाम सम्यग्दर्शन है ऐसा तीर्थंकर प्रभुने कहा है यदि सम्यक्त्व की प्राप्ति मे प्रतिमा निमित्त होती तो स्थानाङ्ग सूत्र में जो "दोहिं ठाणेहिं आया केवलि पन्नत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए" ऐसा कहा है वहा यदि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा भी निमित्त होती तो उसके निमित्त होने से दो स्थानों की जगह सम्यक्त्व की प्राप्ति में तीन स्थानो का कथन सूत्रकार को करना चाहिये था परन्तु वहा दो स्थानो के अतिरिक्त तृतीयस्थान का कथन हुआ नहीं है, अतः इससे यह सिद्धान्त निश्चित होता है कि सम्यक्त्व के लाभ में प्रतिमा निमित्त नही है। फिर भी प्राणातिपात द्वारा साध्य प्रतिमा पूजन को मोह के आवेश से ऊंघे हुए व्यक्ति सम्यक्त्व की शुद्धि का कारण बतलाते हुए अपनी दुर्गति का कुछ भी ख्याल नही करते ह यही एक बडे आश्चर्य की बात है देखो प्राणातिपात को स्थानाङ्ग सूत्र में दुर्गति

સમ્યગ્દર્શન છે, આમ તીર્થંકર પ્રભુએ કહ્યું છે જો સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા નિમિત્ત રૂપે હોત તો સ્થાનાંગ–સૂત્રમા જે "दोहिं ठाणेहिं आया केवलिपन्नत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए" આ પ્રમાણે કહ્યું છે, ત્યા જો સમ્યક્ત્વના લાભમા પ્રતિમા પણ નિમિત્ત થઈ શકત તો તેને નિમિત્ત રૂપે થવા બદલ બે સ્થાનોની જગ્યાએ સમ્યક્ત્વની પ્રાપ્તિમા ત્રણ સ્થાનોનું કથન સૂત્રકારે કરવું જોઈતું હતું, પણ ત્યા તો બે સ્થાનો સિવાય ત્રીજા સ્થાનનું કથન થયું જ નથી એથી આ સિદ્ધાંતની ખાત્રી થાય છે કે સમ્યક્ત્વના લાભમા પ્રતિમા નિમિત્ત નથી છતાં યે પ્રાણાતિપાત વડે સાધ્ય પ્રતિમા પૂજનને અજ્ઞાનની નિદ્રામા પડેલી વ્યક્તિઓ સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિનું કારણ બતાવતી પોતાની દુરવસ્થા તરફ સહેજ પણ જોતી નથી તે એક બહુ નવાઈ જેવી વાત છે જુઓ પ્રાણાતિપાતને સ્થાનાંગસૂત્રમા દુર્ગતિનું જ કારણ બતાવવામા આવ્યું છે–(पंचहिं ठाणेहिं

किं च-यथा लोके मुग्धाना सुवर्णमात्रसाम्येना शुद्धसुवर्णेऽपि प्रवृत्तिमवलोक्य शुद्धाशुद्धपरीक्षणाय विचक्षणः कषच्छेदतापा आद्रियन्ते, तथाऽत्रापि परीक्षणीये श्रुतचारित्ररूपे धर्मे कषादय समादरणीया भवन्ति ।

प्राणिवधादीना पापस्थानाना यस्तु शास्त्रे प्रतिषेध', तथा स्वाध्यायध्यानादीना यश्च तत्र विधि स धर्मकष । प्राणिवधसंपर्कवति पूजने तु धर्मत्वबुद्धिर्मोहवशादेव भवति, शास्त्रे प्राणिवधस्य प्रतिषेधात् । अतस्तत्र नास्ति कषशुद्धिः ।

का ही कारण कहा है "पचहिं ठाणेहिं जीवा दुग्गइ गच्छंति-त जहा-पाणाइवाएण, मुसावाएणं, अदिन्नादाणेण, मेहुणेण, परिग्गहेण इति। (स्था ५ ठा १ उ) इन पाचो स्थानो से जीव दुर्गति के पात्र बनते है - प्राणातिपात से, मृषावाद से, अदत्तादान से मैथुन से और परिग्रह से। किञ्च-लोक में जिस में जिस प्रकार भोले भाले व्यक्तियो की सुवर्णमात्र की समानता से अशुद्ध स्वर्ण में भी यह सच्चा सुवर्ण है इस प्रकारकी प्रवृत्ति को देखकर सुवर्णपरीक्षक जन उसके सम्यक्त्व और असम्यक्त्व परीक्षाके लिये कष छेद और तप रूप उपायों का अवलम्बन करते है उसी प्रकार परीक्षणीय इस श्रुतचारित्ररूप धर्म की परीक्षा के लिये सूत्रकारों ने कषादिक परीक्षा के साधनो का उपयोग किया है प्राणिवधादिक पापस्थानो का शास्त्र में जो निषेध का विधान हुआ है तथा स्वाध्याय एव अध्ययन आदि का जो वहा पर विधान किया गया है यही धर्म का कष है पूजन में यह धर्म कष नही है क्यों कि वह प्राणि वध के सपर्क से दूषित है-अत. फिर भी जो उसमे धर्म

जीवा दुग्गइ गच्छंति-त जहा-पाणाइवाएण, मुसावाएण, अदिन्नादाणेण, मेहुणेण परिग्गहेण इति) (स्था ५, ठा १ उ) આ પાચે સ્થાનોથી જીવ દુર્ગતિને યોગ્ય ઠરે છે-પ્રાણાતિપાતથી, મૃષાવાદથી, અદત્તાદાનથી, મૈથુનથી અને પરિગ્રહથી અને બીજુ પણ કે લોકમા જેમ ભોળા માણસોની સુવર્ણમાત્રની સમાનતાથી અશુદ્ધ સુવર્ણમા પણ 'આ સોનુ ખરૂ છે,' આ જાતની પ્રવૃત્તિ જોઈને સુવર્ણ પરીક્ષકો તેના ખરા-ખોટાની પરીક્ષા માટે કપ, છેદ અને તાપ રૂપ ઉપાયોનો આસરો લે છે તેમજ પરીક્ષણીય આ શ્રુતચરિત્ર રૂપ ધર્મની પરીક્ષા માટે સૂત્રકારોએ કપ વગેરે પરીક્ષાના સાધનોનો ઉપયોગ કર્યો છે પ્રાણિ વધ વગેરે પાપસ્થાનોનુ શાસ્ત્રમા જે નિષેધ રૂપ વિધાન થયુ છે તેમજ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરેનુ જે ત્યા વિધાન કરવામા આવ્યુ છે તે જ ધર્મની કસોટી-કપ છે પૂજનમા આ ધર્મ કપ નથી કેમકે તે પ્રાણિવધના સપર્કથી દૂષિત છે છતા ય તેમા ધર્મત્વની બુદ્ધિ રાખવામા આવે છે તે ફક્ત

यत्र विधि' प्रतिषेधश्चापि द्वय कदाचित् स्वरूपतो विपरीतत्व न याति, यथा-स्वाध्याय ध्यानादौ नियमतः प्रवृत्त्या विधिपरिशुद्धिः, तथा हिंसादौ नियमतो निवृत्त्या प्रतिषेधपरिशुद्धिर्भवति, स धर्मश्छेद उच्यते। प्रतिमापूजायां तु नास्ति च्छेदशुद्धिः, तस्याः षट्कायोपमर्दनसाध्यत्वेन प्रतिषेधपरिशुद्धत्वभावात्।

प्रवचने जीवाजीवादीनां तत्त्वानां यथावस्थितस्वरूपनिरूपणं मोक्षसाधक मित्येव निश्चयस्तापशुद्धिः। यथा वह्नौ तापनेन सुवर्णस्य यथावस्थितस्वरूपाविर्भाव तथा-प्रवचनोक्ततत्त्वानुसन्धानेन धर्मस्य स्वरूपमाविर्भवति। अत्र प्रतिमा पूजायां प्रवचनोक्तसंवरनिर्जरातत्त्वलक्षणानाक्रान्तत्वान्नास्ति तापशुद्धिः।

त्वकी बुद्धि होती है वह केवल मोहका ही आवेश है। प्राणिवध शास्त्र से निषिद्ध है। जहां पर विधि और प्रतिषेध ये दोनों कभी भी अपने स्वरूप से विपरीतपने को प्राप्त नहीं होते हैं वहां पर छेद से शुद्धि मानी जाती है जिस प्रकार स्वाध्याय और अध्ययन आदि शुभ कार्यों में नियम से शास्त्र में प्रवृत्ति प्रदर्शित की गई है और हिंसादि कार्यों से उसमे नियम से निवृत्ति कही गई है। प्रतिमा पूजन में यह छेद शुद्धि नही है। क्यो कि इसमें प्रतिषेध से परिशुद्धि का अभाव है इस का कारण यह है कि वह षट्काय के जीवों के घात से साध्यकार्य है। प्रवचन में जीव और अजीव आदि तत्त्वो के यथावस्थित स्वरूप का वर्णन ही मोक्षका साधक है इस प्रकार का निश्चय ही ताप शुद्धि है। जिस प्रकार अग्नि मे तपाने से स्वर्ण का यथावस्थित स्वरूप प्रकट होता है। उसी प्रकार प्रवचन कथित तत्त्वो के अनुसन्धान से धर्म के स्वरूप का अविर्भाव होता है इस प्रतिमापूजन मे धर्मतत्त्वके अविर्भाव करने

અજ્ઞાનનો જ ઊભરો છે પ્રાણિ વધ શાસ્ત્રનિષિદ્ધ છે જ્યા વિધિ અને પ્રતિષેધ આ બન્ને કોઈ પણ વખતે પોતાના સ્વરૂપથી વિપરીતાવસ્થામા પરિવર્તિત થતા નથી ત્યા છેદથી શુદ્ધિ માનવામા આવે છે જેમ સ્વાધ્યાય અને અધ્યયન વગેરે શુભ કાર્યોમા નિયમથી શાસ્ત્રમા પ્રવૃત્તિ બતાવવામા આવી છે અને હિંસા વગેરે કાર્યોથી તેમા નિયમથી નિવૃત્તિ બતાવવામા આવી છે પ્રતિમા પૂજનમા આ છેદ શુદ્ધિ નથી કેમકે આમા પ્રતિષેધથી પરિશુદ્ધિનો અભાવ છે આનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે તે ષટ્કાયના જીવોના ઘાતથી સાધ્ય કાર્ય છે પ્રવચનમા જીવ અને અજીવ વગેરે તત્ત્વોના યથાવસ્થિત સ્વરૂપનુ વર્ણન જ મોક્ષનુ સાધક છે આ જાતનો નિશ્ચય જ તાપ શુદ્ધિ છે જેમ અગ્નિમા તપાવવાથી સોનાનુ યથાવસ્થિત સ્વરૂપ પ્રગટ થાય છે તેમજ પ્રવચન કથિત તત્ત્વોના અનુસધાનથી ધર્મના સ્વરૂપનો આવિર્ભાવ થાય છે આ નિ । । ધર્મ

एभिः रूपादिभिः परिशुद्धस्यैव धर्मत्व सम्भवति तादृशस्यैव धर्मफल जनकत्वात् ।

यथा-आधाकर्मादिदोषदूषिताहारादिदाने धर्मबुद्धया क्रियमाणे धर्म-व्याघात', यथा वा इन्द्रादिपूजादौ धर्मव्याघातः, तथैव धर्मबुद्धया प्रतिमापूजनेऽपि धर्मव्याघातः स्यात्, तस्य जीवोपघातहेतुत्वात् ।

"प्रतिमापूजा-धर्मव्याघातवती, आगमोक्तन्यायनिराकृतत्वात्, अयोग्य-प्रव्रज्यादानवत्, इन्द्रादिपूजावद् वा" इत्याद्यनुमानेनापि प्रतिमापूजाया धर्म-व्याघातो भवतीति विभावनीयम् । उक्त च—

की योग्यता तक भी नही है। कारण कि यह प्रवचन कथित सवर और निर्जरा तत्त्व के लक्षण से युक्त नहीं है-अत उसमें ताप शुद्धि भी नहीं है। इन कषादिकों द्वारा परिशुद्ध हुई वस्तु मे ही धर्मता आती है और वही यथार्थ मे धर्म के फलका प्रदाता होता है। प्रतिमापूजन में यह बात नहीं हे-अत. वह धर्मरूप नहीं है।

किंच-धर्मबुद्धि से बनाये गये, परन्तु आधाकर्म आदिदोषों से दूषित ऐसे आहार के दान में तथा इन्द्र आदिकों का पूजन करने में जिस प्रकार धर्म का व्याघात माना गया है, उसी प्रकार धर्मबुद्धि से की गई प्रतिमा का पूजन मे भी जीवो का घात होने से धर्म का व्याघात होता है। इसलिये आगम कथित सिद्धान्त के अनुसार यह प्रतिमापूजन उपा-देय कोटि में नहीं आता है। फिर भी जो इसे करते हैं-कराते हैं-वे आगम कथित सिद्धान्त से सर्वथा बाह्य है-और धर्म का व्याघात कर-

---

તત્ત્વને આવિર્ભૂત કરવા સુધીની પણ ક્ષમતા નથી, કેમકે આ પ્રવચન કથિત સવર અને નિર્જરા તત્ત્વના લક્ષણથી યુક્ત નથી એટલા માટે આમા તાપ શુદ્ધિ પણ નથી આ કષ વગેરે વડે પરિશુદ્ધ થયેલી વસ્તુમા જ ધર્મતા આવે છે અને તે જ સાચા સ્વરૂપમા ધર્મના ફળને આપનાર છે પ્રતિમા પૂજનમા આ વાત નથી એથી તે ધર્મ રૂપ નથી

ધર્મબુદ્ધિથી તૈયાર કરવામા આવેલા, પણ આધાકર્મ વગેરે દોષો વડે દૂષિત એવા આહારના દાનમા તેમજ ઈન્દ્ર વગેરેની પૂજા કરવામા જેમ ધર્મનો વ્યાઘાત માનવામા આવ્યો છે, તેમ જ ધર્મબુદ્ધિ રાખીને કરવામા આવેલા પ્રતિમા પૂજનમા પણ જીવોનો ઘાત હોવાથી ધર્મનો વ્યાઘાત હોય છે એટલા માટે આગમ કથિત સિદ્ધાન્ત મુજબ આ પ્રતિમા પૂજન ઉપાદેય કોટિમા આવતુ નથી છતા યે જે આને કરે છે, કરાવે છે તેઓ આગમ કથિત સિદ્ધા તથી સર્વથા બાહ્ય છે અને ધર્મના વ્યાઘાતક છે એવી અયોગ્યને આપેલી

" प्रव्रज्यादिविधाने च, शास्त्रोक्तन्यायबाधिते ।
द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो, धर्मव्याघात एव हि "॥ हारिभद्राष्टकम्

यत्तु–जिनप्रतिमाया दर्शनं वन्दनं चावश्यकमेव साधूनामिति वन्दनाधकृत्वा भक्तपानं न कल्पते तेषामित्याद्युक्तं तन्निर्मूलम्—

अहोरात्रकृत्येषु साधुकल्पेषु जिनप्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वात् । शृणु तावदहोरात्रकृत्यं साधूनाम्—

नेवाले हैं अतः अयोग्य को दीक्षा दान की तरह अथवा इन्द्रादिक के पूजन की तरह यह प्रतिमापूजन आगमोक्त न्याय से निराकृत होने से धर्म का व्याघात करनेवाला है ऐसा निश्चय करना चाहिये । तथा च अनुमानप्रयोगोऽयं–प्रतिमापूजा धर्मव्याघातवती आगमोक्तन्यायनिराकृतत्वात् अयोग्यप्रव्रज्यादानवत् इन्द्रादिपूजनवद्वा । इस अनुमान में दिया गया हेतु असिद्ध नही है–क्यो कि " प्रव्रज्यादिविधाने च शास्त्रोक्तन्यायबाधिते – द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो धर्मव्याघात एव हि " दृष्टान्त में इस हेतु का इस श्लोक द्वारा कथित प्रकार से सद्भाव पाया ही जाता है ।

जो यह कहा जाता है कि जिनप्रतिमा के दर्शन वन्दन किये विना साधुओं को आहार पानी करना कल्पनीय नही है–अत. उसका दर्शन वन्दन करना साधुओ के लिये आवश्यक है वह बिलकुल निर्मूल है–कारण कि दिनरात संबधी जितने भी साधुओ के कल्प हैं उन में इस बात का कही भी कथन किया हुआ नही मिलता है–दिनरात संबधी साधुओं के ये कृत्य है—

દીક્ષાની જેમ અથવા તો ઇન્દ્ર વગેરેની પૂજાની જેમ આ પ્રતિમાપૂજન આગમ કથિત ન્યાયથી નિરાકૃત હોવા બદલ ધર્મનો નાશ કરનાર છે આમ માની જ લેવું જોઈએ " तथा च अनुमानप्रयोगोऽयं प्रतिमापूजा धर्मव्याघातवती आगमोक्तन्यायनिराकृतत्वात् अयोग्य-प्रव्रज्यादानवत् इन्द्रादिपूजनवद्वा । આ અનુમાનમા આપેલ હેતુ અસિદ્ધ નથી, કારણ કે–प्रव्रज्यादिविधाने च शास्त्रोक्तन्यायबाधिते –द्रव्यादिभेदतो ज्ञेयो धर्मव्याघात एव हि । દૃષ્ટાતમા આ હેતુનો આ શ્લોક વડે જે કથિત પ્રકાર છે તેનો સદ્ભાવ મળે છે

જે એમ કહેવામા આવે છે કે જીન પ્રતિમાના દર્શન કર્યા વગર સાધુઓને આહાર પાણી કરવુ યોગ્ય નથી એથી તેના દર્શન વન્દન કરવા સાધુઓના માટે આવશ્યક છે તે સાવ ખોટી વાત છે કેમકે દિવસ અને રાત્રિને લગતા સાધુઓને માટે જેટલા કલ્પ છે તેમા આ વાતનુ કથન કરાયું નથી દિવસ અને રાત્રિના સાધુઓના આ નીચે લખ્યા મુજબ કૃત્યો

पढम पोरिसि सज्झायं, बीए झाणं झियायए ।
तइयाए भिक्खायरियं, चउत्थीए पुणो वि सज्झायं ॥
पढम पोरिसि सज्झायं, बीए झाणं झियायए ।
तइयाए निद्दमोक्खं च, चउत्थीए पुणो वि सज्झायं ॥ इति,
(उत्तराध्ययनसूत्रे २६ अ)

किं च-सामायिकाद्यावश्यकेष्वपि प्रतिमादर्शनादेरनुक्तत्वाद् जिनाज्ञाया एव च धर्ममूलत्वात्तस्य धर्मत्वं न सिध्यति ।

यत्तु-पुष्पादिसमभ्यर्चनलक्षणो द्रव्यस्तवः साधुना हेय एव श्रावकेण तु उपादेयोऽपि तथा चाह-भाष्यकारः-

अकसिणपवत्तगाणं, विरयाविरयाण एस खलु जुत्तो ।
संसारपयणुकरणो दव्वत्थए कूवदिट्ठंतो (भाष्यकारः ४२)

पढम पोरिसि सज्झाय बीए झाण झियायए ।
तइयाए भिक्खायरियं चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥
पढम पोरिसि सज्झाय बीए झाणं झियायए ।
तइयाए निद्दमोक्खं च चउत्थीए पुणो वि सज्झाय ॥
(उत्तरा सूत्र २६ अ-)

अर्थस्पष्ट है । इसी प्रकार साधुओं के जो सामायिक आदि आवश्यक कृत्य हे, उनमें भी प्रतिमा के दर्शन आदि करना नहीं कहा है । धर्म का मूल तो जिनेन्द्र भगवान की आज्ञा की आराधना करने में है इसलिये दर्शन वगैरह ये धर्म के मूल नहीं हैं । भाष्यकारने जो इस गाथा द्वारा " अकसिण पवत्तगाण विरयोविरयाण एस खलु जुत्तो । संसार पयणुकरणो दव्वत्थए कूवदिट्ठंतो " (भाष्यकार ४२) यह कहा है कि

पढमे पोरिसि सज्झाय बीए झाण झियायए ।
तइयाए भिक्खायरियं चउत्थिए पुणो वि सज्झाय ॥
पढमे पोरिसि सज्झाय बीए झाण झियायए ।
तइयाए निद्दमोक्खं च चउत्थिए पुणो वि सज्झाय ॥ (उत्तरा०सूत्र-२६ अ)

અર્થ સરળ જ છે આ રીતે સાધુઓના જે સામાયિક વગેરે આવશ્યક કૃત્યો છે તેમનામાં પણ પ્રતિમાના દર્શન વગેરે કરવાની વાત કહી નથી ધર્મનુ મૂળ તો જીનેન્દ્ર ભગવાનની આજ્ઞાને આરાધવામા આવે છે માટે દર્શન વગેરે આ બધા ધર્મના મૂળ નથી ભાષ્યકારે જે આ ગાથા વડે-(अकसिण पवत्तगाण निरयाविरयाण एस खलु जुत्तो । संसारपयणुकरणो दव्वत्थए

अकृत्स्नप्रवर्तकानां अकृत्स्नसंयमप्रवृत्तिमतां विरताविरतानां=देशविरतीनां श्रावकाणाम् एष द्रव्यस्तवः खलु युक्त एव। किंभूतोऽयमित्याह-संसार प्रतनुकरणः=संसारक्षयकारकः इत्यर्थः। ननु द्रव्यस्तवो हेय प्रकृत्यैवासुन्दरः स कथं श्रावकाणां युक्तः ?। इत्याशङ्क्याह-कूपदृष्टान्त इति-

यथा लोके केऽपि जलाभावतृष्णातुराः पिपासापनोदनार्थं कूपं खनन्ति ते कूपखनकाः मृत्तिकाकर्दमादिभिश्च मलिना भवन्ति, पश्चात् तदुत्थेन जलेन तेषां तृष्णायास्तथा मृत्कर्दममलस्य च नाशो भवति तदनन्तरमपि ते तदन्ये च

श्रवणों के लिये उपादेय भी पुष्प आदिको द्वारा भगवान की पूजा स्वरूप द्रव्यस्तव साधुओं के लिये हेय ही है। क्यों कि साधु सर्व आरंभ और परिग्रह के सर्वथा त्यागी हैं-श्रावक नहीं वे देश विरति संपन्न हैं। अतः उनके लिये द्रव्यस्तव संसार का क्षय कारक माना गया है कूप का दृष्टान्त देकर भाष्यकार ने इस शंका का परिहार किया है कि जिस प्रकार जल के अभाव से पिपासा को दूर करने के लिये कोई २ मनुष्य कूप को खोदते हैं और उसे खोदते समय मिट्टी और कीचड से मलिन भी हो जाते हैं परन्तु पश्चात् उस कूप में निकले हुए जल से वे उस कीचड और लगी हुई मिट्टी को साफ कर देते हैं और समय २ पर अपनी पिपासा की भी शांति करते रहते हैं। दूसरे और भी लोक उससे लाभ उठाते हैं। इस प्रकार उस जलयुक्त कुआँ से खोदने वाले व्यक्तियों को तथा और भी अन्यजनों को समय २ पर अनेक प्रकार से लाभ होता रहता है। ठीक इसी तरह इस द्रव्यस्तव में जो कि संयम

कूवदिट्ठंतो।) (भाष्यकार ४२) આ પ્રમાણે કહ્યું છે કે શ્રાવકોને માટે ઉપાદેય હોવા છતાં પુષ્પ વગેરે વડે ભગવાનની પૂજા સ્વરૂપ દ્રવ્યસ્તવ સાધુઓના માટે તો ત્યાજ્ય જ છે, કેમકે સાધુ સર્વ આરંભ અને પરિગ્રહના સંપૂર્ણપણે ત્યાગી હોય છે શ્રાવક નથી, તેઓ દેશ વિરતિ સંપન્ન છે એટલા માટે તેમને સામે રાખીને વિચાર કરીએ તો દ્રવ્યસ્તવ સંસારને ક્ષય કરનાર માનવામાં આવ્યો છે કૂપનું દૃષ્ટાંત આપીને ભાષ્યકારે આ શંકાને દૂર કરી છે કે જેમ પાણીના અભાવને લીધે પીડાઈને તરસ મટાડવા માટે કેટલાક માણસો વાવ ખોદે છે અને તે વખતે તેઓ માટી અને કાદવથી ખરડાઈ જાય છે પણ ત્યાર પછી વાવમાંથી નીકળતા પાણીથી જ તેઓ કીચડ તેમજ શરીરે ચોટેલી માટીને સાફ કરી નાખે છે અને વખતો વખત પોતાની તરસ પણ મટાડે છે બીજા પણ કેટલાક લોકો તેનાથી લાભ મેળવે છે આ રીતે તે પાણી ભરેલી વાવથી

लोका जलेन सुखिनो भवन्ति एव द्रव्यस्तवे यद्यप्यसंयमो भवति तथापि तत एव सा परिणामशुद्धिर्भवति, या तद् असंयमोपार्जितमन्यच्च निरवशेषं क्षपयति इति।

" तस्माद्विरताविरतैः श्रावकैरेष द्रव्यस्तवः कर्त्तव्यः ।
शुभानुबन्धी प्रभूतनिर्जराफल इति कृत्वा " इत्युक्तम्-

तदसत्-अत्र हि कूपदृष्टान्तो न संघटते कूपखननेन जलमुत्पद्यते इति सकल लोकप्रत्यक्ष, किन्तु पट्कायवधं कुर्वतः कारयतश्च धर्ममूलभूताया दयाया एव

की रक्षा नहीं होती है, तो भी यह कर्त्ता को परिणामों मे शुद्धि का हेतु होता है। इससे कर्त्ता उस द्रव्यस्तव के करने मे उद्भूत असयम द्वारा उपार्जित पापो का सम्पूर्णरूप से विनाश कर देता है। इसलिये विरताविरत (एकदेश सयम की आराधना करनेवाले पचमगुणस्थान-वर्ती श्रावको द्वारा यह द्रव्यस्तव कर्तव्य कोटि में आने से उपादेय है। कारण कि यह उनके लिये शुभानुबधी और कर्मों की अधिक निर्जरा रूप फल का प्रदाता होता है " यह सब भाष्यकार का कथन ठीक नहीं है। कारण कि उन्हो ने जो कूप का दृष्टान्त देकर इस विषय की पुष्टि करनी चाहिये, उससे प्रकृत विषय की वास्तविक पुष्टि नहीं होती है। यह तो प्रत्येक लौकिक जन के प्रत्यक्ष अनुभव मे आने जैसी बात है कि कूप के खोदने से जल निकलता है इस में तो विवाद की कोई जरूरत ही नहीं है, किन्तु प्रतिमा की पूजा करने और करानेवालो से षट्

ખોદનાર લોકોને તેમજ બીજા પણ ઘણા માણસોને વખતો વખત ઘણી રીતે લાભ થતા રહે છે ઠીક આ પ્રમાણે જ દ્રવ્યસ્તવમા જો કે સયમની રક્ષા થતી નથી, છતા ય તે કર્તાના માટે પરિણામમા શુદ્ધિનુ કારણ હોય છે તેનાથી કર્તા તે દ્રવ્યસ્તવના કરવામા ઉદ્ભૂત અસયમ વડે મેળવેલા પાપોનો સ પૂર્ણ પણે વિનાશ કરી નાખે છે એથી વિરતાવિરત (એકદેશ સયમની આરાધના કરનાર પચમ ગુણસ્થાનવર્તી) શ્રાવકો વડે આ દ્રવ્યસ્તવ કર્તવ્ય કોટિમા આવવાથી ઉપાદેય છે કારણ કે તે તેમના માટે શુભાનુબધી અને કર્મોની વધારે નિર્જરા ફળને આપનાર છે ભાષ્યકારનુ આ બધુ કથન યોગ્ય નથી, કારણ કે તેઓએ જે વાવનુ દૃષ્ટાંત આપીને આ વિષયની પુષ્ટિ કરવા પ્રયત્ન કર્યો છે, તેનાથી પ્રકૃત વિષયની વાસ્તવિક રૂપમા પુષ્ટિ થતી જોવામા આવતી નથી દરેકે દરેક માણસના માટે આ તો એક પ્રત્યક્ષ અનુભવ કરી શકાય તેવી હકીકત છે કે વાવ ખોદવાથી પાણી નીકળે છે, આમા તો ચર્ચાની કોઈ વાત જ ઊભી થતી નથી પણ પ્રતિમાની પૂજા કરનાર અને કરાવનારાઓથી

काय के जीवो की रक्षा नहीं हो सकती है-उनसे उनकी विराधना होती है। ऐसी परिस्थिति में धर्म के मूलभूत सिद्धान्त का ही जब वहां अभाव है तब उस पूजन कार्य के उनके परिणामों मे शुद्धि मानना यह कथन शास्त्र से विरुद्ध और प्रत्यक्ष आदि समस्त प्रमाणों से बाधित होता हुआ किसी भी समझदार व्यक्ति को मान्य नहीं हो सकता है प्रतिमा पूजनके पक्षपाती जो इस प्रकार अपने पक्षमें तर्क करते है कि-

सम्यक् स्नात्वोचिते काले सस्नाप्यच जिनान् क्रमात्।
पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधिः॥

तथा-जिनप्रभसूरिकृतपूजाविधौ-सरससुरहिचदणेण अगेसु पूअ काऊण पचगकुसुमेहिं ग धवासेहिं च पूएइ सद्धर्णै सुगधिभिः सरसैरभूपतितैर्विकाशिभिरसहितदलै' प्रत्यग्रैश्च प्रकीर्णै र्नानाप्रकारग्रथितैर्वा पुष्पै. पूजयेत्" इति-तथा— कुसुमक्खयगधपईवधूयनेवेज्जफलजलेहिं पुणो अट्ठविहकम्मदलनी अट्ठुयारा हवइ पूया" इति किञ्च-

जिनभवन जिनबिम्ब जिनपूजा जिनमत च यः कुर्यात्।
तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि॥

षट्काय જીવોની રક્ષા થઈ શકતી નથી, તે કાર્યથી તો તેમની વિરાધના જ હોય છે આવી પરિસ્થિતિમા ધર્મના મૂળભૂત સિદ્ધાન્તોનો જ જ્યારે અભાવ છે ત્યારે તે પૂજા રૂપ કાર્યથી તેમના પરિણામોમા શુદ્ધિ માનવી આ વાત શાસ્ત્રથી વિરૂદ્ધ અને પ્રત્યક્ષ વગેરે બીજા બધા પ્રમાણોથી બાધિત થતી કોઈ પણ સમજુ માણસના માટે તો માન્ય થઇ શકે તેમ નથી પ્રતિમા પૂજનની તરફદારી કરનારાઓ પોતાની વાતને પુષ્ટ કરવા માટે જે આ જાતની ખોટી દલીલો સામે મૂકે છે કે—

सम्यक् स्नात्वोचिते काले सस्नाप्य च जिनान् क्रमात्।
पुष्पाहारस्तुतिभिश्च पूजयेदिति तद्विधि॥

तथा—जिनप्रभसूरिकृतपूजाविधौ—सरस—सुरहिचदणेण अगेसु पूअ काउण पचगकुसुमेहि गधवासेहि य पूएइ सद्धणे सुगधिभि सरसैरभूपतितैर्विकाशिभिरसहित दलै प्रत्यग्रैश्च प्रकीर्णै र्नानाप्रकारग्रथितैर्वा पुष्पै पूजयेत्। इति तथा कुसुमक्खयगधपईवधूयनेवेज्जफलजलेहि पूणो अट्ठविहकम्मदलनी अट्ठुयारा हवइ पूया" इति किञ्च—

जिनभवन जिनबिम्ब जिनपूजा जिनमत च य कुर्यात्।
तस्य नरामरशिवसुखफलानि करपल्लवस्थानि॥

समुच्छेदात् परिणामशुद्धिरुत्पद्यत इति प्रवचनविरुद्धं कल्पनं सर्वप्रमाणबाधितं कस्यानुमतं भवेत् । अपि तु न कस्यापि ।

(आचाराङ्गसूत्रे भगवताऽभिहितम् (अ १ उ १)

" इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदणमाणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपडिघायहेउ से सयमेव पुढविसत्थं समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारभावेइ,

भावार्थ—पूजक उचित समय में अच्छी तरह स्नान करके जिनेन्द्र का अभिषेक कर पुष्प आदिकों से उन की पूजा करे। जिनप्रभसूरि द्वारा विरचित पूजाविधि मे भी पूजा के विषय में यही विधि प्रदर्शित की गई हे सरस सुगंधित चंदन से भगवान के नव अंगो में तिलकरूप पूजन कर पूजक सुगंधित, जमीन पर नहीं गिरे हुए, पत्र विनाके ताजे पंच जाति के पुष्पों द्वारा प्रभु की पूजा करें। पुष्प, अक्षत, गंध, प्रदीप, धूप, नैवेद्य फल और जल इन आठ द्रव्यों से आठ कर्मों को नाश करनेवाली अष्टप्रकारी पूजा होती है। जिनमंदिर, जिनप्रतिमा जिनपूजा और जिनमत को जो करता है, उस मनुष्य के हाथ मे मनुष्यगति देवगति और मोक्ष के सुख आ जाते हैं–अर्थात वह मनुष्य इन गतियो के सर्वोत्तम सुख भोग कर मोक्षसुख का भोक्ता बन जाता है–सो इस प्रकार का यह पूजन विषयक समस्त कथन प्रवचन सिद्ध ही है क्योंकी आचारांगसूत्र में भगवान ने "इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदण माणण पूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपरिघायहेउ से सयमेव पुढविस-

ભાવાર્થ—પૂજા કરનાર યોગ્ય સમયે સારી રીતે સ્નાન કરીને જીનેન્દ્રનો અભિષેક કરે તેમજ પુષ્પ વગેરેથી તેમની પૂજા કરે જીનપ્રભાસૂરિ વડે વિરચિત પૂજાવિધિમા પણ પૂજાના વિષયમા આ વિધિ જ બતાવવામા આવી છે સરસ સુગંધિત ચંદનથી ભગવાનના નવ અંગોમા તિલક રૂપ પૂજન કરી પૂજા કરનાર સુવાસયુકત, જમીન ઉપર પડેલા નહિ, પત્ર વગરના તાજા, પાચ જાતિના પુષ્પોથી પ્રભુની પૂજા કરે પુષ્પ, અક્ષત, ગંધ, પ્રદીપ, ધૂપ, નૈવેદ્ય, ફળ અને પાણી આ આઠ દ્રવ્યોથી આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અષ્ટ પ્રકારની પૂજા હોય છે જીન મંદિર, જીન પ્રતિમા, જીન પૂજા અને જીન મતને જે કરે છે, તે માણસની પાસે મનુષ્ય ગતિ, દેવગતિ અને મોક્ષના સુખો આવી જાય છે એટલે કે તે માણસ આ ગતિઓના સર્વોત્તમ સુખો ભોગવીને મોક્ષ સુખને ભોગવનાર બની જાય છે, માટે આ જાતનુ આ પૂજનને લગતુ બધુ કથન પ્રવચન સિદ્ધ જ છે, કેમકે આચાગંગ સૂત્રમા ભગવાને—(इमस्स चेव जीवियस्स परिवंदण माणणपूयणाए जाइमरणमोयणाए दुक्खपरिघायहेउ से

अण्णे वा पुढविसत्थं समारभंते समणुजाणइ। त से अहियाए त से अबोहिए।" इति

जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीकायस्य समारम्भं करोतीत्याह-"इमस्स चेव" इत्यादि। अस्यैव=क्षणभङ्गुरस्य, "जीवियस्स" जीवितस्य-जीवनस्यार्थे, तथा परिवन्दनमाननपूजनाय=परिवन्दनं प्रशंसा, तदर्थं यथाऽऽश्चर्यगृहादिकरणे, माननं=सत्कारः तदर्थं, यथा कीर्तिस्तम्भादिकरणे, पूजनं=स्वपूजनं। प्रतिमापूजनं च, तत्र स्वपूजनं-वस्त्ररत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजनार्थं च प्रतिमादिरचने तथा-जातिमरणमोचनाय, तथा दुःखप्रतिघातहेतु-दुःखविनाशार्थं।

स्थ समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारभावेइ, अण्णे वा पुढविसत्थं समारभंते समणुजाणइ। त से अहियाए त से अबोहिए" इति-इस सूत्र में "जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीकाय का समारंभ करता है" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस क्षणभंगुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्चर्योत्पादक गृह आदि बनवा न दें मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्तंभ आदि कराने में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये वस्त्र रत्नकम्बल आदि पुरस्कार में तथा प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने में तथा जाति-परलोक में सुख के लिये देवमन्दिर आदिके बनवानेमें, मरण-जिनकी मृत्यु हो चुकी है ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने ने में, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवानेमें अथवा अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमें स्वयं भी पृथिवी

સમમેવ પુઢવિસત્થં સમારભઇ, અણ્ણેહિં વા પુઢવિસત્થં સમારભાવેઇ, અણ્ણેવા પુઢવિસત્થં સમારભંતે સમણુજાણઇ ત સે અહિયાએ ત સે અબોહિએ) ઇતિ—"જીવ શા માટે પૃથ્વીકાયનો સમારંભ કરે છે" એ સવાલનો જવાબ આપતા આ પ્રમાણે કહેવામાં આવ્યું છે કે આ જીવ આ ક્ષણભંગુર જીવન માટે પરિવંદન-પ્રશંસા માટે આશ્ચર્યોત્પાદક ઘર વગેરે બનાવવામાં, માન-સત્કાર માટે કીર્તિસ્તંભો વગેરે તૈયાર કરાવવામાં, પોતાની પ્રતિષ્ઠા માટે વસ્ત્ર, રત્ન, કામળ વગેરે રૂપ પુરસ્કાર તેમજ પ્રતિમા પૂજન માટે પ્રતિમા વગેરે બનાવવામાં જાતિ પરલોકમાં સુખ પ્રાપ્તિ થાય તેના માટે દેવ-મંદિરો વગેરે તૈયાર કરાવવામાં, મરણ-જેઓ મરણ પામ્યા છે તેવા પોતાના પિતા વગેરેની યાદમાં સ્તૂપ, સમાધિ વગેરે બનાવવામાં, મોચન-મુક્તિ મેળવવા માટે દેવ-પ્રતિમા વગેરે બનાવવામાં અથવા તો ઘણી જાતના દુઃખોના વિનાશ માટે વર્તમાન કાળમાં પોતે પણ પૃથ્વીકાયના વિનાશ સ્વરૂપ દ્રવ્યભાવ વ્યાપાર

सः जीवनपरिवन्दनमाननपूजनाद्यर्थं जनः स्वयमेव पृथिवीशस्त्रं समारभते =पृथिव्युपमर्दकं द्रव्यभावशस्त्रं व्यापारयति। अन्यैर्वा पृथिवीशस्त्रं समारम्भयति =प्रयोजयति। पृथिवीशस्त्रं समारभमाणान् अन्यान् समनुजानाति अनुमोदयति। एवमतीतानागताभ्यां, तथा मनोवाक्कायैश्च पृथिवीशस्त्रसमारम्भभेदा अवगन्तव्याः। पृथिवीशस्त्रं समारभमाणः किं फलं प्राप्नोतीत्याह-" तं से अहियाए " इत्यादि। " तं " तत्=पृथिवीकायसमारम्भणं, " से " तस्य=पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य " अहियाए " अहिताय=अकल्याणाय भवतीति शेषः। ' तं ' तत् = तदेव च पृथिवीकायसमारम्भणमेव च " से " तस्य पृथिवीशस्त्रं समारभमाणस्य " अबोहीए " अबोधये सम्यक्त्वालाभाय जिनधर्मप्राप्त्यभावाय च भवति।

पृथिवीकायसमारम्भणं हि-कृतकारितानुमोदितभेदेन त्रिविधम्, तथाऽतीत-

काय के विनाशस्वरूप द्रव्य भाव शस्त्रका व्यापार करता है, दूसरों से कराता है और इस शस्त्र का प्रयोग करने वाले प्राणियोंकी अनुमोदना करता है इसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में मनवचन और काय से(त्रियोग और त्रिकरणके सम्बन्धसे) यह जीव पृथिवी कायका समारम्भ करने वाला हुआ है और होगा। अतः जिस प्रकार वर्तमान में त्रियोग और त्रिकरण के सम्बध से इस पृथिवी काय समारम्भ के भेद होते हैं उसी प्रकार भूत और भविष्यत काल में भी इनके सम्बध इसके भेद जानलेना चाहिये। यह पृथिवी काय का समारम्भरूप शस्त्रका प्रयोग प्रयोक्ता जीवको कभी भी कल्याण एवं सम्यक्त्व के लाभ जिन धर्म की प्राप्ति की प्राप्ति कराने वाला नही होता है।

भावार्थ—पृथिवीकाय का समारम्भ कृत, कारित और अनुमोदना

(કાય) કરે છે, બીજાઓ પાસે કરાવે છે અને આ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરનાર પ્રાણીઓની અનુમોદના કરે છે આ પ્રમાણે ભૂત અને ભવિષ્યત કાળમાં મન, વચન અને કાયથી (ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના સંબંધથી) આ જીવ પૃથિવિ કાયનો સમારંભ કરનાર થયો છે અને થશે એટલા માટે જેમ વર્તમાનકાળમાં ત્રિયોગ અને ત્રિકરણના સંબંધથી આ પૃથ્વિકાય સમારંભના ભેદ (પ્રકાર) હોય છે તેમજ ભૂત અને ભવિષ્યત કાળમાં પણ તેમના સંબંધ તેમજ ભેદ જાણી લેવા જોઈએ આ પૃથ્વિકાયના સમારંભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ પ્રયોક્તા જીવના માટે કદાપિ કલ્યાણ સમ્યક્ત્વનો લાભ તેમજ જીન ધર્મની પ્રાપ્તિ કરાવનાર થતો નથી

ભાવાર્થ—પૃથ્વિકાયનો સમારંભ કૃત, કારિત અને અનુમોદનાના ભેદથી ત્રણ પ્રકારનો છે અતીત અને અનાગત કાળના ભેદોથી તેના બીજા ત્રણ ત્રણ

अण्णे वा पुढविसत्थं समारभंते समणुजाणइ। तं से अहियाए तं से अबोहीए।" इति

जीवः कस्मै प्रयोजनाय पृथिवीकायस्य समारम्भं करोतीत्याह-" इमस्स चेव" इत्यादि। अस्यैव=क्षणभङ्गुरस्य, " जीवियस्स" जीवनस्य-जीवनस्यार्थे, तथा परिवन्दनमाननपूजनाय=परिवन्दनं प्रशंसा, तदर्थं यथाऽऽश्चर्योत्पादकगृहादिकरणे, मानन=सत्कारः तदर्थं, यथा कीर्तिस्तम्भादिकरणे, पूजन=स्वपूजनं प्रतिमापूजनं च, तत्र स्वपूजनं-वस्त्ररत्नादिपुरस्कारलाभस्तदर्थं, तथा-प्रतिमापूजनार्थं च प्रतिमादिरचने तथा-जातिमरणमोचनाय, तथा दुःखप्रतिघातहेतु-दुःखविनाशार्थं।

स्थं समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारभावेइ, अण्णे वा पुढविसत्थं समारभंते समणुजाणइ। तं से अहियाए तं से अबोहीए" इति-इस सूत्र में " जीव किस प्रयोजन के लिये पृथिवीकाय का समारंभ करता है" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यह कहा है कि यह जीव इस क्षणभंगुर जीवन के लिये परिवन्दन-प्रशंसा के लिये-आश्चर्योत्पादक गृह आदि बनवा न दें मान-सत्कार के लिये कीर्तिस्तंभ आदि कराने में, अपनी प्रतिष्ठा के लिये वस्त्र रत्नकम्बल आदि पुरस्कार में तथा प्रतिमापूजन के लिये प्रतिमादि बनवाने में तथा जाति-परलोक में सुख के लिये देवमन्दिर आदिके बनवानेमे, मरण-जिनकी मृत्यु हो चुकी है ऐसे अपने पिता आदि की स्मृति के लिये स्तूप आदि की रचना कराने ने मे, मोचन-मुक्ति प्राप्ति के लिये देव प्रतिमा आदि बनवानेमे अथवा अनेक प्रकारके दुःखोंके विनाशके लिये वर्तमानकालमे स्वयं भी पृथिवी

समंमेव पुढविसत्थं समारभइ, अण्णेहिं वा पुढविसत्थं समारभावेइ, अण्णेवा पुढविसत्थं समारभते समणुजाणइ त से अहियाए त से अबोहिए) इति—" જીવ શા માટે પૃથ્વીકાયનો સમારંભ કરે છે" એ સવાલનો જવાબ આપતા આ પ્રમાણે કહેવામા આવ્યું છે કે આ જીવ આ ક્ષણભંગુર જીવન માટે પરિવંદન-પ્રશંસા માટે આશ્ચર્યોત્પાદક ઘર વગેરે બનાવવામા, માન-સત્કાર માટે કીર્તિસ્તંભો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, પોતાની પ્રતિષ્ઠા માટે વસ્ત્ર, રત્ન, કામળ વગેરે રૂપ પુરસ્કાર તેમજ પ્રતિમા પૂજન માટે પ્રતિમા વગેરે બનાવવામા જાતિ પરલોકમા સુખ પ્રાપ્તિ થાય તેના માટે દેવ-મંદિરો વગેરે તૈયાર કરાવવામા, મરણ-જેઓ મરણ પામ્યા છે તેવા પોતાના પિતા વગેરેની યાદમા સ્તૂપ, સમાધિ વગેરે બનાવવામા, મોચન-મુક્તિ મેળવવા માટે દેવ-પ્રતિમા વગેરે બનાવવામા અથવા તો ઘણી જાતના દુઃખોના વિનાશ માટે વર્તમાન કાળમા પોતે પણ પૃથ્વીકાયના વિનાશ સ્વરૂપ દ્રવ્યભાવ

मलभ्य, किं पुनस्तत्र षट्कायसमारम्भणे स्वर्गापवर्गलाभस्य सम्भव । परिवन्दन-माननपूजनार्थं जातिमरणमोचनार्थं दुःखप्रतिघातार्थं च ये जीवाः पृथिवीकायादि-समारम्भ कुर्वन्ति, ते तत्फल विपरीतमेव लभन्ते यतोऽसौ समारम्भः अबोधिमहित चोत्पादयतीत्युक्त भगवता । परतु तत्र प्रतिमापूजका' शास्त्रविरुद्धमेव कथयति-प्रतिमापूजाया स्वाभ्युदयमोक्षार्थं क्रियमाणः षट्कायसमारम्भः खलु अबोधिम-

जीव के लिये यह अकेला पृथिवीकाय का समारम्भ ही अहित का कर्त्ता और मोक्ष के मार्ग से वचित रखनेवाला कहा गया है तो भला किस कार्य में षट्काय के जीवों का समारम्भ होता है, उस कार्य से अथवा उस प्रकार के समारम्भ से जीवों को स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का लाभ कैसे हो सकता है? अर्थात् किसी तरह नहीं हो सकता।

जो मनुष्य परिवदन मानन और पूजन के निमित्त तथा जाति और मरण के मोचन के निमित्त एव दुःखो के विनाश करने के निमित्त पृथिवीकाय आदि का समारम्भ करते है, वे उसका विपरीत ही फल भोगते हैं यह बात अच्छी तरह से प्रकट की जा चुकी है। क्यों कि प्रतिमापूजा बोध एव हित प्राप्ति के लक्ष्य को लेकर के ही की जाती है -परन्तु इस लक्ष्य की सिद्धि न होकर उससे उल्टा कर्त्ता जीव अबोध एव अहित का प्रापक ही होता है ऐसा श्री महावीर प्रभु का कथन है। फिर भी इसके पक्षपाती जन इस बात पर ध्यान न देकर शास्त्र विरुद्ध ही कथन करते है-वे यह कहते हैं " कि इस प्रतिमापूजन में माना कि

માર્ગથી દૂર રેકી દેનાર બતાવવામા આવ્યો છે ત્યારે કયા કાર્યમા ષટ્કાયના જીવોનો સમારભ હોય છે, તે કાર્યથી અથવા તો તે જાતના સમારભથી જીવને સ્વર્ગ અને અપવર્ગ (મોક્ષ) નો લાભ કેવી રીતે સભવી શકે તેમ છે? એટલે કે કોઈ પણ કાળે જીવને આ કાર્યથી સ્વર્ગ કે મોક્ષનો લાભ થઇ શકતો નથી

જે માણુસ પરિવદન, માનન અને પૂજનના માટે તેમજ જાતિ અને મરણુના મોચન માટે અને દુ ખોના વિનાશ માટે પૃથ્વિકાય વગેરેનો સમારભ કરે છે, તેઓ તેનુ ઉલટુ ફળ ભોગવે છે આ વાત સારી રીતે સમજાવવામા આવી છે, કેમકે પ્રતિમા પૂજા બોધ તેમજ હિત પ્રાપ્તિના લક્ષ્યને લઇને જ કરવામા આવે છે પણ આ લક્ષ્યની સિદ્ધિ ન થતા તેનાથી સાવ વિપરીત કર્તા જીવ અબોધ અને અહિતને મેળવે છે એવુ જ શ્રી મહાવીર પ્રભુએ કહ્યુ છે છતા ય પ્રતિમા પૂજાના કેટલાક તરફદારીઓ આ વાતને લક્ષ્યમા ન રાખતા શાસ્ત્ર વિરૂદ્ધ જ કથનને વળગી રહે છે તેઓ આ પ્રમાણે કહે છે

वर्तमानानागतभेदेन प्रत्येकं त्रैविध्ये नवधा भवति। नवविधस्यापि पृथिवीकाय समारम्भणस्य मनोवाक्काययोगभेदेन प्रत्येकं त्रैविध्ये सप्तविंशतिविधता भवति। एवं विधपृथिवीकायसमारम्भप्रवृत्तः खलु षट्कायारम्भसंपातजन्यघोरतरदुरितार्जनेन दुरन्तसंसारदावानलज्वालान्तःपातं प्राप्यानन्तनरकनिगोदादिदुःखमनुभवन् न कदाचित् कल्याणं शाश्वतसुखप्रदं मोक्षमार्गं प्राप्नोतीतिभावः॥

भगवता पृथिवीकायसमारम्भणवदप्कायादिसमारम्भणमप्यहितायाबोधये च भवतीत्यपि तत्रैव प्ररूपितम्। यत्रैकस्य पृथिवीकायस्य समारम्भणे सम्यक्त्व

के भेद से तीन प्रकार का है-इसके अतीत और अनागत काल के भेद से तीन ३ प्रकार का और हो जाते हैं इस प्रकार यह तीनों कालों की अपेक्षा से ९ प्रकार का है। इन नव प्रकारों के साथ-मन वचन और काय इन तीनो का गुणा करने से यह २७ प्रकार का माना गया है इस प्रकार त्रिकरण और त्रियोग के संबंध से २७ प्रकार के इस पृथिवीकाय के समारंभ में प्रवृत्त जीव षट्काय के आरंभ के संपात जन्य घोरतर पापों के अर्जन से दुरन्त संसार रूपी दावानल की ज्वाला के मध्य में निमग्न बन अंत में अनन्त नरक निगोदादिकों के दुःखों का अनुभव करता हुआ कभी भी निज कल्याण का भोक्ता एवं शाश्वत सुख को प्रदान करने वाले मोक्ष के मार्ग का पथिक नहीं बन सकता है पृथिवी काय के समारम्भ की तरह अप्काय आदि का समारंभ भी इस जीवात्मा को सदा अहितकारी और अबोध का दाता है यह बात भी वहाँ पर (आचारांग सूत्र में) भगवान ने कही है अब विचारिए-जब

ભેદો થઇ જાય છે આ રીતે આ ત્રણે કાળોની અપેક્ષાએ નવ પ્રકારનો છે આ નવ પ્રકારોની સાથે મન, વચન અને કાય અને ત્રણેનો ગુણાકાર કરવાથી આ ૨૭ પ્રકારનો માનવામાં આવ્યો છે આ પ્રમાણે ત્રિકરણ અને ત્રિયોગના સંબંધથી ૨૭ પ્રકારના આ પૃથ્વિકાયના સમારંભમાં પ્રવૃત્ત જીવ ષટકાયના આરંભના સંપાત જન્મ ઘોરતર (ભયંકર) પાપોને કારણે દુરંત સંસાર રૂપી દાવાનલના અગ્નિમાં પડીને છેવટે અનંત નરક નિગોદ વગેરે દુઃખોને અનુભવતો કદાપિ પોતાના કલ્યાણનો ભોક્તા થઇને અને શાશ્વત-સુખને આપનાર મોક્ષ માર્ગનો પથિક (વટેમાર્ગુ) બની શકતો નથી પૃથ્વિકાયના સમારંભની જેમ અપ્કાય વગેરેનો સમારંભ પણ આ જીવાત્મા માટે હમેશા અહિતકારી અને અબોધ (અજ્ઞાન) આપનારો છે આ વાત પણ આચારાંગ સૂત્રમાં ભગવાને કહી છે હવે આટલું તો આપણે પણ સમજી શકીએ છીએ કે જ્યારે જીવના માટે ફક્ત પૃથ્વિકાયનો સમારંભ જ જ્યારે અહિત કરનાર અને મોક્ષના

समारभमाणः अन्यान् अनेकरूपान् प्राणान् विहिंसति । एषः=पृथिवीशस्त्रसमारम्भः खलु निश्चयेन ग्रन्थः=ग्रथ्यते=बध्यते जीवोऽनेनेति ग्रन्थः, अष्टविधकर्मबन्धः, बन्धजनकत्वाद् ग्रन्थ इत्युच्यते । तथा–एष मोहः विपर्यास वैपरीत्यज्ञानरूप इत्यर्थ तथा–एष मारः=निगोदादिमरणरूपः । तथा–एष खलु नरकः–नारक जीवानां दशविधयातनास्थानम् । इत्यर्थम्–एतदर्थं कर्मबन्ध–मोह मरण–नरकरूप घोर दुःखफलं प्राप्य पुन पुनरेतदर्थमेव लोकः=अज्ञानवशवर्ती जीवः गृद्धः–लिप्सुरस्ति । यद्यपि विषयभोगासक्तो लोक शरीरादिपरिपोषणार्थं परिवन्दनमाननपूजनार्थं जातिमरणमोचनार्थं दुःखप्रतिघातार्थं च पृथिवीशस्त्रसमारम्भ करोति, तथापि तत्फल कर्मबन्धमोहमरणनरकरूपमेव लभते, अतः पृथिवीकर्मसमारम्भस्य तदेव फल भवतीति भावः । तदेव प्रवचनविरुद्धप्ररूपण

कराने वाला होने से ग्रन्थस्वरूप, विपरीत ज्ञान का जनक होने से मोहरूप, निगोदादि जीवों का इस में मरण होता है–इसलिये मार स्वरूप तथा नारकियों की दश प्रकार की यातना का हेतु होने से यह नरकरूप माना गया है। इस प्रकार यह जीव इस पृथिवीकाय के समारभरूप शस्त्र के फलस्वरूप कर्मबन्ध, मरण और नरकरूप घोरतर दुःखों को भोगता हुआ भी अज्ञान के आधीन होकर उसी शस्त्र के प्रयोग करने का फिर भी अभिलाषी हो रहा है। यद्यपि विषय भोगों में आसक्त बना हुआ यह जीव शरीर आदि की पुष्टि परिवंदन, मानन, पूजन एव जाति और मरण के मोचन के लिये तथा दुःखो के विनाश के लिये पृथिवीकाय के समारभरूप शस्त्र का प्रयोग करता है–परन्तु फिर भी इसका वह कर्मबन्ध, मोह, मरण, नरकरूप फल का ही भोक्ता बनता

જ્ઞાનાવરણીય વગેરે કર્મોનો બ ધ કરાવનાર હોવા બદલ ગ્રન્થ સ્વરૂપ, વિરુદ્ધ જ્ઞાનને ઉત્પન્ન કરનાર હોવાથી મોહ રૂપ, નિગોદ વગેરે જીવોનુ આમા મરણ થાય છે માટે માર સ્વરૂપ તેમજ નારકીઓની દશ પ્રકારની યાતનાનુ કારણ રૂપ હોવાથી આ નરક રૂપ માનવામા આવ્યુ છે આ રીતે આ જીવ આ પૃથ્વિકાયના સમારભ રૂપ શસ્ત્રના ફળ સ્વરૂપ કર્મબ ધ, મરણ અને નરક રૂપ ઘોરતર દુ ખોને ભોગવવા છતા પણ અજ્ઞાનવશ થઈને તે જ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરવા માટે ફરી તૈયાર થઈ રહ્યો છે જો કે વિષય ભોગોમા આસક્ત બનેલો આ જીવ શરીર વગેરેની પુષ્ટિ પરિવદન, માનન, પૂજન અને જાતિ મરણના મોચન માટે તેમજ દુ ખોને દૂર કરવા માટે પૃથ્વિકાયના સમારભ રૂપ શસ્ત્રનો પ્રયોગ કરે છે પણ છતા યે તે કર્મબન્ધ, મોહ, મરણ અને નરક રૂપ ફળને ભોગવનાર જ બને છે એટલા માટે આપણે ચોક્કસ કહી શકીએ તેમ છીએ

हित नोत्पादयति, प्रत्युत बोधि नरामरशिवसुखरूप हित च सम्यग् जनयतीति, तदेतत् साक्षात् परागमविरुद्धमिति ।

किं च आचाराङ्गसूत्रे पृथिवीकायसमारम्भस्य फलमुक्त्वा भगवता पुनरभिहितम्-' एस खलु गथे, एस खलु मोहे एस खलु मारे, एस खलु णिरये, इच्चत्थ गढिए लोए, जमिण विरुवरुवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेण पुढविसत्थ समारभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ । ' (आ० १ अ० २ उ०)

छाया- एष खलु ग्रन्थः, एष खलु मोह , एष खलु मारः, एष खलु नरक' इत्यर्थं गृद्धो लोकः, यदिम विरूपरूपै' शस्त्रैः पृथिवीकर्मसमारम्भेण पृथिवीशस्त्र

षट्काय का समारम्भ होता है-परन्तु यह समारम्भ स्वाभ्युदय एव मुक्ति प्राप्ति के निमित्त ही किया जाता है-अतः यह कर्त्ता जीवों को न अहित का ही उत्पादक होता है और न बोधि के लाभ से वंचित रखता है प्रत्युत यह उन्हें बोधि एव नर अमर और मोक्ष के सुख स्वरूप हित का प्रदान करने वाला ही होता है " सो इस प्रकार का उनका यह कथन साक्षात् शास्त्र से विरुद्ध ही है-यह बात आचाराग सूत्र से भली भांति पुष्ट होती है उसमें पूर्वोक्तरीति से पृथिवीकाय के समारम्भ का फल कह कर फिर यह कहा गया है—" एस खलु गथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु नरये, एच्चत्थ गड्ढिए लोए,जमिण विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढविकम्मसमारंभेण पुढविसत्थ समारभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ " (आ १ अ- २ उ-) यह पृथिवीकाय का समारम्भरूप शस्त्र निश्चय से जीवों को अष्टप्रकार के ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का बन्ध

છે-આપણે થોડા વખત માટે આમ પણ માની લઈએ કે આ પ્રતિમા પૂજનમા ષટ્કાયને સમારભ થાય છે-પણ આ સમારભ સ્વાભ્યુદય અને મુક્તિની પ્રાપ્તિ માટે જ કરવામા આવે છે એટલા માટે આ કર્તા જીવોના માટે અહિતનો ઉત્પાદક પણ હોતો નથી અને બોધિના લાભથી પણ તેઓને વચિત રાખતો નથી આ તો તેમને બોધિ અને નર અમર અને મોક્ષના સુખ સ્વરૂપ હિતને આપનાર જ હોય છે પણ તેમનુ આ કથન પ્રત્યક્ષ રૂપમા શાસ્ત્રથી વિરૂદ્ધ જ છે આ વાત આચારાગ સૂત્રથી સારી પેઠે પુષ્ટ થઈ જાય છે તેમા પૂર્વોક્ત રીતથી પૃથ્વિકાયના સમારભનુ ફળ બતાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ છે—

'एस खलु गथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे एस खलु नरये, एच्चत्थ गड्ढिए लोए जमिण विरूवरूवेहि सत्थेहि पुढविकम्मसमारंभेण पुढविसत्थ समारभमाणे अण्णे अणेगरूवे पाणे विहिंसइ " (आ १ अ २ उ)

આ પૃથ્વિકાયનુ સમારભ રૂપ શસ્ત્ર ચોક્કસ જીવોના પ્રકારના

यत्तु-ब्राह्मीलिपिरिव प्रतिमा वन्द्या, 'नमो बंभीए लिवीए" इतिपदं यद् व्याख्याप्रज्ञप्तेरादावुपन्यस्तं तत्र ब्राह्मीलिपिरक्षरविन्यासः, सा यदि श्रुतज्ञानस्याऽऽकारस्थापना, तदा तद्वन्द्यत्वे साकारस्थापनाया भगवत्प्रतिमायाः स्पष्टमेव वन्द्यत्वम् तुल्यन्यायादित्युक्तं, तन्मोहनीयकर्मोदयविलसितम्-

श्रुतज्ञानरूपस्य भावश्रुतस्य स्थापना-श्रुतज्ञानवत्, श्रुतपठनादिक्रियावत' सा साध्वादेश्चित्रादिक भवति, श्रुतवद्वतोरभेदोपचारात् सा साध्वादि श्रुतमुच्यते। स्थापनावश्यकस्य स्थापनाश्रुतस्य च तथैवानुयोगद्वारे भगवता वर्णनात्। यदेव लिपिः श्रुतज्ञानस्य स्थापनारूपत्वं न प्राप्नोति। तस्मात् प्रतिमाया ब्राह्मीलिपिदृष्टान्त प्रदर्शनमुत्सूत्रप्ररूपणम्।

किञ्च—प्रतिमापूजन की पुष्टि के लिये "नमो बभीए लिवीए" व्याख्याप्रज्ञप्ति की आदि में लिखे हुए इस सूत्र के बल पर जो उसके पक्षपाती जन यह कहते हैं-" कि अक्षर विन्यासरूप ब्राह्मीलिपि जिस प्रकार श्रुतज्ञान के आकार की स्थापनारूप होकर वन्द्य-वन्दनीय मानी गई है उसी प्रकार साकार स्थापनारूप भगवान की प्रतिमा में भी वन्दनीयता स्पष्ट ही है" सो यह कथन विचार करने पर ठीक नहीं बैठता है।

तथाहि— श्रुतज्ञानरूप भावश्रुत की स्थापना-श्रुतज्ञानसंपन्न, और श्रुत के पठन की क्रिया विशिष्ट ऐसे जो साधु आदिजन हैं उनके चित्र आदि स्वरूप पडती है अर्थात् श्रुतज्ञानी साधु आदि के चित्रस्वरूप ही श्रुतज्ञानरूप भावश्रुतकी स्थापना होती है। ब्राह्मीलिपि अक्षर विन्यास है। वह श्रुतज्ञान की स्थापना है। यहाँ श्रुतज्ञानी साधु आदि को जो

અને બીજુ પણ કે-પ્રતિમા પૂજનની પુષ્ટિ માટે "नमो बभीए-लिवीए" વ્યાખ્યા પ્રજ્ઞપ્તિની શરૂઆતમા આવેલા આ સૂત્ર મુજબ જે તેની તરફદારી કરનારા માણુસો આમ કહે છે કે "અક્ષર વિન્યાસ રૂપ બ્રાહ્મિ લિપિ જેમ શ્રુતજ્ઞાનના આકારની સ્થાપના રૂપ થઈને વન્દ્ય-વદનીય માનવામા આવી છે, તેમજ આકાર-સ્થાપના રૂપ ભગવાનની પ્રતિમામા પણ વદનીયતા સ્પષ્ટ દેખીતી વાત જ છે પરતુ આ કથનનો પણ વિચાર કર્યા બાદ યોગ્ય લાગતું નથી તેમજ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના-શ્રુતજ્ઞાન સપન્ન અને શ્રુતના પઠનની ક્રિયા વિશિષ્ટ એવા જે સાધુ વગેરે લોકો છે તેમના ચિત્ર વગેરે સ્વરૂપ હોય છે એટલે કે શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેના સ્વરૂપ જ શ્રુતજ્ઞાન રૂપ ભાવશ્રુતની સ્થાપના હોય છે બ્રાહ્મિ-લિપિ અક્ષર વિન્યાસ છે તે શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના છે અહીં શ્રુતજ્ઞાની સાધુ વગેરેને જે ભાવશ્રુત રૂપ કહેવામા આવ્યો છે તે શ્રુતજ્ઞાન

पराः सर्वदोषनिर्मुक्तं शुद्धमद्वितीयमनवद्यं जैनधर्मं सावद्यपूजोपदेशेन कुप्रावचनिकोपमेयं कुर्वन्तः संसारदावानले जनान् पातयन्तः स्वयं च मोहनीयकर्मोदयवशादन्धा इव सन्मार्गतो निपतन्तः स्वात्मानमहितेन मिथ्यात्वेन च पुनः पुनः संयोजयन्ति। यदि मृगतृष्णाऽपि केषांचित् पिपासाकुलानां स्वच्छजलधारावाहिनी भवेत्, तदा प्रतिमापूजापि तेषां द्रव्यलिङ्गिनां परिणामशुद्धिं संपादिनी अष्टविधकर्मदलनी नरामरशिवसुखविधायिनी भवेदिति बोध्यम्।

है। अतः प्रतिमापूजन का उपदेश निश्चित है कि प्रवचनमार्ग से विरुद्ध है। इस विरुद्ध प्ररूपणा करने में तत्पर मनुष्य सर्व दोषों से रहित, शुद्ध और अद्वितीय एवं अनवद्य इस जैनधर्म को सावद्य पूजा के उपदेश से कुप्रावचनिक की तरह कलंकित-सदोष कर संसाररूपी दावानल में भोले भाले प्राणियो को डाल रहे हैं और स्वयं भी मोहनीय कर्म के उदय से अन्ध की तरह बन कर सन्मार्ग से विमुख होते हुए अपनी आत्मा को अहित और मिथ्यात्व के कलंक से कलुषित कर रहे हैं। अरे-कहीं मृगतृष्णा से भी प्यासे व्यक्तियों की प्यास बुझती हैं? यदि नहीं, फिर मृगतृष्णा तुल्य इस प्रतिमा पूजन से कर्त्ता की सम्यक्त्व और हित की प्राप्ति होने रूप प्यास कैसे बुझ सकती है-सोचो। हां! यदि ऐसा होता कि मृगतृष्णा स्वच्छजल की धारा बहाकर प्यासे प्राणियो की तृषा को शांत करती-तो यह प्रतिमा पूजन भी द्रव्यलिङ्गियों के परिणामो में शुद्धि करती हुई उनके अष्टकर्मों को दलने वाली और उन्हें नर, अमर एवं शिवसुख प्रदान करने वाली भी हो सकती।

કે પ્રતિમા પૂજનનો ઉપદેશ પ્રવચન માર્ગથી વિરૂદ્ધ છે આ જાતની વિરૂદ્ધ પ્રરૂપણા કરવામા તત્પર માણસ બધા દોષોથી રહિત, શુદ્ધ અદ્વિતીય અને અનવદ્ય આ જૈન ધર્મને સાવદ્ય પૂજાના ઉપદેશથી કુપ્રાવચનિકની જેમ કલંકિત દોષયુક્ત બનાવીને સંસાર રૂપી દાવાનલમા ભોળા પ્રાણીઓને નાખી રહ્યો છે અને જાતે પણ મોહનીય કર્મના ઉદયથી આંધળાની જેમ થઈને સન્માર્ગથી દૂર થતા પોતાના આત્માને અહિત અને મિથ્યાત્વના કલંકથી કલુષિત કરી રહ્યો છે મૃગજળથી પણ કોઈ દિવસે તરસ્યા માણસોની તરસ મટી શકી છે? જો આવું નથી તો પછી મૃગજળ જેવી આ પ્રતિમા પૂજનથી કર્ત્તાની સમ્યક્ત્વ અને હિતની પ્રાપ્તિ થવા રૂપ તરસ કેવી રીતે મટી શકે તેમ છે જોમૃગજળ નિર્મળ પાણીનો ઝરો થઈને તરસ્યા પ્રાણીઓની તરસ મટાડી શકત તો આ પ્રતિમા પૂજા પણ દ્રવ્યલિંગિઓના પરિણામોમા શુદ્ધિ કરનારી તેમના આઠ કર્મોને નષ્ટ કરનારી અને નર, અમર અને શિવ-સુખ આપનારી,

चाराङ्गादिकं प्रतिपूर्णघोष कण्ठोष्ठविप्रमुक्त पठितमत सान्वादेस्तदर्थज्ञानाभावे सति द्रव्यश्रुतत्व भवति, तथैवानुयोगद्वारे द्रव्यश्रुतस्य वर्णनात्। वर्णसकेतरूपा लिपिस्तु न शब्दात्मिका, यतो वर्णस्यैवोच्चारणमुपपद्यते, न तु तत्सकेतस्य लिपिमत पुस्तकादेस्तु श्रुत शिक्षित यावद् वाचनोपगत न भवितुमर्हति अतस्तस्य द्रव्यश्रुतत्व न सभवति कथ पुनस्तद्गतलिपेस्तत्सभवः ? कथमपि नहि।

किं च-द्रव्यश्रुतस्य वन्द्यत्वमेव नास्ति, अनुपयुक्तत्वाच्चरणगुणशून्यत्वाच्च, तस्माद् भावश्रुतस्यैव वन्द्यत्वप्राप्तौ द्रव्यश्रुतनमस्कारकल्पन भ्रान्तिमूलकमेव। 'नमो बभीए लिवीए' अस्यायमर्थ'-वर्णात्मकभाषासकेतरूपा लिपिर्ब्राह्मीलिपिः

प्रकार द्रव्यश्रुत का वर्णन अनुयोगद्वार में किया गया मिलता है। अकार आदि वर्णरूप से सकेतित लिपि मे शब्दात्मकता आभी नही सकती है-क्यो कि वर्ण का ही उच्चारण होता है-उसके सकेत का नही। लिपियुक्त पुस्तकादि में भी वाचना आदि कुछ नही होता है। क्यों कि वह जड है-चेतन में ही ये वाचना पृच्छना आदि होते है। अतः उस में द्रव्यश्रुतता मानना सर्वथा अयुक्त है इसलिये यह निश्चित होता है कि अकार आदि वर्णरूप से सकेतित लिपि में और इस लिपि विशिष्ट पुस्तकादिक में द्रव्यश्रुतता किंचित मात्र भी सभवित नही है।

किंच—अनुपयुक्त होने से और चरणगुण शून्य होने से द्रव्यश्रुत में वधता आ ही नही सकती है। भावश्रुत में ही उपयोग सहित और चरणगुण युक्तता होने से वदता आती है-अत द्रव्यश्रुत मे नमस्कार करने की कल्पना करना केवल भ्रान्तिमूलक ही है "नमो बभीए

આ રીતે દ્રવ્યશ્રુતનુ વર્ણન અનુયોગ દ્વારમા કરવામા આવ્યુ છે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા શબ્દાત્મકતા આવી શકે તેમ નથી કેમકે ઉચ્ચારણ તો દ્રવ્યનુ જ થાય છે, તેના સ કેતનુ નહિ લિપિ યુક્ત પુસ્તકો વગેરેમા પણ વાચના વગેરે કઈ જ હોતુ નથી કેમકે તે જડ છે, ચેતનમા જ વાચના પૃચ્છના વગેરે થાય છે એથી તેમા દ્રવ્યશ્રુતતા માનવી સાવ અયોગ્ય છે એથી એ વાત ચોક્કસ થાય છે કે અકાર વગેરે વર્ણરૂપથી સ કેતિત લિપિમા અને આ લિપિ વિશિષ્ટ પુસ્તક વગેરેમા દ્રવ્યશ્રુતતા થોડી પણ સભવિત નથી

અને બીજી પણ કે-અનુપયુકત હોવાથી અને ચરણગુણ શૂન્ય હોવાથી દ્રવ્યશ્રુતમા બધતા આવી જ શકતી નથી ભાવશ્રુતમા જ ઉપયોગ સહિત અને ચરણગુણ યુક્તતા હોવાથી વદના આવે છે એટલા માટે દ્રવ્યશ્રુતમા નમસ્કાર કરવાની કલ્પના કરવી ભ્રાતિમૂલક જ છે " नमो बभीए लिवीए " આનો અર્થ

यत्तु-अभयदेवीयवृत्तौ संज्ञाक्षररूपं द्रव्यश्रुतं नमस्कुर्वता-'णमो बंभीए लिवीए' इत्युक्तं तद् भ्रान्तिमूलकम् पुस्तकलिखिताऽकारादिवर्णसंकेतरूपाया लिपेर्द्रव्यश्रुतत्वं न संभवति यतः श्रुतं नाम द्वादशाङ्गीरूपमर्हत्प्रवचनं शास्त्रं यस्य कस्यचिज्जीवस्य शिक्षितं स्थितं जितं यावद् वाचनोपगतं भवति न जन्तुस्तत्र वाचनापृच्छनादिभिर्वर्तमानोऽपि श्रुतोपयोगाभावादागममाश्रित्य द्रव्यश्रुतम्, आ

भावश्रुतरूप कहा गया है-वह श्रुतज्ञान और श्रुतवान में अभेद के उपचार से ही कहा गया समझना चाहिये। इसी रूप से ही भगवान ने अनुयोग द्वार में स्थापना आवश्यक और स्थापना श्रुत का कथन किया है। अतः लिपि में भावश्रुत की कल्पना से श्रुतज्ञान की स्थापना मानना कथमपि युक्ति संगत नहीं है। इसी प्रकार लिपि में द्रव्यश्रुतता भी नहीं आती है। क्यों कि द्वादशांगीरूप अर्हत प्रवचन का नाम श्रुत है। श्रुतज्ञान का ज्ञाता जब उसमें अनुपयुक्त अवस्थानवाला है। तब वही आगम की अपेक्षा द्रव्यश्रुत कहा जाता है। संज्ञा अक्षर रूप आकृति को द्रव्यश्रुत नहीं कहा है। इस कथन से इस बात की पुष्टि होती है कि-अभयदेव विरचित वृत्ति मे "णमो बंभीए लिवीए" इस पद का अर्थ संज्ञा अक्षररूप द्रव्यश्रुत परक मानकर जो नमस्कार किया गया है -वह भ्रान्तिमूलक है, क्यों कि पुस्तक में रही हुई संकेतित अकार आदि वर्ण की आकृति मे द्रव्यश्रुतता संभवित नहीं होती है। वाचना, पृच्छना आदि से अधिगत श्रुत मे अनुपयुक्तज्ञाता ही द्रव्यश्रुत है इसी

અને શ્રુતવાનમાં અભેદોપચારથી જ કહેવાયેલો સમજવો જોઈએ આ રૂપથી જ ભગવાને અનુયોગદ્વારમાં સ્થાપના આવશ્યક અને સ્થાપના શ્રુતનું કથન કર્યું છે એટલા માટે લિપિમાં ભાવશ્રુતની કલ્પનાથી શ્રુતજ્ઞાનની સ્થાપના માનવી કોઈ પણ રીતે યોગ્ય નથી આ પ્રમાણે જ લિપિના દ્રવ્યશ્રુતતા પણ આવતી નથી કેમકે દ્વાદશાંગી રૂપ અર્હંત પ્રવચનનું નામ શ્રુત છે આ શ્રુતજ્ઞાનનો જ્ઞાતા જ્યારે તેમાં અનુપયુક્ત અવસ્થાવાળો હોય છે ત્યારે તે આગમની અપેક્ષાએ દ્રવ્યશ્રુત કહેવાય છે સંજ્ઞા અક્ષર રૂપ આકૃતિને દ્રવ્યશ્રુત કહી નથી આ કથનથી આ વાતની પુષ્ટી થાય છે કે અભયદેવ વિરચિત વૃત્તિમાં "णमो बंभीए लिवीए" આ પદનો અર્થ સંજ્ઞા અક્ષર રૂપ દ્રવ્ય શ્રુતપરક માનીને જે નમસ્કાર કરવામાં આવ્યો છે તે ભ્રાંતિમય છે, કેમકે પુસ્તકમાં રહેલી સંકેતિત અકાર વગેરે વર્ણની આકૃતિમાં દ્રવ્યશ્રુતતા સંભવિત નથી હોતી વાચના, પૃચ્છના વગેરેથી અધિગત શ્રુતમાં અનુપયુક્ત જ્ઞાતા જ શ્રુત છે

भावलिपिं प्रति समुत्पन्नभक्तिः श्रीसुधर्मा स्वामी लिपिज्ञानस्य माहात्म्यं प्रकटयन् भावश्रुतं प्रति भावलिपेः कारणतयाऽभ्यर्हितत्वेन तत पूर्वं भावलिपिवन्दनं कृतवान्, तत्पश्चाद् भावश्रुतं नमस्कुर्वन्नवादीत् ' नमः सुयस्स ' इति ।

यत्तु-अभयदेवसूरिणा स्वकृतटीकायामुक्तम् ' जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ ' त्ति एतस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते । वाचनान्तरे तु-' ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ २ त्ता, जिणपडिमाणं

समूहरूप श्रुत को लिपिबद्ध करने की इच्छा से श्री सुधर्मास्वामी कि जिन की भक्ति श्रुतबोधक भावलिपि के प्रति जागृत हुई है लिपिज्ञान के माहात्म्य को प्रकट करते हुए भावश्रुत को नमस्कार करने के पहिले भावलिपि को ही नमस्कार करते हैं क्यों कि भावश्रुत के प्रति भाव लिपि को ही कारणता है, और इसी निमित्त से यह उसकी अपेक्षा पूज्य मानी गई है भावलिपि को नमस्कार करने के पश्चात् ही उन्हो ने " नम-सुयस्स " भावश्रुत को नमस्कार इस सूत्र द्वारा किया है। " जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ " इस पाठ को लेकर जो टीकाकार अभयदेव सूरि ने जिनप्रतिमा कि पूजन करने की बात कही है-सो ठीक नहीं है। क्यों कि मालूम होता है, कि उन्हें मूल पाठ का निश्चय ही नहीं हुआ है-कारण कि एक वाचना में तो यही पाठ मिलता है-तब कि दूसरी वाचना में " ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमई, २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छइ, २

પ્રતિપાદન કરનારા શબ્દોના સમૂહરૂપ શ્રુતને લિપિબદ્ધ કરવાની ઇચ્છાથી શ્રીસુધર્મા સ્વામી-કે જેમની શ્રુતબોધક ભાવલિપિ પ્રત્યે ભક્તિ ઉત્પન્ન થઇ છે-લિપિ જ્ઞાનના માહાત્મ્યને પ્રગટ કરતા ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કરતા પહેલા ભાવલિપિ ને જ નમસ્કાર કર્યા છે કેમકે ભાવશ્રુત પ્રત્યે ભાવલિપિ જ કારણતા છે અને આ કારણથી જ આ તેના કરતા પૂજ્ય માનવામા આવી છે ભાવલિપિને નમસ્કાર કર્યા બાદ જ તેમણે " नम सुयस्स " આ સૂત્ર વડે ભાવશ્રુતને નમસ્કાર કર્યા છે " जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ " આ પાઠના આધારે જે ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ જીનપ્રતિમાની પૂજાની વાત કહી છે તે યોગ્ય નથી કેમકે તેમને મૂળ પાઠનો નિશ્ચયજ થયો નથી એમ જણાઇ આવે છે કારણ કે એક વાચનામા તો એ જ પાઠ મળે છે ત્યારે બીજી વાચનામા—

(ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमई २ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छई, २ जिणघरं अणुपविसइ, जिणपडिमाणं आलोए

ब्राह्मीशब्दस्य भाषार्थकत्वात्, उक्तं चामरकोशे-'ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग् वाणी सरस्वती' इति । यद्वा-अष्टादशप्रकारा लिपि श्रीमन्नाभेयजिनेन ब्राह्मीनाम्निका स्वसुता प्रदर्शिता तस्मात् सा लिपिर्ब्राह्मीत्युच्यते । लिपिज्ञानस्य श्रुतज्ञानोपयोगितया भावश्रुतहेतुं लिपिज्ञानरूपं भावलिपिं वन्दमानः श्रीसुधर्मास्वामी प्राह-' नमो बंभीए लिवीए ' इति । श्रुतज्ञानं प्रति लिपिज्ञानं कारणं, यतो लिपिज्ञानेन तत्संकेतितशब्दस्मरणं, ततस्तदर्थज्ञानं जायते । तस्माद् भगवदुक्तार्थस्य प्रतिबोधनाय तद्बोधकशब्दजातरूपं श्रुतं लिपिबद्धं कर्तुकाम' श्रुतबोधिका

लिवीए" इसका अर्थ इस प्रकारसे सगत बैठता है-अकार आदि वर्णात्मक भाषा के संकेतरूप लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि है-ब्राह्मी शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है अमर कोप में भी यही बात कही है-" ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग् वाणी सरस्वती "। अथवा-श्री आदिनाथ प्रभु ने अपनी ब्राह्मी नाम की पुत्री को १८ प्रकार की लिपि कही थी इसलिये भी उस लिपि का नाम ब्राह्मी लिपि इस प्रकार से पड़ गया है। श्रुतज्ञान में उपयोगी होने से इस लिपि के ज्ञान को भावश्रुत का कारण माना है। इसलिये लिपि ज्ञानरूप भाव लिपि को वंदन करते हुए श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं " नमो बंभीए लिवीए "। श्रुतज्ञान के प्रति लिपि ज्ञान कारण है- क्यों कि लिपि के ज्ञान से अकारादि वर्णात्मक लिपि रूप से संकेतित उस उस शब्द का स्मरण होता है और उससे उसके अर्थ का ज्ञान होता है। अतः भगवान द्वारा प्रतिपादित अर्थ को समझाने के लिये उस अर्थ का प्रतिपादन करने वाले शब्दों के

આ પ્રમાણે સુસંગત બેસી શકે છે કે-અકાર વગેરે વર્ણાત્મક ભાષાના સંકેત રૂપ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ છે બ્રાહ્મી શબ્દ ' ભાષા ' આ અર્થમાં પ્રયુક્ત થયો છે અમરકોશમાં પણ એ જ વાત કહેવામાં આવી છે કે " બ્રહ્મી તુ ભારતી ભાષા ગીર્વાગ્વાણી સરસ્વતી " અથવા તો શ્રી આદિનાથ પ્રભુએ પોતાની બ્રાહ્મી નામની પુત્રીને અઢાર પ્રકારની લિપિઓ બતાવી હતી એટલા માટે પણ આ લિપિનું નામ બ્રાહ્મી લિપિ પડી ગયું છે શ્રુતજ્ઞાનમાં ઉપયોગી હોવાથી આ લિપિના જ્ઞાનને ભાવશ્રુતનું કારણ માનવામાં આવ્યું છે એથી લિપિજ્ઞાન રૂપ ભાવલિપિને વંદન કરતાં શ્રીસુધર્માસ્વામી કહે છે કે "નમો બંભીએ લિવીએ" શ્રુતજ્ઞાનના પ્રતિ લિપિજ્ઞાન કારણ છે કેમકે લિપિના જ્ઞાનથી અકાર વગેરે વર્ણાત્મક લિપિ રૂપથી સંકેતિત તે શબ્દનું સ્મરણ થાય છે અને તેનાથી તેના અર્થનું જ્ઞાન થાય છે એટલા માટે ભગવાનદ્વારા પ્રતિપાદિત અર્થને સમજાવવા

तदनन्तर पुनः प्रतिमापूजकैः स्वीकृते–मूलपाठे–' तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ ' इति दृश्यते, 'नमेइ' इत्यत्र टीकाकारः–' निवेसेइ ' इतिलिखित्वा निवेशयतीत्यर्थ उक्तः, तेनात्र–मूलपाठस्य स्वस्वकपोलकल्पितत्वं सिध्यति, द्रौपद्याश्चरिते टीकाकृताऽभयदेवसूरिणा पुनरीदृशः पाठो लब्धः–

'ईसिं पच्चुन्नमति २त्ता, करयल०जाव कट्टु एवं वयासी–नमोत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमसइ२ जिणघराओ पडिनिक्खमइ ' इति इमं पाठं टीकायां विलिख्य टीकाकार आह–

'तत्र वन्दते=चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन,नमस्यति=पश्चात् प्रणिधानादियोगेनेति वृद्धा' । न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहितं सूत्रे इति सूत्र-

में जैसा पाठ रचा है उनने उसी प्रकार मूल पाठ में निज कल्पना का पाठ प्रक्षिप्त करके पाठ भेद कर दिया है। अतः स्वकपोलकल्पित होने से असली मूल पाठ का निश्चय ही नहीं होता है, द्रौपदी के चरित में टीकाकार अभयदेवसूरि को इस प्रकार का पाठ उपलब्ध हुआ–ईसिं पच्चुन्नमति २, करयल० जाव कट्टु एवं वयासी–नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ, नमसइ २, जिणघराओ पडिनिक्खमइ इति " पाठ को लिखकर उन्हों ने टीका की। वन्दते–नमस्यति पद के अर्थ का खुलाशा करते हुए वे कहते हैं कि प्रसिद्ध चैत्यवंदन विधि के अनुसार नमन करना वंदना और इसके बाद प्रणिधान आदि के योग से नमस्कार करना नमन है ऐसा सिद्धान्त वृद्धों का है। सूत्र मे जब द्रौपदी का प्रणिपात दण्डक मात्र चैत्यवंदन कहा है–अर्थात् दण्ड की तरह प्रणाम करने रूप चैत्यवंदन कहा गया है–तो इसी से यह

કઈક ઉમેરો કરીને પા૦ ભેદ કરી નાખ્યો છે એટલા માટે સ્વકપોલકલ્પિત હોવા બદલ અસલ મૂળપાઠનો નિશ્ચય જ થઇ શકે તેમ નથી દ્રૌપદી ચરિતમા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિનો આ જાતનો પા૦ મળ્યો છે કે–(ईसिं पच्चुन्नमत्ति २, करयल० जाव कट्टु एवं वयासी–नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ, नमसइ २, जिणघराओ पडिनिक्खमइ इति) આ પાઠને લખીને તેમણે ટીકા કરી છે ' वन्ते ' ' नमस्यति ' પદના અર્થનુ સ્પષ્ટીકરણ કરતા તેઓ કહે છે કે પ્રસિદ્ધ ચૈત્ય વદન વિધિ મુજબ નમન કરવુ વદના અને ત્યારપછી પ્રણિધાન વગેરેના યોગથી નમસ્કાર કરવો નમન છે, વૃદ્ધોનો આ જાતનો સિદ્ધાન્ત છે સૂત્રમા જ્યારે પ્રણિપાત દડક માત્ર ચૈત્યવદન કહ્યુ છે ત્યારે એનાથી જ આ વાત સિદ્ધ થઇ જાય છે કે બીજા શ્રાવકોને પણ આ

आलोए पणाम करेइ २ त्ता, लोमहत्थयं परामुसइ २ त्ता, एवं जहा सूरियाभो जिणपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ ' त्ति । तेन मूलपाठस्य निश्चयस्तस्य नाभूदिति विज्ञायते ।

अतः परं च–' वामं जाणुं अंचेइ दाहिणं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेइ २ ' इति प्रतिमापूजकैः स्वीकृतो मूलपाठस्तत्र वर्तते, टीकाकारस्तु–' दाहिणं जाणुं धरणीतलंसि निहट्टु ' इति पाठं टीकायां विलिख्य निगदति–' निहट्टु ' निहत्य स्थापयित्वेत्यर्थः, ' णिवेसेइ ' इत्यत्र–' निहट्टु ' इति पाठभेदः कृतः । तेनाप्येतद् विदितं भवति–यस्य यादृशं मनस्यभिरुचितं स तादृशमिह मूलपाठं प्ररूपयति स्म इति ।

जिणघरं अणुपविसइ जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ, २ लोमहत्थयं परामुसइ, २ एवं जहा सूरियाभो जिनपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ " त्ति यह पाठ मिलता है । इसके बाद " वामं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेइ २ " ऐसा पाठ मिलता है–और यही पाठ प्रतिमा पूजको को समत है । परन्तु टीकाकार श्री अभयसूरि ने " दाहिणं जाणुं धरणीतलंसी निहट्टु ' ऐसा पाठ टीकामें रखकर ' निहट्टु ' इस पद की टीका " स्थापना करके " ऐसी की है । इस प्रकार " णिवेसेइ " की जगह ' निहट्टु ' ऐसा पाठ भेद किया गया है । इसी प्रकार प्रतिमा पूजको द्वारा स्वीकृत " तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि नमेइ " इस मूल पाठ में भी परिवर्तन " नमेइ " क्रिया पद में " निवेशयति " इस रूप से कर दिया है । इससे यह बात निश्चित होती है कि जिस के मन

पणामं करेइ, २ लोमहत्थयं परामुसइ, २ एवं जहा सूरियाभो जिनपडिमाओ अच्चेइ तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ) त्ति,

આ પાઠ મળે છે ત્યારપછી " वामं जाणुं धरणियलंसि णिवेसेइ २ " આ જાતનો પાઠ મળે છે અને એ જ પાઠ પ્રતિમા પૂજાના તરફદારીએને માટે સંમત રૂપ છે પણ ટીકાકારશ્રી અભયદેવસૂરિએ " दाहिणं जाणुं धरणीतलंसी निहट्टु " આ જાતનો પાઠ ટીકામાં કરીને " निहट्टु ", આ પદની ટીકા–સ્થાપના કરીને આ પ્રમાણે કરી છે આ રીતે " णिवेसेइ " ના સ્થાને " निहट्टु " આ જાતનો પા૦ ભેદ કરવામાં આવ્યો છે આ રીતે જ પ્રતિમા પૂજાના તરફદારીઓ વડે સ્વીકૃત (तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणीतलंसि नमेइ) આ મૂળપાઠમાં પણ " नमेइ " ક્રિયાપદમાં " निवेशयति " આ જાતનું પરિવર્તન કરી નાખ્યું છે આથી આ વાતની ખાત્રી થાય છે કે જેના મનમાં જેવો પાઠ ગમ્યો તેણે તે પ્રમાણે જ ફાવે તેમ પોતાની કલ્પનાથી પાઠમાં

नानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति अन्यथा सूर्याभदेवादिवक्तव्यताया बहूनां शस्त्रादिवस्तूनामर्चनं श्रूयते इति तदपि विधेयं स्यात्'।

अत्रेदं बोध्यम्-' न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहितं सूत्रे' इत्यादि वाक्यसन्दर्भेण टीकाकारेणाभयदेवसूरिणा द्रौपद्या वन्दनमेव कृतं न तु पूजनादिकमिति बोधयता तावानेव पाठः स्वीकृत इति। तस्माद् विधिरूपेण प्रतिमापूजनाय भगवतोऽर्हत आज्ञा न लभ्यते इति वादस्तावदास्ताम्, चरितानुवादरूपेणापि शास्त्रे भगवताऽर्हत्प्रतिमापूजनं क्वापि नोक्तमिति सिद्धम्। एवं चायमे-

है चरितानुवादरूप वाक्य में विधि और निषेध बोधकता संभवित नहीं होती है इसी ध्येय से " न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेध साधकानि भवन्ति " ऐसा माना जाता है नहीं तो फिर, सूर्याभदेव द्वारा जिस प्रकार बहुत शस्त्र आदि वस्तुओं का पूजन करना सुना जाता है उसी प्रकार प्रतिमा पूजकों के लिये भी इनका पूजन विधेय मान लेना चाहिये।

भावार्थ—" न च द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवंदनमभिहित सूत्रे " इत्यादि वाक्य के द्वारा टीकाकार अभयसूरि ने इतना ही पाठ स्वीकृत किया है कि द्रौपदी ने सिर्फ वंदना ही की है, प्रतिमापूजन नहीं इसलिये इससे यह बात सिद्ध हो जाती है जब चरितानुवाद रूप से भी शास्त्र में कहीं भी भगवान ने अर्हंत की प्रतिमा का पूजन नहीं कहा है। तब विधिरूप से प्रतिमा पूजन के लिये भगवान अर्हंत की आज्ञा है ऐसी मान्यता कोरी कल्पनामात्र ही है। इस प्रकार स्थानक-

કોઇ પણ સ્થાને કહી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાકયના વિધિ અને નિષેધ બોધકતા સંભવિત થતી નથી આ ધ્યેયથી (न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति) એમ માનવામાં આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણાં શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સંભળાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમાં માની લેવી જોઇએ

ભાવાર્થ—" न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवंदनमभिहित सूत्रे " વગેરે વાકય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વંદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહિ એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે જ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમાં કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કહ્યું નથી ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હંતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા ફક્ત કલ્પનામાત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સંપ્રદાયની આ માન્યતા

प्रामाण्यादन्यस्यापि श्रावकादेस्तावदत्र वदितिं मन्तव्य, चरितानुवादरूपत्वादस्य, इति । न चेत्यस्य मन्तव्यमित्यत्रान्वयः । द्रौपदी प्रणिपातदण्डकमात्र-दण्डवत्प्रणामात्ररूपं चैत्यवन्दन-प्रतिमावन्दनं कृतवतीत्यर्थं बुद्ध्वाऽन्योपि श्रावक एतत्सूत्रप्रमाणमाश्रित्य तावदेव तत् प्रणिपातदण्डकमात्रं वन्दनं कुर्यादिति न मन्तव्यम्, तत्र कारणमाह ' चरितानुवादरूपत्वादस्य ' इति । अस्य एतत्सूत्रस्य चरितानुवादरूपत्वात् ज्ञातप्रदर्शकतया यथावृत्तस्य वृत्तचरितस्यानुवादरूपत्वात्, न तु भगवता ' जय चरे जय चिट्ठ ' इत्यादिवत् कचिदाज्ञा प्रदत्ता ।

तस्मादस्य विधिनिषेधबोधकत्वं न संभवतीत्याह-' न च चरितानुवादवच

बात भी सिद्ध हो जाती है कि अन्य श्रावकों को भी इसी प्रकार वन्दन नमन करना चाहिये-सो इस प्रकार का कथन ठीक नहीं है। कारण कि यह चरितानुवाद रूप है।

भावार्थ-कोई अन्य श्रावक जन ऐसा समझकर कि सूत्रमे जब द्रौपदी ने दण्डकी तरह होकर चैत्यवदन किया है तो इसी सूत्रकी प्रमाणता लेकर हमें भी इसी तरहसे प्रणाम करना चाहिये सो इस प्रकार की मान्यता उनकी ठीक नहीं है कारण कि यह चरित का ही अनुवादक है। चरितका अनुवादक वाक्य विधेयरूप से मान्य नहीं होता है। यह सूत्र चरित का अनुवादक रूप है-इसका यह भाव है कि यह वाक्य ज्ञात अर्थ का प्रदर्शक होने से पहिले जो जो बातें २ जिस २ रूपमें हो चुकी हैं उन सब का अनुवादक रूप है। " जय चरे जय चिट्ठे " इत्यदि सूत्र की तरह यह विधि वाक्य नहीं है। इसीलिये भगवान ने प्रतिमा के पूजन और वदना, नमन करने आदि की आज्ञा कहीं भी सूत्र में नहीं दी

પ્રમાણે જ વદન નમન કરવા જોઈએ તો આ જાતનુ કથન યોગ્ય નથી, કેમકે આ ચરિતાનુવાદ રૂપ છે

ભાવાર્થ—ગમે તે શ્રાવક આમ સમજીને કે સૂત્રમા જ્યારે દ્રૌપદીએ દડાકારે થઈને ચૈત્ય વદન કર્યું છે તો આ સૂત્રને જ પ્રમાણ સ્વરૂપ માનીને અમારે પણ આ પ્રમાણે જ પ્રણામ કરવા જોઈએ તો તેમની આ વાત પણ ઠીક કહી શકાય તેમ નથી, કેમકે આ ચરિતનો જ અનુવાદક છે ચરિતનુ અનુવાદક વાક્ય વિધેય રૂપમા માન્ય હોતુ નથી આ સૂત્ર ચરિતનો અનુવાદક રૂપ છે આનો ભાવ એ છે કે આ વાક્ય જ્ઞાત અર્થનો પ્રદર્શક હોવાથી જે જે વાતો જે રૂપમા થઈ ચૂકી છે તે બધાનુ અનુવાદક રૂપ છે- ' જય ચરે જય ચિટ્ઠે " ઇત્યાદિ સૂત્રની જેમ આ વિધિવાક્ય [illegible]

नानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति अन्यथा सूर्याभदेवादिवक्तव्यताया बहूना शस्त्रादिवस्तूनामर्चन श्रूयते इति तदपि विधेय स्यात् ' ।

अत्रेद बोध्यम्–' न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे' इत्यादि वाक्यसन्दर्भेण टीकाकारेणाभयदेवसूरिणा द्रौपद्या वन्दनमेव कृत न तु पूजनादिकमिति बोधयता तावानेव पाठः स्वीकृत इति । तस्माद् विधिरूपेण प्रतिमापूजनाय भगवतोऽर्हत आज्ञा न लभ्यते इति वादस्तावदास्ताम् , चरितानुवादरूपेणापि शास्त्रे भगवताऽर्हत्प्रतिमापूजन क्वापि नोक्तमिति सिद्धम् । एव चायमे-

है चरितानुवादरूप वाक्य में विधि और निषेध बोधकता सभवित नहीं होती है इसी ध्येय से " न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति " ऐसा माना जाता है नहीं तो फिर, सूर्याभदेव द्वारा जिस प्रकार बहुत शस्त्र आदि वस्तुओं का पूजन करना सुना जाता है उसी प्रकार प्रतिमा पूजकों के लिये भी इनका पूजन विधेय मान लेना चाहिये ।

भावार्थ—" न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवदनमभिहितं सूत्रे " इत्यादि वाक्य के द्वारा टीकाकार अभयसूरि ने इतना ही पाठ स्वीकृत किया है कि द्रौपदी ने सिर्फ वदना ही की है, पतिमापूजन नहीं इसलिये इससे यह बात सिद्ध हो जाती है जब चरितानुवाद रूप से भी शास्त्र में कही भी भगवान ने अर्हन्त की प्रतिमा का पूजन नहीं कहा है । तब विधिरूप से प्रतिमा पूजन के लिये भगवान अर्हंत की आज्ञा है ऐसी मान्यता कोरी कल्पनामात्र ही है । इस प्रकार स्थानक-

કોઈ પણ સ્થાને કહી નથી ચરિતાનુવાદ રૂપ વાકયના વિધિ અને નિષેધ બોધ તા સભવિત થતી નથી આ ધ્યેયથી (न च चरितानुवादवचनानि विधिनिषेधसाधकानि भवन्ति) એમ માનવામા આવે છે નહિતર પછી સૂર્યાભદેવ વડે જેમ ઘણા શસ્ત્રો વગેરે વસ્તુઓની પૂજા કરેલી વાત સભળાય છે તેમજ પ્રતિમા પૂજકોના માટે પણ એમની પૂજા વિધેય રૂપમા માની લેવી જોઇએ

ભાવાર્થ—" न च द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे " વગેરે વાકય દ્વારા ટીકાકાર અભયદેવસૂરિએ આટલા પાઠનો જ સ્વીકાર કર્યો છે કે દ્રૌપદીએ ફક્ત વદના જ કરી છે પ્રતિમા પૂજા નહિ એથી આ વાત સ્પષ્ટ રીતે સિદ્ધ થઈ જાય છે કે જ્યારે ચરિતાનુવાદ રૂપથી પણ શાસ્ત્રમા કોઈ પણ સ્થાને ભગવાને અર્હંતની પ્રતિમાના પૂજન વિષે કહ્યુ નથી ત્યારે વિધિ રૂપથી પ્રતિમા પૂજન માટે ભગવાન અર્હંતની આજ્ઞા છે એવી માન્યતા ફક્ત કલ્પના માત્ર જ છે આ પ્રમાણે સ્થાનકવાસી સપ્રદાયની આ માન્યતા

तद्रूपं स्थानकवासिना सिद्धान्तः शास्त्रानुकूलः सत्य इति निर्णीयताम्। अर्हद्वन्दनमपि द्रौपद्या न कृतमित्यग्रे सप्रमाणं निरूपयिष्यामः।

किं च-प्रतिमापूजकानां प्रमाणभूते महानिशीथसूत्रेऽपि 'प्रतिमापूजायाः सावद्यतया तदर्थं जिनालयविधानं सावद्यं भवतीति मत्वा द्रव्यलिङ्गिभिः पृष्टेन कुवलयप्रभनाम्नाऽनगारेण निगदितं सावद्यमिदं नाहं वाङ्मात्रेणापि कुर्वे" इति। तदेवमनेन भणतासता तीर्थङ्करनामगोत्रं समर्जितम्। एकभवावशेषीकृतश्च भवोदधिः। ततस्तैः सर्वैरेकमतं कृत्वा तस्य सावद्याचार्य इति नाम दत्तं प्रसिद्धिनीतं च। इति प्रतिबोधितम्।

वासी संप्रदाय की यह मान्यता निर्दोष एवं शास्त्रानुकूल और सत्य है कि अर्हंत की प्रतिमा बनाकर पूजना शास्त्र जिनमार्ग से विपरीत मार्ग है। अर्हंत की प्रतिमा की वन्दना भी द्रौपदी ने नहीं की है इस बात को भी हम आगे प्रमाण देकर पुष्ट करेंगे।

किञ्च—प्रतिमापूजकों द्वारा प्रमाणरूप से स्वीकृत महानिशीथ सूत्र में भी यही समझाया गया है कि प्रतिमापूजन स्वयं एक सावद्यकर्म है, उसके निमित्त जनालय आदि बनवाना भी सावद्यकर्म है। ऐसा समझकर-कुवलयप्रभनामक आचार्य ने द्रव्य लिंगियों द्वारा पूछे जाने पर यही उत्तर दिया है कि ये सब सावद्यकर्म हैं, मैं अपने वचनों से भी इस विषय का जरा भी मंडन नहीं कर सकता हूं" इस प्रकार कहने वाले उन कुवलयप्रभनामक आचार्यने तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म उपार्जन करके एकभवावतारी बने। सावद्यकर्म निषेध करने वाले होने से

નિર્દોષ તેમજ શાસ્ત્રાનુકૂલ અને સત્ય છે કે અર્હંતની પ્રતિમા બનાવીને પૂજવી શાસ્ત્રવિહિત માર્ગથી ઉલટો માર્ગ છે અર્હંતની પ્રતિમાની વંદના પણ દ્રૌપદીએ કરી નથી, આ વાતને પણ અમે આગળ સપ્રમાણ સિદ્ધ કરવા પ્રયત્ન કરીશું

અને બીજું પણ કે-પ્રતિમા પૂજકો વડે પ્રમાણ રૂપે સ્વીકૃત મહાનિશીથ સૂત્રમાં પણ એ જ વાત સમજાવવામાં આવી છે કે પ્રતિમા પૂજન જાતે એક સાવદ્ય કર્મ છે તેના નિમિત્તે જીનાલય વગેરે બનાવવા તે પણ સાવદ્ય કર્મ છે એમ જાણીને જ કુવલયપ્રભ નામના આચાર્યે દ્રવ્યલિંગિઓ વડે પૂછાએલા પ્રશ્નના ઉત્તરમાં આ પ્રમાણે જ કહ્યું છે કે આ બધું સાવદ્યકર્મ છે હું મારા વચનોથી પણ આ વિષયનું જરાય પણ મંડન કરી શકું તેમ નથી આ રીતે કહેનાર તે કુવલયપ્રભ નામક આચાર્યે તીર્થંકર નામ ગોત્રકર્મ ઉપાર્જન કરીને એક ભવાવતારી બન્યા સાવદ્યકર્મ નિષેધ કરનાર હોવાથી તે ... એ

भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कथयति–' अस्या ऋषभादिचतुर्विंशतिकायाः प्राक् अतीतकालेन याऽतीता चतुर्विंशतिका, तस्या मत्सदृश सप्तहस्ततनुर्धर्मश्रीनामा चरमतीर्थङ्करो बभूव तस्मिंश्च तीर्थङ्करे सप्ताश्चर्याणि अभूवन्। असयतपूजाया प्रवृत्तायामनेके श्राद्धेभ्यो गृहीतद्रव्येण स्वस्वकारितचैत्यनिवासिनोऽभूवन्, तत्रैको मरकतच्छविः कुवलयप्रभनामाऽनगारो महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यगणपरिवृत' समागात, तैर्वन्दित्वोक्तम्, तदेव तत्प्रकरण प्रदर्श्यते, तथा हि—महानिशीथसूत्रे पञ्चमाध्ययने—

जहा ण भयव ! जइ तुममिहाइ एगवासारत्तिय चाउम्मासिय पउंजियताण-मिच्छाण अणेगे चेइयालया भवति नूण तज्झाणणत्तीए ता कीरउ अणुग्गहमम्हाण

उन चैत्यवासियो ने मिलकर उनका नाम ' सावद्याचार्य ' रख दिया, और प्रसिद्ध भी कर दिया। जैसे–भगवान् श्री वर्धमानस्वामी गौतम प्रति कहते हैं–इस ऋषभादि चौवीसी के पहले भूतकालमें जो चोवीसी होगई है उस चौवीसीमे मेरे जैसा सात हाथप्रमाण शरीर वाला धर्म श्री नामका अतिम तीर्थंकर हो गया है, उस तीर्थंकर के समयमे सात आश्चर्य हुए थे, उनमे " असयतपूजा " नामका एक आश्चर्य था। उस असयतपूजाकी प्रवृत्ति होनेपर बहुतसे साधु श्रावको के पैसो से अपने अपने बनवाये हुवे चैत्योमें निवास करते थे अर्थात् चैत्यवासी हो गये थे, वहा पर एक श्याम कांतिवाले कुवलयप्रभ नाम के मुनि महातपस्वी उग्रविहारी शिष्यपरिवार सहित पधारे थे, उनको उन चैत्यवासियो ने वदना कर के जो कहा सो इस प्रकार हे। जिस पाठ का यह कथानक है वह पाठ इस प्रकार है–

તેમનુ નામ " સાવદ્યાચાર્ય " એ પ્રમાણે રાખ્યુ અને પ્રસિદ્ધ પણ કર્યું જેમકે ભગવાન્ શ્રી વર્ધમાનસ્વામી ગૌતમને કહે છે કે–આ ઋષભાદિ ચૌવીસીના પહેલા ભૂતકાળમા જે ચોવીસી થઈ ગઈ છે તે ચોવીસીમા મારા જેવા સાત હાથ પ્રમાણ શરીરવાળા ધર્મશ્રી નામના છેલ્લા તીર્થંકર થઈ ગયા છે તે તીર્થંકરના સમયમા સાત આશ્ચર્યો થયા હતા, તેમા " અસયતપૂજા " નામનુ એક આશ્ચર્ય હતુ તે અસયત પૂજાની પ્રવૃત્તિ થઈ ત્યારે અનેક સાધુ–શ્રાવકોના પૈસાથી પોતપોતાના માટે બનાવરાવેલા ચૈત્યોમા વાસ કરતા હતા અર્થાત્ ચૈત્યવાસી થઈ ગયા હતા ત્યા એક શ્યામ વર્ણવાળા કુવલયપ્રભ નામના મુનિમહારાજ કે જેઓ મહા તપસ્વી, ઉગ્ર વિહારી હતા, તેઓ પોતાના શિષ્ય પરિવાર સહિત ત્યા પધાર્યા હતા તેમને તે ચૈત્યવાસીઓએ વદના કરીને જે કહ્યુ તે આ પ્રમાણે છે—

इहेव चाउम्मासिय। ताहे भणिय तेण महाणुभागेण – गोयमा! जहा भो भो पियवए! जइ वि जिणालए तहा वि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा। एवं च समयसारपर तत्त जहट्ठिय अविपरीत णीसक भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंगीण साहुवेसधारीण मज्झे गोयमा! आसकलिय तित्थयर नामकम्मगोय तेणं कुवलयप्पभेण, एगभवावसेसीकओ भवोयही॥ इति।

छाया–यथा खलु भगवन्! यदि त्वमिहापि एकवर्षारात्रिक चातुर्मासिक मयो स्वणामिच्छया अनेके चैत्यालया भवन्ति नून। तद्ध्यानाज्ञप्त्या तस्मात् करोतु अनुग्रहमस्माकम् इहैव चातुर्मासिकम्। तदा भणित तेन महानुभागेन – गौतम! यथा भो भो प्रियवदा! यद्यपि जिनालय, तथापि सावद्यमिद नाह वाङ्मात्रे णापि आचरामि। एवं च समयसारपर तत्त्व यथास्थितम् अविपरीत निःशङ्क भणता तेषा मिथ्यादृष्टिलिङ्गिना साधुवेषधारिणा मध्ये गौतम! आसकलित तीर्थकरनामकर्मगोत्र तेन कुवलयप्रभेण एकभवावशेषीकृतो भवोदधिः॥ इति

"जहा ण भयव? जइ तुममिहाइ एकवासारत्तिय चाउम्मासिय पउजियताणमिच्छाए अणेगे चेइयालया भवति णूण तज्झाण पत्तीए, ता कीरउ अणुग्गहमम्हाण इहेव चाउम्मासिय। ताहे भणिय तेण महाणुभागेण गोयमा! जहा भो भो पियवए जइवि जिणालए तहा वि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा। एव च समयसारपर तत्त जहट्ठिय अविपरीत णीसक भणमाणेण तेसिं मिच्छदिट्ठिलिंगीण साहुवेसधारीण मज्झे गोयमा! आसकलिय तित्थयरनाम गोत्त तेण कुवलयप्पभेण एगभवावसेसीकओ भवोयही। इति (महा निशीथ पञ्चम अध्ययन) इस सूत्रका भावार्थ इस प्रकार है–

हे भगवन्! आप यहा एक वर्षारात्रिक चारमहिने ठहरे

"जहा ण भयव! जइ तुममिहाइ एकवासारत्तिय चाउम्मासिय पउजियताण मिच्छाए, अणेगे चेइयालया भवति नूण तज्झाणत्तिए ता कीरउ अणुग्गहम्माण इहेव चाउम्मासिय। ताहे भणिय तेण महाणुभागेण गोयमा। जहा भो भो पियवए जइवि जिणालए तहावि सावज्जमिण णाह वायामित्तेण पि आयरिज्जा। एव च समयसारपर तत्त जहट्ठिय अविपरीत णीसक भाणमाणेण तेसि मिच्छदिट्ठिलिंगीण साहुवेसधारीण मज्झे गोयमा? आसकलिय तित्थयरनामगोत्त तेण कुवलयप्पभेण एगभवावसेसीकओ भवोयही। इति (महानिशीथ पञ्चम अध्ययन) આ સૂત્રનો ભાવાર્થ આ પ્રમાણે છે!

हे भगवन् ! यदि यथा खलु त्वम् एकवर्षारात्रिकं चातुर्मासिकं तिष्ठसि प्रयोक्तृणाम्=प्रवर्तकानाम् इच्छया-आज्ञया अनेके चैत्यालया नूनं भवन्ति=भविष्यन्ति, तत् तस्माद् निवासार्थमाज्ञामुपादाय इहैव चातुर्मासिकं कुरु तावदस्माकमनुग्रहं कुरु भवदीयाज्ञया बहवश्चैत्यालया भविष्यन्ति। ततश्चास्माकमुपकारः क्रियतामिति भावः । तदा तेषां सावद्यपूजायां प्रवृत्तानां द्रव्यलिङ्गिनां वचनं श्रुत्वा तेन महानुभावेन कुवलयप्रभनाम्नाऽनगारेण भणितम्=उक्तम् , यथा-भो भो प्रियंवदा ! भो देवानुप्रिया ! यद्यपि जिनालयं, तथापि सावद्यमिदं जिनभवने कृते

-अर्थात् यहां पर चौमासा व्यतीत करें। प्रवर्तकों की आज्ञा से यहां पर अनेक चैत्यालय बन जावेंगे। इस लिये आप यहीं पर चौमासा व्यतीत करने का अनुग्रह करें। हमारे ऊपर आपका बडा ही अनुग्रह होगा। आपके उपदेश से निश्चय समझिये अनेक चैत्यालयों का निर्माण हो जायगा। इस प्रकार से उन द्रव्यलिंगियो से प्रार्थित होने पर महानुभाव कुवलयप्रभ आचार्य ने कहा कि हे देवानुप्रिय ! यद्यपि तुम जिनालय के विषय मे कहते हो-परन्तु-मैं इस कार्य को करवाने में श्रेय नहीं देखता हूं-कारण कि यह सावद्यकार्य है जिन भवन बनवाना और उसके बनवाने की प्रेरणा करना इन दोनों प्रकार की प्रवृत्तियों में पृथिवीकाय आदि छह प्रकारके जीवों की विराधना होती है इसी प्रकार से पूजन करने में भी षट्काय के जीव निकायों का आरंभ अवश्यभावी है। इसलिये अनेक प्रकार के षट्काय के जीवों के विघात का हेतु होने से पूजन के निमित्त भी जिन भवन का बनवाना सावद्यतर कार्य है ऐसे सावद्यतर कार्य का मैं किसी भी प्रकारसे उपदेश नहीं दूंगा। मैं कभी भीऐसा उपदेश नहीं दूंगा कि

तमे अहीं એકવર્ષારાત્રિક-ચાર માસ-રોકાઓ-એટલે કે અહીં તમે ચોમાસુ પુરૂ કરો પ્રવર્તકોની આજ્ઞાથી અહીં ઘણા ચૈત્યાલયો બની જશે એથી તમે અહીં જ ચોમાસુ પુરૂ કરવાની કૃપા કરો, અમારા ઉપર તમારો ભારે અનુગ્રહ થશે તમારા ઉપદેશથી અમને ચોક્કસ ખાત્રી છે કે ઘણા ચૈત્યાલયોનુ નિર્માણ થઈ જશે આ રીતે દ્રવ્ય લિંગિઓની પ્રાર્થના સાંભળીને મહાનુભાવ કુવલયપ્રભ આચાર્યે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જો કે તમે જીનાલયના વિષે કહો છો, પણ મને આ કામ કરાવવામા શ્રેય લાગતુ નથી, કેમકે આ સાવદ્યકર્મ છે જીન ભવન બનાવવુ અને તેને બનાવવાની પ્રેરણા આપવી આ બને જાતની પ્રવૃત્તિઓમા પૃથ્વિકાય વગેરે છ જાતના જીવોની વિરાધના થાય છે આ રીતે પૂજા કરવામા પણ ષટ્કાયના જીવનિકાયોનો આરંભ અવશ્યભાવી છે એટલા માટે ઘણી જાતના ષટ્કાયના જીવોના વિઘાતના માટે હેતુરૂપ હોવા બદલ પૂજાના માટે પણ જીનભવન બનાવવુ સાવદ્યતર કાર્ય છે એવા સાવદ્યતર કાર્ય

कारिते च पृथिवीकायादिषड्जीवनिकायविराधना, नैव जिनपूजायामपि तस्मात् पूजार्थं रत्नादिजिनभवननिधानं सावद्यतरं, षड्जीवनिकायोपघातहेतुत्वात् नाहं वाङ्मात्रेणाऽपि उपदेशदानरूपेण वाग्योगमात्रेणापि आचरामि=तं विनाश्य एतमुपदेशं न करिष्यामीत्यर्थः। एवं च=अनेन प्रकारेण, समयसारपरं ज्ञातसिद्धान्तसाराऽशेषश्रेष्ठ तत्त्वनिरूपणनियोगं प्राणातिपाताद् वर्जनीय इत्यादिरूप यथास्थित यथावस्थितस्वरूप प्रमाणभूतं, अविपरीत=विपर्ययज्ञानाविषयं, निःशङ्कं=शङ्कावर्जितं वचनं भणता=कथयता, तेषां मिथ्यादृष्टिलिङ्गिनां मिथ्यादृष्टेः षड्जीवनिकायजन्तुजीवोपघातकारिणांसाधुवेषधारिणां=मध्ये हे गौतम! आसङ्कलितम्=सम्यक् सङ्गृहीतम् उपार्जितमित्यर्थः। किमुपार्जितमित्याह-तीर्थंकरनामगोत्रं तेन कुवलयप्रभेण, एकभवावशेषी कृतो भवोदधिः। सुगममेतत्।

जिस में जिनालय बनवाने का विधान हो। इस प्रकार प्रवचन सिद्धान्त की सारभूत वस्तुस्थिति को यथार्थ रूप से बिना किसी संकोच के प्रकट करने वाले उन मुनिराज ने उन साधुवेष धारी द्रव्यलिंगियों के बीच कि जो मिथ्यादृष्टियों की तरह जीवों की हिंसा करने में प्रवृत्त थे उनके सामने इस प्रकार शुद्ध प्ररूपणा करनेसे हे गौतम! तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बंध किया-और संसार भी उनका एक भव मात्र बाकी रह गया इस उद्धरण से यही समझना चाहिये-कि जब प्रतिमा पूजन के लिये भी मंदिर बनवाना सावद्य कर्म है और इस सावद्यकार्य का उपदेश देना भी साधु के लिये वर्जनीय है-इसी अभिप्राय से कुवलयप्रभ सूरि ने इस कार्य का निषेध किया-इस निषेध से उन्हें तीर्थंकर नाम-गोत्र कर्म का बंध हुआ और संसार भी उनका एकभव मात्र बाकी बचा-तो फिर सर्व प्रकार से सावद्य कर्मों का परित्याग

માટે હું કોઈ પણ રીતે ઉપદેશ આપવા તૈયાર નથી, હું આ જાતનો ઉપદેશ કોઈપણ વખતે આપવા તૈયાર નથી કે જેમાં જીનાલય બનાવવાનું વિધાન સરખું હોય આ રીતે પ્રવચન સિદ્ધાંતની સારભૂત વસ્તુસ્થિતિને સાચા રૂપમાં વગર કોઈ પણ જાતના સંકોચે-પ્રગટ કરનારા તે મુનિરાજે તે સાધુ વેષધારી દ્રવ્ય લિંગિઓની સામે કે જેઓ મિથ્યાદષ્ટિવાળાઓની જેમ જીવોની હિંસા કરવામાં પ્રવૃત્ત હતા-શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરી આ રીતે શુદ્ધ પ્રરૂપણા કરવાથી હે ગૌતમ! તીર્થંકર નામ-ગોત્રકર્મનો બંધ કર્યો અને સંસાર પણ એક ભવ જેટલો જ શેષ રહ્યો આ ઉદાહરણથી આપણે એજ વાત સમજવી જોઈએ કે જ્યારે પ્રતિમા પૂજન માટે પણ મંદિર બનાવવું સાવદ્યકર્મ છે અને આ સાવદ્યકાર્યનો ઉપદેશ કરવો પણ સાધુના માટે વર્જ્ય છે આ હેતુથી જ કુવલયપ્રભસૂરીએ આ કાર્યનો નિષેધ કર્યો છે આ નિષેધથી તે કર

अनेद बोध्यम्-यत् प्रतिमापूजार्थं क्रियमाणस्य जिनालयस्य याचोपदेशकरण सावद्यमिति जानता तत्परिवर्जने कृते तीर्थकर नामगोत्र कर्म समुपार्जित, तत्र सर्वथा सावद्यमार्गं परिवर्जयता सर्वप्राणिरक्षणार्थमहिंसाधर्मं सर्वतः प्रचारयता प्रवचन-सिद्धान्तसार विजानता संयममार्गे प्रवृत्तिमता सम्यक्त्वशुद्धिमता प्रतिमापूजामकुर्वता तन्निषेधयता किं नामात्मनः कल्याणकर कार्यमवशिष्टम्, इति।

अथ विवाहसमये द्रौपदी सम्यक्त्वती नासीदिति वर्ण्यते-जैनागमाना विद्वास सम्यगिद वदन्ति-सनिदानस्य जीवस्य निदानफलप्राप्तिर्यावन्न भवति, तावदसौ सम्यक्त्वरहितो जैनधर्माद् दूर एवावतिष्ठते।

करने वाले, समस्त प्राणियों की रक्षा के निमित्त अहिंसाधर्म का प्रचार करने वाले, प्रवचन सिद्धान्त के सार को जानने वाले, संयममार्ग मे प्रवृत्ति वाले, सम्यक्त्व की शुद्धि से विशिष्ट और प्रतिमा की पूजा नही करने वाले एव उसका निषेध करने वाले ऐसे संयमियों का अब और कौनसा ऐसा कार्य बाकी रहा है जो उनकी आत्मा के लिये कल्याण का साधन न हो।

अब यहा इस बात का वर्णन किया जाता है कि विवाह के समय द्रौपदी सम्यक्त्ववाली नही थी।

जैन आगमों का भलीभाँति परिशीलन करने वाले विद्वान् इस बातको अच्छी तरह जानते है कि जिस जीव ने जो निदान किया है- जबतक उसके फल की प्राप्ति उस जीव को नहीं हो जाती-तबतक वह जीव सम्यक्त्व से वञ्चित रहकर जिनधर्म से दूर ही रहता है।

નામ-ગોત્ર કર્મનો બધ થયો અને સસાર પણ તેમને માટે એકભવ જેટલો જ શેષ રહ્યો હતો તો પછી સર્વ રીતે સાવદ્યકર્મોનો પરિત્યાગ કરનારા બધા પ્રાણીઓની રક્ષાના નિમિત્તે અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા પ્રવચન સિદ્ધાતના સારને જાણનારા, સયમ માર્ગમા પ્રવૃત્તિ કરનારા, સમ્યક્ત્વની શુદ્ધિથી વિશિષ્ટ અને પ્રતિમા પૂજા નહિ કરનારા અને તેને નિષેધ કરનારા એવા સયમીઓનુ એવુ કયુ કામ શેષ રહ્યુ છે કે જે તેમના આત્માના કલ્યાણનુ સાધનરૂપ ન હોય?

હવે અહીં આ વાતનુ વર્ણન કરવામા આવે છે કે લગ્નના વખતે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વવાળી ન હતી

જૈન આગમોનુ સારી રીતે પરિશીલન કરનારા વિદ્વાનો આ વાતને સારી પેઠે જાણે છે કે જે જીવે જે નિદાન કર્યું છે-જ્યા સુધી તેના ફળની પ્રાપ્તિ તે જીવને થઇ જતી નથી ત્યા સુધી તે જીવ સમ્યક્ત્વથી વચિત રહીને જીન ધર્મથી દૂર રહે છે

" पुव्वकयनियाणेण चोइज्जमाणी२ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ, करित्ता, एवं वयासी-एए णं मए पंच पंडवा वरिया। ' इति सूत्रपाठ प्रामाण्याद् विवाहसमये पूर्वकृतनिदानाधीनतया सम्यक्त्वराहित्य द्रौपद्या आसीत् अतस्तस्यास्तदानीं श्राविकात्वं न सिध्यति युगपत् पञ्चानां पतीनां वरणेन तस्याः पूर्वसंस्कारोदयवशाद् विपुलसुखभोगलालसाऽपि स्वाभाविकी, अतः सा कौमारे वयसि श्राविका नासीदिति युक्तिसिद्धस्यार्थस्यापलापः केन शक्यते कर्तुम्।

द्रौपदी कस्य पूजनं कृतवतीति जिज्ञासाया निर्णीयते—

" पुव्वकयनियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुमदामेण आवेढिय परिवेढिय करेइ। करित्ता एवं वयासी-एएणं मए पंच पंडवा वरिया " इस प्रकार के इस प्रमाणिक सूत्र पाठ से यह स्पष्टरीति से विदित हो जाता है कि विवाह के समय पूर्वकृत निदान के अधीन होने से द्रौपदी सम्यक्त्व रहित थी इसी लिये उस समय उस में श्राविकापना भी सिद्ध नही होता है। तथा एक ही साथ पांच पांडवों को पतिरूप से वरण करने से उसके पूर्व संस्कार के उदय से विपुल सुख भोगने की लालसा भी स्वभाविकी ज्ञात होती है इसलिये वह कुमार अवस्था में श्राविका नहीं थी इस युक्ति सिद्ध अर्थ का अपलाप कौन कर सकता है।

द्रौपदी ने किस की पूजा की इस प्रकार की जिज्ञासा होने पर

" पुव्वकयनियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, ते पंच पंडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुमदामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ। करित्ता एवं वयासी-एएणं मए पंच पंडवा वरिया "

આ જાતના આ પ્રામાણિક સૂત્રપાઠથી આ સ્પષ્ટ રૂપમાં માલુમ થઈ જાય છે કે લગ્નના વખતે પૂર્વકૃત નિદાનને સ્વાધીન હોવાને કારણે દ્રૌપદી સમ્યક્ત્વ રહિત હતી એટલા માટે તે સમયે તેમાં શ્રાવિકાપણું સિદ્ધ થઈ શકે તેમ નથી તેમજ એકી સાથે પાંચે પાંડવોને પતિરૂપમાં વરણ કરવાથી તેના પૂર્વ સંસ્કારોના ઉદયથી વિપુલ સુખ ભોગવવાની ઇચ્છા પણ સ્વાભાવિકી માલુમ થાય છે એથી તે કુમાર અવસ્થામાં શ્રાવિકા હતી નહિ આ યુક્તિ અર્થનો પરિહાર કોણ કરી શકે તેમ છે

દ્રૌપદીએ કોની પૂજા કરી ? આ જાતની જીજ્ઞાસાને સામે ટીકા-

अखण्डसौभाग्यप्रचुरभोगकामनया कामदेवस्यैव पूजन तदानीमुपपद्यते। कामपूजन विवाहोत्सवे निस्तरतो भवतीति लोके प्रसिद्धमस्तीति प्रतिमापूजकोऽपि श्री वर्धमानसूरिः प्रोक्तवान्। स्पष्ट चैतत् तद्विरचिते आचारदिनकरे द्वितीयविभागे--" परसमये गणपतिकन्दर्पस्थापनम्। गणपतिकन्दर्पस्थापन सुगम लोकप्रसिद्धम्। " इति।

टीकाकार निर्णय करते है-

अखड सौभाग्य एव प्रचुर भोग की इच्छा से कामदेव का ही पूजन उस समय द्रौपदी ने किया है-यही बात सगत बैठती है। लोक मे भी यही व्यवहार देखा जाता है कि विवाह के समय अच्छी तरह गाजे बाजे के साथ काम देवका पूजन लोग किया करते हैं। इस बात को वर्धमान सूरि भी जो प्रतिमापूजन के पक्षपाती हैं स्वीकार करते हैं और ऐसा ही कहते हैं। इसी बात का स्पष्टीकरण उन्हों ने स्वनिर्मित आचारदिनकर के द्वितीय विभाग मे किया है-वे लिखते हैं कि-" परसमये गणपतिकदर्पस्थापनम्। गणपतिकदर्पस्थापन सुगम लोकप्रसिद्धम् " इति।

लौकिक शास्त्रमें गणपति एव कदर्प (कामदेव) की स्थापना होती है अतः गणपति और कन्दर्पका स्थापन करना सुगम और लोकप्रसिद्ध है।

કાર નિર્ણય કરતા કહે છે કે—

અખંડ સૌભાગ્ય તેમજ પ્રચુર ભોગની ઇચ્છાથી જ તે સમયે દ્રૌપદીએ કામદેવનું જ પૂજન કર્યું છે, આ વાત જ યોગ્ય લાગે છે લોકમાં પણ આ જાતનો જ વહેવાર જોવામાં આવે છે કે લગ્નના વખતે વાજાઓની સાથે સારી રીતે કામદેવનું પૂજન લોકો કરતા રહે છે આ વાતને વર્ધમાનસૂરિ પણ કે જેઓ પ્રતિમા પૂજનના તરફદાર છે-સ્વીકાર કરે છે અને આ પ્રમાણે જ કહે છે આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ તેમણે સ્વનિર્મિત આચાર દિનકરના બીજા વિભાગમાં કર્યું છે તેઓ લખે છે કે—

" परसमये गणपतिकदर्पस्थापनम्। गणपतिकदर्पस्थापन सुगम लोकप्रसिद्धम् " इति।

લૌકિક શાસ્ત્રમાં ગણપતિ અને કદર્પ (કામદેવ) ની સ્થાપના થાય છે તેથી ગણપતિ કદર્પની સ્થાપના કરવી તેજ સુગમ અને લોકપ્રસિદ્ધ છે

"जिणपडिमाण अच्चण करेइ" अत्र जिनशब्दः कामदेवपरः। जिनशब्दस्य बहवोऽर्थाः कोशादौ प्रसिद्धाः सन्ति। यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव, जिनः सामान्यकेवली।
कन्दर्पोऽपि जिनश्चैव, जिनो नारायणो हरिः ॥ इति (हैमी नाममाला)

विजयगच्छीयः श्रीगुणसागरसूरिरपि ढाल्सागरनामके काव्ये षष्ठखण्डे द्रौपद्याः पूज्यदेवं निर्णीतवान्। उक्तं च तेन—

करि पूजा कामदेवनी भाखे द्रुपदी नार।
देव दया करी मुझने भलो देजो भरतार ॥ १ ॥

अर्हन् सकलकर्मकषायमोहपरीषहान् जयतीति जिन उच्यते। सामान्य

"जिनपडिमाण अच्चण करेइ" इस सूत्र में जिन शब्द जिनेन्द्र भगवान का वाचक नहीं है, किन्तु कामदेव का वाचक है क्यों कि जिन शब्द के अनेक अर्थ कोषादिक ग्रन्थों में प्रसिद्ध हैं—यथा—

अर्हन्नपि जिनश्चैव जिनः सामान्यकेवली।
कदर्पोऽपि जिनश्चैव जिनो नारायणो हरिः ॥

इति (हैमीय नाममाला

विजय गच्छीय श्री गुणसागर सूरि ने भी "ढालसागर" नाम के काव्य में छठवें खंड में द्रौपदी के आराध्य देव का निर्णय किया है। उन्होंने लिखा है—

करि पूजा कामदेव नी भाखे द्रुपदी नार।
देव! दया करी मुझने भलो देजो भरतार ॥१॥

इस सूत्र में अर्हन्त भगवान को 'जिन' इसलिये कहा गया है

"जिनपडिमाण अच्चण करेइ"

આ સૂત્રમાં જીન શબ્દ જીનેન્દ્ર ભગવાનનો વાચક નથી પણ કામદેવનો વાચક છે કેમકે જીન શબ્દોના ઘણા અર્થો કોષ વગેરે ગ્રન્થોમાં પ્રસિદ્ધ છે જેમકે—

अर्हन्नपि जिनश्चैव जिन सामान्यकेवली।
कदर्पोऽपि जिनश्चैव जिनो नारायणो हरी ॥ इति (हैमीय नाममाला)

વિજયગચ્છીય શ્રી ગુણસાગરસૂરિએ પણ 'ઢાલસાગર" નામના કાવ્યના છઠ્ઠા ખંડમાં દ્રૌપદીના આરાધ્યદેવનો નિર્ણય કરતાં તેમણે કહ્યું છે કે—

करि पूजा कामदेवनी भाखे द्रुपदिनार।
देव! दया करी मुझने भलो देजो भरतार ॥ १ ॥

આ સૂત્રમાં અર્હંત ભગવાનને 'જીન' એટલા માટે કે તેમણે

केवली घनघातककर्मचतुष्टय जयतीति जिन उच्यते । विष्णुः स्वभुजबलेन खण्डत्रय जयतीति जिन उच्यते । जिनशब्दस्य कामदेवोऽर्थश्चापि भगतः, यत' ससारिणा कामदेववशवर्तित्वेन लोकजगत्सारित्वाज्जिनत्व कामस्योपपद्यते । रूपरहितस्यापि सिद्धस्य प्रतिमा पूजार्थेन शास्त्रानुक्तामपि प्रतिमापूजकाः प्रकल्पयन्ति, तद्वदनङ्गस्यापि कामस्य लोकप्रसिद्धमसिद्ध तद्ध्यानमनुसृत्य प्रतिमा प्रकल्प्यत इति

कि उन्हों ने समस्त कषाय, कर्म, मोह और परीषहों को जीता है। सामान्य केवली 'जिन' इसलिये कहे गये हैं कि उन्हों ने चार घनघातिया कर्मो को अपनी आत्मा से समूल नष्ट कर दिया है। विष्णु 'जिन' इसलिये कहलाये कि उन्हो ने अपने भुजबल से भरतखण्ड के छह खडों में से तीन खडों को अपने वश किया है इसी लिये ये अर्द्धचक्री भी कहलाते हैं। कामदेव को 'जिन' इस लिये कहा गया है कि इसके वश समस्त त्रिलोक है त्रिलोक में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं बचा कि जिसे इस ने अपने वश मे न किया हो।

शंका—द्रौपदी ने कामदेव की मूर्त्ति की पूजा की–आप की यह बात उस समय मानी जा सकती–जब कि कामदेव की मूर्ति बन सकती होती ? परन्तु कामदेव की मूर्ति तो बन नही सकती क्यों कि वह तो अमूर्तिक–अशरीर–अनङ्ग है। अंगवाले की ही मूर्ति बनती है–अनग की नहीं।

બધા કષાય કર્મ, મોહ અને પરિષહોને જીત્યા છે સામાન્ય કેવલી "જીન" એટલા માટે કહેવામા આવ્યા છે કે તેમણે ચાર ઘનઘાતિઓના કર્મોને પોતાના આત્માથી સમૂળ નષ્ટ કરી નાખ્યા છે વિષ્ણુ 'જીન' એટલા માટે કહેવાય છે કે તેમણે પોતાના ભુજ બળથી ભરતખંડના ૬ ખંડોમાથી ત્રણ ખંડોને પોતાને વશ કર્યા છે એથી તેઓ અર્દ્ધચક્રી પણ કહેવાય છે કામદેવને 'જીન' એટલા માટે કહેવામા આવ્યો છે કે તેના વશમા ત્રણે લોકો છે ત્રણે લોકોમા એવુ કોઈ પ્રાણી રહ્યુ નથી કે જેને કામદેવે પોતાના વશમા કર્યું ન હોય

શંકા—દ્રૌપદીએ કામદેવની મૂર્તિની પૂજા કરી તે તમારી આ વાત ત્યારેજ યોગ્ય કહી શકાય કે જ્યારે કામદેવની મૂર્તિ બની શકતી હોય ? પણ કામદેવની મૂર્તિ તો તૈયાર થઈ શકે તેમ નથી કેમકે તે તો અમૂર્તિક–અશરીર અનંગ છે અંગવાળાની જ મૂર્તિ બને છે, અનંગની નહિ

नास्त्यत्र संशयः । लक्ष्मीगौर्यादिदेव्या अपि स्त्रीभिरीप्सितपतिप्राप्तिकामनया पूजनं लोके प्रसिद्धमस्ति । लौकिकमन्त्रशास्त्रे मन्त्ररत्नमञ्जूषायां कामदेवाराधनस्याभीप्सितपतिलाभहेतुत्वं निगदितम्—

" कन्यामिष्टामवाप्नोति, सापीष्टं पतिमाप्नुयात् ॥ " इति ।

अधुनाऽपि परिणयनसमये कुलदेवपूजनं लोके क्रियमाणं दृश्यते । कामदेवोऽपि

उत्तर—यह कहना ठीक नहीं है क्यों कि मूर्ति पूजक जन अनङ्ग-सिद्धों की भी तो मूर्ति बनाकर उसकी पूजा किया करते हैं । यद्यपि सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं कही गई है-तो भी मूर्तिपूजक जन अपनी कल्पना से उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजा करते ही हैं—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेव की भी लोग अपनी कल्पनानुसार मूर्ति बनाकर पूजते हैं । इस में आपत्ति की कौनसी बात है ।

लक्ष्मी, गौरी आदि देवियों की भी पूजा लोक में अपने को अभिलषित पति प्राप्ति की कामना से स्त्रियों द्वारा की ही जाती है । लौकिक मन्त्र शास्त्र में मंत्ररत्नमंजूषा में कामदेव का आराधन—" कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्टं पतिमाप्नुयात् ' इस श्लोकार्धद्वारा इच्छित पति प्राप्ति का कारण कहा गया है ।

वर्तमान समय में भी देखो ! विवाह के समय में लोक में कुल देवता का पूजन किया ही जाता है यह कुल देवता का पूजन ही एक

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનગ સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે જો કે શાસ્રોમા સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવવાની આજ્ઞા કરવામા આવી નથી છતાય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ બનાવીને પૂજા કરે જ છે તેમજ લૌકિક શાસ્ર પ્રસિદ્ધ અનગ કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ બનાવીને તેને પૂજે છે, આમા વાધા જેવી કોઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમા પોતાની ઇચ્છા મુજબ પતિ મેળવવાની કામનાથી સ્રીઓ વડે કરવામા આવે જ છે લૌકિક મત્ર શાસ્રમા મત્ર રત્ન મજૂષામા કામદેવનુ આરાધન " कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्टं पतिमाप्नुयात्" આ અર્દ્ધશ્લોક વડે ઇચ્છિત પતિપ્રાપ્તિનુ કારણ બતાવવામા આવ્યુ છે

વર્તમાન સમયમા પણ આપણે જોઇએ તો લગ્નના સમયે લોકમા કુળ દેવતાનુ પૂજન કરવામા આવે જ છે આ કુળદેવતાનુ પૂજન ■ રીતે

रागवता गृहस्थाना कुलदेवत्वेन व्याह्रियमाण आसीत्। द्रौपद्याऽपि स्वकुलदेवः पूजित इति युक्तमुत्पश्याम.।

अत्र—"नमोऽत्थु ण अरिहंताण" इति पाठस्तु प्रवचनविरुद्ध एव वर्तते, लौकिककुलदेवप्रतिमाऽर्चनप्रकरणे लोकोत्तरस्य भगवतोऽर्हत' प्रसङ्गाभावात्। पूर्वभवकृतनिदानवत्या कामभोगानुरक्तया द्रौपद्या कामदेवार्चनसमये कामभोग विरतस्य वीतरागमार्गोपदेशकस्य वीतरागस्य भगवतोऽर्हतो वन्दन नैव शास्त्रानुकूलम्। अत्र परिणयावसरे कुलदेवपूजनप्रसङ्गे भगवतोऽर्हत प्रसङ्गएव नास्ति,

---

तरह से कामदेव का पूजन अनुसरण है। एक समय था कि जब कामदेव ही, रागशाली गृहस्थ जनों के लिये कुल देवता के रूप से वैवाहिक व्यवहार में मान्य होता था। द्रौपदीने भी उस समय जो कुल देवता का पूजन किया-वह कामदेव का ही पूजन किया यही युक्ति सगत बैठती है। इस पूजन के प्रकरण में जो "नमोत्थुण अरिहताण" यह पाठ आता है वह प्रवचन विरुद्ध ही है क्यों कि लौकिक कुलदेवता की प्रतिमा के अर्चन-प्रकरण में लोकोत्तर अर्हत भगवान के प्रकरण का सबध ही क्या है। उस समय जब कि वह पूर्व भव में किये गये निदान से युक्त थी-और कामभोग में अनुरक्त हृदयवाली थी उस के लिये कामदेवका अर्चन (पूजन) करनेका समय ही स्पष्टरूपसे ज्ञात होता है कामभोगों से विरत वीतराग मार्ग के उपदेशक वीतरागप्रभु अर्हत भगवान की पूजन वदना का नहीं। यही सिद्धान्त शास्त्रानुकूल है-अन्य नहीं। अरे कहीं

કામદેવના પૂજનનુ અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે જ્યારે કામદેવજ, રાગવાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમા લગ્ન-સબધી વ્યવહારમા માન્ય ગણાતો હતો. દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનુ પૂજન કર્યું તે કામદેવનુ જ પૂજન કર્યું હતુ એ જ વાત બરોબર લાગે છે આ પૂજનના પ્રકરણમા જે "नमोत्थुण अरिहताण" આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિરૂદ્ધ જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમા લોકોત્તર અર્હત ભગવાનના પ્રકરણનો સબધ જ શી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તે વખતે કે જ્યારે તે પૂર્વ ભવમા કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમા અનુરક્ત હૃદયવાળી હતી એવી સ્થિતિમા તો તેના માટે કામદેવની અર્ચના કરવાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઈ આવે છે કામભોગોથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રભુ અર્હત ભગવાનની પૂજા વદના માટે તે વખત યોગ્ય કહી શકાય નહિ આ સિદ્ધાંત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ યુદ્ધમાં

नास्त्यत्र संशयः। लक्ष्मीगौर्यादिदेव्या अपि स्वाभीष्टपतिप्राप्तिकामनया पूजनं लोके प्रसिद्धमस्ति। लौकिकमन्त्रशास्त्रे मन्त्ररत्नमञ्जूषायां कामदेवाराधनस्याभीष्टपतिलाभहेतुत्वं निगदितम्—

" कन्यामिष्टामवाप्नोति, सापीष्टं पतिमाप्नुयात् ॥ " इति।

अधुनाऽपि परिणयनसमये कुलदेवपूजनं लोके क्रियमाणं दृश्यते। कामदेवोऽपि

उत्तर—यह कहना ठीक नहीं है क्यों कि मूर्ति पूजक जन अनङ्ग -सिद्धों की भी तो मूर्ति बनाकर उनकी पूजा किया करते हैं। यद्यपि सिद्धों की मूर्ति बनाने की आज्ञा शास्त्रों में नहीं कही गई है-तो भी मूर्तिपूजक जन अपनी कल्पना से उनकी भी मूर्ति बनाकर पूजा करते ही हैं—

उसी प्रकार लौकिकशास्त्र प्रसिद्ध अनङ्ग कामदेव की भी लोग अपनी कल्पनानुसार मूर्ति बनाकर पूजते हैं। इस में आपत्ति की कौनसी बात है।

लक्ष्मी, गौरी आदि देवियों की भी पूजा लोक में अपने को अभिलषित पति प्राप्ति की कामना से स्त्रियों द्वारा की ही जाती है। लौकिक मन्त्र शास्त्र में मन्त्ररत्नमजूषा में कामदेव का आराधन-" कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्ट पतिमाप्नुयात् ' इस श्लोकार्धद्वारा इच्छित पति प्राप्ति का कारण कहा गया है।

वर्तमान समय में भी देखो! विवाह के समय में लोक में कुल देवता का पूजन किया ही जाता है यह कुल देवता का पूजन ही एक

ઉત્તર—આ વાત યોગ્ય નથી, કેમકે મૂર્તિ પૂજા કરનારા લોકો અનંગ સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવીને તેની પૂજા કરતા રહે છે જો કે શાસ્ત્રોમા સિદ્ધોની મૂર્તિ બનાવવાની આજ્ઞા કરવામા આવી નથી છતાંય મૂર્તિ પૂજક લોકો પોતાની કલ્પનાથી તેમની પણ મૂર્તિ બનાવીને પૂજા કરે જ છે તેમજ લૌકિક શાસ્ત્ર પ્રસિદ્ધ અનંગ કામદેવની પણ લોકો પોતાની કલ્પના મુજબ મૂર્તિ બનાવીને તેને પૂજે છે, આમા વાધા જેવી કોઈ વાત નથી

લક્ષ્મી, ગૌરી વગેરે દેવીઓની પૂજા લોકમા પોતાની ઈચ્છા મુજબ પતિ મેળવવાની કામનાથી સ્ત્રીઓ વડે કરવામા આવે જ છે લૌકિક મંત્ર શાસ્ત્રમા મંત્ર રત્ન મંજૂષામા કામદેવનુ આરાધન " कन्यामिष्टामवाप्नोति सापीष्टं पतिमाप्नुयात्" આ અર્દ્ધશ્લોક વડે ઈચ્છિત પ્રતિપ્રાપ્તિનુ કારણ બતાવવામા આવ્યુ છે

વર્તમાન સમયમા પણ આપણે જોઇએ તો લગ્નના સમયે લોકમા કુળ દેવતાનુ પૂજન કરવામા આવે જ છે આ કુળદેવતાનુ પૂજન ... રીતે

रागवता गृहस्थानां कुलदेवत्वेन व्याह्रियमाण आसीत्। द्रौपद्याऽपि स्वकुलदेवः पूजित इति युक्तमुत्पश्यामः।

अत्र—"नमोऽत्थु णं अरिहंताणं" इति पाठस्तु प्रवचनविरुद्ध एव वर्तते, लौकिककुलदेवप्रतिमाऽर्चनप्रकरणे लोकोत्तरस्य भगवतोऽर्हतः प्रसङ्गाभावात्। पूर्वभवकृतनिदानवत्या कामभोगानुरक्तया द्रौपद्या कामदेवार्चनसमये कामभोगविरतस्य वीतरागमार्गोपदेशकस्य वीतरागस्य भगवतोऽर्हतो वन्दनं नैव शास्त्रानुकूलम्। अत्र परिणयावसरे कुलदेवपूजनप्रसङ्गे भगवतोऽर्हतः प्रसङ्ग एव नास्ति,

---

तरह से कामदेव का पूजन अनुसरण है। एक समय था कि जब कामदेव ही, रागशाली गृहस्थ जनों के लिये कुल देवता के रूप से वैवाहिक व्यवहार में मान्य होता था। द्रौपदीने भी उस समय जो कुल देवता का पूजन किया-वह कामदेव का ही पूजन किया यही युक्ति सगत बैठती है। इस पूजन के प्रकरण में जो "नमोत्थुण अरिहंताणं" यह पाठ आता है वह प्रवचन विरुद्ध ही है क्यो कि लौकिक कुलदेवता की प्रतिमा के अर्चन-प्रकरण में लोकोत्तर अर्हंत भगवान के प्रकरण का सबंध ही क्या है। उस समय जब कि वह पूर्व भव में किये गये निदान से युक्त थी-और कामभोग में अनुरक्त हृदयवाली थी उस के लिये कामदेवका अर्चन(पूजन) करनेका समय ही स्पष्टरूपसे ज्ञात होता है कामभोगों से विरत वीतराग मार्ग के उपदेशक वीतरागप्रभु अर्हंत भगवान की पूजन वदना का नहीं। यही सिद्धान्त शास्त्रानुकूल है-अन्य नहीं। अरे कहीं

કામદેવના પૂજનનુ અનુસરણ છે એક વખત એવો હતો કે જ્યારે કામદેવજ, રાગવાળી ગૃહસ્થ લોકોને માટે કુળ દેવતાના રૂપમા લગ્ન-સબધી વ્યવહારમા માન્ય ગણાતો હતો દ્રૌપદીએ પણ તે સમયે જે કુળ દેવતાનુ પૂજન કર્યું તે કામદેવનુ જ પૂજન કર્યું હતુ એ જ વાત ખરોબર લાગે છે આ પૂજનના પ્રકરણમા જે "નમોત્થુણ અરિહંતાણં" આ પાઠ આવે છે તે પ્રવચન વિરૂદ્ધ જ છે કેમકે લૌકિક કુળદેવતાની પ્રતિમાના અર્ચન-પ્રકરણમા લોકોત્તર અર્હંત ભગવાનના પ્રકરણનો સબધ જ શી રીતે યોગ્ય કહી શકાય તે વખતે કે જ્યારે તે પૂર્વ ભવમા કરેલા નિદાનથી યુક્ત હતી અને કામભોગમા અનુરક્ત હૃદયવાળી હતી એવી સ્થિતિમા તો તેના માટે કામદેવની અર્ચના કરવાનો વખત જ સ્પષ્ટ રૂપે જણાઈ આવે છે કામભોગોથી વિરત વીતરાગ માર્ગના ઉપદેશક વીતરાગ પ્રભુ અર્હંત ભગવાનની પૂજા વદના માટે તે વખત યોગ્ય કહી શકાય નહિ આ સિધ્ધાંત જ શાસ્ત્રાનુકૂળ છે બીજો નહિ સુધ્ધમા

द्रौपद्याः पूर्वभवकृतनिदानफलप्राप्त्यभावेन सम्यक्त्वरहितत्वात्। यस्य पूजनं तस्यैव वन्दनं तु न्यायोपपन्नं भवति, अत्र पूजनं कुलदेवतायाः, वन्दनं तु वीतरागस्यार्हत इति लोकन्यायविरुद्धम्। तस्मात् द्रौपद्या वीतरागस्यार्हतो वन्दनमपि तदानीं न कृतमिति सर्वप्रमाणसिद्धम्।

अत्राभयदेवसूरिणा स्वकृतवृत्तौ यदुक्तम् एकस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते " जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ " इति।

वीररसके सिवाय युद्धमें जानेवाले वीरके लिये मल्हारराग भी आनंददायी हो सकता है ?। कभी नहीं परिणय-विवाहके अवसर में कुलदेवता की ही पूजा करने का प्रसंग होता है-न कि भगवान अर्हंत की। अतः इस प्रकार का प्रसंग मानना एक मनगढत कल्पना मात्र ही है। क्यों कि इस समय द्रौपदी पूर्वभव में किये हुए निदान की फल प्राप्ति के अभाव से सम्यक्त्व रहित थी, फिर उसे उस समय कामदेव की ही इच्छित फल प्राप्ति के लिये पूजा की सूझेगी, या उसके अभाव को करने वाले जिन भगवान की पूजा की। यह स्वयं विचारने जैसी बात है जिस का पूजन किया जाता है उसी की वंदना की जाती है-पूजन तो हो कुलदेवतारूप कामदेव का और वंदना की जाय वीतराग प्रभु श्री अरिहंत देव की। इस प्रकार की मान्यता तो लौकिकरीति से भी विरुद्ध पडती है। इसलिये सर्व प्रमाणों से यह सिद्ध होता है कि द्रौपदी ने जिनप्रतिमा का पूजन नहीं किया।

જનાર લડવૈયા માટે વીર રસ સિવાયનો મલ્હાર રાગ પણ શું આનંદ પમાડનાર થઇ શકે છે ? નહીજ લગ્નના સમયે તો ભગવાન અર્હંતની પૂજા કરતા તો કુળદેવતાની પૂજા કરવાનો પ્રસંગજ યોગ્ય લેખાય છે એટલા માટે આ જાતના પ્રસંગની વાત માનવી એ મનમાની કલ્પના માત્રજ છે કેમકે આ સમયે દ્રૌપદી પૂર્વભવમાં કરેલા નિદાનની ફળ પ્રાપ્તિના અભાવને લીધે સમ્યકત્વથી રહિત હતી અને એવી સ્થિતિમાં ઇચ્છિત ફળ પ્રાપ્તિ માટે તેને કામદેવની પૂજા કરવાની ઇચ્છા થાય કે તેનાથી વિરૂધ્ધ ફળ આપનાર જીન ભગવાનની પૂજાની ? આ જાતે વિચાર કરવા યોગ્ય વાત છે જેની પૂજા કરવામાં આવે છે તેને જ વંદના કરવામાં આવે છે પૂજા તો કુળ દેવતારૂપ કામદેવની થાય અને વંદના વીતરાગ પ્રભુ શ્રી અરિહંત દેવની કરવામાં આવે આ જાતની માન્યતા તો લૌકિક રીતિથી પણ વિરૂધ્ધ છે આ પ્રમાણે બધી રીતે વિચારતા આ સિધ્ધ થાય છે કે દ્રૌપદીએ જીન પ્રતિમાનું પૂજન કર્યું નથી.

वाचनान्तरे तु 'ण्हाया' इत्यादि, तथा-द्रौपद्याः प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे इति, तदप्यत्र पाठे सिद्धान्तविरुद्धपाठप्रक्षेपसभावनां सद्योतयति । अत्र यद्वाच्य तत्प्रागेव निगदितम् ।

मूलम्-तएण तं दोवइरायवरकन्नं अतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसिय करेंति कि ते ? वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अतेउराओ पडिणिक्खमइपडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धि चाउग्घंटं आसरह दुरूहइ, तएण से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थं करेइ, तएण सा दोवई रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयर मज्झ मज्झेण जेणेव सयवरमडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रह ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरु-

अभयदेव सूरि ने स्वरचित वृत्ति में जो यह कहा है कि एक वाचना में "जिनपडिमाणं अच्चणं करेइ" दूसरी अन्य वाचना में "ण्हाया इत्यादि-तथा द्रौपद्याः प्रणिपात दण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे इति" सो यह उनका कथन इस बात की सभावना को प्रकट करता है कि इस पाठ में सिद्धान्त से विरुद्ध पाठ का प्रक्षेप हुआ है । इस विषय में जो कुछ हमें समाधान करना था वह हमने पहिले ही कर दिया है ।

॥ द्रौपदी पूजाचर्चा समाप्त ॥

અભયદેવસૂરિએ સ્વરચિત વૃત્તિમા જે એ કહ્યુ છે કે એક વાચનામા "जिनपडिमाण अच्चण करेइ" બીજી વાચનામા 'ण्हाया इत्यादि-तथा द्रौपद्या प्रणिपातदण्डकमात्र चैत्यवन्दनमभिहित सूत्रे इति ।" તો તેમનુ આ કથન આ વાતને પ્રકટ કરે છે કે આ પાઠમા સિદ્ધાન્તથી વિરુધ્ધ એવા પાઠનો પ્રક્ષેપ થયો છે આ વિષે જે કંઈ યોગ્ય સ્પષ્ટીકરણ કરવાનુ હતુ તે અમે પહેલા કરી દીધુ છે

દ્રૌપદી પૂજા ચર્ચા સમાપ્ત

हित्ता किड्डावियाए लोहियाए य सद्धिं सयंवरमंडपं अणुपविसइ अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ, तएण सा दोवई रायवर० एगं मह सिरिदामगंडं किं ते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गंधद्धाणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं गिण्हइ, तएणं सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पणसंकंतबिंबसंदसिए य से दाहिणेणं हत्थेण दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगंभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊणं वससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकंतिं बहुविह आगममाहप्परूवजोव्वणगुण लावण्णकुलसीलजाणिया कित्तणं करेइ, पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं दसदसारवीरपुरिसाणं तेलोक्कबलवगाणं सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाणं भवसिद्धिपवरपुंडरीयाणं चिल्लगाणं बलवीरियरूवजोव्वणगुणलावन्नकित्तिया कित्तणं करेइ, ततो पुणो उग्गसेणमाईणं जायवाणं, भणइ य—सोहग्गरूवकलिए वरेहिं वरपुरिसगंधहत्थीणं । जो हु ते होइ हिययदइओ, तएणं सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झं मज्झेणं समतिच्छमाणी२ पुव्वकयणियाणेणं चोइज्जमाणी २ जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ते पंचपंडवे तेणं दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढिय करेइ करित्ता एवं वयासी—एएणं मए पंच पंडवा वरिया, तएणं तेसिं

वहूणि रायसहस्साणि महया२सद्देणं उग्घोसेमाणा२ एव वयति सुवग्गिय खलु भो! दोवइए रायवरकन्नाए२ त्तिकट्टु सयवरमंडवाओ पडिनिक्खमति पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता, तएण धट्ठज्जुण्णे कुमारे पच पडवे दोवइं रायवरकण्ण चाउग्घट आसरह दुरूहइ दुरूहित्ता कपिल्लपुर मज्झ मज्झेण जाव सय भवण अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पच पडव दोवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ दुरूहित्ता सेया पीएहि कलसेहि मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ पचण्ह पडवाण दोवईए य पाणिग्गण करावेइ तएण से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णयाए इम एयारूवं पीईदाण दलयइ, त जहा — अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणकणग जाव दलयइ तएण से दुवए राया ताइ वासुदेवपामोक्खाणं विउलेणं असण४ वत्थगध जाव पडिविसज्जेइ ॥ सू० २१ ॥

टीका—' तएण त ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ता द्रौपदी राजवरकन्यां 'अतेउरियाओ' आन्तः पुरिक्य'= अन्तःपुरवर्तिन्य स्त्रियः सर्वालङ्कारविभूषितां कुर्वन्ति, ' किं ते ' तत्-तत्सौन्दर्यं किं वर्णयामि तद् वाचाऽभिलपितु न

तए ण त दोवइ रायवरकन्न इत्यादि ।

टीकार्थ-(तए ण) इसके वाद (त दोवइ रायवरकन्न) उस राजवर कन्या द्रौपदी को (अतेउरियाओ सव्वालङ्कारविभूसिय करेति) अतः पुर की स्त्रियो ने समस्त अलकारो से विभूषित किया। (किंते) उस समय

तएण त दोवइ रायवरकन्न इत्यादि—

ટીકાર્થ—(તए ण) त्यारपछी (त दोवइ रायवरकन्न) ते राजवर कन्या द्रौपदीने (अतेउरियाओ-सव्वाल कारविभूसिय करेति) रणवासनी स्त्रीओએ समस्त अलकारोथी शणगारी (किं ते) ते समयना तेना सौंदर्यनुं वर्णन

शयत इत्यर्थः । 'वरपायपत्तणेउरा' वरपादमाप्तनूपुरा=चरणस्थापित प्रशस्त नूपुरा यावत्- चेडियाचक्कवालमयहरगविन्दपरिक्खित्ता चेटिकाचक्रवालमहत्तरक वृन्देन-अनेकदासीमहत्तरसमूहेन परिक्षिप्ता-परिवृता, अन्तःपुरात् प्रतिनिष्क्रामति -निः सरति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या=बहिः प्रदेशस्था 'उवट्ठाणसाला' उपस्थानशाला=आस्थानमण्डप -सभामण्डइत्यर्थः, यत्रैव चातुर्घण्टोऽश्वरथस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'किड्डावियाए' क्रीडिकया-क्रीडनधात्र्या कीदृश्या कीडिकया इत्याह 'लेहियाए' इति लेखिकया=राजकुलवशनामादिपरिचारिकया सार्धं

के उसके सौन्दर्य का हम क्या वर्णन करें। वह वाणी द्वारा कहने के योग्य नहीं है अर्थात् वाणी से उसका वर्णन नहीं हो सकता है। (वरपायपत्तणेउरा जाव, चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अतेउराओ पडिणिक्खमइ) चरणों में स्थापित किये गये हैं-पहिराये गये हैं-प्रशस्त नूपुर जिसको ऐसी वह द्रौपदी यावत अनेक समझदार दासियों के महोमहिम समूह से परिक्षिप्त होकर-अत.पुर से बाहिर निकली। (पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ) बाहिर निकलकर वह जहां बाहिर में सभामडप और उसमें भी जहा चारघंटो वाला अश्वरथ था वहा आई। वहा आकर वह अपनी क्रीडनधात्री के कि जो लेखिका राजकुल, वश नाम आदि की परिचायिका थी साथ उस चारघंटोंवाले

આપણે કેવી રીતે કરી શકીયે વાણી વડે તેનુ વર્ણન અશક્ય છે એટલે કે વાણીમા એટલી શક્તિ નથી કે તેના સૌંદર્યનુ સચોટ વર્ણન કરી શકે

(वरपायपत्तणेउरा जाव चेडियाचक्कवालमयहरगविंदपरिक्खित्ता अतेउराओ पडिणिक्खमइ)

પગોમા જેણે સુદર નૂપુર પહેર્યા છે એવી તે દ્રૌપદી ઘણી ચતુર દાસીઓથી વીંટળાઇને રણવાસથી બહાર નીકળી

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंट आसरहं दुरूहइ)

બહાર નીકળીને તે જ્યા બહારના સભા-મડપમા ચાર ઘટવાળો અશ્વરથ હતો ત્યા આવી ત્યા આવીને તે પોતાથી ક્રીડન ધાત્રી-કે જે લેખિકા રાજકુલ, વશ નામ વગેરેની પરિચારિકા હતી-તેની સાથે તે ચાર ઘટવાળા અશ્વરથ ઉપર સવાર થઈ ગઈ

चातुर्घण्टमश्वरथं 'दुरुहइ' दूरोहति=आरोहति। ततस्तदनन्तरं धृष्टद्युम्नः कुमारो द्रौपद्याः कन्यायाः 'सारत्थ' सारथ्य-सारथिकर्म करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या काम्पिल्यपुरस्य नगरस्य मध्यमध्येन यत्रैव स्वयम्वरमण्डपस्तत्रैवो-पागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति रथात् प्रत्यवरोहति प्रत्यवरुह्य क्रीडिकया लेखिकया च सार्धं स्वयवरमण्डपम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य करतलपरिगृहीत दशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा तेषां वासुदेवप्रमुखाणां बहूणं राजवरसह-

अश्वरथ में सवार हो गई। (तएण से धट्ठज्जुण्णे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थ करेइ, तएण सा दोवई रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झं-मज्झेणं जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ) उस के सवार होते ही धृष्टद्युम्न कुमार ने उस द्रौपदी कन्या का सारथ्य किया-उसके रथ पर सारथि का काम किया-द्रौपदी के रथ को हांका। इस तरह धृष्ट द्युम्न के द्वारा हांके गये रथ पर बैठी हुई वह राजवर कन्या द्रौपदी कांपिल्य पुर नगर के बीच से होकर जहां स्वयवर-मंडप था उस ओर चल दी। (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं सयवरमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेवपामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ) वहां पहुंचकर उसने रथ को खड़ा करवा दिया-रथके खड़े होते ही वह उससे नीचे उतरी, नीचे उतर कर वह उस लेखिका क्रीडन धात्री के साथ स्वयवर मंडप में प्रविष्ट हुई। प्रविष्ट होकर के उसने अपने दोनों हाथों को जोड़ कर उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को प्रमाण

(तएण से धट्ठज्जुण्णे कुमारे दोवईए कण्णाए सारत्थं करेइ, तएण सा दोवई रायवरकण्णा कंपिल्लपुर नगरं मज्झं मज्झेणं जेणेव सयवरमंडवे तेणेव उवागच्छइ)

જ્યારે તે સવાર થઈ ગઈ ત્યારે કુમાર ધૃષ્ટદ્યુમ્ને તે દ્રૌપદી રાજવર કન્યાના રથ ઉપર બેસીને સારથીનુ કામ સભાળ્યુ આ પ્રમાણે ધૃષ્ટ મ્ન વડે હાંકવામા આવેલા તે રથ ઉપર સવાર થઈને તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી કાંપિલ્યપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યા સ્વયવર મંડપ હતો ત્યા રવાના થઈ

(उवागच्छित्ता रहं ठवेइ रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं सयवरमंडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल तेसिं वासुदेव पामुक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ)

ત્યા પહોંચીને તેણે રથને થોભાવડાવ્યો, જ્યારે રથ થોભ્યો ત્યારે તે રથ ઉપરથી નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે લેખિકા ક્રીડન ધાત્રીની સાથે સ્વયવર મંડપમા પ્રવિષ્ટ થઈ પ્રવિષ્ટ થઈને તેણે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને પોતાના બને હાથ જોડીને નમસ્કાર કર્યા

त्राणा मणामं करोति, ततः खलु सा द्रौपदी राजवरकन्या एकं महत् श्रीदामकाण्डं 'किं ते' किं तत्-तत्सौन्दर्यसौगन्ध्यवर्णनं किं करोमि ? तद् अपूर्वमितिभावः । 'पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं' पाटलमल्लिकाचम्पक-यावत् सप्तच्छदादिभिः 'गंधद्धाणिं' गन्धघ्राणिं गन्धवत्तिं 'मुयंतं' मुञ्चत्=ददत् प्रकाशयदित्यर्थः परमसुखस्पर्शं दर्शनीयं गृह्णाति । ततः खलु सा क्रीडिका=क्रीडनधात्री यावत्-सुरूपा जाव 'वामहत्थेण चिल्लगं दप्पणं' यावत् वामहस्तेन चिल्लगं दर्पणम् अत्र यावच्छब्देनेदं बोध्यम्-सामाविषघंस चोइणणम्म उस्सुयकर विचित्तमणिरयण बद्धच्छरुह' इति । स्वाभाविकवर्ष=स्वाभाविको नैसर्गिको घर्षो घर्षणं यत्र स तथा त दर्पणमित्यन्वयः । स्वभावादेव चिक्कणमित्यर्थः, तथा-चतुर्दशजनस्यौत्सुक्यकर=तरुणलोकस्य प्रेक्षणाभिलाषजनक, तथा-विचित्रमणिरत्नबद्धच्छरुक=विचित्रमणि रत्नैर्बद्धः छरुकः-मुष्टि ग्रहणस्थान, यस्य स तथा त, तथा-'चिल्लगं' देदीप्यमान, दर्पण-वामहस्ते "गहेउण" गृहीत्वा 'सललिय' सललित 'दप्पण

क्रिया (तए ण सा दोवई रायवरकन्ना एग महं सिरिदामगंड किंते ? पाडलमल्लियचंपय जाव सत्तच्छयाईहिं गधद्धाणिं मुयत परमसुहफास दरिसणिज्ज गेण्हइ) इसके बाद उस राजवर कन्या द्रौपदी ने एक बडा विस्तृत श्री दामकाड-जिस की सुन्दरता और सुगंधि का हम क्या वर्णन करें-जो अपूर्व था-पाटल-गुलाब के पुष्पों से, मल्लिका-मोंगरा के पुष्पो से यावत् सप्तच्छद वृक्ष के पुष्पो से गूथा गया था और जिस में से नासिका को तृप्ति करने वाली गंध निकल रही थी।
जिसका स्पर्श परम सुख दायक था-तथा जो दर्शनीय था अपने हाथ में लिया (तएण सा किड्डाविया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेण चिल्लग दप्पण गहेऊण सललिय दप्पणसकतबिंबसदसिए य से दाहिणेणं

(तए ण सा दोवई रायवरकन्ना एग मह सिरिदामगड किं ते ! पाडलमल्लिय चपय जाव सत्तच्छयाईहिं गधद्धाणिं मुयत परमसुहफास दरिसणिज्ज गेण्हइ)

ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ એક બહુ મોટો ભારે શ્રીદામકાંડને કે જેની સુંદરતાનું વર્ણન થઈ શકે તેમ નથી અને જે અપૂર્વ હતો-પાટલ ગુલાબના પુષ્પોથી, મલ્લિકા-મોગરોના પુષ્પોથી, ચમ્પાના પુષ્પોથી યાવત્ સપ્તચ્છદ વૃક્ષના પુષ્પોથી તે તૈયાર કરવામાં આવ્યો હતો અને જેમાંથી નાસિકાને તૃપ્તિ થાય તેવી સુવાસ પ્રસરી રહી હતી જેનો સ્પર્શ અત્યંત સુખકારી તેમજ જે દર્શનીય હતો-હાથમાં લીધો.

(तएण सा किड्डा विया जाव सुरूवा जाव वामहत्थेण चिल्लग दप्पण गहेऊण सललिय दप्पणसकतबिंबसदसिए य से दाहिणेण हत्थेण दरिसए पवर

सकतविवसदसिए य ' दर्पणसक्रान्तबिम्बसदर्शितान्=दर्पणे संक्रान्तानि यानि राजा बिम्बानि-प्रतिबिम्बानि, तैः सदर्शिताः=प्रतिबोधितास्ताश्च प्रवरराजसिंहान सिंहसदृशशूरान् श्रेष्ठनृपान् दक्षिणेन हस्तेन ' से ' तस्या' द्रौपद्या ' दरिसए ' दर्शयति इह कर्मणः सम्बन्धमात्रविवक्षाया षष्ठी । तथा-' फुडविसयविसुद्ध-रिभियगभीरमहुरभणिया ' स्फुटविशदविशुद्धरिभितगम्भीरमधुरभणिता= अर्थत'

हत्थेण दरिसए पवररायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुर-भणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थिवाणं अम्मापिऊण वससत्तसामत्थ-गोत्तविक्कतिकतिबहुविहआगममहप्परूवजोव्वणगुणलावण्ण कुल जाणिया कित्तण करेइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने अपने हाथ में एक चमकता हुआ दर्पण लिया । यहा दर्पण के इन और विशेषणो का यावत् शब्द से ग्रहण हुआ है वे विशेषण ये हैं ' सामावियघसं चोइहजणस्स उस्सुयकर विचित्तमणिरयणबद्धछरुए " इनका अर्थ इस प्रकार है-यह दर्पण स्वभावत. चिकना था । तथा तरुणजनों के चित्त में अपने को देखने की अभिलाषा का जनक था । मुष्टि से पकडने का जो इसका स्थान था वह विचित्र मणि-रत्नों से निर्मित था । उस दर्पण में जिन २ सिंह जैसे शूरवीर राजाओं के उस समय प्रतिबिम्ब पड़े हुए थे उन प्रतिबिम्बों को लेकर उस धायने उन श्रेष्ठ राजाओं को उस द्रौपदी के लिये अपने दक्षिण हाथ से बतलाया । बतलाते समय उन्हें दिखाते समय-वह धात्री बिलकुल अर्थ की अपेक्षा स्फुट एव वर्ण

रायसीहे फुडविसयविसुद्धरिभियगभीरमहुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं पत्थि वाण अम्मापिऊण वससत्तसामत्थगोत्तविक्कतिकतिबहुविहआगममहप्परूवजोव्वण गुणलावण्ण कुलजाणिया कित्तण करेइ)

ત્યારપછી તે ક્રીડનધાત્રીએ પોતાના હાથમા એક ચમકતો અરીસો લીધો અહીં ' અરીસા ' માટે યાવત્ શબ્દથી નીચે લખ્યા મુજબ વિશેષણોનુ પણ ગ્રહણુ સમજવુ જોઈએ (सामावियधस चोइहजणस्स उस्सुयकर विचित्त मणिरयणबद्धछरुए) આ વિશેષણોનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-તે અરીસો સ્વાભાવિક રીતે લીસો હતો, તેમજ તરુણ સ્ત્રીઓના ચિત્તમા તેને જોવાની સહજ ભાવે ઈચ્છા જાગ્રત થાય તેવો હતો તે અરીસાનો હાથો વિચિત્ર મણીરત્નોથી જડેલો હતો તે અરીસામા સિંહ જેવા શૂરવીર જે જે રાજાઓ દેખાયા તે ધાત્રીએ તે રાજાઓને પોતાના જમણા હાથથી સકેત કરીને બતાવ્યા બતાવતી વખતે અને સમજાવતી વખતે તે ધાય અર્થની અપેક્ષાથી

स्फुट, वर्णतो विशद स्फुटविशद-शब्दार्थदोषरहित, स्तिमित-स्वरयुक्त गम्भीर-मेघध्वनिवत्, मधुर-प्रिय श्रवणसुखद, भणित भाषित यस्या क्रीडिकाया सा तथा, सा क्रीडिका तेषा सर्वेषा पार्थिवानां 'अम्मापिऊण' मातापित्रोः 'वससत्तसामत्थगोत्तविक्कंतिकंतिबहुविहआगममाहप्परूवजोव्वणगुणलावण्णकुलसीलजाणिया' वशसत्त्वसाम र्थ्यगोत्रविक्रान्तिकान्तिबहुविधागममाहात्म्यरूपयौवनगुणलावण्यकुलशीलज्ञायिका=वश-हरिवशादिक, सत्त्वम्-आपत्सु धैर्यम् सामर्थ्यं=बल गोत्र=गौतमगोत्रादि, विक्रान्ति-विक्रम, कान्ति-प्रभा, बहुविधागम अनेक शास्त्रविशारद, माहात्म्य-महानुभावता, तथा-रूपयौवनगुणलावण्यानि च तथा-कुल-वशस्यावान्तरभेद, शील च-स्वभाव च जानाति या सा 'कित्तण' कीर्तन=वशादिवर्णन करोति स्म । प्रथम तावत्-'वण्हिपुगवाण' वृष्णिपुङ्गवाना 'दस दसारवीरपुरिसाण' दशाना दशार्हाणा समुद्रविजयादीना वीरपुरुषाणा, 'तेलोग बलवगाण' त्रैलोक्यबलवता 'सत्तुसयसहस्समाणावमद्दगाण' शत्रुशतसहस्रमानाव मर्दकाना, तथा-'भवसिद्धियवरपुडरीयाण' भवसिद्धिकवरपुण्डरीकाणा=भवति

की अपेक्षा विशद ऐसी विशुद्ध-शब्दार्थ दोष रहित-स्वर युक्त मेघ ध्वनि समान गभीर मधुर वाणी से भाषण करती जाती थी। उस भाषण मे वह उन सब राजाओं के माता, पिता, वश, सत्त्व, सामर्थ्य, गोत्र, विक्रम, काति, अनेक शास्त्रों का ज्ञातृत्व, माहात्म्य, तथा रूप, यौवन गुण, लावण्य, कुल एव शील की ज्ञाता होने के कारण इन सब का वर्णन करती जाती थी। वश से हरिवश आदि का और कुल से वशके अवान्तर भेद का कथन होता है। (पढम ताव वण्हिपु गवाण दसदसारवीरपुरिसाण तेल्लोकबलवगाण सत्तुसयसहस्समाणाव मद्दगाण भवसिद्धिपवरपुडरीयाण चिल्लगाण बलवीरियरूवजोव्वण

એકદમ સ્ફુટ અને વર્ણની અપેક્ષાથી વિશદ એવી વિશુદ્ધ એટલે કે શબ્દાર્થ દોષરહિત-સ્વરયુક્ત, મેઘધ્વનિ જેવી ગભીર મધુરવાણીનુ ઉચ્ચારણ કરી રહી હતી પોતાના ભાષણ વડે તે ધાય બધા રાજાઓના માતા પિતા વશ, સત્વ, સામર્થ્ય, ગોત્ર, વિક્રમ, કાંતિ, શાસ્ત્રજ્ઞાન, મહાત્મ્ય તેમજ રૂપ, યૌવન, ગુણ, લાવણ્ય, કુળ અને શીલ વગેરેની બાબતમા જાણકાર હતી એટલે બધુ વર્ણન કરતી જતી હતી વશથી હરિવશ વગેરે અને કુળથી વશનો અવાન્તર ભેદનુ કથન થયુ છે

(પઢમ તાવ વણ્હિપુગવાણ દસદસારવીરપુરિસાણ તેલોક્કબલવગાણ સત્તુ સયસહસ્સમાણાવમદ્દગાણ ભવસિદ્ધિપવરપુડરીયાણ ચિલ્લગાણં બલવીરિયરૂવ

भाविनी सिद्धिर्येषा, ते भवसिद्धिकास्तेषा मध्ये वरपुण्डरीकाणीव ये श्रेष्ठास्ते तथा तेषा, तथा 'चिल्लगाणं' तेजसा देदीप्यमानाना 'चिल्लग' इति देशी शब्दः। तथा- 'बलवीरियरूवजोव्वणगुणलावन्नकित्तिया' बलवीर्यरूपयौवन-गुणलावण्य कीर्तिका=बल-कायिक, वीर्यम्-उत्साहः, रूप-सौन्दर्य, यौवन-तारुण्य, गुणान्-औदार्यगाम्भीर्यादीन्, लावण्य-यौवनवयोजन्य कान्तिविशेष, कीर्तयति या सा तथा, सा क्रीडिका धात्री कीर्तन करोति स्मेत्यर्थ । अत्र पूर्वोक्तमपि विशे-षण किंचिद् विशेषबोधनार्थं पुनः कथितम्।

ततस्तदनन्तर पुनः सा क्रीडनधात्री 'उग्गसेणमाईण जायवाण' उग्रसेना दीना यादवाना बलवीर्यादि कीर्तन करोति कृत्वा भणति च=सा धात्री द्रौपदी

गुणलावण्ण कित्तियाकित्तणं करेइ) सबसे पहिले उस क्रीडन धात्री ने वृष्णिवश के पुगव समुद्रविजय आदिदश दशार्हों के कि जो त्रैलोक्य में भी विशिष्ट बलशाली माने जाते थे, लाखों शत्रुओ के मान को मर्दन करने वाले थे, भवसिद्धिक पुरुषों में जो श्रेष्ठ कमल के जैसे माने गये हैं, और जो अपने स्वाभाविक तेज से सदा दमकते रहते थे बल का, वीर्य का, रूप का, यौवन का, गुणो का, लावण्य का, कीर्तिका होने के कारण कीर्तन-वर्णन किया। शारीरिक शक्तिका नाम बल, उत्साह का नाम वीर्य, सौन्दर्य का नाम रूप तारुण्य का नाम यौवन है। औदार्य गाभीर्य आदि गुण है। यौवन वय से जन्य जो कांति शरीर में आती है वह लावण्य है (तओ पुणो उग्गसेणमाईण जायवाण भणइ य सोहग्गरूवकलिए वरेहि वर पुरिसगधहत्थीण जो हु ते होइ हियय दइओ, तण्ण सा दोवई रायवरकन्नगा बहूणं रायवरसहस्साण मज्झ

जोव्वणगुणलावण्णकित्तिया कित्तण करेइ)

તે ક્રીડન ધાત્રીએ સૌ પહેલા વૃષ્ણિ વશમા પુગવ (શ્રેષ્ઠ) સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હોનુ-કે જેઓ ત્રણે લોકોમા પણ વિશિષ્ટ શક્તિશાળી ગણાતા હતા, લાખો શત્રુઓના માનનુ મર્દન કરનારા હતા, ભવસિદ્ધિક પુરૂષોમા જેઓ કમળની જેમ શ્રેષ્ઠ ગણાતા હતા અને જેઓ પોતાના સ્વાભાવિક તેજથી હમેશા પ્રકાશતા રહેતા હતા, બળ, વીર્ય, રૂપ, યૌવન, ગુણો, લાવણ્ય, કીર્તિ વગેરેથી સપન્ન હતા-વર્ણન કર્યુ શારીરિક શક્તિનુ નામ બળ, ઉત્સાહનુ નામ વીર્ય, સૌન્દર્યનુ નામ રૂપ અને તારૂણ્યનુ નામ યૌવન છે ઔદાર્ય, ગાભીર્ય ગુણો છે યુવાવસ્થામા જે શરીર કાંતિવાળુ થાય છે તેને લાવણ્ય કહેવામા આવે છે

(तओ पुणो उग्गसेणमाईण जायवाण भणइ य सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगधहत्थीण जो हु ते होइ हिययदइओ तण्ण तं दोवई रायवरकन्नगा

पुनराह— 'सोहग्गरूवकलिए' इत्यादि, पञ्चमप्रान्यप्रमुखेनव्याख्या-' वरपुरिसगंधहत्थीणं ' वीरपुरुषगन्धहस्तिना=हस्तिपु गन्धहस्तिन इव ये विशिष्टगुणसद्भावात् पुरुषेषु सर्वतः श्रेष्ठास्ते वरपुरुषगन्धहस्तिनस्तेषा मध्ये 'सोहग्गरूवकलिए' सौभाग्यरूपकलितः-अतिशयेन सौभाग्यसौन्दर्यसमन्वित , यः खलु त तव हृदय दयित =हृदयप्रियः ' होइ ' भवति, त ' वरेहि ' वरय=पतिमानेन स्वीकुरु इत्यर्थ ।

ततस्तदनन्तर खलु द्रौपदी राजवरकन्या बहूना राजवरसहस्राणा मध्यमध्येन ' समइच्छमाणी २ ' समतिक्रामन्ती=गच्छन्ती ' पुव्वकयणियाणेण ' पूर्वकृतनिदानेन=सुकुमारिकाभवे भर्तृपञ्चकाभिलापरूप निदान कृत तेन, ' चोइज्जमाणी २ ' प्रेर्यमाणा २ यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य तान् दशार्धवर्णेन-पञ्चवर्णेन कुसुमदाम्ना ' आवेढियपरिवेढिए ' आवेष्टितपरिवेष्टितान् करोति,

---

मज्झेण समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पचपडवा तेणेव उवागच्छइ) इसके बाद उस क्रीडन धाय ने यादव वशवाले उग्रसेन आदि यादवो के बलवीर्य आदि का वर्णन किया-उसने द्रौपदी से कहा ये जैसे हाथियों में गंधहस्ती श्रेष्ठ होता है उसी तरह ये पुरुषों मे विशिष्ट गुणोंके सद्भाव के कारण सर्व प्रकार से श्रेष्ठ हैं-उनके बीच में जो तुझे सौभाग्यरूप सकलित प्रतीत हो और तेरे हृदय को प्यारा लगे-उसे तू पतिरूप से वरले। इसके बाद वह राजवर कन्या द्रौपदी उन हजारों राजाओ के बीच से होती हुई सुकुमारिका के भव में कृत निदान के प्रभाव से बार २ प्रेरित होकर जहा पाच पाडव थे-वहा पहूँची-(उवागच्छित्ता ते पच पाडवे तेण दसद्धवण्णेण कुसुम दामेण आवेढियपरिवेढिय करेइ, करित्ता एव वयासी, एएण मए पच

बहूण रायवरसहस्साण मज्झ मज्झेण समतिच्छमाणी २ पुव्वकयणियाणेण चोइज्जमाणी २ जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારપછી ક્રીડન ધાત્રીએ ઉગ્રસેન વગેરેનુ વર્ણન કર્યું અને કહ્યુ કે-હાથીઓમા જેમ ગધ હસ્તી ઉત્તમ ગણાય છે તેમજ પુરૂષોમા સવિશેષ ગુણવાન એવા એઓ બધી રીતે સારા છે, આ બધામા તને જે સૌભાગ્ય શાળી લાગતા હોય અને તને જેઓ ગમતા હોય તેઓને તુ પતિ રૂપમા સ્વીકારી લે ત્યારપછી તે રાજવર કન્યા દ્રૌપદી તે હજારો રાજાઓની વચ્ચેથી પસાર થઇને પોતાના સુકુમારિકાના ભવમા કરેલા અભિલાષથી પ્રેરાઇને જ્યા પાચ પાડવો હતા ત્યા પહોચી

(उवागच्छित्ता ते पच पाडवे तेण दसद्धवण्णेणं कुसुमदामेण आवेढिय परिवेढिय करेइ, करित्ता एव वयासी, एए ण मए पचपडवा

कृता एवमवादीत्-एते खलु पञ्च पाण्डवा मया वृता इति। ततः खलु 'ताइ वासुदेवपामोक्खाइ बहूणि रायसहस्साणि' तानि वासुदेवप्रमुखाणि बहूनि राजसहस्राणि=अनेकसहस्रसंख्यका वासुदेवप्रमुखा राजान इत्यर्थः। महता २ शब्देनोद्घोषयन्त एवं वदन्ति-सुवृतं खलु भोः! द्रौपद्या राजवरकन्यया इति कृत्वा-इत्युक्त्वा स्वयंवरमण्डपात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव स्वकाः स्वका आवासास्तत्रैवोपागच्छन्ति। ततः खलु धृष्टद्युम्नः कुमारः पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां चातुर्घण्टमश्वरथं 'दुरूहइ' दूरोहयति=आरोहयति दूरोह्य काम्पि-

पडवा वरिया, तएण तेसि वासुदेवपामोक्खाण बहूणि रायसहस्साणि, महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयति, सुवरिय खलु भो! दोवइए रायवरकन्नाए त्ति कट्टु सयवरमडवाओ पडिनिक्खमनि, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया २ आवासा तेणेव उवागच्छइ) वहा पहुच कर उसने उन पाचो पाडवों को उस पचवर्णवाली माला से अवेष्टित परिवेष्टित कर दिया। करके फिर वह इस प्रकार कहने लगी-ये पांच पाडव मैंने पतिरूप से वर लिये हैं। इसके बाद उन वासुदेव प्रमुख हजारो राजाओं ने बडे २ जोर के शब्दो से ऐसा कहा इस राजवर कन्या द्रौपदीने बहुत अच्छे वर वरे ऐसा कहकर वे उस स्वयवर मडप से बाहिर हो गये। बाहिर आकर फिर वे जहा अपने २ आवास स्थान थे वहा चले आये। (उवागच्छित्ता तएण धट्ठज्जुण्णे कुमारे पच पडवे दोवइ रायवरकण्ण चाउग्घट आसरह दुरूहइ, दुरूहित्ता कपिल्लपुर

तेसि वासुदेवपामोक्खाण बहूणि रायसहस्साणि, महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयति, सुवरिय खलु भो! दोवइए रायवरकन्नाए २ त्ति कट्टु सयवरमडवाओ पडिनिक्खमति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया२ आवासा तेणेव उवागच्छइ)

ત્યા પહોચીને તેણે તે પાચ પાડવોને પાચ વર્ણવાળી માળાથી અવેષ્ટિત, પરિવેષ્ટિત કરી દીધા ત્યારપછી તેઓને કહેવા લાગી કે હે પાચ પાડવો! મે તમને પતિ રૂપમા વરી લીધા છે ત્યારબાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓએ બહુ મોટા સાદથી આ પ્રમાણે કહ્યુ કે આ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીએ બહુ જ સારા વરો પસદ કર્યા છે આમ કહીને તેઓ સર્વે સ્વયવર મડપમાથી બહાર નીકળી ગયા બહાર નીકળીને તેઓ જ્યા પોતાના આવાસ સ્થાનો હતા ત્યા જતા રહ્યા

(उवागच्छित्ता तएण धट्ठज्जुण्णे कुमारे पचपडवे दोवइ रायवरकण्णं चाउग्घट आसरह दुरूहइ, दुरूहित्ता कपिल्लपुर मज्झ मज्झेण जाव सय भवण अणु-

त्यपुरस्य मध्यमध्येन यावत् स्वकं भवनमनुप्रविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पट्टय' पट्टक=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः 'मज्जावेइ' मज्जयति=स्नपयति अग्निहोम विवाहविधिनाऽग्नौ होम कारयति, पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपद्याश्च पाणिग्रहण कारयति, अत्र पञ्चानां पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपद्या राजवरकन्यायाः इममेतद्रूपं प्रीतिदान यौतुकदान ददाति,

मज्झं मज्झेण जाव सयभवण अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पच पडवे दोवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ, पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गहणं करावेइ,) इसके बाद धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पाच पाडवो को एव राजवर कन्या द्रौपदी को चारघटो से युक्त उस अश्वरथ पर बैठाया-बैठाकर कापिल्यपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहा अपना भवन था वहां आया वहां आकर वह उसमें उन सब के साथ प्रविष्ट हुआ। इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पांचो पांडवों को और राजवर कन्या उस द्रौपदी को एक पट्टक पर बैठा दिया-बैठाकर फिर उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चादी सोने के घड़ो से-अभिषेक करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और उसकी साक्षी पूर्वक पाचो-पाडवो के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का पाणि ग्रहण संस्कार करवा दिया। (तएण से दुवए राया दोवइए राय

पविसइ, तएण दुवए राया पच पडवे दोवइ रायवरकन्न पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोम कारवेइ, पचण्ह पडवाण दोवइए य पाणिग्गहण करावेइ)

ત્યારપછી ધૃષ્ટદ્યુમ્ન કુમારે તે પાચ પાંડવોને અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને ચાર ઘટવાળા તે અશ્વરથ ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને કપિલપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યા પોતાનુ ભવન હતુ ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેઓ સર્વે તેમા પ્રવિષ્ટ થયા ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે પાચે પાંડવોને અને રાજવર કન્યા તે દ્રૌપદીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડી દીધા અને બેસાડીને તેણે તેમનો સફેદ, અને પીળા કળશોથી-એટલે કે ચાદી અને સોનાના કળશોથી અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવીને તેણે અગ્નિહોમ કરાવરાવ્યો અને તેની સાક્ષીમા પોતાની કન્યા [illegible] હસ્તમેળાપ તેઓની સાથે કરાવી દીધો

(तएण से [illegible] [illegible] इम

तद् यथा–अष्ट हिरण्यकोटीः, यावत्=अष्ट रजतकोटी, अष्ट सुवर्णकोटी, अष्ट 'पेसणकारीओ' प्रेषणकारिणीः, आज्ञाकारिणीः दासचेटीः–दासपुत्रीः, अन्य च विपुल धनकनक–यावत् धन–गणिमादिक, कनकम् अघटितस्वर्ण, यावच्छब्देन–रत्नानि–कर्केतनादीनि, मणयश्चन्द्रकान्ताद्या' मौक्तिकानि च शङ्खश्च प्रतीत एव शिलाप्रवालानि च विद्रुमाणि रक्तरत्नानि–पद्मरागादीनि तान्येव सद् विद्यमान यत् सार=प्रधान स्वापतेयं द्रव्यं तद् ददाति स्म ।

तत' खलु स द्रुपदो राजा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञः विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा वस्त्रगन्धादिभिर्यावत् सत्कारयति संमानयति, सत्कार्य संमान्य प्रतिविसर्जयति ॥ सू० २२ ॥

वरकण्णयाए इम एयारूव पीईदाण दलयइ, त जहा–अट्ठहिरण्ण कोडीओ जाव अट्ठपेसणकारिओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणकणग जाव दलयइ, तएण से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाणं विउलेण असण४ वत्थगध जाव पडिविसज्जेइ) इसके बाद द्रुपद राजाने राजवर कन्या उस द्रौपदी के लिये इतना इस प्रकार प्रीति दान दिया आठ हिरण्य कोटि–चादी के बने हुए आठ करोड आभूषण, सुवर्ण के बने हुए आठ करोड आभूषण यावत् आज्ञा कारिणी ८ आठ दासियाँ और भी बहुत सा गणिमादिक रूप धन, अघटित सुवर्ण, कर्केतनादि रत्न, चन्द्रकान्त आदि मणि, मौक्तिक, शंख, विद्रुम, पद्मरागादि रक्त रत्न। यह सब सारभूत द्रव्य उसके लिये प्रदान किया। इसके बाद द्रुपदराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को अशन, पान, खाद्य एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार एव वस्त्र गध आदि से सत्कृत सन्मानित कर अपने यहा से विदा कर दिया ॥ सू० २२ ॥

दलयइ, त जहा अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव अट्ठ पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्ण च विउल धणकणग जाव दलयइ, तएण से दुवए राया ताइ वासुदेव पामोक्खाण विउलेण असण ४ वत्थ गध जाव पडिविसज्जेइ)

ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને આ પ્રમાણે પ્રીતિદાન આપ્યુ કે આ૦ હિરણ્ય–કોટિ–ચાદીના આ૦ કરોડ આભૂષણો યાવત્ આજ્ઞામા રહેનારી આ૦ દાસીઓ અને બીજુ પણ ઘણુ ગણિમ વગેરે રૂપ ધન, અઘ-ટિત સુવર્ણ, કર્કેતન વગેરે રત્ન, ચન્દ્રકાત વગેરે મણિ, મૌક્તિક, શ ખ, વિદ્રુમ, પદ્મરાગ વગેરે રક્ત રત્નો આપ્યા આ બધુ સારભૂત ધન દ્રૌપદ ને આપ્યુ ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્ય રૂપ ચાર જાતના આહારો અને વસ્ત્ર, ગ ધ વગેરેથી સત્કૃત સન્માનિત કરીને પોતાના નગરથી વિદાય કર્યા. ॥ સૂત્ર ૨૨ ॥

त्यपुरस्य मध्यमध्येन यावत् स्वकं भवनमनुप्रविशति, ततः खलु द्रुपदो राजा पञ्च पाण्डवान् द्रौपदीं राजवरकन्यां 'पट्टय' पट्टक=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरो हयति=आरोहयति, दूरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः 'मज्जावेइ' मज्जयति=स्नपयति अग्निहोम विवाहविधिनाऽग्नी होम कारयति, पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपद्याश्च पाणि ग्रहणं कारयति, अत्र पञ्चानां पाण्डवानामिति सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु स द्रुपदो राजा द्रौपद्या राजवरकन्यायाः इममेतद्रूपं प्रीतिदानं यौतुकदानं ददाति,

मज्झं मज्झेणं जाव सयभवणं अणुपविसइ, तएणं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकन्नं पट्टयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावित्ता अग्गिहोमं कारवेइ, पंचण्हं पंडवाणं दोवइए य पाणिग्गहणं करावेइ,) इसके बाद धृष्टद्युम्नकुमार ने उन पांच पांडवों को एवं राजवर कन्या द्रौपदी को चारघंटों से युक्त उस अश्वरथ पर बैठाया-बैठाकर काम्पिल्यपुर नगर के बीच से होता हुआ वह जहां अपना भवन था वहां आया वहां आकर वह उसमें उन सब के साथ प्रविष्ट हुआ। इसके बाद द्रुपद राजा ने उन पांचों पांडवों को और राजवर कन्या उस द्रौपदी को एक पट्टक पर बैठा दिया-बैठाकर फिर उसने उनका श्वेत पीत कलशों से चांदी सोने के घड़ों से-अभिषेक करवाया अभिषेक करवा कर फिर उसने अग्नि होम करवाया-और उसकी साक्षी पूर्वक पांचों-पांडवों के साथ अपनी कन्या द्रौपदी का पाणि ग्रहण संस्कार करवा दिया। (तएणं से दुवए राया दोवइए राय

पविसइ, तएणं दुवए राया पंच पंडवे दोवइं रायवरकन्नं पट्टयं दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयापीएहिं कलसेहिं मज्जावेइ मज्जावित्ता अग्गिहोमं कारवेइ, पंचण्हं पंडवाणं दोवइए य पाणिग्गहणं करावेइ)

ત્યારપછી ધૃષ્ટદ્યુમ્ન કુમારે તે પાંચ પાંડવોને અને રાજવર કન્યા દ્રૌપદીને ચાર ઘંટવાળા તે અશ્વરથ ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને કંપિલપુર નગરની વચ્ચે થઈને જ્યાં પોતાનું ભવન હતું ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેઓ સર્વે તેમાં પ્રવિષ્ટ થયા ત્યારપછી દ્રુપદ રાજાએ તે પાંચે પાંડવોને અને રાજવર કન્યા તે દ્રૌપદીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડી દીધા અને બેસાડીને તેણે તેમનો સફેદ, અને પીળા કળશોથી-એટલે કે ચાંદી અને સોનાના કળશોથી અભિષેક કરાવડાવ્યો અભિષેક કરાવીને તેણે અગ્નિહોમ કરાવડાવ્યો અને તેની સાક્ષીમાં પોતાની કન્યા દ્રૌપદીનો હસ્તમેળાપ તેઓની સાથે કરાવી દીધો.

(तएणं से दुवए राया दोवइए रायवरकण्णाए इमं

सयाइं२ आवासाइ तेणेव उवा० तहेव जाव विहरंति, तएणं से पंडुराया हत्थिणाउरणयरं अणुपविसइ अणुपविसित्ता कोडुंबिय० सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–तुब्भेणं देवाणुप्पिया! विउलं असण४ तहेव जाव उवणेंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा तं विउलं असणं४ तहेव जाव विहरंति, तएणं से पंडुराया पंच पंडवे दोवइं च देविं पट्टयं दुरूहेइ दुरूहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति ण्हावित्ता कल्लाणकारिं करेइ करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेणं असण४ पुप्फवत्थेण सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं जाव पडिगयाइं ॥ सू० २३ ॥

टीका–'तएणं से' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु पाण्डु राजा तेषां वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणां करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्–एवं खलु हे देवानुप्रियाः! हस्तिनापुरे नगरे पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपद्याश्च देव्याः कल्याणकरो भविष्यति तत्–तस्मात् यूयं खलु हे देवानुप्रियाः–मामनुगृह्णन्त, अकालपरिहीनं=कालविलम्बरहितं–शीघ्रं समवसरत=आग-

'तएणं से पंडुराया' इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से पंडुराया) उस पांडुराजा ने (तेसिं वासुदेव पामोक्खाणं) उन वासुदेव प्रमुख (बहूणं राय० करयल एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवइए देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम

तएणं से पंडुराया इत्यादि–

टीकार्थ–(तएणं) त्यारपछी (से पंडुराया) ते पांडु राजाए (ते सिं वासुदेवपामोक्खाणं) ते वासुदेव प्रमुख

(बहूणं राय० करयल एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवइए, देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भेणं देवाणुप्पिया! मम अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं समोसरह)

मूलम्—तएण से पडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण बहूणं राय० करयल एव वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थि-णाउरे नयरे पंचण्ह पंडवाणं दोवइए य देवीए कल्लाणकरे भविस्सइ तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीण समोसरह, तएण वासुदेवपामोक्खा पत्तेयर जाव पहारेत्थ गमणाए। तए णं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दा० २ एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थि-णाउरे पचण्ह पडवाणं पच पासायवडिसए कारेह अब्भु-ग्गयमूसिय वण्णओ जाव पडिरूवे, तएण ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेति जाव करावेंति, तएण से पंडुए पचहिं पडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हयगयसपरिवुडे कपिल्लपुराओ पडि-निक्खमइ२ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए, तएणं से पडुराया तेसि वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता कोडुंबि० सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपा-मुक्खाणं बहूण रायसहस्साण आवासे कारेह अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छइ, तएणं से पडुराया तेसि वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयवलि० जहा दुवए जाव जहारिह आवासे दलयइ, तएण ते वासुदेव पा० बहवे ... —जेणेव

मेघकुमार-प्रासादवद् वर्णनं विज्ञेयम् यावद् अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टान् प्रतिरूपान्=शोभासौन्दर्यसम्पन्नान् । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः-'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=आज्ञां स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य हस्तिनापुरं गत्वा पञ्च प्रासादावतंसकान् यावत् कारयन्ति । ततस्तदनन्तरं पाण्डुराजा पञ्चभिः पाण्डवैः द्रौपद्या देव्या च सार्धं हयगजरथपदातिसपरिवृतः काम्पिल्यपुरात् प्रतिनिष्क्रामति-प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैवोपागतः ।

ततः खलु स पाण्डुराजा तेषां वासुदेवप्रमुखाणामागमनं ज्ञात्वा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः !

बहुत ऊँचे हो । इन प्रासादों का वर्णन प्रथम अध्ययन में उक्त मेघकुमार के प्रासादों जैसा जानना चाहिये । यावत् ये प्रासाद अनेक स्तम्भशत से युक्त हो-शोभा सौन्दर्य से सपन्न हों । (तएणं ते कोडुम्बियपुरिसा पडिसुणेति, जा करावेति) राजा की इस प्रकार की आज्ञा को उन कौटुम्बिक पुरुषों ने मान लिया और हस्तिनापुर जाकर उन्होंने पाच प्रासाद कथित रूपसे बनवा दिये । (तएणं से पडु० पचहिं पडवेहि दोवइए देवीए सद्धिं हय गय सपरिवुडे कपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए) इसके बाद वे पाडुराजा पाडवों और द्रौपदी देवी को साथ लेकर हय, गज, आदि चतुरगिणी सेना के साथ २ कांपिल्यपुर नगर से चल दिये-चलकर जहा हस्तिनापुर नगर था-वहा आये (तएणं से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमणं

પાચે પાડવો માટે પાચ ઉત્તમ મહેલ બનાવડાવો મહેલ ઊચા હોવા જોઈએ આ મહેલોનુ વર્ણન પહેલા અધ્યયનમા વર્ણવવામા આવેલા મેઘ કુમારોના મહેલો જેવુ જાણી લેવુ જોઈએ યાવત્ આ બધા મહેલો ઘણા સેકડો થાભલા ઓથી યુક્ત તેમજ શોભા તથા સૌદર્ય સપન્ન હોવા જોઈએ (तएणं ते कोडुबियपुरिसा पडिसुणेति जाव करावेति) આ જાતની રાજાની આજ્ઞાને કૌટુબિક પુરૂષોએ સ્વીકારી લીધી અને હસ્તિનાપુર જઈને તેઓએ કહેવા મુજબ જ પાચ મહેલો તૈયાર કરાવી દીધા

(तएणं से पडु० पचहिं पडवेहिं दोवइए देवीए सद्धिं हयगयसपरिवुडे कपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ २ जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए)

ત્યારપછી તે પાડુ રાજા પાચે પાડવો અને દ્રૌપદી દેવીને લઈને સાથે ઘોડા, હાથી વગેરેની ચતુરગિણી સેનાની સાથે કાંપિલ્યપુર નગરની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યા હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યા પહોચ્યા

(तएणं से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमण जाणित्ता कोडुबिय०

मन कुरुत । ततः खलु वासुदेवप्रमुखा प्रत्येक २ यावत् प्राधारयन् गमनाय= हस्तिनापुर नगर गन्तु प्रचला इत्यर्थः ।

ततः खलु स पाण्डुनामको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरे पञ्चानां पाण्डवानां पञ्च 'पासायवडिसए' प्रासादावतंसकान् कारयत । किं भूतानित्याह-'अब्भुग्गयमूसिय' अभ्युद्गतोच्छ्रितान्-अत्युच्चानित्यर्थः । वर्णकः-प्रथमाध्ययनोक्त-

---

अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीण समोसरह) हजारों राजाओं से अपने दोनों हाथों की अजलि करके और उसे शिर पर रखकर के बड़ी नम्रता के साथ नमस्कार करके-इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियो ! हस्तिनापुर नगर में पाच पाडवों और द्रौपदी देवी का कल्याणकारी उत्सव होगा इसलिये हे देवानुप्रियों ! आप सब मेरे ऊपर अनुग्रह करके शीघ्र से शीघ्र पधारें । (तएणं वासुदेवपामोक्खा पत्तेय २ जाव पहारेत्थ गमणाए) इस के बाद वे वासुदेव प्रमुख प्रत्येक जन वहां हास्तिना पुर जाने के लिये प्रस्थित हो गये । (तएणं से पडुराया कोडुम्बियपुरिस सद्दावेइ २ एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया हत्थिणाउरे पचण्ह पडवाण पच पासायवडिसए कारेह, अब्भुग्गयमुसिय वण्णओ जाव पडिरूवे) इतने में पाडुराजा ने कौटुम्बिकपुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो ! तुम लोग हस्तिना पुर जाओ वहा जाकर पाचों पाडवों के लिये पांच श्रेष्ट प्रासाद बनवाओ । ये प्रासाद

હજારો રાજાઓને પોતાના બન્ને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને ખૂબ જ નમ્રપણે નમસ્કાર કર્યા અને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો ! હસ્તિનાપુર નગરમા પાંચે પાડવો તેમજ દ્રૌપદી દેવીનો કલ્યાણકારી ઉત્સવ થશે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સૌ મારા ઉપર કૃપા કરીને સત્વરે ત્યા પધારો (तएणं वासुदेवपामोक्खा पत्तेय २ जाव पहारेत्थ गमणाए) ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ દરેક રાજા ત્યાથી હસ્તિનાપુર જવા ઉપડી ગયા

तएणं से पडुराया कोडुबियपुरिस सद्दावेइ २ एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया हत्थिणाउरे पचण्ह पडवाण पच पासायवडिसए कारेह, अब्भुग्गयमुसिय वण्णओ जाव पडिरूवे)

તે વખતે પાડુ રાજાએ કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે હસ્તિનાપુર જાઓ ... જઈને

उपागत्य तथैव यावद् विहरन्ति। ततः खलु स पाण्डु राजा हस्तिनापुर नगरमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्- यूयं खलु हे देवानुप्रियाः! विपुलम् अशनपानपानखाद्यस्वाद्य, उपस्कारयत, उपस्कार्य यत्रैव वासुदेवप्रमुखास्तत्रैवोपनयत। तथैव यावद् उपनयन्ति, ततस्ते कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव विपुलमशनादि चतुर्विधाऽऽहारमुपस्कारयन्ति उपस्कार्य यावद् वासुदेवादीनामन्तिके-उपनयन्ति=उपस्थापयन्ति।

नगर था वहा आगये। (तएणं से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव जहारिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइ २ आवासाइ तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरति) वासुदेव प्रमुख उन हजारों राजाओं का आगमन जानकर पाडुराजाने हर्षित एवं सतुष्ट होकर स्नान किया वायसादि पक्षियों के लिये अन्नादि का देने रूप बलि कर्म किया- जिस प्रकार द्रुपद राजाने यथा योग्य आवासस्थान इन्हों के लिये दिये थे उसी तरह पाडुराजा ने भी उन्हें जो जिस के योग्य स्थान था वह आवासस्थान दिया। पश्चात् वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहा अपने २ ठहरने के लिये आवासस्थान थे वहा गये वहा जाकर वे उसी तरह से ठहर गये। (तएण से पडूराया हत्थिणाउर नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडुबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया! विउल असण ४ तहेव जाव उव

(तएण से पडुराया तेसिं वासुदेवपामोक्खाण आगमण जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव जहारिह आवासे दलयति, तएण ते वासुदेव पा० बहवे रायसहस्सा जेणेव सयाइ २ आवासाइ तेणेव उवाग० तहेव जाव विहरति)

વાસુદેવ પ્રમુખ તે હજારો રાજાઓનુ આગમન સાભળીને હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ થઈને પાડુ રાજાએ સ્નાન કર્યુ કાગડા વગેરે પક્ષીઓના માટે અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું દ્રુપદ રાજાએ જેમ તે રાજાઓને યથા યોગ્ય આવાસ સ્થાનો રહેવા માટે આપ્યા હતા તેમજ પાડુ રાજાએ પણ તેઓ બધાને ઉચિત આવાસો આપ્યા ત્યારપછી તેઓ વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ જ્યા પોતપોતાના રોકાવાના આવાસો હતા ત્યા ગયા, ત્યા પહોચીને તેઓ ત્યા રોકાઈ ગયા

(तएण से पाडुराया हत्थिणाउरं नयर अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, कोडुबिय० सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया! विउल असण

हस्तिनापुरस्य नगरस्य बहिः प्रदेशे वासुदेवप्रमुखाणां बहूनां राजसहस्राणामावासान् कारयत, कीदृशानावासान् ? इत्याह–'अणेगखंभ' इत्यादि। अनेकस्तम्भशतसंनिविष्टान्, तथैव–यथाऽऽवासान् कारयितुं पाण्डुना कथितं, तथैव कारयित्वा कौटुम्बिकपुरुषा यावत् प्रत्यर्पयन्ति=राज्ञे निवेदयन्ति स्म। ततः खलु वासुदेवप्रमुखा बहू सहस्रसंख्यका राजानो यत्रैव हस्तिनापुरं तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

जाणित्ता कोडुंबिय० सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह) वहां आकर उन पांडुराजा ने उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का आगमन जानकर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और हस्तिनापुर नगर के बाहिर वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं को ठहरने के लिये आवासों को बनवाओ (अणेगखंभसय तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तएणं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति) ये आवास अनेक सेकडों स्तंभों से युक्त हों। इस प्रकार जैसे आवासों को बनवाने के लिये पांडु राजा ने उन कौटुम्बिक पुरुषों से कहा था–वैसे ही आवास उन कौटुम्बिक पुरुषों ने बनवादिये और बनवाकर पीछे इसकी खबर भी राजा को करदी। इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहां हस्तिनापुर

सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स बहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह)

ત્યાં આવીને તે પાંડુ રાજાએ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને આવી ગયેલા જાણીને પોતાના કૌટુંબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો જાઓ અને હસ્તિનાપુર નગરની બહાર વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને રહેવા માટે આવાસો બનાવો.

(अणेगखंभसय० तहेव जाव पच्चप्पिणंति, तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति)

આ બધા આવાસો સેકડો સ્તંભોથી યુક્ત હોવા જોઈએ આ રીતે પાંડુ રાજાએ જે જાતના આવાસો બનાવડાવવાનો હુકમ કર્યો હતો તે કૌટુંબિક પુરૂષોએ તે જ જાતના આવાસો બનાવડાવી દીધા અને બનાવડાવીને કામ પુરૂં થઈ જવાની રાજાને ખબર આપી ત્યારપછી તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું ત્યાં આવી ગયા.

स्नपयित्वा 'कल्लाणकारिं' कल्याणकारि-शुभकारकं कर्म कारयति, कारयित्वा तान् वासुदेवप्रमुखान् बहुसहस्रसंख्यकान् राज्ञो विपुलेन अशनपानखाद्यस्वाद्येन भोजयति, भोजयित्वा पुष्पवस्त्रादिभिः सत्कारयति, सम्मानयति, सत्कार्य सम्मान्य यावत् प्रतिविसर्जयति। ततः खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहुसहस्रसंख्यका राजानो यावत् प्रतिगताः ॥ सू०२३ ॥

मूलम्—तएणं ते पंच पंडवा दोवईए देवीए सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं ओरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरंति, तएणं से पंडू राया अन्नया कयाइं पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए

को और द्रौपदी देवी को एक पट्टक पर बैठाया—बैठाकर उन का श्वेत पीत कलशों से चादी और सोने के घडो से स्नान करवाया स्नान करवाकर फिर उसने उनका शुभकारक कर्म करवाया। (करित्ता ते वासुदेव पामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेण असण ४ पुप्फवत्थेण सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं जाव पडिगयाइं) शुभकारक कर्म करवाकर बाद में उन वासुदेव प्रमुख हजारों राजाओं का उस पांडुराज ने विपुल अशन पान आदिरूप चतुर्विध आहार से एवं पुष्प वस्त्रादि से खूब सत्कार किया सन्मान किया। यावत् फिर उन्हें अपने यहांसे अच्छी तरह से विदा कर दिया। इसके बाद वे वासुदेव प्रमुख हजारों राजा जहा २ से जो २ आये थे वहा २ चले गये ॥ सू० २३ ॥

પાંચે પાંડવો અને દ્રૌપદી દેવીને એક પટ્ટક ઉપર બેસાડયા અને બેસાડીને સફેદ તેમજ પીળા કળશોથી એટલે કે ચાંદી અને સોનાના કળશોથી તેમને સ્નાન કરાવ્યું સ્નાન કરાવ્યા બાદ તેમણે તેમની પાસેથી શુભ કર્મો કરાવડાવ્યા

(करित्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विउलेणं असण पुप्फवत्थेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ तएणं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूहिं जाव पडिगयाइं)

શુભ કર્મો કરાવ્યા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓને તે પાંડુ રાજાએ વિપુલ અશન-પાન વગેરે રૂપ ચતુર્વિધ આહારથી તેમજ પુષ્પ વસ્ત્ર વગેરેથીખૂબ જ સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું યાવત્ ત્યારપછી તેઓને ત્યાંથી સારી રીતે વિદાય કર્યા વાસુદેવ પ્રમુખ હજારો રાજાઓ પણ જ્યાંથી આવ્યા હતા ત્યાં જતા રહ્યા ॥ સૂત્ર ૨૩ ॥

तत खलु ते वासुदेवप्रमुखा बहवो राजानः स्नाताः कृतबलिकर्माणः=काकादिजीवेभ्यः कृतान्नादिसंविभागाः, तद् विपुलम् अशन पान खाद्य स्वाद्य तथैव-आस्वादयन्तो विस्वादयन्त परिभुञ्जाना यावद् विहरन्ति=आसते स्म। ततस्तदनन्तरं स पाण्डुराजा तान् पञ्च पाण्डवान् द्रौपदी च देवीं 'पट्टय' पट्टक=पट्टकोपरि 'दुरूहेइ' दूरोहयति=आरोहयति। आरोह्य श्वेतपीतैः कलशैः स्नपयति,

णेंति, तएण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलिकम्मा त विउल असण ४ तहेव जाव विहरति-तएण से पडुराया पचपडवे दोवइ च दोवि पट्टय दुरूहेइ, दुरूहित्ता सेयपीएहिं ण्हावेंति, ण्हावित्ता कल्लाण कारि करेइ) इस के बाद पाडुराजा ने हस्तिनापुर नगर में प्रवेश किया प्रवेश कर कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा हे देवानुप्रियो! तुम लोग विपुल मात्रामें अशनादि रूप चतुर्विध आहार बनवाओ बनवाकर फिर उसे जहा वासुदेव प्रमुख राजा ठहरे हुए हैं वहा लेजाओ। इस प्रकार की अपने राजाकी आज्ञानुसार उन्होंने वैसा ही किया-चतुर्विध आहार बनवाया और फिर उसे वासुदेव आदि राजाओ के पास पहुँचा दिया। आहार के पहुँचने पर उन वासुदेव प्रमुख राजाओं ने स्नान किया बलिकर्म किया-काक आदि जीवों के लिये कृत अन्नमें से विभाग देनेरूप कियाकी-बादमें उन्हों ने उस चतु र्विध आहार को किया। इसके पश्चात् पाडुराजा ने उन पाचों पाडवों

४ तहेव जाव उवणेंति, तएण ते वासुदेवपामोक्खा बहवे राया ण्हाया कयबलि कम्मा त विउल असण४ तहेव जाव विहरति-तएण से पडुराया पच पडवे दोवइं च देविं पट्टय दुरुहेइ, दुरुहित्ता सेयपीएहिं कलसेहिं ण्हावेंति ण्हावित्ता कल्लाणकारि करेइ)

ત્યારપછી પાડુરાજા હસ્તિનાપુર નગરમા પ્રવિષ્ટ થયા પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓએ કૌટુબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેઓને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો વિપુલ માત્રામા અશન વગેરે રૂપ ચાર જાતનો આહાર બનાવડાવો બનાવડાવીને તમે તે આહારને જ્યા વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓ રોકાયા છે ત્યા લઈ જાઓ, આ રીતે પોતાના રાજાની આજ્ઞા સાભળીને તે લોકોએ તે પ્રમાણે જ કર્યુ તેઓએ ચાર જાતના આહારો બનાવડાવ્યા અને ત્યારપછી તે આહારોને વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓની પાસે પહોચાડી દીધા આહાર પહોંચાડી દીધા બાદ તે વાસુદેવ પ્રમુખ રાજાઓએ સ્નાન કર્યું અને કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન ભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું ત્યાર પછી તેઓએ તે ચાર જાતના આહારને જમ્યા ત્યારબાદ રાજાએ તે

त्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ महरिहेण आसणेणं उवणिमंतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुरायं रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तएण से पंडूराया कोंती-देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लणारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं अस्संजयं अविरयं अपडिहयप-च्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भु-ट्ठेइ नो पज्जुवासइ ॥ सू० २४ ॥

टीका—'तएण ते' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते पञ्चपाण्डवा द्रौपद्या देव्या सार्धं 'कल्लाकल्लिं' कल्याकल्ये प्रतिदिवस वारंवारेण उदारान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहरन्ति । तत खलु स पण्डु राजाऽन्यदा कदाचित् पञ्चभि० पाण्डवैः कुन्त्या देव्या द्रौपद्या देव्या च सार्धं 'अंतो अंतेउरपरियाल'

'तएण ते पंच पंडवा' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते पंच पंडवा) वे पांचों पांडव (दोवईए देवीए) द्रौपदी देवी के साथ-(कल्लाकल्लिं वारंवारेण ओरालाइं भोग भोगाइं जाव विहरंति-तएण से पंडूराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धिं अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ) प्रतिदिन बारी बारी से उदारकाम भोगों को भोगने लगे एक दिन की बात है-कि पांडु राजा किसी एक समय पांचों पांडवों एवं अपनी पत्नी कुन्ती देवी और पुत्रवधू द्रौपदी

ટીકાર્થ—"तएण ते पंच पंडवा इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (ते पंच पंडवा) તે પાંચ પાંડવો (दोवईए देवीए) દ્રૌપદી દેવીની સાથે

(कल्लाकल्लिं वारवारेण ओरालाइं भोगभोगाइं जाव विहरंति-तएण से पंडूराया अन्नया कयाई पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए देवीए दोवईए देवीए य सद्धिं अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ)

દરરોજ વારાફરતી ઉદાર કામભોગ ભોગવવા લાગ્યા. એક દિવસની વાત

दोवइए देवीए य सद्धिं अंतो अंतेउरपरियालसद्धिं सपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ, इम च णं कच्छुल्लणारए दस णेणं अइभद्दए विणीए अतो२ य कलुसहियए मज्झत्थोवरिथए य अल्लीणसोमपियदसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए काल मियचम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए जन्नोवइयगणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे हत्थकयकच्छभीए पियगधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे सुवरणावरणिओवयणिउप्पयणि लेसणीसु य सकामणिअभिओगपण्णत्ति गमणीथभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केस वस्स य पज्जुन्नपईवसवअनिरुद्धणिसढ–उम्मुयसारणगयसुमुह दुम्मुयहातीण जायवाणं अद्धुट्ठाण कुमारकोडीण हिययदइए सथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए भडणाभिलासी बहुसु य सम रसयसपराएसु दसणरए समतओ कलहसदक्खिण अणुगवेस माणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाण आम तेऊण त भगवई पक्कमणिं गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभि लघयतो गामागरनगरनिगमखेडकव्वडमडबदोणमुहपट्टणासम सबाहसहस्समडिय थिमियमेइणीतल वसुह ओलोइतो रम्म हत्थि णाउर उवागए पडुरायभवणसि अइवेगेण समोवइए, तएणं से पडुराया कच्छुल्लनारय एज्जमाण पासइ पासित्ता पचहि पडवेहि कुतीए य देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ

रइयवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचित शोभित वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीयवस्त्रधारक'। तथा-'दडकमडलुहत्थे' दण्डकमण्डलुहस्तः-'जडामउडदित्तसिरए' जटामुकुटदीप्तशिरस्कः, जण्णोवइयगणेत्तियमुजमेहलावागलधरे' यज्ञोपवीतगणेत्रिकामुञ्जमेखलावल्कलधरः-तत्र यज्ञोपवीत यज्ञसूत्र गणेत्रिका-रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरण, मुञ्जमेखला-मुञ्जमय कटि बन्धनसूत्र वल्कल वृक्षत्वक्, तेषां धारकः स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत रुद्राक्षमालः, मुञ्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतवल्कल इत्यर्थः। 'हत्थकयकच्छभीए' हस्तकृतकच्छपिकः-हस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, 'पियगधव्वे' प्रियगन्धर्वः-गानप्रियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे' धरणिगोचरप्रधान-धरणिगोचराणा-भूमिचारिणा जनाना मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे, जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइयगणेत्तिय मुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से सुशोभित था। दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोमे था। जटारूपी मुकुट से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था। यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुञ्जमेखला-मुज का बना हुआ कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्हो ने धारण कररक्खी थी। हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रखी थी। गान इन्हे बहुत प्रिय था। भूमि गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यो कि ये आकाश मे भी विहार

(कालमियचम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइय गणेत्तियमुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य सकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे)

તેમનુ વક્ષસ્થળ કાળા હરણના ચર્મરૂપ ઉત્તરાસગથી શોભતુ હતુ દડ અને કમડળ તેમના હાથોમા હતા જટા રૂપી મુકુટથી તેમનુ મસ્તક પ્રકાશિત થઈ રહ્યુ હતું યજ્ઞ સૂત્ર-જનોઈ, ગણેત્રિકા-કાડામા પહેરવાની આભરણ રૂપ રૂદ્રાક્ષની માળા, મુજ-મેખલા-મુજનુ બનેલુ કેડમા પહેરવાનુ બધન સૂત્ર અને વૃક્ષકની છાલ તેઓએ ધારણ કરેલી હતી હાથમા તેઓએ કચ્છપિકા-વીણા ધારણ કરેલી હતી સગીત તેમને ખૂબ જ ગમતું હતુ ભૂમિ ગોચરીઓ વચ્ચે તેઓ પ્રધાન હતા કેમકે તેઓ આકાશમા વિચરણ કરતા

अन्तः=अन्तःपुरस्य प्रासादमध्ये अन्तःपुरपरिवारेण 'परिवाल' इति लुप्ततृतीयान्त साधं सपरिवृतः सिंहासनवरगतश्चापि विहरति। 'इम च' अस्मिन् समये खलु 'कच्छुल्लणारए' कच्छुल्लनाम्नाप्रसिद्धो नारदः दर्शनेन 'अइभद्दए' अतिभद्रकः=भद्रदर्शनः 'विणीए' विनीतः=नम्रो बाह्यत 'अतो य' अन्तश्च-कलुषहृदयः, 'मज्झत्थोवत्थिए य' माध्यस्थ्योपस्थित=बाह्यतो मध्यस्थभाव प्राप्तः 'अल्लीणसोमपियदसणे' आलीनसौम्यप्रियदर्शनः आलीनानामाश्रितानां सौम्यम्=आह्लादकं, प्रिय = प्रीतिकारकं दर्शन यस्य स तथा, सुरूपः - सुन्दराकृतिक, तथा-'अमइलसगलपरिहिए' अमलिनसकलपरिहित.=अमलिन सकलम्-अखण्डम् परिहित-वल्कलवस्त्ररूप परिधान यस्य स तथा, 'कालमियचम्मउत्तरासंग

के साथ अतःपुर के प्रासाद के भीतर अन्त पुरपरिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे-कि (इमच ण) इसी समय (कच्छुल्लणारए पण्डुरायभवणंसि अइवेगेण समोवइए दसणे ण अइभद्दए, विणीए, अतोय कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य, अल्लीणसोमपियदसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए) पाण्डुराजा के भवन में कच्छुल्लनाम से प्रसिद्ध नारद गगन-आकाश-मार्ग से बड़े वेगसे उतर कर आये। नारद देखने में अति भद्र थे। ऊपर से बड़े विनीत थे। परन्तु भीतर में इनका हृदय बहुत अधिक कलुषित था। केवल ऊपर से ये माध्यस्थ भाव सपन्न थे। अपने आश्रित व्यक्तियों को इनका दर्शन आह्लादक एव प्रीति कारक होता था। आकृति उनकी बड़ी सुन्दर थी। इनका वल्कल रूप परिधान अमलिन-साफ स्वच्छ और खण्ड रहित था। (कालमिय

છે કે તે પાડુ રાજા કોઈ એક વખતે પાચે પાડવો, પોતાની પત્ની કુતી દેવી અને પુત્ર વધુ દ્રૌપદીની સાથે રણુવાસના મહેલની અદર પોતાના પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા (इम च ण) તે વખતે

(कच्छुल्लणारए पण्डुरायभवणंसि अइवेगेण, समोवइए दसणे ण अइभद्दए विणीए अतोय कलुसहियए मज्झत्थोवत्थिए य, अल्लीणसोमपियदसणे सुरूवे अमइलसगलपरिहिए)

પાડુ રાજાના ભવનમા કચ્છુલ્લ નામથી પ્રકાશેલા નારદ ગગન-આકાશ માર્ગથી બહુ જ વેગથી ઉતરીને આવ્યા નારદ દેખાવમા અત્યત ભદ્ર હતા ઉપર ઉપરથી તેઓ એકદમ વિનમ્ર હતા પણ અતર તેમનુ મન ખૂબ જ કલુષિત હતુ ફક્ત ઉપર ઉપરથી જ તેઓ માધ્યસ્થ ભાવ સપન્ન હતા આશ્રિત વ્યક્તિઓને તેમનુ દર્શન આહ્લાદક અને પ્રીતિકારક હતુ તેમની આકૃતિ ખૂબ જ સુદર હતી તેમનુ વલ્કલ રૂપ પરિધાન, એકદમ સ્વચ્છ-નિર્મળ હતુ અને ખડરહિત હતુ

रइयवच्छे' कालमृगचर्मोत्तरासगरचितवक्षाः-कृष्णमृगचर्मोत्तरासङ्गेन रचित शोभित वक्षो यस्य स तथा, कृष्णमृगचर्मोत्तरीयवस्त्रधारक'। तथा-'दंडकमंडलुहत्थे' दण्डकमण्डलुहस्तः-'जडामउडदित्तसिरए' जटामुकुटदीप्तशिरस्कः, जण्णोवइयगणेत्तियमुंजमेहलावागलधरे' यज्ञोपवीतगणेत्रिकामुञ्जमेखलावल्कलधरः-तत्र यज्ञोपवीत यज्ञसूत्र गणेत्रिका-रुद्राक्षकृत कलाचिकाभरण, मुञ्जमेखला-मुञ्जमय कटि बन्धनसूत्र वल्कल वृक्षत्वक्, तेषां धारकः स्कन्धोपरियज्ञसूत्रधारी, करमूले धृत रुद्राक्षमालः, मुञ्जमयकटिसूत्रधारी, शरीरे परिधृतवल्कल इत्यर्थः। 'हत्थकयकच्छभीए' हस्तकृतकच्छपिकः-हस्ते कृता कच्छपिका-वीणा येन स तथा, 'पियगंधव्वे' प्रियगन्धर्वः-गानप्रियः, 'धरणिगोयरप्पहाणे' धरणिगोचरप्रधान-धरणिगोचराणा-भूमिचारिणा जनाना मध्ये प्रधानस्तस्या काशेऽपि विहरणशीलत्वात्

चम्मउत्तरासगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे, जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइयगणेत्तिय मुजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए, पियगंधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, संवरणावरणिओवयणिउप्पयणी लेसणीसुयसकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसु य बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे) इनका वक्षस्थल काले मृग के चर्म रूप उत्तरासग से सुशोभित था। दण्ड और कमण्डलु इनके हाथोमें था। जटारूपी मुकुट से इनका मस्तक दीप्त हो रहा था। यज्ञसूत्र-जनेऊ, गणेत्रिका कलाई का आभरण रूप रुद्राक्ष की माला, मुञ्जमेखला-मुंज का बना हुआ कटि बन्धन सूत्र, और वृक्ष की छाल इन्हो ने धारण कर रक्खी थी। हाथमें कच्छपिका-वीणा ले रखी थी। गान इन्हें बहुत प्रिय था। भूमि गोचरियों के बीच में ये प्रधान थे-क्यो कि ये आकाश मे भी विहार

(कालमियचम्मउत्तरासंगरइयवच्छे दण्डकमण्डलुहत्थे जडामउडदित्तसिरए, जन्नोवइय गणेत्तियमुंजमेहलवागलधरे, हत्थकयकच्छभीए पियगंधव्वे, धरणिगोयरप्पहाणे, संवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य सकामणि अभिओगपण्णत्ति गमणीथंभणीसुय बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु विस्सुयजसे)

તેમનુ વક્ષસ્થળ કાળા હરણના ચર્મરૂપ ઉત્તરાસંગથી શોભતુ હતુ દંડ અને કમંડળ તેમના હાથોમા હતા જટા રૂપી મુકુટથી તેમનુ મસ્તક પ્રકાશિત થઈ રહ્યુ હતું યજ્ઞ સૂત્ર-જનોઈ, ગણેત્રિકા-કાંડામા પહેરવાની આભરણ રૂપ રૂદ્રાક્ષની માળા, મુંજ-મેખલા-મુંજનુ બનેલુ કેડમા પહેરવાનુ બંધન સૂત્ર અને વૃક્ષની છાલ તેઓએ ધારણ કરેલી હતી હાથમા તેઓએ કચ્છપિકા-વીણા ધારણ કરેલી હતી સંગીત તેમને ખૂબ જ ગમતું હતુ ભૂમિ ગોચરીઓને વચ્ચે તેઓ પ્રધાન હતા કેમકે તેઓ આકાશમા વિચરણ કરતા

" सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य " संवरण्यावरण्यवपतन्युत्पतनी श्लेषणीषु च ' सवरणी-स्वस्यान्तर्धानकारिणी विद्या, आवरणी-परस्यान्तर्धान कारिणी विद्या, अवपतनीअधोऽवतरणी विद्या, उत्पतनी-ऊर्ध्वगमनकारिणी विद्या, श्लेषणी-वज्रलेपादिवत् सन्धानकारिणी विद्या, तासु, तथा-' सकामणि अभि ओगपण्णत्ति गमणीथमणीसु य ' सक्रमण्यभियोगप्रज्ञप्तिगमनीस्तम्भनीषु च-सक्रामणी-विद्या-विशेषः यया-परशरीरादौ प्रवेष्टु शक्नोति, सा विद्या, अभि योग. स्वर्णादिनिर्माणविद्या वशीकरणविद्या च, प्रज्ञप्ति.=अविदितार्थबोधिनी गमनी

करते थे। सवरणी, आवरणी अवपतनी, उत्पतनी, श्लेषणी इन विद्या ओं में तथा सक्रमणी, अभियोग, प्रज्ञप्ति, गमनी स्तम्भिनी इन नाना प्रकार की विद्याधर सबन्धी विद्याओं में इनकी कीर्ति विख्यात थी। जिस विद्या के प्रभाव से अपने आपको अन्तर्धान कर दिया जाता जाता है उसका नाम सवरणी विद्या है। दूसरा जिस विद्या से अन्त र्धान करदिया जाता है उस विद्या का नाम आवरणी विद्या है। जिस विद्या के प्रभाव से ऊपर से नीचे उतरा जाता है उसका नाम अव पतनी और जिसके प्रभाव से उर्ध्व में गमन किया जाता है उसका नाम उत्पतनी विद्या है। वज्रलेप आदि की तरह जो चिपका देती है वह श्लेषणी विद्या है। जिस विद्या के बल से दूसरे के शरीरमें प्रविष्ट होना होता है-ऐसी परशरीरप्रवेशकारिणी विद्याका नाम सक्रमणी विद्या है। स्वर्ण आदि के बनाने की जो निपुणता है-तब परको

હતા સવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા ઓમા તેમજ સક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞપ્તિ, ગમની, સ્તભની આ અનેક જાતની વિદ્યાધર સબધી વિદ્યાઓમા તેમની કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલી હતી જે વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સવરણી વિદ્યા છે જે વિદ્યાથી બીજાને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે જે વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના પ્રભાવથી ઉર્ધ્વ (આકાશ) મા ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનુ નામ ઉત્પ તની છે વ[illegible] વગેરેની જેમ જે ચોટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે વિદ્યા [illegible] ના શરીરમા પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી વિ[illegible] છે સોનુ વગેરે બનાવવામા જે નિપુણતા છે જે શક્તિ છે તે વિદ્

-गमनप्रकर्षसाधिका-आकाशगामिनी च विद्याविशेषः-स्तम्भनी-स्तम्भनकारिणी विद्या, तासु 'बहुसु विज्जाहरीसु विज्जासु' बहुषु-नानाविधासु विद्याधरीषु=विद्याधर सम्बन्धिषु विद्यासु 'विस्सुयजसे' विश्रुतयशा -विद्यासु नैपुण्यात्=विख्यातकीर्तिः, इष्ट =प्रियः, रामस्य=बलदेवस्य केशवस्य=कृष्णवासुदेवस्य च पुन केषा प्रियइत्याह-' पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धनिसढउम्मुयसारणगयसुमुहदुम्मुहाईण जायवाण ' प्रद्युम्न प्रतीपशाम्बानिरुद्धनिषधोल्मुकसारणगजसुमुखदुर्मुखादीना यादवानाम्, प्रद्युम्नादीना सख्यामाह-प्रद्युम्न, प्रतीप, शाम्बः, अनिरुद्ध', निषधः, उल्मुकः,

वश मे करने कि जो शक्ति है उस विद्या का नाम अभियोग विद्या है। अविदित अर्थ जिस के प्रभाव से विदित हो जावे वह प्रज्ञप्ति विद्या गमन प्रकर्ष की साधक तथा आकाश में गमन कराने वाली विद्या गमनी विद्या स्तंभन कराने वाली विद्यास्तम्भिनी विद्या है। (इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंब अनिरुद्धणिसढउम्मुय सारण गयसुमुह दुम्मुहातीण जायवाण अद्भुट्ठाण कुमारकोडीण हियदइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, भंडणाभिलासी, बहुसु य समर सयसपराएसु दंसणरए, समतओ कलहसदक्खिण अणुगवेसमाणे, असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाण, आमतेऊण त भगवई पक्कमणि गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभिलघयतो गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्समंडिय थिमियमेइणीतल वसुह आलोइंतो रम्म हत्थिणाउर उवागए) बलदेव एव कृष्ण वासुदेव को ये इष्ट थे तथा साढे तीन करोड, प्रद्युम्न, प्रतीप, साम्ब, अनिरुद्ध निषध उल्मुक, सारण, गज सुकुमाल सुमुख दुर्मुख

વિદ્યા છે અવિદિત અર્થ જેના પ્રભાવથી જાણી શકાય તે પ્રજ્ઞપ્તિ વિદ્યા, ગમન પ્રકર્ષની સાધિકા તેમજ આકાશમા ગમન કરનારી વિદ્યા ગમની વિદ્યા કહેવાય છે સ્તભન કરાવનારી વિદ્યા સ્તભની વિદ્યા છે (इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्नपईवसंबअनिरुद्धणिसढउम्मुयसारणगयसमुहदुम्मुहतीण जायवाण अद्धुट्ठाणकुमारकोडीण हियदइए संथवए कलहजुद्धकोलाहलप्पिए, भंडणाभिलासी, बहुसयसमरसयसंपराएसु दंसणरए समतओ कलहसदक्खिण अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाण, आमतेऊण त भगवई, पक्कमणि गगणगमणदच्छ उप्पइओ गगणमभिलघयतो गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडबदोणमुहपट्टणासमसंवाहसहस्सम डिय थिमिण मेइणीतल वसुह आलोइंतो रम्म हत्थिणाउर उवागए) બળદેવ તેમજ કૃષ્ણ વાસુદેવને તેઓ ઈષ્ટ હતા અને સાડા ત્રણ કરોડ પ્રદ્યુમ્ન, પ્રતીપ, સામ્બ, અનિરૂધ્ધ, નિષધ, ઉત્સુક, સારણ, ગજ સુકુમાલ, સુમુખ દુર્મુખ વગેરે યદાય કુમારોને માટે તેઓ હૃદયદયિત હતા એટલે કે ખૂબ જ પ્રિય હતા એટલા

"सवरणावरणिओवयणिउप्पयणिलेसणीसु य" संवरण्यावरण्यवपतन्युत्पतनी श्लेषणीषु च ' संवरणी-स्वस्यान्तर्धानकारिणी विद्या, आवरणी-परस्यान्तर्धान कारिणी विद्या, अवपतनी-अधोऽवतरणी विद्या, उत्पतनी-ऊर्ध्वगमनकारिणी विद्या, श्लेषणी-वज्रलेपादिवत् सन्धानकारिणी विद्या, तासु, तथा-' संक्रामणि अभि ओगपण्णत्ति गमणीथमणीसु य ' संक्रमण्यभियोगप्रज्ञप्तिगमनीस्तम्भनीषु च-संक्रामणी-विद्या-विशेषः यया-परशरीरादौ प्रवेष्टुं शक्नोति, सा विद्या, अभि योगः स्वर्णादिनिर्माणविद्या वशीकरणविद्या च, प्रज्ञप्तिः=अविदितार्थबोधिनी गमनी

करते थे। संवरणी, आवरणी अवपतनी, उत्पतनी, श्लेषणी इन विद्या ओं में तथा संक्रमणी, अभियोग, प्रज्ञप्ति, गमनी स्तम्भिनी इन नाना प्रकार की विद्याधर संबन्धी विद्याओं में इनकी कीर्ति विख्यात थी। जिस विद्या के प्रभाव से अपने आपको अन्तर्धान कर दिया जाता जाता है उसका नाम संवरणी विद्या है। दूसरा जिस विद्या से अन्त र्धान करदिया जाता है उस विद्या का नाम आवरणी विद्या है। जिस विद्या के प्रभाव से ऊपर से नीचे उतरा जाता है उसका नाम अव पतनी और जिसके प्रभाव से उर्ध्व में गमन किया जाता है उसका नाम उत्पतनी विद्या है। वज्रलेप आदि की तरह जो चिपका देती है वह श्लेषणी विद्या है। जिस विद्या के बल से दूसरे के शरीरमें प्रविष्ट होना होता है-ऐसी परशरीरप्रवेशकारिणी विद्याका नाम संक्रमणी विद्या है। स्वर्ण आदि के बनाने की जो निपुणता है-तथ परको

હતા સંવરણી, આવરણી, અવપતની, ઉત્પતની, શ્લેષણી આ બધી વિદ્યા ઓમાં તેમજ સંક્રમણી, અભિયોગ, પ્રજ્ઞપ્તિ, ગમની, સ્તંભની આ અનેક જાતની વિદ્યાધર સંબંધી વિદ્યાઓમાં તેમની કીર્તિ ચોમેર પ્રસરેલી હતી જે વિદ્યાના પ્રભાવથી પોતાની જાતને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે સંવરણી વિદ્યા છે જે વિદ્યાથી બીજાને અદૃશ્ય કરી શકાય છે તે આવરણી કહેવાય છે જે વિદ્યાના પ્રભાવથી ઉપરથી નીચે ઉતરી શકાય છે તે અવપતની અને જેના પ્રભાવથી ઉર્ધ્વ (આકાશ) માં ગમન કરી શકાય છે તે વિદ્યાનું નામ ઉત્પ તની છે વજ્ર લેપ વગેરેની જેમ જે ચોંટાડી દે છે તે શ્લેષણી વિદ્યા છે જે વિદ્યાના બળથી બીજાના શરીરમાં પ્રવેશી શકાય એવી પરકાય પ્રવેશ કરિણી વિદ્યાનું નામ સંક્રમણી વિદ્યા છે સોનું વગેરે બનાવવામાં જે નિપુણતા છે અને બીજાને વશવર્તી કરવાની જે શક્તિ છે તે

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये बलवन्त नेमिनाथापेक्षया तेषाम्, 'आमतेऊण त भगवई' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्याह—' पक्कमणि ' प्रक्रमणीं=प्रकृष्टगमनशक्ति शालिनीं 'गगणगमणदच्छ' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पइओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडवदोणमुहपट्टणासमसवाहसहस्समडिय' ग्रामाकर नगरनिगमखेटकर्बटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्ग्राम खेट= धूलीप्रकार, कर्बट=कुत्सितनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिनास्ति तन्मडम्ब यत्र जल स्थलमार्गाभ्या, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तन=द्वेधा-जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स सवाह एतैः सहस्रैर्मण्डितं, स्तिमित- मेदिनीतल, ' वसुह' वसुधा भूमि ' ओलोइतो ' अवलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्ति नापुर नगरमुपागत' पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

तत खलु स पाण्डुराजा कच्छुल्लनारय ' कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति-दृष्ट्वा पञ्चभि पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

दशार्ह थे उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे। गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे। ये नारद, गमन से आकशतल को उल्लघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्बट, मडब, द्रोणमुख, पत्तन, सबाह इनके सहस्रों से मडित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वहा से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाडुराज के भवन में पहुँचे। ऐसा सबध यहां लगाना (तएणं से पंडूराया कच्छुल्लनारय एज्जमाणं पासइ) इस के बाद पाडुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पासित्ता) तो

ગમનમા વિશિષ્ટ શક્તિ આપનારી અને આકાશમા ઉડાડીને લઇ જનાર તે ભગવતી પ્રક્રમણી વિદ્યાના બળથી તેઓ આકાશમા ઉડતા રહેતા હતા આ રીતે આ નારદ ગમનથી આકાશને ઓળગીને સહસ્રો ગ્રામ, આકર નગર, નિગમ ખેટ કર્બટ, મડબ, દ્રોણમુખ, પત્તન,સબાહોથી, મ ડિત અને સ્તિમિત પૃથ્વીને જોતા રમણીય હસ્તિનાપુર નગરમા આવ્યા અને ત્યાથી આકાશ માર્ગમા થઇને પાડુરાજના ભવનમા પહોચ્યા (तएण से पाडुराया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) ત્યારબાદ પાડુરાજાએ કચ્છુલ્લનારદને જ્યારે આવતા જોયા (पासित्ता) ત્યારે જોઇને (प चर्हि प डवेहिं कुतीए देवीए सद्धि आसणाओ

सारण', गजसुकुमाल', सुमुखः, दुर्मुख, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषा ' अद्धुट्ठाणं कुमारकोडीण ' अर्धचतुर्थीना कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिमिताना यादव कुमाराणामित्यर्थः ' हिययदइए ' हृदयदयितः=हृदयप्रियः, ' सथावए ' संस्ता वकः-यादवाना प्रशसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवाद , युद्ध= शस्त्रादिभिः प्रहरण, कोलाहलो=जनाना महाध्वनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका यस्य स तथा, ' भंडणाभिलासी ' भण्डनाभिलाषी=भण्डन राटि-कलह 'राड ' इति भाषाया तस्याभिलाषी तथा-बहुषु च समरशतसपरायेषु=समरशतसग्रामेषु दर्शनरत =दर्शनाऽऽसक्त., ' समतओ ' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्पर च कलह ' सदक्खण ' सदाक्षण=सर्वस्मिन क्षणे ' अणुगवेसमाणे ' अनुगवेषयन्=अन्वेष यन् , ' असमाहिकरे ' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्थैर्यकर केषा चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—' दसारवरवीरपुरिसतिलोक्कबलवगाण ' दशार्हवरवीर पुरुषत्रैलोक्यबलवता-दशार्हा.-समुद्रविजयादयो दशसख्यका त एव वरा श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन्त प्रिय थे। इसी कारण यादवोंके प्रशसक थे। कलहविवाद युद्ध एव मनुष्यो का कोलाहल ये सब इन्हें बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राड (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसग्राम के देखने में इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કલહ-કકાસ, વિવાદ, યુદ્ધ અને માણસોનો શોરબકોર આ બધુ તેમને બહુ જ ગમતુ હતુ આ બધાથી તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કજીયો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એટલે કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કકાસ કજીયો કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક જોતા રહેતા હતા સેકડો યુદ્ધોના બીભત્સ દશ્ય જોવામા તેમને ખૂબ જ આનદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમા જ ચોટી રહેતા હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોકયમા સવિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરુષ સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ ... તા.

वीराः पुरुषास्त्रैलोक्ये वलवन्त नेमिनाथापेक्षया तेषाम् , 'आमतेऊण त भगवई ' आमन्त्र्य=प्रयुज्य ता भगवतीं-विद्या, कीदृशीं विद्यामित्याह—' पक्कमणिं ' प्रक्रमणीं=प्रकृष्टगमनशक्ति शालिनीं 'गगणगमणदच्छ' गगनगमनदक्षाम्=आकाशे गमने समर्थाम् 'उप्पइओ' उत्पतितः, गगनमभिलङ्घयन् उड्डीय गमनेनाकाशतलमुल्लङ्घयन् 'गामागरनगरनिगमखेडकब्बडमडवदोणमुहपट्टणासमसबाहसहस्समडिय' ग्रामाकर नगरनिगमखेटकर्बटमडम्बद्रोणमुखपत्तनाश्रमसवाहसहस्रमण्डित, तत्र अष्टादशकरग्राह्यो ग्रामः, आकरः=स्वर्णाद्युत्पत्तिभूमिः, अविद्यमानकरं नगर, निगम=वणिग्ग्राम खेट= धूलीप्राकार,कर्बट=कुत्सितनगर, यत्र योजनान्तराले ग्रामादिर्नास्ति तन्मडम्ब यत्र जल- स्थलमार्गाभ्या, भाण्डान्यागच्छति तत् द्रोणमुख, पत्तनं=द्विधा—जलपत्तन स्थलपत्तन, यत्र पर्वतादिदुर्गे लोका धान्यानि संवहति स संवाह एतैः सहस्रैर्मण्डित, स्तिमित- मेदिनीतल, ' वसुह' वसुधा भूमि ' ओलोइतो ' अवलोकयन्=पश्यन् रम्य हस्ति नापुर नगरमुपागतः पाण्डुराजभवनेऽतिवेगेन समुपेतः=गगनादवतीर्ण इत्यर्थः ।

तत खलु स पाण्डुराजा कच्छुल्लनारय ' कच्छुल्लनारदम् आगच्छन्त पश्यति–दृष्ट्वा पञ्चभि पाण्डवैः कुन्त्या च देव्यासार्धमासनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

दशार्ह थे उनके ये सदा चित्त के विक्षेप कारक बने रहते थे। गमन में विशिष्ट शक्ति प्रदान करने वाली एव आकाश में उठाकर ले चलने वाली उस भगवती प्रक्रमणी विद्या को प्रयुक्त करके ये आकाश में उड़ा करते थे। ये नारद, गमन से आकशतल को उल्लघन करते हुए ग्राम, आकर, नगर, निगम खेट, कर्बट, मडंब, द्रोणमुख, पत्तन, सबाह इनके सहस्रों से मडित हुई ऐसी स्तिमितमेदनीतलवाली वसुधा-भूमि को देखते हुए रम्य हस्तिनापुर नगर में आये और वश से गगनमार्ग से होकर फिर ये पाडुराज के भवन में पहुँचे। ऐसा सबध यहां लगाना (तएणं से पंडूराया कच्छुल्लनारय एज्जमाणं पासइ) इस के बाद पाडुराजा ने कच्छुल्ल इन नारद को आते हुए जब देखा (पासित्ता) तो

ગમનમા વિશિષ્ટ શક્તિ આપનારી અને આકાશમા ઉડાડીને લઇ જનાર તે ભગવતી પ્રક્રમણી વિદ્યાના બળથી તેઓ આકાશમા ઉડતા રહેતા હતા આ રીતે આ નારદ ગમનથી આકાશને ઓળગીને સહસ્રો ગ્રામ, આકર નગર, નિગમ ખેટ કર્બટ, મડબ, દ્રોણમુખ, પત્તન,સબાહોથી, મ ડિત અને સ્તિમિત પૃથ્વીને જોતા રમણીય હસ્તિનાપુર નગરમા આવ્યા અને ત્યાથી આકાશ માર્ગમા થઇને પાડુરાજના ભવનમા પહોચ્યા (तएण से पाडुराया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ) ત્યારબાદ પાડુરાજાએ કચ્છુલ્લનારદને જ્યારે આવતા જોયા (पासित्ता) ત્યારે જોઇને (पचहिं पडवेहिं कुतीए देवीए सद्धि आसणाओ

मारणः, गजसुकुमालः, सुमुखः, दुर्मुख, इत्यादयो यादवकुमारास्तेषा 'अद्भुट्ठाणं कुमारकोडीणं' अर्धचतुर्थीनां कुमारकोटीनां च सार्धत्रिकोटिमितानां यादवकुमाराणामित्यर्थः 'हिययदइए' हृदयदयितः=हृदयप्रियः, 'सथावए' सस्तावकः-यादवानां प्रशंसकः, तथा-कलहयुद्धकोलाहलप्रियः=कलहो=विवाद, युद्ध= शस्त्रादिभि' प्रहरण, कोलाहलो=जनानां महाध्वनिः, एते प्रियाः प्रमोदजनका यस्य स तथा, 'भंडणाभिलासी' भण्डनाभिलाषी=मण्डनं राटि -कलह, 'राड' इति भाषायां तस्याभिलाषी तथा-बहुषु च समरशतसम्परायेषु=समरशतसंग्रामेषु दर्शनरत =दर्शनाऽऽसक्तः, 'समतओ' समन्ततः सर्वप्रकारेण-परस्परं च कलह 'सदक्खणं' सदाक्षणं=सर्वस्मिन् क्षणे 'अणुगवेसमाणे' अनुगवेषयन्=अन्वेषयन्, 'असमाहिकरे' असमाधिकरः-चित्तविक्षेपकारकः चित्तस्यास्थैर्यकर. केषां चित्तस्य विक्षेपकइत्याह—'दसारवरवीरपुरिसतिलोकबलवगाणं' दशार्हवरवीर पुरुषत्रैलोक्यबलवतां-दशार्हाः-समुद्रविजयादयो दशसंख्यका त एव वराः श्रेष्ठाः

इत्यादि यादवकुमारों के लिये ये हृदय दयित थे-अत्यन्त प्रिय थे। इसी कारण यादवोंके प्रशंसक थे। कलहविवाद युद्ध एवं मनुष्यो का कोलाहल ये सब इन्हे बहुत अधिक अच्छे लगते थे। आनन्द जनक होते थे। राड़ (लडाई) के ये अभिलाषी बने रहते थे। अर्थात् हर एक जगह किसी न किसी रूप में परस्पर में लोगों में तकरार, कजिया कैसे उत्पन्न हो इस बात का इन्हें विशेष ध्यान रहता था। समर शतसंग्राम के देखने में इन्हें विशेष हर्षोल्लास होता था। सब प्रकार से परस्पर में सब समय में ये कलह की गवेषणा करने में ही लगे रहते थे। नेमिनाथ की अपेक्षा त्रैलोक्य में विशिष्ट बलवाली जो श्रेष्ठ वीर पुरुष समुद्र विजयादि दश

માટે જ તેઓ યાદવોના વખાણ કરનારા હતા કલહ-કંકાસ, વિવાદ, યુધ્ધ અને માણસોનો શોરબકોર આ બધું તેમને બહુ જ ગમતું હતું આ બધાથી તેમને ખૂબ જ મજા પડતી હતી, કજીયો તેમને ખૂબજ ગમતો હતો એટલે કે દરેક સ્થાને ગમે તે કારણને લીધે વચ્ચે પરસ્પર કલહ-કંકાસ કજીયો કેવી રીતે શરૂ થાય આ વાતની તેઓ તક જોતા રહેતા હતા સેંકડો યુદ્ધોના બીભત્સ દશ્ય જોવામાં તેમને ખૂબ જ આનંદનો અનુભવ થતો હતો તેઓ બધી રીતે રાત અને દિવસ એકબીજાને લડાવવાની શોધમાં જ ચોંટી રહેતા હતા નેમિનાથની અપેક્ષા ત્રૈલોકયમાં સવિશેષ બળવાન શ્રેષ્ઠ વીર પુરુષ સમુદ્ર વિજય વગેરે દશ દશાર્હો હતા તેમના ચિત્તને તેઓ કષ્ટ ... તા.

संयतस्तथा विधो न भवति यः सोऽसंयतः=संयमरहित इत्यर्थः, अविरत=अतीत कालिकपापाज्जुगुप्सापूर्वकं, भविष्यति च संवरपूर्वकमुपरतो निवृत्तो विरतस्तथा विधो न भवति यः सोऽविरतः, विरतिरहितः, अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा प्रतिहत=वर्तमानकाले स्थित्यनुभागह्रासेन नाशित तथा प्रत्याख्यात=पूर्वकृतातिं-

उनके लिये तीन वार आदक्षिण प्रदक्षिण किया-करके उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे महान् पुरुषों के बैठने योग्य आसन पर बैठने के लिये प्रार्थना की-इस के बाद वे कच्छुल्ल नारद जल के छींटो से सिक्त हुए आसन पर कि जो दर्भ के ऊपर आस्तीर्ण था बैठ गये। बैठकर उन्होंने पाडु राजा से राज्य की यावत् अतः पुर की कुशल वर्ता पूछी। उनके पूछने पर पांडु राजाने कुन्ती देवी ने एव पांचों पाडवों ने उन कच्छुल्ल नारद का खूब आदर किया यावत अच्छी तरह से उनकी पर्युपासना की। द्रौपदी ने उन्हें असंयत, अविरत एव अप्रतिहत प्रत्याख्यतपापकर्मा जानकर उनका आदर नहीं किया, उनके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उनके आने पर उठी। वर्तमान कालिक सर्व सावद्य अनुष्ठान से जो निवृत्त होता है वह संयत है-ऐसा संयत जो नही होता है वह असंयत कहलाता है। अतीत काल में हुए पापों से जुगु-प्सा पूर्वक और भविष्यत्काल में उनसे संवर पूर्वक जो उपरत होता

સામે જઇને તેમણે ત્રણવાર તેમની ચોમેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી ત્યારપછી તેમણે વદન તેમજ નમન કર્યાં અને પછી તેમને પોતાના કરતા મોટા માણસોને બેસવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનતી કરી ત્યારબાદ તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાંટાઓથી ભીના પાથરેલા દર્ભના આસન ઉપર બેસી ગયા બેસીને તેઓએ પાડુરાજાને રાજ્યની યાવત્ રણવાસની કુશળવાર્તા પૂછી પાડુરાજા, કુતીદેવી અને પાચે પાડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર કર્યો યાવત્ સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો નહિ તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને જ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે ઊભી થઇ નહિ વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવદ્ય અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સયત છે, આ વ્યાખ્યા મુજબ જે સયત નથી તે અસ યત કહેવાય છે ભૂતકાળમા થઇ ગયેલા પાપકર્મોથી જુગુપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્ય કાળમા તેમનાથી સવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિરતિથી રહિત છે વર્તમાનકાળમા જેમા

कच्छुल्लनारद सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि. कृत्वः – त्रिवार, 'आयाहिणपयाहिण' आदक्षिणप्रदक्षिण करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा, नत्वा, महार्हेण–महता योग्येन आसनेन उपनिमन्त्र यति । उपवेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारद. 'उदगपरिफासियाए' उदकपरिस्पृष्टायां जलच्छटेन सिक्तायां 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए' दर्भोपरिप्रत्यस्तृतायां कुशोपर्यास्तीर्णाया 'भिसियाए' वृष्या आसनविशेषे निषीदति=उपविशति, निषद्य पाण्डु राजान राज्ये यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्त–कुशलवार्ता पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्तीं देवीं पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारद 'आढति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । तत खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम् 'असजयअविरयअपडिहयपचक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु' असयताविरताप्रतिहताप्रत्याख्यातपापकर्मेति कृत्वा, तत्र–असयतः–वर्तमानकालिकसर्वसावद्यानुष्ठाननिवृत्तः

देखकर (पचहिं पडवेहिं कुतीए देवीए सद्धि आसणाओ अब्भुट्ठेइ) वे पाचो पाडवो एव कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे। (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइ पच्चुग्गच्छइ) और उठकर सात आठ पैर कच्छुलनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महरिहेण आसणेण उवणिमतेइ तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरि पच्चत्थुयाए भिसीयाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते उरे य कुसलोदत्त पुच्छइ, तएण से पडुराया कोंतीदेवी पचय पडवा कच्छुल्लनारय आढति जाव पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्ल नारय असजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्हों ने

अब्भुट्ठेइ) તેઓ પાચે પાડવો અને કુંતીની સાથે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारय सत्तट्ठपयाइ पच्चुग्गच्छइ) અને ઊભા થઈને કચ્છુલ્લ નારદના સ્વાગત માટે સાત આઠ ડગલા સામે ગયા

(पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिण करेइ, करित्ता वदइ नमसइ, महरिहेण आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पडुराय रज्जे जाव अते उरेय कुसलोदत पुच्छइ तएण से पडुराया कोंतीदेवी पचय पडवा कच्छुल्लनारय आढति जाव, पज्जुवासति, तएण सा दोवई कच्छुल्लनारय असजयअविरयअपडि-हयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ)

संयतस्तथा विधो न भवति यः सोऽसंयतः=संयमरहित इत्यर्थः, अविरत =अतीत कालिकपापाज्जुगुप्सापूर्वकं, भविष्यति च संवरपूर्वकमुपरतो निवृत्तो विरतस्तथा विधो न भवति यः सोऽविरतः, निरतिरहितः, अप्रतिहतप्रत्याख्यातपापकर्मा प्रतिहत=वर्तमानकाले स्थित्यनुभागह्रासेन नाशित तथा प्रत्याख्यात=पूर्वकृतातिं-

उनके लिये तीन वार आदक्षिण प्रदक्षिण किया-करके उनको वंदनाकी नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उन्होंने उनसे महान् पुरुषों के बैठने योग्य आसन पर बैठने के लिये प्रार्थना की-इस के बाद वे कच्छुल्ल नारद जल के छींटो से सिक्त हुए आसन पर कि जो दर्भ के ऊपर आस्तीर्ण था बैठ गये। बैठकर उन्होंने पांडु राजा से राज्य की यावत् अतः पुर की कुशल वार्ता पूछी। उनके पूछने पर पांडु राजाने कुन्ती देवी ने एव पांचों पांडवों ने उन कच्छुल्ल नारद का खूब आदर किया यावत् अच्छी तरह से उनकी पर्युपासना की। द्रौपदी ने उन्हें असंयत, अविरत एव अप्रतिहत प्रत्याख्यतपापकर्मा जानकर उनका आदर नहीं किया, उनके आगमन की अनुमोदना नहीं की और न वह उनके आने पर उठी। वर्तमान कालिक सर्व सावद्य अनुष्ठान से जो निवृत्त होता है वह संयत है-ऐसा संयत जो नहीं होता है वह असंयत कहलाता है। अतीत काल में हुए पापों से जुगु-प्सा पूर्वक और भविष्यत्काल में उनसे संवर पूर्वक जो उपरत होता

सामे જઈને તેમણે ત્રણવાર તેમની ચોમેર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી ત્યારપછી તેમણે વંદન તેમજ નમન કર્યા અને પછી તેમને પોતાના કરતા મોટા માણસોને બેસવા યોગ્ય આસન ઉપર બેસવાની વિનંતી કરી ત્યારબાદ તે કચ્છુલ્લ નારદ પાણીના છાંટાઓથી ભીના પાથરેલા દર્ભના આસન ઉપર બેસી ગયા બેસીને તેઓએ પાંડુરાજાને રાજ્યની યાવત્ રણવાસની કુશળવાર્તા પૂછી પાંડુરાજા, કુંતીદેવી અને પાંચે પાંડવોએ કચ્છુલ્લ નારદનો ખૂબજ આદર કર્યો યાવત્ સારી રીતે તેમની પર્યુપાસના કરી તેમને અસંયત, અવિરત અને અપ્રતિહતપ્રત્યાખ્યાતપાપકર્મા જાણીને દ્રૌપદીએ તેમનો આદર કર્યો નહિ તેમના આગમનની અનુમોદના કરી નહિ અને જ્યારે તેઓ આવ્યા ત્યારે પણ તે ઊભી થઈ નહિ વર્તમાનકાલિક સર્વ સાવદ્ય અનુષ્ઠાનથી જે નિવૃત્ત હોય છે તે સંયત છે, આ વ્યાખ્યા મુજબ જે સંયત નથી તે અસં યત કહેવાય છે ભૂતકાળમા થઈ ગયેલા પાપકર્મોથી જુગુપ્સાપૂર્વક અને ભવિષ્ય કાલમા તેમનાથી સંવરપૂર્વક જે ઉપરત હોય છે તે વિરત છે, એવો જે નથી તે અવિરત છે, એટલે કે વિરતિથી રહિત છે વર્તમાનકાળમા જેમા

कच्छुल्लनारद सप्ताष्टपदानि प्रत्युद्गच्छति, नारदाभिमुखमायाति, प्रत्युद्गत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि. कृत्वः – त्रिवारं, 'आयाहिणपयाहिणं' आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा, नत्वा, महार्हेण–महता योग्येन आसनेन उपनिमन्त्रयति । उपवेशनार्थं प्रार्थयति । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः 'उदगपरिफासियाए' उदकपरिस्पृष्टया जलच्छटेन सिक्ताया 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए' दर्भोपरिप्रत्यास्तृताया कुशे पर्यास्तीर्णाया 'भिसियाए' वृष्या आसनविशेषे निषीदति=उपविशति, निषद्य पाण्डु राजानं राज्ये यावदन्तः पुरे च कुशलोदन्त–कुशलवार्तां पृच्छति, ततः खलु स पाण्डुराजा कुन्ती देवी पञ्च च पाण्डवा, कच्छुल्लनारद 'आढंति' आद्रियन्ते यावत् पर्युपासते=सेवन्ते स्म । ततः खलु सा द्रौपदी कच्छुल्लनारदम् 'असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्तिकट्टु' असंयताविरताप्रतिहताप्रत्याख्यातपापकर्मेति कृत्वा, तत्र–असंयत'–वर्तमानकालिकसर्वसावद्यानुष्ठाननिवृत्तः

देखकर (पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ) ये पांचो पांडवो एवं कुन्ती के साथ अपने आसन से उठे। (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ) और उठकर सात आठ पैर कच्छुल्लनारद के सामने स्वागत निमित्त गये (पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसीयाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुराय रज्जे जाव अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से पंडुराया कोंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति जाव पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ) जाकर के इन्हों ने

अब्भुट्ठेइ) તેઓ પાંચે પાંડવો અને કુંતીની સાથે પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા (अब्भुट्ठित्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ) અને ઊભા થઈને કચ્છુલ્લ નારદના સ્વાગત માટે સાત આઠ ડગલા સામે ગયા

(पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, महरिहेणं आसणेणं उवणिमंतेइ, तएणं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयइ, णिसीयित्ता पंडुराय रज्जे जाव अंतेउरेय कुसलोदंतं पुच्छइ तएणं से पंडुराया कोंतीदेवी पंचय पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति जाव, पज्जुवासंति, तएणं सा दोवई कच्छुल्लनारयं असंजयअविरयअपडिहयपच्चक्खायपावकम्मे त्ति कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ, नो पज्जुवासइ)

जाव सरीरा त इच्छामिण देवाणुप्पिया ! दोवई देवीं इहमाणिय, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एव वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्व वा भविस्स वा जण्ण दोवई देवी पचपंडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेणं सद्धि ओरालाइं जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अह तव पियट्ठयाए दोवई देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता ताए ऊक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दे मज्झंमज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तेण कालेणं तेणं समएण हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए सद्धि उप्पि आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएण से पुव्वसगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवइं देवीं गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइ देवीं ठावेइ ठावित्ता ओसोवणि अवहरइ अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी–एसणं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतो पर तुमं जाणसित्तिकट्टु जामेव दिसि पाउब्भूए तामेव दिसि पडिगए ॥ सू० २५ ॥

एउजमाणं पासइ पासित्ता आसणाओ अब्भुट्टेइ अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेणं उवणिमतेइ, तएण से कच्छुछनारए उदगपरिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदंत आपुच्छइ, तएणं से पउमनाभे राया णियग ओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी–तुब्भं देवाणु प्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि, त अत्थि आइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे जा रिसए ण मम ओरोहे ?, तएणं से कच्छुल्लणारए पउमनाभेण रन्ना एव वुत्ते समाणे ईसिं विहासियं करेइ करित्ता एव वयासी –सरिसे णं तुम पउमणाभा ! तस्स अगडदद्दुरस्स, के ण देवाणुप्पिया ! से अगडदद्दुरे ?, एव जहा मल्लिणाए एव खलु देवाणुप्पिया ! जबूदीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पचण्हं पंड- वाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अय तव ओरोहो सतिमंपि कल ण अग्घतित्तिकट्टु, पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म दोवईए देवीए रूवे य३ मुच्छिए४ दोवइए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एवं वयासी– एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहेवासे

जाव सरीरा त इच्छामिणं देवाणुप्पिया ! दोवई देवीं इहमा-
णिय, तएणं पुव्वसंगइए देवीए पउमनाभं एवं वयासी – नो
खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्स वा जण्णं
दोवई देवी पचपंडवे मोत्तूण अन्नेणं पुरिसेणं सद्धि ओरालाइ
जाव विहरिस्सइ, तहा वि य णं अहं तव पियट्ठतयाए दोवई
देवि इहं हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता
ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दे मज्झंमज्झेण जेणेव हत्थिणा-
उरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तेण कालेणं तेणं समएणं
हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए सद्धि उप्पि आगासतलंसि
सुहपसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहि-
ट्ठिले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ दलित्ता दोवइं देवीं
गिण्हइ गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव
पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणा-
भस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देवीं ठावेइ ठावित्ता
ओसोवणि अवहरइ अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवा-
गच्छइ उवागच्छित्ता एवं वयासी–एसणं देवाणुप्पिया मए
हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया तव असोगवणियाए
चिट्ठइ, अतो परं तुमं जाणसित्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए
तामेव दिसिं पडिगए ॥ सू० २५ ॥

टीका-' तएण तस्स ' इत्यादि । ततः खलु तस्य कच्छुल्लनारदस्य अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकश्चिन्तितः प्रार्थितः कल्पितो मनोगतः सङ्कल्पः समुदपद्यत, अहो! खलु द्रौपदी देवी रूपेण यावत् लावण्येन च पञ्चभिः पाण्डवैरनुबद्धा सती मां नो आद्रियते यावत् नो पर्युपास्ते, तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम द्रौपद्या देव्याः ' विप्पिय करित्तए' विप्रियं कर्तुम्, पाण्डवकुल-...गमनाभिलाषिता विनिश्चिता जाता

-ःतएण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) उसके बाद (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) उस कच्छुल्ल नारदको (इमेयारूवे) यह इस रूप (अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणो गए, संकप्पे समुप्पज्जित्था) आध्यात्मिक, चिन्तित, प्रार्थित, मनोगत संकल्प उत्पन्न हुआ। (अहो ण दोवईदेवी रूवेण जाव लावण्णेण य पचहिं पडवेहिं अणुबद्धा समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ त सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुरायं आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवणसमुद्द मज्झं मज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीइवइउं पयत्ते यावि होत्था) देखो-यह कितने आश्चर्य की बात है कि द्रौपदी देवी ने रूप यावत् लावण्य से पांचों पाडवों के साथ भोगासक्त बनकर मेरा कोइ आदर नहीं किया है यावत् किसी भी प्रकार की पर्युपासना नही की है। इसलिये अब मुझे यही उचित- श्रेयस्कर है कि मैं इस द्रौपदी देवी का विप्रिय करूँ-अनिष्टकरूँ

तएण तस्स कच्छुल्लनारयस्स इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (तस्स कच्छुल्लनारयस्स) ते कच्छुल्ल नारदने (इमेयारूवे) आ जातनो (अज्झत्थिए, चिंतिए, पत्थिए, मणोगए, संकप्पे समुप्पज्जित्था) आध्यात्मिक, चिंतित, प्रार्थित, मनोगत संकल्प उद्भव्यो के

(अहोण दोवई देवी रूवेण जाव लावण्णेण य पचहिं पडवेहिं अणुबद्धा समाणी मम णो आढाइ, जाव नो पज्जुवासइ त सेय खलु मम दोवईए देवीए विप्पिय करित्तए त्ति कट्टु एव संपेहेइ, संपेहित्ता पंडुराय आपुच्छइ आपुच्छित्ता उप्पयणिं विज्ज आवाहेइ आवाहित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए लवण समुद्द मज्झ मज्झेण पुरत्थाभिमुहे वीइवइउ पयत्ते यावि होत्था)

जुओ, आ केवी नवाईनी वात छे के द्रौपदी देवीए रूप यावत् लावण्यथी पांचे पांडवोनी साथे भोगासक्त थईने मारो कोई पण रीते आदर कर्यो नथी यावत् कोई पण जातनी पर्युपासना करी नथी एथी हवे मने एज योग्य जणाय छे के गमे ते रीते द्रौपदीनुं वि... रुं

तस्मान्मदापहरणेन अस्याः प्रतिकूलाचरणं श्रेय' इति भावः। इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एवं सप्रेक्षते=पर्यालोचयति, समेत्य पाण्डुराजानमापृच्छ्य ' उप्पयणिं विज्जं ' उत्पतनीम्-विद्याम् ' आवाहेइ' आवाहयति स्मरति आवाह्य, मत्वा तया उत्कृष्टया यावद् विद्याधरगत्या लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन पौरस्त्याभिमुखः= पूर्वदिगभिमुख', ' वीइवइउं पयत्ते ' व्यतिव्रजितुं प्रवृत्तः=गमनतत्परश्चाप्यभवत्।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' धायईसंडे ' धातकीषण्डे धातकीषण्डनामके, द्वीपे ' पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहवासे ' पौरस्त्यार्धदक्षिणार्ध-भारतवर्षे=पूर्वदिग्वर्तिनि दक्षिणार्धभरतक्षेत्रे अमरकंका नाम राजधानी आसीत्। तत्र खलु अमरकंकाया राजधान्या पद्मनाभो नाम राजाऽभवत्। स कीदृश इत्याह-' महया हिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे ' महा-हिमवन्महामलयमन्दरमहेन्द्रसारः=महाहिमवानिव तथा-महामलयमन्दरमहेन्द्रवत् सार=प्रधान । अन्यनृपापेक्षयाऽधिकमहत्त्वादिगुणविभवैश्वर्यसम्पन्न इत्यर्थः, विस्तरतस्तु व्याख्यान प्रथमाध्ययने कृतम्,

---

यह इस समय पांडवों द्वारा कृत सत्कार सम्मान से गर्विष्ठ बनी हुई है-सो विवेक रहित बन गई है-इसलिये इसके मद को उतारना चाहिये अतः इसके प्रतिकूल आचरण करना यही मुझे श्रेयस्कर है। इस प्रकार मन में रखकर उन्हों ने विचार किया-विचार करके फिर उन्हों ने पांडुराज से पूछा हे राजन् हम जाते हैं-पूछकर उन्हों ने उत्पतनी नाम की विद्या का आह्वान किया स्मरण किया-स्मरण कर के उस उत्कृष्ट यावत् विद्याधर सम्बन्धी गति से वहां से पूर्व दिशा की तरफ मुख कर के वे उडने में प्रवृत्त भी हो गये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहे वासे अमरकंका णामं रायहाणी होत्था-तएणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया होत्था, महया हिमवंत०

તે આ પાંડવો વડે સત્કૃત તેમજ સન્માનીત બનીને ગર્વિષ્ઠ બની ગઈ છે તેથી તે અવિવેકી થઈ પડી છે, એથી હવે એના મદને ઉતારવો જોઈએ, એના વિરૂદ્ધ આચરવું જોઈએ, આ પ્રમાણે તેઓએ મનમાં વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેમણે પાંડુરાયને પૂછ્યું કે હે રાજન્! અમે જઈએ, એ પ્રમાણે પૂછીને તેઓએ ઉત્પતની નામની વિદ્યાનું આહ્વાન કર્યું, સ્મરણ કર્યું સ્મરણ કરીને તે ઉત્કૃષ્ટ યાવત્ વિદ્યાધર સંબંધી ગતિથી ત્યાંથી પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને ઉડવા લાગ્યા.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धदाहिणड्ढभरहे वासे अमरकंका णामं रायहाणी होत्था तएणं अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभे णामं राया

पर्णक=वर्णनं पूर्वोक्तवद् बोध्यम् , तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः ' सत्तदेवीसयाइं ' सप्तदेवीशतानि=देवीना राज्ञीनां शतानि-सप्तशतानिभार्याः ' ओरोहे ' अवरोधे= अन्तः पुरे आसन् तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः सुनाभो नाम पुत्रो युवराजश्चाप्य भवत् । ततः खलु स पद्मनाभो राजा अन्तः प्रदेशे ' अंतेउरंसि ' अन्त पुरे ' ओरोहसंपरिवुडे ' अवरोधसंपरिवृतः – स्त्रीपरिवारसंपरिवृत', सिंहासनवरगतो विहरति–आस्तेस्म ।

वण्णओ तस्सण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवीसयाइं ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अतो अंतेउरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासण वरगए विहरइ) उस काल और उस समय में धातकी षंड नाम के द्वीप मे पूर्व दिग्वर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में अमरकंका नाम की राजधानी थी। उस अमरकंका नाम की राजधानी में पद्मनाभ नाम का राजा रहता था। यह राजा महा हिमवान् पर्वत की तरह तथा महा मलय, मन्दर एवं माहेन्द्र की तरह अन्य राजाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वादिगुणों से विभव से एवं ऐश्वर्य से सपन्न था। इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है। इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये । उस पद्मनाभ राजा के अंतःपुर में ७०० सात सौ रानियां थीं। सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहां एक दिन की बात है

होत्था, महया हिमवंत०वण्णओ,तस्सण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवी सयाइं ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अंतो अंते उरंसि ओरोहसंपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरइ)

તે કાળે અને તે સમયે ધાતકી ષંડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકંકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકંકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો તે રાજા મહા હિમાચલ પર્વ તની જેમ તેમજ મહામલય, મંદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા રાજાઓ કરતા વધારે મહત્વ વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સંપન્ન હતો આ પદોનુ સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા આવ્યુ છે આ રાજાનુ વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજવુ જોઈએ તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમા સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિંહા સન ઉપર બેઠા હતા

तत खलु स कच्छुल्लनारदो यत्रैवामरकङ्काराजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य राज्ञो भवने 'झत्ति' झटिति वेगेन 'समोवइए' समुपेत=आकाशादवतीर्णः। ततः खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लं नारद एजमानम्-आगच्छन्त पश्यति, दृष्ट्वा आसनादभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थायार्घ्येण यावदासनेन उपनिमन्त्रयति-जल्मासन च ग्रहीतु प्रार्थयति। ततः खलु स कच्छुल्ल

कि अत पुर के भीतर स्त्री परिवार के साथ सिंहासन पर बैठे हुए थे। (तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउम नाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणंसि झत्तिवेगेणं समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेणं जाव आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदग परिफासियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुस-लोदत आपुच्छइ) वे कच्छुल्ल नारद जहा अमर कका राजधानी थी, जहा पद्मनाभ का भवन था वहा आये। आकर के वे पद्मनाभ राजा के भवन में बहुत शीघ्र वेग से उतरे। पद्मनाभ राजा ने जैसे ही कच्छुल्ल नारद को आते हुए देखा तो देखकर के अपने आसन से उठे और उठकर के उन्हो ने उन्हे अर्घ्य यावत् आसन से आमन्त्रित किया।

(तएण से कच्छुल्लनारए जेणेव अमरकका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स रण्णो भवणसि झत्तिवेगेण समोवइए, तएण से पउमनाभे राया कच्छुल्ल नारय एज्जमाण पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता अग्घेण जाव आसणेण उवणिमतेइ, तएण से कच्छुल्लनारए उदगपरिफासियाए दब्भोपरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ जाव कुसलोदत आपुच्छइ)

તે કચ્છુલ નારદ જ્યા અમરકકા રાજધાની હતી, જ્યા પદ્મનાભનુ ભવન હતુ ત્યા આવ્યા, આવીને તે પદ્મનાભ રાજાના ભવનમા શીઘ્ર વેગથી ઉતર્યા પદ્મનાભ રાજાએ જ્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આવતા જોયા ત્યારે તેઓ પોતાના આસન ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને તેમણે તેઓને અર્ઘ્ય યાવત

वर्णक=वर्णनं पूर्वोक्तवद् बोध्यम्, तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः 'सत्तदेवीसयाइ' सप्तदेवीशतानि=देवीना राज्ञीनां शतानि-सप्तशतानिभार्या 'ओरोहे' अवरोधे= अन्तः पुरे आसन् तस्य खलु पद्मनाभस्य राज्ञः सुनाभो नाम पुत्रो युवराजश्चाप्य भवत्। ततः खलु स पद्मनाभो राजा अतः प्रदेशे 'अतेउरंसि' अत पुरे 'ओरोहसंपरिवुडे' अवरोधसंपरिवृतः – स्त्रीपरिवारसंपरिवृत, सिंहासनवरगतो विहरति-आस्तेस्म।

वण्णओ तस्सण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवीसयाइ ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अतो अतेउरंसि ओरोहसपरिवुडे सिंहासण वरगए विहरइ) उस काल और उस समय में धातकी षड नाम के द्वीप मे पूर्व दिग्वर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र में अमरकका नाम की राजधानी थी। उस अमरकका नाम की राजधानी में पद्मनाभ नाम का राजा रहता था। यह राजा महा हिमवान् पर्वत की तरह तथा महा मलय, मन्दर एवं माहेन्द्र की तरह अन्य राजाओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वादिगुणों से विभव से एवं ऐश्वर्य से संपन्न था। इन पदों का विस्तार पूर्वक वर्णन प्रथम मेघकुमार अध्ययन में किया जा चुका है। इस राजा का वर्णन पहिले की तरह जानना चाहिये। उस पद्मनाभ राजा के अतःपुर में ७०० सात सौ रानियां थीं। सुनाभ नाम का पुत्र था जो युवराज था, पद्मनाभ राजा के यहा एक दिन की बात है

होत्था, महया हिमवत०वण्णओ, तस्सण पउमनाभस्स रण्णो सत्तदेवी सयाइ ओरोहे होत्था तस्स ण पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नाम पुत्ते जुवराया यावि होत्था तएण से पउमणाभे राया अतो अते उरंसि ओरोहसपरिवुडे सिंहासणवरगए विहरइ)

તે કાળે અને તે સમયે ધાતકી ષડ નામે દ્વીપમા પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા અમરકકા નામે રાજધાની હતી તે અમરકકા નામે રાજધાનીમા પદ્મનાભ નામે રાજા રહેતો હતો તે રાજા મહા હિમાચલ પર્વતની જેમ તેમજ મહામલય, મદર અને મહેન્દ્રની જેમ બીજા રાજાઓ કરતા વધારે મહત્ત્વ વગેરે ગુણોથી, વૈભવથી અને ઐશ્વર્યથી સપન્ન હતો આ પદોનુ સવિસ્તાર વર્ણન પ્રથમ મેઘકુમાર અધ્યયનમા કરવામા આવ્યુ છે આ રાજાનુ વર્ણન પણ પહેલાની જેમ જ સમજવુ જોઈએ તે પદ્મનાભ રાજાના રણવાસમા ૭૦૦ રાણીઓ હતી, સુનાભ નામે તેને પુત્ર હતો, જે યુવરાજ હતો એક દિવસની વાત છે કે તે પદ્મનાભ રાજા રણવાસમા સ્ત્રી પરિવારની સાથે સિંહાસન ઉપર બેઠા હતા

देवानुप्रिय ! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः ? ममान्तः पुरे यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्त सन् ' ईषद् विहसित ' मन्दहास करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ ! सदृशस्त्वं खलु तस्य ' अगडदद्दुरस्स ' अगडदर्दुरस्य=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् बहिः प्रदेशे विद्यमान नकिमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रावस्थित किमपि वस्तु न वेत्सीति भावः । कच्छुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारद पृच्छति–'के ण देवाणुप्पिया ! से अगडददुरे ' इति। हे देवानुप्रिय ! कः खलु सोऽगडदर्दुरः ? एव पद्मनाभेन राज्ञा पृष्टः सन् कच्छुल्लनारदः प्राह—' एव यथा मल्लिणाए ' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र बोध्यम् समुद्रदर्दुरकूपदर्दुरयोः परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः । पुनः कच्छुल्ल-

कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते रहते हो–तो क्या हे देवानुप्रिय ! तुमने कहीं पर क्या ऐसा अतः पुर पहिले कभी देखा है–जैसा मेरा अन्तः पुर है ? पद्मनाभ राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे–हँसकर तब उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा–हे पद्मनाभ ! तुम उस कूपम डूक के समान हो–जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी प्रदेश में विद्यमान कुछभी नही जानते हो। कच्छुल्ल नारद के वचन सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा–देवानुप्रिय ! वह अगडदर्दुर का आख्यान कैसा है ? तब नारद ने उनसे कहा–मल्लि नाम के अध्ययन में कूपमडूक और समुद्र मडूक के परस्पर में वार्तालाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है–सो नारद ने यह आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया– पुन' कच्छुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણવાસ જોયો છે ? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા લાગ્યા, હસીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પદ્મનાભ ! તમે તે કૂપ મડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડુ પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી કચ્છુલ નારદના વચન સાભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ નારદને પૂછ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તે અગડ દર્દુરકનુ આખ્યાન કેવી રીતે છે ? ત્યારે નારદે તેમને મલ્લિ નામે અધ્યયનમા વર્ણવવામા આવેલા કૂપ મડૂક અને સમુદ્ર મડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સભળાવ્યુ

नारदः उदकपरिस्पृष्टायां-जलाभिषिक्तायां दर्भोपरि प्रत्यस्तृतायां वृष्यां आस नशेषे निषीदति, यावत् कुशलोदन्त=कुशलवार्ताम् आपृच्छति=सुखोपविष्टं तं कच्छुल्लनारद पद्मनाभः कुशलवार्तां पृच्छतीत्यर्थः । तत खलु स पद्मनाभो राजा निजकावरोधे स्त्रीपरिवारे जातविस्मयः=समुत्पन्नाश्चर्यः, कच्छुल्लनारदम् एव-वक्ष्यमाणक्रमेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिय ! त्वं बहून् ग्रामान् यावत् गृहाणि अनु-प्रविशसि, तत्=तस्माद् अस्ति ' आइ ' इति वाक्यालङ्कारे ते=त्वया कुत्रचिद् हे

इसके बाद वे कच्छुल्लनारद जल के छींटो से सिंचित आसन पर जो दर्भ के ऊपर बिछा हुआ था बैठ गये-बैठकर उन्हों ने पद्मनाभ राजा से कुशलवार्ता पूछा। पद्मनाभ राजा ने भी सुख पूर्वक बैठे हुए उन कच्छुल्ल नारद से उन के कुशल समाचार पूछे। (तएण से पउमनाभे राया णियगओरो हे जायविम्हए कच्छुल्लणारयं एवं वयासी-तुब्भ देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि त अत्थि आइ तेकहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं मम आरोहे ? तएण से कच्छुल्लणारए पउमनाभेण रन्ना एव वुत्ते समाणे ईसिं विहसिय करेइ, करित्ता एव वयासी-सरिसेण तुम पउमणाभा ! तस्स अगड ददुदुरस्स, केणं देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ! एव जहा मल्लि णाए एव खलु देवाणुप्पिया !) इसके बाद पद्मनाभ राजा ने अपने अतःपुर में विस्मित बनकर कच्छुल्लनारद से इस प्रकार

આસન ઉપર બેસવા માટે વિનતી કરી ત્યારપછી તે કચ્છુલ નારદ પાણીના છાંટાઓથી સિંચિત દર્ભના ઉપર પાથરેલા આસન ઉપર બેસીને પદ્મનાભ રાજાને તેઓના પરિવારની કુશળતાના સમાચારો પૂછયા પદ્મનાભ રાજાએ પણ આસન ઉપર સુખેથી બેઠેલા તે કચ્છુલ્લનારદને કુશળ સમાચારો પૂછયા

(तएण से पउमनाभे राया णियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लणारय एव वयासी-तुब्भ देवाणुप्पिया ! बहूणि गामाणि जाव गेहाइ अणुपविससि, त अत्थि आइ ते कहिं चि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपूव्वे जारिसए ण मम ओरोहे ? तएण से कच्छुल्लणारए पउमनाभेण रन्ना एव वुत्ते समाणे ईसिं विह सिय करेइ, करित्ता एव वयासी-सरिसेण तुम पउमणाभा ! तस्स अगडददुदुरस्स केण देवाणुप्पिया ! से अगडददुदुरे ? एव जहा मल्लिणाए एव खलु देवाणुप्पिया !)

ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ પોતાના રણુવાસના વૈભવને જોઈને આશ્ચર્ય થઈને કચ્છુલ્લ નારદને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ઘણા ગ્રામ યાવત્ ઘરોમા આવજા કરતા રહો છો તો હે દેવાનુપ્રિય ! પહેલા

देवानुप्रिय! ईदृशोऽवरोधो दृष्टपूर्वो यादृशः खलु ममावरोधः? ममान्तः पुरे यादृश्यः स्त्रियो वर्तन्ते, तादृश्य स्त्रियः कुत्रापि भवता दृष्टा इति पृच्छतीत्यर्थः। ततः खलु स कच्छुल्लनारदः पद्मनाभेन राज्ञा एवमुक्त सन् 'ईषद् विहसित' मन्दहास करोति, कृत्वा एवमवादीत्—हे पद्मनाभ! सदृशस्त्वं खलु तस्य 'अगडदद्दुरस्स' अगडदर्दुरस्य=कूपमण्डूकस्य यथा कूपमण्डूकः कूपाद् वहिः प्रदेशे विद्यमान नकिमपि जानाति, तद्वत् त्वमपि स्वभवनाद् बहिरन्यत्रावस्थित किमपि वस्तु न वेत्सीति भावः। कच्छुल्लनारदस्य वचन श्रुत्वा पद्मनाभः कच्छुल्लनारदं पृच्छति-'के ण देवाणुप्पिया! से अगडदद्दुरे' इति। हे देवानुप्रिय! कः खलु सोऽगडदर्दुरः? एव पद्मनाभेन राज्ञा पृष्टः सन् कच्छुल्लनारदः प्राह—' एव यथा मल्लिणाए' यथा मल्लिज्ञाने वर्णितमेवमत्र बोध्यम् समुद्रदर्दुरकूपदर्दुरयोः परस्परवार्तालापो यथा सजातस्तथा कच्छुल्लनारदेन कथित इत्यर्थः। पुनः कच्छुल्ल-

---

कहा-हे देवानुप्रिय! तुम अनेक ग्राम यावत् से घरों में आते जाते रहते हो-तो क्या हे देवानुप्रिय! तुमने कहीं पर क्या ऐसा अतः पुर पहिले कभी देखा है-जैसा मेरा अन्तः पुर है? पद्मनाभ राजा के द्वारा इस प्रकार पूछे गये वे कच्छुल्ल नारद कुछ हँसने लगे-हँसकर तब उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा-हे पद्मनाभ! तुम उस कूपम डूक के समान हो-जो अपने निवासस्थान भूत कुए से बाहिरी प्रदेश में विद्यमान कुछभी नहीं जानते हो। कच्छुल्ल नारद के वचन सुनकर के पद्मनाभ ने उन कच्छुल्ल नारद से पूछा-देवानुप्रिय! वह अगडदद्दुर का आख्यान कैसा है? तब नारद ने उनसे कहा-मल्लि नाम के अध्ययन में कूपमडूक और समुद्र मडूक के परस्पर में वार्तालाप के रूप में यह आख्यान वर्णित किया हुआ है-सो नारद ने यह आख्यान जैसे का तैसा उन्हें सुना दिया- पुनः कच्छुल्ल नारद उनसे

કોઈ પણ સ્થાને અને કોઈ પણ દિવસે આવો મારા જેવો રણુવાસ જોયો છે? પદ્મનાભ રાજા વડે આ રીતે પ્રશ્ન પૂછાએલા તે કચ્છુલ નારદ હસવા લાગ્યા, હસીને તેઓએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે પદ્મનાભ! તમે તે કૂપ મડૂક જેવા છો કે જે પોતાના નિવાસસ્થાન કૂપથી બહારના પ્રદેશ વિષે થોડુ પણ જ્ઞાન ધરાવતો નથી કચ્છુલ નારદના વચન સાભળીને પદ્મનાભે તે કચ્છુલ નારદને પૂછયુ કે હે દેવાનુપ્રિય! તે અગડ દર્દુરનુ આખ્યાન કેવી રીતે છે? ત્યારે નારદે તેમને મલ્લિ નામે અધ્યયનમા વર્ણવવામા આવેલા કૂપ મડૂક અને સમુદ્ર-મડૂકના વાર્તાલાપ રૂપે તે સપૂર્ણ આખ્યાન તેમને કહી સભળાવ્યુ

नारदोवदति-एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु हे देवानुप्रिय! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः स्नुषा पञ्चानां पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते द्रौपद्याः खलु देव्याश्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठकस्यायं तवावरोधः तवान्तःपुरवर्तिनी काचिदपि देवी 'सयतमपि कलं' शततमामपि कलां नार्हति, इति कृत्वा=एवं ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति। ततः कच्छुल्लनारदोऽन्तुज्ञाम,

कहते हैं कि हे देवानुप्रिय। सुनो-बात इस प्रकार है-(जंबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा, पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ट सरीरा, दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव अवरोहो सय ल्लमपि कलं ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडि गए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवइए, देवीए रूवे य मुच्छिए४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोस हसाला तेणेव उवागच्छइ) जम्बूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप (मध्य जंबुद्वीप में) में भारतवर्ष में, हस्तिनापुर नाम के नगर में द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा, पांडु राजा की स्नुषा-पुत्रवधू-पाच पांडवों की भार्या द्रौपदी देवी है। यह रूप से यावत् उत्कृष्ट शरीर है। तुम्हारा यह अंतःपुर उसके कटे हुए पैर के अंगूठे के सौवें अंश के बराबर

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય! સાંભળો, વાત એવી છે કે—

(जंबू दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा, पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा, दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव अवरोहो सयन्नमपि कलं ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जाव पडि गए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवईए, देवीए रूवेय मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ)

જંબૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમાં ભારત વર્ષમાં હસ્તિનાપુર નામે નગરમાં દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચૂલની દેવીની આત્મજા, પાંડુ રાજાની સ્નુષા-પુત્રવધૂ પાંચ પાંડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે તમારો આ રણવાસ તેના કપાયેલા અંગૂઠાના સોમા ભાગની બરોબર પણ નથી, આ બધું હું વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છું દ્રૌપદી જેવી [illegible] પણ

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कार प्राप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्यया गगनमुल्लङ्घयन् प्रतिगत इत्यर्थः।

तत खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ण्य निशम्य हृत्यवधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः = लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अध्युपपन्नः = एकाग्रचित्त सन् यत्रैव पौषधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पौषधशाला प्रमार्ज्य यावदष्टम भक्त कृत्वा 'पूर्वसगतिक' पूर्वमित्र देवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् एव खलु हे देवानुप्रिय! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारत वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्–उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय!

भी नहीं है। ऐसा मै जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। इस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहा से चलने के लिये अभिलाषी बन गये–तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहा से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एव लावण्य मे मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में बिलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहा पौषधशाला थी वहा गये। (उवागच्छित्ता पोसहसालं जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया! जम्बूदीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया!

નથી આ પ્રમાણે કહીને તે કચ્છુલ્લ નારદ ત્યાંથી ચાલવા માટે તૈયાર થઈ ગયા. તેમણે પદ્મનાભ રાજાને જવા માટે પૂછ્યું, પૂછીને યાવત્ ત્યાંથી તેઓ પદ્મનાભ રાજાની પાસેથી સત્કૃત થઈને ઉત્પતની વિદ્યાના પ્રભાવથી આકાશને ઓળંગતા જતા રહ્યા. ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કચ્છુલ્લ નારદના મુખથી આ સમાચારને સાંભળીને અને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને દ્રૌપદી દેવીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી મૂર્છિત ૪ થઈ ગયા, યાવત્ તેમનું મન તેમાં એકદમ ચોંટી ગયું. આ સ્થિતિમાં તેઓ જ્યાં પૌષધશાળા હતી ત્યાં ગયા.

(उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया! जबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया! दोवई देवी इहमाणिय तएण पुव्वसगइए देवे पउमनाभ एव

नारदोऽवदति-एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे नगरे द्रुपदस्य राज्ञो दुहिता चूलन्या देव्या आत्मजा पाण्डोः स्नुषा पञ्चानां पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी रूपेण च यावद् उत्कृष्ट शरीरा वर्तते द्रौपद्याः खलु देव्याश्छिन्नस्यापि पादाङ्गुष्ठकस्याय तवावरोध' तवान्तःपुरवर्तिनी काचिदपि देवी 'सयतमपि कल' शततमामपि कला नार्हति, इति कृत्वा=एवं ज्ञात्वा कथयामि-द्रौपदीसदृशी नास्ति काचिदपीति। ततः कच्छुल्लनारदोगन्तुकामः

कहते हैं कि हे देवानुप्रिय । सुनो-बात इस प्रकार है-(जंबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा, पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठ सरीरा, दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव अवरोहो सय सहस्समपि कलं ण अग्घई त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ आपुच्छित्ता जाव पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवइए, देवीए रूवे य मुच्छिए४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ) जम्बूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप (मध्य जंबुद्वीप में) में भारतवर्ष मे, हस्तिनापुर नाम के नगर में द्रुपद राजा की पुत्री चुलनी देवी की आत्मजा, पांडु राजा की स्नुषा-पुत्रवधू-पाच पाडवों की भार्या द्रौपदी देवी है। यह रूप से यावत् उत्कृष्ट शरीर है। तुम्हारा यह अंतःपुर उसके कटे हुए पैर के अंगूठे के सौवें अंश के बराबर

અને ત્યારપછી કચ્છુલ્લ તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, વાત એવી છે કે—

(जंबू दीवे दीवे भारहेवासे हत्थिणाउरे दुवयस्स रण्णो धूया, चूलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा, पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा, दोवईए णं देवीए छिन्नस्स वि पायंगुट्ठयस्स अयं तव अवरोहो सयन्लमपि कलं ण अग्घई त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता जाव पडिगए, तएणं से पउमणाभे राया कच्छुल्लणारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म दोवईए, देवीए रूवेय मुच्छिए ४ दोवईए अज्झोववन्ने जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ)

જંબૂ દ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપમા ભારત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નામે નગરમા દ્રુપદ રાજાની પુત્રી ચૂલની દેવીની આત્મજા, પાડુ રાજાની સ્નુષા-પુત્રવધૂ પાચ પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે તે રૂપથી યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે તમારો આ રણવાસ તેના કપાયેલા અગૂઠાના સોમા ભાગની બરોબર પણ નથી, આ બધુ હુ વિચારપૂર્વક કહી રહ્યો છુ દ્રૌપદી જેવી નારી કોઈ પણ

पद्मनाभमापृच्छति, पृष्ट्वा यावत् पद्मनाभेन राज्ञा सत्कार प्राप्य प्रतिगतः=उत्पतनी विद्यया गगनमुल्लङ्घयन् प्रतिगत इत्यर्थः ।

तत खलु स पद्मनाभो राजा कच्छुल्लनारदस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा= आकर्ण्य निशम्य हृद्यवधार्य द्रौपद्या देव्या रूपे च यौवने च लावण्ये च मूर्च्छितः= आसक्तः, गृद्धः = लोलुपः, ग्रथितः=निबद्धचित्तः, अ ध्युपपन्नः = एकाग्रचित्त सन् यत्रैव पोपधशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पोपधशाला प्रमार्ज्य यावदष्टम भक्त कृत्वा ' पूर्वसगतिक ' पूर्वमित्र देवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण अवादीत् एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे हस्तिनापुरे पाण्डवभार्या द्रौपदी देवी यावत्-उत्कृष्टशरीरा वर्तते, तत्=तस्माद् इच्छामि खलु हे देवानुप्रिय !

भी नहीं है। ऐसा मैं जानकर ही कह रहा हूँ। द्रौपदी के जैसी कोई भी नारी नहीं है। इस प्रकार कहकर वे कच्छुल्ल नारद वहा से चलने के लिये अभिलाषी बन गये-तब उन्होंने पद्मनाभ राजा से जाने के लिये पूछा पूछकर यावत् वे वहा से पद्मनाभ राजा से सत्कृत होकर उत्पतनी विद्या के प्रभाव से गगन तल को उल्लंघन करते हुए वापिस चले गये। इसके बाद वे पद्मनाभ राजा कच्छुल्ल नारद के मुख से इस समाचार रूप अर्थ को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर द्रौपदी देवी के रूप, यौवन एव लावण्य मे मूर्च्छित ४ बन गये, यावत् उनका चित्त उन में बिलकुल एकाग्र हो गया। इस तरह होकर, वे जहा पौषधशाला थी वहा गये । (उवगच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जबूद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे जाव सरीरा त इच्छामि ण देवाणुप्पिया !

નથી આ પ્રમાણે કહીને તે કચ્છુલ્લ નારદ ત્યાંથી [illegible]વા માટે તૈયાર થઇ ગયા તેમણે પદ્મનાભ રાજાને જવા માટે પૂછ્યુ યાવત્ ત્યાંથી તેઓ પદ્મનાભ રાજાની પાસેથી સત્કૃત થઇને ઉત્પતની [illegible]વથી આક[illegible] શને ઓળગતા જતા રહ્યા ત્યારપછી તે પદ્મનાભ મુખથી આ સમાચારને સાભળીને અને તેને હૃદયમ દેવીના રૂપ, યૌવન અને લાવણ્યથી મૂર્છિત ૪ થઈ તેમા એકદમ ચોટી ગયુ આ સ્થિતિમા તેઓ જ્યા પો[illegible]

(उवागच्छित्ता पोसहसाल जाव पुव्वसगइय देव [illegible] देवाणुप्पिया ! जबू दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे [illegible] ण देवाणुप्पिया ! दोवई देवी इस्माणिय तएवं

द्रौपदीं देवीम् ' इह माणिय ' इहानेतुम् । ततः खलु पूर्वसंगतिको देवः पद्मनाभ नृपम् एवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! नो खलु एतद् भूत वा भवद् वा भविष्यद् वा, यत् खलु द्रौपदी देवी पञ्च पाण्डवान् मुक्त्वाऽन्येन पुरुषेण सार्धमुदारान् भोगान् यावद् विहरति, तथापि च खलु अहं तव प्रियार्थं द्रौपदी देवीमिह हव्यमानयामीति

दोवई देवीं इहमाणिय तएण पुव्वसंगइए देवे पउमनाभ एवं वयासी-नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेण सद्धिं ओरालाइं जाव विहरिस्सइ) वहां जाकर उन्हों ने उस पोषध शाला को रजोहरण से साफ किया यावत् अष्टम भक्त कर के पूर्व संगति देव का आवाहन किया देवों के आनेपर पूर्व संगतिक देव से इस प्रकार कहा हे देवानु प्रिय ! जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष में हस्तिनापुर नगर में पाडवो की भार्या द्रौपदी देवी है । वह यावत् उत्कृष्ट शरीर है । इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैं उस द्रौपदी देवी को तुमसे यहां ले आने के लिये चाहता हूँ । पद्मनाभ की इस बात को सुनकर पूर्वभव के मित्र उस देव ने उस से तब ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात द्रौपदी के साथ न पहिले हुई है, न आगे होगी-और न अब वर्तमान में हो सकती है, जो द्रौपदी देवी पाच पांडवो को छोड़कर अन्य किसी दूसरे पुरुष के साथ उदार यावत् मनुष्य भव सबन्धी काम सुखों को भोगे (तहावि

वयासी नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेण सद्धिं ओरालाइं जाव, विहरिस्सइ)

त्यां जईने तेमणे ते पौषधशाळाने रजोहरणथी साफ करी यावत् अष्टम भक्त करीने पूर्व संगति देवनु आवाहन कर्युं देव ज्यारे आवी गयो त्यारे तेमणे पूर्वसंगतिक देवने आ प्रमाणे कह्यु के हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीप नामना द्वीपमा भरत वर्षमा हस्तिनापुर नगरमा पाडवोनी पत्नी द्रौपदीदेवी छे, ते यावत् उत्कृष्ट शरीरवाळी छे एथी हे देवानुप्रिय ! ते द्रौपदी देवीने तमे अहीं लई आवो एवी मारी इच्छा छे पद्मनाभनी आ वातने सांभळीने पूर्वभवना मित्र ... तेमने आ प्रमाणे कह्यु के हे देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवीनी साथे ... चरणु न पहेला थयु छे न भविष्यमा थशे अने न वर्त... छे द्रौपदी देवी पाचे पाडवो सिवाय बीजा ... भव सबधी कामसुखो भोगवे आ

कृत्वा=उक्त्वा पद्मनाभम् आपृच्छति आपृच्छ्य तया उत्कृष्टया देवसम्बन्धिन्या गत्या यावत् लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन=उपरिभागेन गगनमार्गेण, यत्रैव हस्तिनापुरं नगरं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरो राजा द्रौपद्या सार्धमुपरि आकाशतले=प्रासादाट्टालिकोपरि सुखसुप्तश्चाप्यासीत्, ततः खलु स पूर्वसंगतिको देवो यत्रैव युधिष्ठिरो राजा यत्रैव द्रौपदीदेवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य द्रौपदीं

य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइं देविं इह हव्वमाणेमि त्तिकट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) फिर भी मैं तुम्हारी प्रीति के निमित्त द्रौपदी देवी को यहां शीघ्र लेकर आता हूँ। ऐसा कह-कर उसने जाने के लिये उन पद्मनाभ से पूछा, पूछकर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसंबन्धी गति से यावत् लवण समुद्र के बीच से होकर जहां हस्तिनापुर नगर था उस ओर चल दिया। (तेणं कालेणं तेणं सम-एणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया,दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुह-पसुत्ते यावि होत्था, तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ) उस काल और उस समय में हस्तिनापुर नगरमें युधिष्टिर राजाके साथ द्रौपदी आकाशतलमें–प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सोये हुए थे। वह पूर्व संगतिक देव जहां वे युधिष्टिर राजा और जहां वह द्रौपदी देवी थी वहां आया–(उवागच्छित्ता

(तहावि य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइं देविं इह हव्वमाणेमि त्ति कट्टु पउमणाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेण जेणेव हत्थिणाउरे णयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

છતાંએ તમને ખુશ કરવા માટે હું દ્રૌપદી દેવીને શીઘ્ર અહીં લઈ આવું છું આમ કહીને તેણે જવા માટે પદ્મનાભ રાજાને પૂછયું પૂછીને તે પોતાની ઉત્કૃષ્ટ દેવભવ સંબંધી ગતિથી યાવત્ લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યાં હસ્તિનાપુર નગર હતું તે તરફ રવાના થયો.

(तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे जुहिट्ठिले राया, दोवईए सद्धिं उप्पिं आगासतलंसि सुहपसुत्ते यावि होत्था तएणं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ)

તે કાળે અને તે સમયે હસ્તિનાપુર નગરમાં યુધિષ્ઠિર રાજા અને દ્રૌપદી દેવી મહેલની અગાશી ઉપર સૂતા હતા તે પૂર્વ સંગતિક દેવ જ્યાં તે યુધિષ્ઠિર રાજા અને જ્યાં તે દ્રૌપદી દેવી હતી ત્યાં આવ્યો.

द्रौपदीं देवीम् 'इह आनीय' इहानेतुम् । ततः खलु पूर्वसंगतिको देवः पद्मनाभं नृपम् एवमवादीत्-हे देवानुप्रिय ! नो खलु एतद् भूतं वा भवद् वा भविष्यद् वा, यत् खलु द्रौपदी देवी पञ्च पाण्डवान् मुक्त्वाऽन्येन पुरुषेण सार्धमुदारान् भोगान् यावद् विहरति, तथापि च खलु अहं तव प्रीत्यर्थं द्रौपदीं देवीमिह हव्यमानयामीति

दोवई देवीं इहमाणिय तएणं पुव्वसंगइए देवे पउमनाभ एवं वयासी-नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेण सद्धिं ओरालाइं जाव विहरिस्सइ) वहां जाकर उन्हों ने उस पोषध शाला को रजोहरण से साफ किया यावत् अष्टम भक्त कर के पूर्व संगति देव का आवाहन किया देवों के आनेपर पूर्व संगतिक देव से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रिय ! जंबूद्वीप नाम के द्वीप में भारत वर्ष में हस्तिनापुर नगर में पाडवो की भार्या द्रौपदी देवी है । वह यावत् उत्कृष्ट शरीर है । इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैं उस द्रौपदी देवी को तुमसे यहा ले आने के लिये चाहता हूँ । पद्मनाभ की इस बात को सुनकर पूर्वभव के मित्र उस देव ने उस से तब ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात द्रौपदी के साथ न पहिले हुई है, न आगे होगी-और न अब वर्तमान में हो सकती है, जो द्रौपदी देवी पाच पांडवो को छोड़कर अन्य किसी दूसरे पुरुष के साथ उदार यावत् मनुष्य भव संबन्धी काम सुखों को भोगे (तहावि

वयासी नो खलु देवाणुप्पिया ! एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पडवे मोत्तूण अन्नेण पुरिसेण सद्धिं ओरालाइं जाव, विहरिस्सइ)

ત્યા જઈને તેમણે તે પૌષધશાળાને રજોહરણથી સાફ કરી યાવત્ અષ્ટમ ભક્ત કરીને પૂર્વ સંગતિ દેવનુ આવાહન કર્યું દેવ જ્યારે આવી ગયો ત્યારે તેમણે પૂર્વસંગતિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભરત વર્ષમા હસ્તિનાપુર નગરમા પાડવોની પત્ની દ્રૌપદીદેવી છે, તે યાવત્ ઉત્કૃષ્ટ શરીરવાળી છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તે દ્રૌપદી દેવીને તમે અહીં લઈ આવો એવી મારી ઇચ્છા છે પદ્મનાભની આ વાતને સાભળીને પૂર્વભવના મિત્ર તે દેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! દ્રૌપદી દેવીની સાથે આ જાતનુ આચરણ ન પહેલા થયુ છે ન ભવિષ્યમા થશે અને ન વર્તમાનમા થવાની શકયતા છે દ્રૌપદી દેવી પાચે પાડવો સિવાય બીજા કોઈ પુરૂષની સાથે ઉદાર યાવત્ મનુષ્યભવ સબધી કામસુખો ભોગવે આ વાત તદ્દન અસભવિત છે.

यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एवमवादीत्-एषा खलु हे देवानुप्रिय ! मया हस्तिनापुराद् द्रौपदी इह हव्यमानीता तवाशोकवनिकाया तिष्ठति, अतः परं त्वं जानासि ' इति कृत्वा=उक्त्वा, यस्या एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः ॥ सू०२५ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी-नो खलु अम्हं एसे सए भवणे णो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया, तं ण णज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अन्नस्स रण्णो असोगवणियं साहरियत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ, तएणं से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालंकार विभूसिए अंतेउरपरियालं संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देविं ओहय० जाव झियायमाणी पासइ पासित्ता एवं वयासी-किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय जाव झियाहि, एवं

दिया-गाढ निद्रा से रहित कर फिर वह वहां से जहां पद्मनाभ राजा थे वहां गया-वहां जाकर उसने उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! मैं हस्तिनापुर नगर से द्रौपदी को यहां ले आया हूँ। वह तुम्हारी अशोक वाटिका में ठहरी है, अत अब तुम जानो। ऐसा कहकर वह देव जिस दिशा से प्रकट हुआ था-उसी दिशा की ओर वापिस चला गया। सू-२५

કરીને તે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતા ત્યાં ગયો ત્યાં જઈને તેણે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! હસ્તિનાપુર નગરથી દ્રૌપદી દેવીને હું અહીં લઈ આવ્યો છું તે તમારી અશોક-વાટિકામાં છે, એથી હવે તમે જાણો. આ પ્રમાણે કહીને તે દેવ જે દિશા તરફથી પ્રકટ થયો હતો તે જ દિશા તરફ પાછો જતો રહ્યો ॥ સૂત્ર ૨૫ ॥

देवो 'ओसोवणिय' अवस्वापनीं निद्रां 'दलयइ' ददाति सुखसुप्तां द्रौपदी गाढनिद्राऽऽक्रान्तां करोतीत्यर्थः। दत्वा-गाढनिद्रावतीं कृत्वा द्रौपदीं देवीं गृहीत्वा तया उत्कृष्टया देवसम्बन्धिन्यागत्या यावत् यत्रैवामरकङ्का राजधानी यत्रैव पद्मनाभस्य भवन तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पद्मनाभस्य भवने 'असोगव णियाए' अशोकवनिकायाम् अशोकवाटिकाया द्रौपदीं देवीं स्थापयति, स्थापयित्वा 'ओसोवणिं अवहरइ' अवस्वापनीं निद्रामपहरति, अपहृत्य

दोवईए देवीए ओसोवणियं दलयइ, दलित्ता दोवई देविं गिण्हइ, गिण्हत्ता तीए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकंका जेणेव पउमणाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणि याए दोवइं देविं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता एवं वयासी-एस णं देवाणु प्पिया। मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतोपुरं तुमं जाणिसि त्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए) वहा आकर उसने द्रौपदी देवी को गाढ निद्रा में सुला दिया, सुलाकर फिर उसने उस द्रौपदी को वहा से उठाया-और उठा कर फिर वह उस उत्कृष्ट देवभवसम्बन्धी गति से चलकर यावत् जहा अमरकका नगरी और जहा पद्मनाभ राजा का भवन था वहा आया-। वहा आकर के उसने पद्मनाभ के भवन में अशोकवाटिका में द्रौपदी देवी को रखदिया। रखकर के फिर उसने उसे गाढ निद्रा से रहित कर

(उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणिय दलयइ, दलित्ता दोवई देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव अमरकका जेणेव पउमणाभस्स भवणे-तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पउमणाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठवेइ ठावित्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमणाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-एसणं देवाणुप्पिया मए हत्थिणाउराओ दोवई इह हव्वमाणीया, तव असोगवणियाए चिट्ठइ, अतोपुरं तुमं जाणिसित्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए)

ત્યા આવીને તેણે દ્રૌપદીને ગાઢ નિદ્રામા સૂવાડી દીધી, સુવાડીને તેણે તે દ્રૌપદીને ત્યાથી ઉઠાવી અને ઉઠાવીને તે ઉત્કૃષ્ટ દેવભવ સબધી ગતિથી ચાલીને યાવત્ જ્યા અમરકકા નગરી અને જ્યા પદ્મનાભ રાજાનુ ભવન હતુ ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે પદ્મનાભના ભવનમા અશોક-વાટિકામા દ્રૌપદી દેવીને મૂકી દીધી. મૂકીને તેણે ગાઢ નિદ્રા દૂર કરી દી'।

मेतद् भवन नो खलु एषाऽस्माक 'सगा' स्वका=स्वकीया, अशोकवनिका, तद् न ज्ञायते खलु-अह केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गन्धर्वेण वा अन्यस्य राज्ञोऽशोकवनिकाया 'साहरिया' संहृता-आनीताऽस्मि' इति कृत्वा=इति विचार्य, अपहतमनःसकल्पा=अनिष्टयोगेन भग्न-मनोरथा विषादमुपगतेत्यर्थ. यावद् ध्यायति=आर्तध्यान करोति ।

ततः खलु पद्मनाभो राजा स्नातो यावत् सर्वालकारविभूषितोऽन्तःपुरपरि-वारसपरिवृतो यत्रैवाशोकवनिका यत्रैव द्रौपदी देवी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य

एसा अम्ह सगा असोगवणिया, त ण णज्जइ, ण अह केणई देवेणवा दाणवेण वा किं पुरिसेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा गवव्वेण वा अन्नस्स रण्गो असोगवणिय साहरियत्ति कट्टु ओहयमणसकप्पा जाव झियायइ) यह मेरा निज का भवन नही है, यह मेरी निज की अशोक वाटिका नही है। तो पता नही पडता क्या मै किसी दूसरे राजा की अशोकवाटिका में किसी देव, दानव, किंपुरुष, किन्नर महो रग अथवा, गधर्व के द्वारा हरण कर लाई गई हूँ। इस प्रकार के विचार से उस का मनः सकल्प अपहत हो गया-अनिष्ट के योग से उस का मनोरथ भग्न हो गया और वह खेदखिन्न हो गई यावत् आर्तध्यान करने लगी। (तएण से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभू-सिए अतेउरपरियाल सपरिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवई देवी ओहय० जाव झिया-

(नो खलु अम्ह एसे सएभवणे णो खलु एसा अम्ह सगा असोगवणिया, त ण णज्जइ ण अह केणई देवेग वा दाणवेग वा किंपुरिसेण वा किन्नरेण वा महो-रगेग वा गवव्वेग वा अन्नस्स रण्गो असोगवणिय साहरियत्ति कट्टु ओहयमण सकप्पा जाव झियायइ)

આ મારૂ ભવન નથી, આ મારી અશોક વાટિકા નથી કઈ ખબર પડતી નથી, શુ હુ બીજા કોઈ રાજાની અશોક વાટિકામા કોઈ દેવ, દાનવ, કિંપુરુષ કિંન્નર, મહોરગ અથવા તો ગધર્વ વડે અપહૃત થઈને લઈ જવામા આવી છુ આ જાતના વિચારોથી તેનુ મન ઉદાસ થઈ ગયુ, અનિષ્ટના યોગથી તેનો મનોરથ ભગ્ન થઈ ગયો અને તે ખેદ-ખિન્ન થઈ ગઈ યાવત્ આર્તધ્યાન કરવા લાગી

(तएण से पउमणाभे राया ण्हाए जाव सव्वालकारविभूसिए अतेउरपरियाल संपरिवुडे, जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवाग-

खलु तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूदी-वाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया त मा णं तुम देवाणुप्पिया! ओहय० जाव झियाहि, तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं जाव विहराहि, तएणं सा दोवई देवी पउमणाभं एव वयासी -एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबूदीवे दीवे भारहे वासे बारवइए णयरीए कण्हे णाम वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, त णं से छण्हं मासाण मम कूत्र नो हव्वमागच्छइ तएणं अह देवाणुप्पिया ! जं तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि, तएणं से पउमे दोवईए एयमट्ठं पडिसुणित्ता२ दोवइं देविं कण्णंतेउरे ठवेइ, तएणं सा दोवई देवी छट्ठं छट्ठेणं अनिक्खित्तेणं आयंबिलपरिग्गहिएणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ सू० २६ ॥

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । तत खलु सा द्रौपदी देवी ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धा=जागरिता सती तद् भवनम् अशोकवनिका च ' अपचभिजाणमाणी ' अप्रत्यभिजानन्ती भवनादिकमपरिचित जानन्ती एवमवादीत्-नो खलु अस्माक

– तएण सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा दोवईदेवी) वह द्रौपदीदेवी (ताओ मुहुत्ततरस्स पडिबुद्धा समाणी) १ मुहूर्त्त के बाद जगी सो जग कर उसने (त भवण असोगवणिय च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी) उस भवन को एव उस अशोकवाटिका को अपरिचित जानकर अपने मन में ऐसा विचार किया-(नो खलु अम्ह एसे सएभवणे, णो खलु

तएण सा दोवई देवी इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (ताओ मुहुत्तरस्स पडिबुद्धा समाणी) એક મુહૂર્ત પછી જાગી અને જાગીને તેણે (त भवण असोगवाणिय च अपच्चभिजाणमाणी एव वयासी) ते ભવન અને તે અશોક વાટિકાને અપરિચિત જાણીને પોતાના મનમા આ જાતનો

खलु त्व हे देवानुप्रिये ! अपहतमनःसङ्कल्पा यावद् ध्याय, आर्तध्यान मा कुरु त्व मया सार्धं विपुलान् भोगभोगान् यावद् भुञ्जाना विहर=मदीयप्रासादे तिष्ठ' इति।

तत खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभमेवमवादीत्–एव खलु हे देवानुप्रिय ! जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे द्वारवत्या नगर्यां कृष्णो नाम वासुदेवो मम प्रियभ्रातृक'= ममप्रियस्य भर्तुर्भ्राता परिवसति, तद् यदि खलु स षण्णा मासाना मध्ये 'मम' मा 'कूव' देशीशब्दोऽयम्, अन्वेषयितु ग्रहीतु वा नो शीघ्रमागच्छति–तत खलु

गई हो। इसलिये हे देवानुप्रिये! तुम अपहतमनःसकल्प बनकर यावत् आर्तध्यान मत करो। तुम तो अब मेरे साथ विपुल कामभोगों को भोगती हुई मेरे प्रासाद में रहो। (तएण सा दोवई देवी पउमणाभ एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे वारवइए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे ममप्पियभाउए परिवसइ, त जइण से छण्ह मासाण मम कूव णो हव्व मागच्छइ तएणं अह देवाणुप्पिया ! ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि तएण से पउमे दोवईए एयमट्ठ पडिसुणेइ २ दोवइ देवी कण्णतेउरे ठवेइ, तएण सा दोवई देवी छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेण आयबिलपरिग्गहिएण तवोकम्मेण अप्पाण भावेमाणे विहरइ) इसके बाद उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा–हे देवानुप्रिय ! सुनो–जबूद्वीप नाम के द्वीप में भारतवर्षमें द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव मेरे प्रिय पतिके भ्राता रहते है। वे यदि छह मासके भीतर मुझे अन्वेषण करनेके लिये या

આવી છો એવી હે દેવાનુપ્રિયે! તમે અપહતમન સકલ્પા થઈને યાવત્ આર્ત્તધ્યાન ન કરો તમે મનુષ્યભવ સબધી કામ ભેગો ભોગતા મારા મહેલમા રહો

(तएण सा दोवई देवी पउमणाभ एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! जम्बूदीवे दीवे, भारहे वासे वारवइए णयरीए कण्णे णाम वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ, त जइण से छण्ह मासाण मम कूव णो हव्व मागच्छइ, तएण अह देवाणुप्पिया ! ज तुम वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि तएण से पउमे दोवईए एयमट्ठ पडिसुणित्ता २ दोवई देवीं कण्णतेउरे ठवेइ, तएण सा दोवई देवी छट्ठ छट्ठेण अणिक्खित्तेणं आयबिलपरिग्गहिएण तवोकम्मेण अप्पाण भावे माणे विहरइ)

ત્યારપછી દ્રૌપદી દેવીએ પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે દેવાનુપ્રિય ! સાભળો, જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારત વર્ષમા દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણ વાસુદેવ મારા પ્રિય પતિના ભાઈ રહે છે તેઓ છ મહીનાની અદર મારી તપાસ

द्रौपदीं देवीमपहतमनःसंकल्पां यावद् ध्यायन्तीं=आर्तध्यानं कुर्वतीं पश्यति दृष्ट्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हे देवानुप्रिये ! किं खलु त्वं 'ओहय० जाव झियाहि' अपहतमनःसंकल्पा यावद् ध्यायसि=खिद्यसि एवं खलु त्वं हे देवानु प्रिये ! मम पूर्वसंगतिकेन देवेन जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिना पुराद् नगराद् युधिष्ठिरस्य राज्ञो भवनात् संहृता=अपहृताऽसि, ततस्तस्माद् मा

यमाणी पासइ, पासित्ता एवं वयासी, किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूदीवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापु राओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं माणं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोग भोगाइं जाव विहराहि) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा नहा धोकर यावत् सर्वालंकारो से विभूषित हो अपने अंतःपुर परिवार से सपरि वृत होकर जहां वह अशोक वाटिका थी-और उसमें भी जहां वह द्रौपदी देवी बैठी थी-वहां आया-वहां आकर के उसने द्रौपदी देवी से अपहत मनः संकल्पवाली यावत् आर्त्तध्यान करती हुई देखकर इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम क्यों अपहत मनः संकल्प होकर यावत् आर्त ध्यान कर रही हो-खेद खिन्न हो रही हो तुम यहां हे देवानुप्रिय ! मेरे पूर्व भव के मित्र देव के द्वारा जंबूद्वीप नाम के द्वीप से भारतवर्ष के हस्तिनापुर नगर से युधिष्ठिर राजा के भवन से हरण कर ले आई

च्छित्ता दोवई देवी ओहय० जाव झियायमाणी पासइ, पासित्ता एवं वयासी किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ममपुव्वसंगइएणं देवेणं जंबूदिवाओ २ भारहाओ वासाओ हत्थिणापुराओ नयराओ जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो भवणाओ साहरिया, तं माणं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहय० जाव झियाहि तुमं मए सद्धिं विपुलाइं भोग भोगाइं जाव विहराहि)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભરાજા સ્નાન કરીને યાવત્ સર્વાલંકારોથી વિભૂષિત થઈને પોતાના રણવાસ-પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં અશોકવાટિકા હતી અને તેમાં પણ જ્યાં તે દ્રૌપદી દેવી બેઠી હતી ત્યાં આવ્યો ત્યાં આવીને તેણે દ્રૌપદી દેવીને અપહતમન સંકલ્પવાળી યાવત્ આર્ત્તધ્યાન કરતી જોઈને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે શા માટે અપહતમન સંકલ્પા થઈને યાવત્ આર્ત્તધ્યાન કરી રહી છો ? ખેદ-ખિન્ન થઈ રહ્યા છો ? હે દેવાનુપ્રિયે ! મારા પૂર્વભવના મિત્ર દેવ વડે તમે જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપના, ભારત વર્ષના હસ્તિનાપુર નગરના યુધિષ્ઠિર રાજાના ભવનથી અપહૃત થઈને

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गणगवेसणं कयं, तएण से पंडुराया कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया२ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवइए देवीए सुइं वा जाव पवित्ति वा परिकहेइ तस्स णं पंडुराया विउल अत्थसंपयाण दाणं दलयइ त्तिकट्टु घोसणं घोसावेह२ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंवियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से पडूराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंती देवीं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! वारवइ णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि कण्ह णं पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुती वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा, तएण सा कोंती देवी पडुरण्णा एव वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाया कयवलिकम्मा हत्थिखध-

अह हे देवानुप्रिय ! यत् त्वं वदसि=वदिष्यसि ' तस्स ' तत्र ' आणाओवायवयणणिद्देसे ' आज्ञावपातवचननिर्देशे स्थास्यामि, तवाज्ञाकारिणी वशवर्तिनी भविष्यामीत्यर्थः, आज्ञा-अवश्य विधेयतया आदेशः, उपपातवचन सेवावचन, निर्देश-कार्याणि प्रति प्रश्ने कृते यन्नियत,मुत्तरम्, एषा ममाज्ञारूढः तत्र, ततः खलु स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या एतमर्थं प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य द्रौपदी देवी ' कण्णतेउरे' कन्यान्तः पुरे स्थापयति, ततः खलु सा द्रौपदीदेवी ' छट्ठं छट्ठेण ' षष्ठषष्ठेन षष्ठभक्तानन्तर पुनः षष्ठभक्तेन, ' अनिक्खित्तेण ' अनिक्षिप्तेन=विरामरहितेन अन्तररहितेनेत्यर्थः, ' आयंबिलपरिग्गहिएण ' आयंबिलपरिगृहीतेन तपः कर्मणा आत्मान भावयन्ती विहरति ॥ सू०२६ ॥

मूलम्-तएणं से जुहुट्ठिल्ले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवइं देविं पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ उट्ठित्ता दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पंडुरायं एवं वयासी एवं-खलु ताओ ! मम आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ

लेने के लिये यहां जल्दी से नहीं आयेगे तो उसके बाद हे देवानुप्रिय ! जैसा तुम कहोगे वैसा मैं करूँगी-तुम्हारी आज्ञा कारिणी वशवर्तिनी बन जाऊँगी। ऐसा अर्थ " आणाओवायवयणणिद्देसे " इन पदो का निकलता है। इसके बाद पद्मनाभ राजा ने द्रौपदी के इस कथन को स्वीकार करके उसे कन्या के अन्तः पुर में रखदिया। वहां वह द्रौपदी देवी आयबिल परिगृहीत छह छट्ठ की अन्तर रहित तपस्या से अपने आप को भावित करती हुई रहने लगी। सू० २६

કરતા કરતા અહીં નહિ આવી શકે તો ત્યારપછી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે જેમ કહેશો તેમ કરીશ, હું તમારી આજ્ઞાકારિણી વશવર્તિની બની જઇશ " अणाओवायवयणणिद्देसे " આ પદોથી આ જાતનો અર્થ નીકળે છે ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના તે કથનને સ્વીકારી લીધું અને તેને કન્યાના અન્ત પુરમા મૂકી દીધી ત્યા તે દ્રૌપદી દેવી આયબિલ પરિગૃહીત છઠ્ઠ છઠ્ઠની અન્તર રહિત તપસ્યાથી પોતાની જાતને ભાવિત કરતી રહેવા લ ॥

दोवइ देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा ?, इच्छामि णं ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं कयं, तएणं से पंडुराया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडगतियचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया२ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किं-पुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवइए देवीए सुइं वा जाव पवित्ति वा परिकहेइ तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थ-संपयाणं दाणं दलयइ त्तिकट्टु घोसणं घोसावेह२ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति, तएणं से पंडूराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभ-माणे कोंती देवीं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! वारवइं णयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि कण्हे णं परं वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसणं करेज्जा अन्नहा न नज्जइ दोवइए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा, तएणं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंध-

वरगया हत्थिणाउरं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरुजणवये मज्झंमज्झेण जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव वारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव वारवई णयरी तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेव करयल० एव वयह–एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भ दसणं कंखइ, तएणं ते कोडुवियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुवियपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय वारवईए य मज्झमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखधाओ पच्चोरुह पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहण करेइ करित्ता कोंतीए देवीए सद्धि हत्थिखंध दुरुहइ दुरुहित्ता बारावइए णयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सय गिह अणुपविसइ । तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंती देवि ण्हाय कयबलिकम्म जिमियभुत्तुत्तरागय जाव सुहासणवरगय एव वयासी सदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती देवी कण्ह वासुदेव एव वयासी–एव खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, त इच्छामि ण

देवीए मग्गणगवेसणं करित्तए, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीं पिउच्छिं एवं वयासी-जं णवरं पिउच्छा! दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं साहत्थि उवणेमित्तिकट्टु कोंतीं पिउत्थि सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया ॥ सू० २५ ॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु स युधिष्ठिरो राजा ततो मुहूर्तान्तरे प्रतिबुद्धः सन् द्रौपदीं देवीं पार्श्वे 'अपासमाणो' अपश्यन्=अनवलोकयन् शयनीयादुत्तिष्ठति, उत्थाय द्रौपद्या देव्या सर्वतः समन्ताद् मार्गणगवेषण करोति, कृत्वा द्रौपद्या देव्या 'कत्थइ' कुत्रापि 'सुइ' श्रुतिं सामान्यवृत्तान्तं वा, 'खुइ' क्षुतिं छिकादि शब्दं वा 'पवत्तिं' प्रवृत्तिं वा विशेषवृत्तान्तं अलभमानो

तएणं से जुहिट्ठिल्ले राया इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (से जुहिट्ठिल्ले राया) वे युधिष्ठिर राजा (तओ मुहुत्ततरस्स) एक मुहूर्त के बाद (पडिबुद्धे समाणे) जगे-और जगकर उन्होंने (दोवई देवीं) द्रौपदी देवी को (पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ) अपने पास जब नहीं देखा तो वे अपनी शय्या से उठे और उठकर द्रौपदी देवीकी सबओरसे उन्होंने मार्गणा गवेषणाकी (करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडुराया

'तएणं से जुहिट्ठिल्ले राया' इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएणं) त्यारपछी (से जुहिट्ठिल्ले राया) ते युधिष्ठिर राजा (तओ मुहुत्ततरस्स) એક મુહૂર્ત બાદ (पडिबुद्धे समाणे) જાગ્યા અને જાગીને તેમણે (दोवई देवी) द्रौपदी દેવીને,

(पासे अपासमाणो सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठित्ता दोवईए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ)

જ્યારે પોતાની પાસે જોઈ નહિ ત્યારે પોતાની શય્યા ઉપરથી ઊભા થયા અને ઊભા થઈને દ્રૌપદી દેવીની ચોમેર માર્ગણા ગવેષણા કરી

(करित्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे

वरगया हत्थिणाउरं मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ णिग्गच्छित्ता कुरु-
जणवये मज्झंमज्झेण जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी
जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ
पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं
वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी
तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं
वयह—एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणा-
उराओ नयराओ इह हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखइ, तएणं
ते कोडुंवियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंवि
यपुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगय
बारवईए य मज्झमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ
उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए
पायग्गहणं करेइ करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरूहइ
दुरुहित्ता बारावइए णयरीए मज्झमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव
उवागच्छइ उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ । तएणं से
कण्हे वासुदेवे कोंती देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तु-
त्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी संदिसउ णं पिउच्छा !
किमागमणपओयणं ?, तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं
एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स
आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ केणइ
अवहिया जाव अवक्खित्ता वा, तं इच्छामि णं

ततः खलु स पाण्डुराजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः! हस्तिनापुरे नगरे शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरमहापथपथेषु महता महता शब्देनोद्घोषयन्त एव वदत-एव खलु हे देवानुप्रिया! युधिष्ठिरस्य राज्ञ आकाशतलके सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किं पुरुषेण वा किन्नरेण वा महोरगेण वा

और सब प्रकार से मार्गणा और गवेषणा करना चाहता हूँ। (तए ण से पडुराया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छहाण तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे, सिंघाडगतीय चउक्कचच्चर महापहपहेसु महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ, देवेण वा दानवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा) इस बात को सुनकर के उन पाडुराजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियो! तुम लोग हस्तिनापुर नगर में जाओ-और वहा के शृगाटक, त्रिक चतुष्क, चत्वर, महापथ इन समस्त मार्गों में बडे जोर २ से ऐसी घोषणा बार २ करो कि हे देवानुप्रियों! सुनो प्रासादकी अट्टालिका पर सुखपूर्वक सोये हुए युधिष्ठिर राजा के पास से न मालूम किसी देवने, या दानवने, किसी, किन्नरने,

गवेषण कय) એટલા માટે હે તાત ! હુ ચોમેર બધી રીતે દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા ઈચ્છુ છુ

(तए ण से पडुराया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! हत्थिणाउरे नयरे, सिंघाडगतीयचउक्कचच्चरमहापहपहेसु महया २ सद्देण उग्घोसेमाणा २ एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! जुहिट्ठिल्लस्स रण्णो आगासतलगसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दानवेण वा किंनरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा हिया वा नीया वा अवक्खित्ता वा)

આ વાતને સાભળીને પાડુ રાજાએ કૌટુબિક પુરૂષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો હસ્તિનાપુર નગરમા જાઓ અને ત્યાના શૃગાટક, ત્રિક, ચતુષ્ક, ચત્વર, મહાપથ આ બધા માર્ગોમા મોટા સાદે આ જાતની ઘોષણા કરો કે હે દેવાનુપ્રિયો! સાભળો, મહેલની અગાશી ઉપર સુખેથી સૂતા યુધિષ્ઠિર રાજાની પાસેથી ન જાણે કોઈ દેવે કે દાનવે અથવા તો કોઈ કિન્નરે કે કિંપુરુષે અથવા કોઈ મહોરગે કે

यत्रैव पाण्डुराजा तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पाण्डुराजानमेवमवादीत्—हे तात! एवं खलु ममाकाशतले प्रासादाट्टालिकोपरि 'सुहपसुत्तस्स' सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी 'ण णज्जइ' न ज्ञायते केनापि देवेन वा दानवेन वा किन्नरेण वा किंपुरुषेण वा गन्धर्वेण वा हृता वा नीता=अन्यत्र प्रापिता वा अवक्षिप्ता वा=? कूपगर्तादौ कुचित् पातिता वा इत्यर्थः, तत्-तस्माद् इच्छामि खलु हे तात! द्रौपद्या देव्याः सर्वत समन्ताद् मार्गणगवेषण कर्तुम्।

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुरायं एव वयासी एव खलु ताओ मम आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा) मार्गणा गवेषणा करके जब उसने द्रौपदी देवी की कहीं भी शोध, सामान्य खबर को उस के चिह्नस्वरूप छिंका आदि के शब्द को, अथवा प्रवृत्ति-विशेष वृत्तान्त को नहीं पाया तब वे जहां पांडुराजा थे वहां गये-वहां जाकर के उन्होंने पाडुराजा से इस प्रकार कहा-हे तात! जब मैं प्रासाद की अट्टालिकाके ऊपर सुखसे सो रहा था-तब मेरे पाससे न मालूम द्रौपदी देवी को किसी देवने, दानवने, किन्नरने, किंपुरुषने, महोरगने, गधर्वने हरण कर कहां रख दिया है।-या उसे किसी कुए में या खड्डे में डाल दिया है (इच्छामि णं ताओ दोवईए देवीए सव्वओ समता मग्गण गवेसण कय) इस लिए हे तात! मैं द्रौपदी देवी की सब तरफ से

जेणेव पडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुराय एव वयासी एव खलु ताओ मम आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ देवेण वा दाणवेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गधव्वेण वा हिया वा णीया वा अवक्खित्ता वा)

માર્ગણા ગવેષણા કર્યા બાદ પણ જ્યારે તેમણે દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ રીતે, સામાન્ય ખબર અને ચિહ્ન સ્વરૂપ છીંક વગેરે શબ્દને અથવા તો પ્રવૃત્તિ-વિશેષ વૃત્તાત-ની પણ જાણ થઈ નહિ ત્યારે તેઓ જ્યા પાડુરાજા હતા ત્યા ગયા, ત્યા જઈને તેમણે પાડુરાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે તાત! જ્યારે હુ મહેલની અગાશીમા સૂઈ રહ્યો હતો ત્યારે મારી પાસે ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનુ કોઈ દેવે, દાનવે કે કિન્નરે કે કિંપુરુષે કે મહોરગે કે ગધર્વે હરણ કર્યું છે અથવા તો દ્રૌપદી દેવીને કોઈએ કૂવામા કે ખાડામા નાખી દીધી છે (इच्छामि ण ताओ दोवईए देवीए सव्वओ मग्गण-

ततः खलु स पाण्डू राजा द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा यावत् प्रवृत्तिम् अलभमानः कुन्तीं देवीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिये! द्वारवतीं नगरीं कृष्णस्य वासुदेवस्य एतमर्थं निवेदय=सुखप्रसुप्ता द्रौपदी केनाऽपि हृता नीता कूपादौ प्रक्षिप्ता वेति न ज्ञायते इत्येतद्रूप वृत्तान्त कथय, कृष्णः खलु परं वासुदेवो द्रौपद्या मार्गणगवेषण कुर्यात् अन्यथा न ज्ञायते द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा क्षुतिं वा उपलभेत।

पास भेजदी। इसके बाद जब पाडुराजा ने द्रौपदी देवी की कही पर भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्हो ने कुति देवी को बुलाया-(सद्दावि०ए०वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा-(गच्छहण तुम देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि, कण्हेण परं वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसण करेज्जा-अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा) हे देवानुप्रियो! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ-और उनसे इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया है। हरण कर उसे कहीं पहुचा दिया है या किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है। पता नही पडता है। वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही द्रौपदी की मार्गणा गवेषणा करेंगे। नही तो द्रौपदी देवी की श्रुति, क्षुति अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी-यह नही कहा जा सकता है।

श्रुति यावत् प्रवृत्ति मेळवी नहि त्यारे तेमणे कुंती देवीने बोलावी (सद्दा वि० ए० वयासी) अने बोलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्युं—

(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठ णिवेदेहि, कण्हेण परं वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसण करेज्जा अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुती वा खुती वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा)

हे देवानुप्रिये! तमे द्वारावती नगरीमां कृष्णवासुदेवनी पासे जाओ अने तेमने आ प्रमाणे विनंती करो के सुखथी सुतेली द्रौपदीनुं कोईए हरण करी लीधुं छे हरण करीने तेने क्यांक मूकी दीधी छे अथवा तो कोई कूवामां के खाडामां नाखी दीधी छे न जाणे शुं थई गयुं छे? कृष्णवासुदेव मने खात्री छे के चोक्कस द्रौपदी देवीनी मार्गणा गवेषणा करशे नहितर द्रौपदी देवीनी श्रुति, क्षुति अथवा प्रवृत्तिनी जाण अमने थशे एवी शक्यता जणाती नथी.

गन्धर्वेण वा हृता वा नीता वा अवक्षिप्ता वा, तत्=तस्मात् यः खलु हे देवानुप्रिया ! द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा क्षुतिं वा प्रवृत्तिं वा परिकथयति, तस्य खलु पाण्डु राजा विपुलमर्थसम्प्रदानं दानं ददाति-इति कृत्वा-इत्युक्त्वा घोषणां घोषयत, घोषयित्वा एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणां कृत्वा यावदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति=हे स्वामिन्! भवदाज्ञया घोषणा कृताऽस्माभिरिति निवेदयन्ति।

या किसी किंपुरुष ने या किसी महोरग ने या किसी गंधर्व ने द्रौपदी देवी को हरण कर लिया है-या हरणकर उसे कहीं रख दिया है अथवा किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है (त जो ण देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स णं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ) तो हे देवानुप्रियो! जो कोई भी मनुष्य द्रौपदी देवी की शोध करेगा यावत् उसके विशेषवृत्तान्त को लाकर देगा-हम से आकर कहेगा, उसको पाण्डुराजा बहुत अधिक मात्रा में अर्थ संप्रदान-दान-देगा। इस प्रकार की तुम घोसपणा करो, और घोषणा कर के फिर हमें इसकी पीछे खबर दो। इस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इसी प्रकारकी घोषणा करके इस की खबर राजाके

ગંધર્વે દ્રૌપદી દેવીનું અપહરણ કર્યું છે કે હરણ કરીને તેને ક્યાંક મૂકી દીધી છે કે કોઈ કૂવામાં અથવા તો ખાડામાં નાખી દીધી છે

(त जो ण देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइं वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्सणं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ)

તો હે દેવાનુપ્રિયો! જે કોઈ પણ માણસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત્ તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે, તેને પાંડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો. આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર રાજાને આપી ત્યારપછી જ્યારે પાંડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઈ સ્થાને

ततः खलु स पाण्डू राजा द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा यावत् प्रवृत्तिम् अलभमानः कुन्तीं देवीं शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिये ! द्वारवतीं नगरी कृष्णस्य वासुदेवस्य एतमर्थं निवेदय=सुखमसुप्ता द्रौपदी केनाऽपि हृता नीता कूपादौ प्रक्षिप्ता वेति न ज्ञायते इत्येतद्रूप वृत्तान्त कथय, कृष्णः खलु पर वासुदेवो द्रौपद्या मार्गणगवेषण कुर्यात् अन्यथा न ज्ञायते द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा प्रवृत्तिं वा क्षुतिं वा उपलभेत ।

पास भेजदी । इसके बाद जब पांडुराजा ने द्रौपदी देवी की कहीं पर भी श्रुती यावत् प्रवृत्ति नहीं पाई तब उन्हों ने कुंति देवी को बुलाया-(सद्दावि०ए०वयासी) और बुलाकर उन से ऐसा कहा-(गच्छहण तुम देवाणुप्पिया ! वारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि, कण्हेण पर वासुदेवे दोवइए मग्गणगवेसण करेज्जा -अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ-और उनसे इस अर्थका निवेदन करो कि सुख प्रसुप्त द्रौपदी को किसी ने हरलिया है। हरण कर उसे कहीं पहुंचा दिया है या किसी कुएँ में या खड्डे मे डाल दिया हैं। पता नहीं पडता है। वे कृष्ण वासुदेव अवश्य २ ही द्रौपदी की मार्गणा गवेषणा करेंगे। नहीं तो द्रौपदी देवी की श्रुति, क्षुति अथवा प्रवृत्ति हमें प्राप्त हो जावेगी-यह नहीं कहा जा सकता है।

श्रुति यावत् प्रवृत्ति મેળવી નહિ ત્યારે તેમણે કુંતી દેવીને બોલાવી (सद्दा वि० ए० वयासी) અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ—

(गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! वारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं णिवेदेहि, कण्हेण पर वासुदेवे दोवईए मग्गणगवेसण करेज्जा अन्नहा न नज्जई, दोवईए देवीए सुतीं वा खुतीं वा पवत्तीं वा उवलभेज्जा)

હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે દ્વારાવતી નગરીમા કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરો કે સુખથી સુતેલી દ્રૌપદીનુ કોઇએ હરણ કરી લીધુ છે હરણ કરીને તેને કયાક મૂકી દીધી છે અથવા તો કોઇ કૂવામા કે ખાડામા નાખી દીધી છે ન જાણે શું થઇ ગયુ છે ? કૃષ્ણવાસુદેવ મને ખાત્રી છે કે ચોક્કસ દ્રૌપદી દેવીની માર્ગણા ગવેષણા કરશે નહિતર દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ, ક્ષુતિ અથવા પ્રવૃત્તિની જાણ અમને થશે એવી શકયતા જણાતી નથી.

गन्धर्वेण वा हता वा नीता वा अवक्षिप्ता वा, तत्=तस्माद् यः खलु हे देवानु प्रिया ! द्रौपद्या देव्याः श्रुतिं वा क्षुतिं वा प्रवृत्तिं वा परिकथयति, तस्य खलु पाण्डु राजा विपुलमर्थसम्प्रदानं दानं ददाति=इति कृत्वा-इत्युक्त्वा घोषणां घोष यत, घोषयित्वा एतामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयत । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्त थैव घोषणां कृत्वा यावदाज्ञां प्रत्यर्पयन्ति=हे स्वामिन् ! भवदाज्ञया घोषणा कृताऽस्माभिरिति निवेदयन्ति ।

या किसी किंपुरुष ने या किसी महोरग ने या किसी गंधर्व ने द्रौपदी देवी को हरण कर लिया है-या हरणकर उसे कहीं रख दिया है अथवा किसी कुएँ में या खड्डे में डाल दिया है (त जो ण देवाणुप्पिया ! दोव ईए देवीए सुइ वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स णं पंडुराया विउल अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएण ते कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणति-तएण से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइवा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ) तो हे देवानुप्रियो ! जो कोई भी मनुष्य द्रौपदी देवी की शोध करेगा यावत् उसके विशेषवृत्तान्त को लाकर देगा-हम से आकर कहेगा, उसको पांडुराजा बहुत अधिक मात्रा में अर्थ सम्प्रदान-दान-देगा । इस प्रकार की तुम घोसपणा करो, और घोषणा कर के फिर हमें इसकी पीछे खबर दो। इस प्रकार राजा की आज्ञा पाकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इसी प्रकारकी घोषणा करके इस की खबर राजाके

ગંધર્વે દ્રૌપદી દેવીનું અપહરણ કર્યું છે કે હરણ કરીને તેને ક્યાંક મૂકી દીધી છે કે કોઈ કૂવામાં અથવા તો ખાડામાં નાખી દીધી છે

(त जो ण देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइ वा जाव पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्सणं पंडुराया विउलं अत्थसंपयाणं दाणं दलयइ, त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह २ एयमाणत्तिय पच्चप्पिणह, तएणं ते कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति-तएणं से पंडुराया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव अलभमाणे कोंतीं देवीं सद्दावेइ)

તો હે દેવાનુપ્રિયો ! જે કોઈ પણ માણસ દ્રૌપદી દેવીની શોધ કરશે યાવત્ તેના વિષે સવિશેષ સમાચાર જાણીને અમને ખબર આપશે, અમને કહેશે, તેને પાંડુ રાજા ખૂબ જ દ્રવ્ય-ધન આપશે આ રીતે તમે ઘોષણા કરો અને ઘોષણા થઈ જવાની અમને ખબર પણ આપો. આ રીતે રાજાની આજ્ઞા સાંભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરીને તેની ખબર રાજાને આપી ત્યારપછી જ્યારે પાંડુ રાજાએ દ્રૌપદી દેવીની કોઈપણ સ્થાને

देवानुप्रियाः ! यत्रैव द्वारवती नगरी तत्रैवानुप्रविशत, अनुप्रविश्य कृष्णं वासुदेव करतलपरिगृहीतदशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं वदत एवं खलु हे स्वामिन् ! युष्माकं पितृष्वसा कुन्ती देवी हस्तिनापुराद् नगराद् इह हव्यमागता युष्माकं दर्शनं काङ्क्षति । ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा यावत् कथयन्ति=कृष्ण-वासुदेवस्य समीपे कुन्तीकथितं वचनं निवेदयन्तीत्यर्थः । ततः खलु कृष्णो वासु-

वह हाथी से नीचे उतरी और उतर कर के उसने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया- बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवईणयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह, एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया,-तुब्भं दंसणं कखइ, तएणं ते कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगयबारवईए य मज्झं मज्झेण जेणेव कोंती देवी-तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगरी में जाओ-वहां जाकर कृष्ण वासुदेव को दोनों हाथोंकी अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रख-कर शिर झुकाते हुए नमस्कार करना-बादमें उनसे ऐसा कहना-कि हे स्वामिन् ! आपकी पितृष्वसा-बुआ-कुंती देवी हस्तिनापुर नगर से यहां अभी -आई है-वे आपके दर्शन करना चाहती हैं। उन कौटु-म्बिक पुरुषोंने कुंती देवी की इस आज्ञा को शिरोधार्य कर श्री कृष्ण

રોકાઈ ત્યાં જઈને તે હાથી ઉપરથી નીચે ઉતરી અને ઉતરીને તેણે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जेणेव बारवई णयरी, तेणेव अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल० एवं वयह एवं खलु सामी ! तुब्भं पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इह हव्वमागया, तुब्भं दंसणं कखइ, तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव कहेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसाणं अंतिए सोच्चा णिसम्म हत्थिखंधवरगए हयगयबारवईए य मज्झं मज्झेणं जेणेव कोंती देवी-तेणेव उवागच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારાવતી નગરીમાં જાઓ, ત્યાં જઈને કૃષ્ણવાસુદેવને બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને માથું નીચે નમાવીને નમસ્કાર કરજો ત્યારપછી તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરજો કે હે સ્વામિન્ ! તમારી પિતૃષ્વસા-ફોઈ કુંતી દેવી હસ્તિનાપુર નગરથી અત્યારે અહીં આવ્યા છે તેઓ તમને જોવા માગે છે તે કૌટુંબિક પુરુષોએ કુંતી દેવીની આ આજ્ઞાને સ્વીકારીને શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવને આ સમાચારની ખબર આપી

ततः खलु सा कुन्ती देवी पाण्डुना राज्ञा एवमुक्ता सती यावत् प्रतिशृणोति= पाण्डुनृपस्याज्ञां स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य-स्वीकृत्य स्नाता कृतबलिकर्मा हस्तिस्कन्धवरगता हस्तिनापुरस्य मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य कुरुजनपदस्य=कुरुनामकस्य देशस्य मध्यमध्येन यत्रैव सौराष्ट्रजनपदः, यत्रैव द्वारवती नगरी, यत्रैवाग्रोद्यानं=यत्रान्यस्थानादागतानां स्थितिर्भवति विश्रामाय तादृशं बहिः प्रदेशवर्त्युपवनम् , तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति, प्रत्यवरुह्य कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे

(तएणं सा कोंती देवी पंडुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं मज्झं मज्झेण णिगच्छइ णिगच्छित्ता कुरुजणवयं मज्झं मज्झेण जेणेव सुरट्ठ जणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) इस के बाद पांडुराजा द्वारा इस प्रकार कही गई कुंती देवी ने पांडुराजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया-और स्वीकार कर के उसने स्नान किया-काक आदि पक्षियों के लिये अन्नदेने रूप बलि कर्म किया। बाद में वह हाथी के ऊपर बैठकर हस्तिनापुर नगर के बीच से होकर निकली -निकलकर वह कुरुदेश के बीच से होती हुई जहां सौराष्ट्र जनपद था और उसमें भी जहां द्वारावती नगरी थी-वहां पर भी जहां वह अग्रउद्यान था कि जिसमें बाहरसे आये हुए पथिक विश्राम के लिये ठहर जाते थे-वहां गई। वहां जाकर

(तए णं सा कोंती देवी पण्डुरण्णा एवं वुत्ता समाणी जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं मज्झं मज्झेण णिगच्छइ, णिगच्छित्ता कुरुजणवयं मज्झं मज्झेण जेणेव सुरट्ठजणवए जेणेव बारवई णयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी) ત્યારપછી પાંડુરાજા વડે આ પ્રમાણે આજ્ઞાપિત થયેલી કુંતી દેવીએ પાંડુરાજાની આજ્ઞાને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેણે સ્નાન કર્યું કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્નભાગ અર્પીને બલિકર્મ કર્યું ત્યારપછી તે હાથી ઉપર સવાર થઈને હસ્તિનાપુર નગરની વચ્ચે થઈને નીકળી નીકળીને તે કુરુદેશની વચ્ચે થઈને જ્યાં સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતું અને તેમાં પણ જ્યાં અગ્ર ઉદ્યાન હતું-કે જેમાં બહારથી આવનારા પથિકો વિશ્રામ માટે -તેમાં

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्ती देवी स्नाता कृतबलिकर्मा काकादिभ्यः कृतान्नसंविभागा जिमितभुक्तोत्तरागता जिमिता-भोजनं कृतवती भुक्तोत्तरागता-भुक्तोत्तरकाल-भोजनोत्तरकालम्-आगता, तां तथा, यावत् सुखासनवरगता=सुखपूर्वकं विशिष्टासनोपविष्टाम् एवमवादीत्-हे पितृष्वसः ! संदिशन्तु किमागमनप्रयोजनम् ?, ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र ! हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरस्याकाशतले सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि अपहृता यावद् अवक्षिप्ता वा, तत् तस्माद् इच्छामि खलु हे पुत्र !

चले गये । कुंती ने वहां जाकर स्नान किया बलिकर्म किया । बाद में चतुर्विध आहार को जीमकर जब वे सुखपूर्वक बैठ गई तब कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा (संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्लस्स अगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा तं इच्छामिणं पुत्ता ! दोवईए देवीए मग्गणगवेसणं करित्तए) हे भुआजी ! कहिये-किस कारण से आप यहां पधारी हैं ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर उस कुंतीने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-पुत्र ! सुनो-आने का कारण इस प्रकार है-हस्तिनापुर नगरमें प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सुखके साथ सोये हुए युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी न मालूम किसीने हरण करली है-यावत् किसी कुए मे या खड्डे में डाल दी है।

અંદર ગયા કુંતીએ ત્યાં પહોંચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું ત્યાર પછી ચાર જાતના આહારો જમીને જ્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઈને બેઠી ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યું કે —

(संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवीण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए मग्गणगवेसणं करित्तए)

કહો, શા કારણથી તમે અહીં આવ્યા છો ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાંભળીને કુંતી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર ! સાંભળો, હું એટલા માટે અહીં આવી છું કે હસ્તિનાપુર નગરમાં મહેલની અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનું હરણ કરી લીધું છે યાવત કોઈ કૂવામાં એ કે ખાડામાં નાખી દીધી છે એથી હે પુત્ર ! હું ઇચ્છું છું કે—દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી જોઈએ

देः कौटुम्बिकपुरुषाणामन्तिके श्रुत्वा निशम्य हस्तिस्कन्धवरगतो हयगजरथ पदातिसपरिवृतो द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव कुन्ती देवी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य हस्तिस्कन्धात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य कुन्त्या देव्याः पादग्रहणं करोति, कृत्वा कुन्त्या देव्या सार्धं हस्तिस्कन्धं 'दुरुहइ' दुरोहति-आरोहतीत्यर्थः। दुरुह्य द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकं गृहमनुप्रविशति।

वासुदेव के लिये इस समाचार की खबर करदी कृष्ण वासुदेव कौटुम्बिक पुरुषों के पास से इस समाचार को सुनकर और उसे हृदय में धारण कर हाथी पर बैठ, हयगज, रथ एवं पदातियो के साथ २ द्वारावती नगरी के बीच से होते हुए जहां कुंतीदेवी थी वहा आये। (उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुपविसइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीदेवीं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासणवरगयं एवं वयासी) वहा आकर वे हाथी पर से नीचे उतरे और उतरकर कुंती देवी के चरणो में नमन किया-चरण स्पर्श करके कुंतीदेवी के साथ २ हाथी पर बैठ गये-बैठ कर के द्वारावती नगरी के ठीक भीतर से होकर जहां अपना गृह-प्रासाद-था वहां आये-वहा आकर प्रासाद के भीतर

દીધી કૃષ્ણવાસુદેવે કૌટુંબિક પુરુષોની પાસેથી આ સમાચારો સાંભળીને તેને હૃદયમાં ધારણ કરીને, હાથી ઉપર સવાર થઈને, ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળોની સાથે દ્વારાવતી નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં કુંતી દેવી હતા ત્યાં આવ્યા

(उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करित्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सयं गिहं अणुपविसइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंती देवीं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सिंहासणवरगयं एवं वयासी)

ત્યાં પહોંચીને તેઓ હાથી ઉપરથી નીચે ઉતર્યાં અને ઉતરીને કુંતી દેવીને પગે લાગ્યા અને પગે લાગીને કુંતી દેવીની સાથે હાથી ઉપર સવાર થયા સવાર થઈને જ્યાં પોતાનું ભવન હતું ત્યાં આવ્યા, ત્યાં

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्ती देवी स्नाता कृतबलिकर्मा काकादिभ्यः कृतान्नसंविभागा जिमितभुक्तोत्तरागता जिमिता-भोजनं कृतवती भुक्तोत्तरागता-भुक्तोत्तरकाल-भोजनोत्तरकालम्-आगता, ता तथा, यावत् सुखासनवरगता=सुखपूर्वक निविष्टासनोपविष्टाम् एवमवादीत्-हे पितृष्वसः ! संदिशन्तु किमागमनप्रयोजनम् ?, ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे पुत्र ! हस्तिनापुरे नगरे युधिष्ठिरस्याकाशतले सुखप्रसुप्तस्य पार्श्वाद् द्रौपदी देवी न ज्ञायते केनापि अपहृता यावद् अवक्षिप्ता वा, तत् तस्माद् इच्छामि खलु हे पुत्र !

चले गये। कुंती ने वहां जाकर स्नान किया बलिकर्म किया। बाद में चतुर्विध आहार को जीमकर जब वे सुखपूर्वक बैठ गई तब कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा (संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे जुहिट्ठिल्लस्स अगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी ण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा तं इच्छामिणं पुत्ता ! दोवईए देवीए मग्गणगवेसणं करित्तए) हे भुआजी ! कहिये-किस कारण से आप यहां पधारी हैं ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर उस कुंतीने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-पुत्र ! सुनो-आने का कारण इस प्रकार है-हस्तिनापुर नगरमें प्रासाद की अट्टालिका के ऊपर सुखके साथ सोये हुए युधिष्ठिर के पास से द्रौपदी देवी न मालूम किसीने हरण करली है-यावत् किसी कुए मे या खड्डे में डाल दी है।

અંદર ગયા. કુંતીએ ત્યાં પહોંચીને સ્નાન કર્યું અને બલિકર્મ કર્યું. ત્યાર પછી ચાર જાતના આહારો જમીને જ્યારે તે સુખેથી સ્વસ્થ થઈને બેઠી ગયા ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે તેમને કહ્યું કે —

(संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे णयरे जुहिट्ठिल्लस्स आगासतले सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवीण णज्जइ, केणइ अवहिया जाव अवक्खित्ता वा तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए मग्गणगवेसणं करित्तए)

કહો, શા કારણથી તમે અહીં આવ્યા છો ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાંભળીને કુંતી દેવીએ કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર ! સાંભળો, હું એટલા માટે અહીં આવી છું કે હસ્તિનાપુર નગરમાં મહેલની અગાશી ઉપરથી સુખેથી સૂતેલા યુધિષ્ઠિરની પાસેથી ન જાણે કોણે દ્રૌપદી દેવીનું હરણ કરી લીધું છે યાવત્ કોઈ કૂવામાં એ કે ખાડામાં નાખી દીધી છે એથી હે પુત્ર ! હું ઇચ્છું છું કે—દ્રૌપદી દેવીની શોધખોળ થવી જોઈએ

द्रौपद्या देव्या मार्गणगवेषणं 'करित्तए' कर्तुम् इति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं 'पिउच्छिं' पितृष्वसारमेवमवादीत्-यावत् नवरं हे पितृष्वसः! यदि द्रौपद्या देव्याः कुत्रापि श्रुतिं वा क्षुतिं वा प्रवृत्तिं वा यावत् लभे, 'तो णं' तर्हि खलु, अहं पातालाद् भवनाद् वा अर्धभरताद् वा=भरतक्षेत्रमध्यात् समन्तात्=सर्वतः स्थानाद्, द्रौपदीं देवीं 'साहत्थिं' स्वहस्तेन 'उवणेमि' उपनयामि, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा कुन्तीं 'पिउच्छिं' पितृष्वसारं सत्करोति सम्मानयति, सत्कार्य

इस लिये हे पुत्र! मैं चाहती हूँ कि द्रौपदी की मार्गणा एव गवेषणा होनी चाहिये। (तएण से कण्हे वासुदेवे कोंतीं पिउच्छिं एवं वयासी-जं णवरं पिउच्छी दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्धभरहाओ वा, समंतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमि त्ति कट्टु कोंती पिउच्छिं सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तएणं सा कोंती देवी कण्हेण वासुदेवेणं पडिविसज्जिया, समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया) तब कृष्ण वासुदेव ने अपनी भुआ कुंती देवी से इस प्रकार कहा-हे भुआ! मैं और अधिक तो क्या कहूँ-द्रौपदी देवी की यदि मैं कहीं पर भी श्रुतिक्षुति, और प्रवृत्ति पा लेता हूँ तो मैं चाहे वह पाताल में हो, या किसीके भवन में हो, या अर्ध भरत क्षेत्र में से कहीं पर भी क्यों न हो-उस द्रौपदी देवी को सब जगह से अपने हाथों से ला कर दूँगा। इस प्रकार कहकर उन कृष्ण वासुदेव ने अपनी पितृष्वसा कुंती देवी का सत्कार किया।

(तएण से कण्हे वासुदेवे कोंती पिउच्छिं एवं वयासी जं णवरं पिउच्छा दोवइए देवीए कत्थइ सुइं वा जाव लभामि तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ अद्ध भरहाओ वा, समंतओ दोवइं साहत्थिं उवणेमित्ति कट्टु कोंती पिउच्छिं सक्कारेइ सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ, तएण सा कोंती देवी कण्हेण वासुदेवेण पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउ० तामेव दिसिं पडिगया)

ત્યારે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના ફોઈ કુંતી દેવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ફોઈ! હું વધારે શું કહું, દ્રૌપદી દેવીની જો હું કોઈ પણ સ્થાને શ્રુતિ, ક્ષુતિ અને પ્રવૃત્તિ મેળવી લઈશ તો ભલે તે પાતાળમાં હોય, કોઈના ભવનમાં હોય કે અર્ધ ભરત ક્ષેત્રમાં ગમે ત્યાં કેમ ન હોય તે દ્રૌપદી દેવીને ગમે ત્યાંથી હું લાવી આપને આપીશ તેમ છું આ પ્રમાણે કહીને તે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના ફોઈ પિતૃષ્વસા-કુંતીદેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર ને

समान्य यावत्-प्रतिविसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी कृष्णेन वासुदेवेन प्रतिविसर्जिता सती यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता । सू०२७ ॥

मूलम्-तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! बारवइं एवं जहा-पंडू तहा घोसणं घोसावेति जाव पच्चप्पिणंति, पंडुस्स जहा तएणं से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोवइए जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुमं णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामा जाव अणुपविससि, तं अत्थि याइं ते कहिं वि दोवइए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा ?, तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अन्नया कयाइं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढभरहवासं अवरकंकारायहाणिं गए, तत्थ णं मए पउमनाभस्स रन्नो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया! एवं पुव्वकम्मं, तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं

सन्मान किया, सत्कार सन्मान कर यावत् उन्हें प्रति विसर्जित कर दिया । इसके बाद वे कुंती देवी वहां से प्रतिविसर्जित होकर जिस दिशा से प्रकट हुई थी-उसी दिशा की ओर चली गई ॥ सू०२७ ॥

કરીને તેમને વિદાય કર્યા, ત્યારપછી તે કુંતીદેવી ત્યાંથી વિદાય મેળવીને જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે જ તરફ પાછા રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૨૭ ॥

तएणं से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ॥ सूत्र २८ ॥

आवाहेइ आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तएणं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी–गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर पंडुस्स रन्नो एयमट्ठ निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे अवरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवइए देवीए पउत्ती उवलद्धा, त गच्छंतु पंच पडवा चाउरंगिणीए सेणाए सर्द्धि सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवालेमाणा चिट्ठतु, तएण से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंवियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह, ते वि –तालेति, तएणं तेसिं सण्णाहियाए भेरीए सद्द सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, तएण कण्हे वासुदेवे हत्थिखधवरगए सकोरटमल्लदामेण छत्तेण० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेण वारवईए णयरीए मज्झ मज्झेण णिग्गच्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचहि पडवेहि सद्धि एगयओ मिलित्ता [illegible] करेइ

करित्ता पोसहसाल अणुपविसइ अणुपविसित्ता सुट्ठिय देवं मणसि करेमाणे२ चिट्ठइ, तएण कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणसि सुट्ठिओ आगओ, भण देवाणुप्पिया ! ज मए कायव्व, तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी जाव पउमनाभस्स भवणसि साहरिया तण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मम पंचहि पंडवेहि सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जण्ण अह अमरकंकारायहाणी दोवईए कूवं गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-किण्ह देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएणं देवेण दोवई जाव संहरिया तहा चेव दोवई देविं धायइसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुर साहरामि, उदाहु पउमणाभ राय सपुरबलवाहण लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?, तएण कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय देव एव वयासी -मा ण तुम देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुम णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण मग्गं वियराहि, सयमेव ण अह दोवईए कूव गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह वासुदेव एव वयासी-एव होउ, पचहिं पडवेहिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ, तएण से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीसेण पडिविसज्जेइ-पडिविसज्जित्ता पचहि पंडवेहि सद्धि अप्पछट्ठे छहि रहेहि लवणसमुद्द

आवाहेइ आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए, तएण से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउर पंडुस्स रन्नो एयमट्ठं निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडे दीवे पुरच्छिमद्धे अवरककाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवइए देवीए पउत्ती उवलद्धा, त गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं सपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए मम पडिवालेमाणा चिट्ठतु, तएण से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं ताडेह, ते वि –तालेंति, तएण तेमि सण्णाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दसदसारा जाव छप्पण्णं बलवयसा हस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया गयगया जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सु-हम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, तएण कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवर-गए सकोरंटमल्लदामेण छत्तेण० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेण बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेण णिग्ग-च्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचहि पडवेहि सद्धिं एगयओ मिलित्ता [illegible] करेइ

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि त्तिकट्टु दारुयं सारहिं एवं वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्तिकट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एवं वयासी--एवं खलु अहं सामी ! तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रिय ! द्वारवतीं नगरीम् , 'एवं यथा पाण्डुस्तथा घोषणां घोषयत '-यथा पाण्डू राजा हस्तिनापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—ःतएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दावित्ता) बुलाकर (एवं वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया बारवइं) हे देवानुप्रियों ! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एवं जहा पंडू तहा घोसण घोसावेंति जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा) वहा पांडु राजाकी तरह घोषणा करो-अर्थात् पाडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी-इसी प्रकार की घोषणा करने के

'तएण से कण्हे वासुदेवे ' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ વાસુદેવે (कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ) કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दावित्ता) બોલાવીને (एवं वयासी) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया बारवइं) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારવતી નગરીમા જાઓ (एवं जहा पंडू तहा घोसण घोसावेंति जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा) ત્યા પાડુ રાજાની જેમ જ ઘોષણા કરો એટલે કે પાડુ રાજાએ જેમ દ્રૌપદીની શોધ કરવા માટેની દ્રવ્ય આપવાની ઘોષણા હસ્તિનાપુર નગરમા કરાવી હતી તે પ્રમાણે જ ઘોષણા કરવા

मज्झमज्झेणं वीइवयइ वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका राय हाणी जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ उवा गच्छित्ता रह ठवेइ ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुम देवाणुप्पिया! अमरकंकारायहाणीं अणुपविसाहि२ पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएणं पायपीढ अक्कमित्ता कुतग्गेणं लेहं पणामेहि त्तिवलिय भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चाडिक्किए एव वयासी- हं भो पउमणाहा! अपत्थियपत्थिया दुरतपंतलक्खणा हीणपुन्नचा उद्दसा सिरी हिरि धी परिवज्जिया अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे णिग्गच्छाहि एस ण कण्हे वासुदेवे पंचहि पडवेहि अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता अमरकका रायहाणि अणुपविसइ अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेत्ता एव वयासी--एस ण सामी! मम विणयपडिवित्ती इमा अन्ना मम सामिस्स समुहाणत्तित्तिकट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढ अणुक्कमइ अणुक्कमित्ता कोंतग्गेणं लेह पणामइ पणामित्ता जाव कूव हव्वमागए, तएणं से पउमणाभे दारुणेणं सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते त्तिवलि भिउडि निडाले साहट्टु एव वयासी -णो अप्पिणामि णं अह देवाणुप्पिया!

वासुदेवस्स दोवई, एसणं अहं सयमेव जुज्झसज्जो णिग्गच्छामि त्तिकट्टु दारुय सारहिं एव वयासी-केवलं भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्तिकट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं णिच्छुभावइ, तएणं से दारुए सारही पउमणाभेणं असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० कण्हं जाव एव वयासी--एवं खलु अहं सामी ! तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ ॥ सू० २८ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत् गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिय ! द्वारवतीं नगरीम्, 'एव यथा पाण्डुस्तथा घोषणां घोषयत '-यथा पाण्डू राजा हस्तिनापुरे घोषणा कारितवान् तद्वदित्यर्थः । तेऽपि कौटुम्बिकपुरुषास्तथैव घोषणा

—:तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदवे) उन कृष्ण वासुदेव ने (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया (सद्दाविसा) बुलाकर (एव वयासी) उन से ऐसा कहा (गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया बारवइ) हे देवानुप्रियो ! तुम द्वारावती नगर में जाओ (एव जहा पडु तहा घोसण घोसावेंति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) वहा पांडु राजाकी तरह घोषणा करो-अर्थात् पाडु राजाने जिस प्रकार द्रौपदी की खबर लानेवाले के लिये अर्थ प्रदान का घोषणा अपने कौटुम्बिक पुरुषों द्वारा हस्तिनापुर नगर में करवाई थी-इसी प्रकार की घोषणा करने के

'तएण से कण्हे वासुदेवे' ઇત્યાદિ

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से कण्हे वासुदेवे) તે કૃષ્ણ વાસુદેવે (कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ) કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા (सद्दाविता) બોલાવીને (एव वयासी) તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया बारवई) હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે દ્વારવતી નગરીમાં જાઓ (एव जहा पडु तहा घोसण घोसावेंति जाव पच्चप्पिणति पडुस्स जहा) ત્યાં પાંડુ રાજાની જેમ જ ઘોષણા કરો એટલે કે પાંડુ રાજાએ જેમ દ્રૌપદીની શોધ કરવા માટેની દ્રવ્ય આપવાની ઘોષણા હસ્તિનાપુર નગરમાં કરાવી હતી તે પ્રમાણે જ ઘોષણા કરવા

करता 'जाव पच्चप्पिणंति' यावत् प्रत्यर्पयन्ति-घोषणां कृत्वा-कृष्णस्य वासुदेवस्यान्तिके ते कौटुम्बिकपुरुषा निवेदयन्ति-द्वारवत्यां नगर्यां सर्वत्र घोषणाकृताऽस्माभिरिति। 'पड्डस्स जहा' पाण्डोरिवा यथा पाण्डो नृपस्य वर्णकस्तथाऽत्रापि बोध्यः। यथा पाण्डुराजा द्रौपद्याः श्रुतिं यावत् प्रवृत्तिं न लब्धवान्, तथा कृष्णवासुदेवोऽपि द्रौपद्याः श्रुत्यादिकं न प्राप्तवानिति भावः। ततः खलु कृष्णो वासुदेवः अन्यदा=अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित् समये 'अंतो' अन्तः-स्वप्रासाद अन्तःपुरगतोऽवरोधे यावद् विहरति। 'इमं च णं' अस्मिन् समये च खलु 'कच्छुल्लए' कच्छुल्लको नारदो यावत् समवसृतः= गगनतलादवतरन् कृष्णभवनि समागत यावत् निषद्य=उपविश्य गगनतलादवतरन् कृष्णभवनि समागतः, यावत् निषद्य=उपविश्य

लिये कृष्ण वासुदेव ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को आदेश दिया कि वे भी द्वारावती में इसी तरह की घोषणा करें। अपने राजा की आज्ञानुसार उन्हों ने द्वारावती में घोषणा करदी और इस की खबर पीछे कृष्ण वासुदेव को कर दी। यहां अवशिष्ट वर्णन पांडु राजा के जैसा वर्णन है वैसा ही जानना चाहिये। अर्थात् घोषणा कराने पर भी द्रौपदी की किसी भी प्रकार की खबर वगैरह का कोई भी समाचार पाडु राजा को नहीं मिला वैसा कृष्ण वासुदेव को भी नहीं मिला (तएण) तब (से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंतेउरगए ओरोहे जाव विहरइ इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोसरए) वे कृष्ण वासुदेव एक दिन की बात है कि अपने अन्तःपुर के प्रासाद के भीतर अन्तःपुर की स्त्रियों के साथ बैठे हुए थे कि इसी समय वे कच्छुल्ल नाम के नारद आकाश मार्ग से

માટે કૃષ્ણ વાસુદેવે પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને આજ્ઞા કરી કે તેઓ પણ દ્વારાવતી નગરીમાં આ પ્રમાણે જ ઘોષણા કરે પોતાના રાજાની આજ્ઞા પ્રમાણે તે લોકોએ દ્વારવતી નગરીમાં ઘોષણા કરી અને ઘોષણાનું કામ થઈ ગયું છે તેની ખબર પણ કૃષ્ણ વાસુદેવની પાસે પહોંચાડી દીધી અહીં અવશિષ્ટ વર્ણન પાંડુ રાજાનું જેવું છે તે પ્રમાણે જ સમજી લેવું જોઈએ એટલે કે ઘોષણા કર્યા પછી પણ પાંડુ રાજાને દ્રૌપદી દેવીની કોઈ પણ જાતની ખબર કે સમાચાર મળ્યા નહિ તે પ્રમાણે કૃષ્ણ વાસુદેવને પણ કોઈ પણ સમાચારો ઘોષણા બાદ મળ્યા નહિ (तएण) ત્યારે (से कण्हे वासुदेवे अन्नया अंतो अंते उरगए ओरोहे जाव विहरइ, इमं च णं कच्छुल्लए जाव समोसरए) એક દિવસની વાત છે કે તે કૃષ્ણ વાસુદેવ પોતાના મહેલની અંદર રણવાસની સ્ત્રીઓની સાથે બેઠા હતા તે વખતે કચ્છુલ્લ નામે નારદ આકાશ મા[illegible] ત્યા

कृष्ण वासुदेवं कुशलोदन्त=कुशलवार्ता पृच्छति, ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्ल नारदमेवमवादीत्–हे देवानुप्रिय ! त्वं खलु बहूनि ग्रामाकरादीनि परिभ्राम्यसि, तत्र बहूनि गृहाणि यावदनुप्रविशसि तत् तस्मादस्ति 'आइ' इति वाक्यालङ्कारे ते त्वया यदि कुत्रचिद् द्रौपद्यादेव्या श्रुतिर्वा यावद् उपलब्धा=ज्ञाता ? तर्हि कथय' इति भावः। ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्–एवं खलु हे देवानुप्रियाः अहमन्यदाकदाचित् धातकीषण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे=पूर्वदिग्भागवर्तिनि, दक्षिणार्धभरतवर्षे–अमरकङ्कानाम्नी राजधानी गतः। तत्र खलु मया

उतरकर वहां आये–(जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदतं पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी–तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणुपविससि तं अत्थि आइ ते कहिं वि दोवईए देवीए सुतीवा जाव उवलद्धा तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) यावत् बैठकर उन्हों ने कृष्ण वासुदेव से कुशल वृत्तान्त पूछा –कृष्णवासुदेव ने तब कच्छुल्ल नारद से ऐसा कहा–हे देवानुप्रिय ! तुम अनेक ग्राम आकर आदिस्थानों में परिभ्रमण करते रहते हो–अनेक गृहादिको में आते जाते रहते हो तो कहो–कही पर क्या तुम्हें द्रौपदी देवी की श्रुति उपलब्ध हुई है–उसकी तुम्हें किसी प्रकार की कोई खबर मिली है–उसका किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह उपलब्ध हुआ है ? इस प्रकार कृष्ण वासुदेव के पूछने पर कच्छुल्ल नारद ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा–(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइ

આવ્યા (जाव णिसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी, तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव अणुपविससि तं अत्थि आइ ते कहिं वि दोवईए देवीए सुती वा जाव उवलद्धा– तएणं से कच्छुल्ले कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) ત્યાં આવીને બેઠા અને બેસીને તેમણે કૃષ્ણ વાસુદેવને કુશળ વાર્તા પૂછી વાસુદેવે ત્યારે કચ્છુલ્લ નારદને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે ઘણા ગ્રામ, આકર વગેરે સ્થાનોમાં પરિભ્રમણ કરતા રહો છો, ઘણા ઘરો વગેરેમાં આવજા કરતા રહો છો તો કહો, કોઈ પણ સ્થાને તમને દ્રૌપદી દેવીની શ્રુતિ મળી છે–તેના તમને કોઈ પણ જાતના સમાચારો મળ્યા છે, તેનું કોઈ પણ જાતનું ચિહ્ન તમને મળ્યું છે ? આ રીતે કૃષ્ણ વાસુદેવના પ્રશ્નને સાંભળીને કચ્છુલ્લ નારદે તે કૃષ્ણ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે —

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! अन्नया कयाइं धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध

पद्मनाभस्य राज्ञो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी दृष्टपूर्वा चाप्यभवत्, अत्र भावः-काचिद्द्रौपदीसदृशी देवी पद्मनाभस्य राज्ञोभवने दृष्टा किन्तु सा मया न सम्यग् ज्ञाता नापि सम्यक्परिचिता, इति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेव मवादीत्-हे देवानुप्रियाः युष्माकमेव खलु 'एतत्' इदम् 'पुव्वकम्म' पूर्वकर्म -पूर्वकृत कर्म, युष्माभिरेवेदं कर्म पूर्वं कृतमित्यर्थः । ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः सन् उत्पतनीं विद्यामावाहयति। आवाह्य यस्याः एव दिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो दूतं शब्दयति=

धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध दाहिणड्ढभरहवासं अमरकंका रायहाणि गए तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठ पुव्वा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया ! एयं पुव्वकम्म-तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए) सुनो मैं तुम्हें बताता हूँ -हे देवाणुप्रिय ! मैं किसी एक समय द्वितीय धातकी खंड द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकंका नाम की राजधानी में गया हुआ था वहा मैंने पद्मनाभ राजा के भवन में द्रौपदी देवी जैसी एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय ! आपने ही ऐसा कार्य सब से पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दाहिणड्ढभरहवासं अमरकंका रायहाणि गए, तत्थणं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी, जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेवणं देवाणुप्पिया ! एवं पुव्व कम्म-तएणं से कच्छुल्ल नारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए)

સાભળો, તમને હુ બધી વિગત બતાવું છુ હે દેવાનુપ્રિય ! કોઈ એક વખતે હુ ધાતકી ખંડદ્વીપમા, પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમા, અમરકંકા નામે રાજધાનીમા ગયો હતો ત્યા મે પદ્મનાભ રાજાના ભવનમા દ્રૌપદી દેવી જે નારી જોઈ હતી પણ હુ તેને સારી પેઠે ઓળખી શકયો નહિ પરિચિત થઈ શકયો નારદની આ વાત સાભળીને કૃષ્ણવાસુ નપ્રિય ! સૌ પહેલા તમે જ આ કામ કર્યું છે ત્યાર ની આ વાત સાભળીને

आह्वयति, शब्दयित्वा-एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रियाः ! हस्तिनापुरं पाण्डोराज्ञ एतमर्थं निवेदय-एवं खलु हे देवानुप्रिय ! धातकीषण्डे द्वीपे 'पुरस्थिमद्धे' पौरस्त्यार्धे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरकङ्कायां राजधान्यां पद्मनाभभवने द्रौपद्या देव्याः प्रवृत्तिरुपलब्धा, तत्=तस्मात् गच्छन्तु पञ्च पाण्डवाश्चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं संपरिवृताः 'पुरस्थिमवेयालीए' 'पौरस्त्यवेलायां-पूर्वदिग्वर्तिनि लवणसमुद्रे मां 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा स्तिष्ठन्तु, ततस्त दनन्तरं स दूतो यावत् पाण्डोरग्रे गत्वा कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं भणति=कथयति= 'पडिवालेमाणा चिट्ठह' अयं भावः-'धातकीषण्डे द्वीपे पूर्वदिग्भागवर्तिनि अमरकङ्कायां राजधान्यां पद्मनाभभवने द्रौपद्याः प्रवृत्तिरुपलब्धा, तस्मात् पञ्च पाण्ड-

इस प्रकार कहे जाने पर अपनी उत्पतनीविद्याका स्मरण किया। स्मरण करके फिर वे जिस दिशा से प्रकट हुए थे उसी दिशा की ओर चले गये। (तएण से कण्हे वासुदेवे दूयं सहावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छण तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेहि) इसके बाद उन कृष्ण वासुदेव ने दूत को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम हस्तिनापुर नगर जाओ-वहां पाडु राजा से ऐसा कहना-(एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा-तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु) हे देवानुप्रिय ! यह वक्तव्य विषय यह है-धातकी षंड नाम के द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र मे वर्तमान अमरकंका नाम की राजधानी मे पद्मनाभ राजा

વિદ્યાનું સ્મરણ કર્યું સ્મરણ કરીને પછી તેઓ જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે જ દિશા તરફ પાછા રવાના થઈ ગયા (तएण से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छ ण तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेदेहि) ત્યારપછી તે કૃષ્ણ વાસુદેવે દૂતને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હસ્તિનાપુર નગરમાં જાઓ-અને ત્યાં પાંડુ રાજાને આ પ્રમાણે કહો કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे अमरकंकाए रायहाणीए पउमणाभ भवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा-तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिमवेयालीए ममं पडिवाले माणा चिट्ठंतु) હે દેવાનુપ્રિય ! ધાતકી ષંડ નામે દ્વીપમાં પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રના વિદ્યમાન અમરકંકા નામની રાજધાનીમાં પદ્મનાભ રાજાના ભવ

पद्मनाभस्य राज्ञो भवने द्रौपदीदेवी यादृशी दृष्टपूर्वा चाप्यभवत्, अय भावः-काचिद्द्रौपदीसदृशी देवी पद्मनाभस्य राज्ञोभवने दृष्टा किन्तु सा मया न सम्यग् ज्ञाता नापि सम्यक्परिचिता, इति। तत् खलु कृष्णो वासुदेवः कच्छुल्लनारदमेव मवादीत्-हे देवानुप्रियाः युष्माकमेव खलु 'एतत्' इदम् 'पूर्वकर्म' पूर्वकर्म-पूर्वकृत कर्म, युष्माभिरेवेदृश कर्म पूर्वं कृतमित्यर्थः। ततः खलु स कच्छुल्लनारदः कृष्णेन वासुदेवेनेवमुक्तः सन् उत्पतनीं विद्यामावाहयति। आवाह्य यस्याः एवदिशः प्रादुर्भूतस्तामेव दिशं प्रतिगतः। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो दूत शब्दयति=

धायईसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध दाहिणड्ढभरहवासं अमरकंका रायहाणिं गए तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी जारिसिया दिट्ठ पुव्वा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्ल एवं वयासी-तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया! एवं पुव्वकम्म-तएणं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए) सुनो मैं तुम्हें बताता हूँ-हे देवाणुप्रिय! मैं किसी एक समय द्वितीय धातकी खंड द्वीप में पूर्व दिग्भागवर्ती दक्षिणार्ध भरतक्षेत्र में अमरकंका नाम की राजधानी में गया हुआ था वहां मैंने पद्मनाभ राजा के भवन मे द्रौपदी देवी जैसी एक नारी देखी थी-परन्तु मैं उसे अच्छी तरह नहीं जान सका-और न उससे परिचित ही हो सका-। नारद की ऐसी बात सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उनसे कहा हे देवानुप्रिय! आपने ही ऐसा कार्य सब से पहिले किया है-इसके बाद उन कच्छुल्ल नारदने कृष्ण वासुदेवके द्वारा

दाहिणड्ढभरहवासं अमरकंका रायहाणिं गए, तत्थणं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई देवी, जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था, तएणं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लं एवं वयासी-तुब्भं चेवणं देवाणुप्पिया! एवं पुव्वं कम्मं-तएणं से कच्छुल्ल नारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भुए तामेव दिसिं पडिगए)

સાંભળો, તમને હું બધી વિગત બતાવું છું હે દેવાનુપ્રિય! કોઈ એક વખતે હું ધાતકી ષંડદ્વીપમાં, પૂર્વ દિશા તરફના દક્ષિણાર્ધ ભરત ક્ષેત્રમાં, અમરકંકા નામે રાજધાનીમાં ગયો હતો. ત્યાં મેં પદ્મનાભ રાજાના ભવનમાં દ્રૌપદી દેવી જેવી એક નારી જોઈ હતી પણ હું તેને સારી પેઠે ઓળખી શક્યો નહિ અને ન તેનાથી પરિચિત થઈ શક્યો. નારદની આ વાત સાંભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! સૌ પહેલાં તમે જ આ કામ કર્યું છે ત્યારપછી તે કચ્છુલ્લનારદે કૃષ્ણ વાસુદેવની આ વાત સાંભળીને જે

शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया सानाहिकीं सैनिकानां सज्जीभवनार्थं नादो यस्यास्ता भेरीं ताडयत तेऽपि ताडयन्ति, ततः खलु तस्या सानाहिक्या भेर्याः शब्द श्रुत्वा समुद्रविजयप्रमुखा दश दशार्हा यावत् ' छप्पण्ण बलवयसाहस्सीओ ' षट् पञ्चाशद् बलवत्साहस्रयाः=षट्पञ्चाशत्सहस्रप्रमिता बलवन्त इत्यर्थः ' सन्नद्धबद्ध-जाव गहियाउहपहरणा ' अत्र यावच्छब्देनैव द्रष्टव्यम्-सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा उत्पीडितशरासनपट्टकाः पिनद्धग्रैवेयकबद्धाविद्धविमल वरचिह्नपट्टाः गृहीतायुधप्रहरणा इति । व्याख्याऽस्मिन्नेवा ध्ययने पूर्वमुक्ता अप्येकिकाः=केचिद् हयगताः केचिद् गजगता यावद् वागुरापरिक्षिप्ताः=मनुष्यवृन्दैः परिवृता', यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति उपागत्य करतल० यावद् जयेन विजयेन वर्धयन्ति । ततः खलु कृष्णो वासुदेवो हस्तिस्कन्धवरगतः सको

उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों। तुम सुधर्मा सभा में जाओ वहां जाकर तुम सानाहिकी भेरी बजाओ-। कौटुम्बिक पुरुषोने ऐसा ही किया सुधर्मा सभामें जाकर उस सानाहिकी भेरीको बजाया-। इस सानाहिकी भेरीकी गर्जनाको सुनकर समुद्रविजय आदि दश दशार्ह यावत् ५६,हजार प्रमित बलवीर पुरुष सन्नद्ध बद्धर्मितकवच होकर, यावत् आयुध प्रहरणों को लेकर तैयार सुसज्जित हो गये। यहां यावत् शब्द से उत्पीडितशरासन पट्टकाः, " पिनद्धाग्रैवेयकबद्धविद्धविमलवरचिह्नपट्टाः " इस पाठ का सग्रह हुआ है। इन शब्दो की व्याख्या इसी अ ययन मे पहिले की जा चुकी है। इनमें कितनेक घोडों पर, कितनेक हाथियो पर, बैठकर अन्य मनुष्यो के समूह से परिवृत्त हो जहा वह सुधर्मा सभा और जहा वे कृष्णवासुदेव थे वहां आये। (उवागच्छित्ता करयल जाव

કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સુધર્મા સભામા જાઓ, ત્યા જઈને તમે સાનાહિકી ભેરી વગાડો, તે કૌટુંબિક પુરુષોએ પણ તે પ્રમાણે જ આજ્ઞાનું પાલન કર્યું સુધર્મા સભામા જઈને તેઓએ સાનાહિકી ભેરી વગાડી સાનાહિકી ભેરીનો અવાજ સાભળીને સમુદ્રવિજય વગેરે દશ દશાર્હો યાવત્ ૫૬ હજાર પ્રમિત બળવીર પુરુષો કવચો વગેરેથી સુસજ્જ થઈને યાવત્ આયુધ પ્રહરણોને લઈને તૈયાર થઈ ગયા અહીં યાવત્ શબ્દથી " उत्पीडितशरासनपट्टका , पिनद्ध ग्रैवेयक बद्धाविद्धविमलवरचिह्नपट्टा " આ પાઠનો સગ્રહ થયો છે આ શબ્દોની વ્યાખ્યા આ અધ્યયનમા જ પહેલા કરવામા આવી છે આમા કેટલાક ઘોડાઓ ઉપર, કેટલાક હાથીઓ ઉપર બેસીને તેમજ કેટલાક માણસોના સમૂહોથી પરિવૃત થઈને જ્યા તે સુધર્મા, સભા અને જ્યા કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યા આવ્યા

राश्चतुरङ्गिण्या सेनया सार्धं सपरिवृता' पौरस्त्यवेलायां मां प्रतिपालयन्तस्ति ष्ठन्तु ' इति । एवं दूतमुखात् कृष्णवासुदेवोक्तं वचनं श्रुत्वा तेऽपि=पञ्च पाण्डवा यावत् तिष्ठन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति,

के भवन में द्रौपदी देवी की खबर मिली है-इसलिये पांचों पांडव चतुरंगिणी सेना के साथ युक्त होकर लवण समुद्र की पूर्व दिग्भाग वर्तिनी वेला पर जाकर वहां मेरी प्रतीक्षा करें। (तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवालेमाणा चिट्ठह, ते वि जाव चिट्ठति, तएणं से कण्हे वासु देवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सन्नाहियं भेरिं ताडेह ते वि ताडेंति, तएणं तीसे सण्णा हियाए भेरिए सद्दं सोच्चा विजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पण्णं बलवयसाहस्सीओ सन्नद्धबद्ध जाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वग्गुरा परिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ) इस प्रकार अपने राजा कृष्णवासु देव की आज्ञा लेकर वह दूत हस्तिनापुर गया वहां जाकर उसने इस समाचार को पांडुराजा से कह दिया। वे पांचों पांडव इस समाचार को दूत के मुख से सुनकर चतुरंगिणी सेना के साथ लवण समुद्र के पूर्व दिग्भागवर्ती तट पर जाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा में ठहर गये-। इसके बाद कृष्ण वासुदेव ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-बुलाकर

નમાં દ્રૌપદી દેવીના વાવડ મળ્યા છે તો હવે પાંચે પાંડવો ચતુરંગિણી સેનાની સાથે પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર પહોંચીને મારી પ્રતીક્ષા કરે

(तएणं से दूए जाव भणइ, पडिवाले माणा चिट्ठह ते वि जाव चिट्ठ ति, तएणं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबिय पुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सन्नाहियं भेरिं ताडेह ते वि ताडेंति, तएणं से सण्णा हियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा, दस दसारा जाव छप्पण्णं बल वय साहस्सीओ सन्नद्धबद्धजाव गहियाउहपहरणा अप्पेगइया हयगया, गयगया, जाव वग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्णे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ)

આ રીતે પોતાના રાજા કૃષ્ણ વાસુદેવની આજ્ઞા મેળવીને તે દૂત હસ્તિનાપુર તરફ રવાના થયો ત્યાં પહોંચીને તેણે પાંડુ રાજાને બધા સમાચારો કહી સંભળાવ્યા પાંચે પાંડવો દૂતના મુખથી આ સમાચાર સાંભળીને પોતાની ચતુરંગિણી સેના સાથે ત્યાંથી પ્રયાણ કરીને લવણ સમુદ્રના પૂર્વ કિનારા ઉપર પહોંચીને ત્યાં કૃષ્ણ વાસુદેવની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા ત્યારપછી કૃષ્ણ વાસુદેવે કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને

एकतः एकस्मिन् स्थाने मिलति, मिलित्वा स्कन्धावारनिवेशं=सैनिकानामावास करोति कृत्वा पौषधशालामनुप्रविशति, अनुप्रविश्य " सुट्ठिय देव " सुस्थित-सुस्थितनामान देव लवणसमुद्राधिष्ठित मनसि कुर्वन्=स्मरन् तिष्ठति, ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्याष्टमभक्ते परिणममाणे सुस्थितो देव आगतः, आगत्य वदति-हे देवानुप्रियाः ! भणन्तु कथयन्तु यन्मया कर्तव्यमिति ततः खलु स कृष्णो वासुदेव सुस्थितदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभस्य भवने संहृता, तत्=तस्मात् खलु त्व हे देवानुप्रिय ! मम पञ्चभिः पाण्डवैः सार्ध ' अप्पछट्ठस्स ' आत्मषष्ठस्य-आत्मा-अह षष्ठो यत्र तस्य समुदायस्य-अस्माकं षण्णामित्यर्थः, षण्णा रथाना लवणसमुद्रे मार्ग वितर=देहि, येनाहममरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः ' कूव ' भत्यानयनार्थं गच्छामि ।

वहा पहुँचकर वे पांच पांडवों के साथ एक स्थान पर समिलित हुए । समिलित होकर उन्होंने अपनी सेना को ठहर ने का स्थान नियत किया-स्थान नियतकर के फिर वे पौषधशाला मे प्रविष्ट हो गये वहां प्रविष्ट होकर उन्हो ने लवण समुद्र के अधिपति सुस्थित देव का स्मरण किया-। इसके बाद जब कृष्णवासुदेव का अष्टमभक्त समाप्त हो रहा था-तब वह सुस्थित देव उनके पास आया-और कहने लगा-हे देवानुप्रिय ! कहिये-मेरे लायक क्या काम है ? (तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवई देवी, जाव पउमनाभस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवाणुप्पिया मम पचहि पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्गं वियरेहि, जएण अह अमरकंकारायहाणी दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं

હતા ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોંચીને તેઓ પાચે પાંડવોની સાથે એક સ્થાને એકત્ર થયા એકત્ર થઈને તેમણે પોતાના સૈન્યના પડાવનુ સ્થાન નક્કી કર્યું સ્થાન નક્કી કરીને તેઓ પૌષધશાળામા પ્રવિષ્ટ થયા ત્યા જઈને તેઓએ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવનુ સ્મરણ કર્યું ત્યારબાદ જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવનો અષ્ટમ ભક્ત પૂરો થઈ રહ્યો હતો, ત્યારે તે સુસ્થિત દેવ તેમની પાસે આવ્યો અને કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! બોલો, મારા લાયક શું કામ છે ?

(तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! दोवईदेवी, जाव पउमनाभस्स भवणसि साहरिया, तएण तुम देवाणुप्पिया मम पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्ह रहाण लवणसमुद्दे मग्ग वियरेहि, जएण अह अमरकका रायहाणीं दोवईए कूव गच्छामि, तएण से सुट्ठिए देवे कण्ह

रण्टमाल्यदाम्ना छत्रेण धार्यमाणेन श्वेतवरचामरैरुद्धूयमानैः, हयगजरथपदाति सपरिवृतो महाभटचटकरप्रकरेण द्वारवत्या नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, यत्रैव पौरस्त्यवेला तत्रोपागच्छति उपागत्य पञ्चभिः पाण्डवैः सह 'एगयओ'

घद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय० महया भडचडगरपहकरेणं बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ, जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचहिं पडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खधावारणिवेसं करेइ, करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ भण देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं)

वहां आकर उन सबने कृष्णवासुदेव को दोनों हाथ जोड़कर बड़े विनय के साथ नमस्कार करते हुए जय विजय शब्दों द्वारा वधाई दी। इसके बाद वे कृष्णवासुदेव हाथी पर सवार हुए। सवार होते ही छत्र धारियों ने उन पर कोरंट पुष्पों की माला से विराजित छत्र ताना, चामर ढोरने वालों ने उनपर श्वेत चामर ढोरना प्रारंभ करदिया। इस प्रकार हय, गज, रथ, एवं पैदलसेना से घिरे हुए वे कृष्णवासुदेव महाभटों के समूह के साथ २ द्वारावती नगरी के बीच से होकर निकले, निकलकर जहां वह लवणसमुद्र की पूर्व दिग्भागवर्तिनी वेला थी वहां पहुँचे।

(उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, तएणं कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं० सेयवर० हयगय महया भडचडगरपहकरेणं बारवईए णयरीए मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचहिं पडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खधावारणिवेसं करेइ, करित्ता पोसहसालं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, सुट्ठियं देवं मणसि करेमाणे २ चिट्ठइ, तएणं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ आगओ भणदेवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं)

त्यां पहोंचीने ते बधाओए बन्ने हाथ जोडीने बहु ज विनम्रताथी नमस्कार करता जयविजय शब्दोथी तेमने वधामणी आपी त्यारपछी ते कृष्णवासुदेव हाथी उपर सवार थया सवार थता ज छत्रधारीओए तेमनी उपर कोरंट पुष्पोनी माळाथी शोभतुं छत्र ताण्युं तेमज चामर ढोळनाराओए चामर ढोळवानी शरूआत करी आ प्रमाणे घोडा, हाथी, रथ अने पायदळथी परिवृत्त थयेला ते कृष्ण–वासुदेव महाभटोना समूहनी साथे साथे द्वारावती नगरीनी वच्चे थईने पसार थया अने ज्यां ते लवण

मवादीत्-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! यावत् संहर, त्वं खलु हे देवानुप्रिय ! लवणसमुद्रे आत्मषष्ठस्य षण्णां रथानां मार्गं 'वियराहि' वितर=देहि, स्वयमेव खल्वहं द्रौपद्या देव्याः 'कूव' मत्यानयनकर्तुं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्मनाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकता हूँ (तएणं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस प्रकार कहा-(माणं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी, एवं होउ, पंचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीं सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रिय ! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर, सैनिक एवं वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल हे देवानुप्रिय ! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो। मैं

તમારી આજ્ઞા હોય તો નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત પદ્મનાભ રાજાને લવણસમુદ્રમાં ડુબાડી શકું તેમ છું (तएणं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સ્વસ્તિક દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(माणं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी, एवं होउ, पंचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीं सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, वीइवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! તમે આ પ્રમાણે કરવાની તસ્દી લો નહિ એટલે કે પદ્મનાભના ભવનમાંથી દ્રૌપદી દેવીનું હરણ કરો નહિ તેમજ પદ્મનાભ રાજાને નગર, સૈનિક અને વાહન સહિત લવણ સમુદ્રમાં ફેંકો પણ નહિ તમે તો હે દેવાનુપ્રિય ! ફક્ત અમારા છએ રથો માટે લવણ સમુદ્રમાં માર્ગ આપો.

तत खलु स सुस्थितो देवः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—हे देवानुप्रिय ! किं खलु यथैव पद्मनाभस्य राज्ञः पूर्वसंगतिकेन देवेन द्रौपदी यावत् गहृता, तथैव द्रौपदीं देवीं धातकीषण्डाद् द्वीपाद् भारतात् यावद् हस्तिनापुरं संहरामि । 'उदाहु' उताहो ! =अथवा, सपथ, पद्मनाभं राजानं सपुरबलवाहनं=नगरसैनिकवाहनसहितं लवणसमुद्रे प्रक्षिपामि ? ततः खलु कृष्णो वासुदेवः सुस्थितं देवम् एव

वासुदेव एव वयासी किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएण देवेण दोवई जाव संहरिया, तहा चेव दोवईदेविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायसपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?) तब कृष्णवासुदेव ने उस सुस्थित देव से इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! सुनो—द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभ के भवन में हरण कर रखी गई है इसलिये हे देवानुप्रिय ! तुम आत्मषष्ठ मेरे पांच पाडवों के साथ छहों रथों को लवण समुद्र में मार्ग प्रदान करो। अर्थात् पांच पाडवों के और छठे मेरे इस प्रकार हमारे छह रथों को जाने के लिये रास्ता दो—कि जिससे मैं अमरकंका राजधानी में द्रौपदीदेवी को वापिस ले आने के लिये जा सकूं। तब सुस्थित देव ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार पद्मनाभ राजा के पूर्व संगतिक देवने द्रौपदीदेवी का यावत् हरण किया है, उसी तरह मैं भी द्रौपदी देवी को धातकी खंड द्वीप के भरत क्षेत्र से यावत् हस्तिनापुर में हरणकर ला सकता हूँ—

वासुदेव एव वयासी किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएण देवेण दोवई जाव संहरिया, तहा चेव दोवई देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुर साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?)

ત્યારે કૃષ્ણ–વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાંભળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના ભવનમાં હરણ કરાઇને રાખવામાં આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે 'આત્મષષ્ઠ' મારા તેમજ પાંચે પાંડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમાં થઈને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો એટલે કે પાંચે પાંડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા માટે રસ્તો આપો જેથી હું દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકંકા રાજધાનીમાં જઈ શકું ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ–વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસંગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનું યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખંડદ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાંથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમાં હરણ કરીને લાવી શકું અને

मवादीत्-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! यावत् संहर, त्वं खलु हे देवानुप्रिय ! लवणसमुद्रे आत्मषष्ठस्य षण्णां रथानां मार्गं 'वियराहि' वितर=देहि, स्वयमेव खल्वहं द्रौपद्या देव्या 'कूवं' प्रत्यानयनकृतं गच्छामि, ततः खलु स सुस्थितो

अथवा-आपकी आज्ञा हो तो नगर, सैनिक, और वाहन सहित पद्मनाभ राजा को लवण समुद्र में डुबा दे सकता हूँ (तएणं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी) जब कृष्णवासुदेव ने उस स्वस्तिक देव से इस प्रकार कहा-(माणं तुमं देवाणुप्पिया! जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी, एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीं सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ) हे देवानुप्रिय! तुम ऐसा मत करो-अर्थात् पद्मनाभ के भवन से द्रौपदी देवी को हरण मत करो, और न पद्मनाभ राजा को नगर, सैनिक एवं वाहन सहित लवणसमुद्र में प्रक्षिप्त करो, तुम तो केवल हे देवानुप्रिय! हमारे छहों रथों को लवणसमुद्र में मार्ग दे दो। मैं

तमारी आज्ञा होय तो नगर, सैनिक अने वाहन सहित पद्मनाभ राजाने लवणसमुद्रमां डुबाडी शकुं तेम छुं (तएणं कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी) त्यारे कृष्ण-वासुदेवे ते स्वस्तिक देवने आ प्रमाणे कह्युं के—

(माणं तुमं देवाणुप्पिया! जाव साहराहि तुमं णं देवाणुप्पिया! लवणसमुद्दे अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि, तएणं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी, एवं होउ, पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीं सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झं मज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अमरकंका रायहाणी, जेणेव अमरकंकाए अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ)

हे देवानुप्रिय! तमे आ प्रमाणे करवानी तस्दी लो नहि एटले के पद्मनाभना भवनमांथी द्रौपदी देवीनुं हरण करो नहि तेमज पद्मनाभ राजाने नगर, सैनिक अने वाहन सहित लवण समुद्रमां फेंको पण नहि तमे तो हे देवानुप्रिय! ... [illegible] छए रथो माटे लवण समुद्रमां मार्ग आपो.

ततः खलु स सुस्थितो देवः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—हे देवानुप्रिय! किं खलु यथैव पद्मनाभस्य राज्ञः पूर्वसंगतिकेन देवेन द्रौपदी यावत् संहृता, तथैव द्रौपदीं देवीं धातकीषण्डाद् द्वीपाद् भारतात् यावद् हस्तिनापुरं संहरामि। 'उदाहु' उताहो ! =अथवा, पद्मनाभं राजानं सपुरबलवाहनं=नगरसैनिकवाहन सहितं लवणसमुद्रे प्रक्षिपामि ? ततः खलु कृष्णो वासुदेवः सुस्थितं देवम् एवं

वासुदेव एव वयासी किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई जाव संहरिया, तहा चेव दोवईं देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?) तब कृष्णवासुदेव ने उस सुस्थित देव से इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! सुनो-द्रौपदी देवी यावत् पद्मनाभ के भवन में हरण कर रखी गई है इसलिये हे देवानुप्रिय ! तुम आत्मषष्ठ मेरे पांच पाण्डवों के साथ छहों रथों को लवण समुद्र में मार्ग प्रदान करो। अर्थात् पांच पांडवों के और छठे मेरे इस प्रकार हमारे छह रथों को जाने के लिये रास्ता दो—कि जिससे मैं अमरकंका राजधानी में द्रौपदीदेवी को वापिस ले आने के लिये जा सकूं। तब सुस्थित देव ने उन कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रिय ! जिस प्रकार पद्मनाभ राजा के पूर्व संगतिक देवने द्रौपदीदेवी का यावत् हरण किया है, उसी तरह मैं भी द्रौपदी देवी को धातकी खंड द्वीप के भरत क्षेत्र से यावत् हस्तिनापुर में हरणकर ला सकता हूँ-

---

वासुदेवं एवं वयासी किण्हं देवाणुप्पिया ! जहा चेव पउमणाभस्स रन्नो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई जाव संहरिया, तहा चेव दोवईं देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ जाव हत्थिणापुरं साहरामि, उदाहु पउमणाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि ?)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે સુસ્થિત દેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! સાંભળો, દ્રૌપદી દેવી યાવત્ પદ્મનાભના ભવનમાં હરણ કરાઇને રાખવામાં આવી છે એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે 'આત્મષષ્ઠ' મારા તેમજ પાંચે પાંડવોના છ રથોને લવણ સમુદ્રમાં થઈને પસાર થવા માટે માર્ગ આપો એટલે કે પાંચે પાંડવોના અને છઠ્ઠા મારા આમ છએ રથોને પસાર થવા માટે રસ્તો આપો. જેથી હું દ્રૌપદી દેવીને પાછા લાવવા માટે અમરકંકા રાજધાનીમાં જઈ શકું ત્યારે સુસ્થિત દેવે તે કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વસંગતિક દેવે જેમ દ્રૌપદી દેવીનું યાવત્ હરણ કર્યું છે, તેમજ હું પણ દ્રૌપદી દેવીને ધાતકી ખંડદ્વીપના ભરત ક્ષેત્રમાંથી યાવત્ હસ્તિનાપુરમાં હરણ કરીને લાવી શકું

प्रविश्य पद्मनाभस्य राज्ञो वामेन पादेन 'पायपीढ' पादपीठम् सिंहासनसलग्न-सोपानम् आक्रम्य कुन्ताग्रेण लेख पत्रिका 'पणामेहि' अर्पय=देहि अर्पयित्वा 'तिवलिय' त्रिवलिकां रेखात्रययुक्ता 'भिउडिं' भ्रूकुटिं-'णिडाले' ललाटे 'साहट्टु' संहृत्य-उन्नीय 'आसुरुत्ते' आशुरुप्तः=शीघ्र क्रोधाविष्टः 'रुट्ठ' रुष्टः 'कुद्धे' क्रुद्धः 'कुविए' कुपितः चडिकिए' चाण्डिक्यितः-रोपयुक्तः, एवमवादीत्-ह भो ! पद्मनाभ ! 'अपत्थियपत्थिया' अप्रार्थितप्रार्थित !-मरणवाञ्छक ! 'दुरतपतलक्खण !' दुरन्तप्रान्तलक्षण ! पूर्वं व्याख्यातमेतत्,

---

पायपीढ अक्कमित्ता कुत्तग्गेण लेह पणामेहि, तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चडिक्किए एव वयासी ह भो पउमणाहा अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरिहिरिधी परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि) रथ को रोककर वहां स्थापित कर-दारुक सारथि को बुलाया बुलाकर के उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय तुम जाओ-अमरकका राजधानी में जाओ वहां जाकर पद्मनाभ राजाके पादपीठको वाम पादसे आक्रमित कर, कुन्त (भाला)के अग्रभाग से उसे पत्रिका दो देकर के अपनी भृकुटी को भालपर चढा-कर, इकदम गुस्से में आकर, रुष्ट, कुपित एव क्रुद्ध होकर क्रोध के आवेश से तम तमाते हुए तुम उससे ऐसा कहो-अरे ओ पद्मनाभ ! अप्रार्थित प्रार्थित ! मरणवाञ्छक-! दुरतप्रान्त लक्षण ! मालुम होता है

पाएण पायपीढ अक्कमित्ता कुत्तग्गेण लेह पणामेहि, तिवलिय भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चडिक्किए एवं वयासी ह भो पउमणाहा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरतपतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि हिरिधी परिवज्जिया ! अज्ज ण भवसि किन्न तुम ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अहवण जुद्धसज्जे णिगच्छाहि)

રથને ઊભો રાખીને, ત્યા જ રથને મૂકીને દારુક સારથિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે અમરકકા રાજધાનીમા જાઓ અને ત્યા જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડાબા પગથી આક્રમિત કરીને કુતના અગ્ર ભાગથી તેને પત્રિકા આપો પત્રિકા આપીને તમે પોતાની ભમ્મરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રૂષ્ટ, કુપિત અને ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમા આવીને તેને આ પ્રમાણે કહો કે અરે ઓ પદ્મનાભ ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત ! મરણ વાછક ! દુરત પ્રાત લક્ષણ ! (નીચ

देव कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं भवतु इति, ततोऽसौ पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धम् आत्मषष्ठस्य षण्णां रथानां लवणसमुद्रे मार्गं वितरति ततः खलु स कृष्णो वासुदेवश्चतुरङ्गिणीं सेनां प्रतिविसर्जयति, प्रतिविसर्ज्य पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठः षड्भीरथैर्लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति-गच्छति व्यतिव्रज्य यत्रैवामरकङ्का राजधानी, यत्रैवामरकङ्कायाः अग्रोद्यानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा दारुकं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! अमरकङ्काराजधानीमनुप्रविश, अनु

स्वयं ही द्रौपदी देवी को वहां से वापिस ले आऊँगा। अथवा मैं स्वयं ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊँगा तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-अच्छा ऐसा ही हो-इस प्रकार कह कर उसने आत्म षष्ठ के छहों रथो को लवणसमुद्र में मार्ग वितरित कर दिया। तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरंगिणी सेना को वहां से वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पांच पांडवों के साथ छहों रथों को-१ एक अपने रथको और पांच पांडवोंके रथोंको-लेकर लवणसमुद्रके भीतरसे होकर चलने लगे। चलते २ वे जहां अमरकका राजधानी थी-और उसमें भी जहां वह अग्रोद्यान था वहां पहुँचे। (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ) वहां पहुँच कर उन्होंने अपने रथ को रोक दिया-(ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! अमरककारायहाणी अणुपविसाहि२, पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएण

त्यां जईने हु जाते ज द्रौपदी देवीने त्याथी पाछी लई आवीश एटले के हु जाते ज द्रौपदी देवीने लेवा माटे जईश त्यारे ते सुस्थित देवे कृष्ण-वासुदेवने कह्यु के सारु, आम ज करो आ प्रमाणे कहीने तेणे आत्मषष्ठना छए रथोने लवण समुद्रमा रस्तो आप्यो त्यारपछी कृष्ण-वासुदेवे पोतानी चतुरंगिणी सेनाने त्याथी पाछी वळावी दीधी अने पाछी वळावीने तेओ पाचे पाडवोनी साथे छए रथोने-एक पोताना रथने अने पाच पाडवोना रथोने-लईने लवण समुद्रनी वच्चे थईने पसार थवा लाग्या आम पसार थता तेओ ज्या अमरकका राजधानी अने तेमा पण ज्या ते अग्रोद्यान हतु त्या पहोंच्या (उवागच्छित्ता रहं ठवेइ) त्या पहोचीने तेमणे पोताना रथने ऊभो राख्यो.

(ठवित्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी, गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! अमरकका रायहाणीं अणुपविसाहि २ वामेणं

प्रविश्य पद्मनाभस्य राज्ञो वामेन पादेन 'पायपीढं' पादपीठम् सिंहासनसलग्न-सोपानम् आक्रम्य कुन्ताग्रेण लेख पत्रिका 'पणामेहि' अर्पय=देहि अर्पयित्वा 'तिवलिय' त्रिवलिकां रेखात्रययुक्तां 'भिउडिं' भ्रूकुटिं-'णिडाले' ललाटे 'साहट्टु' संहृत्य-उन्नीय 'आसुरुत्ते' आशुरुष्टः=शीघ्र क्रोधाविष्टः 'रुट्ठे' रुष्टः 'कुद्धे' क्रुद्धः 'कुविए' कुपितः चंडिक्किए' चाण्डिक्यितः-रोषयुक्तः, एवमवादीत्-हं भो! पद्मनाभ! 'अपत्थियपत्थिया' अप्रार्थितप्रार्थित!-मरणवाञ्छक! 'दुरंतपंतलक्खण!' दुरन्तप्रान्तलक्षण! पूर्व व्याख्यातमेतत्,

पायपीढं अक्कमित्ता कुन्तग्गेण लेहं पणामेहि, तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं वयासी हं भो पउमणाहा अपत्थियपत्थिया! दुरंतपंतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरिहिरिधी परिवज्जिया! अज्ज ण भवसि किन्न तुमं ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठवणं जुद्धसज्जे णिगच्छाहि) रथ को रोककर वहां स्थापित कर-दारुक सारथि को बुलाया बुलाकर के उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिय तुम जाओ-अमरकंका राजधानी में जाओ वहां जाकर पद्मनाभ राजाके पादपीठको वाम पादसे आक्रमित कर, कुन्त (भाला)के अग्रभाग से उसे पत्रिका दो देकर के अपनी भ्रुकुटी को भालपर चढा कर, इकदम गुस्से में आकर, रुष्ट, कुपित एवं क्रुद्ध होकर क्रोध के आवेश से तमतमाते हुए तुम उससे ऐसा कहो-अरे ओ पद्मनाभ! अप्रार्थित प्रार्थित! मरणवाञ्छक-! दुरतप्रान्त लक्षण! मालुम होता है

पाएणं पायपीढं अक्कमित्ता कुन्तग्गेणं लेहं पणामेहि, तिवलियं भिउडिं णिडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुद्धे कुविए चंडिक्किए एवं वयासी हं भो पउमणाहा! अपत्थियपत्थिया! दुरंतपंतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरि हिरिधी परिवज्जिया! अज्ज ण भवसि किन्न तुमं ण याणासि, कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठवणं जुद्धसज्जे णिगच्छाहि)

રથને ઊભો રાખીને, ત્યાં જ રથને મૂકીને દારુક સારથિને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે અમરકંકા રાજધાનીમાં જાઓ અને ત્યાં જઈને પદ્મનાભ રાજાના પાદપીઠને ડાબા પગથી આક્રમિત કરીને કુંતના અગ્ર ભાગથી તેને પત્રિકા આપો પત્રિકા આપીને તમે પોતાની ભમ્મરો ચઢાવીને, એકદમ લાલચોળ થઈને રુષ્ટ, કુપિત અને ક્રુદ્ધ થઈને ક્રોધના આવેશમાં આવીને તેને આ પ્રમાણે કહો કે અરે ઓ પદ્મનાભ! અપ્રાર્થિત પ્રાર્થિત! મરણ વાંછક! દુરંત પ્રાંત લક્ષણ! (નીચ

देवं कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एवं भवतु इति, ततोऽसौ पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धम् आत्मषष्ठस्य षण्णां रथानां लवणसमुद्रे मार्गं वितरति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवश्चतुरङ्गिणीं सेनां प्रतिविसर्जयति, प्रतिविसर्ज्य पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्म षष्ठः षड्भीरथैर्लवणसमुद्रं मध्यमध्येन 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति-गच्छति, व्यतिव्रज्य यत्रैवामरकङ्का राजधानी, यत्रैवामरकङ्काया अग्रोद्यानं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, स्थापयित्वा दारुकं सारथिं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय! अमरकङ्काराजधानीमनुप्रविश, अनु

स्वय ही द्रौपदी देवी को वहा से वापिस ले आऊँगा। अथवा मैं स्वय ही द्रौपदी देवी को लेने के लिये जाऊँगा तब उस सुस्थित देव ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा-अच्छा ऐसा ही हो-इस प्रकार कह कर उसने आत्म षष्ठ के छहों रथो को लवणसमुद्र में मार्ग वितरित कर दिया। तब कृष्णवासुदेव ने अपनी चतुरंगिणी सेना को वहा से वापिस करदिया वापिस कर फिर वे पाच पांडवों के साथ छहो रथों को-१ एक अपने रथको और पांच पाडवोंके रथोंको-लेकर लवणसमुद्रके भीतरसे होकर चलने लगे। चलते २ वे जहा अमरकका राजधानी थी-और उसमें भी जहा वह अग्रोद्यान था वहा पहुँचे। (उवागच्छित्ता रह ठवेइ) वहा पहुँच कर उन्होने अपने रथ को रोक दिया-(ठवित्ता दारुय सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! अमरककारायहाणी अणुपविसाहि२, पउमणाभस्स रण्णो वामेण पाएण

त्यां जईने हु जाते ज द्रौपदी देवीने त्याथी पाछी लई आवीश अेटले के हु जाते ज द्रौपदी देवीने लेवा माटे जईश त्यारे ते सुस्थित देवे कृष्ण-वासुदेवने कह्यु के सारु, आम ज करो आ प्रमाणे कहीने तेणे आत्मषष्ठना छअे रथोने लवण समुद्रमा रस्तो आप्यो त्यारपछी कृष्ण-वासुदेवे पोतानी चतुरंगिणी सेनाने त्याथी पाछी वळावी दीधी अने पाछी वळावीने तेओ पाच पाडवोनी साथे छअे रथोने-अेक पोताना रथने अने पाच पाडवोना रथोने-लईने लवण समुद्रनी वच्चे थईने पसार थवा लाग्या आम पसार थता तेओ ज्या अमरकका राजधानी अने तेमा पण ज्या ते अग्रोद्यान हतु त्या पहोच्या (उवागच्छित्ता रह ठवेइ) त्या पहोचीने तेमणे पोताना रथने ऊभो राख्यो

(ठवित्ता दारुय सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी, गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया! अमरकका रायहाणीं अणुपविसाहि २ [illegible]) वामेण

ततः खलु स दारुकः सारथिः कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्तः सन् हृष्टतुष्टो यावत् प्रतिशृणोति 'तथाऽस्तु' इति कृत्वाऽऽज्ञां स्वीकरोति प्रतिश्रुत्य=अमरकङ्काराजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा यावद् वर्धयति-जयेन विजयेन चाभिनन्दयति । वर्धयित्वा-अभिनन्द्य एवमवादीत्-एषा खलु हे स्वामिन् ! मम विनयप्रतिपत्तिः इयमन्या मम स्वामिनो विनयप्रतिपत्तिः, "समु-

समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता, अमरकंका रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-एसणं सामी मम विणयपडिवित्ती, इमा अन्ना मम सामिस्स समुल्लावत्ति त्ति कट्टु आसुरुत्ते नाम पाएणं पायपीढं अणुक्कमइ) पांच पांडवों के साथ आत्म षष्ठ होकर द्रौपदी देवी को लेने के लिये अभी अभी आये हुए हैं। इस प्रकार कृष्णवासुदेव के द्वारा कहे गये उस दारुक सारथि ने हृष्ट तुष्ट होकर कृष्णवासुदेव की आज्ञा स्वीकार करली। स्वीकार कर के फिर वह अमरकंका राजधानी में प्रवेश किया वहां प्रवेश कर वह वहां पहुँचा जहां पद्मनाभ राजा थे। उनके समीप जाकर उस ने पहिले उन्हें दोनों हाथों की अंजलि बना कर और उसे मस्तक पर रखकर नमस्कार किया-जय विजय शब्दों से उन्हें बँधाया-बाद में उसने इस प्रकार कहना प्रारंभ किया-हे स्वामिन् ! यह तो मेरी विनय प्रतिपत्ति है-दूत

सारही कण्हेण वासुदेवेण एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव पडिसुणेइ पडिसुणित्ता, अमरकंका रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता,करयल जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी-एसणं सामी मम विणयपडिवित्ती, इमा अन्ना मम सामिस्स समुल्लावत्ति त्ति कट्टु आसुरुत्ते वामपाएणं पायपीढं अणुक्कमइ)

પાંચે પાંડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવી ગયા છે. આ પ્રમાણે કૃષ્ણ-વાસુદેવ વડે કહેવામાં આવેલા વચનો સાંભળીને હૃષ્ટ-તુષ્ટ થઈને તે દારુક સારથીએ તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી સ્વીકારીને તે અમરકંકા રાજધાનીમાં પ્રવિષ્ટ થયો. પ્રવિષ્ટ થઈને તે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતા તેમની પાસે જઈને સૌ પહેલાં તેણે બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને નમસ્કાર કર્યા અને જય વિજય શબ્દોથી રાજાને વધામણી આપી ત્યારપછી તેણે આ પ્રમાણે કહેવાની શરૂઆત કરી કે હે સ્વામી ! આ તો મારી વિનય પ્રતિપત્તિ છે. દૂતની ફરજ બજાવતા મે

'हीणपुन्नचाउद्दसा !' हीनपुण्यचातुर्दशिकः — अलब्धपुण्यचातुर्दशिकजन्मा, चतुर्दशीजातो हि भाग्यवान भवति। तथा-' सिरी हिरि धी परिवज्जिया !' श्री ह्री धी परिवर्जित! लक्ष्मी लज्जा बुद्धि रहित!, अद्य न भवसि, किं खलु त्वं न जानासि, कृष्णस्य वासुदेवस्य भगिनीं द्रौपदीं देवीमिह 'हव्व आणमाणे' हव्यमानयत्, 'तं' तत्-तस्मात् 'पच्चप्पिणाहि' प्रत्यर्पय=आनीतामपि आदृ पूर्वं कादृ हण्गवो' इत्यस्मात्क्त प्रत्ययः, 'अहव' अथवा खलु 'जुद्ध सज्जे' युद्ध सज्जः-युद्धाय सज्जः=सन्नद्धः सन् 'णिग्गच्छाहि' निर्गच्छ-बहिर्निःसर एष खलु कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सह 'अप्पछट्ठे' आत्मषष्ठ =आत्मा षष्ठो यत्र स समूहे, द्रौपदी देव्याः 'कूव' प्रत्यानयन कर्तुं हव्यमागत।

तू अलब्ध पुण्य चातुर्दशिक जन्म वाला है-तू-चतुर्दशी में उत्पन्न हुआ नहीं हैं-क्यों कि चतुर्दशी के दिन उत्पन्न हुआ व्यक्ति भाग्यशाली होता है किन्तु तू ऐसा नहीं है अर्थात् अभागा है तू श्री ह्री, बुद्धि से रहित है। याद रख-या तो आज तू नहीं है या मैं नहीं हूं तुझे यह ख्याल नहीं है-कि यह द्रौपदी देवी कृष्ण वासुदेव की बहिन है जिसे तूने यहां हरण करवा कर मंगवाई है। अतः यदि अपनी कुशल चाहता है, तो तू इस हरण करवा कर अपने यहां मंगवाई गई द्रौपदी देवी को कृष्ण वासुदेव के पास जाकर पीछे वापिस पहुँचा दे। नहीं तो युद्ध के लिये सज्जित होकर घर से बाहिर निकल आ। (एसणं कण्हे वासुदेवे) ये कृष्ण वासुदेव (पंचहिं पडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूवं हव्वमागए, तएणं से दारुए सारही कण्हे णं वासुदेवेणं एवं वुत्ते

વિચારો તેમજ નીચ લક્ષણો યુક્ત) અમને એમ લાગે છે કે તું અલબ્ધ પુણ્ય ચાતુર્દશિક જન્મવાળો છે, એટલે કે તું ચૌદશને દિવસે જન્મ્યો નથી કેમકે ચૌદશને દિવસે ઉત્પન્ન થનારી વ્યક્તિ ભાગ્યશાળી હોય છે તું શ્રી, હ્રી અને બુદ્ધિ વગરનો છે બરોબર સાભળી લે કે આજે કાં તો તું નહિ કે કાં હું નહિ તને એટલી પણ ખબર નથી કે આ દ્રૌપદી દેવી કૃષ્ણ-વાસુદેવની બહેન છે-કે જેને તેં હરણ કરાવીને અહીં મંગાવી છે હવે જો તું પોતાનું ભલું ઈચ્છતો હોય તો તું આ હરણ કરાવીને પોતાને ત્યાં રોકી રાખેલી દ્રૌપદી દેવીને કૃષ્ણ-વાસુદેવની પાસે જઈને પાછી સોંપી દે નહિતર યુદ્ધના માટે તૈયાર થઈને બહાર મેદાનમાં આવી જા (एस णं कण्हे वासुदेवे) આ કૃષ્ણવાસુદેવ

(पंचहिं पडवेहिं अप्पछट्ठे दोवई देवीए कूवं हव्व ` दारुए

दारुक सारथिमेवमवादीत्—
केवल भोः ! ' रायसत्थेसु ' राजशास्त्रेषु-राजनीतिषु दूतः ' अवज्झे ' अवध्यः= न हन्तव्यः, इत्युक्तमस्ति तस्मात् त्वा मुञ्चामि इति कृत्वा=इत्युक्त्वा त दूतम् असत्कार्य, असम्मान्य अपद्वारेण ' णिच्छुभावेइ ' निक्षोभयति—निष्कासयति, तत खलु स दारुकः सारथिः पद्मनाभेनासत्कार्य यावत्—' णिच्छूढे ' निक्षोभितः—निःसारितः समाणे ' सन् , यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनख शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलि कृत्वा कृष्ण यावद् एवमवादीत्–

जुद्धसज्जो णिगच्छामि,त्ति कट्टु दारुय सारय एव वयासी—केवल भो रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ) तब वह पद्मनाभ जब दारुक सारथि ने इस प्रकार कहा तो इकदम क्रोधित होकर त्रिवलि युक्त भ्रूकुटि को माथे पर चढा कर इस प्रकार कहने लगा हे देवानुप्रिय ! मैं द्रौपदी को कृष्णवासुदेव के लिये अर्पित नहीं करता हूं–पीछी नहीं देता हूं—। इसके लिये मैं अभी स्वय ही युद्ध करने को तैयार हूँ–। इस प्रकार कहकर फिर उसने उस दारुक सारथि से ऐसा कहा अरे ! राजनीति के शास्त्रों में दूत अवध्य कहा गया है–इस लिये तुझे छोड़ देता हूँ । इस तरह कहकर उसने दूत को असत्कृत और असमानित कर पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया । (तएण दारुए सारही पउमणाभे ण असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा

कण्हस्स वासुदेवस्स दोवई, एसण अह सयमेव जुद्धसज्जो णिगच्छामि त्ति कट्टु दारुय सारहिं एव वयासी—केवल भो ! रायसत्थेसु दूये अवज्झे त्ति कट्टु अस क्कारिय असम्माणिय अवद्दारेण णिच्छुभावेइ)

દારુક સારથિના આ પ્રમાણે વચનો સાભળીને પદ્મનાભ એકદમ ક્રોધમા લાલચોળ થઈ ગયો અને ભ્રમ્મરો ચઢાવીને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો કે હે દેવાનુપ્રિય ! હુ કૃષ્ણ-વાસુદેવને દ્રૌપદી કોઇપણ સ્થિતિમા સોપવા તૈયાર નથી એના માટે હુ અત્યારે પણ યુદ્ધ કરવા તૈયાર છુ આ પ્રમાણે કહીને તેણે દારુક સારથીને કહ્યુ કે અરે ! રાજનીતિના શાસ્ત્રોમા દૂત અવધ્ય કહેવામા આવ્યો છે એથી તને જતો કરૂ છુ આ પ્રમાણે કહીને તેણે દૂતને અસત્કૃત અને અસમાનિત કરીને પાછલા બારણેથી બહાર કઢાવી મૂક્યો

(तएण दारुए सारही पउमणाभेण असक्कारिय जाव णिच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० कण्ह जाव एव

दाणत्ति " हव्वमागच्छि-हस्तगतेन कथिता आज्ञप्तिः-आज्ञा ' इति कृत्वा 'आसु रुत्ते ' आशुरुप्तः शीघ्र कोपाविष्ट', वामपादेन पादपीठ ' अणुकमइ ' अनुकामति, अनुक्रम्य कुन्ताग्रेण लेह-पत्रिका ' पणामइ ' अर्पयति । अर्पयित्वा यावत् ' कूव ' मत्यानयन कर्तुं हव्यमागताः । तत खलु स पद्मनाभो दारुकेण सारथिना एवमुक्त' सन् आसुरुत्त'=शीघ्रः कोपाकान्त, त्रिवलिकां रेखात्रययुक्तां भृकुटिं-' निडाले ' ललाटे-भालप्रदेशे 'साहट्टु' संहृत्य-उत्थाय, एवमवादीत्-नो अर्पयामि खलु अह हे देवानुप्रिय कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीम्, एष खलु अह स्वयमेव युद्धसज्जो निर्गच्छामि=भवतो युद्धार्थं बहिर्निः सरामि इतिकृत्वा

के कर्तव्य अनुसार मैंने यह आपको नमस्कार किया है जय विजय आदि शब्दों द्वारा वधाई दी है-परन्तु मेरे स्वामीकी उनके मुखसे आपके लिये जो आज्ञा दी गई है वह दूसरी है-और वह इस प्रकार है-इस प्रकार अपने मुख से कहकर वह शीघ्र क्रोध से भर गया, और वामपाद से उसके पादपीठ पर चढ गया। (अक्कमित्ता) चढकर फिर (कौंतग्गेण लेह पणामइ) फिर उसने उसके लिये कुन्त के अग्रभाग से पत्रिका अर्पित की। (पणामित्ता जाव कूव हव्वमागए) पत्रिका अर्पित करके यावत् कृष्णवासुदेव पाचो पाडवों के साथ यहा द्रौपदी देवी को वापिस लेने के लिये हव्व-अभी अभी-आये हैं यह सब समाचार उसे सुना दिया। (तएण से पउमणाभे दारुएण सारहिणा एवयुत्ते समाणे आसुरुत्ते त्तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एव वयासी णो अप्पिणामि, ण अह देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवई, एस ण अह सयमेव

વિનયોપચાર માટે નમસ્કાર કર્યો છે તેમજ જય વિજય વિજય શબ્દો દ્વારા તમને વધામણી આપી છે પરતુ મારા સ્વામીએ તેમના મુખથી તમારે માટે જે કઈ આજ્ઞા આપી છે તે કઇક બીજી જ છે અને તે આ પ્રમાણે છે કે-દૂત આમ કહીને એકદમ ક્રોધમા લાલચોળ થઈ ગયો અને ડાબા પગથી તેના પાદાસન ઉપર ચઢી ગયો (अवक्कमित्ता) ચઢીને (कौंतग्गेण लेह पणामइ) તેણે રાજાને કુત (ભાલા) ના અગ્રભાગથી પત્રિકા આપી (पणामित्ता जाव कूव हव्वमागए) પત્રિકા આપીને યાવત કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાચે પાડવોની સાથે અહી દ્રૌપદી દેવીને લેવા માટે અત્યારે આવ્યા છે આ જાતના બધા સમાચારો તેને કહી સભળાવ્યા

(तएण से पउमणाभे दारुयेण सारहिणा एव वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ति घलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एव वयासी-णो अप्पिणामि

एव वयासी- ह भो दारगा! किन्न तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह ?, तएण ते पंच पंडवा कण्ह वासुदेव एवं वयासी--अम्हे णं सामी! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था, तएण से पउमनाभे राया तं पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्धयपडागा जाव दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेण रन्ना हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव अधारणिज्जत्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा ?, तएण ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेव एव वयासी- एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे तं पंच पंडवे एवं वयासी- जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एवं वयंता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण सद्धिं संपलग्गं ताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहिय पवर जाव पडिसेहंते, तं पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं

एव खलु अह हे स्वामिन् ! युष्माकं वचनेन यावत् ' णिच्छुभावेइ ' निश्शोभयति= पद्मनाभः क्रोधाविष्टः सन् द्रौपदीं न दास्यामीत्युक्त्वा दूतो न हन्तव्य इति कृत्वा मामसत्कार्य, असमान्यापद्वारेण निःसारयति स्म ' इत्यर्थ. ॥ २८ ॥

मूलम्–तएण से पउमणाभे बलवाउय सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया । आभिसेक्क हत्थिरयणं पडिकप्पेह, तयाणंतर च ण से बलवाउए छेयायरियउव देसमइविकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ, तएणं से पउमनाहे सन्नद्ध० अभिसेयं दुरुहइ दुरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासु देवे पउमणाभं रायाण एज्जमाण पासइ पासित्ता त पंच पडवे

गच्छइ उवागच्छित्ता करयल० कण्ह जाव एव वयासी–एव खलु अह सामी ? तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ) इस प्रकार जब वह दारुक सारथि पद्मनाभ के द्वारा असत्कृत यावत् होकर बाहिर निकला दिया, तब वह वहा से चलकर जहाँ कृष्णवासुदेव थे वहा आया । वहा आकर उसने दोनों हाथों की अजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा–हे स्वामिन् ? मैंने पद्मनाभ राजा से आपके वचन जैसे ही कहे वैसे ही उसने "क्रोध में आकर" मैं नहीं दूगा दूतमारने योग्य नहीं होता है–इत्यादि कहकर मुझे असत्कृत एव असमानित कर अपने यहाँ से पीछे के दरवाजे से बाहिर निकलवा दिया है ॥ सूत्र २८ ॥

वयासी–एव खलु अह सामी ' तुब्भ वयणेण जाव णिच्छुभावेइ)

આ પ્રમાણે જ્યારે તે દારુક સારથિ પદ્મનાભ રાજા વડે અસત્કૃત યાવત અસમાનિત થઈને બહાર કઢાવી મૂકાયો ત્યારે તે ત્યાથી બહાર આવીને જ્યા કૃષ્ણ–વાસુદેવ હતા ત્યા આવ્યો ત્યા આવીને તેણે બને હાથોથી અ જલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને કૃષ્ણ–વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે સ્વામી ! પદ્મ નાભ રાજાને મે જ્યારે તમારો સ દેશ કહી સભળાવ્યો ત્યારે સાભળતાની સાથે જ તે ક્રોધમા ભરાઈને "હુ દ્રૌપદી દેવી પછી આપીશ નહિ, યાવત દ્રુત અવધ્ય હોય છે " વગેરે વચનોથી અસત્કુત તેમજ અસમાનિત કરીને મને તેણે પોતાના ભવનના પાછલા બારણેથી બહાર કઢાવી મૂક્યો "

एवं वयासी--ह भो दारगा! किन्न तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह?, तएण ते पंच पंडवा कण्ह वासुदेवं एवं वयासी--अम्हे णं सामी! जुज्झामो तुब्भे पेच्छह तएणं पंच पंडवे सण्णद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहंति दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एव वयासी--अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्तिकट्टु पउमनाभेणं सद्धि संपलग्गा यावि होत्था, तएण से पउमनाभे राया त पंच पडवे खिप्पामेव हयमहिय पवर निवडिय चिन्धद्धयपडागा जाव दिसोदिसि पडिसेहेइत्ति, तएणं ते पंच पंडवा पउमनाभेण रन्ना हयमहियपवरनिवडिय जाव पडिसेहिया समाणा अत्थामा जाव आधारणिज्जात्तिकट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी--कहणं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमणाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा?, तएण ते पच पडवा कण्ह वासुदेव एव वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरुहामो२ जेणेव पउमनाभे जाव पडिसेहेइ, तएणं से कण्हे वासुदेवे तं पच पडवे एव वयासी--जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउमनाभेण सद्धि सपलग्गं ताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे हयमहियपवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! अहं नो पउमणाभे रायत्तिकट्टु पउनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि रहं

दुरुहइ दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेय गोखीरहारधवल तणसोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुम ज्झिगासं निययबलस्स हरिसजणणं रिउसेण्णविणासकर पञ्च जण्णं सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ, तएण तस्स पउमणाहस्स तेणं सखसद्देणं बलइभाए हयजाव पडिसेहिए, तएणं से कण्हे वासुदेवे धणु परामुसइ वेढो धणु पूरेइ पूरित्ता धणुसद्दं करेइ, तएण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेण धणुसद्देण हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभे राया तिभाग बलावसेसे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्तिकट्टु सिग्धं तुरियं जेणेव अमरकका तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता अमरकक रायहाणि अणुपविसइ अणुप विसित्ता दाराइ पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता रह ठवेइ ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमु ग्घाएण समोहणइ, एगं मह णरसीहरूव विउव्वइ विउव्वित्ता महया महया सद्देणं पाददद्दरयं करेइ, तएण से कण्हेण वासुदेवेण महया महया सद्देणं पाददद्दरएण कएण समाणेणं अमरकका रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणपल्हत्थियपव-रभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया, तएण से पउमणाभे राया अमरकक रायहाणिं सभग्ग जाव पासित्ता भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ --सा

दोवईदेवी पउमनाभ रायं एव वयासी– किण्णं तुम देवाणुप्पिया ! न जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे मम इहं हव्वमाणेसि, तं एवमवि गए गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अवचूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय मम पुरओ काउं कण्ह वासुदेवं करयलपायपडिए सरणं उवेहि, पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा, तएणं से पउमनाभे, दोवइए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ उवित्ता करयल० एवं वयासी–दिट्ठाण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! जाव खमंतु णं जाव णाह भुज्जो२ एवं करणयाएत्तिकट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी–ह भो पउमणाभा ! अप्पत्थियपत्थिया४ किण्ण तुम ण जाणसि मम भगिणि दोवइदेवी इह हव्वमाणमाणे त एवमवि गए णत्थि ते ममाहि तो इयाणि भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ गिण्हित्ता रह दुरूहेइ दुरूहित्ता जेणेव पच पडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचण्हं पडवाणं दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ, तएण से कण्हे पचहि पंडवेहि सद्धिं अप्पछट्ठे छहि रहेहि लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण जेणेव जबूद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० २९॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स पद्मनाभः ' बलवाउय ' बलव्यापृत-सैन्यनायकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिय ! ' आभिसेक्कं ' आभिषेक्यं प्रधान हस्तिरत्नं ' पडिकप्पेह ' प्रतिकल्पय सुसज्जितं कुरु, तदनन्तरं च स बलव्यापृत खलु " छेयायरियउवदेसमइ विकप्पणाविगप्पेहिं " छेकाचार्योपदेशमतिविकल्पनाविकल्पैः-तत्र छेकः-निपुणः, आचार्यः-कलाशिक्षक , तस्योपदेशाद् या मतिः विस्तरया विकल्पना-विचारणा, तज्जनितो विकल्प.-विशिष्ट रचनाशक्तिर्येषां तैः, ' जाव उवणेइ ' यावद् उपन-

---

– तएण से पउमणाभे इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से पउमणाभे) उन पद्मनाभ राजा ने (बलवाउय सद्दावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सद्दावित्ता) और बुलाकर फिर उनसे (एव वयासी) इस प्रकार कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो। (तयाणतर च ण से बलवाउए छेयायरिय उवदेसमइ विकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुण कला शिक्षक के उपदेश से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो शोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया। जब उन्हो ने उस हस्तिरत्न को चम कीले निर्मल वेष से शीघ्र परिवक्षित-करदिया । वस्त्राच्छादन द्वारा

तएण से पउमणाभे इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (से पउमणाभे) તે પદ્મનાભ રાજાએ (बलवाउय सद्दावेइ) પોતાના સૈન્ય નાયકને બોલાવ્યો (सद्दावित्ता) અને બોલાવીને તેને (एव वयासी) આ પ્રમાણે કહ્યું કે (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह) હે દેવાનુપ્રિય ! તમે સત્વરે પ્રધાન હસ્તિરત્નને સુસજ્જ કરો (तयाण तर च ण से बलवाउए छेयायरियउवदेसमइविकप्पणा विगप्पेहि निउणेहिं जाव उवणेइ) ત્યારપછી તે સૈન્ય નાયકે નિપુણ કલાશિક્ષકના ઉપદેશથી જેમણે વિશિષ્ટ રચના માટે બુદ્ધિ તેમજ કલ્પના શક્તિ મેળવી છે, તેમજ શ્રૃંગાર કલામા જેઓ અતીવ ચતુર છે તેવા માણસો વડે હસ્તિરત્નને સુસજ્જિત કરાવ્યો જ્યારે સત્વરે તેમણે તે હસ્તિરત્નને ચમકતા નિર્મળ વેષથી પરિવક્ષિત કરી દીધો-વસ્ત્રાચ્છાદન વડે આચ્છાદિત કરીને સુશો

यति-अत्र यावच्छब्देनेत्र बोध्यम्-सुनिउणेहिं नरेहिं हत्थिरयण परिकप्पेइ, उज्जलनेवत्थ हव्वपरिवत्थिय सुसज्ज इत्यादि परिकप्पित्ता ' इति सुनिपुणै.=शोभाकरणचतुरैः, नरैर्हस्तिरत्न परिकल्पयति-शोभयति किं भूतं हस्तिरत्न-उज्ज्वल-नेपथ्यहव्यपरिवस्त्रित उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेषेण शीघ्र परिवस्त्रितः वस्त्राच्छादनसुशोभितः, तथा-सुसज्ज-घण्टाभरणादिभि. समलङ्कृत, एव परिकल्प्य सत्रल्व्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति। तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धबद्धवर्मितकवच - अभिषेक्य हस्तिरत्न दूरोहति-आरोहति दूरुह्य हयगजरथपदातिपरिवृत यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव प्राधारयद् गमनाय।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभ राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त पश्यति। दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत-ह भो ! दारकाः भो वत्सा !

आच्छादित कर सुशोभित करदिया-अर्थात्-झूल वगैरह डालकर उसे बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अलकृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ राजा के पास पहुँचा (तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ, दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, बद्ध, वर्मित कवच वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ हो गया और आरूढ होकर हय, गज, रथ, एव पैदल सैन्य को साथ लेकर जहा कृष्णवासुदेव थे उस ओर चल दिया। जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पाच पाडवो से ऐसा कहा-(ह भो

भित करी दीधो એટલે કે ઝૂલ વગેરે નાખીને બહુ જ સરસ રીતે સુસજ્જિત કરી દીધો તેમજ ઘટ, આભરણો વગેરેથી તેને અલકૃત કરી દીધો ત્યારે તે સૈન્ય નાયક તે હસ્તિરત્નને લઈને પદ્મનાભ રાજાની પાસે ગયો.

(तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કવચ તેમજ બીજા શસ્ત્રોથી સજ્જ થઈને તે પ્રધાન હસ્તિરત્ન ઉપર સવાર થઈ ગયો અને સવાર થઈને ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળ સેનાને સાથે લઈને કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા તે તરફ રવાના થયો. કૃષ્ણ-વાસુદેવે જ્યારે પદ્મનાભ રાજાને આવતો જોયો ત્યારે તેને જોઈને પાંચ

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स पद्मनाभः 'बलवाउय' बलव्यापृत-सैन्यनायकं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्—क्षिप्रमेव-शीघ्रमेव भो देवानुप्रिय! 'आभिसेक्क' आभिषेक्य प्रधान हस्तिरत्न 'पडिकप्पेह' प्रतिकल्पय सुसज्जितं कुरु, तदनन्तरं च स बलव्यापृत खलु "छेयायरियउवदेसमइ विकप्पणाविगप्पेहिं" छेकाचार्योपदेशमतिविकल्पनाविकल्प.—तत्र छेकः-निपुणः, आचार्यः-कलाशिक्षक, तस्योपदेशाद् या मतिः बुद्धिस्तस्या विकल्पना-विचारणा, तज्जनितो विकल्प -विशिष्ट रचनाशक्तिर्येषा तः, 'जाव उवणेइ' यावद् उपन

–तएण से पउमणाभे इत्यादि ॥

टीकार्थ-(तएण) उसके बाद (से पउमणाभे) उन पद्मनाभ राजा ने (बलवाउय सद्दावेइ) अपने सैन्य नायक को बुलाया (सद्दावित्ता) और बुलाकर फिर उनसे (एवं वयासी) इस प्रकार कहा-(खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय! तुम शीघ्र ही प्रधान हस्तिरत्न को सुसज्जित करो। (तयाणतरं च णं से बलवाउए छेयायरिय उवदेसमइ विकप्पणा विगप्पेहिं निउणेहिं जाव उवणेइ) इसके बाद उस सैन्य नायक ने निपुणकला शिक्षक के उपदेश से प्राप्त बुद्धि की कल्पना से उत्पन्न हुई है विशिष्ट रचना की शक्ति जिन्हों को ऐसे मनुष्य से कि जो शोभा करने में अत्यन्त निपुण थे उस हस्तिरत्न को सुसज्जित करवाया। जब उन्हों ने उस हस्तिरत्न को चमकीले निर्मल वेष से शीघ्र परिवेष्ठित-करदिया। वस्त्राच्छादन द्वारा

तएण से पउमणाभे इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (से पउमणाभे) ते पद्मनाभ राजाए (बलवाउय सद्दावेइ) पोताना सैन्य नायकने बोलाव्यो (सद्दावित्ता) अने बोलावीने तेने (एव वयासी) आ प्रमाणे कह्यु के (खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! आभिसेक्क हत्थिरयण पडिकप्पेह) हे देवानुप्रिय! तमे सत्वरे प्रधान हस्तिरत्नने सुसज्ज करो (तयाणतर च णं से बलवाउए छेयायरियउवदेसमइविकप्पणा विगप्पेहि निउणेहिं जाव उवणेइ) त्यारपछी ते सैन्य नायके निपुण कलाशिक्षकना उपदेशथी जेमणे विशिष्ट रचना माटे बुद्धि तेमज कल्पना शक्ति मेळवी छे, तेमज श्रृंगार कलामा जेओ अतीव चतुर छे तेवा माणसो वडे हस्तिरत्नने सुसज्जित कराव्यो. ज्यारे सत्वरे तेमणे ते हस्तिरत्नने चमकता निर्मळ वेषथी परिवेष्टित करी दीधो-वस्त्राच्छादन वडे आच्छादित ... सुशो

यति-अत्र यावच्छब्देनैव बोध्यम्-सुनिउणेहिं नरेहिं हत्थिरयण परिकप्पेइ, उज्जलनेवत्थ हव्वपरिवत्थियं सुसज्ज इत्यादि परिकप्पित्ता ' इति सुनिपुणैः=शोभाकरणचतुरैः, नरैर्हस्तिरत्न परिकल्पयति-शोभयति किं भूत हस्तिरत्न-उज्ज्वल-नेपथ्यहव्यपरिवस्त्रित उज्ज्वलनेपथ्येन-द्युतिमन्निर्मलवेषेण शीघ्र परिवस्त्रितः वस्त्राच्छादनसुशोभितः, तथा-सुसज्ज-घण्टाभरणादिभिः समलङ्कृत, एव परिकल्प्य सरल्व्यापृतः पद्मनाभनृपस्यान्तिके त हस्तिरत्नमुपनयति, आनयति । तत खलु स पद्मनाभः सन्नद्धबद्धवर्मितकवच - आभिषेक्य हस्तिरत्न दूरोहति-आरोहति दूरुह्य हयगजरथपदातिपरिवृत यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैव प्राधारयद् गमनाय ।

तत खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभं राजानम् एजमानम्=आगच्छन्त पश्यति । दृष्ट्वा च तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवदत्-हं भो ! दारकाः भो वत्सा !

आच्छादित कर सुशोभित करदिया-अर्थात्-झूल वगैरह डालकर उसे बहुत अच्छी तरह सजा दिया, तथा घटा आभरण आदि से उसे अलकृत करदिया, तब वह सैन्य नायक उस हस्ति रत्न को लेकर पद्मनाभ राजा के पास पहुँचा (तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ, दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी) इसके बाद वह पद्मनाभ राजा सन्नद्ध, बद्ध, वर्मित कवच वाला होकर उस प्रधान हस्तिरत्न पर आरूढ हो गया और आरूढ होकर हय, गज, रथ, एव पैदल सैन्य को साथ लेकर जहाँ कृष्णवासुदेव थे उस ओर चल दिया। जब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ राजा को आता हुआ देखा तो देखकर उन्हो ने पाच पाडवो से ऐसा कहा-(ह भो

भित કરી દીધો એટલે કે ઝૂલ વગેરે નાખીને બહુ જ સરસ રીતે સુસજ્જિત કરી દીધો તેમજ ઘટ, આભરણો વગેરેથી તેને અલકૃત કરી દીધો ત્યારે તે સૈન્ય નાયક તે હસ્તિરત્નને લઈને પદ્મનાભ રાજાની પાસે ગયો

(तएण से पउमणाभे सन्नद्ध० अभिसेय० दूरुहइ दूरुहित्ता हयगय जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभरायाण एज्जमाण पासइ, पासित्ता ते पच पडवे एव वयासी)

ત્યારપછી તે પદ્મનાભ રાજા કવચ તેમજ બીજા શસ્ત્રોથી સજ્જ થઈને તે પ્રધાન હસ્તિરત્ન ઉપર સવાર થઈ ગયો અને સવાર થઈને ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળ સેનાને સાથે લઈને કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા તે તરફ રવાના થયો કૃષ્ણ-વાસુદેવે જ્યારે પદ્મનાભ રાજાને આવતો જોયો ત્યારે તેને જોઈને પાચ

किं खलु यूयं पद्मनाभेन सार्धं 'जुज्झिहिह' युध्यध्वम्। 'उयाहु' उताहो-अथवा 'पेच्छिहिह' प्रेक्षध्वे, ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे स्वामिन्! युध्यामः, यूयं प्रेक्षध्वम्। ततः खलु पञ्च पाण्डवाः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावत् गृहीतायुधप्रहरणाः रथान्=स्वस्व रथोपरि दूरो हन्ति=आरोहन्ति दूरोह यत्रैव पद्मनामो राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवदन्-'अम्हे वा पउमणाभे वा राया' वयं वा भवाम' पद्मनाभो वा राजा, इति

दारगा! किन्न तुब्भे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह? तएण ते पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) हे वत्सो! क्या तुमलोग पद्मनाभ के साथ युद्ध करोगे-या युद्ध को देखोगे? तब उन पांडवो ने कृष्णवासुदेव से इस प्रकार कहा-(अम्हेण सामी! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह, तएण पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहति, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेण सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था) हे स्वामिन्! हम तो युद्ध करेंगे-आप उस का निरीक्षण करें। इसके बाद वे पांचो पांडव सन्नद्धबद्धवर्मित कवचवाले होकर यावत् आयुध प्रहरणों को ले २ कर अपने २ रथों पर सवार हो गये। सवार होकर फिर वे जहां पद्मनाभ राजा थे-उस ओर गये-वहां जाकर उन्हों ने पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-या तो आज हम नहीं या पद्म

પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું-(हं भो दारगा! किन्न तुमे पउमनाभेण सद्धिं जुज्झिहिह उयाहु पेच्छिहिह? तएण ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी) હે વત્સ! શું તમે પદ્મનાભ રાજાની સાથે મેદાને ઉતરશો? કે ફક્ત યુદ્ધને જોશો? ત્યારે તે પાંડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે:—

(अम्हेण सामी! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह, तएण पंच पंडवे सन्नद्ध जाव पहरणा रहे दुरूहति, दुरूहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता एवं वयासी, अम्हे वा पउमणाभे वा रायत्ति कट्टु पउमणाभेण सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था)

હે સ્વામી! અમે તો યુદ્ધ ખેડીશું, તમે અમારા યુદ્ધને જુઓ. ત્યાર પછી તે પાંચે પાંડવો કવચથી સુસજ્જ થઈને આયુધ પ્રહરણોને લઈને પોત પોતાના રથો ઉપર સવાર થઈ ગયા. સવાર થઈને તેઓ પદ્મનાભ રાજા તરફ રવાના થયા. પદ્મનાભ રાજાની પાસે પહોંચીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે— "આજે કાં તો અમે નહિ અને કાં પદ્મનાભ નહિ" આમ કહીને તેઓ પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા.

कृत्वा=इत्युक्त्वा-पद्मनाभेन सार्धं योद्धुं संमलग्नाश्चाप्यभवन्, तत खलु स पद्म नाभो राजा तान् पञ्च पाण्डवान् क्षिप्रमेव 'हयमहियपवरनिवडियचिन्धद्धयपडागा' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्नध्वजपताकान्-तत्र हया'-अश्वा मथिता-पीडिताः, प्रवराः-प्रशस्ताः, चिह्न-ध्वजपताका निपातिता येषां तान्, शस्त्रास्त्रप्रहारजनित भग्नान् इत्यर्थः, यावद् दिशो दिशं=सर्वतः 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=प्रतिनिवर्तयति स्मेत्यर्थः। ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पद्मनाभेन राज्ञा हयमथितप्रवरनिप तित यावत् प्रतिषेधिताः सन्तः 'अत्थामा' अस्थामानः-बलरहिता, 'जाव अधारणिज्जा' अत्र यावच्छब्देन-'अबला अवीर्या' इत्यनयोः संग्रहः। अबलाः-

नाभ राजा ही नहीं" ऐसा कहकर वे पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करने में संलग्न हो गये। (तएणं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया, समाणा, अत्थामा जाव अधारणिज्ज त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमनाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा? तएण ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ) तब पद्म नाभ राजा ने उन पांचो पाडवों को बहुत जल्दी पीडित घोडों वाला एव निपातित प्रशस्त चिह्नध्वज पताका वाला कर दिया। यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से भी उन्हें रोक दिया अथवा-एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड दिया। इस तरह वे पांचो पाडव पद्म नाभ राजा के द्वारा पीडित घोडोवाले, एव निपातित प्रशस्त चिह्न ध्वज पताका वाले जब बन गये और एक दिशा से दूसरी दिशा में जाने से रोक दिये गये-अथवा खदेड़ दिये गये तब बलरहित बनकर यावत्

(तएण से पउमनाभे राया ते पंच पडवे खिप्पामेव हयमहियपवर निवडिय जाव पडिसेहिया समाणा, अत्थामा जाव अधारणिज्ज, त्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवा०, तएण से कण्हे वासुदेवे ते पंच पडवे एवं वयासी कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! पउमनाभेण रन्ना सद्धिं संपलग्गा? तएण ते पंच-पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा सन्नद्ध० रहे दुरूहामो २ जेणेव पउमणाभे जाव पडिसेहेइ)

ત્યારપછી પદ્મનાભ રાજાએ તે પાંચે પંડવોને થોડા વખતમાં જ પીડિત ઘોડાઓવાળા તેમજ નિપાતિત પ્રશસ્ત ચિહ્નધ્વજ પતાકાવાળા બનાવી દીધા યાવત્ એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ જઈ શકે નહિ તેમ તેઓએ રસ્તો રોકી લીધો અથવા તો એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂક્યા આવી

सत्वहीनाः अवीर्याः-आन्तरिकशक्तिरहिताः, उत्साहहीनास्तथा, तथा-अधा रणीयाः=आत्मानं रणभूमौ धारयितुमशक्ताः, इति कृत्वा-इति विचार्य, यत्रैव कृष्णो वासुदेवस्तत्रैवोपागच्छन्ति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवं वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-'कहण्णं' कथं खलु यूयं हे देवानु प्रियाः ! पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं संप्रलग्नाः ?, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! वयं युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचाः रथान् 'दुरूहामो' दूरोहामः-आरोहामः आरुह्य, आरुह्य यत्रैव पद्मनाभस्तत्रैव गत्वा युद्धाय सम्प्रलग्नाः ततः पराजय प्राप्ता यावत् प्रतिषेधिताः' इति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवा

रणभूमि में अपने आपको टीका ने में भी असमर्थ जानकर जहां कृष्ण वासुदेव थे वहां आवे । वहा पहुँच तेही कृष्णवासुदेवने उनसे-उन पांचो पांडवों से-इस प्रकार कहा- जब आपलोग पराजित हो गये तो पद्म नाभ राजा के साथ युद्धरत हुए-लडे-तब उन पांचो पांडवो ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा, हे देवानुप्रिय ! हमलोगो ने आप से अभ्य नुज्ञात होकर ही कवच आदि से सुसज्जित हो रथों पर आरोहण किया, और आरोहण कर जहां पद्मनाभ राजा था वहां हमलोग पहुँचे। वहा पहुँचकर हमलोग उनके साथ युद्धरत हो गये। बाद में पराजित हो गये। और पराजित होकर फिर ऐसे बन गये जो उसने हमें एक दिशा से दूसरी दिशा में खदेड दिया या जाने से रोक दिया। (तएण से कण्हे वासुदेवे ते प प) तब कृष्णवासुदेव ने उन पांचो पांडवो से

પરિસ્થિતિમાં લાચાર થઈને યાવત્ યુદ્ધભૂમિમાં પોતાની જાતને ટકાવી શક વામાં પણ અસમર્થ જાણીને પાંચે પાંડવો જ્યાં કૃષ્ણ-વાસુદેવ હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં પહોંચતા જ કૃષ્ણ-વાસુદેવે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે લોકો પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધરત થઈને પરાજીત થઈ ગયા છો ? ત્યારે તે પાંચે પાંડવોએ કૃષ્ણ-વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા આપની આજ્ઞા મેળવીને કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઈને રથો ઉપર સવાર થયા સવાર થઈને અમે જ્યાં પદ્મનાભ રાજા હતો ત્યાં ગયો ત્યાં પહોંચીને અમે બધા તેની સાથે યુદ્ધ કરવા લાગ્યા અને તેને પરિણામે અમે હારી ગયા છીએ હાર પામીને અમે એવી ભયંકર પરિસ્થિતિમાં સપડાઈ ગયા હતા કે જેથી એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ જવામાં પણ અસર્થ થઈ ગયા અથવા તો તેણે અમને એક દિશામાંથી બીજી દિશા તરફ ભગાડી મૂક્યા છે (तएणं से कण्हे वासुदेवे ते प प) ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે તે પાંચ પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

दीत्-यदि खलु यूय हे देवानुप्रियाः! पूर्वमेव वक्तारो भवत, 'अम्हे,' णो पउनाभे राया' इति 'वय भवामः, नो पद्मनाभो राजा' इति "वयमेवजेष्यामो न तु पद्मनाभो राजा' इत्यर्थः तथा-यदि पूर्वम्-इति कृत्वा=इत्येव निश्चय मनसि निधाय, पद्मनाभेन सार्धं 'सपलग्गता' युद्धाय समलग्ना भवत, 'तो ण तर्हि खलु 'तुब्भे, णो पउमणाहे' यूय नो पद्मनाभ=यूयमेव जेतारो भवेत, न तु पद्मनाभः, तथा यूय त हयमथितप्रवरनिपतित चिह्न ध्वजपताक यावत्-पद्मनाभ 'पडिसेहृते' प्रतिषेधयेत=प्रतिनिवर्तयेत। तत्=तस्मात् 'पेच्छह' प्रेक्षध्व, खलु

इस प्रकार कहा-(जइण तुब्भे देवाणुप्पिया! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धिं सपलग्गताओ णं तुब्भे णो पउमणाहे, हय-महिय-पवर-जाव पडिसेहत्ते, त पेच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! अह णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि, रह दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सेय गोखीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवारकुंदेदु सन्निगास नियबलस्स हरिसजणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ) हे देवानुप्रिय! तुम तो पहिले ऐसा कहते थे कि हम जीतेंगे, पद्मनाभ राजा नही जीतेगा-और ऐसा ही मन मे विचार कर-निश्चय कर-तुमलोगों ने पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करना प्रारभ किया-तो तुमलोगो को ही जीतना चाहिये था। पद्मनाभ राजा को नही-और तुम्हीं लोग उसे पीडित घोडो वाला एव निपातितप्रवा-

(जइण तुब्भे देवाणुप्पिया! एव वयता अम्हे णो पउमणाभे राय त्ति कट्टु पउमनाभेण सद्धिं सपलग्गताओ ण तुब्भे णो पउमणाहे, हयमहियपवर जाव पडिसेहते, त पेच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! अह णो पउमणाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेण रन्ना सद्धिं जुज्झामि, रह दुरूहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमणाभे राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेय गोखीरहारधवलतणसोल्लियसिंदुवार कुंदेंदु सन्निगास नियबलस्स हरिसजणण रिउसेण्णविणासकर पचजण्ण सख परामुसइ)

હે દેવાનુપ્રિય! તમે તો પહેલેથી જ આ પ્રમાણે કહેતા હતા કે અમેજ જીતીશુ, પદ્મનાભ રાજા જીતશે નહિ અને આ પ્રમાણે વિચાર કરીને જ તમે લોકોએ પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધની શરૂઆત કરી હતી, આવી પરિસ્થિમા તો તમારે જીત મેળવવી જોઇએ પદ્મનાભ રાજાની જીત નહિ થવી જોઇએ તમે લોકો તેને પીડિત ઘોડાઓવાળો બનાવત, તમને તે નહિ પણ આ બધી તમારી મનની ઇચ્છા સફળ થઈ શકી નહિ એથી હે દેવાનુપ્રિયો! હવે જુઓ,

एष हे देवानुप्रियाः ! 'अह णो पउमणाभ राया' 'अहं नो पद्मनाभो राजा'= अहमेव जेता भवामि, न तु पद्मनाभो राजा, इति कृत्वा पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं युध्यामि, इत्युक्त्वा रथं 'दुरूहइ' दूरोहति-आरोहति-स कृष्ण वासुदेवः पद्म नाभेन सह योद्धुं रथमारूढवान् इत्यर्थः। आरुह्य यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य 'सेय' श्वेत-गोक्षीरहारधवल=गोदुग्धवत्-हारवत् धवल शुक्ल 'तणमोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगास' 'तणमोल्लिया' मल्लिका अय देशीयः शब्द; सिन्दुवारो=निर्गुण्डी, कुन्द-कुन्दनाम्ना प्रसिद्धः श्वेतपुष्पविशेषः इन्दुश्चन्द्रस्तद्वत् सन्निकाश-प्रभा यस्य स तं, निययबलस्स' निजकबलस्य स्वकी यसेनायः 'हरिसजणण' हर्षजनन-हर्षोत्पादकं, 'रिउसेण्ण विणासकर' रिपुसैन्य विनाशकर=शत्रुसैन्यबलहारकं पाञ्चजन्य शङ्ख पाञ्चजन्यनामकं शङ्खं 'परामुसइ' परा मृशति हस्ते गृह्णाति, परामृश्य 'मुहवायपूरियं करेइ' मुखवातपूरितं मुखवातेन-नादं करोति-नादयतीत्यर्थः। तत खलु तस्य पद्मनाभस्य तेन शङ्खशब्देन 'बल

स्त चिह्नध्वज पताका वाला बनाते-वह तुम्हें ऐसा नहीं बनाता-परन्तु ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विचार सफली भूत नहीं हुआ अतः देवानुप्रियो! अब देखो-मैं उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं। ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर सवार हो गये। और सवार होकर वे वहा पहुँचे जहा पद्मनाभ राजा था। वहाँ पहुँच कर उन्हों ने अपने पाचजन्य श्वेतशङ्ख को जो अपनी सेनाको हर्ष का जनक एव शत्रु सेना का संहारक था एव गोक्षीर तथा हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया। इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुंडी कुंदपुष्प एव चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी।(परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) उसे उठाकर उन्हों ने मुँह से बजाया-(तएणं तस्स पउमणाहस्स तेण सखसद्देण बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) तब उस पदमनाभ की सेना

तेनी साथे हु हवे मेदाने पडु छु आमा विजय मने ज प्राप्त थशे, पद्म नाभ राजाने नहि आम कहीने कृष्ण-वासुदेव रथ उपर सवार थई गया अने सवार थईने ज्या पद्मनाभ राजा हतो त्या पहोच्या त्या पहोचीने तेमणे पोताना पाचजन्य सफेद शखने-के जे तेमनी सेना माटे हर्षोत्पादक तेमज शत्रुओनी सेना माटे सहार रूप हतो तथा गायना दूध अने हारना जेवो सफेद हतो-हाथमा लीधो ते शखनी काति मल्लिका निर्गुंडी कुंद पुष्प अने चन्द्र जेवी हती (परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) लईने तेमणे मुखथी वगाडयो (तस्स पउमणाहस्स तेण सखसद्देण जाव पडिसेहि ते राजानी सेना

तिभाए हते ' बलत्रिभागो हतः-सैन्यस्य तृतीयांशो हतमथित यावत् दिशोदिश प्रतिषेधित -प्रतिनिवृत्तः पलायित इत्यर्थः। ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासुदेवो धनु परामृशति गृह्णाति, परामृश्य ' वेढो ' वेष्ट वर्णकः धनुर्विषयक वर्णन जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तितो विज्ञेयमित्यर्थः, ' धणु पूरेइ ' धनुः पूरयति धनुषि गुणमारोपयति पूरयित्वा धनुः शब्द करोति तत खलु तस्य पद्मनाभस्य द्वितीयवार ' बल तिभाए ' बलत्रिभाग बलस्य सैन्यस्य तृतीयोभागस्तेन धनुः शब्देन ' हयमहिय पवरनिवडिय चिन्धद्धयपडागे ' हयमथितप्रवरनिपतितचिह्न-ध्वजपताको यावद्

का त्रिभाग उस शख के शब्द से हत हो गया मथित हो गया यावत् एक दिशा से दूसरी दिशा की तरफ भाग गया। तएण से कण्हे वासुदेवे धणु परामुसइ, वेढो धणु पूरेइ, पूरित्ता धणुसद करेइ) इसके बाद कृष्ण वासुदेवने धनुष को उठाया। इस धनुष का वर्णन जबूद्वीप प्रज्ञप्ति में किया गया है। सो वहा से जानना चाहिये उठाकर उन्होंने उस पर ज्या का आरोपण किया फिर उसे चढाया-सो उससे शब्द हुआ (तएण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेण धणुसद्दण हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसकारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घ तुरिय जेणेव अमरकंका तेणेव उवागच्छइ) तब उस पद्मनाभ राजा की सैन्य का तृतीयभाग उस धनुष के शब्द से हत हो गया, मथित हो गया, उस की प्रवर चिन्ह स्वरूप ध्वजापताकाएँ सब गिर गई यावत्

શબ્દથી જ હત થઈ ગયો, મથિત થઈ ગયો યાવત્ એક દિશા તરફથી બીજી દિશા તરફ નાસી ગયો (तएण से कण्हे वासुदेवे धणु परामुसइ, वेढो धणु पूरेइ, पूरित्ता धणुसद्द करेइ) ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવે ધનુષ ઉઠાવ્યુ આ ધનુષનુ વર્ણન જબૂદ્વીપ પ્રજ્ઞપ્તિમા કરવામા આવ્યુ છે જિજ્ઞાસુઓએ ત્યાથી જાણી લેવુ જોઈએ ઉઠાવીને તેઓએ તેની ઉપર પ્રત્યચા ચઢાવી ત્યારપછી ધનુષને ચઢાવ્યુ અને તેનાથી શબ્દ થયો—

(तएण तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बलइभाए तेण धणुसद्देण हयमहिय जाव पडिसेहिए, तएण से पउमणाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जत्ति कट्टु सिग्घ तुरिय जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ)

તે પદ્મનાભ રાજાની સેનાનો ત્રીજો ભાગ તે ધનુષના શબ્દથી જ હત થઈ ગયો, મથિત થઈ ગયો, તેની પ્રવર ચિહ્ન-સ્વરૂપ ધ્વજા પતાકાઓ બધી પડી

यूय हे देवानुप्रियाः । ' अह नो पउमणाभे राया ' ' अहं नो पद्मनाभो राजा'= अहमेव जेता भवामि, न तु पद्मनाभो राजा, इति कृत्वा पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं युध्यामि, इत्युक्त्वा रथ ' दुरूहइ ' दूरोहति-आरोहति-स कृष्ण वासुदेवः पद्म नाभेन सह योद्धु रथमारूढवान इत्यर्थः । आरुह्य यत्रैव पद्मनाभो राजा तत्रैवो पागच्छति, उपागत्य ' सेय ' श्वेत-गोक्षीरहारधवल=गोदुग्धवत्-हारवच्च धवल शुक्ल ' तणमोल्लियसिंदुवारकुंदेंदुसन्निगासं ' ' तणमोल्लिया ' मल्लिका अयं देशीयः शब्द, सिन्दुवारो=निर्गुण्डी, कुन्द-कुन्दनाम्ना प्रसिद्धः श्वेतपुष्पविशेष, इन्दुश्चन्द्रस्तद्वत् सन्निकाश -प्रभा यस्य स त, नियगबलस्स ' निजकबलस्य स्वकी यसेनाया ' हरिसजणण ' हर्षजनन-हर्षोत्पादक, ' रिउसेण्ण विणासकर' रिपुसैन्य विनाशकर=शत्रुसैन्यबलहारक पाञ्चजन्य शङ्ख पाञ्चजन्यनामक शङ्ख 'परामुसइ परा मृशति हस्ते गृह्णाति, परामृश्य 'मुहवायपूरियं करेइ' मुखवातपूरित मुखवातेन मान करोति-वादयतीत्यर्थः । ततः खलु तस्य पद्मनाभस्य तेन शङ्खशब्देन 'बल

स्त चिह्नध्वज पताका वाला बनाते-वह तुम्हें ऐसा नहीं बनाता-परन्तु ऐसा तुम लोगों का मन में धारा विचार सफली भूत नहीं हुआ अतः देवानुप्रियो । अब देखो-मैं उसके साथ युद्धरत होता हूँ इसमें मैं ही जीतूंगा पद्मनाभ राजा नहीं । ऐसा कहकर वे कृष्णवासुदेव रथपर सवार हो गये। और सवार होकर वे वहा पहुँचे जहा पद्मनाभ राजा था। वहाँ पहुँच कर उन्हों ने अपने पाचजन्य श्वेतशङ्ख को जो अपनी सेनाको हर्ष का जनक एव शत्रु सेना का सहारक था एव गोक्षीर तथा हार के जैसा धवल वर्णवाला था उठाया । इसकी प्रभा मल्लिका निर्गुंठी कुंदपुष्प एव चन्द्रमाके जैसी उज्ज्वल थी।(परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) उसे उठाकर उन्हों ने मुँह से बजाया-(तएण तस्स पउमणाहस्स तेण सखसद्देण बलइभाए हय जाव पडिसेहिए) तब उस पद्मनाभ की सेना

तेनी साथे हु हवे ल्डवाने पडु छु आमा विजय मने ज प्राप्त थशे, पद्म नाभ राजाने नहि आम कहीने कृष्ण-वासुदेव रथ उपर सवार थई गया अने सवार थईने ज्या पद्मनाभ राजा हतो त्या पहोच्या त्या पहोचीने तेमणे पोताना पाचजन्य सफेद शखने-के जे तेमनी सेना माटे हर्षोत्पादक तेमज शत्रुओनी सेना माटे सहार रूप हतो तथा गायना दूध अने हारना जेवो सफेद हतो-हाथमा लीधो ते शखनी काति मल्लिका निर्गुंठी कुद पुष्प अने चन्द्र जेवी हती (परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ) लईने तेमणे मुखथी वगाड्यो (तएण तस्स पउमणाहस्स तेण सखसद्देण ब[illegible] जाव पडिसेहिए) ते वखते ते पद्मनाभ राजानी सेनानो

वासुदेवो यत्रैवामरकङ्का तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यव रोहति प्रत्यवरुह्य, 'वेउव्वियसमुग्घाएण' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मातु मात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणेन खलु 'समोहणइ' समुद्घातं करोति समुद्घ्नन्ति एकं महत् 'णरसीहरूवं' नरसिंहरूपं 'विउव्वइ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन करोति विकुर्व्य महता २ शब्देन 'पाददद्दरयं' पाददर्दरकं=भूमौ चरणाघातं करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराजधानी 'सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरिय-तोरणपल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा' सम्भग्नप्राकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्य-स्तिवप्रवरभवनश्रीगृहा=तत्र सभग्नानि-प्राकाराश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहांपर अमरकंका थी वहां गये (उवा०) वहां जाकर के (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोह-णइ) उन्होंने अपने रथको खडा किया-खडा करके फिर वे उससे नीचे उतरे। नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया। वैक्रियशरीरको निर्माण करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होना है-उसका नम वैक्रिय समुद्घात है। (एगं महं णरसिंहरूवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया २ सद्देण पाददद्दरएण कएण समाणेण अमरकंका रायहाणी सभग्ग पागारगोपुराट्टालचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्स रस्स धरणियले सन्निवइया) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके अपनी भयकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया। इस तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकका राजधानी की

ગયા (उवा०) ત્યાં જઈને (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पचोरुहइ, पचोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएण समोहणइ) તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો, ઊભો રાખીને તેઓ તેમાથી નીચે ઉતર્યા નીચે ઉતરીને તેમણે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કર્યો વૈક્રિય શરીરને બનાવવા માટે જે આત્મપ્રદેશોને બહાર કાઢવામા આવે છે તે વૈક્રિય સમુદ્ઘાત કહેવાય છે

(एग महं णरसिहरूव विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सद्देण पाददद्दरएण कएण समाणेण अमरकका रायहाणी सभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया)

આ સમુદ્ઘાત વડે તેમણે એક વિશાળ કાય નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરી નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરીને પોતાની ભયકર ગર્જનાથી ભૂમિ ઉપર ચરણોનો આઘાત કર્યો આ રીતે ગર્જનાપૂર્વક કરાયેલા ચરણાઘાતથી અમર-

दिशो दिशं प्रतिषेधितः, तत स पद्मनामो राजा 'तिभागबलावसेसे' त्रिभागबलावशेषः तृतीयांशावशिष्टसैन्यवान् स अस्थामा, अबलः, अवीर्यः, अस्थामेत्यादि प्राग्व्याख्यातम् अपुरुषकारपराक्रम'-पौरुषपराक्रमरहितः, अधार णीयः-प्राणान् धारयितुमशक्त', इति कृत्वा=इति विचार्य शीघ्रं त्वरितं यत्रैवा मरकङ्का तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य अमरकङ्का राजधानीमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य द्वाराणि 'पिहेइ' पिधत्ते, रोधसज्ज'=दुर्गं निरुध्य तिष्ठति, ततः खलु स कृष्णो

वह एकदिशा से दूसरी दिशा में भाग गया अथवा भागने में असमर्थ बन गया। इस के बाद तृतीयांशावशिष्ट सेना वाला होकर वह पद्म नाभराजा बल रहित हो गया, पर्याप्त सैन्य रहित हो गया एवं अन्तरिक शक्ति-उत्साह हीन हो गया। अतः वह पौरुष पराक्रम से रहित होने के कारण रणभूमि में ठहरने के योग्य नहीं रहा। अथवा प्राणों को धारण करने में भी असमर्थ बन गया। इसलिये वह वहां से शीघ्र बड़ी उतावली से जहां अमरकङ्का नगरी थी वहा आ गया। (उवागच्छित्ता अमरकङ्क रायहाणि अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दाराइं पिहेइ पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएण से कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकङ्का तेणेव उवागच्छइ) वहा आकर वह अमरकङ्का राजधानी में गया। जाकर उसने दरवाजोंको बंद करवा दिया। बंद करवाकर फिर वह अपने दुर्ग (किल्ला)की रक्षा करता हुआ वहां ठहरा। इसके बादकृष्णवासुदेव

ગઈ યાવત્ તે સેનાનો ભાગ એક દિશા તરફથી બીજીદિશા તરફ નાશી ગયો અથવા તો તે નાશી જવામા પણ અસમર્થ થઇ ગયો ત્યારપછી ત્રીજા ભાગ જેટલી સેના જ જેની પાસે રહી છે એવો તે પદ્મનાભ રાજા સાવ નિબળ થઈ ગયો, પર્યાપ્ત સૈન્ય રહિત થઈ ગયો અને આંતરિક શક્તિ-ઉત્સાહ રહિત થઇ ગયો તે પૌરૂષ પરાક્રમ વગરનો થઈ તે રણભૂમિમા ટકી શકે તેમ પણ રહ્યો નહિ અથવા તો તે પ્રાણોને ધારણ કરવામા પણ અસમર્થ થઇ ગયો એથી તે સત્વરે જ્યા અમરકકા નગરી હતી ત્યા આવી ગયો

(उवागच्छित्ता अमरकङ्क रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता-दाराइं पिहेइ, पिहित्ता रोहसज्जे चिट्ठइ, तएण से कण्हे वासुदेवे, जेणेव अमरकङ्का तेणेव उवागच्छइ)

ત્યા આવીને તે અમરકકા રાજધાનીમા ગયો, ત્યા જઇને તેણે દરવાજાઓને બંધ કરાવી દીધા બંધ કરાવીને તે પોતાના દુર્ગની રક્ષા કરતા ત્યાંજ રોકાયો ત્યારપછી કૃષ્ણ-વાસુદેવ જ્યા તે અમરકકા નામે ન " ત્યા

वासुदेवो यत्रैवामरकङ्का तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य रथं स्थापयति, रथात् प्रत्यव रोहति प्रत्यवरुह्य, 'वेउव्वियसमुग्घाएणं' वैक्रियसमुद्घातेन वैक्रियशरीरं निर्मातु मात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणेन खलु 'समोहणइ' समुद्घातं करोति समुद्घ्नन्ति एकं महत् 'णरसीहरूवं' नरसिंहरूपं 'विउव्वइ' विकुर्वते दिव्यसामर्थ्येन करोति विकुर्व्य महता २ शब्देन 'पाददद्दरयं' पाददर्दरकं=भूमौ चरणाघातं करोति, ततः खलु स कृष्णेन वासुदेवेन महता २ शब्देन पाददर्दरकेण=भूमौ चरणाघातेन कृतेन सता अमरकङ्काराजधानी 'संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरणपल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा' सम्भग्नप्राकारगोपुराट्टालकचरिकातोरणपर्यस्तितप्रवरभवनश्रीगृहा=तत्र सभग्नानि-प्राकाराश्च गोपुराणि च अट्टालकाश्च चरिका

जहांपर अमरकंका थी वहां गये(उवा०) वहां जाकर के (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ) उन्होंने अपने रथको खडा किया-खडा करके फिर वे उससे नीचे उतरे। नीचे उतर कर वैक्रिय समुद्घात किया। वैक्रियशरीरको निर्माण करने के लिये जो आत्मप्रदेशों का बाहिर निकालना होना है-इसको नाम वैक्रिय समुद्घात है। (एगं महं णरसिंहरूवं विउव्वइ विउव्वित्ता महया २ सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्ग पागारगोपुराट्टालचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया) इस समुद्घातके द्वारा उन्होंने एक विशाल काय नरसिंहरूप की विकुर्वणा की नरसिंहरूप की विकुर्वणा करके अपनी भयकर गर्जना से भूमि पर चरणों द्वारा आघात किया। इस तरह गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से अमरकंका राजधानी की

ગયા (उवा०) ત્યાં જઈને (रहं ठवेइ, ठवित्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ) તેમણે પોતાના રથને ઊભો રાખ્યો, ઊભો રાખીને તેઓ તેમાથી નીચે ઉતર્યા નીચે ઉતરીને તેમણે વૈક્રિય સમુદ્દઘાત કર્યો વૈક્રિય શરીરને બનાવવા માટે જે આત્મપ્રદેશોને બહાર કાઢવામા આવે છે તે વૈક્રિય સમુદ્દઘાત કહેવાય છે

(एगं महं णरसिंहरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया २ सद्देणं पाददद्दरएणं कएणं समाणेणं अमरकंका रायहाणी संभग्गपागारगोपुराट्टालयचरियतोरण पल्हत्थियपवरभवणसिरिघरा सरस्सरस्स धरणियले सन्निवइया)

આ સમુદ્દઘાત વડે તેમણે એક વિશાળ કાય નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરી નરસિંહ રૂપની વિકુર્વણા કરીને પોતાની ભયકર ગર્જનાથી ભૂમિ ઉપર ચરણોનો આઘાત કર્યો આ રીતે ગર્જનાપૂર્વક કરાયેલા ચરણાઘાતથી અમર-

च तोरणानि च यस्यां सा तथा, तत्र गोपुराणि-प्रतोल्यः अट्टालकाः-प्राकारो-
परिस्थान् विशेषाः, चरिका-नगरप्राकारान्तरालवर्तीमार्गः। तथा-पर्यस्तितानि-
सर्वतः क्षिप्तानि प्रवरभवनानि श्रीगृहाणि-भाण्डागाराणि कोशागाराणि च यस्यां सा
तथा, ततो द्विपदः कर्मधारयः। कृष्णवासुदेवेन भूमौ चरणाघातस्पन्देन अमर
कङ्काराजधान्याः प्राकारगोपुरादिकं विनाशितमित्यर्थः, तथा-'सरस्सरस्स'
अनुकरणशब्दोऽयम् निपतनक्रियाविशेषणं धरणितले सन्निपतिता=अमरकंका
राजधानी सरस्सरस्सेति शब्दं कुर्वाणा भूमौ पतितेत्यर्थः। ततः खलु स पद्मनाभो
राजा अमरकङ्कां राजधानीं सम्भग्नप्राकारादिकां यावत्-धरणितले सन्निपतितां
दृष्ट्वा भीतः त्रस्त, उद्विग्नः, सञ्जातभय, द्रौपद्या देव्याः शरणमुपैति प्राप्नोति,
ततः खलु सा द्रौपदी देवी पद्मनाभं राजानमेवमवादीत्-किं खलु त्वं हे देवानु
प्रिय! न जानासि कृष्णस्य वासुदेवस्योत्तमपुरुषस्य विप्रियं कुर्वन् मामिह अत्र

गलियों को अटारियों को, चरिकाओं को, श्री गृहों को कोशागारों को
श्री कृष्ण ने ध्वस्त करदिया। तथा वह अमरकंका राजधानी भी सरसर
शब्द करती हुई उस गर्जना पूर्वक किये गये चरणाघात से जमीन पर
गिर पडी। (तएणं से पउमणाभे राया, अमरकंकं रायहाणिं संभग्ग
जाव पासित्ता, भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ) तब पद्मनाभ राजा
अमरकंका राजधानी को प्राकार गोपुर आदि की ध्वस्त अवस्थावाली
देखकर अत्यन्त भीत हुआ त्रस्त हुआ, उद्विग्न हुआ। और सजात
भय संपन्न होकर द्रौपदी देवी की शरण में पहुँचा। (तएणं सा दोवई
देवी, पउमनाभं रायं एवं वयासी) तब उस द्रौपदी देवी ने पद्मनाभ
राजा से इस प्रकार कहा-(किण्णं तुमं देवाणुप्पिया! न जाणासि कण्हं

કંકા રાજધાનીની શેરીઓને, અગાસીઓને ચરિકાઓને, શ્રીગૃહોને, કોશા
ગારોને શ્રીકૃષ્ણે નષ્ટ કરી નાખ્યા તેમજ તે અમરકંકા રાજધાની પણ સ સર
શબ્દ કરતી ગર્જનાપૂર્વક કરવામા આવેલા ચરણાઘાતથી જમીનદોસ્ત થઈ ગઈ

(तएणं से पउमणाभे राया, अमरकंकं रायहाणिं संभग्ग जाव पासित्ता,
भीए दोवईए देवीए सरणं उवेइ)

પદ્મનાભ રાજા અમરકંકા રાજધાનીના પ્રાકાર, ગોપુર વગેરેનો વિનાશ
જોઈને ખૂબ જ ભયભીત થઈ ગયો, ત્રસ્ત થઈ ગયો તેમજ ઉદ્વિગ્ન થઈ ગયો
અને સમતભય સંપન્ન થઈને દ્રૌપદી દેવીની શરણે પહોંચ્યો. (तएणं सा
दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी) ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પદ્મનાભ
રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

हव्य–शीघ्रम् आनयसि–आनीतवानसि तत्–तस्मात्–'एवमवि गए' एवमपि गते–इत्थंममापहरणे कृतेऽपि, गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! स्नातः 'उल्लपड-साडए' आर्द्रपट्टसाटकः स्नानेनाऽऽर्द्रीकृतोत्तरीयपरिधानवस्त्रधारी 'अवचूलग-वत्थणियत्थे' अवचूलकवत्थणियत्थः=अवचूलकम्–अधोमुखं नीचैर्लम्बमान चूल–वस्त्राञ्चल–वस्त्रप्रान्त यथा भवति तथा 'णियत्थ' परिहित वस्त्र येन स तथा–स्त्रीणा परिधानमिव चरणपर्यन्तलम्बितवस्त्रान्त यथास्यात्तथा परिहितवस्त्र इत्यर्थः। 'अंतेउरपरियालसपरिवुडे' अन्त पुरपरिवारसपरिवृतः=स्त्री परिवारेण सहितः, 'अग्गाइ' अग्र्याणि वराणि रत्नानि गृहीत्वा मा पुरतः 'काउ' कृत्वा कृष्ण

स्स वा सुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि) हे देवानुप्रिय ! क्या तुम उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव को नहीं जानते हो जो उनको अनिष्ट कर तुम मुझे यहां ले आये हो। (त एव-मविगए गच्छह ण तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अव चूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसपरिवुडे, अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरओ, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि) खैर अब इस बात को जाने दो–हे देवानुप्रिय ! तुम स्नान करो, और गीले वस्त्र पहिने हुए ही श्री कृष्णवासुदेव की शरण मे जाओ। जाते समय तुम स्त्रीयों के परिधान के समान चरण पर्यन्त लटकते हुए वस्त्र पहिनकर जाना। अकेले मत जाना किन्तु अपने अत पुर की समस्त स्त्रियों को साथ में ले जाना। रीते हाथ भी मत जाना किन्तु भेट निमित्त वेश कीमती रत्नो को लेकर और मुझे आगे करके चलना।

(ण्ण तुम देवाणुप्पिया ! न जाणासि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पिय करेमाणे मम इह हव्वमाणेसि)

હે દેવાનુપ્રિય ! શુ તમે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ–વાસુદેવને ઓળખતા નથી મને અહીં લાવીને તમે તેમનુ જ અનિષ્ટ કર્યું છે

(त एवमविगए गच्छह ण तुम देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए अव चूलगवत्थणियत्थे अंतेउरपरियालसपरिवुडे अग्गाइ वराइ रयणाइ गहाय, मम पुरतो, काउ कण्ह वासुदेव करयलपायपडिए सरण उवेहि)

ખેર, છોડો એ વાતને હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હવે સ્નાન કરો અને ભીના વસ્ત્રોથી જ શ્રીકૃષ્ણ વાસુદેવની શરણમા જાઓ જતી વખતે તમે સ્ત્રીઓના પરિધાન (ચણિયા) ની જેમજ પગ સુધી લટકતા વસ્ત્રો પહેરજો તમે એકલા જતા નહિ પરતુ રણવાસની બધી સ્ત્રીઓને સાથે લઈને જજો તમે ખાલી હાથે તેમની પાસે જતા નહિ પણ કઈક ભેટ સ્વરૂપ કિંમતી વસ્ત્રોને લઈને

वासुदेवं 'करयलपायपडिए' करतलपादपतितः-संयोजितकरतलद्वयः, पादयोः पतितः सन् 'सरणं उवेहि'-मामशरणमितिवदन् उपगतो भवेत्यर्थः। हे देवानुप्रिय! 'पणिवइयवच्छला' प्रणिपतितवत्सला-चरणोपगतनिपतितानां वत्सलाः स्नेहवन्त खलु उत्तमपुरुषा भवन्ति प्रणाममात्रेण महापुरुषाः प्रसीदन्तीत्यर्थः। ततस्तदनन्तरं स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या देव्या एतमर्थं=उक्तकथनरूपमर्थं प्रतिशृणोति-स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य स्नातो यावत् शरणमुपैति द्रौपदीवचनमनुसृत्य पद्मनाभो राजा कृष्णवासुदेवस्य शरणमुपगत इत्यर्थः। उपेत्य करतलपरिगृहीतं दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=दृष्टा

वहां पहुँच कर तुम दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना (पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा तएणं से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ, उवित्ता, करयल० एवं वयासी दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी, जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया।) हे देवानुप्रिय! उत्तम पुरुष जो हुआ करते हैं वे प्रणिपतितवत्सल हुआ करते हैं-प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रसन्न हो जाया करते हैं-अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके कहे अनुसार कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुंच गया। शरण में पहुँच कर उसने अपने दोनों हाथों को जोड़कर अंजलि बनाई और आदक्षिण प्रदक्षिण करके उसे शिरपर रखा। फिर इस प्रकार बोला-आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યાં પહોંચીને તમે બન્ને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો

(पणिवइय वच्छलाण देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा, तएणं से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ, उवित्ता करयल० एवं वयासी,दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया।)

હે દેવાનુપ્રિય! ઉત્તમ પુરૂષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે આ બધુ સાંભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણમાં ગયો. શરણમાં જઈને તેણે પોતાના બન્ને હાથ જોડીને અંજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો.

खलु देवानुप्रियाणाम् ऋद्धिर्यावत् पराक्रमः-तत्=तस्मात् क्षमयामि खलु हे देवानुप्रियाः ! यावत् क्षमन्तु खलु यावत् नाहं भूयो भूयः एवं करणतया=पुनरेवं न करिष्यामि, इति कृत्वा-इत्युक्त्वा-'पंजलिवुडे' प्राञ्जलिपुट-संयोजित-करतलद्वयः पादपतितः कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीं 'साहत्थिं' स्वहस्तेन, उपनयति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः पद्मनाभमेवमवादीत्-हं भोः ! पद्मनाभ ! अप्रार्थितप्रार्थित !=हे मरणवाञ्छक ! ४ किं खलु त्वं न जानासि मम भगिनीं द्रौपदीं देवीमिहहव्यमानयन्, 'तं' तत्-तस्मात् 'एवमवि गए' एवमपिगते अनेनप्रकारेण शरणं प्राप्ते सति, नास्ति ते तव मद्भयमिदानीमिति कृत्वा प्रतिविसर्जयति। प्रतिविसृज्य द्रौपदीं देवीं गृह्णाति, गृहीत्वा रथं दूरोहति=आरोहयति

देखली, यावत् पराक्रम देख लिया। हे देवानुप्रिय ! मैं अपने अपराध की क्षमा मांगता हूँ। (जाव खमंतु) यावत् आप मुझे क्षमा दें। (णो जाव णा ह भुज्जो २ एवं करणाए) अब मैं पुनः ऐसा नहीं करूंगा। (त्ति कट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ) इस प्रकार कहकर वह दोनों हाथ जोड उन कृष्णवासुदेव के पैरों पर गिर पडा और अपने हाथ से ही उसने फिर उनके लिये द्रौपदी सौंपदी। (तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी -हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्णं तुमं ण जाणासि मम भगिणिं दोवइं देविं इह हव्वं माणमाणे तं एवमविगए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्ति कट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरूहेइ, दुरूहित्ता जेणेव

मे ऋद्धि જોઈ લીધી છે, યાવત્ તમારૂ પરાક્રમ પણ મે જોઈ લીધુ છે હે દેવાનુપ્રિય ! હુ મારા અપરાધ બદલ ક્ષમા માગુ છુ (जाव खमंतु) યાવત્ તમે મને ક્ષમા કરો. (णो जाव णाहं भुज्जो २ एवं करणाए) હવે ફરી હુ આવુ કદાપિ નહિ કરૂ (त्ति कट्टु पंजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ) આ પ્રમાણે કહીને તે બને હાથ જોડીને કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગોમા આળોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ દ્રૌપદી તેમને સોપી દીધી

(तएणं से कण्हे वासुदेवे पउमणाभं एवं वयासी-हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्णं तुमं ण जाणासि मम भगिणिं दोवइं देविं इहं, हव्वं माणमाणे तं एवमपि गए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्टु पउमणाभं पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रहं दुरुहेइ,

वासुदेवं 'करयलपायपडिय' करतलपादपतित'-संयोजितकरतलद्वयः, पादयोः पतितः सन् शरणं उवेहि-आश्रयस्वमामितिवदन् उपगतो भवेत्यर्थः। हे देवानुप्रिय! 'पणिवइयवच्छला' प्रणिपतितवत्सला-चरणोपरिनिपतितजना वत्सलाः स्नेहवन्त खलु उत्तमपुरुषा भवति प्रणाममात्रेण महापुरुषाः प्रसीदन्तीत्यर्थः। ततस्तदनन्तरं स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या देव्या एतमर्थं=उक्तकथनरूपमर्थं प्रतिशृणोति-स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य स्नातो यावत् शरणमुपैति द्रौपदीवचनमनुसृत्य पद्मनाभो राजा कृष्णवासुदेवस्य शरणमुपगत इत्यर्थः। उपेत्य करतलपरिगृहीत दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्=दृष्टा

वहा पहुँच कर तुम दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना (पणिवइयवच्छला ण देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा तएण से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ, उवित्ता, करयल० एवं वयासी दिट्ठाण देवाणुप्पियाण इड्ढी, जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया।) हे देवाणुप्रिय! उत्तम पुरुष जो हुआ करते हैं वे प्रणिपतितवत्सल हुआ करते हैं-प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रसन्न हो जाया करते हैं-अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके कहे अनुसार कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुंच गया। शरण में पहुँच कर उसने अपने दोनों हाथो को जोडकर अजलि बनाई और आवर्त्तिण प्रदक्षिण करके उसे शिरपर रक्खा। फिर इस प्रकार बोला-आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યાં પહોંચીને તમે બને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો

(पणिवइय वच्छलाण देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा, तएण से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरण उवेइ, उवित्ता करयल० एवं वयासी,दिट्ठा ण देवाणुप्पियाण इड्ढी जाव परक्कमे त खामेमि ण देवाणुप्पिया!)

હે દેવાનુપ્રિય! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે આ બધુ સાભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણમા ગયો. શરણમા જઈને તેણે પોતાના બને હાથ જોડીને અજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો

खलु देवानुप्रियाणाम् ऋद्धिर्यावत् पराक्रमः-तत्=तस्मात् क्षमयामि खलु हे देवा नुप्रियाः ! यावत् क्षमन्तु खलु यावत् नाह भूयो भूय' एव करणतया=पुनरेव न करिष्यामि, इति कृत्वा-इत्युक्त्वा-' पजलिवुडे ' प्राञ्जलिपुट -सयोजित- करतलद्वयः पादपतितः कृष्णस्य वासुदेवस्य द्रौपदीं ' साहत्थि ' स्वहस्तेन, उप- नयति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेव पद्मनाभमेवमवादीत्-ह भोः ! पद्मनाभ ! अप्रार्थितमार्थित !=हे मरणवाञ्छक ! ४ किं खलु त्व न जानासि मम भगिनीं द्रौपदीं देवीमिहहव्यमानयन्, ' त ' तत्-तस्मात् ' एवमवि गए ' एवमपिगते अनेनप्रकारेण शरण प्राप्ते सति, नास्ति ते तव मद्भयमिदानीमिति कृत्वा प्रति विसर्जयति । प्रतिविसृज्य द्रौपदीं देवीं गृह्णाति, गृहीत्वा रथ दूरोहति=आरोहयति

देखली, यावत् पराक्रम देख लिया। हे देवानुप्रिय ! मै अपने अपराध की क्षमा मांगता हूँ। (जाव खमतु) यावत् आप मुझे क्षमा दें। (ण जाव णा ह मुज्जो २ एव करणाए) अब मै पुनः ऐसा नहीं करूगा। (त्ति कट्टु पजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं सा हत्थि उवणेइ) इस प्रकार कहकर वह दोनों हाथ जोड उन कृष्णवा सुदेव के पैरों पर गिर पडा और अपने हाथ से ही उसने फिर उनके लिये द्रौपदी सौंपदी। (तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी -ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुम ण जाणासि मम भगिणि दोवइ देविं इह हव्व माणमाणे त एवमविगए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्ति कट्टु पउमणाभ पडिविसज्जेइ, पडि विसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रह दुरुहेइ, दुरुहित्ता जेणेव

मे ऋद्धि જોઇ લીધી છે, યાવત્ તમારૂ પરાક્રમ પણ મે જોઈ લીધુ છે હે દેવાનુપ્રિય ! હુ મારા અપરાધ બદલ ક્ષમા માગુ છુ (जाव खमतु) યાવત્ તમે મને ક્ષમા કરો (ण जाव णाह मुज्जो २ एव करणाए) હવે ફરી હુ આવુ કદાપિ નહિ કરૂ (त्ति कट्टु पजलिवुडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ) આ પ્રમાણે કહીને તે બને હાથ જોડીને કૃષ્ણ-વાસુદેવના પગોમા આળોટી ગયો અને ત્યારપછી તેણે પોતાના હાથથીજ દ્રૌપદી તેમને સોંપી દીધી

(तएण से कण्हे वासुदेवे पउमणाभ एव वयासी-ह भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ४ किण्ण तुम ण जाणासि मम भगिणिं दोवइ देविं इह, हव्व माणमाणे त एवमवि गए, णत्थि ते ममाहिंतो इयाणिं भयमत्थि त्तिकट्टु पउम- णाभ पडिविसज्जेइ पडिविसज्जित्ता दोवइ देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता रह दुरुहेइ,

वासुदेव 'करयलपायपडिए' करतलपादपतितः-संयोजितकरतलद्वयः, पादयोः पतितः सन् शरणं उवेहि-त्रायस्व मामिति वदन् उपगतो भवेत्यर्थः। हे देवानुप्रिय! 'पणिवइयवच्छला' प्रणिपतितवत्सला-चरणोपरिनिपतितानां वत्सलाः स्नेहवन्त खलु उत्तमपुरुषा भवन्ति प्रणाममात्रेण महापुरुषाः प्रसीदन्तीत्यर्थः। ततस्तदनन्तरं स पद्मनाभो राजा द्रौपद्या देव्या एतमर्थं=उक्तकथनरूपमर्थं प्रतिशृणोति-स्वीकरोति, प्रतिश्रुत्य स्नातो यावत् शरणमुपैति द्रौपदीवचनमनुसृत्य पद्मनाभो राजा कृष्णवासुदेवस्य शरणमुपगत इत्यर्थः। उपेत्य करतलपरिगृहीत दशनखं शिर आवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीद्=दृष्टा

वहां पहुँच कर तुम दोनों हाथ जोड़ कर उनके चरणों में गिर जाना (पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा तएणं से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ, उवित्ता, करयल० एवं वयासी दिट्ठाणं देवाणुप्पियाणं इड्ढी, जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया।) हे देवाणुप्रिय! उत्तम पुरुष जो हुआ करते हैं वे प्रणिपतितवत्सल हुआ करते हैं-प्रणाममात्रसे महापुरुष प्रसन्न हो जाया करते हैं-अर्थात् नमन करनेवालेको वे नहीं मारते तब पद्मनाभ राजाने द्रौपदी देवीके इस शिक्षाप्रद कथनरूप अर्थको स्वीकार कर लिया। स्वीकार कर बादमें उसने स्नान किया, यावत् वह द्रौपदीके कहे अनुसार कृष्णवासुदेव की शरणमें पहुंच गया। शरण में पहुँच कर उसने अपने दोनों हाथों को जोड़कर अजलि बनाई और आदक्षिण प्रदक्षिण करके उसे शिरपर रक्खा। फिर इस प्रकार बोला-आप देवानुप्रियकी मैंने ऋद्धि

તેમજ મને આગળ રાખીને ચાલજો ત્યાં પહોંચીને તમે બન્ને હાથ જોડીને તેમના પગે પડજો

(पणिवइय वच्छलाण देवाणुप्पिया उत्तमपुरिसा, तएणं से पउमनाभे दोवइए देवीए एयमट्ठ पडिसुणेइ, पडिसुणित्ता ण्हाए जाव सरणं उवेइ, उवित्ता करयल० एवं वयासी, दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी जाव परक्कमे तं खामेमि णं देवाणुप्पिया।)

હે દેવાનુપ્રિય! ઉત્તમ પુરુષો તેમની સામે વિનમ્ર થયેલા માણસો પ્રત્યે એકદમ વત્સલ થઈ જાય છે ફક્ત નમસ્કાર કરવાથીજ તેઓ પ્રસન્ન થઈ જાય છે આ બધું સાંભળીને પદ્મનાભ રાજાએ દ્રૌપદીના આ શિક્ષાપ્રદ કથન રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેણે સ્નાન કર્યું યાવત્ તે દ્રૌપદીના કહ્યા મુજબ જ કૃષ્ણ-વાસુદેવની શરણમાં ગયો શરણમાં જઈને તેણે પોતાના બન્ને હાથ જોડીને અંજલિ બનાવી અને આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરી . માથા ઉપર મૂકી અને ત્યારબાદ તે આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યો કે

मूलम्-तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमिद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया हिमवंत० वण्णओ, तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्मं सुणेइ तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ, तएणं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था – किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स णं अयं संखसद्दे ममपिव मुहवायपूरिए वीय भवइ, तएणं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी-से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्दं आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मन्ने जाव वीय भवइ, से णूणं कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता ! अत्थि, नो कविला ! एवं भूयं वा३ जन्नं एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु उप्पज्जिंति उप्पज्जिस्संति वा, एवं खलु वासुदेवा ! जंबूद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पंडुस्स रण्णो पुत्त-

बीच हो जहां जम्बूद्वीप नाम का द्वीप, जहां भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था उस ओर चल दिये ॥ सू०२९ ॥

સ્થાને લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યાં જંબૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, અને તેમાં પણ જ્યાં ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર હતું તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

आरोग यत्रार पञ्च पाण्डवास्तत्रीवोपाग च्छति, उपागत्य पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपदीं देवीं 'साहत्थि' स्वहस्तेन, उपनयति=ददाति। ततः खलु स कृष्णः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठः षड्भीरथैर्लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपः, यत्रैव भारत वर्ष तत्रैव माधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्तः ॥ सू० २९॥

पच पडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचण्ह पडवाण दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ) तब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा अरे ओ पद्मनाभ! तुम इस तरह से अकाल में ही मरण के अभिलाषी क्यों बने ? क्या तुझे यह पता नहीं था कि द्रौपदी मेरी बहिन है। क्यों तू इस को यहां ले आया। खैर-जब तू इस रूप में मेरी शरण में आचुका है-तो अब तुझे किसी भी प्रकार का मेरी तरफ से भय नहीं रहा-ऐसा कहकर कृष्णवासुदेव ने उसे विसर्जित कर दिया-अपने स्थान पर उसे जाने की आज्ञा देदी-। बाद में द्रौपदी को साथ मे लिया और लेकर वे रथ पर आरूढ हुए। आरूढ होकर फिर वे, जहां आये-जहा पांचों पांडव थे वहा आकर उन्हों ने द्रौपदी को अपने हाथों से पांचो पाडवों के सुपुर्द कर दिया। (तएण कण्हे पचेहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण जेणेव जबूद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इसके बाद वे कृष्णवासुदेव पांचों ों के साथ आत्मषष्ठ होकर उन्हो रथों को ले लवण समुद्र से बीचों

पडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता प चण्ह पडवाण दोवइ
)
मदेवे पद्मनाभने आ प्रमाणे कह्यु के अरे ओ! पद्मनाभ!
मे　मयमा ज मरणना अभिलाषी केम बनी गया छो? शु
के द्रौपदी मारी बहेन छे तु एने अहीं शा माटे लई
ारे आ स्थितिमा मारी पासे आव्यो छे तो हवे तारे
जातनो भय राखवो जोइए नहि आम कहीने कृष्ण
ों त्यारपछी द्रौपदीने साथे लइने तेओ रथ उपर
तेओ ज्या पाचे प डवो हता त्या आव्या त्या
ी द्रौपदीने पाचे पाडवोने सोपी दीधी
े सद्धिं अप्प छट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द
जेणेव भारहेवासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)
पाडवोनी साथे आर　थईने छओ

मूलम्-तेणं कालेण तेणं समएण धायइसंडे दीवे पुरत्थिमिद्धे भारहे वासे चंपा णामं णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए, तत्थ णं चपाए नयरीए कविले णामं वासुदेवे राया होत्था, महिया हिमवंत० वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा चपाए पुण्णभद्दे समोसढे, कपिले वासुदेवे धम्म सुणेइ तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ धम्म सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्दं सुणेइ, तएण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था – किं मण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स णं अय संखसद्दे ममंपिव मुहवायपूरिए वीयं भवइ,तएणं मुणिसुव्वए अरहा कविल वासुदेवं एव वयासी-से णूण ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्म णिसामेमाणस्स सखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मन्ने जाव वीयं भवइ, से णूणं कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता ! अत्थि, नो कविला ! एव भूय वा२ जन्न एगे खेत्ते एगे जुगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा वलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिसु उप्पज्जिंति उप्पज्जिस्संति वा, एवं खलु वासुदेवा ! जंबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ पडुस्स रण्णो पुव्व-

---

बीच हो जहा जम्बूद्वीप नाम का द्वीप, जहा भरतक्षेत्र नाम का क्षेत्र था उस ओर चल दिये ॥ सू०२९ ॥

રથોને લઈને લવણ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને જ્યા જમ્બૂદ્વીપ નામે દ્વીપ, અને તેમા પણ જ્યા ભારતવર્ષ નામે ક્ષેત્ર હતુ તે તરફ રવાના થયા ॥ સૂત્ર ૨૯ ॥

आरोह यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्चानां पाण्डवानां द्रौपदीं देवीं ' साहत्थि ' स्वहस्तेन, उपनयति=ददाति। ततः खलु स कृष्णः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धमात्मषष्ठः षड्भीरथैर्लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन यत्रैव जम्बूद्वीपो द्वीपः, यत्रैव भारतं वर्षं तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तु प्रवृत्तः ॥ सू० २९॥

पंच पडवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पचण्ह पडवाण दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ) तब कृष्णवासुदेव ने पद्मनाभ से इस प्रकार कहा अरे ओ पद्मनाभ! तुम इस तरह से अकाल में ही मरण के अभिलाषी क्यों बने ४क्या तुझे यह पता नहीं था कि द्रौपदी मेरी बहिन है। क्यों तू इस को यहाँ ले आया! खैर-जब तू इस रूप में मेरी शरण में आचुका है-तो अब तुझे किसी भी प्रकार का मेरी तरफ से भय नहीं रहा-ऐसा कहकर कृष्णवासुदेव ने उसे विसर्जित कर दिया-अपने स्थान पर उसे जाने की आज्ञा देदी-। बाद में द्रौपदी को साथ में लिया और लेकर वे रथ पर आरूढ हुए। आरूढ होकर फिर वे, वहाँ आये-जहां पाँचों पांडव थे वहा आकर उन्हों ने द्रौपदी को अपने हाथों से पाँचो पांडवों के सुपुर्द कर दिया। (तएण कण्हे पचेहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण जेणेव जबूदीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इसके बाद वे कृष्णवासुदेव पाँचों पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छहो रथों को ले लवण समुद्र से बीचों

दुरूहित्ता जेणेव पच पडवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पचण्ह पडवाण दोवइ देविं साहत्थि उवणेइ)

ત્યારે કૃષ્ણ-વાસુદેવે પદ્મનાભને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે અરે ઓ! પદ્મનાભ! તમે આ પ્રમાણે અસમયમા જ મરણના અભિલાષી કેમ બની ગયા છો૪, શુ તમને ખબર નહોતી કે દ્રૌપદી મારી બહેન છે તુ એને અહી શા માટે લઈ આવ્યો ? ખેર, તું જ્યારે આ સ્થિતિમા મારી પાસે આવ્યો છે તો હવે તારે મારા તરફથી કોઈ પણ જાતનો ભય રાખવો જોઈએ નહિ આમ કહીને કૃષ્ણ વાસુદેવે તેને વિદાય કર્યો ત્યારપછી દ્રૌપદીને સાથે લઈને તેઓ રથ ઉપર સવાર થયા સવાર થઈને તેઓ જ્યા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે પોતાના હાથથી દ્રૌપદીને પાચે પાડવોને સોપી દીધી

(तएण से कण्हे पचेहिं पडवेहिं सद्धिं अप्प छट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण जेणेव जबूदीवे दीवे जेणेव भारहेवासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

ત્યારબાદ તે કૃષ્ણ-વાસુદેવ પાચે પાડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને છએ

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणि सभग्गतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एवं वयासी–किन्नं देवाणुप्पिया! एसा अमरकका सभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएण से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एवं वयासी–एव खलु सामी! जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया, तएण से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा पउमणाह एव वयासी हं भो! पउमणाभा! अपत्थियपत्थिया किन्न तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—' तेणं कालेण ' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकीषण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत्। तस्या बहिर्भागे पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम् , आसीत्। तत्र=तस्या खलु चम्पानगर्यां

' तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि ॥

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) उस कालमें और उस समयमें (धायइसडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्ण भद्दे चेइए) धातकी षड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

' तेणं कालेण तेण समएण ' इत्यादि—

टीकार्थ–(तेण कालेण तेण समएण) ते કાળે અને તે સમયે (धायइ सडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्णभद्दे चेइए) ધાતકી ષડદ્વીપમાં પૂર્વ દિગ્ભાગવર્તી ભરતક્ષેત્રમાં ચંપા નગરી હતી, તેમાં પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ

संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे वासुदेवे पंचहि पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्टे छहिं रहेहि अमरकंकं रायहाणि दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगामे सगामेमाणस्स अय संखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइ भवद्द, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं वदइ२ एवं वयासी–गच्छामि णं अह भंते ! कण्हे वासुदेवे उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि, तएण मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एव वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा३ जणण अरहतो वा अरहतं पासइ चक्कवट्टी वा चक्कवट्टि पासइ बलदेवा वा बलदेव पासइ वासु देवो वा वासुदेव पासइ, तहवि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ नमसइ वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखध दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्घ२ जेणेव वेला उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवण समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासु देवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकट्टु पचजन्न सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता पचजन्न जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि

मायारि करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अमरकंकं रायहाणिं संभग्गतोरणं जाव पासइ पासित्ता पउमणाभं एव वयासी—किन्न देवाणुप्पिया! एसा अमरकंका सभग्ग जाव सन्निवइया ?, तएणं से पउमणाहे कविलं वासुदेवं एव वयासी—एव खलु सामी! जंबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकंका जाव सन्निवाडिया, तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा पउमणाह एवं वयासी ह भो! पउमणाभा! अपत्थियपत्थिया किन्न तुम न जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?, आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्ते अमरकंका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए ॥ सू० ३० ॥

टीका—'तेण कालेण' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये धातकीषण्डे द्वीपे पौरस्त्यार्धे भारते वर्षे चम्पा नाम नगरी आसीत्। तस्या वहिर्भागे पूर्णभद्र नाम चैत्यम्=उद्यानम्, आसीत्। तत्र=तस्यां खलु चम्पानगर्यां

'तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि॥

टीकार्थ–(तेणं कालेण तेण समएणं) उस कालमें और उस समयमें (धायइसडे दीवे, पुरत्थिमद्धे भारहेवासे चपा णाम णयरी होत्था, पुण्ण भद्दे चेइए) धातकी षड द्वीप मे पूर्व दिग्भागवर्ती भरत क्षेत्र में चपा

'तेणं कालेण तेण समएण' इत्यादि—

ટીકાર્થ–(તેણ કાલેણ તેણ સમએણ) તે કાળે અને તે સમયે (ધાયઇ સડે દીવે, પુરત્થિમદ્ધે ભારહેવાસે ચપા ણામ ણયરી હોત્થા, પુણ્ણભદ્દે ચેઇએ) ધાતકી ષડદ્વીપમા પૂર્વ દિગ્ભાગવર્તી ભરતક્ષેત્રમા ચ પા નગરી હતી, તેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ

संगइएणं देवेण अमरकंकाणयरिं साहरिया, तएणं से कण्हे वासुदेवे पंचहि पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्टे छहिं रहेहि अमरकक रायहाणि दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए, तएण तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमणाभेणं रण्णा सद्धिं संगामे सगामेमाणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीइ भवइ, तएणं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइ२ एवं वयासी—गच्छामि णं अहं भते ! कण्हे वासुदेवे उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि, तएण मुणिसुव्वए अरहा कविले वासुदेवे एव वयासी – नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा३ जण्ण अरहंतो वा अरहत पासइ चक्कवट्टी वा चक्कवट्टि पासइ बलदेवा वा बलदेव पासइ वासु देवो वा वासुदेव पासइ, तहविय ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वंदइ नमसइ वंदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरूहइ दुरूहित्ता सिग्घ२ जेणेव वेला उले तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवण समुद्द मज्झमज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासइ पासित्ता एवं वयइ एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासु देवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्तिकट्टु पचजन्न सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ, तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ आयन्नित्ता पचजन्नं जाव पूरियं करेइ, तएण दोवि ~ ~६

समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य खलु अयं शङ्खशब्दो ममेव मुखवातपूरित –मद्वादित-शङ्ख-ध्वनिरिवेत्यर्थः, ' वीय भवइ ' द्वितीयो भवति । तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिल वासुदेवम् एव=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–' से णूण इत्यादि—' से ' नून ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्म 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः= शृण्वतः, शङ्खशब्दम् ' आकण्णित्ता ' आकर्ण्य=श्रुत्वा ' इमेयारूवे ' अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः सङ्कल्पो विचारः समुदपद्यत–किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति ' से ' अथ नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थ' समर्थ'=किं सत्य ?, कपिल वासुदेवः प्राह–हता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो ! अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतो भगवानाह–हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्= ईदृश, ' भूय वा ' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अनागत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, ' जन्न ' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक

भवइ) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे । सो उस कपिल वासुदेवने मुनि सुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण वासुदेवकी शंखध्वनि सुनि । तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ–क्या धातकीषंड नामके द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ? कि जिसके शंखका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शंखके शब्द जैसा हुआ है ? (तएणं मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी–से णूणं ते कविला वासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स संखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ से णूण कविला वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता अत्थि, नो खलु कविला एय भूय वा३ जन्नं

તેમની પાસે તે કપિલ વાસુદેવ ધર્મોપદેશ સાભળી રહ્યા હતા તે કપિલ વાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુની પાસે ધર્મોપદેશ સાભળતા જ કૃષ્ણવાસુદેવના શખનો ધ્વનિ સાભળ્યો ત્યારે તે કપિલ વાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે શું ધાતકી ષડ નામના દ્વીપમા વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રમા કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે ? કેમકે તેના શખનો આ ધ્વનિ મારા વડે વગાડવામા આવેલા શખના ધ્વનિ જેવો જ છે

(तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी–से णूण ते कविलावासुदेवा ! मम अतिए धम्म णिसामेमाणस्स संखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव वीय भवइ, से णूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हता, अत्थि, नो खलु कविला एय भूयं वा ३ जन्न एगखेत्ते एगे जुगे

'कविले णाम' कपिलो नाम वासुदेवो राजाऽऽसीत् 'महया हिमवंत०' वण्णओ' महाहिमवानित्यादि वर्णकः=वर्णन पूर्वोक्तवद् बोध्यम् ।

तस्मिन् काले तस्मिन् समये मुनिसुव्रतोऽर्हन् चम्पाया नगर्यां पूर्णभद्रे नाम्नि चैत्ये समवसृतः । तस्य समीपे कपिलो नाम वासुदेवो धर्मं शृणोति । ततः खलु स कपिलो वासुदेवः मुनिसुव्रतस्यार्हतोऽन्तिके धर्मं शृण्वन् कृष्णस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दं शृणोति ततः खलु तस्य कपिलस्य वासुदेवस्य अयमेतद्रूपः= वक्ष्यमाणस्वरूपः, 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः=आत्मगतः सङ्कल्पो=विचारः, यावद् समुदपद्यत-किम्-अन्यो धातकीषण्डे द्वीपे भारते वर्षे द्वितीयो वासुदेव

नामकी नगरी थी। उसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था। (तत्थण चपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत वण्णओ तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा, चपाए पुण्णभद्दे समोसढे) उस चपानगरीमें कपिल नाम के वासुदेव राज्य करते थे। वे महा हिम वान् पर्वत जैसे गुणोंसे पूर्ण थे। पहिले जैसा वर्णन राजाओंका भिन्न २ जगह किया गया है वैसा ही वर्णन इसका भी जानना चाहिये। उस काल और उस समय में मुनि सुव्रत तीर्थकर चपा नगरी में इस पूर्ण भद्र उद्यान में आये हुए थे (कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ, तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहाओ धम्म सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्द सुणेइ, तएण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे,धायइसडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स ण अय सखसद्दे ममपिव मुहवायपूरिए वीय

(तत्थण चपाए नयरीए कपिले नाम वासुदेवे राया होत्था, महया हिमवंत वण्णओ, तेण कालेण तेण समएण मुणिसुव्वए अरहा, चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे)

તે ચપા નગરીમા કપિલ નામે વાસુદેવ રાજ કરતા હતા તેઓ મહા હિમવાન વગેરે જેવા બળવાન હતા પહેલા જુદા જુદા રાજાઓનુ જે પ્રમાણે વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તે પ્રમાણે આ રાજાનુ પણ વર્ણન જાણી લેવુ જોઇએ તે કાળે અને તે સમયે મુનિસુવ્રત તીર્થકર ચપા નગરીમા તે પૂર્ણ-ભદ્ર ઉદ્યાનમા પધાર્યા હતા

(कविले वासुदेवे धम्म सुणेइ, तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वयस्स अरहाओ धम्म सुणेमाणे, कण्हस्स वासुदेवस्स सखसद्द सुणेइ, तए ण तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए समुप्पज्जित्था-किं मण्णे धायइसडे दीवे भारहेवासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे ? जस्स ण अय सखसद्दे मम पिव मुहवाय पूरिए वीय भवइ)

समुत्पन्न ? यस्य वासुदेवस्य खलु अय शङ्खशब्दो ममेव मुखवातपूरित –मद्वादित-शङ्खध्वनिरिवेत्यर्थः, ' बीय भवइ ' द्वितीयो भवति । तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन् कपिल वासुदेवम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्–' से णूण इत्यादि—' से ' नून ते तव हे कपिल वासुदेव ! ममान्तिके धर्म 'णिसामेमाणस्स' निशामयतः= शृण्वत', शङ्खशब्दम् ' आकण्णित्ता ' आकर्ण्य=श्रुत्वा ' इमेयारुवे ' अयमेतद्रूपः आध्यात्मिकः सङ्कल्पो विचारः समुदपद्यत–किमन्यो वासुदेवः समुत्पन्नः, यस्याय शङ्खशब्दो यावद् द्वितीयो भवति ' से ' अथ नून हे कपिलवासुदेव ! अयमर्थ' समर्थ'=किं सत्य ?, कपिल वासुदेवः प्राह–हंता ! अत्थि इति हन्त ! हे प्रभो ! अयमर्थः सत्योऽस्ति । मुनिसुव्रतो भगवानाह–हे कपिल वासुदेव ! नो खलु एवम्= ईदृश, ' भूय वा ' भूत वा=अतीत वा, भवद् वा=वर्तमान वा भविष्यद् वा अनागत वा कालत्रयेऽप्येव न भवतीत्यर्थः, ' जन्न ' यत् खलु एकस्मिन् क्षेत्रे, एक

भवद) उनके पास वे कपिल वासुदेव धर्मका उपदेश सुन रहे थे। सो उस कपिल वासुदेवने मुनि सुव्रतप्रभुके पास धर्मका उपदेश सुनते हुए कृष्ण वासुदेवकी शंखध्वनि सुनि। तब उस कपिल वासुदेवको इस प्रकार आध्यात्मिक यावत् मनोगत विचार उत्पन्न हुआ–क्या धातकीषंड नामके द्वीपमें वर्तमान भरतक्षेत्र में कोई और दूसरा वासुदेव उत्पन्न हुआ है ? कि जिसके शंखका यह शब्द मेरे द्वारा बजाये गये शंखके शब्द जैसा हुआ है ? (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी–से णूण ते कविला वासुदेवा ! मम अंतिए धम्मं णिसामेमाणस्स संखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव बीय भवइ से णूण कविला वासुदेव ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि, नो खलु कविला एयं भूयं वा३ जन्न

તેમની પાસે તે કપિલ વાસુદેવ ધર્મોપદેશ સાભળી રહ્યા હતા તે કપિલ વાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુની પાસે ધર્મોપદેશ સાભળતા જ કૃષ્ણવાસુદેવના શખનો ધ્વનિ સાભળ્યો ત્યારે તે કપિલ વાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે શું ધાતકી ષડ નામના દ્વીપમા વિદ્યમાન ભરતક્ષેત્રમા કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે ? કેમકે તેના શખનો આ ધ્વનિ મારા વડે વગાડવામા આવેલા શખના ધ્વનિ જેવો જ છે

(तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी–से णूण ते कविलावासुदेवा ! मम अंतिए धम्म णिसामेमाणस्स संखसद्द आकण्णित्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए किं मण्णे जाव बीय भवइ, से णूण कविला वासुदेवा ! अयमट्ठे समट्ठे ? हंता, अत्थि, नो खलु कविला एयं भूयं वा ३ जन्न एगखेत्ते एगे जुगे

स्मिन् युगे, एकस्मिन् समये द्वावर्हन्तौ वा चक्रवर्तिनौ वा बलदेवौ वा वासुदेवौ वा 'उप्पज्जिसु' उदपत्सातम्, 'उप्पज्जंति' उत्पद्येते 'उप्पज्जिस्सति' उत्पत्स्येते वा, एवं खलु हे वासुदेव ! जम्बूद्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुरनगरात् पाण्डो राज्ञः 'सुण्हा' स्नुषा=पुत्रवधूः, पञ्चानां पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी तव पद्म

एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा,) तब मुनिसुव्रत तीर्थंकर प्रभुने उन कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा हे कपिल वासु देव ! मेरे पास धर्म को सुनते समय तुम्हे शख शब्द श्रवण कर इस प्रकार का यह आध्यात्मिक सकल्प-विचार उत्पन्न हुआ है, कि क्या कोई दूसरा वासुदेव उत्पन्न हो गया है-जिसके शख का शब्द मुझे सुनाई दिया है । कहो कपिल वासुदेव ! यही बात है न ? तब कपिल वासुदेवने कहा-हा प्रभो ! यही बात है-ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ है-तब मुनिसुव्रत भगवान्ने कपिल वासुदेवसे कहा-हे कपिल वासुदेव ऐसी बात न भूतकाल में हुई है और न भविष्यकाल में होगी-न वर्त मान् मे होती है कि जो एक ही क्षेत्रमें एक ही युगमें एक ही समय में दो अर्हंत प्रभु, दो चक्रवर्ती, दो बलदेव, दो वासुदेव, उत्पन्न हो रहे हों, उत्पन्न हुए हो और आगे उत्पन्न हो । (एव खलु वासुदेवा ! जबूदीवा ओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पडुस्सरण्णो सुण्हा

एगे समए दुवे अरहता वा चक्कवट्टी वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्सति वा)

त्यारे मुनिसुव्रत तीर्थंकर प्रभुએ ते કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાભળતા શખ-શબ્દ સાભળીને તમને આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શુ કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શખનો ધ્વનિ મને સભળાઈ રહ્યો છે બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યુ કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમા એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમા થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમા થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમા સભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમા, એક જ યુગમા, એક જ સમયમા બે અર્હંત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(एव खलु वासुदेवा ! जबू दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पडुस्सरण्णो, सुण्हा पचण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी तव

नाभस्य राज्ञः पूर्वसंगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरीं 'साहरिया' संहृता=आनीता, ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धं आत्मषष्ठः षड्भीरथैरमरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः 'कूव' देशी शब्दोय प्रत्यानयनार्थकः प्रत्यानयन कर्तुं हव्यमागत., ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं 'सगाम' संग्राम=युद्ध 'सगामेमाणस्स' युध्यत, अय शङ्खशब्दस्तवमुखवातपूरित इव द्वितीयो भवति। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनिसुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमसित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अह हे

पचण्ह पडवाण भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगईएण देवेण अमरक्का नयरिं साहरिया, तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इववीय भवइ) सुनो बात इस प्रकार है जबूद्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पाच पाडवो की पत्नी द्रौपदी देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण कर अमरकका नगरी में ले आया। तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण पाच पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकका नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये। तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय शंख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है। (तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदति, २ एव वयासी गच्छामि ण

रण्णो पुव्वसगइएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरक्क रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीय भवइ)

સ ભળો, વિગત એવી છે કે જ બૂદ્વીપના ભરતક્ષેત્રમા વિદ્યમાન હસ્તિનાપુર નગરથી પાડુરાજાની પુત્રવધૂ પાચે પાડવોની પત્ની દ્રૌપદી દેવીને તમારા પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વભવનો મિત્ર કોઈ દેવ હરીને અમરકકા નગરીમાં લઈ આવ્યો હતો ત્યારપછી ભરતક્ષેત્રના વાસુદેવ કૃષ્ણ પાચે પાડવોની સાથે આત્મ ષષ્ઠ થઈને છ રથો ઉપર સવાર થયા અને સત્વરે દ્રૌપદી દેવીને પાછા મેળવવા માટે ત્યા પહોચી ગયા પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરતા કૃષ્ણવાસુદેવે જે શ ખધ્વનિ કર્યો છે તે તમારા શ ખના ધ્વનિ જેવો છે

(तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वय वदति, २ एव वयासी, गच्छामि

स्मिन् युगे, एकस्मिन् समये द्वावर्हन्तौ वा चक्रवर्तिनौ वा बलदेवौ वा वासुदेवौ वा 'उप्पज्जिसु' उदपद्येताम्, 'उप्पज्जिंति' उत्पद्येते 'उप्पज्जिस्सति' उत्पत्स्येते वा, एव खलु हे वासुदेव ! जम्बूद्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुरनगरात् पाण्डो राज्ञः 'सुण्हा' स्नुषा=पुत्रवधूः, पञ्चाना पाण्डवाना भार्या द्रौपदी देवी तव पद्म

एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्सति वा,) तब मुनिसुव्रत तीर्थकर प्रभुने उन कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा हे कपिल वासु देव ! मेरे पास धर्म को सुनते समय तुम्हे शख शब्द श्रवण कर इस प्रकार का यह आध्यात्मिक सकल्प-विचार उत्पन्न हुआ है, कि क्या कोई दूसरा वासुदेव उत्पन्न हो गया है-जिसके शख का शब्द मुझे सुनाई दिया है । कहो कपिल वासुदेव ! यही बात है न ? तब कपिल वासुदेवने कहा-हा प्रभो ! यही बात है-ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ है-तब मुनिसुव्रत भगवानने कपिल वासुदेवसे कहा-हे कपिल वासुदेव ऐसी बात न भूतकाल में हुई है और न भविष्यकाल में होगी-न वर्त मान् मे होती है कि जो एक ही क्षेत्रमें एक ही युगमें एक ही समय में दो अर्हंत प्रभु, दो चक्रवर्ती, दो बलदेव, दो वासुदेव, उत्पन्न हो रहे हों, उत्पन्न हुए हो और आगे उत्पन्न हो ! (एव खलु वासुदेवा ! जबूदीवा ओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पडुस्सरण्णो सुण्हा

एगे समए दुवे अरहता वा चक्कवट्टी वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्सति वा)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાભળતા શખ-શબ્દ સાભળીને તમને આ જાતનો આધ્યાત્મિક સકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શુ કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શખનો ધ્વનિ મને સભળાઈ રહ્યો છે બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યુ કે હા પ્રભુ ! એ જ વાત છે મારા મનમા એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યુ કે હે કપિલ વાસુદેવ ! આવી વાત ભૂતકાળમા થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમા થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમા સભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમા, એક જ યુગમા, એક જ સમયમા બે અર્હંત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુ દેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઈ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(एव खलु वासुदेवा ! जबू दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणया राओ, पडुस्स रण्णो, सुण्हा प चण्ह पडवाण भारिया दोवई देवी तव

नाभस्य राज्ञः पूर्वसगतिकेन देवेनामरकङ्कानगरी 'साहरिया' संहृता=आनीता, ततः खलु सः कृष्णो वासुदेवः पञ्चभिः पाण्डवैः सार्धं आत्मषष्ठः षड्भीरथैरमरकङ्का राजधानीं द्रौपद्या देव्याः 'कूव' देशी शब्दोयं प्रत्यानयनार्थकः प्रत्यानयन कर्तुं हव्यमागत., ततः खलु तस्य कृष्णस्य वासुदेवस्य पद्मनाभेन राज्ञा सार्धं 'सगाम' संग्राम=युद्ध 'सगामेमाणस' युध्यत, अय शङ्खशब्दस्तवमुखवातपूरित इव द्वितीयो भवति। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनिसुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-गच्छामि खलु अहं हे

पचण्ह पडवाण भारिया दोवईदेवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसगईएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया, तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामेमाणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव- वीय भवइ) सुनो वात इस प्रकार है जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में वर्तमान हस्तिनापुर नगर से पांडुराजा की पुत्रवधू पाच पाडवो की पत्नी द्रौपदी देवी को तुम्हारे पद्मनाभ राजा का पूर्व भवीय मित्र कोई देव हरण कर अमरकका नगरी में ले आया। तब भरत क्षेत्र के वासुदेव कृष्ण पाच पांडवों के साथ आत्मषष्ठ होकर छह रथों से उस अमरकका नगरी में द्रौपदी देवी को वापिस ले जाने के लिये बहुत जल्दी आये। तब उन कृष्ण वासुदेव के, पद्मनाभ राजा के साथ युद्ध करते समय शख का यह शब्द तुम्हारे शंख के शब्द जैसा हुआ है। (तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदति, २ एव वयासी गच्छामि णं

रण्णो पुव्वसगइएण देवेण अमरकका नयरिं साहरिया तएण से कण्हे वासुदेवे पचहिं पडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अमरकक रायहाणिं दोवईए देवीए कूव हव्वमागए, तएण तस्स कण्णस्स वासुदेवस्स पउमणाभेण रण्णा सद्धिं सगाम, सगामे माणस्स अय सखसद्दे तव मुहवाया० इव वीय भवइ)

સ ભળો, વિગત એવી છે કે જબૂદ્રીપના ભરતક્ષેત્રમા વિદ્યમાન હસ્તિનાપુર નગરથી પાડુરાજાની પુત્રવધૂ પાચે પાડવોની પત્ની દ્રૌપદી દેવીને તમારા પદ્મનાભ રાજાના પૂર્વભવનો મિત્ર કોઈ દેવ હરીને અમરકકા નગરીમાં લઈ આવ્યો હતો ત્યારપછી ભરતક્ષેત્રના વાસુદેવ કૃષ્ણુ પાચે પાડવોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને છ રથો ઉપર સવાર થયા અને સત્વરે દ્રૌપદી દેવીને પાછા મેળવવા માટે ત્યા પહોચી ગયા પદ્મનાભ રાજાની સાથે યુદ્ધ કરતા કૃષ્ણુવાસુદેવે જે શખધ્વનિ કર્યો છે તે તમારા શખના ધ્વનિ જેવો છે

(तएण से कविले वासुदेवे मुणि सुव्वय वदति, २ एव वयासी, गच्छामि

स्मिन् युगे, एकस्मिन् समये द्वावर्हन्तौ वा चक्रवर्तिनौ वा बलदेवौ वा वासुदेवौ वा 'उप्पज्जिसु' उदपद्येताम्, 'उपज्जिंति' उत्पद्येते 'उपज्जिस्सति' उत्पत्स्येते वा, एवं खलु हे वासुदेव! जम्बूद्वीपाद् भारताद् वर्षाद् हस्तिनापुरनगरात् पाण्डोराज्ञः 'सुण्हा' स्नुषा=पुत्रवधूः, पञ्चानां पाण्डवानां भार्या द्रौपदी देवी तव पद्म

एगे खेत्ते एगे जुगे एगे समए दुवे अरहंता वा, चक्कवट्टी वा, बलदेवा वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा,) तब मुनिसुव्रत तीर्थकर प्रभुने उन कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा है कपिल वासुदेव! मेरे पास धर्म को सुनते समय तुम्हें शंख शब्द श्रवण कर इस प्रकार का यह आध्यात्मिक संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ है, कि क्या कोई दूसरा वासुदेव उत्पन्न हो गया है-जिसके शंख का शब्द मुझे सुनाई दिया है। कहो कपिल वासुदेव! यही बात है न ? तब कपिल वासुदेवने कहा-हां प्रभो! यही बात है-ऐसा ही विचार उत्पन्न हुआ है-तब मुनिसुव्रत भगवान्ने कपिल वासुदेवसे कहा-हे कपिल वासुदेव ऐसी बात न भूतकाल में हुई है और न भविष्यकाल में होगी-न वर्तमान् मे होती है कि जो एक ही क्षेत्रमें एक ही युगमें एक ही समय में दो अर्हंत प्रभु दो चक्रवर्ती, दो बलदेव, दो वासुदेव, उत्पन्न हो रहे हों, उत्पन्न हुए हो और आगे उत्पन्न हों। (एवं खलु वासुदेवा! जंबूद्दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पंडुस्सरण्णो सुण्हा

एगे समए दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा, वासुदेवा वा उप्पज्जिसु, उप्पज्जिंति, उप्पज्जिस्संति वा)

ત્યારે મુનિસુવ્રત તીર્થંકર પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે કપિલવાસુદેવ મારી પાસે ધર્મને સાભળતા શંખ-શબ્દ સાભળીને તમને આ જાતના આધ્યાત્મિક સંકલ્પ-વિચાર ઉત્પન્ન થયો છે કે, શુ કોઈ બીજો વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયો છે-જેના શંખનો ધ્વનિ મને સંભળાઈ રહ્યો છે બોલો, કપિલ વાસુદેવે કહ્યુ કે હા, પ્રભુ! એ જ વાત છે મારા મનમા એ જ જાતનો વિચાર ઉદ્ભવ્યો છે ત્યારે મુનિસુવ્રત ભગવાને કપિલ વાસુદેવને કહ્યું કે હે કપિલ વાસુદેવ! આવી વાત ભૂતકાળમા થઈ નથી અને ભવિષ્યકાળમા થશે નહિ અને વર્તમાનકાળમા સંભવી શકે તેમ પણ નથી કે જે એક જ ક્ષેત્રમા, એક જ યુગમા, એક જ સમયમા બે અર્હંત પ્રભુ, બે ચક્રવર્તી, બે બળદેવ, બે વાસુદેવ ઉત્પન્ન થયા હોય, ઉત્પન્ન થઇ રહ્યા હોય અને આગળ ઉત્પન્ન થવાના હોય

(एवं खलु वासुदेवा! जंबूदीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउरणयराओ, पंडुस्सरण्णो, सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजाग्राणि 'पासिहिसि' द्रक्ष्यसि। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २ यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कृष्णस्य वसुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीइवयमाणस्स' व्यतिव्रजत= गच्छत, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति= गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्यं शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखवातपूरित करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्ख वादयति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बलदेव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नहीं होता है। (तह वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेया पीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) हा, इतना हो सकता है कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके बीचसे होकर जा रहे होवें तब तुम उनकी श्वेत पीत ध्वजाओंके अग्र भाग को देख सकते हो। (तएण से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वंदित्ता, नमसित्ता, हत्थिखध दुरूहइ, दुरुहित्ता सिग्ध २ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ-एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्ति कट्टु

તીર્થંકરની સાથે બીજા તીર્થંકરનો મેળાપ કોઈ પણ સંજોગોમા થતો નથી એક ચક્રવર્તીનો બીજા ચક્રવર્તીની સાથે, એક બળદેવનો બીજા બળદેવની સાથે તેમજ એક વાસુદેવનો બીજા કોઈ પણ વાસુદેવની સાથે કદાપિ મેળાપ થતો નથી (तह वि य ण तुम कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसि) હા, એમ થઈ શકે છે કે જ્યારે તે કૃષ્ણવાસુદેવ લવણુ સમુદ્રની વચ્ચે થઈને પસાર થતા હોય ત્યારે તમે તેમની સફેદ, પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોઈ શકો છો (तएण से)

कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरूहइ, दुरुहित्ता सिग्घ२ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

भदन्त ! कृष्ण वासुदेवमुत्तमपुरुष पश्यामि तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन कपिलं वासुदेवम् एवमवादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एव भूत वा, भवति वा भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्त पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिन पश्यति बलदेवो वा बलदेव पश्यति वासुदेवो वा वासुदेव पश्यति, तथा ऽपि च खलु त्व

अह भते ! कण्ह वासुदेव उत्तमपुरिस मरिसपुरिस पासामि) इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को वदना की–नमस्कार किया वदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा –हे भदत ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो मेरे जैसे पुरुष हैं–वासुदेव पद के धारक है–जाकर मिलता हूँ। (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा–(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ६ जण्ण अरहतो, वा अरहंत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्क वट्टिं पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ) हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भविष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिलें, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिलें, एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिलें। ऐसा सिद्धान्त का नियम है कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है।

णं अहभते ! कण्ह वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि)

આ પ્રમાણે સાભળીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વદન તેમજ નમન ર્ક્યાં વદન અને નમન કરીને તેમની સામે આ પ્રમાણે વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે ભદત ! હુ જાઉ છુ અને જઇને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે–તેમને મળુ છુ (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ३ जण्ण अरहतो वा अरहत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સભવી નથી, વર્તમાનમા પણ સભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમા પણ સભવી શકશે નહિ કે એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે, એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો [illegible] છે કે એક

कृष्णस्य वासुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजत श्वेतपीतानि-ध्वजाग्राणि 'पासिहिसि' द्रक्ष्यसि। ततः खलु स कपिलो वासुदेवो मुनि सुव्रत वन्दते, नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा हस्तिस्कन्ध दूरोहति=आरोहति आरुह्य शीघ्र २ यत्रैव 'वेलाउले' वेलाकूलं=समुद्रवेला तट वर्तते, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य कृष्णस्य वसुदेवस्य लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीइवयमाणस्स' व्यतिव्रजत = गच्छत, श्वेतपीतानि ध्वजाग्राणि पश्यति, दृष्ट्वा एव वदति एसण मम सदृशपुरुषः उत्तमपुरुषः कृष्णो वासुदेवो लवणसमुद्रस्य मध्यमध्येन 'वीइवयइ' व्यतिव्रजति= गच्छति, इति कृत्वा पाञ्चजन्य शङ्ख परामृशति=गृह्णाति, गृहीत्वा मुखवातपूरित करोति=कपिलवासुदेवः स्वशङ्ख वादयति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कपि

चक्रवर्ती का दूसरे और चक्रवर्ती से बलदेव का दूसरे और किसी बलदेव से, वासुदेव का दूसरे और वासुदेव से कभी भी मिलाप नही होता है। (तह वि य ण तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झं मज्झेण वीइवयमाणस्स सेया पीयाइं धयग्गाइं पासिहिसि) हां, इतना हो सकता हैं कि जब वे कृष्णवासुदेव लवणसमुद्रके वीचसे होकर जा रहे होवें तब तु मउनकी श्वेत पीत ध्वजाओके अग्र भाग को देख सकते हो। (तएण से कविले वासुदेवेमुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता,नमसित्ता, हत्थि-खध दुरूहइ, दुरुहित्ता सिग्ध २ जेणेव वेलाउले,तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिंधयग्गाइ पासइ,पासित्ता एव वयइ-एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्ति कट्टु

तीर्थंकरनी साथे बीजा तीर्थंकरनो मेळाप कोई पण संजोगोमा थतो नथी एक चक्रवर्तीनो बीजा चक्रवर्तीनी साथे, एक बळदेवनो बीजा बळदेवनी साथे तेमज एक वासुदेवनो बीजा कोई पण वासुदेवनी साथे कदापि मेळाप थतो नथी (तह वि य ण तुम कणहस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाइ धयग्गाइ पासिहिसिं) हा, एम थई शके छे के ज्यारे ते कृष्णवासुदेव लवण समुद्रनी वच्चे थईने पसार थता होय त्यारे तमे तेमनी सफेद, पीळी ध्वजाओना अग्रभागने जोई शको छो (तएण से) कविले वासुदेवे मुणिसुव्वय वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता हत्थिखध दुरूहइ, दुरुहित्ता सिग्धं२ जेणेव वेलाउले, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयमाणस्स सेयापीयाहिं धयग्गाइ पासइ, पासित्ता एव वयइ, एसण मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे

भदन्त ! कृष्ण वासुदेवमुत्तमपुरुष पश्यामि तत खलु मुनिसुव्रतोऽर्हन कपिलं वासुदेवम् एवमवादीत्—नो खलु हे देवानुप्रिय ! एव भूत वा, भवति वा भविष्यति वा यत् खलु अर्हन् अर्हन्त पश्यति, चक्रवर्ती वा चक्रवर्तिन पश्यति बलदेवो वा बलदेव पश्यति वासुदेवो वा वासुदेव पश्यति, तथा ऽपि च खलु त्व

अह भते ! कण्हं वासुदेव उत्तमपुरिसं सरिसपुरिस पासामि) इस प्रकार सुनकर उस कपिल वासुदेव ने मुनि सुव्रत प्रभु को वदना की-नमस्कार किया वदना नमस्कार करके फिर उनसे इस प्रकार कहा -हे भदत ! मैं जाता हूँ और उत्तम पुरुष उन कृष्णवासुदेव से कि जो मेरे जैसे पुरुष हैं-वासुदेव पद के धारक है-जाकर मिलता हूँ। (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) तब मुनि सुव्रत प्रभु ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ३ जण्ण अरहतो, वा अरहत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्क वट्टि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ) हे देवानुप्रिय ! ऐसी बात न हुई है, वर्तमानमें न होती है और न भविष्यत्काल में होनेवाली है कि जो एक तीर्थंकर दूसरे तीर्थंकर से मिलें, एक चक्रवर्ती दूसरे चक्रवर्ती से मिले, एक बलदेव दूसरे बलदेव से मिलें, एक वासुदेव दूसरे वासुदेव से मिलें। ऐसा सिद्धान्त का नियम है कि एक तीर्थंकर का दूसरे तीर्थंकर से कभी भी मिलाप नहीं होता है।

ण अहभते ! कण्ह वासुदेव उत्तमपुरिस सरिसपुरिस पासामि)

આ પ્રમાણે સાભળીને તે કપિલવાસુદેવે મુનિસુવ્રત પ્રભુને વદન તેમજ નમન કર્યા વદન અને નમન કરીને તેમની સામે આ પ્રમાણે વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે ભદત ! હુ જાઉ છુ અને જઈને મારા જેવા તે ઉત્તમ પુરૂષ કૃષ્ણ વાસુદેવ કે જેઓ વાસુદેવ પદને શોભાવે છે-તેમને મળુ છુ (तएण मुणि सुव्वए अरहा कविल वासुदेव एव वयासी) ત્યારે મુનિસુવ્રત પ્રભુએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(नो खलु देवाणुप्पिया ! एव भूय वा ३ जण्ण अरहतो वा अरहत पासइ, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टि पासइ, बलदेवो वा, बलदेव पासइ, वासुदेवो वा वासुदेव पासइ)

હે દેવાનુપ્રિય ! એવી વાત કોઈ પણ દિવસે સભવી નથી, વર્તમાનમા પણ સભવી શકે તેમ નથી અને ભવિષ્યકાળમા પણ સભવી શકશે નહિ કે એક તીર્થંકર બીજા તીર્થંકરને મળે, એક ચક્રવર્તી બીજા ચક્રવર્તીને મળે, એક બળદેવ બીજા બળદેવને મળે આ જાતનો સિદ્ધાન્તનો નિયમ છે કે એક

ततस्तदनन्तर स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यामरकङ्कां राजधानी सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवादीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकङ्का सभग्नतोरणा यावत्-सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन ' तुब्भे परिभूए ' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् सनिपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी) तब कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को सुना सुनकर उन्हो ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से पूरित किया-बजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले। अब वे कपिल वासुदेव जहा वह अमरकंका नगरी थी वहां आये। वहां आकर उन्होंने अमरकका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा। देखकर तब पद्म-नाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसा अमरकका सभग्ग जाव सन्निवइया ? तएण से पउमणाहे कविलं वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ? जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी)

જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે કપિલ વાસુદેવના શખનો ધ્વનિ સાભળ્યો ત્યારે તેમણે પણ પોતાના પાચજન્ય શખને મુખના પવનથી પૂરિત કર્યો અને વગાડયો. આ રીતે તેઓ બને વાસુદેવ પ્રત્યક્ષ રીતે નહિ પણ શખના ધ્વનિથી પરસ્પર મળ્યા ત્યારપછી તે કપિલ વાસુદેવ જ્યા તે અમરકકા નગરી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે અમરકકા રાજધાનીને ધજાઓ વગેરેથી નષ્ટ થયેલી જોઇ, જોઇને તેમણે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે---

(किण्ण देवाणुप्पिया ऐसा अमरकका संभग्ग जाव सन्निवइया ? तएण से पउमणाहे कविल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया)

लस्य वासुदेवस्य शङ्खशब्दम् ' आयन्नो ' आकर्णयति=शृणोति, आकर्ण्य पाञ्च जन्य यावत् मुखवातपूरित करोति=कृष्णो वासुदेव स्वकीय शङ्ख वादयति, तत' खलु द्वावपि वासुदेवौ ' संखसद्दसामायारिं ' शङ्खशब्दसामाचारिं=शङ्खशब्देन परस्परमिलन कुरुतः ।

पचयन्न सख परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ) इस प्रकार प्रभु का आदेश सुनकर उन कपिलवासुदेव ने उन प्रभु मुनिसुव्रत भगवत को वदना की, नमस्कार किया । वदना नमस्कार करके फिर वे अपने प्रधान हस्ती पर आरूढ हुए। और आरूढ होकर शीघ्र जहां लवणसमुद्र का वेलातट था –वहां पहुँचे। वहा पहुँचकर उन्होंने लवण समुद्र के बीच से होकर जाते हुए कृष्णवासुदेव की श्वेत पीत ध्वजाओं के अग्रभाग को देखा देखकर तब मनमें विचार–किया ये ही मेरे जैसे उत्तम पुरुष कृष्णवासुदेव लवणसमुद्र के बीच से होकर जारहे हैं– ऐसा विचार कर उन्हों ने अपने पाचज य शख को उठाया और उठा कर उसे अपने मुख की वायु से पूरित किया (तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ, आयन्नित्ता, पचजन्ने, जाव पूरिय करेइ, तएण दो वि वासुदेवा सखसद्दसामायारिं करेइ, तएण

लवणसमुद्द मज्झ मज्झेण वीइवयइत्ति कट्टु पचजन्न सख परामुसइ परामुसित्ता मुहवायपूरिय करेइ)

આ રીતે પ્રભુની આજ્ઞા સાભળીને તે કપિલ વાસુદેવે તે પ્રભુ મુનિસુવ્રત ભગવતને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ પોતાના પ્રધાન હાથી ઉપર સવાર થયા અને સવાર થઇને જલ્દી જ્યા લવણ સમુદ્રનો કિનારો હતો ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે 'લવણસમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થતા કૃષ્ણવાસુદેવની સફેદ–પીળી ધ્વજાઓના અગ્રભાગને જોયો અને જોઇને મનમા વિચાર કર્યો કે મારા જેવા ઉત્તમ પુરુષ કૃષ્ણવાસુદેવ એ જ છે કે જેઓ લવણ–સમુદ્રની વચ્ચે થઇને પસાર થઈ રહ્યા છે આમ વિચાર કરીને તેમણે પાચજન્ય શખને ઉઠાવ્યો અને ઉઠાવીને પોતાના મુખના પવનથી તેને પૂરિત કર્યો

(तएण से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स सखसद्द आयन्नेइ, आयन्नित्ता, पचजन्न जाव पूरिय करेइ तएण दो वि वासुदेवा सखसद्द सामायारिं करेइ, तएण से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव

ततस्तदनन्तर स कपिलो वासुदेवो यत्रैवामरकङ्काराजधानी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्यामरकङ्कां राजधानीं सभग्नतोरणां यावत् पश्यति, दृष्ट्वा पद्मनाभमेवमवादीत्-किं-कस्मात् खलु हे देवानुप्रिय ! एषा अमरकङ्का सभग्नतोरणा यावत्-सन्निपतिता ? ततः खलु स पद्मनाभः कपिल वासुदेवमेवमवादीत्-एव खलु हे स्वामिन् ! जम्बूद्वीपाद् द्वीपाद् भारताद् वर्षाद् इह हव्यमागत्य कृष्णेन वासुदेवेन 'तुब्भे परिभूए' युष्मान् परिभूय=अनादृत्य कपिलवासुदेवेन मम काऽपि हानिर्न शक्यते कर्तुमिति मनसि निधायेत्यर्थः, अमरकङ्का यावत् सनिपतिता ।

से कविले वासुदेवे जेणेव अमरकका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अमरककं रायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी) तब कृष्ण वासुदेव ने कपिल वासुदेव के शख शब्द को सुना सुनकर उन्हों ने भी पांचजन्य शख को अपने मुख की वायु से पूरित किया-बजाया-इस तरह वे दोनों वासुदेव साक्षात् रूप में न मिलकर शख के शब्द से परस्पर में मिले। अब वे कपिल वासुदेव जहा वह अमरकका नगरी थी वहाँ आये। वहा आकर उन्होंने अमर-कका राजधानी को सभग्न तोरण आदि वाला देखा। देखकर तब पद्म-नाभ राजा से इस प्रकार कहा-(किण्ण देवाणुप्पिया ! एसा अमरकंका सभग्ग जाव सन्निवडया ? तएण से पउमणाहे कविल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ? जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया) हे देवानुप्रिय ! यह अमरकका नगरी क्या कारण है-जो

अमरककारायहाणिं सभग्गतोरण जाव पासइ, पासित्ता पउमणाभ एव वयासी)

જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે કપિલ વાસુદેવના શખનો ધ્વનિ સાભળ્યો ત્યારે તેમણે પણ પોતાના પાચજન્ય શખને મુખના પવનથી પૂરિત કર્યો અને વગાડયો. આ રીતે તેઓ બને વાસુદેવ પ્રત્યક્ષ રીતે નહિ પણ શખના ધ્વનિથી પરસ્પર મળ્યા ત્યારપછી તે કપિલ વાસુદેવ જ્યા તે અમરકકા નગરી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે અમરકકા રાજધાનીને ધજાઓ વગે રેથી નષ્ટ થયેલી જોઇ, જોઇને તેમણે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(किण्ण देवाणुप्पिया ऐसा अमरकका सभग्ग जाव सन्निवडया ? तएण से पउमणाहे कविल वासुदेव एव वयासी-एव खलु सामी ! जबूदीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इह हव्वमागम्म कण्हेण वासुदेवेण तुब्भे परिभूए अमरकका जाव सन्निवाडिया)

ततः खलु स कपिलो वासुदेवः पद्मनाभस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा पद्मनाभम् एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादीत्-हं भो ! पद्मनाभ ! अप्रार्थित प्रार्थित ! =मरण वाञ्छक !, किं खलु त्वं न जानासि मम सदृशपुरुषस्य वासुदेवस्य विप्रियं=विरुद्धं कुर्वन्', इत्युक्त्वा आशुरुप्तः=शीघ्रं क्रोधाऽऽक्रान्त, यावत् पद्मनाभं ' णिव्विसयं ' निर्विषय=विषयात् स्वराज्याद् निर्गत-निष्कासित कर्तुम् ' आणवेइ ' आज्ञापयति पद्मनाभस्य पुत्रममरकङ्काराजधान्या महता महता राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति,

---

सभग्न तोरण आदि वाली होकर भूमिसात् हो गई है। तब पद्मनाभ राजा ने उस कपिल वासुदेव से इस प्रकार कहा-हे स्वामिन् ! इसका कारण इस प्रकार है-जंबूद्वीप नाम के प्रथम द्वीप से भरतक्षेत्र में यहाँ बहुत ही शीघ्र आकर कृष्ण वासुदेव ने आपकी कुछ भी परवाह न करके-कपिल वासुदेव हमारी कुछ भी हानि नहीं कर सकते हैं-ऐसा अपने मन में समझ करके-अमरकंका में आकर-उसे पहिले सभग्न तोरण वाली किया-और बाद में विध्वस्तकर दिया। (तएण से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी) तब पद्मनाभ राजा के मुख से इस समाचार को सुनकर के उस कपिल वासुदेव ने उस पद्मनाभ राजा से इस प्रकार कहा-(हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्न तुमं न जाणासि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? आसुरुत्ते जाव पउमणाहं णिव्विसयं आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्तं अमरकंका रायहाणीए महया

હે દેવાનુપ્રિય ! શા કારણથી આ અમરકંકા નગરીની ધજાઓ વગેરે પણ તૂટી ગઈ છે અને સંપૂર્ણ નગરી વિનષ્ટ થઈ ગઈ છે ! ત્યારે પદ્મનાભ રાજાએ તે કપિલ વાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી ! વાત એવી છે કે જંબૂદ્વીપ નામના પ્રથમ દ્વીપના ભરતક્ષેત્રથી અહીં બહુ જ જલ્દી આવીને કૃષ્ણવાસુદેવે તમારી જરાએ દરકાર કર્યા વગર " કપિલ વાસુદેવ અમારૂં કંઈજ કરી શકશે નહિ " આ જાતનો પોતાના મનમાં વિચાર કરીને પહેલા તો અમરકંકાના તોરણો નષ્ટ કર્યાં અને ત્યારપછી આ નગરીને પણ જમીનદોસ્ત કરી નાખી છે. (तएणं से कविले वासुदेवे पउमणाहस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमणाहं एवं वयासी) ત્યારે પદ્મનાભ રાજાના મુખથી આ બધી વિગત સાંભળીને તે કપિલવાસુદેવે તે પદ્મનાભ રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(हं भो ! पउमणाभा ! अपत्थियपत्थिया ! किन्न तुमं नजाणासि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ? आसुरुत्ते जाव

यावत् प्रतिगत =पद्मनाभस्य पुत्र राज्येऽभिषिच्य कपिलवासुदेवो यस्यादिशः प्रादुर्भूतस्ता दिश प्रतिगत इति भाव ॥ सू०३० ॥

मूलम्—तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्द मज्झं मज्झेणं वीइवयइ, त पच पडवे एवं वयासी—गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगामहानइं उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, तए णं त पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगामहानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति करित्ता एगट्ठियाए नावाए गंगामहानइ उत्तरंति उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति—पहू णं देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गंगामहाणइं वाहाहि उत्तरित्तए उदाहु णो पभू उत्तरित्तएत्ति कट्टु एगट्ठियाओ नावाओ

महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ जाव पडिगए) अरेओ मरणवाञ्छक पद्मनाभ! मेरे जैसे पुरुष कृष्ण वासुदेव का विप्रिय—अनिष्ट—करते हुए तुमने मेरा कुछभी ख्याल नहीं किया? इस प्रकार कह कर वे उस पर बहुत अधिक कुपित हो गये। यावत् उस पद्मनाभ राजा को उन्हों ने अपने देश से बाहिर भी निकालदिया। तथा—उसका जो पुत्र सुनाभ था। उस को बडे भारी उत्सवके साथ राज्य में अभिषिक्त किया। इस प्रकार पद्मनाभ के पुत्र को राज्य में अभिषिक्त करके वे कपिल वासुदेव जिस दिशासे आये थे उस दिशाकी ओर वापिस चले गये॥सूत्र ३०॥

सय आणवेइ, पउमणाहस्स पुत्त अमरकका रायहाणीए महया महया रायाभिसेएण अभिसिंचइ, जाव पडिगए)

અરે, ઓ મૃત્યુને ઇચ્છનાર પદ્મનાભ! મારા જેવા પુરુષ કૃષ્ણવાસુદેવનું બુરૂ કરતા તે મારી પણ દરકાર કરી નહિ? આ પ્રમાણે કહીને તેઓ ખૂબજ ક્રોધિત થઇ ગયા યાવત્ તે પદ્મનાભ રાજાને પોતાના દેશથી બહાર પણ નસાડી મૂક્યો. ત્યારપછી તેના પુત્ર સુનાભનો ભારે ઉત્સવની સાથે રાજ્યાભિષેક કર્યો આ રીતે પદ્મનાભના પુત્રને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને કપિલ વાસુદેવ જે દિશા તરફથી આવ્યા હતા તે દિશા તરફ પાછા જતા રહ્યા ॥ સૂત્ર ૩૦ ॥

णूमेंति णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा२ चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ पासित्ता जेणेव गंगामहाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समता मग्गणगवेसणं करेइ करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ एगाए बाहाए गंगं महाणइं बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिन्न उत्तरिउ पयत्ते यावि होत्था, तएण से कण्हे वासुदेवे गंगामहाणईए बहुमज्झदेसभागं सपत्ते समाणे सते तते परितते बद्धसेए जाए यावि होत्था तएण कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था अहो ण पंच पंडवा महाबलवगा जेहि गंगामहाणई बासट्ठि जोयणाइं अद्धजोयणं च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा, इत्थभूएहि णं पचहि पंडवेहि पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए, तएण गगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अज्झत्थिय जाव जाणित्ता थाह वितरइ, तएण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतर समासासइ समासासित्ता गंगामहाणइं बावट्ठिं जाव उत्तरइ उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी—अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गंगामहाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इत्थ भूएहि तुब्भेहि पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच पडवा कण्हेण वासुदेवेणं एव वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया! अम्हे तुब्भेहि विसज्जिया समाणा

जेणेव महाणई तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता एगट्टियाए मग्गणगवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो तएण से कण्हे वासुदेवे तेसि पंचण्हं पांडवाणं एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एव वयासी—अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्ण वीइवइत्ता पउमणाभ हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकका संभग्ग० दोवई साहत्थिं उवणीया तया ण तुब्भेहि मम महप्पं ण विण्णायं इयाणि जाणिस्सहत्तिकट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे चूरेइ चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ ण रह मद्दणे णाम कोड्डे णिविट्ठे, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खधावारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सएणं खधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, तएण से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई णयरी तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता अणुपविसइ ॥सू० २१॥

टीका—'तएण से इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु स कृष्णो वासुदेवो लवण समुद्रस्य मध्यमध्येन व्यतिव्रजति=गच्छति व्यतिव्रज्य तान् पञ्च पाण्डवान् एव मवादीत्—गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रिया !' गङ्गामहानदीमुत्तरत=उत्तीर्णा भवत,

---

तएण से कण्हे वासुदेवे इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कण्हे वासुदेवे) उन कृष्णवासुदेवने (लवणसमुद्द) जब लवण समुद्र में (मज्झ मज्झेण वीइवयइ) बीच से होकर वे चले जा रहे थे। (ते पच पडवे एव वयासी) तब पाच पाडवों से ऐसा कहा—(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगामहानइ उत्तरह जाव

तएण से कण्णे वासुदेवे इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (से कण्हे वासुदेवे) ते कृष्णवासुदेवे (लवणसमुद्द) के ज्यारे तेओ लवण समुद्रनी (मज्झ मज्झेण वीइवयइ) वच्चे थईने पसार थता हता त्यारे (ते पच पडवे एव वयासी) पांचे पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं (गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया ! गगा महानदिं उत्तरह जाव ताव अह सुट्ठिय

यावत् तावदहं सुस्थितं देवं लवणाधिपतिं पश्यामि, सुस्थितेन देवेन सह मिलित्वा तमापृच्छ्यागच्छामि, ततः खलु ते पञ्चपाण्डवा कृष्णेन वासुदेवेन एवमुक्ताः सन्तो यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'एगट्ठियाए' एकार्थिकायाः=महानौकासमानकार्यकारिण्या 'णावाए' नावः=नौकाया मार्गणगवेषण कुर्वन्ति। कृत्वा=मार्गणगवेषण कृत्वा नौकायामारुह्य ते पञ्च पाण्डवा एकार्थिकया नावा गङ्गामहानदी मुत्तरन्ति, उत्तीर्य अन्योन्यम्=परस्परमेवं वदन्ति-'पहू' प्रभु.=समर्थ, खलु हे देवानुप्रियाः! कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानदीं 'बाहाहिं' बाहुभ्या=भुजाभ्याम् 'उत्तरित्तए' उत्तरीतुम् 'उदाहु' उताहो-अथवा नो

ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि) हे देवानुप्रियों! तुमलोग जाओ-और गगानदी को पार करो तबतक मैं लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर और उनकी आज्ञा लेकर आता हूँ। (तएणं ते पंच पडवा कण्हेण वसुदेवेण एवं वुत्ता समाणा जेणेव गगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए गगामहानइं उत्तरंति) इस तरह कृष्ण वासुदेव द्वारा कहे गये वे पाचों पांडव जहां गगा महानदी थी-वहा आये। वहा आकर के उन्होंने एकार्थिक-महानौकासे जैसी कार्य साधक-नौका मार्गणा एव गवेषणा की, मार्गणा गवेषणा कर के वे पाचो पाडव नौका पर चढ गगा महानदीसे पार हो गये। (उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूण देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गगा महानई बाहाहिं उत्तरि-

लवणाहिवइं पासामि) हे देवानुप्रियो! तमे लोको हवे जाओ अने गगा नदीने ओळगो त्यासुधी हु लवण समुद्रना अधिपति सुस्थित देवने मळीने अने तेमनी आज्ञा प्राप्त करीने आवुं छु

(तएणं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा, जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता एगट्ठियाए णावाए मग्गणगवेसणं करेंति, करित्ता एगट्ठियाए नावाए गगा महानइं उत्तरंति)

आ रीते कृष्णवासुदेव वडे आज्ञापित थयेला ते पाचे पाडवो ज्या गगा महा नदी हती त्या आव्या त्या आवीने तेमणे एकार्थिक महानौका जेवी कामभा आवी शके तेवी नौकानी मार्गणा तेमज गवेषणा करी मार्गणा तेमज गवेषणा करीने ते पाचे पाडवो नौका उपर सवार थईने गगा महा नदीने पार उतरी गया

(उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति पहूणं देवाणुप्पिया! कण्हे वासुदेवे गगा-

प्रभुः=समर्थ उत्तरीतुम् , इति कृत्वा गङ्गामहानद्या बाहुभ्यामुत्तरणे कृष्णवासुदेवस्य सामर्थ्यमस्ति, नास्ति वा तद् विजानामीति विचार्य एकार्थिका नावः= नौका 'णूमेति' गोपयन्ति। गोपयित्वा कृष्ण वासुदेव 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्त =प्रतीक्षमाणाः तिष्ठन्ति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित देव लवणाधिपतिं पश्यति=सुस्थितेन साकं मिलति दृष्ट्वा तमापृच्छय यत्रैव गङ्गामहानदी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य एकार्थिकाया नावः=नौकाया मार्गणगवेषणं करोति, कृत्वा, एकार्थिकां नावमपश्यन् एकेन बाहुना रथं सतुरग=सहाश्व,

त्तए उदाहु णो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टु एगट्ठियाओ णावाओ णूमेंति, णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवाले माणा २ चिट्ठंति, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं, पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ) जब पार होकर वे तट पर पहुँच चुके-तब परस्पर में उन्हों ने ऐसा विचार किया-हे देवानुप्रियों! देखो कृष्ण वासुदेव गंगा महानदी को हाथों से तैरकर पार करने में समर्थ हो सकते हैं या नहीं हो सकते हैं? इस प्रकार विचार करके उन्हों ने उस एकार्थि नौका को कृष्ण वासुदेव के आने के लिये वापिस उस पार भेजा नहीं वहीं पर छिपा दिया। और छिपाकर कृष्ण वासुदेव की प्रतीक्षा करते वे वहीं ठहरे रहे। उधर-कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से जाकर मिले और उसकी आज्ञा लेकर जहां गंगा नदी थी वहां आये। (उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेई, करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ

महानईं बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु णो पभू उत्तरित्तए त्तिकट्टु एगट्ठियाओ णावाओ णूमेंति, णूमित्ता कण्हं वासुदेवं पडिवालेमाणा२ चिट्ठंति, तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं, पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महाणई तेणेव उवागच्छइ)

પાર ઉતરીને જ્યારે તેઓ કિનારે પહોંચી ગયા ત્યારે તેમણે પરસ્પર વિચાર કર્યો કે હે દેવાનુપ્રિયો! કૃષ્ણવાસુદેવ ગંગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી શકે કે નહિ? આમ વિચાર કરીને તેમણે તે 'એકાર્થિ' નૌકાને કૃષ્ણવાસુદેવને લાવવા માટે પાછી મોકલી નહિ પણ ત્યાંજ છુપાવી દીધી અને છુપાવીને તેઓ ત્યાંજ કૃષ્ણવાસુદેવની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રાધિપતિ સુસ્થિતદેવને મળ્યા અને તેની આજ્ઞા પ્રાપ્ત કરીને જ્યાં ગંગા નદી હતી ત્યાં આવ્યા

(उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए

ससारथिं गृह्णाति एकेन बाहुना गङ्गा महानदीं 'बासट्ठिं' द्वाषष्टिं योजनानि अर्धयोजन च 'विच्छिन्न' विस्तीर्णाम्, उत्तरितु प्रवृत्तश्चाप्यभवत्, ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो गङ्गामहानद्या बहुमध्यदेशभाग सप्राप्तः सन् 'सते' श्रान्तः= श्रमप्राप्तः, 'तते' तान्तः=खिन्न 'परितते' परितान्त=सर्वथा खिन्नः 'बद्धसेए' समाप्तस्वेदः, जातश्चाप्यभवत्।

ततः खलु कृष्णस्य वासुदेवस्यायमेतद्रूप आध्यात्मिको यावत् मनोगत सकल्पः समुदपद्यत-अहो खलु पञ्च पाण्डवा महाबलवन्त', यैर्गङ्गामहानदी द्वाषष्टि योजनानि अर्धयोजन च विच्छिन्ना-विस्तीर्णा बाहुभ्यामुत्तीर्णा, 'इत्थभूएहिं' इत्थभूतैः-ईदृशपराक्रमशालिभि. खलु पञ्चभिः पाण्डवैः पद्मनाभो राजा यावत् नो

एगाए बाहाए गग महाणइ वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिन्न उत्तरिपयत्ते यावि होत्था) वहा आकर के उन्हों ने एकार्थिक नौका की सब तरफ सब प्रकारसे मार्गणा गवेषणा की 'मार्गणागवेषण करके जब उनके देखने में एकार्थिक नौका नहीं आई, तब सारथि और घोडों से युक्त रथ को उन्हों ने एक हाथ से पकडा और एक हाथ से ६२॥, साढे बासठ, योजन विस्तीर्ण उस गगा महानदी को तैरकर पार करना प्रारभ किया। (तएण से कण्हे वासुदेवे गगा महाणईए बहुमज्झदेस भाग सपत्ते समाणे सते, तते, परितते, बद्धसेए जाए यावि होत्था, तएण कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था -अहोण पच पडवा महाबलवगा, जेहिं गगामहाणई वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा इत्थभूएहिं ण पचहिं पड

गग महाणइ वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिन्न उत्तरिपयत्ते यावि होत्था)

त्या आवीने तेमणे 'એकार्थिक' नौकानी चोमेर बधी रीते मार्गणा गवेषणा करी मार्गणा तेमज गवेषणा करीने ज्यारे 'એकार्थिक' नौका तेमना जोवामा आवी नहि त्यारे सारथि अने घोडाथी युक्त रथने तेमणे એक हाथमां उपाडयो अने એक हाथ वडे ६२॥ योजन विस्तीर्ण ते गगा महा नदीने तरीने पार करवा लाग्या

(तएण से कण्हे वासुदेवे गगा महाणईए बहुमज्झदेस भाग सपत्ते समाणे सते, तते, परितते, बद्धसेए जाए यावि होत्था, तएण कण्हस्स वासुदेवस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-अहोण पच पडवा महाबलवगा जेहिं गगा महाणई वासट्ठिं जोयणाइ अद्धजोयण च विच्छिण्णा बाहाहिं

प्रतिषेधितः=नो पराजितः, इदमाश्चर्यम् , ततः खलु गङ्गादेवी कृष्णस्य वासुदेवस्य इममेतद्रूपमाध्यात्मिक यावत् मनोगत सङ्कल्प ज्ञात्वा ' थाह ' स्ताघ-गाधवित-रवि,=ददाति । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो मुहूर्तान्तरे ' समासासइ ' समाश्व सिति-विश्राम प्राप्नोति समाश्वस्य गङ्गामहानदीं द्वापष्ठि यावद् उत्तरति, उत्तीर्य

वेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह वितरइ) तैरते २ जब वे कृष्णवासुदेव गंगा महानदी के ठीक मज्झ-मध्य भाग में आये-तब वहां तक आते २ वे श्रम प्राप्त हो गये, खेदखिन्न बन गये, और सर्वथा थक गये। यहां तक कि उनके शरीर भर में थकावट की वजह से पसीना २ हो गया। तब उन कृष्णवासुदेव को इस प्रकार का यह आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ । देखो-ये पाचो पाडव बड़े बलिष्ठ है-जिन्हों ने ६२॥, योजन विस्तीर्ण इस गंगा महा-नदी को हाथों से तैरकर पार कर दिया परन्तु यह बड़े आश्चर्य की बात हैं-कि ऐसे पराक्रम से युक्त होते हुए भी इन पाडवों से वह पद्मनाभ राजा प्रतिषेधित नही हो सका-जीता नही जा सका। इस प्रकार के उन कृष्णवासुदेव के इस रूप इस आध्यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प को गंगादवी ने जानकर उन्हें थाह दे दी (अधार दिया)। (तएण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तत्तर समासासइ) थाह प्राप्त कर कृष्णवासुदेव ने वहां

भूएहिं ण पचहिं पडवेहिं पउमणाभे राया जाव णो पडिसेहिए-तएण गगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इम एयारूव अज्झत्थिए जाव जाणित्ता थाह वितरइ)

તરતા તરતા જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવ ગ ગા મહાનદીના એકદમ મધ્યમા આવ્યા-ત્યાસુધી આવતા આવતા તો તેઓ થાકી ગયા, ખેદખિન્ન થઈ ગયા, અને એકદમ થાકી ગયા થાકને લીધે તેમનુ સ પૂર્ણ શરીર પરસેવાથી તરબોળ થઈ ગયુ ત્યારે તે કૃષ્ણવાસુદેવને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ કલ્પ ઉદ્‌ભવ્યો કે જુઓ આ પાચે પાડવો કેટલા બધા બલિષ્ઠ છે કે જેમણે ૬૨'' યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગ ગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે)ણ એની સાથે આ પણ એક નવાઈ જેવી વાત છે કે એવા પરાક્રમી હોવા છતાએ આ પાડવોથી તે પદ્મનાભ રાજા યાવત્ પરાજીત કરી શકાયો નહિ કૃષ્ણવાસુદેવના ગ ગા મહાનદીએ આ જાતના આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સ કલ્પ જાણીને તેમના માટે થાહ આપી (तएण से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तत्तर समासासइ) થાહ મેળવીને કૃષ્ણવાસુદેવે થોડીવાર ત્યા વિશ્રામ કર્યો (समासा०) વિશ્રામ કર્યા બાદ તેમણે

यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्—अहो खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! महाबलवन्त येन युष्माभिर्गङ्गा महानदी द्वाषष्टि योजनानि अर्धयोजन च विस्तीर्णा यावद् उत्तीर्णा, इत्थभूतैर्युष्माभिः पद्मनाभो यावत् नो प्रतिषेधित "पराजय न प्रापितः, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः

थोड़ी देर तक विश्राम किया (समासा०) विश्राम करके फिर उन्होंने (गगा महाणइ बावट्ठिं जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पचपडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी—अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महा बलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा, इत्थभूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पचपडवा कण्हे ण वासु देवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एवं वयासी—एव खलु देवाणु प्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसणं त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो) साढे बासठ योजन विस्तीर्ण उस गगा महानदी को तैरकर पार कर दिया। पार करके फिर वे वहां आये—जहां ये पाचो पाडव थे। वहा आकर उन्हों ने उन पांचो पाडवों से इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रियों ! तुमलोग बहुत ही अधिक बलशाली हो जो तुमलोगों ने ६२॥ योजन विस्तीर्ण इस गगा महानदी को बाहुओं से तैरकर पार कर दिया। परन्तु यह आश्चर्य की बात हैं कि इतने बल शाली होकर भी जो तुम से पद्मनाभ राजा पराजित नहीं हो सका।

(गगा महाणइ बावट्ठिं जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी—अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा इत्थ भूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच पडवा कण्हे ण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विस ज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण गवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो)

૬૨'' ચોજન વિસ્તીર્ણ તે ગગા મહાનદીને તરીને પાર પહોચી ગયા પાર પહોચીને તેઓ જ્યા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો કેમકે તમે લોકોએ ૬૨'' ચોજન વિસ્તીર્ણ આ ગગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ એક નવાઇ જેવી વાત છે કે તમે આટલા બધા બળવાન હોવા છતા પણ પદ્મનાભ રાજાને ન

कृष्णेन वासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तः कृष्ण वासुदेवमेवमवादीत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! वयं युष्माभिर्विसर्जिताः सन्तो यत्रैव गङ्गा महानदी तत्रैवोपागच्छामः, उपागत्य 'एगट्ठियाए' एकार्थिकाया नावो मार्गणगवेषणं कृत्वा 'तं चेव जाव णूमेमो' तदेव=यदुक्तं पूर्वं तदेवात्र बोध्यमित्यर्थः-तां नावमधिरुह्य वयं गङ्गामहानदीमुत्तीर्णाः, ततः खलु हे देवानुप्रियाः! गङ्गां महानदीं बाहुभ्यामुत्तरितुं भवन्तः शक्नुवन्ति नवा, इति ज्ञातुं वयमेकार्थिकां नौकां यावद् 'णूमेमो' गोपयामः, युष्मान् 'पडिवालेमाणा' प्रतिपालयन्तः-प्रतीक्षमाणा वयं तिष्ठामः।

ततः खलु स कृष्णो वासुदेवस्तेषां पञ्चानां पाण्डवानाम् एतमर्थं श्रुत्वा आकर्ण्य निशम्य हृद्यवधार्य आसुरुप्तः-शीघ्रं संजातकोपः, यावत् त्रिवलिकां=रेखा

इस प्रकार जब कृष्णवासुदेवने उन पांचो पांडवों से कहा तब उन्हो ने कृष्णवासुदेव से ऐसा कहा हे देवानुप्रिय! सुनिये-बात इस प्रकार है जब हमलोगों को आपने वहां से विसर्जित कर दिया-तब हमलोग जहां गंगा महानदी थी-वहां आये-वहां आकर हमलोगों ने एकार्थिक नौका की मार्गणा गवेषणा की-नाव के मिलते ही हमलोग उसपर चढ़कर यहां गंगा नदी को पार कर आये हैं। हमलोगों ने यहा आकर फिर हे देवानुप्रिय! ऐसा विचार किया - कि - कृष्णवासुदेव गंगा महानदी को हाथों से पार कर सकते है या नहीं-इसी बात को जानने के लिये हमलोगो ने उस एकार्थिक नौका को यही छिपा कर रख दिया है। और आपकी प्रतीक्षा में यहा ठहरे हुए हैं। (तएणं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पचण्हं पाडवाणं एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिव-

---

આ રીતે જ્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તે પાંચે પાંડવોને કહ્યું ત્યારે તેમણે કૃષ્ણવાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય! સાંભળો, વાત એવી છે કે અમને બધાને તમે જ્યારે વિદાય કર્યા ત્યારે અમે લોકો જ્યાં ગંગા મહાનદી હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને બધાએ એકાર્થિક નૌકાની માર્ગણા ગવેષણા કરી નૌકા પ્રાપ્ત થતાં જ અમે બધા તેમાં બેસીને ગંગા મહાનદીને પાર કરીને આ તરફ આવી ગયા આ તરફ આવીને હે દેવાનુપ્રિય! અમે લોકોએ આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે-કૃષ્ણવાસુદેવ ગંગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી શકશે કે કેમ? આ વાત જાણવા માટે જ અમે લોકોએ તે એકાર્થિક નૌકાને છુપાવીને તમારી પ્રતીક્ષા કરતા અમે અહીં જ બેસી રહ્યા હતા

(तए णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पचण्ह पाडवाणं एयमट्ठं सोचा णिसम्म आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं वयासी-अहोणं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयण

यत्रैव पञ्च पाण्डवास्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्— अहो खलु यूय हे देवानुप्रियाः । महाबलास्तु येन युष्माभिर्गङ्गा महानदी द्वाषष्टि योजनानि अर्धयोजन च विस्तीर्णा यावद् उत्तीर्णा, इत्थंभूतैर्युष्माभिः पद्मनाभो यावत् नो प्रतिषेधित •पराजय न प्रापितः, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः

थोड़ी देर तक विश्राम किया (समासा०) विश्राम करके फिर उन्होंने (गगा महाणइ बावट्ठि जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पचपडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी—अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठि जाव उत्तिण्णा, इत्थभूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पचपडवा कण्हे ण वासु देवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणु प्पिया । अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गणगवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो) साढे बासठ योजन विस्तीर्ण उस गगा महानदी को तैरकर पार कर दिया। पार करके फिर वे वहां आये—जहाँ ये पाचो पाडव थे । वहा आकर उन्हों ने उन पांचो पाडवों से इस प्रकार कहा—हे देवानुप्रियों ! तुमलोग बहुत ही अधिक बलशाली हो जो तुमलोगों ने ६२॥ योजन विस्तीर्ण इस गगा महानदी को बाहुओं से तैरकर पार कर दिया। परन्तु यह आश्चर्य की बात हैं कि इतने बल शाली होकर भी जो तुम से पद्मनाभ राजा पराजित नही हो सका।

(गगा महाणइ बावट्ठि जाव उत्तरइ, उत्तरित्ता जेणेव पच पडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पच पडवे एव वयासी—अहोण तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा जेण तुब्भेहिं गगा महाणई बासट्ठि जाव उत्तिण्णा इत्थ भूएहिं तुब्भेहिं पउम जाव णो पडिसेहिए, तएण ते पच पडवा कण्हे ण वासुदेवेण एव वुत्ता समाणा कण्ह वासुदेव एव वयासी—एव खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गगा महाणई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण गवेसण त चेव जाव णूमेमो तुब्भे पडिवाले माणा चिट्ठामो)

૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ તે ગગા મહાનદીને તરીને પાર પહોંચી ગયા પાર પહોંચીને તેઓ જ્યા પાચે પાડવો હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે બહુ જ બળવાન છો કેમકે તમે લોકોએ ૬૨" યોજન વિસ્તીર્ણ આ ગગા મહાનદીને હાથો વડે તરીને પાર કરી છે પણ એની સાથે આ એક નવાઈ જેવી વાત છે કે તમે આટલા બધા બળવાન હોવા છતા પણ પદ્મનાભ રાજાને

प्रतिषेध्य-हतमथितमवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकः यावत् प्रतिषेध्य = संग्रामात् प्रतिनिवर्त्य-पद्मनाभ विजित्येत्यर्थः, अमरकङ्का राजधानी सभग्नतोरणा यावद् विनिपातिता-विध्वंसिता,तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=भवद्भ्यः प्रदत्ता:, 'तयाणं' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम 'माहप्पं' माहात्म्य=महत्त्वं बलं, 'ण विण्णाय' न विज्ञातम् 'इयाणिं' इदानीम्-अस्मिन् समये 'जाणिस्सह' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्ड 'परामुसइ' परामृशति-गृह्णाति पञ्चानां पाण्डवानां रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा 'णिव्विसए आणवेइ' निर्विषयान् आज्ञापयति-विषयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्यातां इति निर्विषयास्तान्, यूयं मम देशात् निर्गच्छत, इत्याज्ञापयति स्म' इत्यर्थः । आज्ञाप्य तत्र खलु 'रहमद्दणे णाम कोट्टे णिविट्ठे' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्ट'-रथमर्दनपुर नाम नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तरं स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वकः=निज, 'खधावारे' स्कन्धावारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरणसैनिकेन सार्धम् अभिसमन्वागतः=मिलितश्चाप्यभवत् । ततः खलु स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुप्रविशति ॥सू० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने हाथ से लाकर तुमलोगों को दिया उस समय तुमलोगो ने मेरे बल को नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह दडे को उठाया-और उससे पाचो पाडवों के रथों को चूर २ कर दिया। चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी । आज्ञा देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा दिया । इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कधावार था वहाँ

જમીનદોસ્ત કરી નાખી તેની રાજધાની અમરકકા નગરીને નષ્ટ કરી નાખી અને તેની પાસેથી દ્રૌપદીને લાવીને તમને સોંપી દીધી તે વખતે તમે લોકો મારા બળને જાણી શકયા નહિ તો હવે મારા બળને તમે જુઓ-આમ કહીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે લોહદડને હાથમા લીધો અને તેનાથી તેમણે પાચે પાડવોના રથોના ભૂકેભૂકા ઉડાવી દીધા રથોને નષ્ટ કરીને તેમણે પાચે પાડવોને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી આજ્ઞા આપીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે તે સ્થળેજ એક રથમર્દન નામે નગર વસાવ્યુ ત્યારપછી તે કૃષ્ણવાસુદેવ જ્યા પોતાના સૈન્યની છાવણી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના સૈનિકોને

प्रयुक्ता भ्रुकुटिं ललाटे उन्नीय सदर्पम्, एवमवादीत्–अहो–आश्चर्यं खलु 'जया' यदा–यस्मिन् समये, मया लवणसमुद्रः 'दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिण्णं' द्वियोजनशतसहस्रविस्तीर्णं द्विलक्षयोजनपरिमित विस्तीर्णं 'वीइवइत्ता' व्यतिव्रज्य–समुल्लङ्घ्य, पद्मनाभं राजानं 'हयमहिय–जाव पडिसेहित्ता' हतमथित–यावत्

लिय एव वयासी–अहोण जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सा विच्छिन्नं वीइवइत्ता पउमणाभं हयमहिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्गा० दोवई साहत्थि उवणीया तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विण्णायं इयाणि जाणिस्सह, त्ति कट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्ह पंडवाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थ णं रहमद्दणे णामं कोट्टे णिवेट्ठे, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था, से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवईए णयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ) उन पांचों पाडवों के मुख से इस कथन रूप अर्थ को सुनकर और उसे अपने हृदय में अवधारित कर उन कृष्णवासुदेव को एकदम क्रोध आ गया। त्रिवलियुक्त उनकी दोनों भृकुटियां ललाटतट पर चढ गई। उसी समय उन्हों ने उन पाडवों से कहा यह बड़े आश्चर्य की बात है–जिस समय मैंने २ दो लाख योजन विस्तारवाले लवणसमुद्र को उल्लंघन कर पद्मनाभ राजा को संग्राम मे जीता–उस की सेना को हत मथित किया–राजचिन्हस्वरूप उसकी

सयसहस्सा विछिन्नं वीइवइत्ता पउमणाभं हय महिय जाव पडिसेहित्ता अमरकंका संभग्गा० दोवई साहत्थि उवणीया तयाणं तुब्भेहिं मम माहप्पं ण विण्णायं इयाणिं जाणिस्सह, त्तिकट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्ह पंडवाणं रहे चूरेइ, चूरित्ता णिव्विसए आणवेइ आणवित्ता तत्थणं रहमद्दणे णामं कोट्टे णिवेट्ठे, तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेण सद्धिं अभिसमन्नागए यावि होत्था तएणं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवइ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अणुपविसइ)

તે પાંચે પાંડવોના મુખથી આ કથનરૂપ અર્થને સાંભળીને અને તેને પોતાના હૃદયમાં અવધારિત કરીને તે કૃષ્ણવાસુદેવ એકદમ ક્રોધાવિષ્ટ થઈ ગયા ત્રિવલિયુક્ત તેમના બંને ભમ્મરો વક્ર થઈ ગયા તેમણે તે જ સમયે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે આ ખરેખર નવાઈ જેવી વાત છે કે જ્યારે મેં ૨ લાખ યોજન વિસ્તીર્ણ લવણ સમુદ્રને ઓળંગીને પદ્મનાભ રાજાને યુદ્ધમાં જીત્યો, તેની સેનાને મથી નાખી, રાજચિહ્ન સ્વરૂપ તેની પ્રશસ્ત ધ્વજા પતાકાઓને

प्रतिषे य-हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताक यावत् प्रतिषेध्य = सग्रामात् प्रतिनिवर्त्य-पद्मनाभ विजित्येत्यर्थः, अमरकका राजधानी सभग्नतोरणा यावद् विनिपातिता-विध्वसिता,तथा-द्रौपदी स्वहस्तेनोपनीता=भवद्भ्यः प्रदत्ता., ' तयाण ' तदा=तस्मिन् समये खलु युष्माभिर्मम ' माहप्प ' माहात्म्य=महत्त्वं बल, ' ण विण्णाय ' न विज्ञातम् ' इयाणिं ' इदानीम्-अस्मिन् समये ' जाणि स्सह ' ज्ञास्यथ, इति कृत्वा=इत्युक्त्वा, लोहदण्ड ' परामुसइ ' परामृशति-गृह्णाति पञ्चाना पाण्डवाना रथान् चूर्णयति, चूर्णयित्वा ' णिव्विसए आणवेइ ' निर्विप यान् आज्ञापयति-विषयात् स्वदेशतो निर्गताः बहिर्याता इति निर्विषयास्तान्, यूय मम देशात् निर्गच्छत, इत्याज्ञापयति स्म ' इत्यर्थ । आज्ञाप्य तत्र खलु ' रहमदणे णाम कोट्टे णिविट्ठे ' रथमर्दननामा कोष्ठो निविष्टः-रथमर्दनपुर नाम नगर स्थापितम् ।

ततस्तदनन्तर स कृष्णो वासुदेवो यत्रैव स्वक=निज , ' खधावारे ' स्कन्धा-वारः-सेनानिवेशस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य स्वकेन स्कन्धावारेण-सोपकरण-सैनिकेन सार्धम् अभिसमन्वागतः=मिलितश्चाप्यभवत् । ततः खलु स कृष्णो वासु-देवो यत्रैव द्वारवती नगरी, तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य, अनुप्रविशति ॥सू० ३१॥

प्रशस्त ध्वजा पताकाओं को जमीन में मिलादिया-उस की राजधानी अमरकका नगरी को ध्वस्त कर दिया, तथा उससे द्रौपदी को अपने हाथ से लाकर तुमलोगों को दिया उस समय तुमलोगों ने मेरे बल को नहीं जाना ? जो अब जानोगे-ऐसा कहकर उन वासुदेव कृष्ण ने लोह दडे को उठाया-और उससे पाचो पाडवों के रथों को चूर २ कर दिया। चूर २ कर के फिर उन्हें देश से बाहिर हो जाने की आज्ञा देदी। आज्ञा देकर उन कृष्ण वासुदेव ने वहीं पर एक रथमर्दन नाम का नगर बसा दिया। इस के बाद वे कृष्ण वासुदेव जहाँ अपना स्कधावार था वहाँ

જમીનદોસ્ત કરી નાખી તેની રાજધાની અમરકકા નગરીને નષ્ટ કરી નાખી અને તેની પાસેથી દ્રૌપદીને લાવીને તમને સોંપી દીધી તે વખતે તમે લોકો મારા બળને જાણી શકયા નહિ તો હવે મારા બળને તમે જુઓ-આમ કહીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે લોહદડને હાથમા લીધો અને તેનાથી તેમણે પાચે પાડવોના રથોના ભૂકેભૂક્કા ઉડાવી દીધા રથોને નષ્ટ કરીને તેમણે પાચે પાડવોને દેશથી બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા આપી આજ્ઞા આપીને તે કૃષ્ણવાસુદેવે તે સ્થળેજ એક રથમર્દન નામે નગર વસાવ્યુ ત્યારપછી તે કૃષ્ણવાસુદેવ જ્યા પોતાના સૈન્યની છાવણી હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ પોતાના સૈનિકોને

मूलम्–तएणं ते पंच पडवा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता जेणेव पंडू तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता करयल एवं वयासी–एवं खलु ताओ! अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता, तएणं पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी–कहण्णं पुत्ता! तुब्भे कण्हेण वासुदेवेण णिव्विसया आणत्ता?, तएणं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी–एवं खलु ताओ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता तएणं से कण्हे अम्हे एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! गंगामहाणइं उत्तरह जाव चिट्ठह ताव अहं एवं तहेव जाव चिट्ठामो, तएणं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण तं चेव सव्वं नवरं कण्हस्स चिंता ण जुज्जइ जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ, तएणं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी–दुट्ठु णं पुत्ता! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं, तएणं से पंडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स णिवेदेहि- एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं

आये। वहाँ आकर वे अपने सैनिकों के साथ मिले। बाद में जहाँ द्वारावती नगरी थी उस ओर चल दिये वहाँ पहुँच कर वे द्वारावती नगरी में प्रविष्ट हुए॥ सू० ३१॥

મળ્યા, ત્યારબાદ તેઓ જે તરફ દ્વારાવતી નગરી હતી તે તરફ રવાના થયા ત્યાં પહોંચીને તેઓ દ્વારાવતી નગરીમાં પ્રવિષ્ટ થયા ॥ સૂ

वा गच्छंतु ?, तएण सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थि-खंध दुरूहइ दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसतु णं पिउत्था! किमागमणपओयणं ?, तएण सा कोंती कण्ह वासुदेव एवं वयासी- एव खलु पुत्ता ! तुम पच पंडवा णिव्विसया आणत्ता तुम च णं दाहिणड्ढभरह जाव विदिस वा० गच्छतु ?, तएण से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एव वयासी -अपूईवयणाण पिउ-त्था ! उत्तमपुरिसा वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी त गच्छतु ण देवाणुप्पिया ! पंच पडवा दाहिणिल्लं वेलाऊल तत्थ पडुमहुर णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्तिकट्टु कोंति देविं सक्कारेइ सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ, तएण सा कोंती देवी जाव पडुस्स एयमट्ठं णिवेदेइ, तएणं पडू पच पडवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेलाऊल तत्थ णं तुब्भे पडुमहुरं णिवेसेह, तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेति सवलवाहणा हयगय० हत्थिणाउराओ पडि णिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवा-गच्छइ उवागच्छित्ता पडुमहुरं नगरिं निवेसेति निवेसित्ता तत्थ णं ते विपुलभोगसमिति समण्णागया यावि होत्था ॥ सू० ३२ ॥

टीका—'तएण ते इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव हस्तिनापुर नगर तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यत्रैव पाण्डू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

–. तएण ते पच पडवा इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (ते पच पडवा) वे पाचो पाडव (जेणेव हत्थिणाउरे) जहा हस्तिनापुर नगर था (तेणेव उवागच्छति) वहां

तएण ते पच पडवा इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (ते पच पडवा) ते पाचे पाडवो (जेणेव हत्थिणा उरे) ज्या हस्तिनापुर नगर हतु (तेणेव उवागच्छति) त्या आव्या (तथा

उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवं=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः-एवं खलु हे तात ! वयं कृष्णेन निर्विषयाः=विषयात् मम देशाद् बहिर्निर्गताः आज्ञप्ताः=कृष्णोऽस्मान् देशाद् बहिः निर्गन्तुमाज्ञप्तवानित्यर्थः। ततः खलु पाण्डुराजा तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-'कहण्णं' कथं केन कारणेन खलु हे पुत्र ! यूयं कृष्णेन निर्विषया आज्ञप्ताः ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुराजानम् एवमवदन्-एवं खलु हे तात ! वयममरकङ्कातः प्रतिनिवृत्ता लवणसमुद्रं 'दोण्णि जोयणसय सहस्साइं' द्वियोजनशतसहस्राणि द्विलक्षयोजनपरिमितं 'वीइवइत्ता' व्यतिव्रजिताः-उल्लङ्घिताः। ततः खलु स कृष्णो

आगए (उवागच्छित्ता) वहां आकर के (जेणेव पंडू) वे जहां पांडु राजा थे (तेणेव उवागच्छंति) वहां गये (उवागच्छित्ता) वहां जाकर (करयल० एवं वयासी) उन्हों ने अपने २ दोनों हाथों को जोड़कर उनसे इस प्रकार कहा-(एवं खलु ताओ !) हे पिताजी ! सुनो-(अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता) हमलोगों को कृष्ण वासुदेव ने देश से निकल जने को कहा है (तएणं पंडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) तब पांडु राजा ने उन पांचों पांडवों से इस प्रकार कहा-(कहण्णं पुत्ता तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! किस कारण को लेकर कृष्ण वासुदेव ने तुमलोगों को देश से बाहिर निकल जाने को कहा है (तएणं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी) तब उन पांचों पांडवों ने पांडु राजा से इस प्रकार कहा-(एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे तात !

गच्छित्ता) त्यां आवीने (जेणेव पंडू) तेओ ज्यां पांडु राजा हता (तेणेव उवागच्छंति) त्यां गया (उवागच्छित्ता) त्यां जईने (करयल० एवं वयासी) तेमणे पोतपोताना बन्ने हाथो जोडीने तेमने आ प्रमाणे विनंती करी के (एवं खलु ताओ) हे पिता ! साभळो, (अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता) कृष्णवासुदेवे अमने देशथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे (तएणं पंडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) त्यारे पांडु राजाए पांचे पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं के-(कहण्णं पुत्ता तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! कृष्णवासुदेवे शा कारणथी तमने देशमांथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे ? (तएणं ते पंच पंडवा पंडुरायं एवं वयासी) त्यारे ते पांचे पांडवोए पांडु राजाने आ प्रमाणे कह्युं के-(एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवण-समुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे [illegible] ! साभळो,

ऽस्मान् एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः! गङ्गामहानदीमुत्तरत, यावत् तिष्ठत। तावं अह एव तहेव 'जाव चिट्ठामो' एवं यथा कृष्णवासुदेवस्य वाक्य पूर्वमुक्त तथैवात्र बोध्यम्-तावदह सुस्थित लवणाधिपतिं पश्यामीति। 'जाव चिट्ठामो' यावत्तिष्ठामः-अत्र यावच्छब्देनैवं योजनीयम्-ततः खलु वय कृष्णवासुदेवेनैवमुक्ताः सन्तो नौकया गङ्गामहानदीमुत्तीर्य, कृष्णो बाहुभ्यां गङ्गा महानदीमुत्तरितु समर्थो न वेति विज्ञातु ता नौका सगोपितवन्त, ततः कृष्ण प्रतीक्षमाणास्तिष्ठाम इति। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः सुस्थित लवणाधिपतिं दृष्ट्वा, 'त चेव सव्व' तदेव सर्व-गङ्गामहानद्यास्तटे समागत्य, एकार्थिका नाव-

---

सुनो-बात इस प्रकार है-जब हमलोग अमरकका नगरी से पीछे आकर २, दो लाख योजन विस्तार वाले लवणसमुद्र को पार कर चुके (तएण) तब (से कण्हे अम्हं एव वयासी) उन कृष्ण वासुदेव ने हमलोगों से इस प्रकार कहा-(गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! गगा महाणइ उत्तरह जाव चिट्ठह-ताव-अह एव तहेव जाव चिट्ठामो) हे देवानुप्रियो! तुम लोग चलो और गगा महानदी को पारकरो-तब तक मैं सुस्थित देव से मिलकर और आज्ञा प्रासकर आता हूँ। कृष्ण वासुदेव द्वारा इस प्रकार आज्ञप्त हुए हमलोगों ने नौका से गगा महानदी को पार करके वही पर उस नौका को छुपा दिया-इस अभिप्रायसे कि देखें कृष्ण वासुदेव अपने हाथों से तैर कर इस गगा महानदी को पार कर ने में समर्थ हो सकते हैं या नही। नौका को छिपाकर हमलोग वही पर उनकी प्रतीक्षा करते हुए ठहरे। (तएण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठिय लवणाहिवइ

વાત આ પ્રમાણે છે કે જ્યારે અમે અમરકકા નગરીથી પાછા વળતા ૨ લાખ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળા લવણુ સમુદ્રને પાર કરી ચૂકયા (तएण) ત્યારે (से कण्हे अम्ह एव वयासी) તે કૃષ્ણુવાસુદેવે અમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-(गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया! गगा महाणइ उत्तरह जाव चिट्ठह-ताव अह एव तहेव जाव चिट्ठामो) હે દેવાનુપ્રિયો! તમે જાઓ અને ગગા મહાનદીને પાર કરો તેટલામા હુ સુસ્થિત દેવને મળીને અને તેમની પાસેથી આજ્ઞા મેળવીને આવુ છુ આ પ્રમાણે કૃષ્ણુવાસુદેવ વડે આજ્ઞાપિત થયેલા અમે નૌકા વડે ગગા મહાનદીને પાર કરીને ત્યા જ તે નૌકાને છુપાવી દીધી નૌકાને છુપાવવા પાછળ અમારો એ જાતનો આશય હતો કે કૃષ્ણુવાસુદેવ પોતાના હાથોથી તરીને ગગા મહાનદીને પાર કરી શકે છે કે નહિ? નૌકાને છુપાવીને અમે ત્યા જ તેમની પ્રતીક્ષા કરતા રોકાઈ ગયા (तवण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं

उपागत्य करतलपरिगृहीतदशनखं शिरआवर्तं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा, एवम्=वक्ष्यमाणप्रकारेण, अवादिषुः–एवं खलु हे तात ! वयं कृष्णेन निर्विषयाः=निर्विषय मम देशाद् बहिर्निर्गताः आज्ञप्ताः=कृष्णोऽस्माद् देशाद् बहिः निर्गन्तुमाज्ञप्तवानित्यर्थः। ततः खलु पाण्डुः राजा तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्–'कहण्णं' कथं केन कारणेन खलु हे पुत्र ! यूयं कृष्णेन निर्विषया आज्ञप्ताः ? ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुं राजानम् एवमवदन्–एवं खलु हे तात ! वयममरकङ्कातः प्रतिनिवृत्ता लवणसमुद्रं 'दोण्णिजोयणसय सहस्साइं' द्वियोजनशतसहस्राणि द्विलक्षयोजनपरिमितं 'वीइवइत्ता' व्यतिव्रजिताः–उल्लङ्घिताः। ततः खलु स कृष्णो

आगए (उवागच्छित्ता) वहां आकर के (जेणेव पंडू) वे जहां पांडु राजा थे (तेणेव उवागच्छंति) वहां गये (उवागच्छित्ता) वहां जाकर (करयल०एवं वयासी) उन्हों ने अपने २ दोनों हाथों को जोड़कर उनसे इस प्रकार कहा–(एवं खलु ताओ !) हे पिताजी ! सुनो–(अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता) हमलोगों को कृष्ण वासुदेव ने देश से निकल जने को कहा है (तएणं पंडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) तब पांडु राजा ने उन पांचों पांडवो से इस प्रकार कहा–(कहण्णं पुत्ता तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! किस कारण को लेकर कृष्ण वासुदेव ने तुमलोगों को देश से बाहिर निकल जाने को कहा है (तएणं ते पंच पंडवा पंडुराया एवं वयासी) तब उन पांचो पांडवों ने पांडु राजा से इस प्रकार कहा–(एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवणसमुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे तात !

गच्छित्ता) त्यां आवीने (जेणेव पंडू) तेओ ज्यां पांडु राजा हता (तेणेव उवागच्छंति) त्यां गया (उवागच्छित्ता) त्यां जईने (करयल० एवं वयासी) तेमणे पोतपोताना बन्ने हाथो जोडीने तेमने आ प्रमाणे विनंती करी के (एवं खलु ताओ) हे पिता ! सांभळो, (अम्हे कण्हेणं णिव्विसया आणत्ता) कृष्णवासुदेवे अमने देशथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे (तएणं पंडुराया पंच पंडवे एवं वयासी) त्यारे पांडु राजाए पांचे पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं के–(कहण्णं पुत्ता तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं णिव्विसया आणत्ता) हे पुत्रो ! कृष्णवासुदेवे शा कारणथी तमने देशमांथी बहार जता रहेवानी आज्ञा आपी छे ? (तएणं ते पंच पंडवा पंडुराया एवं वयासी) त्यारे ते पांचे पांडवोए पांडु राजाने आ प्रमाणे कह्युं के–(एवं खलु ताओ ! अम्हे अमरकंकाओ पडिणियत्ता लवण-समुद्दं दोन्नि जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता) हे पिता ! सांभळो,

नगरीं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! युष्माभिः पञ्च पाण्डवा निर्विषयाः देशनिष्कासिता' आज्ञप्ताः, यूयं च खलु हे देवानुप्रियाः ! दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिनः । 'तं' तत्=तस्मात् संदिशन्तु=कथयन्तु हे देवानुप्रियाः ! ते पञ्च पाण्डवाः कतरां दिशं विदिशं वा गच्छन्तु ? भवतामेव सर्वे देशाः, तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्त । ततः खलु सा कुन्ती पाण्डुना राज्ञैवमुक्ता सती हस्तिस्कन्धं दूरोहति-आरोहयति-दुरुह्य ' जहादेवा '

देवाणुप्पिया ! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु ?) तब पांडु राजा ने उन पांचों पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगों ने यह सुन्दर काम नहीं किया जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हें नहीं रुचने वाला काम किया इस प्रकार कहकर पांडु राजा ने उसी समय कुंती देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो -कि आपने पांच पांडवों को देश से बाहिर निकल जानेके लिये आज्ञा दी है-सो हे देवानुप्रिय ! आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं-अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें । जब आपके ही सर्व देश हैं-तो ये कहां जावें आप कहें । (तएणं सा कोंती

विता एवं वयासी-गच्छहइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! बारवं कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु ?)

त्यारे पांडु राजाए ते पांचे पांडवोने आ प्रमाणे कह्युं के तमे लोकोए कृष्णवासुदेवनुं बुरूं करीने सारूं कर्युं नथी तेमने अणगमतुं काम तमे कर्युं छे आ प्रमाणे कहीने पांडु राजाए तेज वखते कुंती देवीने बोलावी बोलावीने तेमने आ प्रमाणे कह्युं के हे देवानुप्रिये ! तमे द्वारावती नगरीमां कृष्णवासुदेवनी पासे जाओ अने तेमने विनंती करो के तमे पांचे पांडवोने देशथी बहार नीकळी जवानी आज्ञा आपी छे हे देवानुप्रिय ! तमे दक्षिणार्ध भरतक्षेत्रना अधिपति छो तो बतावो के तेओ कई दिशा के विदिशा तरफ जाय ज्यारे बधा देशो तमारा ज छे त्यारे बतावो के आ लोको क्यां जाय ?

महत्या एकेन बाहुना रथं सतुरग ससारथिं गृहीत्वा, एकेन बाहुना गङ्गामहानदी समुत्तीर्य, समागतः। 'नवरं कण्हस्स चिंता न जुज्जइ' नवरं कृष्णस्य चिन्ता न युज्यते नवरं=विशेषस्तु हे तात! नौकाया संगोपिताया सत्याः कृष्णः केनोपायेन गङ्गामहानदीं तरिष्यति इति चिन्ताऽस्माभिर्न युज्यते=न क्रियतेस्म, अनेनापराधेन 'जाव अम्हे णिव्विसए आणवेइ' यावत्-रथाश्चूर्णीकृत्याऽस्मान् निर्विषयान् आज्ञापयति। ततस्तदनन्तरं स पाण्डू राजा तान् पञ्चपाण्डवानेवमवादीत्-'दुट्ठुणं' दुष्ठु=अशोभनं खलु हे पुत्राः! कृतं युष्माभिः कृष्णस्य वासुदेवस्य विप्पियं' विप्रियम्-अनिष्टम् कुर्वद्भिः, ततः खलु स पाण्डू राजा कुन्तीं देवीं शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवादीत्-गच्छ खलु त्वं हे देवानुप्रिये! द्वारवतीं

दट्ठुण तचेव सव्वं-नवरं कण्हस्स चिंता न जुज्जति जाव अम्हे णिव्विसये आणवेइ) बाद में कृष्ण वासुदेव लवणसमुद्राधिपति सुस्थित देव से मिलकर ज्यों ही गंगा महानदी के तट पर आये-तो उन्हें वह नौका नहीं मिली-इस कारण वे १ एक हाथ से तुरग एवं सारथि युक्त रथ को ले दूसरे हाथ से गंगा महानदी को तैर कर जहां हमलोग थे-वहां आ गये। "कृष्णजी किस तरह गंगा महानदी को पार करेंगे" यह विचार हमलोगों ने नौका को छिपाते समय नहीं किया। इसी अपराध से उन्हों ने हमारे रथों को चकना चूर कर देश से बाहिर निकल जाने के लिये आज्ञा दी है। (तएणं से पंडुराया ते पंच पंडवा एवं वयासी-दुट्ठुणं पुत्ता! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं-तएणं से पंडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुमं

લવણાહિવઇ દટ્ઠુણ તં ચેવ સવ્વં-નવરં કણ્હસ્સ ચિંતા ન જુજ્જતિ જાવ અમ્હે ણિવ્વિસયે આણવેઇ) ત્યારપછી કૃષ્ણવાસુદેવ લવણ સમુદ્રના અધિપતિ સુસ્થિત દેવને મળીને જ્યારે ગંગા મહાનદીના કિનારા ઉપર આવ્યા ત્યારે તેમને નૌકા જડી નહિ ત્યારે તેઓ એક હાથમાં ઘોડા અને સારથિ સહિત રથને ઉંચકીને બીજા હાથથી ગંગા મહાનદીને તરીને જ્યાં અમે હતા ત્યાં આવી ગયા "કૃષ્ણવાસુદેવ કેવી રીતે ગંગા મહાનદીને પાર કરશે" નૌકાને છુપાવતાં અમે આ વિષે વિચાર જ કર્યો નહોતો આ અપરાધથી તેમણે અમારા રથોને નષ્ટ કરી નાખ્યા અને અમને દેશની બહાર જતા રહેવાની આજ્ઞા કરી છે

(तएणं से पंडुराया ते पंच पंडवे एवं वयासी-दुट्ठणं पुत्ता! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं-तएणं से पंडुराया कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दा

नगरीं, कृष्णस्य वासुदेवस्य निवेदय, एवं खलु हे देवानुप्रियाः! युष्माभिः पञ्च पाण्डवा निर्विषयाः देशनिष्कासिताः आज्ञप्ताः, यूयं च खलु हे देवानुप्रियाः! दक्षिणार्धभरतस्य स्वामिनः। 'त' तत्=तस्मात् संदिशन्तु=कथयन्तु हे देवानुप्रिया! ते पञ्च पाण्डवाः कतरां दिशं विदिशं वा गच्छन्तु? भवतामेव सर्वे देशाः, तर्हि इमे कुत्र गमिष्यन्तीति कथयन्तु भवन्त। ततः खलु सा कुन्ती पाण्डुना राज्ञैवमुक्ता सती हस्तिस्कन्धं दूरोहति-आरोहयति-दूरुह 'जहाहेट्ठा'

देवाणुप्पिया! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसिं वा गच्छंतु?) तब पांडु राजा ने उन पांचों पांडवों से इस प्रकार कहा तुम लोगो ने यह सुन्दर काम नहीं किया जो इस प्रकार से कृष्ण वासुदेव का अनिष्ट किया-उन्हें नहीं रुचने वाला काम किया इस प्रकार कहकर पांडु राजा ने उसी समय कुंती देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये! तुम द्वारावती नगरी में कृष्ण वासुदेव के पास जाओ और उनसे निवेदन करो -कि आपने पांच पांडवों को देश से बाहिर निकल जानेके लिये आज्ञा दी है-सो हेदेवानुप्रिय! आप दक्षिणार्ध भरत क्षेत्र के अधिपति हैं- अतः कहें कि वे कौनसी दिशा अथवा विदिशा की ओर जावें। जब आपके ही सर्व देश हें-तो ये कहां जावें आप कहें। (तएणं सा कोंती

विता एवं वयासी-गच्छहइ णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं कण्हस्स वासुदेवस्स निवेदेहि एवं खलु देवाणुप्पिया! तुम्हे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं देवाणुप्पिया! दाहिणड्ढभरहस्स सामी, तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! ते पंच पंडवा कयरं दिसिं वा विदिसं वा गच्छंतु?)

ત્યારે પાંડુ રાજાએ તે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે તમે લોકોએ કૃષ્ણવાસુદેવનું બુરૂં કરીને સારૂં કર્યું નથી તેમને અણગમતું કામ તમે કર્યું છે આ પ્રમાણે કહીને પાંડુ રાજાએ તે જ વખતે કુંતી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે! તમે દ્વારાવતી નગરીમાં કૃષ્ણવાસુદેવની પાસે જાઓ અને તેમને વિનંતી કરો કે તમે પાંચે પાંડવોને દેશથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા આપી છે હે દેવાનુપ્રિય! તમે દક્ષિણાર્ધ ભરતક્ષેત્રના અધિપતિ છો તો બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય જ્યારે બધા દેશો તમારા જ છે ત્યારે બતાવો કે આ લોકો ક્યાં જાય?

यथा अधः, यथापूर्वं द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि बोध्यम् यावत् संदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैव बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन सत्कृता स्नाता कृतभोजना सुखासनवरगताऽभवत् इति, ततस्तां कृष्ण पृच्छति संदिशन्तु=कथयन्तु खलु हे

पडुणा एवं वुत्ता समाणी, हत्थिखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढभरहं जाव विदिसं वा गच्छंतु ? तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीदेविं एवं वयासी अपूईवयणा णं पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, बलदेवा, चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्टु कोंतीदेविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)
पांडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी हाथी पर चढी और चढ कर जिस प्रकार पहिले यह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी यह वहां पहुँची। यहां यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका संबन्ध लगा लेना चाहिये-जब कुंती द्वारावती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया। बडे ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुंतीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निपट कर आनंद के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुखासन पर

(तएणं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणि, हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसंतु णं पिउत्था ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पंडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढ भरहं जाव विदिसं वा गच्छंतु ? तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंती देविं एवं वयासी-अपूई वयणा णं पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, बलदेवा, चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पंडुमहुरं णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्टु कोंती देविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)

આ પ્રમાણે પાંડુ વડે આજ્ઞાપિત થયેલી કુંતી દેવી હાથી ઉપર સવાર થઈ અને સવાર થઈને પહેલા જેમ તે દ્વારાવતી નગરી ગઈ હતી તેમજ અત્યારે પણ પહોંચી અહીં યાવત્ શબ્દથી આ જાતનો પાઠ સમજનો જોઈએ કે જ્યારે કુંતી દ્વારાવતી નગરીમાં આવી ત્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તેમનો ખૂબ જ સત્કાર કર્યો બહુ જ ઠાઠથી તેમનો પ્રવેશોત્સવ ઉજવ્યો કુંતીએ પણ સ્નાન વગેરે નિત્યકર્મોથી પરવારીને સુખેથી ચતુર્વિધ આહાર કર્યો ત્ય[illegible] મ

पितृष्वसः! किमागमनप्रयोजनम्?, ततः खलु सा कुन्ती कृष्णं वासुदेवमेवमवादीत्—एवं खलु हे पुत्र! त्वया पञ्च पाण्डवा निर्विषया आज्ञप्ताः त्वं च खलु दक्षिणार्धभरतस्य यावत् स्वामी, तत् कथय ते पञ्च पाण्डवाः कतरां दिशं विदिशं वा गच्छन्तु?। ततः खलु स कृष्णो वासुदेवः कुन्तीं देवीमेवमवादीत्–' अपूइवयणा णं ' अपूतिवचनाः=सकृद्वचनाः खलु हे पितृष्वसः! उत्तमपुरुषाः वासुदेवा बलदेवाश्चक्रवर्तिनः, ' तं ' तत्–तस्मात् गच्छन्तु खलु हे देवानुप्रिये! पञ्च पाण्डवाः ' दाहिणिल्लं ' वेलाऊलं ' दाक्षिणात्यं वेलाकूलं–दक्षिणसमुद्रतटम्, तत्र ' पंडुमहुरं ' पाण्डुमथुरां नगरीं ' णिवेसंतु ' निवेशयन्तु, ममादृष्टसेवका भवन्तु,

उन्होंने आराम किया। इतने में कृष्ण वासुदेव ने जब वे विश्राम कर चुकीं उन से पूछा–कहिये भुआ जी! किस प्रयोजन को लेकर यहां आपका आगमन हुआ है तब कुन्ती ने कृष्ण वासुदेव से इस प्रकार कहा हे पुत्र! आनेका प्रयोजन इस प्रकार है–तुमने जो पांचों पांडवों को अपने देश से बाहिर निकल जाने की आज्ञा दी है–सो इस विषय में यह पूछना है कि तुम तो दक्षिणार्ध भरत के अधिपति हो अतः हमें समझाइये कौनसी दिशा या विदिशा में जावें? इस प्रकार कुन्तीदेवीके मुखसे सुनकर कृष्ण वासुदेव ने उससे ऐसा कहा–हे भुआ जी–उत्तम पुरुष, वासुदेव, बलदेव, एवं चक्रवर्ती ये सब अपूतिवचन वाले होते हैं–जो कुछ कहते हैं वह एक ही बार कहते हैं–उसमें परिवर्तन नहीं होता है–इसलिये हे देवानुप्रिय! पांचों पांडव दक्षिणसमुद्र पर जावें और वहां पांडु मथुरा नगरी को बसावें–स्थापित करें–और मेरे अदृष्ट सेवक

માટે તેમણે સુખાસન ઉપર આરામ કર્યો જ્યારે તેઓ સારી રીતે વિશ્રામ કરી ચૂક્યા ત્યારે તેમને કૃષ્ણવાસુદેવે પૂછયું કે–બોલો, ફોઈબા, શા કારણથી તમે અહીં પધાર્યા છો? ત્યારે કુંતીએ કૃષ્ણવાસુદેવને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્ર! હું એટલા માટે આવી છું કે તમે પાંચે પાંડવોને પોતાના દેશમાંથી બહાર નીકળી જવાની આજ્ઞા કરી છે તો આ વિષે મારે આ વાતનું સ્પષ્ટી કરણ કરવું છે કે તમે તો દક્ષિણાર્ધ ભરતના અધિપતિ છો, તો આવી પરિસ્થિતિમાં તમે જ અમને બતાવો કે તેઓ કઈ દિશા કે વિદિશા તરફ જાય? આ પ્રમાણે કુંતી દેવીના મુખથી બધી વાત સાંભળીને કૃષ્ણવાસુદેવે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ફોઈબા! વાસુદેવ, બળદેવ અને ચક્રવર્તી આ બધા ઉત્તમ પુરૂષો અપૂતિ વચનવાળા હોય છે–તેઓ જે કંઈપણ કહે છે તે એકજ વાર કહે છે તેમાં કોઈ પણ જાતનો ફેરફાર થઈ શકતો નથી એટલા માટે હે દેવાનુપ્રિયે! પાંચે પાંડવો દક્ષિણ સમુદ્ર તરફ જાય અને ત્યાં પાંડુ મથુરા

यथा अधः, यथापूर्वं द्वारवतीमागता तथाऽत्रापि नो यम् यावत् संदिशन्तु-अत्र यावदित्यनेनैव बोध्यम्-द्वारवतीं नगरीमागत्य कृष्णेन सत्कृता स्नाता कृतभोजना सुखासनवरगताऽभवत् इति, ततस्ता कृष्ण पृच्छति संदिशन्तु=कथयन्तु खलु हे

पडुणा एवं वुत्ता समाणी, हत्थिखंध दुरूहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसतु णं पिउत्था ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढभरह जाव विदिसं वा गच्छतु ? तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंतीदेविं एवं वयासी अपूईवयणा णं पिउत्था ! उत्तम पुरिसा वासुदेवा, बलदेवा, चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पडुमहुरं णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्टु कोंतीदेविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ) पाडु के द्वारा इस प्रकार कही गई वह देवी हाथी पर चढी और चढ कर जिस प्रकार पहिले वह द्वारवती आई थी उसी तरह अब भी वह वहां पहुँची। यहां यावत् शब्द से इस प्रकार पाठका संबन्ध लगा लेना चाहिये-जब कुंती द्वारावती नगरी में आई-तब कृष्ण वासुदेवने उनका खूब मनमाना सत्कार किया। बडे ठाट बाट से उनका प्रवेशोत्सव मनाया-। कुंतीने स्नान आदि दैनिक कार्यों से निपट कर आनंद के साथ चतुर्विध आहार किया बाद में विश्राम के निमित्त सुखासन पर

(तएणं सा कोंती पडुणा एवं वुत्ता समाणि, हत्थिखंध दुरुहइ, दुरूहित्ता जहा हेट्ठा जाव संदिसतु णं पिउत्था ! किमागमणपओयणं ? तएणं सा कोंती कण्हं वासुदेवं एवं वयासी-एवं खलु पुत्ता ! तुमे पंच पडवा णिव्विसया आणत्ता, तुमं च णं दाहिणड्ढ भरहं जाव विदिसं वा गच्छतु ? तएणं से कण्हे वासुदेवे कोंती देविं एवं वयासी-अपूई वयणा णं पिउत्था उत्तमपुरिसा देवा, बलदेवा, चक्कवट्टी तं गच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! पंच पडवा दाहिणिल्लं वेलाउलं तत्थ पडुमहुरं णिवेसंतु मम अदिट्ठसेवगा भवतु त्ति कट्टु कोंती देविं सक्कारेइ, सम्माणेइ, जाव पडिविसज्जेइ)

આ પ્રમાણે પાંડુ વડે આજ્ઞાપિત થયેલી કુંતી દેવી હાથી ઉપર સવાર થઈ અને સવાર થઈને પહેલા જેમ તે દ્વારાવતી નગરી ગઈ હતી તેમજ અત્યારે પણ પહોંચી અહીં યાવત્ શબ્દથી આ જાતનો પાઠ સમજવો જોઈએ કે જ્યારે કુંતી દ્વારાવતી નગરીમાં આવી ત્યારે કૃષ્ણવાસુદેવે તેમનો ખૂબ જ સત્કાર કર્યો બહુ જ ઠાઠથી તેમનો પ્રવેશોત્સવ ઉજવ્યો કુંતીએ પણ સ્નાન વગેરે નિત્યકર્મોથી પરવારીને સુખેથી ચતુર્વિધ આહાર કર્યો ર ^ વિશ્રામ

इति कृत्वा कुन्ती देवीं सत्कारयति सम्मानयति, सत्कार्य, सम्मान्य यावद् विसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिन समारुह्य हस्तिनापुरमागता यावत् पाण्डोराज्ञ एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डु राजा पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे पुत्राः ! 'दाहिणिल्ल वेलाऊल' दाक्षिणात्यवेलाकूल-दक्षिणसमुद्रतट, तत्र खलु यूय पाण्डुमथुरां नगरीं निवेशयत ।

होकर रहें । इस प्रकार कहकर उन्हों ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें अपने यहां से विदा दिया । (तएण सा कोंती देवी जाव पडुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सद्दावेइ, सद्दाविता एवं वयासी-गच्छह ण तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थण तुब्भे पडुमहुर णिवेसेह तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गज० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरिं णिवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था) वहां से हाथी के ऊपर बैठ कर कुन्तीदेवी हस्तिनापुरमें आगई, यावत पाडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्हों ने सुना दिया। इसके बाद पाडु राजा ने पांचों पाडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहां से दक्षिण दिग्वर्ती समुद्र तट पर जाओ और वहां पाडु मथुरा

નગરીને વસાવે અને મારા અદૃષ્ટ સેવકો થઈને ત્યાં નિવાસ કરે આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુંતી દેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુંતીદેવીને ત્યાંથી વિદાય કર્યા

(तएण सा कोंती देवी जाव पडुस्स एयमट्ठ निवेदेइ, तएण पडू पच पडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाऊल तत्थण तुब्भे पडुमहुर णिवेसेह तएण पच पडवा पडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडुमहुर नगरिं णिवेसेंति निवेसित्ता, तत्थण ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था)

ત્યાંથી હાથી ઉપર સવાર થઈને કુંતીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયા યાવત્ કૃષ્ણવાસુદેવની જે કંઈ આજ્ઞા હતી તે પાંડુ રાજાને કહી સંભળાવી ત્યારપછી પાંડુ રાજાએ પાંચે પાંડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્રો ! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યાં પાંડુ-મથુરા નગરીને વસાઓ પિતા પાંડુ ર ... આ પ્રમાણે

तत खलु पञ्च पाण्डवाः पाण्डो राज्ञो वचन यावत्-' तहत्ति ' तथाऽस्तु ' इति कृत्वा प्रतिशृण्वन्ति = स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य सबलवाहनाः-सैन्ययानसहिताः, हयगजरथपदातिसपरिवृताः, हस्तिनापुरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव ' दाहिणिल्लं वेलाऊल ' दाक्षिणात्य वेलाकूल तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पाण्डुमथुरा नगरीं निवेशयन्ति निवेश्य तत्र खलु ते विपुलभोगसमितिं समन्वागताश्चाप्यभवन् ॥ सू०३२ ॥

मूलम्-तएणं सा दोवई देवी अन्नया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था, तएण सा दोवई देवी णवण्हं मासाणं जाव सुरूव दारगं पयाया सूमालणिव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूव गुणनिष्फन्न नामधिज्ज करेति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्ह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णमधेज्ज पडुसेणे, तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो णामधेज्ज करेंति पडुसेणत्ति, बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समोसढा परिसा निग्गया पडवा निग्गया धम्म सोच्चा एव ज णवर देवाणुप्पिया ! दोवइ देवि आपुच्छामो पडुसेण च

नगरी को बसाओ। पिता पाडु राजा की इस आज्ञा को उन पाचों पाडवो ने " तहत्ति " कहकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर वे हय, गज, रथ, एव पदातिरूप चतुरंगिणी सेना से परिवृत होकर हस्तिनापुर नगर से निकले और निकलकर जहा दाक्षिणात्य वेलाकूल था वहां आये-वहां आकर उन्हो ने पाडु मथुरा नगरी को बसाया। बसाकर वहा के विपुल भोगों को भोगते हुए रहने लगे ॥ सू०३२ ॥

આજ્ઞાને તે પાચે પાડવોએ " તહત્તિ " કહીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કરીને તેઓ ઘોડા, હાથી, રથ અને પાયદળવાળી ચતુરંગિણી સેનાની સાથે હસ્તિનાપુર નગરથી બહાર નીકળ્યા-અને નીકળીને જ્યા દક્ષિણ દિશાનો સમુદ્રનો કિનારો હતો ત્યા પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેમણે પાડુ-મથુરા નગરી વસાવી વસાવીને તેઓ ત્યા પુષ્કળ કામભોગો ભોગવતા રહેવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર ૩૨ ॥

इति कृत्वा कुन्तीं देवीं सत्कारयति संमानयति, सत्कार्य, संमान्य यावद् विसर्जयति । ततः खलु सा कुन्ती देवी हस्तिन गमारुह्य हस्तिनापुरमागता यावद् पाण्डो राज्ञ एतमर्थं निवेदयति । ततः खलु पाण्डू राजा पञ्च पाण्डवान् शब्दयति शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूयं हे पुत्राः ! 'दाहिणिल्ल वेलाऊल' दाक्षिणात्यवेलाकूले-दक्षिणसमुद्रतटे, तत्र खलु यूयं पाण्डुमथुरां नगरीं निवेशयत ।

होकर रहें । इस प्रकार कहकर उन्हों ने कुन्तीदेवी का सत्कार किया सन्मान किया । सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें अपने यहां से विदा दिया । (तएणं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्ल वेलाउल तत्थणं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गज० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति,पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति, निवेसित्ता तत्थ णं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था) वहां से हाथी के ऊपर बैठ कर कुन्तीदेवी हस्तिनापुरमें आगई, यावत पांडुराजासे कृष्णवासुदेव के कथितआदेश को उन्हों ने सुना दिया। इसके बाद पांडु राजा ने पांचों पांडवों को बुलाया-और बुलाकर उनसे इस प्रकार कहा-हे पुत्रों-तुम यहां से दक्षिण दिग्वर्ती समुद्र तट पर जाओ और वहां पांडु मथुरा

નગરીને વસાવે અને મારા અદષ્ટ સેવકો થઈને ત્યાં નિવાસ કરે આ પ્રમાણે કહીને તેમણે કુંતી દેવીનો સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેમણે કુંતીદેવીને ત્યાંથી વિદાય કર્યાં

(तएणं सा कोंती देवी जाव पंडुस्स एयमट्ठं निवेदेइ, तएणं पंडू पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेलाऊलं तत्थणं तुब्भे पंडुमहुरं णिवेसेह तएणं पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो जाव तहत्ति पडिसुणेंति, सबलवाहणा हय गय० हत्थिणाउराओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं णिवेसेंति निवेसित्ता, तत्थणं ते विउलभोगसमितिसमण्णागया यावि होत्था)
ત્યાંથી હાથી ઉપર સવાર થઈને કુંતીદેવી હસ્તિનાપુર આવી ગયાં યાવત્ કૃષ્ણવાસુદેવની જે કંઈ આજ્ઞા હતી તે પાંડુ રાજાને કહી સંભળાવી ત્યારપછી પાંડુ રાજાએ પાંચે પાંડવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે પુત્રો ! તમે અહીંથી દક્ષિણ દિશા તરફના સમુદ્રના કિનારા ઉપર જાઓ અને ત્યાં પાંડુ-મથુરા નગરીને વસાવો પિતા પાંડુ ર -આ પ્રમાણે

टीका—' तएण सा ' इत्यादि । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदा चित् ' आवणगसत्ता ' आपन्नसत्त्वा=गर्भवती जाता चाप्यभवत् । ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु संपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुरूप सुन्दर दारक=बालक ' पयाया ' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक-सुमाल=सुकुमारपाणिपाद, ' णिव्वत्तबारसाहस्स ' निर्वृत्तद्वादशाहस्स-समाप्त द्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूप गुणनिष्पन्न नामधेय कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेव दारकः पञ्चानां पाण्डवाना पुत्रो द्रौपद्या आत्मजः, 'त' तत्-तस्माद्

-:तएण सा दोवई देवी इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) गर्भावस्थासे सपन्न हुई। (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारगं पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया। यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था । (सूमालणिव्वत्तबारसाहस्सइम एयारूव गुणनिष्फन्न नामधिज्ज करेंति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए तं होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्ज पडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे। जब बारहवां दिन लगा -तब माता पिताओ ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्-यह पुत्र हम पाचो पाडवो का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) સગર્ભા થઈ (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारग पयाया) જ્યારે ગર્ભ નવ માસ ૭॥ દિવસનો થઈ ગયો ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો, તે બાળક ખૂબ જ સુન્દર હતુ

(सूमालणिव्वत्तबारसाहस्स इम एयारूव गुणनिप्फन्न नामधिज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह एसदारए पचण्ह पडवाणं पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्ह इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पडुसेणे)

તેના હાથ પગ વગેરે બધા અવયવો ખૂબ જ સુકોમળ હતા જ્યારે બારમો દિવસ આવ્યો ત્યારે માતા-પિતાએ તે પુત્રનુ નામ તેના ગુણો વિષે વિચાર કરતા આ પ્રમાણે રાખ્યુ કે આ પુત્ર અમારા પાચે પાડવોનો છે,

कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुहं देवाणुप्पिया!, तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए! किं करेसि?, तएण सा दोवई देवी ते पंच पडवे एव वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया! ससारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएण ते पच पडवा पडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएण ते पच पडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं रायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेण राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिबियाओ जाव पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइ अहिज्जंति अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा ॥ सू० २१ ॥

टीका—'तएणं सा' इत्यादि। ततः खलु सा द्रौपदीदेवी अन्यदा कदाचित् 'आवण्णसत्ता' आपन्नसत्त्वा=गर्भवती जाता चाप्यभवत्। ततः खलु सा द्रौपदीदेवी नवसु मासेषु सपूर्णेषु सार्धाष्टमदिवसेषु व्यतिक्रान्तेषु सत्सु यावत् सुरूप सुन्दर दारक=बालकं 'पयाया' प्रजाता=प्रजनितवती, किं भूत दारक-सूमाल=सुकुमारपाणिपाद, 'णिव्वत्तवारसाहस्स' निर्वृत्तद्वादशाहस्स-समाप्त द्वादशदिवसस्य दारकस्य इदमेतद्रूप गुणनिष्पन्न नामधेयं कुर्वन्ति यस्मात् खलु अस्माकमेव दारकः पञ्चाना पाण्डवाना पुत्रो द्रौपद्या आत्मज', 'त' तत्-तस्मात्

-ःतएण सा दोवई देवी इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा दोवई देवी) वह द्रौपदीदेवी (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) गर्भावस्थासे सपन्न हुई। (तएणं सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारग पयाया) जब गर्भ ९ नौमास ७॥ दिन का हो गया तब उस द्रौपदी देवी ने पुत्र को जन्म दिया। यह बालक बहुत ही अधिक सुन्दर था। (सूमालणिव्वत्तवारसाहस्सइम एयारूव गुणनिप्फन्नं नामधिज्ज करेंति जम्हाण अम्हं एस दारए पचण्हं पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्हं इमस्स दारगस्स णामधेज्ज पडुसेणे) इसके करचरण आदि अवयव सब ही अधिक सुकुमार थे। जब बारहवां दिन लगा -तब माता पिताओं ने इस पुत्र का गुणनिष्पन्न होने से यह नाम रक्खा यस्मात्-यह पुत्र हम पाचो पाडवो का है तथा द्रौपदी की कुक्षि से

तएण सा दोवई देवी इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (सा दोवई देवी) ते द्रौपदी देवी (अन्नया कयाइ) कोई એક વખતે (आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था) સગર્ભા થઈ (तएण सा दोवई देवी णवण्ह मासाण जाव सुरूव दारग पयाया) જ્યારે ગર્ભ નવ માસ ૭॥ દિવસનો થઈ ગયો ત્યારે તે દ્રૌપદી દેવીએ પુત્રને જન્મ આપ્યો, તે બાળક ખૂબ જ સુન્દર હતુ

(सूमालणिव्वत्तवारसाहस्स इम एयारूव गुणनिप्फन्न नामधिज्ज करेंति, जम्हाण अम्ह एसदारए पचण्ह पडवाण पुत्ते दोवईए अत्तए त होउ अम्ह इमस्स दारगस्स णामधेज्जे पडुसेणे)

તેના હાથ પગ વગેરે બધા અવયવો ખૂબ જ સુકોમળ હતા જ્યારે બારમો દિવસ આવ્યો ત્યારે માતા-પિતાએ તે પુત્રનુ નામ તેના ગુણો વિષે વિચાર કરતા આ પ્રમાણે રાખ્યુ કે આ પુત્ર અમારા પાચે પાડવોનો છે,

कुमार रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया! अतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो, अहासुह देवाणुप्पिया!, तएणं ते पंच पडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हेहिं थेराणं अतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुम देवाणुप्पिए! किं करेसि?, तएण सा दोवई देवी ते पंच पडवे एवं वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया! ससारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलबे वा जाव भविस्सइ?, अहपि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धि पव्वइस्सामि, तएण ते पच पडवा पडुसेणस्स अभिसेओ राया जाए जाव रज्जे पसाहेमाणे विहरइ, तएण ते पच पडवा दोवई य देवी अन्नया कयाइ पडुसेणं रायाण आपुच्छंति, तएण से पंडुसेण राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी—खिप्पामेव भो! देवाणुप्पिया! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह पुरिससहस्सवाहिणीओ सिवियाओ जाव पच्चोरुहंति पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव० आलित्ते णं जाव समणा जाया चोद्दस्स पुव्वाइ अहिज्जति अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाण भावेमाणा विहरंति।

अथ कदाचित् तत्र-' थेरा समोसढा ' स्थविराः समवसृताः, परिषन्निर्गता, पाण्डवा अपि स्थविराणां वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवाः प्रतिबुद्धाः सन्त एवमवदन्-यत् नवरं हे देवानुप्रियाः द्रौपदीं देवीमापृच्छामः, पाण्डुसेनं च कुमारं राज्ये स्थापयामः, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्यां गृह्णीमः, तदा स्थविरा ऊचुः-' अहासुहं देवाणुप्पिया ! ' हे देवानुप्रिया यथासुखं=सुखं यथा भवति तथा कुरुत, अलं विलम्बेन इति भावः । ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदीं देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमवदन्-एवं खलु हे देवानुप्रिये ! वयं स्थविरा-

व्यतीत करने लगा। एक समय की बात है कि पांडु मथुरा नगरी में स्थविरो का आगमन हुआ। स्थविरों का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वंदना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने २ घर से निकले पाचों पांडव भी निकले- परिषद को आयी हुई देखकर स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद पीछे चली गई। पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गये-उसी समय उन्हों ने उन स्थविरों से कहा-हे देवानुप्रियो ! हमलोग द्रौपदी देवी को पूछकर और पांडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियो के समीप मुंडित होकर यावत् प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहते हैं। पांडवों की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरों ने पांडवो से इस प्रकार कहा-(अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया !

સ્થવિરો પધાર્યા સ્થવિરોના આગમનની જાણ થતાં નગરીના બધા લોકો તેમની વંદના તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળવા માટે પોતપોતાના ઘેરથી નિકળ્યા, પાંચે પાંડવો પણ ત્યાં પહોંચ્યા પરિષદને આવેલી જોઇને સ્થવિરોએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને પરિષદ જતી રહી પાંડવો તે ધર્મનો ઉપદેશ સાંભળીને પ્રતિબોધિત થઈ ગયા તેમણે તેજ સમયે સ્થવિરોને વિનંતી કરતાં કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! અમે દ્રૌપદી દેવીને પૂછી તેમજ પાંડુસેન કુમારને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને તમારી પાસે મુંડિત થઈને યાવત્ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની અભિલાષા રાખીએ છીએ પાંડવોની આ જાતની હાર્દિક ઈચ્છા જાણીને તે સ્થવિરોએ તે પાંચે પાંડવોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે-

(अहासुहं देवाणुप्पिया ! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी, एवं

यतु अस्माकमस्य दारकस्य नामधेयं 'पाण्डुसेन' इति। ततः खलु तस्य दारकस्याम्बापितरौ नामधेयं कुर्वन्ति-'पाण्डुसेन' इति। 'बावत्तरिं कलाओ' द्वासप्तति कलाः शिक्षिताः, यावद् भोगसमर्थो जातः, राजकन्याः परिणीय युवराजो यावत् मानुष्यकान् भोगान् भुञ्जानो विहरति-आस्ते।

उत्पन्न हुआ है-अतः हमारे इस पुत्र का नाम पांडुसेन होना चाहिये (तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति) इस ख्याल से उन्हों ने उस नवजात पुत्र का नाम पांडुसेन रख दिया। (बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ थेरा समोसढा, परिसा निग्गया, पंडवा निग्गया, धम्मं सोच्चा एवं वयासी जं णवरं देवाणुप्पिया! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो तओ पच्छा देवाणुप्पिया! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो) पांडुसेन कुमार को ७२ कलाओं में निपुण बनाने के लिये माता पिताने उसे कलाचार्य के पास भेज दिया। धीरे २ वह ७२, कलाओं में निष्णात बन गया। यावत् भोग भोगने के लायक अवस्था संपन्न भी हो गया। राजकन्याओं के साथ इसका वैवाहिक संबन्ध कर के पिताओं ने इसे युवराज पद प्रदान भी कर दिया-यावत् यह मनुष्यभव संबन्धी काम सुखों का अनुभव करता हुआ अपने समय को आनन्द के साथ

તેમજ દ્રૌપદી દેવીના ગર્ભથી તેનો જન્મ થયો છે, એટલા માટે અમારા આ પુત્રનું નામ પાંડુસેન હોવું જોઈએ

(तएणं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति पंडुसेणत्ति) આ વિચારથી તેમણે તે નવજાત પુત્રનું નામ પાંડુસેન રાખ્યું

(बावत्तरिं कलाओ जाव भोगसमत्थे जाए जुवराया जाव विहरइ, थेरा समोसढा, परिसा निग्गया, पंडवा निग्गया धम्मं सोच्चा एवं वयासी जं णवरं देवाणुप्पिया! दोवइं देविं आपुच्छामो पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो तओपच्छा देवाणुप्पिया! अंतिए मुंडे भवित्ता जाव पव्वयामो)

પાંડુસેન કુમારને ૭૨ કળાઓમાં નિપુણ બનાવવા માટે માતાપિતાઓએ કલાચાર્યની પાસે મોકલ્યો. આમ ધીમે ધીમે તે ૭૨ કળાઓમાં નિષ્ણાત બની ગયો. યાવત્ તે સંસારના ભોગો ભોગવવા યોગ્ય અવસ્થાવાળો પણ થઈ ગયો. રાજકન્યાઓની સાથે લગ્નો કરાવીને પિતાઓએ તેને યુવરાજ પદ પણ સોંપી દીધું યાવત્ તે મનુષ્ય-ભવ સંબંધી કામસુખોને અનુભવતો પોતાના વખતને સુખેથી પસાર કરવા લાગ્યો. એક વખતની વાત છે કે પાંડુ-મથુરા નગરીમાં

अथ कदाचित् तत्र-'थेरा समोसढा' स्थविराः समवसृताः, परिषन्निर्गता, पाण्डवा अपि स्थविराणा वन्दनार्थं निर्गताः, धर्मं श्रुत्वा ते पाण्डवा प्रतिबुद्धाः सन्त एवमवदन्-यत् नवरं हे देवानुप्रियाः द्रौपदीं देवीमापृच्छामः, पाण्डुसेनं च कुमारं राज्ये स्थापयाम, ततः पश्चात् देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत् प्रव्रजामः प्रव्रज्या गृह्णीमः, तदा स्थविरा ऊचुः-'अहासुहं देवाणुप्पिया!' हे देवानुप्रिया यथासुखं=सुखं यथा भवति तथा कुरुत, अलं विलम्बेन इति भाव। तत खलु ते पञ्च पाण्डवा यत्रैव स्वकं गृहं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य द्रौपदीं देवीं शब्दयन्ति, शब्दयित्वा, एवमवदन्-एवं खलु हे देवानुप्रिये! वयं स्थविरा-

व्यतीत करने लगा। एक समय की बात है कि पांडु मथुरा नगरी में स्थविरो का आगमन हुआ। स्थविरों का आगमन सुनकर नगरी का समस्त जन उनकी वंदना एवं धर्मोपदेश सुनने के निमित्त अपने २ घर से निकले पांचों पांडव भी निकले- परिषद को आयी हुई देखकर स्थविरो ने उसे धर्म का उपदेश दिया। उपदेश श्रवण कर परिषद पीछे चली गई। पांडव लोग उस धर्म के उपदेश का पानकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गये-उसी समय उन्हों ने उन स्थविरों से कहा-हे देवानुप्रियो! हमलोग द्रौपदी देवी को पूछकर और पांडुसेन कुमार को राज्य में स्थापित कर आप देवानुप्रियों के समीपमुंडित होकर यावत् प्रव्रज्या अंगीकार करना चाहते हैं। पांडवो की इस प्रकार हार्दिक भावना देखकर उन स्थविरों ने पांडवो से इस प्रकार कहा-(अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया!

સ્થવિરો પધાર્યા સ્થવિરોના આગમનની જાણ થતા નગરીના બધા લોકો તેમની વદના તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે પોતપોતાના ઘેરથી નિકળ્યા, પાચે પાડવો પણ ત્યા પહોચ્યા પરિષદને આવેલી જોઇને સ્થવિરોએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને પરિષદ જતી રહી પાડવો તે ધર્મનો ઉપદેશ સાભળીને પ્રતિબોધિત થઇ ગયા તેમણે તે જ સમયે સ્થવિરોને વિનતી કરતા કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! અમે દ્રૌપદી દેવીને પૂછી તેમજ પાડુસેન કુમારને રાજ્યાસને અભિષિક્ત કરીને તમારી પાસે મુડિત થઇને યાવત્ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની અભિલાષા રાખીએ છીએ પાડવોની આ જાતની હાર્દિક ઈચ્છા જાણીને તે સ્થવિરોએ તે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે-

(अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं ते पंच पंडवा जेणेव सएगिहे, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी, एवं

णामन्तिके धर्मं श्रुतवन्तो यावत् प्रव्रजामः, त्वं हे देवानुप्रिये ! किं करोषि किं करिष्यसि ? । ततः खलु सा द्रौपदी तान् पञ्च पाण्डवान् एवमवादीत्-यदि खलु यूयं हे देवानुप्रियाः ! संसारभयोद्विग्नाः=जन्ममरणादि दुःखाद् भीताः सन्तो यावत् प्रव्रजथ, मम कोऽन्य आलम्बो वा यावद् भविष्यति ?, अहमपि च खलु संसारभयोद्विग्ना देवानुप्रियैः सार्धं प्रव्रजिष्यामि, ततः खलु ते पञ्च पाण्डवाः पाण्डुसेनस्य अभिषेकं=राज्याभिषेकं कृत्वा स्वराज्ये स्थापितवन्तः, यावद् राजा जातः, यावद् राज्यं प्रसाधयन्=पालयन् विहरति=आस्तेस्म ।

अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो-तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि) हे देवानुप्रियों ! जिस प्रकार तुम्हें सुख मिले वैसा तुम करो ! अच्छे काम मे विलम्ब मत करो। इसके बाद-वे पांचों पांडव जहां अपना घर था वहां आये-वहां आकर के उन्होंने द्रौपदी देवी को बुलाया-बुलाकर उससे ऐसा कहा-हे देवानुप्रिये ! सुनो बात इस प्रकार है-हमलोगोंने स्थविरोंके पास धर्मका श्रवण किया है। अब हमलोगों की भावना मुदित होकर उनके पास प्रव्रजित होने की है। अब-तुम्हारी भावना क्या है-हे देवानुप्रिये कहो तुम हमारे बाद क्या करोगी-(तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह मम के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ ? अहं पि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्जं पसाहे

खलु देवाणुप्पिया ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे णिसंते जाव पव्वयामो तुमं देवाणुप्पिए ! किं करेसि)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જેમ તમને સુખ મળે તેમ કરો સારા કામમાં મોડું કરો નહિ ત્યારપછી તેઓ પાંચે પાંડવો જ્યાં પોતાનું ઘર હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે દ્રૌપદી દેવીને બોલાવી બોલાવીને તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે ! સાંભળો, વાત એવી છે કે અમોએ સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, એટલા માટે અમારી ઇચ્છા મુદિત થઈને તેમની પાસેથી પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવાની છે હવે તમારી શી ઇચ્છા છે ? હે દેવાનુપ્રિયે ! અમને કહો અમે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરી લઈશું ત્યારબાદ તમે શું કરશો ?

(तएणं सा दोवई देवी ते पंच पंडवे एवं वयासी-जइणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा पव्वयह, मम के अण्णे आलंबे वा जाव भविस्सइ ? अहं पि य णं संसारभउव्विग्गा, देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि, तएणं ते पंच पंडवा पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव राया जाए, जाव रज्जं पसाहेमाणे विहरइ)

ततः खलु ते पञ्च पाण्डवा द्रौपदी च देवी अन्यदा कदाचित् पाण्डुसेन राजा-नमापृच्छन्ति, ततः खलु स पाण्डुसेनो राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्द-यित्वा, एवमवादीत्-क्षिप्रमेव भो ! देवानुप्रियाः! निष्क्रमणाभिषेक=दीक्षोपयोग वस्तूनि यावद् उपस्थापयत, पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका उपस्थापयत, ' यावत् प्रत्यवरोहन्ति=अत्र यावच्छब्देनेद बोध्यम् , ततः पाण्डुसेनस्य राज्ञोवचनमाकर्ण्य ते

माणे विहरइ) इस प्रकार पाडवो का कहना सुनकर द्रौपदी देवी ने उन पाचो पांडवों से इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों! तुमलोग यदि ससार भय से उद्विग्न होकर प्रव्रजित होना चाहते हो, तो फिर मेरे लिये आप के सिवाय और कौन दूसरा आलवन अथवा आधार होगा। अतः मैंभी आप देवानुप्रियों के साथ ससार भय से उद्विग्न होकर दीक्षित होऊँगी। इस प्रकार द्रौपदी देवी का कथन सुनकर उन पांचो पांडवों ने पाडुसेन कुमार का राज्याभिषेक करके उसे राज्यपद में स्था-पित किया। इस तरह पांडुकुमार राजा हो गया। यावत् राज्य का वह अच्छी तरह पालन करने लगा। (तएण ते पच पडवा दोवईय देवी अन्नया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेणे राया कोडुं-बिय पुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविता, एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणु-प्पिया ! निक्खमणाभिसेयं जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ सिवियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा उवा-

આ પ્રમાણે પાડવોનુ કથન સાભળીને દ્રૌપદી દેવીએ તે પાચે પાડવોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જ્યારે સ સારભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને પ્રવજ્યા ગ્રહણ કરવા ઇચ્છો છો ત્યારે તમારા વગર મારા માટે આ સ સારમા બીજુ કયુ આલ બન અથવા તો બીજો કયો આધાર થશે ? એટલા માટે હુ પણ તમારી સાથે સ સારભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા ઈચ્છુ છુ આ પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીનુ કથન સાભળીને તે પાચે પાડવોએ પાડુસેન કુમારનો રાજ્યાભિષેક કરીને તેને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો આ પ્રમાણે પાડુસેન કુમાર રાજા થઈ ગયો યાવત્ તે રાજ્યનુ સારી રીતે રક્ષણ કરવા લાગ્યો

(तएण ते पच पडवा दोवईय देवी अन्नया कयाइ पडुसेणरायाण आपुच्छति, तएण से पडुसेणे राया कोडु वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दाविता एव वयासी, खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेय जाव उवट्ठवेह, पुरिससहस्सवाहणीओ सिवियाओ उवट्ठवेह, जाव पच्चोरुहति, पच्चोरुहित्ता जेणेव थेरा तेणेव उवाग० आलित्तेण जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जति, अहिज्जित्ता बहूणि

कौटुम्बिकपुरुषास्तथास्तु ' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा ते पञ्च पाण्डवा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका आरूढा, पाण्डुमथुराया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य शिबिकाभ्यः प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति । प्रत्यवरुह्य, 'जेणेव' यत्रैव स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः–' आलित्ते ण जाव समणा

गच्छइ आलित्तेण जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता, बहूणि वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) इसके बाद पाचो पाडवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पांडुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूछा। तब पांडुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा–भो देवानुप्रियो ! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो–तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो–इस प्रकार पाडुसेन राजा के वचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने " तथास्तु " कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया–और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एव पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया। तब वे पांचो पाडव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ होकर पांडु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले। वहा से निकलकर वे जहां स्थविर ठहरे हुए थे–वहां–आये–वहा आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति)

ત્યારપછી પાચે પાડવોએ અને દ્રૌપદી દેવીએ કોઈ એક વખતે પાડુસેન રાજાને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા માટે પૂછયુ ત્યારે પાડુસેન રાજાએ કૌટુ બિક પુરુષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો દીક્ષા વખતે ઉપયોગમા આવનારી બધી વસ્તુઓ જલ્દી લઈ આવો તેમજ પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી પણ લઈ આવો આ પ્રમાણે પાડુસેન રાજાના વચન સાભળીને તે કૌટુ બિક પુરુષોએ ' તથાસ્તુ ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને દીક્ષા માટે ઉપયોગી એવી બધી વસ્તુઓ તેમજ પુરુષ–સહસ્રવાહિની પાલખી લઈ આવ્યા ત્યારપછી તે પાચે પાડવો તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓ ઉપર સવાર થઈને પાંડુ–મથુરા નગરીની વચ્ચે થઈને નીકળ્યા ત્યાથી નીકળીને તેઓ જ્યાં સ્થવિર હતા ત્યાં પહોચ્યા, ત્યા પહો ચીને તેઓ બધા પાલખીઓમાથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરી–સ્થવિરોની

जाया ' आदीप्तोऽयं लोक खलु इत्यादि । यावद् श्रमणा जाताः, चतुर्दशपूर्वाणि अधीयते स्म,अधीत्य बहूनि वर्षाणि षष्ठाष्टमदशम द्वादशैर्मासार्धमासक्षपणैस्तपोभिरात्मान भावयन्तो विहरन्ति ॥ सू० ३३ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव पव्वइया सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारस अंगाइ अहिज्जइ बहूणि वासाणि छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहि जाव विहरइ ॥ सू० ३४ ॥

टीका—' तएणं सा ' इत्यादि । ततस्तदनन्तर खलु सा द्रौपदी देवी शिविकातः प्रत्यवरोहति प्रत्यवतरति, प्रत्यवतीर्य यावत् प्रव्रजिता—दीक्षा गृहीतवती । ' सुव्वयाए ' सुव्रतायै=सुव्रतानामधेयायै ' अज्जाए ' आर्यायै 'सिस्सिणीयत्ताए'

नीचे उतरे। नीचे उतरकर स्थविरों के पास पहुँचे। वहां पहुँचकर उन्हों ने स्थविरों से इस प्रकार कहा—हे भदत ! यह समस्त लोक आदीप्त—हो रहा है इत्यादिरूप से अपनी भावना प्रदर्शित कर यावत् वे श्रमण हो गये। चौदह पूर्वों का उन्हों ने अध्ययन किया। अध्ययन करके अनेक वर्षों तक षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश, मास अर्धमास की तपस्याओं को वे करते हुए विचरने लगे ॥ सू० ३३ ॥

' तएण सा दोवई ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (दोवई देवी) द्रौपदीदेवी (सीयाओ पच्चोरुहइ) अपनी शिविका से नीचे उतरी-(जा पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूणि वासाइ

પાસે પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે સ્થવિરોને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ભદન્ત ! આ સપૂર્ણ જગત સળગી રહ્યુ છે વગેરે રૂપથી પોતાની ભાવના પ્રકટ કરીને યાવત્ તેઓ શ્રમણ થઈ ગયા ચૌદ પૂર્વોનુ તેમણે અધ્યયન કર્યુ, અધ્યયન કરીને ઘણા વર્ષો સુધી તેઓ ષષ્ઠ, અષ્ટમ દશમ, દ્વાદશ, માસ અર્ધમાસની તપસ્યાઓ કરતા રહ્યા ॥ સૂત્ર ૩૩ ॥

तएण सा दोवई इत्यादि—

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારપછી (दोवई देवी) દ્રૌપદી દેવી (सीयाओ पचोरुहइ) પોતાની પાલખીમા નીચે ઉતરી

(जा—पव्वइया, सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए दलयइ, इक्कारसअगाइ

कौटुम्बिकपुरुषास्तथास्तु' इत्युक्त्वा तथैव यावदुपस्थापयन्ति, तदा ते पञ्च पाण्डवा पुरुषसहस्रवाहिनीः शिबिका आरूढा, पाण्डुमथुराया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य शिबिकाभ्य' प्रत्यवरोहति=प्रत्यवतरति। प्रत्यवरुह्य, 'जेणेव' यत्रैव स्थविरास्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः-' आलित्ते णं जाव समणा

गच्छइ आलित्तेण जाव समणा जाया, चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता, बहूणि वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति) इसके बाद पाचो पाडवों ने और द्रौपदी देवी ने किसी एक समय पांडुसेन राजा से दीक्षित होने के लिये पूछा। तब पांडुसेन राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया बुलाकर उनसे ऐसा कहा-भो देवानुप्रियो! तुमलोग शीघ्र ही दीक्षा में उपयोग आनेवाली वस्तुओं को लाकर उपस्थित करो-तथा पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को भी उपस्थित करो-इस प्रकार पांडुसेन राजा के वचन सुनकर उन कौटुम्बिक पुरुषों ने " तथास्तु " कहकर उनकी आज्ञा को स्वीकार कर लिया-और दीक्षा में उपयोगी समस्त सामग्री को एव पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं को लाकर उपस्थित कर दिया। तब वे पाचो पाडव उन पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिकाओं पर आरूढ होकर पाडु मथुरा नगरी के बीच से होकर निकले। वहा से निकलकर वे जहा स्थविर ठहरे हुए थे-वहां-आये-वहा आकर सबके सब शिबिकाओं से

वासाइं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति)

ત્યારપછી પાચે પાડવોએ અને દ્રૌપદી દેવીએ કોઈ એક વખતે પાડુસેન રાજાને દીક્ષા ગ્રહણ કરવા માટે પૂછ્યુ ત્યારે પાડુસેન રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો દીક્ષા વખતે ઉપયોગમા આવનારી બધી વસ્તુઓ જલ્દી લઈ આવો તેમજ પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી પણ લઈ આવો આ પ્રમાણે પાડુસેન રાજાના વચન સાભળીને તે કૌટુંબિક પુરુષોએ 'તથાસ્તુ' કહીને તેમની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી અને દીક્ષા માટે ઉપયોગી એવી બધી વસ્તુઓ તેમજ પુરુષ-સહસ્રવાહિની પાલખી લઈ આવ્યા ત્યારપછી તે પાચે પાડવો તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીઓ ઉપર સવાર થઈને પાંડુ-મથુરા નગરીની વચ્ચે થઈને નીકળ્યા ત્યાથી નીકળીને તેઓ જ્યા સ્થવિર હતા ત્યાં પહોચ્યા, ત્યા પહોચીને તેઓ બધા પાલખીઓમાથી નીચે ઉતર્યા, નીચે ઉતરીને સ્થવિરોની

अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता थेरं भगवंतं वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी–इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा। थेरे भगवंते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अतियाओ पडिणिक्खमंति मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगाम दूईज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरंति, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति बीयाए एव जहा गोयमसामी णवरं जुहिट्ठिल्लं आपुच्छंति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति, एव खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहि छत्तीसेहि अणगारसएहि सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता जेणेव सहसंबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चक्खंति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति पडि-

शिष्यातया ददाति पाण्डुसेनो राजा द्रौपदीं सुव्रतार्थे शिष्यारूपेण दत्तवानिति भाव । एकादशाङ्गानि अधीते, बहूनि वर्षाणि षष्ठाऽष्टमदशमद्वादशैस्तपोभिर्यात्र दात्मान भावयन्ती विहरति ॥सू०३४॥

मूलम्–तएण थेरा भगवंतो अन्नया कयाई पडुमहुराओ णयरीओ सहसंबवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति, तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएणं बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ०–एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि०, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्नमन्न सद्दावेंति सद्दावित्ता एव वयासी–एव खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु० जाव विहरइ, त सेयं खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमि वदणाए गमित्तए

छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ) नीचे उतरकर यावत् वह भी प्रव्रजित हो गई। पांडुसेन राजा ने उसे–द्रौपदी को सुव्रता नाम की साध्वी के शिष्यारूप से प्रदान किया। द्रौपदी आर्या ने ग्यारह अगों का अध्ययन किया। बाद में अनेक वर्षों तक छट्ठ अष्टम, दशम, द्वादश तपस्याओं से अपने आपको उसने भावित किया॥ सू०३४ ॥

अहिज्जइ, बहूणि वासाइ छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं जाव विहरइ)

નીચે ઉતરીને યાવત્ તે પણ પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ પાંડુસેન રાજાએ દ્રૌપદીને સુવ્રતા નામની સાધ્વીને શિષ્યાના રૂપમા અર્પિત કરી દ્રૌપદી આર્યાએ અગિયાર અ ગોનુ અધ્યયન કર્યું ત્યારપછી ઘણા વર્ષો સુધી છટ્ઠ, અષ્ટમ, દશમ, દ્વાદશ તપસ્યાઓથી પોતાના આત્માને તેણે ભાવિત કર્યો ॥ સૂ ૩૪॥

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन् विहरति। ततः खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञापयति–एव खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति। ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमवदन् ,एव खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमति) विहार किया (पडिणिक्खमित्ता) विहार करके (बहिया जणवयविहार विहरति) बाहिर के जनपदों में विचरने लगे (तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयंसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु विहार करते हुए जहां सौराष्ट्र जनपद था–वहां आये वहा आकर के वे उस सौराष्ट्र जनपद में सयम और तप से अपने आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। जब वहा के अनेक लोगो को इसकी खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एव खलु देवाणुप्पिया! अरिहा। अरिट्ठनेमी सुरट्ठा जणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्न-

णिक्खमति) विહાર કર્યો (पडिणिक्खमित्ता) વિહાર કરીને તેઓ (बहिया जणवयविहार विहरति) બહારના જનપદોમા વિહાર કરવા લાગ્યા.

(तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे एवमाइक्खइ)

તે કાળે અને તે સમયે અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ વિહાર કરતા કરતા જ્યા સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ તે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા સયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરણ કરવા લાગ્યા જ્યારે ત્યાના ઘણા લોકોને આ વાતની જાણ થઈ ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पव अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी

क्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति आलोइत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति पडिदंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए तं सेयं खलु अम्ह देवाणुप्पिया! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुंजं पव्वयं सणियं सणियं दुरूहित्तए 'संलेहणा झूसणा झूसियाणं' कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तएत्तिक, अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजे पव्वए तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सेत्तुंजं पव्वयं दुरूहंति दुरूहित्ता जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति। तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि वासाणि० दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे जाव तमट्ठमाराहेंति तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा ॥ सू० ३२ ॥

टीका—'तएणं थेरा' इत्यादि। ततस्तदनन्तरं खलु स्थविरा भगवन्तोऽन्यदाकदाचित् पाण्डुमथुरातो नगरीतो सहस्राम्रवणादुद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति=निर्गच्छन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य निर्गत्य, बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति।

-:तएणं थेरा भगवंता इत्यादि।

टीकार्थ-(तएणं) इसके बाद (थेरा भगवंतो) उन स्थविर भगवंतोने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (पंडुमहुराओ) पाण्डु मथुरा (णयरीओ) नगरी से (सहसंबवणाओ) सहस्राम्रवन नाम के (उज्जा

तएणं थेरा भगवंता इत्यादि—

टीकार्थ-(तएणं) त्यारબાદ (थेरा भगवंतो) ते स्थविर ભગવંતોએ (अन्नया कयाइ) કોઈ એક વખતે (पंडुमहुराओ) પાંડુ મથુરા (णयरीओ) નગરીથી (सहसंबवणाओ) સહસ્રામ્રવન નામના (उज्जाणाओ) ઉદ્યા '-पडि

तस्मिन् काले तस्मिन् समयेऽर्हन् अरिष्टनेमिर्यत्रैव सौराष्ट्रजनपदस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य सौराष्ट्रजनपदे संयमेन तपसाऽऽत्मान भावयन् विहरति। ततः खलु बहुजनोऽन्योन्यमेवमाख्याति=वक्ति, एव भाषते, एव प्ररूपयति एव प्रज्ञापयति–एव खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमि सौराष्ट्रजनपदे यावद् विहरति। ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखा पञ्चानगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वाऽन्योन्य शब्दयन्ति, शब्दयित्वा एवमवदन् ,एव खलु हे देवानुप्रिय! अर्हन् अरिष्टनेमिः पूर्वा

णाओ) उद्यान से (पडिणिक्खमति) विहार किया (पडिणिक्खमित्ता) विहार करके (बहिया जणवयविहार विहरति) बाहिर के जनपदों में विचरने लगे (तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे विहरइ, तएण बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ) उस काल में और उस समय में अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु विहार करते हुए जहां सौराष्ट्र जनपद था–वहा आये वहां आकर के वे उस सौराष्ट्र जनपद मे सयम और तप से अपने आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे। जब वहां के अनेक लोगो को इसकी खबर हुई तब वे परस्पर में इस प्रकार कहने लगे (एव खलु देवाणुप्पिया! अरिहा। अरिट्ठनेमी सुरट्ठा जणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अन्न-

णिक्खमति) विहार कर्यो (पडिणिक्खमित्ता) विहार करीने तेओ (बहिया जणवयविहार विहरति) બહારના જનપદોમા વિહાર કરવા લાગ્યા.

(तेण कालेण तेणं समएण अरिहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठा जणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठा जणवयसि सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणे एवमाइक्खइ)

તે કાળે અને તે સમયે અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ વિહાર કરતા કરતા જ્યા સૌરાષ્ટ્ર જનપદ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ તે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા સયમ અને તપથી પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા વિચરણ કરવા લાગ્યા જ્યારે ત્યાના ઘણા લોકોને આ વાતની જાણ થઈ ત્યારે તેઓ પરસ્પર આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए जाव वि० तएण ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! अरिहा अरिट्ठनेमी

नुपूर्व्या=तीर्थकराणां मर्यादया यावद् विहरति, 'त' तत्-तस्मात् 'सेय' श्रेयः खलु अस्माकं यत् स्थविरान् आपृच्छ्याऽर्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दनार्थं गन्तुम्। अन्योन्यस्य =परस्परस्यैतमर्थं सर्वे पञ्चानगाराः प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तान् स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति च वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिषु -इच्छामः खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तोऽर्हन्तमरिष्टनेमिं यावद् गन्तुम्। स्थविरा ऊचुः यथासुखं हे देवानुप्रिया!

मन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! अरिहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं वदणाए गमित्तए) हे देवानुप्रियो! सुनो-अर्हत अरिष्टनेमि प्रभु तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए यावत् सौराष्ट्र जनपद में आये हुए हैं। लोगों के मुख से इस बात को उन पाँच युधिष्ठिर आदि अनगारो ने सुना-तब आपस में एक दूसरे को-बुलाया-और बुलाकर इस प्रकार कहा-देवानुप्रियो! सौराष्ट्र जनपद में तीर्थंकर परम्परा के अनुसार भगवान् अरिष्टनेमि विहार कर रहे हैं-अतः हमलोगों को स्थविरो की आज्ञा लेकर अर्हंत अरिष्टनेमि को वदना करने के लिये चलना बहुत अच्छा है-उचित है-(अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामो ण

पुव्वाणु० जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं वदणाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો! સાભળો, અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તિર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતા યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા પધારેલા છે લોકોના મુખથી આ વાતને તે પાચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સાભળી ત્યારે તેઓએ પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થંકર પરપરા મુજબ ભગવાન અરિષ્ટનેમિ વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિષ્ટનેમિને વદન કરવા માટે અમારે જવુ જોઈએ

(अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामो ण तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरह अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखा पञ्चानगाराः स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञाताः सन्त स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा, नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, मास-मासेन 'अणिक्खित्तेण' अनिक्षिप्तेन=अन्तररहितेन तपः

तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमि जाव गमित्तए अहासुह देवाणुप्पिया! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं भगवतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवते वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, मास मासेण अणिक्खित्तेण त)कम्मेण गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरति-तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेति, बीयाए जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति) इस प्रकार का परस्पर का यह विचार उन्हों ने स्वीकार कर लिया-स्वीकार करके फिर वे जहां स्थविर भगवंत थे-वहां गये-वहां जाकर उन्हों ने उन स्थविर भगवंतो को वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार कर फिर उनसे इस प्रकार कहा हमलोग आप भगवंतो से आज्ञा प्राप्त कर अर्हंत नेमिनाथ प्रभु को वंदना करने के लिये सौराष्ट्र जनपद जाना चाहते हैं। तब उन स्थविर भगवंतो ने उनसे कहा हे देवानुप्रियों! यथासुखम्-तुम्हें जैसे सुख हो-वैसा करो इस प्रकार उनस्थविर भग

अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा, थेरेहिं भगवतेहिं अब्भणुन्नाया समाणा थेरे भगवते वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिणिक्खमंति, मासमासेण अणिक्खित्तेण तवोकम्मेण गामाणुगामं दूइज्जमाणा जाव जेणेव हत्थिकप्पे नयरे तेणेव उवा० हत्थिकप्पस्स बहिया सहसंबवणे उज्जाणे जाव विहरति तएणं ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा मासखमणपारणए पढमाए पोरसीए सज्झायं करेंति, बीयाए एवं जहा गोयमसामी, णवरं जुहिट्ठिलं आपुच्छति जाव अडमाणा बहुजणसद्दं णिसामेंति)

આ રીતે તેઓએ એકબીજાના વિચારોને સ્વીકારી લીધા, સ્વીકારીને તેઓ જ્યાં સ્થવિર ભગવંત હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે તે સ્થવિર ભગવંતોને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેમને આ પ્રમાણે વિનંતી કરી કે અમે આપ ભગવંતની આજ્ઞા મેળવીને અર્હંત નેમિનાથ પ્રભુના વંદન માટે સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં જવા ઈચ્છીએ છીએ ત્યારે તે સ્થવિર ભગવંતોએ તેમને આ પ્રમાણે આજ્ઞા કરી કે હે દેવાનુપ્રિયો! 'યથા સુખમ્' તમને જે કામમાં આનંદ પ્રાપ્ત થાય તે કરો આ પ્રમાણે તે સ્થવિર

नुपूर्व्या=तीर्थकराणां मर्यादया यावद् विहरति, 'त' तत्-तस्माद् 'सेय' श्रेय' खलु अस्माकं यत् स्थविरान् आपृच्छयार्हन्तमरिष्टनेमिं वन्दनार्थं गन्तुम् । अन्योन्यस्य =परस्परस्यैतमर्थं सर्वे पञ्चानगाराः प्रतिशृण्वन्ति, स्वीकुर्वन्ति प्रतिश्रुत्य यत्रैव स्थविरा भगवन्तस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तान् स्थविरान् भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति च वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिषु -इच्छामः खलु युष्माभिरभ्यनुज्ञाताः सन्तोऽर्हन्तमरिष्टनेमिं यावद् गन्तुम् । स्थविरा ऊचु' यथासुख हे देवानुप्रिया।

मन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया । अरिहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणु जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं वदणाए गमित्तए) हे देवानुप्रियों । सुनो-अर्हंत अरिष्टनेमि प्रभु तीर्थकर परम्परानुसार विहार करते हुए यावत् सौराष्ट्र जनपद में आये हुए हैं। लोगों के मुख से इस बात को उन पाँच युधिष्ठिर आदि अनगारो ने सुना-तब आपस में एक दूसरे को-बुलाया-और बुलाकर इस प्रकार कहा-देवानुप्रियो । सौराष्ट्र जनपद में तीर्थकर परम्परा के अनुसार भगवान् अरिष्टनेमि विहार कर रहे हैं-अतः हमलोगों को स्थविरो की आज्ञा लेकर अर्हंत अरिष्टनेमि को वदना करने के लिये चलना बहुत अच्छा है-उचित है-(अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुर्णेति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामो ण

पुव्वाणु० जाव विहरइ, त सेय खलु अम्ह थेरा आपुच्छित्ता अरह अरिट्ठनेमिं वदणाए गमित्तए)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુ તિર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતા યાવત્ સૌરાષ્ટ્ર જનપદમા પધારેલા છે લોકોના મુખથી આ વાતને તે પાંચે યુધિષ્ઠિર વગેરે અનગારોએ સાંભળી ત્યારે તેઓએ પરસ્પર એક બીજાઓને બોલાવ્યા અને બોલાવીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સૌરાષ્ટ્ર જનપદમાં તીર્થંકર પરંપરા મુજબ ભગવાન અરિષ્ટનેમિ વિહાર કરી રહ્યા છે એથી સ્થવિરોની આજ્ઞા મેળવીને અરિષ્ટનેમિને વદન કરવા માટે અમારે જવું જોઈએ

(अन्नमन्नस्स एयमट्ठ पडिसुर्णेति, पडिसुणित्ता जेणेव थेरा भगवतो, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदति णमसति, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-इच्छामो ण तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणा अरह अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचमध्यमकुलानि 'अडमाणा' अटन्त बहुजनशब्द निशामयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह-'एवं खलु हे देवानुप्रियाः! अर्हन् अरिष्टनेमिः 'उज्जिंतसेलसिहरे' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासिकेन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः 'पञ्चहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं' पञ्चभि षट्त्रिंशताऽनगारशतैः=षट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिर्वृत सर्वदुःखप्रहीणो जात'।

'तएणं' ति' तत खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

कल्प नगर में उच्च, नीच एव मध्यम कुलों में गोचरी के लिये आये। उस समय इन्हो ने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एवं देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति) देवानुप्रियों! अर्हत अरिष्टनेमि ऊर्जयंतशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत हो कर सर्व दुःखों से रहित हो गये है। इस प्रकार अनेक मनुष्यों के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव

અને મધ્યમ કુલોમા ગોચરી માટે આવ્યા તે સમયે તેમણે ઘણા માણસોના મુખથી એ જાતના સમાચારો સાંભળ્યા કે—

(एवं देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएणं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमंति)

હે દેવાનુપ્રિયો! અર્હંત અરિષ્ટનેમિ ઊર્જયંત શૈલશિખર ઉપર-ગિરનાર પર્વત ઉપર-એક માસના ચારે જાતના આહારના પરિત્યાગ રૂપ ભક્ત પ્રત્યાખ્યાનથી ૫૩૬ અનગારોની સાથે કાળગત યાવત્ સિદ્ધ, બુદ્ધ, પરિનિવૃત થઈને સર્વ દુઃખોથી મુક્ત થઈ ગયા છે આ પ્રમાણે ઘણા માણસોના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાંભળીને તે યુધિષ્ઠિર વગરના ચારે અનગારો તે હસ્તિકલ્પ નગરથી નીકળ્યા

कर्मणा ग्रामानुग्रामं 'दूइज्जमाणा' द्रवन्तः=गच्छन्तः, यावद् यत्रैव 'हत्थिकप्पे नयरे' हस्तिकल्पं नगरं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य हस्तिकल्पस्य बहिः सहस्राम्रवणे उद्याने यावद् विहरन्ति। ततः खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा मासक्षपणपारणके प्रथमायां पौरुष्यां स्वाध्यायं कुर्वन्ति, 'बीयाए' द्वितीयायां पौरुष्यां ध्यानं ध्यायन्ति तृतीयायां पौरुष्यामत्वरितमचपलमसम्भ्रान्तसदोरकमुखवस्त्रिकां प्रतिलेखयन्ति, भाजनवस्त्राणि प्रतिलेखयन्ति, भाजनानि च-पात्राणि प्रमार्जयन्ति, भाजनान्युद्गृह्णन्ति, गृहीत्वा एवं यथा गौतमस्वामी श्रमणं महावीरमापृच्छति नवरं-अयमत्र विशेषः अत्र चत्वारोऽनगाराः युधिष्ठिरमापृच्छन्ति यावत्

वतों से आज्ञा प्राप्त कर वे युधिष्ठिर प्रमुख पांच अनगार उन स्थविर भगवंत को वंदना नमस्कार करके उनके पास से चले आये और निरन्तर मास मास खमण करते हुए एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विहार करने लगे। इस तरह ग्रामानुग्राम विहार करते हुए वे पांचो अनगार जहां हस्तिकल्पनाम का नगर था वहां आये। वहां आकर वे हस्तिकल्प नगर के बाहिर सहस्राम्रवन उद्यान में जाकर ठहर गये। इसके बाद वे युधिष्ठिर के सिवाय चारों अनगार मासक्षपण के दिन प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते, द्वितीय पौरुषी में ध्यान करते, और तृतीय पौरुषी में अत्वरित, अचपल एवं असम्भ्रान्त होकर सदोरक मुखवस्त्रिकाकी प्रतिलेखना करते, भाजन और वस्त्रोंकी प्रतिलेखना करते-फिर उन्हें उठाते-और लेकर जिस प्रकार गौतम स्वामी श्रमण महावीर स्वामी से पूछकर गोचरी के लिये निकलते उसी प्रकार ये भी युधिष्ठिर से पूछ कर हस्ति

ભગવંતોની આજ્ઞા મેળવીને તે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાંચે અનગારો તે સ્થવિર ભગવંતોને વંદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી આવતા રહ્યા અને સતત માસ ખમણ કરતા એક ગામથી બીજે ગામ વિહાર કરવા લાગ્યા આ રીતે ગ્રામાનુગ્રામ વિહાર કરતા તે પાંચે અનગારો જ્યાં હસ્તિકલ્પ નામે નગર હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓ હસ્તિકલ્પ નગરની બહાર સહસ્રામ્રવન ઉદ્યાનમાં જઈને મુકામ કર્યો ત્યારબાદ તે યુધિષ્ઠિર સિવાયના ચારે અનગારો માસક્ષપણ પારણાના દિવસે પ્રથમ પૌરૂષીમાં સ્વાધ્યાય કરતા, દ્વિતીય પૌરૂષીમાં ધ્યાન કરતા અને તૃતીય પૌરૂષીમાં ગોચરી માટે નીકળતી વખતે પણ અચપળ અસભ્રાંત થઈને સદોરકમુખવસ્ત્રિકાની પ્રતિલેખના કરતા, ભાજન અને વસ્ત્રોની પ્રતિલેખના કરતા, ત્યારબાદ તેમને ઉપાડતા અને ઉપાડીને જેમ ગૌતમ સ્વામી શ્રમણ ભગવાન મહાવીર સ્વામીની આજ્ઞા મેળવીને ગોચરી માટે નીકળતા તેમજ તેઓ પણ યુધિષ્ઠિરની આજ્ઞા મેળવીને હસ્તિકલ્પ નગરમાં ઉચ્ચ, નીચ,

हस्तिकल्पे नगरे उच्चनीचम यमकुलानि ' अडमाणा ' अटन्त बहुजनशब्द निशामयन्ति-शृण्वन्ति=किं शृण्वन्तीत्याह-' एव खलु हे देवानुप्रियाः ! अर्हन् अरिष्टनेमिः ' उज्जितसेलसिहरे ' उज्जयन्तशैलशिखरे-गिरनारपर्वतोपरिभागे मासिकेन भक्तेन भक्तप्रत्याख्यानेन पानकेन-पानीयरहितेन चतुर्विधाहारपरित्यागेनेत्यर्थः ' पञ्चहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं ' पञ्चभि षट्त्रिंशताऽनगारशतैः=षट्त्रिंशदधिकपञ्चशतसंख्यकैरनगारैः सार्धं कालगतो यावत्-सिद्धोबुद्धः परिनिर्वृत सर्वदुःखप्रहीणो जात ' ।

' तएण ' ति ' तत खलु ते युधिष्ठिरवर्जाश्चत्वारोऽनगारा बहुजनस्यान्तिके एतमर्थं श्रुत्वा हस्तिकल्पाद् नगरात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सहस्रा-

कल्प नगर में उच्च, नीच एव मध्यम कुलों में गोचरी के लिये आये। उस समय इन्हों ने अनेक मनुष्यों के मुख से इस प्रकार समाचार सुने (एव देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति) देवानुप्रियों ! अर्हत अरिष्टनेमि ऊर्जयतशैल शिखर पर-गिरनार पर्वत के ऊपर एक मास के चतुर्विध आहार के परित्यागरूप भक्तप्रत्याख्यान से ५३६ अनगारों के साथ कालगत यावत् सिद्ध, बुद्ध, परिनिर्वृत हो कर सर्व दुःखों से रहित हो गये है। इस प्रकार अनेक मनुष्यो के मुख से इस समाचार को सुनकर वे युधिष्ठिर वर्ज चारों अनगार उस हस्तिकल्पनगर से निकले (पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्सबवणे उज्जाणे जेणेव

અને મધ્યમ કુલોમા ગોચરી માટે આવ્યા તે સમયે તેમણે ઘણા માણુસોના મુખથી એ જાતના સમાચારો સાભળ્યા કે—

(एव देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जितसेलसिहरे मासिएण भत्तेण अपाणएण पचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए जाव पहीणे, तएण ते जुहिट्ठिल्लवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हत्थिकप्पाओ पडिणिक्खमति)

હે દેવાનુપ્રિયે। ! અર્હત અરિષ્ટનેમિઊર્જયત શૈલશિખર ઉપર-ગિરનાર પર્વત ઉપર-એક માસના ચારે જાતના આહારના પરિત્યાગ રૂપ ભક્ત પ્રત્યાખ્યાનથી ૫૩૬ અનગારોની સાથે કાળગત યાવત્ સિદ્ધ, બુદ્ધ, પરિનિવૃત થઇને સર્વ દુખોથી મુક્ત થઇ ગયા છે આ પ્રમાણે ઘણા માણુસોના મુખથી આ જાતના સમાચારો સાભળીને તે યુધિષ્ઠિર વગરના ચારે અનગારો તે હસ્તિકલ્પ નગરથી નીકળ્યા

म्रवणमुद्यान यत्रैव युधिष्ठिरोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य भक्तपान 'पच्च क्खति ' प्रत्याख्यान्ति=प्रत्याख्याय ' गमनागमनस्स ' गमनागमन प्रतिक्रामन्ति ईर्यापथिकीं कुर्वन्ति प्रतिक्रम्य ' एसणमणेसण ' एषणामनेषणाम् आलोचयन्ति, आलोच्य भक्तपान-प्रतिदर्शयन्ति-युधिष्ठिरस्य पुरोऽवस्थाप्य प्रतिदर्शयन्ति, प्रति दर्श्य एवमवादिषुः-एव खलु हे देवानुप्रिय ! यावत् कालगतः=अर्हन् अरिष्टनेमि मोक्षमाप्तः, ' त ' तस्मात् श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! इम पूर्वगृहीत

जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्च क्खति, पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति पडिक्कमित्ता एसणम नेसण आलोएँति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदसेंति पडिदसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए त सेय खलु अम्हं देवा णुप्पिया! इम पुव्वगहिय भत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुंज पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्तए) निकलकर वे जहाँ सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था और उस में भी जहा युधिष्ठिर अनगार विराजमान थे, वहा आये। वहां आकर उन्हों ने उनकी साक्षी से भक्त प्रत्याख्यान करदिया और भक्त प्रत्याख्यान करके फिर उन्हो ने ईर्यापथ शुद्धि की। शुद्धि करके एषणा अनेषणा की आलोचना करके फिर उन्होंने लाये हुए उस आहार को युधिष्ठिर अनगार के समक्ष रख कर दिखलाया। दिखलाकर फिर वे इस प्रकार कहने लगे। हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि मुक्ति को प्राप्त हो चुके है-इसलिये हे देवानुप्रिय! हमको अब यही उचित

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहसम्बवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्चक्खति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिकमति, पडिकमित्ता एसणमनेसण आलोएति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदसेंति पडिदसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए त सेय खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इम पुव्वगहियभत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्तए)

નીકળીને તેઓ જ્યા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતુ અને તેમા પણ જ્યા યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે તેમની સામે ભક્ત પાનનુ પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઇર્યાપથની શુદ્ધિ કરી શુદ્ધિ કરી　　અને અનેષણા કરી, આલોચના કરી આલોચના કરીને તેમણે　　। તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને ખતાવ્યો　　પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે　　! અર્હંત　　છે એટલા માટે

भक्तपानं परिष्ठाप्य ' सेत्तुजं ' शत्रुंजय-शत्रुंजयनामकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहितुम् =आरोहितुम्, तथा-' सलेहणाझूसणाझूसियाणं ' संलेखना जोषणाजुष्टाना=सलेखनाया कषायशरीरकृशीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा वा तया जुष्टा -सेवितास्तेषां=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थः-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनिच्छताम् विहर्तुम्, इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य यत्रैव शत्रुंजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुंजय पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहन्ति आरोहन्ति, दूरूह्य यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुंजय नामके पर्वत पर धीरे धीरे चढे (सलेहणा झूसणा झूसियाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजे पव्वए तेणेव उवागच्छंति) और वहां काय और कषाय को कृश करनेवाली सलेखना मरणाशंसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक धारण करे इस प्रकार विचार करकेउन्हों ने परस्पर के इस विचार रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त पान को उन्होंने एकान्त स्थान मे परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित करके वे सब जहां शत्रुंजय पर्वत था वहां चले गये (उवागच्छित्ता) वहां जाकर के (सेत्तुंजं पव्वयं दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव कालं अणव-

હવે અમને એ જ વાત યોગ્ય લાગે છે કે અમે આ પૂર્વગૃહિત ભક્તપાનનું પરિષ્ઠાપન કરીને શત્રુંજય નામના પર્વત ઉપર ધીમે ધીમે ચઢીએ

(सलेहणा झूसणा झूसियाणं कालं अणवकंखमाणाणं विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुंजे पव्वए तेणेव उवागच्छंति)

અને ત્યાં કાય અને કષાયને કૃશ કરનારી સંલેખનાને મરણાશંસાથી રહિત થઈને પ્રેમપૂર્વક ધારણ કરીએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના આ વિચાર રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેમણે તે પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનને એકાંત સ્થાને પરિષ્ઠાપિત કરી દીધું અને પરિષ્ઠાપિત કરીને તેઓ સર્વે જ્યાં શત્રુંજય પર્વત હતો ત્યાં ચાલ્યા ગયા (उवागच्छित्ता) ત્યાં જઈને—

(सेत्तुंजं पव्वयं दुरूहंति, दुरूहित्ता जाव कालं अणवकंखमाणा विहरंति,

म्रवणमुधान यत्रैव युधिष्ठिरोऽनगारस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य भक्तपान 'पच्च वखति ' प्रत्याख्यान्ति=प्रत्याख्याय ' गमनागमनस्स ' गमनागमन प्रतिक्रामन्ति ईर्यापथिकीं कुर्वन्ति प्रतिक्रम्य ' एसणमणेसण ' एषणामनेषणाम् आलोचयन्ति, आलोच्य भक्तपान-प्रतिदर्शयन्ति-युधिष्ठिरस्य पुरोऽवस्थाप्य प्रतिदर्शयन्ति, प्रति दर्श्य एवमवादिषुः-एव खलु हे देवानुप्रिय ! यावत् कालगतः=अर्हन् अरिष्टनेमि मोक्षमाप्त., ' त ' तस्मात् श्रेयः खलु अस्माक हे देवानुप्रिया. ! इम पूर्वगृहीत

जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्च क्खति, पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति पडिक्कमित्ता एसणम नेसण आलोएँति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदसेति पडिदसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया! जाव कालगए त सेय खलु अम्ह देवा णुप्पिया ! इम पुव्वगहिय भत्तपाण परिट्ठवेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय सणिय दुरुहित्तए) निकलकर वे जहां सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था और उस में भी जहा युधिष्ठिर अनगार विराजमान थे, वहा आये। वहां आकर उन्हो ने उनकी साक्षी से भक्त प्रत्याख्यान करदिया और भक्त प्रत्याख्यान करके फिर उन्हो ने ईर्यापथ शुद्धि की । शुद्धि करके एषणा अनेषणा की आलोचना करके फिर उन्होंने लाये हुए उस आहार को युधिष्ठिर अनगार के समक्ष रख कर दिखलाया। दिखलाकर फिर वे इस प्रकार कहने लगे। हे देवानुप्रिय ! अर्हन् अरिष्टनेमि मुक्ति को प्राप्त हो चुके हैं-इसलिये हे देवानुप्रिय ! हमको अब यही उचित

(पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहसम्बवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिल्ले अणगारे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता भत्तपाण पच्चक्खति पच्चक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमति, पडिक्कमित्ता एसणमनेसण आलोएति, आलोइत्ता भत्तपाण पडिदसेंति पडिदसित्ता एव वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! जाव कालगए त सेय खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! इम पुव्वगहियभत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुज पव्वय सणिय सणिय दुरूहित्तए)

નીકળીને તેઓ જ્યા સહસ્રાવન નામે ઉદ્યાન હતુ અને તેમા પણ જ્યા યુધિષ્ઠિર અનગાર હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે તેમની સામે ભક્ત પાનનુ પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ પ્રત્યાખ્યાન કરીને તેમણે ઈર્યાપથની શુદ્ધિ કરી શુદ્ધિ કરીને એષણા અને અનેષણા કરી, આલોચના કરી આલોચના કરીને તેમણે લઇ આવેલા તે આહારને યુધિષ્ઠિર અનગારની સામે મૂકીને બતાવ્યો બતાવ્યા બાદ તેઓ આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે ! અર્હંત અરિષ્ટનેમિ પ્રભુએ મુક્તિ મેળવી છે એટલા માટે

भक्तपानं परिष्ठाप्य ' सेत्तुज ' शत्रुंजय-शत्रुंजयनामकं पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहितुम् =आरोहितुम् , तथा-' सलेहणाझूसणाझूसियाण ' संलेखना जोषणाजुष्टाना=सलेखनाया कषायशरीरकृषीकरणे या जोषणा-प्रीतिः सेवा वा तया जुष्टा -सेवितास्तेषा=सलेखनातपःकारिणामित्यर्थ'-कालम्-अनवकाङ्क्षमाणानाम् - अनिच्छताम् विहर्त्तुम् , इति कृत्वाऽन्योन्यस्यैतमर्थं प्रतिश्रृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य तद् पूर्वगृहीत भक्तपानम् एकान्ते=प्रासुके स्थाने परिष्ठापयन्ति, परिष्ठाप्य यत्रैव शत्रुजयः पर्वतस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शत्रुंजय पर्वतं शनैः शनैर्दूरोहन्ति आरोहन्ति, दूरुह्य यावत्-कालमनवकाङ्क्षमाणा विहरन्ति ।

है कि हम इस पूर्व गृहीत भक्त पान का परिष्ठापन कर शत्रुंजय नामके पर्वत पर धीरे धीरे चढे (सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकंखमाणाण विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छंति) और वहाँ काय और कषाय को कृश करनेवाली सलेखना मरणाशसा से रहित होकर प्रीति पूर्वक धारण करे इस प्रकार विचार करकेउन्हों ने परस्पर के इस विचार रूप अर्थ को स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उस पूर्व गृहीत भक्त पान को उन्होंने एकान्त स्थान मे परिष्ठापित कर दिया और परिष्ठापित करके वे सब जहां शत्रुंजय पर्वत था वहाँ चले गये (उवागच्छित्ता) वहा जाकर के (सेत्तुज पव्वय दुरूहति, दुरूहित्ता जाव काल अणव-

હવે અમને એ જ વાત યોગ્ય લાગે છે કે અમે આ પૂર્વગૃહિત ભક્તપાનનું પરિષ્ઠાપન કરીને શત્રુંજય નામના પર્વત ઉપર ધીમે ધીમે ચઢીએ

(सलेहणा झूसणा झूसियाण काल अणवकंखमाणाण विहरित्तए त्तिकट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता त पुव्वगहियं भत्तपाण एगते परिट्ठवेंति, परिट्ठवित्ता जेणेव सेत्तुज पव्वए तेणेव उवागच्छति)

અને ત્યાં કાય અને કષાયને કૃશ કરનારી સલેખનાને મરણાશંસાથી રહિત થઇને પ્રેમપૂર્વક ધારણ કરીએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના આ વિચાર રૂપ અર્થને સ્વીકારી લીધો સ્વીકાર કરીને તેમણે તે પૂર્વગૃહીત ભક્તપાનને એકાંત સ્થાને પરિષ્ઠાપિત કરી દીધું અને પરિષ્ઠાપિત કરીને તેઓ સર્વે જ્યાં શત્રુંજય પર્વત હતો ત્યાં ચાલ્યા ગયા (उवागच्छित्ता) ત્યાં જઇને—

(सेत्तुज पव्वय दुरूहति, दुरूहित्ता जाव काल अणवकंखमाणा विहरति,

ततः खलु ते युधिष्ठिरप्रमुखाः पञ्चानगाराः 'सामाइयमाइयाइ' सामायिकादीनि चतुर्दशपूर्वाणि अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्यायं पालयित्वा षष्ठाष्टमादितपः कृत्वा द्विमासिक्या संलेखनयाऽऽत्मानं 'झोसित्ता' जुष्ट्वा सेवित्वा यस्यार्थाय क्रियते नग्नभावो=निर्ग्रन्थभावः यावत् तमर्थमाराधयति, आराध्य अनन्तम् अनन्तार्थविषयकं यावत् 'केवलवरणाणदंसणे' केवलवरज्ञानदर्शनं समुत्पन्नं यावत् सिद्धाः=सिद्धिगतिं प्राप्ता इत्यर्थः ॥ सू०३५ ॥

रुहमाणा विहरंति, तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं बहूणि वासाणि० दो मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहंति, तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा) वे शत्रुंजय पर्वत पर चढे चढकर के उन्होंने मरणाशंसा से रहित होकर संलेखना धारण करली। इस तरह उन युधिष्ठिर प्रमुख पंच अनगारोंने सामायिक आदि चतुर्दश पूर्वोका अध्ययन करके अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन करके तथा षष्ठ, अष्टम, आदि तपस्याओ को करके अन्त में दो मास की संलेखना से अपने आप की प्रीति पूर्वक सेवित किया और जिस निमित्त नग्न भाव-निर्ग्रंथ अवस्था धारण की थी उस अर्थ को उन्हों ने सिद्ध कर लिया। सिद्ध करके-आराधित कर के अनंत अर्थ को विषय करने वाले केवलवरज्ञानदर्शन को उत्पन्नकर यावत् वे सिद्धि गति को प्राप्त हो गये॥ सूत्र ३५ ॥

तएणं ते जुहिट्ठिल्लपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं० बहूणि वासाणि० दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसित्ता जस्सट्ठाए कीरइ, णग्गभावे जाव तमट्ठमारोहंति, तमट्ठमाराहित्ता अणंते जाव केवलवरणाणदंसणे समुप्पन्ने जाव सिद्धा)

તેઓ શત્રુંજય પર્વત ઉપર ચઢયા અને ચઢીને તેમણે મરણાશંસાથી રહિત થઈને સંલેખના ધારણ કરી લીધી આ પ્રમાણે તે યુધિષ્ઠિર પ્રમુખ પાંચે અનગારોએ સામાયિક વગેરે ચતુર્દશ પૂર્વોનું અધ્યયન કરીને ઘણાં વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનું પાલન કરીને તેમજ ષષ્ઠ અષ્ટમ વગેરે તપસ્યાઓને કરીને છેવટે બે માસની સંલેખનાથી પ્રેમપૂર્વક પોતાની જાતને સેવિત કરી અને જે નિમિત્તને લઈને નગ્નભાવ-નિર્ગ્રંથ અવસ્થા ધારણ કરી હતી તે અર્થને તેમણે સિદ્ધ કરી લીધો સિદ્ધ કરીને આરાધિત કરીને અનંત અર્થને વિષયરૂપ બનાવનાર કેવળજ્ઞાન દર્શનને ઉત્પન્ન કરીને યાવત્ તેઓએ સિદ્ધગતિ મેળવી લીધી ॥ સૂત્ર ૩૫ ॥

मूलम्—तएणं सा दोवई अज्जा सुव्वयाण अज्जियाण अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइ अहिज्जइ अहिज्जित्ता वहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइयपडिक्कता कालमासे कालं किच्चा वंभलोए उववन्ना, तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता तत्थ णं दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता, से णं भंते! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झइ जाव काहिइ। एवं खलु जंबू! समणेणं जाव सपत्तेणं सोलमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि॥ सू० ३४॥ सोलसमं नायज्झयणं समत्त ॥ १६ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि। ततस्तदनन्तर खलु सा द्रौपदी आर्या साध्वी सुव्रतानामार्यिकाणामन्तिके सामायिकादिकानि एकादशाङ्गानि अधीते, अधीत्य बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा मासिक्या सलेखनया आलोचित प्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा 'वभलोए पचमे ब्रह्मलोके देवत्वेन' उववन्ना'

'तएणं सा दोवई' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (सा दोवई अज्जा) उस द्रौपदी आर्याने (सुव्वयाण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) सुव्रता आर्या के पास सामायिक आदि ११ अगो का अध्ययन किया (अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोइय पडिक्कता कालमासे काल किच्चा बभलोए उववन्ना) अध्ययन करके अनेक वर्ष तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर एक मास की सलेखना

तएण सा दोवई इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (सा दोवई अज्जा) ते द्रौपदी आर्याए (सुव्वयाण अज्जियाण अतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ) सुव्रता आर्यानी पासे सामायिक वगेरे ११ अगोनु अध्ययन कर्युं

(अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि० मासियाए सलेहणाए० आलोईय पडिक्कता कालमासे कालकिच्चा बभलोए उववन्ना)

अध्ययन करीने घणा वर्षो सुधी श्रामण्य पर्यायनु पालन कर्यु त्यार

उत्पन्ना, तत्र तस्मिन् देवलोके-खलु अस्त्येकेषां=केषांचिद्देवानाम् दशसागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता, तत्र खलु द्रौपदेर्देवस्य दशसागरोपमानि स्थितिः प्रज्ञप्ता तत्र खलु गौतमः पृच्छति-हे भदन्त ! स खलु द्रौपदी देव आयुर्भवस्थितिक्षयेण 'ताओ' तस्माद् देवलोकाच्च्युत्वा कुत्रगमिष्यति कुत्रोत्पत्स्यते ? भगवान् प्राह-' जाव ' इति यावन्महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति, यावत् सर्वदुःखानामन्तं करिष्यति ।

से आलोचित प्रतिक्रान्त बन के काल अवसर काल कर के पाचवें ब्रह्म लोक में देव की पर्याय से उत्पन्न हुई । (तत्थ ण अत्थे गइयाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, सेण भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झइ, जाव काहिइ । एवं खलु जंबू ! समणेण जाव सपत्तेण सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) उस देवलोक में कितनेक देवों की दश सागर की स्थिति प्रज्ञप्त हुई है। सो वहा द्रौपदी देव की दश सागर की स्थिति हुई। अब गौतम पूछते हैं हे भदत ! वह द्रौपदी देव आयु एव भवस्थिति के क्षय होने पर वहा से चव कर कहां जावे गा-कहा उत्पन्न होगा ? उत्तर में भगवान कहते हैं-हे गौतम ! वह द्रौपदी देव वहां से चव कर महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगा और वहीं से सिद्ध बनेगा यावत् समस्त दुःखों का अंत करेगा।

પછી એક માસની સલેખનાથી આલોચિત પ્રતિક્રાંત બનીને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને પાચમા બ્રહ્મલોકમા દેવના પર્યાયથી જન્મ પામી

(तत्थ ण अत्थेगइयाण देवाण दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, तत्थ ण दुवयस्स देवस्स दस सागरोवमाइ ठिई पण्णत्ता, सेण भंते ! दुवए देवे ताओ जाव महाविदेहे वासे सिज्झइ, जाव काहिइ । एव खलु जंबू ! समणेण जाव सपत्तेण सोलमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

તે દેવલોકમા કેટલાક દેવોની દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞપ્ત થઈ છે આ પ્રમાણે દ્રૌપદી દેવીની ત્યા દશ સાગરની સ્થિતિ પ્રજ્ઞપ્ત થઈ

હવે ગૌતમ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદન્ત ! તે દ્રૌપદી દેવીની આયુ અને ભવસ્થિતિ પૂરી થયા બાદ ચવીને ક્યા જશે ? ક્યા ઉત્પન્ન થશે ?

તેના ઉત્તરમા ભગવાન કહેવા લાગ્યા કે હે ગૌતમ ! તે દ્રૌપદી દેવ ત્યાથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ બનશે યાવત્ તેઓ પોતાના સમસ્ત દુઃખોનો અંત કરશે

सुधर्मास्वामी कथयति-'एवं खलु' इत्यादि। एवं खलु हे जम्बू! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं समाप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायं=पूर्वकथितः अर्थः=द्रौपदीदृष्टान्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः, प्ररूपितः, इति ब्रवीमि व्याख्यापूर्ववत् ॥ ३४ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्री शाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-व्रतिविरचितायां ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्या, नगारधर्मामृतवर्षि-ण्याख्यायां व्याख्यायां षोडशमध्ययनं समाप्तं ॥ १६ ॥

सुधर्मा स्वामी कहते हैं हे जंबू! श्रमण भगवान महावीर ने जो सिद्धि गतिनामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस षोडश ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्त द्रौपदी दृष्टान्त रूप भाव अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं उन्हीं श्रमण भगवान महावीर के द्वारा कहे श्रुत उपदेश के अनुसार कहता हूँ ॥ सूत्र ३६ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका सोलहवा अध्ययन समाप्त ॥ १६ ॥

સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે આ સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વે વર્ણવેલો દ્રૌપદી દૃષ્ટાંત રૂપ ભાવ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીર વડે કહેવાએલા શ્રુત ઉપદેશ મુજબ જ તમને હું કહી રહ્યો છું ॥સૂ૦૩૬॥

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું સોળમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૬ ॥

नाए जाव उवायमाणा२ चिट्ठंति, तएणं से णिज्जामए तओ मुहुत्ततरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तएणं से णिज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी- एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालियदीवे तेणं संवूढा एसणं कालियदीवे आलोक्कइ, तएणं ते कुच्छिधारा य४ तस्स णिज्जामगस्स अंतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेण वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोयवहणं लवेंति लवित्ता एगट्ठियाहिं कालियदीव उत्तरंति, तत्थ णं ते वहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य वहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासंति पासित्ता तेसिं गंध अग्घायंति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा तओ अणेगाइ उब्भमंति, तेणं तत्थ पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहं सुहेणं विहरंति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=

-ःजइणं भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थ-(भंते ! हे भदंत ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं) यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धिगति नामकस्थान को प्राप्तकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तर-

---

जइणं भंते ! इत्यादि—

टीकार्थ-(भंते !) હે ભદન્ત ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं) જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह—एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये हस्तिशीर्षं नाम नगरमासीत् । 'वण्णओ' वर्णकः='ऋद्धे' इत्यादि-नगरवर्णनम् पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु कनककेतुर्नाम राजाऽऽसीत् 'वण्णओ' वर्णकः—'महयाहिमवते' इत्यादि राजवर्णन पूर्ववद् बोध्यम् । तत्र खलु हस्तिशीर्षे

मस्स ण भंते ! णायज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव संप-त्तेण के अट्ठे पण्णत्ते) सोलहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है—तो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने सत्रहवें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है (एव खलु जंबू !) इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुध-र्मा स्वामी अब उन्हें समझाते हैं—वे कहते हैं हे जंबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है:—

(तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण कणगकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थ, ण हत्थिसीसे णयरे बहवे संजत्ता णावा वाणियगा परिवसंति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था) उस काल और उस समय मे हस्तिशीर्ष नाम का नगर था। "ऋद्ध" इत्यादि रूपसे पूर्व अध्ययनों में वर्णित पाठ की तरह इस नगर का वर्णन जानना चाहिये। उस नगर मे कनक केतु नामका राजा रहता था। इसका भी वर्णन "महया हिमवंत" इत्यादिरूप से पहिले के अध्ययनोंमे वर्णित राजाओंके वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। उस

(सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तरमस्स ण भंते ! णायज्झ-यणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते)

સોળમા જ્ઞાતાધ્યયનનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ત્યારે સિદ્ધ ગતિ સ્થાનને મેળવી ચૂકેલા તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે સત્તરમા જ્ઞાતા ધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે

(एव खलु जंबू) આ રીતે જંબૂના પ્રશ્નને સાંભળીને તેમને સમજાવતા સુધર્મા સ્વામી કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ! તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે —

(तेण कालेण तेण समएण हत्थिसीसे नयरे होत्था, वण्णओ, तत्थण कण-गकेऊणाम राया होत्था, वण्णओ, तत्थण हत्थिसीसे णयरे बहवे संजत्ता णावा वाणियगा परिवसंति, अड्ढा जाव बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था)

તે કાળે અને તે સમયે હસ્તિશીર્ષ નામે નગર હતું "ऋद्ध" વગેરે રૂપમાં પહેલાના અધ્યયનોમાં વર્ણન કરવામાં આવેલા પાઠની જેમ આ નગરનું વર્ણન પણ જાણી લેવું જોઈએ તે નગરમાં કનકકેતુ નામે રાજા રહેતો હતો.

नाए जाव उवायमाणा२ चिट्ठंति, तएण मे णिज्जामए तओ मुहुत्ततरस्स लद्धमइए३ अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था, तएण से णिज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी- एव खलु अह देवाणुप्पिया ! लद्धमइए जाव अमूढदिसाभाए जाए, अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालियदीवे तेण सवूढा एसण कालियदीवे आलोक्कइ, तएण ते कुच्छिधारा य४ तस्स णिज्जामगस्स अतिए एयमट्ठ सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयाक्खिणाणुकूलेण वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता पोय वहण लवेंति लवित्ता एगट्ठियाहिं कालियदीव उत्तरति, तत्थ ण ते वहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य वहवे तत्थ आसे पासति, कि ते ?, हरिरेणुसोणिसुत्तगा आइण्णवेढा, तएणं ते आसा ते वाणियए पासति पासित्ता तेसि गंध अग्घायति अग्घायित्ता भीया तत्था उव्विग्गमणा तओ अणेगाइ उब्भमाति, तेणं तत्थ पउरतणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति ॥ सू० १ ॥

टीका—जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन षोडशस्य ज्ञाताध्ययनस्यायमर्थः=

-'जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ-(भते ! हे भदत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव संपत्तेण) यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धिगति नामकस्थान को प्राप्तकर चुके हैं (सोलसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते सत्तर-

---

जइण भते ! इत्यादि—

टीकार्थ-(भते !) હે ભદન્ત ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण) જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે-જેઓ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચૂકયા છે

माना ' सखोहिज्जमाणी २ ' संक्षोभ्यमाणा २ पुनः पुनः क्षोभ माप्यमाणा सती तत्रैव=एकस्थान एवेतस्ततः परिभ्राम्यति किन्तु ततः परं गन्तुं न प्रभवतीति भावः। ततः खलु स निर्यामकः=नाविकः ' णट्ठमइए ' नष्टमतिकः-मतिज्ञानरहितः ' णट्ठसुइए ' नष्टश्रुतिकः-विस्मृतनिर्यामकशास्त्रः दिग्निर्णयं कर्तुमशक्तत्वात् णट्ठसण्णे ' नष्टसंज्ञः=मार्गज्ञानरहितः ' मूढदिसाभाए ' मूढदिग्भागः=पूर्वादि दिग्विभागज्ञानरहितः जातश्चाप्यासीत्, पुनश्च स न जानाति यत् कतर=कं देश

२ तत्थेव परिभमइ, तएण से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठ सुइए णट्ठ सण्णे मूढदिसभाए जाए यावि होत्था) एक दिनकी बात है कि जब ये सांया त्रिक पोत वणिक एक जगह मिलकर बैठे हुए थे तब अष्टम अध्ययन में वर्णित अरहन्नक सेठ की तरह इनका लवण समुद्रसे होकर परदेश में व्यापर निमित्त जाने का विचार हुआ। विचार स्थिर होते ही ये जब नौका द्वारा लवण समुद्र में सैकडो योजन तक निकल चुके तब इनके लिये जिन रक्षित और जिनपालितकी तरह आकस्मिक अनेक उत्पातशत (सैकडों)हुए। उस समय प्रलय कालकी तरह प्रचण्ड वायु उठी। उससे उनकी नौका बार २ डगमगा ने लगी इधर से उधर फिर ने लगी। बार २ चञ्चल होकर बार २ क्षुभित होकर एक ही स्थान पर नीची ऊँची होने लगी-उससे आगे वह नहीं बढी। इससे निर्यामिक-नाविक-मतिज्ञान से रहित हो गया। दिशाओं का निर्णय करने का ज्ञान उसका जाता रहा। वह मार्ग ज्ञान रहित होकर दिग्मूढ बन गया। (ण जाणइ

२ सखोहिज्जमाणी १ तत्थेव परिभमइ, तएण से णिज्जामए णट्ठमइए णट्ठसुइए णट्ठसण्णे मूढ दिसाभाए जाए यावि होत्था)

એક દિવસની વાત છે કે જ્યારે તેઓ સર્વે સાંયાત્રિક પોતવણિકો એક સ્થાને એકત્ર થઈને બેઠા હતા ત્યારે આઠમા અધ્યયનમાં વર્ણિત અરહન્નક શેઠની જેમ તેમનો પણ લવણ સમુદ્રમાં થઈને પરદેશમાં વેપાર માટે જવાનો વિચાર થયો. વિચાર સ્થિર થતાં જ તેઓ જ્યારે નૌકા વડે લવણ સમુદ્રમાં સેંકડો યોજન સુધી પહોંચી ગયા ત્યારે જીનપાલિત અને જીનરક્ષિતની જેમજ તેમના માટે પણ સેંકડો ઓચિંતા ઉપદ્રવો ઉત્પન્ન થયા તે વખતે પ્રલય કાળના જેવો પ્રચંડ વાયુ ફુંકાવા લાગ્યો. તેથી તેમની નૌકા વારંવાર ડગમગવા લાગી, આમથી તેમ ફરવા લાગી વારંવાર ચંચળ થઈને, વારંવાર ક્ષુભિત થઈને એક જ સ્થાન ઉપર નીચે ઉપર થવા લાગી, તેનાથી આગળ વધી નહિ તેથી નિર્યામિક-નાવિક મતિજ્ઞાનથી રહિત થઈ ગયો દિશાઓને જાણવાનું તેનું જ્ઞાન જતું રહ્યું માર્ગજ્ઞાનથી રહિત થઈને દિગ્મૂઢ બની

नगरे बहवः ' संजत्ताणावावाणियगा ' सयात्रानौकावाणिजकाः'=स=सङ्गता यात्रा=देशान्तरगमनं सयात्रा, तत्प्रधाना नौकावाणिजकाः=पोतवणिजः-सयात्रा नौका वाणिजकाः परिवसन्ति कीदृशाः ? इत्याह-आढ्या यावत् ' बहुजणस्स ' बहुजनस्य सम्बन्धसामान्ये षष्ठीजनसमुदायेनेत्यर्थः ' अपरिभूया ' अपरिभूताः= पराभवरहिता चाप्यासन् । ततः खलु तेषां सयात्रानौका वाणिजकानाम् अन्यदा= अन्यस्मिन् कस्मिंश्चित्समये ' एगयओ ' एकतः एकत्रमिलिताः ' जहा अरहण्णओ ' यथा अर्हन्नकः=अष्टमाध्ययनोक्तार्हन्नकवत् यावत् लवणसमुद्रमनेकानि योजन शतानि ' ओगाढा ' अवगाढाः=उत्तीर्णाश्चाप्यासन् । ततः=तत्र खलु तेषां यावत् बहूनि ' उप्पाइयसयाइं ' औत्पातिकशतानि=आकस्मिकोत्पातशतानि यथा माक न्दिकदारकयोः-जिनरक्षितजिनपालितयोः समजातानि तथैवास्यापि यावत् ' कालि यवाए ' कालिकवातः मलयकालिकात्मचण्डवातश्च तत्र समुत्थितः । ततः=तदन न्तरं खलु सा नौका तेन कालिकवातेन ' आघोलिज्जमाणी २ ' आघूर्ण्यमाना २ पुनः पुनर्भ्राम्यन्ती ' संचालिज्जमाणी २ ' संचाल्यमाना २ पुनः पुनश्चाल्य

हस्तिशीर्ष नगरमें अनेक पोत वणिक (नावसे व्यापार करने वाले) रहते थे। ये एक साथ मिलकर ही परदेश में जाकर व्यापार किया करते थे। इनकी उस नगर में अच्छी प्रतिष्ठा थी-कारण ये सब के सब लक्ष्मीदेवी के विशेष रूप से कृपापात्र थे। (तएणं तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया एगयाओ जहा अरहण्णाओ जाव लवणसमुद्द अणेगाइं जोयण सयाइं ओगाढा यावि होत्था, तएणं तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइं जहा मागदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समुट्ठिए, तएणं सा तेण कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी २ संचालिज्जमाणी २ संखोहिज्जमाणी

આ રાજાનું વર્ણન પણ " महया हिमवंत " વગેરે રૂપમાં પહેલાંના અધ્ય યનોમાં વર્ણિત રાજાઓના વર્ણન જેવું જ જાણી લેવું જોઈએ તે હસ્તિશીર્ષ નગરમાં ઘણા પોતવણિકો (વહાણ વડે વેપાર કરનારા) રહેતા હતા. તેઓ સર્વે એકી સાથે મળીને પરદેશમાં જતા અને ત્યાં વેપાર કરતા હતા. તે નગરમાં તેમની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી કેમકે ખાસ કરીને તેઓ સર્વે લક્ષ્મીના કૃપાપાત્ર હતા.

(तएणं तेसिं संजत्ता णावा वाणियगाणं अन्नया एगयाओ जहा अरहण्णओ जाव लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था, तएणं तेसिं जाव बहूणि उप्पाइयसयाइं जहा मागदियदारगाणं जाव कालियवाए य तत्थ समु ट्ठिए, तएणं सा णावा तेण कालियवाएणं आघोलिज्जमाणी २

प्रविशन्ति, अनुप्रविश्य यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य यावत् तत्प्राभृतम् 'उवणेंति' उपनयन्ति भूपसमीपे स्थापयन्ति॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ताणावावाणियगाणं तं महत्थं जाव पडिच्छइ पडिच्छित्ता तं संजत्ताणावावाणियगा एवं वयासी तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! गामागार जाव आहिंडह लवणसमुदं च अभिक्खणं२ पोयवहणेणं ओगाहह तं अत्थि आइं केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?, तएणं ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ एवं वयासी—एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव कालियदीवं तेणं संवूढा, तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव

कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उववेंति) वहाँ आकर के वे लोग उस हस्तिशीर्ष नगर के बाहर के प्रधान उद्यान में ठहर गये वहा ठहर उन्हो ने वहीं पर शकटी-गाडी शाकटो-गाडों को ढील-ठहरा दिया। ढीलकर के बाद में महार्थ-महाप्रयोजन साधक भूत -यावत् प्राभृत भेट को उन्हों ने अपने २ हाथो मे लिया-और लेकर के वे हस्तिशीर्ष नगर में प्रविष्ट हुए नगर में प्रविष्ट होकर वे जहा कनक केतु राजा थे वहा पहुँचे। वहा पहुँचकर उन्हो ने उस महाप्रयोजन साधक भूत प्राभृत को राजा के पास रख दिया॥ सू०२॥

हत्थिसीसं नगरं अणुपविसति, अणुपविसित्ता, जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जाव उववेंति)

ત્યા આવીને તેઓ બધા તે હસ્તિશીર્ષ નગરની બહારના મુખ્ય ઉદ્યાનમા રોકાઈ ગયા, ત્યા રોકાઇને તેમણે ત્યા જ શકટી-ગાડી અને શાકટો-ગાડાઓને છોડી મૂક્યા ત્યારબાદ તેમણે મહાર્થ-મહાપ્રયોજન સાધક ભૂત યાવત્ ભેટને પોતપોતાના હાથોમા લીધી અને લઈને તેઓ હસ્તિશીર્ષ નગરમા પ્રવિષ્ટ થયા નગરમા પ્રવિષ્ટ થઈને તેઓ જ્યા કનકકેતુ રાજા હતો ત્યા પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે તે મહાપ્રયોજન સાધક રૂપ ભેટને રાજાની સામે મૂકી દીધી ॥ સૂત્ર ૨ ॥

वा दिशं वा विदिशं वा मति मे पोतवहनम् नौकायान ' अवहिए ' अपहृतम् महा वातेन नीतम् , इति । इति कृत्वा=इतिमनसि निधाय अपहतमनः सङ्कल्पो यावत् ध्यायति=आर्तध्यानं करोति । तत खलु ते बहवः कुक्षिधाराश्च=पार्श्वतो नौका चालकाः कर्णधाराश्च=नाविकाः । ' गब्भिल्लगाय ' गार्भेयकाश्च नौमध्ये यथाव सरं कर्मकराः, सयात्रानौका वाणिजकाः=भाण्डपतयश्च यत्रैव स निर्यामकः=नौका धिपतिस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य एवमवादिषुः-किं खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! अपहतमनःसङ्कल्पाः निरुत्साहमनसः यावत् ' झियायह ' ध्यायथ आर्तध्यानं कुरुथ, आदरार्थे बहुवचनम् । तत खलु स निर्यामकस्तान बहून् कुक्षिधाराश्च ४

कयर देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे अवहिए त्ति कट्टु) अतः जब उसे इस बात का भी ज्ञान नहीं रहा कि यह महावात मेरी नौका को किस दिशा अथवा विदिशा की ओर ले गया है-तब इस प्रकार मन में विचार कर के वह (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) अपहत मन. संकल्पवाला बनकर यावत् आर्तध्यान करने लगा। (तएण ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणि यगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ) इतने में अनेक कुक्षि धर-पार्श्व में बैठकर नौका चलाने वाले कर्णधार-नाविक, गार्भेयक-नौका के भीतर यथावसर काम करने वाले और सांयात्रिक पोत वणिक जहां वह निर्यात्रिक था-वहा आये। (उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्न तुम देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएणं से णिज्जामए

ગયો. (ण जाणाइ कयर देस वा दिस वा विदिस वा पोयवहणे अवहिएत्ति कट्टु) એથી જ્યારે તેને આ વાતની પણ ખબર રહી નહિ કે આ મહાવાત અમારી નૌકાને કઈ દિશા અથવા તો વિદિશા તરફ લઈ ગયો છે ત્યારે મનમા આ જાતનો વિચાર કરીને તે (ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ) અપહતમન સંકલ્પવાળો થઇને યાવત્ આર્તધ્યાન કરવા લાગ્યો.

(तएणं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भिल्लगा य संजत्ता णावा वाणियगा य जेणेव से णिज्जामए तेणेव उवागच्छइ)

એટલામા ઘણા કુક્ષિધર-પાર્શ્વમા બેસીને નૌકા ચલાવનારા, કર્ણધાર નાવિક, ગાર્ભેયક-નૌકામા યથા સમય કામ કરનારા અને સાયાત્રિકો-પોત વણિકો જ્યા તે નિર્યામક હતો ત્યા ગયા.

(उवागच्छित्ता एवं वयासी-किन्न तुम देवाणुप्पिया ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह-तएणं से णिज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य ४ एवं वयासी-

य पावरणाण य नवतयाण य मलयाण य मसूराण य सिला-वट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति भरित्ता सगडीसागडं जोएंति जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति भरित्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति लंबित्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्दफरिसरस रूवगंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च णं ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्त वीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति, जत्थ२ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टंति वा तत्थ तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिंदियपाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति तेसिं परि-पेरंतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ ण तेसिं बहूणं

बहवे तत्थ आसा किं ते ?, हरिरेणु जाव अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति, तएणं सामी अम्हेहिं कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे, तएण से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्तगाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा ते संजत्तए एवं वयासी–गच्छहणं तुब्भे देवाणुप्पिया मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएण ते संजत्ताणावावाणियगा कणगकेऊ रायं एवं वयासी–एवं सामि त्तिकट्टु आणाए पडिसुणेंति, तएणं कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति, तएणं ते कोडुंबिय० सगडीसागडं सज्जेंति सज्जित्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य वित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूण सोतिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागडं भरेंति भरित्ता बहूणं किण्हाण य जाव सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य ४ गंथिमाण य ४ जाव संघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति बहूणं कोट्ठपुडाण य केयईपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाण सगडीसागडं भरेंति बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति । बहूण कोयवियाण य कंबलाण

टीका—' तएण से ' इत्यादि । ततः खलु स कनककेतू राजा तेषा सयात्र नौकावाणिजकाना तन्महार्थं यावत् माभृत ' पडिच्छइ ' प्रतीच्छति=स्वीकरोति प्रतीष्य तान् सयात्रनौकावाणिजकान् एवमवादीत्-यूय खलु हे देवानुप्रियाः ! ' गामागर जाव अहिंडह ' ग्रामाकर यावत् – ग्रामाकरनगरादिषु आहिण्डथ= गच्छत, लवणसमुद्र च अभीक्ष्ण २ पोतवहनेन अवगाहध्वे ' त ' तत्=तर्हि अस्ति ' आइ ' इतिवाक्यालङ्कारे किमपि ' भे ' युष्माभिः ' कहिंचि ' कुत्रचिद् ' अच्छेरए ' आश्चर्यकर्म=आश्चर्यजनकवस्तु 'दिट्ठपुव्वे ' दृष्टपूर्वम् ? यदि दृष्टमस्ति तर्हि कथयतेतिभावः । ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजका कनककेतुमेवमव

—ःतएण से कणगकेऊ राया इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से कणगकेऊ राया) उस कनककेतु राजा ने (तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाण त महत्थ जाव पडिच्छइ, पडि-च्छित्ता-ते सजत्ता णावा वाणियगा एव वयासी-तुब्भे ण देवाणुप्पिया ! गामगर जाव आहिंडह लवणसमुद्द च अभिक्खण २ पोयवहणेण ओगाहह त अत्थिआइ केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?) उन सायात्रिक पोतवणिक जनों की उस महार्थसाधक भेंट को स्वीकार कर लिया और स्वीकार करके फिर उन सायात्रिक पोतवणिक जनों से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियों तुमलोग अनेक ग्राम आकर नगर आदि स्थानों में जाते रहते हो और बार २ पोतवहन द्वारा लवणसमुद्र में अवगाहन करते रहते हो तो कहो कही पर तुम ने यदि कोई आश्चर्य कारी वस्तु देखी हो तो कहो-(तएणं ते सजत्ता णावा वाणियगा कण

तएण से कणगकेऊ राया इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (से कणगकेऊ राया) ते કનકકેતુ રાજાએ (तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाण त महत्थ जाव पडिच्छइ, पडिच्छित्ता-ते सजात्ता णावा वाणियगा एव वयासी-तुब्भेण देवाणुप्पिया ! गामागर जाव आहिंडह लवणसमुद्द च अभिक्खण २ पोयवहणेणं ओगाहह त अत्थि आइ केइ भे कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?)

તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોની તે મહાર્થ સાધક ભેટને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુ પ્રિયો ! તમે લોકો ઘણા ગામ, આકર, નગર વગેરે સ્થાનોમા આવજા કરતા રહો છો અને વહાણુ વડે લવણુ સમુદ્રની વારવાર યાત્રા કરતા રહો છો તો અમને કહો કે તમે કોઈ નવાઈ પમાડે તેવી અદ્ભુત વસ્તુ જોઈ છે ?

कोट्ठपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य णियरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति जत्थ २ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदियपाउग्गाय दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति करित्ता वियरए खणंति खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूण पाणगाण वियरे भरेंति भरित्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठंति, जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयविया य जाव हंसगब्भा य अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं ठवेंति ठवित्ता तेसिं परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति, तएणं ते आसा जेणेव एते उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तत्थण अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूवगंधा इतिकट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाण सद्द जाव गंधाणं दूरदूरेणं अवक्कमंति, तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहसुहेणविहरंति, एवामेव समणाउसो! जो अम्ह णिग्गंथो वा णिग्गंथी वा जाव सद्दफरिसरसरूवगंधेसु णो सज्जइ णो रज्जइ णो गिज्झइ, णो मुज्झइ णो अज्झोववज्जेइ से णं इहलोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ ॥ सू० ३ ॥

कनककेतू राजा तेषां 'सजत्तिगाण' सांयात्रिकाणामन्तिके एतमर्थ श्रुत्वा तान् सांयात्रिकान् एवमवदत्-गच्छत खलु यूयं हे देवानुप्रियाः! मम कौटुम्बिक-पुरुषैः सार्द्ध कालिकद्वीपात्तानश्वानानयत। ततः खलु ते सयात्रानौवाणिजका कनककेतु राजानमेवमवादिषुः हे स्वामिन्! एवमस्तु 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा= इत्युक्त्वा 'आणाए' आज्ञायाः=आज्ञामित्यर्थ,—'पडिसुणेंति' प्रतिश्रृण्वन्ति=

कर वहां से कई योजन दूरतक जंगलमें भाग गये। अतः हे देवानुप्रिय "कालिकद्वीप में हमलोगों ने उन घोडों रूपी आश्चर्य को देखा है। (तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तगाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा ते सजत्तए एवं वयासी-गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोडुंबिय पुरि-सेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा कणगकेऊ राय एव वयासी एव सामित्ति कट्टु आणाए पडिसुणेति, तएण कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छह ण तुब्भे देवाणुप्पिया! सजत्तिएहिं सद्धिं कालिय दीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेति) इसके बाद कनक केतु राजा ने उन सांयात्रिक पोतवणिक्जनो के मुख से इस अर्थ को सुन-कर उन सांयात्रिकों से इस प्रकार कहा हे देवानुप्रियो! तुमलोग जाओ और मेरे कौटुम्बिक पुरुषो के साथ कालिकद्वीप से उन अश्वो को लाओ। इस प्रकार सुनकर पोतवणिक् जनो ने कनक केतु राजा से ऐसा कहा

વનમાં નાસી ગયા હે દેવાનુપ્રિય! અમોએ કાલિક દ્વીપમાં તે અશ્વ રૂપી અદ્ભુત વસ્તુને જોઈ છે

(तएण से कणगकेऊ राया तेसिं सजत्तिगाण अंतिए एयमट्ठ सोच्चा ते सजत्तए एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा कणग केऊ राय एव वयासी एव सामी त्ति कट्टु आणाए पडिसुणेंति, तएण कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-गच्छहण तुब्भे देवाणु-प्पिया! सजत्तिएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह, ते वि पडिसुणेंति)

ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ તે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોના મુખથી આ વાતને સાંભળીને તે સાંયાત્રિકોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો મારા કૌટુંબિક પુરુષોની સાથે કાલિક દ્વીપમાં જાઓ અને ત્યાંથી તે અશ્વોને લાવો આ પ્રમાણે કનકકેતુની આજ્ઞા સાંભળીને તે પોતવણિકજનોએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે સ્વામી! તમારી આજ્ઞા અમારા માટે પ્રમાણ સ્વરૂપ છે આમ કહીને તેમણે કનકકેતુ રાજાની આજ્ઞા સ્વીકારી લીધી ત્યાર

दन्-एवं खलु वयं हे देवानुप्रियाः ! इहैव हस्तिशीर्षे नगरे परिवसामः, 'तंचेव' तदेव पूर्वोक्तवर्णनं सर्वमत्र वाच्यम् 'जाव' यावत् कालिकद्वीपान्ते=कालिक द्वीपसमीपे खलु 'संवूढा' संव्यूढाः-प्राप्ताः, तत्र खलु बहवो हिरण्याकराश्च यावद् बहवस्तत्राश्वाः सन्ति, किंते' किंभूतास्ते ? इत्याह-'हरिरेणु जाव' हरिद्रेणु शोणि सूत्रकाः यावद्-तेऽस्मद्गन्धमाघ्राय भीताः सन्तः अनेकानि योजनानि दूरम् 'उब्भमति' उद्भ्रमन्ति पलायन्ते स्म, तत्. खलु हे स्वामिन् ! अस्माभि "कालिक द्वीपे तेऽश्वाः सन्ति" तदेव 'अच्छेरए' आश्चर्यक दृष्टपूर्वमिति । ततः खलु स

गकेऊ एव वयासी एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे वसामो तं चेव जाव कालियदीव तेण संवूढा तत्थ णं बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किंते ? हरिरेणु जाव अणेगाइ जोयणाइ उब्भमति-तएणं सामी अम्हें हि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे)
इस प्रकार राजा की बात सुनकर उन सांयात्रिक पोतवणिग्जनों ने उन कनककेतु राजा से कहा हे देवानुप्रिय ! हमलोग इसी हस्तिशीर्ष नगर में रहते हैं। हमलोग यहा से लवणसमुद्र में होकर व्यापार के निमित्त बाहर परदेश गये हुए थे-। मार्ग में हमलोगो को अनेक प्रकार के सैकडो उपद्रव हुए-उनसे जिस किसी तरह सुरक्षित हो हमलोग कालिकद्वीप के समीप पहुँच गये । वहाँ हमने अनेक हिरण्य आदि की खानो को एव अनेक अश्वों को कि जिनका कटिभाग हरिद्वर्णवाली धूलि से रचित कटिसूत्रसे चिन्हित था देखा, वे हमलोगों की गध को सूघ

(तएण ते संजत्ता णाआ वाणियगा कणगकेऊ एव वयासी-एव खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे वसामो त चेव जाव, कालिभ दीव तेण संवूढा, तत्थ ण बहवे हिरण्णागरा य जाव बहवे तत्थ आसा किं ते ? हरिरेणु जाव अणेगाइ जोयणाइ उब्भमति-तएण सामी अम्हेंहि कालियदीवे ते आसा अच्छेरए दिट्ठपुव्वे)

આ પ્રમાણે રાજાની વાત સાભળીને તે સાંયાત્રિક પોતવણિકજનોએ તે કનકકેતુ રાજાને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! અમે બધા આ હસ્તિશીર્ષ નગર મા જ રહીએ છીએ અમે બધા વ્યાપાર ખેડવા માટે અહીંથી લવણ સમુદ્રમા થઈને બહાર પરદેશમા ગયા હતા રસ્તામા ઘણી જાતના સેકડો ઉપદ્રવો થયા છેવટે ગમે તેમ કરીને સુરક્ષિત રૂપમા અમે બધા કાલિકદ્વીપની પાસે ગયા ત્યા અમોએ ઘણી હિરણ્ય વગેરે ની ખાણોને અને ઘણા અશ્વોને-કે જેમના કટિભાગો લીલા રગની માટીથી બનાવેલા કટિસૂત્રથી ચિહ્નિત હતા-જોયા અમારી ગધને સૂઘીને તે અશ્વો ત્યાથી કેટલાક યો. દૂર સુધી

'वित्तरीणाणय' वृत्तवीणाना=गोलाकार वीणाना च–अन्येषा च बहूनां नानाविधानां 'सोइंदियपाउग्गाण' श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणा=कर्णेन्द्रियसुखजनकाना द्रव्याणां= तन्त्र्यादिरूपाणा शकटीशाकट भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थ, भृत्वा बहूना 'किण्हाणय जाव सुक्काणय' कृष्णाना यावत्–नीलाना पीताना रक्ताना शुक्लानां च कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्ताना 'कट्ठकम्माण य' काष्ठकर्मणा=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादीनाम्, 'पोत्थकम्माणय' पुस्तषु कर्मणा–पुस्तेषु=वस्त्रताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि= लेखनकर्माणि, तेपाम्, 'चित्तकम्माण य' चित्रकर्मणा=पट्टकादिषु चित्ररूपाणाम्, 'लेप्पकम्माणय' लेप्यकर्मणा=मृत्तिकासेटिकादिना वल्लयाद्याकाररचना विशेषरूपाणाम्, तथा–'गथिमाण य' ग्रन्थिमाना=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानाम्–यावत्–'वेढिमाण य' वेष्टिमाना=लतादि वेष्टनतो निष्पादितानाम्, 'पूरिमाण य' पूरिमाणा=कनकादिषु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो–को, पड्‌ भ्रामरियों को –गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखजनक तत्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा–भर करके फिर नीले, पीले, रक्त, शुक्ल और कृष्ण रग से रगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्तकर्मो को–वस्त्र, ताडपत्र एवं कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के लेखों को, निबन्धों को उपदेश पूर्ण–दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई कविता आदि को को–चित्रकर्मों को–पटिया आदि पर उकेरे गये विविध चित्रों को–लेप्यकर्मो को–मृत्तिका सेटिका आदि से वल्ली आदि रूप में बनाये गये चित्रों को, ग्रथिमों को विशेष चतुराई के साथ गांठों से बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रची गई चीजों को,–टोपियों को, हाथों की पैरों की अगुलियों में पहिरने योग्य

જેવી વીણાઓ, ભભાઓ–ભેરીઓ (નગારાઓ) પડ્–ભ્રામરીઓ, ગોળ આકાર વાળી વીણાઓ તેમજ બીજા પણ ઘણા કર્ણેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા તત્રી વગેરે સાધનોને ભર્યા ભરીને લીલા, પીળા, રાતા, સફેદ અને કાળા ૨ગોથી ૨ગાએલા લાકડાના બનેલા રમકડાને, પુસ્તકર્મોને–વસ્ત્ર તાડપત્ર અને કાગળ વગેરે ઉપર લખાએલા જાતજાતના લેખોને, નિબધોને, દૂહા, ચોપાઇ વગેરેમા લખાએલી ઉપદેશક કવિતાઓ વગેરેને, ચિત્ર કર્મોને–ફલક વગેરે ઉપર ચિત્રિત કરેલા ઘણા ચિત્રોને લેપ્ય કર્મોને, માટી સેટિકા વગેરેથી લતા વગેરે રૂપમા બનાવવામા આવેલા ચિત્રોને, ગ્રથિમોને–વિશેષ ચાતુર્યથી ગાઠોથી બનાવવામા આવેલા રમકડાને, લતાઓ વગેરે વડે વેષ્ટિત કરીને બનાવવામા આવેલી વસ્તુ

स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु कनककेतू राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-गच्छत खलु यूय हे देवानुप्रियाः ! सांयात्रिकैः सार्द्धं कालिकद्वीपात् मह्यम् अश्वानानयत। तेऽपि=कौटुम्बिकपुरुषा 'पडिसुर्णेति' प्रतिशृण्वन्ति 'तथास्तु' इत्युक्त्वा राजाज्ञा स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः शकटीशाकटं 'सज्जेंति' सज्जयन्ति=कालिकद्वीपे गमनार्थं सज्जीकुर्वन्ति, सज्जयित्वा तत्र खलु शकटीशकटे बहूनां च वल्लकीनां च, भ्रामरीणां च 'कच्छभीण य' कच्छभीना च-'कच्छभी' इति कच्छपाकारवीणाविशेषः, भभानां=भेरीणा च, षड्भ्रामरीणां च,

हे-स्वामिन् ! हमें आपकी आज्ञा प्रमाण है-ऐसा कहकर उन्हों ने कनक केतु राजा की आज्ञा को स्वीकार कर लिया। इसके बाद कनक केतु राजा ने अपने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया-और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-हे देवानुप्रियों ! तुम सांयात्रिक पोतवणिक् जनों के साथ जाओ -और कालिकद्वीप से मेरे लिये घोड़ों को ले आओ। राजा की इस आज्ञा को उन लोगों ने भी स्वीकार कर लिया। (तएणं ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थणं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भभाण य छब्भामरीण य चित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोइंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी सागडं भरेंति, भरित्ता बहूणं किण्हाण य जाव सघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति) इसके बाद उन कौटुम्बिक पुरुषों ने गाड़ी और गाड़ों को सज्जित किया-सज्जित करके उनमें उन्हों ने अनेक वीणाओं को, वल्लकियों को, भ्रामरियों को, कच्छप

બાદ કનકકેતુ રાજાએ પોતાના કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે સાયાત્રિક પોતવણિકજનોની સાથે જાઓ અને કાલિક દ્વીપમાથી મારા માટે ઘોડાઓને લાવો. રાજાની આ આજ્ઞાને તે લોકોએ પણ સ્વીકારી લીધી

(तएणं ते कोडुंबियपुरिसा सगडीसागडं सज्जेंति, सज्जित्ता तत्थणं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीणय कच्छभीणय भभाण य छब्भामरीण य चित्तवीणाण य अन्नेसिं च बहूणं सोइंदियपउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति, भरित्ता बहूणं किण्हाण य जाव सघाइमाण य अन्नेसिं च बहूणं चक्खिंदियपाउग्गाणं दव्वाणं सगडीसागडं भरेंति)

ત્યારપછી તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યા જોતરીને તેમા તેમણે ઘણી વીણાઓ, વલ્લકીઓ ભ્રામરીઓ, કાચબાના આકાર

'वित्तवीणाणय' वृत्तवीणानां=गोलाकार वीणानां च-अन्येषां च बहूनां नानाविधानां 'सोइदियपाउग्गाण' श्रोत्रेन्द्रिय प्रायोग्याणां=कर्णेन्द्रियसुखजनकानां द्रव्याणां=तन्त्र्यादिरूपाणां शकटीशाकटं भरन्ति तैर्वीणादिभिरित्यर्थः, भृत्वा बहूनां 'किण्हाणय जाव सुक्काणय' कृष्णानां यावत्-नीलानां पीतानां रक्तानां शुक्लानां च कृष्णादिपञ्चवर्णयुक्तानां 'कट्ठकम्माण य' काष्ठकर्मणां=काष्ठनिर्मितपुत्तलिकादीनाम्, 'पोत्थकम्माणय' पुस्तपु कर्मणा-पुस्तेषु=वस्त्रताडपत्रकर्गलादिषु कर्माणि=लेखनकर्माणि, तेषाम्, 'चित्तकम्माण य' चित्रकर्मणां=पट्टकादिषु चित्ररूपाणाम्, 'लेप्पकम्माणय' लेप्यकर्मणां=मृत्तिकासेटिकादिना वल्ल्याद्याकाररचना विशेषरूपाणाम्, तथा-'गंथिमाण य' ग्रन्थिमानां=कौशलातिशयेन ग्रन्थिसमुदायनिष्पादितानाम्-यावत्-'वेढिमाण य' वेष्टिमानां=लतादि वेष्टनतो निष्पादितानाम्, 'पूरिमाण य' पूरिमाणां=कनकादिषु पुत्तलिकावत् छिद्रादिपूरणेन

के आकार जैसी वीणाओं को, भभाओं भेरियो-को, पड्ड भ्रामरियों को -गोलाकार वीणाओं को, तथा और भी अनेक विधश्रोत्रेन्द्रिय सुखजनक तत्री आदिरूप द्रव्यों को, भरा-भर करके फिर नीले, पीले, रक्त, शुक्ल और कृष्ण रग से रगे हुए काठ के बने हुए खिलौनों को, पुस्तकर्मों को-वस्त्र, ताडपत्र एव कागज आदि पर लिखे विविध प्रकार के लेखों को, निबन्धों को उपदेश पूर्ण-दोहे चौपाइ आदि में लिखी हुई कविता आदि को को-चित्रकर्मों को-पटिया आदि पर उकेरे गये विविध चित्रों को-लेप्यकर्मों को-मृत्तिका सेटिका आदि से वल्ली आदि रूप में बनाये गये चित्रों को, ग्रथिमों को विशेष चतुराई के साथ गाठों से बनाये गये खिलौनों को, लताओं आदि द्वारा वेष्टित करके २ रचीं गई चीजों को,-टोपियों को, हाथों की पैरों की अगुलियों में पहिरने योग्य

જેવી વીણાઓ, ભભાઓ-ભેરીઓ (નગારાઓ) પડ્ડ-ભ્રામરીઓ, ગોળ આકાર વાળી વીણાઓ તેમજ બીજા પણ ઘણા કર્ણેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા તંત્રી વગેરે સાધનોને ભર્યાં ભરીને લીલા, પીળા, રાતા, સફેદ અને કાળા રંગોથી રંગાએલા લાકડાના બનેલા રમકડાને, પુસ્તકર્મોને-વસ્ત્ર તાડપત્ર અને કાગળ વગેરે ઉપર લખાએલા જાતજાતના લેખોને, નિબંધોને, દુહા, ચોપાઇ વગેરેમા લખાએલી ઉપદેશક કવિતાઓ વગેરેને, ચિત્ર કર્મોને-ફલક વગેરે ઉપર ચિત્રિત કરેલા ઘણા ચિત્રોને લેપ્ય કર્મોને, માટી સેટિકા વગેરેથી લતા વગેરે રૂપમા બનાવવામા આવેલા ચિત્રોને, ગ્રથિમોને-વિશેષ ચાતુર્યથી ગાઠોથી બનાવવામા આવેલા રમકડાને, લતાઓ વગેરે વડે વેષ્ટિત કરીને બનાવવામા આવેલી વસ્તુ

निष्पादितानाम्, 'संघाइमाण य' संघातिमानां=लोहकाष्ठादिभी रथादिवत् वस्तुसमूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अन्येषां च बहूनां 'चक्खिंदियपाउग्गाण' चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणां=नयनानन्दजनकानां द्रव्याणां शकटीशाकट भरन्ति। तथा बहूनां 'कोट्ठपुडाण य' कोष्ठपुटानां = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतकीपुटानां च यावत्-एलापुटानां च, कुङ्कुमपुटानां च, उशीरपुटानां='खस' इतिभाषा प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, त्वङ्गपुटानां चेत्यादि। अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकट भरन्ति। तथा बहोः खण्डस्य च गुडस्य च शर्करायाश्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः 'मच्छंडियाण य' मत्स्यण्डिकायाः='काल्पीमिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुलकन्द' इति प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकट भरन्ति। तथा बहूनां 'कोयवियाण य' कोयविकानां = रूतपूरितप्रावरणविशेषाणां 'रजाई' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलानां=रत्नकम्बलानाम्, प्रावरणानां=शाटिकानां 'चद्दर' इति प्रसिद्धानाम्, 'नवतयाण य' नवतकानाम्=ऊर्णामयपर्णानां

आभूषण आदि को को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों पर कृत छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन पूरिमों को और संघातिमों को-लोहकाष्ठ आदि की तरह अनेक वस्तुओं के समुदाय से निष्पादित चित्रों को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा। (बहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागड भरेंति, बहुस्स खंडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराणय अन्नेसिं च जिब्भिंदिय पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति बहूण कोयवियाण य केबलाणय पावरणाण य नवतयाण य

ઓને-ટોપીઓને, હાથો, પગો અને આંગળીઓમાં પહેરવાના આભૂષણુ વગેરેને પૂતળીની જેમ જે સુવર્ણ વગેરેના પતરા ઉપર કાણુાં પાડીને તેમને પૂરીને બનાવવામાં આવેલા ચિત્રો એટલે કે પૂરિમોને અને સંઘતિમોને લોખંડ, કાષ્ઠ વગેરેથી બનાવવામાં આવેલા રથ વગેરેની જેમ ઘણી વસ્તુઓને એકત્રિત કરીને તેમના વડે બનાવવામાં આવેલા ચિત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા નેત્ર ઇન્દ્રિયને ગમે તેવા દ્રવ્યોને ભર્યા

(बहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदिय पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति, बहुस्स खंडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छंडियाए य पुप्फुत्तरपउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति बहूण कोयवियाण य केबलाण य पावरणाण

' जीन ' इति प्रसिद्धानाम् , मलयाना च=मलयदेशोत्पन्नवस्त्रविशेषाणाम् , ' मसूराण य ' मसूरकाणा=वस्त्रादिनिर्मित वृत्ताकारासनविशेषाणाम् , ' सिलावट्टाण य ' शिलापट्टानां=पट्टाकारचिक्कणशिलाना यावत् हंसगर्भाणा=हंसः=चतुरिन्द्रियकृमिविशेषः, गर्भः=तन्निर्वर्तित कोसिकारोरुतरूपः, तन्मयवस्त्राण्यपि हंसगर्भाणीत्यु-

मलयाण य मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति) इसी तरह अनेक कोष्टपुटों को-सुगंधित द्रव्य विशेषों को केतकीपुटों को-सुगंधित पुष्पों यावत् एलापुटों को-इलायचियों को, उसीरपुटों को, खश के समुदाय को-कुकुमपुटों को तथा और भी अनेक, घ्राणेन्द्रिय को तृप्ति कारक द्रव्यों को उन लोगो ने गाडी और गाडो में भरा। बहुत सी खाड, बहुत से गुड बहुत सी शर्करा- मिसरी-बहुत सी मत्स्यण्डी-कालपी मिसरी बहुत से गुलकद, बहुतसे पद्मपाक को तथा और भी जिह्वाइन्द्रिय को तृप्ति करने वाले द्रव्यों को उन लोगों ने गाड़ी और गाडों में भरा। इसी तरह स्पर्शन इन्द्रिय को आनददेने वाले कोयविको को-रूई कपास-से भरे हुए प्रावरण विशेषों को-रजाइयो को-कम्बलों को-रत्न कम्बलों को-प्रावरणो को-चद्दरो को-नवलको को-ऊन के बने हुए पलेंचों को-जीनो को-मलयदेश के बने हुए वस्त्रों को, मसूरकों को-वस्त्रों से बनाये हुए गोलाकार आसनों को-शिलापट्टो को-पट्टाकार चिकनी

य मलयाणय मसूराण य सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य अन्नेसिं च फासिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति)

આ પ્રમાણે ઘણા કોષ્ટ પુટકોને-સુગધિત દ્રવ્ય-વિશેષોને, કેતકી પુટોને કેવડાના પુષ્પોને યાવત્ એલાપુટોને, એલચીઓને, ઉશીર પુટોને-ખશના સમુદાયોને, કુકુમ પુટોને તેમજ બીજા પણ ઘણા ઘ્રાણેન્દ્રિય (નાક) ને તૃપ્તિ પમાડનારા દ્રવ્યોને તેઓએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભર્યા - બહુ જ પુષ્કળ પ્રમાણમા ખાડ, ગોળ, સાકર મિશ્રી, મત્સ્ય ડી કાલપી મિશ્રી, (ઉચી જાતની સાકર) ગુલકદ, પદ્મપાક તેમજ બીજા પણ ઘણા જીહ્વાઈ ઇન્દ્રિય (જીભ) ને તૃપ્તિ આપનાર દ્રવ્યોને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભર્યા આ પ્રમાણે સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપનારી કોયવિકોને રૂથી ભરેલા પ્રાવરણ વિશેષોને-રજાઈઓને, કામળોને, રત્ન કામળોને, આવરણોને, ચાદરોને, નવલકોને, ઊનથી બનાવવામા આવેલા પલેચાઓને-જીનોને-મલય દેશના વસ્ત્રોને, મસૂરકોને-વસ્ત્રો વડે બનાવવામા આવેલા ગોળ આકાર આસનોને, શિલાપટ્ટકોને-પટ્ટના આકારની

निष्पादितानाम्, 'संघाइमाण य' सङ्घातिमानां=लोष्टकाष्ठादिभी रथादिवद् वस्तुसमूहैर्निष्पादितानाम्, तथा-अन्येषां च बहूनां 'चक्खिदियपाउग्गाण' चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणां=नयनानन्दजनकानां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा बहूनां 'कोट्ठपुडाण य' कोष्ठपुटानां = सुगन्धिद्रव्यविशेषाणां च केतकीपुटानां च यावत्-एलापुटानां च, कुङ्कुमपुटानां च, उशीरपुटानां=' खस ' इतिभाषा प्रसिद्धसुगन्धिद्रव्याणां च, लवङ्गपुटानां चेत्यादि। अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा बहोः खण्डस्य च गुडस्य च शर्करायाश्च 'मिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः 'मच्छंडियाए य' मत्स्यण्डिकायाः= 'काल्पीमिसरी' इति भाषा प्रसिद्धायाः, पुष्पोत्तर-पद्मोत्तराणां=गुलकन्द ' इति प्रसिद्धानां च, अन्येषां च जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति। तथा बहूनां 'कोयवियाण य' कोयविकानां = रूतपूरितप्रावरणविशेषाणां 'रजाई' इति प्रसिद्धानाम्, कम्बलानां=रत्नकम्बलानाम्, प्रावरणानां=शाटिकानां 'चद्दर' इति प्रसिद्धानाम्, 'नवतयाण य' नवतकानाम्=ऊर्णामयपर्यणानां

आभूषण आदि कों को-पुत्तलिका की तरह जो सुवर्ण आदि के पतरों पर कृत छिद्रादिकों के पूरने से चित्र बनाये जाते हैं वे पूरिम हैं इन पूरिमों को और सघातिमों को-लोहकाष्ट आदि की तरह अनेक वस्तुओं के समुदाय से निष्पादित चित्रों को तथा और भी नेत्र इन्द्रिय को सुहावने लगने वाले द्रव्यों को भरा। (बहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाणं सगडीसागड भरेति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छडियाए य पुप्फुत्तर पउमुत्तराणय अन्नेसिं च जिब्भिंदिय पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेति बहूण कोयवियाण य केवलाणय पावरणाण य नवतयाण य

ઓને-ટોપીઓને, હાથો, પગો અને આગળીઓમા પહેરવાના આભૂષણ વગેરેને પૂતળીની જેમ જે સુવર્ણ વગેરેના પતરા ઉપર કાણુ પાડીને તેમને પૂરીને બનાવવામા આવેલા ચિત્રો એટલે કે પૂરિમોને અને સઘતિમોને લોખંડ, કાષ્ઠ વગેરેથી બનાવવામા આવેલા રથ વગેરેની જેમ ઘણી વસ્તુઓને એકત્રિત કરીને તેમના વડે બનાવનામાં આવેલા ચિત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા નેત્ર ઇન્દ્રિયને ગમે તેવા દ્રવ્યોને ભર્યા

(बहूण कोट्ठपुडाण य, केयई पुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदिय पाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति, बहुस्स खडस्स य गुलस्स सक्कराए य मच्छडियाए य पुप्फुत्तपउमुत्तराण य अन्नेसिं च जिब्भिंदियपाउग्गाण दव्वाण सगडीसागड भरेंति बहूण कोयवियाण य केवलाण य पावरणाण य नवतयाण

गोधूमादीनामङ्कुरस्य 'आटा' इति प्रसिद्धस्य, 'गोरसस्स य' गोरसस्य=घृतादिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहनं भरन्ति, भृत्वा 'दक्खिणाणुकूलेण' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहनं 'लंबेंति' लम्बयन्ति=तीरस्थापितशङ्कुषु बध्नन्ति, बद्ध्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'एगट्ठियाहिं' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः 'कालियदीवे' कालिकद्वीपे 'उत्तारेंति' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यो को उस नौका में भरदिया। (भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरस रूप गधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति) भर करके फिर ये लोग जब पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहा से चलकर जहा कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने लगर डाल दिया-लगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा आदिको को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

ઘઉંના લોટને, ગોરસ ઘી વગેરેને યાવત્ બીજા પણ ઘણા વહાણુ યાત્રામા કામ લાગે તેવા દ્રવ્યોને તે નૌકામા ભર્યા

(भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरसरूवगंधाइं एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तविणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति)

ભરીને તેઓ બધા જ્યારે પાછળથી વહેતો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો. ત્યારે ત્યાથી રવાના થઈને જ્યા કાલિક દ્વીપ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ લગર નાખ્યુ લગર નાખીને વહાણમાથી શબ્દના સાધન રૂપ વીણા વગેરેને, કોમળ સ્પર્શના સાધનભૂત રૂથી ભરેલા રજાઈ વગેરે વસ્ત્રોને, રસના (જીભ) ઇન્દ્રિયને ગમતા ખાડ વગેરે પદાર્થોને, નેત્ર ઇન્દ્રિયને આનંદ

स्यन्ते, तेषां कौशेयवस्त्राणां 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरक=गम्भीरनामक पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा 'पोयवहणं' पोतवहनं=नौकां सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् 'उक्किट्ठाण' उत्कृष्टानां=श्रेष्ठानां शब्दस्पर्शरसरूप गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च 'सामियस्स य' समीतस्य=

शिलाओं को, हस गभौं को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगो ने गाडी और गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरसरूवगंधाण कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाणय समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाडी और गाडों को जोत दिया। जोतकर के फिर वे वहां आये-जहां गभीर नाम का पोतस्थान था-बंदरगाह था। वहा आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को ढील-रोक दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गधोंको काष्ठको तृण को पानीय द्रव्य को तंदूलों को, गेहुँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીસી શિલાઓને, હસ ગર્ભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજી પણ ઘણી સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમા ભરી

(भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरसरूवगंधाण कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યા જોતરીને તેઓ ત્યાથી જ્યા ગભીર નામે પોતસ્થાન (બંદર) હતું ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂકયા અને ત્યારપછી નૌકાઓને સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તંદુલો (ચોખા) ને,

गोधूमादीनामट्टकस्य ' आटा ' इति प्रसिद्धस्य, ' गोरसस्स य ' गोरसस्य=घृतादिकस्य च यावत् अन्येषां च बहूनां पोतवहनप्रायोग्याणां द्रव्याणां पोतवहनं भरन्ति, भृत्वा ' दक्खिणाणुकूलेण ' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहनं ' लंबेंति ' लम्बयन्ति=तीरस्थापितशङ्कुषु बध्नन्ति, बद्ध्वा तान्=नौकास्थितान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् ' एगट्ठियाहिं ' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभिः ' कालियदीवे ' कालिकद्वीपे ' उत्तारेंति ' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति ।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यों को उस नौका में भरदिया। (भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरस रूव गंधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं२ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति) भर करके फिर ये लोग जब पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु वहा तब वहा से चलकर जहा कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने लंगर डाल दिया-लंगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा आदिकों को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खांड आदि पदार्थों को

ઘઉંના લોટને, ગોરસ ઘી વગેરેને યાવત્ બીજા પણ ઘણા વહાણ યાત્રામાં કામ લાગે તેવા દ્રવ્યોને તે નૌકામાં ભર્યા

(भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरसरूवगंधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति)

ભરીને તેઓ બધા જ્યારે પાછળથી વહેતો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાંથી રવાના થઈને જ્યાં કાલિક દ્વીપ હતો ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તે લોકોએ લંગર નાખ્યું લંગર નાખીને વહાણમાંથી શબ્દના સાધન રૂપ વીણા વગેરેને, કોમળ સ્પર્શના સાધનભૂત રૂથી ભરેલા રજાઈ વગેરે વસ્ત્રોને, રસના (જીભ) ઇન્દ્રિયને ગમતા ખાંડ વગેરે પદાર્થોને, નેત્ર ઇન્દ્રિયને આનંદ

स्यन्ते, तेषां कौशेयवस्त्राणां 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकटं भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरकः=गम्भीरनामकः पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शकटीशाकटं मोचयन्ति, मोचयित्वा 'पोयवहणं' पोतवहनं=नौकां सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् 'उक्किट्ठाण' उत्कृष्टानां=श्रेष्ठानां शब्दस्पर्शरसरूपगन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च 'समियस्स य' समीतस्य=

शिलाओं को, हंस गर्भों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगों ने गाडी और गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति, मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाणय समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गा णं पोयवहणं भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाडी और गाडों को जोत दिया। जोतकर के फिर वे वहां आये-जहां गभीर नाम का पोतस्थान था-बंदरगाह था। वहां आकर के उन लोगों ने गाड़ी और गाडों को ढील-रोक दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एवं गंधोंको काष्ठको तृण को पानीय द्रव्य को तंदुलों को, गेहुँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

લીસી શિલાઓને, હંસ ગર્ભોને-રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજી પણ ઘણી સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ પમાડે તેવી ઘણી વસ્તુઓને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓમાં ભરી

(भरित्ता सगडीसागडं जोएंति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडीसागडं मोएंति मोइत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति)

ભરીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને જોતર્યા જોતરીને તેઓ ત્યાંથી જ્યાં ગભીર નામે પોતસ્થાન (બંદર) હતું ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તે લોકોએ ગાડી અને ગાડાઓને છોડી મૂક્યા અને ત્યારપછી નૌકાઓને સુસજ્જિત કરી સુસજ્જિત કર્યા બાદ તેમણે તે ઉત્તમ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધોને, કાષ્ઠને, ઘાસને, પાણીવાળા દ્રવ્યોને, તંદુલો (ચોખા) ને,

गोधूमादीनामट्टकस्य ' आटा ' इति प्रसिद्धस्य, ' गोरसस्स य ' गोरसस्य=घृतादिकस्य च यावत् अन्येषा च बहूना पोतवहनप्रायोग्याणा द्रव्याणा पोतवहन भरन्ति, भृत्वा ' दक्खिणाणुकूलेण ' दक्षिणानुकूलेन=सानुकूलेन वातेन यत्रैव कालिकद्वीपस्तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य तत्र पोतवहन ' लंबेंति ' लम्बयन्ति= तीरस्थापितशङ्कुषु बध्नन्ति, बद्ध्वा तान्=नौकारिथतान् उत्कृष्टान्=उत्तमोत्तमान् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् ' एगट्ठियाहिं ' एकार्थिकाभिः=लघुनौकाभि ' कालियदीवे' कालिकद्वीपे ' उत्तारेंति ' उत्तारयन्ति=नौकातो निस्सार्य भूमौ स्थापयन्ति।

यावत् और अनेक पोतवहन प्रायोग्य द्रव्यों को उस नौका में भरदिया। (भरित्ता दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पोयवहण लंबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरस रूप गंधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति) भर करके फिर ये लोग जब पीछे से आनेवाला अनुकूल वायु बहा तब वहा से चलकर जहा कालिक द्वीप था वहा आये-वहा आकर के इन लोगों ने लंगर डाल दिया-लंगर डालकर पोत में से शब्द के साधन भूत वीणा आदिकों को, अच्छे स्पर्श के साधनभूत रूई से भरे हुए रजाई आदि वस्त्रों को रसनाइन्द्रिय को सुहावने लगनेवाले खाड आदि पदार्थों को

घउना લોટને, ગોરસ ઘી વગેરેને યાવત્ બીજા પણ ઘણા વહાણ યાત્રામા કામ લાગે તેવા દ્રવ્યોને તે નૌકામા ભર્યા

(भरित्ता दक्खिणाणुकूले ण वाएण जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लबेंति, लंबित्ता ताइ उक्किट्ठाइ सद्दफरिसरसरूपगधाइ एगट्ठियाहिं कालियदीवे उत्तारेंति। जहिं २ च ण ते आसा आसायंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं २ च ण ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव वित्तवीणाओ य अन्नाणि य बहूणि सोइंदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि समुदीरेमाणा चिट्ठंति)

ભરીને તેઓ બધા જ્યારે પાછળથી વહેતો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાથી રવાના થઈને જ્યા કાલિક દ્વીપ હતો ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તે લોકોએ લગર નાખ્યુ લગર નાખીને વહાણમાથી શબ્દના સાધન રૂપ વીણા વગેરેને, કોમળ સ્પર્શના સાધનભૂત રૂથી ભરેલા રજાઈ વગેરે વસ્ત્રોને, રસના (જીભ) ઇન્દ્રિયને ગમતા ખાડ વગેરે પદાર્થોને, નેત્ર ઇન્દ્રિયને આનદ

स्यन्ते, तेषां कौशेयवस्त्राणां 'रेशमीवस्त्र' इति भाषा प्रसिद्धानां च, तथा-अन्येषां च स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां शकटीशाकट भरन्ति, भृत्वा शकटीशाकटं योजयन्ति, योजयित्वा यत्रैव गम्भीरकः=गम्भीरनामकः पोतस्थानं तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य शकटीशाकट मोचयन्ति, मोचयित्वा 'पोयवहण' पोतवहनं=नौकां सज्जयन्ति, सज्जयित्वा तेषाम् 'उक्किट्ठाण' उत्कृष्टानां=श्रेष्ठानां शब्दस्पर्शरसरूप गन्धानां काष्ठस्य च पानीयस्य च तन्दुलानां च 'समियस्स य' समीतस्य=

शिलाओं को, हस गभों को-रेशमी वस्त्रों को, तथा और भी स्पर्शन इन्द्रिय को आनन्द देने वाली वस्तुओं को उन लोगों ने गाडी और गाडों में भरा। (भरित्ता सगडीसागडं जोएति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोएति, मोइत्ता पोयवहणे सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरस रूवगधाण कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तदुलाणय समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूण पोयवहणपाउग्गा ण पोयवहण भरेंति) भरकर के फिर उन लोगों ने गाडी और गाडों को जोत दिया। जोतकर के फिर वे वहां आये-जहां गभीर नाम का पोतस्थान था-बंदरगाह था। वहा आकर के उन लोगों ने गाडी और गाडों को ढील-रोक दिया। और फिर नौकाओंको सजाया-तैयार किया। और तैयार करके बादमें उन्होंने उन श्रेष्ठ शब्द, स्पर्श, रस, रूप, एव गंधोंको काष्ठको तृण को पानीय द्रव्य को तदूलों को, गेहूँ के आटे को, गोरस घृतादिक-को

लीसी शिलाओने, हंस गर्भोने-रेशमी वस्त्रोने तेमज बीजी पण घणी स्पर्शेन्द्रियने सुख पमाडे तेवी घणी वस्तुओने ते लोकोए गाडी अने गाडाओमा भरी

(भरित्ता सगडीसागड जोएति, जोइत्ता जेणेव गभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सगडीसागड मोएति मोइत्ता पोयवहण सज्जेंति, सज्जित्ता तेसिं उक्किट्ठाण सद्दफरिसरसरूवगधाण कट्ठस्स य तणस्स य पाणियस्स य तदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव अन्नेसिं च बहूण पोयवहण पाउग्गाण पोयवहण भरेंति)

भरीने ते लोकोए गाडी अने गाडाओने जोतर्यां जोतरीने तेओ त्याथी ज्यां गभीर नामे पोतस्थान (बंदर) हतुं त्यां आव्या त्या आवीने ते लोकोए गाडी अने गाडाओने छोडी मूक्या अने त्यारपछी नौकाओने सुसज्जित करी सुसज्जित कर्या बाद तेमणे ते उत्तम शब्द, स्पर्श, रस, रूप अने गधोने, काष्ठने, घासने, पाणीवाळा द्रव्योने, तदुलो (चोखा) ने,

कर्माणि यावत् संघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयंति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वानां परिपर्यन्तेन=सर्वत' समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२।

तथा–यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषां बहूनां कोष्ठपुटानां च यावद् अन्येषां च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणां

जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में–वीणा आदिको को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वहीं पर निश्चल–चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कंपित किये बिना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह–जिस२ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि संघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी. तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहा वनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हें उन अश्वो की चारो दिशाओ मे रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा तुसिणीया चिट्ठति)

તેમની ચોમેર, ચારે ચાર દિશાઓમા વીણાઓ વગેરે મૂકી મૂકીને તેઓ ત્યાં જ નિશ્ચલ–હલન ચલનની ક્રિયાથી રહિત થઈને અંગોને હલાવ્યા વગર ચુપચાપ ત્યાં બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનમા અશ્વો (ઘોડાઓ) બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા તે તે વનમા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સાથે લાવેલી ઘણી કાળી, નીલી, પીળી રાતી, સફેદ રંગની કાષ્ઠકર્મ વગેરે સંઘાતિમ સુધીની બધી વસ્તુઓને કે જેઓ ચક્ષુ (આંખ) ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી હતી તેમજ બીજી પણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને સુખ આપ નારી જેટલી સારી વસ્તુઓ હતી તેમને ભેગી કરી અને અશ્વોની ચોમેર તેમને ગોઠવી દીધી ગોઠવીને તેઓ ત્યાં જ નિશ્ચલ, નિસ્પંદ થઈને ચુપચાપ ત્યાં જ બેસી ગયા

(जत्थ २ ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं तेसिं बहूणं कोट्ठपुटाण य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाण पुंजेय णियरे य करेंति,

'जहिं २ च ण' यत्र यत्र च खलु ते 'आसा' अश्वाः=जात्या अश्वाः 'आसयंति वा' आसते=उपविशन्ति 'सयंति वा' शेरते=स्वपन्ति वा 'चिट्ठति वा' तिष्ठन्ति वा, 'तुयट्टति वा' त्वग्वर्तयन्ति=शरीरं प्रसार्य स्वपन्ति वा 'तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'ताओ' ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि 'समुदीरेमाणा' समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषां अश्वानां 'परिपेरंतेण' परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थः 'पासए' पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः 'निच्चला' निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः 'णिप्फदा' निःस्पन्दाः=हस्ताद्यवयवसंचाररहिताः 'तुसिणीया' वचनव्यापाररहिताः 'चिट्ठति' तिष्ठन्ति।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् त्वग्वर्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः बहूनि कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ-

---

नेत्र इन्द्रिय को आनंद देनेवाले नीले पीले आदि रंगवाले चित्रों को एवं घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगंधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद में जहां २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनों को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहावनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये। और (तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ ण ते कोडुंबिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य

પમાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણ (નાક) ઇન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યોને વહાણમાંથી નાની નાની હોડીઓમાં મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યાં તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલા વીણાથી માંડીને વૃત્ત વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજા પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યાં રોકાઈ ગયા અને—

(तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ ... कोडु-

कर्माणि यावत् सघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाना परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चला', निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा बहूना कोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणा

जाव संघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में-वीणा आदिकों को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कंपित किये विना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह-जिस२ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी. तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहावनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हे उन अश्वो की चारो दिशाओ मे रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणिय जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला, णिप्फदा तुसिणीया चिट्ठति)

તેમની ચોમેર, ચારે ચાર દિશાઓમા વીણાઓ વગેરે મૂકી મૂકીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ-હલન ચલનની ક્રિયાથી રહિત થઇને અંગોને હલાવ્યા વગર ચુપચાપ ત્યાં બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનમાં અશ્વો (ઘોડાઓ) બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા તે તે વનમા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ સાથે લાવેલી ઘણી કાળી, નીલી, પીળી રાતી, સફેદ રંગની કાષ્ઠકર્મ વગેરે સઘાતિમ સુધીની બધી વસ્તુઓને કે જેઓ ચક્ષુ (આખ) ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી હતી તેમજ બીજી પણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી જેટલી સારી વસ્તુઓ હતી તેમને ભેગી કરી અને અશ્વોની ચોમેર તેમને ગોઠવી દીધી ગોઠવીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ, નિસ્પદ થઇને ચુપચાપ ત્યા જ બેસી ગયા

(जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ २ ण तेसिं बहूण कोट्ठपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाण पुंजेय णियरे य करेति,

' जहिं २ च ण ' यत्र यत्र च खलु ते ' आसा ' अश्वाः=जात्या अश्वाः ' आसयंति वा ' आसते=उपविशन्ति ' सयंति वा ' शेरतेस्वपन्ति वा ' चिट्ठंति वा ' तिष्ठन्ति वा, ' तुयट्टंति वा ' त्वग्वर्तयन्ति=शरीरं प्रसार्य स्वपन्ति वा ' तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः ' ताओ ' ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावद्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि ' समुदीरेमाणा ' समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषां मश्वानां ' परिपेरंतेण ' परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थः ' पासए ' पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः ' निच्चला ' निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः ' णिप्फंदा ' निःस्पन्दाः=हस्ताद्यवयवप्रचाररहिताः ' तुसिणीया ' वचनव्यापाररहिताः ' चिट्ठंति ' तिष्ठन्ति ।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् त्वग्वर्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः बहूनि कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ-

नेत्र इन्द्रिय को आनद देनेवाले नीले पीले आदि रगवाले चित्रों को एव घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद में जहा २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनो को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहावनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये। और (तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ ण ते कोडुंबिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य

પમાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણ (નાક) ઇન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ વગેરે સુગધિત દ્રવ્યોને વહાણમાથી નાની નાની હોડીઓમા મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યા તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યા તે કૌટુબિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલી વીણાથી માડીને વૃત્ત વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજા પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યા રોકાઈ ગયા અને—

(तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ कोडु-

कर्माणि यावत् सघातिमानि च अन्यानि च बहूनि चक्षुरिन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि स्थापयन्ति=एकत्री कुर्वन्ति, तेषामश्वाना परिपर्यन्तेन=सर्वत: समन्तात् पार्श्वे स्थापयन्ति च, स्थापयित्वा ते निश्चलाः, निस्पन्दाः, तूष्णीकास्तिष्ठन्ति२।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वा आसते स्वपन्ति तिष्ठन्ति त्वग्वर्त्तयन्ति च तत्र तत्र खलु तेषा बहूना कोष्ठपुटाना च यावद् अन्येषा च बहूनां घ्राणेन्द्रियप्रायोग्याणा

जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला णिष्फंदा तुसिणीया चिट्ठति) उस के चारों तरफ चारो दिशाओं में- वीणा आदिको को स्थापित करते रहे। स्थापित करके फिर वे वही पर निश्चल-चलन क्रिया से रहित होकर हस्तादि अवयव को कपित किये विना ही चुपचाप बैठ गये।

इस तरह-जिस२ वनमें वे अश्व बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उस आनीत बहुतसी कृष्ण, नील, पीत, रक्त, शुक्ल वर्णवाली काष्ठकर्म आदि सघातिम पर्यंत की सामग्री को जो चक्षुइन्द्रिय को आनन्दप्रद थी, तथा और भी चक्षुइन्द्रि को सुहा वनी लगनेवाली जो वस्तुएँ थी उन को एकत्रित किया और उन्हे उन अश्वो की चारो दिशाओ मे रख दिया। रखकर के फिर वे निश्चल, निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। (जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ

विय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणिय जाव सघाइमाणि य अन्नाणि य बहूणि चक्खिदिय पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेण पासए ठवेंति ठवित्ता णिच्चला, णिष्फदा तुसिणीया चिट्ठति)

તેમની ચોમેર, ચારે ચાર દિશાઓમા વીણાઓ વગેરે મૂકી મૂકીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ-હલન ચલનની ક્રિયાથી રહિત થઈને અગોને હલાવ્યા વગર ચુપચાપ ત્યા બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનમા અશ્વો (ઘોડાઓ) બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા તે તે વનમા તે કૌટુબિક પુરુષોએ સાથે લાવેલી ઘણી કાળી, નીલી, પીળી રાતી, સફેદ રગની કાષ્ઠકર્મ વગેરે સઘાતિમ સુધીની બધી વસ્તુઓને કે જેઓ ચક્ષુ (આખ) ઇન્દ્રિયને સુખ આપનારી હતી તેમજ બીજી પણ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયને સુખ આપ નારી જેટલી સારી વસ્તુઓ હતી તેમને ભેગી કરી અને અશ્વોની ચોમેર તેમને ગોઠવી દીધી ગોઠવીને તેઓ ત્યા જ નિશ્ચલ, નિસ્પદ થઈને ચુપચાપ ત્યા જ બેસી ગયા

(जत्थ २ ते आसा आसयति ४ तत्थ २ ण तेसिं बहूण कोट्ठपुडाण य जाव अन्नेसिं च बहूण घाणिंदियपाउग्गाण दव्वाण पुजेय णियरे य करेंति,

'जहिं २ च णं' यत्र यत्र च वने खलु ते 'आसा' अश्वाः=अश्वाः 'आसयंति वा' आसते=उपविशन्ति 'सयंति वा' शेरतेस्वपन्ति वा' चिट्ठति वा' तिष्ठन्ति वा, 'तुयट्टति वा' त्वग्वर्त्तयन्ति=शरीरं प्रसार्य स्वपन्ति वा' तहिं २ तत्र तत्र च खलु ते कौटुम्बिकपुरुषाः 'ताओ' ताः=हस्तिशीर्षनगरादानीता वीणाश्च यावत्-वृत्तवीणाश्च, तथा अन्यानि च बहूनि श्रोत्रेन्द्रियप्रायोग्याणि च द्रव्याणि 'समुदीरेमाणा' समुदीरयन्तः=मधुरध्वनिना वादयन्तः तिष्ठन्ति, तेषां मध्वानां 'परिपेरंतेण' परिपर्यन्तेन=सर्वतः समन्तात् चतुर्दिक्षु इत्यर्थः 'पासए' पार्श्वे समीपे वीणादीनि स्थापयन्ति, स्थापयित्वा ते पुरुषाः 'निच्चला' निश्चलाः=चलनक्रियारहिताः 'णिप्फंदा' निःस्पन्दा=हस्ताद्यवयवसंचाररहिताः 'तुसिणीया' वचनव्यापाररहिता. 'चिट्ठति' तिष्ठन्ति।

तथा-यत्र यत्र तेऽश्वाः आसते वा यावत् त्वग्वर्त्तयन्ति=लुठन्ति तत्र तत्र खलु ते कौटुम्बिकपुरुषा' बहूनि कृष्णानि च ५=कृष्णनीलपीतरक्तशुक्लवर्णानि काष्ठ

नेत्र इन्द्रिय को आनंद देनेवाले नीले पीले आदि रंगवाले चित्रों को एव घ्राणइन्द्रियों को सुखकारक काष्ठपुट आदि सुगंधित द्रव्यों को छोटी २ नौकाओं द्वारा पोत में से उतार कर कालिक द्वीप में रख दिया। बाद में जहां २ वे जाति अश्व बैठते थे सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ वे कौटुम्बिक पुरुष उन हस्तिशीर्ष नगर से लाये हुए वीणा से लेकर वृत्तवीणा पर्यन्त के साधनो को तथा और भी श्रोत्र इन्द्रिय को सुहावनी लगनेवाली साधन सामग्री को मधुर ध्वनि से बजाते हुए ठहर गये। और (तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ ण ते कोडुंबिय पुरिसा बहूणि किण्हाणि य ५ कट्ठकम्माणि य

પમાડનાર નીલા, પીળા વગેરે રંગના ચિત્રોને અને ઘ્રાણ (નાક) ઇન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા કાષ્ઠપુટ વગેરે સુગંધિત દ્રવ્યોને વહાણમાંથી નાની નાની હોડીઓમાં મૂકીને કાલિક દ્વીપ ઉપર મૂકી દીધી ત્યારપછી જ્યાં તે જાતિ અશ્વો બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષો તે હસ્તિશીર્ષ નગરથી લઈ આવેલી વીણાથી માંડીને વૃત્ત વીણા સુધીના સાધનોને તેમજ બીજા પણ શ્રોત્ર (કાન) ઇન્દ્રિયને ગમે તેવી સાધન સામગ્રીને મધુર ધ્વનિથી વગાડતા ત્યાં રોકાઈ ગયા અને—

(तेसिं परिपेरंतेण पासए ठवेंति, ठवित्ता णिच्चला, णिप्फंदा, तुसिणीया चिट्ठति, जत्थ २ ते आसा आसयंति वा जाव तुयट्टति वा तत्थ २ — कोडु-

रए ' त्रिवराणि=गर्त्तानि खनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषां च बहूनां पानकानां त्रिवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषां परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रूतपूरितप्रावरणविशेषान् यावत् हंसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्थुय पच्चत्थुयाइं ' आस्तृतप्रत्यवस्तृतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषां परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

द्रव्योंके पुंज एवं निकर लगाकर खडे कर दिये। एक ही वस्तुओंकी जो राशि होती है उसका नाम पुंज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है। बाद मे वहीं पर उन्हों ने अनेक गर्त खड्डे किये। गर्त करके उनमें गुडपानक खंडपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये। बाद में वहां पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। इसी तरह जिन २ वनो में वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, एवं लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषो ने अनेक रूई के भरे हुए प्रावरणों को यावत् हंसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शनइन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रो को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया। बाद मे वे उनके चारों ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तएणं ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा-

---

બિક પુરુષોએ ગોળના યાવત્ બીજા ઘણા રસનેન્દ્રિય (જીભ) ને સુખ પમાડે તેવા દ્રવ્યોના પુંજો અને નિકરો લગાવીને ખડકી દીધા એક જ વસ્તુના ઢગલાને પુંજ તેમજ જુદી જુદી વસ્તુઓના ઢગલાઓને નિકર કહે છે ત્યારપછી તે લોકોએ ત્યાં જ ઘણા ખાડાઓ તૈયાર કર્યા તે ખાડાઓમાં તેઓએ ગોળ પાનક, ખાંડપાનક, યાવત્ બીજા પણ ઘણી જાતના પાનકો ભરી દીધા ત્યાર બાદ તેઓ ત્યાં જ તેમની ચારે તરફ નિશ્ચલ-નિસ્પંદ થઈને ચુપચાપ બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનોમાં તે ઘોડાઓ બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા અને આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ઘણા રૂના પ્રાવરણોને યાવત્ હંસગર્ભોને, રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા વસ્ત્રોને લીસા પ્રાવરણોથી આચ્છાદિત કરી દીધા ત્યારપછી તેઓ બધા ચુપચાપ તેની ચારે તરફ બેસી ગયા

(तएणं ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवाग-

द्रव्याणां पुञ्जांश्च एकत्रस्तुमसूहरूपान निकरांश्च नानाविधराशिरूपान कुर्वन्ति, कृत्वा तेषामश्वानां परिपर्यन्तेन=सर्वासिवपु यावत् तूष्णीकाम्तिष्ठन्ति ३।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आगते ४ तत्र तत्र खलु गुडस्य यावद् अन्येषां च बहूना जिह्वेन्द्रियप्रायोग्याणां द्रव्याणां पुञ्जांश्च निकरांश्च कुर्वन्ति, कृत्वा ' विय

२ णं तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाणं य जाव अन्नेसिं च बहूणं घाणिंदिय पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजेय णियरे य करेंति करित्ता तेसिं परिपेरतेणं जाव चिट्ठंति, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय पाउग्गाण दव्वाण पुंजे य णियरे य करेंति, करित्ता वियरए खणति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाण वियरे भरेंति-भरित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ णं ते बहवे कोयवियां य जाव गब्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदियपाउग्गाइ अत्थुय पच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं जाव चिट्ठति) जहा जहा वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने उन अनेक कोष्ठ पुटों के यावत् अन्य और घ्राणेन्द्रिय प्रायोग्य द्रव्यो, के पुञ्जों को निकरों को एकत्रित कर दिया और करके फिर वे उन अश्वों की चारों दिशाओं में यावत् चुपचाप बैठ गये। जहा २ वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, लेटते थे, वहां २ उन कौटुम्बिक पुरुषों ने गुड़ के यावत् दूसरे और रसनेन्द्रिय आह्लादक

करित्ता तेसिं परिपेरतेणं जाव चिट्ठति, जत्थ जत्थ णं ते आसा आसयंति ४ तत्थ २ णं गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय पाउग्गाण दव्वाण पुंजे य णियरे य करेंति, करित्ता वियरए खणति, खणित्ता गुलपाणगस्स खंडपाणगस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं पाणगाण वियरे भरेंति-भरित्ता तेसिं परिपेरतेणं पासए ठवेंति जाव चिट्ठति जहिं २ च णं ते आसा आस० तहिं २ च णं ते बहवे कोयवियां य जाव गब्भाय अण्णाणि य बहूणि फासिंदिय पाउग्गाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवित्ता तेसिं परिपेरतेणं जाव चिट्ठति)

જ્યાં જ્યાં તે ઘોડાઓ બેસતા હતા સૂતા હતા રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટુંબિક પુરુષોએ તે ઘણા કોષ્ઠ પુટકોને યાવત્ બીજી પણ ઘણી ઘ્રાણેન્દ્રિય (નાક) ને સુખ પમાડે તેવી વસ્તુઓને પુષ્કળ પ્રમાણમાં ત્યાં ગોઠવી દીધી, એકઠી કરી દીધી અને એકઠી કરીને તેઓ તે ઘોડાઓને ચારે તરફ યાવત્ ચુપચાપ થઈને બેસી ગયા તે ઘોડાઓ જ્યાં જ્યાં બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા, આરામ કરતા હતા ત્યાં ત્યાં તે કૌટું

रए ' विवराणि=गर्त्तानि खनन्ति, खनित्वा गुडपानकस्य खण्डपानकस्य यावद् अन्येषा च बहूना पानकाना विवराणि भरन्ति, भृत्वा तेषा परिपर्यन्तेन पार्श्वे स्थापयन्ति यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ४ ।

यत्र यत्र च खलु तेऽश्वा आसते ४ तत्र तत्र च खलु ते=कौटुम्बिकपुरुषाः बहून् कोयविकान्=रूतपूरितप्रावरणविशेषान् यावत् हसगर्भान्=कौशेयवस्त्रविशेषान् अन्यानि च बहूनि स्पर्शेन्द्रियप्रायोग्याणि वस्त्रादीनि ' अत्थुय पच्चत्थुयाइ ' आस्तृतप्रत्यवस्तृतानि=श्लक्ष्णप्रावरणप्रावृतानि कृत्वा स्थापयन्ति, स्थापयित्वा तेषा परिपर्यन्तेन यावत् तूष्णीकास्तिष्ठन्ति ५ ।

ततः खलु तेऽश्वा यत्रैव एते उत्कृष्टाः शब्दस्पर्शरसरूपगन्धास्तत्रैवोपागच्छन्ति,

---

द्रव्योंके पुज एव निकर लगाकर खडे कर दिये। एक ही वस्तुओंकी जो राशि होती है उसका नाम पुज तथा भिन्न वस्तुओं की राशि का नाम निकर है। बाद मे वही पर उन्हों ने अनेक गर्त खड्डे किये। गर्त करके उनमें गुडपानक खडपानक यावत् और भी अनेक पानक भर दिये। बाद में वहा पर उनकी चारो दिशाओं में निश्चल-निस्पन्द होकर चुपचाप बैठ गये। इसी तरह जिन २ वनो में वे घोडे बैठते थे, सोते थे, ठहरते थे, एव लेटते थे, वहा २ उन कौटुम्बिक पुरुषो ने अनेक रुई के भरे हुए प्रावरणो को यावत् हसगर्भों को-रेशमी वस्त्रों को तथा-और भी अनेक स्पर्शनइन्द्रिय को सुखदायक वस्त्रो को चिकने प्रावरणों से ढककर रख दिया। बाद मे वे उनके चारो ओर यावत् चुपचाप बैठ गये (तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगंधा तेणेव उवा-

---

બિક પુરુષોએ ગોળના યાવત્ બીજા ઘણા રસનેન્દ્રિય (જીભ) ને સુખ પમાડે તેવા દ્રવ્યોના પુંજો અને નિકરો લગાવીને ખડકી દીધા એક જ વસ્તુના ઢગલાને પુંજ તેમજ જુદી જુદી વસ્તુઓના ઢગલાઓને નિકર કહે છે ત્યારપછી તે લોકોએ ત્યા જ ઘણા ખાડાઓ તૈયાર કર્યા તે ખાડાઓમા તેઓએ ગોળ પાનક, ખાંડપાનક, યાવત્ બીજા પણ ઘણી જાતના પાનકો ભરી દીધા ત્યાર બાદ તેઓ ત્યા જ તેમની ચારે તરફ નિશ્ચલ-નિસ્પંદ થઈને ચુપચાપ બેસી ગયા આ પ્રમાણે જે જે વનોમા તે ઘોડાઓ બેસતા હતા, સૂતા હતા, રહેતા હતા અને આરામ કરતા હતા ત્યા ત્યા તે કૌટુંબિક પુરુષોએ ઘણા રૂના પ્રાવરણોને યાવત્ હંસગર્ભોને, રેશમી વસ્ત્રોને તેમજ બીજા પણ ઘણા સ્પર્શેન્દ્રિયને સુખ આપે તેવા વસ્ત્રોને લીસા પ્રાવરણોથી આચ્છાદિત કરી દીધા ત્યારપછી તેઓ બધા ચુપચાપ તેની ચારે તરફ બેસી ગયા

(तएण ते आसा जेणेव एए उक्किट्ठा सद्दफरिसरसरूवगधा तेणेव उवाग-

उपागत्य तत्र खलु-'अत्थेगइया' अस्त्येके=केचिद् अश्वा -' अपूर्वाः=अदृष्टपूर्वाः खलु इमे शब्दस्पर्शरसरूपगन्धाः सन्ति' इति कृत्वा=इति विचिन्त्य तेषु उत्कृष्टेषु=आकर्षकेषु शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु 'अमुच्छिया' अमूर्च्छिता =मूर्छारहिता, प्राप्तहेयोपादेयविवेकाः अगृद्धा =ममत्वरहिताः, अग्रथिताः=लोभतन्तुभिरबद्धाः, अनध्युपपन्ना'=तदेकाग्रतारहिताः किञ्चिन्मात्रामपि तेष्वासक्तिमकुर्वाणाः सन्तः तेषामुत्कृष्टानां 'सद्द जाव गंधाण' शब्दस्पर्शरसरूपगन्धानां दूरदूरेण=अतिदूरत एव 'अवक्कमंति' अपक्रामन्ति=पलायन्ते स्म। ते च खलु तत्र प्रचुरगोचराः=प्रचुरचरणभूमयः प्रचुरतृणपानीयाः, निर्भयाः, निरुद्विग्नाः 'सुहं सुहेणं' सुखसुखेन=सुखपूर्वकं विहरन्ति।

गच्छति, उवागच्छित्ता तत्थ णं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्द-फरिसरसरूवगंधाइ त्ति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरं दूरेणं अवक्कमंति) बादमें वे अश्व जहां ये पूर्वोक्त उत्कृष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप गंध और स्पर्शवाले पदार्थ थे वहां पर आये वहां आकर के इनमें कितनेक अश्व "ये शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध अदृष्टपूर्व हैं" ऐसा विचार कर उन आकर्षक शब्द रूप, रस, स्पर्श एव गंधो में-उन पदार्थों मे-मूर्च्छित नहीं बने। हेय उपादेय के विवेक से युक्त बने हुए वे कितनेक अश्व उन में आसक्ति से रहित ही रहे लोभरूपतन्तु से बन्धे नहीं। तथा किञ्चिन्मात्र भी उनमे आसक्ति नही करते हुए वे उन शब्द, स्पर्श रूप, और गंधों को बहुत ही दूर से छोड़कर चल दिये। (तेणं तत्थ पउरगोयरा

च्छति, उवागच्छित्ता तत्थणं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्दफरिसरसरूव त्ति कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु अमुच्छिया ४ तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द जाव गंधाणं दूरं दूरेणं अवक्कमंति)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ આ બધા પૂર્વે મૂકેલા ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થો હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેઓમાંથી કેટલાક ઘોડાઓ ' આ શબ્દ સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ અદૃષ્ટપૂર્વ છે " આમ વિચાર કરીને તે આકર્ષક શબ્દ, રૂપ, રસ, સ્પર્શ અને ગંધોવાળા તે પદાર્થોમાં મૂર્છિત (મોહાંધ-લોલુપ) થયા નહિ હેય અને ઉપાદેયના વિવેકથી સાવધ બનેલા કેટલાક ઘોડાઓ તે પદાર્થોમાં નિરાસક્ત જ રહ્યા તેઓ લોભ રૂપી દોરીથી બંધાયા નહિ થોડી પણ આસક્તિ બતાવ્યા વગર તેઓ તે શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધવાળા પદાર્થોને ખૂબ દૂરથી જ છોડીને જતા રહ્યા (तेणं तत्थ पउरगोयरा पउरतणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुहं

अथोपनय प्रदर्शयति,—'एवामेव' एवमेव=शब्दाद्यमूर्छिताकीर्णाश्ववत् 'समणाउसो' हे आयुष्मन्त श्रमणा ! योऽस्माक निर्ग्रन्थी वा यावत्-आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् शब्दस्पर्शरसरूपगन्धेषु 'नो सज्जइ' नो सज्जते=आसक्तिमान् न भवति 'नो रज्जइ' नो रज्यते अनुरक्तो न भवति, नो गृध्यति, न वाञ्छति, नो मुह्यति=न मूर्छति, नो अध्युपपद्यते=न तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव बहूना श्रमणादीना चतुर्विधसङ्घस्य अर्चनीयः=संमाननीय यावत् चातुरन्तससारकान्तार 'वीइवइस्सइ' व्यतिव्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति-पारं गमिष्यतीत्यर्थ ॥ सू० ३ ॥

पउरत्तणपाणिया णिब्भया णिरुव्विग्गा सुह सुहेण विहरति) और जगल में ही जो प्रचुरचरने की जमीन थी-जिसमें अधिक से अधिक मात्रा मे तृण और पानी भरा हुआ रहता था उसमे ही निर्भय, निरुद्विग्न होकर सुखपूर्वक रहे। अब इस दृष्टान्त का उपनय प्रदर्शित करने के लिये सूत्रकार कहते है-। (एवामेवसमणाउसो ! जो अम्ह णिग्गंथो वा णिग्गथी वा जाव सद्द फरिसरसरूवगधेसु णो सज्जइ णो णो रज्जइ, जो गिज्झइ, णो मुज्झइ, णो अज्झोववज्जेइ, से ण इह लोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ) हे आयुष्मत श्रमणो ! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रथ साधुजन एव निर्ग्रन्थी साध्वी जन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर शब्द स्पर्श, रस, रूप, और गध इन पांचो इन्द्रियो के विषयो में आसक्ति युक्त नही होता है, अनुरक्त नही बनता है, उन्हें चाहता नही है, उनमें मूर्छित नहीं होता है, उनमें तल्लीन नही होता है, वह इस लोक मे ही अनेक

सुहेण विहरति) અને વનમા જ પ્રચુર ચરવાની જમીન હતી, જ્યા વધારેમા વધારે ઘાસ અને પાણી હતા ત્યા જ નિર્ભય, નિરૂદ્વિગ્ન થઇને સુખથી રહેવા લાગ્યા હવે આ દૃષ્ટાન્તનો ઉપનય સ્પષ્ટ કરવા માટે સૂત્રકાર કહે છે કે —

(एवामेव समणाउसो जो अम्ह णिग्गथो वा णिग्गथी वा जाव सद्दफरिसरसरूवगधेसु णो सज्जइ णो रज्जइ, जो गिज्झइ, णो मुज्झइ, णो अज्झोववज्जेइ, से ण इहलोए चेव बहूण समणाण ४ अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ)

હે આયુષ્મ ત શ્રમણો ! આ પ્રમાણે જ જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુઓ કે નિર્ગ્રંથ સાધ્વીઓ આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઇને શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગ ધ આ પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી અનુરકત થતા નથી, તેમને ઇચ્છતા નથી, તેઓમા મૂર્છિત થતાઓ

शब्दस्पर्शरसरूपगन्धान् 'आसेवमाणा' आसेवमानाः तदनुरागानुगत कुर्वाणाः तैर्व हुभि कूटैश्च बन्धनविशेषैः, पाशैश्च रज्ज्वादिरूपैः गलएषु=गलेषु=कण्ठेषु पादेषु च 'बज्झति' बध्यन्ते-ते कौटुम्बिकपुरुषास्तानश्वान् बध्नन्ति इत्यर्थः। तत

घोड़ों मे से कितनेक घोड़े ऐसे भी थे जो जहां पे उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप एव गध ये पांचो इन्द्रियो के आकर्षक विषय थे वहां आकर उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श आदि विषयो में मूर्छित यावत् तल्लीन बनगये। और उन्हें सेवन करने में प्रवृत्त भी हो गये। (तएण ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेसिं बहूहिं कूडेहिं य पासेहिं य गलएसु य पाएसु य बज्झति, तएण ते कोडुबियपुरिसा ते आसे गिण्हति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे सचारेंति, सचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लबेंति-लबित्ता ते आसे उत्तारेंति) इसके बाद वे घोड़े उन उत्कृष्ट शब्द स्पर्श रस, रूप, एव गध इन पाचों इन्द्रियों के विषयों को सेवन करते हुए रज्ज्वादिरूपबन्धन विशेषों द्वारा कठों और पैरोंमें बांध लिये गये। अर्थात् उन कौटुम्बिक पुरुषों ने इन घोड़ों को उस समय रस्सियों द्वारा बांध लिया। बाध करके फिर उन कौटुम्बिक पुरुषोंने उन्हें पकड लिया पकड

જ્યા તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધ આ પાચે ઇન્દ્રિયોના આકર્ષક વિષયો હતા ત્યા આવીને તે ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ વગેરે વિષયોમા મૂર્છિત (આસક્ત) યાવત્ તલ્લીન થઈ ગયા અને તેમના સેવનમા પ્રવૃત્ત પણ થઈ ગયા

(तएण ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द ५ आसेवमाणा तेसिं बहूहिं कूडेहिं य पासेहिय गलएसु य पाएसु य बज्झति, तएण ते कोडुबियपुरिसा ते आसे गिण्हति गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं य पोयवहणे सचारेंति, सचारित्ता तणस्स कट्ठस्स जाव भरेंति, तएण ते सजत्ता णावा वाणियगा दक्खिणाणुकूलेण वाएण जेणेव गभीरपोयपट्टणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोयवहण लबेंति-लबित्ता ते आसे उत्तारेंति)

ત્યારપછી તે ઘોડાઓ ઉત્કૃષ્ટ શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગધ આ પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોનુ સેવન કરતા દોરડાઓ વગેરે રૂપ બધન વિશેષથી ડોકો અને પગોમા બધાઈ ગયા એટલે કે તે કૌટુબિક પુરુષોએ તે ઘોડા ઓને દોરડાઓથી બાધી લીધા બાધીને તે કૌટુબિક પુર

खलु ते कौटुम्बिकपुरुषास्तानश्वान् गृह्णन्ति, गृहीत्वा 'एगट्ठियाहिं एकार्थिकाभि'= लघुनौकाभि पोतवहने=बृहन्नौकाया 'सचारेंति' सञ्चारयन्ति=आरोहयन्ति सञ्चार्य तृणस्य काष्ठस्य च यावत् पोतवहन भरति तृणकाष्ठादिभिरितिभावः। ततः खलु ते सयात्रनौकावाणिजकाः दक्षिणानुकूलेन=स्वानुकूलेन वातेन यत्रैव गम्भीरपोतपत्तन=पोतगमनस्थान तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य पोतवहन 'लवेंति' लम्बयन्ति=शकुषु बद्ध्वा स्थापयन्ति, लम्बयित्वा तान्=अश्वान् 'उत्तारेंति' उत्तारयन्ति, उत्तार्य यत्रैव हस्तिशीर्ष नगर यत्रैव कनककेतू राजा तत्रैवोपागच्छन्ति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीत शिरआवर्त दशनख मस्तके-

कर फिर उन्हें छोटी २ नौकाओं द्वारा लाकर बडी नौका में चढाया-चढा करके फिर उसमें तृण और काष्ट आदि को भरा। इसके बाद वे सांयात्रिक पोतवणिक दक्षिणानुकूल वायु के चलने पर जहा गभीर नामका पोतपट्टण (बन्दरगाह) था वहा आये। वहां आकर के उन्हों ने अपने पोत को लगर डालकर ठहरा दिया। ठहरा कर उन अश्वों को उस पोत से फिर उन्हों ने नीचे उतार लिया। (उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण से कणगकेऊ तेसिं सजत्ता णावावाणियगाण उस्सुक्क वियरइ, वियरित्ता सक्कारेइ समाणेइ सक्कारित्ता समाणित्ता पडिविसज्जेइ) उतार कर फिर वे वहां उन्हें ले गये जहा हस्तिशीर्ष नगर और उसमें भी

પકડી લીધા પકડીને તેમણે નાની નાની હોડીઓ વડે મોટા વહાણમા ચઢાવ્યા ચઢાવ્યા બાદ તેઓએ તેમા ઘાસ એને કાષ્ઠ ભર્યા ત્યારપછી તે સાયાત્રિક પોતવણિકો દક્ષિણનો અનુકૂળ પવન વહેવા લાગ્યો ત્યારે ત્યાથી રવાના થઈને જ્યા ગભીર નામે પોતપટ્ટણ (બદર) હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે પોતાના વહાણને લગર નાખીને રોકયુ ત્યરબાદ તેમણે ઘોડાઓને વહાણ માથી નીચે ઉતાર્યા

(उत्तारित्ता जेणेव हत्थिसीसे णयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता करयल जाव वद्धावेंति, वद्धावित्ता ते आसे उवणेति, तएण से कणगकेऊ तेसिं सजत्ता णावा वाणियगाण उस्सुक्क वियरइ, वियरित्ता सक्कारेइ, समाणेइ, सक्कारित्ता, समाणित्ता पडिविसज्जेइ)

નીચે ઉતારીને તેઓ તે ઘોડાઓને હસ્તિશીર્ષ નગરમા જ્યા કનકકેતુ રાજા હતો ત્યા લઈ ગયા ત્યા જઈને પહેલા તેમણે બન્ને હાથ જોડીને રાજા

ऽञ्जलिं कृत्वा 'वद्धावेंति' वर्द्धयन्ति जयविजयशब्देनाभिनन्दन्ति, वर्द्धयित्वा तान् अश्वान् राज्ञः समीपे 'उवणेंति' उपनयन्ति। ततः खलु स कनककेतू राजा तेषां सांयात्रिकनौवाणिजकानाम् 'उस्सुक्क' उच्छुल्कम्=' मम केनापि करो न ग्राह्य' इत्येवम्पमाणपत्रं वितरति=ददाति, वितीर्य सत्कारोति-मधुर वचनादिभिः, सम्मानयति-वस्त्रादिभिः, सत्कार्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति।

ततः खलु स कनककेतू राजा 'आसमद्दए' अश्वमर्दकान्=अश्वशिक्षकान् शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्-यूय खलु हे देवानुप्रियाः! ममाश्वान् 'विण एह' विनयत=शिक्षयत-गत्यादिकलाकुशलान् कुरुतेत्यर्थः। ततः खलु तेऽश्व मर्दकाः 'तहत्ति' तथेति 'तथाऽस्तु' इत्युक्त्वा प्रतिशृण्वन्ति=नृपाज्ञा स्वीकुर्वन्ति,

जहा कनककेतु राजा थे। वहां जाकर उन्होंने पहिले दोनों हाथ जोड कर राजा कनककेतु को नमस्कार किया-जय विजय शब्दों द्वारा उन्हें वधाई दी-वधाई देकर बाद में उन घोडों को उनके समक्ष उपस्थित करदिया इसके बाद कनककेतु राजा ने उन सांयात्रिक पोतवणिक्जनों के लिये निःशुल्क (कररहित) अवस्था वितरित की इन्हों से कोई भी राज्यकर्मचारी टेक्स न लेवें इस प्रकार का आज्ञापत्र उन्हे लिखकर दे दिया। आज्ञापत्र लिखकर देने के बाद राजाने उनका मधुर वचनों द्वारा सत्कार किया। वस्त्रादि प्रदान पूर्वक उनका सम्मान किया। फिर सत्कार स मान करके उन्हें विसर्जित कर दिया। (तएण से कणककेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता सक्कारेंति० पडिविसज्जेइ, तएण से कणगकेऊराया आसमद्दए सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी तुब्भेण देवाणुप्पिया! मम आसे विणएह) इस के बाद कनककेतु राजाने कौटु

કનકકેતુને નમસ્કાર કર્યા અને જય-વિજય શબ્દો વડે તેમને વધામણી આપી વધામણી આપીને તેમણે તે બધા ઘોડાઓને તેમની સામે ઉપસ્થિત કર્યા ત્યારપછી કનકકેતુ રાજાએ તે સાંયાત્રિક પોતવણિકોને માટે કર માફી કરી આપી તેમની પાસેથી કોઈ પણ રાજ્ય કર્મચારી કર (ટેક્સ) લે નહિ તેવુ આજ્ઞાપત્ર તેમને લખી આપ્યુ આજ્ઞાપત્ર આપીને રાજાએ તેમનો મધુર વચનો વડે સત્કાર કર્યો અને વસ્ત્રો વગેરે આપીને તેમનુ સન્માન કર્યું ત્યારપછી તેમને વિદાય કર્યા

(तएण से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता सक्कारेति० पडिविसज्जेइ, तएण से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ सद्दावित्ता एव वयासी तुब्भेण देवाणुप्पिया! मम आसे विणएह)

प्रतिश्रुत्य तान् अश्वान् बहुभिर्मुखबन्धैश्च कर्णबन्धैश्च नासाबन्धैश्च वालबन्धैश्च केशबन्धैरित्यर्थः खुरबन्धैश्च 'खलिणबंधेहि य' खलीनबन्धैः 'लगाम' इति प्रसिद्धबन्धैः, 'अहिलाणेहि य' अभिलानैः=' जीन ' इति प्रसिद्धैः, पडियाणेहि ' पर्याणकैः=' तग ' इति प्रसिद्धैश्चर्ममयैरश्वोपकरणविशेषैः, 'अकणाहि य' अङ्कनाभिः=तप्तलोहशलाकादिभिरङ्कनकरणैश्च 'वित्तप्पहारेहि य' वेत्रप्रहारैश्च

म्बिक पुरुषों को बुलाया, बुलाकर उनका आदर सत्कार किया। फिर उन्हें विसर्जित कर दिया। इसके पश्चात् कनककेतु राजा ने अश्वशिक्षकों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा–हे देवानुप्रियों! तुम इन हमारे इन घोडों को शिक्षित बनाओ–गत्यादिकला में निपुण करो। (तएण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहुहि मुह बधेहि य कण्णबधेहि णासा बधेहि य वालबधेहि य खुरबधेहि य खलिणबधेहि य अहिलाणेहि य पडियाणेहि य अकणाहि य वित्तप्पहारेहि य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयति) राजा कनककेतु की इस आज्ञा को उन अश्वमर्दकों ने "तहत्ति" कहकर स्वीकार कर लिया। स्वीकार करके फिर उन्हों ने अनेक विध मुख बधनों से, कर्णबधनों से नासाबधनों से लगामरूप बधनो से अभिलानों से–पलेचाओं से–पर्याणकों से तगो के कसने से–अकनों से–तप्त हुई लोहकी शलाकाओं द्वारा डाम लगाने से वेत्र के प्रहारों से, लताओंके प्रहारोंसे, चाबुकों के

ત્યારપછી કનકકેતુ રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા, બોલાવીને તેમનો સત્કાર કર્યો અને પછી તેમને વિદાય કર્યા ત્યારબાદ કનકકેતુ રાજાએ અશ્વશિક્ષકોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે અમારા આ ઘોડાઓને શિક્ષિત બનાવો, દોડવા વગેરેની કળાઓમા નિપુણ બનાવો

(तएण ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता ते आसे बहूहिं मुह वधेहि य कण्ण वधेहिं णासा वधेहि य वालवधेहि य खुर वधेहि य खलिण वधेहि य अहि लाणेहि य पडियाणेहि य अकणाहि य वित्तप्पहारेहिय लयप्पहारेहिय कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयति)

રાજા કનકકેતુની આજ્ઞાને તે અશ્વમર્દકોએ "તહત્તિ" કહીને સ્વીકારી લીધી સ્વીકાર કરીને તેમણે ઘણી જાતના મુખ બધનોથી, કર્ણ બધનોથી, નાસા બધનોથી, વાળ બધનોથી, ખુર બધનોથી, લગામ રૂપ બધનોથી, અભિલાનોથી, પલેચાઓથી, પર્યાણકોથી, તગોને કસવાથી, અકનોથી, તપાવવામા આવેલી લોખડની શળીઓ વડે ડામવાથી, વેતોના આઘાતોથી લતા

'लयप्पहारेहि य' लतामहारैश्च, 'कसप्पहारेहि य' कशामहारैश्च 'कशा'-चाबुक' इति भाषायाम्, 'छिवप्पहारेहि य' छिवामहारैः=चर्ममयचिक्कणकशामहारैश्च 'विणयंति' विनयन्ति=शिक्षयन्ति, विनीय=शिक्षयित्वा कनककेतो राज्ञ उपनयन्ति। ततः खलु सः कनककेतू राजा तान् अश्वमर्दकान् सत्करोति सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य प्रतिविसर्जयति। ततः खलु तेऽश्वाः बहुभिर्मुखबन्धैश्च यावत्-छिवामहारैश्च बहूनि शारीरमानसानि दुःखानि प्राप्नुवन्ति।

'एवामेव' एवमेव=शब्दादिविषयमूर्छितार्श्वाभवत् 'समणाउसो' हे आयुष्मन्तः श्रमणाः! योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् इष्टेषु शब्दस्पर्शरसरूप गन्धेषु 'सज्जइ' सज्जते=आसक्तो

प्रहारों से, छिवा-चर्म की बनी हुई चिकनी कशाओं के प्रहारों से उन घोडों को शिक्षित बना दिया। (विणयित्ता कणगकेउस्स रण्णो उवणेंति तएण से कणगकेऊराया ते आसमद्दए सक्कारेइ सक्कारित्ता पडिविसज्जेइ, तएण ते आसा बहूहिं मुहबंधेहिं जाव छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीरमानसाणी दुक्खाइ पावेंति) शिक्षित बनाकर फिर वे उन घोडो को कनककेतु राजा के पास ले गये। बादमें राजा कनककेतु ने उन अश्वमर्दकों का सत्कार सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उन्हें विसर्जित कर दिया। वे घोडे लेकर अनेक विध उन मुख बंधनों से यावत् चर्ममय चिक्कणकशाओं के प्रहारों से नाना प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दुःखों को पाने लगे। (एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरस

ઓના પ્રહારોથી ચાબુકના પ્રહારોથી, છિવા ચામડાના બનેલા લીસા ચાબુકોના પ્રહારોથી તે ઘોડાઓને કેળવ્યા

(विणयित्ता कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ, सक्कारित्ता पडिविसज्जेइ तएण ते आसा बहूहिं मुह बंधेहिं जाव छिवप्पहारेहिं य बहूणि सारीरमानसाणि दुक्खाइ पावेंति)

કેળવીને-શિક્ષિત બનાવીને તે ઘોડાઓને તેઓ કનકકેતુ રાજા પાસે લઈ ગયા ત્યારપછી કનકકેતુએ તે અશ્વમર્દકોનો સત્કાર તેમજ સન્માન કર્યું સત્કાર અને સન્માન કરીને તેમને વિસર્જિત કર્યા તે ઘોડાઓ ઘણા મુખ બંધનોથી યાવત્ ચામડાના લીસા ચાબુકોના પ્રહારોથી અનેક જાતના શારીરિક અને માનસિક દુઃખો ભોગવવા લાગ્યા

(एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्झइ, मुज्झइ,

भवति, 'रज्जइ' रज्यते=अनुरक्तो भवति, 'गिज्झइ' गृध्यति=तद्वाञ्छासक्तो भवति, 'मुज्झइ' मुह्यति=मूर्छितो भवति, 'अज्झोववज्जइ' अध्युपपद्यते=सर्वथा तल्लीनो भवति, स खलु इह लोक एव बहूनां श्रमणानां च यावत्-श्रमणीनां श्रावकाणां श्राविकाणां च 'हीलणिज्जे' हीलनीयः यावत् चातुरन्तसंसारकान्ताम् 'अणुपरियट्टिस्सइ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यतीति भावः ॥सू०४॥

मूलम्-कलरिभियमहुर तंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु।
सद्देसु रज्जमाणा रमंति सोइंदियवसट्टा ॥ १ ॥
सोइंदियदुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो।
दीविगरुयमसहंतो वहबंध तित्तिरो पत्तो ॥ २ ॥

टीका-अथेन्द्रियासंवरणदोषान् गाथाभिः प्रदर्शयति-'कलरिभिय०' इत्यादि कलरिभितमधुरतन्त्री तल तालवंसककुदाभिरामेषु।

रूवगंधेसु य सज्जइ, रज्जइ, गिज्झइ, मुज्झइ, अज्झोववज्जइ, सेणं इहलोए चेव बहूणं समणाणं य जाव सावियाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ) इसी प्रकार हे आयुष्मंत श्रमणो! जो हमारा निर्ग्रन्थ साधुजन अथवा साध्वीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होता हुआ इष्ट शब्द, स्पर्श, रस, रूप, गंध इन पांचों इन्द्रियों के विषयों में आसक्त होता है, अनुरक्त होता है, उनकी चाह से बंधता है, उनमें मूर्च्छित बनता है, सर्व प्रकार से उनमें तल्लीन होता है वह इस लोक में ही अनेक श्रमणजनों द्वारा श्रमणी, श्रावक और श्राविकाओं द्वारा हीलनीय-निन्दा का पात्र-होता है यावत् वह चतुर्गतिरूप इस संसार कान्तार में भटकता है ॥ सू०४॥

सेणं इहलोए चेव बहूणं समाणाणं य जाव सावियाण य हीलणिज्जे जाव अणुपरियट्टिस्सइ)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ સાધુજનો કે સાધ્વીજનો આચાર્ય અથવા ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને ઈષ્ટ, શબ્દ, સ્પર્શ, રસ, રૂપ અને ગંધ આ પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત હોય છે, અનુરક્ત હોય છે, તેમની ઈચ્છા કરીને તેઓમાં બંધાઈ જાય છે, તેઓમાં મૂર્છિત બની જાય છે, બધી રીતે તેઓમાં તલ્લીન બની જાય છે તે આ લોકમાં જ ઘણા શ્રમણો વડે તેમજ ઘણી શ્રમણી, શ્રાવક અને શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય-નિન્દનીય-હોય છે યાવત્ તે ચતુર્ગતિ રૂપ આ સંસાર-કાંતારમાં ભટકતો રહે છે ॥ સૂત્ર ૪ ॥

शब्देषु रज्यमाना, रमन्ते श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्ता ॥ १ ॥
श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्ततरस्य अथ एतावान भवति दोषः ।
द्वीपिकारुतमसहमानो,-वधबन्ध तित्तिर प्राप्तः ॥ २ ॥

श्रोत्रेन्द्रियवशार्त्ताः=कर्णेन्द्रियवशवर्तिन. कलाः श्रवणसुखदाः रिभिताः स्वर घोलनाविशेषयुक्ता मधुराः-प्रियाः कलरिभितमधुरध्वनिजनकत्वात् तद्रूपा ये तन्त्री-तलतालवंशा -वीणा-करताल वेणवस्ते समुद्भावितत्वात्-ककुद'-प्रधानाः, अभि रामाः-मनोहरास्तेषु-शब्देषु रज्यमानाः=अनुरक्ताः सन्तः रमन्ते=मोदन्ते ॥ १ ॥ ' सोइंदिये ' इत्यादि । ' सोइंदियदुद्दत्तणस्स ' श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्ततरस्य श्रोत्रेन्द्रिय दुर्दान्त यस्य स श्रोत्रेन्द्रियदुर्दान्त =श्रोत्रेन्द्रियस्य जेतुमशक्यतया तद्वशवर्तीत्यर्थः, तस्य भावस्तत्त्व, तस्य, श्रोत्रेन्द्रियाधीनतायाः, ' एत्तिओ ' एतावान्=वक्ष्यमाण प्रकारकः दोषो भवति । त सदृष्टान्तं प्रदर्शयति-'दीविगरुयमसहंतो ' द्वीपिकारु तमसहमान'-द्वीपिका=व्याध पञ्जरस्थतित्तिर', तस्याः रुत शब्दम् असहमान =

' कलरिभिय ' इत्यादि ।

अब सूत्रकार, इन्द्रियों के असवरण से जो दोष उत्पन्न होते हैं उन्हें इन गाथाओं द्वारा प्रदर्शित करते है-कर्णेन्द्रिय के वशवर्ती बने हुए प्राणी कल-श्रवण सुखद, रिभित-स्वरों के घोलना विशेष से युक्त ऐसे मधुरप्रिय, तन्त्री-वीणा, तलताल-करताल, वशवासुरी इन से उत्पन्न होने की वजह से ककुद-अत्यन्त, अभिराम-मनोहर ऐसे शब्दो में अनुरक्त होते हुए यद्यपि मुदितमन होते हैं परन्तु श्रोत्रेन्द्रिय उनकी दुर्दमन होनेके कारण-श्रोत्रेन्द्रिय उनकी जितनेमे अशक्य होनेके कारण तद्वशवर्ती बने हुए वे प्राणी जिस तरह व्याध के पजर में रही हुई तित्तिरी के शब्द को सुनकर तीतरपक्षी-कामराग के वश से आकृष्ट

' कलरिभिय ' इत्यादि—

સૂત્રકાર હવે ઇન્દ્રિયોના અસવરણથી જે દોષો ઉત્પન્ન થાય છે તેમને આ ગાથાઓ વડે પ્રદર્શિત કરે છે કર્ણેન્દ્રિયના વશમા થયેલા પ્રાણીઓ કલ-શ્રવણ સુખદ, રિભિત સ્વરોને વિશેષ રૂપમા મેળવવાથી ઉત્પન્ન થયેલા ધ્વનિ, મધુર-પ્રિય, તત્રી-વીણા, તલતાલ-કરતાળ, વશ-વાસળી એમનાથી ઉત્પન્ન હોવા બદલ કકુદ-અત્યત, અભિરામ-મનોહર એવા શબ્દોમા અનુરકત થતા જો કે તેઓ મુદિતમન-પ્રસન્ન થાય છે પરતુ તેમની શ્રોત્રેન્દ્રિય (કાન) દુર્દમનીય હોવા બદલ એટલે કે મશ્રોત્રેન્દ્રિય ઉપર કાબુ મેળવવાનુ કામ તેમના માટે અશકય હોવા બદલ તેને વશ થયેલા પ્રાણીઓ જેમ વ્યાધા-શિકારીના પીંજરામા સપડાઇ ગયેલી તિત્તિરીના શબ્દને સાભળીને તીતર પક્ષી ના

तित्तिर वध=मरण वन्ध=पञ्जरादि वन्धन प्रापः-प्राप्नोतीत्यर्थः 'अथ' वाक्यालङ्कारे ॥ २ ॥

मूलम्-थणजहणवयणकरचरणणयणगव्वियविलासियगईसु ।
रूवेसु रज्जमाणा रमंति चक्खिदियवसट्टा ॥ ३ ॥
चक्खिदियदुद्दत्तणस्स अह एत्तिओ भवइ दोसो ।
जं जलणंमि जलते पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥ ४ ॥

टीका-स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु रज्यमाना,-रमन्ते चक्षुरिन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ३ ॥
चक्षुरिन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अथ एतावान् भवति दोपः ।
यद्ज्वलने ज्वलति, पतति पतङ्गः अबुद्धिकः ॥ ४ ॥

'थणे' त्यादि । चक्षुरिन्द्रियवशार्त्ताः स्त्रीणा स्तनजघनादि रूपेषु रज्यमानाः =अनुरक्ता रमन्ते ॥ ३ ॥

ज्वलने=अग्नौ । शेप सुगमम् ॥ ४ ॥

होकर वध और बधन को पाता है उसी तरह नाना प्रकार के वध बधनो को पाया करते हैं ॥ गा० १-२ ॥

'थणजहण, चक्खिदिय' इत्यादि ।

यद्यपि चक्षुन्द्रिय के विषय की प्राप्ति करने मे व्याकुल हुए प्राणी उस विषय की प्राप्ति होने पर आनन्दमग्न बन जाया करते हैं-वे स्त्रियों के स्तन, जघन, वदन, कर, चरण, नयन, गर्वित विलासयुक्त गमनादिरूप चक्षुइन्द्रिय के विषय को बार बार देखकर आसक्त होते हैं-परन्तु यह इद्रिय जब दुर्दान्त बन जाया करती है-तब ऐसे प्राणी जिस

આવેશમા આવાને મૃત્યુ તેમજ બધનને પ્રાપ્ત કરે છે, તેમ જ અનેક જાતના વધબધનો મેળવે છે "गा १-२"

थण जहण चक्खिदिय इत्यादिं—

જો કે ચક્ષુન્દ્રિયોના વિષયોને મેળવવા માટે અત્યત ઉત્સુક બનેલા પ્રાણીઓ તે વિષયોની પ્રાપ્તિ થઈ જવા બાદ આનદમગ્ન થઈ જાય છે-તેઓ સ્ત્રીઓના સ્તન, જઘન, મુખ, હાથ, ચરણ, નયન ગર્વિત વિલાસ-યુક્ત ગમન વગેરે રૂપ ચક્ષુ ઇન્દ્રિયોના વિષયોને વારવાર જોઈને આસક્ત થઈ જાય છે, પરતુ આ ઇન્દ્રિય જ્યારે દુર્દાત બની જાય છે ત્યારે એવા પ્રાણીઓ અજ્ઞાની પતગની

मूलम्–अगुरुवरपवरधूवण उउय मल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा ॥ ५ ॥
घाणिंदियदुद्दंतत्तणस्स अहं एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं ओसहिगंधेणं बिलाओ निद्धावइ उरगो ॥ ६ ॥

टीका–अगुरुवरप्रवरधूपन ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु रज्यमाना,–रमन्ते घ्राणेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ५ ॥
घ्राणेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य अथ एतावान् भवति दोषः ।
यद् औषधिगन्धेन बिलाद् निर्धावति उरगः ॥ ६ ॥

घ्राणेन्द्रियवशार्त्ता अगुरुवरः=कृष्णागुरुः, प्रवरधूपनं=दशाङ्गादिरूपो धूपः, 'उउयमल्ल' ऋतुजमाल्यानि=तत्तदृतुजातपुष्पाणि, अनुलेपनानि=चन्दनकुङ्कुमादिरूपाणि, तेषां विधयः=प्रकारा येषु गन्धेषु तत्र रज्यमानाः=अनुरक्ताः सन्तो रमन्ते ॥ ५ ॥

'ओसहिगंधेण' ओषधिगन्धेन=केतक्यादिवनस्पतिसुगन्धानुरागवशेन

प्रकार अज्ञानी पतंग अपने प्राणों को अग्नि में डाल देता है उसी प्रकार उसी विषय में अपने प्राणों का नाश करते हैं ॥ गा० ॥ ३–४ ॥

अगुरुवर, घाणिंय इत्यादि ।

घ्राणइन्द्रिय के वशवर्ती बने हुए प्राणी अगुरुवर–कृष्णागुरु, प्रवर, धूपन,–दशाङ्गादिरूप धूप, ऋतुजमाल्य–तत्तदृतु के पुष्प, अनुलेपन–चन्दन कुङ्कुम आदि के विविध लेप रूप गंध में अनुरक्त होते हुए हर्षित मन होते हैं, परन्तु वे इस इन्द्रिय की दुर्दमनता का कुछ भी विचार नहीं करते हैं। जब यह इन्द्रिय दुर्दमन बन जाती है–तब ऐसे प्राणी

જેમ પોતાના પ્રાણોને અગ્નિમાં હોમી દે છે, તેમજ તે પણ તે વિષયમાં જ પોતાના પ્રાણોને નષ્ટ કરી નાખે છે " ગા ૩–૪ "

अगुरुवर, घाणिंदिय इत्यादि ।

ઘ્રાણઇન્દ્રિયના વશમાં પડેલા પ્રાણીઓ અગુરુવર–કૃષ્ણાગુરુ, પ્રવર, ધૂપન દશાંગાદિ રૂપ ધૂપ ઋતુજ માલ્ય–તત્તદ્ ઋતુના પુષ્પો, અનુલેપન ચંદન–કુંકુમ વગેરેના જાતજાતના લેપના ગંધમાં અનુરક્ત થઈને હર્ષિત થઈ જાય છે, પરંતુ હકીકતમાં તો તેઓ તે ઇન્દ્રિયની દુર્દમતા વિષેનો કોઇ પણ જાતનો વિચાર કરતા જ નથી જ્યારે તે ઇન્દ્રિય દુર્દમ બની જાય છે   આ

उरग =सर्पः निलात् 'निधावई' निर्धावति=निस्सरति, ततो वध बन्धन च प्राप्नोतीति भावः । शेष स्पष्टम् ॥ ६ ॥

मूलम्–तित्तकडुय कसायंवमहुखज्जपेज्जलेज्झेसु ।
आसाएसु य गिद्धा रमंति जिब्भिंदियवसट्टा ॥ ७ ॥
जिब्भिंदिय दुद्दत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
ज गललग्गुक्खित्तो फुरइ थरविरल्लिओ मच्छो ॥ ८ ॥

छाया—तिक्तकटुककषायाम्लमधुरबहुखाद्यपेयलेह्येषु ।
आस्वादेषु च गृद्धा, रमन्ते जिह्वेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ७ ॥
जिह्वेन्द्रियदुर्दान्तत्वस्य, अथ एतावान् भवति दोषः ।
यद् गललग्नोत्क्षिप्तः, स्फुरति स्थल निरहितो मत्स्यः ॥ ८ ॥

टीका–जिह्वेन्द्रियवशार्त्ता –तिक्त=मरीचादिक, कटुक=कारवेल्लादिक, कषाय=आमलकादिकम्, अम्ल=कर्म्मरादिक, मधुर=मोदकादिक, बहु=अनेकविध 'खज्ज' खाद्य-कदलीफलादिक, 'पेज्ज' पेय=दुग्धादिक, 'लेज्झ' लेह्य=दधिशर्करादि-

केतकी आदि की गध से आकृष्ट बनकर जिस प्रकार बिल से निकला सर्प वधबधन आदि कष्टो को पाता है वैसे कष्ट पाते है ॥ गा० ५–६ ॥

'तित्तकडुय जिब्भिद' इत्यादि ।

जो प्राणी जिह्वाइन्द्रिय के वशावर्ती बना रहता है वह मरीच आदि के जैसे तिक्त स्वाद मे करेला के जैसे कटुक स्वाद में, आमल आदि के जैसे कषायरस में कर्म्मरादिके जैसे अम्ल–खट्ट रस में, मोदकादि के जैसे मधुर स्वाद में तथा विविध प्रकार के कदली फलादिक खाद्य पदार्थों में, दुग्धादि पेयपदार्थों मे, एव दधि और शक्कर आदि से निष्पन्न हुए

કેતકી વગેરેની ગ ધથી આકૃષ્ટ થઈને જેમ દરમાથી નીકળેલો સાપ વધબધન વગેરે કષ્ટોને પ્રાપ્ત કરે છે તેમજ કષ્ટ પ્રાપ્ત કરે છે ॥ ગા ૫–૬ ॥

तित्तकडुय जिब्भिदिय इत्यादि ।

જે પ્રાણી જીહ્વા ઇન્દ્રિય (જીભ) ને વશ થયેલો હોય છે, તે મરચુ વગેરેના જેવા તીખા સ્વાદમા, કારેલા જેવા કડવા સ્વાદમા, આમલી વગેરેના જેવા કષાય રસમા કરમદિના જેવા અમ્લ–ખાટા રસમા, લાડવા વગેરેના જેવા મધુર સ્વાદમા તેમજ જાતજાતના કેળા વગેરેના ખાદ્ય પદાર્થોમા, દૂધ વગેરે જેવા પેય પદાર્થોમા, અને દહીં તેમજ ખાંડ વગેરેથી તૈયાર થયેલા

निष्पन्न श्रीखण्डादिकम्, एतेषां द्वन्द्वः, तेषु आस्वादेषु=आस्वाद्यन्ते इति आस्वादाः रसास्तेषु गृद्धाः=आसक्ताः सन्तः रमन्ते ॥ ७ ॥

'जिब्भिंदिय' इत्यादि। पूर्वं गले=मत्स्यवेधने लग्न, मत्स्यवेधनेन मुखे विद्ध इत्यर्थः, पश्चाद् उत्क्षिप्त =जलादुद्धृतः इति कर्मधारयः, एवंभूतो मत्स्य स्थलविरल्लितः=स्थले निपातितः सन् स्फुरति व्याकुलो भूत्वा भूमौ लुठति। शेषं स्पष्टम् ॥ ८ ॥

मूलम्-उउभयमाणा सुहेसु य सविभवहियियमणनिव्वुइकरेसु।
फासेसु रज्जमाणा रमंति फासिंदियवसट्टा ॥ ९ ॥
फासिंदिय दुद्दन्तत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो।
ज खणइ मत्थय कुंजरस्स लोहकुसो तिक्खो ॥ १० ॥

छाया-ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभवहृदयमनोनिर्वृतिकरेषु।
स्पर्शेषु रज्यमाना, रमन्ते स्पर्शेन्द्रियवशार्त्ताः ॥ ९ ॥
स्पर्शेन्द्रिय दुर्दान्तत्वस्य, अथ एतावान् भवति दोषः।
यत् खनति मस्तकं कुञ्जरस्य लोहाङ्कुशस्तीक्ष्णः ॥ १० ॥

टीका-'उउभये' त्यादि। स्पर्शेन्द्रियवशार्त्ताः -'उउभयमाणसुहेसु य' ऋतुभज्य मानसुखेषु ऋतुषु=हेमन्तादिषु भज्यमानानि=सेव्यमानानि सुखानि, येषु ते,

---

श्री खड आदि लेह्य पदार्थों में आसक्तमति होकर बड़ा हर्ष मनाया करते हैं। परन्तु जब इनकी यह इन्द्रिय दुर्दान्त बन जाती है तब ऐसे प्राणी जैसे मत्स्यवेधन से-मछली पकड़ने के कांटे-बशी-से मुख में विद्ध हुआ मत्स्य जल में से खीचकर बाहर भूमिपर डाल दिया जाता है और वह भूमिपर तड़प् २ कर मर जाता है उस इन्द्रिय के विषय में फँसकर तडप् २ कर मर जाया करते हैं॥ गा० ७-८॥

શ્રીખંડ વગેરે લેહ્ય (ચાટીને ખાઈ શકાય તેવા) પદાર્થોમાં આસક્ત થઈને ખૂબ જ હર્ષિત થતા રહે છે પરંતુ જ્યારે તેમની આ ઇન્દ્રિય દુર્દાંત બની જાય છે, ત્યારે એવા પ્રાણી જેમ મત્સ્યવેધનથી-માછલી પકડવાના કાંટાથી મુખમાં વિદ્ધ થયેલું માછલું પાણીમાંથી બહાર ખેંચીને બહાર જમીન ઉપર નાખવામાં આવે છે અને તે જમીન ઉપર તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે, તેમજ તે ઇન્દ્રિયના વિષયમાં ફસાઈને તડપી તડપીને મૃત્યુવશ થાય છે ॥ ગા ૭-૮ ॥

तेषु तथोक्तेषु तथा सविभवाना-सपत्तिशालिना हृदयस्य मनसश्च निर्वृत्तिकरेषु सुखकरेषु। एव भूतेषु स्पर्शेषु रज्यमानाः=अनुरक्ताः रमन्ते ॥ ९ ॥

'फासिंदिये' त्यादि । कुञ्जरस्य=करिणीस्पर्शलुब्धस्य हस्तिनो मस्तक तीक्ष्णोलोहाङ्कुशः खनति=विदारयति । शेष सुगमम् ॥ १० ॥ ५ ॥ सू० ॥

मूलम्-कलरिभिय महुरतंतीतलतालवसकउहाभिरामेसु ।
सद्देसु जं न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ ११ ॥
थणजहणवयणकरचरणनयणगव्वियविलासियगईसु ।
रूवेसु न रत्ता वसट्टमरण न ते मरए ॥ १२ ॥
अगुरुवरपवरधूवण उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गधेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १३ ॥
तित्तकडुयकसायवमहुरवहुखज्जपेज्जलेज्झेसु ।
आसाएसु न गिद्धा वसट्टमरण न ते मरए ॥ १४ ॥

(उउभयमाण, फासिंदियदुद्दत इत्यादि,

टीकार्थ-जो प्राणी स्पर्शन इन्द्रियके वशवर्ती होते हैं वे अपनी स्पर्शनेन्द्रियकी लोलुपतासे हेमन्त आदि प्रत्येक ऋतु सबन्धी सुख भोगते हैं। तथा सपत्तिशालियों के हृदय में और मन सुखकर स्पर्शों में अनुरक्त बने रहते हैं। इस तरह करते २ जब इनकी यह स्पर्शन इन्द्रिय दुर्दान्त बन जाती है तब वे प्राणी जिस प्रकार तीक्ष्ण लोह का अकुश करिणी (हस्तिनी) के स्पर्श करने में लुब्धक बने हुए मत्त गजराज के मस्तक को विदार देता है उसी तरह इस स्पर्शन इन्द्रिय के द्वारा विनष्ट कर दिये जाते हैं ॥ गा० ९-१० ॥

उ उ भयमाण, फ सिंदियदुद्दत इत्यादि ।

જે પ્રાણીઓ સ્પર્શેન્દ્રિયને વશ થાય છે, તેઓ પોતાની સ્પર્શેન્દ્રિયની લોલુપતાથી હેમત વગેરે દરેકે દરેક ઋતુઓના સુખો ભોગવે છે તેમજ સપત્તિવાળાઓના હૃદય અને મનસુખદ સ્પર્શોમા આસક્ત બનીને રહે છે આમ કરતા કરતા જ્યારે તેમની આ સ્પર્શેન્દ્રિય દુર્દાત બની જાય છે ત્યારે તે પ્રાણીઓ (હાથિણી) ને સ્પર્શવામા લુબ્ધ બનેલા મત્ત ગજરાજના મસ્તકને વિદીર્ણ કરી નાખે છે તેમજ આ સ્પર્શેન્દ્રિય વડે વિનષ્ટ કરી નાખવામા આવે છે ॥ ગા ૯-૧૦ ॥

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियवमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—' कलरिभिय ' इत्यादि ।

फलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशककुदाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,-ऋतुकमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुकषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेयलेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभवहृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, થણજહણ, અગુરુવરપવર, તિત્ત કડુય ઉઉ ભયમાણ, ઇત્યાદિ ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમનુ વશાત મરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમા, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમા, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમા તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય ભૂત સ્પર્શમા અત્યંત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसु य भद्दपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥
गंधेसु य भद्दपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसय उवगएसु ।
तुट्टेण व रुट्टेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ २० ॥
एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ।
॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोधयति-' सद्देसु य' इत्यादि ।
शब्देषु च भद्रकपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥

अब सूत्रकार इन पाच गाथाओं द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये-इस

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जबू ! समणेग भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥

सूत्रकार हवे आ पाच गाथाओ वडे ओ वात स्पष्ट करवा इच्छे छे के अनुकूळ-प्रतिकूळ शब्दादि विषयोमां श्रमणजनोने कदापि राग-द्वेष नहि

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह–' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशककुदाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,–वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,–वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,–ऋतुकमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,–वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेय लेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,–वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा–वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द में, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त–गृद्ध–नहीं होते हैं॥ गा० ११–१५॥

कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्त कडुय उउभयमाण, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમનું વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમાં, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમાં અત્યંત આસક્ત–ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧–૧૫ ॥

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह—' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशककुदाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,—कुसुमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुकषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेयलेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभवहृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा—वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द मे, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्त कडुय उउभयमाण, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરતા લાગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમનું વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમાં, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમાં અત્યંત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्–सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसु य भद्दपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥
गधेसु य भद्दपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥

एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ।

॥ सत्तरसमं नायज्झयण समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोध यति–' सद्देसु य' इत्यादि ।

शब्देषु च भद्रपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि ।

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥

अब सूत्रकार इन पाच गाथाओ द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नही करना चाहिये–इस

सद्देसुय, फासेसुय इत्यादि

एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥

સૂત્રકાર હવે આ પાચ ગાથાઓ વડે એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા શ્રમણજનોને કદાપિ રાગ-દ્વેષ નહિ

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह-'कलरिभिय' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशककुदाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,-ऋतुजमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेयलेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभवहृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयों में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है। इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द मे, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध मे जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नही होते हैं॥ गा० ११-१५ ॥

कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्त कडुय उउभयमाण, इत्यादि ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમા આસક્ત થતા નથી, તેમનુ વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમા, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગ ધમા, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમા તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષય ભૂત સ્પર્શમા અત્યત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

मूलम्—सद्देसु य भद्दयपावएसु सोयविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ १६ ॥
रूवेसु य भद्दपावएसु चक्खुविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १७ ॥
गधेसु य भद्दपावएसु घाणविसयं उवागएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १८ ॥
रसेसु य भद्दयपावएसु जिब्भविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्व ॥ १९ ॥
फासेसु य भद्दयपावएसु कायविसय उवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व समणेण सया ण होयव्वं ॥ २० ॥
एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते त्तिबेमि ।
॥ सत्तरसम नायज्झयणं समत्त ॥ १७ ॥

टीका—अनुकूल प्रतिकूलशब्दादिषु रागद्वेषवर्जन पञ्चभिर्गाथाभिः प्रतिबोध यति–' सद्देसु य' इत्यादि ।
शब्देषु च भद्रपापकेषु श्रोत्रविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १६ ॥

सद्देसु य, फासेसु य इत्यादि ।

एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते तिबेमि ॥

अब सूत्रकार इन पाच गाथाओ द्वारा अनुकूल प्रतिकूल शब्दादि विषयों में श्रमणजन को कभी भी रागद्वेष नहीं करना चाहिये–इस

सद्देसु य, फासेसु य इत्यादि

एव खलु जबू ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि ॥

સૂત્રકાર હવે આ પાચ ગાથાઓ વડે એ વાત સ્પષ્ટ કરવા ઇચ્છે છે કે અનુકૂળ-પ્રતિકૂળ શબ્દાદિ વિષયોમા શ્રમણજનોને કદાપિ રાગ-દ્વેષ નહિ

उउभयमाणसुहेसु य सविभवहियथयमणनिव्वुइकरेसु ।
फासेसु जे न गिद्धा वसट्टमरणं न ते मरए ॥ १५ ॥

टीका—शब्दादिविषयेष्वनासक्तानां वशार्त्तमरणं न भवतीति पञ्चभिर्गाथाभिः प्राह-' कलरिभिय ' इत्यादि ।

कलरिभितमधुरतन्त्रीतलतालवंशककुदाभिरामेषु ।
शब्देषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ ११ ॥
स्तनजघनवदनकरचरणनयनगर्वितविलासितगतिषु ।
रूपेषु ये न रक्ता,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १२ ॥
अगुरुवरप्रवरधूपन,-ऋतुकमाल्यानुलेपनविधिषु ।
गन्धेषु ये न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १३ ॥
तिक्तकटुककषायाम्ल, मधुरबहुखाद्यपेय लेह्येषु ।
आस्वादेषु न गृद्धा,-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १४ ॥
ऋतुभज्यमानसुखेषु च, सविभव हृदयमनोनिर्वृतिकरेषु ।
स्पर्शेषु ये न गृद्धा-वशार्त्तमरणं न ते म्रियन्ते ॥ १५ ॥
आसाम् व्याख्या सुगमा ॥ १५ ॥ सू० ६ ॥

(कलरिभिय, थणजहण, अगुरुवरपवर, तित्तकडुय, उउभयमाण, इत्यादि ।

इन गाथाओं द्वारा सूत्रकार यह प्रदर्शित करते हैं कि जो शब्दादि पांच इन्द्रियों के विषयो में आसक्त नहीं बनते हैं उनका वशार्तमरण नहीं होता है । इन गाथाओं की व्याख्या सुगम है ।

जो प्राणी कर्णइन्द्रिय के विषयभूत शब्द मे, चक्षुइन्द्रिय के विषयभूत रूप में नासिका इन्द्रियके विषयभूत गंध में जिह्वाइन्द्रिय के विषयभूत रस में, तथा स्पर्शन इन्द्रिय के विषयभूत स्पर्श में आसक्त-गृद्ध-नहीं होते हैं ॥ गा० ११-१५ ॥

કલરિભિય, થણજહણ, અગુરુવરપવર, તિત્ત કડુય ઉઉભયમાણ, ઇત્યાદિ ।

આ ગાથાઓ વડે સૂત્રકાર આ વાત સ્પષ્ટ કરવા માગે છે કે જે શબ્દ વગેરે પાંચે ઇન્દ્રિયોના વિષયોમાં આસક્ત થતા નથી, તેમનું વશાર્તમરણ થતું નથી, આ ગાથાઓની વ્યાખ્યા સરળ છે

જે પ્રાણી કર્ણઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપમાં, નાસિકા ઇન્દ્રિયના, વિષયભૂત ગંધમાં, જીહ્વા ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત રસમાં તેમજ સ્પર્શન ઇન્દ્રિયના વિષયભૂત સ્પર્શમાં અત્યંત આસક્ત-ગૃદ્ધ થતા નથી, તેઓ વશાર્તમરણને પ્રાપ્ત કરતા નથી ॥ ગા ૧૧-૧૫ ॥

'सद्देसु य' इत्यादि, गाथा पञ्चक सुगमम् ॥

सुधर्मास्वामी प्राह–'एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्समाप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः। इति ब्रवीमि–व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात – जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक – प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तदशमध्ययनं समाप्तं ॥ १७ ॥

---

८ आठ प्रकार का स्पर्श चाहे वह अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल हो– जब २ स्पर्शन इन्द्रिय का विषय हो उसमें साधु को किसी भी तरह से कभी भी तुष्ट एवं रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ २० ॥

इस प्रकार हे जंबू ! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुसार कह रहा हूँ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का सत्रहवा अध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

---

૮ જાતનો સ્પર્શ—ભલે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમા સાધુને કોઈ પણ રીતે કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવ્યુ છે-આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આવુ હુ તેમના કહ્યા મુજબ જ તમને કહી રહ્યો છુ

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ સત્તરમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

रूपेषु च भद्रकपापकेषु, चक्षुर्विषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १७ ॥
१-भद्रकपापकेषु=अनुकूल-प्रतिकूलेषु ।
गन्धेषु च भद्रकपापकेषु, घ्राणविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १८ ॥
रसेषु च भद्रकपापकेषु, जिह्वाविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ १९ ॥
स्पर्शेषु च भद्रकपापकेषु, कायविषयमुपगतेषु ।
तुष्टेन वा रुष्टेन वा, श्रमणेन सदा न भवितव्यम् ॥ २० ॥

विषय को समझाते हैं यहां भद्रक शब्द का अर्थ अनुकूल और पापक शब्द का अर्थ प्रतिकूल है । जब शब्द रूप विषय श्रोत्रेन्द्रिय का हो तो उस समय चाहे वह मनोज्ञ हो या अमनोज्ञ हो कैसा ही क्यों न हो उसमें श्रमण-साधु-को कभी भी तुष्ट अथवा रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० ॥ १६ ॥

चक्षुइन्द्रिय का विषयभूतरूप जब उस इन्द्रिय द्वारा ग्रहण करने में आवे-तब वह चाहे मनोज्ञ हो या अमनोज्ञ हो उसमें श्रमण जन को कभी भी हर्ष विषाद-तुष्ट रुष्ट-नहीं होना चाहिये ॥ गा० १७ ॥

मनोज्ञ एव अमनोज्ञ गंध जब घ्राणइन्द्रिय का विषय हो तब साधु को उस विषय में कभी भी तुष्ट रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० १८ ॥

मनोज्ञ अथवा अमनोज्ञ रस जिह्वाइन्द्रिय का विषय हो-तब उसमें श्रमण जन को कभी भी तुष्ट और रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ गा० १९ ॥

કરવો જોઈએ અહીં ભદ્રક શબ્દનો અર્થ અનુકૂળ અને પાપક શબ્દનો અર્થ પ્રતિકૂળ છે જ્યારે શબ્દરૂપ વિષય શ્રોત્ર ઈન્દ્રિયનો હોય તો ભલે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, ગમે તેવો કેમ ન હોય, તેમા શ્રમણ-સાધુ-ને કદાપિ તુષ્ટ કે રૂષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા ૧૬ ॥

ચક્ષુ ઈન્દ્રિયના વિષયભૂત રૂપ જ્યારે તે ઈન્દ્રિય વડે ગ્રહણ કરવામા આવે ત્યારે તે મનોજ્ઞ હોય કે અમનોજ્ઞ હોય, શ્રમણને કદાપિ તેમા હર્ષ વિષાદ-તુષ્ટ-રૂષ્ટ નહિ થવુ જોઈએ ॥ ગા ૧૭ ॥

મનોજ્ઞ અને અમનોજ્ઞ ગંધ જ્યારે ઘ્રાણ ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે સાધુને તે વિષયમા કદાપિ તુષ્ટ કે રૂષ્ટ નહિ થવુ જોઈએ ॥ ૧૮ ॥

મનોજ્ઞ અથવા તો અમનોજ્ઞ રસ જ્યારે જીહ્વા ઈન્દ્રિયનો વિષય હોય ત્યારે તેમા શ્રમણ-જનને કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ૧૯ ॥

'सद्देसु य' इत्यादि, गाथा पञ्चक सुगमम् ॥

सुधर्मास्वामी प्राह–'एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्समाप्तेन सप्तदशस्य ज्ञानाध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः। इति ब्रवीमि–व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

इति श्री विश्वविख्यात – जगद्वल्लभ–प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलित-ललितकलापालापक - प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक–वादिमानमर्दक श्रीशाहू छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त 'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित–कोल्हापुरराजगुरु–बालब्रह्मचारि जैनाचार्य जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलालव्रतिविरचितायां श्री ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां सप्तदशमध्ययनं समाप्तम् ॥ १७ ॥

---

८ आठ प्रकार का स्पर्श चाहे वह अनुकूल हो चाहे प्रतिकूल हो–जब २ स्पर्शन इन्द्रिय का विषय हो उसमें साधु को किसी भी तरह से कभी भी तुष्ट एवं रुष्ट नहीं होना चाहिये ॥ २० ॥

इस प्रकार हे जम्बू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं इस सत्रहवें ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा मैं उन्हीं के कहे अनुसार कह रहा हूँ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाता धर्मकथाङ्गसूत्र" की अनगार धर्मामृतवर्षिणी व्याख्या का सत्रहवा अध्ययन समाप्त ॥ १७ ॥

---

૮ જાતનો સ્પર્શ—ભલે તે અનુકૂળ કે પ્રતિકૂળ ગમે તેવો કેમ ન હોય જ્યારે જ્યારે તે સ્પર્શન ઇન્દ્રિયનો વિષય હોય તેમા સાધુને કોઈ પણ રીતે કદાપિ તુષ્ટ અને રૂષ્ટ થવુ જોઈએ નહિ ॥ ગા ૨૦ ॥

આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવ્યુ છે–આ સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આવુ હુ તેમના કહ્યા મુજબ જ તમને કહી ગ્યો છુ

શ્રી જૈનાચાર્ય ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત જ્ઞાતાસૂત્રની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનુ સત્તરમુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૭ ॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने इन्द्रियवशवर्त्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थौ प्रोक्तौ, इह तु लोभाविष्टानां लोभरहितानां च तावेवोच्येते, इत्येवं पूर्वेण सह संबद्धमिदमध्ययनम्, तस्येदमादिमं सूत्रम्-' जइ णं भंते' इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारमस्स णं भंते! णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहं णामं णयरे होत्था। वण्णओ०। तत्थ णं धण्णे णामं सत्थवाहे। भद्दाभारिया तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंचसत्थवाह-

---

अठारहवां अध्ययन प्रारंभ

सुसमादारिका का वर्णन

सत्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका है। अब १८ वां अध्ययन प्रारंभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबंध है-कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशीकृत इन्द्रियवाले जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं। इस अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है-' जइणं भंते ' इत्यादि।

અઢારમા અધ્યયનનો પ્રારંભ

સુસમાદારિકાનું વર્ણન

સત્તરમું અધ્યયન પુરૂં થયું છે હવે અઢારમા અધ્યયનની શરૂઆત થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પહેલા અધ્યયનમાં ઈન્દ્રિય વશવર્તી તેમજ વશીકૃત ઈન્દ્રિયોવાળા જીવોને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વિષે કહેવામાં આવ્યું છે સૂત્રકાર હવે આ અધ્યયનમાં આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરશે કે જે જીવો લોભકષાયથી તેમજ લોભકષાયથી રહિત હોય છે તેઓ અનર્થ અને અર્થ પ્રાપ્તિને લાયક ઠરે છે આ અધ્યયનનું પહેલું સૂત્ર આ છે—जइणं भंते समणेणं महावीरेणं इत्यादि—

दारगा होत्था, तं जहा–धण्णे धणपाले, धणदेवे, धणगोवे, धणरक्खिए। तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्सधूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताण अणुमग्गजातीया सुंसुमाणामं दारिया होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए नाम दासचेडे होत्था, अहीणपंचिंदियसरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था। तएणं से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था। सुंसुमं दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता, बहूहिं दारएहि य दारियाहि य बालेहि बालियाहि य डिंभएहि य डिंभियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं अभिरममाणे२ विहरइ। तएणं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारियाण य जाव अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ, एवं वट्टए आगेलियाओ, तेंदुसए, पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालकारं अवहरइ अप्पेगइए आउस्सइ, एवं अवहसइ निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ। तएणं ते बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कंदमाणा य साणं २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति। तएणं तेसिं बहूणं दारगाणय ६ जाव अम्मापियरो जेणेव धन्ने सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धन्ने सत्थवाहे बहूहिं खिज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणाहिय रुंटमाणाहि य उवलंभमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति॥ सू० १॥

॥ अथाष्टादशमध्ययनम् ॥

अथाष्टादशमारभ्यते, अस्य च पूर्वेण सहायमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन् अध्ययने इन्द्रियवशवर्त्तिनाम् वशीकृतेन्द्रियाणां च अनर्थार्थौं प्रोक्तौ, इह तु लोभाविष्टाना लोभरहितना च तावेवोच्यते, इत्येव पूर्वेण सह संबद्धमिदमध्ययनम्, तस्येदमादिम सूत्रम्-' जइण भंते' इत्यादि—

मूलम्—जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारमस्स ण भंते! णायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहं णाम णयरे होत्था। वण्णओ०। तत्थ णं धण्णे णाम सत्थवाहे। भद्दाभारिया तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पचसत्थवाह-

---

अठारहवां अध्ययन प्रारंभ
सुंसमादारिका का वर्णन

सत्रहवां अध्ययन समाप्त हो चुका हैं। अब १८ वा अध्ययन प्रारंभ होता है। इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार से संबंध है-कि पूर्व अध्ययन में इन्द्रियवशवर्ती तथा वशीकृत इन्द्रियवाले जीवों को अर्थ की प्राप्ति होना कहा गया है। अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह कहेंगे कि जो लोभ कषायसे युक्त तथा लोभ कषाय से रहित जीव होते हैं वे अनर्थ और अर्थ प्राप्ति से योग्य होते हैं। इस अध्ययन का सर्व प्रथम सूत्र यह है-' जइण भंते ' इत्यादि।

અઢારમા અધ્યયનનો પ્રારંભ
સુસમાદારિકાનુ વર્ણન

સત્તરમું અધ્યયન પુરૂ થયુ છે હવે અઢારમા અધ્યયનની શરૂઆત થાય છે આ અધ્યયનનો પહેલા અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સબધ છે કે પહેલા અધ્યયનમા ઈન્દ્રિય વશવર્તી તેમજ વશીકૃત ઈન્દ્રિયોવાળા જીવોને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વિષે કહેવામા આવ્યુ છે સૂત્રકાર હવે આ અધ્યયનમા આ વાતનુ સ્પષ્ટીકરણ કરશે કે જે જીવો લોભકપાયથી તેમજ લોભકપાયથી રહિત હોય છે તેઓ અનર્થ અને અર્થ પ્રાપ્તિને લાયક ઠરે છે આ અધ્યયનનુ પહેલુ સૂત્ર આ છે—जइण भंते समणेण महावीरेण इत्यादि—

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाधा आत्मजा धनादीना पञ्चाना पुत्राणाम् ' अणुमग्गजाइया ' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्ग जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिका आसीत् । कीदृशी सा ?–' सूमालपाणिपाया ' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरचरणा । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेटः=दासपुत्र आसीत् । योहि ' अहिण-

धण्णे २– धणपाले–२ धणदेवे ३, धणगोवे–४ धणरक्खिए–५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था। इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये। उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था। इसकी पत्नी का नाम भद्रा था। उस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पांच पुत्र थे–धन–१ धनपाल–२ धनदेव–३ धन-गोप–४ और धनरक्षित–५।

(तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थ वाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी– जो धनादिक पाच पुत्रों के पीछे उत्पन्न हुई थी। उसके कर, चरण बड़े कोमल थे। इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट–दास पुत्र–था–जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा–धण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे–४, धणरक्खिए–५)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેનુ વર્ણન પહેલાની જેમ સમજી લેવુ જોઈએ તે નગરમા ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ ભદ્રા હતુ તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે–ધન–૧,ધનપાલ–૨,ધનદેવ–૩,ધનગોપ–૪,અને ધનરક્ષિત–૫

(तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताण अणु मग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए णाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા–ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી તેના હાથ–પગ બહુ જ કોમળ હતા તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

टीका–' जइण भन्ते ! ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु भदन्त ! श्रमणेन यावन्मोक्षं समाप्तेन सप्तदशस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः जितेन्द्रियाऽजितेन्द्रियाणामर्थानर्थप्राप्तिरूपो भावः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, अष्टादशस्य तु ज्ञाताध्ययनस्य श्रमणेन यावन्मोक्षं सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामी प्राह–एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत् , ' वण्णओ ' वर्णकः=नगरवर्णनं पूर्ववद् विज्ञेयम् । तत्र खलु धन्यो नाम सार्थवाहः परिवसति । तस्य भद्रा नाम भार्याऽऽसीत् । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य पुत्राः, भद्रायाः आत्मजाः पञ्च सार्थवाहदारका आसन् । तेषां नामान्याह–' तं जहा ' तद्यथा–

टीकार्थ–जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामीसे पूछते हैं कि–(जइण भंते ! समणेण जाव संपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स ण भंते णायज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?) हे भदन्त ! श्रमण भगवान महावीर ने जो कि सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त कर चुके हैं सत्रहवें ज्ञानाध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है–तो उन्हों सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १८ वें ज्ञाताध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? (एव खलु जंबू !) इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि जंबू ! सुनों–तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णामं णयरे होत्था । वण्णओ० तत्थणं धण्णे णामं सत्थवाहे–भद्दा भारिया–तस्सणं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा–

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(जइण भंते ! समणेण जाव संपत्तेण सत्तरसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते अट्ठारसमस्स ण भंते णायज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ?)

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે–જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકયા છે–સત્તરમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો તે જ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ૧૮ મા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ?

(एव खलु जंबू !) આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન પૂછયો ત્યારબાદ શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો જવાબ આ પ્રમાણે છે—

(तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णामं णयरे होत्था । वण्णओ० तत्थणं धण्णे णामं सत्थवाहे–भद्दा भारिया–तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए

धनः १ धनपाल २ धनदेवः ३ धनगोपः ४ धनरक्षितः ५ इति । तस्या खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य दुहिता भद्रायाः सार्थवाह्या आत्मजा धनादीना पञ्चाना पुत्राणाम् ' अणुमग्गजाइया ' अनुमार्गजातिका=जाता एव जातिका, अनुमार्गे जातिका=अनुमार्गजातिका=पश्चाज्जाता सुसुमा नाम दारिका आसीत् । कीदृशी सा ?–' सूमालपाणिपाया ' सुकुमार पाणिपादा=कोमलकरचरणा । तस्य खलु धन्यस्य सार्थवाहस्य चिलातो नाम दासचेटः=दासपुत्र आसीत् । योहि ' अहिण-

---

धण्णे २– धणपाले–२ धणदेवे ३, धणगोवे–४ धणरक्खिए–५) उस काल और उस समयमें राजगृह नाम का नगर था। इसका वर्णन पहले जैसा ही जानना चाहिये। उस नगर में धन्य नामका सार्थवाह रहता था। इसकी पत्नी का नाम भद्रा था। इस भद्रा भार्या से उत्पन्न हुए धन्य सार्थवाह के ये पांच पुत्र थे–धन–१ धनपाल–२ धनदेव–३ धन गोप–४ और धनरक्षित–५।

(तस्सण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स णं धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाएणाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था) इस धन्य सार्थ वाह के भद्रा भार्या की कुक्षि से उत्पन्न एक सुसुमा नामकी पुत्री थी– जो धनादिक पाच पुत्रो के पीछे उत्पन्न हुई थी। इसके कर, चरण बड़े कोमल थे। इस धन्य सार्थवाह का एक दासचेट–दास पुत्र–था–जिस

अत्तया पच सत्थवाहदारगा होत्था, त जहा–धण्णे १, धणपाले २, धणदेवे ३, धणगोवे–४, धणरक्खिए–५)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેનુ વર્ણન પહેલાની જેમ સમજી લેવુ જોઈએ તે નગરમા ધન્ય નામે સાર્થવાહ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ ભદ્રા હતુ તે ભદ્રા ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલા પાચ પુત્રો હતા, તેમના નામ આ પ્રમાણે છે–ધન–૧,ધનપાલ–૨,ધનદેવ–૩,ધનગોપ–૪,અને ધનરક્ષિત–૫

(तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताण अणु-मग्गजातीया सुसुमा णाम दारिया, होत्था, सूमालपाणिपाया, तस्स ण धण्णस्स सत्थवाहस्स चिलाए णाम दासचेडे होत्था, अह ण पचेंदिय सरीरे मसोवचिए, बालकीलावणकुसले यावि होत्था)

તે ધન્ય સાર્થવાહની ભદ્રા–ભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામેલી સુસુમા નામે એક પુત્રી હતી તે ધન વગેરે પોતાના ભાઈઓ બાદ ઉત્પન્ન થઈ હતી તેના હાથ–પગ બહુ જ કોમળ હતા તે ધન્યસાર્થવાહનો એક દાસીપુત્ર હતો તેનું

पचिंदियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=प्रतिपूर्णतत्तेन्द्रियशरीरः, ' मसोवचिए ' मांसोपचितः=मांसैरुपचित', पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालकीलावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलश्चापि आसीत् । तत खलु स दासचेट' सुसुमाया दारिकायाः ' बालग्गाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितु नियुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जातश्चाप्यभवत् । सदि चिलातः सुसुमां दारिकां कट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च बालकैश्च बालिकाभिश्च, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिम्भबालकुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दासचेट' तेषां बहूनां ' दाराण जाव ' दारकाणां यावत्=दारकाणां दारिकाणां डिम्भकानां डिम्भिकानां कुमाराणां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था। जो प्रमाणोपेत पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था। मांसोपचित था पुष्ट देहवाला था। यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था। (तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहि य विहरइ-तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वहए आडोलियाओ तेंदुसए पोत्तुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइयाए आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए ताडेइ) इसलिये वह दासचेट सुसमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया। अतः वह चिलात दास चेटक सुसमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिंभक डिंभिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

નામ ચિલાત હતુ તે સપ્રમાણ પાચે ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ શરીરવાળો હતો. તે માસલ તેમજ પુષ્ટ શરીરવાળો હતો તે બાળકોને રમાડવામા સવિશેષચતુર હતો.

(तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वदए आडोलियाओ तेंदुसए पोत्तुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लाल्कार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहसइ, निच्छेडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए ताडेइ)

તેથી તે દાસચેર સુસમા દારિકાને રમાડવા માટે નિયુક્ત કરવામા આવ્યો આ પ્રમાણે તે ચિલાત દાસ ચેરક સુસમા દારિકાને ખોળામા બેસાડીને ઘણા દારક દારિકાઓની સાથે બાળક તેમજ બાળાઓની

च मध्ये 'अप्पेगइयाण' अप्येकेषाम् 'खुल्लए' क्षुल्लकान्=कपर्दकविशेषान् 'कोडी' इति भाषा प्रसिद्धान् अपहरति=चोरयति। एव 'वट्टए' वर्तकान्=जत्वादिमयगोलकान् 'आडोलियाओ' आडोलिका इति नाम्नाप्रसिद्धान् बालक्रीडनवस्तुविशेषान् 'तेंदूसए' देशीशब्दोऽयम्-गेन्दुकान् ' पोत्तुल्लए ' वस्त्रमयपुत्तलिकाः, ' साडोल्लए ' उत्तरीयवस्त्राणि चोरयति । तथा अप्येकेषाम् आभरणमाल्यालङ्कारान् अपहरति । अनन्तरम् ' अप्पेगइए ' अप्येकान् ' आउस्सइ ' आक्रुश्यति=निष्ठुरवचनेन ' एव ' अवहसइ' अपहसति=अपशब्दमुच्चार्य हास्यं करोति, ' निच्छोडेइ ' निश्छोटयति= ' यदि त्व किमपि वदिष्यसि तदा त्वा बहिर्निष्काशयिष्यामीत्यादि शब्दैस्तान् भीषयति, तथा ' णिब्भच्छेइ ' निर्भर्त्सयति=तेषा निर्भर्त्सना करोति, एव ' तज्जेइ ' तर्जयति ' मया कृत किमपिकार्यं यदि त्व मातापितृभ्यो यूय वदिष्यथ

के साथ बार २ खेलने में लगा रहता। खेलते २ वह चिलात दास चेटक उन अनेक दारक दारिका, डिम्भका, डिम्भिका, कुमार कुमारिकाओं में से कितनेक बच्चो के खेलने के साधन भूत कपर्दक विशेषों को कौडियो को चुरा लेता कितनेक के जतुके बने हुए चपेटो को, कितनेक के अडोलिक नाम से प्रसिद्ध खिलोनों को, कितनेक बच्चों की गेंदों को कितनेक बच्चो की वस्त्र के बनी हुई गुडियो को, तथा कितनेक बच्चो के उत्तरीयवस्त्रों-को फरियो को चुरालेता था। कितनेक बच्चों के आभरणो को मालाओं को और अलकारो को भी चुरालिया करता था कितनेक बच्चो को गाली देता कितनेक बच्चो की वह निष्ठुर बचनो को उच्चारण कर हँसी मजाक करने लग जाता था। यदि तू कुछ कहेगातो मैं तुझे यहाँ से बाहिर निकाल दूगा इत्यादि शब्दों से कितनेक बच्चों को वह डरा दिया करता था। कितनेक बच्चों को

અને ડિંભિકઓ સાથે અને કુમાર કુમારિકાઓની સાથે વારવાર રમવામા જ ચોટી રહેતો હતો તે ચિલાત દાસચેર રમતા રમતા ઘણા દારક-દારિક, ડિંભક-ડિંભિક, કુમાર-કુમારિકાઓમાથી કેટલાક બાળકોના રમવાના સાધન કપર્દક વિશેષોને-કોડીઓને ચોરી લેતો, કેટલાકના લાખના બનેલા ચપેટાઓને, કેટલાકના અડોલિક નામથી પ્રસિદ્ધ એવા રમકડાઓને, કેટલાક બાળકોની દડીઓને, કેટલાક બાળકોની વસ્ત્રથી બનેલી ઢીંગલીઓને તેમજ કેટલાક બાળકોના ઉત્તરીય વસ્ત્રોને ચોરી જતો હતો તે કેટલાક બાળકોના આભરણોને, માળાઓને અને ઘરેણાઓને પણ ચોરી જતો હતો તે કેટલાક બાળકોને ગાળો દેતો અને કેટલાક બાળકોની નિષ્ઠુર વચનો બોલીને ઠઠા-મશ્કરી કરવા લાગતો હતો "જો તું કંઈ પણ બોલશે તો હુ તને અહીંથી બહાર કાઢી

पंचिंदियसरीरे ' अहीनपञ्चेन्द्रियशरीरः=प्रतिपूर्णसर्वेन्द्रियशरीरः, ' मंसोवचिए ' मांसोपचितः=मांसैरुपचितः, पुष्टशरीर इत्यर्थः, पुनः ' बालकीलावणकुसले ' बालक्रीडनकुशलश्चापि आसीत् । तत खलु स दासचेटः सुसुमाया दारिकायाः ' बालग्गाहे ' बालग्राहः यो हि बालक्रीडयितु नियुक्तो भृत्यः स ' बालग्राहः ' इत्युच्यते जातश्चाप्यभवत् । सहि चिलातः सुसुमा दारिका कट्यां गृह्णाति, गृहीत्वा, बहुभिर्दारकैश्च दारिकाभिश्च बालकैश्च बालिकाभिश्च, डिम्भकैश्च डिम्भिकाभिश्च कुमारैश्च कुमारिकाभिश्च सार्द्धम्=दारकडिम्भकबालककुमाराणां अल्प, बहु, बहुतर कालकृतभेदो विज्ञेयः, अभिरममाणः २ = पुनः पुनः क्रीडन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूना ' दाराण जाव ' दार काणा यावत्=दारकाणा दारिकाणा डिम्भकाना डिम्भिकाना कुमाराणां कुमारिकाणां

का नाम चिलात था । जो प्रमाणोपेत पाचों इन्द्रियों से परिपूर्ण शरीर वाला था । मासोपचित था पुष्ट देहवाला था । यह बालकों को खिलाने में विशेष कुशल था । (तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुमदारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहिं य दारियाहि य विहरइ-तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वट्टए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरणमल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइयाए आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ तज्जेइ अप्पेगइए तालेइ) इसलिये वह दासचेट सुसमा दारिकाके खिलाने के लिये नियुक्त हो गया। अतः वह चिलात दास चेटक सुसमादारिका को गोदी में लेकर अनेक दारक दारिकाओं के साथ बालक बालिकाओं के साथ डिंभक डिंभिकों के साथ और कुमार कुमारिकों

નામ ચિલાત હતુ તે સપ્રમાણુ પાચે ઇન્દ્રિયોથી પરિપૂર્ણ શરીરવાળો હતો તે માસલ તેમજ પુષ્ટ શરીરવાળો હતો તે બાળકોને રમાડવામા સવિશેષચતુર હતો

(तएण से चिलाए दासचेडे सुसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था सुसुम दारिय कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं, दारएहि य दारियाहि य विहरइ तेसिं बहूण दारियाण य जाव अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ, एव वट्टए आडोलियाओ तेदुरुए पोतुल्लए, साडोल्लए, अप्पेगइयाण आभरण मल्लालकार अवहरइ, अप्पेगइए, आउस्सइ, एव अवहरइ, निच्छोडेइ, निब्भच्छेइ, तज्जेइ, अप्पेगइए तालेइ)

તેથી તે દાસચેટ સુસમા દારિકાને રમાડવા માટે નિયુક્ત કરવામા આવ્યો આ પ્રમાણે તે ચિલાત દાસ ચેટક સુસમા દારિકાને ખોળામા બેસાડીને ઘણા દારક દારિકાઓની સાથે બાળક તેમજ બાળાઓની ડિંભક

कादीना अम्मापितर यत्रैव धन्य सार्थवाहस्तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य धन्य सार्थवाह बहुभिः ' खिज्जणाहि य ' खेदनाभिश्च=खेदजनकवाग्भिः ' रुटणाहि य ' रोदनाभिः साश्रुरुदितवाग्भिः, ' उवलभणाहि ' उपालम्भनाभि=किमेतदुचितम् ? भवादृशाम् ? इत्यादि वाग्भिश्च ' खेज्जमाणा ' खेदयन्तः स्वखेदं प्रकाशयन्तः ' रुटमाणा य ' रुदन्त उवलभमाणा य ' उपालम्भयन्तश्च धन्याय सार्थवाहाय एतमर्थं=चिलातकृताऽपराधरूपमर्थं निवेदयन्ति ॥ सू०१ ॥

मूलम्-तएणं से धण्णे सत्थवाहे चिलाय दासचेड एयमट्ठ भुज्जो भुज्जो णिवारेइं, णो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ। तएण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारगाण य ६ अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ। तएणं ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं जाव णिवेदेंति। तएणं ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव

की शिकायत करने लगे। अपने २ बालकों के मुख से इस प्रकार की दासचेटक की हरकत सुनकर उन दारक आदि को के माता पिता जहां धन्य सार्थवाह होता था वहा आते और आकर के धन्य सार्थवाह को अनेक खेदजनक वचनों द्वारा रोते २ उपालभ=उलहना दिया करते- क्या आप जैसे व्यक्तियो को यह उचित-है-इस तरह से उससे कहा करते। इस तरह वे खेदजनक तथा अश्रु भरकर कही गई वाणियों द्वारा अपना खेदप्रकाशित करते हुए रोते हुए एव उलहना देते हुए धन्यसार्थवाह के लिये चिलातकृत अपराध रूप अर्थ की निवेदना करते ॥सू०१॥

मुखेथी आ प्रमाणे दास चेटकनी खराब वर्तणुक विषेनी विगत साभळीने ते दारक वगेरेना मातापिता ज्यां धन्यसार्थवाह हतो त्या आवता अने आवीने धन्यसार्थवाहने घणा कठोर वचनोथी रडतां रडता ठपको आपता रहेता हता ' शुं तमारी जेवी व्यक्तिने आ वात शोभे छे ? " आ प्रमाणे ते कहा करता हता आ प्रमाणे तेओ खेदजनक तेमज अश्रुभीनी हालतमा कहेली वाणीओ वडे पोतानु दुःख प्रकट करता, रडता तेमज ठपको आपता धन्य सार्थवाहने चिलाते जे कई खराब वर्तणुक करी होय ते बद्दल फरियादो करतां रहेता हता ॥ सूत्र १ ॥

तदायुष्माकं प्राणान् आहरिष्यामीत्येवंरूपपरोक्तैरङ्गुलिनिर्देशपूर्वकं तेषु भीतिमुत्पादयति। तथा अप्येकान् बालकान् 'तालेइ' ताडयति चपेटादिभिः। ततः खलु ते बहवो दारकाश्च यावत्-कुमारिकाश्च सर्वे बाला 'रोयमाणा य' रुदन्तश्च 'कंदमाणा य' क्रन्दन्तश्च=उच्चैः स्वरेण चीत्कारं कुर्वन्तः 'साणं २' स्वेषाम् २ 'अम्मापिऊणं' अम्मापितृभ्यइदमर्थं निवेदयन्ति। ततः खलु तेषां बहूनां=दार-

वह निर्भर्त्सित कर देता "मेरा किया हुआ कुछ भी काम यदि तुम लोग अपने माता पिता से कहोगे-तो याद रखना मैं तुम्हारे प्राणों को ले लूंगा-तुम्हे जान से मार डालूंगा" इस तरह कितनेक बालको को वह अंगुलि दिखा २ कर भयभीत कर दिया करता। कितनेक बालकों को वह थप्पड़ आदि भी मार देता। (तएणं ते बहवे दारगा-य जाव रोयमाणा य कंदमाणा य ४ साय २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तएणं तेसिं बहूणं दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव धण्णे सत्थ-वाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खिज्ज-णाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणाय रुंटमाणाय उवलं-भेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति) इस तरह वे अनेक दारक यावत् कुमारिकाएँ सब ही रो रो कर के आक्रंदन करके-उच्चस्वर से चीत्-कार करके-अपने २ माता पिताओं से उस दासचेटक की इस बर्ताव

ભૂકીશ વગેરે વચનોથી કેટલાક બાળકોને તે બીવડાવી દેતો હતો. કેટલાક બાળકોની તે ભર્ત્સના પણ કરતો હતો-મારી કોઈ પણ વાત તમે તમારા માતાપિતાને કહેશો તો યાદ રાખજો હું તમને જીવતા નહિ છોડું તમને હું જાનથી મારી નાખીશ" આ પ્રમાણે કેટલાક બાળકોની સામે તે આંગળીઓ ચીંધી ચીંધીને બીવડાવી દેતો હતો. કેટલાક બાળકોને તે તમાચા વગેરે પણ લગાવી દેતો હતો.

(तएणं ते बहवे दारगा य ६ जाव रोयमाणा य कंदमाणा य ४ साय २ अम्मापिऊणं णिवेदेंति, तएणं तेसिं बहूणं दारगाण य ६ जाव अम्मापिउरो जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति)

આ પ્રમાણે તે ઘણા દારક યાવત્ કુમારિકાઓ રડતા રડતા, આક્રંદન કરતા કરતા, મોટા સાદે ચીત્કાર કરીને પોતપોતાના માતાપિતાને તે દાસ ચેટકની ખરાબ વર્તણુંક વિષે ફરિયાદો કરવા લાગ્યા. પોતાના

कादीना म ये अप्येकेषा ' खुल्लए ' क्षुल्लकान्=कपर्दकविशेषान् अपहरति ' जाव तालेइ ' यावत्ताडयति=पूर्वोक्तक्रमेण एव कपर्दकाद्यपहरण यावत्तर्जनं ताडनं च करोति । ततः खलु वहवो दारकाश्च दारकादयो रुदन्तश्च यावत् स्वेषा २ अम्बापितृभ्यो निवेदयन्ति । तत खलु ते आशुरुप्ताः=स्व पुत्रवचन श्रुत्वा झटिति क्रोधाविष्टमानसा यत्रैव धन्य सार्थवाहः तत्रैव उपागच्छन्ति उपागत्य वहूभिः ' खेज्जणाहि जाव एयमट्ठ ' खेदनाभिर्यावत् एतमर्थम्=खेदसूचनाभिर्यावत् उपालम्भनयुक्ताभिर्वाग्भिः चिलातदासचेटक कृताऽपराधलक्षणम् अर्थम् निवेदयन्ति। ततः खलु धन्यः सार्थवाहो वहूना ' दारगाण ' दारकाणा ६=दारकादीनाम् अम्बापितृणामन्तिके एतमर्थं श्रुत्वा निशम्य आशुरुप्तः चिलात दासचेटम् ' उच्चा-वचाभिः=अनेकविधाभिः ' आउसणाहिं ' आक्रोशनाभिः=कोपजनकैर्वचनैः ' आउसइ ' आक्रुश्यति=आक्षिपति ' उद्धसइ ' उद्धर्षयति=नामगोत्रादिनाऽधः पातयति–निन्दतीत्यर्थः । नेत्रमुखादि वक्रीकमणेन ' णिभच्छेइ ' निर्भर्त्सयति=

अप्पेगइयाण खुल्लए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते वहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण जाव णिवेदेंति) इस तरह सम-झाने पर भी वह चिलात दासचेट उन अनेक दारको आदि में से कितनेक दारक आदिको के कपर्दक (कौड़ी) विशेषों को चुराता रहा यावत् उन्हें ताडित करता रहा–मारता पीटता रहा। और वे बालक आदि भी रोते हुए अपने २ माता पिताओं से उस के अपराध को जा २ कर कह देते रहे। (तएण ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठ णिवेदेंति, तएण से धण्णे सत्थवाहे बहूण दारगाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ठ सोच्चा आसुरुत्ते चिलायदासचेड उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उद्धसइ णिब्भच्छेइ,) इस प्रकार अपने २ बालकों के मुख से बार २

खुड्डए अवहरइ जाव तालेइ, तएण ते बहवे दारगा य जाव रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण जाव णिवेदेंति)

આ પ્રમાણે સમજાવવા છતાંએ તે ચિલાત દાસચેટક ઘણા દારકો વગેરેમાં કેટલાક દારકો વગેરેની કોડીઓને ચોરતો જ રહ્યો યાવત્ તે બાળકોને તાડિત કરતો રહ્યો, તેમજ મારતો પીટતો રહ્યો અને તે બાળકો વગેરે પણ રડતા રડતા પોતપોતાના માતાપિતાને આની ફરિયાદો કરતા જ રહ્યા.

(तएण ते आसुरुत्ता जेणेव धण्णे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहि जाव एयमट्ठ णिवेदेंति, तएण से धण्णे सत्थवाहे बहूण दारगाण अम्मापिऊण अतिए एयमट्ठ सोचा आसुरुत्ते चिलाय दासचेड उच्चावयाहि आउसणाहि आउसइ उद्धसइ, णिब्भच्छेइ)

उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूहिं खेज्जणाहिं जाव एयमट्ठं णिवेदेंति। तएणं से धण्णे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं ६ अम्मापिऊण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते चिलाय दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ, उद्धसइ, णिब्भच्छेइ निच्छोडेइ, तज्जेइ उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ। तएणं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहं सुहेणंपरिवड्ढइ ॥सू० २॥

टीका—'तएणं से' इत्यादि। ततः खलु धन्य सार्थवाहः चिलात दास चेटम् 'एयमट्ठ' एतमर्थम्=एतस्मादर्थात् दारकादीनां कपर्दकापहरणादिरूपादर्थात् भूयोभूयो निवारयति। नो चैव खलु दासचेट एतस्माद्दुष्कृत्यादुपरमते। ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेषां बहूनां 'दारगाण य' दारकाणां च्च्दार

तएण से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण से धण्णे सत्थवाहे) इसके बाद उस धन्यसार्थवाहने (चिलाय दासचेड) चिलात दास पुत्र को (एयमट्ठ भुज्जो २ णिवारेइ) बालकों के कपर्दक आदि चुराने रूप अर्थ से बार २ मना किया, परन्तु (णो चेव ण चिलाए दासचेडे उवरमइ) वह चिलात दारक उस काम से विरक्त नहीं हुआ। (तएण से दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य ६

तएणं से धण्णे सत्थवाहे इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण से धण्णे सत्थवाहे) त्यारबाद ते धन्य सार्थवाहे (चिलाय दास चेड) चिलात दासपुत्रने (एयमट्ठं भुज्जो २ णिवारेइ) बाळकोनी कोडीओ वगेरेने चोरी जवा बदल वारवार मनाई करी परंतु (णो चेव ण चिलाए दासचेडे उवरमई) ते चिलात दारक पोतानी खरब वर्तणुक छोडीने सुधर्यो नहि (तएण से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूण दारगाण य

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवड्ढइ' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसगी चोज्जप्पसंगी मसपसगी जुयप्पसंगी वेसापसंगी परदारप्पसगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहसुहेण परिवड्ढइ) और यहाँ तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड भी देता रहा और कभी २ तू मेरे घर मे से निकल जा नही तो मै तुझे मारूँगा इस तरह के वचनों से उस को निरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलात दासचेटक पर कुछ भी प्रभाव नही पड़ा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताडनाओं से ताडित कर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब वह राजगृह नगरमें शृगाटक आदि मार्गोमें अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों में सभास्थानों में, पानीय शालाओं में—प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहो में घूम फिर कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू०२॥

અને છેવટે આ વાત ત્યા સુધી પહોચી કે કોઈ કોઈ વખતે તે તેને બહાર પણ કાઢી મૂકતો હતો અને કોઈ કોઈ વખતે તેને આ જાતના વચનોથી ઠપકો પણ આપતો રહેતો હતો કે તું મારા ઘરમાથી નીકળી જા નહિ તર તને હુ મારી નાખીશ પરતુ જ્યારે આ જાતની શિક્ષાઓની કે ભય પ્રદર્શનની તે દાસ ચેટક ઉપર કશી અસર થઈ નહિ ત્યારે છેવટે ધન્યસાર્થવાહે હતાશ થઈને તેને લાકડી, મુક્કાઓ વગેરેથી તાડિત કરીને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકયો આ પ્રમાણે જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે તેને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકયો ત્યારે તે રાજગૃહ નગરના શૃગાટક વગેરે રસ્તાઓમા રખડેલની જેમ ભટકવા લાગ્યો અને દેવકુળોમા, સભાસ્થાનોમા, પરબોમા, જુગારના અડ્ડાઓમા, વેશ્યાઓના ઘરોમા અને શરાબખાનાઓમા ભટકીને જેમ તેમ કરીને પોતાનુ પાલન-પોષણ કરવા લાગ્યો ॥ સૂત્ર ૨ ॥

तिरस्करोति, 'निच्छोडेइ' निश्छोटयति=त्यजति, 'तज्जेइ' तर्जयति= 'निस्सर मम गृहात् नोचेत्त्वां ताडयिष्यामि' इत्यादि वचनेन भर्त्सयति 'उच्चा वयाहिं तालणाहिं' उच्चावचाभिर्यष्टिमुष्ट्याघातैरनेकविधाभिस्ताडनाभिः 'तालेइ' ताडयति 'साओ गिहाओ' स्वस्मात् गृहात् 'णिच्छुभइ' निक्षिपति=नि सारयति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः तेन सार्थवाहेन स्वस्माद् गृहात् 'णिच्छूढे' निक्षिप्त=नि. सारितः सन् राजगृहे नगरे सिंघाडग जाव गहेसु श्रृङ्गाटक यावन्महापथपथेषु चतुष्पथादिषु सर्वत्र खलेषु, देवकुलेषु च सभासु च

चिलात दासचेटक की पूर्वोक्त अपराधों को जब २ वे सुना करते तब वे गुस्से में भर २ कर जहां धन्यसार्थवाह होता वहां चले जाते रहे। और वहां जाकर बडे खेद के साथ रोते हुए अपने २ दुःखों को प्रकट करते रहे इस तरह बार २ उन दारक आदि के माता पिताओं के मुख से इस दासचेटक के दुष्कृत्य को सुनकर वह धन्य सार्थवाह क्रोध में आकर उस दासचेटक चिलात को अनेक विधकोप जनक ऊँचे नीचे शब्दो से धिरकार ने लगते थे उसका नाम गोत्र आदि की निंदा करने लग जाते थे। नेत्र, मुख, आदि को टेढा करके उसका तिरस्कार भी करते थे। (णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ, तएण से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु

આ પ્રમાણે પોતપોતાના બાળકોને મુખેથી વારવાર ચિલાત દાસચેટકની કરિયાદો જ્યારે જ્યારે તેઓ સાભળતા ત્યારે ત્યારે તેઓ ગુસ્સે થઇને જ્યા ધન્યસાર્થવાહ હતા ત્યાં જતા હતા અને ત્યા જઇને તેઓ બહુજ દુઃખની સાથે રડતા રડતા પોતપોતાના દુઃખે ને પ્રકટ કરતા રહેતા હતા આ પ્રમાણે વારવાર તે દારક વગેરેના માતાપિતાના મુખથી તે દાસચેટકની ખરાબ વર્તણુક વિષેની વિગત સાભળીને તે ધન્યસાર્થવાહ ક્રોધમા ભરાઇને તે દાસ ચેટક ચિલાતને ઘણા ક્રોધ ઉત્પન્ન કરે તેવા ખરાબ વચનોથી ધિક્કારવા લાગતો હતો તેમજ તેના નામ ગોત્ર વગેરેની નિંદા કરવા લાગતો હતો, આખો મુખ વગેરે બગાડીને તેનો તિરસ્કાર પણ કરતા રહેતા હતા

(णिच्छोडेइ, तज्जेइ, उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ, साओ गिहाओ णिच्छुभइ, तएण से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे णयरे सिंघाडग जाव पहेसु देवकुलेसु जाव सभासु य पवासु य जूय खलएसु य वेसा घरेसु य पाणघरेसु य सुह सुहेण परिवड्ढइ)

प्रपासु=पानीयशालासु च 'जूय खलएसु' द्यूतखलकेषु=द्यूतक्रीडनस्थानेषु च 'वेसाघरेसु' वेश्यागृहेषु च पाणघरेसु' पानगृहेषु=मद्यपानगृहेषु च सुख सुखेन परिवड्ढइ' परिवर्द्धते=वृद्धिं प्राप्नोति ॥ सू० २ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसगी चोज्जप्पसंगी मसपसगी जुयप्पसंगी वेसापसगी परदारप्पसंगी जाए यावि

य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरेसु य पाणघरेसु य सुहसुहेण परिवड्डइ) और यहाँ तक हुआ कि कभी २ वह उसे छोड भी देता रहा और कभी २ तू मेरे घर में से निकल जा नही तो मै तुझे मारुंगा इस तरह के वचनों से उस को तिरस्कार भी कर देते थे। परन्तु जब इस की शिक्षाओं का या भय प्रदर्शक वाक्यों का उस चिलात दासचेटक पर कुछ भी प्रभाव नहीं पडा तब अन्त में धन्य सार्थवाह ने हताश होकर उसे अनेक विध यष्टि मुष्टि आदिकी ताडनाओं से ताडित कर अपने घर से बाहिर निकाल दिया। इस तरह जब धन्य सार्थवाह ने इसे अपने घर से बाहिर निकाल दिया—तब यह राजगृह नगरमें शृगाटक आदि मार्गों में अवारा (स्वच्छन्दगामी) फिरने लगा और देवकुलों में सभास्थानों में, पानीय शालाओ में—प्याऊ घरो में, जुआ खेलने के स्थानों में वेश्याओं के घरोंमें, और शराब पीने की जगहो में घूम फिर कर जिस किसी भी तरह से अपना पालन पोषण करने लगा ॥सू० २॥

અને છેવટે આ વાત ત્યા સુધી પહોચી કે કોઈ કોઈ વખતે તે તેને બહાર પણ કાઢી મૂકતો હતો અને કોઈ કોઈ વખતે તેને આ જાતના વચનોથી ઠપકો પણ આપતો રહેતો હતો કે તુ મારા ઘરમાથી નીકળી જા નહિ તર તને હુ મારી નાખીશ પરતુ જ્યારે આ જાતની શિક્ષાઓની કે ભય પ્રદર્શનની તે દાસ ચેટક ઉપર કશી અસર થઈ નહિ ત્યારે છેવટે ધન્યસાર્થવાહે હતાશ થઈને તેને લાકડી, મુક્કીઓ વગેરેથી તાડિત કરીને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકયો આ પ્રમાણે જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે તેને પોતાના ઘેરથી બહાર કાઢી મૂકયો ત્યારે તે રાજગૃહ નગરના શૃગાટક વગેરે રસ્તાઓમા રખડેલની જેમ ભટકવા લાગ્યો અને દેવકુળોમા, સભાસ્થાનોમા, પરબોમા, જુગારના અડ્ડાઓમા, વેશ્યાઓના ઘરોમા અને શરાબખાનાઓમા ભટકીને જેમ તેમ કરીને પોતાનુ પાલન-પોષણ કરવા લાગ્યો ॥ સૂત્ર ૨ ॥

होत्था। तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिण-पुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नाम चोरपल्ली होत्था, विसम-गिरिकडगकोडवसंनिविट्ठा, वंसी कलंकपागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा एगदुवारा अणेग-खंडी विदियजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्ल भजलपेरंता सुबहुस्स वि कुवियवलस्स आयगस्स दुप्पहंसा यावि होत्था। तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णामं चोरसेणावई परिवसइ अहम्मिए जाव अधम्मकेऊ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्ह चोरसयाणं आहेव-च्च जाव विहरइ। तएणं से विजए तक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधि-च्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य विसभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं च बहूणं छिन्नभिन्नबहिरायाण कुडंगे यावि होत्था। तएणं से विजए तक्करे चोर-सेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमे जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहि य पंथकुट्टणेहि य उवीलेमाणे २ विद्धंसे माणे २ णित्थाणं णिद्धणं करेमाणे विहरइ। तएणं से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभि सकीहि चोज्जाभि

संकीहिय दाराभिसकीहि य धणिएहि य जूइकरेहि य पर-
ब्भवमाणे२ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिगच्छित्ता,
जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता
विजय चोरसेणावइ उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ सू०३ ॥

टीका—'तएण से इत्यादि। ततः खलु स चिलातो दासचेटः 'अणोहट्टिए' अनपघट्टितः, यो हि दुष्कृतौ प्रवर्तमान कमपि हस्तौ धृत्वा निवारयति, सोऽपघट्टकः, निवार्यमाणस्तु अपघट्टितः, अय हि निवारयितुरभावात् अनपघट्टितः= निरङ्कुश 'अणिवारिए' अनिवारितः, हितोपदेशकस्याभावात् अनिवारितः,

---

'तएण से चिलाए दासचेडे' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह चिलात दासचेटक (अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसगी मसप्पसगी, जूयप्पसगी, वेसापसगी, परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था) अनपघट्टित-निरङ्कुश बन गया-जो दुष्कर्म में प्रवर्तमान किसी को भी हाथ पकडकर उससे निवारित कर देता है उसका नाम अपघट्टक और जो दूर किया जाता है वह अपघट्टित कहलाता है। निवारण करनेवाले का अभाव होने से यह चिलात दासचेटक अनपघट्टित इसी कारण से बन गया। हितोपदेशक कोई उसका रहा नहीं अतः यह कुत्सित काम करने से पीछे नहीं हटता-इसलिये यह अनिवारित होकर जो मन में आता उसे कर डालता-अतः उद्दण्ड बन गया। स्वच्छन्द

तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ-(तएण) त्यारपछी (से चिलाए दासचेडे) ते चिलात दास चेटक (अणोहट्टिए अणिवारिए सच्छंदमई, सइरप्पयारी मज्जप्पसगी, चोज्जप्पसगी मसप्पसगी, जूयप्पसगी, वेसापसगी, परदारप्पसगी, जाए यावि होत्था)

અનપઘટ્ટિત-સ્વચ્છંદ બની ગયો, દુષ્કર્મમાં પડેલા ગમે તેને જે હાથ પકડીને તેમાંથી તેને દૂર કરે છે તેનું નામ અપઘટ્ટક અને જે દૂર કરવામાં આવે છે તે અપઘટ્ટિત કહેવાય છે ચિલાત દાસચેટકને ખોટા કામોથી દૂર લઈ જનાર-તેને નિવારણ કરનાર કોઈ હતું નહિ એથી તે અનપટ્ટિત થઈ ગયો હતો તેને કોઈ હિતોપદેશક હતો નહિ તેથી તે કુત્સિત કામ કરવામાં પણ પીછેહઠ કરતો ન હતો, ખરાબ કામોથી તેને રોકનાર નહિ હોવાને કારણે તે મનમાં ફાવે તેમ કરતો હતો એથી તે ઉદ્દંડ બની ગયો હતો તે

' सच्छंदमई ' स्वच्छन्दमतिः=स्वाभिप्रायवर्ती–उद्दण्डइत्यर्थः, अतएव ' सइरप्पयारी ' स्वैरप्रचारी = स्वच्छन्दविहारी ' मज्जप्पसंगी ' मद्यप्रसङ्गी मद्यपायी, ' चोज्जप्पसंगी ' चौर्यप्रसङ्गी=चौर्यकर्मणि परायण, ' मंसप्पसंगी ' मांसप्रसङ्गी= मांसभक्षणशीलः, ' जूयप्पसंगी ' द्यूतप्रसङ्गी द्यूतक्रीडासक्तः, ' वेसापसंगी ' वेश्यालम्पटः, एव 'परदारप्पसंगी' परदारप्रसङ्गी=परदाररतो जातश्चापि आसीत्। ततः खलु राजगृहस्य नगरस्य अदूरसामन्ते दक्षिणपौरस्त्ये दिग्भागे अग्निकोणे सिंहगुहानाम चोरपल्ली आसीत्, या हि पल्ली ' विसमगिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा ' विषमगिरिकटककोडम्बसंनिविष्टा=विषमो निम्नोन्नतो यो गिरिकटकः= पर्वत मध्यभागः, तस्य यः कोडम्बः प्रान्तभाग, तत्र संनिविष्टा=स्थिता आसीत्। पुनः ' वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता ' वंशीकलङ्कप्राकारपरिक्षिप्ता=वंशीकलङ्का वंशजालमयी वृतिः, सैव प्राकार', तेन परिक्षिप्ता=परिवेष्टिता=वंशनिर्मितजाल मयप्राकारैः समन्तात्-परिवेष्टिता, ' छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा '= छिन्नशैलविषमप्रपातपरिखोपगूढा=छिन्नोऽन्यस्मात्पर्वतान्तरापेक्षया विभक्तो य. शैल.= पर्वतः, तत्सम्बन्धिनो ये विषमाः प्रपाता गर्ता', त एव परिखा. तया उपगूढा= आश्लिष्टा परिवेष्टिता विभक्तशैलावयवनिर्गतविषमप्रपातरूपपरिखापरिवेष्टितेत्यर्थः ' एगदुवारा ' एकद्वारा=एक द्वार=प्रवेशनिर्गमरूप यस्या सा=एकप्रवेशनिर्गमा, ' अणेगखंडी ' अनेकखण्डा=अनेकानि खण्डानि=विभागा रक्षाहेतोर्यस्यां सा अनेकखण्डा, यत्र=स्वरक्षार्थं अनेकानि स्थानानि सन्ति, 'विदियजणणिग्गमपवेसा'

विहारी हो गया–मद्यप्रसंगी हो गया–मदिरा पीने लग गया। मांस खाने लग गया, चोरी करने लगा, जूआ खेलने लगा, वेश्यासेवन करने लगा, और परदार सेवन करने मे भी लंपट हो गया। (तएणं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था–विसमगिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा वंसीकलंक पागारपरिक्खित्ता छिण्णसेलविसमप्पवायफलिहोवगूढा एगदुवारा, अणेगखंडी, विदियजणणिग्गमपवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजल

स्वेच्छ विहारी थई गयो हतो, दारू पिनारो थई गयो हतो ते मांस खावालाग्यो, चोरी करवा लाग्यो, जुगार रमवा लाग्यो, वेश्या–सेवन करवा लाग्यो अने परस्त्री सेवनमां पण लंपट थई गयो हतो.

(तएण रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था [illegible] गिरिकडगकोडंबसंनिविट्ठा वंसीकलंकपागारपरिक्खित्ता, छिण्णा सेल [illegible] एगदुवारा, अणेगखंडी, विदियजणणिग्गमपवेसा

विदितजननिर्गप्रवेशा=विदितजनानामेव=विश्वासवतामेव निर्गमप्रवेशौ यस्या सा= विश्वस्तजननिर्गमप्रवेशवती ' अब्भितरपाणिया ' अभ्यन्तरपानीया=मध्यस्थित-

---

पेरता, सुबहस्स विकूवियवलस्स आगयस्स दुप्पहसा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेऊसमुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे, सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही-सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोर सयाण आहेवच्च जाव विहरइ) उसी राजगृह नगर के न अधिक दूर पर और न अधिक पास में दक्षिण पौरस्त्य दिग्विभाग में-अग्निकोण में-सिंहगुहा नाम की एक चोर पल्ली थी-यह चोरपल्ली विषम गिरि-कटक के प्रान्त भाग में-निम्नोन्नतपर्वत के मध्यभाग के अन्त भाग में स्थित थी। इसके चारों ओर वासों की वाड़ थी-यह वाड ही इसका प्राकार (किला) था-उससे यह घिरी हुई थी। अवयवान्तरों की अपेक्षा से विभक्त जो पर्वत तत्सम्बन्धी जो विषम प्रपात खड्डा उन विषम खड्डेरूप परिखा से यह परिवेष्टित थी। निकलने का और आने का इस में एक ही द्वार था। इसमें रक्षा के निमित्त चोरोंने अनेक स्थान बना रखे थे। परिचित-विश्वासवाले-व्यक्ति ही इसमें आ जा सकते थे।

अब्भितरपाणिया, सुदुल्लभजलपेरता, सुबहुस्स वि कूवियजलस्स आगयस्स दुप्पहसा, यावि होत्था तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए णाम चोरसेणावई परिवसई, अहम्मिय जाव अहम्मकेउ समुट्ठिए बहुणगरणिग्गयजसे, सूरे दढप्पहारी, साहसिए सद्दवेही सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण अहिवच्च जाव विहरइ)

તે રાજગૃહ નગરથી ઘણે દૂર પણ નહિ અને ઘણી નજીક પણ નહિ એવી, દક્ષિણ પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમા અગ્નિકોણમા-સિંહગુહા નામે એક ચોરપલ્લી હતી તે ચોરપલ્લી ઊચી નીચી ગિરિમાળાઓના પ્રાંત ભાગમા નિમ્નોન્નત પર્વતના મધ્યભાગના અતભાગમા આવેલી હતી તેની ચોમેર વાસોની વાડ હતી તે વાડ જ તેનો કોટ (કિલ્લો) હતો તેનાથી તે ઘેરા એલી હતી અવયવાતરોની અપેક્ષાએ વિભક્ત જે પર્વત અને તત્સબધી જે વિષમ પ્રપાત-ખાડા-તે વિષમ ખાડારૂપી પરિખાથી તે પરિવેષ્ટિત હતી આવવા અને જવા માટે તેમા એક જ દરવાજો હતો ચોરોએ પોતાની રક્ષા માટે ઘણા સ્થાનો બનાવેલા હતા પરિચિત વિશ્વાસુ માણસો જ તેમા આવજા કરી શકતા હતા પાણી માટે તેની વચ્ચે એક જળાશય હતું, તેની બહાર

जलाशया 'सुदुल्लभजलपेरंता' सुदुर्लभजलपर्यन्ता=सुदुर्लभं जलं पर्यन्ते=प्रान्तभागे=बहिर्भागे यस्याः सा=जलरहितबहिर्भागा 'सुबहुस्स वि' सुबहोरपि कुवियजलस्स' कूपितजनस्य=चोरगवेषकसैन्यस्य 'आगयस्स' आगतस्य 'दुप्पहंसा' दुष्प्रधर्षा दुर्धर्षणीया चापि आसीत्। तत्र खलु सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां विजयो नाम चोरसेनापतिः=चोरनायकः परिवसति यो हि 'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्=अधर्मेण चरति अधार्मिकः अधर्माचरणशीलः-अत्र यावत्पदेन-इतआरभ्य 'घायाए वहाए अच्छायणाए' इत्यन्तः पाठो ग्राह्यः, तथाहि-'अधम्मिट्ठे' अधर्मिष्ठः=सर्वथा धर्मरहितः, 'अधम्मक्खाई' अधर्माख्यायी-अधर्मकथक, 'अधम्माणुगे' अधर्मानुगः=अधर्मानुगामी 'अधम्मपलोई' अधर्मप्रलोकी=अधर्मदर्शी 'अधम्मपलज्जणे' अधर्मप्ररञ्जनः=अधर्मानुरक्तः, 'अधम्मसीलसमुदायारे' अधर्मशीलसमुदाचारः=अधर्म एव शील स्वभावः समुदाचारश्च यस्य सः,

---

पानी के लिये इसमें बीच में एक जलाशय था-इसके बाहिरी भाग में जल नहीं था। अनेक भी चोर गवेषक सेनाजन यहां आजावें तो भी वे इस पल्ली का नाश नहीं कर सकते थे। इस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में विजय नाम का एक चोर सेनापति रहता था। यह अधार्मिक यावत् अधर्म केतुग्रह जैसा उदित हुआ था। यहां यावत् शब्द से "घायाए वहाए अच्छायणाए" यहां तक का पाठ ग्रहण किया गया है-इस का खुलाशा भाव इस प्रकार है-अधार्मिक शब्द का अर्थ होता है अधर्माचरणशील-यह विजय नामका चोर अधर्माचरणशील था। अधर्मिष्ठ था-सर्वथा धर्मसे रहित था, अधर्माख्यायी था-अधर्मका कथन करनेवाला था, अधर्मानुग था-अधर्म का अनुगामी था, अधर्मप्रलोकी था-अधर्म का ही देखने वाला था-अधर्मप्ररञ्जन था अधर्म में अनुरक्त था

પાણી હતું નહિ ઘણા ચોરોની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યાં આવે છતાંએ તે પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમાં વિજય નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની જેમ ઉદય પામ્યો હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી "घायाए वहाए अच्छायणाए" અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુરાગી હતો, અધર્મનો અનુગામી એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર હતો, અધર્મપ્રરજન હતો, અધર્મમાં આસક્ત હતો, અધર્મશીલ

अधर्मशीलोऽधर्माचरणश्चेत्यर्थः, 'अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ' अधर्मेणैव वृत्तिं कल्पयन् विहरति=अधर्मेणैव सावद्यानुष्ठानेनैव, वृत्तिं कल्पयन्=जीविकामुपार्जयन् 'विहरइ' विहरति=आस्ते। पुनः 'हणछिंदभिंदवियत्तए' जहिछिन्धि भिन्धि विकर्तकः=' हण ' जहि=मारय यष्टयादिना ' छिंद ' छिन्धि=छेदय-खड्गादिना, ' भिंद ' भिन्धि=भेदय भल्लादिना, इतिशब्दैः स्वानुयायिन प्रेरयन् प्राणिनो विकृन्तति यः सः, जहि छिन्धिभिन्धि विकर्तकः, इति, ' लोहियपाणी ' लोहितपाणिः=लोहितौ पाणी यस्य सः, रक्तरञ्जितकरयुगलः 'चडे' चण्ड उत्कटरोषः ' रुद्दे ' रौद्रः=भयानकः ' खुद्दे ' क्षुद्र =क्षुद्रकर्मचारी ' उक्कचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसपयोगबहुले ' उत्कञ्चनवञ्चनमायानिकृतिकपटकूटसाइसपयोग-

---

अधर्मशील समुदाचारवाला था-अर्थात् इसका स्वभाव और आचरण दोनों अधर्ममय थे-अधर्म ही इस का स्वभाव था और अधर्म ही इस का आचरण था। अतः अपनी जीविका का निर्वाह सावद्य अनुष्ठानों (अधर्म) द्वारा ही किया करता था। यष्टयादि द्वारा इसे मारो, खड्गादि द्वारा इसे छेदो भल्लादि द्वारा इसे भेदो इस प्रकार के शब्दों से यह अपने अनुयायियों को सदा प्रेरित करता हुआ स्वयं जीवों का छेदन भेदन किया करता था। इसके दोनों हाथ रक्त से रंजित रहते थे। इस का क्रोध बहुत प्रचंड था देखने में यह बडा भयानक दिखता था। क्षुद्र कर्मकारी था। " उक्कचणवंचणमायानियडिकवडकूडसाइसपओग बहुले " उत्कचन, वचन, माया, निकृति, कपट, कूट, साइ, इनका व्यव-

---

હતો-એટલે કે તેનો સ્વભાવ અને આચરણ બંને અધર્મમય હતા અધર્મ જ તેનો સ્વભાવ હતો અને અધર્મ જ તેનુ આચરણ હતુ એથી તે પોતાનુ જીવન સાવદ્ય અનુષ્ઠાનો વડે એટલે કે અધર્મનુ આચરણ કરીને પુરૂ કરતો હતો લાકડી વગેરેથી એને મારો, તરવાર વગેરેથી એને કાપી નાખો, ભાલાઓ વગેરેથી એને ભેદી નાખો આ જાતના શબ્દોથી તે પોતાના અનુયાયીઓને હમેશા હુકમ કરતો રહેતો હતો તે પોતે પણ જીવોનુ છેદન-ભેદન કરતો રહેતો હતો તેના બંને હાથો લોહીથી ખરડાએલા રહેતા હતા તેનો ક્રોધ અત્યંત પ્રચંડ હતો દેખાવમા તે ખૂબ જ ભયાનક લાગતો હતો, તે ક્ષુદ્ર કર્મ કરનાર હતો

(उक्कचणवचणमायानियडिकवडकूडसाइसपओगबहुले) ઉત્કચન, વચન, માયા, નિકૃતિ, કપટ, કૂટ, સાઈ આ બધાનો વહેવાર તેના જીવનમા

जलाशया 'सुदुल्लभजलपेरंता' सुदुर्लभजलपर्यन्ता=सुदुर्लभं जल पर्यन्ते=प्रान्तभागे=बहिर्भागे यस्या सा=जलरहितबहिर्भागा 'सुबहुस्स वि' सुबहोरपि कूविपबलस्स' कूपिकबलस्य=चोरगवेषकसैन्यस्य 'आगयस्स' आगतस्य 'दुप्पहंसा' दुष्प्रधर्षा दुर्धर्षणीया चापि आसीत्। तत्र खलु सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां विजयो नाम चोरसेनापति=चोरनायकः परिवसति यो हि 'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्=अधर्मेण चरति अधार्मिकः अधर्माचरणशीलः-अत्र यावत्पदेन-इतआरभ्य 'घायाए वहाए अच्छायणाए' इत्यन्तः पाठो ग्राह्यः, तथाहि-'अधम्मिट्ठे' अधर्मिष्ठ=सर्वथा धर्मरहितः, 'अधम्मक्खाई' अधर्माख्यायी-अधर्मकथक, 'अधम्माणुगे' अधर्मानुग=अधर्मानुगामी 'अधम्मपलोई' अधर्मप्रलोकी=अधर्मदर्शी 'अधम्मपलज्जणे' अधर्मप्ररञ्जन=अधर्मानुरक्तः, 'अधम्मसीलसमुदायारे' अधर्मशीलसमुदाचार=अधर्म एव शील स्वभाव समुदाचारश्च यस्य स,

पानी के लिये इसमें बीच में एक जलाशय था-इसके बाहिरी भाग में जल नहीं था। अनेक भी चोर गवेषक सेनाजन यहां आजावें तो भी वे इस पल्ली का नाश नहीं कर सकते थे। इस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में विजय नाम का एक चोर सेनापति रहता था। यह अधार्मिक यावत् अधर्म केतुग्रह जैसा उदित हुआ था। यहां यावत् शब्द से "घायाए वहाए अच्छायणाए" यहां तक का पाठ ग्रहण किया गया है-इस का खुलाशा भाव इस प्रकार है-अधार्मिक शब्द का अर्थ होता है अधर्माचरणशील-यह विजय नामका चोर अधर्माचरणशील था। अधर्मिष्ठ था-सर्वथा धर्मसे रहित था, अधर्माख्यायी था-अधर्मका कथन करनेवाला था, अधर्मानुग था-अधर्म का अनुगामी था, अधर्मप्रलोकी था-अधर्म का ही देखने वाला था-अधर्मप्ररञ्जन था अधर्म में अनुरक्त था

પાણી હતું નહિ ઘણા ચોરોની શોધ કરતા સૈનિકો ત્યાં આવે છતાંએ તે પલ્લીનો નાશ કરી શકતા ન હતા તે સિંહગુફા નામની ચોરપલ્લીમાં વિજય નામે એક ચોર સેનાપતિ રહેતો હતો તે અધાર્મિક યાવત્ અધર્મ કેતુગ્રહની જેમ ઉદય પામેલો હતો અહીં યાવત્ શબ્દથી "घायाए वहाए अच्छायणाए" અહીં સુધીનો પાઠ ગ્રહણ કરવામાં આવ્યો છે તેનું સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે-અધાર્મિક શબ્દનો અધર્મા-ચરણશીલ હોય છે તે વિજય નામે ચોર અધર્માચરણશીલ હતો, અધર્મિષ્ઠ હતો, સાવ ધર્મરહિત હતો, અધર્માખ્યાયી હતો, અધર્મની વાત કહેનાર હતો, અધર્માનુરાગી હતો, અધર્મનો અનુગામી એટલે કે અધર્મને અનુસરનાર હતો, અધર્મપ્રલોકી હતો, અધર્મને જ જોનાર હતો, અધર્મપ્રરંજન હતો, અધર્મમાં આસક્ત હતો, અધર્મશીલ સમુદાચારી

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिसकलजीवानां सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतु' समुत्थितः—अधर्मं पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। 'बहुणगरणिग्गयजसे' बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः 'साहसिए' साहसिकः=अविमृश्यकारी 'सद्दवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रवणेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। 'से' सः = विजयश्चौर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्च जाव' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना चोराणा च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च 'गंठिभेयगाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'संधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदकाना=भित्तिसधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्रखनकाना=संधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये, वधके लिये, तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शुरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने मे बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली मे पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

घणा द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगेरे प्राणीओना घात माटे, वध माटे तेमज तेमना सर्वनाश माटे ते अधर्म केतुग्रहनी जेमज उदय पाम्यो हतो घणा नगरोमा ते कुख्यात थई चुक्यो हतो ते भारे शूरवीर हतो, तेनो प्रहार खूब ज भारे थतो हतो वगर विचार्या काम करवामा ज तेनो स्वभाव हतो शब्द श्रवण करीने ते पोताना लक्ष्यने वींधी नाखवामा खूब ज निपुण हतो ते विजय चोर सिंह गुफा नामनी ते चोर पल्लीमा पाचसो चोरोनो स्वामी-यावत् स्वामित्व भोगवतो रहेतो हतो

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य ऋण

बहुलः, तत्र-उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपागतविचक्षणभयात् तत्क्षणे वञ्चनाकरणम् वञ्चन=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृतिः=मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनकादीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभावः, एषां सम्प्रयोगो व्यवहारः स एव बहुलः प्रचुरो यस्य सः, 'निस्सीले' निःशील=शीलरहित', 'निव्वए' निर्व्रतः=अणुव्रतरहित, 'निग्गुणे' निर्गुण =गुणव्रतरहितः, 'निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे' निष्प्रत्याख्यान पौषधोपवासः = प्रत्याख्यानपौषधोपवासरहितः 'बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए' बहूना द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणा घाताय, वधाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वचन करने में प्रवृत्त हुआ वचक जन जब पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस का नाम उत्कचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वचन है। दूसरों का वचन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस का नाम निकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है। तराजू एव तोलने आदि के बाटों को कमती बढती रखना इसका नाम कूट है। "साइ" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्व्रत था-व्रत रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से वर्जित था "बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

---

પુષ્કળ પ્રમાણમા હતો. ભોળા માણસોના વચનમા પ્રવૃત્ત થયેલો વચક જ્યારે પાસે આવેલા માણસને બીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે પ્રતારણનુ નામ વચન છે બીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનુ નામ માયા છે પોતાની માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજી માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે તેનુ નામ નિકૃતિ છે વેશ વગેરે બદલવુ તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ જોખવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનુ નામ કૂટ છે "સાઇ" આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિઃશીલ હતો,-શીલ રહિત હતો, નિર્વ્રત વ્રત રહિત હતો નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત હતો પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો "बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए-उच्छायणाए"

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिसकलजीवानां सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूप धूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। 'बहुणगर-णिग्गयजसे' बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः 'साहसिए' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सद्दवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। 'से' सः = विजयश्चौर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्च जाव' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूनां चोराणां च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणां=परस्त्रीगामिनां च 'गंठिभेय गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'संधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदकानां=भित्तिसधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते सधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्र-खनकानां=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये,वधके लिये,तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शूरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पांचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

ઘણા દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી, સરીસૃપ (સાપ) વગેરે પ્રાણીઓના ઘાત માટે, વધ માટે તેમજ તેમના સર્વનાશ માટે તે અધર્મ કેતુગ્રહની જેમજ ઉદય પામ્યો હતો ઘણા નગરોમા તે કુખ્યાત થઈ ચુક્યો હતો તે ભારે શૂરવીર હતો, તેનો પ્રહાર ખૂબ જ ભારે થતો હતો વગર વિચાર્યા કામ કરવામા જ તેનો સ્વભાવ હતો શબ્દ શ્રવણ કરીને તે પોતાના લક્ષ્યને વીંધી નાખવામા ખૂબ જ નિપુણ હતો તે વિજય ચોર સિંહ ગુફા નામની તે ચોર પલ્લીમા પાચસો ચોરોનો સ્વામી-યાવત્ સ્વામિત્વ ભોગવતો રહેતો હતો

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य अण

बहुलः, तत्र-उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपागतविचक्षणभयात् क्षणं वञ्चनाकरणम् वञ्चन=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृतिः=मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनकादीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभावः, एषां सम्प्रयोगो व्यवहारः स एव बहुलः प्रचुरो यस्य सः', 'निस्सीले' निःशीलः=शीलरहितः, 'निव्वए' निर्व्रतः=अणुव्रतरहितः, 'निग्गुणे' निर्गुणः=गुणव्रतरहितः, 'निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे' निष्प्रत्याख्यान पौषधोपवासः = प्रत्याख्यानपौषधोपवासरहितः 'बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए' बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां घाताय, वधाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वचन करने में प्रवृत्त हुआ वचक जन जब पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस का नाम उत्कचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वंचन है। दूसरों का वचन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस का नाम निकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है। तराजू एव तोलने आदि के बाटों को कमती बढती रखना इसका नाम कूट है। "साइ" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्व्रत था-व्रत रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से वर्जित था "बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाण घायाए वहाए उच्छायणाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

પુષ્કળ પ્રમાણમા હતો. ભોળા માણસોના વચનમા પ્રવૃત્ત થયેલો વચક જ્યારે પાસે આવેલા માણસને બીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કચન છે પ્રતારણનું નામ વચન છે બીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનુ નામ માયા છે પોતાની માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજી માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે તેનુ નામ નિકૃતિ છે- વેશ વગેરે બદલવુ તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ તોળવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનુ નામ કૂટ છે "સાઇ" આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિ શીલ હતો,-શીલ રહિત હતો, નિર્વ્રત વ્રત રહિત હતો નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત હતો પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો "બહૂણ દુપયચઉપ્પય મિયપસુપક્ખિસરીસિવાણ ઘાયાએ વહાએ – ઉચ્છાયણાએ"

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिसकलजीवाना सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः-अधर्म पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतु.=उत्पातरूपधूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुणगर-णिग्गयजसे 'बहुनगरनिर्गतयशा', बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः 'साहसिए' साहसिक=अविमृश्यकारी 'सद्देवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। 'से' सः = विजयश्चोर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्च जाव' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्कर. चोरसेनापति बहूना चोराणा च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च 'गंठिभेय गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'संधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदकाना=भित्तिसंधिं छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्र-खनकाना=संधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये,वधके लिये,तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शुरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने में बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली में पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

घणा द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी, सरीसृप (साप) वगेरे प्राणीओना घात माटे, वध माटे तेमज तेमना सर्वनाश माटे ते अधर्म केतुग्रहनी जेमज उदय पाम्यो हतो घणा नगरोमा ते कुख्यात थई चुकयो हतो ते भारे शूरवीर हतो, तेनो प्रहार खूब ज भारे थतो हतो वगर विचार्या काम करवामा ज तेनो स्वभाव हतो शब्द श्रवण करीने ते पोताना लक्ष्यने वींधी नाखवामा खूब ज निपुण हतो ते विजय चोर सिंह गुफा नामनी ते चोर पल्लीमा पाचसो चोरोनो स्वामी-यावत् स्वामित्व भोगवतो रहेतो हतो.

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य अण

बहुलः, तत्र-उत्कञ्चनम् मुग्धजनवञ्चनप्रवृत्तस्य समीपागतविचक्षणभयात् तत्क्षणे वञ्चनाकरणम् वञ्चन=प्रतारणम्, माया=परवञ्चनबुद्धिः, निकृतिः=मायाप्रच्छादनार्थं मायान्तरकरणम्, कपटम्=वेषादिविपर्ययकरणम्, कूटम्=तुलातोलनकादीनामन्यथाकरणम्, 'साइ' देशी शब्दोऽयम्, विश्वासाभावः, एषां सम्प्रयोगो व्यवहारः स एव बहुलः प्रचुरो यस्य सः', 'निस्सीले' निःशीलः=शीलरहितः', 'निव्वए' निर्व्रतः=अणुव्रतरहित, 'निग्गुणे' निर्गुणः=गुणव्रतरहितः, 'निपच्चक्खाणपोसहोववासे' निष्प्रत्याख्यान पौषधोपवास = प्रत्याख्यानपौषधोपवासरहितः 'बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणाए' बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरीसृपाणां घाताय, वधाय=सामान्य

हार इसके पास प्रचुर था। भोलेजनों के वचन करने में प्रवृत्त हुआ वचक जन जब पास में आये हुए जनको भय से नहीं ठगता है इस का नाम उत्कचन है। प्रतारण (ठगना) करना इसका नाम वचन है। दूसरों का वचन करने की बुद्धि का नाम माया है। अपनी मायाचारी को छिपा ने के लिये जो दूसरी मायाचाररूप क्रिया करनी होती है इस का नाम निकृति है। वेष आदि के परिवर्तन करने का नाम कपट है। तराजू एव तोलने आदि के बाटों को कमती बढती रखना इसका नाम कूट है। "साइ" यह देशीय शब्द है। इसका अर्थ विश्वास का अभाव होता है। यह निःशील था-शीलरहित था-निर्व्रत था-व्रत रहित था, निर्गुण था-गुण रहित था, "प्रत्याख्यान और पौषधोपवास से वर्जित था "बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए" अनेक द्विपद, चतुष्पद, मृग,

પુષ્કળ પ્રમાણમાં હતો. ભોળા માણસોના વચનમાં પ્રવૃત્ત થયેલો વચક જ્યારે પાસે આવેલા માણસને બીકથી ઠગતો નથી તેનું નામ ઉત્કંચન છે પ્રતારણનું નામ વચન છે બીજા માણસને ઠગવાની બુદ્ધિનુ નામ માયા છે પોતાની માયાચારીને છુપાવવા માટે જે બીજી માયાચાર રૂપ ક્રિયા કરવામા આવે છે તેનુ નામ નિકૃતિ છે વેશ વગેરે બદલવુ તે કપટ કહેવાય છે ત્રાજવા તેમજ તોળવાના વજનોને હલકા અને ભારે કરવા તેનુ નામ કૂટ છે "સાઇ" આ દેશીય શબ્દ છે તેનો અર્થ વિશ્વાસનો અભાવ હોય છે તે નિઃશીલ હતો,-શીલ રહિત હતો, નિર્વ્રત વ્રત રહિત હતો નિર્ગુણ હતો-ગુણ રહિત હતો પ્રત્યાખ્યાન અને પૌષધોપવાસથી વર્જિત હતો "बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं घायाए वहाए - उच्छायणाए"

विशेषप्रकारेण नाशाय, उत्सादनाय=द्विपदादिमकलजीवाना सर्वथा नाशाय च, 'अधम्मकेऊ समुट्ठिए' अधर्मकेतुः समुत्थितः–अधर्म पापप्रधानो यः केतुः= केतुग्रहः, अधर्मकेतुः=उत्पातरूप धूमकेतुमहाग्रहः तद्वत् समुत्थितः। बहुणगर-णिग्गयजसे ' बहुनगरनिर्गतयशाः, बहुनगरेषु निर्गत जनमुखान्निःसृत यशः ख्याति र्यस्य सः, प्रसिद्ध इत्यर्थः, शूरः 'दढप्पहारी' दृढप्रहारी=दृढप्रहरण शीलः 'साहसिए' साहसिकः=अविमृश्यकारी 'सद्दवेही' शब्दवेधी=शब्दश्रव-णेन लक्ष्यवेधी च आसीत्। 'से' सः = विजयचोर खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्या पञ्चानाम् चोरशतानाम् 'आहेवच्च जाव' आधिपत्य यावत्= स्वामित्व कुर्वन् विहरति। ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापति बहूना चोराणा च 'पारदारियाणय' पारदारिकाणा=परस्त्रीगामिना च 'गंठिभेय गाणय' ग्रन्थिभेदकानां 'संधिच्छेयगाणय' सन्धिच्छेदकाना=भित्तिसधि छित्त्वा ये धनमपहरन्ति ते संधिच्छेदका उच्यन्ते, तेषाम्, 'खत्तखणगाण य' क्षात्र-खनकाना=सधिरहितभित्ति खनकानाम्, 'रायावगारीणय' राजाऽपकारिणां=

पशु, पक्षी, सरीसृप आदि प्राणियोंके घातके लिये,वधके लिये,तथा उनके सर्वथा विनाशके लिये, यह अधर्मकेतुग्रह जैसा उदित हुआ था। अनेक नगरों में यह कुख्यात होचुका था। बडा शूरवीर था। इसका प्रहार बहुत गहरा होता था। विना विचारे काम करना ही इसका स्वभाव था शब्द श्रवण कर यह अपने लक्ष्य के वेधने मे बडा निपुण था। वह विजय चौर सिंहगुफा नाम की उस चोरपल्ली मे पाचसौ चोरों का आधिपत्य यावत् स्वामित्व करता हुआ रहता था। (तएण से विजय तक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य, रायावगारीण य अणधारगाण य

ઘણા દ્વિપદ, ચતુષ્પદ, મૃગ, પશુ, પક્ષી, સરીસૃપ (સાપ) વગેરે પ્રાણીઓના ઘાત માટે, વધ માટે તેમજ તેમના સર્વનાશ માટે તે અધર્મ કેતુગ્રહની જેમજ ઉદય પામ્યો હતો ઘણા નગરોમા તે કુખ્યાત થઈ ચુકયો હતો તે ભારે શૂરવીર હતો, તેનો પ્રહાર ખૂબ જ ભારે થતો હતો વગર વિચાર્યા કામ કરવામા જ તેનો સ્વભાવ હતો શબ્દ શ્રવણ કરીને તે પોતાના લક્ષ્યને વીંધી નાખવામા ખૂબ જ નિપુણ હતો તે વિજય ચોર સિંહ ગુફા નામની તે ચોર પલ્લીમા પાચસો ચોરોનો સ્વામી–યાવત્ સ્વામિત્વ ભોગવતો રહેતો હતો.

(तएण से विजयतक्करे चोरसेणावई बहूण चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाणय, रायावगारीण य अण

राजद्रोहिणां ' अणधारगाणय ' ऋणधारकाणाम् बालघातकानां ' वीसमघायगाण य ' विश्वासघातकानां=विश्वासघातिनां द्यूतकारकाणां ' खंडरक्खाण य ' खण्डरक्षाणां=राजविरोधेन भूमिखण्डधारिणाम् एवम् अन्येषां च बहूनां ' छिन्नभिन्नबहि राहयाण ' छिन्नभिन्नबहिराहतानाम्-छिन्ना=छिन्नहस्तादिका', भिन्ना:=भिन्नक र्णनासिकादिकाः, बहिराहता=राजापराधेन देशनिष्काशिताः, एतेषां द्वन्द्वः, तेषां च ' कुडुगे ' कुटङ्कः=कुटङ्क इव कुटङ्क - रक्षक रक्षार्थमाश्रयणीयत्वसाम्यात्

बालघायगाण य वीसभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं बहूण छिन्नभिन्न बहिरायगाण कुडगे यावि होत्था) वह विजय तस्कर चोर सेनापति अनेक चोरों का अनेक परस्त्री लपटों का ग्रन्थि भेद को का, सन्धिच्छेदकों का-मकान की भीत फोड़कर धनका अपह रण करनेवालो का, क्षात्रखनकों का सन्धि रहित भीत को फोड़कर चोरी करनेवालों का, राजा का अपकार करने वालों का-राजद्रोहियों का, ऋण करने वालों का बाल हत्या करने वालों का विश्वासघात करने वालों का जुआ खेलनेवालों का, राजा की आज्ञा लिये विना ही कुछ जमीन को अपने अधिकार में करनेवालो का, तथा और भी अनेक छिन्न, भिन्न बहिराहत व्यक्तियों का यह कुटक जैसा था। जिन के हाथ आदि काटदिये गये है ऐसे प्राणी, छिन्न शब्द से जिनकी नाक आदि काट दी गई है ऐसे प्राणी भिन्न शब्द से एवं राजापराध के कारण जो देश से बाहिर निकाल दिये गये हैं ऐसे मनुष्य यहाँ बहि आहत शब्द

धारगाण य बालधायगाण य वीसभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अन्नेसिं बहूण छिन्नभिन्नबहिराययाणं कुडगे यावि होत्था)

ते विजय तस्कर चोर सेनापति घणा चोरो, घणा परस्त्री लपटो, ग्रंथिभेदको, सधिच्छेदको-बाकोरु पाडीने धननु अपहरण करनाराओ, क्षात्र खनको-सधिभाग वगरनी भीतमा बाकोरु पाडीने चोरी करनाराओ, राजाना अपकारको-राजद्रोहीओ, ऋणु करनाराओ (देवादारो) बाळहत्या करनाराओ, बाळहत्या करनाराओ, विश्वासघात करनाराओ, जुगार रमनाराओ, राजानी आज्ञा लीधा वगर ज थोडी जमीनने पोताना अधिकारमा लेनाराओ तेमज बीजा पणु घणा छिन्न, भिन्न बहिराहत लोकोना माटे ते कुटक जेवो हतो. जेमना हाथ पग वगेरे कापी नाखवामा आव्या छे एवा प्राणीओ, छिन्न शब्द वडे जेमना नाक वगेरे कापवामा आव्या छे एवा प्राणीओ, भिन्न शब्द वडे अने राज्यापराध बदल जे देशमाथी बहार काढी मूकवामा आव्या छे एवा माणुसो अहीं " बहि आहत " शब्द वडे सबोधित करवामा आव्या

चापि अभूत् । ततः खलु स विजयस्तस्करः चोरसेनापतिः राजगृहस्य ' दाहिणं पुरत्थिम ' दक्षिणपौरस्त्य अग्निकोणस्थित जनपद वहुभिः ' गामघाएहिं ' ग्राम घातै=ग्रामविनाशैश्च, नगरघातैश्च, ' गोग्गहणेहिय ' गो ग्रहणै=गवां लुण्ठनैः, वदिग्गहणेहिय ' वन्दिग्रहणै'=लुण्ठने ये जना गृहीतास्ते वन्दिनउच्यन्ते, तेषा ग्रहणैः=स्वकारायां स्थापनैः, ' खत्तखणणेहिय ' क्षात्रखननैश्च एवं विधैर्दुष्कृत्यै

से प्रतिबोधित किये गये हैं। रक्षणार्थ आश्रयणीय होने की समानता से इसे कुटक-घशवन-जैसा कहा गया है। (तएण से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवय बहूहिं गामघाएहिं य नगरघाएहिं य गोग्गहणेहि य वंदिग्गहणेहि य खत्तखणणेहिय, पथकु हणेहि य उवीले माणे २ विद्धसणे माणे २ णित्थाण, णिद्धण करेमाणे विहरइ, तएण से चिलाए दासचेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य दाराभिसंकीहि य धणिएहि य जूयकरेहि य पर-ब्भवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजय चोरसेणावइ उवसंपज्जित्ताण विहरइ) चोरों का सेनापति वह विजय तस्कर राज-गृह नगर के अग्निकोण में स्थित जनपदो को, अनेक ग्रामो के विनाश से नगरों के घात से, गायों के लूटने से, लूटते समय पकडे गये मनुष्य को अपने कारागार में बंद करने से, क्षत्रखनन से-मकानो में खातदेने

છે રક્ષણુ માટે આશ્રયણીય હોવાના સામ્યથી તેને કુટક-વાસનાવન'ની જેમ બતાવવામા આવ્યો છે

(तएण से विजए तक्करे चोरसेणावई रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिम जणवय बहूहिं गामघाएहिं य नगरघाएहिं य गोग्गहणेहिं य वंदिग्गहणेहिं य खत्तखणणेहिं य पथकुट्टणेहिं य उवीलेमाणे२ विद्धसणे माणे२ णित्थाण, णिद्धण करेमाणे विहरइ, तएण से चिलाए दास चेडे रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि य धणियेहि य जूयकरेहि य परब्भवमाणे २ रायगिहाओ नगराओ णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजय चोरसेणावइ उवसंपज्जित्ताण विहरइ)

ચોરોનો સેનાપતિ તે વિજય તસ્કર રાજગૃહ નગરના અગ્નિકોણના જનપદોને, ઘણા ગ્રામોનો વિનાશ કરીને નગરોનો ઘાત કરીને ગાયોને લૂટીને લૂટતી વખતે પકડી પાડેલા માણુસોને પોતાના કારાગારમા પૂરી દઈને, ક્ષત્ર ખનન કરીને, મકાનોમા ખાતર પાડીને અને મુસાફરોને મારીને નિરતર

पथकुट्टणेहिय ' पान्थकुट्टनैः=पथिकजनमारणैश्च ' उप्पीलेमाणे २ ' उत्पीडयन् २=सन्ततमुत्पीडनं कुर्वन्, ' विद्धंसेमाणे २ ' विध्वंसयन् २-सर्वदा विध्वंसं कुर्वन्, ' णित्थाणं ' निः स्थानं=गृहरहितं, ' णिद्धणं ' निर्धनम्=धनरहितं कुर्वन् विहरति । ततः खलु स चिलातो दासचेटः राजगृहे बहुभिः ' अत्थाभिसंकीहिय ' अर्थाभिशङ्किभिः=अयं चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, ग्रहीष्यति वा इत्यभिशङ्कनशीलैः ' चोज्जाभिसंकीहिय ' चौर्याभिशङ्किभिः=अयं मम गृहे चौर्यं कृतवान् करिष्यति वेत्यभिशङ्कनशीलैश्च ' दाराभिसंकीहिं ' दाराभिशङ्किभिः=' अयं मम दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति वेत्यभिशङ्कनशीलैः तथा धनिकैश्च द्यूतकरैश्च पराभूयमाणः २= पुनः पुनः पराभवं प्राप्यमाणो राजगृहात् नगराद् बहिः निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति,उपागत्य विजयं चोरसेनापतिम् उपसंपद्य=प्राप्य विहरति ॥ सू० ३ ॥

से, एवं पथिकजनों के मारने से, निरन्तर पीडित करता विध्वंस करता करता और गृह विहिन करता रहता था। इस के पश्चात् वह दासचेटक चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिशंक-इस चिलात ने हमलोगों के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-प्रकार की शंका करने वाले, चौर्याभिशंकी इसने हमलोगों के घर में घुसकर पहिले चोरी की है-तथा इसी तरह यह आगे भी करेगा-इस प्रकार की आशंका करने वाले, दाराभिशंकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस तरह की अपनी स्त्रियों के साथ बलात्कार करने की आशंकावाले पुरुषों के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियों के द्वारा, जुआ खेलने वाले ज्वारियों के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

પીડિત કરતો, વિધ્વંસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમાં ઘણા અર્થાભિશંક-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનું હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ હરણ કરશે, આ જાતની શંકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશંકી-એણે અમારા ઘરોમાં પેસીને પહેલાં ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમાં પણ તે ચોરી કરશે જ-આ જાતની ચોરીની આશંકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશંકી-એણે પહેલાં અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ તે ચોક્કસ આવું કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશંકાવાળા પુરુષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારવાર

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि हु कुवियबल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ। पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणह समग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ। तएणं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ। तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था। तएणं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया२ इड्डीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता बहुइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएण ताइं पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति। तएणं से चिलाए

और निकल कर जहां वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहां आया वहां आकर वह चोर सेनपति के बाद रहने लगा॥ सूत्र–३॥

રાજગૃહ નગરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યા તે સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી ત્યા આવ્યો, ત્યા આવીને ચોર સેનાપતિની સાથે રહેવા લાગ્યો. ॥સૂ૦૩॥

'पयकुट्टणेहिय' पान्थकुट्टनैः=पथिकजनमारणैश्च 'उवीलेमाणे २' उत्पीडयन् २=सन्ततमुत्पीडनं कुर्वन्, 'विद्धंसेमाणे २' विध्वंसयन् २-सर्वथा विध्वंसं कुर्वन्, 'णित्थाणं' निः स्थानं=गृहरहितं, 'णिद्धणं' निर्धनम्=धनरहितं कुर्वन् विहरति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः राजगृहे बहुभिः 'अत्थाभिसंकीहिय' अर्थाभिशङ्किभिः=अयं चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, ग्रहीष्यति वा इत्यभिशङ्कनशीलैः 'चोज्जाभिसंकीहिय' चौर्याभिशङ्किभिः=अयं मम गृहे चौर्यं कृतवान् करिष्यति चेत्यभिशङ्कनशीलैश्च 'दाराभिसंकीहि' दाराभिशङ्किभिः=अयं मम दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति चेत्यभिशङ्कनशीलैः तथा धनिकैश्च द्यूतकरैश्च पराभूयमाणः २= पुनः पुनः पराभवं प्राप्यमाणो राजगृहात् नगराद् बहिः निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य विजयं चोरसेनापतिम् उपसंपद्य=प्राप्य विहरति ॥ सू० ३ ॥

से, एवं पथिकजनों के मारने से, निरन्तर पीडित करता विध्वंस करता करता और गृह विहिन करता रहता था। इस के पश्चात् वह दासचेटक चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिशंक-इस चिलात ने हमलोगों के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-प्रकार की शंका करने वाले, चौर्याभिशंकी इसने हमलोगों के घर में घुसकर पहिले चोरी की है-तथा इसी तरह यह आगे भी करेगा-इस प्रकार की आशंका करने वाले, दाराभिशंकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस तरह की अपनी स्त्रियो के साथ बलात्कार करने की आशंकावाले पुरुषों के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियो के द्वारा, जुआ खेलने वाले ज्वारियो के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

પીડિત કરતો, વિધ્વંસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમા ઘણા અર્થાભિશંક-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનુ હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ હરણ કરશે, આ જાતની શંકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશંકી-એણે અમારા ઘરોમા પેસીને પહેલા ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમા પણ તે ચોરી કરશે જ-આ જાતની ચોરીની આશંકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશંકી-એણે પહેલા અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમા પણ તે ચોક્કસ આવુ કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બલાત્કારની આશંકાવાળા પુરૂષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારવાર

मूलम्–तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुवहुपि हु कुवियवल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणह समग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ । तएणं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं वहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था । तएणं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया२ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता वहुइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तएणं ताइं पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा वहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति । तएणं से चिलाए

और निकल कर जहां वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहां आया वहां आकर वह चोर सेनपति के साथ रहने लगा ॥ सूत्र–३ ॥

રાજગૃહ નગરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યાં તે સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી ત્યાં આવ્યો, ત્યાં આવીને ચોર સેનાપતિની સાથે રહેવા લાગ્યો. ॥સૂ૦૩॥

'पयकुट्टणेहिय' पान्थकुट्टनैः=पथिकजनमारणैश्च 'उवीलेमाणे २' उत्पीडयन् २=सन्ततमुत्पीडनं कुर्वन्, 'विद्धंसेमाणे २' विध्वंसयन् २-सर्वथा विध्वंसं कुर्वन्, 'णित्थाणं' निः स्थानं=गृहरहितं, 'णिद्धणं' निर्धनम्=धनरहितं कुर्वन् विहरति। ततः खलु स चिलातो दासचेटः राजगृहे बहुभिः 'अत्थाभिसंकीहिय' अर्थाभिशङ्किभिः=अयं चिलातो मदीयमर्थं गृहीतवान्, ग्रहीष्यति वा इत्यभिशङ्कनशीलैः 'चोज्जाभिसंकीहिय' चौर्याभिशङ्किभिः=अयं मम गृहे चौर्यं कृतवान् करिष्यति चेत्यभिशङ्कनशीलैश्च 'दाराभिसंकीहि' दाराभिशङ्किभिः='अयं मम दारान् दूषितवान् दूषयिष्यति चेत्यभिशङ्कनशीलैः तथा धनिकैश्च द्यूतकरैश्च परा भूयमाणः २= पुनः पुनः पराभवं प्राप्यमाणो राजगृहात् नगराद् बहिः निर्गच्छति, निर्गत्य, यत्रैव सिंहगुहा चोरपल्ली तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य विजयं चोरसेनापतिम् उपसंपद्य=प्राप्य विहरति॥ सू० ३॥

से, एवं पथिकजनों के मारने से, निरन्तर पीडित करता विध्वंस करता करता और गृह विहिन करता रहता था। इस के पश्चात् वह दासचेटक चिलात राजगृह नगर में अनेक अर्थाभिशंक-इस चिलात ने हमलोगों के द्रव्य को हरण किया है तथा इसी तरह से यह आगे भी करेगा-प्रकार की शंका करने वाले, चौर्याभिशंकी इसने हमलोगों के घर में घुसकर पहिले चोरी की है-तथा उसी तरह यह आगे भी करेगा-इस प्रकार की आशंका करने वाले, दाराभिशंकी-इसने पहिले हमारी स्त्रियों के साथ बलात्कार किया है-इसी तरह से यह आगे भी करेगा इस तरह की अपनी स्त्रियो के साथ बलात्कार करने की आशंकावाले पुरुषों के द्वारा तथा धनिक व्यक्तियो के द्वारा, जुआ खेलने वाले ज्वारियो के द्वारा पुनः पुनः पराभूत होता हुआ राजगृह नगर से बाहर निकला

પીડિત કરતો, વિધ્વંસ કરતો અને ગૃહવિહીન બનાવી મૂકતો હતો. ત્યારપછી તે દાસચેટક ચિલાતે રાજગૃહ નગરમાં ઘણા અર્થાભિશંક-આ ચિલાતે અમારા દ્રવ્યનું હરણ કર્યું છે તેમજ આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ હરણ કરશે, આ જાતની શંકા કરનારાઓ વડે, ચૌર્યાભિશંકી-એણે અમારા ઘરોમાં પેસીને પહેલાં ચોરી કરી હતી તેમજ ભવિષ્યમાં પણ તે ચોરી કરશે જ-આ જાતની ચોરીની આશંકા કરનારાઓ વડે, દારાભિશંકી-એણે પહેલાં અમારી સ્ત્રીઓ ઉપર બળાત્કાર કર્યો છે, આ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં પણ તે ચોક્કસ આવું કરશે જ, આ રીતે પોતાની સ્ત્રીઓ ઉપર બળાત્કારની આશંકાવાળા પુરુષો વડે તેમજ ધનવાનો વડે, જુગાર રમનારા જુગારીઓ વડે, વારંવાર

मूलम्-तएणं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्गे असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था, जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुवहुंपि हु कुवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहेइ । पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणह समग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ । तएणं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं वहुईओ चोरविज्जाओ य चोरमते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ । तएणं से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था । तएणं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया२ इड्ढीसक्कारसमुदएणं णीहरणं करेंति, करित्ता वहुइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था । तएणं ताइं पंच चोरसयाइं अन्नमन्नं सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी-एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा वहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलायं तीए सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति । तएणं से चिलाए

और निकल कर जहां वह सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी वहां आया वहां आकर वह चोर सेनपति के साथ रहने लगा ॥ सूत्र-३ ॥

રાજગૃહ નગરથી બહાર નીકળ્યો અને નીકળીને જ્યાં તે સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લી હતી ત્યાં આવ્યો, ત્યાં આવીને ચોર સેનાપતિની સાથે રહેવા લાગ્યો ॥સૂ૦૩॥

चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई चोराणय जाव कुडंगे यावि होत्था। से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्हं चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं जाव निरथाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४॥

टीका—'तएणं' इत्यादि। ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य चोरसेनापतेरग्र्यः=प्रधान 'असिलट्ठिगाहे' असियष्टिग्राहः=असि'=करवालं, यष्टि=वंशदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियष्टिग्राहः=असियष्ट्यादिप्रचालनचतुरो जातश्चापि अभूत्। 'जाहे वि य णं' यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि।

टीकार्थ–(तएणं) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर का (अग्गे यावि हो०) सब से प्रधान असि, यष्टि, ग्रह-तलवार और लाठी के चलाने मे चतुर-बन गया। (जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावईगामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउं वच्चइ, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हू कूवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

---

(तएणं से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ–(तएणं) त्यारपछी (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करनो (अग्गे यावि हो०) सौथी प्रधान असि, यष्टि (लाकडी) ग्राह, तरवार अने लाठी चलाववामा चतुर बनी गयो

(जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउं वच्चइ, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हू कूवियबलं हयविमहिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ)

ज्यारे ते चोर सेनापति विजय ग्रामोना घात माटे यावत् पथिकोने लुटवा माटे नीकळतो हतो त्यारे ते दास चेटक चिलात चोरो

ग्रामघात वा यावत् 'पथकोट्टि' पान्थकुट्टिम्=पथिकजनलुण्टन वा 'काउ' कर्तुं 'वच्चइ' व्रजति=गच्छति 'ताहेवि य' तदाऽपि च खलु स चिलातो दासचेटः सुबहु अपि 'हु' इति वाक्यालङ्कारे 'कूवियबलं' कूपिकबल=चोरगवेषकसैन्य 'हयविमहिय जाव' हतविमथित यावत्-सर्वथा विध्वस्त कृत्वा 'पडिसेहेइ' प्रतिषेधयति=निवारयति। पुनरपि 'लद्धट्ठे' लब्धार्थ=लब्धः प्राप्तः, अर्थ= स्वाभिलषित येन सः=प्राप्तस्वाभिलषितः, अत एव 'कयकज्जे' कृतकार्यः=कृत कार्यं येन स, कृतनिजकृत्यः 'अणहसमग्गे' अनघसमग्रः=अनघम्=अक्षतम्-अन्तराले केनाप्यनपहृत समग्र=समस्त चौर्याद्यपहृतवस्तुजात यस्य सः=अलुण्टित सर्वस्वः सिंहगुहा चोरपल्लिं 'हव्व' शीघ्रमागच्छति। ततः खलु स विजयश्चोर-सेनापतिः चिलात तस्कर बह्वीः चोरविद्याश्च चोरमन्त्राश्च चोरमायाश्चोरनिकृतीश्च मायायाः प्रच्छादनार्थं या माया सा 'निकृतिः' उच्यते ताः 'सिक्खावेइ'

यावत् पथिक जनों को लूटने के लिये चलता था-तब वह दास चेटक चिलात भी चोर गवेषक सैन्य को हत, विमथित यावत सर्वथा विध्वस्त करके पीछे भगा देता था-और स्वाभिलषित अर्थ को प्राप्तकर अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर लिया करता था। इस तरह वह चोरी में मिले हुए द्रव्य को सुरक्षित रखता हुआ-बीच में किसी के भी द्वारा द्रव्य की छीना झपटी से रहित होता हुआ उस सिंहगुहा नाम के चोरपल्ली में बहुत जल्दी लौट आता था। (तएण से विजए चोर सेनावई चिलाय तक्करं बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोर मायाओ चोर निगडीओ य सिक्खावेइ) उस चोर सेनापति विजय तस्कर ने चिलात चोर के अनेक चोर विद्याओं को, अनेक चोरमंत्रों को अनेक विध चोर सम्बन्धी मायाचारी को और माया को छिपाने के

આવેલા સૈન્યને હત, વિમથિત યાવત્ સંપૂર્ણ રીતે વિધ્વસ્ત કરીને ભગાડી મૂકતો હતો અને પોતાના ઇચ્છિત અર્થને પ્રાપ્ત કરીને પોતાના કાર્યમાં સફળતા મેળવતો હતો. આ પ્રમાણે તે ચોરીમાં મેળવેલા દ્રવ્યને સુરક્ષિત રાખતો વચ્ચે કોઈ પણ બીજા વડે દ્રવ્યની લૂંટ-પાટ ન થાય-તેમ પોતાની જાતને સુરક્ષિત રાખતો તે શીઘ્ર સિંહગુહા નામે ચોરપલ્લીમાં પાછો આવતો રહેતો હતો.

(तएण से विजए चोरसेनावई चिलाय तक्करं बहूईओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ)

તે ચોર સેનાપતિ વિજય તસ્કરે ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓને, ઘણા ચોરમંત્રોને, ઘણી ચોર સંબંધી માયાચારીઓને અને માયાને છુપાવવા માટે બીજી માયાચારીઓ શીખવાડી

चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई चोराणय जाव कुडंगे यावि होत्था। से णं तत्थ सोहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवयं जाव नित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥ सू० ४॥

टीका—'तएण' इत्यादि। ततः खलु स चिलातो दासचेटो विजयस्य चोरसेनापतेरग्र्यः=प्रधान 'असिलट्ठिग्गाहे' असियष्टिग्राहः=असि=करवालः, यष्टि=लगुदण्डः, तौ गृह्णातीति, असियष्टिग्राहः=असियष्ट्यादिप्रचालनचतुरो जातश्चापि अभूत्। 'जाहे वि यणं' यदाऽपि च खलु स विजयश्चोर सेनापतिः

तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि।

टीकार्थ–(तएण) इसके बाद (से चिलाए दासचेडे) वह दासचेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति उस विजय तस्कर का (अग्गे यावि हो०) सब से प्रधान असि, यष्टि, ग्रह–तलवार और लाठी के चलाने मे चतुर–बन गया। (जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावईगामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउ वच्चइ, ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हु कूवियबल हयविमहिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लिं हव्वमाग च्छइ) जब वह चोर सेनापति विजय, ग्रामो का घात करने के लिये,

---

(तएण से चिलाए दासचेडे इत्यादि—

टीकार्थ–(तएण) त्यारपछी (से चिलाए दासचेडे) ते दास चेटक चिलात (विजयस्स चोरसेणावइस्स) चोर सेनापति ते विजय तस्करनो (अग्गे यावि हो०) सौथी प्रधान आसि, यष्टि (लाकडी) ग्राह, तरवार अने लाठी चलाववामा चतुर बनी गयो।

(जाहे वि य ण से विजए चोरसेणावई गामघाय वा जाव पथकोट्टिं वा काउ वच्चइ, ताहे वि य ण से चिलाए दासचेडे सुबहु पि हू कूवियबल हयविम हिय जाव पडिसेहेइ, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुह चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ)

ज्यारे ते चोर सेनापति विजय ग्रामोना घात माटे यावत् पथिकोने लुटवा माटे नीकळतो हतो त्यारे ते दास चेटक चिलात चोरो माटे

खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! विजयश्चोरसेनापतिः कालधर्मेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना ' बहुईओ चोर-विज्जाओ जाव ' बह्व्यः चोरविद्या यावत्-चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षासु ' सिक्खिए ' शिक्षितः=पारङ्गमितः, ' त ' तस्मात् कारणात् ' सेयं ' श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! चिलातं तस्करं सिंहगुहायाश्चौर-पल्ल्याश्चोरसेनापतितयाऽभिषिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलातं तस्करोऽस्माभिः चोर सेनापतिपदे नियोज्य, ' त्तिकट्टु ' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय ' अन्नमन्नस्स ' अन्योऽन्यस्य ' एयमट्ठं ' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया-(एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूई-ओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! चिलायतक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति) देवानुप्रियो ! देखो-हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं। उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याएँ आदि सब कुछ सिखलादी दिया है। अत हमलोगों को अब यही उचित है कि हमलोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पल्ली का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करले अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलाय तक्करं सीह गुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, चिलाय तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ, અમારા નાયક ચોર સેનાપતિ વિજય તો હવે મરણ પામ્યા છે તેમણે આ ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓ વગેરે બધું શીખવ્યું જ છે એટલા માટે હવે અમને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે અમે લોકો ચિલાત ચોરને આ સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો ચોર સેનાપતિ બનાવી લઈએ એટલે કે ચોર સેનાપતિના સ્થાને આ ચિલાત ચોરની નીમ ણૂક કરી લઈએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના વિચાર રૂપ

शिक्षयति। ततः खलु स विजयो चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् 'कालधम्मुणा' कालधर्मेण=मृत्युना संयुक्तश्चापि अभवत् मृतइत्यर्थः। ततः खलु तानि पञ्चचोर शतानि=पञ्चशतपरयशर्चोरा, विजयस्य चोरसेनापतेः महता २ 'इड्ढिसक्कार समुदएण' ऋद्धिसत्कारसमुदयेन 'णीहरणं' निर्हरणं=श्मशानभूमिनयनं 'करेंति' कुर्वन्ति, कृत्वा बहूनि लौकिकानि मृतकृत्यानि कुर्वन्ति, कृत्वा यावत् विगत शोका जाताश्चापि अभवन्। ततः खलु तानि पञ्चचोरशतानि अन्योऽन्यं शब्द यन्ति शब्दयित्वा एवमवादिषुः-सर्वे मिलित्वा परस्परमेवं विचारितवन्तइत्यर्थ एव

लिये दूसरी और माया चारी को सिखला दिया। (तएण से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तएण ताइ पचचोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कार समुदएण णीहरणं करेंति करित्ता बहुइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएण ताइ पच चोर सयाइ अन्नमन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी) इस से बाद वह चोर सेनापति विजय किसी एक दिन कालधर्मगत हो गया। तब उन पांच सौ चोरो ने चोर सेनापति विजय तस्कर को बड़े ठाट बाट के साथ अर्थी-श्मशान यात्रा निकाली बादमें उन्हों ने मृतसबन्धी जितने भी लौकिक कृत्य होते है वे सब किये। लौकिक कृत्य करके सबके सब धीरे २ शोक रहित जब बन चुके-तब उन पांच सौ चोरो ने परस्पर में एक दूसरे को बुलाया-और बुलाकर उन से इस प्रकार कहा-विचार

(तएण से विजए चोरसेणावई अन्नया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था, तएण ताइ पच चोरसयाइ विजयस्स चोरसेणावइस्स महया २ इड्ढी सक्कारसमुदएण णीहरण करेंति करित्ता बहूइ लोइयाइ मयकिच्चाइ करेंति, करित्ता जाव विगयसोया जाया यावि होत्था। तएण ताइ पच चोर सयाइ अन्नमन्न सद्दावेंति, सद्दावित्ता एव वयासी)

त्यारपछी ते ચોર સેનાપતિ વિજય કોઈ એક દિવસે મૃત્યુ પામ્યો ત્યારે તે પાંચસો ચોરોએ ચોર સેનાપતિ વિજય તસ્કરની ભારે ઠાઠથી શ્મશાનયાત્રા કાઢી ત્યારપછી તેમણે તેના મૃત્યુ સંબંધી લૌકિક કૃત્યો કર્યાં લૌકિક કૃત્યો પૂરા કર્યા બાદ ધીમે ધીમે જ્યારે બધા શોક રહિત થયા ત્યારે તે પાંચસો ચોરોએ પરસ્પર એકબીજાને બોલાવ્યા અને એક સ્થાને એકત્ર થઈને તેમણે આ પ્રમાણે વિચાર કર્યો કે—

खलु अस्माकं हे देवानुप्रियाः ! विजयश्चोरसेनापतिः कालधर्मेण संयुक्तः=मृत इत्यर्थः । अयं च खलु चिलातः तस्करो विजयेन चोरसेनापतिना 'बहूईओ चोरविज्जाओ जाव' बह्व्यः चोरविद्या यावत्–चोरविद्यादि चोरनिकृतिपर्यन्तासु सकलचोरशिक्षासु 'सिक्खिए' शिक्षितः=पारङ्गमितः, 'त' तस्मात् कारणात् 'सेयं' श्रेयः खलु अस्माकं हे देवानुप्रिया ! चिलातं तस्करं सिंहगुहायाश्चोरपल्ल्याश्चोरसेनापतितयाऽभिषिञ्चितुम्, अर्थात् अयं चिलातः तस्करोऽस्माभिः चोरसेनापतिपदे नियोज्य, 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि विधाय 'अन्नमन्नस्स' अन्योऽन्यस्य 'एयमट्ठं' एतमर्थम्=चिलातस्य चोरसेनापतिपदे नियोजनरूपमर्थम्

किया–(एव खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति) देवानुप्रियो ! देखो–हमारे नायक चोर सेनापति विजय तो अब मर चुके हैं। उन्होंने इस चिलात चोर को अनेक चोर विद्याएँ आदि सब कुछ सिखलादी दिया है। अतः हमलोगों को अब यही उचित हैं कि हमलोग चिलात चोर को सिंह गुहा नामकी इस चोर पल्ली का चोर सेनापति के रूप में नियुक्त करलें अर्थात् चोरसेनापति के पद पर इस चिलात चोर को नियुक्त करलें इस प्रकार विचार करके उन्होंने एक दूसरे के विचार रूप अर्थ को

(एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते, अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूईओ चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए, तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, चिलायं तीसे सीहगुहाए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति)

હે દેવાનુપ્રિયો ! જુઓ, અમારા નાયક ચોર સેનાપતિ વિજય તો હવે મરણ પામ્યા છે તેમણે આ ચિલાત ચોરને ઘણી ચોર વિદ્યાઓ વગેરે બધુ શીખવ્યું જ છે એથી માટે હવે અમને એ જ યોગ્ય લાગે છે કે અમે લોકો ચિલાત ચોરને આ સિંહગુફા નામની ચોરપલ્લીનો ચોર સેનાપતિ બનાવી લઈએ એટલે કે ચોર સેનાપતિના સ્થાને આ ચિલાત ચોરની નીમણૂક કરી લઈએ આ પ્રમાણે વિચાર કરીને તેમણે એક બીજાના વિચાર રૂપ

'पडिसुणेति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य, चिलात तस्कर चोरसेना पतितया अर्थात् चोरसेनापतिपदे अभिषिञ्चन्ति । ततः खलु स चिलातः चोरसेना पतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह-' अहम्मिए जाव ' अधार्मिको यावत्-विजयचोर सेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भूत्वा विहरति । ततः खलु स चिलातः चोर सेनापति 'चोराण य जाव' चोराणां च यावत्=गोरपारदारिकादीनां च 'कुडगे' कुडङ्गः आश्रयस्थानं चाऽपि आसीत । स खलु तत्र सिंहगुहायां चोर पल्ल्या पञ्चानां चोरशतानां च एवं यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्च शतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्थ

स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली का उन्हों ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया। (तएण से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एवं जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ) इस तरह यह चिलात चोर सेनापति बन गया। चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया। अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडग की तरह बासों के वन के समान-आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पल्ली में पांचसौ चोरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

અર્થને સ્વીકારી લીધો અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરનો તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીનો તેમણે ચોર સેનાપતિના રૂપમાં અભિષેક કરી દીધો.

(तएण से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिण पुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઇ ગયો. ચોર સેનાપતિ બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધર્મકેતુ જેવો થઇ ગયો. તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોનો યાવત્ પારદારિક વગેરેનો કુડગની જેમ-વાંસોના વનની જેમ-આશ્રયસ્થાન બની ગયો.

जनपद 'नित्थाण निद्धण' निस्थान निर्धन गृहरहित धनरहित च कुर्वन् विहरति ॥ सू०४ ॥

मूलम्—तएणं से चिलाए चोरसेणावई अन्नया कयाइ विउल असणपाणखाइमसाइम उवक्खडावेत्ता पच चोरसए आमतेइ। तओ पच्छा ण्हाए कयवलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहि पचहि चोरसएहि सद्धि विउल असणं पाणं खाइमं साइम सुर च जाव पसण्ण च आसाएमाणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तत्तरागए ते पच चोरसए विउलेण धूवपुप्फगंधमल्लालकारेणं सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्ढे०, तस्स णं धूया, भद्दाए अत्तया पचण्ह पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसुमा णाम दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा, त गच्छामो णं देवाणुप्पिया! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह विलुंपामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले मम सुसुमा दारिया। तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेति। तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहि पचहि चोरसएहि सद्धि अल्लचम्म दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयसि पंचहि चोरसएहि सद्धि सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहि फलएहि णिकट्ठाहि असिलट्ठीहि असगएहि तोणेहि

की तरह राजगृह नगर के बाहिर के अग्निकोणस्थ जनपदो को गृह रहित और धन रहित करने लग गया।' सूत्र ४ ॥

નામની ચોરપલ્લીમા પાચસો ચોરોનો અધિપતિ થઈને વિજય તસ્કરની જેમ રાજગૃહ નગરની બહારના અગ્નિકોણ તરફના જનપદોને ગૃહરહિત અને ધન રહિત એટલે કે બરબાદ કરવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર ૪ ॥

'पडिसुर्णेति' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य, चिलात तस्कर चोरसेनापतितया अर्थात् चोरसेनापतिपदे अभिषिञ्चन्ति। ततः खलु स चिलात' चोरसेनापतिर्जातः, कीदृशः ? इत्याह–'अहम्मिए जाव' अधार्मिको यावत्–विजयचोरसेनापतिवदधार्मिको यावदधर्मकेतुर्भूत्वा विहरति। ततः खलु स चिलातः चोरसेनापति 'चोराण य जाव' चोराणां च यावत्=जारपारदारिकादीनां च 'कुडगे' कुडङ्गः आश्रयस्थान चाऽपि आसीत्। स खलु तत्र सिंहगुहायां चोरपल्ल्यां पञ्चानां चोरशतानां च एवं यथा विजयस्तथैव सर्वं यावत्=विजयवत् पञ्चशतानां चोराणामुपरि आधिपत्यं कुर्वन्, राजगृहस्य दक्षिणपौरस्त्यम्=अग्निकोणस्थ

स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उस चिलात चोर को अन्त में उस सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली का उन्हों ने चोर सेनापति के रूप में अभिषेक कर दिया। (तएण से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, से ण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ) इस तरह यह चिलात चोर सेनापति बन गया। चोरसेनापति बनकर वह विजय चोर सेनापति की तरह अधार्मिक यावत् अधर्मकेतु जैसा हो गया। अतः वह चिलात चोर सेनापति चोरों का यावत् पारदारिक आदिकों का कुडग की तरह बासों के वन के समान–आश्रयस्थान बन गया और उस सिंहगुहा नामकी पल्ली में पाचसौ चौरों का आधिपत्य करता हुआ विजय तस्कर

અર્થને સ્વીકારી લીધો અને સ્વીકારીને છેવટે તે ચિલાત ચોરનો તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીના તેમણે ચોર સેનાપતિના રૂપમા અભિષેક કરી દીધો.

(तएण से चिलाए चोरसेणावई जाए अहम्मिए जाव विहरइ तएण से चोर से० चोराण य जाव कुडगे यावि होत्था, सेण तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पचण्ह चोरसयाण य एव जहा बिजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स दाहिण पुरत्थिमिल्ल जणवय जाव णित्थाण निद्धण करेमाणे विहरइ)

આ પ્રમાણે તે ચિલાત ચોર ચોર સેનાપતિ થઇ ગયો. ચોર સેનાપતિ બનીને તે વિજય ચોર સેનાપતિની જેમ અધાર્મિક યાવત્ અધમ કેતુ જેવો થઇ ગયો તેથી તે ચિલાત ચોર સેનાપતિ ચોરોનો યાવત્ પારદારિક વગેરેનો કુડગની જેમ–વાસોના વનની જેમ–આશ્રયસ્થાન બની ગયો.

भुत्तुत्तरागए ' जिमितभुक्तोत्तरागत =जिमितः=कृतभोजनः भुक्तोत्तरकालमागत यावत् परमशुचिभूत. सुखासनवरगतः सन् तानि पञ्च चोरशतानि विपुलेन=अत्यर्थेन ' धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेण '=धूप पुष्पगन्धमाल्यालङ्कारेण=धूपः=सुगन्धित द्रव्येण उत्पन्नो धूमः, पुष्प=कुसुमम् , गन्धः=चन्दनादि माल्यम्-माला, अलङ्काराणि=आभरणानि, एतेषा च समाहारद्वन्द्वः, तेन सत्करोति, सम्मानयति, सत्कृत्य सम्मान्य एवम्-अवदत्-एव खलु हे देवानुप्रिया' ! राजगृहे नगरे धन्यो

ल्लालकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता एव वयासी) विपुल मात्रा मे, अशन पान, खादिम एव स्वादिमरूप चारो प्रकार का आहार बनवा कर उन पांचसौ चोरो को आमन्त्रित किया। जब वे सब आचुके-तब उस चिलात चोर ने स्नान से निवट कर और वायसादि को अन्नादिका भाग देनेरूपबलिकर्म आदि कर भोजन मडपमे वैठकर उन पाच सौ चोरो के साथ उस विपुलमात्रा में निष्पन्न हुए अशन, पान, खादिम, एव स्वादिमरूप चारो प्रकार के आहार को तथा सुरा, यावत् प्रसन्न मदिरा को खूब मनमाने रूप में पिया खाया जब वे सब के सब अच्छी तरह भोजन कर उत्तर काल में परमशुचिभूत होकर आनद के साथ एक स्थान पर आकर बैठचुके तब उस चिलात चोर सेनापति ने उनका धूप से-सुगधित द्रव्य से निष्पन्न हुए धूप से, पुष्पो से, चंदन आदि से, मालाओ से, और आभरणो से सत्कार किया सन्मान किया। सत्कार सन्मान करके फिर उनसे उसने इस प्रकार

પુષ્કળ પ્રમાણુમા અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ ચારે જાતનો આહાર બનાવડાવીને તે પાચસો ચોરોને આમંત્રિત કર્યા જ્યારે તેઓ બધા આવી ગયા ત્યારે તે ચિલાત ચોરે સ્નાન કર્યું અને ત્યારપછી તેણે કાગડા વગેરે પક્ષીઓને અન્ન વગેરેનો ભાગ અર્પીને બલિકર્મ વગેરે કર્યું ત્યારબાદ તેણે ભોજન મંડપમા બેસીને તે પાચસો ચોરોની સાથે તે પુષ્કળ પ્રમાણુમા બનાવડાવેલા, અશન, પાન, ખાદિમ અને સ્વાદિમ રૂપ ચારે પ્રકારના આહારને તેમજ સુરા યાવત્ પ્રસન્ન મદિરાને ખૂબ ધરાઇ ધરાઇને ખાધા-પીધા જ્યારે તેઓ બધા સારી રીતે જમીને પરમશુચીભૂત થઇને આનંદપૂર્વક એક સ્થાન ઉપર આવીને એકઠા થયા-બેસી ગયા, ત્યારે તે ચિલાત ચોર સેનાપતિએ તેમનો ધૂપથી, પુષ્પોથી, ચંદન વગેરેથી, માળાઓથી અને આભરણોથી સત્કાર કર્યો અને સન્માન કર્યું સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તેણે તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं ओसारियाहिं उरुघंटयाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया महया उक्किट्ठसीहणायचोरकलकलरवं समुद्दरवभूयं करेमाणे सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिणिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते एगं महं गहणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता, दिवसं खवेमाणे चिट्ठइ ॥ सू० ५ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः अन्यदा कदाचित् विपुलम् अशनपानखादिमस्वादिमम् 'उवक्खडावेत्ता' उपस्कार्य=निष्पाद्य पञ्च चोरशतानि आमन्त्रयति। ततः पश्चात् स्नातः 'कयबलि कम्मे' कृतबलिकर्मा=कृत बलिकर्म येन सः, काकादीनां कृतेदत्तभोजनोपहारो भोजनमण्डपे तैः पञ्चभिः चोरशतैः सार्धं 'विउल' विपुलम्=अत्यर्थम्, अशनं पानं खाद्यस्वाद्यं सुरां च यावत् प्रसन्नां च 'आसाएमाणे' आस्वादयन् विहरति। पुनश्च 'जिमिय

'तएणं से चिलाए चोरसेणावई' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (चोर सेणावई चिलाए) चोर सेना पति चिलात चोर ने (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (विउलं असणं पाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता पंचचोरसए आमंतेइ - तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे, भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे ४ विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विउलेणं धूवपुप्फगंधम

तएणं से चिलाए चोरसेणावई इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (चोरसेणावई चिलाए) चोर सेनापति चिलात चोरे (अन्नया कयाइ) कोई एक वखते (विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेत्ता पंच चोरसए आमंतेइ-तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे, भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुरं च जाव पसण्णं च आसाएमाणे४ विहरइ, जिमिय भुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विउलेणं धूवपुप्फगंधमल्लालंकारेण सक्कारेइ, सम्माणेइ, सक्कारित्ता सम्माणित्ता ... वयासी)

यावत् शिलप्रवाल., मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि युष्माकं भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका भविष्यति। तत खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तै पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं 'अल्लचम्म' आर्द्रचर्म दूरोहति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात् पूर्वं माङ्गल्यार्थमार्द्रचर्मण्यारोहन्तीति तेषा व्यवहार, दूरुह्य, 'पुव्वावरण्हकालसमयंसि' पूर्वापराह्णकालसमये'=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धं 'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरण.=सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः=सनद्ध'=सज्जीकृतः, बद्धः=कशाबन्धनेन सबद्धः, वर्मितः=अङ्गे परिहितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरण' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि, मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एक वह सुसमादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति चिलात चोर की इस बात को मान लिया। इसके बाद वह चोर सेनापति चिलात, उन पाचसौ चोरों के साथ गीले चमडे पर बैठ गया। लुटेरे लूटने के लिये जब प्रस्थान करते है तब वे पहिले गीले चमडे पर शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते है ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पाचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से निकला। (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો! આપણે બધા ત્યા જઇએ અને ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લુટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશુ તેમાથી ધન, કણક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે અને ફક્ત તે સુસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાચસો ચોરોએ પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી ત્યારપછી તે ચોર સેનાપતિ ચિલાત, તે પાચસો ચોરોની સાથે સાથે ભીના ચામડા ઉપર બેસી ગયો લુટારાઓ લુટવા માટે જ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલા શુભ શકુન માટે ભીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ જાતનો તેઓમા રિવાજ છે ભીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહોરમા પાચસો ચોરોની સાથે (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમાથી નીકળ્યો.

नाम सार्थवाह आढ्योऽस्ति । तस्य खलु दुहिता भद्राया आत्मजा पञ्चानां पुत्रा णामनुमार्गजातिका=पञ्चानां पुत्राणां जननान्तरं समुत्पन्ना सुसुमा नाम दारिका चापि अस्ति, कीदृशी सा ? ' अहीण जाव सुरूवा ' अहीन यावत् सुरूपा=अहीन पञ्चेन्द्रियशरीरा यावत् सुरूपवती, ' त ' तत्=तस्माद् गच्छामः खलु हे देवानु प्रियाः ! धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं विलुम्पाम'=लुण्ठामः, युष्माकं धनकनक

कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया! रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्ढे० तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसमा णाम दारिया यावि होत्था, अहीण जाव सुरूवा तं गच्छामोणं देवाणुप्पिया! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले, मम सुसुमा दारिया! तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावईस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं से- चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं) हे देवानु प्रियो! सुनो-एक बात कहना है-वह इस प्रकार है-राजगृह नगर में धन्य नाम का एक धनिक एवं सर्वजन मान्य सार्थवाह रहता है। इस की एक लडकी है। जिसका नाम सुसमा है। यह उसकी पत्नी भद्रा भार्या से पांच पुत्रों के बाद उत्पन्न हुई है। यह अहीन पांचों इन्द्रियों से युक्त शरीरवाली है तथा बहुत अधिक सुकुमार एवं सुन्दर है। इसलिये -चलो हे देवानुप्रियो! हम सब चलें और धन्य सार्थवाह के घर को

(एवं खलु देवाणुप्पिया! रायगिहे णयरे धण्णे णाम सत्थवाहे अड्ढे० तस्सणं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुसमा णाम दारिया यावि होत्था अहीण जाव सुरूवा तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो, तुब्भं विउले धणकणग जाव सिलप्पवाले, मम सुसमा दारिया! तएणं ते पंच चोरसया चिलायस्स चोरसेणावइस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं से चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लचम्मं दुरूहइ, दुरूहित्ता पुव्वावरण्हकालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं)

હે દેવાનુપ્રિયો! સાભળો, તમને મારે એક વાત કહેવી છે તે આ પ્રમાણે છે કે રાજગૃહ નગરમા ધન્ય નામે એક ધનિક અને સર્વજનમાન્ય સાર્થવાહ રહે છે તેને એક પુત્રી છે, તેનુ નામ સુસમા છે ધન્યની પત્ની ભદ્રાભાર્યાના ગર્ભથી તે પુત્રો પાચે ભાઇઓ બાદ જન્મ પામી છે તે અહીન પાચે ઇન્દ્રિયોથી યુક્ત શરીરવાળી છે તેમજ ખૂબ જ સુકુ-

यावत् शिलप्रवालः, मम सुसुमा दारिका-लुण्ठितेषु वस्तुषु मध्ये धनकनकमणि-मौक्तिकशिलाप्रवालादि वस्तुजातानि युष्माकं भवन्तु, मम तु एका सुसुमा दारिका भविष्यति। तत खलु तानि पञ्च चोरशतानि चिलातस्य चोरसेनापतेः एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति। ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः तै पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धं 'अल्लचम्म' आर्द्रचर्म दूरोहति, लुण्ठकाहि लुण्ठनप्रस्थानात् पूर्वं माङ्गल्यार्थमार्द्रचर्मण्यारोहन्तीति तेषा व्यवहार, दूरह्य, 'पुव्वावरण्हकालसमयसि' पूर्वापराह्नकालसमये '=दिनस्य चतुर्थप्रहरे पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धं 'सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरण=सन्नद्धबद्ध वर्मितकवचः=सनद्ध'=सज्जीकृतः, बद्धः=कशाबन्धनेन सनद्धः, वर्मितः=अङ्गे परिहितः कवचो येन स तथोक्तः, 'गृहीतायुधप्रहरणः' गृहीतानि आयुधप्रहरणानि

लूट-जो वस्तु हम तुम लूटेंगे उनमें से तुम्हारी तो धन, कनक, मणि, मौक्तिक शिलाप्रवाल आदि चीजें होगी-और मेरी केवल एक वह सुसमादारिका होगी-। इस तरह उन पांचसौ चोरों ने अपने सेनापति चिलात चोर की इस बात को मान लिया। इसके बाद वह चोर सेनापति चिलात, उन पांचसौ चोरों के साथ गीले चमडे पर बैठ गया। लुटेरे लूटने के लिये जब प्रस्थान करते है तब वे पहिले गीले चमडे पर शुभ शकुन मानने के निमित्त बैठते है ऐसा उनमें व्यवहार है बैठकर फिर वह दिन के चतुर्थप्रहर में पांचसौ चोरों के साथ (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) उस सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से निकला। (सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं

એટલા માટે ચાલો તૈયાર થાઓ, હે દેવાનુપ્રિયો! આપણે બધા ત્યાં જઇએ અને ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લુંટી લઈએ, જે વસ્તુઓ આપણે બધા લુટીશું તેમાંથી ધન, કનક, મણિ, મૌક્તિક, શિલાપ્રવાલ વગેરે વસ્તુઓ તમારી થશે અને ફક્ત તે સુસમા દારિકા મારી થશે આ પ્રમાણે તે પાંચસો ચોરોએ પોતાના સેનાપતિ ચિલાત ચોરની આ વાત સ્વીકારી લીધી ત્યારપછી તે ચોર સેનાપતિ ચિલાત, તે પાંચસો ચોરોની સાથે સાથે ભીના ચામડા ઉપર બેસી ગયો લુટારાઓ લુટવા માટે જ્યારે ઘેરથી નીકળે છે ત્યારે તેઓ પહેલા શુભ શકુન માટે ભીના ચામડા ઉપર બેસે છે, આ જાતનો તેઓમાં રિવાજ છે ભીના ચામડા ઉપર બેસીને તે દિવસના ચોથા પહોરમા પાંચસો ચોરોની સાથે (सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमइ) તે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીમાંથી નીકળ્યો.

येन सः, गृहीतायुधप्रहरणः 'माइयगोमुहिएहिं' माइकगोमुखितैः = माइकानि=पक्ष्मलानि, गोमुखितानि=गोमुखाकाराणि=माइकानि च तानि गोमुखितानि तैः=उदररक्षार्थं भल्लूकरोमाढ्यैर्गोमुखाकारैः 'फलएहिं' फलकैः=पट्टिकेति प्रसिद्धैः 'णिक्कट्ठाहिं असिलट्ठीहिं' निष्कृष्टाभिः असियष्टिभिः, कोशबहिष्कृतैः खड्गैः, 'अंसगएहिं तोणेहिं' अंसगतैस्तूणैः=स्कन्धस्थितैस्तूणीरैः, 'सजीवेहिं धणूहिं' सजीवैर्धनुर्भिः=कोट्यारोपितप्रत्यञ्चैर्धनुर्भिः, 'समुक्खित्तेहिं सरेहिं' समुत्क्षिप्तैः शरैः=तूणीरसकाशान्निष्काशितैर्बाणैः, 'समुल्लालियाहिं दीहाहिं' समुल्लालिताभिः दीर्घाभिः=समुच्छालितैः शस्त्रविशेषैः 'ओसारियाहिं' अवसारिताभिः=नादिताभिः 'उरुघंटियाहिं' उरुघण्टिकाभिः=विशालघण्टाभिः 'छिप्पतूरेहिं'

णिक्कट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दीहाहिं, ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया उक्किट्ठी सीहणाये चोरकलकल रव समुद्दरव भूय करेमाणे) चोरपल्ली से वह किस तरह की स्थिति में निकला-यही बात सूत्रकार इन पंक्तियों में कह रहे हैं-वे कहते हैं कि जब वह अपनी चोरपल्ली में से निकला तो उस समय उसने अपने शरीर पर कवच को सज्जित करके कशाबंधन से अच्छी तरह बांध रखा था "गृहीतायुधप्रहरण" आयुध और प्रहरण उसके दोनों हाथों में थे। रीछ के रोम से युक्त गोमुखाकार पट्टिका से, म्यान से बाहिर खेंची हुई तलवारों से, कंधों पर लटकते हुए भाथों-तूणीरों-से ज्या पर चढे हुए धनुषों से, तूणीर से निकाले गये बाणों से ऊपर उछालेगये शस्त्र विशेषों से,

---

(सण्णद्ध जाव गहियाउहपहरणे माइयगोमुहिएहिं फलएहिं णिक्कट्ठाहिं असिलट्ठीहिं अंसगएहिं तोणेहिं सजीवेहिं धणूहिं समुक्खित्तेहिं सरेहिं समुल्लालियाहिं दिहाहिं ओसारियाहिं उरुघंटियाहिं छिप्पतूरेहिं वज्जमाणेहिं महया २ उक्किट्ठसीहणाये चोरकलकलरव समुद्दरव भूय करेमाणे)

ચોરપલ્લીમાંથી તેઓ કેવા રીતે બહાર નીકળ્યા એ જ વાત સૂત્રકાર આ પંક્તિઓમાં સ્પષ્ટ કરી રહ્યા છે તેઓ કહે છે કે જ્યારે તે પોતાની ચોરપલ્લીમાંથી નીકળ્યો ત્યારે તેણે પોતાના શરીર ઉપર કવચ ધારણ કરીને તેને કશાબંધનથી સારી રીતે બાંધી રાખ્યું હતું "ગૃહિતાયુધપ્રહરણ" આયુધ અને પ્રહરણ તેના બંને હાથોમાં હતા રીંછના રોમથી યુક્ત ગોમુખાકાર પટ્ટિકાથી, મ્યાનમાંથી બહાર કાઢેલી તલવારોથી ખભાઓ ઉપર લટકતા તૂણીરોથી, જ્યા ઉપર ચઢેલા ધનુષોથી, તૂણીરમાંથી કાઢવામાં આવેલા બાણોથી, ઉપર ફેંકવામાં આવેલા શસ્ત્ર વિશેષોથી,

वज्जमाणेहिं ' क्षिप्रतूर्यैः वाद्यमानैः=द्रुत वाद्यमानैः तूर्यैः उपलक्षितः सन् ' महया-महया उक्किट्ठसीहणाये चोरकलकलरवं ' महामहोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलरव-अत्यन्तोत्कृष्टसिंहनादचोरकलकलशब्दं समुद्ररवभूत=समुद्रवेलावृद्धिसमये ध्वनिमिवकुर्वन्, यद्वा महता महता उत्कृष्टसिंहनादेन-' लुप्ततृतीयान्त पदम् ' स्वकृतोत्कृष्टसिंहनादेनेत्यर्थः, शेष पूर्ववत् । सिंहगुहातश्चोरपल्लीतः प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव राजगृह नगर तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य राजगृहस्य नगरस्य अदूरसामन्ते एक महद् ' गहण ' गहनम्=वनम् अनुप्रविशति, अनुप्रविश्य, दिवसम्=शेषदिवसभाग क्षपयन्=व्यतियन् तिष्ठति ॥ सू०५ ॥

शब्दायमान-बड़े २ घटों से जल्दी २ बजते हुए बाजोंसे वह उपलक्षित-युक्त था। तथा उसके निकलने पर जो चोरों का कलकल रव हुआ-वह सिंह की गर्जना के जैसा महान उच्चस्वर था-। तथा जिस समय समुद्र बढ़ता है उस समय जैसा उसका शब्द होता है-वैसा ही वह कल २ रव गंभीर था। (पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूर सामते एगं मह गहण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवस खवेमाणे चिट्ठइ) चोरपल्ली से निकलकर वह जहा राजगृह नगर था वहां आया-वहां आकर के वह राजगृह नगर के अदूरसामत-न अति दूर न अति समीप रहे हुए एक महान जगल मे छिप रहे वहा छिपकर उसने अपना वह दिवस वहीं पर ठहर कर समाप्त कर दिया ॥ सू०५ ॥

જલ્દી જલ્દી વાગતા વાજાઓથી તે યુક્ત હતો તેમજ જ્યારે તે નીકળ્યો ત્યારે ચોરોને જે ઘોઘાટ થયો તે સિંહની ગર્જના જેવો મહા ધ્વનિ હતો તેમજ જ્યારે સમુદ્રમા ભરતી આવે છે અને ત્યારે જેવો તેનો ધ્વનિ હોય છે, તે માણસોનો ધ્વનિ પણ તેવો જ ગભીર હતો (पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामते एग मह गहण अणुपविसइ, अणुपविसित्ता दिवस खवेमाणे चिट्ठइ) ચોરપલ્લીમાથી નીકળીને જ્યા રાજગૃહ નગર હતું ત્યા તે આવ્યો ત્યા આવીને તે રાજગૃહ નગરથી ઘણે દૂર પણ નહિ અને ઘણા નજીક પણ નહિ એવા એક મોટા વનમા છુપાઈને રહ્યા ત્યા છુપાઈને તેણે પોતાનો તે દિવસ ત્યા જ પસાર કરી દીધો ॥સૂ૦૫॥

मूलम्-तएण से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयसि निसत पडिनिसतसि पचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइयगोमुहिएहि फलएहि जाव मूइआहि उरुघंटियाहि जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदगवत्थिं परामुसइ, आयते चोक्खे सुइभूए तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उद-एण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुप-विसइ, अणुपविसित्ता, महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणे२ एवं वयासी -एव खलु अह देवाणुप्पिया ! चिलाए णाम चोरसेणावई पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जो णं णवियाए माउ याए दुद्ध पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थ वाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिह विहा डेइ। तएण से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि सद्धि गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहि पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता, रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि। ततः खलु स चिलातश्चोरसेनापतिः 'अद्ध रत्तकालसमयंसि' अर्धरात्रकालसमये=मध्यरात्रे, कीदृशे 'निसतपडिनिसते' निशान्तप्रतिनिशान्ते=निशान्त=जन ध्वनिरहित प्रतिनिशान्त=प्रत्येकगृह यस्मिन् तस्मिन्, जने प्रसुप्ते सतीत्यर्थः, पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धम् ' माइयगोमुहिएहिं ' माइकगोमुखितैः, उदररक्षार्थं भल्लूकरोमावृतैर्गोमुखाकारैः 'फलएहिं' फलकैः=पट्टकैः उदरवद्धकाष्ठफलकैरित्यर्थः, यावत् 'मूइआहिं उरुघटियाहिं' मूकिताभिरुरुर्घण्टिकाभिः=निः शब्दी कृताभि विशालघण्टाभिर्युक्तः यत्रैव राजगृहस्य नगरस्य पौरस्त्य द्वार तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, 'उदगवत्थि' उदकबस्ति=चर्ममयजलपात्रम्, 'मसक' इति प्रसिद्धम् ' परामुसइ ' परामृशति=गृह्णाति, अनन्तरम् ' आयते ' आचान्त = कृतमुखादि प्रक्षालनः ' चोक्खे ' चोक्षः=स्वच्छः अतएव ' तालुग्घाडणि विज्ज '

' तएण से चिलाए चोरसेणावई ' इत्यादि।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (चोरसेणावई से चिलाए) चोरसेनापति वह चिलात चोर (निसतपडिनिसते अद्धरत्तकालसमयंसि) जब जन ध्वनिरहित प्रत्येक घर हो गया ऐसे मध्यरात्रिके समयमें (पचहिं चोर सएहिं सद्धिं) उन पांचसौ चोरों के साथ (माइय गोमुहिएहिं फलएहिं जाव मूइआहिं उरुघटियाहिं जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ) अपने उदर की रक्षा के निमित्त बद्धभल्लूक के रोमों से आवृत हुए गोमुखाकार काष्ठफलको से यावत् निःशब्दीभूत विशाल घटिकाओ से युक्त होकर जहा राजगृह नगर का पूर्वदिशा का द्वार था वहा आया। (उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ, आयते, चोक्खे, सुइभूए, तालुग्घाडणिविज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता रायगिहस्स

' तएण से चिलाए चोरसेणावइ' इत्यादि--

ટીકાર્થ-(तएण) ત્યારબાદ (चोरसेणावई से चिलाए) ચોર સેનાપતિ તે ચિલાત ચોર (निसतपडिनिसते अद्धरत्तकालसमयंसि) જ્યારે દરેકે દરેક ઘરમા માણસોનો અવાજ એકદમ બધ થઈ ગયો, એવા તે મધ્યરાત્રિના સમયે (पचहिं चोरसएहि सद्धिं) તે પાચસો ચોરોની સાથે

(माइय गोमुहिएहि फलएहि जाव मूइआहि उरुघटियाहि जेणेव राय गिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ)

પોતાના પેટની રક્ષા માટે રીંછના રોમોથી આવૃત્ત થયેલા ગોમુખાકાર કાષ્ઠ ફલકોથી યાવત્ શાત થઈ ગયેલી મોટી ઘટિકાઓથી યુક્ત થઈને જ્યા રાજગૃહ નગરનુ પૂર્વ દિશાનુ દ્વાર હતુ ત્યા આવ્યા (उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ आयते चोक्खे सुइभूए, तालुग्घाडणि विज्ज आवाहेइ, आवाहित्ता

मूलम्-तएणं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्तकालसमयंसि निसत पडिनिसतंसि पचहिं चोरसएहि सद्धिं माइयगोमुहिएहि फलएहि जाव मूइआहि उरूघंटियाहि जेणेव रायगिहस्स नयरस्स पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदगवत्थि परामुसइ, आयंते चोक्खे सुइभूए तालुग्घाडणिविज्जं आवाहेइ, आवाहित्ता, रायगिहस्स दुवारकवाडे उद-एण अच्छोडेइ, कवाड विहाडेइ विहाडित्ता रायगिह अणुप-विसइ, अणुपविसित्ता, महया२ सद्देणं उग्घोसेमाणे२ एव वयासी -एव खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए णामं चोरसेणावई पचहि चोरसएहि सद्धि सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे, त जो ण णवियाए माउ याए दुद्धं पाउकामे से णं णिगच्छउ त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थ वाहस्स गिह तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिह विहा-डेइ। तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहि चोरसएहि सद्धिं गिह घाइज्जमाण पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहि पुत्तेहि सद्धि एगंत अवक्कमइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाएइ घाइत्ता, सुबहु धणकणग जाव सावएज्ज सुसुम च दारिय गेण्हइ, गेण्हित्ता, रायगिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता, जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ सू० ६ ॥

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं 'घाउकामे' घातयितुकामः=लुण्ठयितुकामः हे देवानुप्रियाः! यूयं शृणुत, पञ्चशतचौरैः सहाहं चिलातश्चोरसेनापतिरत्र धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् 'जो ण' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्याया मातृकाया 'दुद्धं पाउकामे' दुग्धं पातुकाम =यः खलु मदीयहस्तान्मृत्युं प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया मातुर्दुग्धाभिलापीभवेत् 'सेणं' स खलु 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छतु मम सम्मुख मागच्छतु 'त्ति कट्टु' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं तत्रैव

पांचसौ चोरों के साथ यहां सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से आया हुआ हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्थवाह के घर को लूटने की है-(त) इसलिये -(जो ण णवियाए, माउयाए, दुद्धं पाउकामे सेणं णिग्गच्छउ, त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गिहं विहाडेइ। तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहिं चोर-सएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंत अवक्कमइ,। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहुधणकणगं जाव सावएज्जं सुसमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमइ,पडिणिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलापी बन रहा हो

ચિલાત નામે ચોર છુ હમણા જ હુ પાંચસો ચોરોની સાથે અહીં સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી આવ્યો છુ ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને લૂટવાની મારી ઇચ્છા છે (त) માટે

(जोण णवियाए, माउयाए, दुद्धं पाउकामे सेणं णिग्गच्छउ, त्ति कट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिहं विहाडेइ, तएणं से धण्णे चिलाएणं चोरसेणावइणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंत अवक्कमइ। तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहु धणकणगं जाव सावएज्जं सुसमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडि णिक्खमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

જે નવી માતાનુ દૂધ પીવા ઇચ્છે છે એટલે કે મારા હાથથી મૃત્યુ પામીને ફરી બીજા ભવમા બનારી માતાનુ દૂધ પીવા જે ઇચ્છતો હોય તે

तालोद्घाटिनी विद्याम् ' आवाहेइ ' आवाहयति=स्मरति ' आवाहित्ता ' आवाह्य= स्मृत्वा राजगृहस्य द्वारकपाटानि उदकेन ' अच्छोडेइ ' आच्छोटयति=अभिषिञ्चति, ' आच्छोडित्ता ' आच्छोटय=अभिषिच्य, कपाट ' विहाडेइ ' विघाटयति= उद्घाटयति, विघाटय सकलचौरैः सहितः राजगृहमनुप्रविशति, अनुप्रविश्य महता महता=अतिमहता शब्देन ' उग्घोसमाणे २ ' उद्घोषयन् २=मुहुर्मुहुर्घोषणा कुर्वन् एवमवदत्, घोषणामकारमाह-एव खलु अह हे देवानुप्रिया ! चिलातो नाम चोरसेनापतिः पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्धम् सिंहगुहातश्चोरपल्लीत इह ' हव्व ' हव्य=

दुवारे कवाडे उदएण अच्छोडेइ कवाड विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिह अणुपविसइ अणुपविसित्ता महया २ सद्देण उग्घोसेमाणे २ एव वयासी -एव खलु अह देवाणुप्पिया चिलाए नाम चोरसेणावई पचहिं चोरस एहिं सद्धिं सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवा हस्स गिह घाउकामे) वहां आकर के उसने चर्ममय जलपात्र को-मसक को-अपने हाथ में लिया-और उसके जल से आचमन किया-आचमन करके जब वह शुद्ध परमशुचीभूत हो चुका-तब उसने तालोद्घाटिनी विद्या का आवाहन किया-स्मरण किया-और स्मरण करके राजगृह के द्वार कपाटों को उदक के छीटों से सिञ्चित किया। सिञ्चित करके फिर उसने उन किवाडों को खोला और खोल करके फिर वह समस्त चोरों के साथ राजगृह नगर के भीतर प्रविष्ट हो गया। प्रविष्ट होकर के उसने वहां बड़े२ आवाजसे बारबार घोषणा करते हुए इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! सुनो-मैं चोरसेनापति चिलात नाम का चोर हूँ-अभी २

रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएण अच्छोडेइ कवाड विहाडेइ, विहाडित्ता रायगिह अणुपविसइ, अणुपविसित्ता महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एव वयासी-एव खलु अह देवाणुप्पिया चिलाए नाम चोरसेणावई पचहिं चोरसएहिं सद्धिं सिंहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागए धण्णस्स सत्थवाहस्स गिह घाउकामे)

ત્યા આવીને તેણે ચામડાની થેલી-મશક-ને પોતાના હાથમા લીધી અને તેના પાણીથી આચમન કર્યુ આચમન કરીને જ્યારે તે શુદ્ધ પરમ શુચીભૂત થઈ ચૂક્યો ત્યારે તેણે તાલોદ્ઘાટિની વિદ્યાનુ આવાહન કર્યુ-સ્મરણ કર્યુ, અને સ્મરણ કરીને રાજગૃહના દરવાજાના કમાડોને પાણીથી સિંચિત કરીને તેણે તે કમાડોને ઉઘાડયા ઉઘાડીને તે બધા ચોરોની સાથે રાજગૃહ નગરની અંદર પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો પ્રવિષ્ટ થઈને તેણે ત્યા મોટા સાદે વારવાર ઘોષણા કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો ચોર સેનાપતિ

शीघ्रम् आगतः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं 'घाउकामे' घातयितुकामः=लुण्ठयितुकामः हे देवानुप्रियाः । यूयं शृणुत, पञ्चशतचौरैः सहाह चिलातश्चोरसेनापतिरत्रधन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं लुण्ठयितुमागतोऽस्मीति भावः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् 'जो ण' यः खलु 'णवियाए माउआए' नव्याया मातृकाया 'दुद्धं पाउकामे' दुग्धं पातुकाम =यः खलु मदीयहस्तान्मृत्युं प्राप्य पुनर्भाविभवभाविन्या नूतनाया मातुर्दुग्धाभिलाषीभवेत् 'सेण' स खलु 'णिग्गच्छउ' निर्गच्छतु मम सम्मुख मागच्छतु 'त्ति कट्टु' इतिकृत्वा=इत्युक्त्वा यत्रैव धन्यस्य सार्थवाहस्य गृहं तत्रैव

पांचसौ चोरों के साथ यहां सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से आया हुआ हूँ। मेरी इच्छा धन्यसार्थवाह के घर को लूटने की है-(त) इसलिये -(जो ण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्तिकट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गिहं विहाडेइ । तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोर-सएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे ४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगतं अवक्कमइ, । तएणं से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहुधणकणग जाव सावएज्जं सुसमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिणिक्खमइ,पडिणिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए) जो नवीन माता का दूध पीना चाहता हो-मेरे हाथ से मृत्यु को प्राप्त कर पुनः भाविभव में होनेवाली जननी का दुग्ध पान करने का जो अभिलाषी बन रहा हो

ચિલાત નામે ચોર છુ હમણા જ હુ પાંચસો ચોરોની સાથે અહીં સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી આવ્યો છુ ધન્ન સાર્થવાહના ઘરને લૂટવાની મારી ઇચ્છા છે (त) માટે

(जोण णवियाए, माउयाए, दुद्ध पाउकामे सेण णिग्गच्छउ, त्ति कट्टु जेणेव धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धण्णस्स गिहं विहाडेइ, तएण से धण्णे चिलाएण चोरसेणावइणा पचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे४ पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंत अवक्कमइ । तएण से चिलाए चोरसेणावई धण्णस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाइत्ता सुबहु धणकणग जाव सावएज्ज सुसमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडि णिक्खमइ, पडिक्खमित्ता जेणेव सीह गुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

જે નવી માતાનુ દૂધ પીવા ઇચ્છે છે એટલે કે મારા હાથથી મૃત્યુ પામીને ફરી બીજા ભવમા થનારી માતાનુ દૂધ પીવા જે ઇચ્છતો હોય તે

उपागच्छति, उपाग च धन्यस्य गृह ' विहाडेइ ' विघाटयति=उद्घाटयति । तत खलु स धन्यः सार्थवाहः चिलातेन चोरसेनापतिना पञ्चभिः चोरशतैः सार्द्ध गृह ' घाइज्जमाण ' घात्यमान=लुण्ठयमान पश्यति दृष्ट्वा, भीतः=भय प्राप्तः, त्रस्तः= त्रासगतः, त्रसितः=विशेषतस्त्रास प्राप्तः ' उव्विग्गे ' उद्विग्नः=अयमस्माक सर्वस्व मपहरति अहमस्य किमपि कर्तुं न शक्नोमीति हेतोः परमचिन्तामापन्नः, पञ्चभिः पुत्रैः सार्धम् ' एगत ' एकान्तम्=भयरहित स्थानम् ' अवक्कमइ ' अपक्राम्यति= अपगच्छति । ततः खलु स चिलात. चोरसेनापतिः धन्यस्य सार्थवाहस्य गृह घातयति=लुण्ठयति घातयित्वा लुण्ठयित्वा सुबहु ' धणकणग जाव सावएज्ज ' धनकनक यावत् स्वापतेयम्=धनकनक मणिमौक्तिकादिक द्रव्य सुसुमा च दारिका गृह्णाति, गृहीत्वा राजगृहात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव सिंहगुहा तत्रैव प्राधारयद् गमनाय=गन्तुमुद्यतोऽभूत् ॥ सू०६ ॥

-वही मेरे सम्मुख आवे-इस प्रकार कहकर वह जहा धन्यसार्थवाह का घर था वहा गया-वहा जाकर उसने धन्यसार्थवाह के घर को खोला जब धन्यसार्थवाह ने पाचसौ चोर के साथ चोरों सेनापति चिलात के द्वारा अपने घर को लुटता हुआ देखा-तो देखकर वह भय को प्राप्त हो गया-और त्रस्त एव त्रसित-विशेष त्रास को प्राप्त होकर अन्त में वह उद्विग्न बन गया यह हमारा सर्वस्व हरण कर रहा है और मैं इसका कुछ भी नही कर सकता हूँ-इस ध्यान से वह चिन्ताकुल हो गया-और चिन्ताकुल होकर अपने पाचो पुत्रों के साथ वहा से निर्भय स्थान में चला गया। चोर सेनापति चिलात ने धन्य सार्थवाह को खूब मनमाना लूटा और लूट करके उसमेंसे बहुत सा धन कनक, मणि, मौक्तिक आदि द्रव्यों को एव सुसमादारिका को ले लिया-। लेकर वह राजगृह नगर से

મારી સામે આવે આ પ્રમાણે કહીને તે જ્યા ધન્ય સાર્થવાહનુ ઘર હતુ ત્યા ગયો ત્યા જઇને તેણે ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને ઉઘાડયુ જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે પાચસો ચોરોની સાથે ચોર સેનાપતિ ચિલાત વડે પોતાના ઘરને લુટાતુ જોયુ ત્યારે જોઇને તે ભયભીત થઇ ગયો અને ત્રસ્ત તેમજ ત્રાસિત (વિશેષ ત્રાસ) પ્રાપ્ત કરીને છેવટે ઉદ્વિગ્ન થઇ ગયો આ અમારૂ સર્વસ્વ હરણ કરી રહ્યો છે અને હુ એનુ કઈ જ બગાડી શકતો નથી આ જાતનો વિચાર કરીને તે ચિંતાકુળ થઈ ગયો અને ચિંતાકુળ થઈને તે પોતાના પાચે પુત્રોની સાથે ત્યાથી નિર્ભય સ્થાનમા જતો રહ્યો ચોર સેનાપતિ ચિલાતે ધન્ય સાર્થવાહના ઘરને ખૂબ ઇચ્છા મુજબ લૂટયુ અને લૂટીને તેમાથી ઘણુ ધન, કનક, મણિ, મોતી વગેરે દ્રવ્યો તેમજ સુસમા દારિકાને લઈ લીધી ગૃહ

मूलम्--तएण से धन्ने सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवहुं धणकणगं सुसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता, महत्थ महग्घं महरिह पाहुड गहाय जेणेव णगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, त महत्थं महग्घ महरिह पाहुड जाव उवणेंति, उवणित्ता, एवं वयासी-एव खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पचहि चोरसएहि सद्धि ममगिह घाएत्ता धणकणगं सुंसुमं च दारिय गहाय जाव पडिगए। त इच्छामो ण देवाणुप्पिया ! सुसुमा दारियाए कूव गमित्तए, तुब्भ णं देवाणुप्पिया! से विउले धणकणगे, ममं सुंसुमा दारिया। तएणं ते णगरगुत्तिया धण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेति, पीडसुणित्ता संनद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया२ उक्किट्ठि० जाव समुद्दरवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छाति, णिग्गच्छित्ता, जेणेव चिलाए चोरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता, चिलाएणं चोरसेणाव-इणा सद्धि संपलग्गा यावि होत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेति। तएण ते पच चोरसया णयरगोत्तिएहि हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणगं विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ

वापिस निकला-और निकल करके जहा सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली थी-उस ओर चलने के लिये उद्यत हो गया॥ सू०६ ॥

નગરમાથી પાછો બહાર આવ્યો અને આવીને જ્યા સિંહગુફા નામે ચોરપલ્લી હતી તે તરફ રવાના થવા તૈયાર થઈ ગયો ॥ સૂત્ર ૬ ॥

समंता विप्पलाइत्था । तएणं ते णगरगुत्तिया ते विउलं धण कणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छंति । तएण से चिलाए त चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसुम दारियं गहाय एगं महं अग्गामियं दीह-मद्ध अडवि अणुप्पविट्ठे । तएणं धण्णे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुह अवहीरमाणि पासित्ताणं पचहि पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्ठे सन्नद्धवद्ध० चिलायस्स पदमग्गवीहि अणुगच्छ-माणे अभिगज्जते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ । तएण से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सन्नद्धवद्ध० समणुगच्छ माण पासइ, पासित्ता अत्थामे अवले अवीरिए अपुरिसक्कार-परक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसुम दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते नीलुप्पल० असि परामुसइ, परामुसित्ता सुसुमाए दारियाए उत्तमगं छिदइ, छिदित्ता, त गहाय त अग्गामियं अडवि अणुप्पविट्ठे। तएण से चिलाए तीसे अगा-मियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठ दिसाभाए, सीहगुह चोरपल्लि असपत्ते अतरा चेव कालगए ।

एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओ-रालियसरीरस्स वतासवस्स जाव विद्धसणधम्मस्स वण्णहेउ जाव आहार आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं४ हिलणिज्जे २ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से चिलाए तक्करे ॥ सू० ७ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । तत' खलु स धन्य' सार्थवाहो यत्रैव स्वक गृह तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुवहु धनकनक सुसुमा च दारिकाम् अपहृता ज्ञात्वा ' महत्थ महग्घ महरिह ' महार्थं महार्घं महार्हम्=महानर्थः प्रयोजन यस्मिन् तत्=महार्थं=महाप्रयोजनकम् , बहुमूल्य पुनः महता योग्यम् ' पाहुडं ' प्राभृत= उपायन गृहीत्वा यत्रैव ' णगरगुत्तिया ' नगरगोप्तृकाः=नगररक्षका' कोट्टपाला-दयः तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य तत् महार्थं यावत्=महार्घं महार्हं प्राभृतम् ' उवणेइ ' उपनयति=समर्पयति, उपनीय=समर्प्य एवमवदत्–एव खलु हे देवानु-

' तएण से धन्ने सत्थवाहे' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (से धन्ने सत्थवाहे) वह धन्य सार्थवाह (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) जहा अपना घर था वहां आया (उवागच्छित्ता सुबहु धणकणग सुसम च दारिय अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घ महरिय पाहुड गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ) वहा आकरके उसने अपने घरमें से बहुत सा धन कनक एव सुसमा दारिका को हरण किया हुआ जब जाना तब वह महार्थ बहुमूल्य एव महापुरुषो के योग्य भेंट लेकर जहां नगर रक्षक –कोट्टपाल–आदि थे वहा गया–(उवागच्छित्ता त महत्थ महग्घ महरिह पाहुड जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) वहा जाकर उसने उस महाप्रयोजन साधक भूत बहुमूल्य तथा महापुरुषों के योग्य भेंट को उनके समक्ष रखदिया–और रखकर उनसे उसने इस प्रकार कहा–(एव

' तएण से धन्ने सत्थवाहे ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (से धन्ने सत्थवाहे) ते धन्य सार्थवाह (जेणेव सएगिहे तेणेव उवागच्छइ) ज्या पोतानु घर हतु त्या आव्यो.

(उवागच्छित्ता सुबहु धणकणग सुसम च दारिय अवहरिय जाणित्ता महत्थ महग्घ महरिय पाहुड गहाय जेणेव नगर गुत्तिया तेणेव उवागच्छइ)

त्या आवीने तेणे पोताना घरमाथी पुष्कळ प्रमाणमा धन, कनक अने सुसमा दारिकानु हरण करवामा आवेलु जाणीने ते महार्थ, बहु किंमती अने महापुरुषोने योग्य भेट लईने ज्या नगर–रक्षक–कोट्टपाल–वगेरे हता त्या गयो. (उवागच्छित्ता त महत्थ महग्घ महरिह पाहुड जाव उवणेति, उवणित्ता एव वयासी) त्या जईने तेणे ते महाप्रयोजन साधकभूत बहु किंमती तेमज महा पुरुषोने योग्य भेटने तेमनी सामे मूकी दीधी अने मूकीने तेमने तेणे आ प्रमाणे विनती करता कह्यु के—

प्रियाः ! चिलातश्चोरसेनापतिः सिंहगुहायाश्चोरपल्याः इह हव्यमागत्य पञ्चभिश्चोरशतैः सार्द्धम् मम गृहं 'घाएत्ता' घातयित्वा=लुण्ठयित्वा सुबहु धनकनकं सुंसुमा च दारिका गृहीत्वा 'जाव पडिगए' यावत् प्रतिगतः=पञ्चभिश्चोरशतैः सार्धं सिंहगुहां चोरपल्लीं प्रतिनिवृत्त इत्यर्थः, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् इच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः ! 'सुसुमा दारियाए सुंसुमा दारिकायाः 'कूवं' प्रत्यानयने 'गमित्तए' गन्तुम् । 'तुब्भेणं देवाणुप्पिया !' युष्माकं खलु हे देवानुप्रियाः ! तत्=अपहृत विपुल धनकनकम्=हे देवानुप्रियाः ! चौराऽपहृत धनकनादिकं सर्वं युष्माकं भवतु, मम सुंसुमा दारिका भवतु । ततः खलु ते नगरगोप्तृका

खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहु धण कणगं सुसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए-तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुसमा दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया) हे देवानुप्रियो सुनो चोर सेनापति चिलात चोर ने सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से यहां शीघ्र आकर पांचसौ चोरों के साथ मेरे घर पर डाका डाला है। उसमें उसने बहुत सा धन, कनक एवं सुसमा दारिका को लूटा है और-लूटकर वह वहां वापिस अपने स्थान पर चला गया है। अतः हे देवानुप्रियो ! मैं चाहता हूँ कि आप लोग उस सुसमा दारिका को लेने के लिये जावें, मिलने पर वह हृत धनकनक आदि सब आपका रहे-और सुसमा दारिका मेरी

(एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहु धणकणगं सुसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए तं इच्छामो णं देवाणुप्पिया ! सुसमा दारियाए कूवं गमित्तए-तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાંભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાંચસો ચોરોની સાથે મારા ઘરમાં ધાડ પાડી છે તેમાં તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂંટ કરી છે લૂંટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! મારી ઈચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને મેળવી લીધા બાદ તે અપહૃત કરાયેલું ધન કનક વગેરે બધું તમે રાખજો અને સુસમા દારિકાને મને સોંપી દેજો

पुरुषा धन्यस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य 'सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा' सन्नद्ध यावत् गृहीतायुधप्रहरणाः=सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा यावद् गृहीतायुधप्रहरणा इत्यस्य व्याख्या पूर्ववद् बोध्या, 'महया २ उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयपिव' महा महोत्कृष्ट यावत् समुद्ररवभूतमिव, वेलावृद्धिसमये समुद्रध्वनिमिव महाध्वनिं 'करेमाणा' कुर्वन्तो राजगृहात् निर्गच्छन्ति, निर्गत्य

रहे। (तएण ते णगरगुत्तिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ पडिसुणेति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणा महया २ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूयं पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छति णिगच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरे-तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चिलाएण चोरसेणावइणा सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था तएण ते णगरगुत्तिया चिलाय चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेति, तएणं ते पच चोरसया णयरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणग विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समता विप्पलाइत्था) धन्य सार्थवाह की इस बात को सुनकर उन नगर रक्षकों ने स्वीकार कर लिया। और स्वीकार करके उसी समय उन्हो ने अपने २ शरीरपर कवच को सज्जित करके कशाबधन से बाध लिया यावत् आयुध और प्रहरणो को ले लिया-। वेलावृद्धि के समय में जिस प्रकार समुद्र की ध्वनि होती है-उसी प्रकार की महाध्वनि करते हुए फिर वे राजगृह नगर

(तएण ते णगरगुत्तिया धण्णस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठ पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता सन्नद्ध जाव गहियाउहपरणा महया २ उक्किट्ठ० जाव समुद्दरवभूय पिवकरेमाणा रायगिहाओ णिग्गच्छति, णिगच्छित्ता जेणेव चिलाए चोर-तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता चिलाएण चोरसेणावइणा सद्धिं सपलग्गा यावि होत्था-तएण ते णगरगुत्तिया चिलाय चोरसेणावइ हयमहिय जाव पडिसेहेंति, तएण ते पच चोरसया णयरगोत्तिएहिं हयमहिय जाव पडिसेहिया समाणा त विउल धणकणग विच्छड्डेमाणा य विप्पकिरेमाणा य सव्वओ समता विप्पलाइत्था)

ધન્ય સાર્થવાહની તે વાતને સાભળીને નગર રક્ષકોએ તેને સ્વીકારી લીધી અને સ્વીકારીને તેમણે તરત જ પોતપોતાના શરીરો ઉપર કવચો પહેરીને કશા બધનોથી બાધ્યા યાવત્ આયુધ અને પ્રહરણોને સાથે લઇ લીધા ભરતીના સમયે જેવો સમુદ્રનો ધ્વનિ હોય છે તેવો જ મહાધ્વનિ કરતા તેઓ રાજગૃહ નગરમાથી બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને જ્યા ચોર સેનાપતિ તે

प्रियाः ! चिलातश्चोरसेनापतिः सिंहगुहायाश्चोरपल्ल्याः इह हव्यमागत्य पञ्चभिश्चोर शतैः सार्द्धम् मम गृहे 'घाएत्ता' घातयित्वा=लुण्ठयित्वा सुबहु धनकनक सुसुमा च दारिका गृहीत्वा 'जाव पडिगए' यावत् प्रतिगतः=पञ्चभिश्चोरशतैः सार्धं सिंहगुहा चोरपल्लीं प्रतिनिवृत्त इत्यर्थ, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् इच्छामः खलु हे देवानुप्रियाः ! 'सुसुमा दारियाए सुसुमा दारिकाया 'कूव' प्रत्यान यने 'गमित्तए' गन्तुम्। 'तुब्भेण देवाणुप्पिया !' युष्माकं खलु हे देवानु प्रिया ! तत्=अपहृत विपुल धनकनकम्=हे देवानुप्रियाः ! चोराऽपहृत धनकना दिकं सर्वं युष्माकं भवतु, मम सुसुमा दारिका भवतु। तत• खलु ते नगरगोप्तृका

खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहु धण कणग सुसुमं च दारियं गहाय जाव पडिगए-त इच्छामो ण देवाणु प्पिया ! सुसमा दारियाए कूव गमित्तए-तुब्भ ण देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया) हे देवानुप्रियो सुनो चोर सेनापति चिलात चोर ने सिंहगुहा नाम की चोरपल्ली से यहां शीघ्र आकर पाचसौ चोरों के साथ मेरे घर पर डाका डाला है। उसमें उसने बहुत सा धन, कनक एव सुसमा दारिका को लूटा है और-लूटकर वह वहा वापिस अपने स्थान पर चला गया है। अतः हे देवानुप्रियों ! मैं चाहता हूँ कि आप लोग उस सुसमा दारिका को लेने के लिये जावें, मिलने पर वह धन धनकनक आदि सब आपका रहे-और सुसमा दारिका मेरी

(एव खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इह हव्वमागम्म पचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता, सुबहु धणकणगं सुसमं च दारियं गहाय जाव पडिगए त इच्छामो ण देवाणुप्पिया ! सुसमा दारियाए कूव गमित्तए-तुब्भ ण देवाणुप्पिया ! से विउले धणकणगे मम सुसमा दारिया)

હે દેવાનુપ્રિયો ! સાભળો, ચોર સેનાપતિ ચિલાત ચોરે સિંહગુહા નામની ચોરપલ્લીથી એકદમ અહીં આવીને પાચસો ચોરોની સાથે મારા ઘરમા ધાડ પાડી છે તેમા તેણે ઘણું ધન, કનક અને સુસમા દારિકાની લૂટ કરી છે લૂટ કરીને તે પાછો પોતાના સ્થાને જતો રહ્યો છે એથી હે દેવાનુપ્રિયો ! મારી ઇચ્છા છે કે તમે સુસમા દારિકાને પાછી લેવા માટે જાઓ અને તેને મેળવી લીધા બાદ તે અપહૃત કરાયેલુ ધન કનક વગેરે બધુ તમે રાખજો અને સુસમા દારિકાને મને સોપી દેજો

नगरगोप्तृकाः=नगररक्षकाः=त विपुल धनकनक०=धनकनकादिक गृह्णन्ति, गृहीत्वा, यत्रैव राजगृह नगर तत्रैव उपागच्छन्ति । ततः खलु स चिलातः ता चोरसेना 'हयमहिय जाव' हतमथित यावत्=हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतित चिह्नध्वजपताकाम् यावद् दृष्ट्वा भीतस्त्रस्तः सुंसुमा दारिका गृहीत्वा एका महतीम् 'अग्गामिय' अग्रामिकाम्=ग्रामरहिताम् 'दीहमद्ध' दीर्घाध्वा=दीर्घमार्गाम् 'अडविं' अटवीम्-अनुप्रविष्टः । ततः खलु धन्य' सार्थवाह. सुसुमा दारिका चिलातेन 'अडवीमुह' अटवीमुखम्=अरण्यसम्मुखम्' अवहीरमाणिं' अपह्रिय माणाम्-नीयमाना 'पासित्ता' दृष्ट्वा पञ्चभि पुत्रै सार्द्धम् 'अप्पछट्ठे' आत्म-षष्ठ. 'सनद्धबद्ध०' सन्नद्धबद्धवर्मितकवचः चिलातस्य 'पदमग्गवीहिं' पद

गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छन्ति । तएण से चिलाए त चोरसेणं तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसम दारिय गहाय एग मह अग्गामिय दीहमद्ध अडविं अणुप्पविट्ठे) उन नगर रक्षको ने उस विपुल धन कनक आदिको ले लिया और लेकर राजगृह नगर में वापिस आ गये। इस के बाद वह चिलात चोर अपनी उस सेना को नगर रक्षकों द्वारा हत मथित प्रवल वीरवाली एव घातित तथा निपतित चिन्ह ध्वज पताका वाली देखकर त्रस्त हो गया और सुसमादारिका को लेकर एक बडी भारी ग्रामरहित अटवी में घुस गया (तएण धण्णे सत्थवाहे सुसम दारियं चिलाएण अडवीमुह अवहिरमाणिं पासित्ता ण पचहि पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्ध चिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हाक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे

(तएण ते णयर गुत्तिया त विउल धणकणग गेण्हति, गेण्हित्ता, जेणेव रायगिहे तेणेव उवागच्छति । तएण से चिलाए त चोरसेण तेहिं णयरगुत्तिएहिं हयमहिय जाव भीए तत्थे सुसम दारिय गहाय एग मह अग्गामिय दीहमद्ध अडविं अणुप्पविट्ठे)

તે નગર રક્ષકોએ તે પુષ્કળ પ્રમાણમા પડેલા ધન, કનક વગેરેને લઇ લીધુ અને લઈને રાજગૃહ નગરમા પાછા આવી ગયા ત્યારપછી તે ચિલાત ચોરે પોતાની તે ચોર સેનાને નગર રક્ષકો વડે હત, મથિત તેમજ ઘાતિત અને નિપતિત ચિહ્નધ્વજ પતાકાઓવાળી જોઇને ત્રસ્ત થઈ ગયો અને સુસમા દારિકાને લઇને એક ભારે મોટી ગ્રામરહિત અટવીમા પેસી ગયો

(तएण धण्णे सत्थवाहे सुसम दारिय चिलाएण अडवीमुह अवहीरमाणिं पासित्ता ण पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्ठे सन्नद्धबद्धचिलायस्स पदमग्गवीहिं अणुगच्छमाणे अभिगज्जते हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जेमाणे अभिहासे-

यत्रैव चिलातश्चोरः, तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य चिलातेन चोरसेनापतिना सार्धं 'संपलग्गा' सम्प्रलग्नाः=युद्धं कर्तुं प्रवृत्ताश्चापि अभवन्। ततः खलु नगरगोप्तृकाः चिलातं चोरसेनापतिं 'हयमहिय० जाव' हतमथित यावत्=हतमथितप्रवरवीरघातितनिपतितचिह्नध्वजपताकं=हताः=मारिताः, मथिताः=निश्शेषतः प्रापिताः, प्रवरवीराः=श्रेष्ठवीराः यस्यासौ हतमथितप्रवरवीरः, घातितः=घातः शस्त्रादिप्रहारेण क्षतिः, स संजातोऽस्य घातितः क्षत इत्यर्थः, निपतिता=भूमौ पतिता चिह्नध्वज पताका यस्याऽसौ, निपतितचिह्नध्वजपताकः, एतेषां कर्मधारयः, तम्, यावत् प्रतिषेधयन्ति=निवारयन्ति। ततः खलु ते 'पंचचोरसया' पञ्चशतचौराः 'णगरगोत्तिएहिं' नगरगोप्तृकैः=नगररक्षकैः पुरुषैः 'हयमहिय जाव पडिसेहिया' हतमथितयावत्प्रतिषेधिताः=प्रतिषेधिताः सन्तः तद् विपुलं धनकनकं=धनकनकमणिमौक्तिकादिकं 'विच्छड्डेमाणा' विच्छर्दयन्तः=प्रक्षिपन्तः 'विप्पकिरेमाणा य' विप्रकिरन्तश्च=इतस्ततो विकिरणं कुर्वन्तः 'सव्वओ समंता' सर्वतः समन्तात्=चतुर्दिक्षु 'विप्पलाइत्था' विप्लायन्त=पलायिताः ततः खलु ते

से बाहर निकले-और निकलकर जहां चोर सेनापति वह चिलात चोर था वहां गये-वहां पहुँचते ही उनका चोर सेनापति उस चिलात चोर के साथ युद्ध होना प्रारंभ हो गया-उस युद्ध में उन्हों ने उस चिलात के सैन्य को पहिले खूब मारा-पीटा-बाद में उन्हें बिलकुल नष्ट भ्रष्ट कर दिया। कितनेक चोरों को उन्हों ने क्षत किया। उसकी चिह्न ध्वजपताकाओं को जमीन पर डाल दिया। इस प्रकार उसे हरतरह परास्त कर दिया। जब वे पांचसौ चोर नगररक्षक पुरुषों द्वारा हर प्रकारसे हतमथित यावत् प्रतिषेधित हो चुके तब वे उस विपुल धनकनक मणिमौक्तिक आदिको छोडकर तथा इधर उधर डालकर सर्व प्रकारसे चारों दिशाओंमें इधर उधर भाग गये। (तएणं ते णयरगुत्तिया तं विउलं धणकणग

ચિલાત ચોર હતો ત્યાં ગયા ત્યાં જતાંની સાથે જ ચોર સેનાપતિ ચિલાતની સાથે તેમનું યુદ્ધ શરૂ થઈ ગયું યુદ્ધમાં તેમણે પહેલાં તો ચિલાતની સેના સાથે ખૂબ માર-પીટ કરી અને ત્યારપછી તેને નષ્ટ-ભ્રષ્ટ કરી નાખી કેટલાક ચોરોને તો તેમણે ક્ષત (ઘવાયેલા) કર્યા તેમની ચિહ્નભૂત ધ્વજા પતાકાઓને જમીનદોસ્ત કરી નાખી આ પ્રમાણે તેને બધી રીતે હરાવી દીધો જ્યારે તે પાંચસો ચોરો નગર રક્ષક પુરુષો વડે સર્વ રીતે હત, મથિત યાવત્ પ્રતિષેધિત થઈ ગયા ત્યારે તેઓ તે પુષ્કળ ધન, કનક, મણી, મોતી વગેરેને ત્યાં જ મૂકીને આમતેમ નાખીને ચારે દિશાઓમાં આમતેમ પલાયન '

पुरुषकारः=पौरुषम् , पराक्रमः=सामर्थ्यं, तद्रहितः सन् ' जाहे ' यदा नो शक्नोति सुसुमा दारिकां ' णिव्वाहित्तए ' निर्वाहयितु=वोढुम् , ' ताहे ' तदा ' सते ' श्रान्तः=परिश्रम गतः, ' तते ' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, ' परितते ' परितान्तः= सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, ' नीलुप्पल० ' नीलोत्पल०=नीलोत्पगवलगुलि कादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् ' असिं ' करवालं ' परामुसइ ' परामृशति= कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुसुमाया दारिकायाः ' उत्तमग ' उत्तमाङ्ग=शिरः

अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसम दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिंदइ, छिंदित्ता, त गहाय त अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे अग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीह गुहं चोरपल्लिं अस पत्ते अतराचेव कालगए) जब चिलात चोर ने उस धन्यसार्थवाह को पाचो पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ होकर एव कवच आदि से सुसज्जित होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा–तब वह देख कर आत्मबल रहित हो गया। इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुसमा दारिका को अपने पास रखने के लिये शक्तिशाली नही हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त–ग्लानि युक्त और परितात सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल, गवलगुलिका, आदि विशेषणो वाली अपनी तलवार को उठाया–म्यान

परक्कमे जाहे णो सचाएइ सुसम दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमग छिंदइ, छिंदित्ता, त गहाय त अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे अग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुह चोरपल्लिं असपत्ते अतरा चेव कालगए)

જ્યારે ચિલાત ચોરે તે ધન્ય સાર્થવાહને પાચે પુત્રોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને તેમજ કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઈને પોતાની પાછળ પાછળ આવતો જોયો ત્યારે તે જોઈને આત્મબળ વગરનો થઈ ગયો આ પ્રમાણે સેના રહિત ઉત્સાહ રહિત તેમજ પૌરુષ અને પરાક્રમ રહિત થઈ ગયેલો તે જ્યારે સુસમા દારિકાને પોતાની પાસે રાખવામા પણ અસમર્થ થઈ ગયો ત્યારે તેણે શ્રાત, તાત, ગ્લાનિ યુક્ત અને પરિતાત તેમજ બધી રીતે ખિન્નતા પ્રાપ્ત કરીને નીલોત્પલ, ગવલ ગુલિકા વગેરે વિશેષણોવાળી પોતાની તરવારને ઉપાડી અને મ્યાનમાથી બહાર કાઢી અને બહાર કાઢીને સુસમા દારિકાનુ માથુ કાપી

मार्गविधिं=पदमार्गप्रचारम्=चरणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो धावन् 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघवद्गर्जनां कुर्वन् 'हक्कारेमाणे' 'हंभो' दुष्ट! तिष्ठ-तिष्ठ' इत्यादि, वाक्यैः हक्कारयन्=आकारयन् 'पुक्कारेमाणे' पूत्कारयन् 'तिष्ठ २, नोचेत्त्वां हनिष्यामीत्यादिवाक्यैः' तमाह्वयन् 'अभितज्जेमाणे' अभितर्जन्='रे निर्लज्ज' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कुर्वन्, 'अभितासेमाणे' अभित्रासयन्=शस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिट्ठओ' पृष्ठतः=चिलातचोरस्य पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=पश्चाद्धावति। ततः खलु स चिलातः तं धन्यं सार्थवाहं पञ्चभिः पुत्रैः सार्द्धम् 'अप्पछट्ठं' आत्मषष्ठं 'सन्नद्धबद्धवर्मितकवचं यावत् समनुगच्छन्तं=पश्चाद्धावन्तं पश्यति, दृष्ट्वा 'अत्थामे ४' अस्थामा=आत्मबलरहितः, अबलः=सैन्यरहितः, अवीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः सन्

अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ) धन्यसार्थवाह ने जब सुसमा दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई जब जाना-तब वह अपने पाचों पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ होकर कवच बांध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट! ठहर ठहर इस प्रकार से कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज! इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला।

(तएणं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्ध० समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्ठओ अणुगच्छइ)

જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે સુંસમા દારિકાને ચિલાત ચોર વડે અટવીમાં હરણ કરીને લઈ જવાયેલી જાણી, ત્યારે તે પોતાના પાંચે પુત્રોની સાથે આત્મ ષષ્ઠ થઈને કવચ બાંધીને તે ચિલાત ચોરની પાછળ તેના પદ ચિહ્નોનું અનુ સરણ કરતો મેઘના જેવી ધ્વનિ કરતો "અરે ઓ દુષ્ટ! ઊભોરે, ઊભોરે," આ પ્રમાણે કહેતો "ઊભોરે, ઊભોરે, નહિતર મરી ગયેલો જાણજે" આ પ્રમાણે હાકલ કરતો, તેને બોલાવતો 'અરે નિર્લજ્જ!' આમ તર્જિત કરતો તેમજ શસ્ત્ર અસ્ત્ર વગેરેને બતાવીને તેને ત્રાસિત કરતો ચાલ્યો.

(तएणं से चिलाए तं धण्णं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सन्नद्धबद्ध० समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

पुरुषकारः=पौरूषम् , पराक्रमः=सामर्थ्यं, तद्रहितः सन् 'जाहे' यदा नो शक्नोति सुंसुमा दारिकां 'णिव्वाहित्तए' निर्वाहयितु=वोढुम् , 'ताहे' तदा 'सते' श्रान्तः=परिश्रम गतः, 'तते' तान्तः=ग्लानिं प्राप्तः, 'परितते' परितान्तः= सर्वतोभावेन खिन्नतामुपगतः, 'नीलुप्पल०' नीलोत्पल०=नीलोत्पगवलगुलिकादि विशेषणविशिष्टमतितीक्ष्णम् 'असिं' करवाल 'परामुसइ' परामृशति= कोशान्निःसारयति, परामृश्य, सुंसुमाया दारिकायाः 'उत्तमंग' उत्तमाङ्ग=शिरः

अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे णो संचाएइ सुसमं दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे सते तते परितते निलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता, तं गहाय तं अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएण से, चिलाए तीसे अग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहं गुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतराचेव कालगए) जब चिलात चोर ने उस धन्यसार्थवाह को पांचो पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ होकर एवं कवच आदि से सुसज्जित होकर अपने पीछे २ आता हुआ देखा-तब वह देख कर आत्मबल रहित हो गया। इस तरह सैन्य रहित, उत्साह रहित तथा पौरुष और पराक्रम रहित बना हुआ वह जब सुंसमा दारिका को अपने पास रखने के लिये शक्तिशाली नही हो सका तब उसने श्रान्त, तान्त-ग्लानि युक्त और परितांत सर्वतोभावेन खिन्नता को प्राप्त होकर नीलोत्पल, गवलगुलिका, आदि विशेषणो वाली अपनी तलवार को उठाया-म्यान

परक्कमे जाहे णो संचाएइ सुसमं दारियं णिव्वाहित्तए, ताहे संते तंते परितंते नीलुप्पल० असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुसमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता, तं गहाय तं अग्गामियं अडविं अणुपविट्ठे, तएणं से, चिलाए तीसे अग्गामियाए अडवीए तण्हाए अभिभूए समाणे पम्हुट्ठदिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए)

જ્યારે ચિલાત ચોરે તે ધન્ય સાર્થવાહને પાંચે પુત્રોની સાથે આત્મષષ્ઠ થઈને તેમજ કવચ વગેરેથી સુસજ્જિત થઈને પોતાની પાછળ પાછળ આવતો જોયો ત્યારે તે જોઈને આત્મબળ વગરનો થઈ ગયો. આ પ્રમાણે સેના રહિત ઉત્સાહ રહિત તેમજ પૌરુષ અને પરાક્રમ રહિત થઈ ગયેલો તે જ્યારે સુંસમા દારિકાને પોતાની પાસે રાખવામાં પણ અસમર્થ થઈ ગયો ત્યારે તેણે શ્રાંત, તાંત, ગ્લાનિ યુક્ત અને પરિતાંત તેમજ બધી રીતે ખિન્નતા પ્રાપ્ત કરીને નીલોત્પલ, ગવલ ગુલિકા વગેરે વિશેષણોવાળી પોતાની તરવારને ઉપાડી અને મ્યાનમાંથી બહાર કાઢી અને બહાર કાઢીને સુંસમા દારિકાનું માથું કાપી

मार्गविधिं=पदमार्गप्रचारम्=चरणचिह्नम् 'अणुगच्छमाणे' अनुगच्छन्=पृष्ठतो व्रजन् 'अणुगज्जेमाणे' अनुगर्जन्=मेघवद्गर्जनां कुर्वन्. 'हक्कारेमाणे' 'हमो' दुष्ट! तिष्ठ-तिष्ठ' इत्यादि, वाक्यैः हक्कारयन्=आकारयन् 'पुक्कारेमाणे' पूत्कारयन् 'तिष्ठ २, नोचेत्त्वा हनिष्यामीत्याद्गिरावैः तमाह्वयन् 'अभितज्जेमाणे' अभितर्जन्=' रे निर्लज्ज ' इत्यादि वाक्यैस्तर्जनां कुर्वन्, 'अभितासेमाणे' अभित्रासयन्=अस्त्रशस्त्रादिदर्शनेन त्रासमुत्पादयन् 'पिट्ठओ' पृष्ठतः=चिलातचौरस्य पृष्ठदेशतः अनुगच्छति=पश्चाद्धावति। तत खलु स चिलातः तं धन्य सार्थवाह पञ्चभि पुत्रै सार्द्धम् 'अप्पछट्ठ' आत्मषष्ठ 'सन्नद्धबद्धवर्मितकवच यावत् समनुगच्छन्त=पश्चाद्धावन्त पश्यति, दृष्ट्वा 'अत्थामे ४' अस्थामा=आत्मबल रहितः, अबलः=सैन्यरहितः, अवीर्यः = उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रम सन्

अभितासेमाणे पिट्ठाओ अणुगच्छइ) धन्यसार्थवाह ने जब सुसमा दारिका को चिलात चोर द्वारा अटवी के मध्य में हरणकर ले जाई गई जब जाना-तब वह अपने पांचों पुत्रो के साथ आत्मषष्ठ होकर कवच बांध उस चिलात के पीछे २ पद चिह्नों का अनुसरण करता हुआ, मेघ के जैसी गर्जना करता हुआ, अरे ओ दुष्ट! ठहर ठहर इस प्रकार से कहता हुआ, पुकार करता हुआ ठहर जा ठहर जा-नहीं तो मैं तुझे मार डालूंगा इस प्रकार के वाक्यों से उसे बुलाता हुआ रे निर्लज्ज! इस प्रकार से उसे तर्जित करता हुआ, तथा अस्त्र शस्त्र आदि के दिखाने से उसे त्रास उत्पन्न करता हुआ चला।

(तएण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठ अन्नद्धबद्ध० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

माणे पिट्ठाओ अणुगच्छइ)

જ્યારે ધન્ય સાર્થવાહે સુસમા દારિકાને ચિલાત ચોર વડે અટવીમા હરણ કરીને લઈ જવાયેલી જાણી, ત્યારે તે પોતાના પાચે પુત્રોની સાથે આત્મ ષષ્ઠ થઈને કવચ બાધીને તે ચિલાત ચોરની પાછળ તેના પગ ચિહ્નોનુ અનુ સરણ કરતો મેઘના જેવી ધ્વનિ કરતો "અરે ઓ દુષ્ટ ! ઊભોરે, ઊભોરે," આ પ્રમાણે કહેતો "ઊભોરે, ઊભોરે, નહિતર મરી ગયેલો જાણજે" આ પ્રમાણે હાકલ કરતો, તેને બોલાવતો 'અરે નિર્લજ્જ!' આમ તર્જિત કરતો તેમજ શસ્ત્ર અસ્ત્ર વગેરેને બતાવીને તેને ત્રસિત કરતો ચાલ્યો.

(तएण से चिलाए त धण्ण सत्थवाह पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठ सन्नद्ध बद्ध० समणुगच्छमाण पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले

वलहेतु=शरीरबलवर्धनार्थम्, 'वीरियहेउ' वीर्यहेतुम्=आन्तरिकशक्तिसम्पादनार्थम्, आहारम् आहारयति, स खलु इह लोके एव बहूना श्रमणाना श्रमणीना श्रावकाणा श्राविकाणा च 'हीलणिज्जे जाव' हीलनीयो यावत्, यावत्पदेन, निन्दनीय, खिसनीय गर्हणीयो भवेत्, परलोकेऽपि दुःख प्राप्नोति, यावत्-चातुरन्तससारकान्तारम् 'अणुपरियट्टिस्सइ' अनुपर्यटिष्यति=भ्रमिष्यति, यथा स चिलातस्तस्करः-चिलाततस्करवदिति भाव ॥सू०७॥

मूलम्–तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहि सद्धि अप्प-छट्ठे चिलाय परिधाडेमाणे२ तण्हाए छुहाए य सते तते परितंते

णाण ४ हीलणिज्जे ३ जाव अणुपरियट्टिस्सइ जहाव से चिलाए तक्करे) अब प्रभु इस चिलात के दृष्टान्त से निर्ग्रन्थ आदिको को सबोधित कर प्रतिबोधित करते हैं–हे आयुष्मत श्रमणों! इसी तरह जो हमारा निर्ग्रन्थ श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर वातास्रववाले यावत् विध्वसन धर्मवाले इस औदारिक शरीर में कान्ति विशेष प्राप्ति के लिये सौन्दर्य आदिरूप विशेष के लिये, बलवर्धन के लिये तथा आन्तरिक शक्ति वृद्धिके लिये आहार को लेता है–करता है – वह इस लोक में अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक तथा श्राविका जनों द्वारा हीलनीय यावत् निदनीय, खिसनीय गर्हणीय तो होता ही है–परन्तु पर भवमें भी वह दुःखो कोही पाता है। यावत् ऐसा जीव इस चतुर्गतिरूप ससार कान्तार में चिलात चोर की तरह परिभ्रमण ही करता रहता है ॥ सूत्र ७ ॥

चेव बहूण समणाण४ हीलणिज्जे २ जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहाव से चिलाए तक्करे)
હવે પ્રભુ તે ચિલાતના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને નિર્ગ્રંથ વગેરેને સબોધિત કરીને આજ્ઞા કરે છે કે હે આયુષ્મત શ્રમણો! આ પ્રમાણે જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને વાન્તાસ્રવવાળા યાવત વિધ્વસન ધર્મવાળા આ ઔદારિક શરીરમા કાંતિ વિશેષની પ્રાપ્તિ માટે, સૌદર્ય વગેરે રૂપ વિશેષના માટે, બળવર્ધન માટે તેમજ આતરિક શકિતને વધારવા માટે આહાર ગ્રહણ કરે છે તે આ લોકમા ઘણા શ્રમણ, શ્રમણી, શ્રાવક તેમજ શ્રાવિકાઓ વડે હીલનીય યાવત્ નિંદનીય, ખિસનીય અને ગર્હણીય તો હોય જ છે પણ સાથે સાથે તે પરભવમા પણ દુખ જ મેળવે છે યાવત એવો જીવ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાતારમા ચિલાત ચોરની જેમ ભટકતો જ રહે છે ॥ સૂત્ર ૭ ॥

छिनत्ति, छित्त्वा, 'त' तत्=उत्तमाङ्गं गृहीत्वा ताम् अग्रामिकाम्=जनावासरहिताम् अटवीमनुप्रविष्ट=प्रवेशं कृतवान्। ततः खलु चिलातः तस्यामग्रामिकायामटव्यां 'तण्हाए' तृष्णया=पिपासया अभिभूतः सन् 'पिम्हुद्दिसाभाए' विस्मृतदिग्भागः=पूर्वादिदिशाविवेकविकलः सन् सिंहगुहां चोरपल्लीम् 'असंपत्ते' असम्प्राप्तः 'अंतराचेव' अन्तरा एव=मध्ये एव 'कालगए' कालगत=असौ चोरो मृत्युं प्राप्तवान्। अस्य शेषचरितं ग्रन्थान्तरादवसेयम्, शास्त्रेतु-उपयोगि चरितं तावन्मात्रं भगवतोपदिष्टम्।

अथ चिलातदृष्टान्तेन भगवान् निर्ग्रन्थादीन् सम्बोध्य प्रतिबोधयति —'एवामेव' एवमेव=अनेन प्रकारेणैव 'समणाउसो' आयुष्मन्तः श्रमणाः! 'जाव पव्वइए समाणे' यावत् प्रव्रजितः सन्=योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा आचार्योपाध्यायानां समीपे प्रव्रजितः सन् 'इमस्स' अस्य 'ओरालियसरीरस्स' औदारिकशरीरस्य वान्तास्रवस्य यावद् विध्वसनधर्मस्य 'वण्णहेउ' वर्णहेतु=कान्तिविशेषप्राप्त्यर्थम्, यावत्-'रूवहेउ' रूपहेतु=सौन्दर्यार्थम्, 'बलहेउ'

से बाहर किया और उठाकर सुसमा दारिका के मस्तक को काट डाला। उस कटे हुए मस्तक को लेकर फिर निर्जन अटवी में प्रवेश कर गया। उस अटवी में पिपासा से व्याकुल होकर वह पूर्वादि दिशाओं के विवेक से रहित हो गया-इस तरह वह पुनः वहां से पीछे वापिस अपनी सिंहगुहा नामकी चोर पल्ली में नहीं आ सका-और बीच ही में काल कवलित बन गया। इसका अवशिष्ट चरित्र ग्रंथान्तर से जान लेना चाहिये। यहां तो भगवान् ने जितना चरित्र इसका उपयोगी जाना उतनाही उपदिष्ट किया है।-(एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसण धम्मस्स वण्णहेउ जाव आहार आहारेइ से ण इहलोए चेव बहूणं सम

નાખ્યું તે કપાએલા માથાને લઈને તે નિર્જન-ભયંકર અટવીમાં પેસી ગયો. અટવીમાં તે તરસથી વ્યાકુળ થઈને પૂર્વ વગેરે દિશાઓના વિવેકથી રહિત થઈ ગયો અને આ પ્રમાણે તે ફરી ત્યાંથી તે પોતાની સિંહગુહા નામની ચોર પલ્લીમાં કોઈ પણ દિવસે પાછો આવી શક્યો નહિ અને વચ્ચે જ મૃત્યુ પામ્યો તેનું બાકીનું ચરિત્ર બીજા ગ્રંથમાંથી જાણી લેવું જોઈએ, અહીં તો ભગવાને જેટલું ચરિત્ર તેનું ઉપયુક્ત જાણ્યું તેટલું કહ્યું છે

(एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स वण्णहेउ जाव आहार

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेइ, आहारित्ता, तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडविं णित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह । तएणं से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्णं सत्थवाहं वयासी–तुब्भे णं ताओ ! अम्हे पिया गुरुजणं य देवभूया ठावगा पइट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं मसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं तातो ! ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अग्गामियं अडविं णित्थरह, तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह । तएणं धण्णं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी–मा णं ताओ ! अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं ताओ ! ममं जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह । एवं पंचमे पुत्ते तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता, तं पंच पुत्ते एवं वयासी–मा णं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो, एसणं सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्पजढे, तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए । तएणं अम्हे तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो । तएणं ते पंच पुत्ता

नो संचाएइ चिलाय चोरसेणावइं साहत्थिं गिण्हित्तए । से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसुमा दारिया चिलाएण जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, सुसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलंसि निवडइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया२ सद्देणं कुहू२ सुपरुन्ने सुचिरं कालं बाहमोक्खं करेइ। तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गणगवेसणं करेइ, करित्ता संते तंते परितंते, णिव्विन्ने, तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदगं आसादेइ । तएणं से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणदत्तं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसणं करेमाणा णो चेव णं उदगं आसादेमो, तएणं उदगं, अणासाएमाणा णो संचाएमो रायगिहं संपा तएणं

तुम्हे ममं देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह, मसं च सोणियं च आहारेइ, आहारित्ता, तेणं आहारेणं अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडवि णित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्तणाइ० य अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह। तएण से जेट्ठपुत्ते धण्णेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाहं वयासी–तुब्भे ण ताओ! अम्हे पिया गुरुजण य देवभूया ठावगा पइट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे ण मसं च सोणियं च आहारेमो? त तुब्भे णं तातो! मम जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अग्गामिय अडवि णित्थरह, त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह। तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी–मा णं ताओ! अम्हे जेट्ठ भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भे णं ताओ! मम जीवियाओ ववरोवेह जाव आभागी भविस्सह। एव पचमे पुत्ते तएणं से धण्णे सत्थवाहे पचण्ह पुत्ताण हियइच्छिय जाणित्ता, त पच पुत्ते एव वयासी–मा ण अम्हे पुत्ता! एगमविजीवियाओ ववरोवेमो, एसण सुसुमाए दारियाए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जाव विप्पजढे, त सेय खलु पुत्ता! अम्हे सुसुमाए दारियाए मस च सोणियं च आहारेत्तए। तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्ध,त्थासमाणा रायगिह सपाउणिस्सामो। तएण त पंच पुत्ता

धण्णेणं सत्थवाहेणं एव वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं धण्णे सत्थवाहे पंचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता, अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइ परिक्खेवेइ, परिक्खेवित्ता, अग्गिपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति। ते णं आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया यावि होत्था। तएण से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइ लोइयाइ जाव विगयसोए जाए यावि होत्था॥ सू०८॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स धन्य' सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मपष्ठः चिलात 'परिधाडेमाणे २' परिधावन् २=चिलात ग्रहीतुकामस्त स्पृष्ठतोऽनुधावन् 'तण्हाए छुहाए य' तृष्णया क्षुधया च 'सते' श्रान्त,=मनसा खिन्नः, 'तते' तान्त =शरीरेण क्लात', 'परितते' परितान्तः=मनसा शरीरेण च

-ःतएण से धण्णे सत्थवाहे। इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ छठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड ने की इच्छा से उस के पीछे २ बार बार दौडता हुआ, (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थि गिण्हित्तए) पिपासा और

'तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पाचे पुत्रोनी साथे छठ्ठो ते धन्य सार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलात चोरनी पाछळ पाछळ तेने पकडी पाडवा माटे वारवार दोडता दोडतां (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाएइ चिलाय चोरसेणावइ साहत्थि गिण्हित्तए) तरस अने भूखथी श्रात थई गयो, खिन्न बनी गयो थई

खिन्नः, 'नो सचाएइ' नो शक्नोति चिलात चोरसेनापतिं 'साहत्थि' स्वह स्तेन ग्रहीतुम्। तदा स खलु 'तओ' तत=चिलातग्रहणव्यापारात्, 'पडि-नियत्तइ' प्रति निवर्तते, प्रतिनिवृत्य, यत्रैव सा सुसुमा दारिका चिलातेन जीवि-ताद् 'ववरोविया' व्यपरोपिता=पृथक्कृता=मारिता सती पतिता आसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य सुसुमा दारिका चिलातेन जीविताद् व्यपरोपिता पश्यति, दृष्ट्वा 'परसुनियत्तेव' परशुनिकृत्त इव=परशुच्छिन्नो यथा चम्पकवरपादपस्तद्वत्

क्षुधा से श्रान्त हो गया-खिन्न बन गया, तान्त हो गया-शरीर से मुरझा गया-परितान्त हो गया-एकदम उत्साह रहित बन गया-सो वह उसे अपने हाथ से पकडने के लिये शक्तिशाली नही हो सका-(सेण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसमा दारिया चिलाएण जीवियाओ ववरोविया-तेणेव उवागच्छइ) अतः-वह वहा से लौट आया-और लौटकर वहाँ गया जहा वह अपनी पुत्री सुसमा चिलातचोर के द्वारा-जीवन से रहित की गई पडी थी। (उवागच्छित्ता सुसमा दारिय चिलाएण जीवियाओ ववरोविय पासइ, पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ-तएणं से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलवमाणे महया २ सद्देण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर कालबाहमोक्ख करेइ) वहा जाकर उसने सुसमा दारिका को चिलातचोर के द्वारा जीवन से रहित की गई देखा। देखते ही वह पुत्रों सहित परशु से काटे गये उत्तम

ગયો-શરીર તેનુ ચિમડાઈ ગયુ પરિતાત થઈ ગયો-સાવ નિરૂત્સાહી બની ગયો એવી હાલતમા તે પોતાના હાથથી તેને પકડી પાડવામા સમર્થ થઈ શક્યો નહિ (सेण तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुसमा दारिया चिलाएण जिवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ) તેથી તે ત્યાથી પાછો ફરી ગયો અને પાછો ફરીને તે જ્યા ચિલાત ચોર વડે હણાયેલી પોતાની પુત્રી સુસમા દારિકા પડી હતી ત્યા ગયો

(उवागच्छित्ता सुसुमा दारिय चिलाएण जीवियाओ ववरोविय पासइ पासित्ता परसुनियत्तेव चपगवरपायवे धसत्ति धरणियलसि निवडइ,-तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे आसत्थे कूयमाणे कदमाणे विलव माणे महया २ सद्देण कुहू २ सुपरुन्ने सुचिर काल बाहमोक्ख करेइ)

ત્યા જઈને તેણે સુસમા દારિકાને ચિલાત ચોર વડે હણાયેલી જોઈ પોતાની સાથે જ તે પુત્રોની સાથે પરશુ વડે કપાએલા ઉત્તમ ચ પક વૃક્ષની

धण्णेणं सत्थवाहेण एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति। तएणं धण्णे सत्थवाहे पचहिंपुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करित्ता, सरगं च करेइ, करित्ता, सरएणं अरणिं महेइ, महित्ता अग्गिं पाडेइ, पाडित्ता, अग्गिं संधुक्खेइ, संधुक्खित्ता दारुयाइ परिक्खेवेइ, परिक्खेवित्ता, अग्गिंपज्जालेइ, पज्जालित्ता, सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेंति। ते णं आहारेण अविछ्द्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी जाया यावि होत्था। तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए जाए यावि होत्था ॥ सू०८ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स धन्यः सार्थवाह' पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मषष्ठः चिलात 'परिधाडेमाणे २' परिधावन् २=चिलात ग्रहीतुकामस्त स्पृष्ठतोऽनुधावन् 'तण्हाए छुहाए य' तृष्णया क्षुधया च 'सते' श्रान्त,=मनसा खिन्नः, 'तते' तान्त=शरीरेण क्लान्तः, 'परितते' परितान्तः=मनसा शरीरेण च

-ःतएण से धण्णे सत्थवाहे। इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (पचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचो पुत्रों के साथ छठा बना हुआ वह धन्यसार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलातचोर को पकड ने की इच्छा से उस के पीछे २ बार बार दौडता हुआ, (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाइए चिलाय चोरसेणावई साहत्थि गिण्हित्तए) पिपासा और

'तएण से धण्णे सत्थवाहे' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (पचहि पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्ठे से धण्णे सत्थवाहे) पांचे पुत्रोनी साथे छठ्ठो ते धन्य सार्थवाह (चिलाय परिधाडेमाणे २) चिलात चोरनी पाछळ पाछळ तेने पकडी पाडवा माटे वारवार दोडता दोडतां (तण्हाए छुहाए य सते तते परितते नो सचाएइ चिलाय चोरसेणावइ साहत्थिं गिण्हित्तए) तरस अने भूखथी श्रांत थई गयो, खिन्न बनी ... थई

माणे ' परिधावन् तृष्णया क्षुधया च ' परिभूए ' परिभूतः सन् तस्यामग्रामिकायामटव्या सर्वत. समन्तात्=चतुर्दिक्षु ' उदगस्स ' उदकस्य=जलस्य ' मग्गणगवेसण ' मार्गणगवेषणम्=अन्वेषण करोति, कृत्वा श्रान्तः, तान्त , परितान्त ' णिव्विन्ने ' निर्विण्ण =औदासीन्य प्राप्तः । तस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषण कुर्वन् नो चैव खलु उदकम् ' आसादेइ ' आसादयति=प्राप्नोति । ततः खलु स धन्यः सार्थवाह आत्मषष्ठ उदकमनासादयन् पानीयमप्राप्नुवन् यत्रैव सुसुमा जीविताद् व्यपरोपिता मारिता सती पतिताऽऽसीत् तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त शब्दयति, शब्दयित्वा, एवमवदत्—एव खलु

में चारो दिशाओ में जल की मार्गणा और गवेपणा करने लगा (करित्ता सते तते परितते णिव्विन्ने तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण गवेसण करेमाणे णो चेव ण उयग आसाएइ) मार्गणा गवेपणा करके वह श्रान्त, मन से खिन्न, तान्तशरीर से खिन्न और परितान्त—बन गया शरीर एव मन इन दोनो से खिन्न हो गया इस तरह उस अग्रामवाली अटवी में उदकपानी की मार्गणा और गवेपणा करते हुए भी उसे जल नही मिला (तएण से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदग अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविया—तेणेव उवागच्छइ) तब आत्मषष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उदक प्राप्त नहीं करता हुआ जहाँ सुसुमादारिका का शव पडा हुआ—था वहा आया —(उवागच्छित्ता जेट्ठ पुत्त धणदत्त सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी)

અને ક્ષુધા (તરસ અને ભૂખ) થી પીડાઈને તે ગામ વગરની અટવીમા ચોમેર પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા કરવા લાગ્યો

(करित्ता सते तते परितते णिव्विन्ने तीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणे णो चेव ण उदग आसाएइ)

માર્ગણા તેમજ ગવેષણા કરીને તે શ્રાત, મનથી ખિન્ન, તાત શરીરથી ખિન્ન અને પરિતાત બની ગયો શરીર તેમજ મન આ બનેથી તે ખિન્ન થઈ ગયો આ પ્રમાણે તે ગામ વગરની અટવીમા ઉદક—પાણી—ની માર્ગણા ગવેષણા કરતા તેને પાણી મળ્યુ નહિ

(तएण से धण्णे सत्थवाहे अप्पछट्ठे उदग अणासाएमाणे जेणेव सुसुमा दारिया जीवियाओ ववरोविया तेणेव उवागच्छइ)

ત્યારે આત્મષષ્ઠ બનેલો તે ધન્ય સાર્થવાહ પાણી ન મેળવતા ન્યા સુસમા દારિકાનુ મડદુ પડયુ હતુ ત્યા આવ્યો (उवागच्छित्ता जेट्ठ पुत्त धणदत्त सद्दावेई सद्दावित्ता एव वयासी) ત્યા આવીને તેણે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને બોલાવ્યો અને બોલાવીને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

सपुत्रो धन्यः सार्थवाहः ' पततित्ति ' धस ' इति शब्दपूर्वकं धरणीतले निपतति। तत. खलु स धन्यः सार्थवाहः आत्मषष्ठ ' आसत्थे ' आश्वस्त=उच्छ्वास मुञ्चन् सचेष्टः सन ' कूवमाणे ' कूजन् = अव्यक्तशब्दं कुर्वं ' कंदमाणे ' क्रन्दन् उच्चस्वरेण, पुनः ' विलवमाणे ' विलपन्=विलाप कुर्वन ' महया महया सद्देण ' महतामहता शब्देन=अत्युच्चै. शब्देन ' कुहू २ सुपरुन्ने ' कुहू २ सुपरुदन्-कुहू कुहू इति शब्दमुच्चार्यात्यर्थं रुदितः सन् सुचिर काल=बहुकालपर्यन्त ' बाहमोक्खं ' वाष्पमोक्षम्=अश्रुमोचन करोति। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रैः सह आत्मषष्ठ. चिलात तस्यामग्रामिकायाम् अटव्या सर्वत समन्तात् ' परिधाडे

चपक वृक्ष के समान " धस " इस शब्द पूर्वक भूमिपर गिर पडा। बाद में पांच अपने पुत्रो के साथ आत्मषष्ट बना हुआ वह धन्यसार्थवाह आश्वस्त, उच्छ्वास छोड़ता हुआ सचेष्ट-हो गया सो अव्यक्त शब्द करता हुआ खूब जोर २ से रोने लगा, विलाप करने लगा। एव बहुत ऊँचे २ शब्दों से कुहू कुहू करता हुआ-हाय सासे लेता हुआ-बहुत देरतक रोता रहा-अश्रुमोचन पूर्वक आक्रदन करता रहा-(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्टे चिलाय तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गणगवेसण करेइ) इसके बाद पाचो पुत्रों के साथ आत्मषष्ठ बना हुआ वह धन्यसार्थवाह उस अग्रामवाली अटवी में चिलातचोर के पीछे पीछे बार २ दौड़ता हुआ तृषा और क्षुधा से पीडित होकर उस अग्रामवाली अटवी

જેમ " ધસ " શબ્દની સાથે જમીન ઉપર પડી ગયો ત્યારપછી પાચે પુત્રો તેમજ છઠ્ઠો તે ધન્યસાર્થવાહ આશ્વસ્ત-ઉચ્છ્વાસ છોડતો-નિસાસા નાખતો સચેષ્ટ થઈ ગયો અને અવ્યકત શબ્દ કરતો ધ્રૂસકે ધ્રૂસકે ખૂબ જોરથી રડવા લાગ્યો, વિલાપ કરવા લાગ્યો અને બહુ મોટા સાદે ' કુહૂ કુહૂ ' કરતો હાય હાય કરીને શ્વાસો લેતો ઘણીવાર સુધી રડતો રહ્યો તેમજ આસૂ પાડતો આક્રંદ કરતો રહ્યો

(तएण से धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अप्पछट्टे चिलाय तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता परिधाडेमाणे तण्हाए छुहाए य परिभूए समाणे तीसे अग्गामियाए अडवीए सव्वओ समता उदगस्स मग्गणगवेसण करेइ)

ત્યારબાદ પાચે પુત્રોની સાથે છઠ્ઠો તે ધન્યસાર્થવાહ તે ગામ વગરની નિર્જન અટવીમા ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ વારવાર ... નો તૃષા

मटवीं ' णित्थरिहिह ' निस्तरिष्यथ=पारङ्गमिष्यथ, राजगृह च ' सपाविहिह ' समाप्स्यथ ' मित्तणाई० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान् ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभि॰ सह सगता भविष्यथ, तथा च ' अत्थस्स ' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च 'आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्यं सार्थवाहमेव मवदत्–हे तात ! यूय खलु अस्माक पिता ' गुरुजणदेवयभूया ' गुरुजनदैवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइट्ठावका' प्रतिष्ठापका =राजादिसमक्ष स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा 'संरक्खगा'

रिहिय रायगिह च सपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे–एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे। (मित्ताणाइ० य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते) वहा पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे–इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेणं सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी) धन्यसार्थवाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुब्भे ण ताओ ! अम्ह पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडविं णित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મને મારી નાખો અને મારા માસ અને રક્તને ખાવો, પીવો. ખાધા પીધા પછી તમે શરીરના વિનાશથી ઊગરી જશો. અને તૃપ્તિ મેળવીને આ ગામવગરની અટવીને પાર કરી જશો અને છેવટે રાજગૃહ નગરમા પહોચી જશો.

(मित्ताणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएणं से जेट्ठे पुत्ते)

ત્યા પહોચીને તમે પોતાના મિત્ર,જ્ઞાતિ, સ્વજન,સબધી પરિજનોની સાથે મળશો. તેમજ ધન, ધર્મ અને પુણ્યોનો ઉપભોગ કરશો ત્યારપછી મોટા પુત્ર ધનદત્તે

(धण्णेण सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी

ધન્ય સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયા બાદ પોતાના પિતા ધન્ય સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

हे पुत्राः ! एष सुंसुमाया दारिकायाः 'अट्ठाए' अर्थाय=निमित्तं चिलातं तस्करं प्रति 'सव्वओ समता' सर्वतः समन्तात्=सर्वासु चतुर्दिक्षु 'परिधाडेमाणा' परिधावन्तः 'तण्हाए' तृष्णया=पिपासया, 'छुहाए' क्षुधया च अभिभूताः सन्तः अस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषण कुर्वन्तो नो चैव खलु उदकमासादयामः, तत खलु उदकम् अनासादयन्तः=अलभमानाः नो शक्नुमो राजगृहं समाप्तुम्, 'तण्णं' तत्कृते=तस्मात् कारणात् खलु यूय मा हे देवानुप्रियाः ! जीवितात् व्यपरोपयत, मांस च शोणितं च 'आहारेह' आहारयत, आहार्य=भुक्त्वा, 'तेण आहारेण' तेन आहारेण 'अविद्धत्था' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्तः यूयं ततः 'तओपच्छा' तत पश्चात् इमामग्रामिका

यहां आकर के उसने अपने जेष्ठ पुत्र धनदत्त को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-(एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्करं सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमी से अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण गवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाएमो-तएण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए) हे पुत्र सुनो अपने लोग सुसमा दारिका के निमित्त चिलातचोर के पीछे २ सब तरफ सब प्रकार से दौड़ते २ प्यास और भूख से दुःखी हो गये हैं हमने इस अग्राम वाली अटवी में पानी की मार्गणा और गवेषणा भी की-परन्तु वह मिला नहीं अतः पानी की प्राप्ति के अभाव में अब राजगृह नगर में पहुँचने के लिये हम असमर्थ बन चुके हैं। (तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया! जीवियाओ ववरोवेह मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इमं अग्गामियं अडविं णित्थ

(एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाए मो-तएण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए)

હે પુત્ર ! સાભળ, અમે સુસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતા ભટકતા તરસ અને ભૂખથી દુખી થઈ ગયા છીએ અમોએ આ ગામ વગરની અટવીમા પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા પણ કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શકયા નથી એથી હવે પાણીના અભાવમા અમે રાજગૃહ નગરમા પહોચી શકીશુ તેમ લાગતુ નથી

(तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ अग्गामियं

मदत्रीं ' णित्थरिहिह ' निस्तरिष्यथ=पारङ्गमिष्यथ, राजगृह च ' सपाविहिह ' समाप्स्यथ ' मित्तणाई० य ' मित्रज्ञातिश्च=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनान ' अभिसमागच्छिहिह ' अभिसमागमिष्यथ=मित्रज्ञातिप्रभृतिभि' सह सगता भवि-ष्यथ, तथा च ' अत्थस्स ' अर्थस्य=धनस्य च धर्मस्य च पुण्यस्य च 'आभागी ' अभागिनो = भोक्तारो भविष्यथ । ततः खलु स ज्येष्ठपुत्रो धन्येन सार्थवाहेन एव मुक्तः = अनेन प्रकारेण कथितः सन् धन्य सार्थवाहमेव मवदत्-हे तात ! यूय खलु अस्माक पिता ' गुरुजणदेवयभूया ' गुरुजन-दैवतभूताः=देवगुरुजनसदृशाः ' ठावका ' स्थापकाः नीतिधर्मादौ ' पइट्ठा-वका' प्रतिष्ठापका =राजादिसमक्ष स्वपदस्थापनेन प्रतिष्ठाकारकाः तथा 'सरक्खगा'

रिहिय रायगिह च सपावेहिह) इसलिये हे देवानुप्रियो ! तुम मुझे मारडालो और मेरे मांस और रक्त से तुम अपने प्राणोंकी रक्षाकर शरीर के विनाश होने से बचाकर इस अग्रामिक अटवी से पार हो जाओगे-एव राजगृह नगर पहुँच जाओगे। (मित्ताणाइ० य अभि-समागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भवि-स्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते) वहा पहुँचकर तुम अपने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, सबन्धी परिजनो के साथ मिलोगे तथा धन, धर्म और पुण्य के भोक्ता भी बनोगे-इसके बाद उस ज्येष्ठ पुत्र धनदत्त ने (धण्णेणं सत्थवाहेण एव वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी) धन्यसार्थ-वाह के द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर उन अपने पिता धन्यसार्थवाह से इस प्रकार कहा (तुब्भे ण ताओ ! अम्ह पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा

अडवि णित्थरिहिह रायगिह च सपावेहिह)

એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમે મને મારી નાખો અને મારા માસ અને રક્તને ખાવો, પીવો. ખાધા-પીધા પછી તમે શરીરના વિનાશથી ઊગરી જશો. અને તૃપ્તિ મેળવીને આ ગામવગરની અટવીને પાર કરી જશો અને છેવટે રાજગૃહ નગરમા પહોચી જશો.

(मित्ताणाइ य अभिसमागच्छिहिह अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह, तएण से जेट्ठे पुत्ते)

ત્યા પહોચીને તમે પો ાના મિત્ર,જ્ઞાતિ, સ્વજન,સબધી પરિજનોની સાથે મળશો. તેમજ ધન, ધર્મ અને પુણ્યોનો ઉપભોગ કરશો ત્યારપછી મોટા પુત્ર ધનદત્તે

(धण्णेण सत्थवाहेण एवं वुत्ते समाणे धण्ण सत्थवाह एव वयासी

ધન્ય સાર્થવાહ વડે આ પ્રમાણે કહેવાયા બાદ પોતાના પિતા ધન્ય સાર્થવાહને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

हे पुत्राः ! एष सुंसुमाया दारिकायाः ' अट्ठाए ' अर्थाय=निमित्तं चिलातं तस्करं प्रति ' सव्वओ समंता ' सर्वतः समन्तात्=सर्वासु दिक्षु ' परिधाडेमाणा ' परिधावन्तः ' तण्हाए ' तृष्णया=पिपासया, ' छुहाए ' क्षुधया च अभिभूताः सन्तः अस्यामग्रामिकायामटव्यामुदकस्य मार्गणगवेषणं कुर्वन्तो नो चैव खलु उदकमासादयाम', तत खलु उदकम् अनासादयन्त'=अलभमानाः नो शक्नुमो राजगृहं समाप्तुम् , ' तण्णं ' तत्खलु=तस्मात् कारणात् खलु यूय मां हे देवानुप्रियाः ! जीविताद् व्यपरोपयत, मांसं च शोणितं च ' आहारेह ' आहारयत, आहार्य=भुक्त्वा ' तेण आहारेण ' तेन आहारेण ' अविद्धत्था ' अविध्वस्ताः= शरीरनाशमप्राप्ता' सन्तः क्षमा सन्तः ' तओपच्छा ' तत पश्चात् इमामग्रामिका

वहां आकर के उसने अपने जेष्ट पुत्र धनदत्त को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-(एवं खलु पुत्ता ! अम्हे सुसमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्करं सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमी से अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण गवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाएमो-तएण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए) हे पुत्र सुनो अपने लोग सुसमा दारिका के निमित्त चिलातचोर के पीछे २ सब तरफ सब प्रकार से दौड़ते २ प्यास और भूख से दुःखी हो गये हैं हमने इस अग्राम वाली अटवी में पानी की मार्गणा और गवेषणा भी की-परन्तु वह मिला नहीं अतः पानी की प्राप्ति के अभाव में अब राजगृह नगर में पहुँचने के लिये हम असमर्थ बन चुके हैं। (तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा इम अग्गामिय अडविं णित्थ

(एव खलु पुत्ता ! अम्हे सुसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलाय तक्कर सव्वओ समता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अग्गामियाए अडवीए उदगस्स मग्गणगवेसण करेमाणा णो चेव ण उदग आसाए मो-तएण उदग अणासाएमाणा णो सचाएमो रायगिह सपावित्तए)

હે પુત્ર ! સાભળ, અમે સુસમા દારિકાને મેળવવા માટે ચિલાત ચોરની પાછળ પાછળ આમતેમ ચારે તરફ ભટકતા ભટકતા તરસ અને ભૂખથી દુઃખી થઇ ગયા છીએ અમોએ આ ગામ વગરની અટવીમા પાણીની માર્ગણા અને ગવેષણા પણ કરી છે, પણ અમે હજી મેળવી શકયા નથી એથી હવે પાણીના અભાવમા અમે રાજગૃહ નગરમા પહોચી શકીશુ તેમ લાગતું નથી

(तएण तुम्हे मम देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, आहारित्ता तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा तओ पच्छा अग्गामिय

रह ' निस्तरत=पारगच्छत, ' तचेव सव्व भणइ ' तदेवसर्वं भणति=यथा धन्य सार्थवाहो ज्येष्ठ पुत्रमवदत्, तथैवायमपि तदेव सर्वं कथयति, यावत् अर्थस्य धर्मस्य पुण्यस्य च आभागिनो भविष्यथ। ततः खलु धन्य सार्थवाह ' दोच्चे ' द्वितीय' पुत्रधनपालनामा एवमवदत्–मा खलु हे तात ! अस्माकं ज्येष्ठ भ्रातर 'गुरुदेवय ' गुरुदैवत=देव–गुरुसदृशम्, जीविताद् व्यपरोपयाम.=मारयाम', यूय खलु हे तात ! ' मम ' मा=धनपालनामान जीविताद् व्यपरोपयत यावत् अर्थादिफलभाजो भविष्यथ। ' एव =अनेन प्रकारेण ' जाव पचमेपुत्ते ' यावत्

पहुच कर वहा अपने मित्रादि परिजनों के साथ मिल सके। तथा धन धर्म एव पुण्य के भोक्ता बन सके। " त चेव सव्व भणइ " इसका तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार धन्यसार्थवाह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र, धनदत्त से कहा–उसी प्रकार धनदत्त ने भी अपने पिता से वैसाही कहा–(तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी–माण ताओ ! अम्हे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो–तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामिय अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह) इसके बाद धन्यसार्थवाह से उसके द्वितीय पुत्र ने इस प्रकार कहा–हे तात ! आप हमारे गुरु देवतातुल्य ज्येष्ठ भाई को जीवन से रहित मत कीजिये किन्तु आप तो हे तात ! मुझे ही जीवितसे रहितकर दीजिये–और मेरे ही रक्त एव मास को आप खाईये पीईये–ताकि इस अग्रामिक अटवी से पार हो सके इत्यादि पहिले जैसा ही इसने

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકો. તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોક્તા બની શકો. " त चेव सव्व भणइ " આનો અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યુ તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યુ

(तएण धण्ण सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी–माणं ताओ ! अम्हे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामि य अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા મોટા ભાઈને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માંસને તમે ખાઓ પીઓ જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

सरक्षकाः यदृच्छाप्रवृत्तेः ' सगोवगा ' सगोपकाः दुश्चरितप्रवृत्तेः, 'तं' तत्=तस्मात् कारणात् ' कहण्णं ' कथं खलु=केन प्रकारेण खलु हे तात ! वयं युष्मान् जीविताद् व्यपरोपयामः=मारयामः, युष्माकं खलु मांसं च शोणितं च कथम् आहारयाम ? ' तं ' तत्=तस्माद् यूयं खलु हे तात! मां धनदत्तनामानं जीविताद् व्यपरोपयत=मारयत मम मांसं च शोणितं च आहारयत. अग्रामिकामटवीं ' णित्थ

पइट्ठावगा संरक्खगा सगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो अग्गामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह) हे तात ! आप हमारे पिता है इसलिये आप मेरे लिये देव, गुरु जन के स्थान भूत हैं। नीति धर्म आदि में मुझे स्थापित करते रहते हैं। राज आदि समक्ष आप अपने पद पर मुझे बैठाते है इसलिये आप मेरे लिये स्थापक एवं प्रतिष्ठापक हैं यथेच्छा प्रवृत्ति से आप हमारी सदा रक्षा करते रहते हैं इसलिये आप मेरे सरक्षक हैं, दुश्चरित-प्रवृत्ति से आप हमें रोकते रहते हैं इसलिये आप मेरे सगोपक हैं, तो कैसे मैं हे तात ! आप को जीवन से रहित कर सकता हूँ। और कैसे आप के शोणित और मास को खा सकता हूँ। इसलिये हे तात ! आप ही मुझे जीवन से रहित कर दीजीये और मेरे खून और मास को आप खाइये ताकि आप इस अग्रामिक अटवी को पार कर सके और राजगृह नगर

(तुब्भेण ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणयदेवभूया ठावगा पइट्ठावगा सरक्खगा सगोवगा तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो अगामियं अडविं णित्थरह तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

હે તાત ! તમે અમારા પિતા છો, એથી તમે અમારા દેવ અને ગુરૂના સ્થાને છો. તમે મને નીતિ ધર્મ વગેરેમા પ્રવૃત્ત પણ કરતા રહો છો. રાજા વગેરેની સામે તમે પોતાના સ્થાને મને બેસાડો છો એથી તમે મારા સ્થાપક અને પ્રતિષ્ઠાપક છો. યથેચ્છા પ્રવૃત્તિથી તમે મારી રક્ષા કરતા રહો છો એથી તમે મારા સંરક્ષક છો, દુશ્ચરિત પ્રવૃત્તિથી તમે મને રોકતા રહો છો, એથી તમે મારા સંગોપક છો. તો આવી પરિસ્થિતિમા હે તાત ! હુ તમને કેવી રીતે જીવન રહિત બનાવી શકુ અને કેવી રીતે તમારા શોણિત અને માંસનુ ભક્ષણ કરી શકુ ! એથી હે તાત ! તમે મુજ ધનદત્તને જ જીવન રહિત બનાવી દો અને મારા ખૂન અને માંસનુ તમે ભક્ષણ કરો. એથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો અને રાજગૃહ નગરમા ત્યાં

रह ' निस्तरत=पारगच्छत, ' तचेव सव्व भणइ ' तदेवसर्व भणति=यथा धन्य सार्थवाहो ज्येष्ठ पुत्रमवदत्, तथैवायमपि तदेव सर्व कथयति, यावत् अर्थस्य धर्मस्य पुण्यस्य च आभागिनो भविष्यथ। ततः खलु धन्य सार्थवाह ' दोच्चे ' द्वितीय' पुत्रधनपालनामा एवमवदत्–मा खलु हे तात ! अस्माक ज्येष्ठ भ्रातर 'गुरु देवय ' गुरुदैवत=देव–गुरुसदृशम्, जीविताद् व्यपरोपयाम:=मारयाम', यूय खलु हे तात ! ' मम ' मा=धनपालनामान जीविताद् व्यपरोपयत यावत् अर्थादिफलभाजो भविष्यथ। ' एव =अनेन प्रकारेण ' जाव पचमेपुत्ते ' यावत्

पहुच कर वहा अपने मित्रादि परिजनों के साथ मिल सके। तथा धन धर्म एव पुण्य के भोक्ता बन सके। "त चेव सव्व भणइ" इसका तात्पर्य यही है कि जिस प्रकार धन्यसार्थवाह ने अपने ज्येष्ठ पुत्र, धनदत्त से कहा–उसी प्रकार धनदत्त ने भी अपने पिता से वैसाही कहा– (तएण धण्ण सत्थवाह दोच्चे पुत्ते एव वयासी–माण ताओ ! अम्हे जेट्ठ भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो–तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामिय अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह) इसके बाद धन्यसार्थवाह से उसके द्वितीय पुत्र ने इस प्रकार कहा–हे तात ! आप हमारे गुरु देवतातुल्य ज्येष्ठ भाई को जीवन से रहित मत कीजिये किन्तु आप तो हे तात ! मुझे ही जीवितसे रहितकर दीजिये–और मेरे ही रक्त एव मास को आप खाईये पीईये–ताकि इस अग्रामिक अटवी से पार हो सके इत्यादि पहिले जैसा ही इसने

પોતાના મિત્રો વગેરે પરિજનોની સાથે મળી શકો તેમજ ધન ધર્મ અને પુણ્યના ભોક્તા બની શકો " त चेव सव्व भणइ " આનો અર્થ આમ થાય છે કે જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના મોટા પુત્ર ધનદત્તને કહ્યુ તેમજ ધનદત્તે પણ પોતાના પિતાને કહ્યુ

(तएण धण्ण सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी–माण ताओ ! अम्हे जेट्ठे भायर गुरुदेवय जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भेण ताओ ! मम जीवियाओ ववरोवेह, मस च सोणिय च आहारेह, अग्गामि य अडविं णित्थरह त चेव सव्व भणइ जाव अत्थस्स जाव पुण्णस्स आभागी भविस्सह)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહને તેના બીજા પુત્રે આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે તાત ! તમે અમારા ગુરુદેવતા જેવા મોટા ભાઈને જીવન રહિત ન કરો પણ હે તાત ! તમે મને જ મારી નાખો અને મારા જ લોહી અને માંસને તમે ખાઓ પીઓ જેથી તમે આ ગામ વગરની અટવીને પાર કરી શકો, આમ

पञ्चमः पुत्रः=तृतीयो धनदेवश्चतुर्थो धनगोपः, पञ्चमो धनरक्षितश्चाऽप्यवदत् । ततः इत्थं तेषां वचनश्रवणानन्तरं, खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'हियइच्छियं' हृदयेप्सितम्=हृदयेप्सितं ज्ञात्वा तान् पुत्रान् एवमवादीत्-मा खलु वयं हे पुत्राः ! एकमपि अस्माकं मध्ये एकमपि जीविताद् व्यपरोपयाम एतत् खलु सुसुमाया दारिकायाः शरीरं 'णिप्पाणं' निष्प्राणं=प्राणरहितम्, 'णिच्चेट्ठं' निश्चेष्टं=चेष्टारहितम् 'जीवविप्पजढं' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्तीत्यर्थः, तच्छ्रेयः=उचितं खलु हे पुत्राः 'अम्हे' अस्माकम् सुसुमाया दारिकाया मांसं च शोणितं च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तरं च खलु वयं तेन आहारेण 'अ

सब कहा (एवं पंचमे पुत्ते) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ धनगोपने एवं पांचवे धनरक्षित ने भी कहा-(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता तं पंचपुत्ते एवं वयासी) इस के बाद उस धन्यसार्थवाह ने पांचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन अपने पांचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा-(माणं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसणं सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे-तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुसमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुसमादारिका का शरीर जो कि निष्प्राण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है-इसलिये हमे उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुसमदारिका का मांस एवं शोणित

તેણે પહેલાની જેમ જ બધું કહ્યું (एवं पंचमे पुत्ते) આ પ્રમાણે જ તેને ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાંચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યું

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पंचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता तं पंच पुत्ते एवं वयासी)

ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્થવાહે પાંચે પુત્રોની હૃદયની અભિલાષા જાણીને પોતાના તે પાંચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(माणं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसणं सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे-तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुसमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए)

હે મારા પુત્રો ! તમારામાંથી એકને પણ હું મારવા માગતો નથી પરંતુ આ સુસમા દારિકાનું શરીર કે જે નિષ્પ્રાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ બની ગયું છે-એટલા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ યોગ્ય છે કે આપણે આ સુસમા દારિકાના માંસ અને શોણિતને ખાઈએ

त्रिद्धत्था समाणा ' अवि-ग्रस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्त राजगृह ' सपाउणिस्सामो ' समाप्स्याम । ततः खलु ते पञ्चपुत्रा ध येन सार्थवाहेन एवमुक्ताः सन्तः ' एयमट्ठ ' एतमर्थम् पूर्वोक्तरूपम् ' पडिसुर्णेति ' प्रतिशृण्वन्ति=स्वीकुर्वन्ति । तत खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चभिः पुत्रै सार्द्धम् ' अरणि ' अरणिं यस्मिन् मथ्यमानेऽग्निरुत्पद्यते तत्काष्ठम् 'करेड' करोति=सगृह्णाति, कृत्वा 'सरग' सरकम्=निर्मन्थनकाष्ठ करोति=आनयति कृत्वा, सरकेण अरणि मथ्नाति=घर्षयति मथित्वा, ' अग्गि पाडेइ ' पातयति=मन्थनवशादग्निमुत्पादयति ' पाडित्ता ' पात

खावें। (तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिह सपाउणिस्सामो–तएण ते पच पुत्ता धण्णेणं सत्थवाहेण एववुत्ता समाणा एयमट्ठ पडिसुणे ति) इस से हमलोग उस आहार से शरीर नाश को अप्राप्त होकर राजगृह नगर में पहुँच जावेंगे। इस प्रकार धन्यसार्थवाह के द्वारा कहे गये उन पाचों पुत्रो ने धन्यसार्थवाह के इस कथन को स्वीकार कर लिया। (तएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणिकरेइ, करित्ता सरगच करेइ, करित्ता सरएण अरणि महेइ, महित्ता अग्गि पाडेइ, पाडित्ता अग्गि सधुक्खेड, सधुक्खित्ता दारुयाइ परिक्खवेइ परिक्खवित्ता अग्गि पज्जालेइ पज्जालित्ता सुसमाए मस च सोणिय च आहारे ति) इस के बाद धन्यसार्थवाह ने पांचो पुत्रों के साथ मिलकर अरणिकाष्ठ को एकत्रित किया। एकत्रित कर के फिर वह सरक काष्ठ को निर्मथनकाष्ठ को ले आया–उसे लेकर के उसने उससे अरणि का घर्षण किया। इस तरह घर्षण से अग्नि उत्पन्न हो गई। अग्नि के

(तएण अम्हे तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिह सपाउणिस्सामो तएण ते पच पुत्ता धण्णेण सत्थवाहेण एव वुत्तासमाणा एयमट्ठ पडिसुणेंति)

એથી આપણે બધા આ આહારથી શરીર નાશથી ઊગરી જઈને રાજગૃહ નગરમા પહોંચી જઈશુ આ પ્રમાણે ધન્ય સાર્થવાહ વડે કહેવાયેલા પાચે પુત્રોએ ધન્ય સાર્થવાહની તે વાતને સ્વીકારી લીધી

(तएण धण्णे सत्थवाहे पचहिं पुत्तेहिं सद्धि अरणिं करेइ, करित्ता, सरग च करेइ, करित्ता सरएण अरणि महेइ, महित्ता अग्गि पाडेइ, पाडित्ता अग्गि सधुक्खेइ, सधुक्खित्ता दारुयाइ परिक्खवेइ, परिक्खवित्ता अग्गि पज्जालेइ, पज्जालित्ता सुसमाए दारियाए मस च सोणिय च आहारेंति)

ત્યારપછી ધન્ય સાર્થવાહે પાચે પુત્રોની સાથે મળીને અરણિ કાષ્ઠને એકઠુ કર્યું એકઠુ કરીને તેઓ સરક કાષ્ઠને–નિર્મંથન કાષ્ઠને લઈ આવ્યા તેને લઈને તેણે તેથી અરણિકા કાષ્ઠનુ ઘર્ષણ કર્યું આ પ્રમાણે ઘર્ષણથી અગ્નિ

पञ्चमः पुत्रः=तृतीयो धनदेवश्चतुर्थो धनगोपः, पञ्चमो धनरक्षितश्चाऽप्यवदत् । ततः इत्थं तेषां वचनश्रवणानन्तरं, खलु स धन्यः सार्थवाहः पञ्चपुत्राणां 'हियइच्छिय' हृदयेप्सम्=हृदयेप्सितं ज्ञात्वा तान् पुत्रान् एवमवादीत्-मा खलु वय हे पुत्राः ! एकमपि अस्माकं मध्येएकमपि जीविताद् व्यपरोपयाम एतत् खलु सुसुमाया दारिकायाः शरीर 'णिप्पाण' निष्प्राण=प्राणरहितम्, 'णिच्चेट्ठ' निश्चेष्टं=चेष्टारहितम् 'जीवविप्पजढं' जीवविप्रत्यक्तम्=जीवहीनम्, सर्वथा मृतमस्तीत्यर्थः, तच्छ्रेय =उचितं खलु हे पुत्राः 'अम्हे' अस्माकम् सुंसुमाया दारिकाया मांसं च शोणितं च आहर्तुम्, ततः=तदनन्तरं च खलु वय तेन आहारेण 'अ

सब कहा (एव पचमे पुत्ते) इसी तरह उससे तृतीय धनदेवने चतुर्थ धनगोपने एव पांचवे धनरक्षित ने भी कहा-(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पचण्हं पुत्ताणं हियइच्छिय जाणित्ता त पचपुत्ते एव वयासी) इस के बाद उस धन्यसार्थवाह ने पाचों पुत्रों के अभिप्राय को जानकर उन अपने पाचों ही पुत्रों से इस प्रकार कहा-(माणं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसणं सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे-तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुसमाए दारियाए मसं च सोणियं च अहारेत्तए) हे मेरे पुत्रों ! मैं एक को भी जीवन से रहित नहीं करना चाहता हूँ किन्तु यह सुसमादारिका का शरीर जो कि निष्प्राण, निश्चेष्ट, और जीवन से रहित बन गया है-इसलिये हमें उचित है कि हे पुत्रों ! हम इस सुसमदारिका का मांस एवं शोणित

તેણે પહેલાંની જેમ જ બધુ કહ્યુ (एव पचमे पुत्ते) આ પ્રમાણે જ તેને ત્રીજા ધનદેવે, ચોથા ધનગોપે અને પાચમા ધનરક્ષિતે પણ કહ્યુ

(तएणं से धण्णे सत्थवाहे पचण्हं पुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता तं पच पुत्ते एव वयासी)

ત્યારપછી તે ધન્ય સાર્થવાહે પાચે પુત્રોની હૃદયની અભિલાષા જાણીને પોતાના તે પાચે પુત્રોને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(माणं अम्हे पुत्ता ! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो एसणं सुसमाए दारियाए सरीरए णिप्पाणे णिच्चेट्ठे जीवविप्पजढे-तं सेयं खलु पुत्ता ! अम्हं सुसमाए दारियाए मसं च सोणियं च आहारेत्तए)

હે મારા પુત્રો ! તમારામાથી એકને પણ હુ મારવા માગતો નથી પરંતુ આ સુસમા દારિકાનુ શરીર કે જે નિષ્પ્રાણ, નિશ્ચેષ્ટ અને નિર્જીવ બની ગયુ છે-એટલા માટે અમારા માટે હે પુત્રો ! એ જ યોગ્ય છે કે આપણે આ સુસમા દારિકાના માંસ અને શોણિતને ખાઇએ

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे 'विगयसोगे' विगतशोक=सुसुमामरणजनितशोकरहितो जातश्चास्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्—तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे। से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए, एक्कारसंगवी। मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। जहा वि य णं जम्बू! धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो वलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मससोणिए आहारिए, नन्नत्थ एगाए रायगिहं सपावणट्ठयाए। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स वा नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो वलहेउ वा नो विसयहेउ वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव वहूणं समणाणं वहूणं समणीणं वहूणं सावयाणं वहूणं सावियाण अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ।

एवं खलु जम्बू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिवेमि ॥सू०९॥

॥ अट्ठारसमं अज्झयणं समत्तं ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरो गुणशिलके चैत्ये 'समोसढे' समवसृत:=तीर्थंकरपरम्परया

सुसमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य कियेजाते—वे सब भी उन्होंने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए।सू०८।

લૌકિક કૃત્યો કરવા જોઈએ તે સર્વે તેમણે પતાવ્યા અને ધીમે ધીમે તેઓ શોકરહિત પણ બની ગયા ॥ સૂત્ર ૮ ॥

यित्वा=उत्पाद्य अग्निं 'संधुक्खेइ' संधुक्षयति=उद्दीपयति, संधुक्ष्य=उद्दीप्य 'दारुयाइं' दारुकाणि=इन्धनानि तत्र 'परिक्खिवइ' परिक्षिपति, परिक्षिप्य, अग्निं प्रज्वालयति, प्रज्वाल्य, सुसुमाया दारिकाया भर्जितं मांसं च शोणितं च 'आहारेइ' आहारयति। अनन्तरं तेन आहारेण 'अविद्धत्था' अविध्वस्ताः=शरीरनाशमप्राप्ताः सन्तो राजगृहं नगरं समागताः 'मित्तणाइ० अभिसमण्णागया' मित्रज्ञाति=मित्रज्ञातिस्वजनसम्बन्धिपरिजनैः सह 'अभिसमण्णागया' अभिसमन्वागता=समिलिताः सन्तः तस्य च विपुलस्य 'धणकणगरयण जाव' धनकनक रत्न यावत् =धनकनकरत्नादिकस्य 'आभागी जाया यावि होत्था' आभागिनो जाताश्चाप्यभवन्। ततः खलु स धन्यः सार्थवाहः सुसुमाया दारिकाया बहूनि लौकिकानि

उत्पन्न होने पर उसने फिर उसे धौंका-उद्दीपित किया-जब वह उद्दीपित हो चुकी-तब उसने उसमें लकडियों को लगाया-। इस तरह की क्रिया से जब अग्नि अच्छी तरह प्रज्वलित हो चुकी-तब उसमें सुसमा दारिका के मांस को और खून को भूंजा-भूंजकर उसे सबने खाया पीया (तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्तणाइ० अभिसमणागया तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागी-जाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुसमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए यावि होत्था) इस प्रकार उस आहार की सहायता से अविध्वस्त शरीर होकर वे वहां से चल कर राजगृह नगर में आ गये। वहां आकर वे अपने मित्रज्ञाति आदि परिजनों से खूब हिले मिले। एवं धनकनक आदि द्रव्य के भोक्ता भी बन गये।

ઉત્પન્ન થઈ ગયો. અગ્નિ ઉત્પન્ન થયા બાદ તેણે તેને ઉદ્દીપિત કર્યો. જ્યારે તે ઉદ્દીપિત થઇ ગયો ત્યારે તેણે તેમાં લાકડીઓ મૂકી. આ રીતે જ્યારે સારી રીતે અગ્નિ પ્રજ્વલિત થઇ ગયો ત્યારે તેમાં સુસમા દારિકાના માંસને અને લોહીને શેકયા, શેકયા બાદ તેને બધાએ ખાધા-પીધા.

(तेण आहारेण अविद्धत्था समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता, मित्तणाइ० अभिसमणागया, तस्स य विउलस्स धणकणगरयण जाव आभागीजाया यावि होत्था तएणं से धण्णे सत्थवाहे सुसमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं जाव विगयसोए यावि होत्था)

આ પ્રમાણે તે આહારની સહાયતાથી અવિનષ્ટ શરીરવાળા થઇને તેઓ ત્યાંથી રવાના થઇને રાજગૃહ નગરમાં આવી ગયા. ત્યાં આવીને તેઓ પોતાના મિત્ર જ્ઞાતિ વગેરે પરિજનોની સાથે ખૂબ આનંદ-પૂર્વક મળ્યા, અને ધન, કનક વગેરે દ્રવ્યોને ભોગવવા લાગ્યા. સુસમા દારિકાના મ[illegible]. જેટલા

मृतकृत्यानि कृत्वा कालान्तरे 'विगयसोगे' विगतशोक=सुसुमामरणजनितशोक-रहितो जातश्चाप्यभूत् ॥ सू० ८ ॥

मूलम्–तेण कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे गुणसिलए चेइए समोसढे। से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए, एक्कारसंगवी। मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णो, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। जहा वि य णं जम्बू! धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मससोणिए आहारिए, नन्नत्थ एगाए रायगिहं सपावणट्ठयाए। एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंता-सवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स वा नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बल-हेउ वा नो विसयहेउ वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ।

एवं खलु जम्बू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि ॥सू०९॥

॥ अट्ठारसम अज्झयण समत्तं ॥

टीका—'तेणं कालेणं' इत्यादि। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणो भगवान् महावीरो गुणशिलके चैत्ये 'समोसढे' समवसृत'=तीर्थंकरपरम्परया

सुसमा दारिका के मरणोत्तर काल में जो भी लौकिक कृत्य कियेजाते -वे सब भी उन्होंने किये और धीरे २ विगत शोक भी हो गए।सू०८।

લૌકિક કૃત્યો કરવા જોઈએ તે સર્વે તેમણે પતાવ્યા અને ધીમે ધીમે તેઓ શોકરહિત પણ બની ગયા ॥ સૂત્ર ૮ ॥

समागतः । अनन्तर स धन्यः सार्थवाह सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रज्यानन्तरम् 'एक्कारसगवी' एकादशाङ्गविन्=एकादशाङ्गाभिज्ञो जातः 'मासियाए' मासिक्या सलेखनया काल कृत्वा 'सोहम्मे' सौधर्म कल्पे 'उववन्नः' । पुनः तत श्च्युतः महाविदेह वर्षे 'सिज्झिहिइ' सेत्स्यति-मुक्ति प्राप्स्यति । सम्प्रति धन्यसार्थवाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिन सम्बोध्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह 'जहा वि इत्यादिना-

'तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) उस काल और उस समय में (समणे भगवं महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलए चेइए समोसढे, से ण धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एक्कारसगवी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये । उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्थवाह अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया । प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशागों का ज्ञाता भी हो गया । अन्त समय मे उसने एक मास की सलेखना धारणकर काल अवसर काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-। वहा से चव कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा। इस धन्यसार्थवाह के दृष्टान्त से जबू स्वामीको सबोधितकर के श्री

तेण कालेण तेण समएण' इत्यादि—

टीकार्थ—(तेण कालेण तेण समएण) ते काळे अने ते समये (समणे भगव महावीरे) श्रमणु भगवान महावीर

(गुणसिलए चेइए समोसढे । सेण धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोच्चा पव्वइए-एक्कारसगवी-मासियाए सलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ)

गुणुशिलक उद्यानमा आव्या तेमनी पासेथी धर्मोपदेश साभळीने ते धन्य सार्थवाह पोताना पाचे पुत्रोनी साथे तेमनी पासे प्रव्रजित थई गयो. प्रव्रजित थईने ते धीमे धीमे एकादश (अगियार) अगोनो ज्ञाता पणु थई गयो. छेवटे मृत्यु समये एक मासनी सलेखना धारणु करीने काळ अवसरे तेणे काळ कर्यो ते तेना प्रभावथी सौधर्म कल्पमा उत्पन्न थई गयो. त्याथी चवीने हवे ते महाविदेह क्षेत्रमा मुक्ति प्राप्त करशे आ धन्य सार्थवाहना दृष्टान्तने सामे राखीने श्री सुधर्मा स्वामीए जबू स्वामीने सबोधित

जहावि य ण' यथाऽपि च खलु=येन प्रकारेण खलु हे जम्बूः! धन्येन सार्थवाहेन नो वर्णहेतोः = नो रूपहेतोः बलहेतोः=नो विषयहेतोः सुसुमाया दारिकाया मास-शोणितमाहारितम्, एगाए रायगिहसंपावणट्ठयाए' एकस्य राजगृह सम्प्रापणार्थताया अन्यत्र न, किन्तु-अह राजगृह समाप्नुयाम् इति हेतोरेव तेन पुत्रैः सह तद् आहारितमिति भाव ।

भगवानाह—' एवामेव ' एवमेव=अनेन प्रकारेणैव ' समणाउसो ' हे आयुष्मन्तः श्रमणाः योऽस्माकं निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा अस्य वान्तास्रवस्य पित्ता-

---

सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा–(जहा वि य ण जम्बू! धण्णेण सत्थवाहेण णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं संपावणट्ठयाए–एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथीवा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्स विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ आहार अहारेइ, नन्नत्थएगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए) हे जम्बू! जिस तरह धन्यसार्थवाह ने अपने शरीर में कान्ति विशेष बढाने के लिये, बल बढाने के लिये, अथवा विषय सेवन की शक्ति बढाने के लिये सुसुमा दारिका का मास एव शोणित नहीं खाया। किंतु मैं पुत्रों के सहित राजगृह नगर में पहुँच जाऊँ इसी एक अभिप्राय से सुसुमा दारिका का अपने पुत्रों सहित मास शोणित सेवन किया–इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणो! जो हमरा निर्ग्रन्थ श्रमण जन अथवा श्रमणी जन है–वह इस वान्तास्रववाले, पित्तास्रववाले, शुक्रास्र-

---

કરીને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(जहा वि य ण जम्बू! धण्णेण सत्थवाहेणं णो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा सुसुमाए मंससोणिए आहारिए नन्नत्थ एगाए रायगिहं, संपावणट्ठयाए एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स जाव अवस्से विप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउ वा नो रूवहेउ वा नो बलहेउ वा नो विसयहेउ वा आहार आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए)

હે જંબૂ! જેમ ધન્ય સાર્થવાહે પોતાના શરીરમાં કાંતિ વિશેષની વૃદ્ધિ કરવા માટે બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા વિષય સેવનની શક્તિના વર્ધન માટે સુસુમા દારિકાના માંસ અને શોણિત નહિ ખાધા, પણ પુત્રો સહિત હું રાજગૃહ નગરમાં પહોંચી જાઉં આ એક જ મતલબથી પોતાના પુત્રોની સાથે સુસુમા દારિકાના માંસ–શોણિત સેવન કર્યો આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે અમારા નિર્ગ્રંથ શ્રમણજન અથવા શ્રમણીજનો છે તેઓ આ વાતા

समागतः । अनन्तरं स धन्यः सार्थवाहः सपुत्रो धर्मं श्रुत्वा प्रव्रजितः, प्रव्रज्यानन्तरम् ' एगारसंगवी ' एकादशाङ्गविन्=एकादशाङ्गाभिज्ञो जातः ' मासियाए ' मासिक्या संलेखनया कालं कृत्वा ' सोहम्मे' सौधर्मे कल्पे 'उववन्ने' । पुनः तत च्युतः महाविदेहे वर्षे ' सिज्झिहिइ ' सेत्स्यति-मुक्तिं प्राप्स्यति । सम्प्रति धन्यसार्थवाहदृष्टान्तेन जम्बूस्वामिनं सम्बोध्य श्रीसुधर्मास्वामीप्राह ' जहा वि इत्यादिना-

' तेण कालेण तेण समएण इत्यादि ।

टीकार्थ—(तेण कालेणं तेण समएणं) उस काल और उस समय में (समणे भगव महावीरे) श्रमण भगवान् महावीर (गुणसिलए चेइए समोसढे, से णं धण्णे सत्थवाहे सपुत्ते धम्म सोचा पव्वइए-एकारसंगवी-मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ) गुणशिलक उद्यान में आये। उनसे धर्म का उपदेश सुनकर वह धन्यसार्थवाह अपने पाचों पुत्रों सहित उनके पास प्रव्रजित हो गया। प्रव्रजित होकर धीरे २ वह एकादशांगों का ज्ञाता भी हो गया। अन्त समय में उसने एक मास की संलेखना धारणकर काल अवसर काल किया-तो उसके प्रभाव से वह सौधर्म कल्प में उत्पन्न हो गया-। वहा से चव कर अब वह महाविदेह क्षेत्र में मुक्ति को प्राप्त करेगा। इस धन्यसार्थवाह के दृष्टान्त से जम्बू स्वामीको संबोधितकर के श्री

तेण कालेण तेण समएण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે (समणे भगव महावीरे) શ્રમણ ભગવાન મહાવીર

(गुणसिलए चेइए समोसढे । सेण धण्णे सत्थवाहे सुपुत्ते धम्म सोचा पव्वइए-एक्कारसंगवी-मासियाए संलेहणाए सोहम्मे उववण्णे, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ)

ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળીને તે ધન્ય સાર્થવાહ પોતાના પાચે પુત્રોની સાથે તેમની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગયો પ્રવ્રજિત થઇને તે ધીમે ધીમે એકાદશ (અગિયાર) અ ગોનો જ્ઞાતા પણ થઇ ગયો છેવટે મૃત્યુ સમયે એક માસની સ લેખના ધારણ કરીને કાળ અવ સરે તેણે કાળ કર્યો તે તેના પ્રભાવથી સૌધર્મ કલ્પમા ઉત્પન્ન થઇ ગયો ત્યાથી ચવીને હવે તે મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા મુક્તિ પ્રાપ્ત કરશે આ ધન્ય સાર્થવાહના દૃષ્ટાન્તને સામે રાખીને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ જબૂ સ્વામીને સ બોધિત

सुधर्मास्वामीप्राह— एवं ' अनेन पूर्वोक्तप्रकारेण खलु हे जम्बू ! श्रमणेन भगवता महावीरेण 'जाव संपत्तेणं ' यावत् संप्राप्तेन=मोक्षगतेन अष्टादशस्य ज्ञाताध्ययनस्य ' अयमट्ठे ' अयमर्थ =पूर्वोक्तरूपोऽर्थः प्रज्ञप्तः=प्ररूपितः, ' त्ति बेमि ' इति ब्रवीमि=अस्य व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ९ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री-घासीलाल-व्रतिविरचितायां-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायामष्टादशमध्ययनं समाप्तं ॥ १८ ॥

जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णतेत्तिबेमि) इस प्रकार से हे जम्बू ! श्रमण भगवान् महावीरने जो सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हो चुके हैं इस अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्ररूपित किया है। ऐसा जो मैंने कहा है वह उन्हीं के श्री मुख निर्गतवाणी को सुनकर ही कहा है-अपनी और से इसमें कुछ भी मिलाकर नहीं कहा है ॥ सू० ९ ॥

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत " ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र " की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्याका अठारहवां अध्ययन समाप्त ॥ १८ ॥

एवं खलु जम्बू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्तिबेमि)

આ પ્રમાણે હે જમ્બૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકયા છે-આ અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપથી અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આવું જે મેં કહ્યું છે, તે તેમના જ શ્રીમુખથી નીકળેલી વાણીને સાંભળીને જ કહ્યું છે પોતાના તરફથી ઉમેરીને મેં કહ્યું નથી ॥ સૂત્ર ૯ ॥

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત " જ્ઞાતાધર્મકથાઙ્ગસૂત્ર " ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યાનું અઢારમું અધ્યયન સમાપ્ત ॥ ૧૮ ॥

स्रवस्य शुक्रास्रवस्य 'जाव अवस्सं विप्पजहियव्वस्स ' यावत् अवश्यं विप्रहेयस्य औदारिकशरीरस्य नो वर्णहेतोर्वा, नो रूपहेतोर्वा नो बलहेतोर्वा, नो विषयहेतोर्वा, आहारमाहरति=आहार करोति, ' एगाए सिद्धिगमणसंपावणट्ठयाए' एकस्याः सिद्धिगमनसंप्रापणार्थतायाः ' नन्नत्थ ' अन्यत्र न, मोक्षप्राप्तिरूप प्रयोजन विहाय वर्णादिप्रयोजनेन आहार नाहरतीति भावः । स =निर्ग्रन्थो वा निर्ग्रन्थी वा खलु ' इहभवे चेव ' इहभवे एव=अस्मिन् जन्मन्येव बहूना श्रमणानां बहूनां श्रमणीना बहूना श्रावकाणा बहूना श्राविकाणाम् ' अच्चणिज्जे ' अर्चनीय = आदरणीय ' जाव वीइवइस्सइ यावद् व्यतिव्रजिष्यति=चातुरन्तससारकान्तार मुल्लङ्घयिष्यति-ससारपार गमिष्यतीत्यर्थः ।

वाले, यावत् अवश्य परित्याग होने की योग्यतावाले इस औदारिक शरीर में कान्ति विशेष बढाने के लिये बल बढाने के लिये, अथवा विषय की प्रवृत्ति चालू रखने के लिये आहार नहीं लेता है किन्तु-एक-केवल सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त करने के लिये ही आहार लेता है। मोक्ष प्राप्तिरूप प्रयोजन को छोड़कर और किसी कान्ति आदि बढाने के अभिप्रायरूप प्रयोजन से निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन अहार नहीं लिया करते हैं-(सेण) ऐसे निर्ग्रन्थ श्रमण श्रमणी जन (इहभवे चेव बहूण समणाण बहूण समणीण बहूण सावयाण बहूण सावियाण अच्च णिज्जे जाव वीइवइस्सइ) इस भव में ही अनेक श्रमण, श्रमणी, जनों द्वारा तथा श्रावक श्राविकाओ द्वारा अर्चनीय-आदरणीय यावत् इस चतुर्गतिरूप ससार कान्तार को पारकरने वाले होते हैं। (एव खलु

સ્રવવાળા, પિત્તાસ્રવવાળા, શુક્રાસ્રવવાળા યાવત્ ચોક્કસ નષ્ટ થનારા આ ઔદારિક શરીરમા કાતિ વિશેષની વૃદ્ધિ માટે, બળની વૃદ્ધિ માટે અથવા તો વિષયની પ્રવૃત્તિ ચાલુ રાખવા માટે આહાર લેતા નથી પણ ફક્ત એક જ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવા માટે જ આહાર ગ્રહણ કરે છે મોક્ષપ્રાપ્તિ રૂપ પ્રયોજન વગર બીજી કોઇ કાનિ વગેરેની વૃદ્ધિની અભિલાષા રાખીને નિર્ગ્રંથ-શ્રમણીજન આહાર ગ્રહણ કરતા નથી (सेण) એવા નિર્ગ્રંથ શ્રમણ શ્રમણીજનો—

(इहभवे चेव बहूण समणाण समणीणं बहूणं सावयाण बहूण सावियाण अच्चणिज्जे जाव वीइवइस्सइ)

આ ભવમા જ ઘણા શ્રમણ શ્રમણીજનો વડે તેમજ શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્ચનીય, આદરણીય યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સસાર કાતારને પાર કરી જનારા હોય છે

मूलम्—जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूण वीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेण समएण इहेव जंबूदीवे दीवे पुव्वविदेहेवासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेण उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं पुक्खलावई णाम विजए पन्नत्ते। तत्थ ण पुंडरिगिणी णाम रायहाणी पन्नत्ता णवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा जाव पच्चक्ख देवलोगभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तीसेण पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे। तत्थ णं पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था, तस्स ण पउमावई णाम देवी होत्था। तस्स णं महापउमस्स रन्नो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, त जहा—पुंडरीए य कंडरीए य, सुकुमालपाणिपाया०। पुंडरीए जुवराया। तेणं कालेणं तेणं समएण थेरागमणं, महापउमे राया णिग्गए धम्म सोच्चा, पोंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए पोंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया, महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, तएण थेरा वहिया जणवयविहार विहरति, तएण से महापउमे बहूणि वासाइं जाव सिद्धे ॥ सू० १ ॥

अथ एकोनविंशतितममध्ययनम्—

गतमष्टादशमध्ययनम्, साम्प्रतमेकोनविंशतितमं व्याख्यायते, अस्य च पूर्वेण सह अयमभिसम्बन्धः-पूर्वस्मिन्नध्ययने असंवृतास्रवस्य तदितरस्य च अनर्थार्थौ उक्तौ, इह तु चिरं संवृतास्रवोऽपि यः पश्चाद्यथा स्यात्तस्य अल्पकालं संवृतास्रवस्य च अनर्थार्थौ मोच्येते, इत्येवं सम्बन्धेनायातस्यास्येदमादिसूत्रम्-' जइ णं भंते ' इत्यादि ।

॥ पुण्डरीक-कण्डरीक नाम का उन्नीसवां अध्ययन प्रारंभ ॥

अठारहवां अध्ययन समाप्त हो चुका-अब १९ वां अध्ययन प्रारंभ होता है-इस अध्ययन का पूर्व अध्ययन के साथ इस प्रकार का संबन्ध है पूर्व अध्ययन में असंवृतास्रव अथवा संवृतास्रव वाले प्राणी को अर्थ एवं अनर्थ की प्राप्ति होना समर्थित किया गया है-अर्थात् असंवर वालेको अनर्थ की प्राप्ति होती है और संवरवाले को इष्ट अर्थ की प्राप्ति होती है । अब इस अध्ययन में सूत्रकार यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि जिस प्राणी ने चिरकाल से आस्रवको संवृत कर दिया है-परन्तु यदि वह पीछे से असंवृतास्रव वाला बन जाता है तो उसके अनर्थ की प्राप्ति तथा अल्प काल भी जिसने आस्रव को संवृतकर दिया है उसके अर्थ की प्राप्ति होती है। इस संबंध को लेकर प्रारंभ किये गये इस अध्ययन का यह सर्व प्रथम सूत्र है।

પુણ્ડરીક-કણ્ડરીક નામે ઓગણીસમું અધ્યયન પ્રારંભ

અઢારમું અધ્યયન પુરૂં થઈ ગયું છે હવે ઓગણીસમું અધ્યયન શરૂ થાય છે આ અધ્યયનનો એના પૂર્વના અધ્યયનની સાથે આ જાતનો સંબંધ છે કે પૂર્વ અધ્યયનમાં અસંવૃતાસ્રવ અથવા સંવૃતાસ્રવવાળા પ્રાણીને અર્થ અને અનર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે, તે વાતનું સમર્થન કરવામાં આવ્યું છે એટલે કે અસંવરવાળાઓને અનર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે અને સંવરવાળાઓને ઇષ્ટ-અર્થની પ્રાપ્તિ હોય છે હવે આ અધ્યયનમાં સૂત્રકાર આ વાતનું સ્પષ્ટીકરણ કરી રહ્યા છે કે જે પ્રાણીએ ચિરકાળથી એટલે કે બહુ લાંબા વખતથી આસ્રવને સંવૃત કરી દીધો છે, પરંતુ જો તે પાછળથી એટલે કે ભવિષ્યમાં અસંવૃત્તાસ્રવવાળો બની જાય છે તો તેને અનર્થની પ્રાપ્તિ તેમજ થોડા વખત સુધી પણ જેણે આસ્રવને સંવૃત કરી દીધો છે તેને અર્થની પ્રાપ્તિ થાય છે આ વાતને લઈને આરંભાએલા આ અધ્યયનનું આ પહેલું સૂત્ર છે —

पाश्चात्ये=पश्चिमेभागे 'एगसेलगस्स' एकशैलकस्य=मध्यजम्बूद्वीपमेरुपर्वतसमीपस्थस्य एक शैलकनामकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरत्थिमेण' पौरस्त्ये=पूर्वस्या दिशि 'एत्थण' अत्र खलु पुष्कलावती नाम विजयः प्रज्ञप्तः। तत्र खलु पुण्डरीकिणी नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, सा 'णवजोयणवित्थिण्णा' नवयोजनविस्तीर्णा = नवयोजनविस्तारवती 'दुवालसजोयणायामा' द्वादश योजनायामा=द्वादशयोजनानि आयामो दैर्घ्यं यस्याः सा=द्वादशयोजनदीर्घेत्यर्थः, पुन 'जाव पच्चक्खं देवलोयभूया यावत् प्रत्यक्षदेवलोकभूता=साक्षात् स्वर्गसदृशा पुनः प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा, प्रतिरूपा। तस्या खलु पुण्डरीकिण्याः

पुरत्थीमेण एत्थण पुक्खलावइणाम विजए पण्णत्ते) इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं–सुनो–तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल और उस समय में इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में पूर्व विदेह क्षेत्रमें, शीत महानदी के उत्तरदिग्वर्ती तीर पर स्थित नील पर्वत के दक्षिण दिग्भाग में, तथा उत्तर दिग्वर्ती शीतामुखवनषड के पश्चिम भाग में, तथा एक शैलक नाम वाले वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशा में पुष्कलावती इस नाम का विजय है। शीतामुखवनषड का तात्पर्य यह है–कि जहां से शीतानदी नीकली है उस उद्गमस्थान पर एक वनषड है। मध्य जम्बूद्वीप और मेरूपर्वत के समीप में रहा हुआ एक शैलक नाम का वक्षस्कार पर्वत है।–(तत्थण पुंडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) उस

सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेण एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण एत्थण पुक्खलावइ णाम विजए पण्णत्ते)

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જંબૂ! સાંભળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે આ જંબૂદ્વીપ નામક દ્વીપમાં પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમાં, શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના દક્ષિણ દિગ્ભાગમાં તેમજ ઉત્તર દિશામાં આવેલા સીતા મુખવનષંડના પશ્ચિમ ભાગમાં, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામાં પુષ્કલાવતી નામે એક વિજય છે સીતા મુખવન–ષંડનો અર્થ આમ સમજવો જોઈએ કે જ્યાંથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનષંડ છે મધ્ય જંબૂદ્વીપ અને મેરૂપર્વતની પાસે આવેલો એક શૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(तत्थण पुंडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णव जोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा)

टीका—' जइण भंते ' इत्यादि। यदि खलु हे भदन्त! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्सम्प्राप्तेन अष्टादशस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः, पुनः खलु हे भदन्त! एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताऽध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? इति जम्बूस्वामी प्रश्नानन्तरं सुधर्मास्वामी कथयति–एवं खलु हे जम्बू! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव ' जम्बूदीवे दीवे ' जम्बूद्वीपे द्वीपे=मध्यजम्बूद्वीपे ' पुव्वविदेहवासे ' पूर्वविदेहे वर्षे शीताया महानद्याः ' उत्तरीये=उत्तरदिक् स्थिते कूले=तीरे ' नील वंतस्स दाहिणेणं ' नीलवतो दक्षिणे=नीलवतः पर्वतस्य दक्षिणभागे ' उत्तरिल्लस्स ' उत्तरीयस्य=उत्तरदिक् स्थितस्य ' सीयामुहवणसण्डस्स ' सीतामुखवनषण्डस्य= शीताया नद्या यन्मुखमुद्गमस्थान, तत्र यद् वनषण्डम् तस्य, ' पच्चत्थिमेण '

' जइण भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण ' इत्यादि।

टीकार्थ—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (जइण भंते समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेणं अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?) हे भदन्त! यदि श्रमण भगवान् महावीरने कि जो सिद्धि गति नामक मुक्तिस्थान को प्राप्त कर चुके हैं अठारहवें ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है–तो उन्हीं श्रमण भगवान् महावीरने १९ वें ज्ञाताध्ययन का क्या भाव–अर्थ निरूपित किया है ? (एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जम्बूदीवे दीवे पुव्वविदेह वासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स दाहिणेणं उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स

' जइण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण —

टीकार्थ—જમ્બૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે

(जइण भंते ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण अट्ठारसमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते एगूणवीसइमस्स णायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?)

હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે સિદ્ધિગતિ નામક મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે–અઢારમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ત્યારે તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો શો ભાવ–અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે ?

(एव खलु जम्बू ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जम्बूदीवे दीवे पुव्व विदेहवासे सीयाए महाणईए उत्तरिल्ले कूले नीलवंतस्स [illegible] उत्तरिल्लस्स

पाश्चात्ये=पश्चिमेभागे 'एगसेलगस्स' एकशैलकस्य=मध्यजम्बूद्वीपमेरुपर्वतसमीप स्थस्य एक शैलकनामकस्य 'वक्खारपव्वयस्स' वक्षस्कारपर्वतस्य 'पुरत्थिमेण' पौरस्त्ये=पूर्वस्या दिशि 'एत्थण' अत्र खलु पुष्कलावती नाम विजयः प्रज्ञप्तः। तत्र खलु पुण्डरीकिणी नाम राजधानी प्रज्ञप्ता, सा 'णवजोयणवित्थिण्णा' नवयोजनविस्तीर्णा = नवयोजनविस्तारवती 'दुवालसजोयणायामा' द्वादश योजनायामा=द्वादशयोजनानि आयामो दैर्घ्यं यस्याः सा=द्वादशयोजनदीर्घेत्यर्थ, पुन 'जाव पच्चक्खं देवलोयभूया यावत् प्रत्यक्षदेवलोकभूता=साक्षात् स्वर्गसदृशा- पुनः प्रासादीया, दर्शनीया, अभिरूपा, प्रतिरूपा। तस्या खलु पुण्डरीकिण्याः

पुरत्थिमेण एत्थण पुक्खलावइणाम विजए पण्णत्ते) इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं–सुनो–तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है उस काल और उस समय मे इस जम्बूद्वीप नाम के द्वीप में पूर्व विदेह क्षेत्रमें, शीत महानदी के उत्तरदिग्वर्ती तीर पर स्थित नील पर्वत के दक्षिण दिग्भाग में, तथा उत्तर दिग्वर्ती शीतामुखवनषंड के पश्चिम भाग में, तथा एक शैलक नाम वाले वक्षस्कार पर्वत की पूर्व दिशा में पुष्कलावती इस नाम का विजय है। शीतामुखवनषड का तात्पर्य यह है–कि जहा से शीतानदी नीकली है उस उद्गमस्थान पर एक वनषड है। मध्य जम्बूद्वीप और मेरूपर्वत के समीप में रहा हुआ एक शैलक नाम का वक्षस्कार पर्वत है।–(तत्थण पुंडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा) उस

सीयामुहवणसडस्स पच्चत्थिमेण एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेण एत्थण पुक्खलावइ णाम विजए पण्णत्ते)

આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા તેમને કહેવા લાગ્યા કે હે જબૂ! સાભળો, તમારા સવાલનો જવાબ આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે આ જબૂદ્વીપ નામક દ્વીપમા પૂર્વ વિદેહ ક્ષેત્રમા, શીતા મહા નદીના ઉત્તર દિશા તરફના કિનારા ઉપર આવેલા નીલ પર્વતના દક્ષિણ દિગ્ભાગમા તેમજ ઉત્તર દિશામા આવેલા સીતા મુખવનષડના પશ્ચિમ ભાગમા, તેમજ એક શૈલક નામવાળા વક્ષસ્કાર પર્વતની પૂર્વ દિશામા પુષ્કલાવતી નામે એક વિજય છે સીતા મુખવન–ષડનો અર્થ આમ સમજવો જોઇએ કે જ્યાથી શીતા નદી નીકળી છે, તે ઉદ્ગમ સ્થાન ઉપર એક વનષડ છે મધ્ય જબૂદ્વીપ અને મેરૂપવતની પાસે આવેલો એકશૈલક નામે વક્ષસ્કાર પર્વત છે

(तत्थण पुडरिगिणीणाम रायहाणी पन्नत्ता, णव जोयणवित्थिण्णा दुवालसजो यणायामा, जाव पच्चक्ख देवलोयभूया पासाईया, दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा)

नगर्याः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नलिनीवनं नाम उद्यानम् । तत्र खलु पुण्डरीकिण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजाऽऽसीत् । तस्य खलु पद्मावती नाम देवी आसीत् । तस्य खलु महापद्मस्य राज्ञः पुत्रौ पद्मावत्या देव्या आत्मजौ द्वौ कुमारौ आस्ताम् । 'तं जहा' तद्यथा तयोर्नामरूपे, तदाह–' पुंडरीए य कंडरीए य सुकुमालपाणिपाया ' पुण्डरीकश्च कण्डरीकश्च सुकुमारपाणिपादौ कोमलकरचरणौ । तयोर्मध्ये पुण्डरीको युवराजाऽऽसीत् । तस्मिन् काले तस्मिन् समये ' थेरागमणं '

पुष्कलावती विजय में पुंडरीकिनी नाम राजधानी थी। यह नव योजन विस्तारवाली तथा १२ योजन की लंबी है यह साक्षात स्वर्ग जैसी प्रतीत होती है। प्रासादीयचित्त एव अन्तःकरण को यह प्रसन्न करने वाली है, दर्शनीय–नेत्रों को तृप्ति करने वाली है, अभिरूप–असाधारण रचना से युक्त है एव प्रतिरूप है–इसके जैसी और दूसरी कोई नगरी नहीं है ऐसी। (तीसेण पुंडरिगीणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे–तत्थ ण पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था–तस्सण पउमावईणाम देवी होत्था, तस्स ण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था) उस पुंडरीकिणी नगरी के उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग में नलिनीवन नाम का एक उद्यान था। उस पुंडरीकिणी राजधानी में महापद्मनाम का एक राजा रहता था। उसकी देवी का नाम पद्मावती थी। उस महापद्म राजा के यहां पद्मावती की कुक्षि से उत्पन्न हुए दो कुमार थे (तं जहा पुंडरीए य, कंडरीए य–सुकुमालपाणि पाया० । पुंडरीए जुवराया तेण कालेण

તે પુષ્કલાવતી વિજયમાં પુંડરીકિની નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બાર યોજન જેટલી લાંબી છે તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્ત કરણને તે પ્રસન્ન કરનારી છે, દર્શનીય–આંખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ) રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ–એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવી છે

(तीसेण पुंडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे–तत्थण पुंडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था–तस्सण पउमावईणाम देवी होत्था, तस्सण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था)

તે પુંડરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમાં નલિનીવન નામે એક ઉદ્યાન હતો તે પુંડરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો હતો તેની રાણીનુ નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્માવતી દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા

स्थविरागमन=तस्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने स्थविराणामागमनमभूत् । महापद्मो राजा धर्मं श्रोतु निर्गतः, धर्मं श्रुत्वा सजातवैराग्यः पुण्डरीकं राज्ये स्थापयित्वा प्रव्रजितः । अनन्तरं पुण्डरीको राजा जातः, कण्डरीको युवराजः । महापद्मऽनगार चतुर्दशपूर्वाणि अधीते । ततः खलु स्थविरा बहिर्जनपदविहार विहरन्ति । ततः खलु स महापद्मो बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा यावद् सिद्धः॥सू० १॥

तेण समएण थेरागमण, महापउमे राया णिग्गए, धम्म सोच्चा पोंडरीय रज्जे ठवेत्ता पव्वइए। पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा वहिया जणवयविहार विहरति, तएण से महापउमे बहूणि वासाइ जाव सिद्धे) उनके नाम इस प्रकार है-१ पुडरीक और दूसरा कडरीक-ये दोनो पुत्र सुकुमार करचरणवाले थे। पुडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था। उस काल में और उस समय मे वहा स्थविरों का आगमन हुआ। महापद्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर नलिनीवन उद्यान में आये। वहा धर्म का उपदेश सुनकर उन्हे वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया-सो वे पुडरीक को राज्य मे स्थापितकर दीक्षित हो गये। पुडरीक राजा बन गया-और कडरीक युवराज हो गया। महापद्मराजर्षि ने चौदह पूर्वो का अध्ययन कर लिया। इसके बाद वहा से स्थविरो ने

(त जहा-पुडरीए य, कडरीए य-सुकुमालपाणिपाया० । पुडरीए जुवराया तेण कालेण तेण समएण थेरागमण, महापउमे राया णिग्गए, धम्म सोच्चा पोंडरीय रज्जे ठवेत्ता पव्वइए । पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया । महा० पउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा बहिया, जणवयविहार विहरति, तएण से महापउमे बहूणि वासाइ जाव सिद्धे)

तेमना नामो आ प्रमाणे छे-१ पुडरीक, अने २ कडरीक आ बन्ने पुत्रो सुकोमळ हाथ-पगवाळा हता राजाए पुडरीकने युवराजपद प्रदान कर्युं हतुं ते काळे अने ते समये त्या स्थविरोनु आगमन थयु महापद्म राजा धर्मनु व्याख्यान साभळवा माटे पोताना महेलथी नीकळीने नलिनीवन उद्यानमा आव्यो त्या धर्मोपदेश साभळीने तेने वैराग्यभाव उत्पन्न थई गयो छेवटे पुडरीकने राज्यासने स्थापित करीने तेओ दीक्षित थई गया पुडरीक राजा थई गयो अने कडरीक युवराज थई गयो महापद्म राजर्षिए चौ० पूर्वोनु अध्ययन करी लीधु त्यारपछी स्थविरो त्याथी बहार जनपदोमा विहार

नगर्याः उत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे नलिनीवन नाम उद्यानम् । तत्र खलु पुण्डरीकिण्यां राजधान्यां महापद्मो नाम राजाऽऽसीत् । तस्य खलु पद्मावती नाम देवी आसीत् । तस्य खलु महापद्मस्य राज्ञः पुत्रो पद्मावत्या देव्या आत्मजौ द्वौ कुमारौ आस्ताम् । 'त जहा' तद्यथा तयोर्नामरूपे, उदाह-'पुडरीए य कडरीए य सुकुमाल पाणिपाया' पुण्डरीकश्च कण्डरीकश्च सुकुमारपाणिपादौ कोमलकरचरणौ । तयो र्मध्ये पुण्डरीको युवराजाऽऽसीत् । तस्मिन् काले तस्मिन समये 'थेरागमण'

पुष्कलावती विजय में पुडरीकिनी नाम राजधानी थी । यह नव योजन विस्तारवाली तथा १२ योजन की लबी है यह साक्षात स्वर्ग जैसी प्रतीत होती है । प्रासादीयचित्त एव अन्तःकरण को यह प्रसन्न करने वाली है, दर्शनीय-नेत्रों को तृप्ति करने वाली है, अभिरूप-असाधारण रचना से युक्त हैं एव प्रतिरूप है-इसके जैसी और दूसरी कोई नगरी नहीं है ऐसी । (तीसेण पुडरिगीणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे-तत्थ ण पुडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णामं राया होत्था-तस्सण पउमावईणाम देवी होत्था, तस्स ण महापउ मस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था) उस पुडरीकिणी नगरी के उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग में नलिनीवन नाम का एक उद्यान था । उस पुडरीकिणी राजधानी में महापद्मनाम का एक राजा रहता था । उसकी देवी का नाम पद्मावती थी । उस महापद्म राजा के यहा पद्मावती की कुक्षि से उत्पन्न हुए दो कुमार थे (त जहा पुडरीए य, कडरीए य-सुकुमालपाणि पाया० । पुडरीए जुवराया तेण कालेण

તે પુષ્કલાવતી વિજયમા પુડરીકિની નામે રાજધાની હતી તે નવ યોજન જેટલા વિસ્તારવાળી તેમજ બાર યોજન જેટલી લાબી છે તે પ્રત્યક્ષ સ્વર્ગ જેવી જ લાગે છે તે પ્રાસાદીયચિત્ત અને અન્ત કરણને તે પ્રસન્ન કરનારી છે, દર્શનીય-આખોને તે તૃપ્ત કરનારી છે, અભિરૂપ તે અસાધારણ (અપૂર્વ) રચનાવાળી છે, અને પ્રતિરૂપ-એના જેવી બીજી કોઈ નગરી નથી એવી છે

(तीसेण पुडरिगिणीए णयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए णलिणिवणे णाम उज्जाणे-तत्थण पुडरिगिणीए रायहाणीए महापउमे णाम राया होत्था-तस्सण पउमावईणाम देवी होत्था, तस्सण महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था)

તે પુડરીકિણી નગરીના ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્વિભાગમા નલિનીવન નામે એક ઉદ્યાન હતો તે પુડરીકિણી રાજધાનીમા મહાપદ્મ નામે એક રાજા રહેતો હતો તેની રાણીનુ નામ પદ્માવતી હતું તે મહાપદ્મ રાજાને ત્યાં પદ્મવતી દેવીના ગર્ભથી ઉત્પન્ન થયેલા બે રાજકુમાર હતા

स्थविरागमन=तस्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने स्थविराणामागमनमभूत । महापद्मो राजा धर्मं श्रोतु निर्गतः, धर्मं श्रुत्वा सजातवैराग्यः पुण्डरीक राज्ये स्थापयित्वा प्रव्रजितः । अनन्तर पुण्डरीको राजा जातः, कण्डरीको युवराजः । महापद्मऽनगार चतुर्दशपूर्वाणि अधीते । ततः खलु स्थविरा बहिर्जनपदविहार विहरन्ति । ततः खलु स महापद्मो बहूनि वर्षाणि श्रामण्यपर्याय पालयित्वा यावद् सिद्धः॥सू० १॥

तेणं समएण थेरागमण, महापउमे राया णिग्गए, धम्म सोचा पोंडरीय रज्जे ठवेत्ता पव्वइए। पोंडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा बहिया जणवयविहार विहरति, तएणं से महापउमे बहूणि वासाइ जाव सिद्धे) उनके नाम इस प्रकार है-१ पुडरीक और दूसरा कडरीक-ये दोनो पुत्र सुकुमार करचरणवाले थे। पुडरीक को पिता ने युवराज पदप्रदान किया था। उस काल में और उस समय मे वहा स्थविरों का आगमन हुआ। महापद्मराजा धर्म का व्याख्यान सुनने के लिये अपने महल से निकलकर नलिनीवन उद्यान में आये। वहा धर्म का उपदेश सुनकर उन्हे वैराग्य भाव उत्पन्न हो गया-सो वे पुडरीक को राज्य मे स्थापितकर दीक्षित हो गये। पुडरीक राजा बन गया-और कडरीक युवराज हो गया। महापद्मराजर्षि ने चौदह पूर्वो का अध्ययन कर लिया। इसके बाद वहां से स्थविरो ने

(त जहा-पुडरीए य, कडरीए य-सुकुमालपाणिपाया० । पुडरीए जुवराया तेण कालेण तेण समएण थेरागमण, महापउमे राया णिग्गए, धम्म सोच्चा पोंडरीय रज्जे ठवेत्ता पव्वइए। पोडरीए राया जाए, कडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइ अहिज्जइ, तएण थेरा बहिया, जणवयविहार विहरति, तएण से महापउमे बहूणि वासाइ जाव सिद्धे)

तेमना नामो आ प्रमाणे छे-१ पुडरीक, अने २ कडरीक आ बने पुत्रो सुकोमळ हाथ-पगवाळा हता राजाए पुडरीकने युवराजपद प्रदान कर्युं हतुं ते काळे अने ते समये त्यां स्थविरोनु आगमन थयु महापद्म राजा धर्मनु व्याख्यान साभळवा माटे पोताना महेलथी नीकळीने नलिनीवन उद्यानमा आव्यो त्या धर्मोपदेश साभळीने तेने वैराग्यभाव उत्पन्न थइ गयो छेवटे पुडरीकने राज्यासने स्थापित करीने तेओ दीक्षित थई गया पुडरीक राजा थई गयो अने कडरीक युवराज थइ गयो महापद्म राजर्षिए चौ० पूर्वोनु अध्ययन करी लीधु त्यारपछी स्थविरो त्याथी बहार जनपदोमा विहार

मूलम्-तएणं थेरा अन्नया कयाइं पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए। कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ। थेरा धम्मं परिकहेंति पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए। तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुण्डरीयं रायं आपुच्छामि, जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरु हइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए तएणं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंड-रीए एवं वयासी-माणं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि। तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएइ, बहूहिं आघवणाहि

बाहिर जनपदों में विहार कर दिया। महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन कर यावत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १॥

માટે નીકળી પડયા. મહાપદ્મ અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને યાવત્ સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કરી લીધું ॥ સૂત્ર ૧

य पण्णवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिंचइ जाव थेराण सीसभिक्खं दलयइ। पव्वइए अणगारे जाए एगारसगविऊ। तएण थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवय-विहारं विहरति ॥ सू० २ ॥

टीका—'तएण ते' इत्यादि। ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समवसृता=समगताः। तेषा समागमन श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितु निर्गतः। अनन्तरम्—कण्डरीको 'महाजणसद्द' महाजनशब्द=स्थविरान् वन्दितु कामाना गच्छता वहूना जनाना कोलाहल श्रुत्वा 'जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ' यथामहावलो यावत्पर्युपास्ते। महावल इव स्थविराणा समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते। स्थविरा धर्मं 'परिकहेंति' परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः। तेरुपदिष्ट धर्मं श्रुत्वा पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः 'जाव पडिगए' यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

'तएण ते थेरा अन्नया कयाइ' इत्यादि।

टीकार्थः—(तएण) इसके वाद (ते थेरा) वे स्थविर (अन्नया कयाइ किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए) पुडरीकिणी राजधानी में आये। वहा वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे। पुडरीक राजा उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहा जाने के लिये अपने महल से निकले। (कडरीए महाजणसद्द सोचा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परिकहेंति, पुडरीए समणोवासए जाए जाव

'तएण ते थेरा अन्नया कयाइ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (ते थेरा) ते स्थविरो (अन्नया कयाइ) कोई एक वखते (पुणरवि) फरी (पुडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए रायाणिग्गए) पुडरीकिणी राजधानीमा आव्या त्या तेओ नलिनीवन उद्यानमा रोकाया पुडरीक राजा तेमनु आगमन सांभळीने धर्मनु व्याख्यान साभळवानी इच्छाथी त्या जवा माटे पोताना महेलथी नीकळ्या (कडरीए महाजणसद्द सोचा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्म परि

मूलम्--तएणं थेरा अन्नया कयाइ पुणरवि पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए। कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ। थेरा धम्मं परिकहेंति पुंडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए। तएणं से कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेयं तुब्भे वदह जं णवरं पुण्डरीयं रायं आपुच्छामि, जाव पव्वयामि। अहासुहं देवाणुप्पिया! तएणं से कंडरीए जाव थेरे वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुण्डरीए राया तेणेव उवागच्छइ करयल जाव पुंडरीयं एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! मए थेराणं अंतिए जाव धम्मे निसंते से धम्मे जाव अभिरुइए तएणं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइत्तए। तएणं से पुंडरीए कंडरीए एवं वयासी--माणं तुमं देवाणुप्पिया! इयाणिं मुंडे जाव पव्वयाहि, अहं णं तुमं महया२ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि। तएणं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं णो आढाइ णो-परिजाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी--जाव तुसिणीए संचिट्ठइ। तएणं पुण्डरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएइ, बहूहिं आघवणाहिं

बाहिर जनपदों में विहार कर दियो। महापद्म अनगार ने अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालनकर यावत् सिद्धपद को प्राप्त कर लिया ॥ सू० १॥

માટે નીકળી પડયા મહાપદ્મ અનગારે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય પર્યાયનું પાલન કરીને યાવત્ સિદ્ધપદને પ્રાપ્ત કરી લીધું ॥ સૂત્ર ૧ ॥

य पण्णवणाहि य४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ । पव्वइए अणगारे जाए एगारसंगविऊ । तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति पडिणिक्खमित्ता वहिया जणवय-विहारं विहरंति ॥ सू० २ ॥

टीका—'तएणं ते' इत्यादि । ततः खलु ते स्थविरा अन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या राजधान्या नलिनीवने उद्याने समवसृता -समगताः । तेषां समागमनं श्रुत्वा पुण्डरीको राजा तान् वन्दितुं निर्गतः । अनन्तरम्—कण्डरीको 'महाजणसद्दं' महाजनशब्द=स्थविरान् वन्दितुं कामानां गच्छतां बहूनां जनानां कोलाहलं श्रुत्वा 'जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ' यथामहाबलो यावत्पर्युपास्ते । महाबल इव स्थविराणां समीपे गत्वा तान् वन्दित्वा नमस्यित्वा सेवते । स्थविरा धर्मं 'परिकहंति' परिकथयन्ति=उपदिशन्तीत्यर्थः । तैरुपदिष्टं धर्मं श्रुत्वा पुण्डरीकः श्रमणोपासको जातः 'जाव पडिगए' यावत्प्रतिगतः=स्थविरान् वन्दित्वा

'तएणं ते थेरा अन्नया कयाइ' इत्यादि ।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (ते थेरा) वे स्थविर (अन्नया कयाइ किसी एक समय (पुणरवि) फिर से (पुंडरिगीणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए राया णिग्गए) पुंडरीकिणी राजधानी में आये । वहां वे नलिनीवन उद्यान में ठहरे । पुंडरीक राजा उनका आगमन सुनकर धर्म सुनने की इच्छा से वहां जाने के लिये अपने महल से निकले । (कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महब्बलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्मं परिकहेंति, पुंडरीए समणोवासए जाए जाव

'तएणं ते थेरा अन्नया कयाइ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (ते थेरा) ते स्थविरो (अन्नया कयाइ) कोई એક વખતે (पुणरवि) ફરી (पुंडरिगिणीए रायहाणीए णलिणिवणे उज्जाणे समोसढा, पोंडरीए रायाणिग्गए) પુંડરીકિણી રાજધાનીમાં આવ્યા ત્યાં તેઓ નલિનીવન ઉદ્યાનમાં રોકાયા પુંડરીક રાજા તેમનું આગમન સાંભળીને ધર્મનું વ્યાખ્યાન સાંભળવાની ઇચ્છાથી ત્યાં જવા માટે પોતાના મહેલથી નીકળ્યા. (कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाबलो जाव पज्जुवासइ, थेरा धम्मं परि

नमस्यित्वा प्रतिनिवृत्तः। ततः खलु कण्डरीकः 'उट्ठाए' उत्थया=उत्थानशक्त्या उत्तिष्ठति, उत्थया उत्थाय 'जाव' यावत् स्थविरान् वन्दित्वा नमस्यित्वा एव मवदत्-'से जहेय तुब्भे वदह' तथैवेद यूय वदथ=हे देवानुप्रियाः! यूय यथा यद् वदथ, तत्तथैव, 'ज णवर' यन्नवर=यो विशेष सर्वेत्रम्-यदहं पूर्वे पुण्ड रीक राजानम् आपृच्छामि। तत खलु 'जाव पव्वयामि' यावत् प्रव्रजामि।

पडिगए) इसके बाद कंडरीक युवराज स्थविरों को वदना करने के लिये जानेवाले अनेक मनुष्यों का कोलाहल सुनकर महाबल राजा की तरह स्थविरो के पास गया-वहा जाकर उसने उनकी वदना की-नमस्कार किया। वदना नमस्कार कर फिर उसने उनकी पर्युपासना की। स्थविरों ने धर्म का उपदेश दिया। उस उपदेश को सुनकर पुडरीक श्रमणोपासक बन गया। बाद में वह स्थविरों को वदना और नमस्कार कर अपने स्थान पर वापिस वहा से लौट आया। (तएण से कडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहेय तुब्भे वदह, ज णवर पुडरीय राय आपुच्छामि, तएण जाव पव्वयामि-अहासुह देवाणुप्पिया। तएण से कडरीए जाव थेरे वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता थेराण अतियाओ पडिनिक्खमइ) इसके बाद कडरीक उत्थानशक्ति से उठा-उत्थानशक्ति -उठने की शक्ति से उठकर उसने स्थविरों को वदना की-नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके फिर उसने उनसे इस प्रकार कहा-हे

कहेंति, पुडरीए समणोवासए जाए जाव पडिगए) ત્યારપછી કડરીક યુવરાજ સ્થવિરોની વદના કરવા માટે ઉપડેલા અનેક માણુસોનો ઘોઘાટ સાભળીને મહાબલ રાજાની જેમ સ્થવિરોની પાસે ગયો ત્યા જઈને તેણે તેમને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમની પર્યુપાસના કરી સ્થવિરોએ ધર્મોપદેશ આપ્યો, તે ઉપદેશને સાભળીને પુડરીક શ્રમણોપાસક બની ગયો ત્યારપછી તે સ્થવિરોને વદન તેમજ નમન કરીને પોતાના નિવાસ-સ્થાને પાછો આવતો રહ્યો

(तएण से कडरीए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठाए उट्ठित्ता जाव से जहे य तुब्भे वदह ज णवर पुडरीय राय आपुच्छामि, तएण जाव पव्वयामि-अहासुह देवाणुप्पिया! तएण से कडरीए जाव थेरे वदइ, नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता थेराण अतियाओ पडिनिक्खमइ)

ત્યારપછી કડરીક ઉત્થાન શકિત વડે ઊભો થયો, ઉત્થાન શકિત-ઊભા થવાની શકિત વડે ઊભો થઈને તેણે સ્થવિરોને વદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કે

इति तद् वचन श्रुत्वा ते स्थविरा' मोचुः ' अहासुह देवाणुप्पिया ' यथासुख हे देवानुप्रिया । हे देवानुप्रिय । यथा तव सुखकर भवेत् तथा कुरु । ततः खलु स कण्डरीको यावत् स्थविरान् वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिकात्=समीपात् प्रतिनिष्क्राम्यति, प्रतिनिष्क्रम्य, तमेव ' चाउग्घट ' चतुर्घण्ट=चतस्रो घण्टा यस्मिन् स तम्=घण्टा चतुष्टयोपेतम् अश्वरथ दूरोहति, यावत् प्रत्यवरोहति=रथादवतरति । अवतरणानन्तर यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, ' करयल जाव ' करतल यावत्=करतलपरिगृहीत शिर आवर्त्त दशनख मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा पुण्डरीकमेवमवादीत्-एव खलु हे देवानुप्रिय ! मया स्थविराणामन्तिके यावद् धर्मो निशान्त =श्रुत', स धर्मः=स्थविरप्रोक्तो धर्मः यावत् अभिरुचित' । तत् खलु हे देवानुप्रिय ! ' जाव पव्वइत्तए ' यावत् प्रव्रजितुम्=हे देवानुप्रियाः ! भवद्भिरभ्यनुज्ञातो स्थविराणामन्तिके प्रव्रजितुमिच्छामीतिभावः ।

देवानुप्रियो ! आप जैसा कहते है-वह वैसा ही है-मेरी भावना उसे सुनकर सयम लेने की हो गई है-अतः सयम धारण करने के पहिले मैं पुडरीक राजा से इस विषय में पूछ आता हूँ उसके बाद सयम धारण करना चाहता हूँ। इस प्रकार उसके वचन सुनकर उन स्थविरों ने उससे कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम्हे जैसे सुख हो-तुम वैसा करो-इसके बाद कडरीक ने स्थविरों को वदना की-नमस्कार किया और वदना नमस्कारकर वह उनके पास से चला आया (पडिनिक्खमित्ता) आकर के (तमेवचाउग्घट आसरह दुरूहइ, जाव पच्चोरुहइ, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल जाव पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरुइए

હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે જેમ કહો છો તે ખરેખર તેમ છે આ બધુ સાભળીને સયમ ગ્રહણ કરવાની મારી ઈચ્છા થઈ ગઇ છે એટલા માટે સયમ ધારણ કરતા પહેલા હુ પુડરીક રાજાને આ વિષે પૂછી આવુ છુ ત્યારપછી હુ સયમ ધારણ કરવા ચાહુ છુ આ પ્રમાણે તેના વચનો સાભળીને તે સ્થવિરોએ તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને જેમા સુખ મળે તેમ કરો ત્યારપછી કડરીકે સ્થવિરોને વદન તેમજ નમસ્કાર કરીને તે તેમની પાસેથી આવતો રહ્યો (પડિનિક્ખમિત્તા) આવીને,

(तमेव चाउग्घट आसरह दुरुहइ, जाव पच्चोरूहइ, जेणेव पुडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, करयल पुडरीय एव वयासी एव खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराण अतिए जाव धम्मे निसते से धम्मे जाव अभिरुइए-तण्ण देवाणुप्पिया !

ततः पुण्डरीकः पुण्डरीकमेवमवादीत्-मा खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! अतः इदानीं मुण्डो यावत् प्रव्रज अह खलु त्वा महता २ 'रायाभिसेएण' राज्याभिषेकेण 'अभिसिंचामि'=अभिषेचयामि। ततः खलु स पुण्डरीको युवराजः पुण्डरीकस्य राज्ञ एतमर्थं नो आद्रियते=तस्य राज्याभिषेकरूपमर्थं नो मनुते, 'नो परिजाणइ' नो प्रतिजानाति=न स्वीकरोति 'तुसिणीए संचिट्ठइ' तूष्णीकः

-तएण देवाणुप्पिया ! पव्वइत्तए। तएण से पुंडरीए कंडरीए एव वयासी -माण तुम देवाणुप्पिया! इयाणि मुंडे जाव पव्वयाहि-अह ण तुमं महया २ रायाभिसेएणं अभिसिंचामि) वह वहा आया-जहा चतुर्घंटो पेत अपना अश्वरथ रखा हुआ था। वहा आकर वह उसपर चढ गया -चढकर वह जहा पुंडरीक राजा थे वहां आया-वहां आते ही वह रथ से नीचे उतरा। नीचे उतरकर पुंडरीक राजा के पास गया-वहा जाकर उसने पुंडरीक राजा को दोनों हाथ जोडकर नमस्कार किया-बाद में इस प्रकार कहने लगा-हे देवानुप्रिय मैंने स्थविरो के पास धर्म का उपदेश सुना है-वह मुझे बहुत रूचा है इसलिये हे देवानुप्रिय ! मैं आपसे आज्ञापित होकर उन स्थविरो के पास सयम लेना चाहता हूँ-इस प्रकार कंडरीक की बात सुनकर पुडरीकने उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रिय ! तुम इस समय मुंडित होकर स्थविरों के पास सयम धारण मतकरो मैं बड़े जोर शोर के उत्सव के साथ तुम्हारा राज्याभिषेक करना चाहता हूँ। (तएण से कंडरीए पुंडरीयस्स

जाव पव्वइत्तए। तएण से पुंडरीए कंडरीए एव वयासी-माण तुम देवाणुप्पिया। इयाणिमुंडे जाव पव्वयाहि अह ण तुम महयार रायाभिसेएण अभिसिंचामि)

તે ત્યા આવ્યો જ્યા ચતુર્ઘંટવાળો પોતાનો અશ્વરથ હતો ત્યા આવીને તે તેમા બેસી ગયો, અને બેસીને તે જ્યા પુંડરીક રાજા હતો ત્યા ગયો ત્યા પહોચતા જ તે રથ ઉપરથી નીચે ઉતર્યો, નીચે ઉતરીને પુંડરીક રાજાની પાસે ગયો ત્યા જઈને તેણે બને હાથ જોડીને પુંડરીક રાજાને નમસ્કાર કર્યા અને ત્યારપછી તેણે તેમને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! મે સ્થવિરોની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળ્યો છે તે મને ખૂબ જ ગમી ગયો છે એથી હે દેવાનુપ્રિય ! હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને સ્થવિરોની પાસેથી સયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છુ છુ આ પ્રમાણે કંડરીકની વાત સાભળીને પુંડરીકે તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમે હમણા મુડિત થઈને સ્થવિરોની પાસેથી સયમ ધારણ કરો નહિ હુ મોટા ઉત્સવ સાથે તમારો રાજ્યાભિષેક કરવા છુ

सतिष्ठते=तमर्थं न स्वीकृतवान् केवल मौनमवलम्ब्य स्थितः। ततः खलु पुण्डरीको राजा कण्डरीक भ्रातर द्वितीयमपि तृतीयमपि वारम् ' एव 'पूर्वोक्तरूपेण अवादीत्-' जाव तुसिणीए सचिट्ठइ ' यावत्-तुष्णीकः सतिष्ठते। तत' खलु पुण्डरीकः कण्डरीक यदा ' नो सचाएइ ' नो शक्नोति = न समर्थो भवति वहुभि ' आघवणाहि य ' आख्यापनाभिश्च-आख्यापनाभि -प्रव्रज्याविरोधिभि राख्यानैः ' पण्णवणाहि य ' प्रज्ञापनाभिश्च ' अह तव ज्येष्ठभ्राताऽस्मि, तव हितं येन भवति, तदेव कथयामि, इत्यादि रूपैः प्रज्ञापनवाक्यैः एव ' विण्णवणाहि य ' विज्ञापनाभिः विनितमृदुवचनावलिरूपवाक्यप्रबन्धैः, तथा ' सण्णवणाहि य ' सज्ञापनाभिः ' प्रव्रज्याया महान् कष्टो भवति ' इत्यादि स्वाभीप्सितसज्ञापकैर्वाक्यैश्च

रण्णो एयमट्ठ णो आढाइ, णो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुंडरीए राया कडरीयं दोच्चपि तच्चपि एव वयासी जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुडरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएई, वहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिंचइ जाव थेराण सीसभिक्ख दलयइ)

कडरीक कुमारने पुडरीक राजा की इस बात को आदर की दृष्टि से नहीं देखा-नही माना-और न उसे स्वीकार ही किया-केवल चुपचाप ही रहा। पुडरीक राजा ने जब कडरीक कुमार को चुपचाप देखा-तब उसने दुवारा और तिवारा भी उससे ऐसा ही कहा-परन्तु उसने इस बात पर बिलकुल ही ध्यान नही दिया केवल चुपचाप ही रहा-। अतः जब पुडरीक राजा कडरीक कुमार को उसके ध्येय से विचलित करने

(तएण से कडरीए पुडरीयस्स रण्णो एयमट्ठ णो आढाइ, णो परिजाणइ, तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुडरीए राया कडरीय दोच्चपि तच्चपि एव वयासी जाव तुसिणीए सचिट्ठइ, तएण पुडरीए कडरीय कुमार जाहे नो सचाएई, वहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य ४ ताहे अकामए चेव एयमट्ठ अणुमन्नित्था जाव णिक्खमणाभिसेएण अभिसिंचइ जाव थेराण सीसभिक्ख दलयइ)

કંડરીક કુમારે પુંડરીક રાજાની આ વાતનુ સન્માન કર્યું નહિ-માની નહિ અને તેનો સ્વીકાર પણ કર્યો નહિ, ફક્ત તે મૂંગો થઈને બેસી જ રહ્યો પુંડરીક રાજાએ જ્યારે કંડરીક કુમારને મૂંગો મૂંગો બેસી રહેલો જોયો ત્યારે તેમણે બીજી વાર અને ત્રીજી વાર પણ તેને આ પ્રમાણે જ કહ્યુ પરતુ તેણે આ વાતની સહેજ પણ દરકાર કરી નહી, ફક્ત મૂંગો થઈને બેસી જ રહ્યો છેવટે જ્યારે પુંડરીક રાજા કંડરીક કુમારને તેના ધ્યેયથી મક્કમ વિચારથી

'आघवित्तए' आख्यापयितुं ४=सर्वथा विरोधयितुं न शक्नोतीति पूर्वेण सम्बन्धः, 'ताहे' तदा 'अकामए चेव' अकामकः एव=अनिच्छन् एव 'एयमट्ठं' एतमर्थम्-कण्डरीकाभिलषितं प्रव्रज्यारूपम्, 'अणुमन्नित्था' अन्वमन्यत=स्वीकृतवान्, 'जाव निक्खमणाभिसेएणं' यावत् निष्क्रमणाभिषेकेण' स्वीकरणानन्तरं निष्क्रमणोपयोगि वस्तुजातमुपनीय सविधि दीक्षाभिषेकेण अभिषिञ्चति, 'जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ' यावत्-स्थविरेभ्यः शिष्यभिक्षाम्=अभिषेकानन्तरं स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं शिविकायां समुपवेश्य महता समारोहेण सह नलिनीवने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वलघुभ्रातरं शिष्यभिक्षां ददाति। अनन्तरं स कण्डरीकः प्रव्रजितः सन् अनगारो जातः। तथा 'एक्कारसंगविऊ' एकादशाङ्गवित्=एकादशाङ्गज्ञानवान् जातः। ततः खलु स्थविरा भग

के लिये आख्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा संज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो सके-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही कंडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिषेक से अभिसिंचन किया। अभिषेक के बाद पुंडरीक राजा कंडरीक को शिबिका में बैठाकर बडे समारोह के साथ नलिनीवन में आये। वहां आकर उन्होंने स्थविरों के लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया। इसके बाद कंडरीक (पव्वइए अणगारे जाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था संपन्न हो गये। (एगारसंगविऊ,-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति,

વિચલિત કરવા માટે આખ્યાપનાઓ, પ્રજ્ઞાપનાઓ, વિજ્ઞાપનાઓ, સંજ્ઞાપનાઓ વડે પણ સમર્થ થઈ શકયા નહિ ત્યારે તેમણે ઈચ્છા ન હોવા છતાંએ કંડરીક કુમારને દિક્ષાગ્રહણ કરવાની સ્વીકૃતિ આપી દીધી સ્વીકૃતિ આપ્યા બાદ તેમણે નિષ્ક્રમણને લગતી બધી વસ્તુઓ મંગાવી જ્યારે વસ્તુએ આવી ગઈ ત્યારે તેમણે તેનું વિધિસર દીક્ષાભિષેક વડે અભિસિંચન કર્યું અભિષેક કર્યા બાદ પુંડરીક રાજા કંડરીકને પાલખીમાં બેસાડીને ભારે સમારોહની સાથે નલિની વનમાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે સ્થવિરોને પોતાના નાના ભાઈને શિષ્યના રૂપમાં આપી દીધો ત્યારપછી કંડરીક (पव्वइए अणगारे जाए) પ્રવ્રજિત થઈને અનગારાવસ્થા સંપન્ન થઈ ગયો.

(एगारसंगविऊ-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइं पुं[illegible] नय

वतो ऽन्यदा कदाचित् पुण्डरीकिण्या नगर्या नलिनीवनात् उद्यानात् प्रतिनिष्क्रामन्ति, प्रतिनिष्क्रम्य बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति ॥ सू० २ ॥

मूलम्-तएणं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतिए यावि विहरइ। तएणं थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, णलिणिवणे समोसढा, पोंडरीए णिग्गए धम्मं सुणेइ। तएणं पोंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोयं पासइ, पासित्ता, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, थेरे भगवंते वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-अहण्णं भंते! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छं आउट्टामि, तं तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह। तएणं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता, जाव उवसंपज्जित्ताणं

पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति) धीरे २ वे ग्यारह अंगोंके पाठी भी बनगये इसके बाद उन स्थविर भगवन्तों ने किसी एक दिन पुंडरीकिणी नगरी के उस नलिनीवन नामकेउद्यान से विहार किया सो विहार कर वे बाहिर के जनपदों में विचरने लगे॥ सू० २॥

रीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमति, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरति)

ધીમે ધીમે તેમણે અગિયાર અંગોનું અધ્યયન કરી લીધું ત્યારબાદ તે સ્થવિર ભગવંતોએ કોઈ એક દિવસે પુંડરીકિણી નગરીના તે નલિનીવન નામના ઉદ્યાનથી વિહાર કર્યો, વિહાર કરીને તેઓ બહારના જનપદોમાં વિચરણ કરવા લાગ્યા ॥ સૂત્ર ૨ ॥

'आघवित्तए' आख्यापयितुं=सर्वथापरिरोपयितुं न शक्नोतीति पूर्वेण सम्बन्धः, 'ताहे' तदा 'अकामए चेव' अकामकः एव=अनिच्छुः एव 'एयमहं' एतमर्थम्-कण्डरीकाभिलषितं प्रव्रज्यारूपम्, 'अणुमन्नित्था' अन्वमन्यत=स्वीकृतवान्, 'जाव णिक्खमणाभिसेएण' यावत् निष्क्रमणाभिषेकेण' स्वीकरणानन्तरं निष्क्रमणोपयोगि वस्तुजातमुपनीय सविधि दीक्षाभिषेकेण अभिषिञ्चति, 'जाव थेराणं सीसभिक्खं दलयइ' यावत्-स्थविरेभ्यः शिष्यभिक्षाम्=अभिषेकानन्तरं स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं शिबिकायां समुपवेश्य महता समारोहेण सह नलिनीवने उद्याने समायाति, तत्र स्थितेभ्यः स्थविरेभ्यः स्वलघुभ्रातरं शिष्यभिक्षां ददाति। अनन्तरं स कण्डरीकः प्रव्रजितः सन् अनगारो जातः। तथा 'एक्कारसंगविऊ' एकादशाङ्गवित्=एकादशाङ्गज्ञानवान् जातः। ततः खलु स्थविरा भग

के लिये आख्यापनाओं द्वारा, प्रज्ञापनाओं द्वारा विज्ञापनाओं द्वारा संज्ञापनाओं द्वारा, समर्थ नहीं हो सके-तब उन्होंने बिना इच्छा के ही कंडरीक कुमार को दीक्षा ग्रहण करने रूप अर्थ की स्वीकृति देने के बाद निष्क्रमणोपयोगी समस्त वस्तुओं को उन्होंने मंगवाया-जब वे आ चुकी-तब उन्होंने उसका सविधि दीक्षाभिषेक से अभिसिंचन किया। अभिषेक के बाद पुंडरीक राजा कंडरीक को शिबिका में बैठाकर बडे समारोह के साथ नलिनीवन में आये। वहां आकर उन्होंने स्थविरों के लिये अपने लघुभाई को शिष्य की भिक्षा रूप से प्रदान किया। इसके बाद कंडरीक (पव्वइए अणगारे जाए) प्रव्रजित होकर अनगारावस्था संपन्न हो गये। (एगारसंगविऊ,-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइ पुंडरिगिणीओ नयरीओ णलिणीवणाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमंति,

---

વિચલિત કરવા માટે આખ્યાપનાઓ, પ્રજ્ઞાપનાઓ, વિજ્ઞાપનાઓ, સંજ્ઞાપનાઓ વડે પણ સમર્થ થઈ શક્યા નહિ ત્યારે તેમણે ઈચ્છા ન હોવા છતાંએ કંડરીક કુમારને દીક્ષાગ્રહણ કરવાની સ્વીકૃતિ આપી દીધી. સ્વીકૃતિ આપ્યા બાદ તેમણે નિષ્ક્રમણને લગતી બધી વસ્તુઓ મંગાવી જ્યારે વસ્તુઓ આવી ગઈ ત્યારે તેમણે તેનું વિધિસર દીક્ષાભિષેક વડે અભિસિંચન કર્યું. અભિષેક કર્યા બાદ પુંડરીક રાજા કંડરીકને પાલખીમાં બેસાડીને ભારે સમારોહની સાથે નલિની વનમાં આવ્યા. ત્યાં આવીને તેમણે સ્થવિરોને પોતાના નાના ભાઈને શિષ્યના રૂપમાં આપી દીધો. ત્યારપછી કંડરીક (पव्वइए अणगारे जाए) પ્રવ્રજિત થઈને અનગારાવસ્થા સંપન્ન થઈ ગયો.

(एगारसंगविऊ-तएणं थेरा भगवंतो अन्नया कयाइ पुं[illegible] नय-

टीका—' तएण तस्स ' इत्यादि । तत खलु तस्य कण्डरीकस्य अनगारस्य तैः ' अतेहि य ' अन्तैश्च=वल्लचणकादिभि , ' पतेहि य ' प्रान्तैश्च=पर्युषिते., नीरसैः स्वादवर्जितैर्वा अशनादिभिः यथा शैलकस्य राजर्षेस्तथा ऽस्याऽपितथा-विधमाहार कुर्वतो यावत्प्रकृतिसुकुमारकस्य सुखोपचितस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशीत्याह – उज्ज्वला यावद् दुरधिसह्या = सोढुमशक्या पुन सुखलेशरहिता कण्डरीकः ' दाहवक्कतिए ' दाहव्युत्क्रान्तिक =दाहस्य शरीरसन्तापरूपरोगस्य व्युत्क्रान्ति =उत्पत्तिर्यस्यासौ दाहव्युत्क्रान्तिक =करचरणादिज्वलनवान् चापि विह-रति । तत खलु स्थविरा अन्यदा कदाचित् यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी तत्रैव उपागच्छन्ति, उपागत्य, नलिनीवने समवसृताः । पुण्डरीकस्तद्दर्शनार्थं स्वभवना-

' तएण तस्स कडरीयस्स ' इत्यादि ।

टीकार्थ-(तएण) इसके बाद (तस्स कडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहिं पतेहिं य जहासेलगस्स जाव दाहवक्कतिए यावि विहरइ) उस कडरीक अनगारके वल्लचणक आदि रूप अन्ताहार करनेसे तथा पर्युषित अथवा नीरस आहाररूप प्रान्ताहार करनेसे शैलक राजर्षिकी तरह प्रकृतिसे सुकुमार सुखोपचित होने के कारण शरीरमें वेदना उत्पन्न हो गई । जो उज्ज्वला एव सोढुमशक्या थी । इस तरह शरीर सन्तापरूप रोग की उत्पति से वे कडरीक अनगार कर चरण आदि में जलन होने के कारण सुख के लेश से भी वर्जित हो गये। (तएण थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंड-रिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता णलिणिवणे समोसढा पोंडरीए

तएण तस्स कडरीयस्स इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी,

(तस्स कडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अतेहिं पतेहिं य जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कतिए यावि विहरइ)

ते कडरीक अनगारना शरीरमा वल्लचणक वगेरे रूप अन्ताहार करवाथी तेमज पर्युषित अथवा नीरस आहार रूप प्रान्ताहार करवाथी शैलक राजर्षिनी जेम प्रकृतिथी सुकुमार अने सुखोपचित होवा बदल वेदना उत्पन्न थई गई ते वेदना अत्यत उग्र अने असह्य हती आ प्रमाणे शरीर सताप रूप रोगनी उत्पत्तिथी ते कडरीक अनगार हाथ पगमा बळतराने लीधे थोडी सुखशाति पण मेळवी शक्या नहि

(तएण थेरा अन्नया कयाइ जेणेव पोंडरिगिणी तेणेव उवागच्छइ, उवाग च्छित्ता णलिणिवणे समोसढा पोंडरीए निग्गए धम्म सुणेइ, तएण पोंडरीए राया

विहरंति। तएणं पुंडरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए। तएणं थेरा भगवन्तो पोंडरीय राय पुच्छंति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति। तएण से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीय रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएण जणवयविहारं विहरित्तए। तत्थेव ओसण्णे जाए। तएण से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसंपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता, एवं वयासी– धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले जे णं तुम रज्जं च जाव अंतेउरं चावि छड्डयित्ता जाव विगोवइत्ता जाव पव्वइए। अहण्णं अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अन्तेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले। तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ। तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥ सू०३ ॥

अनगारस्य 'अहापवत्तेहिं' यथा प्रवृत्तैः=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहिं' औपधभैषज्यैः 'जावतेइच्छ' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे भदन्त! मम यानशालासु समवसरत=आगच्छत। ततः खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति= एतद्वचन स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य विहरति। ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए' यथा मण्डुकः शैलकस्य यावद् बलिष्ठशरीरो जातः=

कडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि-त तुब्भे णं भते! मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये वहा आकर उन्हों ने स्थविर भगवतों को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदत! मै कडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊँगा-अतः हे भदत! आपलोग मेरी यानशाला में यहा से विहार कर पधारें-वही ठहरें-। इस प्रकार पुडरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और यहा से विहार कर वे पुडरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये। (तएण पुडरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि त तुब्भेण भते मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेंति, पडिसुणित्ता जाव उवसपज्जित्ताण विहरति)

નેઈને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે ભદન્ત! હુ કડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્ ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરવા માગુ છુ એટલા માટે હે ભદન્ત! તમે સૌ અહીંથી વિહાર કરીને મારી યાનશાળામા આવો અને ત્યાજ રોકાઓ આ પ્રમાણે પુડરીક રાજાની વિનતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધો અને ત્યાથી વિહાર કરીને તેઓ પુડરીક રાજાની યાનશાળામા આવીને રોકાઈ ગયા

(तएण पुडरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएण थेरा

निर्गत तत्र गत्वा धर्म शृणोति। ततः खलु पुण्डरीको राजा धर्म श्रुत्वा यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्र उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीक वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा कण्डरीकस्य अनगारस्य शरीर 'सर्वाबाध' सर्वाबाध= पीडासहित 'सरोय' सरोग=रोगसहित 'पश्यति' पश्यति, दृष्ट्वा यत्रैव स्थविरा भगव तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-'अहण्ण भंते!' अह खलु हे भदन्त! कण्डरीकस्य

निग्गए धम्म सुणेइ, तएण पोंडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वाबाह सरोय पासइ) किसी एक समय वे स्थविर पुडरीकिणी नगरी में विहार करते हुए आये। वहां आकर वे नलिनीवन नाम के उद्यान में ठहर गये। आगमन सुनकर पुडरीक राजा उन को वदना एव उनसे धर्मश्र वण करने की भावना से अपने राजमहल से निकलकर उस नलिनीवन उद्यान में आये-स्थविरों ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। धर्म का उप देश श्रवण कर फिर वे जहा कडरीक अनगार थे उनके पास आये। वहा आकर उन्हों ने उनको वदना की नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके उन्होंने कडरीक अनगारके शरीर को पीडासहित एव रोगसहित देखा-(पासित्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-अहण्ण भते!

धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वा बाह सरोय पासइ)

કોઈ એક વખતે તે સ્થવિર પુડરીકિણી નગરીમા વિહાર કરતા કરતા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉદ્યાનમા રોકાયા તેમનુ આગમન સાભળીને પુડરીક રાજા તેમને વદન કરવા માટે તથા તેમની પાસેથી ધર્મો પદેશ સાભળવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉદ્યાનમા આવ્યો. સ્થવિરોએ તેમને ધર્મોપદેશ આપ્યો, ધર્મોપદેશ સાભળીને તેઓ જ્યા કડરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે કડરીક અનગારના શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયુ

(पासित्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भग वते वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-अहण्ण भते ' [illegible] अण

अनगारस्य 'अहापवत्तेहिं' यथा प्रवृत्तैः=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहिं' औषधभैषज्यैः 'जावतेइच्छ' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूयं खलु हे भदन्त ! मम यानशालासु समवसरत= आगच्छत। ततः खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति= एत द्वचन स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए' यथा मण्डूकः शैलकस्य यावद् बलिकशरीरो जातः =

कडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि-त तुब्भे ण भंते ! मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये वहा आकर उन्हों ने स्थविर भगवतों को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदत ! मैं कडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊँगा-अतः हे भदत ! आपलोग मेरी यानशाला में यहा से विहार कर पधारें-वहीं ठहरें-। इस प्रकार पुडरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से विहार कर वे पुडरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये। (तएण पुडरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि त तुब्भेण भंते मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उवसपज्जित्ताण विहरति)

જોઇને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે ભદન્ત ! હુ કડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્ ચિકિત્સા (ઈલાજ) કરવા માગુ છુ એટલા માટે હે ભદન્ત ! તમે સૌ અહીંથી વિહાર કરીને મારી યાનશાળામા આવો અને ત્યાજ રોકાઓ આ પ્રમાણે પુડરીક રાજાની વિનતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધો અને ત્યાથી વિહાર કરીને તેઓ પુડરીક રાજાની યાનશાળામા આવીને રોકાઇ ગયા

(तएण पुडरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव वलियसरीरे जाए तएण थेरा

न्निर्गत तत्र गत्वा धर्म शृणोति । ततः खलु पुण्डरीको राजा धर्मं श्रुत्वा यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा कण्डरीकस्य अनगारस्य शरीर 'सर्वाबाधं' सर्वाबाध= पीडासहित 'सरोग' सरोग=रोगसहित 'पश्यति' पश्यति, दृष्ट्वा यत्रैव स्थविरा भगव तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-'अहण्ण भंते!' अह खलु हे भदन्त! कण्डरीकस्य

निग्गए धम्म सुणेइ, तएण पोंडरीए राया धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वदइ नम सइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वाबाह सरोय पासइ) किसी एक समय वे स्थविर पुडरीकिणी नगरी में विहार करते हुए आये। वहा आकर वे नलिनीवन नाम के उद्यान में ठहर गये। आगमन सुनकर पुडरीक राजा उन को वदना एव उनसे धर्मश्र वण करने की भावना से अपने राजमहल से निकलकर उस नलिनीवन उद्यान में आये-स्थविरों ने उन्हें धर्म का उपदेश दिया। धर्म का उप देश श्रवण कर फिर वे जहा कडरीक अनगार थे उनके पास आये। वहा आकर उन्हों ने उनको वदना की नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके उन्होंने कडरीक अनगारके शरीर को पीडासहित एव रोगसहित देखा-(पासित्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वदइ णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-अहण्ण भते!

धम्म सोच्चा जेणेव कडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता कडरीयस्स अणगारस्स सरीरग सव्वा बाह सरोय पासइ)

કોઈ એક વખતે તે સ્થવિર પુડરીકિણી નગરીમા વિહાર કરતા કરતા આવ્યા ત્યા આવીને તેઓ નલિનીવન નામના ઉદ્યાનમા રોકાયા તેમનુ આગમન સાભળીને પુડરીક રાજા તેમને વદન કરવા માટે તથા તેમની પાસેથી ધર્મો પદેશ સાભળવા માટે પોતાના રાજમહેલથી નીકળીને તે નલિનીવન ઉદ્યાનમા આવ્યો સ્થવિરોએ તેમને ધર્મોપદેશ આપ્યો, ધર્મોપદેશ સાભળીને તેઓ જ્યા કડરીક અનગાર હતા તેમની પાસે ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે કડરીક અનગારના શરીરને પીડા સહિત અને રોગયુક્ત જોયુ

(पासित्ता जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भग वते वदइ, णमसइ, वदित्ता णमसित्ता एव वयासी-अहण्ण भते ! अण

अनगारस्य 'अहापवत्तेहिं' यथा प्रवृत्तै:=प्रासुकैरित्यर्थः 'ओसहभेसज्जेहिं' औषधभैषज्यैः 'जावतेइच्छ' यावत् चिकित्साम् 'आउट्टामि' आवर्तयामि=कारयामि, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् यूय खलु हे भदन्त ! मम यानशालासु समवसरत= आगच्छत। ततः खलु स्थविरा भगवन्त पुण्डरीकस्य एतमर्थं प्रतिशृण्वन्ति= एतद्वचन स्वीकुर्वन्ति, प्रतिश्रुत्य=स्वीकृत्य यावत्-उपसपद्य=यानशाला समाश्रित्य विहरति । ततः खलु पुण्डरीको राजा 'जहा मडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए' यथा मण्डूकः शैलकस्य यावद् बलिकशरीरो जातः =

कडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि-त तुब्भे ण भते ! मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उपसपज्जित्ताण विहरति) देखकर जहा स्थविर भगवत विराजमान थे-वहा पर वे आये वहा आकर उन्हों ने स्थविर भगवतों को वदना एव नमस्कार किया-। वदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार कहा हे भदत ! मैं कडरीक अनगार की यथा प्रवृत्त-प्रासुक-औषध, भैषज्यों द्वारा यावत् चिकित्सा करवाऊँगा-अतः हे भदत ! आपलोग मेरी यानशाला में यहा से विहार कर पधारें-वही ठहरें-। इस प्रकार पुडरीक राजा की प्रार्थना को उन स्थविर भगवतो ने स्वीकार कर लिया-और वहा से विहार कर वे पुडरीक राजा की यानशाला में आकर ठहर गये। (तएण पुडरीए राया जहामडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएण थेरा

गारस्स अहापवत्तेहिं ओसहभेसज्जेहिं जाव तेइच्छ आउट्टामि त तुब्भेण भते मम जाणसालासु समोसरह-तएण थेरा भगवतो पुडरीयस्स पडिसुणेति, पडिसुणित्ता जाव उवसपज्जित्ताण विहरति)

જોઇને તેઓ જ્યા સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે ભદન્ત ! હુ કડરીક અનગારની યથાપ્રવૃત્ત-પ્રાસુક-ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે યાવત્ ચિકિત્સા (ઇલાજ) કરવા માગુ છુ એટલા માટે હે ભદન્ત ! તમે સૌ અહીંથી વિહાર કરીને મારી યાનશાળામા આવો અને ત્યાજ રોકાઓ આ પ્રમાણે પુડરીક રાજાની વિનતીને તે સ્થવિર ભગવતોએ સ્વીકાર કરી લીધો અને ત્યાથી વિહાર કરીને તેઓ પુડરીક રાજાની યાનશાળામા આવીને રોકાઇ ગયા

(तएण पुडरीए राया जहा मडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए तएण थेरा

यथा मण्डूको राजा शैलकस्य राजर्षेः प्रासुकैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सामकारयत्, तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगारस्य यथा योग्यैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सां कारयतिस्म यावत् कतिपयैर्दिनैः कण्डरीको बलितशरीरः=निरामयो जातः। ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकं राजानं आपृच्छन्ति, आपृच्छय बहिर्जनपदविहारं विहरन्ति। ततः खलु स कण्डरीकः तस्मात् 'रोगायंकाओ' रोगातङ्काद् विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मणुण्णंसि' मनोज्ञे=रमणीये अशनपानखाद्यस्वाद्ये चतुर्विधे आहारे 'मुच्छिए' मूर्छितः=मूर्च्छां प्राप्तः=आसक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः=आकाङ्क्षावान्, 'गढिए' ग्रथितः=रसास्वादे निबद्धमानसः, 'अज्झोववण्णे'

भगवतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवय विहारं विहरित्तए) इसके बाद मंडूक ने जिस प्रकार शैलकराजर्षि की प्रासुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुंडरीक राजा ने भी कंडरीक अनगार की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई-इस से वे बलितशरीर निरोग हो गये। इसके अनन्तर उन स्थविर भगवतो ने वहां से विहार करने के लिये पुंडरीक राजा से पूछा-बाद में वे वहां से बाहिर जनपदों में विहार कर गये। कंडरीक अनगार कि जो रोगातंकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एवं स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि-असणपाण खाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए)

ત્યારપછી મંડૂકે જેમ શૈલક રાજર્ષિની પ્રાસુક, ઔષધ અને ભૈષજ્યો વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી હતી તેમજ પુંડરીક રાજાએ પણ કંડરીક અનગારની ઉચિત ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી તેથી તેઓ નિરોગ-સબળ બની ગયા ત્યારપછી તે સ્થવિર ભગવંતોએ ત્યાંથી વિહાર કરવા માટે પુંડરીક રાજાને પૂછયું ત્યારબાદ તેઓ બહારના જનપદોમાં વિહાર કરી ગયા. રોગાતંકોથી નિર્મુક્ત થઇ ગયેલા કંડરીક અનગાર તે મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારમાં એટલા બધા આસક્ત થઇ ગયા-ગૃદ્ધ બની ગયા, ગ્રથિત-રસના આસ્વાદનમાં નિબદ્ધ માન

अभ्युपपन्नः=सर्वथा आसक्तः सन् नो शक्नोति पुण्डरीकं राजानमापृच्छ्य 'बहिया' बहिः 'अब्भुज्जएण' अभ्युद्यतेन=उग्रविहारेण खलु विहर्तुम्, किन्तु 'तत्थेव' तत्रैव=यानशालायामेव 'ओसण्णे' अवसन्नः,=शिथिलसाधुसमाचारीवान् जातः। ततः खलु स पुण्डरीको राजा 'इमीसे कहाए' अस्याः कथायाः=कण्डरीकोऽनगारोऽवसन्नो जातः' इति वृत्तान्तस्य लब्धार्थः सन् स्नातः 'अतेउरपरियालसपरिवुडे' अन्तःपुरपरिवारसपरिवृतः, यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, कण्डरीकं त्रिः कृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा, वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्-धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! यतस्त्वम् 'कयत्थे' कृतार्थः=विहितजीवनकृत्यः 'कयपुन्ने' कृतपुण्यः=विहितभवभ्रमितनेपः। पुनः 'सुलद्धे' सुलब्धं=सुष्ठुतया प्राप्तं खलु हे देवानुप्रिय! 'तव' त्वया 'माणुस्सए' मानुष्यकं=मनुष्यसम्बन्धि, 'जम्मजीवियफले' जन्मजीवितफलम्-जन्म-

---

-गृद्ध बन गये ग्रथित-रसास्वाद में निबद्धमानसवाले हो गये, और अध्युपपन्न बन गये-अर्थात् सर्वथा आसक्त बन गये कि वहां से बाहिर उग्र विहार करने के लिये उनका मन ही नहीं हुआ-अतः उन्हों ने पुंडरीक नरेश से विहार करने की कोई बात ही नहीं पूछी किन्तु (तत्थेव-ओसन्ने जाए) वहीं पर वे रहते २ शिथिल साधुसमाचारीवाले बन गये। (तएण से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ, णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसिणं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे सुलद्धेणं देवाणुप्पिया! तव माणुस्सजम्मजीवियफले जेणं तुमं रज्जं च जाव अंतेउरं च्चावि छड्डइत्ता

સવાળા થઇ ગયા અને અધ્યુપપન્ન બની ગયા એટલે કે તેઓ એકદમ આસક્ત થઇ ગયા કે ત્યાંથી બહાર ઉગ્ર વિહાર કરવા માટે પણ તેઓ તૈયાર થયા નહિ એથી તેમણે પુંડરીક રાજાને વિહાર કરવાની બાબતમાં કંઇજ પૂછ્યું નહિ પણ (तत्थेव ओसन्ने जाए) ત્યાં જ રહેતા રહેતા તેઓ શિથિલ સાધુ સમાચારી થઇ ગયા એટલે કે સાધુઓના આચારમાં તેઓ શિથિલ થઇ ગયા.

(तएण से पोंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउरपरियालसपरिवुडे राया जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी-धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थे कयपुन्ने कयलक्खणे

यथा मण्डूको राजा शैलकस्य राजर्षे प्रासुकैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सामकारयत्, तथैव पुण्डरीकोऽपि कण्डरीकस्यानगारस्य यथा योग्यैरौषधभैषज्यैश्चिकित्सां कारयतिस्म यावत् कतिपयैर्दिनैः कण्डरीको बलितशरीर=निरामयो जातः। ततः खलु स्थविरा भगवन्तः पुण्डरीकं राजानं आपृच्छन्ति, आपृच्छय बहिर्जनपदवि हार विहरन्ति। ततः खलु स कण्डरीकः तस्मात् 'रोगायकाओ' रोगातङ्काद् विप्रमुक्तः सन् तस्मिन् 'मणुण्णंसि' मनोज्ञे=रमणीये अशनपानखाद्यस्वाद्ये चतु र्विधे आहारे 'मुच्छिए' मूर्च्छितः=मूर्च्छां प्राप्तः=आसक्त इत्यर्थः, 'गिद्धे' गृद्धः= आकाङ्क्षावान्, 'गढिए' ग्रथितः=रसास्वादे निबद्धमानसः, 'अज्झोववण्णे'

भगवतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विह रंति, तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असणपाणखाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवय विहारं विहरित्तए) इसके बाद मडूक ने जिस प्रकार शैलकराजर्षि की प्रासुक औषध, भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई थी उसी प्रकार पुडरीक राजा ने भी कंडरीक अनगार की यथायोग्य औषध भैषज्यों द्वारा चिकित्सा करवाई-इस से वे बलितशरीर निरोग हो गये। इसके अन न्तर उन स्थविर भगवतो ने वहा से विहार करने के लिये पुडरीक राजा से पूछा-। बाद मे वे वहा से बाहिर जनपदो में विहार कर गये। कड रीक अनगार कि जो रोगातकसे निर्मुक्त हो चुके थे मनोज्ञ अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप चतुर्विध आहार में इतने अधिक आसक्त हो गये

भगवतो पोंडरीयं रायं पुच्छंति, पुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति, तएणं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि-असणपाण खाइमसाइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे णो संचाएइ पोंडरीयं रायं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारं विहरित्तए)

ત્યારપછી મડુકે જેમ શેલક રાજર્ષિની પ્રાસુક, ઔષધ અને ભૈષજ્યો વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી હતી તેમજ પુડરીક રાજાએ પણ કડરીક અનગારની ઉચિત ઔષધ-ભૈષજ્યો (દવાઓ) વડે ચિકિત્સા કરાવડાવી તેથી તેઓ નિરોગ-સબળ બની ગયા ત્યારપછી તે સ્થવિર ભગવતોએ ત્યાથી વિહાર કરવા માટે પુડરીક રાજાને પૂછયુ ત્યારબાદ તેઓ બહારના જનપદોમા વિહાર કરી ગયા રોગાતકોથી નિર્મુક્ત થઇ ગયેલા કડરીક અનગાર તે મનોજ્ઞ, અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ ચાર જાતના આહારમા એટલા બધા આસક્ત થઇ ગયા-ગૃદ્ધ બની ગયા, ગ્રથિત-રસના આસ્વાદનમા નિબદ્ધ માન

कारणात् खलु ब्रवीमि यत् धन्योऽसि त्वं हे देवानुप्रिय ! ' जाव सुलब्धं जन्म जीवितफलम् , ततः खलु स कण्डरीकोऽनगारः पुण्डरीकस्य एतमर्थं=विहाराभिप्रायकमर्थं, नो आद्रियते यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति। ततः खलु कण्डरीकः पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्वित्रिवारम् , एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण, उक्तः सन् ' अकामए ' अकामकः=कामनारहितः ' अवसवसे ' अप-

---

देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ)

मैं अधन्य हूँ अकृतपुण्य हूँ। जो राज्य मे यावत् अन्तःपुर में तथा मनुष्य संबंधी कामभोगों में मूर्च्छित यावत् अध्युपपन्न बना हुआ हूँ। इसीलिये प्रव्रज्या ग्रहण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। इसी कारण से मैं यह कह रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय ! तुमने ही जन्म और जीवन का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है–वह अच्छी तरह पा लिया है। पुंडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर कंडरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया–उसे आदर की दृष्टि से नहीं देखा–किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे। कंडरीक अनगार की इस स्थिति को देखकर पुंडरीक ने दूसरी बार और तीसरी

तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ, जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ)

હુ તો અધન્ય અને અકૃતપુણ્ય છુ કેમકે હુ તો રાજ્યમા યાવત્ રણુવાસમા તેમજ મનુષ્યભવના કામભોગોમા મૂર્છિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બની રહ્યો છુ, એટલા માટેજ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણુ કરવામા અસમર્થ થઇ રહ્યો છુ એથીજ હુ આ કહી રહ્યો છુ-કે તમે ખરેખર ધન્ય છો હે દેવાનુપ્રિય ! તમેજ જન્મ અને જીવનનુ ફળ કે જે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણુ કરવા રૂપ છે-તે સારી રીતે મેળવી લીધુ છે તેઓ ત્યાથી વિહાર કરી જાય તે આશયથી કહેવા તે પુડરીકના વચનો સાભળીને કડરીક અનગારે તેની કશી જ દરકાર કરી નહિ તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ આ બધુ સાભળીને પણુ તેઓ ત્યાજ મૂગા થઇને બેસીજ રહ્યા કડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઇને

मानुष्यकोऽयं उत्पत्तिः, जीवितम्=जीवनम्=प्राणधारणम्, तथा' फलम्=जन्मजीवितफलम्=प्रव्रज्याग्रहणमेव मनुष्यजन्मसारः, तदेव स्पष्टयति-यः खलु त्वं राज्यं च यावदन्तः पुरं च छर्दयित्वा ' उज्झित्वा=त्यक्त्वा ' विगोप्य ' विगोप्य=तिरस्कृत्य यावत् प्रव्रजितः अहं खलु अधन्यः अकृतपुण्यो राज्ये यावत् अन्तः पुरे च मानुष्यकेषु च कामभोगेषु मूर्च्छितो यावत् अध्युपपन्नो नो शक्नोमि यावत् प्रव्रजितुम् = राज्येऽन्त = पुरे मानुष्यकेषु च कामभोगेषु निमग्न मानसोऽहं न शक्नोमि प्रव्रज्या ग्रहीतुम् इति भावः। ' त ' तत् = तस्मात्

विगोवइत्ता जाव पव्वइए) जब पुंडरीक राजा को " कंडरीक अनगार अवसन्न हो गये हैं " यह समाचार ज्ञात हुआ-तो वे स्नान कर अपने अन्तःपुर परिवार को साथ लेकर जहां कंडरीक अनगार थे वहां आये वहां आकर उन्हों ने कंडरीक अनगार को तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण करके वंदना की नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके फिर उनसे वे इस प्रकार कहने लगे-हे देवानुप्रिय! तुम धन्य हो, तुम कृतार्थ हो, तुम कृतलक्षण हो। हे देवानुप्रिय! तुमने मनुष्यभव संबंधी जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह पालिया है। जो तुम राज्य यावत् अन्तःपुर का परित्याग एव तिरस्कार कर प्रव्रजित हो गये हो। (अहण्ण अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए। त धन्नेसि ण तुम

सुलद्धेण देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म जीवियफले जेण तुम रज्जं च जाव अंतेउर चाचि छड्डत्ता विगोवइत्ता जाव पव्वइए)

જ્યારે પુંડરીક રાજાને કંડરીક અનગારના અવસન્ન થઈ જવાના સમાચારો મળ્યા ત્યારે તેઓ સ્નાન કરીને પોતાના રણવાસના પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં કંડરીક અનગાર હતા ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને તેમણે કંડરીક અનગારને ત્રણ વખત આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કરીને વંદન તેમજ નમસ્કાર કર્યા વંદન અને નમસ્કાર કરીને તેઓ તેમને આ પ્રમાણે કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય! તમે ધન્ય છો, કૃતાર્થ છો, કૃત-લક્ષણ છો હે દેવાનુપ્રિય! મનુષ્ય ભવના જન્મ અને જીવનના ફળને સારી પેઠે મેળવી લીધું છે કેમકે તમે ખરેખર રાજ્ય યાવત્ રણવાસને ત્યજીને તેને તિરસ્કૃત કરીને પ્રવજિત થઈ ગયા છો

(अहण्ण अहण्णे अकयपुन्ने रज्जे जाव अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए जाव अज्झोववन्ने नो संचाएमि जाव पव्वइत्तए ! त धन्नेसि ण

कारणात् खलु ब्रवीमि त्वं धन्योऽसि त्वं हे देवानुप्रिय! 'जाव सुलब्धं जन्मजीवितफलम्, ततः खलु स कण्डरीकोऽनगारः पुण्डरीकस्य एतमर्थं=विहाराभिप्रायकमर्थं, नो आद्रियते यावत् तूष्णीकः संतिष्ठते मौनमवलम्ब्य तिष्ठति। ततः खलु कण्डरीकः पुण्डरीकेण द्वितीयमपि तृतीयमपि=द्वित्रिवारम्, एवं=पूर्वोक्तप्रकारेण, उक्तः सन् 'अकामए' अकामकः=कामनारहितः 'अवस्सवसे' अप-

---

देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ)
मैं अधन्य हूँ अकृतपुण्य हूँ। जो राज्य में यावत् अन्तःपुर में तथा मनुष्य संबंधी कामभोगों में मूर्छित यावत् अध्युपपन्न बना हुआ हूँ। इसीलिये प्रव्रज्या ग्रहण करने में असमर्थ हो रहा हूँ। इसी कारण से मैं यह कह रहा हूँ कि तुम धन्य हो, हे देवानुप्रिय! तुमने ही जन्म और जीवन का फल जो प्रव्रज्या का ग्रहण करना है-वह अच्छी तरह पा लिया है। पुंडरीक राजा की विहार करने के अभिप्रायवाली इस बात को सुनकर कंडरीक अनगार ने उस पर कुछ ध्यान नहीं दिया-उसे आदर की दृष्टि से नहीं देखा-किन्तु वे उसे सुनकर भी चुपचाप बैठ रहे। कंडरीक अनगार की इस स्थिति को देखकर पुंडरीक ने दूसरी बार और तीसरी

तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले तएणं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं णो आढाइ, जाव संचिट्ठइ, तएणं कंडरीए पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवंवुत्ते समाणे अकामए अवस्सवसे लज्जाए गारवेण य पोंडरीयं रायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ)

હું તો અધન્ય અને અકૃતપુણ્ય છું કેમકે હું તો રાજ્યમાં યાવત્ રણવાસમાં તેમજ મનુષ્યભવના કામભોગોમાં મૂર્છિત યાવત્ અધ્યુપપન્ન બની રહ્યો છું, એટલા માટે જ પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવામાં અસમર્થ થઈ રહ્યો છું એથી જ હું આ કહી રહ્યો છું-કે તમે ખરેખર ધન્ય છો હે દેવાનુપ્રિય! તમે જ જન્મ અને જીવનનું ફળ કે જે પ્રવ્રજ્યા ગ્રહણ કરવા રૂપ છે-તે સારી રીતે મેળવી લીધું છે તેઓ ત્યાંથી વિહાર કરી જાય તે આશયથી કહેવા તે પુંડરીકના વચનો સાંભળીને કંડરીક અનગારે તેની કશી જ દરકાર કરી નહિ તે વાતને તેમણે સન્માનની દૃષ્ટિએ સ્વીકારી નહિ આ બધું સાંભળીને પણ તેઓ ત્યાંજ મૂંગા થઈને બેસી જ રહ્યા કંડરીક અનગારની આ સ્થિતિ જોઈને

स्ववशाः=अपगतस्वातन्त्र्याः सन्तः 'लज्जाए' लज्जया, 'गारवेण' गौरवेण=साधुत्वगौरवेण च पुण्डरीकं गमनमापृच्छति, आपृच्छ्य स्थविरैः सार्द्धं बहिर्जनपदविहारं विहरति ॥ सू० ३ ॥

मूलम्- तएणं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं किंचिकालं उग्गं उग्गेणं विहरइ । तओ पच्छा समणत्तणपरितंते समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी, थेराणं अंतियाओ साणियं २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता, जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि णिसीयइ णिसीइत्ता, ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे संचिट्ठइ । तएणं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयंसि ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीयं रायं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउभाउए कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर

बार जब उनसे पूर्वोक्त प्रकारसे कहा—तब उन्हों ने नहीं इच्छा होने पर भी स्ववशताका अभाव होनेके कारण लज्जावश होकर साधुत्वके गौरवके ख्याल से-पुंडरीक राजा से विहार करनेकी बात पूछी-पूछकर फिर वे वहा से स्थविरोके साथ बाहिरके जनपदों मे विहार कर गये ॥ सू० ३ ॥

પુંડરીકે બીજી અને ત્રીજી વાર પણ જ્યારે પહેલા મુજબ જ વાત કહી ત્યારે તેમણે પોતાની ઈચ્છા નહિ હોવા છતાંએ લાચાર થઈને, લજ્જિત થઈને, સાધુત્વના ગૌરવને લક્ષ્યમા રાખીને પુંડરીક રાજાને વિહાર કરવાની વાત પૂછી પૂછીને તેઓ ત્યાંથી સ્થવિરોની સાથે બહારના જનપદોમા વિહાર કરી ગયા સૂ. ૩

पायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ । तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठ सोच्चा णिसम्म तहेव संभते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता, अंतेउरपरियालसपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ करित्ता, एव वयासी—धण्णेसि णं तुम देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए । अहण्णं अधण्णे३ जाव नो पव्वइत्तए । त धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले । तएणं कडरीए पुडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चपि तच्चपि जाव संचिट्ठइ। तएणं पोडरीए कडरीय एव वयासी अट्ठो भते ! भोगेहि ? हंता अट्ठो तएण से पोण्डरीए राया कोडुबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता, एव वयासी -खिप्पामेव भो देवानुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअ उवट्ठवेह जाव रायाभिसेएणं अभिसिचइ ॥ सू० ४ ॥

टीका—' तएण से ' इत्यादि । तत खलु स कण्डरीक स्थविरैः सार्धं किंचित् कालम् ' उग्ग उग्गेण ' उग्रोग्रेण—अत्युग्रेण विहारेण विहरति । तत' पश्चात् ' समणत्तणपरितंते ' श्रमणत्वपरितान्तः=श्रमणधर्मपरिपालने खिन्नः पुनः

'तएण से कडरीए थेरेहि सद्धिं ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (से कडरीए) वे कडरीक (थेरेहिं सद्धिं) स्थविरो के साथ (किंचिकाल) कुछ काल पर्यन्त (उग्ग उग्गेणं) अत्युग्रविहार करने मे (विहरइ) लग गये (तओपच्छा समणत्तण

'तएणं से कडरीए थेरेहिं सद्धि' इत्यादि ।

ટીકાર્થ—(तएण) ત્યારપછી (से कडरीए) તે કંડરીક (थेरेहि सद्धि) સ્થવિરોની સાથે (किचिकाल) થોડા વખત સુધી તે (उग्गउग्गेण) અતીવ ઉગ્ર વિહાર કરવામાં (विहरइ) પ્રવૃત્ત થયા (तओ पच्छा समणत्तण परितंते)

'समणत्तणनिव्विण्णे' श्रमणत्वनिर्विण्ण=साधुभावे औदासीन्य प्राप्तः 'समणत्तणणिब्भच्छिए' श्रमणत्वनिर्भर्त्सित=श्रमणत्व निर्भर्त्सित येन स=साधुभावानादरपरायणः, अतएव 'समणगुणमुक्कजोगी' श्रमणगुणमुक्तयोगी=श्रमणगुणेभ्यो मुक्तः=रहितो योग' योगः=मनोवाक्कायस्य, सोऽस्यास्तीतिव्यक्तश्रमणगुणइत्यर्थः, स्थविराणामन्तिकात् शनैः शनैः प्रत्यवष्वष्कते=पश्चादागच्छति, प्रत्यवष्वष्क्य, यत्रैव पुण्डरीकिणी नगरी यत्रैव पुण्डरीकस्य भवन तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य अशोकवनिकाया=अशोकवाटिकाया अशोकवरपादपस्य अधः पृथ्वीशिलापट्टके निषीदति=उपविशति, निषद्य, 'ओहयमणसंकप्पे' अपहतमनः सङ्कल्पः=अपहतो मन संकल्प=मनोव्यापारो यस्य सः=अपगतमानसिकव्यापार, 'जाव झियाय

परितते) बाद में वे श्रमणधर्म के परिपालन करने में खिन्न चित्त बन गये (समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी थेराण अतियाओ सणिय २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरिगिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ) साधुभाव के निर्वाह करने में उदासीनता को प्राप्त हो गये–साधुभाव के प्रति उनमें अनादर भाव आ गया अत एव वे श्रमण गुणों से मुक्त योगवाले बन गये–श्रमण के गुणो का उन्हों ने परित्याग कर दिया। इस तरह वे धीरे २ स्थविरों के पास से खिसककर एक दिन जहां पुंडरीकिणी नगरी थी और उसमें भी जहा पुंडरीक राजा का भवन था वहा पर आ गये–। (उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे

ત્યારપછી તેઓ શ્રમણુ ધર્મના પાલનમા ખિન્નચિત્ત-ઉદાસ બની ગયા (समणत्तणणिव्विण्णे समणत्तणणिब्भच्छिए समणगुणमुक्कजोगी थेराण अतियाओ सणिय २ पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरागिणी णयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ)

તેઓ સાધુભાવને નભાવવામા ઉદાસ બની ગયા સાધુભાવ પ્રત્યે તેમનામા અનાદર ભાવ ઉત્પન્ન થઈ ગયો, એથી તેઓ શ્રમણુ-ગુણોથી મુક્ત યોગવાળા બની ગયા એટલે કે શ્રમણના ગુણોને તેમણે ત્યજી દીધા આ પ્રમાણે તેઓ ધીમે ધીમે સ્થવિરોની પાસેથી ચુપચાપ નીકળીને એક દિવસ જ્યા પુંડરિકિણી નગરી હતી અને તેમા પણ જ્યા પુંડરીક રાજાનુ ભવન હતું, ત્યા આવી ગયા

(उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयसि, णिसीयइ, णिसीइत्ता ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे चिट्ठइ, तएणं

माणे ' यावद्ध्यायन्=आर्त्तध्यानं कुर्वन् सतिष्ठते । तत खलु तस्य पुण्डरीकस्य राज्ञोऽम्बधात्री यत्रैव अशोकवनिका तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य कण्डरीकमन गारम् अशोकवरपादपस्य अधः पृथिवीशिलापट्टकेऽपहतमन.संकल्प यावद् ध्यायन्त पश्यति, दृष्ट्वा, यत्रैव पुण्डरीको राजा तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य पुण्डरीक राजानमेवमवादीत्–एव खलु देवानुप्रिय ! तव ' पिउमाउए ' प्रियभ्राता कण्ड रीकोऽनगारोऽशोकवनिकाया अशोकवरपादपस्य अधः पृ॰ वीशिलापट्टके अपहतमन. संकल्पो यावद्-यायति । तत खलु पुण्डरीकः अम्बधात्र्या एतमर्थ=कण्डरीकस्य

सचिट्ठइ, तएण तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओहयमणसकप्प जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी) वहा आकर वे अशोक वाटिका मे अशोक वृक्ष के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर बैठ गये । बैठकर अपहृत मानसिक व्यापारवाले होकर वे वहा आर्त्तध्यान करने लगे । इतने मे पुडरीक राजा की अम्ब-धात्री–धायमाता उस अशोक वाटिका मे आई–वहा आकर उसने कडरीक अनगार को अशोक पादप के नीचे पृथिवीशिला पट्टक पर चिन्तामग्न देखा–देखकर वह जहा पुडरीक राजा थे वहा आई–वहा आकर उसने पुडरीक राजा से इस प्रकार कहा–(एव खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउमाउए कडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ) हे देवानुप्रिय !

तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कडरीय अणगार असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टयसि ओहयमणसक प्प जाव झियायमाण पासइ, पासित्ता जेणेव पोंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोंडरीय राय एव वयासी)

ત્યા આવીને તેઓ અશોક વાટિકામા અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર બેસી ગયા ત્યા બેસીને તેઓ અપહૃત માનસિક વ્યાપારવાળા (ઉદાસ) થઈને આર્ત્તધ્યાન કરવા લાગ્યા એટલામા પુડરીક રાજાની અભ ધાત્રી ધાયમાતા–અશોક વાટિકામા આવી ત્યા આવીને તેણે કડરીક અનગારને અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા ઉપર આર્તધ્યાન કરતા જોયા જોઈને તે જ્યા પુડરીક રાજા હતા ત્યા આવીને તેણે પુડરીક રાજાને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે

(एव खलु देवाणुप्पिया ! तव पिउमाउए कडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलावट्टे ओहयमणसकप्पे जाव झियायइ)

अशोकवनिकामध्यगताशोकवृक्षाधः स्थितस्यार्त यावत्स्वरूपमर्थं श्रुत्वा निशम्य=अव-धार्य 'तहेव' तथैव=यथास्थिततयैव 'संभंते समाणे' सम्भ्रान्तः सन्- 'क्व पुनरसौ समागत' इति शङ्कितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=झटिति उत्तिष्ठतीत्यर्थः, उत्थाय अन्तः पुरपरिवारसंपरिवृत यत्रैव अशोकवनिका यत्रैव कण्डरीकोऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि कृत्वः=वारत्रयम् आदक्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा एवमवादीत्-' धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए ' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! यावत् प्रव्रजित । अहं खलु 'अधण्णे' ३ अधन्यः ३ यावत् नो शक्नोमि प्रव्रजितुम् । 'त' तस्मात्कारणात् 'धन्नेसि' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय ! 'जाव जीवियफले' यावत् जीवितफलम्=त्वया जन्मजीवितफलं सुलब्धम् इति भावः। ततः खलु कण्डरीकेण एवं=यशसापरवचनेनोक्तः सन् तूष्णीकः संतिष्ठते, 'दोच्चंपि तच्चंपि' द्वितीयमपि तृतीयमपि वार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव संचिट्ठइ' यावत् संतिष्ठते= मौनमवलम्ब्य स्थित इतिभाव । ततः खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्-अट्ठो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कंडरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहृतमनःसंकल्प होकर यावत् चिन्ता मग्न बैठे हुए हैं (तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्णं अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्तए तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले-तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंपि तच्चंपि जाव संचिट्ठइ, तएणं पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी अट्ठो भंते ! भोगेहिं ! हंता अट्ठो ! तएणं से पोंडरीए राया कोडु

હે દેવાનુપ્રિય ! સાંભળો, તમારા પ્રિય ભાઈ કંડરીક અનગાર અશોક વાટિકામાં અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર અપહૃતમન સંકલ્પ થઈને યાવત્ ચિંતામગ્ન થઈને બેસી રહ્યા છે

(तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव पव्वइए अहण्णं अधण्णे २ जाव नो पव्वइत्तए तं धन्नेसिणं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव जीवियफले तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंवि तच्चंवि जाव संचिट्ठइ, तएणं पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी, अट्ठो [illegible] ता अट्ठो ! तएणं से [illegible] या कोडुंबिय

चियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ) इस प्रकार अम्बाधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त में जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह संभ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये है-इस प्रकार शकित चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परिवार को साथ लेकर जहां अशोक वनिका थी-वहां पर आये-वहां आकर कंडरीक अनगार के पास पहुँचे- वहां पहुँच कर उन्हों ने उन्हें तीन बार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय ! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एवं अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब भी कहा मैं अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय ! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है। इस तरह प्रशंसा परक वचनों से पुंडरीक राजा द्वारा कहे गये वे कंडरीक अनगार कुछ भी नहीं बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुंडरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुबारा तिबारा भी उन्हों ने

पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ)

આ પ્રમાણે અંબાધાયના મુખથી આ વાત સાંભળીને અને તેને મનમાં ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમાં તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમાં સ્તબ્ધ થઈને " તેઓ કેમ આવ્યા છે " આ પ્રમાણે શંકાયુક્ત થતા-ઉત્થાન શક્તિ વડે તેઓ ઊભા થયા અને ઊભા થઈને જલ્દી રણવાસના પરિવારને સાથે લઈને જ્યાં અશોક વાટિકા હતી ત્યાં આવ્યા ત્યાં આવીને કંડરીક અનગારની પાસે પહોંચ્યા ત્યાં પહોંચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કર્યા બાદ કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જો તમે રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલા કહ્યું હતું તેમજ તે વખતે પણ કહ્યું હું તો અધન્ય છું-૩-જે યાવત્ દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનું પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ધન્ય છે તમોએ ખરેખર પોતાના જન્મ અને જીવનનું ફળ સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધું છે આ પ્રમાણે પ્રશંસાજનક વચનોથી પુંડરીક રાજા વડે સંબોધિત કરાયેલા તે કંડરીક અનગાર કંઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂંગા થઈને બેસીજ

अशोकवनिकामध्यगताशोकवृक्षाधः स्थितस्यार्त ध्यानरूपमर्थ श्रुत्वा निशम्य=अव-धार्य 'तहेव' तथैव=पूर्वकथितवत्तथैव 'संभंते समाणे' सम्भ्रान्तः सन्-'कथं पुनरसौ समागत' इति शङ्कितः सन् उत्थाय उत्तिष्ठति=झटिति उत्तिष्ठती-त्यर्थः, उत्थाय अन्तःपुरपरिवारसंपरिवृतः यत्रैव अशोकवनिका यत्रैव कण्डरीको-ऽनगारस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य 'तिक्खुत्तो' त्रि कृत्वः=वारत्रयम् आद क्षिणप्रदक्षिणं करोति, कृत्वा एवमवादीत्-' धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! यावत् प्रव्रजितः। अहं खलु 'अधण्णे ३ अधन्यः ३ यावत् नो शक्नोमि प्रव्रजितुम्। 'तं' तस्मात्कारणात् 'धन्नेसि' धन्योऽसि खलु त्वं हे देवानुप्रिय! 'जाव जीवियफले' यावत् जीवितफलम्=त्वया जन्मजीवितफलं सुलब्धम् इति भावः। ततः खलु कण्डरीकेण एवं=प्रशंसापरवचनैरुक्तः सन् तूष्णीकः संतिष्ठते, 'दोच्चंपि तच्चं पि' द्वितीय-मपि तृतीयमपि वार पूर्वप्रकारेण उक्तः सन् 'जाव संचिट्ठइ' यावत् संतिष्ठते=मौनमवलम्ब्य स्थित इतिभावः। ततः खलु पुण्डरीकः कण्डरीकमेवमवादीत्-अट्ठो

सुनिये-तुम्हारे प्रिय भाई कंडरीक अनगार अशोक वाटिका में अशोक वृक्षके नीचे पृथिवीशिलापट्टक पर अपहृतमनःसंकल्प होकर यावत् चिन्ता मग्न बैठे हुए हैं (तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए अहण्णं अधण्णे ३ जाव नो पव्वइत्तए तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले-तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंपि तच्चंपि जाव संचिट्ठइ, तएणं पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी अट्ठो भंते! भोगेहिं! हंता अट्ठो! तएणं से पोंडरीए राया कोडु

હે દેવાનુપ્રિય! સાંભળો, તમારા પ્રિય ભાઈ કંડરીક અનગાર અશોક વાટિકામાં અશોક વૃક્ષની નીચે પૃથ્વિશિલા પટ્ટક ઉપર અપહતમન સંકલ્પ થઈને યાવત્ ચિંતામગ્ન થઈને બેસી રહ્યા છે

(तएणं पोंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठित्ता अंतेउरपरियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जाव कंड रीयं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ, करित्ता एवं वयासी धण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! जाव पव्वइए अहण्णं अधण्णे २ जाव नो पव्वइत्तए तं धन्नेसिणं तुमं देवाणुप्पिया! जाव जीवियफले तएणं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ, दोच्चंपि, तच्चं पि जाव संचिट्ठइ, तएणं पोंडरीए कंडरीयं एवं वयासी, अट्ठो भंते! भोगेहिं? हंता अट्ठो! तएणं से पोंडरीए राया कोडुंबिय

वियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ) इस प्रकार अम्बाधाय के मुख से इस बात को सुनकर और उसे चित्त मे जमाकर जैसे बैठे हुए थे उसी तरह सम्भ्रान्त होते हुए-ये क्यों आये है-इस प्रकार शकित चित्त होते हुए-उत्थानशक्ति से उठे बहुत जल्दी सुनते ही प्रमाण-उठे और उठकर अन्तःपुर के परिवार को साथ लेकर जहा अशोक वनिका थी-वहा पर आये-वहा आकर कडरीक अनगार के पास पहुँचे-वहा पहुँच कर उन्हो ने उन्हें तीन वार आदक्षिण प्रदक्षिण किया बाद में वे कहने लगे-हे देवानुप्रिय! तुम्हें धन्यवाद है-जो तुम राज्य एव अन्तःपुर का परित्याग कर प्रव्रजित हो गये हो इत्यादि जिस प्रकार पहिले उनसे कहा था इसी प्रकार अब भी कहा मै अधन्य हूँ-३-जो यावत् दीक्षित होने के लिये शक्तिशाली नहीं हो रहा हूँ। इसलिये हे देवानुप्रिय ! आपके लिये धन्यवाद है-आपने जन्म और जीवन का फल अच्छी तरह प्राप्त कर लिया है। इस तरह प्रशंसा परक वचनो से पुडरीक राजा द्वारा कहे गये वे कडरीक अनगार कुछ भी नही बोले-किन्तु चुपचाप ही बैठे रहे-। जब पुडरीक राजा ने उनकी इस प्रकार की स्थिति देखी-तब दुवारा तिवारा भी उन्हो ने

पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एव वयासी खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कडरीयस्स महत्थ जाव रायाभिसेअं उवट्ठवेह, जाव रायाभिसेएण अभिसिंचइ)

આ પ્રમાણે અબાધાયના મુખથી આ વાત સાભળીને અને તેને મનમા ધારણ કરીને જેવી સ્થિતિમા તેઓ બેઠા હતા તેવી જ સ્થિતિમા સ્તબ્ધ થઇને " તેઓ કેમ આવ્યા છે " આ પ્રમાણે શકાયુક્ત થતા-ઉત્થાન શક્તિ વડે તેઓ ઊભા થયા અને ઊભા થઇને જલ્દી રણવાસના પરિવારને સાથે લઇને જ્યા અશોક વાટિકા હતી ત્યા આવ્યા ત્યા આવીને કડરીક અનગારની પાસે પહોચ્યા ત્યા પહોચીને તેમણે તેમને ત્રણવાર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણા કર્યા બાદ કહેવા લાગ્યા કે હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ખરેખર ધન્યવાદ ઘટે છે કે જે તમે રાજ્ય અને રણવાસનો ત્યાગ કરીને પ્રવ્રજીત થઈ ગયા છો, વગેરે જેમ પહેલા કહ્યુ હતુ તેમજ તે વખતે પણ કહ્યુ હુ તો અધન્ય છુ-૩-જે યાવત્ દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનુ પણ સામર્થ્ય ધરાવતો નથી એથી હે દેવાનુપ્રિય ! તમને ધન્ય છે તમોએ ખરેખર પોતાના જન્મ અને જીવનનુ ફળ સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે આ પ્રમાણે પ્રશસાજનક વચનોથી પુડરીક રાજા વડે સબોધિત કરાયેલા તે કડરીક અનગાર કઈપણ બોલ્યા નહિ, તેઓ મૂગા થઈને બેસીજ

भंते 'भोगेहिं' अट्ठो हे भदन्त ! भोगैः ?=किं भोगैः प्रयोजनमस्ति ? इति, कण्डरीक आह-'हंता ! अट्ठो '=हन्त ! अर्थः=भोगमुपभोक्तुमानसोऽस्मीति भावः। ततः खलु=कण्डरीकाभिप्रायज्ञानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा कौटुम्बिकपुरुषान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एवमवदत् - क्षिप्रमेव भो देवानुप्रियाः! कण्डरीकस्य महार्थम्=महत्यर्थम् 'जाव रायाभिसेयं' यावत् राजाभिषेकम् 'उवट्ठवेह' उपस्थापयत=परिकल्पयत, 'जाव रायाभिसेएणं अभिसिंचइ' यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं राजपदे स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्-तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्हों ने कुछ नहीं ध्यान दिया केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे-तब पुनः पुंडरीकने उन कंडरीक अनगार से इस प्रकार कहा-हे भदन्त! क्या आप को भोगों से तात्पर्य है? तब कंडरीक ने कहा हां-मेरा मन भोगों को उपभोग करने के लिये हो रहा है। इस तरह कंडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुंडरीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा-भो देवानुप्रियो तुम लोग कंडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुंडरीक राजा की इस आज्ञा के अनुसार, उनलोगों ने वैसा ही किया-जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित हो चुकी-तब पुंडरीकने कंडरीक का राज्याभिषेककर दिया-कंडरीक को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા. પુંડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઈને બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યું પણ તેમણે તેની કંઈ દરકાર કરી નહિ તેઓ ફક્ત મૂંગા થઈને બેસી જ રહ્યા ત્યારે ફરી પુંડરીકે તે કંડરીક અનગારને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભગવન્! તમને શું હજી 'ભોગ ઉપભોગોની ઈચ્છા છે? ત્યારે કંડરીકે કહ્યું કે હા, ખરેખર મારૂં મન ભોગ ઉપભોગમાં પ્રવૃત્ત થવા ઈચ્છે છે આ પ્રમાણે કંડરીકની ઈચ્છા જાણીને પુંડરીક રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો! તમે લોકો કંડરીક માટે-રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો પુંડરીક રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તેમજ કર્યું જ્યારે રાજ્યાભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઈ ગઈ ત્યારે પુંડરીકે કંડરીકનો રાજ્યાભિષેક કરી દીધો એટલે કે કંડરીકને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો ॥ સૂત્ર ૪ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जाम धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ, गेण्हित्ता, इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ-कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं तओ पच्छा आहारं आहरित्तए त्तिकट्टु, इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता णं पोंडरिगिणीए पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—'तएणं पुंडरीए' इत्यादि। ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, तथा स्वयमेव 'चाउज्जामं' चातुर्यामं=चतुर्महाव्रतलक्षणं धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, 'कंडरीयस्स संतियं' कण्डरीकस्य सत्कम्=कण्डरीकसम्बन्धि इत्यर्थः, 'आयारभंडयं' आचारभाण्डकं आचाराय=साधोः पञ्चविधाचारपरिपालनाय यद्भाण्डकं=वस्त्रपात्रसदोरकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

'तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पुंडरीए) पुंडरीक ने (सयमेव) अपने आप (पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) अपना पंचमुष्टिक लोच किया-(करित्ता सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ) और लोच करके स्वयं ही उन्होंने-चातुर्याम-चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया। एवं कंडरीक के अनगार अवस्था संबन्धी आचार भाण्डक को-वस्त्र, पात्र सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप साधु चिह्नों को-ले लिया। (गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता

'तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं' इत्यादि।

ટીકાર્થ—(तएणं) ત્યારપછી (पुंडरीए) પુંડરીકે (सयमेव) પોતાની જાતે જ (पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) પોતાનું પંચમુષ્ટિક લુંચન કર્યું

(करित्ता सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ)

અને લુંચન કરીને જાતે જ તેમણે ચાતુર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપધર્મને ધારણ કરી લીધો અને કંડરીકની અનગાર અવસ્થા સંબંધી આચાર ભાંડકો-વસ્ત્ર, પાત્ર, સદોરક મુખવસ્ત્રિકા, રજોહરણ વગેરે સાધુ ચિહ્નોને લઈ લીધા

भंते ' भोगेहिं ' अर्थो हे भदन्त ! भोगैः ?=किं भोगैः प्रयोजनमस्ति ? इति, पुण्डरीक' माह–' हंता ! अट्ठो '=हन्त ! अर्थः=भोगमुपभोक्तुमानसोऽस्मीति भाव' । ततः खलु=कण्डरीकाभिप्रायज्ञानानन्तरमित्यर्थः, स पुण्डरीको राजा कौटुम्बिकपुरुषान शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा, एवमवदत् – क्षिप्रमेव भो देवानुप्रिया ! कण्डरीकस्य महार्थम्=महत्यर्थम् ' जाव रायाभिसेयं ' यावत् राजा भिषेकम् ' उवट्ठवेइ ' उपस्थापयत=परिकल्पयत, ' जाव रायाभिसेएण अभिसिं चइ ' यावत् राज्याभिषेकेण अभिषिञ्चति स पुण्डरीको राजा कण्डरीकं राजपदे स्थापयति ॥ सू० ४ ॥

मूलम्–तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ,

उनसे ऐसा ही कहा परन्तु फिर भी उन्हों ने कुछ नहीं ध्यान दिया केवल मौन धारण कर ही बैठे रहे–तब पुनः पुंडरीकने उन कंडरीक अनगार से इस प्रकार कहा–हे भदन्त ! क्या आप को भोगों से तात्पर्य है ? तब कंडरीक ने कहा हां–मेरा मन भोगों को उपभोग करने के लिये हो रहा है। इस तरह कंडरीक का अभिप्राय जानने के बाद पुंड रीक राजा ने कौटुम्बिक पुरुषों को बुलाया और बुलाकर उनसे ऐसा कहा–भो देवानुप्रियो तुम लोग कंडरीक के लिये राज्याभिषेक योग्य सामग्री एकत्रित कर लेआओ पुंडरीक राजा की इस आज्ञा के अनु सार, उनलोगों ने वैसा ही किया–जब राज्याभिषेक सामग्री उपस्थित हो चुकी–तब पुंडरीकने कंडरीक का राज्याभिषेककर दिया–कंडरीक को राजपद में स्थापित कर दिया ॥ सूत्र ४ ॥

રહ્યા પુંડરીક રાજાએ તેમની આવી સ્થિતિ જોઈને બીજી અને ત્રીજી વખત પણ આ પ્રમાણે જ કહ્યુ પણ તેમણે તેની કંઈ દરકાર કરી નહિ તેઓ ફક્ત મૂંગા થઈને બેસી જ રહ્યા ત્યારે ફરી પુંડરીકે તે કંડરીક અનગારને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે ભગવન્ ! તમને શું હજી ભોગ ઉપભોગોની ઈચ્છા છે ? ત્યારે કંડરીકે કહ્યુ કે હા, ખરેખર મારૂં મન ભોગ ઉપભોગમાં પ્રવૃત્ત થવા ઈચ્છે છે આ પ્રમાણે કંડરીકની ઇચ્છા જાણીને પુંડરીક રાજાએ કૌટુંબિક પુરુષોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમે લોકો કંડરીક માટે–રાજ્યાભિષેક યોગ્ય સામગ્રી ભેગી કરો પુંડરીક રાજાની આ પ્રમાણે આજ્ઞા સાંભળીને તે લોકોએ તેમજ કર્યું જ્યારે રાજ્યા ભિષેકની બધી વસ્તુઓ એકત્રિત થઈ ગઈ ત્યારે પુંડરીકે કંડરીકનો રાજ્યાભિષેક કરી દીધો એટલે કે કંડરીકને રાજ્યાસને બેસાડી દીધો ॥ સૂત્ર ૪ ॥

करित्ता, सयमेव चाउज्जाम धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ, गेण्हित्ता, इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ताणं तओ पच्छा आहारं आहरित्तए त्तिकट्टु, इमं च एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता णं पोंडरिगिणीए पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता, पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्ज-माणे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥सू०५॥

टीका—'तएणं पुंडरीए' इत्यादि। ततः खलु पुण्डरीकः स्वयमेव पञ्चमुष्टिकं लोचं करोति, तथा स्वयमेव 'चाउज्जामं' चातुर्यामं=चतुर्महाव्रतलक्षणं धर्मं प्रतिपद्यते, प्रतिपद्य, 'कंडरीयस्स संतियं' कण्डरीकस्य सत्कम्=कण्डरीकसम्बन्धि इत्यर्थः, 'आयारभंडयं' आचारभाण्डकं आचाराय=साधोः पञ्चविधाचारपरिपालनाय यद्भाण्डकं=वस्त्रपात्रसदोरकमुखवस्त्रिकारजोहरणादिरूपम् तद्

'तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) इसके बाद (पुंडरीए) पुंडरीक ने (सयमेव) अपने आप (पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) अपना पंचमुष्टिक लोंच किया—(करित्ता सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ) और लोच करके स्वयं ही उन्होंने—चातुर्याम—चतुर्महाव्रत रूप धर्म को धारण कर लिया। एवं कंडरीक के अनगार अवस्था संबन्धी आचार भाण्डक को—वस्त्र, पात्र, सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण आदिरूप साधु चिह्नों को—ले लिया। (गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, कप्पइ मे थेरे वंदित्ता णमंसित्ता

'तएणं पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) त्यारपछी (पुंडरीए) पुंडरीके (सयमेव) पोतानी जाते ज (पंचमुट्ठियं लोयं करेइ) पोतानुं पंचमुष्टिक लुंचन कर्युं

(करित्ता सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडयं गेण्हइ)

अने लुंचन करीने जाते ज तेमणे चातुर्याम—चतुर्महाव्रत रूप धर्मने धारण करी लीधो अने कंडरीकनी अनगार अवस्था संबंधी आचार भांडको—वस्त्र, पात्र, सदोरक मुखवस्त्रिका, रजोहरण वगेरे साधु चिह्नोने लई लीधा

गृह्णाति, गृहीत्वा, इममेतद्रूप=वक्ष्यमाणमभिग्रह=प्रतिज्ञाविशेषम् अभिगृह्णाति= करोति अभिग्रहस्वरूपमाह–कल्पते मे स्थविरान् वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणा मन्तिके चातुर्याम धर्मम् ' उवसपज्जित्ताण ' उपसपद्य=स्वीकृत्य, ततः पश्चात्– आहारमाहर्तुम् इति कृत्वा निश्चित्य, इम च एतद्रूपम् अभिग्रहम् , अभिगृह्य खलु पुण्डरीकिण्या प्रतिनिष्क्रामति निस्सरति, प्रतिनिष्क्रम्य ' पुव्वाणुपुव्वि ' पूर्वानु पूर्व्या चरन् , ग्रामानुग्राम द्रवन् यत्र स्थविरा भगवन्तस्तत्रैव प्राधारयद्=गम नाय गन्तु प्रस्थित' ॥ सू०५ ॥

थेराण अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताण, तओ पच्छा आहार आहरित्तए) बाद में उन्होंने इस प्रकार अभिग्रह धारण किया कि जबतक मैं स्थविर भगवतो को वदना नमस्कार कर उनके पाससे चातुर्याम धर्मको धारण नहीं कर लूगा, तबतक मैं आहार पानी ग्रहण नहीं करूँगा उनके पास चातुर्याम धर्म धारण करके ही आहार ग्रहण करूँगा (त्ति कट्टु इमच एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हित्ता ण पोडरिगिणीए पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए) इस प्रकार का यह अभिग्रहण कर वे उस पुडरीकिणी नगरी से निकले–और निकल कर तीर्थंकर परम्परानुसार विहार करते हुए एव एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विचरण करते हुए वे उस ओर प्रस्थित हुए कि जहा स्थविर भगवत विराजमान थे ॥ सूत्र ५ ॥

(गेण्हित्ता इम एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हइ, कप्पइ, मे थेरे वदित्ता णमसित्ता थेराण अतिए चाउज्जाम धम्म उवसपज्जित्ताण तओपच्छा आहार आहरित्तए)

ત્યારબાદ તેમણે આ જાતનો અભિગ્રહ ધારણ કર્યો કે જ્યા સુધી હુ સ્થવિર ભગવતોને વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ નહિ કરૂ ત્યા સુધી હુ આહાર પાણી ગ્રહણ કરીશ નહિ તેમની પાસેથી ચાતુર્યામ ધર્મને ધારણ કરીને જ હુ આહાર ગ્રહણ કરીશ

(त्ति कट्टु इम च एयारूव अभिग्गह अभिगिण्हित्ताण पोंडरिगिणीए पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्वि चरमाणे गामाणुगाम दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भगवतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए)

આ પ્રમાણે તે અભિગ્રહને મનમા ધારણ કરીને તેઓ તે પુડરીકિણી નગરીની બહાર નીકળ્યા અને નીકળીને તીર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતા કરતા અને આ પ્રમાણે એક ગામથી બીજે ગામ વિચરણ કરતા કરતા તેઓએ જ્યા સ્થવિર ભગવતો વિરાજમાન હતા તે તરફ પ્રસ્થાન કર્યુ ॥સૂ૦૫॥

मूलम्--तएणं तस्स कडरीयस्स रण्णो त पणीय पाण-भोयणं आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अइ भोयणप्पसगेण य से आहारे णो सम्मं परिणमइ। तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगय-सरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ। तएणं से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकाल ट्ठिइयसि नरयसि नेरइयत्ताए उववण्णे। एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टि-स्सइ, जहा व से कडरीए राया ॥ सू० ६ ॥

टीका—'तएणं तस्स' इत्यादि। तत खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञस्त 'पणीय' प्रणीतम् = सरस गरिष्ठ च पानभोजनम् 'आहारियस्स समाणस्स' आहारितस्य सत'=आहार कुर्वतः सत' 'अइजागरियेण य' अतिजागरितेन च=

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (तस्स कडरीयस्स रण्णो) उस कड रीक राजा के (त पणीय पाणभोयण आहारीयस्स समाणस्स अतिजा गरिएणय अइभोयणप्पसगेणय से आहारे णो सम्म परिणमइ) इस प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजन के खाने से तथा विषयों की अधिक आसक्ति के कारण अतिजागरण करने से एव प्रमाणाधिक भोजन के

'तएणं तस्स कडरीयस्स रण्णो' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (तस्स कडरीयस्स रण्णो) ते कंडरीक राजाने (त पणीय पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स अतिजागरिएण य अईभो यणप्पसगेण य से आहारे णो सम्म परिणमइ)

ते प्रणीत-सरस-गरिष्ठ पान भोजनना आहारथी तेमज विषयोमा वधारे पडती आसक्तिना लीधे, वधारे जागरण करवाथी, अने प्रमाण करता

त्रिपगाम्वतेरतिजागरणया ' आमोयणप्पसगेण ' अतिभोजनप्रसङ्गेन=प्रमाणाधिक भोजनेन स आहारो नो सम्यक् परिणमति=यथावदाहारस्य परिपाको न भवति। ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञः ' तंसि ' आहारसि ' तस्मिन् आहारे ' अप रिणममाणंसि ' अपरिणमति=परिपाकमगच्छति सति ' पुव्वरत्तावरत्तकालसम यसि ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेर्मध्यभागे ' सरीरसि ' शरीरे वेदना प्रादु र्भूता, कीदृशीवेदना ? उज्जला=सुखलेशरहिता, विपुला=विशाला-सर्वशरीरव्याप्ता ' पगाढा ' प्रगाढा ' जाव दुरहियासा ' यावद् दुरधिसह्या=सोढुमशक्या, पुनः स कण्डरीको राजा ' पित्तज्जरपरिगयसरीरे ' पित्तज्वर परिगतशरीरः=पित्तज्वरेण परिगत=व्याप्तं शरीरं यस्य सः=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीरः ' दाहवक्कतीए ' दाह व्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्त चापि विहरति=आस्ते। ततः खलु स कण्डरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्तःपुरे च ' जाव अज्झोववन्ने ' यावत्

प्रसंग से कृत आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ) इसलिये एक दिन की बात है कि उन कंडरीक राजा के जब वह कृत सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर मे रात्रि के मध्यभागमे वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी बहुत अधिक थी-यावत् वह उन्हें दुरधिसह्य हो रही थी। पित्तज्वर से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कंडरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

પણ વધારે ભોજન પ્રસંગોમાં કરેલા આહારનું પાચન બરાબર થતું નહોતું (तएणं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरंसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ)

એથી એક દિવસની વાત છે કે તે કંડરીક રાજાને જ્યારે ભોજન રૂપમાં લીધેલા તે સરસ અને ગરિષ્ઠ આહારનું સારી રીતે પાચન થયું નહિ ત્યારે રાત્રિના મધ્ય ભાગમાં તેમના શરીરમાં વેદના થવા માંડી, તેથી તેઓ ખૂબ જ દુઃખી થયા આ વેદનામાં માત્ર દુઃખ જ થતું હતું, તે વેદના તેમના સંપૂર્ણ શરીરમાં વ્યાપ્ત થ[illegible]તી પ્રમાણમાં તે બહુ જ વધારે હતી યાવત્ તે તેમના માટે દુ[illegible] સહ્ય) થઈ પડી હતી પિત્તજ્વરથી વ્યાપ્ત થયેલા શરીરવાળા તે [illegible] જ્વાળાઓથી સળગી ઉઠયા

अध्युपपन्नः-मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथित अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' आर्तदुःखार्तवशार्तः=तत्र=आर्त=मनसा दु खितः, दुःखार्तः= देहदु खयुक्तः, वशार्तः=राज्यराष्ट्रान्त. पुराद्यासक्तेन्द्रियवशेन विषयसुखवियोग- सम्भावनया पीडित =आर्त्तध्यानोपगत इत्यर्थ । 'अकामए' अकामकः=अनि- च्छकः-मरणवाञ्छारहित , 'अवस्सवसे' अवस्ववश =अगतस्वातन्त्र्य. परा धीनः सन् कालमासे काल कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अधः सप्तम्या पृथिव्याम् तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्ठिइयंसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये। (तएण से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासेकाल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसी नेरइयत्ताए उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एव अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिकों में सर्वथा आस क्तिभाव से बधे हुए वे राजा मन से दु खित होकर, देह के दुःख से एकक्षण अर्तध्यान में पड़ गये। अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जावे-तो भी सांसारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतन्त्र थे, इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के सातवे नरक मे कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है-अर्थात् ३३ सा

(तएण से कडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए, उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

આ પ્રમાણે દુ ખિત થયેલા તે કંડરીક રાજા રાજ્ય, રાષ્ટ્ર અને રણુ વાસમા અધ્યુપપન્ન થઈ ગયા એટલે કે વધારે પડતા આસક્ત થઈ ગયા. આ પ્રમાણે રાજ્ય વગેરેમા સ પૂર્ણપણે આસક્ત ભાવથી બ ધાયેલા તે રાજા મનથી દુ ખિત થઈને, શારીરિક કષ્ટથી એક ક્ષણુ માટે પણુ મુક્તિ નહિ થવાને કારણે વિષય સુખોના વિયોગની સ ભાવના બ લ તેમજ રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, રણુવાસ વગેરેમા આસક્ત ઇન્દ્રિયોના વશમા હોવાને કારણે આર્તધ્યાનમા મગ્ન થઈ ગયા છેવટે તેઓ મૃત્યુને ઇચ્છતા નહોતા છતાએ સાંસારિક વાતાવરણમા બ ધાયેલા હોવાને કારણે અથવા વેદનાઓથી પીડિત હોવાને કારણે તેઓ સ્વવશ હતા નહિ, પરવશ-પરતંત્ર હતા, એથી કાળ અવસરે કાળ કરીને,- મૃત્યુ પામીને-નીચે તમસ્તમપ્રભા નામના સાતમા નરકમાં કે જે ઉત્કૃષ્ટ કાલ

विषयामरसेरतिनागरणया ' आमोयणप्पसंगण ' अतिभोजनप्रसङ्गेन=प्रमाणाधिक भोजनेन स आहारो नो सम्यक् परिणमति=यथाशाहारस्य परिपाको न भवति। ततः खलु तस्य कण्डरीकस्य राज्ञः ' तसि ' आहारसि ' तस्मिन् आहारे ' अपरिणममाणंसि ' अपरिणमति=परिपाकमगच्छति सति ' पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि ' पूर्वरात्रापररात्रकालसमये=रात्रेर्मध्यभागे ' सरीरसि ' शरीरे वेदना प्रादुर्भूता, कीदृशीवेदना ? उज्ज्वला=सुखलेशरहिता, विपुला=विशाला–सर्वशरीरव्यापा ' पगाढा ' प्रगाढा ' जाव दुरहियासा ' यावद् दुरधिसह्या=सोढुमशक्या, पुनः स कण्डरीको राजा ' पित्तज्जरपरिगयसरीरे ' पित्तज्वर परिगतशरीर =पित्तज्वरेण परिगत=व्याप्त शरीर यस्य स.=पित्तज्वरपरिव्याप्तशरीरः ' दाहवक्कतीए ' दाह व्युत्क्रान्तिक'=दाहज्वरज्वालासमाक्रान्त चापि विहरति=आस्ते । ततः खलु स कण्डरीको राजा राज्ये च राष्ट्रे च अन्तःपुरे च ' जाव अज्झोववन्ने ' यावत्

प्रसग से कुन आहार का परिपाक ठीक २ नहीं होता रहा-(तएण तस्स कंडरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ) इसलिये एक दिन की बात है कि उन कडरीक राजा के जब वह कुन सरस गरिष्ठ आहार अच्छी तरह नहीं पचा तब उनके शरीर मे रात्रि के मध्यभागमे वेदना प्रादुर्भूत हुई। जिस वजह से वह वेदना सुख के लेश से वर्जित थी उनके समस्त शरीर भर में व्याप्त हो रही थी बहुत अधिक थी–यावत् वह उन्हें दुरधिसह्य हो रही थी। पित्तज्वर से व्याप्त है शरीर जिन का ऐसे वे कडरीक राजा दाहज्वर की ज्वाला

પણ વધારે ભોજન પ્રસગોમા કરેલા આહારનુ પાચન બરાબર થતુ નહોતુ

(तएण तस्स कडरीयस्स रण्णो तसि आहारसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि सरीरसि वेयणा पाउब्भुया उज्जला विउला पगाढा जाव दुरहियासा पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतीए यावि विहरइ)

એથી એક દિવસની વાત છે કે તે કડરીક રાજાને જ્યારે ભોજન રૂપમા લીધેલા તે સરસ અને ગરિષ્ઠ આહારનુ સારી રીતે પાચન થયુ નહિ ત્યારે રાત્રિના મધ્ય ભાગમા તેમના શરીરમા વેદના થવા માડી, તેથી તેઓ ખૂબ જ દુ ખી થયા આ વેદનામા માત્ર દુઃખ જ થતુ હતુ, તે વેદના તેમના સપૂર્ણ શરીરમા વ્યાપ્ત થઈ રહી હતી પ્રમાણમા તે બહુ જ વધારે હતી યાવત્ તે તેમના માટે દુરધિસહ્ય (અસહ્ય) થઈ પડી હતી પિત્તજ્વરથી વ્યાપ્ત થયેલા શરીરવાળા તે કડરીક રાજા દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી સળગી ઉઠયા

अध्युपपन्नः-मूर्च्छितो गृद्धः ग्रथित अध्युपपन्नः राज्यादिषु सर्वथासक्त इत्यर्थः, 'अट्टदुहट्टवसट्टे' आर्तदुःखार्तवशार्तः=तत्र=आर्त्तः=मनसा दुःखितः, दुःखार्तः= देहदुःखयुक्तः, वशार्तः=राज्यराष्ट्रान्तः पुरादासक्तेन्द्रियवशेन विषयसुखवियोग- सम्भावनया पीडितः=आर्त्तध्यानोपगत इत्यर्थः । 'अकामए' अकामकः=अनि- च्छकः-मरणवाञ्छारहितः, 'अवस्सवसे' अवस्ववशः=अपगतस्वातन्त्र्यः परा धीनः सन् कालमासे कालं कृत्वा 'अहे सत्तमाए' अधः सप्तम्यां पृथिव्याम् तमस्तमः प्रभाख्ये सप्तमे नरके 'उक्कोसकालट्ठिइयंसि' उत्कृष्टकालस्थितिके नरके

से भी युक्त हो गये। (तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे काल किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसी नेरइयत्ताए उववण्णे) इस तरह दुःखित बने हुए वे कंडरीक राजा राज्य राष्ट्र, एवं अन्तपुर में अध्युपपन्न हो गये इस प्रकार राज्यादिकों में सर्वथा आस क्तिभाव से बंधे हुए वे राजा मन से दुःखित होकर, देह के दुःख से एकक्षण अर्तध्यान में पड़ गये। अन्त में वे, ये नहीं चाहते थे कि मेरी मृत्यु हो जावे-तो भी सांसारिक स्थिति से बन्धे हुए होने के कारण या वेदनाओं से पीडित होने के कारण वे स्ववश नहीं थे परतंत्र थे, इसलिये काल अवसरकाल करके मर कर नीचे तमस्तम प्रभा नाम के सातवें नरक में कि जो उत्कृष्ट काल स्थिति प्रमाण है-अर्थात् ३३ सा

(तएणं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य जाव अज्झोववन्ने अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवस्सवसे कालमासे कालं किच्चा अहे सत्तमाए पुढवीए, अक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे)

આ પ્રમાણે દુઃખિત થયેલા તે કંડરીક રાજા રાજ્ય, રાષ્ટ્ર અને રણુ વાસમાં અધ્યુપપન્ન થઈ ગયા એટલે કે વધારે પડતા આસક્ત થઈ ગયા. આ પ્રમાણે રાજ્ય વગેરેમાં સંપૂર્ણપણે આસક્ત ભાવથી બંધાયેલા તે રાજા મનથી દુઃખિત થઈને, શારીરિક કષ્ટથી એક ક્ષણ માટે પણ મુક્તિ નહિ થવાને કારણે વિષય સુખોના વિયોગની સંભાવના બદલ તેમજ રાજ્ય, રાષ્ટ્ર, રણુવાસ વગેરેમાં આસક્ત ઇન્દ્રિયોના વશમાં હોવાને કારણે આર્તધ્યાનમાં મગ્ન થઈ ગયા છેવટે તેઓ મૃત્યુને ઇચ્છતા નહોતા છતાંએ સાંસારિક વાતાવરણમાં બંધાયેલા હોવાને કારણે અથવા વેદનાઓથી પીડિત હોવાને કારણે તેઓ સ્વવશ હતા નહિ, પરવશ-પરતંત્ર હતા, એથી કાળ અવસરે કાળ કરીને,- મૃત્યુ પામીને-નીચે તમસ્તમપ્રભા નામના સાતમા નરકમાં કે જે ઉત્કૃષ્ટ કાલ-

नैरयिकतया उपपन्नः। एतद् दृष्टान्तेन भगवान् महावीरः साधूनुपदिशति-एवमेव =अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्तः! श्रमणाः यः कश्चिदस्माकं श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके यावत्प्रव्रजितः सन् पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान् 'आसाएइ' आस्वादयति। स 'जाव अणुपरियट्टिस्सइ' यावदनुपर्यटिष्यति-यावत्-चातुरन्तसंसारकान्तारं परिभ्रमिष्यति। 'जहेव से कंडरीए राया' यथैव स कण्डरीको राजा ॥ सू०६ ॥

मूलम्-तएणं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता, अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तइ

गर की जहां उत्कृष्ट स्थिति है-नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो ग[ये] इसी बात को दृष्टान्त से श्री भगवान् महावीर प्रभु साधुओं को [सम]झाते है-(एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि [माणु]स्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कं[डरीए] राया) इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणो! जो कोई हमारा श्रमण अथ[वा] श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास मे दीक्षित होकर के पुन मनुष्[य] भव संबन्धी कामभोगों को भोगता है वह कंडरीक राजा की तरह यावत् इस चतुर्गति रूप संसार कान्तार में परिभ्रमण करेगा ॥सूत्र६॥

સ્થિતિ પ્રમાણ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની જ્યા ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાંત રૂપમા સાધુઓને સમજાવે છે કે—

एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंडरीए राया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે કોઇ અમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઇને ફરી જો તે મનુષ્ય ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કંડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારમા પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, भत्तपाणं पडिदंसेइ पडिदंसित्ता, थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं तं फासुएसणिज्जं असणपाणखाइमसाइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ । तएणं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ । तएणं तस्स पुंडरीस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिए विहरइ । तएणं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल जाव एवं वयासी–णमोऽत्थुणं अरिहंताणं जाव संपत्ताणं णमोत्थुणं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने । तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ । एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ णो रज्जइ, जाव विप्पडिघायमावज्जइ, से णं इहभवे चेव बहूणं सावगाणं०

नैरयिकतया उपपन्नः। एतद् दृष्टान्तेन भगवान महावीर साधूनुपदिशति-एवमेव =अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्तः! श्रमणाः यः कश्चिदस्माकं श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके यावत्प्रव्रजितः सन पुनरपि मानुष्यकान् कामभोगान् 'आसाएइ' आस्वादयति। स 'जाव अणुपरियट्टिस्सइ' यावदनुपर्यटिष्यति-यावत्-चातुरन्तसंसारकान्तार परिभ्रमिष्यति। 'जहा से कंडरीए राया' यथैव स कण्डरीको राजा॥ सू०६॥

मूलम्-तएणं से पोंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवते वंदइ नमसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चपि चाउज्जाम धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ, करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयणं पडि गाहेइ, पडिगाहित्ता, अहापज्जत्तमिति कट्टु पडिणियत्तइ,

गर की जहा उत्कृष्ट स्थिति है-नारकी की पर्याय से उत्पन्न हो गये। इसी बात को दृष्टान्त से श्री भगवान् महावीर प्रभु साधुओं को समझाते है-(एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंडरीए राया) इसी तरह हे आयुष्मंत श्रमणो! जो कोई हमारा श्रमण अथवा श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास मे दीक्षित होकर के पुनः मनुष्य भव संबन्धी कामभोगो को भोगता है वह कंडरीक राजा की तरह यावत् इस चतुर्गति रूप संसार कान्तार में परिभ्रमण करेगा॥सूत्र६॥

સ્થિતિ પ્રમાણુ છે-એટલે કે ૩૩ સાગરની જ્યા ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ છે-નારકીની પર્યાયથી જન્મ પામ્યા એ જ વાતને શ્રી ભગવાન મહાવીર પ્રભુ દૃષ્ટાંત રૂપમા સાધુઓને સમજાવે છે કે—

एवामेव समणाउसो! जाव पव्वईए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसाए जाव अणुपरियट्टिस्सइ, जहा व से कंडरीए राया)

આ પ્રમાણે હે આયુષ્મંત શ્રમણો! જે કોઇ અમારા શ્રમણ અથવા શ્રમણીજન આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની પાસે દીક્ષિત થઈને ફરી તે મનુષ્ય ભવના કામભોગોને ભોગવે છે, તે કંડરીક રાજાની જેમ યાવત્ આ ચતુર્ગતિ રૂપ સંસાર કાંતારમા પરિભ્રમણ કરશે ॥ સૂત્ર ૬ ॥

पौरुष्या=प्रथमे प्रहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् 'सीयलुक्ख' शीतरूक्ष-शीत=पर्युषित, रूक्ष घृतादिरहित पान भोजन प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकट्टु' यथापर्याप्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमितिमनसि कृत्य 'पडिणियत्तइ' प्रति-

---

पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिल मिव पण्णगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइम साइम सरीरकोट्ठगसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हो ने स्थविर भगवतों को वदना नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हो ने उनसे दुबाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित, रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहा से

पोरिसीए सज्झाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तई-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं, अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइमसाइम सरीरकोट्ठगसि पक्खिवइ)

ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદના અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમની પાસેથી બીજીવ ર ચાતુર્યામ-ચતુ ર્મહાવ્રત રૂપ ધર્મને ધારણ કર્યો જ્યારે ષષ્ઠ ક્ષપણની પારણાનો વખત આવ્યો ત્યારે તેઓ પ્રથમ પૌરૂષીમા સ્વાધ્યાય કરતા અને સ્વાધ્યાય કરીને તેઓ ઉચ્ચ, નીચ અને મધ્યમ કુળોમા ભિક્ષા માટે પરિભ્રમણ કરતા તે સમયે તેમને શીત-પર્યુષિત, રૂક્ષ-ઘી વગરનો, પાન આહાર મળતો તો તેને તેઓ સ્વીકારી લેતા અને 'આટલો આહાર ઉદર-પોષણ માટે પૂરતો છે' આવો મનમા વિચાર કરીને ત્યાથી પાછા ફરી જતા પાછા આવીને ભિક્ષામા

अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जेत्तिकट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंत संसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ जहावसे पोंडरीए अणगारे। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं मपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णेत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके 'दोच्चपि' द्वितीयमपिवारम् चातुर्याम= चतुर्महाव्रतरूपधर्मं प्रतिपद्यते। तथा पष्ठक्षपणपारणायां समाप्तायां प्रथमायां

'तएण से पोंडरीए अणगारे' इत्यादि।

टीकार्थः—(तएण) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) जहा स्थविर भगवन विराजमान थे वहा आ गये। (उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमसइ, वंदित्ता, नमसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जाम धम्म

(तएण से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) त्यारબાદ (से पोंडरीए अणगारे) ते પુંડરીક અનગાર (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) જ્યાં સ્થવિર ભગવંત બિરાજમાન હતા ત્યાં ગયા

(उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं, धम्मं पडिवज्जइ,

पौरुष्या=प्रथमे प्रहरे स्वाध्याय करोति, कृत्वा 'अडमाणे' यावत् अटन् उच्चनीच-मध्यमकुलेषु भिक्षार्थं परिभ्राम्यन् ' सीयलुक्ख ' शीतरूक्ष-शीत=पर्युषित, रूक्ष घृतादिरहित पान भोजन प्रतिगृह्णाति, प्रतिगृह्य 'अहापज्जत्तमितिकट्टु ' यथापर्याप्तमिति कृत्वा=उदरभरणपर्याप्तमिदमन्नमितिमनसि कृत्य ' पडिणियत्तइ ' प्रति-

---

पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ, पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तइ-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिल मिव पण्णगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइम साइम सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ) वहाँ आकर के उन्हो ने स्थविर भगवतों को वदना नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हो ने उनसे दुबाराचातुर्याम-चतुर्महाव्रतरूप धर्म को धारण किया। जब षष्ठक्षपण की पारणा का समय आया उस समय वे प्रथम पौरुषी में स्वाध्याय करते-और स्वाध्याय करके फिर वे उच्च नीच मध्यम कुलों में भिक्षा के लिये परिभ्रमण करते उस समय जो उन्हें शीत-पर्युषित, रूक्ष-घृतादिरहित पान भोजन मिलता-वह वे ले लेते-और यह अन्न-सामग्री उदरभरण के लिये पर्याप्त है ऐसा मन में विचार कर वहा से

पोरिसीए सज्झाय करेइ करित्ता जाव अडमाणे सीयलुक्ख पाणभोयण पडिगाहेइ पडिगाहित्ता अहापज्जत्तमि त्ति कट्टु पडिनियत्तई-जेणेव थेरा भगवतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाण पडिदसेइ, पडिदसित्ता थेरेहिं भगवतेहिं, अब्भणुन्नाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झुववण्णे बिलमिव पण्णगभूएण अप्पाणेण त फासुएसणिज्ज असणपाणखाइमसाइम सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ)

ત્યા આવીને તેમણે સ્થવિર ભગવતોને વદના અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેમની પાસેથી બીજીવાર ચાતુર્યામ-ચતુર્મહાવ્રત રૂપ ધર્મને ધારણ કર્યો જ્યારે ષષ્ઠ ક્ષપણની પારણાનો વખત આવ્યો ત્યારે તેઓ પ્રથમ પૌરૂષીમા સ્વાધ્યાય કરતા અને સ્વાધ્યાય કરીને તેઓ ઉચ્ચ, નીચ અને મધ્યમ કુળોમા ભિક્ષા માટે પરિભ્રમણ કરતા તે સમયે તેમને શીત-પર્યુષિત, રૂક્ષ-ઘી વગરનો, પાન આહાર મળતો તો તેને તેઓ સ્વીકારી લેતા અને ' આટલો આહાર ઉદર-પોષણ માટે પૂરતો છે ' આવો મનમા વિચાર કરીને ત્યાથી પાછા ફરી જતા પાછા આવીને ભિક્ષામા

अच्चणिज्जे वंदणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिज्जेत्तिकट्टु परलोए वि य णं णो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरंत संसारकंतारं जाव वीइवइस्सइ जहा वि से पोंडरीए अणगारे। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पन्नत्ते। एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णेत्ते त्तिबेमि ॥ सू० ७ ॥

टीका—'तएण से' इत्यादि। ततः खलु स पुण्डरीकोऽनगारो यत्रैव स्थविराभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य स्थविरान् भगवतो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा स्थविराणामन्तिके 'दोच्चंपि' द्वितीयमपिवारम् चातुर्याम= चतुर्महाव्रतरूप धर्मं प्रतिपद्यते। तथा षष्ठक्षपणपारणायां समाप्तायां प्रथमायां

'तएणं से पोंडरीए अणगारे' इत्यादि।

टीकार्थः—(तएणं) इसके बाद (से पोंडरीए अणगारे) वे पुंडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) जहां स्थविर भगवंत विराजमान थे वहां आ गये। (उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्म

(तएणं से पोंडरीए अणगारे) इत्यादि।

टीकार्थ—(तएणं) त्यारबाद (से पोंडरीए अणगारे) ते पुंडरीक अनगार (जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ) ज्यां स्थविर भगवंत बिराजमान हता त्यां गया.

(उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं, धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरस विरस शीतरूक्ष पान भोजनम् 'आहारियस्स' आहारितस्य सत पूर्वरात्रापररात्रकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्म जागारिका जाग्रत=धर्मचिन्तनार्थ जागरणा कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति=नो परिपाक गच्छति। ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरधिसह्या, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगारः पितज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति। तत. खलु स पुण्डरीकोऽनगार 'अत्थामे' अस्थामा=शक्तिरहितः, अवल=शारीरिकवलरहितः, 'अवीरिए' अवीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषार्थपराक्रमरहितः 'करयल जाव' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं दशनख मस्तके अञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्—नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्सम्प्राप्तेभ्यः=मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा

भोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) उस तरह उन पुडरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुडरीए अणगारे अत्थामे, अवले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी—णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाण पुव्विं पि य ण मए

लुक्ख पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्म परिणमइ)

આ પ્રમાણે તે પુડરીક અનગારનો કાળાતિક્રમથી કરેલો તે અરસ, વિરસ, શીત, રૂક્ષ પાન આહારનુ રાત્રિના મધ્ય ભાગમા ધર્મચિંતન માટે કરેલા જાગરણને લીધે સારી રીતે પાચન થતુ ન હતું

(तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी—णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण

निर्वर्तते=प्रत्यागच्छति, प्रतिनिवृत्य यत्रैव स्थविरभगवन्तस्तत्रैव उपागच्छति, उपागत्य, भक्तपानं प्रतिदर्शयति, प्रतिदर्श्य, स्थविरैर्भगवद्भिरभ्यनुज्ञातः सन् अमूर्च्छित अगृद्ध अग्रथित' अनध्युपपन्नः=आसक्तिपरिवर्जित इतिभाव', ' बिल मिव पन्नगभूएण अप्पाणेण ' बिलमिव पन्नगभूतेन आत्मना इव=यथा पन्नग भूतेन=पन्नगभवमागतेन आत्मना=जीवेन बिल प्रविश्यते, तथा त ' फासुएस णिज्जं ' प्रासुकैषणीय=द्वाचत्वारिंशद्दोषवर्जितम् अशन पानं खाद्य स्वाद्य 'सरीर कोट्ठगसि' शरीरकोष्ठके=उदरे प्रक्षिपति, यथा भुजङ्गो बिलस्य पार्श्वभागद्वयमसंस्पृशन् म ध्यभागत एवात्मान बिले प्रवेशयति तथा स मुनरस्य पार्श्वद्वयस्पर्शरहित माहार कण्ठनालाभिमुख प्रवेश्य आहारयतीति भाव' । तत खलु तस्य पुण्डरी कस्य अनगारस्य ' कालाइक्कत ' कालातिक्रान्त=कालमतिक्रम्य प्राप्तम्-बुभुक्षा

वापिस आ जाते-वापिस आकर फिर प्राप्त भिक्षान्न को दिखाने के लिये वे जहा स्थविर भगवत विराजमान होते वहाँ आते-वहाँ आकर प्राप्त भिक्षान्न को उन स्थविर भगवतो को दिखलाते-दिखालकर जब वे उस आहार को खाने की आज्ञा देते-तब वे अमूर्च्छित भाव से अगृद्धचित्तवृत्ति से, एव आसक्ति रहित परिणति से उस प्राशुक एषणीय-४२ दोषों से रहित अशन, पान, खाद्य, एव स्वाद्यरूप-आहार को जिस तरह सर्प-बिल में प्रविष्ट होता है उसी तरह से शरीर कोष्ठक में-उदर में डाल देते थे। कारण इसका इस प्रकार है-जैसे भुजग बिल के पार्श्वद्वय नही छूता हुआ सीधे मध्यभाग से अपने को बिल में प्रविष्ट कराता है उसी तरह वे मुनिराज मुख के पार्श्वद्वय के स्पर्श से रहित आहार को सीधे कण्ठनाल में धर कर आहार करते थे (तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स त कालाइक्कत अरसविरस सियलुक्ख पाण

પ્રાપ્ત આહારને બતાવવા માટે જ્યા તે સ્થવિર ભગવત વિરાજમાન હતા ત્યા આવતા ત્યા આવીને મેળવેલા આહારને તે સ્થવિર ભગવતોને બતાવતા અને બતાવીને જ્યારે તેઓ તે આહારને ગ્રહણ કરવાની આજ્ઞા કરતા ત્યારે તેઓ અમૂર્છિત-ભાવથી, અગૃદ્ધ-ચિત્તવૃત્તિથી અને આસક્તિ રહિત પરિણતિથી તે પ્રાસુક એષણીય-૪૨ દોષોથી રહિત અશન, પાન, ખાદ્ય અને સ્વાદ્યરૂપ આહારને જેમ સાપ દરમા પ્રવેશે છે તેમજ શરીર કોષ્ઠકમા-પેટમા નાખી દેતા હતા જેમ સાપ દરના બને પાર્શ્વને સ્પર્શ ન કરતા સીધો વચ્ચે થઈને પોતાની જાતને દરમા પ્રવિષ્ટ કરાવી લે છે તેમજ તે મુનિરાજ પણ મુખના બને પાર્શ્વના સ્પર્શથી રહિત આહારને સીધો કઠનાળમા મૂકીને ઉદરસ્થ કરતા હતા (तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स त कालाइक्कत अरस विरस सिय

समयमुल्लङ्घ्य प्राप्तम्, अरस विरस शीतरूक्ष पान भोजनम् 'आहारियस्स' आहारितस्य सत पूर्वरात्रापरात्रकालसमये 'धम्मजागरियं जागरमाणस्स' धर्म जागारिका जाग्रत =धर्मचिन्तनार्थं जागरणा कुर्वतः स आहारो नो सम्यक् परिणमति=नो परिपाक गच्छति। ततः खलु तस्य पुण्डरीकस्य अनगारस्य शरीरे वेदना प्रादुर्भूता 'उज्जला जाव दुरहियासा' उज्ज्वला यावत् दुरविसह्या, एषा व्याख्यापूर्ववत्, तथा स पुण्डरीकोऽनगार' पित्तज्वरपरिगतशरीरो दाहव्युत्क्रान्तिकः=दाहज्वरसमाकुलश्चापि विहरति। तत, खलु स पुण्डरीकोऽनगार 'अत्थामे' अस्थामा=शक्तिरहित, अबल =शारीरिकबलरहितः, 'अवीरिए' अवीर्यः=उत्साहरहितः, अपुरुषकारपराक्रमः=पुरुषार्थपराक्रमरहितः 'करयल जाव' करतल यावत्=करतलपरिगृहीतं दशनख मस्तके अञ्जलि कृत्वा एवमवादीत्–नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यो यावत्सम्प्राप्तेभ्यः=मोक्ष गतेभ्यः, नमोस्तु खलु स्थविरेभ्यो भगवद्भ्यो मम धर्माचार्येभ्यो धर्मोपदेशकेभ्यः, पूर्वमपि च खलु मया स्थविराणा-

---

भोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयसि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्मं परिणमइ) उस तरह उन पुडरीक अनगार का कालातिक्रम से खाया हुआ वह अरस, विरस, शीत, रूक्ष, पानभोजन रात्रि के मध्यभाग में धर्मचिन्तन निमित्त जागरण करने के कारण अच्छी तरह से नहीं पचता था (तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी–णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण णमोत्थुण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण धम्मोवएसयाण पुव्वि पि य ण मए

लुक्खं पाणभोयण आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमय सि धम्मजागरिय जागरमाणस्स से आहारे णो सम्म परिणमइ)

આ પ્રમાણે તે પુડરીક અનગારનો કાળાતિક્રમથી કરેલો તે અરસ, વિરસ, શીત, રૂક્ષ પાન આહારનુ રાત્રિના મધ્ય ભાગમા ધર્મચિંતન માટે કરેલા જાગરણને લીધે સારી રીતે પાચન થતુ ન હતુ

(तएण तस्स पुडरीयस्स अणगारस्स सरीरगसि वेयणा पाउब्भूया उज्जला जाव दुरहियासा, पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कतिए विहरइ, तएण से पुडरीए अणगारे अत्थामे, अबले, अवीरिए अपुरिसक्कारपरिक्कमे करयल जाव, एव वयासी णमोत्थुण अरिहताण जाव सपत्ताण थेराण भगवताण मम धम्मायरियाण

मन्तिके सर्वं प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं खलु प्रत्याख्यातम्=अष्टादशपापस्थानानि प्रत्याख्यातानि इति भाव, इदानीमपि तेषामेव

थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववन्ने) इस कारण पुंडरीक अनगार के शरीर में वेदना प्रकट हो गई। जिसके कारण उन्हें क्षणभर भी शाता नहीं मिलती। धीरे २ यह समस्त शरीर में भी व्याप्त हो गई। यावत् यह उनके लिये सहन हो सके ऐसी नहीं रही–वे उसे बड़ी कठिनता से सहते। दाहज्वर ने भी इनके शरीर पर अपना प्रभाव जमा लिया। इस तरह ये दाहज्वर की ज्वाला से भी आकुल व्याकुल रहने लगे। धीरे २ इनका शरीर शक्ति रहित हो गया। शारीरिक बल भी इनका जाता रहा। उत्साह रहित एव पुरुषार्थ पराक्रम से विहीन जब ये हो गये तब करतल परिगृहीत दशनखोंवाली अंजलि को इन्होंने अपने मस्तक पर रखकर इस प्रकार का पाठ बोलना प्रारंभ किया यावत् मुक्ति प्राप्त अर्हंत भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो, मेरे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक स्थविर भगवंतों के लिये मेरा नमस्कार हो। मैंने पहिले भी स्थविर भगवंतों के निकट समस्त प्राणातिपात प्रत्याख्यान कर दिया है–यावत् मिथ्यादर्शन शल्य

धम्मोवएसयाण पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्लेणं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठ सिद्धे उववन्ने)

એથી તે પુંડરીક અનગારના શરીરમાં વેદના પ્રકટ થઈ ગઈ તેથી તેમને એક ક્ષણ માટે પણ શાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ શરીરમાં પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ–વ્યાકુળ રહેવા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઈ ગયું શારીરિક બળ પણ તેમનું નષ્ટ થઈ ગયું હતું આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને પુરુષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઈ ગયા ત્યારે કરતલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી અંજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેનો પાઠ બોલવા લાગ્યા કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે મેં પહેલા પણ ભગવંતોની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધું છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

अन्तिके प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य प्रत्याख्यामि, एव ' जाव आलो-इय पडिक्कते ' यावदालोचितप्रतिक्रान्त' कालमासे काल कृत्वा सर्वार्थसिद्धे उपपन्नः । ततोऽनन्तरम्=तत्पश्चात् सर्वार्थसिद्धात् ' उव्वट्टित्ता ' उद्वृत्य=सर्वार्थ-सिद्धेर्निर्गत्य महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत् सर्वदुःखानामन्त करिष्यति । पुण्डरी-कानगारचरित दृष्टान्तेनोपदर्श्य श्रमणानुपदिशति भगवान् महावीरः–' एवामेव ' अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः 'जाव पव्वइए ' यावत्प्रव्रजितः=योऽस्माक श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजितः सन् मानुष्यकेषु कामभोगेषु नो सज्जते नो असक्तिमाश्रयते ' नो रज्जते ' नो रज्यते=नो अनु रागवान् भवति, ' जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ ' यावत् नो विमतिघातमाप-द्यते=सयमनाश न प्राप्नोति, स खलु इह भवे एव बहूना श्रमणाना बहूना श्रम-णीना बहूना श्रावकाणा बहूना श्राविकाणाम् अर्चनीयो वन्दनीयः पूजनीयः सत्कारणीयः सम्माननीयो भवति, तथा च–स सर्वेषा ' कल्लाण ' कल्याण= कल्याणरूपम् ' मगल ' मङ्गलम्=मङ्गलरूपम् , ' देवय ' दैवत=धर्मदेवरूपः, ' चेइय ' चैत्यम्=ज्ञानरूप पर्युपासनीयश्च भवति ' त्तिकट्टु ' इति कृत्वा इति

का अष्टादश पापस्थानो का, मैंने प्रत्याख्यान कर दिया है। और अब भी उन्ही के साक्षी से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्या-ख्यान करता हूँ। इस तरह आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे कालअवसर कालकर सर्वार्थ सिद्ध नामके अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो गये। (तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खा णमत काहिइ, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्स एहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ सेण इह भवे चेव बहूण सावियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवास-

પાપસ્થાનોનુ મે પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા પ્રાણુતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ આ પ્રમાણે આલોચિત પ્રતિક્રાત થઈને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઈ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाण-मत काहिइ, एवामेव समणाउसो ! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं काम भोगेहि णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ से ण इह भवे चेव बहूण सावियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे, सम्माणणि ज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य णं णो

मन्तिके सर्वः प्राणातिपातः प्रत्याख्यातः यावत् मिथ्यादर्शनशल्यं खलु प्रत्याख्यातम्=अष्टादशपापस्थानानि प्रत्याख्यातानि इति भावः, इदानीमपि तेषामेव

थेराणं अंति० सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्ले णं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठ सिद्धे उववन्ने) इस कारण पुंडरीक अनगार के शरीर में वेदना प्रकट हो गइ। जिसके कारण उन्हें क्षणभर भी शाता नहीं मिलती। धीरे २ यह समस्त शरीर में भी व्याप्त हो गई। यावत् यह उनके लिये सहन हो सके ऐसी नहीं रही-वे उसे बड़ी कठिनता से सहते। दाहज्वर ने भी इनके शरीर पर अपना प्रभाव जमा लिया। इस तरह ये दाहज्वर की ज्वाला से भी आकुल व्याकुल रहने लगे। धीरे २ इनका शरीर शक्ति रहित हो गया। शारीरिक बल भी इनका जाता रहा। उत्साह रहित एवं पुरुषार्थ पराक्रम से विहीन जब ये हो गये तब करतल परिगृहीत दशनखोंवाली अंजलि को इन्हों ने अपने मस्तक पर रखकर इस प्रकार का पाठ बोलना प्रारंभ किया यावत् मुक्ति प्राप्त अर्हंत भगवतों के लिये मेरा नमस्कार हो, मेरे धर्माचार्य, धर्मोपदेशक स्थविर भगवतों के लिये मेरा नमस्कार हो। मैंने पहिले भी स्थविर भगवतों के निकट समस्त प्राणातिपात प्रत्याख्यान कर दिया है-यावत् मिथ्यादर्शन शल्य

धम्मोवएसयाण पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव मिच्छादंसणसल्लेणं पच्चक्खाए जाव आलोइयपडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठ सिद्धे उववन्ने)

એથી તે પુંડરીક અનગારના શરીરમાં વેદના પ્રકટ થઈ ગઈ તેથી તેમને એક ક્ષણ માટે પણ શાતા મળતી નહોતી ધીમે ધીમે આ વેદના સંપૂર્ણ શરીરમાં પ્રસરી ગઈ યાવત્ તે તેમના માટે અસહ્ય થઈ ગઈ, ભારે મુશ્કેલીથી તેઓ તેને ખમતા હતા દાહજ્વરે પણ તેમના શરીર ઉપર પોતાનો પ્રભાવ જમાવી લીધો હતો, એથી તેઓ દાહજ્વરની જ્વાળાઓથી પણ આકુળ-વ્યાકુળ રહેવા લાગ્યા ધીમે ધીમે તેમનું શરીર અશક્ત થઈ ગયું શારીરિક બળ પણ તેમનું નષ્ટ થઈ ગયું હતું આ પ્રમાણે જ્યારે તેઓ ઉત્સાહ રહિત અને પુરૂષાર્થ પરાક્રમ વિહીન થઈ ગયા ત્યારે કરતલ-પરિગૃહીત દશ નખોવાળી અંજલિને તેમણે પોતાના મસ્તકે મૂકીને આ પ્રમાણેનો પાઠ બોલવા લાગ્યા કે યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત અર્હંત ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે, મારા ધર્માચાર્ય, ધર્મોપદેશક સ્થવિર ભગવંતોને મારા નમસ્કાર છે મેં પહેલા પણ ભગવંતોની પાસે સમસ્ત પ્રાણાતિપાત કરી દીધું છે યાવત્ મિથ્યાદર્શન

अन्तिके प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शनशल्य प्रत्याख्यामि, एव 'जाव आलो-इय पडिकते' यावदालोचितप्रतिक्रान्तः कालमासे काल कृत्वा सर्वार्थसिद्धे उपपन्नः। ततोऽनन्तरम्=तत्पश्चात् सर्वार्थसिद्धात् 'उव्वट्टित्ता' उद्वृत्य=सर्वार्थ-सिद्धेर्निर्गत्य महाविदेहे वर्षे सेत्स्यति यावत् सर्वदुःखानामन्त करिष्यति। पुण्डरी-कानगारचरित दृष्टान्तेनोपदर्श्य श्रमणानुपदिशति भगवान् महावीरः-'एवामेव' अनेनैवप्रकारेण हे आयुष्मन्तः श्रमणाः 'जाव पव्वइए' यावत्प्रव्रजितः=योऽस्माक श्रमणो वा श्रमणी वा आचार्योपाध्यायानामन्तिके प्रव्रजित' सन् मानुष्यकेषु कामभोगेषु नो सज्जते नो असक्तिमाश्रयते 'नो रज्जते' नो रज्यते=नो अनु रागवान् भवति, 'जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ' यावत् नो विप्रतिघातमाप-द्यते=सयमनाश न प्राप्नोति, स खलु इह भवे एव बहूना श्रमणाना बहूना श्रम-णीना बहूना श्रावकाणा बहूना श्राविकाणाम् अर्चनीयो वन्दनीयः पूजनीयः सत्कारणीयः सम्माननीयो भवति, तथा च-स सर्वेषा 'कल्लाण' कल्याण= कल्याणरूपम् 'मगल' मङ्गलम्=मङ्गलरूपम्, 'देवय' दैवत=धर्मदेवरूपः, 'चेइय' चैत्यम्=ज्ञानरूप पर्युपासनीयश्च भवति 'त्तिकट्टु' इति कृत्वा इति

का अष्टादश पापस्थानो का, मैने प्रत्याख्यान कर दिया है। और अब भी उन्हीं के साक्षी से प्राणातिपात यावत् मिथ्यादर्शन शल्य का प्रत्या ख्यान करता हूँ। इस तरह आलोचित प्रतिक्रान्त होकर वे कालअवसर कालकर सर्वार्थ सिद्ध नामके अनुत्तर विमान में उत्पन्न हो गये। (तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खा णमत काहिइ, एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे माणुस्स एहिं कामभोगेहिं णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ सेण इह भवे चेव बहूण सावियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवास-

---

પાપસ્થાનોનુ મે પ્રત્યાખ્યાન કરી દીધુ છે અને હવે તેમની જ સાક્ષીમા પ્રાણુતિપાત યાવત્ મિથ્યાદર્શન શલ્યનુ પ્રત્યાખ્યાન કરૂ છુ આ પ્રમાણે આલોચિત પ્રતિક્રાત થઇને તેઓ કાળ અવસરે કાળ કરીને સર્વાર્થસિદ્ધ નામના અનુત્તર વિમાનમા ઉત્પન્ન થઈ ગયા અને ત્યા તેમની ૩૩ સાગરોપમની સ્થિતિ છે

(तओ अणतर उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, जाव सव्वदुक्खाण-मत काहिइ, एवामेव समणाउसो! जाव पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं काम भोगेहि णो सज्जइ, णो रज्जइ, जाव नो विप्पडिघायमावज्जइ से ण इह भवे चेव बहूण सावियाण अच्चणिज्जे, वदणिज्जे, पूयणिज्जे, सक्कारणिज्जे, सम्माणणि ज्जे, कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासणिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य ण णो

हेतोः परलोकेऽपि च खलु सा नो आगच्छति= न प्राप्नोति बहूनि=बहुविधानि दण्डनानि च मुण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्त संसार कान्तर 'वीइवइस्सइ' व्यति व्रजिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, यथा स पुण्डरीकोऽनगार

णिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य ण णो आगच्छइ, बहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरतससारकतार जाव वीइवइस्सइ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ सिद्ध विमान से चव कर महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहाँ से सिद्धपद के भोक्ता बनेंगे-यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे। इस तरह पुडरीक अनगार के चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मत श्रमणो! जो हमारा श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनुष्यभव सबधी कामभोगों में आसक्त नही बनता है, रञ्जित-अनुराग भाव सपन्न-नही होता है, यावत् अपने सयम को नष्ट नहीं करता है, वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक एव श्राविकाओं द्वारा अर्चनीय वदनीय पूजनीय सत्करणीय एव सन्माननीय होता है। तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप बन जाता है। लोग उसकी उपासना करते हैं। वह परलोक में भी अनेक प्रकार के दडनरूप, दु खो को, मुडनों को तर्जनों को, ताडनाओं

आगच्छइ, बहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य ताडणाणि य जाव चाउरतससारकतार जाव वीइवइस्सइ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ ધારણ કરીને ત્યાથી જ સિદ્ધપદ મેળવશે યાવત્ સમસ્ત દુ ખોનો અત કરશે આ રીતે પુડરીક અનગારના ચરિત્રને દૃષ્ટાત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતા કહે છે કે આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને મનુષ્ય ભવના કામભોગોમા આસક્ત થતા નથી રજ્જિત-અનુરક્ત થતા નથી, યાવત્ પોતાના સયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમા જ ઘણા શ્રમણ-શ્રમણી અને શ્રાવક [illegible] ઓ વડે અર્ચનીય, વદનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય અને સન્માનનીય [illegible] જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મ ગળરૂપ, ધર્મ દેવરૂપ અને [illegible] કો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમા પણ ઘણી [illegible] નોને, તર્જ[illegible]

सुधर्मास्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः । ज्ञातश्रुतस्कन्ध समापयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन षष्ठस्य अङ्गस्य=षष्ठाङ्गसम्बन्धिन प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः । 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू० ७ ॥

को नहीं पाता है और चतुर्गतिवाले इस ससार कान्तार को पुडरीक अनगार की तरह पार करनेवाला हो जाता है। (एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरे ण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्ध गई नामधेज्ज ठाणं सपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरे ण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्ते णं छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) अब श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं कि हे जबू ! आदिकर तीर्थंकर यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १९ वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। इस तरह हे जबू ! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को अच्छी तरह प्राप्त कर चुके हैं, छठे अग के प्रथम श्रुतस्कन्ध का यह पूर्वोक्त रूप से भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मैंने प्रभु के कहे अनुसार ही यह हे जबू ! तुमसे निवेदित किया है।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સસાર કાંતારને પુડરીક અનગારની જેમ પાર કરનાર થઈ જાય છે

(एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्धगई नामधेज्ज ठाण सपत्तेण एगूणवीस इमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं सपत्तेण छट्ठस्स अगस्स पढमस्स सुयक्खधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જબૂ ! આદિકર તીર્થંકર યાવત સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે-છઠ્ઠા અગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા ભાવ પ્રતિપાદિત કર્યો છે હે જબૂ ! આવુ મે પ્રભુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યુ છે

हेतोः परलोकेऽपि च खलु सा नो आगच्छति= न प्राप्नोति बहूनि=बहुविधानि दण्डनानि च मुण्डनानि च तर्जनानि च ताडनानि च यावत् चतुरन्तं संसार कान्तर 'वीइवइस्सइ' व्यति व्रमिष्यति=उल्लङ्घयिष्यति, यथा स पुण्डरीकोऽनगार

णिज्जे त्ति कट्टु परलोए वि य ण णो आगच्छइ, बहूणि दडणाणि य मुडणाणि य तज्जणाणि य ताडगाणि य जाव चाउरतससारकतारं जाव वीइवइस्सइ) इसके बाद वे उस सर्वार्थ सिद्ध विमान से चव कर महाविदेहक्षेत्र में जन्म धारण कर वहाँ से सिद्धपद के भोक्ता बनेंगे- यावत् समस्त दुःखों का अन्त करेंगे। इस तरह पुडरीक अनगार के चरित्र को दृष्टान्त रूप से कहकर भगवान् महावीर प्रभु श्रमणजनों को उपदेश करते हैं कि इसी प्रकार से हे आयुष्मत श्रमणो! जो हमारा श्रमण या श्रमणीजन आचार्य उपाध्याय के पास प्रव्रजित होकर मनुष्यभव सबधी कामभोगों में आसक्त नहीं बनता है, रज्जित-अनुराग भाव सपन्न-नहीं होता है, यावत् अपने सयम को नष्ट नहीं करता है, वह इस भव में ही अनेक श्रमण श्रमणी, श्रावक एव श्राविकाओं द्वारा अर्चनीय वदनीय पूजनीय सत्करणीय एव सन्माननीय होता है। तथा जगत के लिये कल्याणरूप, मगलरूप, धर्म देवरूप, और ज्ञानरूप बन जाता है। लोग उसकी उपासना करते हैं। वह परलोक में भी अनेक प्रकार के दडनरूप, दुःखों को, मुडनों को तर्जनों को, ताडनाओं

आगच्छइ, बहूणि दडणाणि य मुडणाणिय तज्जणाणि य ताडगाणि य जाव चाउरतससारकतार जाव वीइवइस्सइ)

ત્યારપછી તેઓ તે સર્વાર્થસિદ્ધ વિમાનમાથી ચવીને મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા જન્મ ધારણ કરીને ત્યાથી જ સિદ્ધપદ મેળવશે યાવત્ સમસ્ત દુખોનો અત કરશે આ રીતે પુડરીક અનગારના ચરિત્રને દષ્ટાત રૂપે કહીને મહાવીર પ્રભુ શ્રમણજનોને ઉપદેશ કરતા કહે છે કે આ પ્રમાણે જ હે આયુષ્મત શ્રમણો! જે અમારા શ્રમણ કે શ્રમણીજનો આચાર્ય ઉપાધ્યાયની પાસે પ્રવ્રજિત થઈને મનુષ્ય ભવના કામભોગોમા આસક્ત થતા નથી રજ્જિત-અનુરક્ત થતા નથી, યાવત્ પોતાના સયમને નષ્ટ કરતા નથી તે આ ભવમા જ ઘણા શ્રમણ-શ્રમણી અને શ્રાવક-શ્રાવિકાઓ વડે અર્ચનીય, વદનીય, પૂજનીય, સત્કરણીય અને સન્માનનીય હોય છે તેમજ જગતના માટે કલ્યાણરૂપ, મ ગળરૂપ, ધર્મ દેવરૂપ અને જ્ઞાનરૂપ બની જાય છે લોકો તેની ઉપાસના કરે છે, તે પરલોકમા પણ ઘણી જાતના દડન રૂપ, દુખોને, મુડનોને, તર્જ

सुधर्मास्वामी कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन एकोनविंशतितमस्य ज्ञाताध्ययनस्य अयमर्थः प्रज्ञप्तः। ज्ञातश्रुतस्कन्ध समापयन् सुधर्मा पुनः कथयति-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तेन षष्ठस्य अङ्गस्य=षष्ठाङ्गसम्बन्धिन प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तरूपो भावः प्रज्ञप्तः=भगवता कथितः। 'त्ति बेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०७ ॥

को नहीं पाता है और चतुर्गतिवाले इस संसार कान्तार को पुंडरीक अनगार की तरह पार करनेवाला हो जाता है। (एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरे ण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्ध गई नामधेज्ज ठाण संपत्तेण एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरे ण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाण संपत्ते णं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि) अब श्री सुधर्मा स्वामी कहते हैं कि हे जंबू ! आदिकर तीर्थंकर यावत् सिद्धि गति नामक स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने १९ वे ज्ञाताध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है। इस तरह हे जंबू ! श्रमण भगवान महावीर ने कि जो सिद्धिगति नामक स्थान को अच्छी तरह प्राप्त कर चुके हैं, छठे अंग के प्रथम श्रुतस्कंध का यह पूर्वोक्त रूप से भाव प्रतिपादित किया है। ऐसा मैंने प्रभु के कहे अनुसार ही यह हे जंबू ! तुमसे निवेदित किया है।

પ્રાપ્ત કરતો નથી અને ચતુર્ગતિવાળા આ સંસાર કાંતારને પુંડરીક અનગારની જેમ પાર કરનાર થઈ જાય છે

(एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण आइगरेण तित्थगरेण जाव सिद्धगई नामधेज्ज ठाण संपत्तेण एगूणवीस इमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एवं खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेण जाव सिद्धिगइणामधेज्ज ठाणं संपत्तेण छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि)

હવે શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ ! આદિકર તીર્થંકર યાવત સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ઓગણીસમા જ્ઞાતાધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રીતે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે હે જંબૂ ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને સારી રીતે પ્રાપ્ત કરી લીધુ છે-છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમાં ભાવ પ્રતિપાદિત કર્યો છે હે જંબૂ ! આવું મેં પ્રભુના કહ્યા મુજબ જ તમને કહ્યું છે

' तस्से ' त्यादि, तस्य खलु प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य एकोनविंशतिः अध्ययनानि ' एगसरगाणि' एकस्वरकाणि=अध्ययनोच्चारणानि=अन्तराले उद्देशरहितानि एकोनविंशति दिवसेषु समाप्यन्ते ॥ सू० ७ ॥

मंगलं भगवान् वीरः मंगलं गौतमः प्रभुः ।
सुधर्मा मंगलं, जम्बूर्जैनधर्मश्च मंगलम् ॥ १ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-' जैनशास्त्राचार्य ' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां ' ज्ञाताधर्मकथाङ्ग ' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमश्रुतस्कन्धः समाप्तः ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं की है किन्तु प्रभु के मुख से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम से मैंने कहा है। " तस्से " इत्यादि इस प्रथम श्रुतस्कंध के अन्तराल में उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं। ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं।

टीकार्थः— सांसरिक समस्त जीवों के लिये यदि मंगलकारी पदार्थ है-तो ये हैं भगवान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जंबू स्वामी और जैनधर्म।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रके प्रथम श्रुतस्कंध संपूर्ण।

આ કથનમાં મેં મારા તરફથી કોઇપણ જાતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી, પણ પ્રભુના મુખથી જેવું મેં સાંભળ્યું છે તેવું જ મેં કહ્યું છે " तस्से " ઇત્યાદિ આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કંધના અંતરાલમાં ઉદ્દેશ રહિત ઓગણીસ અધ્યયનો છે આ અધ્યયનો ઓગણીસ દિવસોમાં સમાપ્ત હોય છે

ટીકાર્થ —બધા સાંસારિક જીવોના માટે જે મંગળકારી પદાર્થો છે તો તે એજ છે-ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જંબૂ સ્વામી અને જૈન ધર્મ

" આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાંગનો જ્ઞાતા—નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કંધ સમાપ્ત થયો "

॥ अथ ज्ञातासूत्रे द्वितीयश्रुतस्कन्धविवरणम् ॥

मङ्गलाचरणम्-

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

आद्ये श्रुते भगवता रुचिरैरनेकै,-
ज्ञातैरदायि सकलार्तिहरः सुबोध' ।
स्कन्धे द्वितीयइह धर्मकथा च साक्षाद्,
विज्ञापिता तमनिशं वरद स्मरामि ॥ १ ॥

(मालिनीछन्द')

गणधरगुणधारं, मास्तमसारपारम्,
भविजनहितकारं, दत्तसम्यक्त्वसारम्, ।
हतसकलविकारं भव्यचित्तैकहारं,
शिवसुखपदद्वारं, नौमि चारित्रसारम्, ॥ २ ॥

-ःद्वितीयश्रुतस्कधप्रारभः-

आद्येश्रुते इत्यादि'—प्रथम श्रुतस्कधमे भगवान् सूत्रकार ने अनेक सुन्दर दृष्टान्तों द्वारा सकल आर्ति (दुःख) हारक सुबोध प्रदान किया है अब वे इस द्वितीय श्रुतस्कध में साक्षात् धर्मकथाएँ प्रकट करेंगे-अतः ऐसे भगवान को मैं कि जो भव्यजीवों को कल्याण करनेवाले होते हैं उनको निरन्तर नमस्कार करता हूँ ॥ १ ॥

गणधरइत्यादि—जो गणधरो के गुणों को धारण करनेवाले हैं ससार को पार करनेवाले हं, जो भव्यजनों को हितकारक है, सम्यक्त्वरूपी गुणके बोधक हैं-सकल विकारों से रहित है, इसलिये जो भव्यजीवों

દ્વિતીય શ્રુતસ્કધ પ્રારભ

આદ્યે શ્રુતેત્યાદિ—પ્રથમ શ્રુતસ્કધમા ભગવાન સૂત્રકારે ઘણા સુદર દૃષ્ટાતો વડે સમસ્ત આર્તિ (દુખ) હારક સુબોધ પ્રદાન કર્યો છે હવે તેઓ આ બીજા શ્રુતસ્કધમા સાક્ષાત્ ધર્મકથાઓ પ્રકટ કરશે એટલા માટે એવા ભગવાનને-કે જેઓ ભવ્ય જીવોનુ કલ્યાણ કરનારા છે-હુ નિરતર નમસ્કાર કરૂ છુ ૧

ગણધર ઈત્યાદિ—જેઓ ગણધરોના ગુણોને ધારણ કરનારા છે, સસારને પાર કરનારા છે જેઓ ભવ્યજનોના હિતકારક છે, સમ્યકત્વ રૂપી ગુણના બોધક છે, આ બધા વિકારોથી રહિત છે, એટલા માટે જ જેઓ ભવ્ય જીવોના

'तस्से' इत्यादि, तस्य खलु प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य एकोनविंशतिरध्ययनानि 'एगसरगाणि' एकस्वरकाणि=पदानोच्चारणानि=अ तराले उद्देशरहितानि एकोनविंशति दिवसेषु समाप्यन्ते ॥ सू० ७ ॥

मगलं भगवान् वीरः मगलं गौतमः प्रभुः ।
सुधर्मा मगलं, जम्बूर्जैनधर्मश्च मगलम् ॥ १ ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितकलापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छत्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराजगुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकर पूज्यश्री-घासीलालव्रतिविरचितायां 'ज्ञाताधर्मकथाङ्ग' सूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षिण्याख्यायां व्याख्यायां प्रथमश्रुतस्कन्ध समाप्तः ॥

इस कथन में मैंने अपनी तरफ से कोई भी कल्पना मिश्रित नहीं की है किन्तु प्रभु के मुख से जैसा मैंने इसे सुना है वैसा ही यह तुम से मैंने कहा है। "तस्से" इत्यादि इस प्रथम श्रुतस्कध के अन्तराल में उद्देश रहित १९ अध्ययन हैं। ये अध्ययन १९ दिनोंमें समाप्त होते हैं।

टीकार्थ — सासरिक समस्त जीवों के लिये यदि मगलकारी पदार्थ है-तो ये हैं भगवान् महावीर प्रभु गौतमगणधर, सुधर्मास्वामी, जबू स्वामी और जैनधर्म।

इस तरह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्रके प्रथम श्रुतस्कध सपूर्ण।

આ કથનમા મે મારા તરફથી કોઇપણ જાતની કલ્પના મિશ્રિત કરી નથી, પણ પ્રભુના મુખથી જેવુ મે સાભળ્યુ છે તેવુ જ મે કહ્યુ છે "तस्से" ઇત્યાદિ આ પ્રથમ શ્રુત-સ્કધના અતરાલમા ઉદ્દેશ રહિત ઓગણીસ અધ્યયનો છે આ અધ્યયનો ઓગણીસ દિવસોમા સમાપ્ત હોય છે

ટીકાર્થ —બધા સાસારિક જીવોના માટે જે મગળકારી પદાર્થો છે તો તે એજ છે-ભગવાન મહાવીર પ્રભુ, ગૌતમ ગણધર, સુધર્મા સ્વામી, જબૂ સ્વામી અને જૈન ધર્મ

"આ પ્રમાણે જ્ઞાતાધર્મ કથાગનો જ્ઞાતા-નામે પ્રથમ શ્રુતસ્કધ સમાપ્ત થયો"

नगारशतैः सार्द्धं सपरिवृताः 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया 'चरमाणा' चरन्त =विहरन्तः ग्रामानुग्राम एकग्रामादव्यवधानेनान्य ग्रामम् 'दूइज्जमाणा' द्रवन्तः=स्पृशन्त 'सुह सुहेण' सुख सुखेन=सुखपूर्वक यथावसरमित्यर्थः विहरन्तो यत्रैव राजगृह नगर यत्रैव गुणशिलक चैत्य यावत्–सयमेन तपसा आत्मान भावयन्तो विहरन्ति । अत्र आदरार्थे बहुवचनम् । परिषन्निर्गता । धर्मः कथितः । परिपद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिशं प्रतिगता । तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽनगारस्यान्तेवासी आर्य जम्बूर्नामान

इज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति) उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अतेवासी आर्य सुधर्मा नाम के स्थविर भगवत कि जो विशुद्ध मातृवशवाले थे विशुद्ध पितृवशवाले थे, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र एव लाघव सपन्न थे, चौदहपूर्व के पाठी थे–मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान एव मन पर्यव ज्ञान इन चारों ज्ञानों के धारक थे–पाचसौ अनगारों के साथ तीर्थंकर परपरा के अनुसार विहार करते २ एक ग्राम से दूसरे ग्राम में विना किसी व्यवधानके विचरण करते हुए सुख पूर्वक समय पर–जहा राजगृह नगर और उस में भी जहा वह गुणशिलक चैत्य था आये। वहा वे सयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए ठहरे (परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अते-

---

इज्जमाणा सुह सुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति)

ते काळे २ ने ते समये श्रमण भगवान महावीरना अतेवासी आर्य सुधर्मा नामना स्थविर भगवत के जेओ विशुद्ध मातृवशवाळा हता–विशुद्ध पितृवशवाळा हता, यावत् बळ, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने लाघव-सपन्न हता चौद पूर्वना पाठी हता, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान अने मन पर्यवज्ञान ए चारे ज्ञानोना धारक हता पाचसो अनगारोनी साथे तीर्थंकर परपरा मुजब विहार करता करता एक गामथी बीजे गाम कोइपण जातना व्यवधान वगर सुखेथी यथा समय ज्या राजगृह नगर अने तेमा पण ज्या ते गुणशिलक चैत्य हतु त्या आव्या त्या तेओ सयम अने तप द्वारा पोताना आत्माने भावित करता रोकाया

(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिस पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अतेवासी

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः-नगरवर्णन सर्वमत्र विज्ञेयम्। तस्य खलु राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणशिलकं नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णन प्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीर स्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाइसंपन्ना' जातिस म्पन्नाः=सुविशुद्धमातृवंशाः, कुलसम्पन्नाः=विशुद्धपितृवंशाः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्ना, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगता=मतिश्रुतावधिमनः पर्यवज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (रायगिहे नामं नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था। (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चंपा नगरी के समान जानना चाहिये। (तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णाम चेइए होत्था, वण्णओ) उस राज गृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था। यहां पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भग वतो जाइ संपन्ना कुल संपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगाम दूइ

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (रायगिहे नाम नयरे होत्था) રાજગૃહ નામે નગર હતું (वण्णओ) આ નગરનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં વર્ણવવામાં આવેલા ચંપા નગરીના વર્ણનની જેમ જ જાણી લેવું જોઈએ

(तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णाम चेइए होत्था, वण्णओ)

તે રાજગૃહ નગરની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્-ભાગની તરફ એટલે કે ઇશાન કોણમાં એક ગુણશિલક નામે ચૈત્ય-ઉદ્યાન-હતો. અહીં ચૈત્ય વિષેનું બધું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રની જેમ જાણવું જોઈએ

(तेण कालेण तेण समएण समणस्स भगवओ महावीरस्स अतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दस पुव्वी चउणाणो वगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगाम दूइ

नगारशतैः सार्द्धं सपरिवृताः 'पुव्वाणुपुव्विं' पूर्वानुपूर्व्या=तीर्थङ्करपरम्परया 'चरमाणा' चरन्त=विहरन्तः ग्रामानुग्राम एकग्रामादव्यवधानेनान्य ग्रामम् 'दूइज्जमाणा' द्रवन्तः=स्पृशन्त 'सुह सुहेण' सुख सुखेन=सुखपूर्वक यथावसरमित्यर्थः विहरन्तो यत्रैव राजगृह नगर यत्रैव गुणशिलक चैत्य यावत्-सयमेन तपसा आत्मान भावयन्तो विहरन्ति। अत्र आदरार्थे बहुवचनम्। परिषन्निर्गता। धर्मः कथितः। परिषद् यस्या एव दिशः प्रादुर्भूता तामेव दिश प्रतिगता। तस्मिन् काले तस्मिन् समये आर्यसुधर्मणोऽनगारस्यान्तेवासी आर्य जम्बूर्नामान

ज्जमाणा सुहसुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति) उस काल और उस समय में श्रमण भगवान महावीर के अतेवासी आर्य सुधर्मा नाम के स्थविर भगवत कि जो विशुद्ध मातृवशवाले थे विशुद्ध पितृवशवाले थे, यावत् बल, रूप, विनय, ज्ञान, दर्शन, चारित्र एव लाघव सपन्न थे, चौदहपूर्व के पाठी थे-मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान एव मन पर्यव ज्ञान इन चारों ज्ञानों के धारक थे-पाचसौ अनगारों के साथ तीर्थंकर परपरा के अनुसार विहार करते २ एक ग्राम से दूसरे ग्राम मे विना किसी व्यवधानके विचरण करते हुए सुख पूर्वक समय पर-जहां राजगृह नगर और उस में भी जहां वह गुणशिलक चैत्य था आये। वहा वे सयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए उतरे (परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अते-

ज्जमाणा सुह सुहेण विहरमाणा जेणेव रायगिहे णयरे जेणेव गुणसिलए चेइए जाव सजमेण तवसा अप्पाण भावेमाणा विहरति)

તે કાળે ને તે સમયે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના અતેવાસી આર્ય સુધર્મા નામના સ્થવિર ભગવત કે જેઓ વિશુદ્ધ માતૃવશવાળા હતા-વિશુદ્ધ પિતૃવશવાળા હતા, યાવત્ બળ, રૂપ, વિનય, જ્ઞાન, દર્શન, ચારિત્ર અને લાઘવ-સપન્ન હતા ચૌદ પૂર્વના પાઠી હતા, મતિજ્ઞાન, શ્રુતજ્ઞાન, અવધિજ્ઞાન અને મન પર્યવજ્ઞાન એ ચારે જ્ઞાનોના ધારક હતા પાચસો અનગારોની સાથે તીર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતા કરતા એક ગામથી બીજે ગામ કોઈપણ જાતના વ્યવધાન વગર સુખેથી યથા સમય જ્યા રાજગૃહ નગર અને તેમા પણ જ્યા તે ગુણશિલક ચૈત્ય હતુ ત્યા આવ્યા ત્યા તેઓ સયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રોકાયા

(परिसा निग्गया धम्मो कहिओ परिसा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तेण कालेण तेण समएण अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स अतेवासी

टीका—तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नाम नगरमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः-नगरवर्णनं सर्वमत्र विज्ञेयम्। तस्य खलु राजगृहस्य नगरस्य बहिरुत्तरपौरस्त्ये दिग्भागे तत्र खलु गुणशिलकं नाम चैत्यमासीत्, 'वण्णओ' वर्णकः=चैत्यवर्णनप्रकारः सर्वोऽत्र वाच्यः। तस्मिन् काले तस्मिन् समये श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यान्तेवासिन आर्यसुधर्माणो नाम स्थविरा भगवन्तः 'जाइसंपन्ना' जातिसम्पन्नाः=सुविशुद्धमातृवंशाः, कुलसम्पन्नाः=विशुद्धपितृवंशाः, 'जाव' यावत्-बल-रूप-विनय-ज्ञान-दर्शन-चारित्र-लाघव-सम्पन्नाः, इत्यादि यावत्-चतुर्दशपूर्विणः 'चउणाणोवगया' चतुर्ज्ञानोपगताः=मतिश्रुतावधिमनःपर्यवज्ञानयुक्ताः पञ्चभिर

टीकार्थ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) उस काल और उस समय में (रायगिहे नाम नयरे होत्था) राजगृह नाम का नगर था। (वण्णओ) नगर का वर्णन औपपातिक सूत्र में वर्णित चंपा नगरी के समान जानना चाहिये। (तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णामं चेइए होत्था, वण्णओ) उस राजगृह नगर के बाहिर उत्तर पौरस्त्यदिग्भाग की ओर (ईशानकोण में) एक गुणशिलक नाम का चैत्य-उद्यान-था। यहां पर भी सब चैत्यवर्णन औपपातिक सूत्र की तरह जानना चाहिये-(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवंतो जाइ संपन्ना कुल संपन्ना जाव चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइ

ટીકાર્થ—(तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે (रायगिहे नाम नयरे होत्था) રાજગૃહ નામે નગર હતું (वण्णओ) આ નગરનું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રમાં વર્ણવવામાં આવેલા ચંપા નગરીના વર્ણનની જેમ જ જાણી લેવું જોઈએ

(तस्स णं रायगिहस्स णयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसिभाए तत्थणं गुणसिलए णामं चेइए होत्था, वण्णओ)

તે રાજગૃહ નગરની બહાર ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્-ભાગની તરફ એટલે કે ઇશાન કોણમાં એક ગુણશિલક નામે ચૈત્ય-ઉદ્યાન-હતો. અહીં ચૈત્ય વિષેનું બધું વર્ણન ઔપપાતિક સૂત્રની જેમ જાણવું જોઈએ

(तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्ज सुहम्माणाम थेरा भगवंतो जाइसंपन्ना कुलसंपन्ना जाव चउद्दस पुव्वी चउणाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइ

श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथाना दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा तानेव दर्शयति-'चमरस्स' चमरस्य=चमरेन्द्रस्य दाक्षिणात्यासुरकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषीणां प्रथमो-वर्गः १। 'बलिस्स' बलिनाम्नः 'वइरोयणिंदस्स' वैरोचनेन्द्रस्य=वि=विविध प्रकारैः रोचन्ते=दीप्यन्ते दाक्षिणात्यासुरकुमारेभ्यो विशिष्टदीप्तिमत्त्वात् इति विरोचना, त एव वैरोचनाः=औदीच्यासुरकुमारास्तेपामिन्द्रः वैरोचनेन्द्रस्तस्य 'वइरोयणरन्नो' वैरोचनराजस्य=वैरोचनाधिपतेः अग्रमहिषीणा द्वितीयो वर्गः २। असुरेन्द्रवर्जिताना 'दाहिणिल्लाण' दाक्षिणात्याना=दक्षिणदिक्सम्बन्धिना भवनवासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणा तृतीयो वर्गः ३। 'उत्तरिल्लाण' उत्तरीयाणामसुरेन्द्रवर्जिताना भवनवासिनामिन्द्राणामग्रमहिषीणा चतुर्थो वर्गः ४। दाक्षिणात्याना वानव्यन्तराणामिन्द्राणामग्रमहिषीणा पञ्चमो वर्गः ५। उत्तरीयाणां वानव्यन्तराणामिन्द्राणामग्रमहिषीणा षष्ठो वर्गः ६। चन्द्रस्याग्रमहिषीणा सप्तमो वर्गः ७।

स्वामी ने उनसे कहा-हे जम्बू! सुनो-यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथाओं के दश वर्ग प्रज्ञप्त किये हैं-(तं जहा) वे इस प्रकार हैं-(चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमेवग्गे? बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीण बीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण इदाण अग्गमहिसीणं तइओ वग्गो ३ उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवणवासीण इदाण अग्गमहिसीण चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणमतराण-इदाण अग्गमहिसीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणमतराण इदाण अग्गमहिसीण छट्ठो वग्गो ६, चदस्स अग्गमहिसीण सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्गमहिसीण अट्ठमो वग्गो सक्कस्स अग्गमहिसीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्गमहिसीण दसमो वग्गो) चमरेन्द्र की-दाक्षिणात्य असुरकुमारेन्द्र की-

---

તેમને કહ્યું કે હે જમ્બૂ! સાભળો યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રગપ્ત કર્યા છે (तंजहा) તેઓ આ પ્રમાણે છે—

(चमरस्स अग्गमहिसीण पढमेवग्गे बलिस्स वइरोयणिंदस्स वइरोयणरन्नो अग्गमहिसीण बीओ वग्गो २ असुरिंदवज्जियाण दाहिणिल्लाण भवणवासीण इदाण अग्गमहिसीण तइओ वग्गो ३, उत्तरिल्लाण असुरिंदवज्जियाण भवणवासीण इदाण अग्गमहिसीण चउत्थो वग्गो ४ दाहिणिल्लाण वाणमतराण-इदाण अग्गमहिसीण पचमो वग्गो, उत्तरिल्लाण वाणमतराण इदाण अग्गमहिसीण छट्ठो वग्गो ६, चदस्स अग्गमहिसीण सत्तमो वग्गो, सूरस्स अग्गमहिसीण अट्ठमो वग्गो, सक्कस्स अग्गमहिसीण णवमो वग्गो, ईसाणस्स अग्गमहिसीण दसमो वग्गो)

गार. यावत्-'पज्जुवासमाणे' पर्युपासीनः=सेवमान. एवमवदत्-यदि खलु 'भंते' भदन्त=हे भगवन्! श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत्-मोक्ष सम्प्राप्तेन षष्ठस्याङ्गस्य प्रथमस्य श्रुतस्कन्धस्य 'णायाणं' ज्ञातानाम्=उदाहरणानाम् अयमर्थ प्रज्ञप्तः द्वितीयस्य खलु हे भदन्त! श्रुतस्कन्धस्य धर्मकथानां श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन=मोक्ष गतेन भगवता कोऽर्थः प्रज्ञप्तः? । सुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बू!

वासी अज्ज जम्बूणाम अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-जइणं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स णायाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता) राजगृह नगर से परिषद वदन करने के लिये आई। सुधर्मास्वामी धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर परिषद् अपने २ स्थान पर पीछे वहां से चली गई। उस काल में और उस समय में आर्य सुधर्मास्वामी के अंतेवासी आर्य जम्बू नामके अनगार ने यावत् उनकी पर्युपासना करते हुए उनसे इस प्रकार पूछा हे भदत! यावत् मुक्तिको प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीरने छठे अगके ज्ञातासूत्र प्रथम श्रुतस्कध के उदाहरणोका यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है-तो हे भदत! द्वितीय श्रुतस्कन्धकी धर्मकथाओं का उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं क्या अर्थ निरूपित किया है? इस प्रकार जम्बू के प्रश्न को सुनकर श्री सुधर्मा

अज्जजंबू णाम अणगारे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी-जइणं भंते समणेणं जाव संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स णायाणं अयमट्ठे पन्नत्ते दोच्चस्स णं भंते! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता)

રાજગૃહ નગરથી પરિષદ વદન કરવા માટે ત્યાં આવી સુધર્મા સ્વામીએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને પરિષદ પોતાના સ્થાને પાછી જતી રહી તે કાળે અને તે સમયે આર્ય સુધર્મા સ્વામીના અંતેવાસી (શિષ્ય) આર્ય જંબૂ નામના અનગારે યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરતા તેમને આ પ્રમાણે પૂછ્યું કે હે ભદન્ત! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે છઠ્ઠા અંગના પ્રથમ શ્રુતસ્કંધના ઉદાહરણોને આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેમણે મુક્તિસ્થાનને મેળવી લીધું છે-દ્વિતીય શ્રુતસ્કંધની ધર્મકથાઓનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જંબૂના પ્રશ્નને સાંભળીને શ્રી

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं काली नाम देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहि सामाणियसाहस्सीहिं चउहि महत्तरियाहि सपरिवाराहि तिहि परिसाहि सत्तहि अणिएहि सत्तहिं अणियाहिवईहि सोलसहि आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि बहुएहि य कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहि देवीहि य सद्धिं संपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचइ अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

सूरस्य=सूर्यस्याग्रमहिषीणामष्टमो वर्गः ८। शक्रस्याग्रमहिषीणां नवमो वर्गः ९। ईशानस्याग्रमहिषीणां दशमो वर्गः १० ॥ सू० १ ॥

मूलम्–जइ णं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पन्नत्ते ?, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा–काली

अग्रमहिषियों का–पट्टदेवियों का–प्रथम वर्ग, बलि नामक वैरोचनेन्द्र की अग्रमहिषियोंका द्वितीय वर्ग, असुरेन्द्रको छोडकर दक्षिण दिशा संबंधी भवनवासियों के इन्द्रों की अग्रमहिषियों का तृतीय वर्ग, उत्तर दिशा संबंधी भवनवासियों के इन्द्रों की कि जिन में असुरेन्द्र छोड दिये गये हैं अग्रमहिषियों का ४ चतुर्थ वर्ग, दक्षिण दिशा संबंधी वानव्यन्तरों के इन्द्रों की अग्रमहिषियोंका पंचम वर्ग, उत्तर दिशा संबंधी व्यानव्यतरोंके इन्द्रो की अग्रमहिषियों का छट्ठा वर्ग, चन्द्र की अग्रमहिषियों का ७ वां वर्ग, सूर्यकी अग्रमहिषियोंका आठवां वर्ग, शक्र की अग्रमहिषियों का नवमां वर्ग, और ईशानकी अग्रमहिषियों का दशमां वर्ग। वैरोचन उत्तर दिशाके असुरकुमार हैं। ये दक्षिण दिशासंबंधी असुरकुमारोंकी अपेक्षा विशिष्ट दीप्तिसंपन्न होते हैं इसलिये इन्हें वैरोचन कहा गया है॥सू०१॥

ચમરેન્દ્રની–દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની–અગ્રમહિષીઓનો–પટ્ટદેવીઓનો પહેલો વર્ગ, બલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનો બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને બાદ કરતા દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો ત્રીજો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાથી અસુરેન્દ્રોને બાદ કરી દીધા છે અગ્રમહિષીઓનો ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સંબંધી વાનવ્યંતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો પાંચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી વાનવ્યંતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓનો આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહીષીઓનો નવમો વર્ગ અને ઇશાનની અગ્રમહિષીઓનો દશમો વર્ગ વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા સંબંધી અસુરકુમારો કરતા વિશિષ્ટ દીપ્તિ–સંપન્ન હોય છે એથી જ એ વૈરોચન કહેવામાં આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

राईरयणी विज्जू मेहा, जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते?, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं काली नामं देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहिं य कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महया हय जाव विहरइ, इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी२ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ ओमुइत्ता तित्थगराभिमुहा सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचइ अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता ईसिं

सूरस्स=सूर्यस्याग्रमहिषीणामष्टमो वर्गः ८। शक्रस्याग्रमहिषीणां नवमो वर्गः ९। ईशानस्याग्रमहिषीणां दशमो वर्गः १० ॥ सू० १ ॥

मूलम्--जइ णं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पन्नत्ते?, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा-काली

अग्रमहिषियों का-पट्टदेवियों का-प्रथम वर्ग, बलि नामक वैरोचनेन्द्र की अग्रमहिषियों का द्वितीय वर्ग, असुरेन्द्र को छोडकर दक्षिण दिशा संबंधी भवनवासियों के इन्द्रों की अग्रमहिषियों का तृतीय वर्ग, उत्तर दिशा संबंधी भवनवासियों के इन्द्रों की कि जिन में असुरेन्द्र छोड दिये गये हैं अग्रमहिषियों का ४ चतुर्थ वर्ग, दक्षिण दिशा संबंधी वानव्यन्तरों के इन्द्रों की अग्रमहिषियों का पंचम वर्ग, उत्तर दिशा संबंधी व्यानव्यंतरोंके इन्द्रों की अग्रमहिषियों का छट्ठा वर्ग, चन्द्र की अग्रमहिषियों का ७ वा वर्ग, सूर्यको अग्रमहिषियोंका आठवा वर्ग, शक्र की अग्रमहिषियों का नवमां वर्ग, और ईशानकी अग्रमहिषियों का दशमां वर्ग। वैरोचन उत्तर दिशाके असुरकुमार हैं। ये दक्षिण दिशासंबंधी असुरकुमारोंकी अपेक्षा विशिष्ट दीप्तिसंपन्न होते हैं इसलिये इन्हें वैरोचन कहा गया है॥सू०१॥

ચમરેન્દ્રની-દક્ષિણના અસુરકુમારેન્દ્રની-અગ્રમહિષીઓનો-પટ્ટદેવીઓનો પહેલો વર્ગ, બલિ નામે વૈરોચનેન્દ્રની અગ્રમહિષીઓનો બીજો વર્ગ, અસુરેન્દ્રને બાદ કરતાં દક્ષિણ દિશાના ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો ત્રીજો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી ભવનવાસીઓના ઇન્દ્રોની કે જેઓમાંથી અસુરેન્દ્રોને બાદ કરી દીધા છે અગ્રમહિષીઓનો ચોથો વર્ગ, દક્ષિણ દિશા સંબંધી વાનવ્યંતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો પાંચમો વર્ગ, ઉત્તર દિશા સંબંધી વાનવ્યંતરોના ઇન્દ્રોની અગ્રમહિષીઓનો સાતમો વર્ગ, સૂર્યની અગ્રમહિષીઓનો આઠમો વર્ગ, શક્રની અગ્રમહિષીઓનો નવમો વર્ગ અને ઇશાનની અગ્રમહિષીઓનો દશમો વર્ગ વૈરોચન ઉત્તર દિશાના અસુરકુમાર છે એ દક્ષિણ દિશા સંબંધી અસુરકુમારો કરતાં વિશિષ્ટ દીપ્તિ-સંપન્ન હોય છે એથી જ એ વૈરોચન કહેવામાં આવ્યા છે ॥ સૂત્ર ૧ ॥

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५। जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत्। सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है? (एवं खलु जंबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે?

(एवं खलु जंबू समणेण जाव सपत्तेग पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते! समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते, अज्झयणस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते! एवं खलु जंबू! तेण कालेण तेण समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयंत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयणसहस्सविच्छिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइणं भंते' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु 'भंते' भदन्त !=हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

---

-:जइणं भंते ! इत्यादि ।

टीकार्थ —(जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स) जंबूस्वामी श्री

जइणं भंते ! इत्यादि—

(जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबु ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५। जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत्। सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदन्त ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदन्त ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स क अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेग पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता। पढणस्स ण भंते, अज्झयण स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेग तेण समएग रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयण सहस्सविच्छिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइणं भंते' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु 'भंते' भदन्त!=हे भगवन्! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः

-:जइण भंते! इत्यादि।

टीकार्थः—(जइण भंते! समणेण जाव संपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भंते! वग्गस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स) जंबूस्वामी श्री

जइण भंते! इत्यादि—

(जइण भंते! समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह–एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५। जम्बूस्वामी पृच्छति–यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरं गुणशिलकं चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेलना देवी आसीत्। सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइणं) यदि (समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (णं भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष मे विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एवं खलु जंबू समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–काली राई रयणी विज्जू मेहा जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइणं) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (णं भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂક્યા છે–પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–काली राई रयणी विज्जू मेहा जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते, अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी-णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंत तत्थगयं इह गया पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था -सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयण सहस्सविच्छिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइणं भंते' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु 'भंते' भदन्त!=हे भगवन्! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

---

-जइणं भंते! इत्यादि।

टीकार्थ —(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स) जंबूस्वामी श्री

जइणं भंते! इत्यादि—

(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह–एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५। जम्बूस्वामी पृच्छति–यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ?। सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेलना देवी आसीत्। सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण) यदि (समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एवं खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–काली राई रयणी विज्जू मेहा जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમાં વિરાજમાન થઇ ચૂક્યા છે–પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता। पढणस्स णं भंते, अज्झयण स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे [illegible]सिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी–णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयंत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था –सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयण सहस्सविच्छिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका–'जइणं भंते' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु 'भंते' भदन्त!=हे भगवन्! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

---

–ःजइणं भंते! इत्यादि।

टीकार्थ–(जइणं भंते! समणेण जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स) जंबूस्वामी श्री

जइणं भंते! इत्यादि–

(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबु! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, राजि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५। जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेलना देवी आसीत्। सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण) यदि (समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि-जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एवं खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમાં વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता। पढमस्स णं भंते, अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी–णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयंत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था –सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयणसहस्सवित्थिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका–'जइणं भंते' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु 'भंते' भदन्त!=हे भगवन्! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

---

–'जइणं भंते! इत्यादि।

टीकार्थ–(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स) जंबूस्वामी श्री

जइणं भंते! इत्यादि–

(जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति-यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते ह कि (भंते) हे भदत ! (जइण) यदि (समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भते) हे भदत ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्ही श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स ण भते अज्झयणस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! तेणं कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમા વિરાજમાન થઇ ચૂકયા છે-પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एव खलु जबू समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स णं भते, अज्झयण स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी—णमोऽत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था —सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवरं जोयण सहस्सवित्थिण्णं जाणविमाणं सेसं तहेव, तहेव णामगोयं साहेइ तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइणं भंते' इत्यादि। जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु 'भंते' भदन्त !=हे भगवन्! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

---

—:जइण भंते! इत्यादि।

टीकार्थ—(जइण भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स) जंबूस्वामी श्री

जइण भंते! इत्यादि—

(जइण भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स०)

प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मास्वामीप्राह–एवं खलु हे जम्बू ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, मेघा ५ । जम्बूस्वामी पृच्छति–यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य पञ्च अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तत्र प्रथमस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मा स्वामी कथयति—

एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगर गुणशिलक चैत्यम्, श्रेणिको राजा, चेल्लना देवी आसीत् । सामी=स्वामी श्रीमहावीरस्वामी

सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण) यदि (समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्तिस्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथा के दश वर्ग प्ररूपित किये हैं तो (ण भंते) हे भदंत ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) उन्हीं श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मोक्ष में विराजमान हो चुके हैं प्रथम वर्ग का क्या अर्थ प्रज्ञप्त किया है ? (एवं खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–काली राई रयणी विज्जू मेहा जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता पढमस्स णं भंते अज्झयणस्स समणेण जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणादेवी) इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न को सुनकर सुधर्मास्वामी ने

જમ્બૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण) જો (समणेणं जाव संपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધું છે ધર્મકથાઓના દશ વર્ગો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો (ण भंते) હે ભદન્ત ! (समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स के अट्ठे पन्नत्ते) તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે કે જેઓ મોક્ષમાં વિરાજમાન થઈ ચૂકયા છે–પહેલા વર્ગનો શો અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે ?

(एवं खलु जंबू समणेण जाव संपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–काली राई रयणी विज्जू मेहा जइण भंते ! समणेण जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता । पढमस्स णं भंते, अज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सेणिए राया चेल्लणा देवी)

पच्चुणमइ पच्चुणमित्ता कडयतुडियथंभियाओ भुयाओ साहरइ साहरित्ता करयल जाव कट्टु एवं वयासी–णमोऽत्थुणं अरहताणं जाव सपत्ताणं नमोऽत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव सपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंत तत्थगयं इह गया पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयत्तिकट्टु वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा, तएणं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था –सेयं खलु मे समणं भगवं महावीर वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तएत्तिकट्टु एव संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगव महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह करित्ता जाव पच्चप्पिणह, तेवि तहेव करेत्ता जाव पच्चप्पिणंति, णवर जोयण सहस्सविच्छिण्णं जाणविमाण सेस तहेव, तहेव णामगोय साहेइ तहेव नट्टविहि उवदंसेइ जाव पडिगया ॥ सू० २ ॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु 'भते' भदन्त !=हे भगवन् ! श्रमणेन यावत्संप्राप्तेन धर्मकथानां दशवर्गाः प्रज्ञप्ताः,

---

–:जइण भते ! इत्यादि ।

टीकार्थ—(जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेणं धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स ण भते ! वग्गस्स समणेण जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स) जबूस्वामी श्री

जइण भते ! इत्यादि—

(जइण भते ! समणेणं जाव सपत्तेण धम्मकहाण दसवग्गा पण्णत्ता पढमस्स णं भते ! वग्गस्स समणेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ! समणेण जाव सपत्तेण पढमस्स०)

'समोसरिए' समवसृतः समागतवान्। 'परिसा'-परिषद्=राजगृहनगर वास्तव्यो जनसमूह 'णिग्गया' निर्गता=भगवद्वन्दनार्थं स्व स्वस्थानान्निस्सृता, भगवता धर्मकथा कथिता यावद् परिषद् भगवन्त 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते= सेवते, तस्मिन् काले तस्मिन समये काली नाम देवी चमरचञ्चाया राजधान्यां

उन्हें उत्तर देने के अभिप्राय से कहा कि (एवं खलु जंबू!) हे जंबू! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है सुनो यावत सप्राप्त श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के पाच अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं वे ये हैं- काली १, रात्रि २, रजनी ३, विद्युत् ४, और मेघा ५। अब पुनः जंबू स्वामी प्रश्न करते हैं कि हे भदन्त! यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के पाच अध्ययन निरूपित किये हैं तो मै आपसे पूछता हू कि भदंत यावत् मोक्ष को सप्राप्त उन्हीं श्रमण भगवान् महावीरने प्रथम अध्ययनका क्या अर्थ निरूपित किया है? इसका उत्तर उन्हें सुधर्मास्वामी इस प्रकार देते हैं-हे जंबू! उस काल और उस समय में राजगृह नामकी नगरी थी-उस में गुणशिलक नाम का उद्यान था-नगरी के राजा का नाम श्रेणिक था। उसकी रानी का नाम चेल्लना था। (सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ-तेण कालेणं तेणं समएणं काली नाम देवी, चमरचचाए रायहाणीए

આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામી । પ્રશ્નને સાભળીને તેમને ઉત્તર આપવાના ઉદ્દેશથી શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યુ કે (एवं खलु जंबू!) હે જબૂ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે સાભળો, યાવત્ સપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે તેઓ આ પ્રમાણે છે—૧ કાલી, ૨ રાત્રિ, ૩ રજની, ૪ વિદ્યુત, અને ૫ મેઘા

હવે ફરી જબૂ સ્વામી પ્રશ્ન કરે છે કે હે ભદન્ત! યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો નિરૂપિત કર્યા છે તો હુ તમને ફરી પૂછવા માગુ છુ કે હે ભદન્ત! યાવત્ મોક્ષને પ્રાપ્ત કરી ચુકેલા તેજ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે? શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેને ઉત્તર આપતા કહેવા લાગ્યા કે જબૂ! તે કાળે અને તે વખતે રાજગૃહ નામે એક નગરી હતી તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું નગરીના રાજાનુ નામ શ્રેણિક હતુ તેની રાણીનુ નામ ચેલના હતું

(सामी समोसरिए परिसा णिग्गया जाव परिसा पज्जुवासइ-तेण कालेणं तेणं समएणं काली नाम देवी, चमर चचाए रायहाणीए

'कालवडिंसगभवणे' कालावतंसकभवने काले=कालाख्ये सिंहासने चतसृभिः सामानिकसाहस्रीभिः, चतसृभिर्महत्तरिकाभिः, सपरिवाराभिस्तिसृभिः=बाह्याभ्यन्तरमध्यरूपाभिः 'परिसाहिं' परिषद्भिः पारिवारिकदेवीरूपाभिः, सप्तभिः 'अणिएहिं' अनीकैः=हयगजरथपदातिवृषभगन्धर्वनाटयरूपैः, अत्रायं विवेकः-

कालवडिंसगभवणे कालंसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहिं कालवडिंसगभवणवासिहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ) वहां पर श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ। लोगों को जब इनके आगमन की खबर लगी-तब समस्त राजगृह निवासी जन इन का वंदना करने के अभिप्राय से गुणशिलक उद्यान में आये। भगवान् ने धर्मकथा कही-यावत् परिषद्ने भगवान् की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय मे काली नाम की देवी चमरचंपा नाम की राजधानी में रहती थी। उसके भवन का नाम कालावतंसक था। जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम काल था। यह उस भवन में चार हजार सामानिकों की परिषदा के साथ, चार हजार महत्तरिकाओं के साथ, अपने २ परिवारवाली तीन हजार पारिवारिक देवियों के साथ, सात अनीकों के-हय, गज, रथ, पदाति, वृषभ, गधर्व एव नाटयरूप सैन्य के-

कालंसि, सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महत्तरियाहिं, सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहिं बहुएहिं कालवडिंसयभवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहिं य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय जाव विहरइ)

ત્યા શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ જ્યારે લોકોને તેમના આગમનની જાણ થઈ ત્યારે રાજગૃહના બધા લોકો તેમને વદન કરવાના અભિપ્રાયથી ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા ભગવાને ધર્મકથા કહી સભળાવી યાવત્ પરિષદે ભગવાનની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે કાળી નામની દેવી ચમરચચા નામની રાજધાનીમા રહેતી હતી તેના ભવનનું નામ કાલાવતસક હતુ જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનુ નામ કાળ હતું તે ભવનમા તે ચાર હજાર સામાનિકોની પરિષદાની સાથે, ચાર હજાર મહત્તરિકાઓની સાથે, પોતપોતાના પરિવારવાળી ત્રણ હજાર પારિવારિક દેવીઓની સાથે સાત અનીકો-ઘોડા, હાથી, રથ, પાયદળ, વૃષભ, ગંધર્વ અને નાટય

आधपञ्चशतानि सन्दर्भाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपभोगायेति, सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षदेवसहस्रैः, अन्यैर्बहुभिश्च कालावतसकभवनवासिभिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृता ' महयाहय जाव विहरइ ' महताऽहत यावद् विहरति-' महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं ' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतल ताल त्रुटित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण, तत्र-' महता ' रवेणेतिसम्बन्धः, आहतानि=अव्याहतानि यानि नाट्यगीतानि, तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तला =हस्ततालाः, तालाः=कांस्यतालाः, त्रुटितानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिसादृश्याद् घनमृदङ्गः=स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषां यो रवस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति । ' इमं च णं' अस्मिन्नवसरे खलु केवलकल्पं=सपूर्णम् जम्बूद्वीपं नाम द्वीपं=म-पजम्बूद्वीप विपुलेन ' ओहिणा ' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएमाणी २' आभोगयमाना २ पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोगं ददती सती पश्यति। किं पश्यति ? इत्याह-'तत्थ' तत्र= अवधिज्ञानोपयोगे श्रमणं भगवन्तं महावीरं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ, तथा और भी बहुत से कालावतसक भवन में निवास करनेवाले असुरकुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी। अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कांस्य ताल, त्रुटित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह बजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी। (इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबू दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे

રૂપ સૈન્યની સાથે અનીકાધિપતિઓની સાથે, સોળ હજાર આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનોમાં નિવાસ કરનારા અસુર કુમારદેવો અને દેવીઓની સાથે પરિવૃત થઈને રહેતી હતી તે અવ્યાહત (સતત) નાટ્ય ગીતો વાદિત તંત્રી, હસ્તતાલ, કાસ્યતાલ, ત્રુટિત વગેરે તૂર્ય વગેરે વાદ્યો, મેઘના ધ્વનિની જેમ સારી પેઠે વગાડવામાં આવેલા મૃદંગોના સુંદર શબ્દોથી ઉપલક્ષિત દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતી પોતાના સમયને સુખેથી પસાર કરતી રહેતી હતી

(इमं च णं केवलकप्पं जंबुदीवं दीवे विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणंभगवं महावीरं जंबुदीवे दीवे भारहे वासे

नगरे गुणशिलके चैत्ये यथाप्रतिरूप=यथाकल्पम् ' उग्गह ' अवग्रह=वसतेराज्ञाम् ' उग्गिण्हित्ता ' अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्तं पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट तुष्टचित्तानन्दिता ' पीइमणा ' प्रीतिमनाः=प्रसन्नमनस्काः ' जावहियया ' यावत्-हर्षवशविसर्पद्हृदया=हर्षवशादुल्लसितहृदया सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

णयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ, निवेसित्ता कट्टु एवं वयासी) इस अवसर में उसने केवल कल्प-सम्पूर्ण-जम्बूद्वीप नामके द्वीपको-मध्यजम्बूद्वीप को-विपुल अवधिज्ञान के द्वारा बार २ उपयोग देकर देखा-। उस समय उसने श्रमण भगवान् महावीर को जंबूद्वीपान्तर्गत भरत क्षेत्र में राजगृह नगर मे गुणशिलक चैत्य में यथाकल्प वसति की आज्ञा लेकर संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए स्थित देखा। देखकर वह बहुत अधिक हृष्ट एवं तुष्ट हुई । उसका मन प्रीति से भर आया। हर्ष के वश से हृदय उल्लसित हो उठा । वह उसी समय अपने सिंहासन

गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ चित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, वामं-जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तोमुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता कट्टु एवं वयासी)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સંપૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મધ્ય જંબૂદ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો. તે સમયે તેણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને જંબૂદ્વીપમાં આવેલા ભરતક્ષેત્રના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ચૈત્યમાં યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સંયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા. જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ ગઈ. તેનું મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયું. હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ ગયું. તે તેજ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ

आधिपत्यानि सप्तभिरनीकैः, तत्र नाट्ये पुनरुपभोगायेति, सप्तभिरनीकाधिपतिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षकदेवसाहस्रीभिः, अन्यैश्च बहुभिश्च कालावतंसकभवनवासिभिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च सार्द्धं संपरिवृता 'महयाहय जाव विहरइ' महताऽऽहत यावद् विहरति-'महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतल ताल त्रुटित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण, तत्र-'महता' रवेणेति सम्बन्धः, आहतानि=अव्याहतानि यानि नाट्यगीतानि, तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तला=हस्ततालाः, तालाः=कांस्यतालाः, त्रुटितानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिसादृश्याद् घनमृदङ्गः= स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषां यो रवस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति। 'इमं च णं' अस्मिन्नवसरे खलु केवलकल्पं=संपूर्णम् जम्बूद्वीपं नाम द्वीपं=मध्यजम्बूद्वीपं विपुलेन 'ओहिणा' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएमाणी २' आभोगयमाना २ पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोगं ददती सती पश्यति। किं पश्यति ? इत्याह-'तत्थ' तत्र= अवधिज्ञानोपयोगे श्रमणं भगवन्तं महावीरं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ, तथा और भी बहुत से कालावतंसक भवन में निवास करनेवाले असुरकुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी। अव्याहत (सतत) नाट्यगीतों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कांस्य ताल, त्रुटित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह बजाये गये मृदंगो के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगो को भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी। (इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबू दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे

રૂપ સૈન્યની સાથે અનીકાધિપતિઓની સાથે, સોળ હજાર આત્મરક્ષક દેવોની સાથે તેમજ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનોમાં નિવાસ કરનારા અસુર કુમારદેવો અને દેવીઓની સાથે પરિવૃત થઈને રહેતી હતી તે અવ્યાહત (સતત) નાટ્ય ગીતો, વાદિત તંત્રી, હસ્તતાલ, કાસ્યતાલ, ત્રુટિત વગેરે તૂર્ય વગેરે વાદ્યો, મેઘના ધ્વનિની જેમ સારી પેઠે વગાડવામાં આવેલા મૃદંગોના સુંદર શબ્દોથી ઉપલક્ષિત દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતી પોતાના સમયને સુખેથી પસાર કરતી રહેતી હતી

(इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २ पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे ... नयरे

नगरे गुणशिलके चैत्ये यथाप्रतिरूप=यथाकल्पम् ' उग्गहं ' अवग्रहं=वसतेराज्ञाम् ' उग्गिण्हित्ता ' अवगृह्य संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्तं पश्यति, दृष्ट्वा हृष्ट तुष्टचित्तानन्दिता ' पीइमणा ' प्रीतिमनाः=प्रसन्नमनस्काः ' जावहियया ' यावत्-हर्षवशविसर्पद्हृदया=हर्षवशादुल्लसितहृदया सिंहासनाद् अभ्युत्तिष्ठति, अभ्युत्थाय

णयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ, निवेसित्ता कट्टु एवं वयासी) इस अवसर में उसने केवल कल्प-संपूर्ण-जंबूद्वीप नामके द्वीपको-मध्यजंबूद्वीप को-विपुल अवधिज्ञान के द्वारा बार २ उपयोग देकर देखा-। उस समय उसने श्रमण भगवान् महावीर को जंबूद्वीपान्तर्गत भरत क्षेत्र में राजगृह नगर में गुणशिलक चैत्य में यथाकल्प वसति की आज्ञा लेकर संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए स्थित देखा। देखकर वह बहुत अधिक हृष्ट एवं तुष्ट हुई । उसका मन प्रीति से भर आया। हर्ष के वश से हृदय उल्लसित हो उठा । वह उसी समय अपने सिंहासन

गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ चित्तमाणंदिया पीइमणा जाव हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता, वामं जाणुं अंचेइ, अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तोमुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ निवेसित्ता कट्टु एवं वयासी)

તે સમયે તેણે કેવલકલ્પ-સંપૂર્ણ-જંબૂદ્વીપ નામના દ્વીપને મધ્ય જંબૂદ્વીપને વિપુલ અવધિજ્ઞાનના ઉપયોગથી વારવાર જોયો. તે સમયે તેણે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને જંબૂદ્વીપમાં આવેલા ભરતક્ષેત્રના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ચૈત્યમાં યથાકલ્પ વસતીની આજ્ઞા લઈને સંયમ અને તપ દ્વારા પોતાના આત્માને ભાવિત કરતા રહેતા જોયા. જોઈને તે ખૂબ જ હૃષ્ટ અને તુષ્ટ થઈ ગઈ. તેનું મન પ્રેમથી તરબોળ થઈ ગયું. હર્ષાતિરેકથી હૃદય ઉલ્લાસિત થઈ ગયું. તે તેજ વખતે પોતાના સિંહાસન ઉપરથી ઉઠી અને ઉઠીને તે પાદપીઠ

आग्रपञ्चशतानि सहस्रमाय, गन्धर्वनाट्ये पुनरुपभोगायेति, सप्तभिरनीकाधिप-
तिभिः, षोडशभिः आत्मरक्षदेवसहस्रैभिः, अन्यैर्बहुभिश्च कालावतंसक भवनवासि-
भिरसुरकुमारैर्देवैर्देवीभिश्च सार्द्धं सपरिवृता ' महयाहय जाव विहरइ ' महताऽऽहत
यावद् विहरति-' महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयर
वेण ' महताऽऽहतनाट्यगीतवादित तन्त्रीतलताल त्रुटित घनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण,
तत्र-' महता ' रवेणेतिसम्बन्धः, आहतानि=अव्याहतानि यानि नाट्यगीतानि,
तथा-वादितानि-तन्त्री=वीणा, तला=हस्ततालाः, तालाः=कांस्यतालाः, त्रुटि
तानि=शेषाणि तूर्यादिवाद्यानि, तथा घन इव मृदङ्गः=घनध्वनिसादृश्याद् घनमृदङ्गः=
स चासौ पटु प्रवादितश्चेति घनमृदङ्गपटुप्रवादितः, ततस्त्रिपदो द्वन्द्वः, तेषां यो
रवस्तेन-उपलक्षितान् दिव्यान् भोगभोगान् शब्दादीन् भुञ्जाना विहरति । ' इमं
च णं' अस्मिन्नवसरे खलु केवलकल्पं=सम्पूर्णम् जम्बूद्वीपं नाम द्वीपं=मध्यजम्बूद्वीपं
विपुलेन ' ओहिणा ' अवधिना=अवधिज्ञानेन 'आभोएमाणी २' आभोगयमाना २
पश्यन्ति पुनः पुनरुपयोगं ददती सती पश्यति । किं पश्यति ? इत्याह-'तत्थ' तत्र=
अवधिज्ञानोपयोगे श्रमणं भगवन्तं महावीरं जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे राजगृहे

साथ अनीकाधिपतियों के साथ, सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के साथ,
तथा और भी बहुत से कालावतंसक भवन में निवास करनेवाले असु-
रकुमार देवों के एवं देवियों के साथ परिवृत होकर रहा करती थी।
अव्याहत (सतत) नाटयगीतों के एवं वादित तन्त्री, हस्त, ताल, कांस्य ताल,
त्रुटित आदि तूर्यादिवाद्यों के एवं मेघ की ध्वनि जैसे अच्छी तरह
बजाये गये मृदंगों के सुन्दर २ शब्दों से उपलक्षित दिव्य भोगों को
भोगती हुई अपने समय को आनन्द के साथ व्यतीत किया करती थी।
(इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २
पासइ, तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबू दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे

રૂપ સૈન્યની સાથે અનીકાધિપતિઓની સાથે, સોળ હજાર આત્મરક્ષક દેવોની
સાથે તેમજ બીજા પણ ઘણા કાલાવતંસક ભવનોમાં નિવાસ કરનારા અસુર
કુમારદેવો અને દેવીઓની સાથે પરિવૃત થઈને રહેતી હતી તે અવ્યાહત
(સતત) નાટ્ય ગીતો, વાદિત તંત્રી, હસ્તતાલ, કાસ્યતાલ, ત્રુટિત વગેરે તૂર્ય વગેરે
વાદ્યો, મેઘના ધ્વનિની જેમ સારી પેઠે વગાડવામાં આવેલા મૃદંગોના સુંદર
શબ્દોથી ઉપલક્ષિત દિવ્ય ભોગોનો ઉપભોગ કરતી પોતાના સમયને સુખેથી
પસાર કરતી રહેતી હતી

(इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी २
पासइ, तत्थ समणंभगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे ... नयरे

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तुकामाय, वन्दे खलु भगवन्त 'तत्थगय' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको द्याने समवसृतम् 'इहगया' इहगता=चमरचञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु मा भगवान् तत्रगत इहगतम्, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे 'पुरत्थाभिमुही' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभिमुखी 'निसण्णा' निषण्णा=उपविष्टा। ततः खलु तस्या काल्या देव्या अयमेत-

जाव संपाविउकामस्स वदामि ण भगवत तत्थ गय इह गया पासउ मे भगव तत्थ गए इह गय त्तिकट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हंत भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो। सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान महावीर को मैं नमस्कार करती हूँ। जबूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में इस समय विराजमान उन भगवान को मैं इस चमर चचा नाम की राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ। वहा पर रहे हुए वे प्रभु मुझे यहा पर रही हुई देखे। इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की -नमस्कार किया-वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहासन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके बैठ गई। इसके बाद उस काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ-(सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा-तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

યાવત્ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલા અર્હંત ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવાની કામનાવાળા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને હુ નમસ્કાર કરૂ છુ જબૂ દ્વીપના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમા અત્યારે વિરાજમાન તે ભગવાનને હુ આ ચમરચચા નામની રાજધાનીમા રહેતી નમસ્કાર કરી રહી છુ ત્યા વિરાજમાન તે પ્રભુ અહીં રહેતી મને જુએ આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેમને વદન કર્યા અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તે પોતાના ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર આવીને પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને બેસી ગઈ ત્યારપછી તે કાળી દેવીને આ જાતનો યાવત્ મન સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

पादपीठात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य 'पाउयाओ' पादुके 'ओमुयइ' अवमुञ्चति=त्यजति, मुक्त्वा तीर्थंकराभिमुखी सतीसप्ताष्टपदानि 'अणुगच्छइ' अनुगच्छति=अभिमुखं गच्छति, अनुगम्य वाम जानुं 'अचेइ' अञ्चति=ऊर्ध्वीकरोति, अञ्चित्वा=ऊर्ध्वीकृत्य दक्षिण जानु धरणितले 'निहट्टु' निहत्य=स्थापयित्वा 'तिक्खुत्तो' त्रिः कृत्व=त्रिवारम् 'मुद्धाणं' मूर्धानं=मस्तकं धरणितले निवेशयति=लगयति, निवेश्य ईसिं पच्चुण्णमइ' ईषत्प्रत्युन्नमति=स्तोक शिरोनामयति, प्रत्युन्नम्य 'कडगतुडियथंभियाओ' कटकत्रुटितस्तम्भिते कटके=करभूषणे त्रुटिते=बाहुभूषणे तैः स्तम्भिते=अवष्टब्धे 'भुयाओ' भुजे 'साहरइ' संहरति=एकत्रीकरोति, संहृत्य 'करयल जाव कट्टु' करतलपरिगृहीत शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-'नमोत्थुणं' इत्यादि-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावद् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह तीर्थंकराधिष्ठित दिशा की ओर सात आठ पद आगे गई। वहा आकर उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु को नीचे धरणीतल मे रखा-रखकर फिर तीन बार अपने मस्तक को नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-नवाया। बाद में कटक और त्रुटित से भूषित भुजाओं को एकत्रित किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अजलि बनाई-और उसे मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोत्थुणं अरहताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

ઉપર થઈને નીચે આવી નીચે આવીને તેણે બન્ને પાદુકાઓને પગોમાંથી ઉતારી દીધી ઉતારીને તે તીર્થંકર જે દિશા તરફ વિરાજમાન હતા તે દિશા તરફ સાત-આઠ ડગલા આગળ ગઈ ત્યાં જઈને તેણે પોતાના ડાબા ઢીંચણને ઊંચો કર્યો ઊંચો કરીને પછી તેણે જમણા ઢીંચણને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યો ટેકવીને તેણે ત્રણ વખત પોતાના મસ્તકને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યું, ટેકવીને તે થોડી નમી-મસ્તકને નીચે નમાવ્યું ત્યારપછી તેણે કટક અને ત્રુટિતથી વિભૂષિત ભુજાઓને ભેગી કરી, ભેગી કરીને તેણે તેઓ બન્નેની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ-પૂર્વક ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યું

(नमोत्थुणं अरहताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वदामि णं भगवंत तत्थगय इह गया म भगव

खलु श्रमणाय भगवते महावीराय यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान समाप्तुकामाय, वन्दे खलु भगवन्त 'तत्थगय' तत्रगत=जम्बूद्वीपे राजगृहनगरस्य गुणशिलको द्याने समवसृतम् 'इहगया' इहगता=चमरचञ्चाराजधानी स्थिताऽहम्, पश्यतु मा भगवान् तत्रगत इहगतम्, 'त्ति कट्टु' इति कृत्वा=इत्युक्त्वा वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा सिंहासनवरे 'पुरत्थाभिमुही' पौरस्त्याभिमुखी पूर्वदिशाभि मुखी 'निसण्णा' निषण्णा=उपविष्टा। ततः खलु तस्या काल्या देव्या अयमेत-

जाव सपाविउकामस्स वदामि ण भगवत तत्थ गय इह गया पासउ म भगव तत्थ गए इह गय त्तिकट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था) यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए अर्हंत भगवतो के लिये मेरा नमस्कार हो। सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त करने की कामनावाले श्रमण भगवान महावीर को मै नमस्कार करती हूँ। जम्बूद्वीप में राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में इस समय विराजमान उन भगवान को मै इस चमर चचा नाम की राजधानी में रही हुई नमस्कार कर रही हूँ। वहा पर रहे हुए वे प्रभु मुझे यहा पर रही हुई देखे। इस प्रकार कहकर उसने उनको वदना की —नमस्कार किया—वदना नमस्कार करके फिर वह अपने उत्तम सिंहासन पर आकर पूर्व दिशाकी ओर मुँह करके बैठ गई। इसके बाद उस काली देवी के यह इस प्रकार का यावत् मनः सकल्प उत्पन्न हुआ— (सेय खलु मे समण भगव महावीर वदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्ति

तत्थ गए इह गय त्ति कट्टु वदइ नमसइ, वदित्ता, नमसित्ता सीहासणवरसि पुरत्थाभिमुही निसण्णा—तएण तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था)

યાવત્ સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને પ્રાપ્ત થયેલા અર્હંત ભગવતોને મારા નમસ્કાર છે સિદ્ધગતિ નામક સ્થાનને મેળવવાની કામનાવાળા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને હુ નમસ્કાર કરૂ છુ જબૂ દ્વીપના રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમા અત્યારે વિરાજમાન તે ભગવાનને હુ આ ચમરચચા નામની રાજ ધાનીમા રહેતી નમસ્કાર કરી રહી છુ ત્યા વિરાજમાન તે પ્રભુ અહીં રહેતી મને જુએ આ પ્રમાણે કહીને તેણે તેમને વદન કર્યા અને નમસ્કાર કર્યા વદન અને નમસ્કાર કરીને તે પોતાના ઉત્તમ સિંહાસન ઉપર આવીને પૂર્વ દિશા તરફ મુખ કરીને બેસી ગઈ ત્યારપછી તે કાળી દેવીને આ જાતનો યાવત્ મન સકલ્પ ઉત્પન્ન થયો કે—

पादपीठात् 'पच्चोरुहइ' प्रत्यवरोहति=अवतरति, प्रत्यवरुह्य=अवतीर्य 'पाउयाओ' पादुके 'ओमुयइ' अवमुञ्चति=त्यजति, मुक्त्वा तीर्थंकराभिमुखी सप्ताष्टपदानि 'अणुगच्छइ' अनुगच्छति=सम्मुखं गच्छति, अनुगम्य वाम जानु 'अंचेइ' अञ्चति=ऊर्ध्वी करोति, अञ्चित्वा=ऊर्ध्वीकृत्य दक्षिण जानु धरणितले 'निहट्टु' निहत्य=स्थापयित्वा 'तिक्खुत्तो' त्रिः कृत्वः=त्रिवारम् 'मुद्धाणं' मूर्धानं=मस्तकं धरणितले निवेशयति=लगयति, निवेश्य 'ईसिं पच्चुण्णमइ' ईषत्प्रत्यवनमति=स्तोकं शिरोनामयति, प्रत्यवनम्य 'कडगतुडियथंभियाओ' कटकत्रुटितस्तम्भिते कटके=करभूषणे त्रुटिते=बाहुभूषणे तैः स्तम्भिते=अवष्टब्धे 'भुयाओ' भुजे 'साहरइ' संहरति=एकत्रीकरोति, संहृत्य 'करयल जाव कट्टु' करतलपरिगृहीत शिर आवर्त्त मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्-'नमोत्थुणं' इत्यादि-नमोऽस्तु खलु अर्हद्भ्यः यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेभ्यः, नमोऽस्तु

से उठी-और उठकर वह पादपीठ से होकर नीचे आई-नीचे आकर उसने दोनों पादुकाओं को पैरों में से उतार दिया। उतार कर फिर वह तीर्थंकराधिष्ठित दिशा की ओर सात आठ पद आगे गई। वहां आकर उसने अपने वाम जानु को ऊँचा किया-ऊँचा कर के फिर दक्षिण जानु को नीचे धरणीतल में रखा-रखकर फिर तीन बार अपने मस्तक को नीचे भूमिपर लगाया-लगाकर फिर वह कुछ झुकी-शिर को नीचे-नवाया। बाद में कटक और त्रुटित से भूषित भुजाओं को एकत्रित किया-एकत्रित करके फिर उसने उन दोनों हाथोंकी अंजलि बनाई-और उसे मस्तक पर आदक्षिण प्रदक्षिण कर इस प्रकार कहा (नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स

ઉપર થઇને નીચે આવી નીચે આવીને તેણે બંને પાદુકાઓને પગોમાંથી ઉતારી દીધી ઉતારીને તે તીર્થંકર જે દિશા તરફ વિરાજમાન હતા તે દિશા તરફ સાત-આઠ ડગલા આગળ ગઇ ત્યાં જઇને તેણે પોતાના ડાબા ઢીંચણને ઊંચો કર્યો ઊંચો કરીને પછી તેણે જમણા ઢીંચણને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યો ટેકવીને તેણે ત્રણ વખત પોતાના મસ્તકને નીચે પૃથ્વી ઉપર ટેકવ્યું, ટેકવીને તે થોડી નમી-મસ્તકને નીચે નમાવ્યું ત્યારપછી તેણે કટક અને ત્રુટિતથી વિભૂષિત ભુજાઓને ભેગી કરી, ભેગી કરીને તેણે તેઓ બંનેની અંજલિ બનાવી અને તેને મસ્તક ઉપર આદક્ષિણ પ્રદક્ષિણ-પૂર્વક ફેરવીને આ પ્રમાણે કહ્યું

(नमोत्थुणं अरहंताणं जाव संपत्ताणं नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इह गया ...म भगवं

प्रत्यर्पयन्ति=तदाज्ञानुसारेण कार्यं कृत्वा निवेदयन्ति। 'णवर' नवरं=विशेष स्त्वयम्-यत्-सूर्याभस्य यानविमान योजनशतसहस्रविस्तीर्णमस्ति, अस्यास्तु-योजनसहस्रविस्तीर्णं यानविमानमस्ति, शेष तथैव विज्ञेयम्। तथैव-सूर्याभदेववदेव काली देवी स्वस्य नामगोत्र साधयति=कथयति। तथैव=सूर्याभदेववदेव च नाटयविधिम् उपदर्शयति, उपदर्श्य यावत् प्रतिगता=यत आगता तत्रैव प्रतिनिवृत्ता॥सू०२॥

मूलम्-भंतेत्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता णमंसित्ता एवं वयासी कालिए णं भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी२ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठंतो,

कि जब वह विमान बनकर तैयार हो जावे-तब उसकी पीछे हमें खबर कर देना। सो उन आभियोगिक देवो ने वैसा ही किया-और पीछे इसकी खबर उसे कर दी। इसमे (जोयणसहस्सविच्छिण्ण जाणविमाण सेस तहेव) विशेषता इतनी रही कि सूर्याभदेव का यान विमान एक लाख योजन का विस्तारवाला था। तब कि इसका यह यान विमान १ हजार योजन का विस्तारवाला था। बाकी सब रचना इसकी उसी सूर्याभ विमान की तरह जाननना चाहिये। (तहेव णामगोय साहेइ, तहेव नाटयविहिं उवदसेइ जाव पडिगया) सूर्याभ देव की तरह काली देवी ने अपने नाम गोत्र का कथन किया और सूर्याभ देव की तरह ही नाटयविधि को दिखलाया दिखालाकर फिर वह जहा से आई थी वहीं पर पीछे गई सूत्र २॥

વિમાન તૈયાર થઈ જાય ત્યારે તેની મને જાણ કરવામા આવે ત્યારપછી તે આભિયોગિક દેવોએ તેમજ કર્યું અને વિમાન તૈયાર થઈ જવાની ખબર દેવીની પાસે મોકલાવી દીધી આ વિમાનમા (जोयणसहस्सविच्छिण्ण जाण विमाण सेस तहेव) વિશેષતા આટલી જ હતી કે જ્યારે સૂર્યાભદેવનુ યાન-વિમાન એક લાખ યોજન જેટલુ વિસ્તારવાળુ હતુ ત્યારે તેનુ આ યાન-વિમાન એક હજાર યોજન જેટલુ વિસ્તારવાળુ હતુ બાકી રચના સ બધી તેની બધી વિગત સૂર્યાભ-વિમાનની જેમ જ જાણવી જોઈએ (तहेव णामगोय साहेइ, तहेव नाटयविहिं उवदसेइ जाव पडिगया) સૂર્યાભદેવની જેમ કાળી દેવીએ પોતાના નામ-ગોત્રનુ કથન કર્યું અને સૂર્યાભદેવની જેમ જ નાટયવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે જ્યાથી આવી હતી ત્યા જ પાછી જતી રહી ॥ સૂત્ર ૨ ॥

मूपः यावत् मनः-सङ्कल्प समुदपद्यत-श्रेयः खलु मम श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दित्वा यावत् ' पज्जुवासित्तए ' पर्युपासितुम्=सेवितुम् , इति कृत्वा=इतिमनसि निधाय एवम्=उक्तरीत्या ' संपेहेइ ' सम्प्रेक्षते=विचारयति सम्प्रेक्ष्य=विचार्य ' आभिओगिए देवे ' आभियोगिकान् देवान्-भृत्यदेवान् शब्दयति=आह्वयति, शब्दयित्वा=आहूय एवमवदत्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! श्रमणो भगवान् महावीरः एवं यथा सूर्याभस्तथैव आज्ञापितवान् ददाति यावत् दिव्यं सुरवराभिगमनयोग्यं ' जाणविमाणं ' यानविमानं=यानाय गमनार्थं विमानं कुरुत, कृत्वा यावत्-ममाज्ञां ' पच्चप्पिणह ' प्रत्यर्पयत=मम निवेदयत । तेऽपि देवाः तथैव कृत्वा यावत्

कट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जाव दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह, करित्ता जाव पच्चप्पिणह) मुझे अब यही उचित-श्रयस्कर है-कि मैं श्रमण भगवान महावीर को वंदना करके यावत् उनकी पर्युपासना करूँ इस प्रकार उसने पूर्वोक्तरूप से विचार किया। विचार करके उसने उसी समय आभियोगिक देवों को बुलाया-और बुलाकर उससे इस प्रकार कहा-हे देवानुप्रियों ! श्रमण भगवान् महावीर राजगृह नगर के गुणशिलक उद्यान में पधारे हुए हैं-मैं उनको वंदना करने के लिये जाना चाहती हूँ-अतः तुमलोग मेरे लिये दिव्य सुरवराभिगमन योग्य एकयान-विमान तैयार करो इस प्रकार की उसने उन्हें सूर्याभ देव की तरह आज्ञा दी। और स्थान में उनसे यह भी कह दिया

(सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्ता जाव पज्जुवासित्तए त्तिकट्टु एवं संपेहेइ, संपेहित्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तिय देइ जावं दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं जाणविमाणं करेह, करित्ता जाव पच्चप्पिणह)

મારા માટે હવે એ જ વાત યોગ્ય છે કે હું શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદના કરીને યાવત્ તેમની પર્યુપાસના કરૂં, આ પ્રમાણે તેણે વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તેણે તરત જ આભિયોગિક દેવોને બોલાવ્યા અને બોલાવીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીર રાજગૃહ નગરના ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં પધારેલા છે તેમને વંદન કરવા માટે હું ત્યાં જવા ઈચ્છું છું એથી તમે બધા મારા માટે દિવ્ય સુરવરાભિગમન યોગ્ય એક યાન-વિમાન તૈયાર કરો આ પ્રમાણે તે લોકોને તેણે સૂર્યાભદેવની જેમ આજ્ઞા કરી, અને સાથે સાથે તેઓને તેણે આ પ્રમાણે કહ્યું કે જ્યારે

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरूढा, तएण सा काली दारिया धम्मिय जाणपवरं एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्म कहेइ, तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणियस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—सद्दहामि ण भंते! णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाण अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए!, तएण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

अहो णं भंते ! काली देवी महिड्डिया३ कालिए ण भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्डी३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एव खलु गोयमा! तेण कालेणं तेणं समएण इहेव जम्बूद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया तत्थ ण आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावइ होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णामं भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था, वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहिं समणसाहस्सीहि अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहि सद्धि सपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी -एव खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेहि,

तएणं सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर दूरूढा, तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाणपवरं एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए !, तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ढिया३ कालिए ण भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता किण्णा अभिसमण्णागया ?, एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था वण्णओ अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहावइ होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए, तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णामं दारिया होत्था, वुड्ढा वुड्ढकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी णिव्विन्नवरा वरपरिवज्जिया यावि होत्था, तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहि अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहि सद्धिं संपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी -एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि ण अम्मयाओ ! तुब्भेहि अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ? अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेहि,

तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहि अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठ जाव हियया ण्हाया कयवलिकम्मा कायकोउय मंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मगल्लाइं वत्थाइ पवर परिहिया अप्पमहाग्घाभरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवरं दूरूढा, तएण सा काली दारिया धम्मिय जाणपवर एवं जहा दोवइ जाव पज्जुवासइ, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मं कहेइ, तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता एव वयासी—सद्दहामि णं भंते ! णिग्गंथ पावयण जाव से जहेय तुब्भ वयह, ज णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएण अह देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुह देवाणुप्पिए !, तएण सा काली दारिया पासेण अरहया पुरिसादाणीएण एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पास अरह वदइ नमंसइ वदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मिय जाणपवर दूरुहइ दूरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अवसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव

उवागच्छइ उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ध म्मियं जाणपवरं ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे णिसंते सेऽवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अहं अम्मयाओ! संसार भउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भ णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगा राओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडि- बंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्ख डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसंबंधिपरियण आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फव त्थगंधमल्लालंकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि यगसयणसंबंधिपरियणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ करित्ता पुरिससहस्सवाहिणियं सीयं दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग सयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीयं ठावित्ता

कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं तं कालियं दारियं अम्मा-पियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! संसार भउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं, दल-यामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह तएणं काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-आलित्ते णं भंते ! लोए एवं जाव सयमेव पव्वावियं, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी, तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं तं कालियं दारियं अम्मा-पियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव किमंग पुण पासणयाए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! संसार भउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं, दल-यामो पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह तएणं काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरि-सादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-आलित्ते णं भंते ! लोए एवं जाव सयमेव पव्वाविया, तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसंपज्जित्ताणं विहरइ, तएणं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबंभयारिणी, तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइय-माइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

उवागच्छइ उवागच्छित्ता आमलकप्प णयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव वाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता ध म्मियं जाणपवर ठवेइ ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरा तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता करयल० एव वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मए पासस्स अरहओ अतिए धम्म णिसंते सेऽवि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तएणं अह अम्मयाओ! संसार भउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहि अब्भ- णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुडा भवित्ता अगा राओ अणगारियं पव्वइत्तए, अहासुह देवाणुप्पिया! मा पडि वध करेह, तएण से काले गाहावई विपुलं असणं४ उवक्ख डावेइ उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियगसयणसबंधिपरियणं आमंतेइ आमतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फव त्थगंधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणि यगसयणसबंधिपरियणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहि ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसियं करेइ करित्ता पुरिससहस्सवाहिणिय सीयं दुरोहेइ दुरोहित्ता मित्तणाइणियग- सयणसंबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्प नयरिं मज्झं मज्झेणं णिग्गच्छइ, णिग्गच्छित्ता जेणेव अवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ पासित्ता सीयं ठवित्ता

कालिय दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ तएणं त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ वादित्ता नमसित्ता एवं वयासी– एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता जाव किमग पुण पासणयाए ?, एसणं देवाणुप्पिया ! ससार भउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, त एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्ख, दलयामो पडिच्छतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबधं करेह तएणं काली कुमारी पास अरह वदइ नमंसइ वादित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं अवक्कमइ अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ करित्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो वदइ नमसइ वदित्ता नमसित्ता एव वयासी–आलित्ते ण भते ! लोए एवं जाव सयमेव पव्वाविया, तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालि सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालि दारिय सयमेव पव्वावेइ, जाव उवसपज्जित्ताण विहरइ, तएणं सा काली अज्जा जाया ईरियासमिया जाव गुत्तबम्भयारिणी, तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइ एक्कारस अगाइ अहिज्जइ वहूहि चउत्थ जाव विहरइ॥सू०३॥

टीका—कालीदेवीगमनानन्तर गौतमः पृच्छति-'भंतेति' इत्यादि। 'भंतेति' हे भदन्त! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्थित्वा एवमवादीत्-काल्या खलु हे भदन्त! देव्या सा=या साम्प्रत दर्शिता सा दिव्या 'देविड्ढी' देवर्द्धिः=विमानपरिवारादिरूपा, 'देवज्जुई' देवद्युति.=शरीराभरणादीनां दीप्तिरूपा 'देवणुभावे' देवानुभावः=शक्तिप्रभावादिरूप', कुत्रगता? कुत्र प्रविष्टा? भगवानाह-शरीर गता, शरीरमनु

'भंते त्ति भगव गोयमे' इत्यादि।

टीकार्थः—कालीदेवी के चले जाने के बाद (भगव गोयमे) भगवान गौतम ने (भंते त्ति) हे भदन्त! इस प्रकार संबोधित कर (समणं भगव महावीर वदइ णमसइ) श्रमण भगवान् को वदना की-नमस्कार किया (वदित्ता णमंसित्ता एव वयासी) वदना नमस्कार करके फिर उन्हों ने उनसे इस प्रकार पूछा-(कालिएण भते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठतो, अहोण भते! कालीदेवी महड्ढिया ३, कालिएण भंते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया? एव जहा सूरियाभस्स जाव) हे भदन्त! कालीदेवी ने जो इस समय दिव्य विमान-परिवार आदिरूप ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवद्युति एव शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया-वह सब कहा चला

'भंतेत्ति भगव गोयमे' इत्यादि—

टीकार्थ—કાળી દેવીના જતા રહ્યા બાદ (भगव गोयमे) ભગવાન ગૌતમે (भंते त्ति) હે ભદન્ત! આ પ્રમાણે સંબોધન કરીને (समण भगव महावीर वदइ णमसइ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વંદન અને નમસ્કાર કર્યા (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) વંદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પૂછ્યું કે

(कालिएण भते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी २ कहिं गया० कूडागार सालादिट्ठतो, अहोण भते! काली देवी महड्ढिया ३, कालिएण भते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया? एव जहा सूरियाभस्स जाव)

હે ભદન્ત! કાળી દેવીએ અત્યારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવદ્યુતિ તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો ક્યાં અદૃશ્ય થઈ ગયો? ક્યાં પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો?

प्रविष्टा, 'कूडागारसालादिट्ठंतो' अत्र कूटागारशाला दृष्टान्तो बोद्धव्यः। 'अहो' आश्चर्ये खलु हे भदन्त ! कालीदेवी महर्द्धिका महाद्युतिका महानुभावा वर्त्तते काल्या खलु हे भदन्त ! देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३ 'किण्णा' कथ=केन प्रकारेण 'लद्धा' लब्धा=अर्जिता, 'किण्णा' कथ=केन प्रकारेण 'पत्ता' प्राप्ता=स्वाधीनीकृता 'किण्णा' कथ=केन प्रकारेण 'अभिसमन्नागया' अभिसमन्वागता=उपभोगविषयतया समागता ? एव 'जहासूरियाभस्स जाव' यथा-सूर्याभस्य यावत्=यथा सूर्याभदेवविषये गौतमस्वामिना प्रश्न कृतस्तथैवात्रापि विज्ञेयः। अथ भगवान् कालीदेवीपूर्वभववृत्तान्त वर्णयति-'एव खलु' इत्यादि। एव खलु हे गौतम ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये इहैव=अस्मिन्नेव जम्बूद्वीपे द्वीपे भारते वर्षे आमलकल्पा नाम नगरी आसीत्। 'वण्णओ' वर्णकः=नगरी वर्णनग्रन्थऔपपातिसूत्रादवसेय'। तत्र आम्रशालवन चैत्यं, जितशत्रू राजा

गया-? कहा प्रविष्ट हो गया? इस प्रकार गौतम का प्रश्न सुनकर भगवान् ने उनसे कहा-शरीर में चला गया-शरीर में प्रविष्ट हो गया। इस विषय में कूटाकारशाला का दृष्टान्त जानना चाहिये। हे भदन्त ! कालीदेवी महर्द्धिक, महाद्युतिक एव महानुभाववाली है। इस कालीदेवी ने वह देवर्द्धि ३ किस प्रकार प्राप्त की अर्जित की किस प्रकार उसे अपने आधीन किया? और किस प्रकार से उसने उसे अपने भोग की विषयभूत बनाई? इस तरह गौतमस्वामी ने सूर्याभदेव के विषय में जिस तरह से प्रश्न किया उसी तरह से यहां पर भी जानना चाहिये-। अब भगवान् कालीदेवी के पूर्वभव के वृत्तान्त का वर्णन करते हैं-(एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण-इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अंबसालवणे चेइए जियसत्तू

આ પ્રમાણે ગૌતમનો પ્રશ્ન સાંભળીને ભગવાને તેમને કહ્યુ કે શરીરમાં પ્રવિષ્ટ થઇ ગયો-શરીરમાં જતો રહ્યો આ વિષે કૂટાકાર શાળાનુ દૃષ્ટાન્ત જાણવું જોઇએ હે ભદન્ત ! કાળી દેવી મહર્દ્ધિક મહાદ્યુતિક અને મહાનુભાવવાળી છે આ કાળી દેવીએ તે દેવર્દ્ધિ ૩ કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરી છે, અર્જિત કરી છે, કેવી રીતે સ્વાધીન બનાવી છે, અને તેણે તેને કેવી રીતે પોતાના ઉપભોગની વિષયભૂતા બનાવી છે ? આ પ્રમાણે ગૌતમ સ્વામીએ સૂર્યાભદેવના વિષે જેમ પ્રશ્ન કર્યો હતો તેમજ અહીં પણ જાણવો જોઇએ ભગવાન હવે કાળી દેવીના પૂર્વભવના વૃત્તાન્તનુ વર્ણન કરે છે—

(एव खलु गोयमा ! तेण कालेण तेण समएण इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे अमलकप्पा णाम णयरी होत्था-वण्णओ-अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया

टीका—कालीदेवीगमनानन्तर गौतमः पृच्छति-'भंतेति' इत्यादि। 'भंतेति' हे भदन्त! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः श्रमण भगवन्त महावीर वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्—काल्या खलु हे भदन्त! देव्या साऽसौ साम्प्रत दर्शिता सा दिव्या 'देविड्ढी' देवर्द्धि=विमानपरिवारादिरूपा, 'देवज्जुई' देवद्युतिः=शरीराभरणादीनां दीप्तिरूपा 'देवाणुभावे' देवानुभाव'= शक्तिप्रभावादिरूप', कुत्र गता? कुत्र प्रविष्टा? भगवानाह-शरीर गता, शरीरमनु

'भंते त्ति भगव गोयमे' इत्यादि।

टीकार्थः—कालीदेवी के चले जाने के बाद (भगव गोयमे) भगवान गौतम ने (भंते त्ति) हे भदन्त! इस प्रकार सबोधित कर (समर्ण भगव महावीर वदइ णमसइ) श्रमण भगवान् को वंदना की-नमस्कार किया (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) वदना नमस्कार करके फिर उन्हो ने उनसे इस प्रकार पूछा-(कालिएण भते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ कहिं गया० कूडागारसालादिट्ठतो, अहोण भते! कालीदेवी महड्ढिया ३, कालिएण भते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया? एव जहा सूरियाभस्स जाव) हे भदत! कालीदेवी ने जो इस समय दिव्य विमान-परिवार आदिरूप ऋद्धि दिखलाई, शरीर, आभरण आदि की दीप्तिरूप जो देवद्युति एव शक्ति प्रभाव आदिरूप जो देवानुभाव दिखलाया-वह सब कहा चला

'भंतेत्ति भगव गोयमे' इत्यादि—

टीकार्थ—કાળી દેવીના જતા રહ્યા બાદ (भगव गोयमे) ભગવાન ગૌતમે (भंतेत्ति) હે ભદન્ત! આ પ્રમાણે સબોધન કરીને (समण भगव महावीर वदइ णमसइ) શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન અને નમસ્કાર કર્યા (वदित्ता णमसित्ता एव वयासी) વદના અને નમસ્કાર કરીને તેમણે તેઓશ્રીને પૂછયુ કે

(कालिएण भते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी २ कहिं गया० कूडागार-सालादिट्ठतो, अहोण भते! काली देवी महड्ढिया ३, कालिएण भते! देवीए सा दिव्वा देविड्ढि ३ किण्णा लद्धा, किण्णा पत्ता, किण्णा अभिसमण्णा गया? एव जहा सूरियाभस्स जाव)

હે ભદન્ત! કાળી દેવીએ અત્યારે જે દિવ્યવિમાન, પરિવાર વગેરેની ઋદ્ધિ બતાવી, શરીર, આભરણ વગેરેની દીપ્તિની જે દેવદ્યુતિ તેમજ શક્તિ, પ્રભાવ વગેરેનો જે દેવાનુભાવ બતાવ્યો તે બધો કયા અદ્રશ્ય થઈ ગયો? કયા પ્રવિષ્ટ થઈ ગયો?

पतितपूतस्तनी-नम्रनतनितम्बस्तनी, 'णिव्विन्नवरा' निर्विण्णवरा=वरवरणे विरक्ता, अतएव 'वरपरिवज्जिया' वरपरिवर्जिता=पतिरहिता चाप्यासीत्। तस्मिन् काले तस्मिन् समये पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीय=पुरुषश्रेष्ठः आदिकरः यथा वर्द्धमानस्वामी तथैव पार्श्वप्रभुरपि 'णवर' नवरम्-अय विशेषः-श्रीवर्द्धमानस्वामी सप्तहस्तोच्छ्रयः, पार्श्वप्रभुः 'णवहत्थुस्सेहे' नवहस्तोत्सेधः=नवहस्तपरिमितशरीरावगाहन, स षोडशभिः श्रमणसाहस्रीभिः, अष्टत्रिंशता आर्यिका-

ज्जिया यावि होत्था) इस काल गाथापति की कालश्री नाम भार्या थी। इसके हाथ पैर आदि समस्त अग उपाग विशेष सुकुमार थे। देखने में यह बडी सुन्दर थी काल गाथापति के इस काल श्री की कुक्षि से उत्पन्न हुई एक काली नाम की दारिका भी थी। जो बहुत वयस्का हो चुकी थी-इसका विवाह भी नही हुआ था। इसलिये कुमारी अवस्था में ही यह वृद्धा जैसी बहु उमरवाली हो गई थी। शरीर भी बहु अवस्था सपन्न होने के कारण इसका जीर्ण हो चुका था। अतः अपरिणीतावस्था में ही यह जीर्ण कुमारी बन गई थी। इसके नितम्ब और स्तन दोनों ही बिलकुल ढीले हो गये थे नीचे झुक आये थे। वरके वरण करने रूप कार्य से यह विरक्त बन चुकी थी अतः यह वर-परिवर्जित थी-पति से सर्वथा रहित थी। (तेण कालेणं तेण समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवर णवहत्थुस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जिया साहस्सीहिं

णिविन्नवरा, वरपरिवज्जिया यावि होत्था)

ते काल गाथापतिनी कालश्री नामे भार्या हती तेना हाथ-पग वगेरे अने बधा अगो तेमज उपागो सविशेष सुकोमळ हता देखावमा ते बहु ज सुदर हती काल गाथापतिनी आ कालश्रीना गर्भथी जन्म पामेली एक काली नामे दारिका (पुत्री) पण हती ते मोटी उमरनी थई चूकी हती तेनु लग्न पण थयु नहोतु एथी कुमारिकानी अवस्थामा ज ते डोशी जेवी बहु उमरे पहोचेली थई गई हती बहु उमरे पहोचेली होवा बदल तेनु शरीर पण जीर्ण थई चूकयु हतु एथी कुमारिकानी अवस्थामा ज ते जीर्ण कुमारिका बनी गई हती तेना नितम्ब अने स्तनो बने साव ढीला थई गया हता, नीचे लटकवा लाग्या हता वरने वरण करवा रूप कार्यथी ते विरक्त बनी गई हती एथी ते वर परिवर्जित हती ते एकदम पति वगरनी हती

(तेणं कालेण तेण समएण पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जहा वद्धमाणसामी णवरं णवहत्थुस्सेहे सोलसहि समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जिया

यासीत् । तत्र खलु आमलकल्पायां कालो नाम गाथापतिरासीत् कीदृशः ? इत्याह- 'अड्ढे ' आढ्यः=धनधान्यादि समृद्धि-समृद्धः, ' जाव ' यावत् ' अपरिभूए ' अपरिभूतः=बहुजनैरपि परामवितुमशक्यः । तस्य खलु कालस्य गाथापतेः कालश्रीर्नाम भार्याऽऽसीत्, कीदृशीत्याह-सुकुमारपाणिपादा यावत् सुरूपा । तस्य खलु कालस्य गाथापतेर्दुहिता कालश्रियः भार्याया आत्मजा काली नाम दारिका=पुत्री आसीत् । सा कीदृशी ? इत्याह-' वुड्ढा ' वृद्धा=बहुवयस्कत्वात्, वृद्धकुमारी=अपरिणीतत्वात्, ' जुण्णा ' जीर्णा=जीर्णशरीरत्वात्, ' जुण्णकुमारी ' जीर्णकुमारी-अपरिणीतावस्थायामेव सञ्जातजीर्णशरीरत्वात्, ' पडियपूयत्थणी '

राया तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहावई होत्था, अड्ढे जाव अपरिभूए) वे कहते हैं-गौतम सुनो-तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर इस प्रकार है-उस काल और उस समय में इसी जम्बूद्वीप नामके द्वीप में भारतवर्षमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। नगरीका वर्णन करनेवाला पाठ यहां पर औपपातिक सूत्र से योजित करलेना चाहिये। उस नगरी में उद्यान था जिसका नाम आम्रशालावन था। इस नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था। इस आमलकल्पा नगरी में काल नाम का गाथापति रहता था। यह धन धान्यादिसे विशेष समृद्ध था और लोगोंमें भी इस की अच्छी प्रतिष्ठा थी। (तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरी णाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडियपूयत्थणी णिविन्नवरा वरपरिव

तत्थण आमलकप्पाए नयरीए काले नाम गाहावई होत्था अड्ढे जाव अपरिभूए)

તેઓ કહે છે કે હે ગૌતમ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નોના ઉત્તર આ પ્રમાણે છે-કે તે કાળે અને તે સમયે આ જબૂદ્વીપ નામના દ્વીપમા ભારત વર્ષમા આમલકલ્પા નામની નગરી હતી નગરીના વર્ણન વિષેનો પાઠ અહીં ઔપપાતિક સૂત્ર વડે જાણી લેવો જોઇએ તે નગરીમા એક ઉદ્યાન હતુ તેનુ નામ આમ્રશાલ વન હતું, તે નગરીના રાજાનુ નામ જીતશત્રુ હતું તે આમલકલ્પા નગરીમા કાલા નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તે ધનધાન્ય વગેરેથી સવિશેષ સમૃદ્ધ હતો અને સમાજમા તેની સારી એવી પ્રતિષ્ઠા હતી

(तस्स ण कालस्स गाहावइस्स कालसिरीणाम भारिया होत्था, सुकुमाल जाव सुरूवा, तस्स ण कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली णाम दारिया होत्था वुड्ढा वुड्ढकुमारी, जुण्णा जुण्णकुमारी, पडि

हेतः पुरुषादानीयस्य पादवन्दिका=पादवन्दनाशया गन्तुम् । अम्बापितरौ कथयतः–हे देवानुप्रिये ! पुत्रि यथा सुख तथा कुरु किन्तु अस्मिन् शुभकार्ये प्रतिबन्ध=प्रमाद मा कुरु । ततः खलु सा कालिका दारिका अम्बापितृभ्यामभ्यनुज्ञाता सती हृष्टयावद्हृदया स्नाता कृतबलिकर्मा कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ता शुद्र-

---

अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिया गमित्तए ?) लोगो को ज्योंही पार्श्व प्रभु के आम्रशालवन में आने की खबर लगी–त्योंही सब जनता प्रभु की वदना के लिये अपने २ स्थान से निकलकर उस आम्रशालवन में आने लगी। वहा आकर प्रभु का धार्मिक उपदेश सुन वह प्रभु की पर्युपासना करने लगी। इसके अनन्तर जब यह समाचार काली दारिका को मिला तो वह बहुत अधिक हर्षित एव सतुष्ट चित्त हुई। बाद में वह जहा अपने माता पिता थे वहा पहुँची वहा जाकर उसने माता पिता को दोनो हाथ जोडकर चरण वदना की–और इस प्रकार कहा–हे माततात ! पुरुषश्रेष्ठ, आदिकर, ऐसे पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु आम्रशालवन में पधारे हुए हैं–इसलिये मै आपसे आज्ञापित होकर उन पुरुषश्रेष्ठ अर्हंत प्रभु पार्श्वनाथ को वदना करने के लिये जाना चाहती हूँ। (अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि, तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमगलपायच्छित्ता

णुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवदिया गमित्तए ?)

પાર્શ્વ પ્રભુના આમ્રશાલવનમા પધારવાની જાણ થતા જ બધા લોકો પ્રભુને વદન કરવા માટે પોતપોતાના સ્થાનેથી નીકળીને તે આમ્રશાલ વનમા આવવા લાગ્યા ત્યા આવીને પ્રભુનો ધાર્મિક ઉપદેશ સાભળીને તેઓ પ્રભુની પર્યુપાસના કરવા લાગ્યા ત્યારબાદ કાલી દારિકાને આ સમાચારો મળ્યા ત્યારે તે ખૂબ જ હર્ષિત તેમજ સતુષ્ટ ચિત્તવાળી થઈ ગઈ ત્યારપછી તે જ્યા તેના માતા–પિતા હતા ત્યા પહોચી ત્યા જઈને તેણે માતા–પિતાને બને હાથ જોડીને ચરણ વદના કરી અને ત્યારપછી આ પ્રમાણે વિનતી કરી કે હે માતા પિતા ! પુરુષ શ્રેષ્ઠ, આદિકર એવા પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુ આમ્રશાલ વનમા પધાર્યા છે એટલા માટે હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે પુરુષ શ્રેષ્ઠ અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથને વદન કરવા માટે જવા ઇચ્છુ છુ

(अहा सुह, देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेहि, तएण सा कालिया दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुन्नाया समाणी हट्ठतुट्ठ जाव हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कय

साहस्रीभिः सार्द्धं सपरिवृतः यावत् आम्रशालवने समवसृतः। परिषन्निर्गता यावत् पर्युपास्ते। ततः खलु सा काली दारिका अस्याः भगवत्पार्श्वप्रभुसमागमन रूपायाः कथायाः=वार्तायाः 'लब्धार्था' लब्धार्था भगवानत्रसमवसृतः, इत्येव रूपार्थमाप्ता 'हट्ठ जाव हियया' हृष्ट यावद्हृदया–हृष्टतुष्टचित्तानन्दिता प्रीतमनस्का हर्षवशविसर्पद्हृदया सती यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करयल जाव' करतलपरिगृहीत शिर आवर्त दशनखं मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा एवमवादीत्–एवं खलु हे अम्ब तातौ! पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः आदिकरो यावत्–आम्रशाल वने चैत्ये यथा–प्रतिरूपमवग्रहमवगृह्य संयमेन तपसाऽऽत्मानं भावयन् विहरति= आस्ते, तद्गच्छामि खलु हे अम्बतातौ! युष्माभिरभ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्य

सद्धिं सपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे) उस काल में और उस समय में पुरुषादानीय पुरुषश्रेष्ठ-आदिकर पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभु जो श्री वर्द्धमान स्वामी जैसे थे-सोलह हजार श्रमणों के तथा ३८, हजार आर्यिकाओं के साथ तीर्थंकर परंपरानुसार विहार करते हुए उस आम्रशालवन में आये। भगवान् महावीर और पार्श्वनाथ प्रभु की शरीरावगाहना में विशेषता केवल इतनी ही थी कि उनका शरीर सात हाथ ऊँचा था और पार्श्व प्रभु का शरीर ९ हाथ ऊँचा था। (परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तएणं सा दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं

साहस्सीहिं सद्धिं सपरिवुडे जाव अंबसालवणे समोसढे)

તે કાળે અને તે સમયે પુરુષાદાનીય-પુરુષ શ્રેષ્ઠ-આદિકર પાર્શ્વનાથ-અર્હંત પ્રભુ-જેઓ શ્રી વર્દ્ધમાન સ્વામી જેવા હતા-સોળ હજાર શ્રમણો તેમજ ૩૮ હજાર આર્યિકાઓની સાથે તીર્થંકર પરંપરા મુજબ વિહાર કરતા તે આમ્રશાલ વનમાં આવ્યા. ભગવાન મહાવીર અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની શરીરાવગાહનામાં વિશેષતા ફક્ત આટલી જ છે કે તેમનું શરીર સાત હાથ જેટલું ઊંચુ હતું અને પાર્શ્વ પ્રભુનું શરીર નવ હાથ ઊંચુ હતું.

(परिसा णिग्गया, जाव पज्जुवासइ, तएणं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ जाव हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल जाव एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे जाव विहरइ, तं इच्छामि णं अम्मयाओ!

'जहा दोवई जाव' यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीवत् छत्रादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरादवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वकं भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्तं 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते। ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्षदि धर्मं कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त पुरुषादानीय त्रिकृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योंही उसने द्रौपदी की तरह तीर्थंकरातिशयरूप छत्रादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वंदना की, उन्हें नमस्कार किया-वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरहं पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ) पुरुषादानीय उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय मे अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्याथी रवाना थई द्रौपदीनी जेम तेणे ज्यारे तीर्थंकरातिशय रूप छत्र वगेरे विभूतिने जोई के जेतानी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरमाथी नीचे उतरी पडी अने पच अभिगमनपूर्वक भगवाननी पासे जईने तेमने वदना करी, तेमने नमस्कार कर्या वदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमनी पर्युपासना करी त्यारपछी

(तएण पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

पुरुषादानीय अर्हंत प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परिषदानी सामे धर्मकथा सभळावी

(तएण सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अतिए धम्म सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पास अरह पुरिसादाणीय तिक्खुत्तो वदइ नमसइ)

पुरुषादानीय ते अर्हंत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासेथी धर्मने सांभळीने अने तेने हृदयमा अवधारित करीने ते काली दारिका बहु ज वधारे हर्षित

प्रवेश्यानि माङ्गल्यानि वस्त्राणि प्रवरपरिहिता अल्पमहार्घाभरणालंकृतशरीरा चेटिका चक्रवालपरिकीर्णा स्वकात् गृहात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला यत्रैव धार्मिकं यानप्रवरं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिकं यानप्रवरं दूरूढा=आरूढा। ततः खलु सा काली दारिका धार्मिकं यानप्रवरम्, एवं

सुद्धप्पवेसाइ मंगलाइ वत्थाइ पवरपरिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकिय सरीरा चेडिया चक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाण प्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा, तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाण पवरं जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)

तब माता पिता ने उससे ऐसा कहा—हे देवानुप्रिये! तुझे जिस प्रकार सुख मिले उस प्रकार तू कर—इस शुभकार्य में प्रतिबंध-प्रमाद मत कर। इस प्रकार माता पितासे अभ्यनुज्ञात हुई उस दारिका ने हृष्ट तुष्ट चित्त होकर स्नान किया वायसादि के लिये अन्नका भागरूप-बलिकर्म किया कौतुक, मंगल एवं प्रायश्चित्त करके शुद्ध प्रवेश योग्य, मंगलकारी वस्त्रों को अच्छी तरह पहिरा, और अल्पभार बहुमूल्य आभरणों से अलंकृत शरीर होकर वह चेटिका चक्रवाल से युक्त हो अपने घर से निकली। निकलकर वह वहाँ गई—जहाँ बाह्य उपस्थान शाला थी—उसमें जाकर वह जहाँ धार्मिक यानप्रवर रक्खा था—वहाँ पहुँची—वहाँ जाकर

कोउयमंगलपायच्छित्ता सुद्धप्पवेसाइ मंगल्लाइ वत्थाइ पवरपरिहिया अप्पमहग्घा भरणालंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता, धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा तएणं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं एवं जहा दोवई जाव पज्जुवासइ)

ત્યારે માતાપિતાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયે! તને જેમ સુખ મળે તેમ તું કર આ શુભ કાર્યમાં પ્રતિબંધ-પ્રમાદ કર નહિ આ પ્રમાણે માતાપિતા વડે આજ્ઞાપિત થયેલી તે દારિકાએ હૃષ્ટ-તુષ્ટ ચિત્ત થઈને સ્નાન કર્યું કાગડા વગેરેને અન્નભાગ આપીને બલિકર્મ કર્યું કૌતુક, મંગળ અને પ્રાયશ્ચિત્ત કરીને શુદ્ધ પ્રવેશ યોગ્ય, મંગળકારી વસ્ત્રોને સારી રીતે પહેર્યાં અને વજનમાં હલકા પણ કિંમતમાં બહુ ભારે એવા આભરણોથી શરીરને અલંકૃત કરીને દાસીઓના સમૂહથી પરિવેષ્ટિત થઈને પોતાના ઘેરથી નીકળી નીકળીને તે ત્યાં પહોંચી જ્યાં બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી તેમાં જઈને તે જ્યાં ધાર્મિક યાનપ્રવર ઊભું હતું તેમાં આરૂઢ થઈ ગઈ આરૂઢ

'जहा दोवई जाव' यथा द्रौपदी यावत्-द्रौपदीवत् छत्रादीन् तीर्थङ्करातिशयान् दृष्ट्वा धार्मिकाद् यानप्रवरादवतरति, पञ्चाभिगमपूर्वकं भगवत्समीपे गत्वा वन्दित्वा नमस्यित्वा च भगवन्तं 'पज्जुवासइ' पर्युपास्ते। ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः काल्यै दारिकायै तस्या च महातिमहालयाया पर्षदि धर्मं कथयति ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीयस्यान्तिके धर्मं श्रुत्वा निशम्य हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्तं पुरुषादानीयं त्रिकृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा

वह उस पर आरूढ हो गई। आरूढ होकर वह वहाँ से चली। ज्योंही उसने द्रौपदी की तरह तीर्थंकरातिशयरूप छत्रादि विभूति को देखा तो वह देखकर उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी। और पञ्च अभिगमन पूर्वक भगवान् के पास जाकर उसने उनको वंदना की, उन्हें नमस्कार किया-वंदना नमस्कार करके फिर उसने उनकी पर्युपासना की। (तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ) पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथने उस काली दारिकाको उस विशाल परिषदाके बीचमें धर्मकथा सुनाई। (तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ) पुरुषादानीय उन अर्हंत पार्श्वनाथ प्रभु से धर्म को सुनकर और हृदय मे अवधारण कर वह काली दारिका बहुत अधिक हर्षित

त्याथी रवाना थई द्रौपदीनी जेम तेणे ज्यारे तीर्थंकरातिशय रूप छत्र वगेरे विभूतिने जोई के जोतानी साथे ज ते धार्मिक यान-प्रवरमांथी नीचे उतरी पडी अने पंच अभिगमनपूर्वक भगवाननी पासे जईने तेमने वंदना करी, तेमने नमस्कार कर्या वंदना अने नमस्कार करीने तेणे तेमनी पर्युपासना करी त्यारपछी

(तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालयाए परिसाए धम्मो कहिओ)

पुरुषादानीय अर्हंत प्रभु पार्श्वनाथे ते काली दारिकाने ते विशाल परिषदानी सामे धर्मकथा संभळावी

(तएणं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा णिसम्म हट्ठ जाव हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो वंदइ नमंसइ)

पुरुषादानीय ते अर्हंत पार्श्वनाथ प्रभुनी पासेथी धर्मने सांभळीने अने तेने हृदयमां अवधारित करीने ते काली दारिका बहु ज वधारे हर्षित

नमस्यित्वा एवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु हे भदन्त! नैर्ग्रन्थ्य प्रवचनं यावत् तद् तथैतद् यथ यूयं वदथ नवरं=विशेषोऽयम्-यत्-अहम् अम्बापितरौ आपृच्छामि, तत = मातापितरौ पृष्ट्वा खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि। भगवानाह-यथासुखं हे देवानुप्रिये!। ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वेन अर्हता पुरुषा

हृष्ट हुई। उसने उन पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु को तीन बार वंदना नमस्कार किया। बाद में (वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी सद्दहामि णं भंते! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दुरूहइ, दुरूहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी, तेणेव उवागच्छइ) वंदना नमस्कार करके उसने उन प्रभु से ऐसा कहा-हे भदन्त! मैं आपके द्वारा प्रतिपादित निर्ग्रन्थ प्रवचन को विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखती हूँ आपने जैसा यह प्रतिपादित किया है वह वस्तुतः वैसा ही है। यह मुझे बहुत रुचा है। अतः मैं माता पिता से पूछती हूँ। उनसे पूछकर फिर आप देवानुप्रिय के पास आकर

હૃષ્ટ થઇ તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુને ત્રણ વાર વંદના અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ

(वंदित्ता नमंसित्ता एव वयासी सद्दहामिणं भंते! णिग्गंथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एव वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दुरूहइ दुरूहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ)

વંદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત! તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં છું તમે જેવું આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેવું જ છે મને આ ખૂબ જ ગમી ગયું છે એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉં છું તેમને પૂછીને

दानीयेन एवमुक्ता सती हृष्ट यावद् हृदया पार्श्वमर्हन्त वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा तदेव धार्मिक यानप्रवर दूरोहति, दूरुह्य पार्श्वस्यार्हत पुरुषादानीय स्यान्तिकाद् आम्रशालवनात् चैत्यात् प्रतिनिष्क्रामति, प्रतिनिष्क्रम्य यत्रैव आमलकल्पा नगरी तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य आमलकल्पाया नगर्या मध्य-मध्येन यत्रैव बाह्या उपस्थानशाला तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य धार्मिक यानप्रवर स्थापयति, स्थापयित्वा धार्मिकाद् यानप्रवरात् प्रत्यवरोहति, प्रत्यवरुह्य यत्रैव अम्बापितरौ तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य 'करतल०' करतलपरिगृहीत मस्तकेऽञ्जलिं

दीक्षित होना चाहती हूँ। काली दारिका के इस अभिप्राय को सुनकर प्रभुने उससे कहा देवानुप्रिये! यथासुखम्। इस प्रकार वह काली दारिका पुरुषादानीय उन अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ से अनुमोदित होकर चित्त मे बहुत अधिक प्रसन्न हुई। उसने अर्हन्त पार्श्वनाथ प्रभु को वंदना नमस्कार किया-और वदना नमस्कार करके वहा से आकर वह उसी अपने धार्मिक यान पर चढ गई चढकर वह फिर पुरुषादानीय, अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ के पास से और उस आम्रशालवन नामके उद्यान से बाहिर चली आई। बाहिर आकर वह जहा आमलकल्पा नगरी थी -वहा पर आ गई। (उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झं मज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणपवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कर-

---

આપ દેવાનુપ્રિયની પાસે આવીને દીક્ષિત થવા ચાહુ છુ કાલી દારિકાના આ અભિપ્રાયને સાભળીને પ્રભુએ તેને કહ્યુ કે હે દેવાનુપ્રિયે! 'યથાસુખમ્' આ પ્રમાણે તે કાલી દારિકા પુરુષાદાનીય તે અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વડે અનુમોદિત થઇને ચિત્તમા ખૂબ જ પ્રસન્ન થઈ તેણે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુને વદના નમસ્કાર કર્યો અને વદના નમસ્કાર કરીને ત્યાથી આવીને તે તેજ પોતાના ધાર્મિક યાનમા બેસી ગઇ અને બેસીને તે પુરુષાદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથની પાસેથી અને તે આમ્રશાલ વન નામના ઉદ્યાનથી બહાર આવી ગઇ બહાર આવીને તે જ્યા આમલકપ્પા નગરી હતી ત્યા આવી ગઈ

(उवागच्छित्ता आमलकप्पं णयरिं मज्झ मज्झेण जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला-तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मिय जाणपवर ठवेइ, ठवित्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पचोरुहइ, पच्चोरुहित्ता, जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल० एव वयासी-एवं खलु अम्मयाओ! मए पासस्स

नमस्यित्वा एवमवादीत्-श्रद्दधामि खलु हे भदन्त ! नैर्ग्रन्थ्यं प्रवचनं यावत् तद् तथैतद् यूयं वदथ नवरं=विशेषोऽयम्-यत्-अहम् अम्बापितरौ आपृच्छामि, ततः= मातापितरौ पृष्ट्वा खलु अहं देवानुप्रियाणामन्तिके यावत् प्रव्रजामि । भगवानाह- यथासुखं हे देवानुप्रिये ! । ततः खलु सा काली दारिका पार्श्वेन अर्हता पुरुषा

हृदय हुई। उसने उन पुरुषादानीय पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु को तीन बार वंदना नमस्कार किया। बाद में (वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते ! णिग्गथं पावयण जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी, तेणेव उवागच्छइ) वंदना नमस्कार करके उसने उन प्रभु से ऐसा कहा-हे भदन्त ! मैं आपके द्वारा प्रतिपादित निर्ग्रन्थ प्रवचन को विशेष श्रद्धा की दृष्टि से देखती हूँ आपने जैसा यह प्रतिपादित किया है वह वस्तुतः वैसा ही है। यह मुझे बहुत रुचा है। अतः मैं माता पिता से पूछती हूँ। उनसे पूछकर फिर आप देवानुप्रिय के पास आकर

હૃદય થઈ તેણે તે પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુને ત્રણ વાર વંદના અને નમસ્કાર કર્યા ત્યારબાદ

(वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी सद्दहामि णं भंते ! णिग्गथं पावयणं जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जं णवरं देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तएणं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए जाव पव्वयामि, अहासुहं देवाणुप्पिए ! तएणं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ जाव हियया पासं अरहं वदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणपवरं दुरुहइ दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ)

વંદના નમસ્કાર કરીને તેણે તે પ્રભુને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ભદન્ત ! તમારા વડે પ્રતિપાદિત નિર્ગ્રંથ પ્રવચનને હું વિશેષ શ્રદ્ધાની દૃષ્ટિએ જોઉં છું તમે જેવું આ પ્રતિપાદિત કર્યું છે ખરેખર તે તેવું જ છે અને આ ખૂબ જ ગમી ગયું છે એથી હું માતાપિતાને પૂછી લઉં છું તેમને પૂછીને

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके मुण्डाभूत्वा आगाराद् अनगारितां प्रव्रजितुम्=स्वीकर्त्तुम् । मातापितरौ कथयतः-यथासुखं हे देवानुप्रिये !=यथा रोचते तथा-कुरु किन्तु अस्मिन् कार्ये प्रतिबन्धः=प्रमादं मा कुरु । ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चयानन्तरं खलु स कालो गाथापतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः=अग्रे कालिकां दारिकां श्वेतपीतैः=रजतसुवर्णमयैः कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषितां करोति, कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनिकां शिबिकां दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्द्धं संपरिवृतः सर्वर्द्ध्या यावत्-वाद्य

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ-अतः मैं चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु के समीप मुंडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लूं। इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे कहा-(अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग सयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

શ્રવણથી હું આ સંસારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને જન્મ-મરણથી ભયભીત થઈ ગઈ છું એવી મારી ઈચ્છા છે કે હું તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે અર્હંત પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે મુંડિત થઈને અગારાવસ્થા ત્યજીને અનગારાવસ્થા સ્વીકારી લઉં. આ પ્રમાણે પોતાની કાલી દારિકાની વાત સાંભળીને માતાપિતાએ તેને કહ્યું —

(अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह, तएणं से काले गाहावई विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरियणं आमंतेइ आमंतित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेणं पुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणस्स पुरओ कालियं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करित्ता

कृत्वा एवमवादीत्-एवं खलु हे अम्बतातौ ! मया पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके धर्मः 'णिसंते' निशान्तः=श्रुतः, सोऽपि च धर्मः 'मे' मम 'इच्छिए' इष्टः= इच्छाविषयीभूतः, 'पडिच्छिए' प्रतीष्टः=पुनः पुनरभिलषितः 'अभिरुइए' अभिरुचितः=आस्वाद्यवस्तुवत्सर्वथाप्रियः, तत्=तस्मात् कारणात् खलु अहं हे अम्बतातौ ! संसारभयोद्विग्ना भीता जन्ममरणेभ्योऽहं इच्छामि खलु युष्माभ्याम्

बल० एवं वयासी-एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे णिसंते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए-तएणं अहं अम्मयाओ ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं-इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए) वहां आकर के वह आमलकल्प नगरी के बीचों बीच से होकर जहां वह बाह्य उपस्थान शाला थी-वहां आई-वहां आकर वह उस धार्मिक यानप्रवर से नीचे उतरी-नीचे उतर कर फिर बाद में वह जहां अपने माता पिता थे-वहां गई-वहां जाकर उसने अपने दोनों हाथों की अंजलि बनाकर और उसे मस्तक पर रखकर उनसे इस प्रकार कहा-हे मात तात ! सुनो मैंने अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ के मुख से धर्म सुना है-वह धर्म मुझे बहुत अच्छा लगा है, बार बार उस धर्म को सुनने की अभिलाषा हो रही है । जिस प्रकार आस्वाद्य वस्तु प्रिय लगती है उसी प्रकार वह धर्म मेरे लिये सब प्रकार से प्रिय लगा है। उसके सुनने से मैं हे मात तात ! इस संसार

अरहओ अंतिए धम्मे णिसंते से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए-तएणं अहं अम्मयाओ ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मणमरणाणं-इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुन्नाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए)

ત્યાં આવીને તે આમલકલ્પા નગરીની વચ્ચે થઈને જ્યાં તે બાહ્ય ઉપસ્થાન શાળા હતી ત્યાં આવી ત્યાં આવીને તે તે ધાર્મિક યાન પ્રવરમાંથી નીચે ઉતરી, નીચે ઉતરીને તે જ્યાં તેના માતાપિતા હતાં ત્યાં ગઈ ત્યાં જઈને પોતાના બંને હાથોની અંજલિ બનાવીને અને તેને મસ્તકે મૂકીને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે માતાપિતા ! સાંભળો, અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથના મુખથી મેં ધર્મનું શ્રવણ કર્યું છે, તે મને બહુ જ ગમી ગયું છે તે ધર્મને વારવાર સાંભળવાની ઈચ્છા થઈ રહી છે જેમ આસ્વાદ્ય વસ્તુ પ્રિય લાગે છે તેમજ તે ધર્મ મારા માટે બધી રીતે પ્રિય થઈ પડયો છે હે માતાપિતા ! તેના

भ्यनुज्ञाता सती पार्श्वस्याईतोऽन्तिके मुण्डाभूत्वा आगाराद् अनगारिता प्रव्रजितुम्=स्वीकर्तुम्। मातापितरौ कथयतः—यथासुखं हे देवानुप्रिये !=यथा रोचते तथा-कुरु किन्तु अस्मिन कार्ये प्रतिबन्धं=प्रमादं मा कुरु। ततः=स्वपुत्र्या दीक्षानिश्चया नन्तर खलु स काली गाथापतिर्विपुलम् अशनम् ४ अशनादि चतुर्विधमाहारम् उपस्कारयति, उपस्कार्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनम् आमन्त्रयति, आमन्त्र्य ततः पश्चात् स्नातः यावत् विपुलेन पुष्पवस्त्रगन्धमाल्यालङ्कारेण सत्कृत्य सम्मान्य तस्यैव मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनस्य पुरतः=अग्रे कालिका दारिका श्वेतपीतैः=रजतसुवर्णमयैः कलशैः स्नपयति, स्नपयित्वा सर्वालङ्कारविभूषिता करोति, कृत्वा पुरुषसहस्रवाहिनिका शिबिका दूरोहयति=आरोहयति, दूरोह्य मित्रज्ञातिनिजकस्वजनसम्बन्धिपरिजनेन सार्द्धं सपरिवृतः सर्वद्धर्या यावत्—वाद्य

के भय से उद्विग्न होकर जन्ममरण से भयभीत हो चुकी हूँ—अतः मै चाहती हूँ कि मैं आप से आज्ञा प्राप्त कर उन अर्हत पार्श्वनाथ प्रभु के समीप मुडित होकर अगारावस्था से अनगारावस्था स्वीकार कर लू। इस प्रकार अपनी काली दारिका की बात सुनकर माता पिता ने उससे कहा–(अहासुह देवाणुप्पिया। मा पडिबध करेह, तएण से काले गाहावई विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइ णियग सयणसबधिपरियण आमतेइ आमन्तित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विउलेण पुप्फवत्थगधमल्लालकारेण सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसबधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेया पीएहि कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता पुरिससहस्सवाहिणीय सीय दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइणियगसयण

શ્રવણથી હુ આ સસારના ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈને જન્મ-મરણથી ભયભીત થઈ ગઈ છુ એથી મારી ઇચ્છા છે કે હુ તમારી આજ્ઞા મેળવીને તે અર્હત પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે મુડિત થઈને અગારાવસ્થા ત્યજીને અનગારાવસ્થા સ્વીકારી લઉ આ પ્રમાણે પોતાની કાલી દારિકાની વાત સાભળીને માતાપિતાએ તેને કહ્યુ —

(अहासुह देवाणुप्पिया। मा पडिबध करेह, तएण से काले गाहावई विपुल असण ४ उवक्खडावेइ, उवक्खडावित्ता मित्तणाइणियगसयणसबधिपरियण आमतेइ आमन्तित्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव विपुलेण पुप्फवत्थगधमल्लालकारेणं सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्तणाइणियगसयणसबधिपरिजणस्स पुरओ कालिय दारिय सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ ण्हावित्ता सव्वालकारविभूसिय करेइ, करित्ता

मातानेकविधवादित्ररवेण सह आमलकल्पाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैवाम्रशालवनं चैत्य तत्रैवोपागच्छति, उपागम्य छत्रादिकान् तीर्थकरातिशयान्

सबंधिपरियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्प नयरिं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ) हे देवानुप्रिये! तुझे जिस तरह अच्छा लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर। इस तरह उस काल गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने मे दृढ निश्चयवाली जानकर विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर बाद में मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबन्धी परिजनों को आमंत्रित किया आमंत्रित करके बाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प, वस्त्र, गंध माल्य, एवं अलंकारों से सत्कार सन्मान करके उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबन्धी, परिजनों के साथ काली दारिका का श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-बाद में उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-फिर पुरुष सहस्रवाहिनी शिबिका पर उसे चढवाया। चढवाकर फिर उन मित्र, ज्ञाति निजक, स्वजन संबन्धी परिजनों से घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, वाद्यमान अनेक विध बाजो की ध्वनि के साथ २ आमलकल्पा नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर निकला। (णिगच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए

पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइ, णियगसयणसंबंधि परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं आमलकप्प नयरिं मज्झं मज्झेणं णिगच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયે! તને જેમ સારૂ લાગે તેમ કર આ કામમા પ્રમાદ કરીશ નહિ આ પ્રમાણે તે કાલગાથાપતિએ પોતાની પુત્રીનો દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો મક્કમ વિચાર જાણીને પુષ્કળ પ્રમાણમા અશન વગેરે ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવ્યા ત્યારબાદ મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને આમંત્રિત કર્યા આમંત્રિત કરીને તેણે સ્નાન કરીને પુષ્કળ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય અને અલંકારો વડે સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી, પરિજનોની સાથે કાલી દારિકાનો સફેદ, અને પીળા કળશો વડે અભિષેક કર્યો ત્યારબાદ તેને સમસ્ત અલંકારો વડે વિભૂષિત કરી અને ત્યારપછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર તેને ચઢાવી ચઢાવીને તેણે મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધી, પરિજનોની સાથે પરિવેષ્ટિત થઈને પોતાની સમસ્ત ઋદ્ધિની સાથે, ઘણા વાજાઓના ધ્વનિની સાથે સાથે આમલકલ્પા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઈને નીકળ્યો.

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिबिकां स्थापयति, स्थापयित्वा कालिकां दारिकां शिबिकातः प्रत्यवरोहयति। ततः खलु तां कालिकां दारिकाम् अम्बापितरौ पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः! काली दारिका आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमङ्ग! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ) निकलकर वह वहां गया कि जहां वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था। वहां जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छत्रादिक अतिशयों को देखा। (पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियं दारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं तं कालीयं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी) देखकर उसने उस पुष्प सहस्रवाहिनी शिबिका को खडी कर दिया। खड़ी करके उसमें से काली दारिका को नीचे उतारा बाद में वे माता पिता उस कालिक दारिका को आगे करके जहां पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहां गये। वहां जाकर उन्हों ने उनको वंदना की-नमस्कार किया। वंदना नमस्कार करके बाद में उन्हों ने इस प्रकार प्रभु से कहा-(एवं खलु देवाणुप्पिया! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता, जाव किमंगपुणपासणयाए! एस

(णिग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ)

નીકળીને તે ત્યાં ગયો કે જ્યાં તે આમ્રશાલ વન નામે ઉદ્યાન હતું ત્યાં જઈને તેણે તીર્થંકર પ્રકૃતિના ઉદયથી અસ્તિત્વમાં આવતા છત્ર વગેરે અતિશયોને જોયા.

(पासित्ता सीयं ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं तं कालियं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी)

જોઈને તેણે તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીને રોકી રોકીને તેમાંથી કાલી દારિકાને નીચે ઉતારી ત્યારપછી તે માતાપિતા તે કાલીક દારિકાને આગળ કરીને જ્યાં પુરુષાદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વિરાજમાન હતા ત્યાં ગયા ત્યાં જઈને તેમણે તેમને વંદના કરી, નમસ્કાર કર્યા વંદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમણે પ્રભુને વિનંતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

(एवं खलु देवाणुप्पिया! कालीदारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता, जाव किमंग०

मानानेकविधवादित्ररवेण सह आमलकल्पाया नगर्या मध्यमध्येन निर्गच्छति, निर्गत्य यत्रैवाम्रशालवनं चैत्यं तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य छत्रादिकान् तीर्थकरातिं

सबधिपरियणेण सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण आमलकप्प नयरिं मज्झ मज्झेण णिगच्छइ) हे देवानुप्रिये! तुझे जिस तरह अच्छा लगे वैसा तू कर-इस कार्य में प्रमाद न कर। इस तरह उस काल गाथापति ने अपनी पुत्री को दीक्षा ग्रहण करने मे दृढ निश्चयवाली जानकर विपुल मात्रा में अशनादि रूप चतुर्विध आहार निष्पन्न कर वाया-वाद में मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबन्धी परिजनों को आमन्त्रित किया आमन्त्रित करके बाद में उसने स्नात होकर विपुल पुष्प, वस्त्र, गंध माल्य, एवं अलंकारों से सत्कार सन्मान करके उन मित्र, ज्ञाति, निजक, स्वजन, संबन्धी, परिजनों के साथ काली दारिका का श्वेत पीत कलशों द्वारा अभिषेक किया-बाद में उसे समस्त अलंकारों से विभूषित किया-फिर पुरुषसहस्रवाहिनी शिविका पर उसे चढवाया। चढवाकर फिर उन मित्र, ज्ञाति निजक, स्वजन संबन्धी परिजनों से घिरा हुआ होकर वह अपनी समस्त ऋद्धि के अनुसार, वाद्यमान अनेक विध बाजों की ध्वनि के साथ २ आमलकल्पा नगरी के ठीक बीचों बीच से होकर निकला। (णिगच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए

पुरिससहस्सवाहिणीय सीयं दुरोहेइ, दुरोहित्ता मित्तणाइ, णियगसयणसंबंधि परियणेण सद्धिं सपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेण आमलकप्प नयरिं मज्झ मज्झेण णिगच्छइ)

હે દેવાનુપ્રિયે! તને જેમ સારૂં લાગે તેમ કર આ કામમાં પ્રમાદ કરીશ નહિ આ પ્રમાણે તે કાલગાથાપતિએ પોતાની પુત્રીનો દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો મક્કમ વિચાર જાણીને પુષ્કળ પ્રમાણમાં અશન વગેરે ચાર જાતના આહારો તૈયાર કરાવડાવ્યા ત્યારબાદ મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી પરિજનોને આમંત્રિત કર્યા આમંત્રિત કરીને તેણે સ્નાન કરીને પુષ્કળ પુષ્પ, વસ્ત્ર, ગંધ, માલ્ય અને અલંકારો વડે સત્કાર તેમજ સન્માન કરીને તે મિત્ર, જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન, સંબંધી, પરિજનોની સાથે કાલી દારિકાનો સફેદ અને પીળા કળશો વડે અભિષેક કર્યો ત્યારબાદ તેને સમસ્ત અલંકારો વડે વિભૂષિત કરી અને ત્યારપછી પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખી ઉપર તેને ચઢાવી ચઢાવીને તેણે મિત્ર જ્ઞાતિ, નિજક, સ્વજન સંબંધી, પરિજનોની સાથે પરિવેષ્ટિત થઈને પોતાની સમસ્ત ઋદ્ધિની સાથે, ઘણા વાજાઓના ધ્વનિની સાથે સાથે આમલકલ્પા નગરીની બરાબર વચ્ચે થઈને નીકળ્યો.

शयान् पश्यति, दृष्ट्वा शिबिका स्थापयति, स्थापयित्वा कालिका दारिकां शिबिकातः प्रत्यवरोहयति। ततः खलु तां कालिका दारिकाम् अम्बापितरौ पुरतः कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य वन्देते नमस्यतः, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादिष्टाम्-एवं खलु हे देवानुप्रियाः ! काली दारिका आवयोर्दुहिता इष्टा कान्ता यावत् उदुम्बरपुष्पमिव श्रवणायापि दुर्लभा किमङ्ग ! पुनः

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ) निकलकर वह वहा गया कि जहा वह आम्रशालवन नाम का उद्यान था। वहाँ जाकर उसने तीर्थंकर प्रकृति के उदय से होनेवाले छत्रादिक अतिशयों को देखा। (पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारियं सीयाओ पच्चोरुहइ, तएण त कालीय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एवं वयासी) देखकर उसने उस पुरुप सहस्रवाहिनी शिबिका को खडी कर दिया। खड़ी करके उसमें से काली दारिका को नीचे उतारा बाद मे वे माता पिता उस कालिक दारिका को आगे करके जहा पुरुषादानीय अर्हत प्रभु पार्श्वनाथ विराजमान थे वहाँ गये। वहा जाकर उन्हों ने उनको वदना की-नमस्कार किया। वदना नमस्कार करके बाद में उन्हों ने इस प्रकार प्रभु से कहा-(एव खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमगपुणपासणयाए ! एस

(णिग्गच्छित्ता जेणेव अवसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताइए तित्थगराइसए पासइ)

નીકળીને તે ત્યા ગયો કે જ્યા તે આમ્રશાલ વન નામે ઉદ્યાન હતુ ત્યા જઈને તેણે તીર્થંકર પ્રકૃતિના ઉદયથી અસ્તિત્વમા આવતા છત્ર વગેરે અતિશયોને જોયા

(पासित्ता सीय ठावेइ, ठावित्ता कालियदारिय सीयाओ पच्चोरुहइ, तएणं त कालिय दारिय अम्मापियरो पुरओ काउ जेणेव पासे अरहा पुरिसा० तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता वदइ, नमसइ, व दित्ता नमसित्ता एव वयासी)

જોઈને તેણે તે પુરુષ સહસ્રવાહિની પાલખીને રોકી રોકીને તેમાથી કાળી દારિકાને નીચે ઉતારી ત્યારપછી તે માતાપિતા તે કાળીક દારિકાને આગળ કરીને જ્યા પુરુષદાનીય અર્હંત પ્રભુ પાર્શ્વનાથ વિરાજમાન હતા ત્યા ગયા ત્યા જઈને તેમણે તેમને વદના કરી, નમસ્કાર કર્યા વદના તેમજ નમસ્કાર કરીને તેમણે પ્રભુને વિનતી કરતા આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—

(एव खलु देवाणुप्पिया ! कालीदारिया अम्ह धूया इट्ठा कता, जाव किमग

' पासणयाए ' दर्शनाय ?, एषा खलु हे देवानुप्रियाः । संसारभयोद्विग्ना इच्छति देवानुप्रियाणामन्तिके मुण्डाभूत्वा यावत्प्रव्रजितु, तद् एवां खलु देवानुप्रियाणा शिष्याभिक्षा दद्मः, ' पडिच्छंतु ' प्रतीच्छन्तु=स्वीकुर्वन्तु खलु हे देवानुप्रियाः ! शिष्याभिक्षाम् । भगवानाह—यथासुख हे देवानुप्रियौ ! मा प्रतिबन्ध कुरुतम् । ततः खलु काली कुमारी पार्श्वमर्हन्त वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा उत्तरपौरस्त्य

ण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाण ! अतिए मुडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, त एय ण देवाणुप्पियाण सिस्सिणिभिक्ख दलयामो पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख) हे देवानुप्रिय ! यह हमारी काली दारिका नामकी पुत्री है । यह हमें बहुत अधिक इष्टा, कान्ता यावत् उदम्बर पुष्प के समान सुनने के लिये भी दुर्लभा है—तो फिर हे अग ! इसके दर्शन की तो बात ही क्या कहना है । हे देवानु प्रिय ! यह ससारभय से उद्विग्न हो रही है अतः आप देवानुप्रिय के पास मुडित होकर यावत् सयम लेना चाहती है । इस लिये हम दोनों आपके लिये शिष्या की भिक्षा दे रहे है—आप देवानुप्रिय ! हमारी इस शिष्यारूप भिक्षा को स्वीकार करें (अहासुह देवाणुप्पिया ! मा पडिबध करेह) इस प्रकार उन दोनों का कथन सुनकर प्रभु ने उनसे कहा हे देवानुप्रियो ! आप को जैसा सुख हो—वैसा आप करो—इसमें विलम्ब करने से लाभ नही हैं । (तएण) इसके बाद (काली कुमारी पास

पुण पासणयाए ? एमण देवाणुप्पिया ! ससारभउव्विग्गा, इच्छइ, देवाणुप्पियाण ! अतिए मुडा भवित्ता जाव पव्वइत्तए, त एय ण देवाणुप्पियाण सिस्सिणिभिक्ख दलयामो पडिच्छतु ण देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्ख)

હે દેવાનુપ્રિય ! આ અમારી કાલી દારિકા નામે પુત્રી છે અમારા માટે આ બહુ જ વધારે ઈષ્ટા, કાંતા યાવત્ ઉદુમ્બર પુષ્પની જેમ નામ શ્રવણમાં પણ દુર્લભા છે તો પછી એના દર્શનની તો વાત જ શી કરવી ? હે દેવાનુપ્રિય ! આ સંસાર ભયથી ઉદ્વિગ્ન થઈ રહી છે એથી આપ દેવાનુપ્રિય પાસેથી મુંડિત થઈને યાવત્ સંયમ ગ્રહણ કરવા ઇચ્છે છે એથી અમે બંને આપના માટે આશિષ્યાની ભીક્ષા અર્પણ કરીએ છીએ આપ દેવાનુપ્રિય અમારી આ શિષ્યારૂપી ભિક્ષાનો સ્વીકાર કરો (अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंध करेह) આ પ્રમાણે તેઓ બંનેનું કથન સાંભળીને પ્રભુએ તેમને કહ્યું કે હે દેવાનુપ્રિયો ! તમને જેમ સુખ પ્રાપ્ત થાય તેમ કરો આમાં વિલંબ કરવાથી લાભ નથી (तएणं) ત્યારપછી

दिग्भागम् अवक्रामति, अवक्राम्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव आभरणमाल्यालङ्कारम् अवमुञ्चति=अवतारयति, अवमुच्य स्वयमेव=स्वहस्तेनैव लोच=केशलुञ्चन करोति, कृत्वा यत्रैव पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयस्तत्रैवोपागच्छति, उपागत्य पार्श्वमर्हन्त त्रिः कृत्वो वन्दते नमस्यति, वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत्–आदीप्तः खलु हे भद न्त ! लोक' एवम्=अनेन प्रकारेण यावत्–एषाऽपि स्वयमेव पार्श्वप्रभुणा प्रव्राजिता ।

अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम दिसिभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता, सयमेव लोय करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी) काली कुमारी ने पार्श्वनाथ अरिह त प्रभु को वदना एव नमस्कार किया–। वदना नमस्कार करके फिर वह उत्तर पौरस्त्य दिग्भाग ईशान कोण की ओर गई। वहा जाकर उसने अपने आप आभरण माल्य एव अलकारों को उतार दिया। उतार कर अपने हाथो से उसने बालो का लुचन किया–लुचन करके फिर वह जहां पुरुषादानीय पार्श्वनाथ प्रभु विराजमान थे वहां आई– वहां आकर उसने पार्श्वनाथ अर्हत को तीनबार वदन एव नमस्कार किया और वदना नमस्कार कर फिर वह उनसे इस प्रकार कहने लगी –(आलित्तेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव सयमेव पव्वाविया–

(काली कुमारी पास अरह वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता, उत्तरपुरत्थिम दिसिभाग अवक्कमइ, अवक्कमित्ता, सयमेव आभरणमल्लालकार ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोय करेइ, करित्ता जेणेव पासे अरिहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पास अरह तिक्खुत्तो वदइ, नमसइ, वदित्ता नमसित्ता एव वयासी)

કાલી કુમારીએ પાર્શ્વનાથ અરિહંત પ્રભુને વદના અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તે ઉત્તર પૌરસ્ત્ય દિગ્ભાગ ઈશાન કોણની તરફ ગઇ ત્યાં જઈને તેણે પોતાની મેળે જ આભરણ, માલ્ય અને અલકારોને ઉતાર્યા ઉતારીને પોતાના હાથો વડે જ તેણે વાળોનું લુચન કર્યું લુચન કરીને તે જ્યા પુરુષાદાનીય પાર્શ્વનાથ પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યા આવી ત્યા આવીને તેણે પાર્શ્વનાથ અર્હતને ત્રણ વાર વદન અને નમસ્કાર કર્યા વદના અને નમસ્કાર કરીને તે તેમને આ પ્રમાણે વિનતી કરવા લાગી કે—

(आलित्तेण भते ! लोए एव जहा देवाणदा जाव सयमेव पव्वाविया–तएण

ततः खलु पार्श्वोऽर्हन् पुरुषादानीयः कालीं स्वयमेव पुष्पचूलायै आर्यायै शिष्यात्वेन ददाति। ततः खलु सा पुष्पचूला आर्या कालीं दारिकां स्वयमेव प्रव्राजयति यावत्-सा काली तदाज्ञाम् उपसम्पद्य खलु विहरति। ततः सा काली-आर्या जाता, कीदृशी ? त्याह-ईर्यासमिता यावत्-गुप्तब्रह्मचारिणी। तत खलु सा काली आर्या पुष्पचूलाया आर्याया अन्तिके सामायिकादीनि एकादशाङ्गानि अधीते,

---

तएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसंपज्जित्ताण विहरइ) हे भदंत! यह लोक आदीप्त हो रहा है-इस प्रकार से पार्श्वनाथ प्रभु के द्वारा स्वयं ही दीक्षित की गई। इसके बाद उन पुरुषादानीय पार्श्व प्रभु ने काली को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या को शिष्याणीरूप से प्रदान कर दिया। पुष्पचूला आर्या ने उसे काली को इस प्रकार दीक्षित करवा कर अपनी शिष्याणीरूप में उसे स्वीकार कर लिया-यावत् वह काली उस आर्या की आज्ञानुसार अपनी प्रवृत्ति करने लग गई। (तएण सा काली अज्जा जाव) इस तरह वह काली अब आर्या हो गई। (ईरिया समिया जाव गुत्तबंभयारिणी तएणं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए

पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ, तएण सा पुप्फचूला अज्जा कालिं दारियं सयमेव पव्वावेइ-जाव उवसंपज्जित्ताण विहरइ)

हे भदन्त! आ लोक आदीप्त थई रह्यो छे आ प्रमाणे आ पण पार्श्वनाथ प्रभु वडे जाते ज दीक्षित करवामां आवी त्यारपछी ते पुरुषादानीय पार्श्व प्रभुए कालीने दीक्षित करीने पुष्पचूला आर्याने शिष्याना रूपमां आपी दीधी पुष्पचूला आर्याए ते कालीने आ प्रमाणे दीक्षित करावीने पोतानी शिष्याना रूपमां तेनो स्वीकार करी लीधो यावत् ते काली ते आर्यानी आज्ञा मुजब पोतानी प्रवृत्ति करवा लागी (तएण सा काली अज्जा जाव) आ रीते ते काली हवे आर्या थई गई

(ईरिया समिया जाव गुत्तबंभयारिणी, तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए समाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं च उ --- विहरइ)

वहुभिः चतुर्थ यावत्-षष्ठाष्टमदशमद्वादशभिस्तपःकर्मभिरात्मान भावयन्ती विहरति ॥ सू०२ ॥

मूलम्-तएणं सा काली अज्जा अन्नया कयाइं सरीरवाउसिया जाया यावि होत्था, अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ पाए धोवइ सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणतराइं धोवइ कक्खं तराणि धोवइ गुज्झंतराइं धोवइ जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेइए त पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा आसयइ वा सयइ वा, णिसीहइ वा, तएणं सा पुप्फचूला अज्ज कालि अज्जं एव वयासी-नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया ! समणीणं णिग्गंथीणं सरीरवाउसियाण होत्तए तुमं च णं देवाणुप्पिया ! सरीरवाउसिया जाया अभिक्खण२ हत्थे धोवसि जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि, तएणं सा काली

सामाइयमाइयाइ एक्कारसअगाइ अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ) उसका रहन शयन आदि सब व्यवहार नियमित एव सीमित हो गया। चलती तो वह ईर्या समिति से मार्ग का संशोधन कर चलती। यावत् वह गुप्त ब्रह्मचारिणी बन गई। ९ नौ कोटी से ब्रह्मचर्यव्रत की सरक्षिका हो गई। इसके बाद उस काली आर्या ने पुष्पचूला आर्या के पास सामायिक आदि ग्यारह अगो का अध्ययन किया-और अनेक चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम दशम, द्वादश, तपस्याओं की आराधना से अपने आपको भावित किया ॥ सूत्र ३ ॥

तेनु रहेवुं, सूवु वगेरे बधु काम नियमित अने सीमित थई गयु -चालती त्यारे ते ईर्या-समितिथी मार्गनु सशोधन करीने चालती यावत् ते गुप्त ब्रह्मचारिणी बनी गई ९ कोटिथी ब्रह्मचर्य व्रतनी ते सरक्षिका थई गई त्यारपछी ते काली आर्याओ पुष्पचूला आर्यानी पासे सामायिक वगेरे अगियार अगोनु अध्ययन कर्युं अने घणा चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, दशम, द्वादश तपस्याओनी आराधनाथी पोतानी जातने भावित करी ॥ सूत्र ३ ॥

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमण्णंति अभिक्खणं२ एयमट्ठ निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणिए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयवसा जप्पिभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवसा जाया, तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता कल्लं जाव जलते पाडिएक्कं उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा, णीसेहेइ वा, तएणं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुलस्स असंखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए काली [illegible] वण्णा,

तएणं सा कालीदेवी आहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामण पज्जत्तीए०। तएणं सा काली-देवी चउण्हं सामाणियसाहस्सीण जाव अण्णेसिं च बहूणं काल-वडेंसगभवणवासीण असुरकुमाराण देवाण य देवीण य आहेवच्च जाव विहरइ, एवं खलु गोयमा! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए णं भंते! देवीए केवइय काल ठिई पन्नत्ता ?, गोयमा! अड्ढाइज्जाइ पलिओवमाइं ठिई पन्नत्ता, काली णं भंते! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ कहिं उववज्जिहिइ ?, गोयमा! महा-विदेहे वासे सिज्झिहिइ, एव खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्तिबेमि। धम्मकहाणं पढमज्झयणं समत्त ॥ सू० ४ ॥

टीका—'तएण सा' इत्यादि–ततः खलु सा काली आर्या अन्यदा कदा-चित् 'सरीरवाउसिया' शरीरा बाकुशिका=शरीरसंस्करणशीला जाता चाप्या-सीत्। अथ सा किं करोती? त्याह–अभीक्ष्णं२ वारंवार हस्तौ धावति, पादौ धावति,

---

'तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ,' इत्यादि।

टीकार्थ—(तएण) इसके बाद (सा काली अज्जा) वह काली आर्या (अन्नया कयाइ) किसी एक समय (सरीरवाउसिया) शरीर को सस्कारित करने के स्वभाववाली बन गई इसलिये वह (अभिक्खण २

'तएण सा काली अज्जा अन्नया कयाइ' इत्यादि—

टीकार्थ—(तएण) त्यारपछी (सा काली अज्जा) ते काली आर्या (अन्नया कयाइ) कोई એક વખતે (सरीरवाउसिया) શરીરને સસ્કારિત કરવાના સ્વભાવવાળી બની ગઈ, એટલા માટે તે—

(अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ, पाए धोवेइ सीसं धोवइ, मुहं धोवइ, थणंतराइं धोवइ,

अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं२ हीलेंति णिंदंति खिंसंति गरिहंति अवमण्णांति अभिक्खण२ एयमट्ठ निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं२ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्ज माणिए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था जया णं अहं अगारवासमज्झे वसित्था तया णं अहं सयवसा जप्पिभिइं च णं अह मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अह परवसा जाया, त सेय खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्कं उवस्सय उवसंपज्जित्ताणं विहरित्तएत्तिकट्टु एवं सपेहेइ सपेहित्ता कल्ल जाव जलते पाडिएक उवस्सयं गिण्हइ, तत्थ णं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खणं२ हत्थे धोवइ जाव आसयइ वा सयइ वा, णीसेहेइ वा, तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलाविहारी अहाछदा अहाछंदविहारी संसत्ता ससत्ताविहारी बहूणि वासाणि सामन्नपरियागं पाउणइ पाउणित्ता अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ झूसित्ता तीसं भत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइय अपाडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचपाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुलस्स असखेज्जइ भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदे[वी]त्ता[ए] उववण्णा,

निर्ग्रन्थीना शरीरबाकुशिका जाताऽसि, यतस्त्वम्-अभीक्ष्ण २ हस्तौ धावसि यावत् 'आसयाहि वा' आस्से=उपविशसि, 'सयाहि वा' शेषे=शयनं करोपि 'णीसीहियाहि वा' निषेधयसि=स्वाध्याय करोपि, 'त' तत्=तस्मात् कारणात् त्व हे देवानुप्रिये! एतत् स्थानम्-'आलोएहि' आलोचय यावत् प्रायश्चित्त प्रतिपद्यस्व। मूले-सम्बन्धसामान्ये षष्ठी। ततः खलु सा काली आर्या

देवाणुप्पिया! समणी ण णिग्गथीण सरीरबाउसियाणं होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया! सरीरबाउसिया जाया-अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुमं देवाणुप्पियाए! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि) हे देवानुप्रिये! निर्ग्रन्थ श्रमणियों को शरीरबकुश होना कल्पित नहीं है। परन्तु तुम तो हे देवानुप्रिये! शरीरबकुश बन रही हो। बार २ हाथों को धोती हो यावत् जहां तुम्हें उठना बैठना होता है, शयन करना होता है, स्वाध्याय करना होता है उस स्थान को पहिले से ही सिंचित कर लेती हो तब जाकर वहां उठती बैठती हो, शयन करती हो, स्वाध्याय करती हो। इसलिये हे देवानुप्रिये! तुम इस स्थान की आलोचना करो यावत् प्रायश्चित्त ग्रहण करो। (तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ, जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ

(नो खलु कप्पइ, देवाणुप्पिया! समणीण णिग्गथीण सरीरबाउसियाणं होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया! सरीर बाउसिया जाया अभिक्खण २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा, णिसीहियाहि वा त तुम देवाणुप्पिए! एयस्स ठाणस्स आलोए हि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि)

હે દેવાનુપ્રિયે! નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને શરીરબકુશ થવુ કલ્પિત નથી, પરતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે! શરીરબકુશ થઇ રહી છો વારવાર હાથોને ધૂઓ છો યાવત્ જ્યા તમારે ઉઠવા બેસવાનુ હોય છે, સુવાનુ હોય છે, સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો, અને ત્યારપછી તમે ત્યા ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો એથી હે દેવાનુપ્રિયે! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો.

(तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठई, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्ज अभि-

शीर्षं धावति, मुखं धावति स्तनान्तराणि धावति, कक्षान्तराणि धावति, गुह्यान्तराणि धावति, यत्र यत्रापि च खलु 'ठाणं वा' स्थानम्=उपवेशनस्थलम् 'सेज्जं वा' शय्या=शयनभूमिम्, 'णिसीहियं वा' नैषधिकीं=स्वाध्यायभूमिम् 'चेएइ' चेतयते=करोति 'तं' तत्=स्थानादिकं 'पुव्वामेव' पूर्वमेव=उपवेशनादि क्रियायाः पूर्वं 'आसयइ वा' आस्ते=उपविशति, 'सयइ वा' शेते=शयनं करोति, 'णिसीहइ वा' निषेधयति=स्वाध्यायं करोति वा। ततः खलु सा पुष्पचूलाऽऽर्या कालीमार्यामेवमवादीत्-नो खलु कल्पते हे देवानुप्रिये! श्रमणीनां

हत्थे धोवइ पाए धोवइ, सीसं धोवइ मुहं धोवइ थणंतराइं धोवइ, कक्खंतराणि धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेइए-तं पुव्वामेव अब्भुक्खेत्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइवा) बार २ हाथों को धोने लग गई, पैरों को धोने लग गई, शिर को धोने लग गई, मुंह को धोने लग गई, स्तनान्तरों को-स्तनों के मध्यभाग को-धोने लग गई, कक्षान्तरों को-कांखों के मध्यभाग को-धोने लग गई, गुह्यभागों को-गुप्तांगों को धोने लग गई। जहां २ वह बैठने का स्थान, शयन, स्थान, स्वाध्याय करने का स्थान नियत करती उसे पहिले से ही वह पानी से सिंचित कर देती-बाद में वह वहां बैठती शयन करती, स्वाध्याय करती, (तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी) उस काली आर्या की इस स्थिति को देखकर पुष्पचूला आर्या ने उसे इस प्रकार कहा-(नो खलु कप्पइ,

कक्खंतराणी धोवइ, गुज्झंतराइं धोवइ, जत्थ२ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेएई तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओपच्छा आसयइ, वा सयइ वा णिसीहइ वा)

વારવાર હાથોને ધોવા લાગી, પગોને ધોવા લાગી, માથાને ધોવા લાગી, મુખને ધોવા લાગી, સ્તનાન્તરને-સ્તનના વચ્ચેના સ્થાનને ધોવા લાગી, કક્ષાન્તરોને-બગલોના મધ્ય ભાગને ધોવા લાગી, ગુહ્ય ભાગોને-ગુહ્યાંગોને ધોવા લાગી જ્યાં જ્યાં તેને બેસવાનું સ્થાન, શયનસ્થાન, સ્વાધ્યાય કરવાનું સ્થાન નક્કી કરતી તો તેને પહેલેથી જ તે પાણીથી સિંચિત કરી દેતી, ત્યારપછી તે ત્યાં બેસતી, શયન કરતી, સ્વાધ્યાય કરતી (तएणं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी) તે કાલી આર્યાની આવી સ્થિતિ જોઈને પુષ્પચૂલા આર્યાએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યું કે—

निर्ग्रन्थीना शरीरवाकुशिका जाताऽसि, यतस्त्वम्-अभीक्ष्णं २ हस्तौ धावसि यावत् ' आसयाहि वा ' आस्से=उपविशसि, ' सयाहि वा ' शेपे=शयन करोषि ' णीसीहियाहि वा ' निषेधयसि=स्वाध्याय करोषि, ' त ' तत्=तस्मात् कारणात् त्व हे देवानुप्रिये ! एतत् स्थानम्-' आलोएहि ' आलोचय यावत् प्रायश्चित्त प्रतिपद्यस्व । मूले-सम्बन्धसामान्ये षष्ठी । ततः खलु सा काली आर्या

देवाणुप्पिया ! समणी ण णिग्गथीण सरीरवाउसियाण होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया ! सरीरवाउसिया जाया-अभिक्खणं २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा णिसीहियाहि वा त तुम देवाणुप्पियाए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पायच्छित्तं पडिवज्जाहि) हे देवानुप्रिये ! निर्ग्रन्थ श्रमणियों को शरीरवकुश होना कल्पित नहीं हैं । परन्तु तुम तो हे देवानुप्रिये ! शरीरवकुश बन रही हो । बार २ हाथो को धोती हो यावत् जहा तुम्हें उठना बैठना होता है, शयन करना होता हैं, स्वाध्याय करना होता है उस स्थान को पहिले से ही सिंचित कर लेती हो तब जाकर वहाँ उठती बैठती हो, शयन करती हो, स्वाध्याय करती हो । इसलिये हे देवानुप्रिये ! तुम इस स्थान की आलोचना करो यावत् प्रायश्चित्त ग्रहण करो । (तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ, जाव तुसिणीया सचिट्ठइ, तएणं ताओ पुप्फचूलाओ

(नो खलु कप्पइ, देवाणुप्पिया ! समणीण णिग्गथीण सरीरवाउसियाणं होत्तए-तुम च ण देवाणुप्पिया ! सरीर वाउसिया जाया अभिक्खण २ हत्थे धोवसि, जाव आसयाहि वा सयाहि वा, णिसीहियाहि वा त तुम देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोए हि जाव पायच्छित्त पडिवज्जाहि)

હે દેવાનુપ્રિયે ! નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓને શરીરવકુશ થવું કલ્પિત નથી, પરંતુ તમે તો હે દેવાનુપ્રિયે ! શરીરવકુશ થઈ રહી છો વારવાર હાથોને ધૂઓ છો યાવત્ જ્યા તમારે ઉઠવા બેસવાનુ હોય છે, સૂવાનુ હોય છે, સ્વાધ્યાય કરવો હોય છે તે સ્થાનને પહેલા તમે પાણીથી સિંચિત કરી લો છો, અને ત્યારપછી તમે ત્યા ઉઠો-બેસો છો, સૂવો છો અને સ્વાધ્યાય કરો છો એથી હે દેવાનુપ્રિયે ! તમે આ સ્થાનની આલોચના કરો યાવત્ પ્રાયશ્ચિત્ત ગ્રહણ કરો.

(तएण सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठ नो आढाइ जाव तुसिणीया संचिट्ठइ, तएण ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्ज अभि

पुष्पचूलाया आर्याया एवमर्थं 'नो आढाइ' नो आद्रियते=न मन्यते यावत् 'तुसिणीया' तूष्णीका=समौना सतिष्ठते। ततः खलु ताः पुष्पचूला आर्याः कालीमार्याम् 'अभिक्खणं२' अभीक्ष्णं२=वार वार 'हीलेंति' हिलन्ति=जन्मकर्मोद्घाटनपूर्वक निर्भर्त्सयन्ति 'णिंदति' निन्दन्ति=कुत्सितशब्दपूर्वक दोषोद्घाटनेन अनाद्रियन्ते, 'खिसंति' खिसन्ति=हस्तमुखादिविकारपूर्वकमवमन्यन्ते, अपमान कुर्वन्ती त्यर्थः 'गरिहंति' गर्हन्ते=गुर्वादिसमक्ष दोषाविष्करणपूर्वक तिरस्कुर्वन्ति, 'अवमण्णंति' अवमन्यन्ते=रूक्षवचनादिभिरपमान कुर्वन्ति, तथा-अभीक्ष्णमभीक्ष्णम् वारवार एतमर्थं=शरीरसंस्करणरूप निवारयन्ति। ततः खलु तस्याः काल्या आर्यायाः श्रम

अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं २ हीलेंति, णिंदंति, खिसंति, गरिहंति अवमण्णंति, अभिक्खणं २ एयमट्ठं निवारेंति, तण्णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था) उस काली आर्याने पुष्पचूला आर्याके इस कथन रूप अर्थको नहीं माना। केवल वह यावत् चुपचाप ही रही। उत्तरमें जब उसने उनसे कुछ नहीं कहा-तब उस पुष्पचूला आर्या 'हीलंति' काली आर्याकी वार२ जन्मकर्म उद्घाटन पूर्वक भर्त्सना (तिरस्कार) करना प्रारंभ कर दिया। 'निंदति' कुत्सित शब्दोच्चारण पूर्वक दोषोद्घाटन करते हुए वे उसकी वार २ निंदा करने लगीं। 'खिसंति' हस्त, मुख, आदि के विकार प्रदर्शन पूर्वक वे उसका अपमान करने लग गई। 'गरिहंति' गुरु आदिजनों के समक्ष दोषों को प्रकट करके वे उसका तिरस्कार करने लगी। तथा "अवमण्णंति" रूक्षवचन आदि बोल २ कर उसका अपमान भी करने लग गइ।

कज्जणं २ हीलेंति णिंदंति, खिसंति, गरिहंति अवमण्णंति, अभिक्खणं २ एय मट्ठं निवारेंति, तएणं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं णिग्गंथीहिं अभिक्खणं २ हीलिज्जमाणीए जाव वारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था)

તે કાલી આર્યાએ પુષ્પચૂલા આર્યાના આ કથન રૂપ અર્થનો સ્વીકાર કર્યો નહિ ફક્ત તે મૂગી થઈને જ બેસી રહી જવાબમા જ્યારે તેણે તેમને કંઈ જ કહ્યુ નહિ ત્યારે પુષ્પચૂલા આર્યાએ કાલી આર્યાની વારવાર જન્મ, કર્મ, ઉદ્દ્ઘાટનપૂર્વક ભર્ત્સના કરવા માંડી કુત્સિત શબ્દોચ્ચારણથી દોષોદ્ઘાટન કરતી તે તેની વારવાર નિંદા કરવા લાગી હાથ, મુખ વગેરેને વિકૃત કરીને તે તેમનુ અપમાન કરવા લાગી ગુરૂ વગેરેની સામે દોષોને પ્રકટ કરીને તે તેમનો તિરસ્કાર કરવા લાગી તેમજ રૂક્ષ વચનો વગેરે બોલીને તેનુ અપમાન પણ કરવા લાગી અને સાથે સાથે તે આર્યા તેને વારવાર શરીર-સંસ્કાર કરવાની મનાઈ પણ કરતી રહી આ પ્રમાણે નિર્ગ્રંથ શ્રમણીઓ વડે વારવાર

भीभिः निर्ग्रन्थीभिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हिल्यमानायाः यावत्–वार्यमाणाया अय-मेतद्रूप 'अज्झत्थिए' आध्यात्मिकः=आत्मगतविचारः यावत्–मनोगतः सङ्कल्पः समुदपद्यत यदा खलु अहम् अगारवासमध्ये 'वसित्था' उषिता=न्यवस तदा खलु अह 'सयवसा' स्वयंवशा=स्वतन्त्रा आसम्, यत्प्रभृति च खलु अह मुण्डाभूत्वा अगारात् अनगारितां प्रव्रजिताऽस्मि तत्प्रभृति च खलु अह परवशा जाताऽस्मि 'त' तत्=तस्मात् श्रेयः खलु मम कल्ये प्रादुष्प्रभातायां रजन्या यावत् सूर्ये ज्व-लति=सूर्योदये सति 'पाडिक्क' प्रत्येकम्=एकमात्र भिन्नमित्यर्थः, उपाश्रयमुपसं-पद्य खलु विहर्तुम्, 'तिकट्टु' इति कृत्वा=इति मनसि निधाय एव सम्प्रेक्षते,

साथ २ में वे आर्या उसे वार २ शरीर सस्कार करने से मना भी करती रही। इस प्रकार उस काली आर्या के निर्ग्रन्थ श्रमणियों द्वारा वार २ भर्त्सित आदि होने पर तथा शरीर सस्कार करने से निषिद्ध होने पर, उसे यह इस प्रकार का आ यात्मिक यावत् मनोगत सकल्प उत्पन्न हुआ। (जया णं अह अगारवासमज्झे वसित्था तया ण अह सयवसा, जप्पभिइ च ण अह मुडा भवित्ता अगाराओ, अणगारिय पव्वइया तप्पभिइ च ण अह परवसा जाया, त सेयं खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्काउवस्सय उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए त्तिकट्टु एव सपहेइ सपेहित्ता कल्लं जाव जलते पाडिएक्क उवस्सय गिण्हइ) जब मैं अपने घर के बीच में रहती थी–उस समय मैं स्वतन्त्र थी। परन्तु जिस दिन से मुडित होकर अगार अवस्था से इस अनगार अवस्था में आई हूँ उस दिन से मैं परवश–पराधीन बन चुकी हूँ। अतः मुझे यही श्रेयस्कर है कि मै दूसरे दिन प्रात काल होते ही जब सूर्यो

ભર્સિત વગેરે થવાથી તેમજ શરીર સસ્કારની મનાઇ હોવા બદલ તે કાલી આર્યાને આ જાતનો આધ્યાત્મિક યાવત્ મનોગત સકલ્પ ઉદ્ભવ્યો કે—

(जयाणं अह अगारवासमज्झे वसित्था तयाण अह सयवसा जप्पभिइ च ण अह मुडा भवित्ता अगाराओ अणगारिय पव्वइया तप्पभिइ च ण अह परवसा जाया त सेय खलु मम कल्ल पाउप्पभायाए रयणीए जाव जलते पाडिक्का उवस्सय उवसपज्जित्ता ण विहरित्तए त्तिकट्टु एव सपेहेइ, सपेहित्ता कल्ल जाव जलते पाडिएक्क उवस्सय गिण्हइ)

જ્યારે હું ઘરમા રહેતી હતી ત્યારે હું સ્વતત્ર હતી પરતુ જ્યારથી મે મુડિત થઈને અગાર અવસ્થાને ત્યજીને અનગાર અવસ્થા સ્વીકારી છે ત્યારથી હું પરવશ–પરાધીન થઈ ગઈ છુ એથી મારા માટે હવે એ જ શ્રેયસ્કર બીજે દિવસે સવાર થતા જ જ્યારે સૂર્ય ઉદય પામશે ત્યારે

सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाडिएक्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति। तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनवघट्टिका यदृच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्द मतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा। ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽलसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछदा अहाछदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सा माण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह विना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार बार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहा उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તે બીજે દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(तत्थण सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा छा अहाछद विहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છદ થઈને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઈચ્છા મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યા ઉઠવા બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોક્ત્રી સ્થ

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलनकषायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छंदा' यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता' ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलसामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिक्या संलेखनयाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोषयति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेएइ' छिनत्ति, छित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽ प्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतंसके भवने उपपातसभाया देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसख्येयभागमात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना। ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

---

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी–अवसन्न विहारिणी हो गई। कुशीला बन गई–सज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणो की विराधना करने लगी–कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानुसार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई–इसलिये वह यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परिचयजन्य प्रेमबंधन से अपने आचार पालन मे शिथिल बनी हुई उसने इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया–और (पाउणित्ता) पालन कर (अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए कालवडिंएस भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसतरिए अगुल-

---

વિહારિણી થઈ ગઇ સમ ચારી પાલન કરવામા શિથિલતાવાળી બતાવવા લાગી–અવસન્ન વિહારિણી થઈ ગઇ કુશીલા થઇ ગઇ, સજ્વલન કષાયનો ઉદય હોવાથી ઉત્તર ગુણોની વિરાધના કરવા લાગી, કુશિલ વિહારિણી થઇ ગઈ અને પોતાની ઇચ્છા મુજબ માર્ગની કલ્પના કરીને તેમા પ્રવૃત્ત થવા લાગી એથી તે યથાચ્છન્દ વિહારિણી પણ બની ગઇ ગૃહસ્થ વગેરે લોકોના વધારે પડતા પરિચયજન્ય પ્રેમબધનથી પોતાના આચાર પાલનમા શિથિલ થઇ ગઇ તેણે આ પ્રમાણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય–પર્યાયનુ પાલન કર્યું અને (પાઉણિત્તા) પાલન કરીને

(अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ छेइत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर–

सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाडिएक्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति। तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनवघट्टिका यदृच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्दमतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा। ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था=गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽलसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछदा अहाछदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह विना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार बार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिंचित कर वहा उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તે બીજે દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(तत्थण सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा छदा अहाछद विहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છદ થઈને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યા ઉઠવા બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોક્ત્રી થ

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-कषायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छंदा' यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी, 'ससत्ता' ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलसामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिक्या संलेखनयाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोषयति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेएइ' छिनत्ति, छित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा चमरचञ्चाया राजधान्या कालावतंसके भवने उपपातसभाया देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग-मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना। ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई। कुशीला बन गई-संज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणो की विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानुसार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परिचयजन्य प्रेमबंधन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और (पाउणित्ता) पालन कर (अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिए अंगुल-

વિહારિણી થઈ ગઈ સમાચારી પાલન કરવામાં શિથિલતાવાળી બતાવવા લાગી-અવસન્ન વિહારિણી થઈ ગઈ કુશીલા થઈ ગઈ, સંજ્વલન કષાયનો ઉદય હોવાથી ઉત્તર ગુણોની વિરાધના કરવા લાગી, કુશિલ વિહારિણી થઈ ગઈ અને પોતાની ઇચ્છા મુજબ માર્ગની કલ્પના કરીને તેમાં પ્રવૃત્ત થવા લાગી એથી તે યથાચ્છન્દ વિહારિણી પણ બની ગઈ ગૃહસ્થ વગેરે લોકોના વધારે પડતા પરિચયજન્ય પ્રેમબંધનથી પોતાના આચાર પાલનમાં શિથિલ થઈ ગઈ તેણે આ પ્રમાણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનું પાલન કર્યું અને (પઉણિત્તા) પાલન કરીને

(अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेइ, झूसित्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमर-

सम्प्रेक्ष्य कल्ये यावत् सूर्ये ज्वलति 'पाडिएक्कं' प्रत्येकम्-उपाश्रय गृह्णाति। तत्र खलु सा 'अणिवारिया' अनिवारिता-निवारकाभावात्, 'अणोहट्टिया' अनवघट्टिका यदृच्छा प्रवृत्तिप्रतिरोधकाभावात्, अतएव 'सच्छंदमई' स्वच्छन्द मतिः अभीक्ष्णमभीक्ष्ण हस्तौ धावति यावत्-आस्ते वा शेते वा निषेधयति वा। ततः खलु सा काली आर्या 'पासत्था' पार्श्वस्था-गाढकारणंविना नित्यपिण्ड भोक्त्री, अतएव पार्श्वस्थविहारिणि, 'ओसण्णा' अवसन्ना समाचारीपालनेऽलसी

दय हो जावेगा-दूसरे उपाश्रय में चली जाऊँ। इस प्रकार का उसने अपने मन में विचार किया। विचार करके फिर वह दूसरे दिन प्रातः काल होते ही सूर्योदय होने पर दूसरे उपाश्रय में चली गई। (तत्थणं सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा-तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी, कुसीला कुसीलविहारी, अहाछदा अहाछदविहारी, ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सा माण्णपरियागं पाउणइ) वहाँ वह विना रोक टोक, यदृच्छा प्रवृत्ति करने लग गई। इच्छानुसार वार २ हाथ पैर आदि धोने लग गई। उठने बैठने एव सोने के स्थान को तथा स्वाध्याय भूमि को पहिले से ही पानी से सिञ्चित कर वहा उठने बैठने एव स्वाध्याय करने लगी। इस तरह की स्वच्छन्द प्रवृत्ति से वह काली आर्या पासत्था-गाढकारण के विना नित्य पिण्ड भोक्त्री-बन गई, पार्श्वस्थ विहारिणी हो गई। समाचारी

બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહુ આ પ્રમાણે તેણે મનમા વિચાર કર્યો વિચાર કરીને તે બીજે દિવસે સવાર થતા જ સૂર્યોદય થયા બાદ બીજા ઉપાશ્રયમા જતી રહી

(तत्थण सा अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छदमई अभिक्खण २ हत्थे धोवेइ, जाव आसयइ वा सयइ वा णीसेहेइ वा तएण सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसण्णा ओसण्णविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहा छा अहाछद विहारी ससत्ता ससत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियाग पाउणइ)

ત્યા તે રોક-ટોક વિના સ્વચ્છદ થઇને પ્રવૃત્તિ કરવા લાગી ઇચ્છા મુજબ વારવાર હાથ-પગ ધોવા લાગી, ઉઠવા-બેસવા અને સૂવાના સ્થાનને તેમજ સ્વાધ્યાય ભૂમિને પહેલેથી જ પાણી વડે સિંચિત કરીને ત્યા ઉઠવા બેસવા તેમજ સ્વાધ્યાય કરવા લાગી આ જાતની સ્વચ્છન્દ પ્રવૃત્તિથી તે કાલી આર્યા પાસત્થા-ગાઢ કારણ વગર નિત્ય પિંડ ભોક્ત્રી ત્ય

दन्ती, अतएव अवसन्नविहारिणी, 'कुसीला' कुशीला=उत्तरगुणसेवया संज्वलन-कषायोदये प्रवृत्ता, अतएव कुशीलविहारिणी, 'अहाच्छंदा' यथाच्छन्दा=स्वाभिप्रायपूर्वकस्वमति कल्पितमार्गे प्रवृत्ता, अतएव यथा छन्दविहारिणी. 'ससत्ता' ससक्ता गृहस्थादिप्रेमबन्धनेन शिथिलसामाचारीप्रवृत्ता सती बहूनि वर्षाणि श्रामण्य पर्याय पालयति, पालयित्वा अर्द्धमासिक्या संलेखनयाऽऽत्मान 'झूसेइ' जोषयति=सेवते, झूसित्ता=जोषयित्वा त्रिंशद् भक्तानि 'अणसणाए' अनशनया 'छेएइ' छिनत्ति, छित्वा तस्य स्थानस्य अनालोचिताऽप्रतिक्रान्ता कालमासे काल कृत्वा चमरचश्चाया राजधान्या कालावतंसके भवने उपपातसभाया देवशयनीये देवदूष्यान्तरिते = देवदूष्यवस्त्राच्छादिते अङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग-मात्रायामवगाहनाया कालीदेवीतया उपपन्ना। ततः खलु सा कालीदेवी अधुनो-

---

पालन करने में शिथिलता दिखलाने लगी-अवसन्न विहारिणी हो गई। कुशीला बन गई-सज्वलन कषाय के उदय होने से उत्तरगुणो की विराधना करने लगी-कुशील विहारिणी हो गई और अपनी इच्छानुसार मार्ग की कल्पना कर उसमें प्रवृत्त रहने लग गई-इसलिये वह यथाच्छन्द विहारिणी भी बन गई। गृहस्थ आदि जनों के अधिक परिचयजन्य प्रेमबंधन से अपने आचार पालन में शिथिल बनी हुई उसने इस तरह होकर अनेक वर्षों तक श्रामण्य पर्याय का पालन किया-और (पाउणित्ता) पालन कर (अद्धमासियाए संलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइय अपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमरचचाए रायहाणीए कालवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसि देवदूसतरिए अगुल-

---

વિહારિણી થઈ ગઇ સમાચારી પાલન કરવામા શિથિલતાવાળી બતાવવા લાગી-અવસન્ન વિહારિણી થઈ ગઇ કુશીલા થઇ ગઇ, સજ્વલન કષાયનો ઉદય હોવાથી ઉત્તર ગુણોની વિરાધના કરવા લાગી, કુશિલ વિહારિણી થઇ ગઈ અને પોતાની ઇચ્છા મુજબ માર્ગની કલ્પના કરીને તેમા પ્રવૃત્ત થવા લાગી એથી તે યથાચ્છન્દ વિહારિણી પણ બની ગઇ ગૃહસ્થ વગેરે લોકોના વધારે પડતા પરિચયજન્ય પ્રેમબંધનથી પોતાના આચાર પાલનમા શિથિલ થઈ ગઇ તેણે આ પ્રમાણે ઘણા વર્ષો સુધી શ્રામણ્ય-પર્યાયનુ પાલન કર્યું અને (પઉણિત્તા) પાલન કરીને

(अद्धमासियाए सलेहणाए अत्ताण झूसेइ, झूसित्ता तीस भत्ताइ अणसणाए छेएइ, छेइत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयअपडिक्कत्ता कालमासे काल किच्चा चमर-

पपन्ना=तत्कालसमुत्पन्नासती पञ्चविधयापर्याप्त्या यथासूर्याभः=सूर्याभदेववत्, 'जाव भासामणपज्जत्तीए' भाषामन पर्याप्त्या-यावत्-आहारपर्याप्त्या १, शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३, आनप्राणपर्याप्त्या ४, भाषामन पर्याप्त्या ५, पर्याप्तिभाव गच्छति। पर्याप्तिरन्धकाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिसमाप्ति कालान्तरापेक्षया भाषामन पर्याप्त्योः स्तोककालान्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्षणात् पर्याप्तीनां पञ्चविधत्वम्। ततः खलु सा काली देवी चतसृणा सामानिकसाहस्रीणां यावत्-अन्येषा च बहूना कालावतंसकभवनवासिनामसुरकुमारणा

स्स असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा) अर्द्धमास की सलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया। इस प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३० भक्तों का छेदन करने पर भी उस स्थानकी आलोचना नही की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही हटी-अतः अनालोचित अप्रतिक्रान्त बनकर वह जब उस काल अवसर-काल कर चमरचपा नाम की राजधानी में, कालावतसक भवनमें, उपपातसभामें देवदूष्यवस्त्रसे आच्छादितदेवशयनीय'शय्या' ऊपर अगुलके असख्यातवे मात्र की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएण सा कालीदेवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए०। तएण सा कालीदेवी चउण्हं समाणि य साहस्सी ण अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसकभवणवासीण असुरकुमाराण

चचाए रायहाणीए कालवडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसी देवदूस तरिए अगुलस्स असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्ताए उववण्णा)

તેણે અર્દ્ધમાસની સલેખનાથી પોતાના આત્માને યુકત કર્યો આ પ્રમાણે તેણે અનશનો વડે ૩૦ ભક્તોનુ છેદન કરીને પણ તે સ્થાનની આલોચના કરી નહિ અને તે અતિચારોના આચરણથી પણ અટકી નહિ એથી અનાલોચિત અપ્રતિક્રાત થઇને તે જ્યારે કાળ અવસરે કાળ કરીને ચમરચચા નામની રાજધાનીમા કાલાવતસક ભવનમા, ઉપપાત સભામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રથી આચ્છાદિત દેવશનીય ઉપર આગળીઓના અસખ્યાતમા માત્રની અવગાહનાથી કાલી દેવીના રૂપમા ઉત્પન્ન થઇ ગઈ

(तएण सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए०। तएण सा काली देवी चउण्ह सामाणियसाहस्सीण जाव अण्णेसिं च बहुण कालवडेसकभवणवासी ण असुरकुमाराण देवाण य देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ)

देवाना च देवीना च 'आहेवच्च' आधिपत्य=स्वामित्व कुर्वन्तीपालयन्ती यावद् विहरति ।

एवम्=उक्तप्रकारेण खलु हे गौतम ! काल्या देव्या सा दिव्या देवर्द्धिः ३, लब्धा, प्राप्ता, अभिसमन्वागता ।

गौतमः पृच्छति-काल्या खलु हे भदन्त ! देव्यास्तत्र 'केवइय' कियन्त

देवाण य देवीण य आहेवच्च जाव विहरइ) इस प्रकार वह काली देवी अभी अभी उत्पन्न होकर पाच प्रकार की पर्याप्तियों से पर्याप्त बनी है। पर्याप्तिया ६ होती हैं परन्तु यहा पर जो वे पाच की सख्या में निर्दिष्ट हुई हैं-उसका कारण यह है कि पर्याप्ति के बधकाल में देवों के आहार, शरीर आदि पर्याप्तियों के समाप्तिकाल की अपेक्षा भाषा और मनः पर्याय का साथ साथ बध होता है, इसलिये इन दोनो को एक रूप से यहा विवक्षित किया गया है। वे पर्याप्तियां इस प्रकार है-। (१) आहारपर्याप्ति (२) शरीर पर्याप्ति (३) इन्द्रियपर्याप्ति (४) श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति (५) भाषा एवं मनः पर्याप्ति। वह काली देवी चार हजार सामानिक देवोका यावत् और दूसरे अनेक कालावतसक भवनवासी असुरकुमार देवो का देवियो का आधिपत्य कर रही है। (एव खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देवड्ढी ३ लद्धापत्ता अभिसमण्णा गया,

આ પ્રમાણે તે કાલી દેવી હમણા જ ઉત્પન્ન થઈને પાચ પ્રકારની પર્યાપ્તિઓથી પર્યાપ્ત બની છે પર્યાપ્તિઓ છ હોય છે પણ અહીં જે પાચની સખ્યામા જ બતાવવામા આવી છે તેનુ કારણ આ પ્રમાણે છે કે પર્યાપ્તિના બધકાલમા દેવોના આહાર, શરીર વગેરે પર્યાપ્તિઓના સમાપ્તિકાળની અપેક્ષા ભાષા અને મન પર્યાપ્તિનુ એકી સાથે બધ હોય છે એથી આ બનેને અહીં એક રૂપમા જ બતાવવામા આવી છે તે પર્યાપ્તિઓ આ પ્રમાણે છે— (૧) આહાર પર્યાપ્તિ, (૨) શરીર પર્યાપ્તિ, (૩) ઇન્દ્રિય પર્યાપ્તિ, (૪) શ્વાસોચ્છ્વાસ પર્યાપ્તિ, (૫) ભાષા અને મન પર્યાપ્તિ તે કાલી દેવી ચાર હજાર સામાનિક દેવો ઉપર યાવત્ બીજા પણ ઘણા કાલાવતસક ભવનવાસી અસુર કુમાર દેવો, દેવીઓ ઉપર શાસન કરી રહી છે

(एव खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी ३ लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया, कालीए ण भंते ! देवीए केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा [illegible] इज्जाइ पलिओवमाई ठिई पण्णत्ता)

पपन्ना=तत्कालसमुत्पन्नासती पञ्चविधयापर्याप्त्या यथासूर्याभः=सूर्याभदेववत्, 'जाव भासामणपज्जत्तीए' भाषामन पर्याप्त्या-यावत्-आहारपर्याप्त्या १, शरीरपर्याप्त्या २, इन्द्रियपर्याप्त्या ३, आनप्राणपर्याप्त्या ४, भाषामन पर्याप्त्या ५, पर्याप्तिभाव गच्छति। पर्याप्तिबन्धकाले देवानामाहारशरीरादिपर्याप्तिसमाप्ति कालान्तरापेक्षया भाषामन पर्याप्त्योः स्तोककालान्तरतया तयोरेकत्वेन विवक्ष णात् पर्याप्तीना पञ्चविधत्वम्। ततः खलु सा काली देवी चतसृणा सामानिक-साहस्रीणां यावत्-अन्येषा च बहूनां कालावतसकभवनवासिनामसुरकुमारणा

स्स असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा) अर्द्धमास की सलेखना से उसने अपनी आत्मा को युक्त किया। इस प्रकार उसने अनशनों द्वारा ३० भक्तोंका छेदन करने पर भी उस स्थानकी आलोचना नही की और न वह उन अतिचारों से पीछे ही हटी-अतः अनालोचित अप्रतिक्रान्त बनकर वह जब उस काल अवसर-काल कर चमरचपा नाम की राजधानी में, कालावतसक भवनमें, उपातातसभामें देवदूष्यवस्त्रसे आच्छादितदेवशयनीय'शय्या'ऊपर अगुलके असख्यातवे मात्र की अवगाहना से काली देवी के रूप में उत्पन्न हो गई (तएण सा कालीदेवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासामणपज्जत्तीए ०। तएण सा कालीदेवी चउण्ह समाणि य साहस्सी ण अण्णेसिं च बहूणं कालवडेंसकभवणवासीण असुरकुमाराण

चचाए रायहाणीए कालवडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जसी देवदूस तरिए अगुलस्स असखेज्जइ, भागमेत्ताए ओगाहणाए कालीदेवीत्तए उववण्णा)

તેણે અર્દ્ધમાસની સલેખનાથી પોતાના આત્માને યુક્ત કર્યો આ પ્રમાણે તેણે અનશનો વડે ૩૦ ભક્તોનુ છેદન કરીને પણ તે સ્થાનની આલોચના કરી નહિ અને તે અતિચારોના આચરણથી પણ અટકી નહિ એથી અનાલોચિત અપ્રતિક્રાંત થઇને તે જ્યારે કાળ અવસરે કાળ કરીને અમરચચા નામની રાજધાનીમા કાલાવતસક ભવનમા, ઉપપાત સભામા દેવદૂષ્ય વસ્ત્રથી આચ્છાદિત દેવશનીય ઉપર આગળીઓના અસખ્યાતમા માત્રની અવગાહનાથી કાલી દેવીના રૂપમા ઉત્પન્ન થઇ ગઈ

(तएण सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पचविहाए पज्जत्तीए जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए०। तएण सा काली देवी चउण्ह सामा णियसाहस्सीण जाव अण्णेसिं च बहूण कालवडेसकभवणवासी ण असुरकुमा राण देवाण य देवीणय आहेवच जाव विहरइ)

श्रीसुधर्मास्वामी प्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत्-मोक्ष सम्प्राप्तेन प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य अयमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः । 'त्तिबेमि' इति ब्रवीमि, व्याख्या पूर्ववत् ॥ सू०४ ॥

॥ धर्मकथाना प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययनं समाप्तम् ॥

विदेह क्षेत्र में उत्पन्न होगी और वहीं से सिद्ध होगी। अब सुधर्मा स्वामी श्री जम्बू! स्वामी से कहते हैं कि हे जम्बू! मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त अर्थ प्रज्ञप्त किया है। ऐसा मैंने उन्हीं के मुख से सुनकर यह तुमसे कहा है ॥ सूत्र ४ ॥

-:प्रथम वर्ग का प्रथम अध्ययन समाप्त-

મહાવિદેહ ક્ષેત્રમા ઉત્પન્ન થશે અને ત્યાંથી જ સિદ્ધ થશે હવે સુધર્મા સ્વામી શ્રી જમ્બૂ! સ્વામીને કહે છે કે હે જમ્બૂ! મુક્તિપ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રજ્ઞપ્ત કર્યો છે આવુ હુ તેમના શ્રી મુખથી સાભળીને તમને કહી ગયો છુ ॥ સૂત્ર ૪ ॥

" પ્રથમ વર્ગનુ પ્રથમ અધ્યયન સમાપ્ત "

काल स्थिति प्रज्ञप्ता ? भगवानाह-हे गौतम ! ' अड्डाइज्जाइ ' अर्द्धतृतीये=सार्द्धे द्वे पल्योपमे स्थितिः प्रज्ञप्ता ।

गौतमः पृच्छति-काली हे भदन्त ! देवी तस्माद्देवलोकाद् अनन्तरम्=आयुर्भवस्थितिक्षयानन्तर ' उव्वट्टित्ता ' उद्वृत्य=निस्सृत्य कुत्र गमिष्यति कुत्र-उत्पत्स्यते ? ।

भगवानाह-हे गौतम ! सा काली देवी देवलोकाच्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे उत्पद्य सेत्स्यति, ।

कालीए ण भते ! देवीए केवइय काल ठिई पण्णत्ता ? गोयमा अड्डाइज्जाइ पलिओवमाई ठिईपण्णत्ता) इस तरह से हे गौतम ! काली देवी ने वह दिव्य देवर्द्धि ३, अर्जित की है स्वाधीन की है और उसे अपने उपभोग के योग्य बनाया है । अब गौतम पुन प्रभु से पूछते हैं-कि हे भदत ! कालीदेवी की कितनी स्थिति है ? उत्तर में प्रभु ने उनसे कहा-हे गौतम ! कालीदेवी की स्थिति अढाई पल्य की (प्रज्ञप्त हुई) है (कालीण भते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणतर उवट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ, ? गोयमा ! महाविदेहेवासे सिज्झिहिइ एव खलु जबू ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तिवेमि, धम्मकहाण पढमज्झयण समत्त) हे भदत ! कालीदेवी उस देवलोक से आयु एवं भवस्थिति के क्षय के अनन्तर निकलकर कहा जावेगी, कहा उत्पन्न होगी ? इस गौतम के प्रश्न का उत्तर प्रभु ने उन्हें इस प्रकार दिया-गौतम ! वह काली देवी देवलोक से चव कर म

આ પ્રમાણે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીએ તે દિવ્ય દેવર્દ્ધિ ૩ પ્રાપ્ત કરી છે સ્વાધીન બનાવી છે અને તેને પોતાને માટે ઉપભોગ યોગ્ય બનાવી હવે ગૌતમ ફરી પ્રભુને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! કાલી દેવીની સ્થિતિ કે જવાબમા પ્રભુએ તેમને કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! કાલી દેવીની સ્થિતિ અઢી પલ્યની (પ્રજ્ઞપ્ત થઈ) છે

(कालीण भते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतर उव्वट्टित्ता कहि गच्छिहिइ, कहि उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ, एव खलु जबू ! समणेणं जाव सपत्तेण पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि, धम्मकहाण पढमज्झयण समत्त)

હે ભદન્ત ! કાલી દેવી તે દેવલોકથી આયુ અને ભવસ્થિતિને પૂરી કરીને કયા જશે ? કયા ઉત્પન્ન થશે ? આ પ્રમાણે ગૌતમના પ્રશ્નને સાભળીને પ્રભુએ ઉત્તરમા તેને કહ્યુ કે હે ગૌતમ ! તે કાલી દેવી ... ચવીને

श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थान सम्प्राप्तेन धर्मकथाना प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीप्राह–एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलक चैत्यम् । स्वामी भगवान महावीरः समवसृतः । परिष

पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेणं जाव सपत्तेण के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुण सिलए चेइए सामी समोसढे) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथन अध्यपन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है–तो हे भदत ! द्वितीय अध्ययन का उन्ही श्रमण भगवान महावीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जबू ! सुनो –तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था। उसमें महावीर स्वामी समवसरे।–(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ,

---

वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के० अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ? तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધુ છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ–અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે? આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण राई देवी

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेण जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एव खलु जंबू ! तेणं कालेण तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएणं राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली तहेव आगया णट्टविहि उवदसेत्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमा ! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ! तेण कालेण तेणं समएण आमलकप्पा णयरी अवसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अत काहिति । एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स वीयज्झयण समत्त ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त !

—ःद्वितीय अध्ययन प्रारभः—

—ःजइणं भते ! समणेण इत्यादि ।

टीकार्थ—जबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण

બીજુ અધ્યયન આરંભ —

जइण भंते ! समणेण इत्यादि—

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત ! (जइण समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण पढमस्स

श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान सम्प्राप्तेन धर्मकथाना प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीमाह–एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलक चैत्यम् । स्वामी भगवान् महावीरः समवसृतः । परिष

पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुण सिलए चेइए सामी समोसढे) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हे धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथन अध्यपन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है–तो हे भदत ! द्वितीय अध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान महाबीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जत्रू ! सुनो –तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था। उसमें महावीर स्वामी समवसरे।–(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ,

वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स ण भंते ! अज्झयणस्स समणेण भगवया महावीरेण जाव सपत्तेण के० अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जबू ? तेण कालेण तेणं समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધુ છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ–અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ, तेण कालेणं तेण समएण राई देवी

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते बिइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमा! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिति । एवं खलु जंबू ! बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स बीयज्झयणं समत्तं ॥ सू० ५ ॥

टीका—' जइणं भंते ' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति-यदि खलु हे भदन्त !

—:द्वितीय अध्ययन प्रारंभः—

—:जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि ।

टीकार्थ.—जम्बू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं

બીજું અધ્યયન પ્રારંભ —

जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि—

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત !
(जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स

श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं सम्प्राप्तेन धर्मकथाना प्रथमस्य वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्यायमर्थः=पूर्वोक्तो भावः प्रज्ञप्तः, द्वितीयस्य खलु भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन भगवता महावीरेण यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः= को भावः प्रज्ञप्तः ?

सुधर्मास्वामीप्राह–एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी भगवान् महावीरः समवसृतः । परिष

पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुण सिलए चेइए सामी समोसढे) यदि श्रमण भगवान् महावीर ने जो कि मुक्ति स्थान को प्राप्त हो चुके हैं धर्मकथाके प्रथम वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह पूर्वोक्त रूप से अर्थ प्ररूपित किया है–तो हे भदंत ! द्वितीय अध्ययन का उन्हीं श्रमण भगवान महावीर ने जो कि मुक्ति को प्राप्त कर चुके हैं क्या भाव अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के पूछने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो –तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था। उसमें महावीर स्वामी समवसरे।–(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ,

---

वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ? तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे)

જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિસ્થાન મેળવી લીધુ છે ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપમા અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે તો હે ભદન્ત ! તે જ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે–કે જેમણે મુક્તિ સ્થાન મેળવી લીધુ છે બીજા અધ્યયનનો શો ભાવ–અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાભળીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા મહાવીર સ્વામી પધાર્યા

(परिसा निग्गया–जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी

अथ द्वितीयमध्ययनं प्रारभ्यते—

मूलम्—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते विइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं के० अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव आगया णट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया भंतेत्ति भगवं गोयमा! पुव्वभवपुच्छा, एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए जियसत्तू राया राई गाहावई राईसिरी भारिया राई दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली तहेव निक्खंता तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं काहिति । एवं खलु जंबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ ॥

॥ पढमवग्गस्स बीयज्झयणं समत्तं ॥ सू० ५ ॥

टीका—'जइ णं भंते' इत्यादि । जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त !

—ः द्वितीय अध्ययन प्रारंभः—

—'जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि ।

टीकार्थ —जंबू स्वामी श्री सुधर्मास्वामी से पूछते हैं कि (भंते) हे भदंत ! (जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं

બીજું અધ્યયન પ્રારંભ —

जइणं भंते ! समणेणं इत्यादि—

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે (भंते) હે ભદન્ત !
(जइणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं पढमस्स

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत्। पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभो समवसरणम्। रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरबाकुशिका. तदेव सर्वं यावत्-सर्वदु खाना-मन्त करिष्यति।

दारिया पासस्स समोसरणं राई दारिया जहेव काली- तहेव निक्खंता, तहेवसरीर बाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू। बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था। नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था। वहां रात्रि नामका एक गाथापति रहता था। उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था। इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहा उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई। अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बडे ठाठ बाट के साथ शिबिका में बैठाकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये। वहा वह दीक्षित हो गइ। धीरे २ वह शरीर बाकुशिका बनगई। जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खता, तहेव सरीरबाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू! बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

તેના ગયા બાદ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમે રાત્રિ દેવીના પૂર્વ ભવની વિગત પૂછી પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ગૌતમ! તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી તેમા આમ્રશાલવન નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બનેને રાત્રિ નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને પ્રાપ્ત થઇ તેમજ ત્યા ઉદ્યાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઇ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઇ ગઇ ધીમે ધીમે તે પણ શરીર બાકુશિકા બની ગઇ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા થઈને શરીર બાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

निर्गता यावत् भगवन्तं पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'राई' रात्रिः-रात्रिनाम्नी देवी चमरचञ्चायां राजधान्याम्, एवं यथा काली तथैव-आगता, नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। 'भंते त्ति' हे भदन्त! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा रात्रि देव्याः पूर्वभवं पृच्छति। भगवान् प्राह-एवं खलु हे गौतम! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकल्पा नगरी, आम्रशालवनं चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गाथापतिः, रात्रिश्रीर्भार्या, तयोः

तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली-तहेव आ गया नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया। सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-चचाराजधानी में रहती थी-जैसे वहां काली देवी रहती थी। सो वह भी प्रभु का आगमन सुनकर वहा आई। वहां आकर उसने नाट्य विधि दिखलाई-और दिखलाकर फिर वह वहा से वापिस अपने स्थान पर चली गई। (भंते त्ति भगवं गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसाल वणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचचाए रायहाणीए एवं जहा काली-तहेव आगया नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया)

પ્રભુનું આગમન સાંભળીને નગરના બધા નાગરિકજનો તે પ્રભુના દર્શન કરવા માટે તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાંભળવા માટે તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો બધાએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે રાત્રિ નામે દેવી ચમરચંચા રાજધાનીમાં કાલી દેવીની જેમ રહેતી હતી તે પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાં આવી ત્યાં આવીને તેણે નાટ્યવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે ત્યાંથી પાછી જતી રહી

(भंते त्ति भगवं गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एवं खलु गोयमा! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा णयरी अंबसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स दारिया

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समवसरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरबाकुशिका, तदेव सर्व यावत्-सर्वदुःखाना-मन्त करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली- तहेव निक्खंता, तहेवसरीर बाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू। विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा-प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-हे गौतम ! उस काल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था। नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था। वहां रत्रि नामका एक गाथापति रहता था। उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था। इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी।-उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहा उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई। अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बडे ठाठ बाट के साथ शिविका में बैठाकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये। वहा वह दीक्षित हो गइ। धीरे २ वह शरीर बाकुशिका बनगई। जिस प्रकार

जहेव काली-तहेव निक्खंता, तहेव सरीरबाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

तेना गया बाद श्रमण भगवान महावीरने गौतमे रात्रि देवीना पूर्व-भवनी विगत पूछी प्रभुએ तेमने आ प्रमाणे कह्युं के हे गौतम ! ते काळे अने ते समये आमलकल्पा नामे नगरी हती तेमा आम्रशालवन नामे उद्यान हतु नगरीना राजानु नाम जितशत्रु हतुं त्या रात्रि नामे એક गाथापति रहेतो हतो तेनी पत्नीनु नाम रात्रिश्री हतुं तेઓ બનેને रात्रि नामे એક पुत्री हती જેમ काली प्रभुनो उपदेश श्रवण करीने प्रतिબोधने प्राप्त थइ तेमज त्या उद्यानमा पधारेला पार्श्वनाथनी पासेथी धर्मोपदेश सांभळीने ते पण प्रतिબोधित थइ गई એथी कालीनी જેमज तेने पण पोताना मातापितानी पासेथी आज्ञा मेळवी अने त्यारपछी तेना मातापिताએ तेने पालखीमा બेसाडीने प्रभुनी पासे लई गया, त्या ते दीक्षित थइ गइ धीमे धीमे ते पण शरीर બाकुशिका બनी गइ જેમ काली दारिका पण आर्या थइने शरीर बाकुशिका બनी गई हती त्यारपछी જेवी स्थिति काली आर्यानी

निर्गता यावत् भगवन्तं पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये 'राई' रात्रिः-रात्रिनाम्नी देवी चमरचञ्चाया राजधान्याम्, एवं यथा काली तथैव-आगता, नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। 'भंते त्ति' हे भदन्त! इति सम्बोध्य भगवान् गौतमः 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा रात्रि देव्या पूर्वभव पृच्छति। भगवान् माह-एवं खलु हे गौतम! तस्मिन् काले तस्मिन् समये आमलकल्पा नगरी, आम्रशालवन चैत्यम्, जितशत्रू राजा, रात्रिर्गाथापतिः, रात्रिश्रीर्भार्या, तयोः

तेण कालेण तेण समएण राई देवी चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली-तहेव आ गया नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया) प्रभु का आगमन सुनकर नगर निवासिनी समस्त जनता उन प्रभु के दर्शन करने और उनसे धर्मोपदेश सुनने के लिये उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सब को धर्म का उपदेश दिया। सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय में रात्रिनाम की देवी चमर-चचाराजधानी में रहती थी-जैसे वहां काली देवी रहती थी। सो वह भी प्रभु का आगमन सुनकर वहां आई। वहां आकर उसने नाटय विधि दिखलाई-और दिखलाकर फिर वह वहां से वापिस अपने स्थान पर चली गई। (भंते त्ति भगव गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण आमलकप्पा णयरी अवसाल वणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई

चमरचचाए रायहाणीए एव जहा काली-तहेव आगया नट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया)

પ્રભુનુ આગમન સાભળીને નગરના બધા નાગરિકજનો તે પ્રભુના દર્શન કરવા માટે તેમજ તેમની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળવા માટે તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો બધાએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે રાત્રિ નામે દેવી ચમરચચા રાજધાનીમા કાળી દેવીની જેમ રહેતી હતી તે પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યા આવી ત્યા આવીને તેણે નાટ્યવિધિ બતાવી અને બતાવીને તે ત્યાથી પાછી જતી રહી

(भंते त्ति भगव गोयमा! पुव्वभवपुच्छा-एव खलु गोयमा! तेण कालेण तेण समएण आमलकप्पा णयरी अवसालवणे चेइए-जियसत्तू राया-राई गाहावई, रायसिरी भारिया, राई दारिया, पासस्स दारिया

रात्रिर्दारिकाऽऽसीत् । पार्श्वस्य = पार्श्वप्रभोः समवसरणम् । रात्रिर्दारिका यथैव काली तथैव निष्क्रान्ता=तथैव शरीरबाकुशिका, तदेव सर्व यावत्-सर्वदु खानामन्त करिष्यति ।

दारिया पासस्स समोसरण राई दारिया जहेव काली– तहेव निक्खंता, तहेवसरीर बाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू। विइयज्झयणस्स निक्खेवओ) उसके चले जाने के बाद श्रमण भगवान् महावीर से गौतम ने रात्रिदेवी का पूर्वभव पूछा–प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा–हे गौतम ! उसकाल और उस समयमें आमलकल्पा नामकी नगरी थी। उसमें आम्रशालवन नामका उद्यान था। नगरीके राजा का नाम जितशत्रु था। वहां रत्रि नामका एक गाथापति रहता था। उस की भार्या का नाम रात्रिश्री था। इन दोनों के रात्रि नाम की एक पुत्री थी जिस प्रकार काली प्रभु का उपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई थी।–उसी प्रकार पार्श्वनाथ के वहा उद्यान में आने पर भी उनसे धर्मोपदेश सुनकर प्रतिबोध को प्राप्त हो गई। अतः वह माता पिता से आज्ञा लेकर काली की तरह बड़े ठाठ बाट के साथ शिबिका में बैठाकर प्रभु के समीप माता पिता ले गये। वहा वह दीक्षित हो गइ। धीरे २ वह शरीर बाकुशिका बनगई। जिस प्रकार

जहेव काली–तहेव निक्खता, तहेव सरीरबाउसिया त चेव सव्व जाव अत काहिइ एव खलु जबू ! विइयज्झयणस्स निक्खेवओ)

તેના ગયા બાદ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને ગૌતમે રાત્રિ દેવીના પૂર્વભવની વિગત પૂછી પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યું કે હે ગૌતમ ! તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી તેમા આમ્રશાલવન નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું ત્યા રાત્રિ નામે એક ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની પત્નીનુ નામ રાત્રિશ્રી હતું તેઓ બનેને રાત્રિ નામે એક પુત્રી હતી જેમ કાલી પ્રભુનો ઉપદેશ શ્રવણ કરીને પ્રતિબોધને પ્રાપ્ત થઇ તેમજ ત્યા ઉદ્યાનમા પધારેલા પાર્શ્વનાથની પાસેથી ધર્મોપદેશ સાભળીને તે પણ પ્રતિબોધિત થઇ ગઈ એથી કાલીની જેમજ તેને પણ પોતાના માતાપિતાની પાસેથી આજ્ઞા મેળવી અને ત્યારપછી તેના માતાપિતાએ તેને પાલખીમા બેસાડીને પ્રભુની પાસે લઈ ગયા, ત્યા તે દીક્ષિત થઇ ગઇ ધીમે ધીમે તે પણ શરીર બાકુશિક બની ગઇ જેમ કાલી દારિકા પણ આર્યા થઇને શરીર બાકુશિકા બની ગઈ હતી ત્યારપછી જેવી સ્થિતિ કાલી આર્યાની

'एवं खलु जम्बू!' इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निक्षेपकः=उपसंहारः= समाप्तिवाक्यमन्तरोऽत्र बोध्य ॥ सू०५ ॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययनं समाप्तम् ॥-१-२ ॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर वाकुशिका बनगई थी। इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब सबन्ध यहां पर इसके विषय में लगालेना चाहिये और यह सबन्ध "महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों का अन्त करेगी" यहा तक जानना चाहिये। इस प्रकार हे जम्बू! यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसहार है ॥ सू० ५ ॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त ॥

થઈ તેવીજ સ્થિતિ તે રાત્રિદારિકાની પણ થઇ અહીં આ પ્રમાણે કાલિદારિકાનો બધો સબધ આના વિષે સમજી લેવો જોઇએ અને તે સબધ "મહાવિદેહમાં ઉત્પન્ન થઇને તે બધા દુ:ખોનો અત કરશે" અહીં સુધી સમજવો જોઇએ. આ પ્રમાણે હે જબૂ! પ્રથમ વર્ગના બીજા અધ્યયનનો આ ઉપસહાર છે સૂ. ૫

"પ્રથમ વર્ગનુ બીજુ અધ્યયન સમાપ્ત"

अथ तृतीयमध्ययनम्

मूलम्—जइ णं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अंत काहिइ ३ । एवं विज्जू वि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावई विज्जुसिरीभारिया विज्जुदारिया सेस तहेव । ४ एव मेहा वि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५ । एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—' जइण भते ' इत्यादि । यदि खलु भदन्त ! इत्यादि तृतीयाध्ययनस्य उत्क्षेपकः=जम्बूप्रश्नादिरूपः प्रारम्भवाक्यप्रबन्धोऽत्रवाच्यः । सुधर्मास्वामी कथ

॥ तृतीय अध्ययन प्रारभ ॥

(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) इत्यादि ॥

टीकार्थः—(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) अब जंबू स्वामी पुनः पूछते हैं कि हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय अध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है–तो तृतीय अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस तरह से इस तृतीय अध्ययन का जम्बू स्वामी का यह प्रश्न आदिरूप वाक्य प्रबन्ध उत्क्षेपक है–प्रारभक है–इस प्रश्न का उत्तर श्री सुधर्मा स्वामी

ત્રીજું અધ્યયન પ્રારંભ—

' जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) હવે જંબૂ સ્વામી ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જંબૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાક્ય પ્રબંધ ઉત્ક્ષેપક છે-પ્રારંભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે:—

'एवं खलु जम्बू!' इत्यादि द्वितीयाध्ययनस्य निक्षेपकः=उपसंहारः= समाप्तिवाक्यमन्थोऽत्र बोध्य ॥ सू०५॥

इति प्रथमवर्गस्य द्वितीयाध्ययन समाप्तम् ॥-१-२॥

काली दारिका आर्या होकर शरीर बाकुशिका बनगई थी। इसके बाद जैसी स्थिति काली आर्या की हुई-वही सब स्थिति इस रात्रि दारिका की भी हुई-इस प्रकार सब सबन्ध यहां पर इसके विषय में लगालेना चाहिये और वह सबन्ध "महाविदेह में उत्पन्न होकर यह समस्त दुःखों का अन्त करेगी" यहा तक जानना चाहिये। इस प्रकार हे जम्बू! यह प्रथमवर्ग के द्वितीय अध्ययन का उपसहार है ॥ सू० ५॥

प्रथमवर्ग का द्वितीय अध्ययन समाप्त॥

થઈ તેવીજ સ્થિતિ તે રાત્રિદારિકાની પણ થઈ અહીં આ પ્રમાણે કાલિદારિકાનો બધો સબધ આના વિષે સમજી લેવો જોઇએ અને તે સબધ "મહાવિદેહમાં ઉત્પન્ન થઈને તે બધા દુઃખોનો અત કરશે" અહીં સુધી સમજવો જોઇએ આ પ્રમાણે હે જબૂ! પ્રથમ વર્ગના બીજા અધ્યયનનો આ ઉપસહાર છે સૂ. ૫

"પ્રથમ વર્ગનુ બીજુ અધ્યયન સમાપ્ત"

अथ तृतीयमध्ययनम्

मूलम्—जइ णं भंते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ, एव खलु जंबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवरं आमलकप्पा नयरी रयणी गाहावई रयणी-सिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अंत काहिइ ३। एव विज्जू वि आमलकप्पा नयरी विज्जुगाहावई विज्जु-सिरीभारिया विज्जुदारिया सेस तहेव । ४ एव मेहा वि आम-लकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई मेहसिरी भारिया मेहा दारिया सेसं तहेव ५ । एव खलु जवू ! समणेणं जाव सपत्तेणं धम्म-कहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥ सू० ६ ॥

टीका—'जइण भते' इत्यादि। यदि खलु भदन्त ! इत्यादि तृतीया ययनस्य उत्क्षेपकः=जम्बूप्रश्नादिरूपः प्रारम्भवाक्यप्रबन्धोऽत्रवाच्यः । सुधर्मास्वामी- कथ

॥ तृतीय अध्ययन प्रारभ ॥

(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) इत्यादि ॥

टीकार्थः—(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) अथ जंबू स्वामी पुनः पूछते हैं कि हे भदन्त ! यदि श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय अध्ययन का यह पूर्वोक्तरूप से अर्थ निरूपित किया है-तो तृतीय अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस तरह से इस तृतीय अध्ययन का जबू स्वामी का यह प्रश्न आदिरूप वाक्य प्रबन्ध उत्क्षेपक है-प्रारभक है-इस प्रश्न का उत्तर श्री सुधर्मा स्वामी

ત્રીજુ અધ્યયન પ્રારભ —

'जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(जइण भते ! तइयज्झयणस्स उक्खेवओ) હવે જબૂ સ્વામી ફરી પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા અધ્યયનનો આ પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ નિરૂપિત કર્યો છે તો ત્રીજા અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ? આ પ્રમાણે આ ત્રીજા અધ્યયનનો જબૂ સ્વામીનો આ પ્રશ્ન વગેરે રૂપ વાકય પ્રબધ ઉત્ક્ષેપક છે-પ્રારભ છે આ પ્રશ્નનો ઉત્તર શ્રી સુધર્માસ્વામી આ પ્રમાણે આપે છે કે —

यति-एव खलु हे जम्बूः ! राजगृहं नगरं, गुणशिलक चैत्यम् । एव यथैव रात्रि स्तथैवरजनी अपि, नवरम् आमलकल्पा नगरी, रजनीगाथापति , रजनीश्रीर्भार्या, रजनी दारिका । शेष तथैव । यावत्-सर्वदुःखानामन्त करिष्यति ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य तृतीयाध्ययनम् ॥ १-३ ॥

इस प्रकार से देते हैं-(एव खलु जबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एवं जहेव राई तहेव रयणी वि, णवर आमलकप्पा नयरी, रयणी गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अत काहिइ ३) जम्बू ! सुनो-उस काल में और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। उसमें गुणशिलक नामका उद्यान था। जिस प्रकार रात्रि प्रभु का आगमन सुनकर, गुणशिलक उद्यान में गई थी उसी तरह रजनी भी वहा गई उसने प्रभु के मुख से धर्म का उपदेश सुना। सुन कर ससार शरीर और भोगो से वह विरक्त हो गई। दीक्षा लेने का अपना भाव उसने प्रभु से निवेदित किया। प्रभुने यथासुख देवानुप्रिये कहकर उसके भाव की सराहना करतेहुए 'शुभस्य शीघ्र' करने की अपनी अनुमति प्रकट की-तब वह घर आई और मातासे अपना दीक्षा लेने का विचार प्रकट किया-इत्यादि सब सबन्ध काली दारिका के कथानक अनुसार रजनी के साथ लगालेना चाहिये। जब रजनी देवी प्रभु को वदना करनेके लिये गुणशिलक उद्यान मे आई और वहा

(एव खलु जबू ! रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए एव जहेव राई तहेव रयणी वि णवर आमलकप्पा नयरी, रयणी-गाहावई रयणीसिरी भारिया रयणी दारिया सेस तहेव जाव अत काहिइ ३).

હે જબૂ ! સાભળો, તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ જેમ રાત્રિ પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ગુણશિલક ઉદ્યાનમા ગઈ હતી તેમજ રજની પણ ત્યા ગઈ તેણે પ્રભુના મુખથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળ્યો સાભળીને તે સ સાર, શરીર અને ભોગોથી વિરક્ત થઈ ગઈ તેણે પોતાનો દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો ભાવ પ્રભુની સામે પ્રકટ કર્યો પ્રભુએ 'યથાસુખમ્' દેવાનુપ્રિયે ! કહીને તેના ભાવની સરાહના કરી અને શુભ કાર્યમા વિલબ કરો નહિ એવી પોતાની અનુમતી દર્શાવી ત્યારે તે પોતાને ઘેર આવી અને માતાપિતાની સામે દીક્ષા ગ્રહણ કરવાનો વિચાર પ્રકટ કર્યો-વગેરે બધી વિગત કાલી દારિકાની જેમજ રજનિની સાથે પણ સમજી લેવી જોઇએ જ્યારે રજનીદેવી પ્રભુને વદના કરવા માટે ગુણ શિલક ઉદ્યાનમા આવી અને ત્યા તેણે નાટયવિધિનુ પ્રદર્શન ત્યારબાદ

'एव विज्जूवि' इत्यादि। एव विद्युदपि। आमलकल्पा नगरी, विद्युद् गाथापति, विद्युत् श्रीर्भार्या, विद्युद्दारिका। शेष तथैव।

इति प्रथमवर्गस्य चतुर्थमध्ययनम् ॥ १-४ ॥

उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बाद में वह जब वहा से प्रभु की पर्युपासना कर वापिस अपने स्थान पर चली गई-तब प्रभु से गौतम गणधर ने उसके पूर्वभव पूछे तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-उस काल और उस समय में आमलक कल्पा नामकी नगरी थी-उसमें रजनी नामका गाथापति रहता था। रजनी श्री उसकी भार्या का नाम था। इन दोनों के एक पुत्री जिसका नाम रजनी था। उसके विषय का अवशिष्ट कथानक "समस्त दुःखो का यह अन्त करेगी" यहां तक का काली दारिका के जैसा ही जानना चाहिये ॥ सू० ६ ॥

॥ प्रथम वर्ग का तीसरा अध्ययन समाप्त ॥

एव विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जू गाहावई ॥
विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेस तहेव ॥ ४ ॥
एव मेहावि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई ॥
मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेस तहेव ॥ ५ ॥
(एव खलु जबू! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्ग

પ્રભુની પર્યુપાસના કરીને પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી ત્યારે ગૌતમ ગણધરે પ્રભુને તેના પૂર્વભવો પૂછયા ત્યારે પ્રભુએ તેને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે તે કાળે અને તે સમયે આમલકલ્પા નામે નગરી હતી, તેમા રજની નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો, રજની શ્રી તેની પત્નીનુ નામ હતું તેઓ બનેને એક પુત્રી હતી-જેનુ નામ રજની હતુ એના વિષેની બાકીની બધી વિગત "સમસ્ત દુખોનો તે અન્ત કરશે" અહીં સુધીની કાલી દારિકાની જેમજ સમજી લેવી જોઈએ ॥ સૂત્ર ૬ ॥

" પ્રથમ વર્ગનુ ત્રીજુ અધ્યયન સમાપ્ત ॥

(एव विज्जूवि आमलकप्पा नयरी विज्जु गाहावई।
विज्जुसिरीभार्या विज्जुदारिया, सेस तहेव ॥ ४ ॥
एव मेहा वि आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई।
मेहासिरी भारिया मेहा दारिया सेस तहेव ॥ ५ ॥
(एव खलु जबू! समणेण जाव संपत्तेण धम्मकहाण पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६)

'एवं मेघापि' इत्यादि। एवं मेघाऽपि। आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीर्भार्या, मेघा दारिका। शेषं तथैव।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः॥ सू०६॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम्॥ १-५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-'जइणं भंते' इत्यादि।

मूलम्-जइणं भंते! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स

स्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६) इसी तरह का कथानक विद्युतके विषय में भी जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका। इस तरह नाम आदि मे ही परिवर्तन हुआ है। अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है। मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये। आमलकल्प नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नहीं। इस प्रकार यहा तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं। विद्युदारिका का अध्ययन ४ चौथा, एवं मेघा दारिका का अध्ययन ५ पंचम है। इस तरह हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधिपति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવુ જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બનેને ત્યા વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયુ છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયુ છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદ્દારિકાનુ અધ્યયન ચોથુ, અને મેઘ દારિકાનુ અધ્યયન પાચમુ છે આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુકિત સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂકયા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—सुभा निसुंभा रंभा निरभा मयणा, जइ ण भते ! समणेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणासिलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेणं समएणं सुभादेवी बलिचंचाए रायहाणीए सुभवडेसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्टए चेइए जियसत्तु राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुभा दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओवमाइं ठिई एवं खलु जवू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि अज्झयणा सावत्थीए नवरं माया पिया सरिसनामया, एवं खलु जवू ! निक्खेवओ विईयवग्गस्स२ ॥ सू० ७ ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति—यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामीमाह—एव खलु हे जम्बूः श्रमणेन यावत्

—ःद्वितीयवर्गप्रारभः—

'जइण भते ! समणेण' इत्यादि ।

टीकार्थ.—जवू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (भते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोचस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

બીજો વર્ગ પ્રારભ—

'जइण भते ! समणेण' इत्यादि—

ટીકાર્થ—જબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(भते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोचस्स वग्गस्स उक्खेवओ—एव खलु

'एवं मेहानि' इत्यादि। एवं मेघाऽपि। आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथापतिः, मेघश्रीर्भार्या, मेघा दारिका। शेषं तथैव।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बूः! श्रमणेन यावत् मोक्षं सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थः प्रज्ञप्तः॥ सू०६॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम्॥ १-५॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-'जइणं भंते' इत्यादि।

मूलम्-जइणं भंते! समणेणं जाव सपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू! समणेणं जाव सपत्तेणं दोच्चस्स

इस अयमट्ठे पण्णत्ते ६) इसी तरह का कथानक विद्युतके विषय में भी जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका। इस तरह नाम आदि में ही परिवर्तन हुआ है। अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नही है। मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये। आमलकल्प नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नही। इस प्रकार यहां तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं। विद्युद्दारिका का अध्ययन ४ चौथा, एवं मेघा दारिका का अध्ययन ५ पंचम है। इस तरह हे जंबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधिपति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है?

આ પ્રમાણેનું જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવું જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા આ બંનેને ત્યાં વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમાં પરિવર્તન થયું છે અભિધેય વિષયમાં કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઈએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમાં પણ નામોમાં જ પરિવર્તન થયું છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમાં નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદ્દારિકાનું અધ્યયન ચોથું, અને મેઘ દારિકાનું અધ્યયન પાંચમું છે આ પ્રમાણે હે જંબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુક્તિ સ્થાનના અધિપતિ થઈ ચૂક્યા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–सुभा निसुंभा रंभा निरंभा मयणा, जइ ण भंते ! समणेणं जाव सपत्तेण धम्मकहाण दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?, एवं खलु जंबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेणं समएणं सुंभादेवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव णट्टविहि उवदसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, सावत्थी णयरी कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया सुभेगाहावई सुंभसिरी भारिया सुंभा दारिया सेसं जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओवमाइं ठिई एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसावि चत्तारि अज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ विईयवग्गस्स२ ॥ सू० ७ ॥

॥ बीओ वग्गो समत्तो ॥

टीका—जम्बूस्वामीपृच्छति–यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः। सुधर्मास्वामीमाह–एवं खलु हे जम्बूः श्रमणेन यावत्

–ःद्वितीयवर्गप्रारम्भः–

' जइण भंते ! समणेण ' इत्यादि।

टीकार्थः—जंबू स्वामी श्री सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि (भंते ! जइण समणेण जाव सपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ–एव खलु

બીજો વર્ગ પ્રારંભ—

' जइण भंते ! समणेण ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—જંબૂ સ્વામી શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે—

(भंते ! जइण समणेण जाव संपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ–एव खलु

'एव मेहानि' इत्यादि । एव मेघाऽपि । आमलकल्पायां नगर्यां मेघो गाथा पतिः, मेघश्रीर्भार्या, मेघा दारिका । शेष तथैव ।

श्रीसुधर्मास्वामीमाह-एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथानां प्रथमस्य वर्गस्यायमर्थ प्रज्ञप्तः ॥ सू०६ ॥

॥ इति प्रथमवर्गस्य पञ्चमाध्ययनम् ॥ १-५ ॥

अथ द्वितीयो वर्गः प्रारभ्यते-' जइण भते ' इत्यादि ।

मूलम्-जइणं भंते ! समणेण जाव संपत्तेण दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स

स्स अयमट्ठे पण्णत्ते ६) इसी तरह का कथानक विद्युतके विषय में भी जानना चाहिये। आमलकल्पा नगरी विद्युत गाथापति विद्युत् श्री भार्या इन दोनों के यहां विद्युत् दारिका। इस तरह नाम आदि मे ही परिव र्तन हुआ है। अभिधेय विषय में कुछ अन्तर नहीं है। मेघ के विषय में भी यही बात जाननी चाहिये। आमलकल्प- नगरी, मेघ गाथापति, मेघ श्री भार्या, मेघा दारिका-इस प्रकार इस कथानक में इन नामों में परिवर्तन हुआ है-अभिधेय वक्तव्य-विषय में नहीं। इस प्रकार यहां तक प्रथम वर्ग के ५, अध्ययन समाप्त हो जाते हैं। विद्युद्दारिका का अध्ययन ४ चौथा, एव मेघा दारिका का अध्ययन ५ पचम है। इस तरह हे जबू! श्रमण भगवान् महावीर ने कि जो मुक्ति स्थान के अधि पति बन चुके हैं धर्मकथा के प्रथमवर्ग का यह अर्थ प्ररूपित किया है?

આ પ્રમાણેનુ જ કથાનક વિદ્યુતના વિષે પણ સમજી લેવુ જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, વિદ્યુત ગાથાપતિ અને વિદ્યુત શ્રી ભાર્યા. આ બનેને ત્યા વિદ્યુત દારિકા આ પ્રમાણે ફક્ત નામ વગેરેમા પરિવર્તન થયુ છે અભિધેય વિષયમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી મેઘના વિષે પણ એ જ વાત સમજી લેવી જોઇએ આમલકલ્પા નગરી, મેઘ ગાથાપતિ, મેઘ શ્રી ભાર્યા, મેઘ દારિકા આ પ્રમાણે આ કથાનકમા પણ નામોમા જ પરિવર્તન થયુ છે-અભિધેય વક્તવ્ય વિષયમા નહિ આ પ્રમાણે અહીં સુધી પ્રથમ વર્ગના પાચ અધ્યયનો પૂરા થઈ જાય છે વિદ્યુદ્દારિકાનુ અધ્યયન ચોથુ, અને મેઘ દારિકાનુ અધ્યયન પાચમુ છે આ પ્રમાણે હે જબૂ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે-કે જેઓ મુકિત સ્થાનના અધિપતિ થઇ ચૂકયા છે-ધર્મકથાના પ્રથમ વર્ગનો આ અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે. ॥ ૬ ॥

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहं नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी समवसृतः । परिषन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी बलिचञ्चाया राजधान्या शुम्भावतंसके भवने शुम्भे सिंहासने 'कालीगमएण' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रतिगता । 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा=गौतमस्वामी शुम्भा देव्याः पूर्वभवं पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठकं चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीर्भार्या । शुम्भा दारिका । शेषं यथा काल्या=काली दारिकाया वर्णनं तथात्रापि विज्ञेयम् , नवरं=विशेषस्त्व-

---

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदन्त ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया है ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जम्बू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये । प्रभु का आगमन सुनकर वहां की समस्त जनता उन्हें वदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई । प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिषद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की । (तेणं कालेणं तेणं समएणं) उसी काल और उसी समय मे (सुभादेवी बलिचचाए रायहाणीए सुभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएणं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया पुव्वभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई सुभ

સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં છે, તો હે ભદન્ત ! બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ?

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને આ પ્રમાણે કહે છે કે હે જંબૂ ! તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા વર્દ્ધમાન સ્વામી પધાર્યા પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યાના બધા નાગરિકો તેમને વદના કરવા માટે પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમા આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો પરિષદે ધર્મોપદેશ સાભળીને પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી (तेणं कालेणं तेणं समएणं) તે કાળે અને તે સમયે

(सुभा देवी बलिचचाए रायहाणीए सुभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि काली गमएणं जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई, सुभसिरी भारिया, सुभा-

मोक्ष सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्चाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-शुम्भा १, निशुम्भा २, रम्भा ३, निरम्भा ४, मदना ५, । यदि खलु हे भदन्त । श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्च-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, द्वितीयस्य खलु हे भदन्त । वर्गस्य प्रथमा ध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह-एवं

जंबू ! समणेणं जाव सपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदंत ! मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीर ने द्वितीय वर्ग का उत्क्षेपक प्रारंभ किस रूप से प्ररूपित किया है-तब सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा-हे जंबू ! सुनो यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए उन श्रमण भगवान् महावीर ने इस द्वितीय वर्ग के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-(तं जहा) वे इस प्रकार हैं-(सुंभा, निसुंभा, रंभा, निरंभा मयणा, जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्सणं भंते वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ) (१) शुम्भा, (२) निशुम्भा (३) रम्भा, (४) निरंभा (५) मदना, । अब जंबू स्वामी पुनः सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि हे भदंत ! यदि यावत् मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीरने द्वितीयवर्ग

जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंचअज्झयणा पण्णत्ता)

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના ઉત્ક્ષેપક-પ્રારંભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ, તેમને કહ્યું કે હે જંબૂ ! સાંભળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં છે (तं जहा) તે આ પ્રમાણે છે---

(सुंभा, निसुंभा, रंभा, निरंभा, मयणा, जइणं भंते ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ! एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ)

(૧) શુંભા, (૨) નિશુંભા, (૩) રંભા, (૪) નિરંભા, (૫) મદના હવે જંબૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम् । गुणशिलकं चैत्यम् । स्वामी=वर्द्धमानस्वामी समवसृत । परिपन्निर्गता यावत्पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये शुम्भा देवी बलिचञ्चायां राजधान्यां शुम्भावतंसके भवने शुम्भे सिंहासने 'कालीगमएण' कालीगमेन=काली देवी सदृशपाठेन यावत्-नाट्यविधिमुपदर्श्य यावत्-प्रतिगता । 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा=गौतम-स्वामी शुम्भा देव्याः पूर्वभवं पृच्छति । भगवान् कथयति-श्रावस्ती नगरी । कोष्ठक चैत्यम् । जितशत्रू राजा । शुम्भो गाथापतिः । शुम्भश्रीर्भार्या । शुम्भा दारिका । शेष यथा काल्या=काली दारिकाया वर्णन तथात्रापि विज्ञेयम् , नवरं=विशेषस्त्व-

के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-तो हे भदन्त ! द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का उन्होंने क्या अर्थ प्रतिपादित किया हैं ? इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये सुधर्मा स्वामी उनसे इस प्रकार कहते हैं कि-हे जंबू !-उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था-उसमें गुणशिलक नाम का उद्यान था-। उसमें वर्द्धमान स्वामी आये। प्रभु का आगमन सुनकर वहां की समस्त जनता उन्हें वंदन के लिये अपने २ स्थान से चल कर उस गुणशिलक उद्यान में आई। प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया परिषद् उपदेश सुनकर प्रभु की यावत् पर्युपासना की। (तेणं कालेणं तेण समएण) उसी काल और उसी समय में (सुभादेवी बलिचचाए रायहाणीए सुभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि कालीगमएण जाव नट्टविहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया पुव्वभव पुच्छा, सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई सुभ

સ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના પાંચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે તો હે ભદન્ત ! બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો તેમણે શો અર્થ પ્રતિપાદિત કર્યો છે ?

આ પ્રશ્નના ઉત્તરમાં શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને આ પ્રમાણે કહે છે કે હે જંબૂ ! તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતું તેમાં વર્દ્ધમાન સ્વામી પધાર્યા પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંના બધા નાગરિકો તેમને વંદના કરવા માટે પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને તે ગુણશિલક ઉદ્યાનમાં આવ્યા પ્રભુએ બધાને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો પરિષદે ધર્મોપદેશ સાંભળીને પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી (तेण कालेण तेण समएण) તે કાળે અને તે સમયે

(सुभा देवी बलिचचाए रायहाणीए सुभवडेंसए भवणे सुभंसि सीहासणंसि काली गमएण जाव नट्ट विहिं उवदंसेत्ता जाव पडिगया, पुव्वभवपुच्छा सावत्थी णयरी, कोट्ठए चेइए जियसत्तू राया, सुभे गाहावई, सुभसिरी भारिया, सुभा-

मोक्ष सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्चाध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-शुम्भा १, निशुम्भा २, रम्भा ३, निरम्भा ४, मदना ५, । यदि खलु हे भदन्त ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन द्वितीयस्य वर्गस्य पञ्च-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, द्वितीयस्य खलु हे भदन्त ! वर्गस्य प्रथमाध्ययनस्य कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? । सुधर्मास्वामी प्राह-एवं

जवू ! समणेण जाव सपत्तेण दोचस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदंत ! मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने द्वितीय वर्ग का उत्क्षेपक प्रारभ किस रूप से प्ररूपित किया है-तब सुधर्मा स्वामी ने उनसे कहा-हे जवू ! सुनो यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए उन श्रमण भगवान् महावीर ने इस द्वितीय वर्ग के पांच अध्ययन प्ररूपित किये हैं-(तं जहा) वे इस प्रकार हैं-(सुभा, निसुभा, रभा, निरभा मयणा, जइण भंते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दोचस्स वग्गस्स पच अज्जयणा पण्णत्ता, दोचस्सण भते वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एव खलु जवू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ) (१) शुम्भा, (२) निशुम्भा (३) रम्भा, (४) निरम्भा (५) मदना, । अब जम्बू स्वामी पुनः सुधर्मा स्वामी से पूछते हैं कि हे भदंत ! यदि यावत् मुक्ति स्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान महावीरने द्वितीयवर्ग

जबू ! समणेण जाव सपत्तेण दोचस्स वग्गस्स पचअज्झयणा पण्णत्ता)

હે ભદન્ત ! મુક્તિસ્થાનને પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે બીજા વર્ગના ઉત્ક્ષેપક-પ્રારભ-કયા રૂપથી પ્રરૂપિત કર્યો છે ? ત્યારે સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જબૂ ! સાભળો, યાવત્ મુક્તિસ્થાનને વરેલા તે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ બીજા વર્ગના પાચ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે (तजहा) તે આ પ્રમાણે છે—

(सुभा, निसुभा, रभा, निरभा, मयणा, जइण भते ! समणेण जाव सपत्तेण धम्मकहाण दोचस्स वग्गस्स पच अज्झयणा पण्णत्ता, दोचस्स ण भते वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ! एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे णयरे, गुणसीलए चेइए-सामी समोसढे परिसा णिग्गया जाव पज्जुवासइ)

(૧) શુભા, (૨) નિશુભા, (૩) રભા, (૪) નિરભા, (૫) મદના હવે જબૂ સ્વામી ફરી સુધર્મા સ્વામીને પૂછે છે કે હે ભદન્ત ! જો યાવત્ મુક્તિ

'एवं सेसाविं' इत्यादि-एवं शेषाण्यपि=निशुम्भा १-रम्भा २-निरम्भा ३-मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नवरम्-एतावान् विशेषः-मातर पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि-निशुम्भाया माता निशुम्भश्री, पिता निशुम्भः। रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः। निरम्भाया माता निरम्भश्रीः, पिता निरम्भः। मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः। एते सर्वे गाथापतयः आसन्।

एवं खलु हे जम्बू! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये। उसमें और इसमे केवल अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पल्य की थी और इस शुभादेवी की ३॥, पल्य की थी। इस प्रकार हे जबू! इस द्वितीय वर्ग के प्रथम अ ययन का यह निक्षेपक है। इसी तरह निशु भा, रभा निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये। इन में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां जो माता पिता है वे दारिका सदृश नामवाले है-जैसे निशु भा के पिता का नाम निशु म, माता का नाम निशु भ श्री, रभाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री, निरभा के पिता नाम निरभ माता का नाम निरभश्री, मदना के पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री। ये सब ही गाथापति है। इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक-उपसहार-ह।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્યની હતી આ પ્રમાણે હે જબૂ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનને આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ જાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનુ નામ નિશુભ, માતાનુ નામ નિશુભશ્રી, રભાના પિતાનુ નામ રભ, માતાનુ નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનુ નામ નિરભ, માતાનુ નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનુ નામ મદન અને માતાનુ નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

पम्-अस्याः शुम्भादेव्याः ' अद्धुट्ठाइ ' अर्ध चतुर्थानि=सार्द्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीमाह-हे जम्बू ! निक्षेपकः=उपहारोऽध्ययनस्य वाच्यः ॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमा ध्ययनम् ॥

सिरी भारिया सुंभा दारिया, सेस जहा कालीए णवरं अद्धुट्ठाइ पलिओव माई ठिई, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्ता रिअज्झयणा सावत्थीए नवरं माया पिया सरिस नामया एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ निईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुभादेवी जो बलिचंचा नामकी राजधानी में शुभावतंसक नामके भवन में रहती थी-और शुभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वंदना करने के लिये आई। वहां उसने नाटयविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहां से पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्ठक नामका उद्यान था,। नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा पति रहता था। जिसका नाम शुभ था। इसकी शुभ श्री नाम की भार्या थी। दारिका का नाम शुभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवरं अद्धुट्ठाइ, पलिओवमाइ ठिई। एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवरं माया-पिया सरिसनामया, एवं खलु जंबू ! निक्खेवओ-निईयवग्गस्स पंच अज्झ यणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

शुभा देवी-के जे बलिचंचा नामे राजधानीमां शुभावतंसक नामना भवनमां रहेती हती अने शुभ नामे सिंहासन उपर बेसती हती-काली देवीना प्रकरणमां वर्णवेला पाठ मुजब प्रभुनी पासे तेमने वंदना करवा माटे आवी त्यां तेणे नाटयविधिनुं प्रदर्शन कर्युं त्यारबाद ते त्यांथी पाछी पोताना स्थाने जती रही तेमना जतां रह्या बाद गौतम स्वामीए प्रभुनी शुभा देवीना पूर्व भवनी पृच्छा करी त्यारे भगवाने तेमने आ प्रमाणे कह्युं के— श्रावस्ती नामे नगरी हती, तेमां कोष्ठक नामे उद्यान हतुं नगरीना राजानुं नाम जितशत्रु हतुं तेमां शुभ नामे गाथापति रहेतो हतो शुभश्री नामे तेनी पत्नी हती, तेनी पुत्रीनुं नाम शुभा हतुं त्यारपछीनुं तेनुं शेष वर्णन काली देवीनी जेमज समजी लेवुं जोइए तेमां अने आमां तफावत एटं

'एव सेसावि' इत्यादि-एव शेषाण्यपि=निशुम्भा १-रम्भा २-निरम्भा ३-मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्या विज्ञेयानि, नवरम्-एतावान् विशेषः-मातर पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि-निशुम्भाया माता निशुम्भश्री, पिता निशुम्भः। रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः। निरम्भाया माता निरम्भश्रीः, पिता निरम्भः। मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः। एते सर्वे गाथापतयः आसन्।

एव खलु हे जम्बू! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये। उसमें और इसमे केवल अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पल्य की थी और इस शुभादेवी की ३॥, पल्य की थी। इस प्रकार हे जबू! इस द्वितीय वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है। इसी तरह निशुभा, रभा निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये। इन में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहाँ जो माता पिता है वे दारिका सदृश नामवाले हैं-जैसे निशुभा के पिता का नाम निशुभ, माता का नाम निशुभ श्री, रभाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री, निरभा के पिता नाम निरभ माता का नाम निरभश्री, मदना के पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री। ये सब ही गाथापति हैं। इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक-उपसहार-हे।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લો જ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્યની હતી આ પ્રમાણે હે જબૂ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુભા, રભા, નિરભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ જાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુભાના પિતાનુ નામ નિશુભ, માતાનુ નામ નિશુભશ્રી, રભાના પિતાનુ નામ રભ, માતાનુ નામ રભશ્રી નિરભાના પિતાનુ નામ નિરભ, માતાનુ નામ નિરભશ્રી, મદનાના પિતાનુ નામ મદન અને માતાનુ નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

यम्–अस्याः शुम्भादेव्याः ' अद्धुट्ठाइ ' अर्द्ध चतुर्थानि=सार्द्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीमाह–हे जम्बूः! निक्षेपकः=उपसंहारोऽध्ययनस्य वाच्यः॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम् ॥

सिरी भारिया सुभा दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ पलिओव माई ठिई, एव खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एवं सेसा वि चत्ता रिअज्झयणा सावत्थीए नयर माया पिया सरिस नामया एव खलु जंबू! निक्खेवओ बिईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुभादेवी जो बलिचचा नामकी राजधानी में शुभावतसक नामके भवन में रहती थी-और शुभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वदना करने के लिये आई। वहाँ उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहा से पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्ठक नामका उद्यान था,। नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथा पति रहता था। जिसका नाम शुभ था। इसकी शुभ श्री नाम की भार्या थी। दारिका का नाम शुभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्धुट्ठाइ, पलिओवमाइ ठिई। एव खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नयर माया-पिया सरिसनामया, एव खलु जंबू! निक्खेवओ-बिईयवग्गस्स पच अज्झयणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

શુભા દેવી-કે જે બલિચચા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વદના કરવા માટે આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું ત્યારબા૦ તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે— શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોષ્ઠક નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતુ તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનુ નામ શુભા હતું ત્યારપછીનુ તેનુ શેષ વર્ણન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ તેમા અને આમા તફાવત એટ

'एवं सेसावि' इत्यादि–एवं शेषाण्यपि=निशुम्भा १–रम्भा २–निरम्भा ३–मदना ४ नामकानि चत्वारि अध्ययनानि श्रावस्त्या नगर्यां विज्ञेयानि, नवरम्–एतावान् विशेषः–मातरं पितरः सदृशनामानः दारिकासदृशनामानः, तथाहि–निशुम्भाया माता निशुम्भश्री, पिता निशुम्भः। रम्भाया माता रम्भश्रीः, पिता रम्भः। निरम्भाया माता निरम्भश्रीः, पिता निरम्भः। मदनाया माता मदनश्रीः पिता मदनः। एते सर्वे गाथापतयः आसन्।

एवं खलु हे जम्बू! निक्षेपको द्वितीयवर्गस्य ॥ ७ ॥

॥ इति धर्मकथाना द्वितीयो वर्गः समाप्तः ॥ २ ॥

कालीदेवी का है वैसा ही जानना चाहिये। उसमें और इसमे केवल अन्तर इतना ही है कि कालीदेवी की स्थिति २॥ पल्य की थी और इस शुभादेवी की ३॥, पल्य की थी। इस प्रकार हे जम्बू! इस द्वितीय वर्ग के प्रथम अध्ययन का यह निक्षेपक है। इसी तरह निशुंभा, रंभा निरम्भा और मदना नाम के चार अध्ययन भी जानना चाहिये। इन में विशेषता केवल इतनी ही है कि यहां जो माता पिता है वे दारिका सदृश नामवाले हैं–जैसे निशुंभा के पिता का नाम निशुंभ, माता का नाम निशुंभ श्री, रंभाके पिता का नाम रम्भ, माताका नाम रम्भश्री, निरंभा के पिता नाम निरंभ माता का नाम निरंभश्री, मदना के पिता का नाम मदन, और माताका नाम मदनश्री। ये सब ही गाथापति हैं। इस तरह यह द्वितीयवर्ग का निक्षेपक–उपसंहार–है।

॥ द्वितीयवर्ग समाप्त ॥

લોજ છે કે કાલી દેવીની સ્થિતિ ૨॥ પલ્યની હતી અને આ શુભા દેવીની સ્થિતિ ૩॥ પલ્યની હતી આ પ્રમાણે હે જંબૂ! આ બીજા વર્ગના પ્રથમ અધ્યયનનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ નિશુંભા, રંભા, નિરંભા અને મદના નામના ચાર અધ્યયનો પણ જાણી લેવા જોઈએ એમનામા વિશેષતા ફક્ત એટલી જ છે કે અહીં જે માતાપિતા છે તે પુત્રીના જેવા જ નામવાળા છે જેમકે નિશુંભાના પિતાનુ નામ નિશુંભ, માતાનુ નામ નિશુંભશ્રી, રંભાના પિતાનુ નામ રંભ, માતાનુ નામ રંભશ્રી નિરંભાના પિતાનુ નામ નિરંભ, માતાનુ નામ નિરંભશ્રી, મદનાના પિતાનુ નામ મદન અને માતાનુ નામ મદનશ્રી, આ બધા ગાથાપતિઓ છે આ પ્રમાણે બીજા વર્ગનો નિક્ષેપક ઉપસંહાર છે

॥ બીજો વર્ગ સમાપ્ત ॥

यम्-अस्याः शुम्भादेव्याः 'अद्धुट्ठाइ' अर्द्ध चतुर्थानि=सार्द्धत्रयाणि पल्योपमानि स्थितिरस्ति। सुधर्मास्वामीमाह-हे जम्बूः! निक्षेपकः=उपहारोऽध्ययनस्य वाच्यः ॥

॥ इति द्वितीयवर्गस्य प्रथमाध्ययनम् ॥

सिरी भारिया सुंभा दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्भुट्टाइ पलिओवमाइं ठिई, एव खलु जंबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्तारिअज्झयणा सावत्थीए नवर माया पिया सरिस नामया एव खलु जंबू! निक्खेवओ बिईयवग्गस्स बीओ वग्गो समत्तो) शुभादेवी जो बलिचचा नामकी राजधानी में शुभावतसक नामके भवन में रहती थी-और शुभनाम के सिंहासन पर बैठती थी-वह काली देवी के प्रकरण में वर्णित पाठ के अनुसार प्रभु के समीप उनको वन्दना करने के लिये आई। वहाँ उसने नाट्यविधिका प्रदर्शन किया बादमें फिर वह वहा से पीछे अपने स्थान पर चली गई। उसके चले जाने के बाद गौतमस्वामी ने प्रभु से उस शुभादेवी के पूर्वभव की पृच्छा की-तब भगवान् ने उन से इस प्रकार कहा-श्रावस्ती नामकी नगरी थी। उसमें कोष्ठक नामका उद्यान था,। नगरी के राजा का नाम जितशत्रु था उसमें गाथापति रहता था। जिसका नाम शुभ था। इसकी शुभ श्री नाम की भार्या थी। दारिका का नाम शुभा था। इसके बाद का इसका वर्णन

दारिया, सेस जहा कालीए णवर अद्धट्ठाइ, पलिओवमाइ ठिई। एव खलु जबू! निक्खेवओ अज्झयणस्स एव सेसा वि चत्तारि अज्झयणस्स सावत्थीए नवर माया पिया सरिसनामया, एव खलु जबू! निक्खेवओ-बिईयवग्गस्स पच अज्झयणा समत्ता बीओ वग्गो समत्तो)

શુભા દેવી-કે જે બલિચચા નામે રાજધાનીમા શુભાવતસક નામના ભવનમા રહેતી હતી અને શુભ નામે સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-કાલી દેવીના પ્રકરણમા વર્ણવેલા પાઠ મુજબ પ્રભુની પાસે તેમને વદના કરવા માટે આવી ત્યા તેણે નાટ્યવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું ત્યારબા૦ તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેમના જતા રહ્યા બાદ ગૌતમ સ્વામીએ પ્રભુની શુભા દેવીના પૂર્વ ભવની પૃચ્છા કરી ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે—શ્રાવસ્તી નામે નગરી હતી, તેમા કોષ્ઠક નામે ઉદ્યાન હતુ નગરીના રાજાનુ નામ જિતશત્રુ હતું તેમા શુભ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો શુભશ્રી નામે તેની પત્ની હતી, તેની પુત્રીનુ નામ શુભા હતુ ત્યારપછીનુ તેનુ શેષ વર્ણન કાલી દેવીની જેમજ સમજી લેવું જોઇએ તેમા અને આમા ત ાવત્ એટ

अद्धपलिओवम ठिई सेस तहेव, एव खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स)
उस काल और उस समय में राजगृह नाम का नगर था। वहां गुण-शिलक नाम का उद्यान था। उसमें तीर्थंकर परपरानुसार विहार करते हुए श्रमण भगवान् महावीर आकर ठहरे हुए थे। नगर की परिषदा प्रभु को वदना के लिये अपने २ घर से निकलकर उस उद्यान मे आई प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। सुनकर लोगो ने यावत् प्रभु की पर्युपासना की। उसी समय वहा पर धरणेन्द्र की अग्रमहिषी अलादेवी जो धरणा राजधानी में अलावतसक इस नाम के भवन मे रहती थी-और जिसके बैठने के सिंहासन का नाम अला था प्रभु को वदना आदि करने के निमित्त आई। वहाँ आकर उस ने नाटयविधि दिखलाई। दिखलाकर वह फिर वहा से पीछे अपने स्थान पर गई। उसके जाते ही गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से उसका पूर्वभव पूछा तब भगवान् ने उनसे इस प्रकार कहा वाणारसी नामकी नगरी थी-उसमें काम महावन नाम का उद्यान था। उसमे अलनाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या "अल श्री" इस नामकी थी। इस की एक पुत्री थी जिसका नाम अला था। इसका-अला का शेष कथानक, कालीदेवी का

वाओ, साइरेग अद्धपलिओवम ठिई सेस तहेव, एव खलु णिक्खेवओ पढमज्झयणस्स)

તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતુ તેમા ગુણશિલક નામે ઉદ્યાન હતુ તેમા તીર્થંકર પરપરા મુજબ વિહાર કરતાં પધારીને શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે મુકામ કર્યો હતો નગરની પરિષદ પ્રભુને વદન કરવા માટે પોતપોતાને ઘેરથી નીકળીને તે ઉદ્યાનમા આવી પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને લોકોએ યાવત્ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી, તે વખતે ત્યા ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) અલાદેવી કે જે ધરણા રાજધાનીમા અલાવતસક આ નામના ભવનમા રહેતી હતી, અને જેને બેસવાના સિંહાસનનુ નામ અલા હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી ત્યા આવીને તેણે નાટયવિધિનુ પ્રદર્શન કર્યું, પ્રદર્શન કરીને તે ત્યાથી પાછી પોતાના સ્થાને જતી રહી તેના ગયા પછી તરત જ ગૌતમ સ્વામીએ શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને તેનો પૂર્વભવ પૂછ્યો ત્યારે ભગવાને તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ કે વાણારસી નામે નગરી હતી, તેમા કામમહાવન નામે ઉદ્યાન હતુ, તેમા અલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો તેની ભાર્યાનુ નામ અલશ્રી હતુ [illegible] હતી તેનુ નામ અલા હતુ અલા વિષેનુ શેષ કથાનક પહેલા

भदन्त ! श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन धर्मकथाना तृतीयस्य वर्गस्य चतुष्पञ्चा शद् अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तेषु प्रथमस्य खलु हे भदन्त ! अध्ययनस्य श्रमणेन यावत् मोक्ष सम्प्राप्तेन कोऽर्थः प्रज्ञप्तः ? सुधर्मस्वामी कथयति—

एव खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृह नगरम्, गुण शिलक चैत्यम्, स्वामी समवसृत, परिषन्निर्गता यावत्-भगवन्त पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये अलादेवी=धरणेन्द्रस्याग्रमहिषी धरणाया राजधान्याम् अलावतसके भवने अले सिंहासने, एव 'कालीगमएण' कालीगमेन=काली सदृशपाठेन यावत् नाट्यविधिमुपदर्श्य प्रतिगता। 'पुव्वभवपुच्छा' पूर्वभवपृच्छा-गोतमस्वामी अलादेव्याः पूर्वभव पृच्छति, भगवान् कथयति-वाणारसी नगरी। काममहावन चैत्यम्। 'अले' अलनामा गाथापतिः। अलश्रीर्भार्या। अला दारिका। शेष 'जहाकालीए' यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णन तथैव अला देव्या वर्णन निज्ञेयम्, नवरम्-धरणस्याग्रमहिषीतयाऽस्या उपपातः, सातिरेक=

यावत् मुक्ति को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथा के तृतीयवर्ग के ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं तो उनमें से हे भदत ! उन्हीं यावत् मुक्ति प्राप्त श्रमण भगवान महावीर ने प्रथम अध्ययन का क्या अर्थ प्ररूपित किया है ? इस प्रश्न के समाधान निमित्त सुधर्मा स्वामी उनसे कहते है कि-(एव खलु जबू !) हे जबू ! तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है(तेण कालेण तेण समएण अलादेवी धरणाए राय हाणीए अलावडसए भवणे अलंसि सीहासणसि एव कालीगमएण जाव णट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी, काममहावणे चेइए अल गाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारियासेस जहा कालीए णवर धरणस्स अग्गमहिसित्ताए उववाओ, साइरेग

છે કે હે ભદન્ત ! યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત કરેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મક થાના ત્રીજા વર્ગના ૫૪ ચોપનઅધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તો તેઓમાંથી હે ભદત ! તે જ યાવત્ મુક્તિ પ્રાપ્ત શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે પહેલા અધ્યયનનો શો અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે ? આ પ્રશ્નના સમાધાનમા શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે (एव खलु जबू !) હે જબૂ ! તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે

(तेण कालेण तेण समएण अलादेवी धरणाए रायहाणीए अलावडसए भवणे अलसि सीहासणसि एव काली गमएण जाव णट्टविहिं उवदसेत्ता पडिगया, पुव्वभवपुच्छा, वाणारसी णयरी, काममहावणे चेइए, अल गाहावई, अलासिरी भारिया, अलादारिया सेस जहा कालीए णवर धरणस्स उव-

एव यावत् घोषस्यापि=घोपेन्द्रस्यापि, एतान्येव षड् अध्ययनानि सन्ति। एवमेतानि दाक्षिणात्यानामिन्द्राणा चतुष्पञ्चाशद् अध्ययनानि भवन्ति। सर्वा अपि पूर्वोक्तादेव्य पूर्वभवे वाणारस्या जाताः काममहावने चैत्ये भगवतः पार्श्वस्यार्हतः समीपे प्रव्रजिताः, तृतीयवर्गस्य निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यप्रबन्धो विज्ञेयः॥ सू०८।

॥ इति धर्मकथाना तृतीयो वर्गः समाप्तः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थो वर्ग प्रारभ्यते–' चउत्थस्स ' इत्यादि ।

मूलम्–चउत्थस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा–पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ एव खलु जबू ! तेणं कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेण तेण समएणं रूया देवी रूयाणदा रायहाणी रूयगवडिसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवरं पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया सेस तहेव, णवर भूयाणदअग्गमहिसि-

वर्णन भी धरणेन्द्र के वर्णन जैसा ही है। घोपेन्द्र के भी ये ही ६ अध्ययन इसी तरह के हैं। इस तरह दक्षिण दिशा सबन्धी इन्द्रों के० ५४ अध्ययन हो जाते हैं। ये सब देवियां पूर्वभवमें वाणारसी में उत्पन्न हुई और काममहावन उद्यानमे भगवान् पार्श्वनाथ अर्हंत प्रभुके समीप दीक्षित हुई। इस तरहसे धर्मकथाका यह "तृतीय वर्ग समाप्त हुआ है।"

વર્ણન જેવુ જ છે ઘોપેન્દ્રના પણ આ જાતના જ ૬ અધ્યયનો છે આ પ્રમાણે દક્ષિણ દિશા સબધી ઇન્દ્રોના ૫૪ અધ્યયનો થઈ જાય છે આ બધી દેવીઓ પૂર્વભવમા વાણારસીમા ઉત્પન્ન થઈ હતી અને કામમહાવન ઉદ્યાનમા ભગવાન પાર્શ્વનાથ અર્હંત પ્રભુની પાસે દીક્ષિત થઈ આ પ્રમાણે ધર્મકથાનો આ ત્રીજો વર્ગ પૂરો થયો છે

साधिकम् अर्द्धपल्योपम स्थिति । शेष तथैव। एव खलु निक्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य। एव क्रमात् शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युदपि ६। सर्वा एता धरणस्य=धरणेन्द्रस्य अग्रमहिष्य एव। एतानि षड् अध्ययनानि वेणुदेवस्यापि। ' अविसेसिया ' अविशेषितानि=निर्विशेषानि सदृशानि भणितव्यानि।

जैसा कथानक पीछे वर्णित किया जा चुका है वैसा ही जानना चाहिये। उसके वर्णन में और इसके वर्णन में केवल अन्तर इतना ही है कि यह धरणेन्द्र की अग्रमहिषी के रूप में उत्पन्न हुई और इसकी स्थिति ११। पल्य से कुछ अधिक है। बाकी का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के जैसा ही है। इस तरह यह द्वितीयवर्ग के प्रथम अध्ययन का निक्षेपक–उपसहार–है।–(एव कमा सक्का, सतेरा, सोयामणी, इदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ, एव, एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाण इदाण–चउप्पण्ण अज्झयणा भवति, सव्वओ वि वाणारसीए काममहावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ८ ॥

(तइओ वग्गो समत्तो) इसी क्रम से शक्रा २, सतेरा ३, सौदामनी ४, इन्द्रा ५, घनविद्युत् ६, ये सब देवियां धरणेन्द्र की ही अग्रमहिषियां थीं। इस तरह के ६ अध्ययन वेणुदेव के भी हैं। और इनका

વર્ણવેલા કાલી દેવીના કથાનકની જેમજ સમજી લેવું જોઈએ તેના અને આના વર્ણનમા તફાવત ફક્ત એટલો જ છે કે આ ધરણેન્દ્રની અગ્રમહિષીના રૂપમા ઉત્પન્ન થઈ અને આની સ્થિતિ ૧॥ પલ્ય કરતા કંઈક વધારે છે આનુ બાકીનુ વર્ણન કાલી દેવી જેવુ જ છે આ પ્રમાણે આ બીજા વર્ગના પહેલા અધ્યયનનો નિક્ષેપક ઉપસહાર છે

(एव कमा सक्का सतेरा, सोयामणी, इदा, घणविज्जुया वि, सव्वओ एयाओ धरणस्स, अग्गमहिसीओ एव एते ६ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा, एव जाव घोसस्स वि एए चेव ६ अज्झयणा, एवमेते दाहिणिल्लाण इदाण–चउप्पण्ण अज्झयणा भवति, सव्वाओ वि वाणारसीए काम महावणे चेइए तइयवग्गस्स णिक्खेवओ ॥ ८ ॥ तइओ वग्गो समत्तो)

આ અનુક્રમ પ્રમાણે જ શક્રા ૨, સતેરા ૩, સૌદામની ૪, ઇન્દ્રા ૫, ઘનવિદ્યુત ૬, આ બધી દેવીઓ ધરણેન્દ્રની જ અગ્રમહિષીઓ હતી આ પ્રમાણે જ ૬ અધ્યયનો વેણુ દેવીના પણ છે અને એમનુ વર્ણન ધરણેન્દ્રના

वसरण=भगवतः श्री महावीरस्वामिनः समागमन सजात, यावत् परिषद् भगवन्त पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूप कान्तसके भवने रूपके सिंहासने यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तथा=तद्वत्

समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएणं रूया देवी, रूयाणदा रायहाणी रूयगवर्डिसए भवणे रूयगसि सीहासणंसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूया वि, रूयसावि, रूयगावई वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जम्बू ! उत्क्षेपक इस प्रकार है-उसकाल में और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ। परिषद प्रभु को वदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहा प्रभु विराजमान थे वहां आई । प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया। यावत् सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में भूतानद इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को वदना के लिये

(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण रूया देवी, रूयाणदा, रायहाणी रूयगवर्डिसए भवणे रूयगसि सीहासणसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूण पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूया वि, रूयसावि, रूयगाहावई, वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

હે જબૂ ! પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ પ્રભુને વદના કરવા માટે પરિષદ પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને જ્યા પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યા આવી, પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો યાવત્ સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે ભૂતાનદ ઇન્દ્રની અગ્રદેવી (પટરાણી) જેનુ નામ રૂપા દેવી હતું-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી તેના રહેવાના ભવનનુ

त्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई णिक्खेवओ एवं सुरू-यावि रूयंसावि रूयगावईवि रूयकंतावि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स, णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ सू० ९ ॥

॥ चउत्थो वग्गो समत्तो ॥ ४ ॥

टीका—'चउत्थस्स-चतुर्थवर्गस्य 'उक्खेवओ' उत्क्षेपकः=प्रारम्भवाक्य पाठोऽत्रवाच्य । सुधर्मस्वामी प्राह-एवं खलु जम्बूः ! श्रमणेन यावत्सम्प्राप्तेन धर्मकथानां चतुर्थवर्गस्य चतुष्पञ्चाशत् अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा प्रथम मध्ययनं यावत्-चतुष्पञ्चाशत्तमम ध्ययनम् । तेषु प्रथमस्याध्ययनस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे सम

—ःचतुर्थ वर्ग प्रारंभः—

'चउत्थस्स उक्खेवओ' इत्यादि ।

टीकार्थ.—(चउत्थस्स उक्खेवओ) चतुर्थ वर्ग का प्रारंभ किस तरह से हुआ है-इस प्रकार-जम्बूस्वामी के पूछने पर श्री सुधर्मास्वामी उनसे कहते हैं कि (एवं खलु जंबू) हे जंबू ! सुनो-(समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे) यावत् मुक्तिस्थान को प्राप्त हुए श्रमण भगवान् महावीर ने धर्मकथा के चतुर्थ वर्ग के ५४ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं-वे प्रथम अध्ययन से लेकर ५४ वें अध्ययन तक हैं-(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं

ચોથા વર્ગ પ્રારંભ

'चउत्थस्स उक्खेवओ' इत्यादि—

ટીકાર્થ—(चउत्थस्स उक्खेवओ) ચોથા વર્ગની શરૂઆત કેવી રીતે થઇ છે ? આ જાતનો જંબૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે (एवं खलु जंबू) હે જંબૂ ! સાંભળો,

(समणेणं जाव संपत्तेणं धम्मकहाणं चउत्थवग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता तं जहा पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे)

યાવત્ મુક્તિસ્થાનને પામેલા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મ કથાના ચોથા વર્ગના ૫૪ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યાં છે તેઓ પહેલા અધ્યયનથી માંડીને ૫૪ મા અધ્યયન સુધી છે

वसरण=भगवतः श्री महावीरस्वामिनः समागमन सजात, यावत् परिषद् भगवन्त पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये रूपादेवी=भूतानन्देन्द्रस्याग्रमहिषी रूप कावतसके भवने रूपके सिंहासने यथा कान्याः=कालीदेव्या वर्णन तथा=तद्वत्

समएणं रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएणं रूया देवी, रूयाणंदा रायहाणी रूयगवर्डिसए भवणे रूयगसि सीहासणसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूणं पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूयया वि, रूयसावि, रूयगावई वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स चउत्थो वग्गो समत्तो)

प्रथम अध्ययन का हे जबू! उत्क्षेपक इस प्रकार हैं-उसकाल में और उस समय में राजगृह नगर में महावीर स्वामी का आगमन हुआ। परिषद प्रभु को वदना करने के लिये अपने २ स्थान से निकलकर जहा प्रभु विराजमान थे वहा आई । प्रभु ने धर्म का उपदेश दिया। यावत् सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में भूतानद इन्द्र की अग्रदेवी जिसका नाम रूपादेवी था वह प्रभु को वदना के लिये

(पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण रूयादेवी, रूयाणदा, रायहाणी रूयगवर्डिसए भवणे रूयगसि सीहासणसि जहा कालीए तहा नवर पुव्वभवे चपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगे गाहावई रूयगसिरी भारिया, रूया दारिया, सेस तहेव, णवर भूयाणद अग्गमहिसित्ताए उववाओ देसूण पलिओवम ठिई निक्खेवओ, एव सुरूयया वि, रूयसावि, रूयगाहावई, वि रूयकता वि रूयप्पभावि, एयाओ चेव उत्तरिल्लाण इदाण भाणियव्वाओ, जाव महाघोसस्स णिक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ॥ ९ ॥ चउत्थो वग्गो समत्तो)

હે જબૂ! પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ પ્રભુને વદના કરવા માટે પરિષદ પોતપોતાને સ્થાનેથી નીકળીને જ્યા પ્રભુ વિરાજમાન હતા ત્યા આવી, પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો યાવત્ સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ભૂતાનદ ઇન્દ્રની અગ્રદેવી (પટરાણી) જેનુ રૂપા દેવી હતુ-પ્રભુને વદના કરવા માટે આવી તેના રહેવાના ભવનનુ

रूपादेव्या अपि विज्ञेयम्, नवरं=विशेषोऽयम्-पूर्वभवे चम्पाया नगर्या पूर्ण भद्र चैत्यम्, रूपको गाथापतिः, रूपश्रीर्भार्या, रूपादारिका, शेष तथैव नवर भूतानन्दाग्रमहिषीतया तस्या उपपातः जन्म। देशोन पल्योपम स्थितिः। निक्षेपकः=समाप्तिवाक्यरूपः सम्बन्धोऽत्र विज्ञेयः। एवं सुरूपाऽपि २, रूपांशाऽपि ३, रूपकावत्यपि ४, रूपकान्तापि ५, रूपप्रभापि ६। एताश्चैव उत्तरीयाणामिन्द्राणां

आई। इसके रहने के भवन का नाम रूपकावतंसक था। और जिस सिंहासन पर यह बैठती थी उसका नाम रूपक था। पीछे जिस प्रकार का वर्णन कालीदेवी का किया गया है-उसी प्रकार का इनका भी वर्णन जानना चाहिये। उसके पूर्वभव का वर्णन इस प्रकार है-यह पूर्वभव में चंपा नामकी नगरी में कि जिसमें पूर्णभद्र नाम का उद्यान था और रूपक गाथापति जिस में रहता था उस गाथापति की यह रूपश्री भार्या से " रूपा दारिका " इस नाम से पुत्री उत्पन्न हुई थी। बाद में प्रभु का उपदेश सुनकर यह प्रतिबोध को प्राप्त हो गई और कालीदेवी की तरह यह आर्या बन गई इसके आगे जिस तरह का काली देवी का वृत्तान्त बना इसी तरह से इसका भी जानना चाहिये। जब यह काल अवसर काल कर गई तब यह भूतानद इन्द्र की अग्रमहिषीरूप से उत्पन्न हुई। वहां इसकी कुछकम १, पल्य की स्थिति है। इस प्रकार रूपा देवी के कथानक का यह निक्षेपक है। इसी तरह से (२) सुरूपा (३) रूपांशा (४) रूपकावती (५) रूपकान्ता और ६ रूपप्रभा का भी वर्णन जानना

નામ રૂપકાવતસક હતુ અને જે સિંહાસન ઉપર તે બેસતી હતી તેનુ નામ રૂપક હતુ જેમ પહેલા કાલી દેવીનુ વર્ણન કરવામા આવ્યુ છે તેમજ આનુ વર્ણન પણ સમજી લેવુ જોઈએ તેના પૂર્વભવનુ વર્ણન આ પ્રમાણે છે— આ પૂર્વભવમા ચ પા નામની નગરીમા-કે જેમા પૂર્ણભદ્ર નામે ઉદ્યાન હતુ અને રૂપક ગાથાપતિ જેમા રહેતો હતો તે ગાથાપતિની આ રૂપશ્રી ભાર્યાથી 'રૂપાદારિકા' આ નામથી પુત્રી રૂપે ઉત્પન્ન થઈ હતી ત્યારપછી પ્રભુનો ઉપદેશ સાભળીને એ બોધને પ્રાપ્ત થઈ અને કાલી દેવીની જેમ આર્યા થઈ ગઈ એના પછીની વિગત કાલી દેવીની હતી તેવી જ એની પણ સમજી લેવી જોઈએ જ્યારે તેણે કાળ અવસરે કાળ કર્યો ત્યારે આ ભૂતાનદ ઇન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) ના રૂપમા ઉત્પ ન થઈ ત્યા તેની થોડી ઓછી એક પલ્યની સ્થિતિ છે આ પ્રમાણે રૂપાદેવીના કથાનકનો આ નિક્ષેપક છે આ પ્રમાણે જ (૨) સુરૂપા, (૩) રૂપાશા, (૪) રૂપકાવતી, (૫) રૂ અને

भणितव्या'=अग्रमहिष्यो वक्तव्या यावत् महाघोपस्य । महाघोपेन्द्रस्य । निक्षेपकश्चतुर्थवर्गस्य ॥ सू०९ ॥

॥ इति धर्मकथाना चतुर्थो वर्ग समाप्तः ॥ ४ ॥

अथ पञ्चमो वर्गः प्रारभ्यते—पचमवग्गस्स ' इत्यादि ।

मूलम्—पंचमवग्गस्स उक्खेवओ, एव खलु जंबू ! जाव वत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—कमला१ कमलप्पभा२ चेव, उप्पला३ य सुदंसणा४। रूववई५ वहुरूवा६, सुरूवा७ सुभगाविय८ ॥ १ ॥ पुण्णा९ वहुपुत्तिया१० चेव, उत्तमा११ तारयाविय१२। पउमा१३ वसुमती१४ चेव, कणगा१५ कणगप्पभा१६ ॥२॥ वडेंसा१७ केउमई१८ चेव, वइरसेणा१९ रइप्पिया२०। रोहिणी२१ नवमिया२२ चेव, हिरी२३ पुप्फवईइय २४ ॥३॥ भुयगा२५ भुयगवई२६ चेव, महाकच्छा॰ऽपराइया२८। सुघोसा२९ विमला३० चेव, सुस्सरा३१ य सरसवई३२ ॥४॥ उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एव खलु जवू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण कमलादेवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंब

चाहिये। ये देवियां भूतानंद इन्द्र की तरह उत्तरीय इन्द्रो की भी अग्रमहिषियां हैं। और ये ही महाघोषेन्द्र की भी हैं। इस प्रकार यह चतुर्थ वर्ग का निक्षेपक (स्वरूप) है।

॥ चतुर्थवर्ग समाप्त ॥

(૯) રૂપપ્રભાનુ વર્ણન પણ સમજી લેવુ જોઈએ આ બધી દેવીઓ ભૂતાનંદ ઈન્દ્રની જેમ ઉત્તરીય ઈન્દ્રોની પણ અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) છે અને મહાઘોષેન્દ્રની પણ તેઓજ પટરાણીઓ છે આ પ્રમાણે આ ચોથા વર્ગનો નિક્ષેપક છે

ચોથો વર્ગ સમાપ્ત

उत्क्षेपकः प्रथमाध्ययनस्य । जम्बूस्वामिना पृष्टे सुधर्मास्वामीप्राह-एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे 'समोसरण' समवसरण-भग

३१, सरस्वती ३२,। (उक्खेवओ पढमज्झयणस्स एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं कमला देवी, कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहस्सववणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स० अतिए निक्खंता कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमं ठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वओ णागपुरे सहस्सववणे उज्जाणे माया पिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं)

इसके बाद जम्बूस्वामी ने श्री सुधर्मास्वामी से पूछा कि इनमें से कमला नामका जो प्रथम अध्ययन है उसका उत्क्षेपक किस तरह से है-इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर उनसे सुधर्मास्वामी ने कहा-कि हे जम्बू! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-उस काल में और उस समय में राजगृह नामका नगर था। उसमें भगवान् महावीर का आगमन हुआ। यावत् वहां की परिषद् प्रभु को वंदना करने के लिये आई।

(उक्खेवओ पढमज्झयणस्स, एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव णवरं पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स० अतिए निक्खंता कालस्स पिसाय कुमारिंदस्स अग्गमहिसी अद्धपलिओवमठिई, एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं वाणमंतरिंदाणं भाणियव्वाओ, सव्वाओ णागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे मायापिया धूया सरिसनामया, ठिई अद्धपलिओवमं)

ત્યારપછી જમ્બૂ સ્વામીએ શ્રી સુધર્મા સ્વામીને પૂછ્યું કે આ બધામાં કમલા નામે જે પહેલું અધ્યયન છે તેનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જમ્બૂ સ્વામીએ પ્રશ્ન કર્યા બાદ તેમને શ્રી સુધર્મા સ્વામીએ કહ્યું કે હે જમ્બૂ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામે નગર હતું તેમાં ભગવાન મહાવીરનું આગમન થયું યાવત્ નગરની પરિષદ તેમને વંદના કરવા માટે આવી પ્રભુએ સૌને

-वन् महावीरस्वामी समागमन सजात, यावत् परिषद् भगवन्त पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये कमला देवी कमलाया राजधान्यां, कमलावतमके भवने कमले सिंहासने, शेष यथा-काल्या=कालीदेव्या वर्णन तथैवाऽस्या अपि, नवर=विशेषोऽयम्-पूर्वभवे नागपुर नगर, सहस्राम्रवनमुद्यानम्, कमलस्य गाथापतेः कमलश्रियो भार्यायाः कमला दारिका पार्श्वस्यार्हतः पुरुषादानीयस्य अन्तिके 'निक्खता' निष्क्रान्ता=प्रव्रजिता, कालस्य पिशाचकुमारेन्द्रस्य अग्रमहिषी। अर्द्धपल्योपम स्थितिः। एव शेषाण्यपि कमलप्रभादिनामकान्यपि एकत्रिंशद् अध्य-

प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। परिषद ने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल में और उस समय मे कमला नाम की देवी, कमला राजधानी मे कमलावतसक भवन में रहती थी। उस के सिंहासन का नाम कमला था। इसके आगे का समस्त वर्णन कालीदेवी के वर्णन जैसा ही जानना चाहिये। परन्तु इसमे जो विशेषता है वह इस प्रकार है-जब गौतमस्वामी ने उसके-अर्थात् देवी के चले जाने के बाद उसके पूर्वभव का वृत्तान्त पूछा-तब प्रभु ने उनसे इस प्रकार कहा-पूर्वभव के इसके नगर का नाम नागपुर था-उसमे सहस्राम्रवन नाम का उद्यान था। उस नगर में कमल नामका गाथापति रहता था।-उसकी भार्या का नाम कमला श्री था। इनके एक पुत्री थी जिस का नाम कमला था। वह काललब्धि के आनेपर पुरुषादानीय-पुरुष श्रेष्ठ-पार्श्वनाथ अर्हत प्रभु के समीप प्रव्रजित हो गई। बाद में मरने पर वह काल नाम के पिशाच कुमारेन्द्र की अग्रमहिषी बनी। वहा इसकी स्थिति अर्धपल्य की है।

ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. પરિષદે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી. તે કાળે અને તે સમયે કમલા નામની દેવી, કમલા રાજધાનીમા કમલાવતસક ભવનમા રહેતી હતી. તેના સિંહાસનનુ નામ કમલા હતુ. એના પછીનુ બધુ વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ જ સમજી લેવુ જોઈએ. પરતુ આમા જે કંઈ વિશેષતા છે તે એ પ્રમાણે છે-કે જ્યારે ગૌતમ સ્વામીએ દેવીના ગયા પછી તેના પૂર્વ ભવ વિષેની વિગત પૂછી ત્યારે પ્રભુએ તેમને આ પ્રમાણે કહ્યુ-કે આના પૂર્વ ભવના નગરનુ નામ નાગપુર હતુ. તેમા સહસ્રામ્રવન નામે ઉદ્યાન હતુ. તે નગરમા કમલ નામે ગાથાપતિ રહેતો હતો. તેની પત્નીનુ નામ કમલાશ્રી હતું. એમને એક દિકરી હતી તેનુ નામ કમલા હતુ, તે યોગ્ય કાળલબ્ધિના અવ સરે પુરુષાદાનીય-પુરુષ શ્રેષ્ઠ-પાર્શ્વનાથ અર્હત પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ ગઈ. ત્યારપછી મૃત્યુ થયા બાદ તે કાલ નામના પિશાચ કુમારેન્દ્રની અગ્ર

यनानि दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तरेन्द्राणामग्रमहिषीणां भणितव्यानि । सर्वा एताः पूर्वभवे नागपुरे नगरे सजाताः, सहस्राम्रवने उद्याने भगवत्पार्श्वप्रभोः समीपे प्रव्रजिताः । मातापिता दुहिता सदृशनामकः । आसां स्थितिरर्द्धपल्योपमम् ॥सू०१०॥

॥ इति धर्मकथानां पञ्चमो वर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

मूलम्–छट्टोवि वग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकालादीणं उत्तरिल्लाणं इंदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरु उज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ॥ सू० ११ ॥

॥ छट्टो वग्गो समत्तो ॥ ६ ॥

बाकी जो ३१, कमलप्रभा नामके अध्ययन हैं वे दक्षिण दिशा सबन्धी वानव्यतरेन्द्रों की अग्रमहिषियों के हैं ऐसा जानना चाहिये। ये सब ही पूर्वभव में नागपुर नगर में उत्पन्न हुई–और सहस्राम्रवन नामके उद्यान में भगवान् पार्श्वनाथ के समीप प्रव्रजित हुई । इन अध्ययनों में माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कमलप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है–इसी तरह से और अध्ययनों में भी जानना चाहिये। इन सब देवियों की स्थिति अर्धपल्य की है ॥सू१०।

–:पचमवर्ग समाप्तः–

મહિષી (પટરાણી) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે શેષ જે ૩૧ કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની અગ્રમહીષીઓ (પટરાણીઓ) ના સમજવા જોઈએ આ બધી પૂર્વભવમા નાગપુર નગરમાં ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રાબ્રવન નામના ઉદ્યાનમા ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવજિત થઈ ગઈ આ બધા અધ્યયનોમા માતાપિતા તેમજ પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યયનમા માતાનુ નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનુ નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનુ નામ કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઈએ આ બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે ॥ સૂ૦ ૧૦ ॥

પાચમો વર્ગ સમાપ્ત

टीका—' छट्ठोवि ' इत्यादि षष्ठोऽपि वर्ग. पञ्चमवर्गसदृशः । नवरम्-एतावान् विशेष -अत्र महाकालादीनाम् उत्तरीयाणामिन्द्राणामग्रमहिष्य' । एताः सर्वाः पूर्वभवे साकेतनगरे उत्तरकुरुद्याने पार्श्वप्रभुसमीपे प्रव्रजिताः मातरः पितरो दुहितरः सदृशनामकाः । शेष तदेव सर्वं वाच्यम् ॥ सू० ११ ॥

इति धर्मकथाना षष्ठो वर्गः समाप्तः ॥ ६ ॥

-ःषष्ठवर्ग प्रारभः-

' छट्ठो वि वग्गो पचमवग्गसरिसो ' इत्यादि ।

टीकार्थ —(छट्ठो वि वग्गो पचमवग्गसरिसो, णवर महाकालादीण उत्तरिल्लाण इदाण अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेयनयरे उत्तरकुरुउज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेस त चेव ११) छठा वर्ग भी पचमवर्ग के जैसे ही है। परन्तु इसमें जो उसकी अपेक्षा विशेषता है -वह इस प्रकार है-इस अध्ययन में उत्तर दिशा के इन्द्र महाकाल आदिकों की अग्रमहिषियों का वर्णन है। ये सब अग्रमहिषिया पूर्वभव में साकेत नगर (अयोध्या) में उत्तर कुरु नामके उद्यान मे पार्श्वप्रभु के समीप प्रव्रजित हुई हैं। माता पिता एव पुत्रिया ये सब एक जैसा नामवाले हैं। बाकी का इनके विषय का समस्त कथन कालीदेवी के वर्णन जैसा जानना चाहिये।

-ःषष्ठवर्ग समाप्तः-

છઠ્ઠો વર્ગ પ્રારભ —

' छट्ठो वि वग्गो पचम वग्गसरिसो ' इत्यादि—

(छट्ठो विवग्गो पचमवग्गसरिसो, णवर महाकालादीण उत्तरिल्लाण इदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेय नयरे उत्तरकुरु उज्जाणे मायापिया धूया सरिसणामया सेस त चेव ११)

છઠ્ઠો વર્ગ પણ પાચમા વર્ગના જેવો જ છે પરતુ આમા જે તેના કરતા વિશેષતા છે, તે એ પ્રમાણે છે કે આ અધ્યયનમા ઉત્તર દિશાના ઈન્દ્ર મહાકાલ વગેરેની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) નુ વર્ણન છે આ બધી અગ્રમહિષીઓ પૂર્વભવમા સાકેત નગરમા ઉત્તરકુરૂ નામના ઉદ્યાનમા પાર્શ્વ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે માતાપિતા અને પુત્રીઓ બધા એક સરખા નામવાળા છે એમના વિષેનુ બાકીનુ બધુ કથન કાલી દેવીના વર્ણન જેવુ જાણવું જોઇએ

છઠ્ઠો વર્ગ સમાપ્ત.

यनानि दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तरेन्द्राणामग्रमहिषीणां भणितव्यानि । सर्वाश्चैता पूर्वभवे नागपुरे नगरे संजाताः, सहस्राम्रवने उद्याने भगवत्पार्श्वप्रभोः समीपे प्रव्रजिताः । मातापिता दुहिता सदृशनामकः । आसां स्थितिरर्द्धपल्योपमम् ॥सू०१०॥

॥ इति धर्मकथानां पञ्चमो वर्गः समाप्तः ॥ ५ ॥

मूलम्—छट्ठोवि वग्गो पंचमवग्गसरिसो, णवरं महाकाला-दीणं उत्तरिल्लाणं इदाणं अग्गमहिसीओ पुव्वभवे सागेय-नयरे उत्तरकुरु उज्जाणे माया पिया धूया सरिसणामया सेसं तं चेव ॥ सू० ११ ॥

॥ छट्ठो वग्गो समत्तो ॥ ६ ॥

बाकी जो ३१, कमलप्रभा नामके अध्ययन हैं वे दक्षिण दिशा सबन्धी वानव्यतरेन्द्रों की अग्रमहिषियों के हैं ऐसा जानना चाहिये। ये सब ही पूर्वभव में नागपुर नगर में उत्पन्न हुई—और सहस्राम्रवन नामके उद्यान में भगवान् पार्श्वनाथ के समीप प्रव्रजित हुई । इन अध्ययनों में माता पिता तथा पुत्री ये सब एक सरीखे नामवाली है । जैसे कमलप्रभा नामक अध्ययन में माता का नाम कमलप्रभा श्री, पिता का नाम कम-लप्रभ एव पुत्री का नाम कमलप्रभा है—इसी तरह से और अध्ययनों में भी जानना चाहिये। इन सब देवियों की स्थिति अर्धपल्य की है ॥सू१०।

—ःपचमवर्ग समाप्तः—

મહિષી (પટરાણી) બની ત્યા તેની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે શેષ જે ૩૧ કમલપ્રભા નામના અધ્યયનો છે તે દક્ષિણ દિશા સબધી વાનવ્યતરેન્દ્રોની અગ્રમહીષીઓ (પટરાણીઓ) ના સમજવા જોઈએ આ બધી પૂર્વભવમા નાગપુર નગરમા ઉત્પન્ન થઈ અને સહસ્રામ્રવન નામના ઉદ્યાનમા ભગવાન પાર્શ્વનાથની પાસે પ્રવજિત થઇ ગઇ આ બધા અધ્યયનોમા માતાપિતા તેમજ પુત્રી આ સર્વે એક સરખા નામવાળા છે જેમકે કમલપ્રભા નામના અધ્યય નમા માતાનુ નામ કમલપ્રભાશ્રી, પિતાનુ નામ કમલપ્રભ અને પુત્રીનુ નામ કમલપ્રભા છે એ પ્રમાણે બીજા અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવું જોઇએ આ બધી દેવીઓની સ્થિતિ અર્ધપલ્યની છે ॥ સૂ० ૧૦ ॥

પાચમો વર્ગ સમાપ્ત

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिर्मालि ३, प्रभङ्करा ४। प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः। सुधर्मस्वामीमाह-एवं खलु हे जम्बू! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवद्वर्धमानस्वामिसमागमनम् यावत् परिषत् पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं -(तं जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी, सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार है सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्करा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जंबू! इस प्रकार है- उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर मे भगवान वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था-प्रभु का आगमन सुनकर वहा की परिषद् उनको वंदना करने के लिये उनके समीप गई-प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी-और सूरप्रभ सिंहासन पर बैठती थी प्रभु को वंदना करने के लिये आई। इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(तं जहा-सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभादेवी, सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा)

તે ચાર અધ્યયનો આ પ્રમાણે છે-સૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભંકરા ૪, હે જંબૂ! આ બધામાં પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં ભગવાન વર્ધમાન સ્વામીનું આગમન થયું પ્રભુનું આગમન સાંભળીને ત્યાંની પરિષદ તેમને વંદના કરવા માટે તેમની પાસે ગઇ પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો. ઉપદેશ સાંભળીને સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે સૂરપ્રભા નામની એક દેવી-જે સૂર વિમાનમાં રહેતી હતી અને સૂરપ્રભ સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી-પ્રભુની વંદના કરવા માટે આવી. એના પછીનું

अथ सप्तमो वर्गः प्रारभ्यते–' सत्तमस्से ' त्यादि ।

मूलम्–सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–सूरप्पभा आयवा अच्चिमाली पभकरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहा णवरं पुव्वभवे अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सुरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए ॥ सू० १२ ॥ ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ ७ ॥

टीका–' सत्तमस्से 'ति–सप्तमस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामी कथयति–एवं खलु हे जम्बूः ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि

–ःसप्तमवर्ग प्रारभः–

' सत्तमस्सवग्गस्स उक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थः–(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदंत ! सातवें वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार है ? इस जंबूस्वामी के प्रश्न करने पर गौतमस्वामी उनसे कहते हैं–कि हे जंबू ! सुनो, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–श्रमण

સાતમો વર્ગ પ્રારંભ—

' सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ ' इत्यादि—

ટીકાર્થ–(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) હે ભદન્ત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

જંબૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે

यथासूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्करा ४। प्रथमा ययनस्योत्क्षेपकः। सुधर्मस्वामीमाह–एव खलु हे जम्बू! तस्मिन काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्=भगवद्वर्धमानस्वामिसमागमनम् यावत् परिषत् पर्युपास्ते। तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूरप्रभादेवी, सूरविमाने, सूरप्रभे सिंहासने, शेष

भगवान महावीर ने इस सातवें वर्ग के चार अध्ययन प्ररूपित किये हैं –(त जहा–सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण सूरप्पभा देवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा) वे चार अध्ययन इस प्रकार है सूरप्रभा १, आतपा २, अर्चिमाली ३, प्रभङ्करा ४, इनमें प्रथम अध्ययन का उत्क्षेपक हे जबू! इस प्रकार है– उस काल और उस समय में राजगृह नाम के नगर में भगवान वर्धमानस्वामी का आगमन हुआ था–प्रभु का आगमन सुनकर वहा की परिषद् उनको वदना करने के लिये उनके समीप गई–प्रभु ने सबको धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनकर सबने प्रभु की पर्युपासना की। उस काल और उस समय में सूरप्रभा नाम की एक देवी जो सूरविमान में रहती थी–और सूरप्रभ सिंहासन पर वैठती थी प्रभु को वदना करने के लिये आई। इसके बाद का इसका वृत्तान्त जैसा पहिले कालीदेवी

(तं जहा–सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमज्झयणस्स, उक्खेवओ एव खलु जबू! तेण कालेण तेण समएण रायगिहे समोसरण जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण सूरप्पभादेवी, सूरसि विमाणसि सूरप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए तहा)

તે ચાર અધ્યયનો આ પ્રમાણે છે–સૂરપ્રભા ૧, આતપા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભકરા ૪, હે જબૂ! આ બધામા પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નામના નગરમા ભગવાન વર્ધમાન સ્વામીનુ આગમન થયુ પ્રભુનુ આગમન સાભળીને ત્યાની પરિષદ તેમને વદના કરવા માટે તેમની પાસે ગઇ પ્રભુએ સૌને ધર્મનો ઉપદેશ આપ્યો ઉપદેશ સાભળીને સૌએ પ્રભુની પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે સૂરપ્રભા નામની એક દેવી–જે સૂર વિમાનમા રહેતી હતી અને સૂરપ્રભ સિંહાસન ઉપર બેસતી હતી–પ્રભુની વદના કરવા માટે આવી એના પછીનુ

अथ सप्तमो वर्गः प्रारभ्यते–' सत्तमस्से ' त्यादि ।

मूलम्–सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा–सूरप्पभा आयवा अच्चिमाली पभंकरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहाणवरं पुव्वभवे अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सुरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं सेसं जहा कालीए, एवं सेसाओवि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए ॥ सू० १२ ॥ ॥ सत्तमो वग्गो समत्तो ॥ ७ ॥

टीका–' सत्तमस्से ' ति–सप्तमस्य वर्गस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मस्वामी कथयति–एवं खलु हे जम्बूः ! यावत् चत्वारि अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि

–ःसप्तमवर्ग प्रारंभः–

' सत्तमस्सवग्गस्स उक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थः–(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) हे भदंत ! सातवें वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार है ? इस जंबूस्वामी के प्रश्न करने पर गौतमस्वामी उनसे कहते हैं–कि हे जंबू ! सुनो, तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है–श्रमण

સાતમો વર્ગ પ્રારંભ—

' सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ ' इत्यादि–

ટીકાર્થ–(सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता) હે ભદન્ત ! સાતમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

જંબૂ સ્વામીના આ પ્રશ્નને સાંભળીને ગૌતમ સ્વામી તેમને કહે છે, કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ સાતમા વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યાં

अथाष्टमो वर्गः प्रारभ्यते–' अट्ठमस्से ' त्यादि ।

मूलम्–अट्ठमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जम्बू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा–चंदप्पभा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जबू ! तेणं कालेणं तेण समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चदप्पभंसि विमाणंसि चदप्पभंसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चंदासिरी भारिया चंदप्पभा दारिया चंदस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए, एवं सेसाओवि महुराए णयरीए मायापियरोवि धूयासरिसणामा ॥ सू० १३ ॥ अट्ठमो वग्गो समत्तो ॥ ८ ॥

टीका—' अट्ठमस्से ति–अष्टमस्य उत्क्षेपकः । सुधर्मास्वामी प्राह–एव खलु हे जम्बू ! यावत् चत्वारि अ ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा=तानि यथा–चन्द्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्मालिः ३, प्रभङ्करा ४ । प्रथमस्याध्ययनस्योत्क्षेपक । एव

–ःअष्टमवर्ग प्रारभ–ः

' अट्ठमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि ।

टीकार्थ—'(अट्ठमस्स उक्खेवओ–एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता त–जहा–चदप्पभा,दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा,

આઠમો વર્ગ આરભ

' अट्ठमस्स उक्खेवओ , इत्यादि—

टीकार्थ—(अट्ठमस्स उक्खेवओ–एव खलु जबू ! जाव चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता–तं जहा–चदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभकरा, पढमस्स अज्झयणस्स उक्खे-

यथा काल्या'=काली देव्या वर्णन तथा विज्ञेयम् , नवरम्=भय विशेषः=पूर्वभवे अरक्षुर्या नगर्या सूरप्रभस्य गाथापतेः, सूरश्रियो भार्यायाः सूरप्रभा दारिका, सूरस्य अग्रमहिषी स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चभिर्वर्षशतैरभ्यधिकम् । शेष यथा काल्या । एव शेषा अपि=आतपादिकाः देव्यो ज्ञात्या । सर्वा पूर्वभवे अरक्षुर्यां नगर्यामासन् ॥ सू०१२ ॥

॥ इति धर्मकथाना सप्तमो वर्गः समाप्तः ॥ ७ ॥

का वृत्तान्त लिखा जा चुका है-वैसा ही है। उसमें कुछ अन्तर नहीं है (णवर) परन्तु जिन बातों में अन्तर है-वह इस प्रकार है-(पुव्वभवे) यह पूर्वभव में (अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवम पचहिं वाससएहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए १२) अरक्षुर नामकी नगरी में निवास करनेवाले सूरप्रभा गाथापति की सूर श्री भार्या की कुक्षि से अवतरी थी। इसका नाम सूरप्रभा था। यह सूर की अग्रमहिषी हुई। इसकी वहा पांचसौ वर्ष से अधिक अर्धपल्य की स्थिति है। और इसका इस अवस्था का समस्त वर्णन काली समान ही है। इसी तरह का आतपाआदिक ३ देवियों का भी जीवन वृत्तान्त है। ये ३ तीनों ही देवियां अपने २पूर्व भव में अरक्षुर नगरी में जन्मी थी ॥ सू०१२ ॥

– सप्तमवर्ग समाप्तः –

આનુ વર્ણન કાલી દેવીના વર્ણન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઈએ, તેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી (णवर) પરતુ જે વાતમા તફાવત છે, તે આ પ્રમાણે છે (पुव्वभवे) આ પૂર્વભવમા

(अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया सूरस्स अग्गमहिसी ठिई अद्धपलिओवम पचहिं वाससएहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए, एव सेसाओ वि सव्वाओ अरक्खुरीए णयरीए १२)

અરક્ષુરી નામની નગરીમા રહેનારી સૂરપ્રભા ગાથાપતિની સૂરશ્રીભાર્યાના ગર્ભથી જન્મ પામી હતી, તેનુ નામ સૂરજપ્રભા હતુ તે સૂરની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ તેની ત્યા પાચસો વર્ષ કરતા વધારે અર્ધપલ્યની સ્થિતિ છે તેનુ આ અવસ્થા વિષેનુ બધુ વર્ણન કાલીના જેવુ જ છે એ પ્રમાણે જ આતપા વગેરે ૩ દેવીઓનુ પણ જીવનવૃત્તાત છે આ ત્રણે દેવીઓ પોત પોતાના પૂર્વભવમા અરક્ષુર નગરમા જન્મ પામી હતી ॥સૂ૦૧૨॥

સાતમો વર્ગ સમાપ્ત

विशेयम् , नगर=विशेषस्त्वयम्–पूर्वभवे मथुराया नगर्या भण्डीरावतसकमुद्यानम् , चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीर्भार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चाशद्भिर्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम् । शेष यथा काल्याः । एव

चद्रप्रभ विमान मे रहती थी और चद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी–श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने एव उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई–। इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नही है। जहां अन्तर है–उसका खुलासा इस प्रकार है–पूर्वभव मे यह मथुरा नगरी में जन्मी थी। वहा भडीरावतसक उद्यान था। उस नगरी में चद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चद्रश्री था। उनके यहा यह चद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रमहिषी बनी। (ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपल्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियो के सबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये हैं–वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી–શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવુ જ છે તેમા કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી જ્યા તફાવત છે–તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતસક ઉદ્યાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઈએ આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નાભા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબધને લઈને જે અધ્યયનો કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજી લેવા જોઈએ

खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे श्रीमहावीरस्वामिनः समव सरण, यावत्-परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये चन्द्रप्रभा देवी चन्द्रप्रभे विमाने चन्द्रप्रभे सिंहासने शेष यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तद्वद्

पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जबू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरण-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण चदप्पभादेवी चदप्पभसि विमाणसि सीहासणसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भडीरवडेंसए उज्जाणे चद- प्पभे गाहावई चदसिरी भारिया चदप्पभा दारिया) हे भदत ! आठवें वर्ग का उत्क्षेपक कैसा है ? इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मा- स्वामी ने उनसे कहा-हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के चार अध्ययन प्रज्ञप्त किये है -वे इस प्रकार से हैं-चद्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्माली ३, प्रभ- करा ४, । इनमे हे जम्बू ! प्रथम चन्द्रप्रभा अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार से है-उस काल मे और उस समय में राजगृह नामके नगर में श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ था-। उनसे धर्म का उपदेश प्राप्त करने के लिये वहा की समस्त धार्मिक जनता उनके पास आई थी प्रभु ने सब के लिये धर्म का उपदेश सुनाया-सुनाकर सबो ने उनकी यावत् पर्युपासना की । उस काल और उस समय में चन्द्रप्रभा दवी जो कि

वओ-एव खलु जबू ! तेण कालेणं तेण समएण रायगिहे समोसरण-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेण कालेण तेण समएण चदप्पभादेवी चदप्पभसि विमाणसि चदप्पभसि सीहासणसि सेस जहा कालीए, णवर पुव्वभवे महुराए णयरीए भडीरवडेंसए उज्जाणे चदप्पभे गाहावई चदसिरी भारिया चदप्पभा दारिया)

હે ભદન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યુ કે હે જબૂ ! સાભળો તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે-ચદ્રપ્રભા ૧ જ્યોત્સ્નાભા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભકરા ૪ હે જબૂ ! આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમા શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાભળવા માટે ત્યાની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યા આવી પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સભળાવ્યો સાભળીને બધાએ તેમની યાવત્ પયુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચદ્રપ્રભા દેવી-કે ચદ્રપ્રભ

विशेयम् , नवर=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे मथुराया नगर्या भण्डीरावतसकमुद्यानम् , चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीर्भार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चाशद्भिर्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम् । शेष यथा काल्याः । एव

चद्रप्रभ विमान मे रहती थी और चद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी- श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने एव उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई- । इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नही है। जहा अन्तर है-उसका खुलासा इस प्रकार है-पूर्वभव मे यह मथुरा नगरी में जन्मी थी। वहा भडीरावतसक उद्यान था। उस नगरी में चद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चद्रश्री था। उनके यहा यह चद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रमहिषी बनी। (ठिई अद्धपलिओवम, पणासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपल्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियो के सबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये हैं-वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવુ જ છે તેમા કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી જ્યા તફાવત છે-તેનુ સ્પષ્ટીકરણુ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતસક ઉદ્યાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वासमहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નાભા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબધને લઇને જે અધ્યયનો કહેવામા આવ્યા છે તેમને પણ સમજી લેવા જોઇએ

खलु हे जम्बूः । तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे श्रीमहावीरस्वामिनः समवसरणं, यावत्-परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये चन्द्रप्रभा देवी चन्द्रप्रभे विमाने चन्द्रप्रभे सिंहासने शेषं यथा काल्याः=कालीदेव्या वर्णनं तद्वत्

पढमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभादेवी चंदप्पभंसि विमाणंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावई चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया) हे भदंत ! आठवें वर्ग का उत्क्षेपक कैसा है ? इस प्रकार जम्बूस्वामी के पूछने पर सुधर्मास्वामी ने उनसे कहा-हे जम्बू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के चार अध्ययन प्रज्ञप्त किये है -वे इस प्रकार से हैं-चन्द्रप्रभा १, ज्योत्स्नाभा २, अर्चिर्माली ३, प्रभंकरा ४, । इनमे हे जम्बू ! प्रथम चन्द्रप्रभा अध्ययन का उत्क्षेपक इस प्रकार से है-उस काल मे और उस समय में राजगृह नामके नगर में श्री महावीर स्वामी का आगमन हुआ था-। उनसे धर्म का उपदेश प्राप्त करने के लिये वहा की समस्त धार्मिक जनता उनके पास आई थी प्रभु ने सब के लिये धर्म का उपदेश सुनाया-सुनाकर सबो ने उनकी यावत् पर्युपासना की । उस काल और उस समय में चन्द्रप्रभा देवी जो कि

वओ-एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं-जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभादेवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए, णवरं पुव्वभवे महुराए णयरीए भंडीरवडेंसए उज्जाणे चंदप्पभे गाहावई-चंदसिरी भारिया चंदप्पभा दारिया)

હે ભદન્ત ! આઠમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવો છે ?

આ પ્રમાણે જમ્બૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામીએ તેમને કહ્યું કે હે જમ્બૂ ! સાભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે કે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના ચાર અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે-ચન્દ્રપ્રભા ૧ જ્યોત્સ્નાભા ૨, અર્ચિમાલી ૩, પ્રભંકરા ૪ હે જમ્બૂ ! આ ચારેમા પહેલા ચન્દ્રપ્રભા નામે અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે કે તે કાળે અને સમયે રાજગૃહ નામના નગરમાં શ્રી મહાવીર સ્વામીનુ આગમન થયુ તેમની પાસેથી ધર્મકથા સાભળવા માટે ત્યાની બધી ધાર્મિક જનતા ત્યા આવી પ્રભુએ ધર્મનો ઉપદેશ સભળાવ્યો સાંભળીને બધાએ તેમની યાવત્ પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે ચન્દ્રપ્રભા દેવી-કે જે ચંદ્રપ્રભ

विनेयम् , नवरं=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे मथुराया नगर्या भण्डीरावतसकमुद्यानम् , चन्द्रप्रभो गाथापतिः, चन्द्रश्रीर्भार्या, चन्द्रप्रभा दारिका, चन्द्रस्याग्रमहिषी, स्थितिरर्द्धपल्योपम पञ्चाशद्भिर्वर्षसहस्रैरभ्यधिकम् । शेष यथा काल्याः । एव

चद्रप्रभ विमान में रहती थी और चद्रप्रभ सिंहासन पर बैठती थी-श्रमण भगवान् महावीर को वदना करने एव उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये उनके निकट आई-। इसके बाद का इसका वृत्तान्त कालीदेवी के वृत्तान्त जैसा ही है। उसमें कोई अन्तर नही है। जहा अन्तर है-उसका खुलाशा इस प्रकार है-पूर्वभव मे यह मथुरा नगरी में जन्मी थी। वहां भडीरावतसक उद्यान था। उस नगरी में चद्रप्रभ नाम का गाथापति रहता था। उसकी भार्या थी जिसका नाम चद्रश्री था। उनके यहा यह चद्रप्रभा नामकी पुत्री थी। यह चन्द्र की अग्रमहिषी बनी। (ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी) पचास हजार वर्ष से अधिक इसकी स्थिति आधेपल्य की है। इसके बाद का इसका जीवन वृत्तान्त काली दारिका के जीवन वृत्तान्त जैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह ज्योत्स्नाभा आदिशेष ३ देवियो के सबन्ध को लेकर जो अध्ययन कहे गये है-वे जानना चाहिये ये सब ज्योत्स्नाभा

વિમાનમા રહેતી હતી અને ચદ્રપ્રભ વિમાનમા બેસતી હતી-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરની વદના કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે આવી તેના પછીનુ તેનુ વૃત્તાત કાલી દેવીના વૃત્તાત જેવુ જ છે તેમા કોઇ પણ જાતનો તફાવત નથી જ્યાં તફાવત છે-તેનુ સ્પષ્ટીકરણ આ પ્રમાણે છે કે પૂર્વભવમા તે મથુરા નગરીમા જન્મી હતી, ત્યા ભડીરાવતસક ઉદ્યાન હતુ તે નગરીમા ચદ્રપ્રભનામે ગાથાપતિ રહેતો હતો ચદ્રશ્રી તેની ભાર્યાનુ નામ હતુ તેને ચન્દ્રપ્રભા નામે પુત્રી હતી આ ચન્દ્રની અગ્રમહિષી (પટરાણી) થઈ

(ठिई अद्धपलिओवम, पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहिय सेस जहा कालीए एव सेसाओवि चदस्स अग्गमहिसी)

પચાસ હજાર વર્ષ કરતા આની સ્થિતિ અડધા પલ્યની છે એના પછીનુ આનુ જીવન વિષેનુ વર્ણન કાલી દારિકાના જીવન જેવુ જ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે જ્યોત્સ્નાભા વગેરે બાકી ત્રણ દેવીઓના સબધને

જેટલા

शेषाः=ज्योत्स्नामादि देव्योऽपि विज्ञेया । सर्वाः पूर्वभवे मथुरायां नगर्यां जाताः,पार्श्वप्रभुसमीपे च प्रव्रजिता । मातापितरोऽपि दुहितृसदृशनामानः ॥सू० १३॥

इति धर्मकथानामाष्टमो वर्गः समाप्तः ॥ ८ ॥

अथ नवमो वर्गः प्रारभ्यते–' णवमस्स ' इत्यादि ।

मूलम्–णवमस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ-अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा–पउमा सिवा सई अंजू रोहिणी णवामिया, अचला अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा, णवरं सावत्थीए दो जणीओ हत्थिणा-उरे दोजणीओ कंपिल्लपुरे दोजणीओ सागेयनयरे दोजणीओ पउमे पियरो विजया मायराओ सव्वाओऽवि पासस्स अंतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्त पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झिहिति जाव अंत काहिति ॥ सू०१४ ॥

॥ णवमो वग्गो समत्तो ॥ ९ ॥

आदि देवियां पूर्वभव में (महुराए णयरीए) मथुरा नगरी में उत्पन्न हुई और पार्श्वनाथ प्रभु के समीप दीक्षित हुई। (माया पियरो वि० धूया सरिसणामा) इन पुत्रियों का नाम वैसा ही नाम इनके माता पिता का है।

–' अष्टमवर्ग समाप्तः–

આ બધી જ્યોત્સ્નાભા વગેરે દેવીઓ પૂર્વભવમાં (महुराए णयरीए) મથુરા નગરીમાં ઉત્પન્ન થઈ અને પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસેથી દીક્ષિત થઈ (मायापियरो वि० धूया सरिसणामा) આ પુત્રીઓના નામો જેવા જ તેમના માતાપિતાઓના નામો પણ છે

આઠમો વર્ગ સમાપ્ત

टीका—'णवमस्से' ति-नवमस्य वर्गस्योत्क्षेपकः । एवं खलु हे जम्बूः ! यावत्-अष्ट-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-पद्मा १, शिवा २, शची ३ अञ्जूः ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७, अप्सरा ८ । एवं प्रथमाध्ययनस्योत्क्षे-

—:नवमवर्ग प्रारंभ —

णवमस्स उक्खेवओ इत्यादि ।

टीकार्थ—(णवमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा-पउमा, सिवा, सई, अजू, रोहणी, णवमिया, अचला, अच्छरा,-पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई, देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमसि-सीहासणंसि जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं नायव्वा) हे भदंत ! नौवे वर्ग का उत्क्षेपक किस प्रकार से है ? इस प्रकार जंबू स्वामी के प्रश्न करने पर सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो-तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस तरह से है-श्रमण भगवान् महावीर ने इस वर्ग के यावत् आठ अध्ययन प्ररूपित किये-वे इस प्रकार से हैं-पद्मा १, शिवा, २, शची ३, अजू ४, रोहिणी ५, नवमिका ६, अचला ७, और अप्सरा । इनमें हे जंबू ! प्रथम

નવમો વર્ગ પ્રારંભ

(णवमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-तं जहा पउमा, सिवा, सई, अजू, रोहिणी, णवमिया, अचला, अच्छरा, पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ, तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउम वडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि-सीहासणंसि जहा कालिए एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली गमएणं नायव्वा)

હે ભદન્ત ! નવમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે છે ?

આ પ્રમાણે જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્ન કર્યા બાદ સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે—શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ વર્ગના યાવત્ આઠ અધ્યયનો પ્રરૂપિત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે —પદ્મા ૧, શિવા ૨, શચી ૩, અજૂ ૪, રોહિણી ૫, નવમિકા ૬, અચલા ૭ અને અપ્સરા ૮

पकः । एवं खलु हे जम्बूः ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे समवसरणम्= भगवतो महावीरस्य समागमनमभूत्, यावत् परिषत् पर्युपास्ते । तस्मिन् काले तस्मिन् समये पद्मावती देवी, सौधर्मे कल्पे पद्मावतंसके विमाने सभाया सुधर्माया पद्मे सिंहासने, यथा काल्याः । एवम् अष्टापि अध्ययनानि कालीगमकेन=काली- देवीसदृशपाठेन ज्ञातव्यानि, नवरं=विशेषस्त्वयम्-पूर्वभवे श्रावस्त्यां नगर्यां 'द्वौज-

अध्ययन का उत्क्षेप इस प्रकार से है-उस काल में और उस समय में राजगृह नगर में भगवान् महावीर का आगमन हुआ था। लोगों को जब इनके शुभागमन की खबर पड़ी तो वे सब के सब उनको वंदना करने के लिये और उनसे धर्मोपदेश का लाभ लेने के लिये उनके समीप पहुँचे। प्रभु ने आये हुए परिषद् को श्रुतचारित्ररूप धर्म का उपदेश दिया। उपदेश सुनने के बाद उसने प्रभु की यावत् पर्युपासना की। उस काल मे और उस समय में पद्मावती देवी जो कि सौधर्मकल्प में पद्मावतंसक विमान मे, सुधर्मा सभामें रहती थी और जिसके सिंहासन का नाम पद्म था श्रमण भगवान् महावीर को वंदना करने और उनसे धर्म का उपदेश सुनने के लिये वहा आई। इसके बाद का सम्बन्ध कालीदेवी का जैसा वर्णन पहिले किया गया है वैसा ही जानना चाहिये। इसी तरह से अवशिष्ट सात अध्ययन भी जानना चाहिये। इन आठों ही अध्ययनों का पाठ जैसा कालीदेवी का पाठ है वैसा ही है। कोई अन्तर नहीं हैं (णवर) परन्तु जहा अन्तर है वह-

હે જબૂ ! આમા પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક આ પ્રમાણે છે-તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમા ભગવાન મહાવીરનુ આગમન થયુ લોકોને તેમના શુભાગમનની જ્યારે જાણ થઈ ત્યારે તેઓ સર્વે તેમને વદન કરવા માટે અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા માટે તેમની પાસે ગયા. પ્રભુએ આવેલા સર્વ લોકોને શ્રુતચારિત્ર રૂપ ધર્મનો ઉપદેશ સભળાવ્યો. ઉપદેશ સાભળીને લોકોએ પ્રભુની યાવત્ પર્યુપાસના કરી તે કાળે અને તે સમયે પદ્માવતી દેવી-કે જે સૌધર્મ કલ્પમા, પદ્માવતસક વિમાનમા સુધર્મા સભામા રહેતી હતી અને જેના સિંહાસનનુ નામ પદ્મ હતુ-શ્રમણ ભગવાન મહાવીરને વદન કરવા અને તેમની પાસેથી ધર્મનો ઉપદેશ સાભળવા ત્યા આવી એના પછીનુ વર્ણન પહેલા કરવામા આવેલા કાલી દેવીના વર્ણનની જેમ સમજી લેવુ જોઇએ આ પ્રમાણે જ બાકીના સાત અધ્યયનો વિષે પણ જાણી લેવુ જોઇએ એ આઠે આઠ અધ્યયનોનો પાઠ કાલી દેવીના જેવો જ

णीओ ' द्वे जन्यौ=पद्मा-शिवाभिधे द्वे दारिके सजाते । एव हस्तिनापुरे द्वे जन्यौ श्रुतिः-अञ्जूः चेति, काम्पिल्यपुरे द्वे जन्यौ रोहिणीनवमिकानाम्न्यौ, साकेतनगरे द्वे जन्यौ अचला-अप्सरा इति सजाते । सर्वेषाम् ' पउमे ' पद्मः पद्मेति नामानः पितरः, विजया=विजयानाम्नो मातर आसन् । सर्वा अवि पार्श्वस्य=पार्श्वप्रभोरन्तिके प्रव्रजिताः, शक्रस्याग्रमहिष्यो जाता । तासा स्थितिः सप्तपल्योपमानि । एताः सर्वा महाविदेहे वर्षे सेत्स्यन्ति यावत्सर्वदुःखानामन्त करिष्यन्ति ॥सू० १४॥

॥ इति धर्मकथाना नवमो वर्गः समाप्तः ॥ ९ ॥

इस प्रकार से है-(सावत्थीए दोजणीओ) पद्मा और शिवा ये दो कन्याएँ पूर्व भवमे श्रावस्ती नगरी में उत्पन्न हुई (हत्थिणाउरे दोजणीओ, कम्पिल्लपुरे दो जणीओ सागेयनयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजयाभायराओ सव्वओवि पासस्स अतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई सत्तपलिओवमाइ महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अत काहिंति '१४') श्रुति और अजू ये दो हस्तिनापुरमें, रोहिणी, नवमिका ये दो काम्पिल्यपुरमें, अचला एव अप्सरा ये दो साकेत नगर में, उत्पन्न हुई । इन सन कन्याओके पिता का नाम पद्म और माता का नाम विजया था। ये सब कन्याएँ पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुई है । शक्र की अग्रमहिषिया बनी है। इन की स्थिति सातपल्य थी। ये

છે તેમ સમજી લેવુ જોઈએ તેમા કોઈ પણ જાતનો તફાવત નથી (णवर) પરતુ જ્યા તફાવત છે-તે આ પ્રમાણે છે (सावत्थीए दोजणीओ) પદ્માવતી અને શિવા આ બન્ને કન્યાઓ પૂર્વભવમા શ્રાવસ્તી નગરીમા ઉત્પન્ન થઈ

(हत्थिणाउरे दो जणीओ, कपिल्लपुरे दो जणीओ सागेय नयरे दो जणीओ पउमे पियरो विजया भायराओ सव्वाओवि पासस्स अतिए पव्वइयाओ सक्कस्स अग्गमहिसीओ ठिई, सत्त पलिओवमाइ महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति जाव अत काहिंति " १४ " ।)

શ્રુતિ અને અજૂ આ બન્ને હસ્તિનાપુરમા, રોહિણી અને નવમિકા આ બન્ને કાપિલ્યપુરમા, અચલા અને અપ્સરા આ બન્ને સાકેત નગરમા ઉત્પન્ન થઈ આ બધી કન્યાઓના પિતાનુ નામ પદ્મ અને માતાનુ નામ વિજયા હતુ આ બધી કન્યાઓ પાર્શ્વનાથ પ્રભુની પાસે પ્રવ્રજિત થઈ છે અને શક્રની અગ્રમહિષીઓ (પટરાણીઓ) બની છે એમની સ્થિતિ સાત પલ્ય જેટલી

अथ दशमो वर्ग प्रारभ्यते-दसमस्स ' इत्यादि ।

मूलम्-दसमस्स उक्खेवओ, एव खलु जबू! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, त जहा-कण्हा य कण्हराई रामा तहराम-रक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा चेव ईसाणे ॥१॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ, एवं खलु जबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हादेवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हसि सीहासणंसि सेस जहा कालीए एवं अट्ठवि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवर पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ सावत्थीए नयरीए दो जणीओ कोसबीए नयरीए दो जणीओ, रामे पिया धम्मा माया सव्वओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्व-इयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्ग-महिसीओ ठिई णव पलिओवमाइं महाविदेहे वासे सिज्झि-हिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं अत काहिति। एवं खलु जबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स ॥ सू० १५ ॥

॥ दसमो वग्गो समत्तो ॥ १० ॥

टीका—' दसमस्से ' ति दशमस्य उत्क्षेपकः । एव खलु हे जम्बू ! यावत् अष्ट-अध्ययनानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—तानि गाथया प्रदर्श्यन्ते ' कण्हे ' त्यादि ।

सब महाविदेह क्षेत्र से सिद्ध अवस्था प्राप्त करेंगी-यावत् सर्व दुःखों का अन्त करेगी ॥ सू०१४ ॥

॥ नवमवर्ग समाप्त ॥

છે આ બધી મહાવિદેહ ક્ષેત્રમાંથી સિદ્ધ અવસ્થા પ્રાપ્ત કરશે યાવત સર્વ દુખોનો અત કરશે ॥ સૂત્ર૧૪ ॥

નવમો વર્ગ સમાપ્ત

" कृष्णा १ च कृष्णराजिः २, रामा ३ तथा रामरक्षिका ४ वसूश्च ५ वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, वसुन्धरा ८ चैव ईशाने ॥ १ ॥ "

तत्तन्नामभिरध्ययनानि प्रसिद्धानि । तत्र प्रथमाध्ययनस्योत्क्षेपकः । एवं खलु हे जम्बू ! तस्मिन् काले तस्मिन् समये राजगृहे नगरे भगवत श्रीमहावीर-

॥ दशमवर्ग प्रारंभ ॥

' दसमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि० "१५"

टीकार्थ—(दसमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठअज्झयणा पण्णत्ता-त जहा कण्हाय कण्हराई, रामा, तह रामरक्खिया वसू य। वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा चेव ईसाणे "१"-पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एव खलु जंबू !) हे भदन्त श्रमण भगवान महावीर ने दशवें वर्गका उत्क्षेपक किस प्रकार से कहा है ? इस तरह का जंबू ! स्वामी के प्रश्न का समाधान करने के निमित्त सुधर्मा स्वामी उनसे कहते हैं कि हे जंबू ! सुनो तुम्हारे प्रश्न का उत्तर इस प्रकार है-श्रमण भगवान् महावीरने इस दशवें वर्ग के आठ अध्ययन प्रज्ञप्त किये हैं-वे ये हैं-कृष्णा १, कृष्णराजि २, रामा ३, रामरक्षिका ४, वसू ५, वसुगुप्ता ६, वसुमित्रा ७, और वसुधरा । इन २ नामों द्वारा इन २ नाम वाले अध्ययन प्रसिद्ध हुए हैं। इनमें प्रथम अध्ययन का हे जंबू ! उत्क्षेपक

દશમો વર્ગ પ્રારંભ—

' दसमस्स उक्खेवओ ' इत्यादि—

(दसमस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू ! जाव अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता-त जहा-कण्हा य कण्हराई, रामा तह रामरक्खिया वसू य । वसुगुत्ता वसुमित्ता वसुधरा चेव ईसाणे ॥ १ ॥ पढमज्झयणस्स उक्खेवओ-एवं खलु जंबू !)

હે ભદન્ત ! શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે દશમા વર્ગનો ઉત્ક્ષેપક કેવી રીતે કહ્યો છે ?

આ પ્રમાણેના જંબૂ સ્વામીના પ્રશ્નને સાંભળીને તેના સમાધાન માટે શ્રી સુધર્મા સ્વામી તેમને કહે છે કે હે જંબૂ ! સાંભળો, તમારા પ્રશ્નનો ઉત્તર આ પ્રમાણે છે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે આ દશમા વર્ગના આઠ અધ્યયનો પ્રજ્ઞપ્ત કર્યા છે, તે આ પ્રમાણે છે-કૃષ્ણા ૧, કૃષ્ણરાજિ ૨, રામા ૩, રામરક્ષિકા ૪, વસૂ ૫, વસુગુપ્તા ૬, વસુમિત્રા ૭ અને વસુધરા ૮

આ ઉક્ત જુદા જુદા નામો વડે એજ નામના જુદા જુદા અધ્યયનો પ્રસિદ્ધ થયા છે હે જંબૂ ! આ બધામાંથી પહેલા અધ્યયનનો ઉત્ક્ષેપક

स्वामिनः समवसरणं यावत् परिषत् पर्युपास्ते, तस्मिन् काले तस्मिन् समये कृष्णा देवीईशाने कल्पे कृष्णावतंसके विमाने सभायां सुधर्मायां, कृष्ण सिंहासने, शेष

इस तरह से है-(तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव परिसा पज्जुवासइ) उस काल एवं उस समयमें राजगृह नगरमें भगवान् महावीर का शुभागमन हुआ था। परिषद् उन को वंदना आदि करने के लिये उनके समीप पहुँची। प्रभुने सबके लिये धर्म का उपदेश सुनाया। लोगोंने उपदेश सुनकर प्रभु की पर्युपासना की (तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालिए एवं अट्ठावि अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई, णवपलिओवमाइं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति, बुज्झिहिंति, मुच्चिहिंति, सव्वदुक्खाणं, अंतं काहिंति, एवं खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स) उसी काल और उसी समय वहां कृष्णादेवी जो ईशान कल्प में कृष्णावतंसक विमान में रहती थी-और

આ પ્રમાણે છે (तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं, जाव परिसा पज्जुवासइ) તે કાળે અને તે સમયે રાજગૃહ નગરમાં ભગવાન મહાવીરનું શુભાગમન થયું તેમને વંદન કરવા માટે પરિષદ તેમની પાસે પહોંચી અને પ્રભુએ ધર્મોપદેશ સંભળાવ્યો ધર્મોપદેશ સાંભળીને પરિષદે પ્રભુની પર્યુપાસના કરી

(तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए एवं अट्ठा अज्झयणा कालीगमएणं णेयव्वा, णवरं पुव्वभवे वाणारसीए नयरीए दो जणीओ रायगिहे नयरे दो जणीओ, सावत्थीए नयरीए दो जणीओ, कोसंबीए नयरीए दो जणीओ रामे पिया धम्मा माया सव्वाओऽवि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणीयत्ताए ईसाणस्स अग्गमहिसीओ ठिई, णवपलिओवमाइं, महाविदेहे वासे सिज्झिहिंति बुज्झिहिंति, मुच्चिहिंति, सव्वदुक्खाणं, अंतं काहिंति एवं खलु जंबू! णिक्खेवओ दसमवग्गस्स)

તે કાળે અને તે સમયે ત્યાં કૃષ્ણા દેવી-કે જે ઈશાન-કલ્પમાં કૃષ્ણાવતંસક વિમાનમાં રહેતી હતી અને જેની સભાનું નામ ... તેમજ સિંહાસનનું નામ કૃષ્ણા હતું-આવી એના પછીના

यथा काल्याः। एवमष्टौ कृष्णराजिप्रभृतीनि अध्ययनानि कालीगमकेन=कालीदेवीसदृशपाठेन ज्ञातव्यानि नवरं=विशेषः यत्-पूर्वभवे वाणारस्या नगर्यां द्वे=कृष्णा-कृष्णराजिनाम्न्यौ जन्यौ=दारिके संजाते। एवं राजगृहे नगरे द्वे=वसु-वसुगुप्ता नाम्न्यौ जन्यौ, कौशाम्ब्यां नगर्यां द्वे=वसुमित्रा-वसुन्धरा नाम्न्यौ जन्यौ=दारिके समुत्पन्ने। सर्वासां रामः=रामाभिधः पिता, धर्मा=धर्माऽभिधा माता। सर्वा अपि पार्श्वस्यार्हतोऽन्तिके प्रव्रजिताः, पुष्पचूलाया आर्यायाः शिष्यात्वेन पार्श्वप्रभुणा स्वयं प्रदत्ता। ईशानस्य=ईशानेन्द्रस्य अग्रमहिष्यो जाताः। तत्र तासां स्थितिर्नव पल्योपमानि वर्त्तते। ततश्च्युत्वा महाविदेहे वर्षे समुत्पद्य सेत्स्यन्ति,

---

जिसकी सभा का नाम सुधर्म तथा सिंहासन का नाम कृष्ण था आई। इस के आगे का पाठ कालीदेवी के वर्णन में जैसा पाठ कहा गया है वैसा ही है। इसी तरह से कृष्णराजि प्रभृति अध्ययन भी-कालीदेवी वर्णन में पठित पाठ के सदृश ही जानना चाहिये। कालीदेवी के पाठ में और इन आठ अध्ययनोक्त पाठों में जो अन्तर है वह इस प्रकार से है-पूर्वभव में वाणारसी नगरीमें कृष्णा और कृष्णराजि ये दो जनी -उत्पन्न हुई, राजगृहनगर में रामा और रामरक्षिका श्रावस्ती नगरी में वसु, वसुगुप्ता और कौशाम्बी नगरी में वसुमित्रा एवं, वसुधरा उत्पन्न हुई। इन सब के पिता का नाम राम और माताओं का नाम धर्मा था। ये सबकी सब पार्श्वनाथ प्रभु के पास प्रव्रजित हुई। प्रभुने इन सब को दीक्षित करके पुष्पचूला आर्या की शिष्यारूप से दिया। ये सब इस ईशानेन्द्रकी अग्रमहिषी हुई। वहां इनकी स्थिति नौ पल्योपम की है। वहां से चवकर ये महाविदेह क्षेत्र मेंउत्पन्न होंगी और वहीं से

वर्णनमां जे प्रमाणे पाठ कहेवायो छे ते प्रमाणे ज समजी लेवो. जोईए आ प्रमाणे ज कृष्णराजि वगेरे अध्ययनो पण काली देवीना पाठमां अने आ उक्त आठ अध्ययनोना पाठोमां जे कंई तफावत छे ते आ प्रमाणे छे-पूर्वभवमां वाणारसी नगरीमां कृष्णा अने कृष्णराजि आ बन्ने उत्पन्न थई, राजगृह नगरमां रामा अने रामरक्षिका श्रावस्ती नगरीमां वसू, वसुगुप्ता अने कौशाम्बी नगरीमां वसुमित्रा अने वसुधरा उत्पन्न थई एमना पितानुं नाम राम अने मातानुं नाम धर्मा हतुं ए बधीए पार्श्वनाथ प्रभुनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी हती प्रभुए सर्वेने दीक्षित करीने पुष्पचूला आर्याने शिष्याओना रूपमां सोंपी हती ए बधी ईशानेन्द्रनी अग्रमहिषीओ थई त्यां तेमनी स्थिति नव पल्योपमनी छे त्यांथी चवीने ए बधी महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थशे अने त्यांथी ज सिद्ध-

भोत्स्यन्ति, मोक्ष्यन्ति सर्व दुःखानामन्त करिष्यन्ति । एव खलु हे जम्बूः ! निक्षेपको दशमवर्गस्य ॥ सू०१५ ॥

॥ इति धर्मकथानां दशमो वर्गः समाप्त ॥ १० ॥

मूलम्--एवं खलु जंबू समणेणं भगवया महावीरेणं आदिगरेणं सयंसवुद्धेणं पुरिसोत्तमेण जाव सपत्तेण धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

॥ धम्मकहासुयक्खधो समत्तो दसहि वग्गेहिं ॥

॥ णायाधम्मकहाओ समत्ताओ ॥

टीका—सुधर्मास्वामी कथयति-' एव खलु ' इत्यादि । एव खलु हे जम्बूः ! श्रमणेन भगवता महावीरेण आदिकरेण तीर्थकरेण स्वय सम्बुद्धेन पुरुषोत्तमेन

सिद्ध पद की भोक्ता बनेगी केवलज्ञानरूप आलोक से समस्त चराचर पदार्थों की ज्ञाता बनेगी। द्रव्य एव भावरूप समस्त कर्मों से छूटजावेंगी इस तरह ये वही से समस्त दु.खों का अन्त करने वाली होंगी। इस प्रकार हे जबू! यह दशवेवर्ग का निक्षेपक है।

॥ दसमवर्ग समाप्त ॥

' एवं खलु जंबू ! ' इत्यादि ।

टीकार्थ—(एव खलु जंबू ! समणेण भगवया महावीरेणं आदिगरेण, तित्थगरेण संयसवुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं जाव सपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते) अब जबूस्वामी से श्री सुधर्मास्वामी कहते हैं कि हे

પદ મેળવશે એ બધી કેવળજ્ઞાન રૂપ આલોકથી સમસ્ત ચર અને અચર પદાર્થોનુ જ્ઞાન મેળવશે દ્રવ્ય અને ભાવરૂપ બધા કર્મોથી મુક્ત થઈ જશે આ પ્રમાણે એ બધી ત્યાંથી જ બધા દુ ખોને અત કરનારી થશે આ પ્રમાણે હે જબૂ ! આ દશમા વર્ગનો નિક્ષેપક છે

દશમો વર્ગ સમાપ્ત

एव खलु जबू ! इत्यादि—

(एव खलु जबू ! समणेण भगवया महावीरेणं आदिगरेण तित्थगरेणं सयसबुद्धेण पुरिसोत्तमेण जाव सपत्तेण धम्म कहाण अयमट्ठे पण्णत्ते)

यावत् सिद्धिगतिनामधेय स्थान संप्राप्तेन धर्मकथानामयमर्थं प्रज्ञप्तः ॥

॥ धर्मकथानामको द्वितीयः श्रुतस्कन्धः समाप्त ॥

इति श्री-विश्वविख्यात-जगद्वल्लभ-प्रसिद्धवाचकपञ्चदशभाषाकलितललितक-
लापालापक-प्रविशुद्धगद्यपद्यनैकग्रन्थनिर्मापक-वादिमानमर्दक-श्रीशाहूच्छ-
॥ त्रपतिकोल्हापुरराजप्रदत्त-'जैनशास्त्राचार्य' पदभूषित-कोल्हापुरराज-
गुरु-बालब्रह्मचारि-जैनाचार्य-जैनधर्मदिवाकरपूज्यश्री घासीलाल-
॥ ६ ॥ व्रतिविरचिताया-ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्रस्यानगारधर्मामृतवर्षि-
ण्याख्या व्याख्या समाप्ता ॥

जबू! आदिकर, तीर्थङ्कर, स्वय सबुद्ध पुरुषोत्तम, यावत् सिद्धिगति नामक स्थान को प्राप्त हुए ऐसे श्रमण भगवान महावीर ने धर्मकथा नामक द्वितीय श्रुतस्कंध का पूर्वोक्तरूप से अर्थ प्रज्ञप्त किया है। (धम्मकहासुयक्खधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं) धर्मकथा नामका यह द्वितीय श्रुतस्कध दशवर्गों में समाप्त हुआ है। इस तरह (णायाधम्मकहाओ समत्ताओ) यह ज्ञाताधर्मकथाङ्ग सूत्र समाप्त हुआ।

श्री जैनाचार्य जैनधर्म दिवाकर पूज्य श्री घासीलालजी महाराज कृत "ज्ञाताधर्मकथाङ्गसूत्र"की अनगारधर्मामृतवर्षिणी व्याख्या समाप्त ॥

हवे જંબૂ સ્વામીને શ્રી સુધર્મા સ્વામી કહે છે કે હે જંબૂ! આદિકર તીર્થંકર, સ્વયં સંબુદ્ધ, પુરુષોત્તમ યાવત્ સિદ્ધગતિ નામના સ્થાનને પ્રાપ્ત કરી ચૂકેલા એવા શ્રમણ ભગવાન મહાવીરે ધર્મકથા નામના બીજા શ્રુતસ્કંધનો પૂર્વોક્ત રૂપે અર્થ પ્રરૂપિત કર્યો છે (धम्मकहा सुयक्खधो समत्तो दसहिं वग्गेहिं) ધર્મકથા નામનો આ બીજો શ્રુતસ્કંધ દશ વર્ગોમાં પૂરો થયો છે આ પ્રમાણે (णायाधम्मकहाओ समत्ताओ) આ જ્ઞાતા ધર્મકથાંગ સૂત્ર પૂરું થયું છે

શ્રી જૈનાચાર્ય જૈનધર્મ દિવાકર પૂજ્ય શ્રી ઘાસીલાલજી મહારાજ કૃત "જ્ઞાતાધર્મકથાંગસૂત્ર" ની અનગારધર્મામૃતવર્ષિણી વ્યાખ્યા સમાપ્ત

—ःग्रन्थप्रशस्तिः—

काठियावाडदेशेऽस्ति, राजकोटपुरे शुभे
कोठारीहरगोविन्द काकानाम मतिरिमान् ।
तस्यास्तिभार्यापरमा सुशीला, धर्मानुरक्तागृहकार्यदक्षा ।
शान्तिप्रिया दीनदयार्द्रभावा, नाम्ना प्रसिद्धा [illegible] ॥ २ ॥
दिनेशचन्द्रस्तनयोऽस्ति यस्य, कुलस्य दीपः सरलस्वभावः ।
कन्या सुशीला सरला जितुश्च–सदा–प्रमोदाय [illegible] ॥ ३ ॥
व्याख्यानभवने तस्य, ज्ञाताधर्मकथाङ्गके ।
घासीलालेन मुनिना कृता टीका सतां मुदे ॥ ४ ॥
द्विसहस्रचतु सख्ये, विक्रमाब्दे रवौ दिने ।
माघे शुक्ले च पञ्चम्यां, सम्पूर्णा धर्मवर्षिणी ॥ ५ ॥

काठियावाडदेश में राजकोट नामका अच्छा नगर है। उस में कोठारी हरगोविन्दकाका रहते हैं। इनका सुशील भार्याका नाम रुक्मिणी हैं। यह गृहकार्य में बहुत चतुर है। धर्मात्मा है, शान्ति प्रिया है एव दीन दुःखियों के ऊपर सदा दया भाव रखती है। काका का कुल दीपक एक दिनेशचन्द्र नाम का पुत्र और जितु नाम की–कन्या है। ये दोनों माता पिता के प्रमोद के स्थान भूत हैं।

मुझ घासीलाल मुनिराज ने उन्ही के व्याख्यान भवन में ठहर कर विक्रम सवत् २००४ दिन रविवार माघशुक्ला पचमी के दिन ज्ञाता धर्मकथाङ्ग सूत्र की यह टीका रचकर समाप्त की है।

કાઠિયાવાડ પ્રાંતમા રાજકોટ નામે એક સરસ રમ્ય નગર છે, તેમા કોઠારી હરગોવિંદ કાકા રહે છે તેમની સુશીલ પત્નીનુ નામ રૂક્મિણી છે તેઓ ગૃહકાર્યમા બહુ જ ચતુર છે, ધર્માત્મા તેમજ શાતિ પ્રિયાપણ છે, તેઓ ગરીબ દુખીઓના ઉપર હમેશા દયાભાવ રાખે છે કાકાનો કુળદીપક એક દિનેશચદ્ર નામે પુત્ર અને જિતુ નામે એક કન્યા છે આ બને માતા પિતાના પ્રમોદના આશ્રયસ્થાનો છે

મે ઘાસીલાલ મુનિરાજે તેમના જ વ્યાખ્યાન ભવનમા રહીને વિક્રમ સવત્ ૨૦૦૪ રવિવાર માઘ શુકલા પચમીના દિવસે જ્ઞાતાધર્મકથાંગ સૂત્રની આ ટીકા રચીને પૂરી કરી છે